णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।

महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।

शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।

तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।

पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।

इस युग...।।3।।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.-323
ISBN 978-93-80353-60-9

गणिनी ज्ञानमती चरितम्

–मूल हिन्दी चरित्र लेखिका –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

–संस्कृत अनुवाद –

डॉ. प्रकाशचंद जैन प्राचार्य, साहिबाबाद (उ.प्र.)

बीसवीं सदी की प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा भूमि
माधोराजपुरा (राज.) में नवनिर्मित ''गणिनी श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ'' पर आयोजित
भगवान पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव–21 से 26 नवम्बर 2010
(कार्तिक शु. पूर्णिमा से मगसिर कृ. पंचमी) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2537	मूल्य
500 प्रतियाँ	मगसिर कृ. पंचमी, 26 नवम्बर 2010	200/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

♦ *संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत* ♦

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

♦ *मार्गदर्शन* ♦

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

♦ *निर्देशन* ♦

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

♦ *सम्पादक* ♦

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग–ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ सं.
1. सम्पादकीय	6
2. प्रस्तावना	8
3. पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त परिचय	14
4. पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय	15
5. डॉ. प्रकाशचंद जैन, साहिबाबाद का संक्षिप्त परिचय	16
6. पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षास्थली माधोराजपुरा का परिचय	17
7. दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का संक्षिप्त परिचय	21
8. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के सहयोगियों की सूची	22
9. प्रस्तुत ग्रंथ के संदर्भ में	23

ग्रंथ विषय सूची

मंगलाचरण	2
अध्याय-1 आर्यिका चर्या	3
अध्याय-2 पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का स्वर्णिम व्यक्तित्व	45
अध्याय-3 शाश्वत तीर्थ अयोध्या में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक	134
अध्याय-4 मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा	227
अध्याय-5 ऐतिहासिक कार्यकलाप एवं प्राचीन तीर्थ प्रयाग का उद्भव	332
अध्याय-6 भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव	395
अध्याय-7 भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विश्व के क्षितिज पर	499
अध्याय-8 भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव	599
अध्याय-9 दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य ज्ञानमती माताजी ने	649
अध्याय-10 ज्ञानमती माताजी की कतिपय उपलब्धियाँ	691

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

बारहभावना में हम पढ़ते हैं–

जाँचे सुरतरु देय सुख, चिंतत चिंता रैन।
बिन मांगे बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन।।

अर्थात् कल्पवृक्ष से अगर हमें कुछ प्राप्त करना है तो मांगना पड़ता है। चिन्तामणि रत्न से कुछ प्राप्त करना है तो चिंतन करना पड़ता है। लेकिन आचार्य कहते हैं धर्म एक ऐसी वस्तु है, जो बिना मांगे, बिना सोचे ही हमें सब कुछ दे देता है। ऐसे धर्म की महिमा अपरम्पार है। जैसा कि कहा भी है–

धरम करत संसार सुख, धरम करत निर्वाण।
धरम पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान।।

अर्थात् धर्म करते हुए संसार के सब सुख मिल जाते हैं, धरम करते हुए निर्वाण की भी प्राप्ति हो जाती है। धरम मार्ग को अपनाए बिना मनुष्य तिर्यंच–पशु के समान माना गया है।

आज इस कलिकाल में–पंचमकाल में जब कि मानव अन्न का कीड़ा बना हुआ है, उसके पास धर्म करने के लिए समय नहीं है। ऐसे समय में दुर्लभ जैन साधुओं के दर्शन हो रहे हैं, उनका सम्बोधन मिल रहा है। यह एक बड़े ही सौभाग्य की बात है। आज जबकि श्रावकों के पास बड़े-बड़े ग्रंथों को पढ़ने का समय नहीं है, तब जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, सरस्वती की प्रतिकृति पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बड़े-बड़े ग्रंथों को सरल भाषा में, उपन्यास के रूप में लिखकर जैन समाज को सरल साहित्य प्रदान कर महान उपकार किया है। अनेकों विधानों की सरल, मधुर भाषा में रचना करके लोगों को विधान के माध्यम से भक्ति करने का, धर्म करने का अवसर प्रदान किया है। ऐसी ज्ञानमती माताजी जिनकी रग-रग में भगवान की भक्ति एवं तीर्थंकरों के जन्मभूमियों को विकसित करने की भावना समाई है और जिन्होंने सम्पूर्ण जैन समाज को तीर्थंकरों के पंचकल्याणक भूमियों के विकास की प्रेरणा प्रदान की है। हस्तिनापुर, प्रयाग, कुण्डलपुर, अयोध्या आदि कई तीर्थों का विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो चुका है। भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का विकास कार्य भी जिनमंदिर के निर्माण एवं पंचकल्याणक से हो गया है। ऐसी सर्वतोमुखी धर्मप्रभावना के कार्य को सम्पन्न करने-कराने वाली गणिनी ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लिखकर पूज्य आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी ने जैन समाज पर एक महान उपकार किया है। शास्त्र ज्ञान तो हम शास्त्रों को पढ़कर भी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जिन्होंने वर्तमान में जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के लिए इतने सारे कार्य किए हैं, उनके जीवनवृत्त को पढ़कर आप भी यही भावना करें कि भगवन्! हमें भी ऐसी शक्ति प्राप्त हो।

आज भी समाज में बहुत से संस्कृत प्रेमी लोग हैं। जिन्हें संस्कृत पढ़ना और लिखना बहुत अच्छा लगता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए डॉ. श्री प्रकाशचंद जैन-साहिबाबाद ने पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा हिन्दी में लिखित पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन चरित्र का संस्कृत में ज्यों का त्यों अनुवाद करके समाज को अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया है। मेरी उनके प्रति

यही भावना है कि आगे भी वे इसी तरह से अपने संस्कृत ज्ञान का उपयोग धार्मिक कार्यों में, रचनाओं में करते रहें और जैन समाज के लोग उसे पढ़कर संस्कृत ज्ञान प्राप्त करें। ज्ञान ऐसी वस्तु है, जो प्राप्त होने पर कभी भी हमसे खो नहीं सकती। कहा भी है–

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म जरा मृत रोग निवारण।।

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी कई वर्षों से लगातार ''आस्था चैनल'' के माध्यम से घर बैठे करोड़ों लोगों को अपने ज्ञान से आप्लावित कर रही हैं। ऐसी विशिष्ट प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और यह भावना करता हूँ कि पूज्य माताजी के जीवन चरित्र को पढ़कर आप लोग अवश्य ही लाभान्वित होंगे और एक नई दिशा प्राप्त करेंगे। जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करने वाला मानव अवश्य एक दिन महान पद को प्राप्त करता है।

मानव जीवन अनमोल है। अतः हम अपने जीवन के एक-एक समय का सदुपयोग करके अपने जीवन को समुन्नत बनाएं, यही मंगल भावना है।

आभार

इस ग्रंथ का प्रकाशन स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी छाबड़ा एवं स्व. श्री प्रतापमल छाबड़ा की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्रजन श्री मदनलाल जी, श्री पूनमचंद जी, श्री बाबूलाल जी, श्री शांतिलाल जी, श्री हुलासचंद जी एवं डॉ. सरोज कुमार जी छाबड़ा एवं समस्त छाबड़ा परिवार, सुजानगढ़ (चुरु) राज. के अर्थ सौजन्य से किया गया है। यह आप समस्त महानुभावों की विशिष्ट गुरुभक्ति का ही परिचायक है, जो बीसवीं शताब्दी में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अद्भुत प्रतिभा दर्शाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के गुणानुराग में संस्कृत एवं हिन्दी भाषा से समन्वित प्रकाशित हो रहे इस ''गणिनी ज्ञानमती चरितम्'' ग्रंथ के प्रकाशन हेतु आपने आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। हम आपकी दान भावनाओं का सम्मान करते हुए संस्थान की ओर से समस्त छाबड़ा परिवार के प्रति आभार प्रगट करते हैं। आगे भी आप अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग इसी प्रकार देव-शास्त्र व गुरु की सेवा में धर्मकार्य हेतु करते रहें, यही मंगलकामना है।

–सम्पादक

प्रस्तावना

–आर्यिका सुव्रतमती

जो महा आत्माएं होती, युग परिवर्तन कर देती हैं।
उनके जीवन की गाथाएँ, नित नव जीवन भर देती हैं।।
है वर्तमान गौरवशाली, जो ऐसी ज्ञान प्रदाता है।
प्रिय शान्तमूर्ति हैं ज्ञान ज्योति, श्री ज्ञानमती जी माता हैं।।

एक कवि की ये पंक्तियाँ जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, वर्तमान के सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, युगप्रवर्तिका, श्रुतप्रकाशिका, तीर्थोद्धारिका, राष्ट्रगौरव, आर्यिकाशिरोमणि, वाग्देवी, चारित्रचन्द्रिका आदि अनेकों उपाधियों से विभूषित परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन चरित्र का दिग्दर्शन कराती हैं।

वास्तव में देखा जाए तो पूज्य माताजी माताजी उन महान आत्माओं में से हैं, जिन्होंने वर्तमान में युग को परिवर्तित कर दिया है। क्वाँरी कन्याओं के लिए दीक्षा के मार्ग को प्रशस्त किया है। जिनधर्म की विशेष प्रभावना की है। साक्षात् सरस्वती के अवतार के रूप में जिनवाणी का लेखन कर विपुल साहित्य समाज को प्रदान किया है। अनेक तीर्थों का, भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों का विकास, संरक्षण, संवर्धन किया है। जम्बूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक जैसी अनुपम कृति विश्व को प्रदान की है। ऐसी माता को पाकर वर्तमान गौरवशाली है। भारत की धरती माता गौरवान्वित है। माता की ज्ञानरूपी गंगा सतत प्रवाहित हो रही है। शान्तमूर्ति, ज्ञान की ज्योतिपुंज ऐसी ज्ञानमती माताजी के विराट व्यक्तित्व को लेखनीबद्ध किया है।

जिस प्रकार चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के सर्वोदयी जीवन एवं उनके विभिन्न उपकारों से समाज को परिचित कराने के लिए सन् 1953 में पण्डित प्रवर श्री सुमेरचंद जी दिवाकर ने 'चारित्रचक्रवर्ती' पुस्तक लिखकर प्रदान किया था, जिसे आज सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज बड़ी श्रद्धा एवं रुचि से पढ़ता है। उसी प्रकार पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सर्वतोमुखी जीवन एवं ऐतिहासिक उपलब्धियों को संक्षेप में लेखनीबद्ध करके पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने जो 'चारित्रचन्द्रिका' पुस्तक लिखकर जैन समाज को प्रदान की है, वह बहुत ही उपयोगी पुस्तक है। उसे पढ़कर सभी लोग लाभान्वित होते हैं। अपने जीवन का उत्थान करते हैं और अपने जीवन में एक नई दिशा प्राप्त करते हैं।

पूज्य आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी द्वारा लिखित उसी चारित्रचन्द्रिका ग्रंथ का संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् डॉ. प्रकाशचंद जैन-साहिबाबाद (उ.प्र.) ने अत्यधिक श्रम करके, अति उत्साह के साथ अपने संस्कृत ज्ञान का सदुपयोग करते हुए संस्कृत अनुवाद करके संस्कृत प्रेमी महानुभावों के लिए, विद्वानों के लिए नूतन कृति प्रदान की है।

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस ग्रंथ में सर्वप्रथम मंगलाचरण में सभी महान आत्माओं के जयवन्त होने की कामना करते हुए संस्कृत के तीन छन्द प्रस्तुत किये हैं–

सिद्धाः जयन्तु त्रैलोक्ये, जीयात् श्री वृषभेश्वरः।
जीयात् श्री वीरनाथोऽपि, जीयात् श्री जैनशासनम्।।1।।

कुन्दकुन्द गुरुर्जीयात्, जीयात् श्री शान्तिसागरः।
जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्रीवीरसागरः।।2।।
श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिम चन्दना।
जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।।3।।

अर्थात् तीनों लोकों में अनन्तानन्त सिद्ध भगवान जयवन्त होवें, ऋषभदेव भगवान, महावीर भगवान, जैन शासन, कुन्दकुन्दस्वामी, चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज, आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज, गणिनी आर्यिका श्री ब्राह्मी माता, गणिनी श्री चन्दना माता एवं वर्तमान में आर्यिकाओं की शिरमौर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जयशील होवें। इन तीन श्लोकों में पूज्य माताजी ने गागर में सागर के समान शब्दों को चुनकर सभी परमेष्ठी के जयवन्त होने की कामना की है।

इस ग्रंथ को पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने दश अध्यायों में विभक्त करके विस्तार से सभी विषयों को लिखा है। प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम ''आर्यिका चर्या'' का वर्णन किया है। किस प्रकार से आर्यिकाएँ मुनियों के समान 28 मूलगुणों का पालन करती हैं। पिच्छी, कमण्डलु, शास्त्र एवं एक साड़ी धारण करती हैं, बैठकर करपात्र में आहार लेती हैं। नारी जीवन की सर्वोत्कृष्ट पद धारी आर्यिका समस्त जगत की माता बन जाती हैं। रत्नत्रय को धारण करने वाला मानव नियम से एक दिन भगवान बन जाता है। इस बात को बहुत ही सुन्दर ढंग से पूज्य माताजी ने लिखा है–

धागों को बुनने से परिधान बन जाता है।
ईटों को चुनने से मकान बन जाता है।।
गुणों को गुनने से गुणवान बन जाता है।
रत्नत्रय में रमने से मानव भगवान बन जाता है।।

दूसरे अध्याय में ''पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के स्वर्णिम व्यक्तित्व'' में पूज्य माताजी के जन्म का, वैराग्य का वर्णन किया है। पूज्य माताजी के क्रियाकलापों का विस्तृत वर्णन किया है। एक कवि ने पूज्य माताजी के बारे में लिखा है–

इनका कहना हम ज्ञान रखें, लेकिन चारित्र न खो डालें।
आचरण छूट जावे जिससे, हम ऐसा बीज न बो डालें।।
चारित्रहीन यदि ज्ञान मिला, तो बेड़ा पार नहीं होगा।
केवल कोरी इन बातों से, जग का उद्धार नहीं होगा।।

तीसरी अध्याय में 'शाश्वत तीर्थ अयोध्या में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक' विषय को लिया है। कब और किस प्रकार से पूज्य माताजी के मस्तिष्क में जम्बूद्वीप की रचना, तेरहद्वीप रचना के दर्शन एवं अयोध्या के भगवान ऋषभदेव के दर्शन एवं उनका महामस्तकाभिषेक करने की अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई, आदि का विस्तार से वर्णन किया है। हस्तिनापुर से अयोध्या की मंगल यात्रा का रोमांचक वर्णन किया है। अयोध्या तीर्थ की रक्षा के लिए अवध के भक्तों को पूज्य माताजी ने सुन्दर भजन के माध्यम से प्रेरणा प्रदान की–

निधियाँ कई दे दी हैं, अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।
आए थे कभी देशभूषण जी महामुनी।
जिनकी कृपा से ऋषभदेव मूर्ति है बनी।।

उपकार उनका लिख गया इस तीर्थ भाल पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।....

चतुर्थ अध्याय में ''मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा'' का वर्णन है। पूज्य माताजी ने मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के काफी निवेदन भरे पत्रों से हस्तिनापुर से मांगीतुंगी के लिए विहार किया और वहाँ पर कई वर्षों से रुकी हुई पंचकल्याणक को सानंद सम्पन्न कराया। हस्तिनापुर से मांगीतुंगी की मंगल यात्रा में आए हुए खट्टे-मीठे अनुभवों का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। जिसे पढ़कर लोगों को काफी अनुभव ज्ञान प्राप्त होगा और मांगीतुंगी यात्रा को याद करने का अवसर प्राप्त होगा। यद्यपि बीते हुए क्षण को हम वापस नहीं ला सकते लेकिन उसका इतिहास बनने के बाद उसे पुनः पुनः पढ़कर हम अपनी स्मृति को तरोताजा बनाते हैं।

पंचम अध्याय में 'ऐतिहासिक कार्यकलाप एवं प्राचीन तीर्थ प्रयाग का उद्भव' के बारे में विस्तृत वर्णन है। विरले ही प्राणी इतिहास को बनाते हैं, उनमें से श्री ज्ञानमती माताजी भी एक हैं, जिनके इतिहास को पढ़कर न जाने कितने श्रावक-श्राविका ज्ञानी बन गए हैं। इस बात को पूज्य माताजी ने एक भजन में लिखा है–

इतिहास बनाने वाले होते हैं विरले प्राणी।
इतिहास को पढ़कर फिर तो, बन जाते कितने ज्ञानी।।

सचमुच पूज्य ज्ञानमती माताजी एक ऐसी ऐतिहासिक नारी है, जिन्होंने अपने प्रत्येक कार्यकलापों के द्वारा जन-जन को प्रेरणाएँ प्रदान करके नए-नए इतिहासों का निर्माण किया है। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से किस तरह से करोड़ों वर्ष प्राचीन भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग का विकास हुआ, इसका विस्तृत वर्णन पूज्य चंदनामती माताजी ने किया है। पूज्य माताजी तीर्थों के विकास की, जीर्णोद्धार की प्रेरणा देती रहतीं हैं, लेकिन उनकी लेखनी नहीं रुकती है। तभी तो लोग यही कहते हैं कि माता जी साक्षात् सरस्वती की अवतार हैं। डॉ. कस्तूरचंद जैन कासलीवाल ने पूज्य माताजी की पहचान बताते हुए लिखा है–

ज्ञानमती माताजी तेरी यही निशानी।
एक हाथ में पिच्छी, दूजे में जिनवाणी।।

हस्तिनापुर, अयोध्या, प्रयाग आदि अनेक तीर्थों का विकास करवाने वाली तीर्थ प्रणेत्री माताजी के लिए पूज्य चंदनामती माताजी ने एक भजन में लिखा है–

इस तीर्थ प्रणेत्री माता का, यश युग-युग अमर रहेगा।
'चंदनामती' हर कवि इनका, पावन यशगान करेगा।।पावन.....
इस पुण्य से इनको तीर्थंकर पद, निश्चित शीघ्र मिलेगा।
ये हैं इतिहास प्रणेता।

छठे अध्याय में 'भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव'' के बारे में वर्णन है। सन् 2001 में 6 अप्रैल चैत्र सुदी तेरस को जब दिल्ली में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। उस समय पूज्य माताजी ने 2600 मंत्रों से समन्वित ''विश्वशांति महावीर विधान'' की रचना कर एक नूतन कृति भगवान महावीर के श्रीचरणों में समर्पित की पुनः उनकी भावना हुई कि अब भगवान महावीर की जन्मभूमि का विकास करना है। भगवान महावीर की

जन्मजयंती तो पूरे देश में खूब धूमधाम से मनाई जा रही थी लेकिन उनकी जन्मभूमि कुण्डलपुर नगरी उपेक्षित थी। पूज्य माताजी ने स्वयं संघ सहित कुण्डलपुर के लिए विहार किया। पूज्य चंदनामती माताजी के 'महावीर व्रत' का चमत्कार हुआ कि उन्हें कुण्डलपुर जाने का योग प्राप्त हुआ और भगवान महावीर की शासन देवी सिद्धायिनी माता ने पूज्य माताजी को अन्तर्प्रेरणा प्रदान कर कुण्डलपुर जाने के लिए शक्ति प्रदान किया आदि बातों का इस अध्याय में विस्तृत वर्णन किया है।

सातवें अध्याय में ''भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर विश्व के क्षितिज पर'' विषय का विस्तृत वर्णन है। जिस दिन पूज्य माताजी ने संघ सहित दिल्ली के इण्डिया गेट से कुण्डलपुर के लिए विहार किया। उस समय सभी के मुख से यही निकला कि अब भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास निश्चित है। कुण्डलपुर के मध्य आगरा, प्रयाग, बनारस, आरा आदि अनेक नगरों के महानुभाव, कुण्डलपुर तीर्थ के विकास में अपना तन-मन-धन अर्पित करने के लिए जुड़ते चले गए और फिर देखते ही देखते मात्र 22 माह में कुण्डलपुर में नूतन जिनमंदिरों के निर्माण एवं पंचकल्याणक आदि कार्यक्रम हुए। कुण्डलपुर से पावापुर, राजगृही, गुणांवा, शिखर जी आदि कई तीर्थों के दर्शन एवं पूज्य माताजी की प्रेरणा से इन तीर्थों पर नूतन निर्माण कार्य एवं पंचकल्याणक आदि सम्पन्न हुए जिनका विस्तृत वर्णन आपको इस अध्याय में पढ़ने को प्राप्त होगा।

आठवें अध्याय में ''भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव'' के बारे में वर्णन है। काफी दिनों से पूज्य माताजी के मन में भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव मनाने हेतु भावना चल रही थी अतः उन्होंने इस महोत्सव के उद्घाटन हेतु भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस में भगवान के जन्मकल्याणक दिवस की तिथि निश्चित कर दी और फिर कुण्डलपुर से विहार कर पूज्य माताजी वाराणसी पहुँची और वहाँ पर 6 जनवरी 2005 को विशेष धर्मप्रभावना के साथ भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का भव्य उद्घाटन कराया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पूज्य माताजी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। बनारस से विहार कर पूज्य माताजी प्रयाग पहुँचीं। प्रयाग से विहार कर अपनी जन्मभूमि टिकैतनगर पहुँची। वहाँ पर नूतन जिनमंदिर का पंचकल्याणक चमत्काररूप से पूज्य माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में ''विश्वशांति महावीर विधान'' का आयोजन पूज्य माताजी के सान्निध्य में हुआ और फिर अयोध्या नगरी में 3 अप्रैल 2005 को भगवान ऋषभदेव का महाकुंभ मस्तकाभिषेक पूज्य माताजी के सान्निध्य में विशाल स्तर से मनाया गया। अहिच्छत्र में पूज्य माताजी के सान्निध्य में 15 मई 2005 को तिखाल वाले बाबा मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं भगवान पार्श्वनाथ रथयात्रा का विशाल आयोजन किया गया। अहिच्छत्र से विहार कर पूज्य माताजी ने 25 मई 2005 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण किया।

इस अध्याय में ''भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव'' के साथ-साथ बहुत सारे विषयों का समावेश है, जिन्हें पढ़कर आप स्वयं समझ जाएंगे कि पूज्य माताजी अल्प समय में कितने बड़े-बड़े और महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करवा देती हैं। यही तो इनकी विशेषता है।

नवमीं अध्याय में ''दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य ज्ञानमती माताजी ने'' विषय को लिखा गया है। वास्तव में देखा जाए तो 18 वर्ष की अल्प आयु में घर का त्यागकर पूज्य माताजी ने

प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाया और त्यागमयी जीवन के 56 वर्ष पूर्ण किए अतः पूज्य माताजी में एक विशेष प्रकार का अतिशय उत्पन्न हो गया है। पूज्य माताजी के कार्यकलापों को देखकर लोग यही कहा करते हैं कि माताजी महान पुण्यशालिनी हैं और उसी पुण्य के बल पर इनके द्वारा इतने बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। पूज्य माताजी ने अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करके घट में बूंद-बूंद जल की भांति पुण्य को अर्जित किया है।

पूज्य चंदनामती माताजी ने पूज्य ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष की पूर्णता पर दीक्षा स्वर्ण जयंती के अवसर पर पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए लिखा है-'वास्तव में ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व के लिए कुछ भी कहना गंगा का जल गंगा को ही अर्पित करने के सदृश है। अतः उन संस्कृति संरक्षिका, तीर्थोद्धारिका माताजी के चरणों में बारम्बार नमन करते हुए उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करती हूँ–

त्याग तपस्या की मूरत तुम, ज्ञान ध्यान की प्रतिमा हो।
कलियुग की सुकुमार तपस्वी, नारी की गुण गरिमा हो।।
ब्राह्मी माँ के पदचिन्हों पर, चलकर लुटा रहीं चंदन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी, स्वीकार करो मेरा वंदन।।

वास्तव में देखा जाए तो सन् 1969 से जिन्होंने पूज्य माताजी का सान्निध्य एवं आशीर्वाद प्राप्त किया है, उनके जीवन का एक-एक क्षण देखा है तभी तो इतने विस्तृत रूप में इस ग्रंथ को लिखकर समाज को एक अनुपम कृति प्रदान की है। जिसे पढ़कर मानव त्यागमार्ग की ओर उन्मुख होकर अवश्य ही अपने जीवन का उत्थान करेगा।

ग्रंथ के दशवें-अंतिम अध्याय में ''ज्ञानमती माताजी की कतिपय उपलब्धियाँ'' प्रदर्शित की गई हैं। यह अध्याय सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। सन् 1965 में श्रवणबेलगोल तीर्थ पर भगवान बाहुबली के चरण सान्निध्य में 15 दिन तक लगातार ध्यान करते हुए पूज्य माताजी को ध्यान में जम्बूद्वीप, तेरहद्वीप के साक्षात् दर्शन हुए, इस विषय को लिखते हुए हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की रचना, जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति रथ का प्रवर्तन, जम्बूद्वीप महामहोत्सव, दिल्ली में 24 कल्पद्रुम महामण्डल विधान का विहंगम दृश्य, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ एवं ऐरावत हाथी रथ का भारत भ्रमण, ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव का आयोजन, दिल्ली में 26 विश्वशांति महावीर मण्डल विधान का आयोजन, भगवान ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल एवं कई जिनमंदिर के निर्माण, 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास की प्रेरणा आदि अनेक विषयों का वर्णन करने के बाद पूज्य चंदनामती माताजी ने लिखा है–जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सर्वोदयी व्यक्तित्व शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि इन्होंने युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका के रूप में अनेक मुनि-आर्यिकाओं को क्लिष्टतम ग्रंथों का अध्ययन कराकर त्यागमार्ग की ऊँचाईयों को प्राप्त कराया, अपनी लेखनी से विपुल साहित्य की रचना कर कुन्दकुन्द आदि आचार्य एवं ब्राह्मी-सुन्दरी, सुलोचना आदि आर्यिकाओं का स्मरण कराया, अनेक तीर्थों के उद्धार एवं विकास की प्रेरणा देकर स्वामी अकलंक देव, आचार्य समंतभद्र का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा संस्थाओं के प्रति निस्पृह भाव अपनाकर आचार्यश्री शांतिसागर, वीरसागर महाराज का त्यागमयी आदर्श प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार इन दश अध्यायों में विषय वस्तु को विभक्त करके बहुत ही सुन्दर, सरल एवं रोचक ढंग से इस ग्रंथ को तैयार किया गया है। इस ग्रंथ को शुरू करने के बाद आद्योपांत पढ़ने का ही मन करेगा। इसकी प्रूफरीडिंग के माध्यम से मुझे भी इसे पुनः पुनः पढ़ने का सौभाग्य मिला है और काफी अनुभव ज्ञान प्राप्त हुआ है।

मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूँ कि मुझे भी पूज्य माताजी के परिवार में जन्म मिला। सन् 1988 से पूज्य माताजी की छत्रछाया में रहने का, उनका वरदहस्त-आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। इन 22 वर्षों में पूज्य माताजी के चरण सान्निध्य में रहकर मैंने यही सीखा कि हमें अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करना है क्योंकि बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आ सकता है। दूसरी बात गुरु के अनुशासन में रहकर ही प्रत्येक कार्य को करना है। गुरु जो कहे सो करना, जो करे सो नहीं। कितना भी ज्ञान क्यों न हो जाये लेकिन अगर बड़ों की विनय करना नहीं सीखा तो सब कुछ व्यर्थ है। विनय, नम्रता, सरलता, मधुरता आदि गुणों को अपने जीवन में धारण करना है। पूज्य माताजी हमेशा यही शिक्षा देती हैं कि कषायों को कभी बांधकर नहीं रखना चाहिए। क्रोध का आना बुरा नहीं है लेकिन क्रोध को बांधकर रखना बुरा है। ईर्ष्या-द्वेष से हमें दूर रहना है। कषाय की बहुलता संसार का कारण है।

ऐसे महान, पंचमकाल में दुर्लभ सच्चे गुरुओं की भक्ति, आहारदान, वैय्यावृत्ति ही हमें संसार समुद्र से पार करायेगी। इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखते हुए मुझे परम आल्हाद एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है, क्योंकि पुनः पुनः पूज्य माताजी के जीवन वृत्त को पढ़ने का सुअवसर मिला है। मैं पूज्य माताजी के प्रति विनय भक्ति करते हुए यही प्रार्थना करती हूँ कि हे माताजी! जब तक मुझे मुक्ति की प्राप्ति न हो, आपका सम्बोधन मिलता रहे। मैं आपके चरणों की धूलि बनूँ। आपके गुण मुझमें विकसित हों। इस कलियुंग में भी आपने जिस तरह से जिनधर्म की प्रभावना की है, भगवान की भक्ति करते हुए तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का विकास कर महान पुण्य का संचय किया है उसी तरह मैं भी आपकी वंश परम्परा को वृद्धिंगत करूँ, यही मेरी मंगल भावना है।

पारस पत्थर तो लोहे को सोना बनता है लेकिन आप वह पारस पत्थर हैं, जो लोहे को सोना ही नहीं पारस बना देती हैं। गुरु भक्ति करने वाला मानव एक दिन संसार से पार हो जाता है। कहा भी है–

गुरु भत्ति संजमेण य तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण मरणं ण पावेंति।।

अंत में मैं परमपूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की जिनेन्द्र देव से प्रार्थना करती हूँ एवं विनयपुष्प समर्पित करते हुए युगल चरणों में कोटिशः नमन करती हूँ–

है यही प्रार्थना जिनवर से, ये प्रभा सदा दिन दूनी हो।
भारत माता की गोदी, इन माता से कभी न सूनी हो।।

चरित्र नायिका

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(22 अक्टूबर 1934)

गृहस्थ का नाम– कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग– ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में।

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

नोट - इनका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ से आप जानिये।

ग्रंथ की मूल (हिन्दी चरित्र) लेखिका, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– बाल ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी– सौ शांति देवी, सौ. श्रीमती देवी, कुमुदनी देवी, सौ. मालती देवी, सौ. कामनी देवी एवं सौ. त्रिशला जैन)

लौकिक शिक्षा– हाईस्कूल

गुरुसंघ में आगमन एवं दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत– 25 अक्टूबर सन् 1969, जयपुर (राज.) में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत– सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की परीक्षा देकर उपाधि प्राप्त की।

द्वितीय प्रतिमा, सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी माताजी से।

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. ग्यारस को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, कल्याण मंदिर विधान, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, पंचकल्याणक तीर्थ विधान, दशलक्षण विधान, समयसार विधान, सप्तऋषि विधान, वास्तु विधान आदि शताधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित ''षट्खण्डागम की संस्कृत टीका एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (लगभग 500), पूजन, आरती, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, बारह भावना तथा अनेक पूजाओं की लेखिका, महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी-टीका लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के श्रीचरणों में नमन करते हुए भगवान जिनेन्द्र से यह प्रार्थना है कि पूज्य माताजी दीर्घकाल तक स्वस्थ रहें तथा उनकी रत्नत्रय साधना निराबाध चलती रहे, ताकि भूले-भटके संसारी प्राणियों को सम्यक्बोध की प्राप्ति होती रहे।

गणिनी ज्ञानमती चरितम् के संस्कृत चरित्रलेखक

डॉ. प्रकाशचंद जैन-साहिबाबाद का संक्षिप्त परिचय

नाम –प्रकाशचंद जैन

पिता का नाम –स्वर्गीय दीपचंद जैन

जन्म स्थान –जलालाबाद

जिला –मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

जन्मतिथि –8 जनवरी 1937

शैक्षणिक योग्यता –साहित्याचार्य, स्याद्वाद संस्कृत महाविद्यालय में अध्ययन करते हुए
एम.ए.-हिन्दी, संस्कृत
बी.एड.-साहित्यरत्न
विद्या वाचस्पति

अध्यापन अनुभव –

1. कैमोर हायर सेकेण्ड्री स्कूल, कैमोर, मध्यप्रदेश
2. विदुर गुरुगृह इंटर कॉलेज, दारानगर (बिजनौर-उ.प्र.)-प्राचार्य
3. एस.ए. जैन कॉलेज, अम्बाला सिटी
4. श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय, दरियागंज, दिल्ली-प्राचार्य
5. शास्त्री आचार्य कक्षाओं को 30 वर्ष तक साहित्य एवं जैन दर्शन अध्यापन

लेखन कार्य –

विशेषावश्यक-महाभाष्य, हिन्दी अनुवाद
गणिनी ज्ञानमती चरितम्

(17)

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा भूमि

माधोराजपुरा-एक धार्मिक स्थल

लेखक-भँवर सेठी 'झुमर', माधोराजपुरा

गुलाबी नगरी जयपुर के निकट बसा माधोराजपुरा कस्बा एक धार्मिक स्थल है। लगभग 200 वर्ष पुराने विशाल और भव्य तीन जैन मंदिर तथा पास ही एक किलोमीटर दूर झराना में स्थित अतिशययुक्त एक पद्मप्रभु जिनालय है शांत और रमणीक उपासना स्थल माधोराजपुरा की एक नशिया के रूप में है। इसके अतिरिक्त विशाल शिवमंदिर और वैष्णव मंदिर इस बात को प्रमाणित करते हैं कि पूर्व में जैन धर्मावलम्बी और वैष्णव धर्मावलम्बी एक साथ मिलजुल कर रहते थे।

कहा जाता है कि लगभग दो सदी पूर्व, पास ही के एक छोटे से गाँव में एक राजसिंह नाम के व्यक्ति रहते थे। यह क्षत्रिय एक बहादुर व्यक्ति था। किन्तु आजीविका के उपयुक्त साधन न होने के कारण डाके डालता था। इनकी इस करतूत से जयपुर राज्य के तत्कालीन शासक महाराजा माधोसिंह बहुत चिंतित थे। अवसर देखकर एक बार उन्होंने अपने दरबार में जयसिंह को बुलाया और ऐसा निन्दित कर्म न करने के लिए समझाया। फलस्वरूप जयसिंह ने भी ऐसे घृणित कार्य को न करना स्वीकार किया, किन्तु अपनी आजीविका की मजबूरी जाहिर की, अतः महाराज माधोसिंह ने ग्राम झिराना की रियासत से काटकर एक गाँव उसे जागीर में दिया, जिसका नाम दोनों शासकों के नाम के आधार पर माधोराजपुरा रखा गया। यहाँ पर बसने के लिए आसपास के कुशल व्यापारियों, कृषकों, कारीगरों, पंडितों आदि को आमंत्रित किया गया और उन्हें भूमि व अन्य सहयोग देकर यहाँ बसाया गया। इन लोगों ने सुविधा का लाभ उठाकर यहाँ पर अपने आवास व बाजार बनाये। व्यापारियों में कुशल व्यापारी, कुशल पंडित, कुशल कारीगरों के समूह आज भी इस कस्बे में निवास करते हैं और क्षेत्र में अपना रुतबा रखते हैं।

एक और विशेषता इस कस्बे की बसावट में लाई गई, वह है इसे प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर की तर्ज पर बसाना। यह कस्बा एक निर्धारित प्लान के अनुसार बसा हुआ है। जिसमें राजकीय आवास के रूप में एक विशाल किले का निर्माण किया गया है, जिसके चारों ओर मुख्य परकोटे के नीचे गहरी खाई है। किले के सामने सीधा चौड़ा बाजार बनाया गया है और बाजार को 2 भागों में विभक्त करते हुए बीच में चोपड़नुमा कटला का निर्माण किया गया है, जिसके बीच में एक विशाल चौक और दो विशाल मंदिर हैं, जो पूर्व स्थापत्य कला के अनुसार मनोहर हैं। मुख्य बाजारों से पूरे कस्बे के चारों ओर के छोरों पर सीधे और चौड़े रास्ते बनाये गये हैं, जो बाजारों से आकर मिलते हैं। ठीक जयपुर की तरह इस कस्बे का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ हर जाति समूहों के लिए भिन्न-भिन्न ब्लाक काटे गये हैं, जहाँ पर सम्पूर्ण पक्के मकानों और विशाल हवेलियों में विभिन्न जाति के लोग बसे हुए हैं। गाँव के चारों ओर चार कच्चे दरवाजों के साथ-साथ चारों ओर विशाल परकोटे हैं, जिसके नीचे भी गहरी खाई है। किन्तु अब ये काफी जीर्ण-शीर्ण हो चुके हैं, फिर भी अच्छी तरह देखे जा सकते हैं।

माधोराजपुरा एक विशाल व्यापारिक मण्डी भी रहा है। जहाँ आस-पास के गाँवों से सैकड़ों

गाड़ियाँ रोज आकर बाजार में बिकती थीं। आज के पचास वर्ष पहले तक बाजारों में गाड़ियों की भारी भीड़ रहती थी। समय के परिवर्तन के अनुसार मण्डी का कार्य भी काफी कमजोर पड़ गया था।

किन्तु सन् 1997 से जब से पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरण इस नगरी में पड़े हैं, तब से पुनः मण्डी का कार्य अच्छी प्रगति पर चलने लगा है।

यह क्षेत्र जैनियों की आबादी के लिहाज से अति महत्वपूर्ण है। माधोराजपुरा के आसपास फागी, चोरू, मौजमाबाद, रैनवाल, पीपला आदि कस्बों में दिगम्बर जैन समाज की सघन आबादी है और अनेक भव्य मंदिर निर्मित हैं। इसके अतिरिक्त छोटे गाँवों में भी जहाँ दो-चार घर जैनियों के हैं, हर गाँव में जैन मंदिर बने हुए हैं। अधिकांश गाँवों को जैन निवास कहते हैं और जैन मंदिर भी हैं। इस की सूची काफी बड़ी हो सकती है।

इस क्षेत्र की एक विशेषता यह भी है कि आसपास के बड़े नगर भी जैन समाज के केन्द्र है, जिनमें दि. जैन आबादी का बाहुल्य है। ये हैं जैननगर-जयपुर, सांगानेर, अजमेर, टोंक, मालपुरा, चाकसू, निवाई आदि।

इन क्षेत्रों में बसने वाले अग्रवाल समाज के 90 प्रतिशत लोग दिगम्बर जैन धर्म को मानने वाले हैं।

प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा) भी यहाँ से केवल 40 किमी. दूर है।

यहाँ के मंदिरों में जहाँ भव्यता और निर्माणकला का आकर्षण है, वहाँ अनेक मंदिरों में भारी जैन वाङ्मय भी उपलब्ध है। कई प्राचीन हस्तलिखित शास्त्र मंदिरों में सुरक्षित हैं। एक योजना के अनुसार क्षेत्र के जैन मंदिरों और शास्त्रागारों की सूची तैयार की गई थी, जो एक विशाल पुस्तक के रूप में छपकर आज भी जयपुर में भट्टारक जी की नशियाँ में उपलब्ध है।

आज भी याद है हमें वह शुभ और पावन दिन, जिस दिन एक गौरवमयी गाथा का शुभारंभ हुआ था अर्थात् आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख, प्रख्यात विदुषी 105 श्री ज्ञानमती माताजी का आर्यिका दीक्षा ग्रहण संस्कार अपूर्व उल्लास और समारोह के साथ कस्बा माधोराजपुरा में हुआ था।

दीक्षा गुरु थे–मुनिसंघ शिरमौर्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 108 वीरसागर जी महाराज और संघस्थ मुनिवर थे-108 श्री शिवसागर जी महाराज, 108 श्री धर्मसागर जी महाराज, 108 श्री नेमिसागर जी महाराज, 108 श्री पदमसागर जी महाराज तथा अन्य आर्यिकागण एवं ब्रह्मचारीगण।

वैशाख का महीना, कृष्ण पक्ष की द्वितीया, विक्रम संवत् 2013–आचार्य वीरसागर महाराज, जैन दर्शन और अध्यात्म के परम उत्कृष्ट विद्वान, सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्र से विभूषित, महान तपोनिधि, वीतरागी और समताभावी संत, जिन्होंने परखा एक हीरे को, उसके मौलिक गुणों को और तरासी गई आभा को और उसे चुना था आर्यिका दीक्षा के लिए।

यह हीरा थीं-टिकैतनगर, जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री छोटेलाल तथा श्रीमती मोहिनी देवी (धर्मपरायण नारी जो आर्यिका रत्नमती जी के नाम से विख्यात हुईं) की सुपुत्री मैना देवी। ये बालपन से ही धर्म अध्यात्म में रुचि रखने वाली एक होनहार बालिका थीं, जिन्होंने 18 वर्ष की अल्पायु में ही संसार का मोह त्याग कर सप्तम प्रतिमा धारण कर ली थी और सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा ले ली थी-नाम रखा गया था वीरमती। इसके बाद सन् 1956 में ही ये क्षुल्लिका वीरमती आचार्यप्रवर श्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा में दीक्षा प्राप्त कर आर्यिकारत्न ज्ञानमती माताजी बनीं।

यह हीरा जिसकी अद्भुत आभा ने सारे संसार को चमत्कृत कर दिया। जिनको अनेक उपमाओं और नामों से अलंकृत किया गया, जिन्होंने सतत अध्ययनरत रहकर अनेकों ग्रंथों की रचना कर डाली और कई महत्वपूर्ण अध्यात्म ग्रंथों के सरल अनुवाद किये। जिनकी प्रेरणा से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर जैसे कई दर्शनीय तीर्थस्थलों का निर्माण और विस्तार हुआ। जिन्होंने कई मंडल विधानों की रचना कर जिनेन्द्र भक्ति के निमित्त अनेकों अनुष्ठानों का विधि-विधान तैयार किया। जिन्होंने ज्ञानज्योति प्रवर्तन कराकर 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में यात्रा आयोजित कर, धर्मप्रभावना के साथ-साथ अद्वितीय ख्याति प्राप्त की। जिनके पद वन्दन के लिए देश के शीर्षस्थ पदासीन राजनेताओं, अनेक धन सम्पन्न सेठ साहूकारों, अनेक विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों जैसी विभूतियों की भीड़ लगी रहती है।

सन् 1956 में माधोराजपुरा (तह. फागी, जिला-जयपुर, राजस्थान) कस्बे में आसपास का भारी जनसमूह उमड़ रहा था। आसपास का सारा जैन समाज एकत्रित था। मुनिसंघ के दर्शनों के साथ-साथ धर्मप्रभावना का दौर जारी था, इसी के साथ आया माता ज्ञानमती जी की दीक्षा का दिन।

दीक्षा के पहले दिन माताजी की विशाल शोभायात्रा आयोजित की गई और नर-नारियों ने उनकी शोभायात्रा पर फूलों की वर्षा करके उल्लास और सम्मान प्रकट किया तथा गाजे-बाजे के साथ भजन-नृत्य करते हुए नगर परिक्रमा की।

दूसरे दिन मुख्य बाजार के छोर पर किले के विशाल मैदान में एक विशाल पाण्डाल सजाया गया। हजारों नर-नारियों के बीच पाण्डाल में मुनिसंघ विराजमान था। भजन नृत्य आदि कार्यक्रम सम्पन्न किए जा रहे थे और दीक्षा संबंधी कार्यक्रम सम्पन्न कराया जा रहा था कि अचानक एक अद्भुत घटना घटी। एक सांड (बैल) आया, जिसके एक सींग में गुड़ की भेली फंसी हुई थी। यह भीड़ को चीरता हुआ तेजी से पाण्डाल में मुनिसंघ के समीप मंच तक पहुँच गया। पाण्डाल में खलबली मच गई, क्योंकि सांड जैसे जानवर काफी उद्दण्ड और मारक होते हैं। किन्तु आचार्यश्री के संबोधन से पाण्डाल में बैठे लोग शान्त हो गये और आश्चर्य से साँड की तरफ देखने लगे। साँड मंच के पास तेजी से उद्विग्न अवस्था में पहुँचा किन्तु मंच के पास पहुँचते ही शान्त होकर खड़ा रहा। सभी मुनिराजों की तरफ देखा। हो रहे दीक्षा संस्कार पर नजर डाली और शान्त कदमों से मंच के एक छोर से दूसरे छोर तक, नतमस्तक होकर पाण्डाल के बाहर निकल गया। सांड के सींग में फंसी हुई गुड़ की भेली भी मंच के पास गिर गई, मानों उसने यह गुड़ की भेली भावों से मुनिराजों को समर्पित की हो। यह सब देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा उद्दण्ड जानवर इस प्रकार शान्त होकर कैसे निकल गया?

इसी तरह की एक और घटना को भी लोग चमत्कार ही मानते हैं। जो इस प्रकार है–

दीक्षा संस्कार को देखने के लिए आसपास के श्रावकों के साथ-साथ टोंक, मालपुरा, केकड़ी, फुलेरा और जयपुर तथा जहाँ-जहाँ स्थानीय लोगों की रिश्तेदारियाँ थीं, वहाँ से काफी संख्या में आकर श्रावक जन एकत्रित हो गये थे। सभी आगन्तुक श्रावकों के लिए सहभोज की व्यवस्था की गई थी। स्थानीय प्रबंधकों को यह आशा नहीं थी कि इतना भारी श्रावक समुदाय इसमें उमड़ पड़ेगा। सामान्यतः ऐसे आयोजन तो होते ही रहते हैं, उतनी ही संख्या का अनुमान लगाकर भोजन की व्यवस्था की गई थी। लेकिन इतनी अधिक संख्या को देखकर स्थानीय व्यवस्थापकों को भोज्य पदार्थों में कमी पड़ जाने की चिंता उत्पन्न हो गई। तुरंत विशेष व्यवस्था के लिए प्लान बनाया गया। बात आचार्य वीरसागर जी तक भी पहुँच गई। महाराज ने स्थानीय व्यवस्थापकों को मंच पर बुलाया

और एक सफेद चादर की मांग की। चादर लाई गई। आचार्य श्री ने उसे अभिमंत्रित किया और व्यवस्थापकों को सौंपते हुए कहा कि आप इस चादर को भंडार गृह में ले जाकर डाल दें और सारी विशेष व्यवस्था की चिंता छोड़कर आराम से श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम को देखें। कोई कमी नहीं आयेगी। आचार्यश्री का आदेश पाकर लोग निश्चिन्त हो गये। फिर भी लोगों के मन में यह शंका थी कि कहीं बात खराब न हो जाये। किन्तु आश्चर्य की बात है कि सारा कार्य आराम से निबट गया। अच्छी तरह भोज का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया और किसी भी प्रकार की कमी महसूस नहीं की गई।

माताजी का दीक्षा संस्कार मंच पर सम्पन्न कराया जा रहा था और यह दीक्षा मंडप वटवृक्ष के नीचे बना था, जो कि शायद इसी बात का द्योतक था कि आज से करोड़ों वर्ष पूर्व भगवान ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को जीवन्त किया था, उसी क्रम में वटवृक्ष के नीचे वाली यह दीक्षा भी किसी महत्वपूर्ण तथ्य का संकेत थी और वह था-बीसवीं शताब्दी में उनके द्वारा होने वाला प्रत्येक कार्य अपने आप में अद्वितीय और सर्वप्रथम कार्य होता है, फिर चाहे वह लघु हो अथवा वृहद्। दीक्षा के समय माताजी के चेहरे पर अभूतपूर्व प्रसन्नता और उत्साह झलक रहा था। जय-जयकार के शब्दों से पाण्डाल गुंजायमान हो रहा था। दीक्षा के समय माता-पिता बनाये जाते हैं, इनका स्थान लिया था स्थानीय स्व. सेठ श्री सागरमल रांवका और उनकी श्रीमती ने। जिनके सुपुत्र संतोष कुमार रांवका आज भी सपरिवार माताजी के प्रति अनन्य श्रद्धाभाव रखते हैं और उनके दर्शनार्थ जाते-आते रहते हैं।

बहुत समय बीत गया। समारोह को सम्पन्न कराने और शामिल होने वाले अधिकांश श्रावक-श्राविकाएँ दिवंगत हो चुके हैं। किन्तु श्री गुलकंद बाकलीवाल, भँवरलाल सेठी, रतनलाल कासलीवाल, लक्ष्मी नारायण बोहरा, रतनलाल पापड़ीवाल, मोतीलाल चाँदवाड़, रामस्वरूप चौरया वाले तथा चेतनलाल कांगला आदि आज भी मौजूद हैं, जिन्होंने इस दीक्षा समारोह को अपनी आँखों से देखा था और हर कार्यक्रम के सहयोगी भी बने थे। वैसे अगली पीढ़ी के युवकों में भी इसकी धुँधली यादें शेष है।

हमें इस बात पर गर्व है कि आज समाज और सम्पूर्ण देश में विख्यात परमविदुषी, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षा संस्कार यहाँ पर हुआ है। इस पुनीत कार्य से यह स्थान पावन और तीर्थस्थल रूप बन गया है।

हमारी अभिलाषा है कि इस स्थान पर माताजी की दीक्षा की स्मृति में एक भव्य जिनालय और स्मृति संस्थान का निर्माण कराया जाये। जिसके लिए आवश्यक प्लान तैयार करके भूमि अधिग्रहण कर ली गई और गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ पर निर्माण कार्य चालू किया गया।

तीर्थ पर एक छोटी सी पहाड़ी बनाकर ऊपर भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गई है। इसके साथ ही 24 तीर्थंकर भगवन्तों की मूर्तियाँ भी पर्वत पर विराजमान करके दिनाँक 21 नवम्बर 2010 से 26 नवम्बर 2010 (तिथि कार्तिक शु. पूर्णिमा से मगसिर कृष्णा पंचमी तक) पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न हो रहा है। यह हम सभी नगरवासियों के लिए अत्यन्त गौरव की बात है।

माधोराजपुरा कस्बे में विशाल और भव्य तीन जैन मंदिर हैं और एक नशियाँ झराना में हैं लगभग 50 घर दिगम्बर जैनों के हैं। क्षेत्र के श्रावकों में माताजी के प्रति पूर्ण श्रद्धा है, जो कि सदैव तक बनी रहेगी और शीघ्र ही दीक्षा स्मृतिरूप तीर्थ निर्माण के साथ यह क्षेत्र एक दर्शनीय तीर्थस्थल के रूप में विख्यात होगा, ऐसी तपःपूत माताजी को संपूर्ण माधोराजपुरा की ओर से वन्दन-अभिवंदन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

प्रस्तुत ग्रंथ के संदर्भ में

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सम्पूर्ण जैन समाज की एक ऐसी अमूल्य निधि हैं, जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को युगों-युगों तक स्मरण किया जायेगा।

इनके प्रति एक कवि की ये दो पंक्तियाँ साकार हो रही हैं-''राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।'' इसी प्रकार से जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण सम्यग्दर्शन-ज्ञान और चारित्र की नित्य नूतन उपलब्धिपूर्ण रहा है, उन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के जीवनवृत्त को यद्यपि लेखनीबद्ध करना अशक्य है, फिर भी हम लोगों का यह लघुप्रयास सागर के जल से सागर को संतर्पित करने के समान ही है।

सन् 2006 में पूज्य श्री का आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव जैन समाज के लिए प्रथम स्वर्णिम सौभाग्यमयी अवसर लेकर आया था, जब किसी दिगम्बर जैन साध्वी ने अपनी बड़ी–आर्यिका दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण किये थे। उस समय 14 से 16 अप्रैल तक (वैशाख कृ. एकम से तृतीया तक) हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर जहाँ श्रद्धालु भक्तों का अपूर्व जनसैलाब उमड़ा, वहीं दिगम्बर जैन समाज की सम्पूर्ण प्रमुख संस्थाओं ने एकत्रित होकर अपनी इस अद्वितीय निधि का मूल्यांकन किया, दक्षिण भारत से समस्त भट्टारकों का पदार्पण हुआ और उन सबकी उपस्थिति में सम्पन्न हुए ''भट्टारक सम्मेलन'' ने एक अमिट छाप छोड़ी, जिससे उत्तर-दक्षिण का पुनः सामीप्य संबंध जुड़ा।

उस स्वर्णिम महोत्सव के समय विद्वद्वर्ग के निर्णयानुसार एक वृहत्काय ग्रंथ ''गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ'' (1200 पृष्ठीय–रंगीन चित्र के 150 पृष्ठों सहित) प्रकाशित करके पूज्य माताजी के करकमलों में समर्पित किया गया। इसी महोत्सव के संदर्भ में प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन आदि वरिष्ठ विद्वानों ने मुझसे निवेदन किया कि माताजी! आप दीर्घकाल से पूज्य बड़ी माताजी के सर्वाधिक नजदीक रहकर उनके अलौकिक जीवन की प्रत्यक्षदर्शी बनी हैं अतः आप उनका प्रामाणिक विस्तृत जीवन परिचय अवश्य लेखनीबद्ध करें। तब मैंने यथासंभव प्रयास करके ''चारित्रचन्द्रिका'' नाम से एक लघु ग्रंथ (472 पृष्ठीय) का सृजन किया और पूज्य माताजी के करकमलों में समर्पित होकर वह ग्रंथ कमलपत्र पर पड़ी जलबूंद को मोती के समान प्रतिभासित करने सदृश मुझे आल्हादकारी प्रतीत हुआ। यह ग्रंथ ''चारित्रचक्रवर्ती'' (पं. सुमेरचंद्र दिवाकर द्वारा प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज पर लिखित) के समान समाज में लोकप्रिय एवं पठनीय बनाई।

चारित्रचन्द्रिका ने ही गणिनी ज्ञानमती चरितम् का रूप धारण किया है।

सन् 2008 में जैन समाज के वरिष्ठ संस्कृतज्ञ विद्वान् डॉ. प्रकाशचंद जैन-साहिबाबाद (उ.प्र.) ने मेरे समक्ष पूज्य ज्ञानमती माताजी के जीवन पर कुछ संस्कृत साहित्य लिखने का भाव व्यक्त किया और मुझसे तत्संबंधित सामग्री देने का निवेदन किया, तब मैंने उन्हें कुछ उपलब्ध साहित्य प्रदान किया। उसमें से उन्होंने सारा पढ़कर ''चारित्रचन्द्रिका'' पुस्तक पसन्द की और उसी के आधार से अपनी लेखनी चलाने का निर्णय लिया और चारित्रचन्द्रिका पुस्तक का शब्दशः संस्कृत अनुवाद करके

मुझे प्रदान किया और साथ में यही कहा कि माताजी! जो कुछ आपने लिख दिया है, उससे अधिक भला मैं और अलग से क्या लिख सकता हूँ? मैंने इसका अवलोकन किया पुनः यही निर्णय लिया गया कि उनके द्वारा परिश्रमपूर्वक संस्कृत में अनुवाद किये गये इस ग्रंथ को ''गणिनी ज्ञानमती चरितम्'' के रूप में संस्कृत-हिन्दी दोनों को समाविष्ट करके प्रकाशित किया जावे।

हिन्दी का पूरा चारित्र तो जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में ज्ञानमती नेटवर्क के कम्प्यूटर में सुरक्षित था ही, संस्कृत का मैटर कम्प्यूटराइज करवाकर डॉ. प्रकाशचंद जी ने स्वयं दो बार प्रूफ संशोधन किया, पुनश्च संघस्थ आर्यिका सुव्रतमती ने प्रूफ देखा अंत में फाइनल प्रूफ में मैंने अनेक स्थानों पर भूल से छूट गए कुछ प्रकरणों का संस्कृत में अनुवाद करके इसे यथासंभव पूर्णता प्रदान की। इन सब कार्यों में लगभग एक वर्ष का समय लग गया, क्योंकि इस मध्य अनेक धर्मप्रभावना के कार्यों का, अन्य साहित्यिक कृतियों के सृजन आदि की व्यस्तता रही। अब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा से पवित्र माधोराजपुरा (राज.) नगरी में वहाँ की दिगम्बर जैन समाज की भावनानुसार निर्मित किये गये ''गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ'' पर दिनाँक 21 नवम्बर से 26 नवम्बर 2010 (वी. नि.सं. 2537-तिथि कार्तिक शु. पूर्णिमा से मगसिर कृ. पंचमी तक) आयोजित हो रहे भगवान पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर इस ग्रंथ का प्रकाशन सोने में सुगंध की तरह लग रहा है।

जहाँ ज्ञानमती माताजी जैसी सर्वप्राचीन वरिष्ठतम गणिनी माता की आर्यिका दीक्षा हुई और प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज ने सन् 1956 में प्रथम क्वांरी कन्या को (क्षुल्लिका वीरमती को) आर्यिका दीक्षा देकर ब्राह्मी और चन्दना का इतिहास जीवन्त किया। उस नगरी की जनता को सदैव अपने सौभाग्य पर गर्व रहता है।

मैंने तो माधोराजपुरा की जनता के उत्साह और अपनत्व को सन् 1997 में अपनी आँखों से देखा है, जब पूज्य माताजी का मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से दिल्ली की ओर विहार चल रहा था, तो मध्य में पदमपुरा अतिशय क्षेत्र की वंदना के पश्चात् वे ससंघ माधोराजपुरा पधारीं, तो जैन समाज के साथ-साथ अन्य सभी सम्प्रदाय के लोगों ने अभूतपूर्व गुरुभक्ति का परिचय दिया था। उसी समय सभी लोगों ने मिलकर वहाँ मेनरोड की एक भूमि पर दीक्षा तीर्थ निर्माण हेतु शिलान्यास कराया और अब वह तीर्थ बनकर तैयार हो चुका है। भगवान पार्श्वनाथ के गर्भकल्याणक दिवस वैशाख कृ. दूज को ज्ञानमती माताजी की दीक्षा हुई थी इसीलिए तीर्थ पर मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट खड्गासन प्रतिमा विराजमान करके चौबीसों तीर्थंकर की भी प्रतिमाओं की भी प्रतिष्ठा हो रही है। इन समस्त जिनबिम्बों से समन्वित एवं युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पवित्र दीक्षा भूमि माधोराजपुरा नगरी वास्तव में हम सभी के लिए प्रणम्य है।

''गणिनी ज्ञानमती चरितम्'' ग्रंथ को पढ़कर आप सभी पूज्य माताजी के त्यागमयी जीवन से शिक्षा ग्रहण करें, यही मंगल कामना है। ग्रंथ के संस्कृत चरित्र लेखक डॉ. प्रकाशचंद जैन के लिए वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद है और उनके लिए यही प्रेरणा है कि अपने संस्कृत ज्ञान का सदुपयोग इसी प्रकार देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में करते रहें।

इत्यलं विस्तरेण

अध्याय-1

आर्यिका चर्या

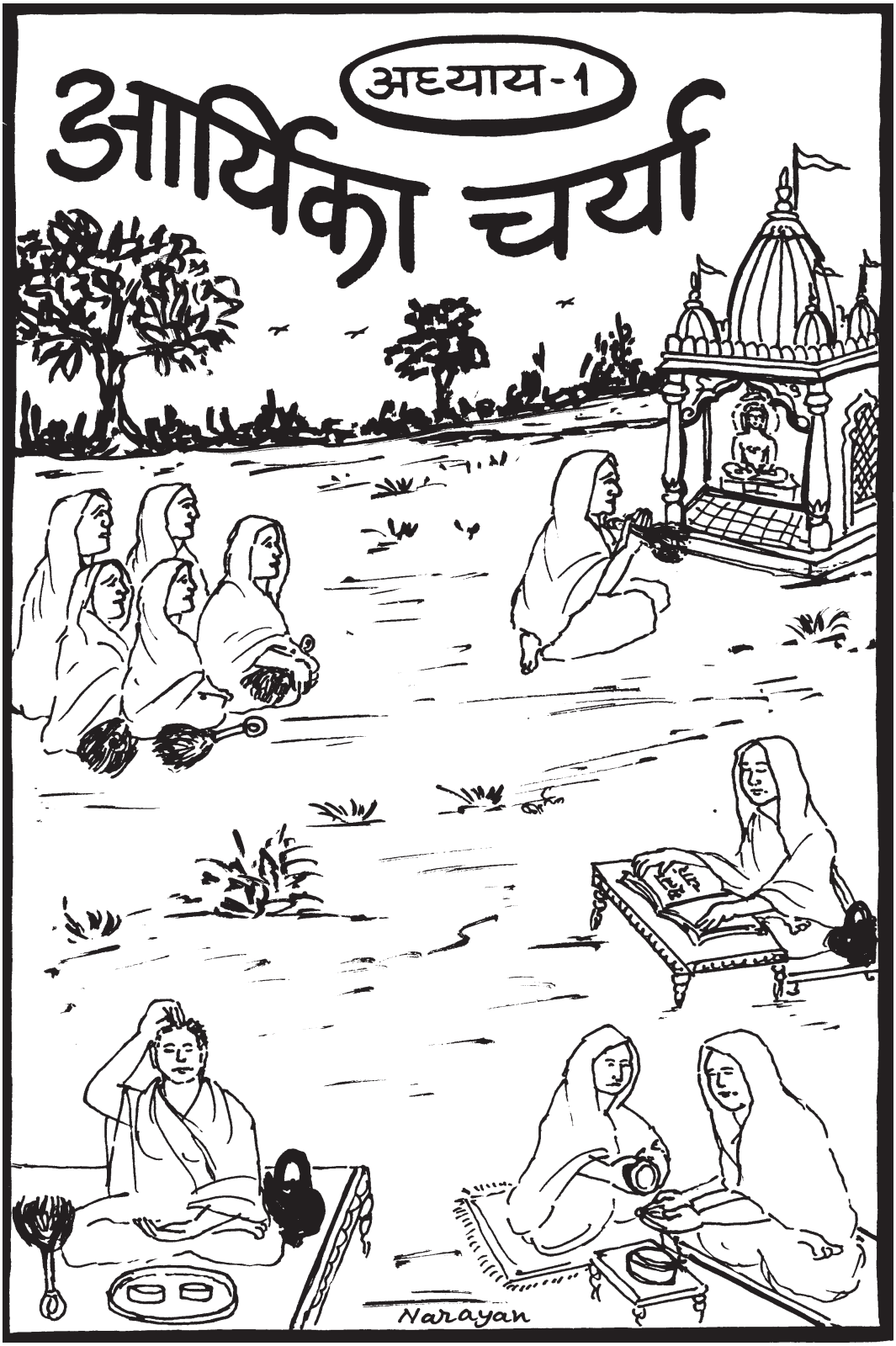

गणिनी ज्ञानमती चरितम्

मंगलाचरण

सिद्धाः जयन्तु त्रैलोक्ये, जीयात् श्रीवृषभेश्वरः।
जीयात् श्रीवीरनाथोऽपि, जीयात् श्री जैनशासनम्।।1।।

कुन्दकुन्दगुरुर्जीयात्, जीयात् श्रीशांतिसागरः।
जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्रीवीरसागरः।।2।।

श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिमचन्दना।
जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।।3।।

अनन्तानन्ताः सिद्धपरमेष्ठिनो भगवन्तस्त्रिषु लोकेषु जयवन्तो भवेयुः। कृतयुगे प्रथम–तीर्थंकरो भगवान् ऋषभदेवो जयशीलो भवतु, अन्तिमतीर्थंकरो भगवान् महावीरस्वामी जयशीलो भवतु, अनादिनिधनं जैनशासनं सदैव जयशीलं स्यात्।

भगवतो महावीरस्य शासनानुवर्ती आचार्यश्रीकुन्दकुन्दो जयवान् तिष्ठतु, तस्यैव परम्परायां विंशतिशताब्द्याः प्रथमाचार्यश्चारित्रचक्रवर्ती श्रीशान्तिसागरो जयतु। तस्यैव प्रथमपट्टशिष्यः आचार्यवीरसागरोऽपि सदैव जयशीलो भवतु।

भगवतो ऋषभदेवस्य समवसरणस्य प्रमुखगणिनी आर्यिका माता ब्राह्मी अस्यां धरायां जयशीला भवतु, भगवतो महावीरस्य समवसरणस्य प्रमुखगणिनी आर्यिका चन्दनासती माता जयशीला भवतु, वर्तमानयुगे च आर्यिकाणां शिरोमणिः प्रमुखगणिनी आर्यिका माता ज्ञानमती सदा जयवती भवेत्।

अर्थ–अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी भगवान तीनों लोकों में जयवन्त होवें, कृतयुग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जयशील हों, अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जयशील हों तथा अनादिनिधन जैनशासन सदैव जयशील रहे।

भगवान महावीर के शासनानुवर्ती आचार्यश्री कुंदकुंद स्वामी जयवन्त रहें, उनकी परम्परा में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर मुनि महाराज जयवन्त होवें तथा उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज भी सदा-सर्वदा जयशील होवें।

भगवान ऋषभदेव के समवसरण की प्रमुख गणिनी आर्यिका श्री ब्राह्मी माता इस धरा पर जयशील होवें, भगवान महावीर के समवसरण की प्रमुख गणिनी आर्यिका श्री चन्दना महासती जयशील हों तथा वर्तमान युग में आर्यिकाओं की सिरमौर प्रमुख गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी सदा जयवन्त रहें।

प्रथमोऽध्यायः

आर्यिका चर्याः

आधुनिकपरिवेशे, सः श्रावकः स्यान्मुनिर्वा, श्राविकास्यात् आर्यिका वा स्पष्टरूपेण तेषां, तासां चर्याणां ज्ञानमावश्यकं वर्तते। आचार्यः श्रीयतिवृषभः स्वामी अकथयत्–

पंचमकालस्यान्तपर्यन्तं मुन्यार्यिकाणां, श्रावकश्राविकाणां वा चतुर्विधसंघोऽनुवर्तनं करिष्यति। अधुनापर्यन्तं तु पञ्चमकालस्य 2536 वर्षाणि मात्रं व्यतीतानि अभवन) शेषाणि 18464 वर्षाणि पर्यन्तं निरन्तर ईदृश्येवाक्षुण्णा परम्परा प्रवाहमाना भविष्यति। तस्याः फलस्वरूपेण वर्तमाने प्रायः एकादशशतसंख्यायां जैनसाधूनां साध्वीनां च दर्शनानि भवन्ति, एतच्च चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यस्य शान्तिसागरस्य कृपाप्रसादस्य फलमस्ति।

अस्यां चतुर्विधसंघश्रृंखलायां महिलाभ्यः त्यागस्य चरमसीमा आर्यिकाणां पदं मान्यमस्ति।

वस्तुतस्तु यदि दृश्यते धार्मिकसामाजिकराजनैतिकक्षेत्रेषु प्राचीनकालादेव नारीणां योगदानमुल्लेखनीयं वर्तते। येन प्रकारेण पुरुषाणां आत्मसाधनां कर्तुं जैनेश्वरीदीक्षां प्राप्य मोक्षं प्राप्तुमधिकारोऽस्ति तथैव महिलाभ्योऽपि। सा कुमारी, सौभाग्यवती विधवा वा स्यात्, सर्वाभ्यः आत्मकल्याणं कर्तुमधिकारो सदैव वर्तते।

'परन्तु–बाढं! मध्यकालस्यैकं युगमीदृशमासीत्, यदा नारीसु अत्याचाराः अभवन्, अनेक

आर्यिका चर्या

आधुनिक परिवेश में चाहे श्रावक हो या मुनि, श्राविका हो या आर्यिका, स्पष्ट रूप में उनकी चर्या का ज्ञान होना आवश्यक है। आचार्यश्रीयतिवृषभस्वामी ने कहा है–

पंचमकाल के अंत तक मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविका का चतुर्विध संघ वर्तन करेगा। अभी तो पंचमकाल के मात्र 2536 वर्ष व्यतीत हुए हैं, शेष 18464 वर्षों तक निरन्तर ऐसी ही अक्षुण्ण परम्परा चलती रहेगी। इसके फलस्वरूप वर्तमान में लगभग ग्यारह सौ की संख्या में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों के दर्शन हो रहे हैं, यह चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की कृपाप्रसाद का फल है।

उस चतुर्विध संघ श्रृंखला में महिलाओं के लिए त्याग की चरमसीमा आर्यिका का पद माना जाता है।

वैसे देखा जाए तो धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आदि समस्त क्षेत्रों में प्राचीन काल से नारियों का योगदान रहा है। जिस प्रकार से पुरुषों को आत्मसाधना करने का एवं जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार है, उसी प्रकार से प्रत्येक महिला को, चाहे वह कुंवारी हो, सौभाग्यवती हो या विधवा हो, सभी को आत्म कल्याण करने का अधिकार सदैव से प्राप्त है।

हाँ! मध्यकाल का एक युग ऐसा आया था, जब नारियों पर अत्याचार होते थे एवं अनेकों

प्रकाराणां च प्रताडनाः ताः प्राप्नुवन्। परन्त्वाधुनिकपरिप्रेक्ष्ये नारीणां स्वमहत्त्वपूर्णं स्थानमस्ति। भारतीयसंविधानानुसारेणापि पुत्र–पुत्रीभ्यां द्वाभ्यामेव पित्रोः सम्पत्तौ समानाधिकारोऽस्ति।

अस्मिन् कर्मयुगे प्रारम्भे यथा तीर्थंकरः आदिनाथः दीक्षां गृहीत्वा मुनिपरम्परां प्रारभत, तथैव तस्य पुत्र्यौ ब्राह्मीसुन्दर्यौ दीक्षां गृहीत्वा आर्यिकापरम्परायाः शुभारम्भमकुरुताम्। किं–वदन्त्यां जनाः एवमपि कथयन्ति यत् भगवान् आदिनाथः स्वजामातारं प्रति मस्तकं नम्रीभूतं कर्तुं परवशं न कर्तुं तस्य द्वे कन्ये विवाहबन्धनं पादाहतं कृत्वा दीक्षामधारयताम्। किन्तु एतत् कथनं किंचित् युक्तिसंगतं न प्रतीयते। न च इतिहासः एतानि तथ्यानि स्वीकरोति। तीर्थंकरस्य तु प्रत्येकक्रिया अद्वितीयैव भवति। ते शैशवावस्थायाः एव स्वमातरं पितरं दिगम्बरमुनिं च न नमन्ति। एतेन तेषामहंकारो नैव, परन्तु तीर्थंकरपदव्याः महत्त्वं माहात्म्यं च प्रकटितं भवति। माता, पिता दिगम्बरमुनिराजस्तेषामेतस्याः क्रियायाः प्रतिरोधं न कुर्वन्ति परन्तु तीर्थंकरत्वस्य पुण्यस्य प्रशंसां कुर्वन्ति।

कथनस्य तात्पर्यमेतदस्ति यत् ब्राह्मीसुन्दर्यौ कन्ये उत्कटवैराग्यभावनया आर्यिकादीक्षाम–धारयताम्, सहस्रअर्यिकासु ब्राह्मीः माता प्रधानगणिनीपदं प्राप्नोत्। सार्वभौमो जैनधर्मः प्राणिमात्रस्य हितकारकोऽस्ति। एतद्विचिन्त्य हृदये संसारसमुद्रात् पारं गन्तुं भावनां गृहीत्वा तादृशी महिला प्रथमं साधुसंघं प्रविशति पुनः तस्याः वैराग्यभावेषु वृद्धिः प्रारभ्यते, चतुर्विधसंघस्य नायकः आचार्यस्तस्यै समुचिताः शिक्षाः प्रदाय संघस्य प्रमुखाऽऽर्यिकायाः

प्रकार की प्रताड़नाएं उन्हें प्राप्त होती थीं परन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारियों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संविधान के अनुसार भी पुत्र और पुत्री दोनों को माता-पिता की संपत्ति में बराबर का अधिकार बताया गया है।

इस कर्मयुग के प्रारंभ में जिस प्रकार से तीर्थंकर आदिनाथ ने दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को प्रारंभ किया, उसी प्रकार उनकी पुत्री ब्राह्मी-सुन्दरी ने दीक्षा लेकर आर्यिका परम्परा का शुभारंभ किया है। किंवदन्ती में ऐसा लोग कह देते हैं कि भगवान् आदिनाथ को अपने दामाद के समक्ष मस्तक झुकाना पड़ता इसीलिए उनकी कन्याओं ने विवाह बंधन ठुकरा कर दीक्षा धारण की थी किन्तु यह बात कुछ युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होती है, न ही इतिहास इस तथ्य को स्वीकार करता है। तीर्थंकर की तो प्रत्येक क्रिया ही अद्वितीय होती है। वे शैशव अवस्था से ही अपने माता-पिता एवं दिगम्बर मुनि को भी नमस्कार नहीं करते हैं, इसमें उनका अहंकार नहीं, बल्कि तीर्थंकर पदवी का माहात्म्य प्रगट होता है। माता-पिता या दिगम्बर मुनिराज उनकी इस क्रिया का प्रतिरोध भी नहीं करते हैं प्रत्युत् तीर्थंकर के पुण्य की सराहना करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मी-सुन्दरी कन्याओं ने उत्कट वैराग्य भावना से आर्यिका दीक्षा धारण की थी तथा हजारों आर्यिकाओं में ब्राह्मी माता ने प्रधान 'गणिनी' पद को प्राप्त किया था। 'सार्वभौम जैनधर्म प्राणिमात्र का हित करने वाला है' यह सोचकर हृदय में संसार समुद्र से पार होने की भावना को लेकर कोई महिला पहले साधु संघ में प्रवेश करती है पुनः उसके वैराग्य भावों में वृद्धि प्रारंभ होती है। चतुर्विध संघ के नायक आचार्य उसे समुचित शिक्षाएँ प्रदान कर संघ की प्रमुख

गणिन्याः वा उत्तरदायित्वे प्रददाति। प्रयत्नं करोति यत् आर्यिकाः एव महिलानां सुरक्षां पोषणं च विधातुं प्रभवन्ति।

यथा बालको मातरं पितरं च प्रति पूर्णरूपेण समर्पितो भवति, माता च तं भर्त्सयेत्, ताडयेत्, स्वात्मनश्च दूरीकर्तुं प्रयासं करोतु परन्तु बालको रोदनस्य पश्चादपि मातुरंकमागत्यैव शान्तिं प्राप्नोति। मातुर्हृदयं बहूदारं भवति तस्याः ममत्वस्य छायायागत्य तस्य दुःखभावो सुखरूपेण परिवर्तते। अतएव मातुर्महत्तां दर्शयितुं नीतिकारश्च शिक्षां ददाति–

''भोजनं मात्रैव कर्तव्यं स्यादिदं विषं, मार्गोऽपि सरलं चलितुं योग्यः स्यात्तस्मिन् चक्रम्।''

अतएव वैराग्यवती महिलाऽपि आर्यिकामातुः शिष्यत्वं गृहीत्वा आत्मानं तां प्रति समर्पयति। तां च निवेदनं करोति–मातः। अहं आत्मनः अनन्तं ससारं समाप्तं कर्तुं, स्त्रीलिंगस्य भेदनहेतवे दीक्षां गृहीतुमिच्छामि। अतएव भवती मह्यं हस्तावलम्बनं दत्वा ममात्मनः कल्याणं करोतु।

एतासामौपचारिकतानां समाप्तौ, पश्चात् गणिन्यार्यिका तां नववैराग्यशालिनीं महिलां कतिचित् दिनानि स्वसमीपे रक्षति। तस्याश्चात्र मनसो दृढतां, शरीरिकक्षमतां तस्यां च आर्यिकादीक्षायाः योग्यतां निरीक्षते, तां धार्मिकाध्ययनं च कारयति। साधुसंघं प्रविश्यैव सा दीक्षाधारणमेव करोतु नैतदावश्यकम्। सर्वप्रथमं तु तस्यां साधूनां वैयावृत्तिं कतुं आहारदानस्य

आर्यिका या गणिनी के सुपुर्द कर देते हैं क्योंकि आर्यिकाएँ ही महिलाओं की सुरक्षा एवं पोषण कर सकती हैं।

जिस प्रकार से बालक माता के प्रति पूर्ण समर्पित होता है। चाहे माँ उसे डांटे, मारे और कितना भी अपने से दूर भगावे, किन्तु बालक रोने-धोने के पश्चात् भी माँ की गोद में ही आकर शांति प्राप्त करता है। माता का हृदय बहुत ही उदार होता है, उसकी ममता के आंचल तले जाकर बड़े से बड़ा दुःख भी सुख रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसीलिए माँ की महानता बतलाते हुए नीतिकारों ने शिक्षा दी है–

''भोजन करना माँ से चाहे जहर हो,
रास्ता चलना सीधा चाहे फेर हो।''

उसी प्रकार वैराग्य भावयुक्त महिला भी आर्यिका माता के शिष्यत्व को स्वीकार करके स्वयं को उनके प्रति समर्पित कर देती है और उनसे निवेदन करती है कि हे मातः! मैं अपने अनंत संसार को समाप्त करने हेतु, स्त्रीलिंग के छेदन हेतु दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ अतः आप मुझे हस्तावलंबन देकर मेरी आत्मा का कल्याण कीजिए।

इन औपचारिकताओं के पश्चात् गणिनी आर्यिका उस नववैराग्यशालिनी महिला को कुछ दिन अपने पास रखती हैं और उसके मन की दृढ़ता को, शारीरिक क्षमता को एवं उसमें आर्यिका दीक्षा की योग्यता देखती हैं तथा धार्मिक अध्ययन भी कराती हैं। साधु संघ में प्रवेश करते ही वह दीक्षा धारण ही कर लेवे, यह कोई आवश्यक नहीं है। सर्वप्रथम तो उसमें साधुओं की वैयावृत्ति करने की

च भावना भवितव्या। भिन्न प्रदेशानां भिन्नप्रकृतीनां च संघस्थाभिः आर्यिकाभिः ब्रह्मचारिणीभिश्च, सह प्रेमपूर्वकं स्थातुं प्रवृत्तिर्भविष्यति। यथा संघे कस्यापि प्रकारस्य अशान्तेर्वातावरणं समुपस्थितं न भवेत्। अतः यथानुरूपेण आत्मानं कर्तुं तस्यां महिलायां प्रथमगुणो भवितव्यः।

कुमार्यः बालिकाः महिलाश्च ब्रह्मचर्यव्रतं स्वीकृत्य आर्यिकाणां समीपे निवसन्ति। आहारदानादिके च भागं गृह्णन्ति। इयं वार्ता ''अनन्तमत्या'' **उदाहरणेन साक्षात् सुस्पष्टं भवति।**

यथा चोदाहरणमागच्छति–

अंगदेशस्य राज्ञः प्रियदत्तस्य, राज्ञ्याः अंगवत्याश्च ''अनन्तमती'' **नाम्ना एका कन्याऽसीत्। सा बाल्ये कुतूहलवशात् पित्रा अष्टाह्निकापर्वणि अष्टदिनानां ब्रह्मचर्यव्रतमगृह्णात्। यस्य च फलस्वरूपेण सा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतस्य पालनमकरोत्।**

एकदा पूर्वजन्मवैरिणा शत्रुणा विद्याधरेण तस्याः हरणं कृत्वा तामेकस्मिन् भयानकवने अपातयत्। अनेकानि कष्टानि सोढ्वा यथा तथा तस्याः शीलस्य रक्षाऽभवत्, जिनेन्द्रभगवतः स्मरणं कृत्वा भ्रमन्त्येवकस्मिन्नपि समये ''अयोध्यानगरीं'' **प्राप्ता। तत्र चैकस्मिन् जैनमन्दिरे पद्मश्रीनामिकायाः आर्यिकायाः दर्शनानि अभवन्। तदा सा तां माता मत्वा तस्याः समीपेऽतिष्ठत्।**

अनन्तमत्याः पिता च पुत्रीमन्विष्यन् अयोध्यानगरी प्राप्तः तत्र चैकस्मिन् जैनमन्दिरे ''पद्मश्री'' **नामिकायाः आर्यिकायाः दर्शनानि अभवन्। तत्र च एकस्य श्रावकस्य गृहस्याग्रे सुन्दरं प्रांगणपूर्तिं दृष्ट्वा अरुदत्। पुनश्च सः श्रावकमप्रच्छत्। सः अकथयत् मम पुत्रीदृशमेव**

एवं आहारदान की भावना होनी चाहिए तथा भिन्न-भिन्न प्रदेशों की, भिन्न-भिन्न प्रकृति वाली संघस्थ आर्यिकाओं व ब्रह्मचारिणियों के साथ प्रेमपूर्वक रहने की प्रवृत्ति होनी चाहिए ताकि संघ में किसी प्रकार की अशांति का वातावरण न उपस्थित होने पावे। यह यथानुरूप ढल जाना उस महिला में सबसे बड़ा गुण होना चाहिए।

कुमारी बालिकाएं तथा महिलाएँ ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आर्यिकाओं के पास रहती हैं और आहार-दानादिक में भाग लेती हैं, यह बात **''अनंतमती''** के उदाहरण से साक्षात् स्पष्ट होती है। जैसा कि कथानक में आता है–

अंग देश के राजा प्रियदत्त और रानी अंगवती के **''अनंतमती''** नाम की एक कन्या थी। उसने बचपन में कुतूहलवश पिताजी से अष्टान्हिका पर्व में आठ दिनों का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था, जिसके फलस्वरूप उसने आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत का पालन किया।

एक बार कोई पूर्व जन्म के वैरी शत्रु विद्याधर ने उसका हरण कर उसे एक घनघोर जंगल में डाल दिया। अनेकों कष्टों को सहन कर जैसे-तैसे उसके शील की रक्षा हुई, तब वह जिनेन्द्र भगवान का स्मरण कर भटकती हुई किसी समय **'अयोध्या'** नगरी पहुँच गई। वहाँ एक जिनमंदिर में **''पद्मश्री''** नाम की आर्यिका के दर्शन हुए, तब वह उन्हें माता समझ कर उनके पास रहने लगी।

अनंतमती के पिता उसे ढूंढते-ढूंढते जब अयोध्या पहुँचे, वहाँ एक श्रावक के घर के आगे सुन्दर चौक पूरा हुआ देखकर रोने लगे। श्रावक के द्वारा पूछने पर उसने बताया– मेरी पुत्री ऐसा चौक पूरा

आंगनपूर्णमकरोत्। अधुना न जानामि सा कुत्रास्ति? श्रावकः आर्यिकायाः समीपे स्थितायाः तस्याः कन्यायाः प्रियदत्तं परिचयमकारयत्। अकथयच्च मम पत्नी एनां प्रतिदिनं स्व भोजनस्थाने भोजनं कर्तुं निमंत्रयति। भोजनस्थाने सज्जां सैव कन्या करोति।

पितुः पुत्र्योश्चिरवियोगानन्तरं मिलनं भवति। परन्तु अनन्तमत्याः मनसि तु संसारं प्रति पूर्णो वैराग्योऽभवत्। अतएव सा पितुराज्ञां गृहीत्वा आर्यिकाया सान्निध्ये दीक्षामगृह्णात्। घोरातिघोरतपश्चरणं कुर्वन्ती सल्लेखनापूर्वकं मरणं कृत्वा सहस्रार स्वर्गे देवपदं प्राप्नोत्।

एवमुदाहरणानि वर्तमानेऽपि दृश्यन्ते। यो हि बालको बालिका वा, महिला स्यात् पुरुषो वा, सर्वेभ्यः द्वावेव मार्गौ प्रशस्तौ स्तः। ते साधुभ्यः नवधाभक्तिपूर्वकमाहारदानं कुर्वन्ति अन्यथा स्वयमेव साधुपरमेष्ठिनः पदं प्राप्य श्रावकेभ्यः आहारं गृह्णन्ति। एतदतिरिक्त आगमानुसारेण तृतीया श्रेणी न कापि भवति। यदि मनोभिः निर्मिता सा श्रेणी कल्प्यते तु ''स्वयं विमानः पण्डितः यजमानामपि निमज्जित करोति''**, इति नीतिरेव चरितार्था भवति। यतो हि निम्नेपदे स्थित्वा यदि उच्चैः पदस्य अनधिकृताः क्रियाः क्रियन्ते तु नीच–गोत्रस्यास्रवो बध्यते। सोऽनेनैव प्रकारेण भ्रमितो भवति।**

संघस्य मध्ये गुर्व्याः गणिन्याश्चानुशासने स्थित्वा विद्याभ्यासकरणेन ब्रह्मचारिणीनां जीवने एतासामनर्गलक्रियाणां भावनाः प्रायः नोद्भवन्ति। अतएव आर्यिकाणां प्रशस्तपरम्परा

करती थी, अब वह पता नहीं कहाँ है? श्रावक ने आर्यिका के पास रहने वाली उस कन्या का प्रियदत्त से परिचय कराया और कहने लगा कि मेरी पत्नी इसे प्रतिदिन अपने चौके में भोजन करने के लिए बुलाती है और चौक भी यही कन्या बनाती है।

पिता पुत्री का चिरवियोग के पश्चात् मिलन होता है किन्तु अनंतमती के मन में तो संसार के प्रति पूर्ण वैराग्य हो चुका था अतः उसने पिता की आज्ञा लेकर आर्यिकाश्री के पास दीक्षा धारण कर ली और घोरातिघोर तपश्चरण करती हुई सल्लेखनापूर्वक मरण करके सहस्रार स्वर्ग में देवपद को प्राप्त कर लिया।

इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण वर्तमान में भी देखे जाते हैं क्योंकि चाहे बालक हो या बालिका, महिलाएँ हों या पुरुष, सभी के लिए दो ही मार्ग प्रशस्त होते हैं या तो वे साधुओं को नवधाभक्तिपूर्वक आहारदान देते हैं अन्यथा स्वयं साधु परमेष्ठी के पद को धारण कर श्रावकों से आहार लेते हैं। इसके अतिरिक्त आगमानुसार तीसरी श्रेणी कोई नहीं होती। यदि मनगढ़न्त अभिप्रायों से वह श्रेणी बना ली जाती है, तो **'आप डूबे पांड्या ले डूबे जजमान'** वाली नीति ही सार्थक होती है क्योंकि नीचे पद में रहकर यदि उच्च पद की अनधिकृत क्रियाएँ की जाती हैं तो नीच गोत्र का आस्रव होता है एवं समाज भी भ्रमित हो जाती है।

संघ के बीच में एवं गणिनी गुर्वानी के अनुशासन में रहकर विद्याभ्यास करने से ब्रह्मचारिणियों के जीवन में इन अनर्गल क्रियाओं की संभावना प्रायः नहीं रहती है अतः आर्यिकाओं की प्रशस्त

ताभिरेव चलति। यदा संघस्य संरक्षणे तिष्ठन्त्यस्ताः विद्याशिक्षानिपुणाः भवन्ति तदैव ताः दीक्षायोग्याः भवन्ति, व्यावहारिकज्ञानस्यानुभवं प्राप्नुवन्ति तदैव ताः दीक्षायोग्याः मताः सन्ति।

संघस्य आचार्यः गणिनी आर्यिका वा यदा तां वैराग्यशीलां महिलां पूर्णरूपेण परीक्षन्ते तदा तस्याः दीक्षायाः मंगलमुहूर्तं प्राप्य घोषणां कुर्वन्ति। औपचारिकरूपेण दीक्षार्थिकुटुम्बि–जनानामाज्ञा प्राप्यते, यतो दीक्षासदृशं पुनीतं कार्यं निर्विघ्नतया संपन्नं भवेत्।

दीक्षार्थिन्याः महिलायाः इच्छानुसारेण तीर्थयात्राःअपि कारिताः भवन्ति। पुनः जिनधर्मप्रभावनाहेतवे दीक्षार्थिन्याः शोभायात्राः अपि सम्पन्नतां प्राप्नुवन्ति। एतत् कार्यं गृहस्थश्रावकेषु दीक्षार्थिन्याः परिवारजनेषु च निर्भरमस्ति।

एताः सर्वाः क्रियाः वर्तमानकाले लोकव्यवहारस्य दृष्ट्या धार्मिक प्रभावनायाश्च दृष्ट्या एव सम्पाद्यन्ते। एताभिरात्मकल्याणस्य कोऽपि सम्बन्धो नास्ति। पूर्वकालस्य उदाहरणान्यापि अस्माकं समक्षं सन्ति। यत् वैराग्योत्पन्नतायाः पश्चात् कस्याः अपि घटिकायाः प्रतीक्षा न क्रियते। वस्तुतो वैराग्यमेव सर्वोत्तमं शुभमुहूर्तं मतमस्ति।

आदिपुराणस्य पृष्ठे 592 तमेऽपि जिनसेनाचार्योऽलिखत्–

भरतस्यानुजा ब्राह्मी दीक्षित्वा गुर्वनुग्रहात्।
गणिनीपदमार्यायां सा भेजे पूजितामरैः।

परम्परा इन्हीं से चलती है। जब संघ संरक्षण में रहती हुईं वे विद्या-शिक्षा में निपुण हो जाती हैं एवं व्यवहारिक ज्ञान आदि का अनुभव भी प्राप्त कर लेती हैं, तभी वे दीक्षा के योग्य मानी जाती हैं।

संघ के आचार्य अथवा गणिनी आर्यिका जी जब उस वैराग्यशील महिला का पूर्ण रूप से परीक्षण कर लेते हैं, तब उसकी दीक्षा का मंगल मुहूर्त निकालकर घोषणा करते हैं। औपचारिकता के नाते दीक्षार्थी के कुटुम्बियों से भी आज्ञा मंगानी होती है ताकि दीक्षा जैसा पुनीत कार्य निर्विघ्नरूप से सम्पन्न हो सके।

दीक्षार्थी महिला की इच्छानुसार तीर्थयात्राएँ भी उसे करवा दी जाती हैं पुनः जिनधर्म प्रभावना हेतु दीक्षार्थी की शोभायात्राएँ भी सम्पन्न होती हैं। यह कार्य गृहस्थ श्रावकों एवं दीक्षार्थी के परिवार वालों पर निर्भर रहता है।

यह क्रियाएँ वर्तमानकाल में लोक व्यवहार की दृष्टि से और धार्मिक प्रभावना के लक्ष्य से ही की जाती हैं। इसमें आत्मकल्याण का कोई विशेष संबंध नहीं है। पूर्वकाल के उदाहरण भी अपने समक्ष हैं कि वैराग्य होने के बाद पुनः किसी घड़ी की प्रतीक्षा नहीं की जाती क्योंकि असली वैराग्य ही सर्वोत्तम शुभ मुहूर्त माना जाता है।

आदिपुराण के पृष्ठ 592 पर श्री जिनसेन आचार्य ने लिखा है–

भरतस्यानुजा ब्राह्मी दीक्षित्वा गुर्वनुग्रहात्।
गणिनी पदमार्यायां सा भेजे पूजितामरैः।।

हरिवंशपुराणेऽपि पृष्ठे 183 तमेऽपि प्रकरणमस्ति–

ब्राह्मी च सुन्दरी चोभे कुमार्यौ धैर्यसंगते।
प्रव्रज्य बहुनारीभिरार्याणां प्रभुतां गते।।

अर्थात् ब्राह्मी सुन्दरी च द्वे कन्ये प्रभोरादिनाथस्य समवसरणे आर्यिकादीक्षामधारयताम्। ब्राह्मी चार्यिका संघस्य आर्यिकासु गणिनीः स्वामिन्यासीत्।

अस्य युगस्य प्रथमार्यिका भगवतः समवसरणे दीक्षामगृह्णात्। तत्पश्चाच्च महिलाभ्यः गणिन्या दीक्षाधारणस्यानेकोदाहरणानि विद्यन्ते। आदिपुराणस्य द्वितीये भागे–

''भरतस्य सेनापतेर्जयकुमारस्य दीक्षायाः पश्चात् सुलोचनापि ब्राह्मीआर्यिकायाः सान्निध्ये दीक्षामधारयत्।''

अन्यत्र हरिवंशपुराणेऽप्युक्तम्–

''दुष्टस्य संसारस्य स्वभावं ज्ञात्वा सुलोचना स्वसपत्नीभिः सार्धं श्वेतां शाटिकां धृत्वा ब्राह्मीसुन्दर्योः सविधे दीक्षामगृह्णात्।'' **एतस्य पश्चात् हरिवंशपुराणे आर्यिका सुलोचना एकादशांगानां धारिणी च मता।**

कुबेरमित्रस्य पत्नी धनवती संघस्य स्वामिन्याः आर्यिकाजिनमत्याः समीपे दीक्षामधारयत्। तस्याश्च यशस्वत्याः गुणवत्याश्च समीपे आर्यिकाणां माता कुबेरसेनाऽपि स्वपुत्र्या समीपे दीक्षामगृह्णात्।

हरिवंशपुराण पृष्ठ 183 पर प्रकरण है–

ब्राह्मी च सुन्दरी चोभे कुमार्यौ धैर्य संगते।
प्रव्रज्य बहुनारीभिरार्याणां प्रभुतां गते।

अर्थात् ब्राह्मी-सुन्दरी दोनों कन्याओं ने प्रभु आदिनाथ के समवसरण में आर्यिका दीक्षा धारण की थी और ब्राह्मी आर्यिका समस्त आर्यिकाओं में गणिनी–स्वामिनी थीं।

इस युग की प्रथम आर्यिका ने भगवान के समवसरण में दीक्षा ली थी उसके पश्चात् महिलाओं के लिए गणिनी से दीक्षा प्राप्त करने के अनेकों उदाहरण देखे जाते हैं–आदिपुराण द्वितीय भाग में पृ. 503 पर आया है–

''भरत के सेनापति जयकुमार की दीक्षा के बाद सुलोचना ने भी ब्राह्मी आर्यिका के पास दीक्षा धारण कर ली।''

अन्यत्र हरिवंश पुराण में भी कहा है–

''दुष्ट संसार के स्वभाव को जानने वाली सुलोचना ने अपनी सपत्नियों के साथ श्वेत साड़ी धारणकर ब्राह्मी तथा सुन्दरी के पास दीक्षा धारण कर ली।'' इसके साथ हरिवंशपुराण में आर्यिका सुलोचना को ग्यारह अंग की धारिणी भी माना है।

कुबेरमित्र की स्त्री धनवती ने संघ की स्वामिनी आर्यिका जिनमति के पास दीक्षा धारण कर ली और उन यशस्वती तथा गुणवती आर्यिकाओं की माता कुबेरसेना ने भी अपनी पुत्री के समीप दीक्षा ले ली।

पद्मपुराणेऽपि वर्णनं प्राप्यते–

''रावणस्य मरणानन्तरं मन्दोदरी शशिकान्ताऽऽर्यिकायाः मनोहरैर्वचनैः प्रबोधं प्राप्य उत्कृष्टसंवेगं गुणान् च प्राप्तवती भूत्वा गृहस्थस्य वेशभूषां त्यक्त्वा श्वेतशाटिकया आवृताऽभवत् आर्यिका च संजाता। तस्मिन् समये च अष्टचत्वारिंशत्सहस्रसंख्यायां स्त्रियः संयममधारयन्। एतास्वेव रावणस्य भगिनी या खरदूषणस्य पत्न्यासीत् सा चन्द्रनखा–शूर्पणखाऽपि दीक्षामगृह्णात्।''

माता कैकेयी भरतस्य दीक्षानन्तरं विरक्तमनसा श्वेतशाटिकया युक्ता भूत्वा त्रिंशत्शतस्त्रीभिः सह ''पृथ्वीमत्याःआर्यिकायाः'' **समीपे दीक्षामगृह्णात्।**

अग्नेः परीक्षानन्तरं रामचन्द्रः सीतां गृहं प्राप्तुमकथयत्। तदा सीता अकथयत्– अधुनाऽहं ''जैनेश्वरीमार्यिकादीक्षां गृहीस्यामि।'' **तथैव केशानां लुंचनं कृत्वा पुनः शीघ्रं गत्वा पृथ्वीमत्याः आर्यिकायाः समीपे गत्वा दीक्षिताऽभवत्।**

तस्याः विषये लिखितं यत् सीता वस्त्रमात्रपरिग्रहधारिणी महाव्रतैः पवित्रांगा महासंवेगं प्राप्ताऽऽसीत्।

अनेनैव प्रकारेण पद्मपुराणेऽपि रविषेणाचार्यः कथयति–

हनुमतो दीक्षानन्तरं अस्मिन्नेव समये शीलाभूषणधराः राजस्त्रियः ''बन्धुमत्याः'' **आर्यिकायाः समीपे दीक्षामगृह्णन्।**

श्रीरामस्य मुनेरवस्थाप्राप्तेरनन्तरं सप्तविंशतिसहस्रस्त्रियः ''श्रीमत्याः'' **आर्यिकायाः समीपे दीक्षिताः अभवन्।**

पद्मपुराण में भी वर्णन आता है–

''रावण के मरने के बाद मंदोदरी ने शशिकांता आर्यिका के मनोहारी वचनों से प्रबोध को प्राप्त हो उत्कृष्ट संवेग और उत्तम गुणों को प्राप्त होती हुई, गृहस्थ की वेशभूषा को छोड़कर, श्वेत साड़ी से आवृत हुई आर्यिका हो गई। उस समय अड़तालिस हजार स्त्रियों ने संयम धारण किया था, इन्हीं में रावण की बहन, जो कि खरदूषण की पत्नी थी, उस चन्द्रनखा (सूर्पणखा) ने भी दीक्षा ले ली थी।

माता कैकेयी भरत की दीक्षा के बाद विरक्तमना एक सफेद साड़ी से युक्त होकर तीन सौ स्त्रियों के साथ **'पृथ्वीमती'** आर्यिका के पास दीक्षित हो गई थीं।

अग्नि परीक्षा के पश्चात् रामचन्द्र ने सीता से घर चलने को कहा, तब सीता ने कहा कि अब मैं **''जैनेश्वरी आर्यिका दीक्षा धारण करूँगी''**, वहीं केशलोंच करके पुनः शीघ्र जाकर पृथ्वीमती आर्यिका के पास दीक्षित हो गईं।

उनके बारे में लिखा है कि सीताजी वस्त्रमात्र परिग्रहधारिणी महाव्रतों से पवित्र अंग वाली महासंवेग को प्राप्त थीं।

इसी प्रकार से पद्मपुराण में श्री रविषेणाचार्य कहते हैं–

हनुमान जी की दीक्षा के पश्चात् उसी समय शीलरूपी आभूषणों को धारण करने वाली राजस्त्रियों ने **'बंधुमती'** आर्यिका के पास दीक्षा ले ली।

श्री रामचन्द्र के मुनि बनने के बाद सत्ताईस हजार प्रमुख स्त्रियाँ **''श्रीमती''** नामकी आर्यिका के पास दीक्षित हुईं।

हरिवंशपुराणे राजुलमत्याः विषये उक्तम्–

षटसहस्रराज्ञीभिः सह राजमती सदा।
प्रव्रज्याग्रेसरी जाता सार्यिकाणां गणस्य तु।।

षट सहस्रराज्ञीभिः सह राजीमती भगवतो नेमिनाथस्य समवसरणे आर्यिकादीक्षां गृहीत्वा आर्यिकासु प्रधाना गणिनी जाता।

हरिवंशपुराणेऽप्यग्रे–

राज्ञश्चेटकस्य पुत्री चन्दनाकुमारी श्वेतसाटिकां धृत्वा भगवतो महावीरस्य समवसरणे आर्यिकासु प्रमुखतां प्राप्ताऽभवत्।

राज्ञः श्रेणिकस्य मृत्योः पश्चात् राज्ञी चेलना गणिन्याः आर्यिकायाः चन्दनायाः समीपं प्राप्य दीक्षिताऽभवत्। या च चन्दनायाः ज्येष्ठभगिन्यासीत् एवं उत्तरपुराणे कथनमस्ति, तथा–

गुणानां भूषणधारिण्यः कुन्तीसुभद्राद्रौपदी च।। राजीमत्या गणिन्याः सविधे उत्कृष्टां दीक्षामगृह्णन्। अन्यान्यपि पुराणेषुकतिचिद् उदाहरणानि सन्ति यैः स्पष्टी भवति यत् एका प्रमुखा गणिनी आर्यिका समवसरणे तीर्थंकरस्य साक्षीपूर्वकं दीक्षिता भूत्वा अन्याभ्यः आर्यिकाभ्यः दीक्षाः प्रदत्ताः अकरोत्।

अद्यापि गणिनीभिरार्यिकाभिः आर्यिकाक्षुल्लिकाभ्यो दीक्षा प्रदीयते, एषा प्रसन्नतायाः

हरिवंश पुराण में राजुल के विषय में बताया है–

षट्सहस्रनृपस्त्रीभिः सह राजीमती सदा।
प्रव्रज्याग्रेसरी जाता सार्यिकाणां गणस्य तु।।146।।

छह हजार रानियों के साथ राजीमती भगवान् नेमिनाथ के समवसरण में आर्यिका दीक्षा लेकर आर्यिकाओं में प्रधान गणिनी हो गईं।

हरिवंशपुराण में ही आगे–

राजा चेटक की पुत्री चंदना कुमारी, एक श्वेत साड़ी धारण कर भगवान महावीर के समवसरण में आर्यिकाओं में प्रमुख हो गईं।

राजा श्रेणिक की मृत्यु के पश्चात् रानी चेलना गणिनी आर्यिका चंदना के पास दीक्षित हो गईं जो कि चंदना की बड़ी बहन थीं। ऐसा उत्तरपुराण में कथन आया है तथा–

गुणरूपी आभूषण को धारण करने वाली कुन्ती, सुभद्रा तथा द्रौपदी ने भी राजीमती गणिनी के पास उत्कृष्ट दीक्षा ले ली थी और भी पुराणों में कितने ही उदाहरण हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि एक प्रमुख गणिनी आर्यिका समवसरण में तीर्थंकर की साक्षीपूर्वक दीक्षित होकर अन्य आर्यिकाओं को दीक्षा प्रदान करती थीं।

आज भी गणिनी आर्यिकाओं के द्वारा आर्यिका, क्षुल्लिका की दीक्षाएँ प्रदान की जाती हैं, यह प्रसन्नता की बात है। इसी शृँखला में वर्तमान की सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित परमपूज्य गणिनी

वार्ताऽस्ति यदस्यामेव श्रृंखलायां वर्तमानस्य सर्वाधिका प्राचीनायाः दीक्षितायाः परमपूज्यायाः गणिन्याः आर्यिकारत्नस्य श्रीज्ञानमत्याः मातुः करकमलाभ्यामहमपि आर्यिका चन्दनामती भवितुं सौभाग्यं प्राप्नवम्।

वर्तमानयुगे आचार्यगणिनीभ्यां द्वाभ्यामेव महिलाभ्यः आर्यिका क्षुल्लिकादीक्षायाः परम्परा संचाल्यमाना विद्यते। अतएव स्वेच्छया वैराग्यशालिन्यः महिलाः यासां चरणेषु दीक्षायाः याचनां कुर्वन्ति, ताः उत्तरदायित्वपूर्वकं दीक्षाः प्रदाय अनुग्रहादिकानि कृत्वा ताः नवजीवने प्रवेशं कारयन्ति।

दीक्षादिवसात्पूर्वं सा श्राविकाया समस्तकृत्यानि पूरयति। यथा जिनेन्द्रपूजाविधानं, उत्तमपात्रेभ्यः शक्त्यनुसारेण चतुर्विधं दानं दत्त्वा स्वमनः पवित्रं करोति।

दीक्षायाः शुभमुहूर्तस्यावसरे दीक्षार्थिन्याः, शोभायात्राऽऽयोज्यते। यया तस्याः परिवारजनाः स्वकामनाः पूरयितुं सौभाग्यं लभन्ते। यदि दीक्षार्थिनी कुमारी वा सौभाग्यवत्यस्ति तदा मेंहदी रचनादिः क्रियते। अयमप्येको मंगलावसरोऽस्त यतः सा पूर्णरूपेण नवजीवने प्रवेशं करोति।

दीक्षायाः दृश्यं स्वत एव रोमांचकं भवति। भवतः पुत्र्याः विवाहः त्वेकस्मिन् लघुमण्डपे संपद्यते दीक्षायाश्च विशालकार्यं विशालमण्डपे सम्पद्यते। यत्रैकं परिवारं त्यक्त्वा 'वसुधैव कुटुम्बुकम्' **अर्थात् समस्त एव संसारः स्व कुटुम्बोऽवगम्यते। परन्तु वास्तुविकता त्वियमस्ति न त्वेकः परिवारः स्वकीयोऽस्ति न च समस्तः संसारः स्वीकीयो भवितुमर्हति। स्वकीयं तु केवलं आत्मद्रव्यमस्ति, तस्यैव प्राप्तुं दीक्षा प्रधाना अस्ति। यथा स्वामी कुन्दकुन्दो दर्शितवान्–**

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों द्वारा मुझे भी आर्यिका चन्दनामती बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

वर्तमान युग में आचार्य और गणिनी दोनों के द्वारा महिलाओं की आर्यिका, क्षुल्लिका दीक्षा की परम्परा चली आ रही है अतः स्वेच्छा से वैराग्यशालिनी महिला जिनके श्रीचरणों में दीक्षा की याचना करती है, वे जिम्मेदारीपूर्वक दीक्षा देकर अनुग्रह आदि करते हुए उसे नवजीवन में प्रवेश कराते हैं।

दीक्षा दिवस से पूर्व तक उसे श्राविका के समस्त कर्तव्य पालन करने होते हैं। जैसे– जिनेन्द्र पूजा-विधान, उत्तम आदि पात्रों को शक्ति अनुसार चतुर्विध दान देकर अपने मन को पवित्र बनाती है।

दीक्षा के शुभ मुहूर्त के अवसर पर दीक्षार्थी बहन की शोभायात्रा निकाली जाती है जिसमें उसके परिवार जनों को अपने अरमान पूरे करने का सौभाग्य प्राप्त होता है यदि दीक्षार्थिनी कुंआरी या सौभाग्यवती है, तो मेंहदी रचाना आदि भी होता है। यह भी एक मंगल अवसर होता है क्योंकि उसे तो पूर्णरूप से नवजीवन में प्रवेश करना होता है।

दीक्षा का दृश्य अपने आप में एक रोमांचक दृश्य होता है। आपकी पुत्री का विवाह अपने घर के छोटे से मंडप में हो जाता है और दीक्षा का महानकार्य विशाल मंडप में सम्पन्न होता है, जहाँ एक परिवार को छोड़कर **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात् सारे संसार को अपना कुटुम्ब समझा जाता है परन्तु वास्तविकता तो यह है कि न एक परिवार अपना है और न ही समस्त संसार अपना हो सकता है, अपना तो केवल आत्मा है, उसे पाने के लिए ही दीक्षा धारण की जाती है। जैसा कि कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है–

''आदहिदं कादव्वं जइ सक्कइ परहिदं च कादव्वं।''.....इत्यादि।

आत्महितस्य प्रमुखतयैव दीक्षाग्रहणं सर्वोत्तमं कार्यमस्ति। यदि परहितोऽपि तेन सह स्यात्तु सम्यगस्ति परन्तु परहितभावो लक्ष्ये स्यात् तु आत्महिते बाधको भवितुमर्हति।

शोभायात्रायाः पश्चात् सभामण्डपे पूर्वमुखीमुत्तरमुखीं वा तामुपवेश्य गणिन्यार्यिका सर्वप्रथम केशलुंचनं प्रतिष्ठापनं सिद्धभक्तिं योगभक्तिं च पठित्वा दीक्षार्थिन्या केशलुंचनं प्रारभते।

पश्यन्–पश्यन्नेव सभामण्डपे असीमवैराग्यवातावरणं दृश्यं च समुपस्थीयते। इदमपि दृश्यते यत् सा दीक्षार्थिनी स्वयमपि वीरतापूर्वकं स्वकेशलुंचनं विदधाति।

तन्ममत्वं, येन बालिकायै दुग्धपानेन समं स्व शाटिकाया छायां प्रदत्तम्, तौ बाहुमूलौ यौ सदा भगिन्याः रक्षासूत्रं स्वीकृतमकुरुतां, स उत्संगः, यः कन्यारत्नमान्दोलनमिव आन्दोलितवान्, सः स्नेहिलपरिवारः, यः सदैव तस्याः सुखदुःखयोः हस्तं व्यतरत्, सर्वे तत्क्षणं वैराग्यस्य मोहिनीमुद्रां प्रति नतमस्तकाः भवन्ति। केचिच्च चिरकालीनमोहवशात् अश्रुधाराभिः स्वमलिन हृदयमपि निर्मलं कुर्वन्ति। कथितम्–

''बधूं गृहीत्वा या वरयात्रा गता, सा न प्रत्यागच्छति। यः प्रातकालो गतः सः प्रातः पुनर्न प्रत्यागच्छति।।''

मानवजीवनस्य प्रतिक्षणममूल्यं भवति अत तेषां क्षणानां सदुपयोगः कार्यः। दृश्यते एव बाल्यकालं, युवाकालं, वृद्धावस्थां च एतान् त्रिसमयान् यापयित्वा जनः कालकवलितो भवति।

आदहिदं कादव्वं जइ सक्कइ परहिदं च कादव्वं।.....इत्यादि

आत्महित की प्रमुखता से ही दीक्षा लेना सर्वोत्तम कार्य है, परहित उसके साथ हो जावे तो ठीक है किन्तु मात्र परहित का ही लक्ष्य रखना आत्महित में बाधक हो सकता है।

शोभायात्रा के पश्चात् सभामंडप में पूर्वमुख या उत्तरमुख उसे बैठाकर गणिनी आर्यिका सर्वप्रथम केशलोंच प्रतिष्ठापन में सिद्ध भक्ति, योगभक्ति पढ़कर दीक्षार्थी बहन का केशलोंच प्रारंभ कर देती हैं।

देखते ही देखते सभामंडप में असीम वैराग्य का दृश्य उपस्थित हो जाता है। कई बार देखने में आता है कि वह बहन स्वयं भी वीरतापूर्वक अपना केशलोंच करती है।

वह ममता, जिसने बालिका को दुग्धपान के साथ अपने आंचल की छांव दी थी, वे कलाइयाँ, जिन्होंने सदा बहन के रक्षासूत्र को अंगीकार किया था, वह गोद, जिसने कन्या रत्न को झूले की भांति झुलाया था, वह स्नेहिल परिवार, जिसने सदैव उसके सुख-दुख में हाथ बंटाया था, सभी उस क्षण वैराग्य की मोहिनी मुद्रा के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं तथा कोई-कोई चिरकालीन मोहवश अश्रुधारा से अपना मलिन हृदय भी निर्मल करते हैं।

दुल्हन को लिए बारात चली, बारात न वापस आती है।
जो प्रात गई सो प्रात गई, वह प्रात न वापस आती है।।

मानव जीवन का प्रत्येक क्षण अत्यन्त अमूल्य होता है अतः उन क्षणों का सदुपयोग करना उसका कर्तव्य है। देखते ही देखते बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था तीनों समयों को बिताकर

आत्मानं प्रति च तस्य दृष्टिर्न गच्छत्येव।

राजकुमारस्य गजसुकुमारस्य विषये सर्वैः श्रुतम्। सोऽपि स्वयौवनं रागं प्रति नेतुं समर्थः आसीत्। फलस्वरूपेण वरयात्रया सह वरो भूत्वा चलितुमारब्धवान्। विवाहोऽपि संपन्नोऽभवत्। परन्तु वरयात्रा गृहं प्रति न प्रत्यागच्छति, मार्गे एव सः एकं दिगम्बरमुनिराजं दृष्टवान्। सः मुनि अवधिज्ञान्यासीत्। अतो गजसुकुमारस्य अल्पवयो ज्ञात्वा तं संबोधितवान्। आत्मकल्याणाय तं प्रेरितवान्।

आत्मार्थिने तु एतावत् सम्बोधनमेव पर्याप्तमासीत्। गजसुकुमारो नवां बधूं मार्गे त्यक्त्वा तपोवनं गत्वा गुरुदेवेन मुनि–दीक्षां गृह्णाति। वरयात्रिणश्च स्वगृहाणि प्रापुः। वधूश्चान्दोलिकया स्वपितुर्गृहम्।

तस्याः कन्यायाः पितुः क्रोधः आकाशं स्पृशति। आश्चर्यं! मम पुत्र्या सार्धं एतावान् महान् अत्याचारः। सः क्रोधावेशात् ध्यानस्थं मुनिं गजसुकुमारं गच्छति–कथयति च–रे पापिन्! यदि तव ईदृशमेव कर्तुमिच्छासीत्, तु एकया कन्यया सह विवाहस्य नाटकं कथमरचयः। अधुना तु त्वमवश्यमेव गृहं गन्तुं परवशो भविष्यसि। यदा मुनिराट् किंचिन्नाभाषत। श्वसुरः अत्यधिकक्रुद्धोऽभवत्। अतः सः गजसुकुमारस्य मस्तकेऽङ्गारिकामदहत्।

भयंकरोपसर्गं ज्ञात्वा सः मुनिराट् संसारस्य शरीरस्य भोगानां च अनित्यतां चिन्तयितुमारभत। शरीराच्चात्मानं पृथक्कर्तुमुपायेष्वेकाग्रचित्तोऽभवत्। इतश्च मस्तके अंगारिका ज्वलिताऽऽसीत्

व्यक्ति कालकवलित हो जाता है और आत्मा की ओर उसकी दृष्टि ही नहीं जाती है।

आपने सुना होगा गजकुमार मुनिराज के बारे में।वे भी अपने यौवन को राग की ओर ले जा रहे थे। फलस्वरूप बारात लेकर दूल्हा बनकर चल पड़े थे। विवाह भी हो गया किन्तु बारात घर तक वापस नहीं आ पाती है, रास्ते में ही उनको एक दिगम्बर मुनिराज के दर्शन हो जाते हैं। वे मुनिराज अवधिज्ञानी थे अतः गजकुमार की अल्पायु जानकर उसे सम्बोधित किया, आत्मकल्याण हेतु प्रेरणा प्रदान की।

आत्मार्थी को तो इतना संबोधन ही काफी था। गजकुमार अपनी नई-नवेली दुल्हन को रास्ते में ही छोड़कर तपोवन में जाकर गुरुदेव से मुनि दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं । बाराती अपने घर चले जाते हैं और दुल्हन की डोली अपने पिता के घर।

उस कन्या के पिता का क्रोध सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। ओह! मेरी बेटी के साथ इतना बड़ा अन्याय! वे क्रोधावेश में ध्यानस्थ मुनिराज गजकुमार के पास पहुँचते हैं और कहते हैं–अरे ढोंगी! यदि तुझे यही करना था, तो एक कन्या के साथ शादी का नाटक क्यों रचा था? अब तो तुझे घर चलना ही पड़ेगा। जब मुनिराज कुछ न बोले तो ससुर जी को और भी गुस्सा आया अतः उन्होंने गजकुमार मुनि के मस्तक पर अंगीठी जला दी।

भयंकर अग्नि का उपसर्ग जानकर वे मुनिराज संसार-शरीर-भोगों की असारता का चिंतवन करने लगे और शरीर से आत्मा को पृथक् करने के उपाय में एकाग्रचित्त हो गए। इधर मस्तक पर

तत्र चात्मनः कर्माणि ज्वालितान्यासन्। अन्ते चोपसर्गे विजयं प्राप्य सः अन्तकृत्–केवल्यभवत्।

पश्य! संसारस्य स्थितिं, यत्रैको जनस्त्यागस्यचरमे स्थितआसीत्, तत्रैवान्यः रागद्वेष्योश्चरमसीमनि स्थितो हिताहितस्य विवेकं लोपयन् मत्तः आसीत्। एकस्तु अमूल्यक्षणानां सदुपयोगमकरोत् गजसुकुमारः। या घटिका हस्तात् निष्क्राम्यति, लक्षाधिकप्रयत्नैरपि न प्रतिनिवर्तते। यथा हस्तात् क्षिप्तो वाणः मुखाच्च निर्गतावाणी न प्रतिनिवर्तते। तथैव व्यतीतोऽपि प्रातः प्रतिवर्तितुं न प्रभवति।

मानवजीवनस्य दुर्लभतायाश्चिन्तनेनैव संसारात् वैराग्यो जायते दीक्षायाश्च शुभपरिणामाः उत्पन्नाः भवन्ति। महता पुण्योदयेन यदा काऽपि महिला दीक्षायै अग्रेसरा भवति तु तस्याः प्रथमा परीक्षा केशलुंचनप्रक्रियामेव प्रारब्धा भवति।

तस्मिन् मण्डपे च गणिन्यार्यिकया अन्यार्यिकाभिश्च केशलुंचनस्य क्रिया सम्पाद्यते। तदा तस्याः अग्रे दीक्षायाः क्रियाः प्रारब्धाः भवन्ति।

केशलुंचनस्य पश्चात् सौभाग्यवत्यः स्त्रियः तां श्राविकां मंगलस्नानाय नयन्ति। तत्र च तैलउबटनआदीन् लिप्त्वा मंगलस्नानं कारयन्ति मात्रं एकां शाटिकां यतो हि अधुना जीवनपर्यन्तं एकैव शाटिका तव धारयितव्यास्ति, तां धारयित्वा मंगलगानं कुर्वन्त्यः महिलास्तां श्राविकां पुनः मञ्चमानयन्ति।

अंगीठी जल रही थी और उधर आत्मा के कर्म जल रहे थे। अन्त में उपसर्ग पर विजय प्राप्त कर वे अंतकृत केवली हो गये।

देखो! संसार की स्थिति, जहाँ एक व्यक्ति त्याग की चरम सीमा पर स्थित था, वहीं दूसरा राग-द्वेष की चरमसीमा पर खड़ा हिताहित का विवेक भी खो बैठा था। जीवन के अमूल्य क्षणों का सदुपयोग किया था-गजकुमार ने। जो घड़ी हाथ से निकल जाती है, वह लाख प्रयास के बावजूद भी वापस नहीं आती। जैसे हाथ से निकला बाण और मुंह से निकली बात वापस नहीं आती है, उसी प्रकार बीती हुई प्रात भी वापस नहीं लाई जा सकती है।

मानव जीवन की दुर्लभता का चिंतन करने पर ही संसार से वैराग्य होता है और दीक्षा के शुभ परिणाम उत्पन्न होते हैं। महान पुण्योदय से जब कोई महिला दीक्षा के लिए अग्रसर होती है, तब उसकी सर्वप्रथम परीक्षा केशलोंच की क्रिया से प्रारंभ होती है।

जब पांडाल में गणिनी आर्यिका एवं अन्य आर्यिकाओं के द्वारा केशलुंचन सम्पन्न कर दिया जाता है, तभी उसके आगे दीक्षा की क्रिया प्रारंभ होती है।

केशलोंच के पश्चात् उस श्राविका को सौभाग्यवती महिलाएँ मंगल स्नान के लिए ले जाती हैं जहाँ तेल, उबटन आदि लगाकर मंगल स्नान कराकर मात्र एक साड़ी, जैसा कि उन्हें अब जीवन भर एक साड़ी ही धारण करनी है, उसे पहनाकर पुनः मंगल गीत गाती हुईं महिलाएँ उस श्राविका को पुनः स्टेज पर लाती हैं।

चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरस्य संघस्य परम्परानुसारेण दीक्षायाः पूर्वं मंचे सा श्राविका जिनेन्द्रभगवतः पंचामृतगभिषेकं पूजनं च करोति। पुनः श्रीफलं गृहीत्वा गुरोश्चरणयोः समस्तानां जनानां साक्षीपूर्वकं दीक्षायै निवेदनं करोति। याश्च भाषणप्रदान–स्याभ्यासवत्यः सन्ति, ताः मंचमवस्थाय दीक्षाया प्रार्थनाहेतववैराग्यभावयुक्तं किंचित् भाषणमपि कुर्वन्ति। स्वपरिवारजनान् प्राणिमात्रं च क्षमायाचनां कुर्वन्ति। सर्वान् प्रति आत्मनः क्षमाभावं प्रकटयन्ति।

गुरोः पुनः पुनः स्वीकृतेरनन्तरं आचार्यो गणिनी वा सौभाग्यवतीभि महिलाभि पूरिते मंगलस्थाने दीक्षार्थिनीं महिलां पूर्वामुत्तरां वा दिशोन्मुखीं कृत्वोपवेशयन्ति। दीक्षप्रदाता आचार्यो गणिनी वा पूर्वं तां महिलां कथयति यत् त्वयाऽअस्माकं संघस्य मर्यादां पालयित्वा अनुशासने निवासः कर्तव्यः। एकाकिन्या विहारः न कर्तव्यः ख्यातिलाभपूजां च विचार्य स्वगुरोः परम्परा भंगा न कार्या इत्यादिविषयाणां स्वीकृतिं प्राप्य दीक्षार्थिन्याः संस्काराः प्रारभ्यन्ते।

यदा च सा दीक्षार्थिनी महिला गुरोः सर्वां वार्तां स्वीकरोति तदा गुरुवर्यः स्वसंघस्थान् सर्वानेव साधून् दीक्षार्थिन्याश्च कुटुम्बिजनान्, तत्र च उपस्थितान् सर्वान् जनसमूहान् पृच्छति यत् किमस्यै दीक्षा प्रदातव्या? तदा सर्वे साधवोऽपि धर्मवृद्ध्या हर्षिताःभूत्वा सहर्षं स्वीकृतिं प्रददति। श्रावकगणाः दीक्षार्थिन्याः कुटुम्बिनश्च दुःख मिश्रितेन हर्षपूर्वकं जय–जयकारध्वनिना सभां गुंजरितां कृत्वा स्वीकृति प्रददति।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की संघ परम्परानुसार दीक्षा से पूर्व मंच पर वह श्राविका जिनेन्द्र भगवान का पंचामृत अभिषेक पूजन करती है पुनः श्रीफल लेकर गुरु चरणों में समस्त जनता की साक्षीपूर्वक दीक्षा के लिए निवेदन करती है। जिन्हें भाषण देने का अभ्यास होता है, वे मंच पर खड़ी होकर दीक्षा की प्रार्थना हेतु वैराग्य भावों से युक्त कुछ भाषण भी करती हैं और अपने परिवारजनों एवं प्राणिमात्र से क्षमायाचना करती हुई सभी के प्रति स्वयं का क्षमाभाव भी प्रगट करती हैं।

गुरु की पुनः पुनः स्वीकृति प्राप्त होने के पश्चात् वे आचार्य अथवा गणिनी सौभाग्यवती महिलाओं के द्वारा पूरे गए मंगल चौक पर दीक्षार्थी महिला को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठा देते हैं। दीक्षा प्रदान करने वाली गणिनी आर्यिका अथवा आचार्य पहले उस दीक्षार्थी से कहते हैं कि तुम्हें हमारे संघ की मर्यादा और अनुशासन में रहना होगा, एकाकी विहार नहीं करना एवं ख्याति, लाभ, पूजा में पड़कर अपनी गुरु परम्परा को नहीं तोड़ना इत्यादि बातें मंजूर कराकर दीक्षा के संस्कार प्रारंभ कर दिये जाते हैं।

जब वह दीक्षार्थी महिला गुरु की सभी बातों को स्वीकार कर लेती है, तब गुरुवर्य अपने संघस्थ सभी साधुओं से, दीक्षार्थी के कुटुम्बियों से एवं वहाँ पर उपस्थित समस्त जनसमूह से पूछते हैं कि क्या इसे दीक्षा दी जावे? तब सभी साधुवर्ग भी धर्मवृद्धि से हर्षितमना होते हुए सहर्ष स्वीकृति देते हैं और श्रावकगण व दीक्षार्थी के कुटुम्बीवर्ग भी दुःखमिश्रित हर्षपूर्वक जय-जयकार की ध्वनि से सभा को गुंजायमान करते हुए स्वीकृति देते हैं।

पुनः तत्र शास्त्रेषु वर्णितायाः दीक्षाया विधेरनुसारेण गणिन्या मात्रा दीक्षार्थिन्याः मस्तकं उष्णप्रासुकजलेन प्रक्षालितं भवति, पुनः मस्तके बीजाक्षराणि विलिख्य पीततन्दुलैः लवंगैश्च मंत्राणामारोपणं क्रियते। तस्याः हस्ते च बीजाक्षरं विलिख्य द्वयोश्च हस्तयोः अंजुल्यां तन्दुलानि पूरयित्वा तयोश्च श्रीफलादीनि मंगलद्रव्याणि निक्षिप्य पुनस्तस्यै अष्टाविंशतिर्मूलगुणाः प्रदीयन्ते।

कुत्रचित् व्यवस्थापकगणः नवीनायै दीक्षितायै प्रदानहेतवे पिच्छिकाकमण्डलुशास्त्रादीनां विशेषविधिना व्यक्तिचयनं करोति। स्वगुरुपरम्परानुसारेण मंत्रान् पठित्वा गणिनी स्वयं संयमस्योपकरणं मयूरस्य पक्षाणां पिच्छिकां शौचाय चोपकरणभूतं नारिकेलस्य कमण्डलुं ज्ञानस्य चोपकरणं शास्त्रं प्रददाति। शिष्यापि विनयपूर्वकं द्वाभ्यां हस्ताभ्यां पिच्छिकां प्राप्नोति, वामेन हस्तेन च कमण्डलुं द्वाभ्यां हस्ताभ्यां च शास्त्रं गृह्णाति।

एतैः संस्कारै सह गुरुणा तस्याः नवदीक्षितायाः नवीनं नामकरणं क्रियते। तदैव नवीननामधारिण्याः आर्यिकामातुः जयकारैः मण्डपं गुंजायमानं भवति। समस्तैः वेशभूषाणां क्रियाणां च परिवर्तनेन सह नाम्ना अपि परिवर्तनेन अधुना सा पूर्णरुपेण नवीनजीवने प्रवेशं करोति।

नवदीक्षिता आर्यिका सर्वप्रथमं भक्तिपूर्वकं दीक्षागुरुं नमोऽस्तु–वन्दामि कृत्वा अन्यसाधु–साध्वीभ्यो नमोऽस्तु–वन्दामि कृत्वा नमस्कारं करोति। साधु श्रेण्यां प्रवेशं कुर्वन्त्या।

तां नवदीक्षिताऽर्यिकां कतिपयः दम्पतयः श्रीफलादिकं समर्प्य 'वन्दामि' इत्युच्चार्य नमस्कुर्वन्ति।

बस फिर क्या है, शास्त्रों में वर्णित दीक्षा विधि के अनुसार गणिनी माताजी के द्वारा दीक्षार्थी का मस्तक गरम प्रासुक जल से प्रक्षालित किया जाता है पुनः मस्तक पर बीजाक्षर लिखकर पीले तंदुल और लवंग से मंत्रों का आरोपण किया जाता है। उसके हाथ में बीजाक्षर लिखकर तथा दोनों हाथों की अंजुलि में तंदुल भरकर उसमें श्रीफल आदि मंगल द्रव्य रखकर पुनः उन्हें अट्ठाईस मूलगुण प्रदान किये जाते हैं।

कहीं-कहीं व्यवस्थापकगण नवीन दीक्षिता को प्रदान करने हेतु पिच्छी, कमण्डलु, शास्त्र आदि की बोलियाँ करते हैं पुनः अपनी गुरु परम्परानुसार गुर्वावली को पढ़कर मंत्रों द्वारा गणिनी स्वयं संयम का उपकरण मयूर पंख की पिच्छिका, शौच के लिए उपकरण स्वरूप नारियल का कमंडलु और ज्ञान का उपकरण शास्त्र प्रदान करती हैं। शिष्या भी विनयपूर्वक दोनों हाथों से पिच्छिका को प्राप्त करती है, बाएँ हाथ से कमंडलु को और दोनों हाथों से शास्त्र को ग्रहण करती है।

इन्हीं संस्कारों के साथ ही गुरुद्वारा उस नवदीक्षिता का नवीन नामकरण भी किया जाता है, तभी नये नाम वाली आर्यिका माताजी की जयकारों से पंडाल गूंजने लगता है। सारी वेशभूषा और क्रियाओं के परिवर्तन के साथ ही नाम भी परिवर्तित हो जाने से अब वह पूर्ण रूप से नवजीवन में प्रवेश कर जाती है।

पुनः नवदीक्षिता आर्यिका सर्वप्रथम भक्तिपूर्वक दीक्षागुरु को नमोऽस्तु-वंदामि करके अन्य साधु-साध्वियों को नमोऽस्तु-वंदामि करके साधु श्रेणी में ही बैठ जाती है।

उस नवदीक्षिता आर्यिका को सर्वप्रथम कुछ दम्पत्ति श्रीफल आदि चढ़ाकर ''वंदामि'' कहकर नमस्कार करते हैं।

एतच्च विशेषरूपेण ज्ञातव्यमस्ति, यत् दीक्षायाः दिने तस्याः दीक्षार्थिन्याः महिलायाः उपवासो भवति। द्वितीयदिने आहाराय गणिन्याः आर्यिकायाः पृष्ठभागे श्रावकाणां गृहेषु आहारहेतवे गच्छति। तत्र च श्रावकाः विधिपूर्वकं आह्वानं कृत्वा नवधाभक्त्या आहारदानं प्रदाय स्वजन्म सफलं कुर्वन्ति।

येन प्रकारेण मूलं विना वृक्षो न तिष्ठिति, मूलभित्तिं विना भवनं न निर्माप्यते, तेनैव प्रकारेण मूलं–प्रधानाचरणं विना श्रावकसाध्व्योश्च द्वयोरेव सार्थकता न भवति। अत्र आर्यिकाणां चर्याणां प्रकरणमस्ति, अतस्तासामेव मूलगुणानां कथनं क्रियते।

मुख्यतया मुनीनां मूलगुणाः अष्टाविंशतिर्भवन्ति। यथा च प्रतिक्रमण पाठे स्थाने–स्थाने कथनं लभ्यते।

वदसमिदिंदिय रोधो, लोचो आवासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेगभत्तं च।।
एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।।
एत्थ पमादकदादो, अइचारादो णियत्तो हं।।

पञ्च महाव्रतानि, पंच समितयः, पंचेन्द्रियनिरोधः, षट् आवश्यकक्रिया, लुंचनं, आचेलत्वं, अस्नानं, क्षितिशयनं, अदन्तधावनं, स्थितिभोजनं एकभक्तं च एतानि अष्टाविंशति मुलणुणानां नामानि सन्ति। एतान् तीर्थंकरादयोऽपि महापुरुषाः मुन्यवस्थायां पालयन्ति। यतो हि एतानि महान्ति सन्ति अतः तानि महाव्रतानि कथ्यन्ते।

यह विशेष ज्ञातव्य है कि दीक्षा के दिन उस दीक्षार्थी महिला का उपवास रहता है। द्वितीय दिवस पारणा के लिए गणिनी आर्यिका के पीछे श्रावकों के घर में आहार हेतु जाती हैं। वहाँ पर श्रावक विधिवत् पड़गाहन करके नवधाभक्ति से आहारदान देकर अपना जन्म सफल समझते हैं।

जिस प्रकार से मूल–जड़ के बिना वृक्ष नहीं ठहरता, मूल–नींव के बिना मकान नहीं बनता, उसी प्रकार मूल–प्रधान आचरण के बिना श्रावक और साधु दोनों की सार्थकता नहीं होती है। यहाँ पर आर्यिकाओं की चर्या का प्रकरण चल रहा है अतः उनके मूलगुणों का ही कथन किया जा रहा है।

मुख्यरूप से मुनियों के मूलगुण 28 होते हैं। जैसा कि प्रतिक्रमण पाठ में स्थान-स्थान पर कथन आता है–

वदसमिदिंदिय रोधो, लोचो आवासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं, ठिदिभोयणमेगभत्तं च।।1।।
एदे खलु मूलगुणा, समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमादकदादो, अइचारादो णियत्तो हं।।2।।

पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियनिरोध, षट् आवश्यकक्रिया, लोच, आचेलक्य, अस्नान, क्षितिशयन, अदन्तधावन, स्थितिभोजन और एकभक्त ये 28 मूलगुणों के नाम हैं। इन्हें तीर्थंकर आदि महापुरुष भी मुनि अवस्था में पालन करते हैं एवं ये स्वयं महान हैं अतः इन व्रतों को महाव्रत भी कहते हैं।

एतेषां मूलगुणानां नामानि लक्षणानि चात्र प्रस्तुतानि सन्ति।

(1) अहिंसामहाव्रतम्– **पृथिवीजलअग्निवायुवनस्पतयः त्रसाश्च एते षट्कायाः सन्तिः। एतेषां षट्कायजीवानां हिंसायाः मनसा, वचसा, कर्मणा पूर्णतया परित्यागः अहिंसामहाव्रतमस्ति। एतस्य महाव्रतस्य धारिणः सम्पूर्णआरम्भपरिग्रहरहिताः दिगम्बरमुनयो भवन्ति, एकशाटिकामात्र परिग्रहवत्यः आर्यिकाः भवन्ति।**

(2) सत्यमहाव्रतम्–**रागद्वेषमोहक्रोधादिदोषैः पूर्णानां वचनानां त्यागः। ईदृशं च सत्यमपि न वक्तव्यं येन प्राणिनां घातो भवति। तत् सत्यं महाव्रतमस्ति।**

(3) अचौर्यमहाव्रतम्–**ग्रामनगरादिके कस्यापि विस्मृतस्य प्रक्षिप्तस्य पतितस्य वा वस्तुनः स्वयं न ग्रहणं, अन्येषां च संगृहीतशिष्यपुस्तकादीनि च न ग्रहणं अदत्तानि च योग्यवस्तू–नामचौर्यमहाव्रतमस्ति।**

(4) ब्रह्मचर्यमहाव्रतम्– **रागभावं त्यक्त्वा पूर्णब्रह्मचर्येण सह स्थितिः, बालिकायुवतीवृद्धासु स्वपुत्रीभगिनी माता वत् भावधारणं त्रैलोक्यपूज्यं ब्रह्मचर्यमहाव्रतमस्ति।**

(5) परिग्रहत्यागमहाव्रतम्–**धनधान्यादिदशप्रकाराणां बहिरंगानां मिथ्यात्वादिकानां च चतुर्दशप्रकाराणां अन्तरंगपरिग्रहाणां त्यागः, वस्त्राभूषणालंकारादीनां च पूर्णतया त्यागः कौपीनमात्रमपि न धारणमपरिग्रह महाव्रतमस्ति। आर्यिकाभ्यः द्वे शाटिके रक्षणस्य विधानमेव तासां मूलगुणो भवति।**

इन 28 मूलगुणों के अलग-अलग नाम और लक्षण यहाँ पर प्रस्तुत हैं।

1. अहिंसा महाव्रत–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस ये छह काय हैं, इन छहकायिक जीवों की हिंसा का मन-वचन-काय से पूर्णतया त्याग कर देना अहिंसा महाव्रत है। इस महाव्रत वाले सम्पूर्ण आरंभ और परिग्रह से रहित दिगम्बर मुनि होते हैं और एक साड़ी मात्र परिग्रह वाली आर्यिकाएँ होती हैं।

2. सत्य महाव्रत–रागद्वेष, मोह, क्रोध आदि दोषों से भरे हुए वचनों का त्याग करना और ऐसा सत्य भी नहीं बोलना कि जिससे प्राणियों का घात होता है, सो सत्य महाव्रत है।

3. अचौर्य महाव्रत–ग्राम, शहर आदि में किसी की भूली, रखी या गिरी हुई वस्तु को स्वयं नहीं लेना, दूसरों के द्वारा संग्रहीत शिष्य, पुस्तक आदि को भी न लेना तथा दूसरों के दिए बिना योग्य वस्तु को भी नहीं लेना अचौर्य महाव्रत है।

4. ब्रह्मचर्य महाव्रत–रागभाव को छोड़कर पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहना, बालिका, युवती और वृद्धा में पुत्री, बहन और माता के समान भाव रखना त्रैलोक्यपूज्य ब्रह्मचर्य व्रत है।

5. परिग्रह त्याग महाव्रत–धन, धान्य आदि दश प्रकार के बहिरंग तथा मिथ्यात्व आदि चौदह प्रकार के अंतरंग परिग्रह का त्याग करना, वस्त्राभूषण, अलंकार आदि का पूर्णतया त्याग कर देना, यहाँ तक कि लंगोटमात्र भी नहीं रखना अपरिग्रह महाव्रत है। आर्यिकाओं के लिए दो साड़ी रखने का विधान ही उनका मूलगुण होता है।

आगमे कथितानुसारेण गमनागमने भाषणादिकेषु च सम्यक् प्रवृत्तिः समितिरस्ति। समितेरपि पंचभेदा सन्ति। ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपणमुत्सर्गाश्च।

(6) ईर्यासमितिः–**जन्तुरहितेन मार्गेण सूर्योदये प्राप्ते चतुरः हस्तान् भूमिं दृष्ट्वा एकाग्रचित्तेन तीर्थयात्रागुरुवन्दनादिधर्मकार्येभ्यः गमनं ईर्यासमितिरस्ति।**

(7) भाषासमितिः–**पैशून्यहास्यपूर्णकर्कशपरनिन्दाआदिभि रहितानां हितमितप्रिय वचनानां भाषणं भाषासमितिरस्ति।**

(8) एषणा समितिः–**षट्चत्वारिंशद्दोषरहितस्य द्वाविंशतिअन्तराय रहितस्य नवकोटि–शुद्धस्य श्रावकेण प्रदत्त आहारस्य ग्रहणं एषणासमितिरस्ति।**

(9) आदाननिक्षेपणसमितिः–**पुस्तककमण्डल्वादीनांनिक्षेपणस्योत्थानस्य समये कोमलमयूरपिच्छिकया परिमार्जनं कृत्वा निक्षेपः उन्निक्षेपश्च तृणग्रासविस्तरणपट्टादिकानि वस्तूनि सावधानतया दृष्ट्वा पिच्छिकया परिमार्जनं कृत्वा ग्रहणं, निक्षेपणं च आदाननिक्षेपण समितिर्विद्यते।**

(10) उत्सर्गसमितिः–**हरिततृणपिपीलिकादिरहिते प्रासुके स्थाने मलमूत्रादीनां विसर्जनं एषा उत्सर्गप्रतिष्ठापनसमितिरस्ति।**

स्पर्शरसनादिपंचेन्द्रियाणां स्ववशीकरणं एतानि च शुभध्याने लग्नानि करणं पंचेन्द्रिय–निरोधोऽस्ति। तेषां पंचेन्द्रियापेक्षया पंचभेदाः सन्ति।

आगम में कहे अनुसार गमनागमन, भाषण आदि में सम्यक् प्रवृत्ति करना समिति है। इसके भी पाँच भेद हैं– ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और उत्सर्ग।

6. ईर्यासमिति– निर्जंतुक मार्ग से सूर्योदय होने पर चार हाथ आगे जमीन देखकर एकाग्रचित्त करके तीर्थयात्रा, गुरुवंदना आदि धर्मकार्यों के लिए गमन करना ईर्यासमिति है।

7.भाषा समिति– चुगली, हँसी, कर्कश, परनिंदा आदि से रहित, हित, मित और असंदिग्ध वचन बोलना भाषा समिति है।

8. एषणा समिति– छ्यालिस दोष और बत्तीस अंतराय से रहित, नवकोटि से शुद्ध श्रावक के द्वारा तैयार किया गया ऐसा प्रासुक निर्दोष पवित्र आहार लेना एषणा समिति है।

9. आदान निक्षेपण समिति– पुस्तक, कमण्डलु आदि को रखते-उठाते समय कोमल मयूर पिच्छिका से परिमार्जन करके रखना, उठाना, तृण-घास, चटाई, पाटे आदि को भी सावधानी से देखकर पिच्छिका से परिमार्जन करके ग्रहण करना या रखना, आदान निक्षेपण समिति है।

10. उत्सर्ग समिति– हरी घास, चिंवटी आदि जीवजन्तु से रहित प्रासुक, ऐसे एकांत स्थान में मलमूत्रादि विसर्जन करना यह उत्सर्ग या प्रतिष्ठापन समिति है।

स्पर्शन, रसना आदि पाँचों इन्द्रियों को वश में रखना, इनको शुभध्यान में लगा देना पंचेन्द्रिय निरोध होता है। इसके भी पाँच इन्द्रियों की अपेक्षा से पाँच भेद होते हैं।

(11) स्पर्शनेन्द्रियनिरोधः–**सुखदायके कोमलस्पर्शादिके कठोरे भूम्यादीनां स्पर्शे च आनन्दस्य खेदस्यः प्रवृत्तिः न भवितव्या।**

(12) रसनेन्द्रियनिरोधः–**रसे मधुरे च भोजने हर्षस्य नीरसशुष्के च भोजने विषादस्य त्यागः।**

(13) घ्राणेन्द्रियनिरोधः–**सुगन्धिते पदार्थे दुर्गन्धिते वा रागद्वेषयोः परित्यागः।**

(14) चक्षुरिन्द्रियनिरोधः– **स्त्रीणां सुन्दररूपे, विकृतवेशे वा रागद्वेषभावस्य त्यागः।**

(15) कर्णेन्द्रियनिरोधः– **सुन्दरे गीते, वाद्ये, असुन्दरे च निन्दापैशून्यादिषु हर्षविषादयोस्त्यागः। मधुरगीतेषु रागभावस्य त्यागः।**

यत् अवश्यं जितेन्द्रिय मुनेः कर्तव्यमस्ति, तद् आवश्यक भवति। तस्य षड्भेदाः सन्ति। समता स्तुतिः वन्दना, प्रतिक्रमणं प्रत्याख्यानं कायोत्सर्गश्च।

(16) समता–**जीवनमरणयोः लाभअलाभयोः सुखदुःखयोः हर्ष विषादयोर्न करणं समानभावधारणं समतास्ति। अस्या एव नाम सामायिकमस्ति। त्रिकालेषु क्रियमाणा देववंदना एव सामायिक व्रतं स्यात्। प्रातः मध्याह्ने सायंकाले च न्यूनातिन्यूनं मुहूर्तमेकं मुहूर्तं 48 मिनट पर्यन्तं सामायिकं भवति।**

(17) स्तुतिः–**वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकराणां स्तुतिकरणं, स्तुतिनामकं आवश्यकं वर्तते।**

(18) वन्दना–**अर्हतां, सिद्धानां तेषां प्रतिमानां, जिनवाण्याः गुरुणां च कृतिकर्मपूर्वकं वन्दनाकरणं वन्दना नाम आवश्यकमस्ति।**

---

11. स्पर्शन इन्द्रिय निरोध–सुखदायक, कोमल स्पर्शादि में या कठोर कंकरीली भूमि आदि के स्पर्श में आनन्द या खेद नहीं करना।

12. रसनेंद्रिय निरोध–सरस, मधुर, भोजन में या नीरस, शुष्क भोजन में हर्ष-विषाद नहीं करना।

13. घ्राणेंद्रिय निरोध–सुगंधित पदार्थ में या दुर्गन्धित वस्तु में रागद्वेष नहीं करना।

14. चक्षुइंद्रिय निरोध–स्त्रियों के सुन्दर रूप या विकृतवेष आदि में रागभाव और द्वेष भाव नहीं करना।

15. कर्णेन्द्रिय निरोध–सुन्दर-सुन्दर गीत, वाद्य तथा असुन्दर-निन्दा, गाली आदि के वचनों में हर्ष-विषाद नहीं करना। यदि कोई मधुर गीतों से गान करता हो, तो उसे रागभाव से नहीं सुनना।

जो अवश–जितेन्द्रिय मुनि का कर्तव्य है, वह आवश्यक कहलाता है। उसके छः भेद हैं– समता, स्तुति, वंदना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग।

16. समता–जीवन-मरण, लाभ-अलाभ, सुख-दुःख आदि में हर्ष- विषाद नहीं करना, समान भाव रखना समता है। इसी का नाम सामायिक है। त्रिकाल में देववंदना करना यही सामायिक व्रत है। प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल में विधिवत् कम से कम एक मुहूर्त–48 मिनट तक सामायिक करना होता है।

17. स्तुति–वृषभ आदि चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति करना स्तुति नाम का आवश्यक है।

18. वंदना–अरिहंतों को, सिद्धों को, उनकी प्रतिमा को, जिनवाणी को और गुरुओं को कृतिकर्म पूर्वक नमस्कार करना वंदना है।

(19) प्रतिक्रमणं–**अहिंसादिव्रतेषु येऽतिचाराः जायन्ते तेषां निन्दागर्हापूर्वकं शोधनं–दूरीकरणं प्रतिक्रमणमस्ति। एतेषां प्रतिक्रमणानामपि सप्तभेदाः सन्ति। ऐर्यापथिकः, दैवसिकः, रात्रिकः पाक्षिकः चातुर्मासिकः सांवत्सरिकः उत्तमार्थश्च।**

गमनागमनेन समुद्भूतानां दोषाणां दूरीकर्तुं 'पडिक्कामि भंते! इरियावहियाए विराहणाए' इत्यादि दण्डकानामुच्चारणं कृत्वा कायोत्सर्गकरणं ऐर्यापथिकः अस्ति। दिवससम्बन्धिनः दोषान् दूरीकर्तुं सायंकाले 'जीवे प्रमाद जनिता' इत्यादिपाठकरणं दैवसिकोऽस्ति। रात्रिसम्बन्धिनः दोषान्निराकर्तुं रात्र्याः अन्ते प्रतिक्रमणकरणं रात्रिकः, प्रत्येक मासस्य चतुर्दश्यां पूर्णिमायां अमावस्यायां च पाक्षिकः, कार्तिकफाल्गुनमासस्यान्ते करणं चातुर्मासिकः, आषाढ़स्य अन्तिमचतुर्दश्यां पूर्णिमायां वा करणं सांवत्सरिकः मरणकाले च करणं उत्तमार्थं प्रतिक्रमणं विद्यते।

(20) प्रत्याख्यानम्– **मनसा वचसा कायेन च भविष्यदोषाणां परित्यागः प्रत्याख्यानमस्ति। आहारग्रहणानन्तरं गुरोः समीपे अग्रिमदिनस्य आहारग्रहणपर्यन्तं चतुराहारस्य त्यागः क्रियते, तत् प्रत्याख्यानं कथ्यते।**

(21) कायोत्सर्गः–**दैवसिकरात्रिकादिक्रियासु पञ्चविंशतिः सप्तविंशतिर्वा उच्छ्वास प्रमाणेन चतुःपंचाशत् अष्टोपरिशतोच्छ्वासपूर्वकं णमोकारमंत्रस्य स्मरणम्। काय–शरीरात् उत्सर्गः–ममत्वत्यागः कायोत्सर्गो भवति।**

---

19. प्रतिक्रमण–अहिंसादि व्रतों में जो अतिचार आदि दोष उत्पन्न होते हैं, उनको निंदा-गर्हापूर्वक शोधन करना–दूर करना प्रतिक्रमण है। इसके भी सात भेद हैं–ऐर्यापथिक, दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, सांवत्सरिक और उत्तमार्थ।

गमनागमन से हुए दोषों को दूर करने के लिए 'पडिक्कमामि भंते! इरियावहियाए विराहणाए' इत्यादि दण्डकों का उच्चारण करके कायोत्सर्ग करना ऐर्यापथिक है। दिवस संबंधी दोषों को दूर करने के लिए सायंकाल में 'जीवे प्रमाद जनिता' इत्यादि पाठ करना दैवसिक, रात्रि संबंधी दोषों के निराकरण हेतु रात्री के अंत में प्रतिक्रमण करना रात्रिक, प्रत्येक मास की चतुर्दशी या पूर्णिमा या अमावस्या को करना पाक्षिक, कार्तिक और फाल्गुन मास के अंत में करना चातुर्मासिक, आषाढ़ की अंतिम चतुर्दशी या पूर्णिमा को करना सांवत्सरिक तथा मरणकाल में करना उत्तमार्थ प्रतिक्रमण है।

20. प्रत्याख्यान–मन-वचन-काय से भविष्य के दोषों का त्याग करना प्रत्याख्यान है। आहार ग्रहण करने के अनन्तर गुरु के पास अगले दिन आहार ग्रहण करने तक के लिए जो चतुराहार का त्याग किया जाता है, वह प्रत्याख्यान कहलाता है।

21. कायोत्सर्ग–दैवसिक, रात्रिक आदि क्रियाओं में पच्चीस या सत्ताईस उच्छ्वास प्रमाण से तथा चौवन, एक सौ आठ आदि श्वासोच्छ्वास पूर्वक णमोकार मंत्र का स्मरण करना। काय–शरीर से उत्सर्ग–ममत्व का त्याग करना कायोत्सर्ग है।

अत्र पर्यन्तं एकविंशतिर्मूलगुणाः अभवन्, अधुना शेषान् सप्तगुणान् स्पष्टीक्रियते।

22 (1) लुंचनम्–**स्वहस्ताभ्यां स्वशिरसः श्मश्रुकेशानामुत्खातनं केशलुंचनं मूलगुणोऽस्ति केशेषु यूकादिजीवोत्पादनेन हिंसा भविष्यति तान् वा संस्कारितान् कर्तुं तैलादीनां आवश्यकता भविष्यति यश्च साधुपदाय विरुद्धमस्ति अतः दीनतायाचनपरिग्रहअपमानादिदोषेभ्यः स्वात्मानं रक्षणार्थं इयं क्रिया विद्यते। लुंचनस्य दिने उपवासो भवति। लुंचन कर्तुं कारयितुं वा समये मौनमाश्रियते।**

एतस्य उत्तममध्यमजघन्यरूपेण त्रयो भेदाः सन्ति। द्वयोर्मासयोः पूर्णतायां उत्तमं, त्रिसु मासेषु मध्यमं, चतुर्मासानां च पूर्णतायां जघन्यलुंचनं भवति। चतुर्मासादुपरिकाले साधुः प्रायश्चित्तस्य भागी भवति।

23 (2) अचेलकत्वम्–**सूत्रनिर्मितवस्त्राणां पत्राणां बल्कलानां च परित्यागः नग्न वेशधारणं अचेलकत्वमस्ति। एतच्च महापुरुषैरेव स्वीक्रियते। त्रिषु जगत्सु वन्दनीयं महत्पदमस्ति। वस्त्रणां ग्रहणकरणेन परिग्रहः आरम्भः क्षालनं शोषणं याचनं च आदिदोषाः भवन्ति। अतएव निष्परिग्रहिणः साधोरिदं व्रतं भवति।**

24 (3) अस्नानव्रतम्–**स्नानं उद्वर्तनादिभिःरूपशरीरस्य संस्काराणां त्यागः अस्नानव्रतमस्ति। धूलिना धूसरितः मलिनशरीरधारी मुनिः कर्ममलं प्रक्षालयति। चाण्डालादिअस्पृश्यजन–अस्थिचर्मविष्टादीनां स्पर्शेनं ते मुनयः दण्डस्नानं कृत्वा गुरुणा प्रायश्चित्तं गृह्णान्ति।**

यहाँ तक इक्कीस मूलगुण हुए हैं, अब शेष सात गुण को भी स्पष्ट करते हैं।

22. (1) लोंच–अपने हाथ से अपने सिर, दाढ़ी और मूंछ के बाल उखाड़ना केशलोंच मूलगुण है। केश में जूँ आदि जीव पड़ जाने से हिंसा होगी या उन्हें संस्कारित करने के लिए तेल, साबुन आदि की जरूरत होगी, जो कि साधु पद के विरुद्ध होगा अतः दीनता, याचना, परिग्रह, अपमान आदि दोषों से बचने के लिए यह क्रिया है। लोंच के दिन उपवास करना होता है और लोंच करते या कराते समय मौन रखना होता है।

इसके उत्तम, मध्यम और जघन्य ऐसे तीन भेद हैं–दो महीने पूर्ण होने पर उत्तम, तीन महीने में मध्यम और चार महीने पूर्ण होने पर जघन्य केशलोंच कहलाता है । चार महीने के ऊपर हो जाने पर साधु प्रायश्चित्त का भागी होता है।

23. (2) अचेलकत्व–सूती, रेशमी आदि वस्त्र, पत्र, वल्कल आदि का त्याग कर देना, नग्न वेश धारण करना अचेलकत्व है। यह महापुरुषों द्वारा ही स्वीकार किया जाता है, तीनों जगत में वंदनीय महान पद है। वस्त्रों के ग्रहण करने से परिग्रह, आरंभ, धोना, सुखाना और याचना करना आदि दोष होते हैं, अतः निष्परिग्रही साधु के यह व्रत होता है।

24. (3) अस्नानव्रत–स्नान, उबटन आदि रूप शरीर के संस्कारों का त्याग करना, अस्नान व्रत है। धूलि से धूसरित, मलिन शरीरधारी मुनि कर्ममल को धो डालते हैं। चांडालादि अस्पृश्यजन, हड्डी, चर्म, विष्ठा आदि का स्पर्श हो जाने से वे मुनि दंडस्नान करके गुरु से प्रायश्चित्त ग्रहण करते हैं।

25 (4) भूमिशयनम्–**जन्तुरहितायां भूमौ ग्रासे कटे पट्टे वा शयनं भूमिशयनव्रतमस्ति। ध्यानेन स्वाध्यायेन वा गमनागमनेन वा उत्पन्नां श्रान्तिं दूरीकर्तुं स्वल्पनिद्रायाः विधानमस्ति।**

26 (5) अदन्तधावनम्–**निम्बस्य दण्डेन 'ब्रश'आदिना दन्तधावन परित्यागः। दन्तानां अघर्षणेन इन्द्रियसंयमो भवति। शरीरात् विरागता च प्रकटीभवति। सर्वज्ञदेवस्य आज्ञापालनं च भवति।**

27 (6) स्थितिभोजनम्–**अवस्थाय स्वहस्तयोरंजुलिं कृत्वा श्रावकेण दत्तस्य आहारस्य ग्रहणं स्थितिभोजनमस्ति। आर्यिका उपविश्य करपात्रे भोजनं गृह्णाति।**

28 (7) एकभक्तम्–**सूर्योदयानन्तरं त्रिघटिकायाः पश्चात् सूर्यास्तस्य त्रिघटिकापूर्वं दिने सामायिककालस्य ऋते कदापि एकाबारं आहारग्रहणं एकभक्तमस्ति। आधुनिककाले प्रायः नववादनतः एकादशवादनपर्यन्तं साधुजनाः आहारार्थं गच्छन्ति। कदाचित् एकवादनेऽपि गन्तुं शक्नुवन्ति। दिने एकदैव आहाराय गन्तव्यम्। अलाभे पुनः आहारार्थं न गन्तव्यम्।**

आर्यिकाणामेतेऽष्टाविंशतिमूलगुणाः केन प्रकारेण भवन्ति? अस्य प्रश्नस्य उत्तरं परमपूज्यया गाणिन्या आर्यिकारत्नज्ञानमत्या मात्रा लिखितपुस्तके 'आर्यिका' नाम्न्यामस्ति। यथा–

प्रायश्चित्तग्रन्थे आर्यिकाभ्यः आज्ञा प्रदत्ताऽस्ति यत् आर्यिकाः धारणाय द्वे शाटिके गृण्हन्तु। एताभ्यां द्विवस्त्राभ्यां अतिरिक्तं तृतीयवस्त्रं ताभ्यः प्रायश्चित्तमस्ति।

एतयोर्द्वयोर्वस्त्रयोऽभिप्रायोऽस्ति यत् द्वे शाटिके षोडशहस्तानां भवतः। एकदा एकैव

---

25. (4) भूमिशयन– निर्जंतुक भूमि में घास या पाटा अथवा चटाई पर शयन करना भूमिशयन व्रत है। ध्यान, स्वाध्याय आदि से या गमनागमन से आई शारीरिक थकान को दूर करने हेतु स्वल्प निद्रा का विधान है।

26. (5) अदंतधावन– नीम की लकड़ी, ब्रुश आदि से दातौन नहीं करना। दाँतों को नहीं घिसने से इंद्रियसंयम होता है, शरीर से विरागता प्रगट होती है और सर्वज्ञ देव की आज्ञा का पालन होता है।

27. (6) स्थिति भोजन– खड़े होकर अपने दोनों हाथों की अंजुलि बनाकर श्रावक के द्वारा दिया हुआ आहार ग्रहण करना स्थिति भोजन है। आर्यिकाएँ बैठकर करपात्र में आहार ग्रहण करती हैं।

28. (7) एक भक्त– सूर्योदय के अनंतर तीन घड़ी के बाद और सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले तक दिन में सामायिक काल के सिवाय कभी भी एक बार आहार ग्रहण करना एकभक्त है। आजकल प्रायः नौ बजे से ग्यारह बजे तक साधु जन आहार को जाते हैं। कदाचित् एक बजे से भी जा सकते हैं। दिन में एक बार ही आहार को निकलना चाहिए। कदाचित् लाभ न मिलने पर उस दिन पुनः आहारार्थ नहीं जाना चाहिए।

आर्यिकाओं के ये 28 मूलगुण कैसे होते हैं? इस बात का खुलासा परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित 'आर्यिका' नामक पुस्तक में है। यथा–

प्रायश्चित्त ग्रंथ में आर्यिकाओं के लिए आज्ञा प्रदान की है कि "आर्यिकाओं को अपने पहनने के लिए दो साड़ी रखना चाहिए। इन दो वस्त्रों के सिवाय तीसरा वस्त्र रखने पर उसके लिए प्रायश्चित्त होता है।"

इन दो वस्त्रों का ऐसा मतलब है कि दो साड़ी लगभग 16-16 हाथ की रहती हैं। एक बार में

धारणीया विद्यते, द्वितीयां च क्षालयित्वा शोषयन्ति। या च द्वितीयदिवसे परिवर्तिता भवति। षोडशहस्तानां शाटिका विषये आगमे कुत्राापि वर्णनं न प्राप्यते। मात्रं गुरुपरम्परायैषा व्यवस्था संचाल्यते। आगमे तु द्विशाटिकामात्रस्योपदेशोऽस्ति।

चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरस्य प्रथमपट्टशिष्यो (यः मातुः ज्ञानमत्यां दीक्षागुरुरस्ति) आचार्यो वीरसागरो कथयति यत् द्वे शाटिके मात्र रक्षणेन आर्यिकायाः ''अचेलकत्वनामको'' **मूलगुणो न्यूनं न भवति, किन्तु ताभ्यः आगमस्य आज्ञया एषः एव मूलगुणोऽस्ति। बाढं, तृतीया शाटिका यदि काचिदार्यिका रक्षति तु तस्याः मूलगुणे दोषोऽवश्यमेव जायते। एवमेव** 'स्थितिभोजन' **मुलगुणे मुनिस्तु भोजनं अवस्थाय एव गृह्णाति आर्यिकाश्च उपविश्य भोजनं गृह्णन्ति, अयमपि शास्त्रस्य आज्ञायाः विधानेन तासां मूलगुण एवास्ति। यदि कापि आर्यिका आगमाज्ञायाः उल्लंघनं कृत्वा अवस्थाय आहारं गृह्णाति तु अवश्यमेव तस्याः मुलगुणो भंगो भवति। अतएव ताभ्योऽपि अष्टाविंशतिमूलगुणमान्यतायां कापि बाधा नास्ति। एतदेव कारणमस्ति यत् आर्यिकाभ्यः उपचारात् महाव्रती संज्ञा दीयते।**

आर्यिकाः शाटिकामात्रं परिग्रहधारणं कृत्वापि कौपीनअल्पपरिग्रहधारकेण ऐलकेन पूज्यास्ति। यथा सागारधर्मामृते प्रकरणं लभ्यते–

कौपीनेऽपि सम्मूर्छत्वान्नार्हत्यार्यो महाव्रतं।
अपि भाक्तममूर्च्छत्वात् शाटिकेऽप्यार्यिकार्हति।।

एक ही पहनना होता है, दूसरी धोकर सुखा देती हैं जो कि द्वितीय दिवस बदली जाती है। सोलह हाथ की साड़ी के विषय में आगम में कहीं वर्णन नहीं आता है, मात्र गुरु परम्परा से यह व्यवस्था चली आ रही है, आगम में तो केवल दो साड़ी मात्र का उपदेश है।

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज (ज्ञानमती माताजी के दीक्षा गुरु) कहते थे कि दो साड़ी रखने से आर्यिका का **'आचेलक्य'** नामक मूलगुण कम नहीं होता है किन्तु उनके लिए आगम की आज्ञा होने से यही मूलगुण है। हाँ! तृतीय साड़ी यदि कोई आर्यिका रखती है, तो उसके मूलगुण में दोष अवश्य आता है। इसी प्रकार से **'स्थितिभोजन'** मूलगुण में मुनिराज खड़े होकर आहार करते हैं और आर्यिकाओं को बैठकर आहार लेना होता है, यह भी शास्त्र की आज्ञा होने से उनका मूलगुण ही है। यदि कोई आर्यिका आगमाज्ञा उलंघन कर खड़ी होकर आहार ले लेवे तो अवश्य उसका मूलगुण भंग होता है। इसीलिए उनके भी अट्ठाईस मूलगुण मानने में कोई बाधा नहीं है। यही कारण है कि आर्यिकाओं को उपचार से महाव्रती संज्ञा दी गई है।

आर्यिकाएँ साड़ीमात्र परिग्रह धारण करते हुए भी लंगोटी मात्र अल्पपरिग्रह धारक ऐलक के द्वारा पूज्य हैं। जैसा कि सागारधर्मामृत में पृष्ठ 518 पर प्रकरण आया है–

कौपीनेऽपि समूर्च्छत्वान्नार्हत्यार्यो महाव्रतं।
अपिभाक्तममूर्च्छत्वात् साटिकेऽप्यार्यिकार्हति।।36।।

पण्डितः श्री आशाधरः कथयति– अहो! आश्चर्यमस्ति यत् ऐलकस्तु कौपीनस्य त्यागं कर्तुमर्हति। पुनरपि ममत्वादिकारणैः धारकोऽस्ति, किन्तु आर्यिकां शाटिका त्यक्तुमसमर्थैवास्ति। तासामियं शटिकासीविता न भवितव्या। अर्थात् यत् वस्त्रं सीवितमस्ति तस्य ताभ्यस्त्यागोऽस्ति। आचारसार ग्रन्थेऽपि वर्णनमस्ति–

देशव्रतान्वितैस्तासामारोप्यैते बुधैस्ततः।
महाव्रतानि सज्जातिज्ञप्त्यर्थमुपचारतः।।

अर्थात् गणधरादिदेवाः तासामार्यिकाणां सज्जातित्वादिकं सूचयितुं तासु उपचारात् महाव्रतस्यारोपणमकुर्वन्। शाटिकाधारणेन आर्यिकासु देशव्रतान्येव भवन्ति परन्तु सज्जातित्वादि–कारणेभ्यः गणधरादयो देवाः तासां देशव्रतेषु उपचारात् महाव्रतानामारोपणमकुर्वन्।

प्रायश्चित्तग्रन्थेऽपि आर्यिकाणां मुनिभिः समं प्रायश्चित्तस्य विधानमस्ति। क्षुल्लकादीनां च ताभ्य अर्धमितिरूपेणास्ति।

साधूनां यद्वदुद्दिष्टमेवमार्यागणस्य च।
दिनस्थान त्रिकालोनं प्रायश्चित्तं समुच्यते।।

यथा प्रायश्चित्तं साधुभ्यः उक्तमस्ति तथैवार्यिकाणामप्युक्तम्। अत्र विशेषोऽयं यत्

पण्डित श्री आशाधर जी कहते हैं कि अहो! आश्चर्य है कि ऐलक लंगोटी में ममत्व परिणाम होने से उपचार से भी महाव्रती नहीं हो सकता है किन्तु आर्यिका साड़ी धारण करने पर भी ममत्व परिणाम रहित होने के कारण उपचार से महाव्रती कहलाती है क्योंकि ऐलक तो लंगोटी का त्याग कर सकता है फिर भी ममत्व आदि कारणों से धारण किए है किन्तु आर्यिका तो साड़ी त्याग करने में असमर्थ है। उनकी यह साड़ी बिना सिली हुई होनी चाहिए अर्थात् सिले हुए वस्त्र पहनने का उनके लिए निषेध है।

आचारसार ग्रंथ में भी वर्णन आया है–

देशव्रतान्वितैस्तासामारोप्यैते बुधैस्ततः।
महाव्रतानि सज्जातिज्ञप्त्यर्थमुपचारतः।।89।।

अर्थात् गणधर आदि देवों ने उन आर्यिकाओं की सज्जाति आदि को सूचित करने के लिए उनमें उपचार से महाव्रत का आरोपण करना बतलाया है। साड़ी धारण करने से आर्यिकाओं में देशव्रत ही होते हैं परन्तु सज्जाति आदि कारणों से गणधर आदि देवों ने उनके देशव्रतों में उपचार से महाव्रतों का आरोपण किया है।

प्रायश्चित्त ग्रंथ में भी आर्यिकाओं को मुनियों के बराबर प्रायश्चित्त का विधान है तथा क्षुल्लक आदि को उनसे आधा इत्यादि रूप से है–

साधूनां यद्वदुद्दिष्टमेवमार्यागणस्य च।
दिनस्थान त्रिकालोनं प्रायश्चित्तं समुच्यते।।114।।

जैसा प्रायश्चित्त साधुओं के लिए कहा गया है, वैसा ही आर्यिकाओं के लिए कहा गया है।

प्रतिमा त्रिकालयोगः, चकारशब्दात् अन्यग्रन्थानुसारेण वा पर्यायच्छेदः (दीक्षाछेदः) मूलस्थानं परिहारश्च एते प्रायश्चित्तान्यपि आर्यिकाभ्यो न सन्ति।

आर्यिकाभ्यश्च दीक्षाविधिरपि तत्र पृथक्, नास्ति। मुनीनां दीक्षाविधिना एव ताः अपि दीक्षिताः भवन्ति।

एतैः सर्वैः कारणैः स्पष्टमस्ति यत् आर्यिकाणां व्रतानि चर्यादयोऽपि मुनिसदृश्याः एव सन्ति।

उक्तं च– ''सूत्राणां सुनियोजनेन, परिधानं भवति। ईष्टिकानां च सुयोजनेन भवनं निर्मीयते।। गुणानां धारणेन गुणवान् भवति। रत्नत्रये च रमणेन जनोः भगवान् भवितुमर्हति।।''

एतेन सर्वेण निष्कर्षोऽयं प्रत्येकमूलगुणस्य अतिचाररहितपालनेन आर्यिका मुक्तिपथानुसारिणी भवति। एषा च व्यवस्था अनादिकालात् प्रवर्तमाना अस्ति। वर्तमानेऽपि एषा व्यवस्था दृश्यते यत् एताः आर्यिकाः एकां शाटिकां धारयन्ति, यया तासां सम्पूर्णं शरीरमावृतं भवति। हस्ते च मयूरपक्षाणां पिच्छिकां धारयन्ति। तथा शौचस्योपकरणं काष्ठस्य नारिकेलस्य वा कमण्डलुं धारयन्ति।

आर्यिकायाः अष्टविंशतिः कायोत्सर्गाः–**मुनीनामार्यिकाणां च दैनिकाः अष्टविंशतिः कायोत्सर्गाः भवन्ति। ये च प्रतिक्षणं प्रातःकालात् रात्रिविश्रामपर्यन्तं क्रियन्ते। तेषामेव स्पष्टीकरणं विधीयते–**

विशेष इतना है कि दिन, प्रतिमा, त्रिकालयोग चकार शब्द से अथवा अन्य ग्रंथों के अनुसार पर्यायच्छेद (दीक्षा छेद) मूलस्थान तथा परिहार ये प्रायश्चित्त भी आर्यिकाओं के लिए नहीं हैं।

आर्यिकाओं के लिए दीक्षाविधि भी अलग से नहीं है। मुनिदीक्षा विधि से ही उन्हें दीक्षा दी जाती है।

इन सभी कारणों से स्पष्ट है कि आर्यिकाओं के व्रत, चर्या आदि मुनियों के सदृश हैं। कहा भी है–

धागों को बुनने से परिधान बन जाता है।
ईंटों को चुनने से मकान बन जाता है।।
गुणों को गुनने से गुणवान बन जाता है।
रत्नत्रय में रमने से मानव भगवान बन जाता है।।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह निकलता है कि एक-एक मूलगुण को अतिचार रहित पालन करने वाली आर्यिका मुक्तिपथ की अनुगामिनी होती है। यही व्यवस्था अनादिकाल से चली आ रही है। वर्तमान में भी यही व्यवस्था देखने में आती है कि ये आर्यिकाएँ एक साड़ी पहनती हैं, जिससे उनका सम्पूर्ण शरीर ढका रहता है, हाथ में मयूर पंख की पिच्छी रखती हैं तथा शौच का उपकरण काठ या नारियल का कमंडलु रखती हैं।

आर्यिकाओं के 28 कायोत्सर्ग–मुनि-आर्यिकाओं के दैनिक 28 कायोत्सर्ग होते हैं जो कि प्रातःकाल से रात्रिविश्राम के पूर्व तक किये जाते हैं। उन्हीं का स्पष्टीकरण किया जाता है–

सर्वप्रथमं प्रातःकालात् एतेषां कायोत्सर्गाणां शुभारम्भो भवति। वस्तुतस्तु साधुजीवने प्रतिक्षणं स्वाध्यायस्य अध्ययनस्य च प्रामुख्यत्वेन शुभोपयोगः एवं भवति। तथाप्याचार्य-कुन्दकुन्दः कृतिकर्मविधिपूर्वकं तेषामेव कर्तुमादेशं प्रादात् तेषु च कायोत्सर्गस्य गणना भवति। अत्रैकस्य कायोत्सर्गस्य अभिप्रायः सप्तविंशतिश्वासोच्छ्वासेसु नववारं णमोकारमंत्रस्य जाप्यमस्ति।

रात्रौ एकवादनस्य पश्चात् गृहीत्वा सूर्योदयात् द्विघटिकापूर्वपर्यन्त यथाशक्तिं स्वाध्यायः कर्तव्यः। एषश्चापरात्रिकः स्वाध्यायः कथ्यते। स्वाध्यायस्य प्रारम्भात् पूर्वं स्वाध्याय-प्रतिष्ठापनहेतवे लघुश्रुतभक्तेः आचार्यभक्तेश्च सम्बन्धिनौ द्वौ कायोत्सर्गौ भवतः। पुनः स्वाध्यायस्य पश्चात् स्वाध्यायस्य निष्ठापनहेतवे श्रुतभक्तिसम्बन्धी एकः कायोत्सर्गो भवति। अनेन प्रकारेण एकस्मिन् स्वाध्याये त्रयः कायोत्सर्गाः करणीयाः भवन्ति। यद्यपि एषः विधिः अधिकप्रचलने नास्ति, प्रायः जनाः नवबारं णमोकारमंत्रं पठित्वा स्वाध्यायस्य शुभारंभं समापनं च कुर्वन्ति, किन्तु आगमानुसारेण उपर्युक्तो विधिरावश्यकं भवति। पुनः रात्रिसम्बन्धिदोषान् अपहर्तुं गणिन्याः मातुः समक्षं रात्रिकप्रतिक्रमणं क्रियते। यस्मिन् सिद्धभक्तिः प्रतिक्रमणभक्तिः वीरभक्तिः चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्तिश्च भवन्ति। एतासु चतुभक्तिसम्बन्धिताः चत्वारः कायोत्सर्गाः भवन्ति। पुनः रात्रियोगनिष्ठापनहेतवे योगभक्तिसम्बन्धी एकः कायोत्सर्गः भवति।

एतदनन्तरं सूर्योदयात् द्विघटिकापूर्वं द्विघटिकायाश्च पश्चात् पर्यन्तं सन्धिकाले पौर्वाण्हिक-

---

सर्वप्रथम प्रातःकाल से इन कायोत्सर्गों का शुभारंभ होता है। यूँ तो साधु जीवन में प्रतिक्षण स्वाध्याय, अध्ययन आदि की प्रमुखता होने से शुभोपयोग ही रहता है तथापि आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने कृतिकर्म विधिपूर्वक उन्हीं क्रियाओं को करने का आदेश दिया है, जिनमें कायोत्सर्गों की गणना हो जाती है। यहाँ एक कायोत्सर्ग का अभिप्राय 27 स्वासोच्छ्वास में 9 बार णमोकार मंत्र जपना है।

रात्रि एक बजे के पश्चात् से लेकर सूर्योदय से 2 घड़ी पूर्व तक यथाशक्ति स्वाध्याय करना चाहिए, इसे अपररात्रिक स्वाध्याय कहते हैं। स्वाध्याय प्रारंभ करने से पूर्व स्वाध्याय प्रतिष्ठापन हेतु लघु श्रुतभक्ति और आचार्यभक्ति संबंधी दो कायोत्सर्ग होते हैं पुनः स्वाध्याय के पश्चात् स्वाध्याय निष्ठापन हेतु श्रुतभक्ति संबंधी एक कायोत्सर्ग होता है, ऐसे एक स्वाध्याय करने में 3 कायोत्सर्ग करने होते हैं। यद्यपि यह विधि अधिक प्रचलन में नहीं है, प्रायः 9 बार णमोकार मंत्र मात्र पढ़कर लोग स्वाध्याय प्रारंभ कर देते हैं और अन्त में भी 9 बार णमोकार मंत्र पढ़कर स्वाध्याय समापन कर देते हैं किन्तु आगमानुसार उपर्युक्त विधि आवश्यक होती है। पुनः रात्रि संबंधी दोषों का शोधन करने हेतु गणिनी माताजी के पास रात्रिक प्रतिक्रमण करना होता है, जिसमें सिद्धभक्ति, प्रतिक्रमणभक्ति, वीरभक्ति और चतुर्विंशति तीर्थंकर भक्ति इन चार भक्तिसंबंधी 4 कायोत्सर्ग होते हैं पुनः रात्रियोग निष्ठापन करने हेतु योगभक्ति संबंधी एक कायोत्सर्ग होता है।

इसके अनंतर सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व और दो घड़ी पश्चात् तक के संधिकाल में पौर्वाण्हिक

सामायिकं क्रियते। एतस्मिन् सामायिके चैत्यभक्तिपंचगुरुभक्तिसम्बन्धिनौ द्वौ कायोत्सर्गौ भवतः। अनन्तरं पौर्वाण्हिक– स्वाध्यायः सूर्योदयस्य द्वयोर्घटिकयोः पश्चात् भवति। तस्मिन्नपि पूर्वोक्ताः त्रयः कायोत्सर्गाः भवन्ति।

पुनः आहारचर्या सम्पद्यते। तस्याः पश्चात् आर्यिकाः मध्याह्नस्य सामायिकं कुर्वन्ति। यस्मिन् द्वौ कायोत्सर्गौ भवतः। सामायिकस्य जघन्यकालः द्वेघटिके अर्थात् 48 मिनट भवति। अस्मात् अधिकं एकहोरापर्यन्तं द्विहोरापर्यन्तं च सामायिकं क्रियते। अनन्तरं मध्याह्नस्य चतसृणां घटिकानां समाप्तौ अपराण्हिकः स्वाध्यायः क्रियते। अस्मिन् त्रयः कायोत्सर्गाः भवन्ति। एतस्य पश्चात् दिवससम्बन्धिनां दोषाणां क्षालनाय सर्वाः आर्यिकाः सामूहिकरूपेण दैवसिकं प्रतिक्रमणं विदधति। यस्मिन् चत्वारः कायोत्सर्गाः भवन्ति। पुनः स्ववसतिकायामागत्य सामायिकात् पूर्वं रात्रियोगस्य प्रतिष्ठापनायै योगभक्तिं कुर्वन्ति च यस्मद् एकः कायोत्सर्गो भवति। रात्रियोगस्य अभिप्रायोऽस्ति ''अहं अद्य रात्रौ यस्मात् वसतिकायां निवासं करिष्यामि।'' यतो हि साधवः रात्रौ यत्र तत्र विचरणं न कुर्वन्ति। मलमूत्रादिकविसर्जनाय दिवा एव स्थानं पश्यन्ति यच्च वसतिकायाः समीपस्थमेव भवति।

अनन्तरं आर्यिकाः सायंकालीनं सामयिकं (देववन्दनां) कुर्वन्ति। तस्मिन् उपर्युक्तौ द्वावेव कायोत्सर्गौ भवतः। पुनः रात्रिकस्वाध्यायस्य त्रयान् कायोत्सर्गान् कुवन्ति। एतेन अहोरात्रस्य अष्टाविंशति कायोत्सर्गान् प्रतिदिनं पूर्णसावधानतया कुर्वन्ति। पुनः महामंत्रस्य स्मरणं कुर्वन्त्यः रात्रौ विश्रामं कुर्वन्ति।

सामायिक की जाती है। इस सामायिक में चैत्यभक्ति और पंचगुरुभक्ति संबंधी दो कायोत्सर्ग होते हैं। अनंतर पौर्वाण्हिक स्वाध्याय सूर्योदय के दो घड़ी बाद होता है, उसमें भी पूर्वोक्त 3 कायोत्सर्ग होते हैं।

पुनः आहारचर्या सम्पन्न होती है। उसके पश्चात् आर्यिकाएँ मध्यान्ह की सामायिक करती हैं जिसमें 2 कायोत्सर्ग होते हैं। सामायिक का जघन्य काल 2 घड़ी अर्थात् 48 मिनट होता है। इससे अधिक घंटे,दो घंटे भी सामायिक की जा सकती है। अनंतर मध्यान्ह की चार घड़ी बीत जाने पर अपराण्हिक स्वाध्याय किया जाता है जिसमें 3 कायोत्सर्ग होते हैं। इसके पश्चात् दिवस संबंधी दोषों के क्षालन हेतु सभी आर्यिकाएँ सामूहिक रूप से दैवसिक प्रतिक्रमण करती हैं, जिसमें 4 कायोत्सर्ग होते हैं पुनः अपनी वसतिका में आकर सामायिक से पूर्व रात्रियोग प्रतिष्ठापन के लिए योगभक्ति करती हैं जिसका एक कायोत्सर्ग होता है। रात्रियोग का मतलब यह है कि 'मैं आज रात्रि में इस वसतिका में ही निवास करूँगी' क्योंकि साधुजन रात्रि में यत्र-तत्र विचरण नहीं करते हैं। मल-मूत्रादि विसर्जन के लिए भी दिन में ही स्थान देख लेते हैं जो कि वसतिका के आसपास ही होता है।

अनंतर आर्यिकाएँ सायंकालिक सामायिक (देववंदना) करती हैं उसमें उपर्युक्त दो कायोत्सर्ग होते हैं, पुनः पूर्वरात्रिक स्वाध्याय के तीन कायोत्सर्ग करती हुई अपने अहोरात्रि के 28 कायोत्सर्ग प्रतिदिन पूर्ण सावधानी पूर्वक करती हैं पुनः महामंत्र का स्मरण करते हुए रात्रि विश्राम करती हैं।

इयमेव चर्या प्राचीनकालात् मुनीनांमार्यिकाणां च संचालिता भवति। अतः सर्वाः आर्यिकाः एतासामेव क्रियाणां पालनं कुर्युः। यदि कापि आर्यिका विदुष्यस्ति, दैनिककर्तव्यानां पालनं कुर्वन्ती तस्मात् समयं प्राप्य भव्यप्राणिनः धर्मप्रवचनं श्रावयित्वा लाभान्वितान् च कुर्वन्ति।

अनेन प्रकारेण संक्षिप्तरूपेण दिगम्बरजैनसम्प्रदायस्य दीक्षितानामार्यिकाणां अष्टाविंशति कार्योसर्गाणां वर्णनं कृतम्।

कानि कार्याणि आर्यिकाभिः न करणीयानि—**आर्यिकाः मुनीनां वन्दनां कर्तुं एकाकिन्यः न गच्छेयुः। गणिनीभिरार्यिकाभिः सह द्वे–चतस्रः आर्यिकाः मिलित्वैव गच्छेयुः। एकाकिन्या स्थित्वा दिगम्बरमुनिभिः सह वार्तलापां न कर्तव्यः। मुनीनां च सेवां वैयावृत्तिः कदापि न कर्तव्या।**

मुख्यतया स्त्रीलिंगछेदनं कर्तुमार्यिकादीक्षां गृह्यते। अतएव एतया पवित्रया दीक्षया सदैव जीवनं वैराग्यमयं कर्तव्यम्। गृहस्थानां रागजनितवार्तासु ताः रुचिं न दर्शयेयुः। यतो हि गृहसम्बन्धीनि समस्तकार्याणि ताभिस्त्यक्तानि सन्ति। रुग्णावस्थायां ताः कस्यापि प्रकारस्य औषधिं न निर्मान्ति। स्वजननीं गुर्वीमेव स्व दुःखवार्ता कथयितव्या। तदा ताः स्वयोग्यौषधान् श्रावकैः निर्माप्य आहारे गृह्णन्ति।

मुनयः इव आर्यिकाः श्रावकस्य गृहे करपात्रे आहारं गृह्णन्ति। तत्पश्चात् श्रावकस्तासां

यही चर्या मुनि-आर्यिकाओं की प्राचीनकाल से चली आ रही है अतः समस्त आर्यिकाओं को इन्हीं क्रियाओं का पालन करना चाहिए। यदि कोई आर्यिका विदुषी हैं तो दैनिक कर्तव्यों का पालन करते हुए उसमें से समय निकालकर भव्य प्राणियों को धर्म प्रवचन सुनाकर लाभान्वित भी करती हैं।

इस प्रकार संक्षेप में दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में दीक्षित आर्यिकाओं के 28 कायोत्सर्ग का वर्णन मैंने किया है।

आर्यिकाओं के लिए न करने योग्य कार्य कौन से हैं–आर्यिकाओं को मुनियों की वंदना करने के लिए अकेले नहीं जाना चाहिए। गणिनी आर्यिका के साथ अथवा दो-चार आर्यिकाएं मिलकर जाना चाहिए। अकेले बैठकर दिगम्बर मुनियों से वार्तालाप नहीं करना चाहिए तथा मुनियों की सेवा, वैयावृत्ति कदापि नहीं करना चाहिए।

मुख्यरूप से स्त्रीलिंग का छेद करने हेतु ही आर्यिका दीक्षा धारण की जाती है अतः इस पवित्र दीक्षा को प्राप्त करके सदैव जीवन को वैराग्यमयी बनाना चाहिए। गृहस्थियों की किन्हीं रागजनित बातों में उन्हें रुचि नहीं लेनी चाहिए क्योंकि गृहसंबंधी समस्त कार्य उनके लिए त्याज्य हो जाते हैं। बीमार होने पर स्वयं अपने हाथ से किसी प्रकार की औषधि भी वे नहीं बनाती हैं। अपनी माता के समान गणिनी गुरु से ही अपना दुःख बालकवत् बताना चाहिए, तब वे स्वयं उसके योग्य औषधि श्रावकों के द्वारा बनवाकर आहार में दिलवाती हैं।

मुनियों के समान ही ये आर्यिकाएं श्रावक के घर में करपात्र में आहार ग्रहण करती हैं उसके

कमण्डुलानि उष्णजलेन पूर्णानि करोति। उष्णेन जलेन विना ताः अपरिपक्वं जलं न स्पृशन्ति। श्राविका उष्णेन जलेन शाटिकां क्षालयित्वा शोषयति अथवा ताः स्व कमंडलुजलेन शाटिकां क्षालयित्वा शोषयन्ति। आर्यिकाः 'साबुन' इत्यादीनां प्रयोगं न कुर्वन्ति। ताः द्वयोः त्रयाणां चतुर्णां वा मासे स्वशिरसः केशानां लुंचनं कुर्वन्ति। मुनीनां वसतिकासु आर्यिकाणां वसनं, उपवेशनं वा शयनं वर्जितमस्ति।

मासिकधर्मावस्थासु आर्यिकाः त्रीणि दिनानि मौनं साधयन्ति जिनमन्दिराच्च पृथक् वसतिकायां उषित्वा मानसिकरूपेण महामन्त्रस्य द्वादशभावनानां वा चिन्तनं विदधति। सामायिकं प्रतिक्रमणं च इत्यादीन् मनसा चिन्तनरूपेण कुर्वन्ति। जिह्वौष्ठचालनं विना मंत्रान् स्तोत्रादीन् च चिन्तयन्ति। ताः अस्यामवस्थायां कस्यचित् स्पर्शं न कुर्वन्ति।

आचारसार ग्रन्थे वर्णनं प्राप्यते–

ऋतौ स्नात्वा तु तुर्येन्हि, शुद्धंत्यरसभुक्तयः।
कृत्वा त्रिरात्रमेकान्तरं वा सज्जपसंयुताः।।

अर्थात् रजस्वलाऽवस्थायां त्रिदिनानि पर्यन्तं यदि उपवासस्य शक्तिर्नास्ति तु षड्रसानां त्यागं कृत्वा नीरसमाहारं गृह्णन्ति। चतुर्थदिने च काचित् श्राविका तां उष्णजलेन स्नानं कारयति, पुनश्च कस्याश्चित् गणिन्याः समीपं गत्वा प्रायश्चित्तं गृह्णन्ति।

पश्चात् श्रावक इनके कमण्डलु में गरम जल भर देते हैं। बिना गरम किया हुआ कच्चा जल वे नहीं छूती हैं। श्राविकाएँ छने जल से इनकी साड़ी धोकर सुखा देती हैं अथवा ये स्वयं कमण्डलु के जल से साड़ी धोकर सुखा सकती हैं। आर्यिकाएं साबुन आदि का प्रयोग नहीं कर सकती हैं। वे दो, तीन या चार महीने में अपने सिर के बालों का लोंच करती हैं। मुनियों की वसतिका में आर्यिकाओं का रहना, लेटना, बैठना आदि वर्जित है।

मासिक धर्म की अवस्था में आर्यिकाएं तीन दिन तक मौन से रहती हैं तथा जिनमंदिर से अलग वसतिका में रहकर मानसिक रूप से महामंत्र का एवं बारह भावनाओं का चिंतन करती हैं। सामायिक, प्रतिक्रमण आदि भी केवल मन में चिन्तवन रूप से करती हैं। ओष्ठ, जिह्वा आदि न हिलने पाए, ऐसा मंत्र-स्तोत्रादि का चिंतन भी चलता है। वे इस अवस्था में किसी का स्पर्श भी नहीं करती हैं।

आचारसार ग्रंथ में वर्णन आया है–

ऋतौ स्नात्वा तु तुर्येन्हि, शुद्धंत्यरसभुक्तयः।
कृत्वा त्रिरात्रमेकांतरं वा सज्जपसंयुताः।।90।।

अर्थात् रजस्वला अवस्था में तीन दिनों तक यदि उपवास की शक्ति नहीं है तो छहों रस का त्याग कर नीरस आहार करती हैं तथा चौथे दिन कोई श्राविका इन्हें गरम जल से स्नान करा देती है, तब वह आर्यिका शुद्ध होकर अपनी गणिनी के पास जाकर प्रायश्चित्त ग्रहण करती हैं।

इदं तु प्रथममेवोक्तं यत् आर्यिकाः उपविश्य करपात्रे आहारं गृह्णन्ति। आर्यिकाः उपचारेण महाव्रतिन्यः एव भवन्ति। ताश्च पंचमगुणस्थानात् ऊर्ध्वं गन्तुं न शक्नुवन्ति। तथापि चतुर्विधसंघे मुनीनां पश्चात् आर्यिकाणां पदवी मान्यते। ऐलकक्षुल्लकाश्च दीक्षायां तासां ज्येष्ठाः अपि पुनरपि ते आर्यिकाः ''वन्दामि'' **इत्युक्त्वा नमस्कारं कुर्वन्ति। आर्यिकाश्च ताभ्यः समाधिरस्तु इति आशीर्वादं प्रददति। गुणस्थानव्यवस्था त्रयाणां सदृशी अस्ति तथापि कर्मनिर्जरां ऐलकक्षुल्लकापेक्षयाऽऽर्यिकाणामधिका विद्यते। अतस्ताः एकां शाटिकां धृत्वापि मुनीन् इव अष्टाविंशतिमूलगुणान् परिपालयन्ति।**

आहारविधिः–**चतुर्विधसंघस्य क्रमपरम्परायां आहारचर्यापि आर्यिकाः मुनीनां पश्चात् जिनेन्द्रभगवतो दर्शनं कुर्वन्त्यः क्रमपूर्वकं निर्गच्छन्ति। श्रावकश्राविकाश्च स्वस्वभोजनालय–समक्ष 'पडगाहनं' कुर्वन्ति।**

हे मातः। वन्दामि–वन्दामि, अत्र तिष्ठ तिष्ठ, आहारजलं शुद्धमस्ति। इत्युच्चार्यमाणे यदा एका द्वे आदिआर्यिका तत्र स्थिताः भवन्ति तदा दातारः तासां प्रदक्षिणां कृत्वा ताः भोजनस्थानं नयन्ति। स्वच्छे च पटटे उपवेष्टुं निवेदयन्ति। यत् मातः! उच्चासने विराजताम्। पुनः यदा ताः आसनं गृह्णन्ति तदा तासां चरणप्रक्षालनं कृत्वा गन्धोदकं मस्तके आरोपयन्ति अष्टद्रव्यैश्च पूजनं कृत्वा नमस्कारं कुर्वन्ति।

तत्पश्चाच्च स्थाल्यां भोजनं प्रस्तूय जलं दुग्धं च तत्समक्षं स्थापयित्वा दर्शयन्ति।

यह तो पहले बताया ही जा चुका है कि आर्यिकाएं बैठकर करपात्र में भोजन ग्रहण करती हैं। आर्यिकाएं उपचार से महाव्रती होती हैं और वे पंचम गुणस्थान से ऊपर नहीं जा सकती हैं तथापि चतुर्विध संघ में मुनियों के बाद आर्यिका की पदवी मानी जाती है। ऐलक और क्षुल्लक दीक्षा में उनसे प्राचीन भी क्यों न हों, फिर भी वे आर्यिकाओं को **''वंदामि''** कहकर नमस्कार करते हैं और आर्यिकाएँ उन्हें ''समाधिरस्तु'' आशीर्वाद प्रदान करती हैं। गुणस्थान व्यवस्था तीनों की एक सदृश है, फिर भी कर्मनिर्जरा क्षुल्लक-ऐलक की अपेक्षा आर्यिका की अधिक होती है चूँकि वे एक साड़ी धारण करती हुई भी मुनियों के समान अट्ठाईस मूलगुणों का पालन करती हैं।

आहार विधि– चतुर्विध संघ की क्रम परम्परा में आहारचर्या के लिए आर्यिकाएँ मुनियों के पश्चात् जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करती हुई क्रमपूर्वक निकलती हैं। श्रावक-श्राविकाएँ अपने-अपने चौके के सामने उनका पड़गाहन करते हैं।

हे माताजी! वंदामि-वंदामि, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ, आहार जल शुद्ध है। इतना बोलने पर जब एक-दो आदि आर्यिकाएँ वहाँ खड़ी हो जाती हैं, तब दातार उनकी प्रदक्षिणा लगाकर उन्हें चौके में ले जाते हैं और स्वच्छ पाटे पर बैठने के लिए निवेदन करते हैं कि माताजी! उच्चासन पर विराजिए। पुनः आसन ग्रहण कर लेने पर उनके चरण प्रक्षालन करके गंधोदक मस्तक पर चढ़ाते हैं और अष्टद्रव्य से पूजा करके नमस्कार करते हैं।

इसके पश्चात् थाली में भोजन परोसकर और जल, दूध आदि सामने लाकर दिखाती हैं।

आर्यिकायाः मातुः येषां त्यागो भवति सा तान् बहिष्करोति, तदा दातारः शुद्धिमुच्चार्य आहारं प्रारब्धं कारयन्ति।

इयं नवधाभक्त्याः प्रक्रियाऽस्ति। यथा च आचार्यैरुक्तम्–

पडिगहमुच्चट्ठाणं पादोदयमच्चणं च पणमं च।
मणवयणकायसुद्धी एसणसुद्धी य णवविहं पुण्णं।।

आहारकाले श्रावकैरियं नवधाभक्तिः कार्या। यथा च चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरस्य संघपरम्परायां संचाल्यते। यदि इयं पूर्णा नवधाभक्तिः भोजनस्थाने न भवति तदा आर्यिकाः आहारग्रहणं विनैव भोजनस्थानात् निवर्तिताः भवन्ति। एतेन प्रकारेण नवधाभक्तेः पश्चात् आहारस्य प्रारम्भात् पूर्वं आर्यिकामाता हस्तौ प्रक्षाल्य प्रत्याख्याननिष्ठापनक्रियापूर्वकं सिद्धभक्तिं कुर्वन्ति। यथा–''नमोऽस्तु आहार प्रत्याख्यान निष्ठापनक्रियायां सिद्धभक्तिः कायोत्सर्गं करोम्यहम्'', इत्युच्चार्य नवबारं णमोकारमंत्रं पठित्वा लघुसिद्धभक्तिं अंचलिकां च पठित्वा हस्तस्य अंजुलिं विदधति यस्मिन् दाता सर्वप्रथमं उष्णं प्रासुकं च जलं ददाति पुनः भोजनं दुग्धं च क्रमपूर्वकं ददाति। यदि कस्यचित् रोगस्य निमित्तेन औषधादेरावश्यकता भवति श्रावकस्तस्मिन्नेव समये शुद्धं प्रासुकं च औषधमपि ददाति। आहारस्य पूर्णताकालपश्चात् हस्तौ प्रक्षाल्य, गण्डूषं कृत्वा तत्रैव लघु सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यानं गृह्णन्ति। कमण्डलुं च जलेन पूर्णं कृत्वा तस्मात् स्थानात् निवर्तन्ते। एतेन सहैव श्रावकश्राविकाश्च तैः सह तासां स्थानं प्रति प्रापयितुं गच्छन्ति।

आर्यिका माताजी का जो कुछ त्याग होता है, वे उसे निकलवा देती हैं, तब दातार शुद्धि बोलकर आहार शुरू करवाते हैं।

यह नवधाभक्ति की प्रक्रिया है। जैसा कि आचार्यों ने कहा भी है–

पडिगहमुच्चट्ठाणं, पादोदयमच्चणं च पणमं च।
मणवयणकाय सुद्धी, एसणसुद्धी य णवविहं पुण्णं।।

आहार के काल में श्रावकों के द्वारा यह नवधाभक्ति करनी आवश्यक होती है। जैसा कि चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की संघ परम्परा में चला आ रहा है। यदि यह पूरी नवधाभक्ति चौके में नहीं होती है तो आर्यिकाएँ बिना आहार किए ही चौके से वापस आ जाती हैं। इस प्रकार से नवधाभक्ति होने के बाद, आहार शुरू करने से पूर्व, आर्यिका माताजी हाथ धोकर प्रत्याख्यान निष्ठापन क्रियापूर्वक सिद्धभक्ति करती हैं। जैसे–'नमोस्तु आहार प्रत्याख्यान निष्ठापन क्रियायां सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं'' बोलकर 9 बार णमोकार मंत्र पढ़कर लघु सिद्धभक्ति और अंचलिका पढ़कर हाथ की अंजुलि बनाती हैं, जिसमें दातार सर्वप्रथम गरम प्रासुक जल देते हैं पुनः भोजन, दूध आदि क्रमपूर्वक देते हैं। यदि किसी रोग के निमित्त से औषधि आदि की आवश्यकता होती है तो श्रावक उसी समय शुद्ध प्रासुक दवा भी दे देते हैं। आहार पूरा होने के बाद हाथ धोकर, कुल्ला करके वहीं पर लघु सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान ग्रहण कर लेती हैं और कमण्डलु में जल भराकर वहाँ से आ जाती हैं। साथ में श्रावक-श्राविका उनके स्थान तक पहुँचाने के लिए उनके साथ भी आते हैं।

ताः आर्यिका आहारात् प्रतिनिवृत्य स्वगणिन्याः समीपे पुनः प्रत्याख्यानं–अग्रिमदिने आहारग्रहणपर्यन्तं चतुराहारं त्यजन्ति।

भोजनस्थानं प्राप्य प्रत्याख्याननिष्ठापनं कर्तुं आहारस्य पश्चाच्च गुरुसमीपमागत्य प्रत्याख्यानग्रहणस्यायं समस्तो विधिः आचारसारे, अनगारधर्मामृते च अन्यग्रन्थेषु च वर्णितमस्ति। वर्तमानकाले यत्रकुत्रापि केचित् मुनयः आर्यिकाश्च आहारचर्यायाः पूर्वमेव जिनमंदिरे गुरुसन्निधावेव प्रत्याख्याननिष्ठापनां कुर्वन्ति, पुनश्च आहारार्थं गच्छन्ति, किन्तु इदं तु न सुष्ठु वर्तते। अस्मिन् विषये अनगारधर्मामृते आचारसारग्रंथे च स्पष्टरूपेण वर्णनमस्ति–

(1) ''हेयं त्याज्यं साधुना। निष्ठाप्यमित्यर्थः। किं तत्? प्रत्याख्यानादि– प्रत्याख्यानमुपोषितं वा। क्व? अशनादौ–भोजनारंभे। कया? सिद्धभक्त्या। किं विशिष्ट्या? लघ्व्या''।

(अनगारधर्मामृत मूलप्रति पृष्ठ 649)

(2) *आत्मोचितासनासीनो दातृप्रक्षालितक्रमः।*
ऊर्ध्वाधः पार्श्वदिक्कोण निक्षेपानिरीक्षणः।।
वर्णी पूर्णप्रतिज्ञोऽथ सिद्धभक्तिं विधाय तत्।
प्रत्याख्यानं विनिष्ठाप्य प्रेरितो भक्तदातृभिः।।

(आचारसार पृष्ठ134)

एतेनैव प्रकारेण एतेषु ग्रन्थेषु मुनिभ्यः आहारस्य पश्चात् भोजनस्थाने पुनश्च गुरोः

वे आर्यिका जी आहार से वापस आकर अपनी गणिनी के पास पुनः प्रत्याख्यान–अगले दिन आहार ग्रहण करने तक चतुराहार का त्याग कर देती हैं।

चौके में पहुँचकर प्रत्याख्यान निष्ठापन करने तथा आहार के बाद चौके में प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापन एवं उसके पश्चात् गुरु के पास आकर प्रत्याख्यान ग्रहण करने की यह समस्त विधि आचारसार, अनगारधर्मामृत आदि ग्रंथों में वर्णित है। कोई-कोई साधु और आर्यिकाएँ आहारचर्या से पूर्व मंदिर में या गुरु के पास ही सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापन कर लेते हैं पुनः आहार को जाते हैं, सो ठीक नहीं है क्योंकि अनगारधर्मामृत और आचारसार में स्पष्ट कहा है–

1.''हेयं-त्याज्यं साधुना। निष्ठाप्यमित्यर्थः। किं तत्? प्रत्याख्यानादि-प्रत्याख्यानमुपोषितं वा। क्व? अशनादौ-भोजनारंभे। कया? सिद्धभक्त्या। किं विशिष्ट्या? लघ्व्या।''

(अनगारधर्मामृत मूलप्रति पृ. 649)

2. ***आत्मोचितासनासीनो दातृप्रक्षालितक्रमः।***
ऊर्ध्वाधःपार्श्वदिक्कोणनिक्षेपानिरीक्षणः।।118।।
वर्णी पूर्णप्रतिज्ञोऽथ सिद्धभक्तिं विधाय तत्।
प्रत्याख्यानं विनिष्ठाप्य प्रेरितो भक्तदातृभिः।।119।।

(आचारसार पृ. 134)

इसी प्रकार से इन ग्रंथों में मुनियों के लिए आहार के पश्चात् चौके में और पुनः गुरु के पास

समीपे आगत्य प्रत्याख्यानग्रहणकरणस्य अपि स्पष्टीकरणमस्ति। स एव सम्पूर्णो विधिः आर्यिकाभिश्च परिपालनीया भवति। यथा—

'आदेयं च लघ्व्या सिद्धभक्त्या प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। क्व? अंते प्रक्रमाद् भोजनस्यैव प्रान्ते। कथं? आशु–शीघ्रं भोजनांतरमेव। आचार्यसन्निधाने इदं विधेयं।

सूरौ–आचार्यसमीपे पुनर्ग्राह्यं प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि कया? लघ्व्या सिद्धभक्त्या। ..... लघुयोगिभक्त्यधिकया। तथा वन्द्यः साधुना। कोऽसौ? सः सूरिः। कया? सूरिभक्त्या। किं विशिष्ट्या? लघ्व्या। **(अनगार मूलप्रति पृष्ठ 649)**

अर्थात् अस्याभिप्रायोऽयं यत् भोजनस्थानानन्तरं शीघ्रमेव लघुसिद्धभक्ति पूर्वकं साधुरार्यिका प्रत्याख्यानं उपवासं गृह्णन्ति। एषः विधिस्तत्रैव भोजनप्रान्ते एव क्रियते। पुनः आचार्यसमीपमागत्य लघुसिद्धभक्तिं लघुयोगिभक्तिं चोच्चार्य पुनरपि गुरुसमीपे प्रत्याख्यानं उपवासं च गृहीत्वा लघुआचार्यभक्त्या आचार्यस्य वन्दना क्रियते।

शंका–यदा गुरोः समीपे प्रत्याख्यानमावश्यकमस्ति तु भोजनप्रान्ते साधवः किमर्थं प्रत्याख्यानं गृह्णन्ति?

समाधानम्–यदि भोजनप्रान्ताद् स्ववसतिकाऽऽगमनकाले गुरु समीपे मार्गे मरणं भवति तत् प्रत्याख्यानपूर्वकं भविष्यति। अतएव भोजनस्य प्रान्तेऽपि प्रत्याख्यानं गृह्यते।

आकर प्रत्याख्यान ग्रहण करने का भी खुलासा है। वही सम्पूर्ण विधि आर्यिकाओं को भी सावधानीपूर्वक पालन करनी होती है। यथा–

''आदेयं च-लघ्व्या सिद्धभक्त्या प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। क्व? अंते प्रक्रमाद् भोजनस्यैव प्रान्ते। कथं? आशु-शीघ्रं भोजनांतरमेव। आचार्यासन्निधावेतद्विधेयं।''

सूरौ-आचार्यसमीपे पुनर्ग्राह्यं प्रतिष्ठाप्यं साधुना। किं तत्? प्रत्याख्यानादि। कया? लघ्व्या सिद्धभक्त्या.....लघुयोगिभक्त्यधिकया। तथा वंद्यः साधुना। कौऽसौ? स सूरिः। कया? सूरिभक्त्या। किंविशिष्ट्या? लघ्व्या। (अनगार मूलप्रति पृ. 649)

अर्थात् इसका अभिप्राय यह है कि भोजन के अनंतर शीघ्र ही लघु सिद्धभक्तिपूर्वक साधु या आर्यिका प्रत्याख्यान अथवा उपवास ग्रहण कर लेते हैं। यह विधि वहीं चौके में की जाती है पुनः आचार्य के पास आकर लघु सिद्धभक्ति और लघुयोगिभक्ति बोलकर पुनरपि गुरु के पास प्रत्याख्यान या उपवास ग्रहण करके लघु आचार्यभक्ति द्वारा आचार्य की वंदना की जाती है।

शंका–जब गुरु के पास प्रत्याख्यान आवश्यक है तो चौके में साधु प्रत्याख्यान क्यों ग्रहण कर लेते हैं?

समाधान–यदि चौके से अपनी वसतिका में गुरु के पास आते हुए मार्ग में मरण भी हो जाये तो वह प्रत्याख्यानपूर्वक होगा, इसलिए चौके में भी प्रत्याख्यान ग्रहण किया जाता है।

अनेन प्रकारेणैव भोजनप्रान्ते नवधाभक्त्यादेः अनन्तरमेव सिद्धभक्तिपूर्वकं प्रत्याख्यानं निष्ठापनहेतवेऽपि अनगारधर्मामृते उल्लेखोऽस्ति यत्–

''आहाराय साधुः यदि निष्क्रान्तोऽस्ति केनापि कारणवशात् केनापि प्रतिग्रहणं न कृतं अन्येन वा कारणेन सः स्व वसतिकां प्रतिनिवर्तते तु पुनः तस्मिन् दिने आहारार्थं न गच्छति– उपवासं करोति।'' अतः इदं तात्पर्यमस्ति यत् आर्यिकाः अपि प्रत्याख्यानस्य निष्ठापनं भोजनप्रान्ते एव नवधाभक्त्या पश्चादेव कुर्युः।

आहारस्य षट्चत्वारिंशद्दोषाताः–**श्रावकस्य साधोश्च निमित्तादाहारे केषाञ्चिद् दोषाणां संभावना जायते। तान् दोषान् दूरीकृत्य आहारोपभोगः आहारस्य शुद्धिरुच्यते। उद्गमदोषः उत्पादन दोषः एषणा दोषः संयोजनादोषः प्रमाणदोषः इंगाल दोषः धूमदोषः कारणदोषाश्च, एतैः अष्टदोषरहितः आहारशुद्धिः भवति। दातुर्निमित्ताद उत्पन्नो दोषो उद्गमदोषः कथ्यते। साधुना भूताः आहारस्य दोषा उत्पादनसंज्ञकाः सन्ति। भोजनसम्बन्धिनो दोषाः एषणादोषाः कथ्यन्ते। संयोगाद् उत्पन्नो दोषः संयोजनादोषोऽस्ति। प्रमाणादधिकआहारस्य ग्रहणं प्रमाणदोषोऽस्ति। लंपटतापूर्वकं आहारस्य ग्रहणमिंगालदोषोऽस्ति। दातुर्भोजनस्य वा निन्दां कृत्वाऽऽहारग्रहणं धूमदोषः भवति। निषिद्धैः कारणैः निर्मितआहारः, तस्य ग्रहणं कारण– दोषोऽस्ति।**

एतेभ्यः उद्गमस्य षोडश दोषाः, उत्पादनस्य षोडश, एषणायाः दश, संयोजनाप्रमाण–

इसी प्रकार से चौके में नवधाभक्ति के बाद ही सिद्धभक्तिपूर्वक प्रत्याख्यान निष्ठापना करने का हेतु भी अनगारधर्मामृत में दिया है कि–

''आहार के लिए साधु यदि निकल चुके हैं और किसी कारणवश किसी ने पड़गाहन नहीं किया या कुछ अन्य कारण से वे वापस अपनी वसतिका में आ जाते हैं तो पुनः उस दिन आहार के लिए नहीं जाते हैं–उपवास करते हैं। अतः तात्पर्य यह निकलता है कि आर्यिकाओं को भी प्रत्याख्यान की निष्ठापना चौके में नवधाभक्ति के बाद ही करनी चाहिए।

आहार के 46 दोष–श्रावक और साधु दोनों के निमित्त से आहार में कुछ दोषों की संभावना होती है। उन दोषों को टालकर आहार करना आहारशुद्धि कहलाती है। उद्गम दोष, उत्पादन दोष, एषणा दोष, संयोजना दोष, प्रमाण दोष, इंगाल दोष, धूम दोष और कारण दोष इन आठ दोषों से रहित आहार शुद्धि होती है। दातार के निमित्त से हुए दोष उद्गम दोष हैं। साधु के द्वारा आहार में हुए दोष उत्पादन संज्ञक हैं। भोजन संबंधी दोष एषणा दोष हैं। संयोग से होने वाला संयोजना दोष है। प्रमाण से अधिक आहार लेना प्रमाण दोष है। लंपटतापूर्वक आहार लेना इंगाल दोष है। दातार की या भोजन की निंदा करके आहार लेना धूम दोष है और विरुद्ध कारणों से बना हुआ आहार लेना कारण दोष है।

इनमें से उद्गम के 16, उत्पादन के 16, एषणा के 10 तथा संयोजना, प्रमाण, इंगाल और धूम

इंगालधूमस्य च एते षट्चत्वारिंशद् दोषाः भवन्ति। एतेषां विशेषवर्णनं चरणानुयोगस्य ग्रन्थेभ्यो मूलाचारादिभ्यः पठनीयं वर्तते।

एतदतिरिक्तमेकः अधःकर्म दोषोऽस्ति। यो महादोषः कथ्यते। अस्मिन् दोषे कुट्टनं चूर्णीकरणं भोजनालये पाककरणं जलपूर्णं प्रमार्जनं च एते पंचसूनाः दोषाः सन्ति। एतेषु षट्कायिकजीवानां विराधना भवति अयं दोषः गृहस्थैःकृतोऽस्ति। एतान् दोषान् कुर्वन्ती आर्यिका वस्तुतः आर्यिका न मता। एषा वार्ता निश्चिताऽस्ति यत् गणिन्याः आर्यिकायाः संघे चतुर्विधसंघे वा स्थिताषु आर्यिकासु अस्य दोषस्य संभावना कथमपि नभवति। एकाकिनीसु आर्यिकासु साधुसु वा एते दोषाः कदाचित् संभवन्ति। अतः कुन्दकुन्दस्वामी आज्ञापितवान् यत्–

'मा भूद मे सत्तुएगागी' **अर्थात् अस्मिन् पंचमकाले मम कोऽपि शत्रुः साधुरपि एकाकी न विचरतु। यतो हि एकाकीविहारे अन्येऽपि केचिद् दोषा संलग्नाः भवितुं भयं भवति। स्त्रीपर्यायस्य कारणैः आर्यिकाः सदैव समूहं कृत्वैव तिष्ठन्तु। येन समस्ताः चर्याः निर्बाधरूपेण पालिताः स्युः।**

आर्यिकाणां त्रयोदशक्रियाः काः सन्ति? षट् आवश्यकक्रियाः पंचपरमगुरोर्वन्दनां असही–निसही च एताः त्रयोदश क्रियाः आर्यिकाः प्रतिदिनमनुतिष्ठन्ति, एतासु आवश्यकक्रियाः पूर्वमेव वर्णिताः। अतएव पृथक् पृथक् एकस्मिन् समूहे वा पंचपरमेष्ठिनो वन्दना क्रियते। 'असही–निसही, एतयोः तात्पर्यमिदं यत् वसतिकायाः बहिर्गमनसमये आर्यिकाः नवबारं 'असही' शब्दोच्चारणं कुर्वन्ति। तथा च वसतिकायां प्रवेशसमये नववारं ''निसही'' शब्दोच्चारणं कुर्वंति।

ये 46 दोष होते हैं, जिनका विशेष वर्णन चरणानुयोग के ग्रंथ मूलाचार आदि से जानना चाहिए।

इन सबसे अतिरिक्त एक अधःकर्म दोष है, जो महादोष कहलाता है। इसमें कूटना, पीसना, रसोई करना, पानी भरना और झाडू लगाना ऐसे पंचसूना नाम के आरंभ से षट्कायिक जीवों की विराधना होने से यह दोष गृहस्थाश्रित है। इसको करने वाली आर्यिका वास्तव में आर्यिका नहीं मानी जाती है। यह बात निश्चित है कि गणिनी आर्यिका के संघ में या चतुर्विध संघ में रहने वाली आर्यिकाओं में इस दोष की संभावना कथमपि नहीं रहती है। हाँ! एकाकी विचरण करने वाली आर्यिका या साधु में यह दोष कदाचित् संभव हो सकते हैं। इसीलिए कुंदकुंद स्वामी ने आज्ञा दी है–

''मा भूद मे सत्तु एगागी'' अर्थात् इस पंचमकाल में मेरा कोई शत्रु साधु भी एकाकी विचरण न करे क्योंकि एकलविहार में और भी कई दोष लगने का भय रहता है। स्त्रीपर्याय होने के नाते आर्यिकाओं को हमेशा समूह बनाकर ही रहना चाहिए ताकि समस्तचर्या का निर्बाध रूप से पालन हो सके।

आर्यिकाओं की 13 क्रियाएं कौन-कौन सी हैं? छह आवश्यक क्रियाएँ, पंचपरमगुरु की वंदना तथा असही-निसही ये तेरह क्रियाएँ आर्यिकाएँ प्रतिदिन करती हैं। इनमें से आवश्यक क्रियाओं का वर्णन तो पहले किया जा चुका है, ऐसे ही पृथक्-पृथक् या एक साथ पंचपरमेष्ठी की वंदना भी की जाती है। असही और निसही का मतलब यह है कि वसतिका से बाहर जाते समय आर्यिकाएं नौ बार 'असही' शब्द का उच्चारण करती हैं तथा वसतिका में प्रवेश करते समय नौ बार 'निसही' शब्द का उच्चारण करती हैं।

आर्यिका स्वावश्यकक्रियाणां पालनं कुर्वन्त्यः शेषं समयं निरन्तरं शास्त्रस्वाध्याये अध्ययनाध्यापने च व्यतीतं कुर्वन्ति। ताः सूत्रग्रन्थानामध्ययनं कर्तुं शक्नुवन्ति। यथा आचार्यः कुन्दकुन्दस्वामी मूलाचारग्रन्थे स्पष्टं कृतवान्–

''अस्वाध्यायकाले मुनयः आर्यिकाश्च सूत्रग्रन्थानामध्ययनं न कुर्युः। परन्तु साधारणाः अन्ये ग्रन्थाः अस्वाध्यायकालेऽपि पठितुं शक्यन्ते।'' एतेनैतेव सिद्ध्यति यत् आर्यिका अपि स्वाध्यायकाले सिद्धान्तग्रन्थान् पठितुं शक्नुवन्ति।

अन्यच्च आर्यिकाः द्वादशांगश्रुतस्यान्तर्गतानि एकादशांगान्यपि धारयितुं शक्नुवन्ति। यथा हरिवंशपुराणे कथनमस्ति–

द्वादशांगधरो जातः क्षिप्रं मेघेश्वरो गणी।
एकादशांगभृज्जाता सार्यिकापि सुलोचना।।

अर्थात् जयकुमारः शीघ्रमेव द्वादशांगानां पाठीभूत्वा भगवतो गणधरोऽभवत्। आर्यिका सुलोचना च एकादशांगानां धारिकाऽभवत्।

वर्तमानकाले दिगम्बरसंप्रदाये एकादशांगानां चतुर्दशपूर्वाणां चोपलब्धिर्नास्ति। ते चांशमात्रेणैवोपलब्धाः सन्ति। अतएव तेषामेवाध्ययनं कर्तव्यम्।

दिगम्बरजैनसम्प्रदायानुसारेण साध्वीनां द्वौ भेदौ स्तः। आर्यिका क्षुल्लिका च। अधुनावधि संक्षेपेणार्यिकाणां स्वरूपं वर्णितम्। अधुनां श्राविकाणां आर्यिकादीक्षायाः पूर्वं

आर्यिकाएँ अपनी आवश्यक क्रियाओं का पालन करते हुए शेष समय निरन्तर शास्त्र स्वाध्याय, अध्ययन-अध्यापन में लगाती हैं। वे सूत्र ग्रंथों का भी अध्ययन कर सकती हैं। जैसा कि आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने मूलाचार ग्रंथ में स्पष्ट किया है–

'अस्वाध्याय काल में मुनि और आर्यिकाओं को सूत्रग्रंथों का अध्ययन नहीं करना चाहिए किन्तु साधारण अन्य ग्रंथ अस्वाध्याय काल में भी पढ़ सकते हैं।' इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि आर्यिकाएँ भी स्वाध्यायकाल में सिद्धांत ग्रंथों को पढ़ सकती हैं।

दूसरी बात यह है कि आर्यिकाएँ द्वादशांग श्रुत के अन्तर्गत ग्यारह अंगों को भी धारण कर सकती हैं, जैसा कि हरिवंशपुराण में कथन आया है–

द्वादशांगधरो जातः क्षिप्रं मेघेश्वरो गणी।
एकादशांगभृज्जाता सार्यिकापि सुलोचना।।

अर्थात् मेघेश्वर जयकुमार शीघ्र ही द्वादशांग के पाठी होकर भगवान के गणधर हो गये और आर्यिका सुलोचना भी ग्यारह अंगों की धारक हो गईं।

वर्तमान में दिगम्बर सम्प्रदाय में ग्यारह अंग और चौदह पूर्व की उपलब्धि नहीं है, उनका अंश मात्र उपलब्ध है अतः उन्हीं का अध्ययन करना चाहिए।

दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के अनुसार साध्वियों के दो भेद हैं–आर्यिका और क्षुल्लिका। अभी तक संक्षेप में आर्यिका का स्वरूप बतलाया है, कुछ श्राविकाओं की आर्यिका दीक्षा के पूर्व क्षुल्लिका दीक्षा

क्षुल्लिकादीक्षामपि ग्रहीतुं परम्परास्ति। अतस्तासां क्रियाणामत्रसंक्षेपेण वर्णनमस्ति–क्षुल्लिकाः एकादशप्रतिमानां व्रतानि गृहीत्वा द्वयोः शाटिकयोः द्वयोश्च उत्तरीययोः परिग्रहं धारयन्ति। एतासां समस्ताः क्रियाः क्षुल्लकसदृश्यः भवन्ति। केशलुंचनं कुर्वन्ति कर्तर्या वा द्वयोस्त्रयोः चतुर्षु वा मासेसु शिरसः केशान् निष्कासयंति। एताः अपि आर्यिकाणां समीपे तिष्ठन्ति। तासां पश्चाच्च आहाराय निर्गच्छन्ति। पड्गाहनविधिना च श्रावकाणां गृहेषु भोजनं गृह्णन्ति अतः एतेन प्रकारेण स्त्रीषु साध्वीरूपेण आर्यिका क्षुल्लिका च एतौ द्वौ एव भेदौ स्तः। द्वयो पार्श्वे मयूरपिच्छिका भवति। अभिप्रायोऽयं यत् क्षुल्लिकासमीपे उत्तरीयो भवति। पीतलधातोः स्टीलधातोः वा कमण्डलुर्भवति।

पूर्वग्रन्थानामवलोकनेन एतत् ज्ञायते यत् पूर्वस्मिन् अधिकांशरूपेण आर्यिका एव आर्यिकादीक्षां प्रदत्तवती। तीर्थंकराणां समवसरणेऽपि याः आर्यिकाः सर्वप्रथमं दीक्षिताः अभवन् ता एव गणिन्याः भारं निर्वाढुं प्रयतन्ते। तीर्थंकरदेवेभ्यः अतिरिक्तं कैश्चित् आचार्यैः आर्यिकादीक्षां प्रदातुं उदाहरणानि न्यूनतयैवोपलब्धानि सन्ति। एतासामार्यिकाणां दीक्षायै जैनेश्वरी दीक्षा शब्दोऽपि प्राप्यते। एताश्च ''महाव्रतपवित्रांगा'' **अपि कथिताः।** ''संयमिनी, संयतिका'' **संज्ञाः अपि प्रदत्तास्ति।**

यदाऽऽर्यिकाणां व्रतानि उपचारेण महाव्रतान्युक्तानि संल्लेखनाकाले च उपचारात् निर्ग्रन्थतायाः उल्लेखोऽस्ति अतएव ताः मुनयः इव वन्दनीयाः भवन्ति। एतदेवावधार्य आगममर्यादायाः पालनं कुर्वन्तः आर्यिकाभ्यः नवधाभक्तिपूर्वकं आहारं ददति। समयानुसारेणैव यथोचितां भक्तिं कुर्युः ताभ्यश्च पिच्छिकायाः कमण्डलोश्च दानं कर्तव्यम्।

भी लेने की परम्परा रही है अतः उनकी क्रियाओं के बारे में भी संक्षेप में यहाँ वर्णन है– क्षुल्लिकाएँ ग्यारह प्रतिमा के व्रतों को धारण कर दो धोती और दो दुपट्टे का परिग्रह रखती हैं। इनकी समस्त चर्या क्षुल्लक के सदृश होती है। ये केशलोंच करती हैं अथवा कैंची से दो, तीन या चार महीने में सिर के केश निकालती हैं। ये भी आर्यिकाओं के पास में रहती हैं, उनके पीछे आहार को निकलकर पड़गाहन विधि से श्रावकों के यहाँ पात्र में भोजन ग्रहण करती हैं। इस प्रकार से स्त्रियों में साध्वीरूप में आर्यिका और क्षुल्लिका ये दो भेद ही होते हैं। दोनों के पास मयूर पिच्छिका रहती है। पहचान के लिए क्षुल्लिका के पास चादर रहती है और पीतल या स्टील का कमण्डलु रहता है।

प्राचीन ग्रंथों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि पूर्व में अधिकतर आर्यिकाएँ ही आर्यिका दीक्षा प्रदान करती थीं। तीर्थंकरों के समवसरण में भी जो आर्यिका सबसे पहले दीक्षित होती थीं, वे ही गणिनी के भार को संभालती थीं। तीर्थंकर देव के अतिरिक्त किन्हीं आचार्यों द्वारा आर्यिका दीक्षा देने के उदाहरण प्रायः कम मिलते हैं। इन आर्यिकाओं की दीक्षा के लिए जैनेश्वरी दीक्षा शब्द भी आया है। इन्हें **''महाव्रतपवित्रांगा''** भी कहा है और **''संयमिनी, संयतिका''** संज्ञा भी दी है।

जब आर्यिकाओं के व्रत को उपचार से महाव्रत कहा है और सल्लेखनाकाल में उपचार से निर्ग्रंथता का आरोपण किया है इसीलिए वे मुनियों के सदृश वंदनीय होती हैं, ऐसा समझकर आगम की मर्यादा को पालते हुए आर्यिकाओं की नवधाभक्ति करके उन्हें आहारदान देना चाहिए और

वर्तमानकालस्य आर्यिकाः–**प्राचीनकाले यथा आर्यिकाः, आचार्याणां संघे अतिष्ठन् पृथक् पृथक् च आर्यिका संघं कृत्वा विचरन्ति स्म, तथैव वर्तमानकालेऽपि आचार्यअभिनन्दनसागरस्य, आचार्यवर्धमानसागरस्य, आदीनामन्येषां च महतां साधूनां संघेषु च आर्यिकाः क्षुल्लिकाः तिष्ठन्ति तथैव गणिनी आर्यिका श्रीज्ञानमती माता, गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माता, गणिनी आर्यिका श्रीविशुद्धमती आदयः अनेकविदुष्यः आर्यिकाः स्व पृथक् संघैः सहापि विचरन्त्यः धर्मस्य ध्वजां आन्दोलितां कुर्वन्ति।**

गणिनीआर्यिका श्री ज्ञानमती माता संप्रति सर्वआर्यिकासु प्राचीना दीक्षिता सर्वप्रमुखा आर्यिका अस्ति। या चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यश्रीशान्तिसागरस्य दर्शनं कृत्वा तस्य आज्ञया तस्य प्रथमपट्टशिष्यआचार्यश्रीवीरसागरस्य करकमलाभ्यां आर्यिका दीक्षां गृहीत्वा 'ज्ञानमती' **इति सार्थकं नाम अग्रहणात्। शताब्द्याः प्रथमाचार्यात् प्रारभ्य अद्यावधि या समस्तैराचार्यैरनुभवं ज्ञानं च प्राप्नोत्।**

संघस्य समस्ताः आर्यिकाः गणिन्याः आर्यिकायाः प्रमुखायाः च अन्यस्या आर्यिकायाः अनुशासने तिष्ठन्ति। प्रमुखाश्चार्यिकाः ताः धार्मिकाणां ग्रन्थान् अध्ययनमध्यापनं कारयन्ति तासां च स्वाध्यायायलेखनकार्याय च ग्रन्थानां मसीनां लेखिन्या कर्गलस्य च प्रबन्धं श्रावकाः श्राविकाश्च कुर्वन्ति। वस्त्राणां च स्फाटने भक्तिपूर्वकं ताभ्यः वस्त्राणिश्वेतशाटिके प्रददति। पिच्छिकायै मयूरपक्षान् आदाय प्रददति? आर्यिकाश्च स्वपदानुरूपेण सार्धुचर्यां पालयन्ति,

---

समयानुसार यथोचित भक्ति करना, उन्हें पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र आदि दान भी देना चाहिए।

वर्तमान की आर्यिकाएँ– प्राचीनकाल में जैसे आर्यिकाएं, आचार्यों के संघ में भी रहती थीं और पृथक् भी आर्यिका संघ बनाकर विचरण करती थीं, उसी प्रकार वर्तमान में भी आचार्य श्री अभिनंदनसागर महाराज, आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज आदि बड़े-बड़े संघों में भी आर्यिकाएँ-क्षुल्लिकाएँ रहती हैं तथा गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी, गणिनी आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी आदि अनेकों विदुषी आर्यिकाएँ अपने-अपने पृथक् संघों के साथ भी विचरण करती हुई धर्म की ध्वजा फहरा रही हैं।

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में समस्त आर्यिकाओं में सर्वप्राचीन दीक्षित सबसे बड़ी आर्यिका हैं, जिन्होंने चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के दर्शन कर उनकी आज्ञा से उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा धारण कर **'ज्ञानमती'** इस सार्थक नाम को प्राप्त किया है तथा शताब्दी के प्रथम आचार्य से लेकर अद्यावधि समस्त आचार्यों से अनुभव ज्ञान प्राप्त किया है।

संघ की सभी आर्यिकाएँ गणिनी आर्यिका के या किसी प्रमुख आर्यिका के अनुशासन में रहती हैं, प्रमुख आर्यिकाएँ उन्हें धर्म ग्रंथों का अध्ययन भी कराती हैं। इनके स्वाध्याय के लिए या लेखन कार्य के लिए ग्रंथ, स्याही, कलम, कागज आदि की व्यवस्था श्रावक-श्राविकाएँ करते हैं। वस्त्र फटने पर भक्तिपूर्वक उन्हें वस्त्र (सफेद साड़ी) प्रदान करते हैं। पिच्छी के लिए मयूर पंख लाकर देते

पदविरुद्धानि श्रावकोचितकार्याणि न विदधति। तदैव तासामात्मनः कल्याणं स्त्रीलिंगछेदनं भवति। ध्यानेनाध्ययनेन च सार्धमस्मिन् युगेऽपि मासपर्यन्तमुपवासं कुर्वन्त्यस्तपस्विन्यः आर्यिकाः अपि दृश्यन्ते। वर्षे 1971 वर्षस्य चतुर्मासे अजमेरनगर्यामाचार्यश्रीधर्मसागरस्य संघस्य आर्यिका श्रीशान्तिमती माता षोडशकारण उपवासस्य मध्ये तथा ज्ञानमतीमातुः शिष्या आर्यिका पद्मावती माता भाद्रपदमासे षोडशकारणस्य एकत्रिंशत् उपवासान् कुर्वन्त्यौ उत्कृष्टःसमाधि– मधिगते अभवताम्। ययोश्च दर्शनसौभाग्यं आर्यिका चन्दनामत्यपि प्राप्नोत्। अनेनैव प्रकारेण अष्ट–दश–षोडशादिउपवासान् कुर्वन्त्यः आर्यिकाः अद्यापि उपलब्धाः सन्ति। याः सम्यक्त्वसहितानि व्रतानि पालयन्त्यो याः निश्चितरूपेण स्त्रीपर्यायान्मुक्ता क्रमशः देवपर्यायं प्राप्य, तत्रतः समागत्य मनुष्यभवे निर्ग्रन्थदीक्षां धृत्वा मोक्षं प्राप्स्यन्ति।

आर्यिकाणां उत्कृष्टचर्यां चतुर्थकाले ब्राह्मी चन्दनादि आर्यिकाः पालनं कुर्वन्त्यः अभवन्। पंचमकालस्य च अन्तपर्यन्तमेवं विधायाः चर्यायाः पालयन्त्यः आर्यिकाः भविष्यन्त्येव। यदा पंचमकालस्यान्ते वीरांगज नाम्नो मुनिराट् सर्वश्री नामिकाऽऽर्यिका अग्निदत्तः श्रावकः पंगुश्री श्राविका च एवं विधश्चतुर्विधः संघः भविष्यति। तदा कल्की मुनिराज्ञः आहारस्य प्रथमग्रासस्य कररूपेण याचनया अन्तरायं कृत्वा चतुर्विधः संघो सल्लेखनां धारयिष्यति। सर्वे धर्मा,

---

हैं। आर्यिकाएँ भी अपने पद के अनुरूप साधुचर्या का पालन करती हैं, पद के विरुद्ध श्रावकोचित कार्यों को नहीं करती हैं, तभी उनकी आत्मा का कल्याण और स्त्रीलिंग का छेदन संभव हो पाता है। ध्यान, अध्ययन के साथ-साथ इस युग में भी महीने-महीने तक का उपवास करने वाली तपस्विनी आर्यिकाएं भी हो चुकी हैं। सन् 1971 के चातुर्मास में अजमेर नगरी में आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघ की आर्यिका श्री शांतिमती माताजी सोलहकारण के उपवास करते हुए मध्य में तथा आर्यिका श्री पद्मावती माताजी (ज्ञानमती माताजी की शिष्या) भादों के महीने में सोलहकारण के बत्तीस उपवास करते हुए 31वें उपवास में उत्कृष्ट समाधि प्राप्त कर चुकी हैं, जिनके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे भी (आर्यिका चंदनामती को) प्राप्त हो चुका है। इसी प्रकार से आठ-दस-सोलह आदि उपवास करने वाली आर्यिकाएँ आज भी विद्यमान हैं जो सम्यक्त्व सहित निर्दोष व्रतों का पालन करते हुए निश्चित ही स्त्रीपर्याय से छूटकर क्रम से देवपर्याय प्राप्त कर, वहाँ से आकर मनुष्य भव में निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त करेंगी।

आर्यिकाओं की उत्कृष्ट चर्या चतुर्थकाल में गणिनी माता ब्राह्मी, महासती चंदना आदि माताएँ पालन करती थीं तथा पंचमकाल के अंत तक भी ऐसी चर्या का पालन करने वाली आर्यिका होती रहेंगी। जब पंचमकाल के अन्त में वीरांगज नाम के मुनिराज, सर्वश्री नाम की आर्यिका, अग्निदत्त श्रावक और पंगुश्री श्राविका इस प्रकार चतुर्विध संघ होगा, तब कल्की द्वारा मुनिराज के आहार का प्रथम ग्रास टैक्स के रूप में मांगने पर अन्तराय करके चतुर्विध संघ सल्लेखना धारण कर लेगा,

अग्निः राज्ञां च अन्तो भविष्यति। अतः भगवतः महावीरस्य शासने अद्यावधि अक्षुण्ण जैनशासनं प्रवर्तते। मुनीनामार्यिकाणां च परम्पराप्यनेनैव प्रकारेण पंचमकालस्य अन्तपर्यन्तं संचालिता भविष्यति, नात्र मनाक् सन्देहः।

अत्रपर्यन्तं भवद्भिः आर्यिकाचर्याविषये ज्ञानं प्राप्तम्। अधुना भवतः समक्षं एवंविधायाः गणिन्याः महत्याः आर्यिकायाः परिचयः प्रस्तूयते या विंशत्यां शताब्द्यां कुमार्याः कन्यायाः रूपेण दीक्षां गृहीत्वा त्यागस्य मार्गं प्रशस्तमकरोत्। यतो हि अष्टपंचाशत् वर्षीयं दीर्घकालं जीवनवृत्तं कतिचिद् पृष्ठेषु निबन्धनं कठिनं प्रतीयते तथापि गुरुभक्तिवशात् एव तस्याः जीवनस्य महत्वपूर्णांशांत् लेखनीबद्धान् कर्तुं लघुप्रयासं करोमि।

॥ इति प्रथमोऽध्यायः॥

तभी धर्म, अग्नि और राजा तीनों का अन्त हो जायेगा। अतः भगवान महावीर के शासन में आज तक अक्षुण्ण जैनशासन चला आ रहा है। मुनि- आर्यिकाओं की परम्परा भी इसी प्रकार से पंचमकाल के अन्त तक चलती रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

यहाँ तक तो आपने आर्यिकाओं की चर्या के बारे में जानकारी प्राप्त की। अब आपके समक्ष एक ऐसी महान 'गणिनी आर्यिका श्री' का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है, जिन्होंने बीसवीं सदी में कुंवारी कन्या के रूप में दीक्षा लेकर त्याग का मार्ग प्रशस्त किया। चूँकि उनके 58 वर्षीय दीक्षा के दीर्घकाय जीवनवृत्त को कुछ पृष्ठों में निबद्ध करना कठिन प्रतीत होता है तथापि गुरुभक्तिवश ही उनके जीवन के महत्त्वपूर्ण अंशों को लेखनीबद्ध करने का लघुप्रयास कर रही हूँ।

उपसंहारः

अष्टाविंशति निर्गुणै र्विलसिताः मूलैर्जिनाः साधवः,
तस्मादेव पवित्र संयम धनैस्तेसन्ति सम्मानिताः।
सर्वैर्जैन समाज श्रावकगणैस्ते सर्वदा वन्दिताः,
तेषां पावन पादपद्मयुगलं भूयात् सदा मुक्तये।।1 ।।

साध्व्यो मूलगुणैर्भवन्ति सततं जैनार्यिकाः विश्रुताः,
तास्तुल्याः मुनिभिः सदैव निखिलैः पूज्याः शिरोभिर्वतैः।
तासामाचरणं कदापि शिथिलं न्यूनंनसाभोः पदात्,
तत् साधुद्वयसंगमस्तु सततं श्रेयस्करो नो भवेत्।।2 ।।

ते सर्वे शुद्धात्म शोधन पराः संसार रागापहाः,
निर्ग्रन्थाः विष तुल्य भोगरहिताः स्वच्छात्म चिन्तारताः।
सर्वारम्भ त्यजंति शुद्धहृदयाः मुक्तित्रयाराधकाः,
वन्द्यास्ते हि दिगम्बराः मुनिगणाः मोक्षार्थिनः सर्वदा।।3 ।।

माता ज्ञानमती वरिष्ठ गणिनी जैनार्यिकाणां मणिः,
तत्त्वज्ञानमये निजात्मसदने निश्चिन्तभावैः स्थिता।
ज्ञान–ध्यान–परायणा सितमते श्रद्धामयी योगिनी,
तस्याः पादसरोज भक्तिरमला तिष्ठेन्मनो मन्दिरे।।4 ।।

अट्ठाईस मूलगुणों से सुशोभित जैन साधु हैं, इसीलिए पवित्र संयम के धन से ये सम्मानित हैं। सभी जैन समाज के श्रावकों के द्वारा वे वंदित हैं, उनके पवित्र दोनों चरण हमारी मुक्ति के लिए होंवे।।1।।

जैन साध्वी आर्यिकाएँ उन मूलगुणों के द्वारा ही प्रसिद्ध हैं, वे सभी मुनियों के समान ही सभी मस्तकों के द्वारा सदा पूज्य हैं। वे अपने आचरण में कभी शिथिलता नहीं लाती हैं। ऐसे उन दोनों प्रकार के साधुओं की–मुनि-आर्यिकाओं की संगति हमारे लिए सदैव कल्याणकारी होवे।।2।।

वे सभी सद्गुरु अपनी आत्मा को शुद्ध करने में लगे हुए हैं और संसार के राग को नष्ट करने वाले है। निर्ग्रंथ हैं विष के समान भोगों से रहित अपनी शुद्ध आत्मा के चिन्तन में रत हैं। सभी आरंभ और परिग्रहों से रहित शुद्ध हृदय वाले हैं और तीनों गुप्तियों के आराधक हैं। वे सभी वंदनीय दिगम्बर जैन मुनि मोक्ष के अभिलाषी हैं।।3।।

माता ज्ञानमती वरिष्ठ गणिनी जैन आर्यिकाओं में मणि हैं। तत्त्वज्ञान से युक्त अपने हृदय मंदिर में निश्चितरूप से स्थिर हैं। ज्ञान-ध्यान में परायण हैं और जैन धर्म में सदा श्रद्धा रखने वाली हैं, योगिनी हैं। उनके चरण कमलों की निर्मल भक्ति हमेशा मेरे मनोमंदिर में स्थिर रहे।।4।।

अध्याय-2

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का स्वर्णिम व्यक्तित्व

द्वितीयोऽध्यायः

पूज्यगणिन्याः श्रीज्ञानमत्याः मातुः स्वर्णिमव्यक्तित्वम्

पूज्यायाः गणिन्याः आर्यिकाया श्रीज्ञानमत्याः मातुः परिचयो निम्नलिखिताभिः पंक्तिभिः प्रारभ्यते—''नैराश्यमदे निमज्जितेभ्यो नरेभ्यो नवोदिता आशासि। काचिद् अलौकिक–शक्तिरसि, अभिव्यक्तिरसि, विश्वासोऽसि।।कलिकालस्य नवज्योतिरसि, उत्कर्षस्याऽभासोऽसि। कश्चिन्मन्यते न वा मन्यते त्वं स्वयमेवेतिहासोऽसि।।''

सत्यमेव, यस्याः आदर्शाः हिमालयाद् पर्वतादपि उच्चैः सन्ति। यस्याः वाण्या निःसृता ज्ञानगंगा नीलनद्याः षटसहस्रकिलोमीटरतोऽपि दीर्घास्ति, तस्याः अपि महत्यस्ति। यस्याश्च कीर्तिप्रसारस्य समक्षं ऐशिया महाद्वीपस्य क्षेत्रफलमपि लघु प्रतीयते, यस्याश्च हृदयस्य गाम्भीर्यं प्रशान्तमहासागरमपि तुच्छं सिद्धं कर्तुं प्रभवति, तस्याः महाव्यक्तित्वयुक्तायाः गणिन्याः श्रीज्ञानमत्याः परिचयः शब्दैर्वर्णयितुं न शक्यते।

एकनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे विक्रमाब्दे (विक्रम संवत् 1991), चतुस्त्रिंशत्य–धिकएकोन्विंशतिशततमे खिष्टाब्दे द्वाविंशति अक्टूबर दिनाँके (22 अक्टूबर 1934) शरदपूर्णिमायाः (आश्विनशुक्लपूर्णिमाया) रात्रौ, प्रथमप्रहरे बाराबंकीति जनपदस्य टिकैतनगरग्रामे श्रेष्ठिनः श्रीछोटेलालस्य धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी अस्यै कन्यायै जन्म

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का स्वर्णिम व्यक्तित्व

पूज्य गणिनी आर्यिकाश्री का परिचय निम्न पंक्तियों से प्रारंभ होता है–

नैराश्यमद में डूबते, नर के लिए नव आस हो।
कोई अलौकिक शक्ति हो, अभिव्यक्ति हो विश्वास हो।।
कलिकाल की नव ज्योति हो, उत्कर्ष का आभास हो।
मानो न मानो सत्य है, तुम स्वयं में इतिहास हो।।

सच, जिनके आदर्श हिमालय पर्वत से भी ऊँचे हैं, जिनकी वाणी से निःसृत ज्ञानगंगा नीलनदी (जिसकी लम्बाई 6 हजार किमी. है) से भी बड़ी है, जिसकी कीर्तिप्रसार के समक्ष एशिया महाद्वीप का क्षेत्रफल भी छोटा प्रतीत होने लगता है और जिनके हृदय की गंभीरता प्रशान्त महासागर को भी उथला सिद्ध करने लगी है, उस महान व्यक्तित्व 'गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी' का परिचय भला शब्दों में कैसे बांधा जा सकता है?

विक्रम संवत् 1991 (22 अक्टूबर ईसवी सन् 1934) की शरदपूर्णिमा (आश्विन शु. पूर्णिमा) की रात्रि के प्रथम प्रहर में जिला बाराबंकी के टिकैतनगर ग्राम में श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी ने इस कन्या को जन्म देकर अपना प्रथम मातृत्व धन्य कर लिया था।

प्रदाय स्वप्रथमं मातृत्वं धन्यमकरोत्। तयोर्दाम्पत्यस्य जीवनस्योद्यानस्य इदं प्रथमं पुष्पं सम्पूर्णमेव संसारं स्वमोहकेन सुगन्धिना सुवासितं करिष्यति, एतां वार्तां तु तौ कदापि चिन्तयितुमपि नाशक्नुतां किन्तु सरस्वत्याः इमं अवतारं जन्म दातुं तयोः जन्मजन्मान्तराणि संचितानि पुण्यकर्माण्येव निश्चितरूपेण सहायकान्यभवन्।

अवधप्रान्ते जन्मप्राप्तवत्याः तस्याः नारीरत्नस्य परिचयः केवलं अयमेवास्ति यत् सरयूनद्याः एको बिन्दुरद्य ज्ञानस्य सिन्धुरभवत्। शरत् पूर्णिमायाः अयमिन्दुरहर्निशम् च सम्पूर्णसंसाराय सम्यग्ज्ञानस्य दिव्यालौकिकं प्रकाशं व्यतरत्।

बालिकाया नाम कृतं ''मैना''**। मैना–सारिका खगवत् मधुरा वाणी या गृहात् बहिर्भूत्वा प्रतोल्यां, परिवेशे स्थाने सम्पूर्णे च नगरे गुंजायमाना आसीत्। पूर्वजन्मनस्तपस्यया मातुश्च घुट्टिकया ये नैसर्गिकाः धर्मसंस्काराः अस्यै प्राप्ताः अभवन् तेः किशोरावस्थां प्राप्तौ एनां ब्राह्मीचन्दनायाश्च अलंकरणेन सुशोभितामकुर्वन्।**

परिवारे प्रथमकन्यायाः जन्मना सर्वे प्रसन्नाः आसन्। कन्यायाः जन्मना सहैव प्रसूतिगृहे प्रसारितमालोकं विलोक्य वृद्धायाः पितामह्याः, मुखात् वाणी उद्भूता यत् अवश्यमेवाद्य मम गृहे कन्यायाः व्याजात् कस्याः अपि देव्याः अवतारोऽभूत्। एवं आशीर्वादस्य पुष्पमाला वृद्धायाः मुखात् प्रस्फुटा भवत्–''अनेनैव प्रकारेण सदा प्रकाशिता भवतु मम लघुपुत्री। मम वध्वाः प्रथमं पुष्पं चिरं जीवतु, अस्याः सुगन्धिना कुलं सुवासितं भवतु।''

उनके दाम्पत्य जीवन की बगिया का यह प्रथम पुष्प सारे संसार को अपनी मोहक सुगंधि से सुवासित करेगा, यह बात तो वे कभी सोच भी नहीं सके थे किन्तु सरस्वती के इस अवतार को जन्म देने में उनके जन्म-जन्मान्तर के संचित पुण्य कर्म ही मानो सहायक बने थे।

अवध प्रान्त में जन्म लेने वाली इस नारीरत्न का परिचय बस यही तो है कि सरयू नदी की एक बिन्दु आज ज्ञान की सिन्धु बन गई है, शरदपूर्णिमा का यह चाँद आज अहर्निश सारे संसार को सम्यग्ज्ञान के दिव्य प्रकाश से आलोकित कर रहा है।

बालिका का नाम रखा गया–**मैना**! मैना पक्षी की भाँति मधुरवाणी जो घर से निकलकर गली-मोहल्ले और सारे नगर में गुंजायमान होने लगी थी। पूर्व जन्मों की तपस्या एवं माँ की घूंटी से जो नैसर्गिक धर्म-संस्कार प्राप्त हुए थे, उन्होंने किशोरावस्था आते ही इन्हें ब्राह्मी और चन्दना का अलंकरण पहना दिया।

परिवार में प्रथम कन्या के जन्म से सभी हर्षित थे। कन्या के जन्मते ही प्रसूतिगृह में फैले अलौकिक प्रकाश को देखकर बूढ़ी दादी के मुँह से निकला कि अवश्य ही आज मेरे घर में कन्या के बहाने कोई देवी ने अवतार लिया है। बस, आशीर्वाद की फुलझड़ियाँ वृद्धा के मुख से फूट पड़ीं– **इसी प्रकाश से सदैव प्रकाशित रहे मेरी नन्हीं बेटी, मेरी बहू का प्रथम पुष्प चिरंजीवी हो तथा उसकी सुगंधि से दोनों कुल सुवासित होवें** इत्यादि।

इतश्च स्वनूतनशिशुकलिकाया जन्मनोः विशेषताः आकर्ण्य माता मोहिनीदेव्यपि स्वप्रसवपीडां विस्मृत्य स्वातीतस्य भविष्यस्य च चिन्तनमकरोत्। साऽपि स्व श्वश्रूतः आशीर्वादं प्राप्य कथयितुमारभत् यत् मातः। अहं त्वेतां स्वपितुः प्रसादमवगच्छामि यतः सः मम विवाहकाले एकममूल्यं यौतुकम् यच्छत्–''पद्मनन्दिपंचविंशतिकाम्''। **अहं प्रतिदिनं विवाहस्य पश्चात् तस्य ग्रन्थस्य स्वाध्यायं कृत्वा कृत्वा न जानामि कति शुभभावना मया भाविताः। तासां फलस्वरूपमेव मयैतत् कन्यारत्नं लब्धम्।**

कन्यायाः जन्मन्यपि पुत्रजन्मोत्सवः इव प्रसन्नता व्याप्ता अभवत्। पिता छोटेलालोऽपि स्वसन्तानस्य प्रंशसां श्रुत्वा–श्रुत्वा प्रफुल्लपुष्पमिवाभवत्।

कार्याण्यपि नामानुसारेणैव–**बाल्यादेवास्याः मनसि** 'पद्मनन्दिपंचविंशतिका' **ग्रन्थस्य स्वाध्यायेन वैराग्यस्य अंकुराः प्रस्फुटिताः अभवन्। अतएव गुरूपदेशं विनैव त्यागमार्गेऽग्रेसरा भवितुं इयं पुरुषार्थारम्भमकरोत्।**

न कोऽप्यजानात् यत् एकस्मिन् लघुग्रामे समुत्पन्नायामस्यां बालिकाया एकस्मिन् दिने एतावान् साहसः प्रकटीभविष्यति यत् सम्पूर्णे संसारे स्वप्रतिभाबलेन ''टिकैतनगरस्य'' **नाम अमरं करिष्यति। किन्तु संसारे एका लोकोक्तिरस्ति यत् ''पुष्पं स्व सुगन्धिं दशदिक्षु विकीर्णां कर्तुं अन्यस्य चाटुकारितां न करोति। मेघाः कदापि मयूरस्य समीपे स्वसन्देशवाहकं**

इधर अपनी नन्हीं कली के जन्म की विशेषताओं को सुनकर माँ मोहिनी भी अपनी प्रसव पीड़ा भूलकर अपने अतीत और भविष्य का चिन्तन कर रही थीं। वे भी अपनी सासू जी का आशीर्वाद प्राप्त करके कहने लगीं–माँ! मैं तो इसे अपने पूज्य पिताजी का प्रसाद समझती हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे विदा करते समय एक अमूल्य दहेज जो दिया था–**''पद्मनंदिपंचविंशतिका''**। मैंने विवाह के बाद प्रतिदिन उस ग्रंथ का स्वाध्याय कर-करके न जाने कितनी शुभ भावनाएँ भायी थीं, उसी के फलस्वरूप मुझे यह कन्यारत्न प्राप्त हुई है।

कन्या के जन्म पर भी पुत्र जन्मोत्सव जैसी खुशियाँ मनाई गईं। पिता छोटेलाल जी भी अपनी सन्तान की प्रशंसा सुन-सुनकर फूले नहीं समाते थे।

➢काम भी नाम के अनुसार ही–

बचपन से ही **''पद्मनंदिपंचविंशतिका''** ग्रंथ के स्वाध्याय से इनके मन में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हो चुके थे इसलिए गुरु उपदेश के बिना ही त्यागमार्ग पर अग्रसर होने का इन्होंने पुरुषार्थ प्रारंभ कर दिया।

कौन जानता था कि एक छोटे से ग्राम में जन्मी इस बालिका में एक दिन इतना साहस प्रगट हो जाएगा कि सारे संसार में अपनी प्रतिभा के द्वारा **''टिकैतनगर''** का नाम अमर कर देगी। किन्तु संसार में एक लोकोक्ति है–''फूल अपनी सुगंधि दशों दिशाओं में बिखेरने के लिए दूसरों की खुशामद नहीं करते, बादल कभी मोर के पास अपना कमीशन एजेंट नहीं भेजते हैं कि हम आकाश

न प्रेषयन्ति यत् वयमाकाशस्य प्रांगणे आच्छादिताः यत् अधुना यूयं नृत्यं प्रारब्धं कुरुत। पुष्पाणि विकसन्ति वातावरणं स्वयमेव सुगन्धितं भवति। मेघानामाच्छादनेनैव मयूराः नृत्यन्ति तथैव महान्त कस्यापि द्वारे कदापि प्रचारस्य–प्रसारस्य प्रशंसायाः वा भिक्षां याचितुं न गच्छंति। एते सर्वे तु स्वयमेव तत्समीपमागछन्ति। महत्तायाः गुरुतायाः गुणानां च पूजाया–अर्चनायाश्च व्यवस्था शताब्दीभिः प्रकृतिः कर्तुमुद्यता विद्यंते।''

पूज्या ज्ञानमती माता तेषु महत्सु आत्मसु एकास्ति, येषां गुणसुरभिसमूहात् सम्पूर्णं जगत् सुगन्धिं प्राप्नोति। समयस्य सूक्ष्मतन्तवस्ता बालां विकसितां भवितुं प्रारभन्त। मात्रा पानं प्राप्ता जन्मघुट्टिका मैनायाः धार्मिकस्वास्थ्य वृद्धिगतं कर्तुं प्रारभत। सा च स्वयौवनस्य मार्गे पदं निक्षेप्तुमाब्धवती।

मैना स्वप्रारम्भिकजीवनस्य सप्तदशवर्षाणि पूरयित्वा अष्टादशवर्षे प्रवेशमकरोत्। एतेन सहैव सा नारीजीवनस्य चरमलक्ष्यमपि साधयितुं प्रयत्नशीलाऽऽसीत्। यदा तस्याः पितरौ समस्तपरिवारश्च तस्याः गुणवत्याः कन्यायाः हस्तौ पीतौ कर्तुं अर्थात् विवाहं कर्तुं समस्तान् उद्यमान् अकुर्वन्।

पूर्णाया तिथेः प्रतीका–**शरत्पूर्णिमातिथिस्तु प्रतिवर्षमागत्य जनश्रुत्यनुसारेण च अमृतस्य वर्षा कृत्वा व्यतीता अभवति। किन्तु चतुस्त्रिंशत्यधिकएकोनविंशतितमस्य वर्षस्य शरत्पूर्णिमा भूमौ स्व अमरस्थायिचिन्हममुञ्चत्। अत्र निवासिनः इदमुक्त्वा अगच्छत् यत् अस्य पूर्णिमाचन्द्रस्य समक्षं मम शीतलरश्मयोऽपि वृथैव सन्ति। अहं स्वयमपि अस्मात् चन्द्रात्**

के आंगन में छा गए हैं, तुम थिरको और नाचो। फूल खिलते हैं वातावरण स्वयं महक उठता है, बादल छाते ही मोर नाचने लगते हैं। उसी प्रकार महानता किसी के दरवाजे पर कभी प्रचार, प्रसार या प्रशंसा की भीख मांगने नहीं जाती, यह सब तो स्वयमेव उसकी झोली में आ गिरते हैं। महानता, गुरुता और गुणों की पूजा-अर्चना की व्यवस्था सदियों से प्रकृति करती चली आ रही है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी भी उन्हीं महान आत्माओं में से एक हैं, जिनकी गुणसुरभि से सम्पूर्ण जगत सुगंधि प्राप्त कर रहा है। समय के सूक्ष्म तन्तुओं ने उस बाल प्रतिभा को निखारना प्रारंभ किया, माता के द्वारा पिलाई गई जन्मघूंटी से मैना का धार्मिक स्वास्थ्य वृद्धिंगत होने लगा और वह अपने यौवन की पगडंडी पर कदम रखने लगी।

मैना अपने प्रारंभिक जीवन के सत्रह वर्षों को पूर्ण कर अट्ठारहवें वर्ष में प्रवेश कर रही थी, इसके साथ ही वह नारी जीवन के चरमलक्ष्य को भी सिद्ध करने के लिए प्रयत्नशील थी जबकि माता-पिता एवं समस्त परिवार अपनी उस गुणवती कन्या के हाथ पीले करने के समस्त उद्यम कर चुके थे।

➢पूर्णा तिथि की प्रतीक–

शरदपूर्णिमा तिथि तो प्रतिवर्ष आती और जनश्रुति के अनुसार अमृत बरसाकर चली जाती थी किन्तु सन् 1934 की शरदपूर्णिमा ने धरती पर अपनी अमिट छाप छोड़ दी और मानों यहाँ के निवासियों से यह कहकर चली गई कि इस पूर्णिमा के चाँद के समक्ष मेरी शीतल रश्मियाँ भी व्यर्थ

अमृतग्रहणस्य निर्णयमग्रण्हम्। यः मामपि धन्यममरं च कृतवान् किमेतस्या उपकार जन्मजन्मांतरेऽपि विस्मर्तुं शक्नोमि। अर्थात अधुनाऽस्मिनवनीतले ''पूर्णातिथे प्रतीका'' **कन्यारत्नं जना शरत्पूर्णिमातिथिमक्षयपदं प्रापयितुं समर्थाः अभवन्। यां युगयुगान्तरेषु कोऽपि नाशयितुं समर्थो नास्ति।**

स्वप्नोऽपि भवितव्यतां व्यक्तीकर्तुमागतः–**महापुरुषाणां भविष्यं वक्तृणां शुभाऽशुभस्वप्नानां दिग्दर्शनमपि भवति। यथा भगवते ऋषभदेवाय आहारदानात् पूर्वं हस्तिनापुरस्य राजा श्रेयांसः सुमेरुपर्वतकल्पवृक्षादिकान् सप्त स्वप्नान् अपश्यत्। नारीइतिहासस्य प्रारम्भकर्त्री मैनापि रात्रेरन्तिमप्रहरे एकं स्वप्नमद्राक्षीत्–**

''अहं पूजनस्य स्थालीं गृहीत्वा मन्दिरं गच्छामि, मया सह गगने चन्द्रः नीचैश्च तस्य शुभ्रा चन्द्रिका मामनुसरति। सर्वे स्त्रीपुरुषाः मां चकिताः भूत्वा पश्यन्ति।''

त्यागाय मैनायाः अन्तरंगपुरुषार्थस्तु प्रगतिशीलः आसीत, स्वप्नोऽयं तस्यै सम्बलं प्रादात्। प्रातःकाले च मैनाऽचिन्तयत्–मम विजयोऽवश्यमेव भविष्यति।

मैनाः प्रातः स्वानुजं कैलाशचन्द्रं स्वप्नस्य वार्तामकथयत्तु सोऽपि तत्कालमेवावादीत्–''भगिनि! एतत् प्रतीयते यत् भविष्ये भवती महती साध्वी भविष्यति, भवत्याश्च पुण्यस्य यशसश्च चन्द्रिका चतुर्दिक्षु स्वप्रकाशं प्रसारयिष्यति।'' **अत्यन्तमेव कुशाग्रबुद्धिसंपन्नस्य लघुभ्रातृमुखादपि**

हैं, मैंने स्वयं भी अब इस चन्द्रमा से अमृत ग्रहण करने का निर्णय किया है जिसने मुझे भी धन्य और अमर कर दिया है, क्या मैं इनका उपकार जन्म-जन्म में भी भूल सकती हूँ? अर्थात् अब इस अवनीतल पर **''पूर्णा तिथि की प्रतीक''** कन्यारत्न के जन्म ने शरदपूर्णिमा तिथि को अक्षय पद प्राप्त करा दिया, जिसे युगों-युगों तक कोई मिटा नहीं सकता।

➢स्वप्न भी होनी को बताने आया–

महापुरुषों के भविष्य को बताने हेतु शुभ-अशुभ स्वप्नों का दिग्दर्शन भी हुआ करता है। जैसे– भगवान ऋषभदेव को आहार देने से पूर्व हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने सुमेरु पर्वत, कल्पवृक्ष आदि सात स्वप्न देखे थे। नारी इतिहास को प्रारंभ करने वाली मैना ने भी रात्रि के पिछले प्रहर में एक स्वप्न देखा–

''मैं पूजन की थाली लेकर मंदिर जा रही हूँ, मेरे साथ आकाश में चन्द्रमा और नीचे उसकी शुभ्र चाँदनी पीछे-पीछे चल रही है, सभी नर-नारी मुझे आश्चर्यचकित हो देख रहे हैं।''

त्याग के लिए मैना का अन्तरंग पुरुषार्थ तो चल ही रहा था, इस स्वप्न ने उन्हें संबल प्रदान किया और प्रातःकाल मैना सोचने लगी–**मेरी विजय अवश्य होगी।**

मैना ने सवेरे अपने छोटे भाई कैलाशचंद से स्वप्न की बात बताई तो वे भी एकदम बोल पड़े- **''जीजी! ऐसा लगता है कि आप भविष्य में महान साध्वी बनेंगी और आपके पुण्य एवं यश की चाँदनी चारों ओर अपना प्रकाश फैलाएगी।''** अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि वाले लघुभ्राता के मुँह से भी ऐसी

ईदृशीमनुकूलां वार्तामाकर्ण्य मैनायै अति संतोषोऽभवत्। स्वयं तु साध्वी पदस्य प्राप्तये स्वप्नान् संयुक्तान् अकरोत्। किन्तु अस्मिन् युगे नार्यः परतन्त्रतां वीक्ष्य परिवारस्य समक्षं किञ्चिदपि वक्तुं साहसं न कर्तुमशक्नोत्, पुनरपि सा स्वमातरं स्वाचलं संकल्पं अनेकशोऽकथयत्। अतः गृहे चर्चा तु प्रसारितैवासीत्।

पितुराश्वासनम्–**पुत्र्यास्त्यागस्य प्रबलां भावनामवलोक्य एकस्मिन् दिने पिताऽवदत्। वत्से! मया श्रुतं यत् सम्मेदशिखरे सिद्धक्षेत्रे संप्रति एको महान् मुनिसंघो विराजमानोऽस्ति। तस्मिन् कतिचिदार्यिकाः अपि सन्ति। वयं त्वां तत्र नेष्यामः.....। अधुना किमासीत, –मैना तु तत्र नेतुं पुनः पुनः अकथयदेव। तदा पिता ''केषांचित् दिनानां पश्चात् नेष्यामः'' इत्युक्त्वा तस्यै सान्त्वनामयच्छत्। समयं च व्यतीतं कर्तुं प्रयत्नशीलोऽभवत्। किन्तु मोहोदयः पुत्रीं केन प्रकारेण तत्र प्रेषयितुमलमासीत्।**

कुमारिकाणां पथप्रदर्शिका–**कन्यायाः अधिकाराणां मूल्यांकनं कर्तुं तत्परा मैना जीवनस्य मधुमासे प्रवेशस्य प्राक् एव तस्य धर्मयुद्धस्य संकल्पमग्रहणात् स्वयंभू भूत्वा च तस्य पूर्तये स्वप्नान् अयोजयत्। न जानामि कस्मात् स्थानात् ईदृश्याः वार्ताः सा ज्ञात्वाऽऽगच्छत्, यतः तदाप्रभृति तु तस्यै कस्यापि गुरोः संयोगोऽपि प्राप्तो नाभूत्।**

माता मोहिनी तु तदा चकितैवाभवत् यदा मैनायाः सख्यः तां इदमकथयन् यत् अद्य अस्मभ्यं मैना शीलव्रतपालनस्य नियमं मन्दिरे गृहणमकारयत्।

अनुकूल बात सुनकर मैना को बहुत ही अच्छा लगा। वे स्वयं तो साध्वी पद प्राप्ति के सपने संजोया ही करती थीं, किन्तु इस युग में चल रही नारी की परतन्त्रता देखकर परिवार के समक्ष कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। फिर भी उन्होंने अपनी माँ से अपना अडिग संकल्प कई बार बताया था अतः घर में चर्चा तो फैल ही चुकी थी।

➢पिता का आश्वासन–

पुत्री के त्याग की प्रबल भावना को देखकर एक दिन पिता ने कहा–बेटी! मैंने सुना है श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर इन दिनों एक बड़ा मुनि संघ विराजमान है। उसमें कई एक आर्यिकाएँ भी हैं। हम तुम्हें वहाँ ले चलेंगे....। अब क्या था, मैना ने तो वहाँ ले चलने के लिए धुन ही लगा दी। तब पिता ''कुछ दिन बाद ले चलेंगे'' ऐसा कह-कहकर सान्त्वना देते रहे और समय निकालते रहे चूँकि मोह का उदय भला पुत्री को कैसे भेज सकता था?

➢कुमारिकाओं की पथ-प्रदर्शिका–

कन्या के अधिकारों का मूल्यांकन कराने वाली मैना ने जीवन के मधुमास में प्रवेश करने से पूर्व ही नारी उद्धार का संकल्प लिया और स्वयंभू होकर उसकी पूर्ति के सपने संजोने लगीं। न जाने कहाँ से ऐसी-ऐसी बातें ये सीखकर आई थीं क्योंकि तब तक तो इन्हें किसी गुरु का संयोग भी प्राप्त नहीं हुआ था।

माता मोहिनी तो तब दंग रह जातीं, जब मैना की सखियाँ उनसे कहतीं कि आज हमें मैना ने शीलव्रत पालन का नियम मंदिर में दिलवाया है।

अन्ततोगत्वा नवाधिकद्विसहस्रविक्रमाब्दे द्वापंचाशत्यधिकएकोनविंशतिशततमेख्रिष्टाब्दे भारतगौरवस्य आचार्यरत्नस्य श्रीदेशभूषणस्य मंगलसान्निध्ये शरत्पूर्णिमायाः एव दिने बाराबंकी नगरे तस्याः हार्दिकइच्छायाः सम्पूर्तिरभवत्। एतस्य फलस्वरूपेण मैनायाः मधु मासः सप्तमप्रतिमारूपेण आजन्मब्रह्मचर्यव्रतेन परिवर्तितोऽभवत्।

तस्मिन् समये सा पारिवारिकान् सामाजिकान् च संघर्षान् सोढ्वा न केवलं स्वात्मनः एव प्रत्युत् समस्तकुमारिकाणां हस्तेषु बद्धाः परतन्त्रतायाः श्रृंखलाः छित्वा असीमसाहसस्य वीरतायाश्च परिचयमदात्। अस्मात् पूर्वं विंशतिशताब्द्याः काचित् कन्या अस्मिन् कंटकाकीर्णे मार्गे पदं न न्यक्षिपत्। अतएव तां ''कुमारिकाणां पथप्रदर्शिका'' **इति कथने वयं गौरवानुभूतिं कुर्मः।**

वीरस्य अतिशयभूमौ भवती वीरमती अभवत्–**आजन्मब्रह्मचर्यव्रतस्य ग्रहणानन्तरं ब्रह्मचारिणी कुमारी मैना एकस्यां श्वेतशाटिकामात्रे आवृता आर्यिकेव आचार्यवर्यस्य संघे वासिन्यभवत्। अनया सह लखनऊवासिन्येका बह्मचारिणी चाँदबाई इत्यप्यासीत्। तदैव संघोऽतिशयक्षेत्रं श्रीमहावीरजी नगरं प्राप्नोति। तत्रैव च मैनायाः क्षुल्लिका दीक्षायाः मुहूर्तं निश्चितं भवति।**

अधुना नवाधिकद्विसहस्रविक्रमाब्दः एव प्रगतिशीलः आसीत् त्रिपंचाशत्यधिकएकोन–विंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे प्रविष्टोऽभूत्। तस्मिन् समये 'महावीरजीक्षेत्रे होलिकायाः दीर्घकायो मेलापकः संयोजितः आसीत्। तस्मिन् समये एव मातरं पितरं च सूचनां विनैव मैना चैत्रकृष्ण

अन्ततोगत्वा विक्रम संवत् 2009 (ईसवी सन् 1952) में भारत गौरव आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के मंगल सानिध्य में शरदपूर्णिमा के ही दिन बाराबंकी में उनकी हार्दिक इच्छा की सम्पूर्ति हुई, जिसके फलस्वरूप मैना का मधुमास सप्तमप्रतिमारूप आजन्म ब्रह्मचर्य में परिवर्तित हो गया।

उस समय उन्होंने पारिवारिक एवं सामाजिक संघर्षों को झेलकर अपनी ही नहीं प्रत्युत् समस्त कुमारिकाओं के हाथों में जकड़ी परतन्त्रता की बेड़ियाँ तोड़कर असीम साहस और वीरता का परिचय दिया था। इनसे पूर्व बीसवीं शताब्दी की किसी कन्या ने इस कंटीले मार्ग पर कदम नहीं बढ़ाया था। इसीलिए इन्हें **''कुमारिकाओं की पथ प्रदर्शिका''** कहने में हम सभी गौरव का अनुभव करते हैं।

➢वीर की अतिशय भूमि पर बनीं वीरमती आप–

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेने के पश्चात् ब्रह्मचारिणी कु. मैना मात्र एक श्वेत साटिका में लिपटी आर्यिका की भाँति आचार्यश्री के संघ में रहने लगीं। इनके साथ लखनऊ की एक ब्रह्मचारिणी चाँदबाई भी थीं। तभी संघ अतिशयक्षेत्र श्रीमहावीरजी पर पहुँचता है और वहीं मैना की क्षुल्लिका दीक्षा का मुहूर्त निकाला जाता है।

अभी विक्रम संवत् 2009 ही चल रहा था कि ईसवी सन् 1953 में प्रविष्ट हुआ, जब महावीर जी में होली का दीर्घकाय मेला लगा हुआ था, उसी समय माता-पिता को सूचित किये बिना मैना

प्रतिपदादिने क्षुल्लिकादीक्षामगृह्णात्। आचार्यश्रीदेशभूषणः मैनायाः वीरतां वीरप्रभोश्च अतिशयभूमौ दीक्षायाः संपन्नताया कारणेन शिष्यायाः नाम ''क्षुल्लिका वीरमती'' **इत्यकरोत्। तदैव बालसत्याः क्षुल्लिकायाः वीरमत्याः जयकारैः सहातिशय क्षेत्र महिमा द्विगुणितोऽभवत्।** अधुना अस्मात् स्थानात् द्वयोः वीरयोरितिहासः संयुक्तोऽभवत्–एकस्तु तीर्थंकरमहावीरस्य द्वितीयश्च क्षुल्लिकायाः वीरमत्याः।

कस्मात् स्थानात् कस्मिन् स्थाने?–**मुनिराट् सुकुमालः इव एकस्याः कोमलांग्याः सुकुमार्याः साध्व्याः रूपेण आचार्यसंघेन सह पदाभ्यां विहारं कर्तुमारभत्। पदाभ्यां प्रवहन्ती रक्तधारा पूर्वस्मात् अनभ्यस्तया तीव्रगत्या चलनेन उत्पन्नां, हृदयस्य गतिं तत्र न कोऽपि अभिज्ञः एव आसीत् न कोऽपि वक्ता। क्षुल्लिका वीरमती अचिन्तयत् यदहं कयापि विवशतया अन्यस्य हठात् दीक्षां न गृहीतां नाकुरवम्, पूर्णस्वेच्छया गृहीतया दीक्षया सा कदापि खेदखिन्ना नाभवत्। स्वतीव्रतमवैराग्येण गृहीतया क्षुल्लिकादीक्षयाऽपि सा पूर्णतया सन्तुष्टा क्व वा कुत्रासीत्? सा तु नारीजीवनस्य उच्चतमशिखरस्वरूपामार्यिकादीक्षां गृहीतुं पुनः तीव्ररुचियुक्ताभवत्।**

नीचैभूमिमातुः उपरिचाकाशपितुः संरक्षणे तिष्ठन्ती अद्यापि ज्ञानमती माता क्षुल्लिकावस्थायां आचार्यप्रवरश्रीदेशभूषणेन सह द्वौ चतुर्मासौ अकरोत्। ययोः त्रिपंचाशत्यधिकएकोनविंशति–शततमस्य (1953) वर्षीयस्तस्याः प्रथमचतुर्मासः तस्या जन्मभूम्यां टिकैतनगरेऽभवत्। द्वितीयश्च चतुःपंचाशत्यधिकएकोनविंशतितमस्य (1954) वर्षस्य चतुर्मासो जयपुरनगरेऽभवत्। यत्र सा द्वयोर्मासयोः समये संस्कृतस्य कातन्त्ररूपमालाव्याकरणं पठित्वा स्वसप्तमालामयस्य

ने चैत्र कृष्णा एकम् को क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर ली। आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज ने मैना की वीरता और वीरप्रभु की अतिशय भूमि पर दीक्षा होने के कारण शिष्या का नाम **''क्षुल्लिका वीरमती''** रखा। तभी बालसती क्षुल्लिका वीरमती की जयकारों से अतिशय क्षेत्र का अतिशय द्विगुणित हो गया। **अब यहाँ से दो वीरों का इतिहास जुड़ गया–एक तीर्थंकर महावीर का और दूसरा श्री वीरमती जी क्षुल्लिका का।**

➢कहाँ से कहाँ?–

मुनिराज सुकुमाल की भाँति एक कोमलांगी सुकुमारी साध्वी के रूप में आचार्य संघ के साथ पद विहार करने लगी। पैरों से टपकती खून की धार, पूर्व की अनभ्यासी, तीव्र गति चाल से उत्पन्न हृदय की धड़कनों को न वहाँ कोई पहचानने वाला ही था और न बताने वाला। क्षुल्लिका वीरमती जी सोचती थीं कि मैंने किसी मजबूरी या दूसरे की जबर्दस्ती से तो दीक्षा ली नहीं है, पूर्णस्वेच्छा से ली गई उस दीक्षा से वे कभी खेदखिन्न नहीं हुईं। अपने तीव्रतम वैराग्यपूर्वक ली गई उस क्षुल्लिका दीक्षा से भी वे पूर्ण सन्तुष्ट कहाँ थीं, उन्हें तो नारी जीवन के उच्चतम शिखरस्वरूप आर्यिका दीक्षा लेने की पुनः धुन लग गई।

नीचे धरती माता और ऊपर आकाशरूपी पिता के संरक्षण में रहती हुईं आज की ज्ञानमती माताजी ने क्षुल्लिका अवस्था में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज के साथ दो चातुर्मास किये, जिसमें सन् 1953 का उनका प्रथम चातुर्मास उनकी जन्मभूमि टिकैतनगर में हुआ और दूसरा सन् 1954 का चातुर्मास जयपुर में हुआ, जहाँ उन्होंने मात्र 2 माह में संस्कृत की कातन्त्र रूपमाला

ज्ञानप्रासादस्य पुष्टभित्तेर्मूलं निर्मितवती। टिकैतनगरे दक्षिणप्रान्तात् आगतायाः क्षुल्लिकायाः विशालमत्याः समागमं प्राप्नोत्।

आचार्यवर्यस्य समक्षं क्षुल्लिकावीरमती यदा कदा स्वार्यिकादीक्षायै निवेदनमकरोत् किन्तु आचार्यप्रवरोऽकथयत्–पुत्रि! मया अधुनापर्यन्तं कस्यैचिदपि आर्यिकादीक्षा न प्रदत्ता। मया सह च त्वया बहुअधिकं चलितव्यम् भविष्यति, यतोऽहं तीव्रगत्या प्रतिदिनं 30–40 किलोमीटर पर्यन्तं विहरामि। त्वं त्वत्यन्तमेव दुर्बलाऽसि, अस्मिन् च लघुवयसि एतावत् चलितुं न शक्नोसि। बाढम्, यदि तव आर्यिकादीक्षां गृहीतुमिच्छास्ति तु चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरस्य शिष्यस्य आचार्यवीरसागरस्य संघे त्वामहं प्रेषयिष्यामि। मया श्रुतं यत् तत्र वृद्धा आर्यिकाः सन्ति, सः च विहारमपि स्तोकमेव करोति। अतस्त्वं तत्र सम्यक्प्रकारेण स्थास्यसि।

अन्यस्मात् संघात् अपरिचिता गुरुवियोगस्य च वार्तया यद्यपि वीरमती किंचित् दुःखिताऽभवत्, किन्त्वन्यःकोऽप्युपायोऽपि तु नासीत तस्याः समक्षमार्यिकादीक्षायाः ग्रहणस्य। अस्तु! संयोगवियोगौ तु सरलतया सोढुं सा जन्मतः एव शिक्षामगृह्णात् यतः स्वद्वयोर्वर्षयोः भ्रातरं रवीन्द्रं यः तां विना शयनं न अकरोत्, भगिन्याः शाटिकां गृहीत्वा, अंगुष्ठं च पीत्वा एव यस्य शयनस्य प्रकृतिरासीत्, तं कया निर्ममतया त्यक्त्वा साऽऽगच्छत्। यदा लघुअनुजः शय्यां सुप्त एव आसीत् सा स्व शाटिकां शनैः आकृष्य तस्य समीपे अन्यत् वस्त्रं निक्षिप्य यत् भगिन्याः शाटिकामवधार्य सः पीतवान् आसीत् निद्रायाश्च आंदोलनमनयत्। तं कोमलं

व्याकरण पढ़कर अपने सतमंजिले ज्ञान महल की मजबूत नींव डाली। टिकैतनगर में उन्हें दक्षिण से आई हुई एक क्षुल्लिका विशालमती जी का समागम प्राप्त हुआ।

आचार्यश्री के समक्ष क्षुल्लिका वीरमती जी यदा-कदा अपनी आर्यिका दीक्षा के लिए निवेदन किया करती थीं किन्तु आचार्यश्री कहते थे– बेटा! अभी तक मैंने किसी को आर्यिका दीक्षा प्रदान नहीं की है तथा मेरे साथ तुम्हें बहुत अधिक चलना पड़ेगा क्योंकि मैं तेज चाल से प्रतिदिन 30-40 किमी. चलता हूँ। तुम अत्यन्त कमजोर हो और इस लघुवय में इतना नहीं चल सकती हो। हाँ, यदि तुम्हें आर्यिका दीक्षा लेनी ही है तो चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के शिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज के संघ में मैं तुम्हें भेज दूँगा। सुना है, वहाँ वृद्धा आर्यिकाएँ हैं और वे विहार भी थोड़ा-थोड़ा करते हैं अतः वहाँ तुम ठीक से रह सकोगी।

दूसरे संघ से अपरिचित और गुरुवियोग की बात से यद्यपि वीरमती जी कुछ दुःखी हुईं किन्तु और कोई चारा भी तो नहीं था उनके समक्ष आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने का। खैर! संयोग-वियोग को सरलता से सहन करना तो उन्होंने जन्म से ही सीख लिया था क्योंकि अपने दो वर्षीय भाई रवीन्द्र को, जो उनके बिना सोता ही नहीं था, जीजी की धोती पकड़कर, अंगूठा चूसकर ही जिसकी सोने की आदत थी, उसे किस निर्ममतापूर्वक छोड़कर आई थीं। जब छोटा भैय्या चारपाई पर सो ही रहा था, इन्होंने अपनी धोती धीरे से खींचकर उसके पास दूसरा कपड़ा रख दिया, जिसे जीजी की धोती समझकर वह चूसता रहा और निद्रा के हिलोरें लेता रहा। उस मासूम को हमेशा के लिए

सर्वकालाय त्यक्तसमये तस्याः नयनयोः एकमश्रु अपि न न्यपतत्। द्वाविंशतिदिनानां भगिनीं मालतीं स्यात् बाह्यस्नेहवशात् मातुः अंकात् गृहीत्वा किंचित् स्नेहमकरोत् भ्रातरं रक्षाबन्धनस्य सूत्रमबध्नात्। यतो हि रक्षाबन्धनस्य पावनं पर्वासीत्। पुनरपि बाराबंकीनगरं प्रति प्रस्थिता, आचार्यदेशभूषणं स्व पाठं श्रावधितुम्। किम् तस्मिन् दिने कोऽपि एतत् ज्ञातुं समर्थः नासीत्, यत् मम पुत्री, ममभगिनी, मम पौत्री, मम च पितृव्या अधुना कदापि अस्माकं, माता, भ्राता–पितामही, पितृव्यः इति कथयितुं गृहे नागमिष्यति।

तस्य अष्टादशवर्षाणां प्राचीनजन्मजातवियोगस्य समक्षं द्वयोः वर्षयोः प्राप्तः गुरोः सान्निध्यस्य वियोगः तु स्यात् किंचिदपि न भविष्यति, स्यादपि, वीरमत्याः विरक्तहृदयं तं कदापि स्थानं दातुं योग्यं नासीत्। सोऽपि स्व गंतव्यं प्राप्तुं उद्यतायाः।

एकदा साऽश्रृणोत् यत् ''चारित्रचक्रवर्ती आचार्यः शान्तिसागरः कुन्थलगिरिसिद्धक्षेत्रे यमसल्लेखनां गृह्णाति'' **तदा सा आतुरा भूत्वा गुरोः आज्ञापूर्वकं क्षुल्लिकया विशालमत्या सह तस्य जीवतः तीर्थस्य यात्रार्थं निष्क्रान्ता। दक्षिणभारतस्य च नीराग्रामं प्राप्य युगपुरुषस्य आचार्यस्य प्रथमं दर्शनमकरोत्।**

क्षुल्लिकया विशालमत्या एवास्याः परिचयं श्रुत्वा सः करुणावतारः आचार्यप्रवरः महतीं प्रसन्नतां प्राप्तः। 'उत्तर भारतस्य अम्बा' **इति कथयित्वा एतस्यै किंचित् सम्बोधनं प्रादात्। क्षुल्लिका वीरमती तु वस्तुतोऽत्र साक्षात् तीर्थंकरस्य भगवतो महावीरस्य छत्रछायां प्राप्य कृतार्थैवाऽभवत्। पुनः पुनः गुरूदेवस्य पदरजो मस्तके आरोपयन्त्याः तस्या गुरुभक्तिं**

छोड़ते हुए एक आँसू भी तो इनकी आँखों में नहीं आया था। 22 दिन की बहन मालती को शायद बाह्य स्नेहवश माँ से लेकर थोड़ा सा प्यार किया और भाईयों के राखी बंधवाई चूँकि रक्षाबंधन का पावन दिवस था। फिर चल दी थीं बाराबंकी की ओर देशभूषण महाराज को अपना पाठ सुनाने। क्या किसी को उस दिन यह पता भी चल सका था कि मेरी बेटी, मेरी बहना, मेरी पोती और मेरी भतीजी अब कभी हमें माँ, भाई, दादी, चाचा आदि कहने इस घर में आएगी ही नहीं!

उस 18 वर्ष प्राचीन जन्मजात वियोग के समक्ष दो वर्षों से प्राप्त गुरु सानिध्य का वियोग तो शायद कुछ भी नहीं होगा। हो भी, तो वीरमती जी का वैराग्य हृदय उसे कब स्थान देने वाला था, उसे तो अपनी मंजिल पर पहुँचना जो था।

एक दिन सुना, **''चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महाराज कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर यमसल्लेखना ले रहे हैं''** तब ये आतुर होकर गुरु आज्ञापूर्वक क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ उस जीवन्त तीर्थ के दर्शनार्थ निकल पड़ीं और दक्षिण भारत के 'नीरा' ग्राम में पहुँचकर युगप्रमुख आचार्यश्री के प्रथम दर्शन किये।

क्षुल्लिका विशालमती जी से इनका परिचय सुनकर वे करुणा के सागर आचार्यश्री बहुत प्रसन्न हुए और **'उत्तर की अम्मा'** कहकर इन्हें कुछ लघु सम्बोधन प्रदान किए। क्षुल्लिका वीरमती जी तो मानो यहाँ साक्षात् तीर्थंकर भगवान् महावीर की छत्रछाया पाकर कृतार्थ ही हो गई थीं। बार-बार

अन्तर्हृदयस्य पावनतां च दर्शयति स्म। किंचित् क्षणानंतरं वेदनायाः शब्दावलयः प्रस्फुटन्ति, याः गुरुदेवं चिरकालीनां भवभ्रमणकथां कथयितुं तत्पराः आसन् किन्तु वीरमती ताः स्व एकस्मिन् वाक्ये संक्षिप्य व्यक्तीकरोति–

''भो संसारतारक, प्रभो! अहं भवतां करकमलाभ्यां आर्यिकादीक्षां गृहीतुमिच्छामि।''

अनुकम्पायाः साक्षात् मूर्तेः आचार्यस्य देशना प्राप्ता–अम्बे! अहमधुना दीक्षाप्रदानस्य त्यागमकरवम्। अहमधुना समाधिं गृहीतुं कुंथलगिरिं प्रति प्रयामि। त्वं मम शिष्यं मुनिवीरसागरं प्राप्य आर्यिकायाः दीक्षां गृहाण, मम तुभ्यं पूर्णः आशीर्वादोऽस्ति।

वीरमत्याः हृदयगगने आशायाः किरणावलयः प्रस्फुटिताः अभवन्। सा चार्यिकादीक्षायाः पूर्वं महामनसः उपसर्गविजयिनश्चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्य प्रवरस्य पण्डितमरणमवलोकयितुं निर्णयमकरोत्। अतः पंचपंचाशत्यधिकएकोनविंशतिशततमं (1955) वर्षीयं चातुर्मासं क्षुल्लिकया विशालमत्या सह महाराष्ट्र प्रान्तस्य 'म्हसवड' नगरेऽकरोत्

द्वे अविस्मरणीये उपलब्धी–**विंशतिवर्षाणामायुष्मत्याः वीरमत्याः यत्र म्हसवडनगरस्य जना सार्वजनिक अतिशयेन प्रभाविताः अभवन्, तत्रैव अत्र तया द्वयोः शिष्ययो लाभः प्राप्तः अभवत्। कुमार्याः प्रभावत्याः याऽऽर्यिकाजिनमतिरभूत्, सौभाग्यवत्याः सोनूबाई इत्यस्या चाऽर्यिका पद्मावती भूत्वा मासोपवासं विधाय एकसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे (1971) उत्तमं समाधिमरणं प्राप्नोत। इयं त्वासीत् शिष्ययोः प्रथमोपलब्धिः, द्वितीया**

गुरुदेव की पदरज मस्तक पर चढ़ाती हुई उनकी गुरु भक्ति अन्तर्हृदय की पावनता दर्शा रही थी। कुछ देर की मूक भक्ति के पश्चात् वेदना की शब्दावलियाँ फूटती हैं, जो गुरुवर्य से चिरकालीन भव भ्रमण कथा कह देना चाहती हैं किन्तु वीरमती जी उन्हें अपने एक वाक्य में समेटकर व्यक्त करती हैं–

'हे संसार तारक प्रभो! मैं आपके करकमलों से आर्यिका दीक्षा लेना चाहती हूँ।'

अनुकम्पा की साक्षात् मूर्ति आचार्यश्री की देशना मिली–

अम्मा! मैंने अब दीक्षा देने का त्याग कर दिया है, मैं समाधि ग्रहण करने कुंथलगिरि जा रहा हूँ। तुम मेरे शिष्य मुनि वीरसागर जी के पास जाकर आर्यिका दीक्षा प्राप्त करो, मेरा तुम्हें पूर्ण आशीर्वाद है।

आशा की किरणावलियाँ फूटीं वीरमती जी के हृदयांगन में और उन्होंने आर्यिका दीक्षा से पूर्व महामना, उपसर्गविजयी चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री का पण्डितमरण देखने का निर्णय किया अतः सन् 1955 का चातुर्मास क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ महाराष्ट्र प्रान्त के ''म्हसवड़'' नगर में किया।

➢दो अविस्मरणीय उपलब्धियाँ–

20 वर्षीय क्षुल्लिका वीरमती जी से जहाँ म्हसवड़ की आम जनता अतिशय प्रभावित रही, वहीं यहाँ उन्हें दो शिष्याओं का लाभ मिला–कु. प्रभावती, जो आर्यिका श्री जिनमती जी हुईं और सौ. सोनूबाई, जिन्होंने आर्यिका पद्मावती बनकर मासोपवास करके सन् 1971 में उत्तम समाधिमरण प्राप्त किया। यह तो रही शिष्याओं की प्रथम उपलब्धि और दूसरी उपलब्धि उनके ज्ञान सूर्य की प्रथम

चोपलब्धिस्तस्याः ज्ञानसूर्यस्य प्रथमः किरणोऽत्र प्रस्फुटितोऽभवत्। सा स्वव्याकरणज्ञानस्य प्रयोगात्मकंप्रयोगमत्राकरोत् सा अत्र ''जिनसहस्रनाममंत्रस्य'' **रचनया उपयोगमकरोत्। भगवतः एकसहस्रसु नामसु चतुर्थीविभक्तिं प्रयोज्य नमः शब्देन सह तस्याः ज्ञानप्रतिभा एकबलेन प्रस्फुटिताऽभवत्।**

क्षुल्लिका विशालमती तत्कालमेव व्रतविधिना सह तेषां मंत्राणां लघुपुस्तकरूपेण प्रकाशनमकरोत्। अद्य ज्ञानमत्याः मातुः प्रथमायाः 'कृतेर्जिनसहस्रनाममंत्रस्य' **नाम्नः उच्चारणेनैव मम मनसि अविस्मरणीयो विश्वासः उत्पन्नोऽभवत् यत् यस्याः लेखन्याः शुभारम्भः एव जिनेन्द्रस्य अष्टोपरि एकसहस्र नामभिरभवत् तया पञ्चाशत् अधिकानां शतद्वयग्रन्थानां लेखनं, काऽपि विशेषा वार्ता नास्ति। यदि मातुः समीपे उत्तमं स्वास्थ्यं, साधुक्रियासु च संलग्नसमयं अधिकं स्यात्तु निश्चयेन ग्रन्थानां एकसहस्रमेव संख्या भवितुं विलम्बो न स्यात्।**

वीरमत्या ज्ञानमती–**म्हसवड चतुर्मासस्य मध्ये एव यदा साऽश्रृणोत् यत् आचार्यश्रीः कुंथलगिरौ यमसल्लेखनामगृहणात् तदा सा क्षुल्लिकया विशालमत्या सह तत्र अन्तिमदर्शनं कर्तुं समाधिं च दृष्टुं प्राप्ता अभवत्। द्वितीयभाद्रशुक्लद्वितीयादिने आचार्यप्रवरः महत्या शान्त्या सह** ''ॐ सिद्धाय नमः'' **मंत्रस्य ध्वनिमुच्चारयन् श्रृण्वन् च स्व नश्वरस्य शरीरस्य त्यागमकरोत्। तस्मिन् समये पूर्ण मासपर्यन्तं क्षुल्लिका वीरमती तत्र स्थातुं सौभाग्यं प्राप्नोत्। एतस्य मध्ये गुरुदेवस्य मुखात् द्वे–चतस्रः अमूल्यशिक्षाः अपि श्रोतुं सौभाग्यं प्राप्तम्।**

किरण यहीं प्रस्फुटित हुई। उन्होंने अपने व्याकरण ज्ञान का प्रयोगात्मक उपयोग यहाँ **''जिनसहस्रनाम मंत्र''** की रचना से किया। भगवान् के एक हजार नामों में चतुर्थी विभक्ति लगाकर नमः शब्द के साथ उनकी ज्ञान प्रतिभा एकदम निखर उठी।

क्षुल्लिका विशालमती जी ने तत्काल ही व्रत विधि सहित उन मंत्रों को लघु पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। आज ज्ञानमती माताजी की प्रथम साहित्यिक कृति **'जिनसहस्रनाम मंत्र'** का नाम लेते ही मेरे मन में अमिट विश्वास जम गया है कि जिस लेखनी का शुभारंभ ही श्री जिनेन्द्र के एक हजार आठ नामों से हुआ हो, उसके द्वारा दो-ढाई सौ ग्रंथ लिखा जाना कोई विशेष बात नहीं है। यदि माताजी के पास उत्तम स्वास्थ्य और साधु क्रियाओं में व्यतीत होने वाला समय और अधिक मिल जाता, तो निश्चित ही ग्रंथों की संख्या हजार तक पहुँचने में देर न लगती।

➢वीरमती से ज्ञानमती–

म्हसवड़ चातुर्मास के मध्य ही जब उन्होंने सुना कि आचार्यश्री ने कुंथलगिरि में यम सल्लेखना ले ली है, तब वे क्षुल्लिका विशालमती जी के साथ वहाँ अंतिम दर्शन करने और समाधि देखने पहुँच गईं। द्वितीय भादों शुक्ला दूज को आचार्यश्री ने बड़े ही शान्तिपूर्वक **''ॐ सिद्धाय नमः''** मंत्र ध्वनि बोलते एवं सुनते-सुनते अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। उस समय पूरे एक माह तक क्षुल्लिका वीरमती जी को वहाँ रहने का सौभाग्य मिला। इस मध्य गुरुदेव के मुख से दो-चार लघु अनमोल शिक्षाएँ भी प्राप्त हुईं।

पुनः म्हसवड नगरस्य चतुर्मासस्य सम्पूर्तिं कृत्वा वीरमती तु उभाभ्यां शिष्याभ्यां सह जयपुर–खाणिया स्थाने विराजमानस्य आचार्यप्रवरस्य वीरसागरस्य संघं प्राप्नोत्। गौरवर्णं दीर्घकायुक्तं प्रतिभासम्पन्नं लघुवयस्कां व्यक्तित्वमवलोक्य आचार्यवर्यःसंघस्थाश्च साधवः आश्चर्यचकिताः आसन्। मूलाचारग्रन्थानुसारेण प्रथमं तु सर्वतः गुप्तरीत्या क्षुल्लिकायाः वीरमत्याः परीक्षा अभवत्, किन्तु साधुसाध्व्यः ब्रह्मचारिणः ब्रह्मचारिण्यश्च सर्वे एकस्वरेण तस्यै प्रथमश्रेण्याः प्रमाणपत्रं समर्पयन् अकथयन् च– इयं तु साक्षात् सरस्वत्येव प्रतीयते। प्रातः त्रिवादने उत्थाय रात्रौ दश वादनपर्यन्तमियं स्वयं न तु पुस्तकानि मुंचति न च शिष्याभ्यश्च शान्तिप्राप्तये समयं प्रददाति। प्रतिसमयं ताः ज्ञानसाधनायां व्यस्ताः करोति। एतदतिरिक्तं पुस्तकानामध्ययनेन सहैव सामायिकप्रतिक्रमण स्वाध्यायादिसमस्ताः क्रियाः शास्त्रोक्तेन समयानुसारेण करोति कारयति च। कस्मैचित् पाठाय सा पुस्तकं दृष्टुं आवयकतां नानुभवति। पूर्णं दैवसिकं रात्रिकं च प्रतिक्रमणं अस्याः कण्ठस्थमेव विद्यते। अन्ततोगत्वा एते पूर्व जन्मनः संस्काराः स्यु वा अस्य जन्मनः तपस्यायाः सततं ज्ञानसाधनायाः फलम्।

किमपि स्यात्, एको कुशलः रत्नपरीक्षकसदृशः आचार्यवर्यो वीरसागरः अस्य हीरकस्य निरीक्षणमकरोत् शीघ्रमेव च तस्यै आर्यिकादीक्षाप्रदानस्य निर्णयमकरोत्। संघोऽधुना जयपुरात् विहारं कृत्वा राजस्थानस्य 'माधोराजपुरा' **नगरं प्राप्तः। तदा तत्रैव विक्रमाब्दे त्रयोदशाधिकद्विसहस्रतमे (2013), षट्पंचाशत्यधिकएकोनविंशतिशततमे (1956) वर्षे वैशाखकृष्ण द्वितीयायाः शुभे मुहूर्ते क्षुल्लिकावीरमत्यै आचार्यो वीरसागरः आर्यिकादीक्षां प्रदाय ज्ञानमती**

पुनः म्हसवड़ का चातुर्मास सम्पन्न करके वीरमती जी अपनी उभय शिष्याओं के साथ जयपुर (खानियाँ) में विराजमान आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज के संघ में पहुँचीं। गौरवर्णी, लम्बे कद और प्रतिभासम्पन्न लघुवयस्क व्यक्तित्व को देखकर आचार्यश्री एवं समस्त साधु-साध्वी आश्चर्यचकित थे। मूलाचार ग्रंथानुसार पहले तो सब तरफ से गुप्तरीत्या क्षुल्लिका वीरमती जी की परीक्षाएँ हुईं किन्तु साधु-साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी सभी तो एक स्वर से इन्हें प्रथम श्रेणी का प्रमाण-पत्र देते हुए यही कह रहे थे–अरे! यह तो साक्षात् सरस्वती ही प्रतीत हो रही हैं। प्रातः 3 बजे से उठकर रात्रि के 10 बजे तक यह न तो पुस्तकों का पीछा छोड़ती हैं और न ही अपनी शिष्याओं को चैन लेने देती हैं, हर वक्त उन्हें ज्ञानाराधना में व्यस्त रखती हैं। इसके साथ ही सामायिक, प्रतिक्रमण और स्वाध्याय आदि समस्त क्रियाएँ शास्त्रोक्त समयानुसार करती हैं। किसी भी पाठ के लिए इन्हें पुस्तक देखने की भी तो जरूरत नहीं है। पूरा दैवसिक-रात्रिक प्रतिक्रमण आदि भी कण्ठस्थ है। आखिर इसे पूर्व जन्म का संस्कार माना जाये या इस जन्म की तपस्या एवं सतत ज्ञानाराधना का फल!

कुछ भी हो, आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने एक कुशल जौहरी की भाँति इस हीरे को परखा और शीघ्र ही इन्हें आर्यिका दीक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया। संघ अब जयपुर से विहार करके राजस्थान के **''माधोराजपुरा''** नगर में पहुँचा, तब वहीं विक्रम संवत् 2013 (सन् 1956) में वैशाख वदी दूज के शुभ मुहूर्त में क्षुल्लिका वीरमती जी को आचार्य श्रीवीरसागर जी महाराज

नाम्ना सम्बोधितामकरोत्। अनेन प्रकारेण विंशतिशताब्द्याः प्रथमायै ज्ञानमत्यै आचार्यो वीरसागरो जन्मादात्। यत् नाम कबीरदासस्य निम्नस्य श्लोकस्य असत्यतां साधयति–

''रंगिणीं नारंगी' कथयन्ति, तत्त्वं च 'खोया' इति कथयन्ति। चलन्तीं च 'गाडी' इति कथयन्ति, एतान् विरोधाभासान् दृष्टवा कबीरोऽरोदीत्।''

सार्थकनामधारिणीं 'ज्ञानमतीं' यदि कबीरदासः पश्यति तु स्यात्तस्य रोदनस्य व्यथा उत्पन्ना नाभवत्।

आचार्यश्रीः स्वनवदीक्षितायै शिष्यायै अधिकाः शिक्षाः दातुं आवश्यकतां नान्वभवत्। तस्यैकवाक्यस्य शिक्षयैव मातरि ज्ञानमत्यां पूर्णः आलोकः पूरितः–ज्ञानमति! मया तव यत् नाम कृतं, तस्य सर्वदैव ध्याने स्थितिः कार्या। **अल्पा, एषा शिक्षा अद्य मातरं श्रुतज्ञानस्य उच्चतमशिखरे अधिष्ठितामकरोत। यत्र आध्यात्मिक आनन्दस्य समक्षं शारीरिकअस्वस्थताऽपि नगण्या प्रतीयते।**

स्व नवीनेन गुरुणा सह स्वनवीनेन नाम्ना च सह आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः नवीनं जीवनं प्रारभत्। संघश्च पुनः विहारं कुर्वन् केषांचित् दिनानां पश्चात् 'खाणियाजी' नामकस्थानं जयपुरमेव प्राप्तः। तत्रैव 1956 वर्षीयो वर्षायोगः सम्पन्नोऽभवत्। स्वशारीरिकशिथिलतायाः कारणेन आचार्यः श्रीवीरसागरो जयपुरनगरात् अतिरिक्तं कुत्रापि विहारं नाकरोत्। सः मितभाषी स्वाध्यायप्रेमी चासीत्। सायं प्रतिक्रमणस्य पश्चात् शिष्याणां सुखानि–दुःखानि च

ने आर्यिका दीक्षा प्रदान कर **''ज्ञानमती''** नाम से सम्बोधित किया। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी की प्रथम ज्ञानमती को जन्म दिया आचार्य श्री वीरसागर जी ने। जो नाम कबीरदास जी के निम्न दोहे को असत्य साबित कर रहा है–

रंगी को नारंगी कहते, कहें तत्त्व को खोया।
चलती को गाड़ी कहें, देख कबीरा रोया।।

अर्थात् सार्थक नामधारी ज्ञानमती माताजी को यदि कबीरदास जी देख लेते, तो शायद उनके रोने की नौबत न आती।

आचार्यश्री ने अपनी नवदीक्षित शिष्या को अधिक शिक्षाएँ देने की आवश्यकता भी नहीं समझी। उनकी एक वाक्य की लघु शिक्षा ने ही ज्ञानमती माताजी के अन्दर पूर्ण आलोक भर दिया– **ज्ञानमती जी! मैंने जो तुम्हारा नाम रखा है, उसका सदैव ध्यान रखना।** बस, इसी शब्द ने आज माताजी को श्रुतज्ञान के उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया है, जहाँ आध्यात्मिक आनन्द के समक्ष शारीरिक अस्वस्थता भी नगण्य प्रतीत होने लगी है।

नये गुरुदेव और अपने नये नाम के साथ आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का नवजीवन प्रारंभ हुआ। आचार्य संघ पुनः विहार करता हुआ कुछ दिनों के बाद जयपुर खानियाँ में ही आ गया, वहीं सन् 1956 का वर्षायोग सम्पन्न हुआ। अपनी शारीरिक शिथिलता के कारण आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज ने उसके पश्चात् जयपुर शहर के सिवाय कहीं विहार नहीं किया। वे मितभाषी एवं

श्रुत्वा कस्मिन्चित्मन्दहास्ये तेषां सर्वेषां दुःखान्यपाहरत्। सः यदा कदा अकथयत्–माम् द्वौ रोगौ बार्धते। **शिष्यगणः क्षणमुत्सुकतावशात् गुरुदेवस्य दुःखं ज्ञातुमातुराः भवन्ति, तदैव तस्य मन्दहास्यं विकीर्णं भवति, सः च कथयति**–एकस्तु निद्राऽऽगच्छति, द्वितीयश्च बुभुक्षा पीडयति। **एताभ्यां द्वाभ्यां रोगाभ्यां तु सर्वे संसारिप्राणिनो ग्रस्ताः सन्ति, तस्य वार्तया शिष्या हसितुं प्रवृत्ता भवन्ति, तेऽपि च स्व दुःखानि पीडाश्च विस्मरन्ति।**

सत्यं, गुरवे तु एताः पंक्तयः सार्थकाः एव सिद्धाः भवन्ति–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्याद्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

आचार्यप्रवरस्य वीरसागरस्य छत्रछायायां तस्य नवीना शिष्या आर्यिका श्री ज्ञानमती मातुः पितुः गुरोश्च स्नेहं प्राप्नोत्। गुरुदेवस्य शैथिल्यं दिनं प्रतिदिनं वृद्धिंगतमभवत्। अतः खिष्टाब्दस्य सप्तपंचाशत्यधिक एकोनविंशतिशततमः (1957) वर्षीयश्चतुर्मासोऽपि 'खाणिया जी' जयपुरे एवं अभवत्। माता ज्ञानमती अनेकशः स्वगुरुवरं प्रति असीमश्रद्धां व्यक्तां कुर्वन्ती कथयति यत् महाराजश्री सर्वदा धवलापुस्तकानां स्वाध्यायमकरोत् अकथयच्च, स्यादेतत् अस्यां केचित् विषयाः ईदृशाः सन्ति, ये बुद्धौ न प्रविशन्ति किन्तु निरन्तरं पठनेन अग्रिमभवेषु अवश्यमेव ज्ञानस्य फलं प्राप्स्यति।

चतुर्मासः संचालितः आसीत्। तदैव आचार्यो वीरसागरः आश्विन् कृष्णअमावस्यायांदिने

स्वाध्याय प्रेमी थे। शाम को प्रतिक्रमण के पश्चात् शिष्यों के सुख-दुःख सुनकर किंचित् मुस्कराहट में उन सबका दुःख दूर कर दिया करते थे। वे कभी-कभी कहा करते–**मुझे दो रोग सताते हैं।** शिष्यगण उत्सुकतावश गुरुवर के दुःख जानने को आतुर होते, तभी उनकी मुस्कराहट बिखरती और वे कहते–**एक तो नींद आती है और दूसरी भूख लगती है।** इन दो रोगों से तो सभी संसारी प्राणी ग्रस्त हैं अतः उनकी बात पर शिष्यों को हँसी आ जाती और वे अपना भी दुःख-दर्द भूल जाते।

सच, गुरु के लिए तो ये पंक्तियाँ सार्थक ही सिद्ध होती हैं–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज की छत्रछाया में उनकी नई शिष्या आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी को माता-पिता एवं गुरु का स्नेह प्राप्त हो रहा था। गुरुदेव की शिथिलता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी अतः सन् 1957 का चातुर्मास भी जयपुर खानिया में ही रहा। पूज्य ज्ञानमती माताजी कई बार अपने गुरुवर के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त करती हुई बताती हैं कि महाराज जी हमेशा धवला की पुस्तकों का स्वाध्याय किया करते थे और कहा करते थे कि भले ही इसमें कुछ विषय ऐसे हैं, जो समझ में नहीं आते हैं किन्तु पढ़ते रहने से अगले भवों में अवश्य ही ज्ञान का फल प्राप्त होगा।

चातुर्मास चल रहा था तभी आश्विन कृ. अमावस्या को आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज

पौर्वाण्हकाले एकादश वादनसमये समाधिमास्थाय पद्मासनेन उपाविशत्। तस्य चात्मा अस्मात् जीर्णशरीरान्निष्क्रम्य देवलोकं प्रत्यगच्छत्।

गुरुवियोगात् दुःखितश्चतुर्विधसंघ तत्रैव स्व नवसंघनायकं अचिनोत्। संघस्य सर्ववरिष्ठो मुनिराट् श्रीशिवसागरः अस्याः परम्परायाः द्वितीयः पटट्ाचार्यः नियुक्तोऽभवत्। संघस्य च सः कुशलतापूर्वकं संचालनमकरोत्।

गुरुतया लघुता वरीयसी–**आर्यिका श्रीज्ञानमती माता गुरुदेवस्य मरणेपरान्तमपि आचार्यवर्य शिवसागरस्य संघे अतिष्ठत्। तस्य चाज्ञयया कतिचित् मुनीन् आर्यिकाः क्षुल्लका आदीन् धर्मग्रन्थानामध्ययनमकारयत्। किन्तु सा स्वगुरुतां कदापि प्रकटितां नाकरोत्। कस्यापि मुनेरेतेनकथनेन सा खेदमन्वभवत् यत्** ''ज्ञानमती माता मम शिक्षागुर्वीअस्ति''। **साऽकथयत् च महाराज! अहं तु भवद्भिः सर्वैः सह स्वाध्यायं करोमि न पाठयामि। इयं तस्याः हृदयस्य महत्तैवासीत्। सा सर्वदा कथयति यत् गुरुत्वस्य भारेण जनः अधिकदान्तो भवति। लघुतायाश्च तुलाया रिक्तस्थानमिव सदैव उपर्येव उत्थितो भवति।**

धन्यमस्ति तस्याः व्यक्तित्वम्! यत् गुरुर्भूत्वापि गुरुतां न स्वीचकार। अतएवाद्य सा सम्पूर्णे भारतीयजैनसमाजे सर्वोच्चंविदुषीपदं प्राप्नोत्। तस्याः अध्यापनशैल्यपि एतावती सरला रोचका चास्ति, यत् प्रत्येकं जनमानसं कठिनपरिश्रमेण विनैव प्रत्येकं विषयमवबोद्धुं

मध्यान्ह के लगभग 11 बजे समाधि लगाकर पद्मासन में बैठ गए और उनकी आत्मा इस जीर्ण शरीर से निकलकर देवलोक चली गई।

गुरु वियोग से दुखी चतुर्विध संघ ने वहीं पर अपना नया संघनायक चुना। संघ के सर्ववरिष्ठ मुनिराज श्री शिवसागर जी महाराज इस परम्परा के द्वितीय पट्टाचार्य बने और संघ का कुशलतापूर्वक संचालन किया।

➢गुरुता से लघुता भली–

आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी गुरुदेव के मरणोपरान्त भी आचार्य श्री शिवसागर महाराज के संघ में रहीं और उनकी आज्ञा से कई मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक आदिकों को विविध धर्मग्रंथों का अध्ययन कराया किन्तु उन्होंने अपनी इस गुरुता को कभी प्रगट नहीं किया। किसी मुनि के द्वारा यह कहने पर कि **''ज्ञानमती माताजी मेरी शिक्षा गुरु हैं''** वे खेद महसूस करतीं और कहतीं कि महाराज! मैं तो आप सबके साथ स्वाध्याय करती हूँ न कि पढ़ाती हूँ। यह उनके हृदय की महानता ही थी, वे हमेशा कहा करती हैं कि गुरुता के भार से मनुष्य अधिक दबता जाता है और लघुता से तराजू के खाली पलड़े की भाँति ऊपर उठता जाता है।

धन्य है उनका व्यक्तित्व! जिन्होंने गुरु बनकर भी गुरुता स्वीकार नहीं की, इसीलिए आज उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय जैन समाज में सर्वोच्च विदुषी पद को प्राप्त कर लिया है। उनकी अध्यापन शैली भी इतनी सरल और रोचक है कि हर जनमानस बिना कठिन परिश्रम किए हर विषय को

शक्नोति। अध्ययनकाले च शिष्याः अपि शास्त्रीयविषयाणां माध्यमेन न जानन्ति तया कति व्यवहारिकशिक्षाः अपि प्राप्नुवन्ति। एतत्तस्याः वैदुष्यस्य सबलं प्रमाणं विद्यते।

ख्रिष्टाब्दस्य सप्तपंचाशत्यधिक एकोनविंशतिशततमात् (1957) वर्षात् द्वाषष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमं (1962) वर्षपर्यन्तं माता एतस्मिन्नेवाचार्यसंघेऽतिष्ठत्। एतस्य मध्ये मातुरेवानुग्रहात् आर्यिका पद्मावती, आर्यिका जिनमती, आर्यिका आदिमती, आर्यिका श्रेष्ठमती, आर्यिका संभवमतीत्या दयः आचार्यशिवसागरस्य करकमलाभ्यां दीक्षिताः अभवन्। 1961 वर्षे सीकरराजस्थानचतुर्मासस्य अन्तर्गते ब्रह्मचारिणे राजमलाय अनेकाः प्रेरणाः दत्त्वा मुनिदीक्षायै सः उत्साहित कृतः। यः तत्रैव मुनिरजितसागरोऽभवत्। सः एव चतुर्विधसंघस्य सहमत्या अस्या परम्परायाः चतुर्थः पट्टाचार्योऽभवत्।

आर्यिका संघस्य मंगलमयी तीर्थयात्रा–**ख्रिष्टाब्दस्य द्विषष्ट्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य (1962) वर्षस्य दशाधिकद्विसहस्रविक्रमाब्द (वि.सं. 2019) वर्षीयस्य लाडनूं चतुर्मासस्य पश्चात् श्रीज्ञानमती माता स्वगुरुभ्रातुः आचार्यश्रीशिवसागरस्याज्ञया चतसृणामार्यिकाणां एकस्याः क्षुल्लिकायाश्च संघं नीत्वा सम्मेदशिखरस्य गोम्मटेश्वरस्य च यात्रायै विहारमकरोत्। अस्यार्यिकासंघस्य सर्वप्रथमश्च चतुर्मासः त्रिषष्ट्यधिकएकोनविंशतिशततमे (1963) वर्षे, विक्रमाब्दे विंशत्यधिकद्विसहस्रतमे (वि.सं. 2020) वर्षे कलकत्ता महतिनगर्यामभवत्।**

माता ज्ञानमत्येवास्य संघस्य प्रमुखा वरिष्ठाऽऽर्यिकाऽऽसीत्। शेषास्तु सर्वाः तस्याः हस्तावलम्बनं प्राप्य संसारकर्दमात् निष्क्रान्ताः शिष्याः आसन्। अतएव मातैव संघस्य दायित्वस्य

समझ सकता है। अध्ययन काल में शिष्यों को शास्त्रीय विषयों के माध्यम से उनके द्वारा न जाने कितनी अमूल्य व्यवहारिक शिक्षाएँ भी प्राप्त हो जाती हैं, यह उनके वैदुष्य का सबल प्रमाण है।

सन् 1957 से सन् 1962 तक माताजी इसी आचार्य संघ में रहीं। इस मध्य आर्यिका पद्मावती जी, आर्यिका जिनमती जी, आर्यिका आदिमती जी, आर्यिका श्रेष्ठमती जी, आर्यिका संभवमती जी आदि को आचार्य श्री शिवसागर महाराज के करकमलों से दीक्षा दिलवाई। सन् 1961 में सीकर (राज.) चातुर्मास के अंतर्गत ब्र. राजमल जी को अनेक प्रेरणाएँ देकर मुनि दीक्षा के लिए उत्साहित किया, जो वहीं मुनि श्री अजितसागर बने। वे चतुर्विध संघ की सहमति से इस परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य बने।

➢आर्यिका संघ की मंगलमयी तीर्थयात्रा–

ईसवी सन् 1962 (वि. सं. 2019) के लाडनूं चातुर्मास के पश्चात् आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने गुरुभाई आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज की आज्ञा से चार आर्यिका एवं एक क्षुल्लिका का संघ लेकर सम्मेदशिखर और गोम्मटेश्वर यात्रा के लिए विहार किया। इस आर्यिका संघ का सर्वप्रथम चातुर्मास सन् 1963 (वि. सं. 2020) में कलकत्ता महानगरी में हुआ।

श्री ज्ञानमती माताजी ही इस संघ की प्रमुख बड़ी आर्यिका थीं, शेष सभी तो उनके द्वारा हस्तावलंबन को प्राप्त संसार कर्दम से निकली शिष्याएँ थीं अतः माताजी को ही संघ की जिम्मेदारी

समस्तं भारमवहत्। अस्याः प्रवचनकला तु प्रारम्भादेवाकर्षण युक्ताऽऽसीत्। आगमे निहितानां रहस्यानां यदा रोचकशैल्यां प्रवचने उद्घाटनमकरोत्तु तदा हर्षातिरेके केचित् विद्वांसः श्रावकास्तु तस्यै ''श्रुतकेवलिनः'' **संज्ञां प्रदायापि तृप्ताः न भवन्ति स्म।**

शुद्धजलस्य नियमं प्रदायापि आहारग्रहणेऽपि भोजनस्थानानां महती संख्या अभवत्। पंक्तिं च बद्धवा जनाः श्रावकाः एकैकस्य ग्रासस्य दातुं समर्थाः अभवन्। आहारे च मधुरलवणतैलदध्यादिरसानां त्याग एवासीत्। प्रायः एकमन्नं द्विअन्नं वा मात्रं ता ग्रहणं करोतिस्म अतस्तस्या नीरसमल्पाहारं वीक्ष्य सर्वे आश्चर्याचिताः अभवन्। ते च चिन्तयितुं विवशाः भवन्ति यत् माता एतावन्तं परिश्रमं केन प्रकारेण करोति कुत शक्तिरुपजायते? किन्तु ज्ञानमत्याः मातुर्जीवनस्य एकं लघुसूत्रं समस्ताय साधुसमाजाय अनुकरणीयमस्ति–

यथा गौः तृणानि भुक्त्वा मधुरं पयो ददाति तेनैव प्रकारेण साधुः रूक्षं शुष्कं च भोजनं भक्षयित्वा समाजाय धर्मामृतं प्रददाति। अतएव साधूनां वृत्तिः 'गोचरीवृत्तिरुक्ता'।

इदं सूत्रं सार्थकं कुर्वन्ती आर्यिका श्रीः स्वदुर्बलेनौदारिकशरीरेण कठोरं परिश्रमं कृत्वा समाजाय गाम्भीरं ज्ञानामृतमपाययत्। एवमेव हैदराबाद, श्रवणबेलगोला, सोलापुर, सनावदआदिनगरेषु कृताः भवत्याश्चतुर्मासाः ऐतिहासिकाः एव अभवन्।

कतिचिदुपलब्धयः–**1963 वर्षे कलकत्ता नगरात् आचार्यकल्पश्रीश्रुतसागरस्य गृहस्थाश्रमस्य सुपुत्रीं कुमारीं सुशीला अनेकसंघर्षाणां मध्ये गृहात् बहिष्कासिता।**

का सारा भार वहन करना पड़ता। इनकी प्रवचन कला तो प्रारंभ से ही आकर्षक रही है। आगम में छिपे रहस्यों को जब रोचक शैली से प्रवचन में उद्घाटित करतीं, तब हर्षातिरेक में कई विद्वान श्रावक तो इन्हें **''श्रुतकेवली''** की संज्ञा प्रदान कर भी तृप्त न होते थे।

शुद्ध जल का नियम दिलाकर आहार लेने पर भी चौकों की भरमार रहती और क्यू लाइन लगवाकर लोग 1-1 ग्रास आहार दे पाते। आहार में मीठा, नमक, तेल, दही आदि रसों का त्याग ही था, प्रायः एक अन्न या दो अन्न मात्र ग्रहण करती थीं अतः उनके नीरस और अल्पाहार को देखकर सबको आश्चर्य होता और वे सोचने को मजबूर हो जाते कि माताजी इतना परिश्रम कैसे कर लेती हैं? कहाँ से शक्ति आती है? किन्तु ज्ञानमती माताजी के जीवन का एक छोटा सा सूत्र समस्त साधु समाज के लिए अनुकरणीय है–

जैसे गाय घास खाकर मीठा दूध देती है उसी प्रकार साधु रूखा-सूखा भोजन करके समाज को धर्मामृत प्रदान करते हैं। इसीलिए साधुओं की वृत्ति ''गोचरीवृत्ति'' कही गई है।

इसी सूत्र को सार्थक करती हुईं आर्यिकाश्री ने अपने कमजोर औदारिक शरीर से कठोर परिश्रम कर संसार को अथाह ज्ञानामृत पिलाया है। इसी तरह हैदराबाद, श्रवणबेलगोल, सोलापुर और सनावद आदि स्थानों पर किए गए आपके चातुर्मास भी ऐतिहासिक रहे हैं।

➢कतिपय उपलब्धियाँ–

सन् 1963 में कलकत्ता से आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी की गृहस्थावस्था की सुपुत्री

1974 वर्षे दिल्ली नगर्यांआचार्यश्रीधर्मसागरस्य करकमलाभ्यां दीक्षां प्राप्य ''आर्यिका श्रुतमतीम–'' **कारयत्। सा च वर्तमाने ज्ञानमत्याः मातुः शिष्याया आर्यिकाया आदिमत्याः सविधे तिष्ठति।**

1964 वि.सं. 2021 वर्षे आन्ध्रप्रदेशस्य हैदराबादनगरे आर्यिकासंघस्य चतुर्मासस्य मध्ये आर्यिका श्री ज्ञानमती माता गम्भीररूपेण रुग्णाऽभवत्। तत्र स्थानीयसमाजः पूर्णरूपेण सेवामकरोत्। वैद्यप्रवरोऽपि कलकत्तानगरात् समागतः, तस्योपचारः संचालितोऽभूत्। एतस्य मध्ये एव ब्रह्मचारिणी कुमारी मनोवती मात्रा एव दीक्षाग्रहणस्य आग्रहमकरोत्। अत्रैका आश्चर्यस्य हास्यस्य च वार्ता अभवत् यतः दीक्षाग्रहणस्य नाम श्रुत्वैव मातुः स्वास्थ्यं अनुकूलतां प्राप्नोत्। हैदराबादनगरस्य जनता आश्चर्यचकिताऽऽसीत्, यत् वैद्यस्य औषधेन अधिकां तु आरोग्यतां सा दीक्षायाः नाम्नैव प्राप्नोत्। कश्चिदपि विचारयितुं क्षमो नासीत् यत् अस्वस्थावस्थायां माता मण्डपं गत्वा मनोवत्याः दीक्षासंस्कारं कर्तुं समर्था भविष्यति किन्तु श्रावणशुक्लसप्तम्याः तिथौ माता स्वयं चलित्वा मण्डपं प्राप्नोत् स्व गृहस्थावस्थायाः लघ्व्यै भगिन्यै मनोवत्यै विशालजनसमूहस्य मध्ये क्षुल्लिका दीक्षां प्रदाय तस्याः ''अभयमती'' **नाम घोषितमकरोत्। आन्ध्रप्रदेशे अयं दीक्षायाः प्रथमोऽवसरः आसीत्। यश्च तस्य नगरस्येतिहासस्य अविस्मरणीयः पृष्ठोऽभवत्।**

श्रवणबेलगोला गोम्मटेश्वरे बाहुबलिनोऽस्मिन् ऐतिहासिके तीर्थे पंचषष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे (1965), द्वाविंशत्यधिक द्विसहस्रतमस्य विक्रमाब्दस्य

कु. सुशीला को अनेक संघर्षों के मध्य घर से निकाला और सन् 1974 में दिल्ली में आचार्य श्री धर्मसागर जी से दीक्षा दिलाकर **''आर्यिका श्रुतमती''** बनाया, जो वर्तमान में पूज्य ज्ञानमती माताजी की शिष्या आर्यिका श्री आदिमती माताजी के पास हैं।

सन् 1964 में (वि. सं. 2021) आंध्रप्रदेश के हैदराबाद शहर में आर्यिका संघ के चातुर्मास के मध्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी गंभीर रूप से बीमार हुईं। वहाँ की स्थानीय समाज ने भरपूर सेवा की, वैद्यराज जी भी कलकत्ता से आए, उनका इलाज चला। इसी बीच संघस्थ ब्र. कु. मनोवती ने माताजी से ही दीक्षा लेने का आग्रह किया। यहाँ एक अचम्भे और हँसी की बात है कि दीक्षा का नाम सुनते ही माताजी का स्वास्थ्य सुधरने लगा। हैदराबाद की जनता आश्चर्यचकित थी, वैद्य जी की औषधि से अधिक आरोग्यता तो उन्हें दीक्षा के नाम से प्राप्त हो गई थी। कोई सोच भी नहीं सकता था कि इस कमजोर हालत में माताजी पांडाल तक जाकर मनोवती का दीक्षा संस्कार कर पाएँगी किन्तु श्रावण शुक्ला सप्तमी तिथि को माताजी स्वयं चलकर पांडाल तक पहुँचीं तथा अपनी गृहस्थावस्था की लघु बहन कु. मनोवती को विशाल जनसमूह के मध्य क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर उनका **''अभयमती''** नाम घोषित किया। आंध्र प्रदेश में जैन दीक्षा का यह प्रथम अवसर था जो वहाँ के इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ बन गया।

श्रवणबेलगोल गोम्मटेश्वर बाहुबली के इस ऐतिहासिक तीर्थ पर सन् 1965 (वि. सं. 2022) के चातुर्मास ने तो आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को एक ऐतिहासिक साध्वी का रूप प्रदान किया

(वि.सं. 2022) चतुर्मासस्तु आर्यिकायै ज्ञानमत्यै एकस्याः ऐतिहासिकसाध्व्याः रूपं प्रदानमकरोत्। बाहुबलिन स्वामिनः पादमूले पंचदशदिनानां अखण्डंमौनपूर्वकं ध्यानेन ध्यानसाधना अस्यै त्रयोदश द्वीपानां माध्यमेन सर्वस्वं प्रदानमकरोत्। अग्रे गत्वा च त्रयोदशद्वीपाः मात्रे एकजम्बूद्वीपस्य रूपे परिवर्तिताः अभवन् हस्तिनापुरस्य पावनवसुन्धरायाम्। यत्र दक्षिणोत्तरयोः सेतुं मत्वा सर्वस्य देशस्य तीर्थयात्रिणस्तु दृष्टुं आगच्छन्त्येव, विदेशेभ्यश्चानेक पर्यटकाः इदं दर्शनीयं स्थानं दृष्ट्वा अत्यन्तमेव प्रसन्नाः भवन्ति।

षट्षष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमस्य खिष्टाब्दस्य (1966) वि.सं. 2023 वर्षस्य सोलापुर श्राविकाश्रमचतुर्मासे शिक्षणशिविराणां तारतम्येन यत् ज्ञानस्य जागरणमकरोत् तत् तस्य स्थानस्य इतिहासस्य अविस्मरणीयपृष्ठो जातः। तस्य श्राविकाश्रमस्य प्रमुखब्रह्मचारिणी कुमारी विद्युल्लता शाह संचालिका श्राविकाश्रमस्य, अद्यापि ताः पावनस्मृतीः हृदये संयोजिताः सुरक्षिताश्चाकरोत्।

खिष्टाब्दे सप्तषष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1967 वि.सं. 2024) वर्षे सनावद नगरे मध्यप्रदेशे कृतश्चतुर्मासस्तु अद्यावधिः जीवितः एवास्ति। यतः तस्य स्थानस्य श्रेष्ठिन् स्वर्गीयस्य अमोलकचन्द्रसर्राफ इत्यस्य सुपुत्रः ब्रह्मचारी मोतीचन्द्रः तस्य च पितृव्यस्य सुपुत्रो यशवन्तकुमारः स्व संघस्थौ कृत्वा माता ज्ञानमती मोक्षमार्गस्य अनेकाभिः शिक्षाभिः तयोर्जीवनस्य परिवर्तनमकरोत्। याभ्यां यशवन्तकुमारं आचार्यं वर्धमानसागरं कर्तुं श्रेयः भवत्याः एवास्ति। ब्रह्मचारी मोतीचन्द्रः क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य नाम्ना अद्यावधिः भवत्याः

है। बाहुबली स्वामी के पादमूल में 15 दिन की अखंड मौनपूर्वक की गई ध्यान-साधना ने उन्हें तेरह द्वीप के माध्यम से सब कुछ प्रदान कर दिया था। आगे चलकर यह तेरह द्वीप मात्र एक जम्बूद्वीप के रूप में परिवर्तित हुआ हस्तिनापुर की पावन वसुन्धरा पर। जिसे दक्षिण-उत्तर का सेतु मानकर सारे देश के तीर्थयात्री तो देखने आते ही हैं, विदेशों से भी अनेक पर्यटक इस दर्शनीय स्थल को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

सन् 1966 (वि. सं. 2023) सोलापुर के श्राविकाश्रम चातुर्मास में शिक्षण शिविरों के माध्यम से जो ज्ञान का अलख जगाया, वह वहाँ के इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ बन गया है। वहाँ की प्रमुख ब्रह्मचारिणी ब्र. कु. विद्युल्लता जी शहा (संचालिका-श्राविकाश्रम) ने आज भी उन पावन स्मृतियों को हृदय में संजो रखा है।

सन् 1967 (वि. सं. 2024) में सनावद (म.प्र.) का चातुर्मास तो अद्यावधि जीवन्त है क्योंकि वहाँ के श्रेष्ठी स्व. श्री अमोलकचंद जैन सर्राफ के सुपुत्र ब्र. मोतीचंद जी एवं उनके चचेरे भाई यशवन्त कुमार को अपना संघस्थ बनाकर पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने मोक्षमार्ग की अनेक अमूल्य शिक्षाओं से उनके जीवन बदल दिये। जिनमें से यशवन्त कुमार को आचार्य वर्धमानसागर बनाने का श्रेय आपको ही है। ब्र. मोतीचंद जी क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी के रूप में अद्यावधि आपकी

छत्रछायायां जम्बूद्वीपसंस्थानं स्वकर्मभूमेः रूपेण स्वीकृत्य सततं ज्ञानाराधनायां तत्परोऽस्ति। जम्बूद्वीप रचना निर्माणरूपेण ज्ञानज्योतिः प्रवर्तनं मातुश्च प्रत्येक कार्यकलापेषु ब्र. मोतीचन्द्रस्य प्रमुखभूमिकाया कारणेन सनावदचतुर्मासः हस्तिनापुरस्य इतिहासेन सर्वकालाय संयुक्तो विद्यते।

पुनः संघीयमिलनम्–**अस्याः पंचवर्षीयभ्रमणयोजनायाः पश्चात् आचार्यशिवसागरस्य प्रबलप्रेरणावशात् ज्ञानमती माता स्वसंघेन सह पुनः संघं प्राप्नोत्। तदा आचार्य संघेन सह अष्टषष्ठ्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य विक्रमाब्दस्य (1968 वि.सं. 2025 वर्षस्य) चतुर्मासः राजस्थानस्य** 'प्रतापगढ' **नगरेऽभवत्। तदनन्तरं अधिकदिवसपर्यन्तं श्रीशिवसागरआचार्यस्य सान्निध्यं सुलभं नाभवत्। यतः 1969 वर्षे एवं फाल्गुनकृष्णअमावस्यादिने श्रीशान्ति–वीरनगरे–महावीरजी क्षेत्रे आचार्यश्रियोऽल्परोगेण अकस्मात् समाधिमरणमभवत्। पुनश्चतुर्विध–संघपरम्परायाः वरिष्ठो मुनिराजः श्रीधर्मसागरः तृतीयपट्टाचार्यरूपेण मनोनीतोऽभवत्। तत्र च भवितुं प्रस्तावितः पंचकल्याणकमहोत्सवः तस्यैव सान्निध्ये सानन्दं सम्पन्नोऽभूत्। मुनिआर्यिकाणां च एकादशदीक्षाः अपि तस्य करकमालाभ्यां प्रथमबारं सम्पन्नाः अभवन्।**

आचार्येण धर्मसागरेण सहापि–**आर्यिकायै ज्ञानमत्यै आचार्यशिवसागरस्य सदृशः आचार्य–धर्मसागरोऽपि गुरुभ्रातैवासीत्। यतः सोऽपि आचार्यवीरसागरेण दीक्षितस्य मुनेर्शिष्य आसीत्।**

छत्रछाया में जम्बूद्वीप संस्थान को अपनी कर्मभूमि के रूप में स्वीकार कर सतत ज्ञानाराधना में तत्पर हैं। जम्बूद्वीप रचना निर्माण, ज्ञानज्योति प्रवर्तन तथा पूज्य माताजी के प्रत्येक कार्यकलापों में ब्र. मोतीचंद जी की प्रमुख भूमिका होने के नाते सनावद चातुर्मास हस्तिनापुर के इतिहास से सदा के लिए जुड़ गया है।

➢पुनः संघीय मिलन–

इस पंचवर्षीय भ्रमण योजना के पश्चात् आचार्य श्री शिवसागर महाराज की प्रबल प्रेरणावश ज्ञानमती माताजी अपने संघ सहित पुनः संघ में पधारीं। तब आचार्य संघ के साथ सन् 1968 (वि. सं. 2025) का चातुर्मास राजस्थान के **''प्रतापगढ़''** नगर में हुआ। अनन्तर अधिक दिनों तक श्री शिवसागर महाराज का सानिध्य न मिल सका क्योंकि सन् 1969 में ही फाल्गुन कृ. अमावस्या को श्री शांतिवीर नगर-महावीर जी में आचार्यश्री का अल्पकालीन बीमारी से अचानक समाधिमरण हो गया पुनः चतुर्विध संघ ने परम्परा के वरिष्ठ मुनिराज श्री धर्मसागर जी को तृतीय पट्टाचार्य मनोनीत किया और होने वाला पंचकल्याणक महोत्सव उन्हीं के सानिध्य में सानंद सम्पन्न हुआ तथा मुनि-आर्यिकाओं की 11 दीक्षाएँ भी उनके करकमलों से प्रथम बार सम्पन्न हुईं।

➢आचार्य श्री धर्मसागर जी के साथ भी–

आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के लिए आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के समान ही धर्मसागर जी महाराज भी गुरु भाई थे क्योंकि ये भी आचार्य श्री वीरसागर महाराज द्वारा दीक्षित मुनि शिष्य थे।

भवितव्यतायाः प्रबलता कथनीया स्यात् कालदोषो वा, आचार्यशिवसागरस्य समाधेः पश्चात् विशालसंघोऽयं द्वि–त्रि खण्डेषु विभक्तोऽभवत्। आचार्यकल्पश्रुतसागरः, आचार्यअजितसागरः सुबुद्धिसागरः, श्रेयांससागरप्रभृतयोऽनेकसाधवः, विशुद्धमती मातादयः कतिचित् आर्यिकाः संघात् पृथक् अभवन्। किन्तु आर्यिका श्रीज्ञानमती नूतनाचार्यस्य आग्रहवशात् तेन सहैवातिष्ठत्।

चतुर्मुखप्रतिभासम्पन्नाः पृथक्–पृथक् विहारे धर्मप्रभावनायां च कुशलाः संघापेक्षया च पृथक्–पृथक् स्थित्वा समाजायाधिकं लाभं दातुंसक्षमा साधवः प्रायः स्वदीक्षागुरोरनुशासने स्थातुं परतन्त्रतां कठिनतां च अनुभवन्ति। किन्तु माता ज्ञानमती तु प्रत्येकप्रकारस्य वातावरणे स्थातुं अभ्यस्ताऽऽसीत्। तस्यास्तु लक्ष्यमात्रमिदमेवासीत् यत् ''दीक्षा प्रभावनायै नैव भवति, आत्मकल्याणायैव गृह्यते।''

नवषष्ट्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य ख्रिष्टाब्दस्य (1967, वि.सं. 2026 वर्षस्य) चतुर्मासोऽपि आचार्यधर्मसागरेण सहैव जयपुरस्य बख्शीचौक इति स्थानेऽभवत्। अत्र अहं प्रथमबारमेव ज्ञानमत्याः मातुर्दर्शनमकरवम्। यस्या दर्शनस्य पूर्णस्मृतयोऽद्यापि मम मस्तिष्के सन्ति। तत्राहमपश्यं यत् माता दिनस्य षट्होरासमयेन मुनि आर्यिकादीन् अष्टसहस्रीं कातन्त्रव्याकरणं राजवार्तिकादिग्रन्थानामध्ययनमकारयत्। एकस्मिन्नाचार्यसंघे साधूनां शिक्षणस्य विध्यनुसारेण व्यवस्थायाः तदनुकरणीयमुदाहरणमासीत्। अयं समुचितक्रमः एकसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य (1971) ख्रिष्टाब्दस्य अजमेरनगरस्य चतुर्मासपर्यन्तं

होनहार की प्रबलता कहें या कालदोष, द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् यह विशाल संघ 2-3 टुकड़ों में बंट गया। आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर महाराज, अजितसागर जी, सुबुद्धिसागर जी, श्रेयांससागर जी आदि अनेक साधु तथा विशुद्धमती माताजी आदि कई आर्यिकाएँ संघ से अलग हो गए किन्तु आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी नूतन आचार्यश्री के आग्रह पर उसी संघ में रहीं।

चतुर्मुखी प्रतिभा से सम्पन्न, अलग विहार एवं धर्मप्रभावना में कुशल तथा संघ की अपेक्षा अलग रहकर समाज को अधिक लाभ देने में सक्षम साधुगण प्रायः अपने दीक्षागुरु के अनुशासन में रहने में परतन्त्रता और कठिनाई का अनुभव करते हैं किन्तु माताजी प्रारंभ से ही हर प्रकार के माहौल में रहने की अभ्यस्त रही हैं क्योंकि उनका तो लक्ष्यमात्र यही रहा कि **''दीक्षा प्रभावना के लिए नहीं, आत्मकल्याण के लिए ग्रहण की जाती है।''**

सन् 1969 (वि.सं. 2026) में आचार्य श्री धर्मसागर जी के साथ ही माताजी का चातुर्मास भी जयपुर के बख्शी चौक में हुआ। यहाँ मैंने प्रथम बार ज्ञानमती माताजी के दर्शन किये थे जिसकी आज भी मुझे पूरी स्मृति है। मैंने वहाँ देखा था कि माताजी दिन के छः घण्टे मुनि-आर्यिका आदि को अष्टसहस्री, कातंत्रव्याकरण, राजवार्तिक आदि कई ग्रंथों का अध्ययन कराती थीं। एक आचार्यसंघ में साधुओं के शिक्षण की विधिवत् व्यवस्था का वह अनुकरणीय उदाहरण था।

संचालितः आसीत्। अस्मात् पूर्वं टोंक (राजस्थाने) सप्तत्यधिक–एकोनविंशतिशततमस्य ख्रिष्टाब्दस्य (1970 वर्षस्य) चातुर्मासोऽपि आचार्यसंघेन सहैव माता कृतवती।

घटिकायाः दिनानां मासानां वर्षाणां च वृद्ध्या सह अधुना संघस्य वृद्धौ अपि चत्वारश्चन्द्राः संलग्नाः अभवन्। अजमेर चतुर्मासस्य मध्येऽपि काश्चित् दीक्षाः सम्पन्नाः अभवन्। मातुः गृहस्थाश्रमस्य माता मोहिनीदेव्यपि स्वविशालस्य परिवारस्य मोहं त्यक्त्वा आचार्यधर्मसागरस्य हस्तकमलाभ्यां आर्यिकादीक्षां गृहीत्वा 'रत्नमती' **नाम प्राप्नोत्। मोइनिया इस्लामिया विद्यालयस्य विशालप्रांगणे ज्ञानमती माता अत्यन्तमेव निर्ममतापूर्वकं स्व मातु केशलुंचनमकार्षीत्। तस्य स्थानस्य जनता रोदनमकरोत्। परिवारश्च चीत्कारमकरोत्। वयं सर्वे शिशवः मातुर्ममतां प्राप्तुं कातराः आस्म किन्तु ज्ञानमत्याः मातुः आर्यिका भवितुं च प्रस्ताविताया: रत्नमत्या मातुः मुखे अपूर्वा शान्तिः प्रसन्नता आसीत्। या सांसारिकरागे विजयश्रियं प्राप्तुं वार्तां स्पष्टरूपेण प्रत्यक्षमकरोत्। एतस्य पश्चात् पुत्र्याः मातुश्च सम्बन्धो गुरुशिष्यरूपेण परिवर्तितोऽभवत्।**

निर्बाधा संयमसाधना–**पंचषष्ठ्यधिकएकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे (1965 वर्षे) मस्तिष्कमागतायाः जम्बूद्वीपस्य रचनायाः पृथिव्यां निर्माणस्य संयोगः पंचसप्तत्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1975) वर्षे दशवर्षाणां पश्चात् प्राप्तः। दश वर्षीय मानसिकयोजनायाः प्रारम्भस्य पश्चात् दशवर्षाणामन्तराले एव पूर्तिर भवत्। तदैव पंचाशीत्यधिक एकोन–विंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे (1985 वर्षे) तस्याः प्रतिष्ठापनायाः महोत्सवः आयोजितः। यद्यपि**

यह समुचित क्रम चला सन् 1971 के अजमेर चातुर्मास तक। इससे पूर्व टोंक (राज.) में सन् 1970 का चातुर्मास भी आचार्य संघ के साथ ही माताजी ने किया।

घड़ी, दिन, महीने और वर्षों ने अब संघ की वृद्धि में भी चार चांद लगा दिए थे। अजमेर चातुर्मास के मध्य भी कई दीक्षाएँ हुईं, जिसमें माताजी की गृहस्थावस्था की माँ मोहिनी देवी ने भी अपने विशाल परिवार का मोह छोड़कर आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहणकर **''रत्नमती'** नाम प्राप्त किया था। मोइनिया इस्लामिया स्कूल के विशाल प्रांगण में ज्ञानमती माताजी ने अत्यन्त निर्ममतापूर्वक अपनी माता का केशलोंच किया था। वहाँ की जनता रो रही थी, परिवार बिलख रहा था, हम सभी बच्चे माँ की ममता पाने को तरस रहे थे किन्तु ज्ञानमती माताजी और आर्यिका बनने वाली रत्नमती माताजी के चेहरों पर अपूर्व चमक तथा प्रसन्नता थी जो सांसारिक राग पर विजयश्री प्राप्त करने की बात स्पष्ट झलका रही थी। इसके बाद पुत्री और माता का संबंध गुरु और शिष्य में परिवर्तित हो गया था।

➢निर्बाध संयम साधना–

ईसवी सन् 1965 से मस्तिष्क में आई जम्बूद्वीप रचना पृथ्वी पर बनने का संयोग प्राप्त हुआ 10 वर्ष पश्चात् 1975 में। 10 वर्षीय मानसिक योजना प्रारंभ होने के बाद 10 वर्ष के अंतराल में ही पूर्ण हुई, तभी सन् 1985 में उसका प्रतिष्ठापना महोत्सव मनाया गया। हालांकि इस

अस्य दीर्घकालस्य मध्ये मात्रा कुत्रापि स्थितेराश्वासनं न दानस्य कारणादेव तदवधि–पर्यन्तस्तस्य निर्माणं भवितुं नाशक्नोत्। तस्याः मनसि अनेकशः इयं शंका अजायत यत् अनेन निर्माणेन मम संयमे कुत्रापि काचित् बाधा न स्यात् अतः सा शिष्यौ ब्रह्मचारिणं मोतीचन्द्रं ब्रह्मचारिणं रवीन्द्रं मामपि च स्पष्टरूपेणाकथयत्–

अहमस्याः रचनायाः निर्माणाय कमपि जन न याचिष्ये, न च आहारसम्बन्धिन्याः व्यवस्थायाः कापि चिन्तां करिष्यामि। यदि युवां मत्तो निर्माणस्य प्रेरणामिच्छतं, तु समस्तस्योत्तरदायित्वस्य भारो युनयोरेव भविष्यति, अन्यथा जम्बूद्वीपस्य रचनायां मम कापिरुचिर्नास्ति। मम संयमे कस्यामि प्रकारस्य दोषोत्पादनेन सह अहं न स्वीकरोमि।

तस्याः सर्वे शिष्याः आश्वासनं प्रदाय तां चिन्तामुक्तामकुर्वन्। अद्य अस्याः वार्तायाः प्रसन्नताऽस्ति यत् माता हस्तिनापुरदिल्लीखतौलीसरधनामांगीतुंगीअयोध्याप्रयागकुण्डलपुरादि स्थानेषु तीर्थक्षेत्रेषु च चतुर्मासान् अकरोत् परन्तु तस्याः संयमे कस्यापि प्रकारस्य कापि बाधा कुत्रापि कदाप्यपि नोपस्थिताऽभवत्। तदा तु सा कदापि जम्बूद्वीपनिर्माणाय कमपि श्रावकं धनस्य याचनां नाकरोत् नापि स्वाहारादिव्यवस्थायै कमप्यकथयत्। तस्याः जीवनस्यैकः संकल्पः प्रारम्भादेवासीत् यत् ''आहारे कदापि संस्थायाः दानस्य एकमपिऽपणकं नोपयुक्तं भवेत्। नापि साधुः स्वाहाराय श्रावकान् प्रेरितान् कुर्यात्।''

तस्या अस्य नियमस्य अद्यावधिः वयं सर्वे पालनमकुर्म भविष्ये च पूज्या मातावत्

दीर्घकाल के मध्य कहीं पर माताजी के द्वारा रुकने का आश्वासन न देने के कारण ही अब तक इसका निर्माण न हो सका था। उनके मन में कई बार यह शंका उठ जाती कि इस निर्माण से मेरे संयम में कहीं कोई बाधा न आ जाए अतः उन्होंने अपने शिष्य ब्र. मोतीचंद जी, ब्र. रवीन्द्र जी तथा मुझसे स्पष्ट कहा था–

मैं इस रचना निर्माण के लिए किसी से पैसा नहीं मागूँगी और न आहार संबंधी व्यवस्था की कोई चिंता करूँगी। यदि तुम लोग मुझसे निर्माण की प्रेरणा चाहते हो, तो सारी जिम्मेदारी का भार तुम लोगों पर होगा अन्यथा मुझे जम्बूद्वीप निर्माण में कोई रुचि नहीं है। मेरे संयम में किसी तरह का दोष लगना मुझे स्वीकार नहीं है।''

उनके सभी शिष्यों ने आश्वासन प्रदान कर उन्हें चिन्तामुक्त किया और आज इस बात की प्रसन्नता है कि पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर, दिल्ली, खतौली, सरधना, मांगीतुंगी, अयोध्या, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि स्थानों पर चातुर्मास किए किन्तु उनके संयम में किसी प्रकार की कोई बाधा कभी नहीं आई। न तो उन्होंने कभी जम्बूद्वीप निर्माण के लिए किसी श्रावक से पैसे की याचना की और न ही अपने आहार आदि की व्यवस्था हेतु किसी को कहा। उनके जीवन का एक संकल्प प्रारंभ से रहा है कि **''आहार में कभी संस्था के दान का एक पैसा भी नहीं लगना चाहिए और न ही साधु को अपने आहार के लिए श्रावकों से कहना चाहिए।''**

उनके इस नियम का अभी तक हम सभी ने पूर्णरूपेण पालन किया है और भविष्य में भी

निर्दोषसंयमपालनस्य भावनावशात् अस्य नियमस्य पालनं कर्तुं उत्कटेच्छास्ति।

जम्बूद्वीपस्य प्रारम्भिकोत्पत्तिः कुतः?—**पंचषष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1965) वर्षे आर्यिका श्रीज्ञानमती स्वसंघेन सह कर्नाटकस्य श्रवणेबलगोलातीर्थक्षेत्रे भगवतो बाहुबलिनश्चरणसान्निध्ये चातुर्मासस्य स्थापनामकरोत्। तदानीं मातुः संघे आर्यिका पद्मावती, आर्यिका जिनमती, आर्यिका आदिमती, क्षुल्लिका श्रेंयासमती, क्षुल्लिका अभयमती आसन्। आर्यिकायाः आदिमत्याश्च, क्षुल्लिकायाः अभयमत्याः अस्वस्थतायाः कारणेन माता तत्र वर्षैकपर्यन्तं स्थातुं विवशाऽऽसीत्। अस्य मध्येऽनेकशः विन्ध्यगिरिपर्वते भगवतो बाहुबलिनश्चरणसामीप्ये माता ध्यानं कर्तुं सौभाग्यं प्राप्तवती। ध्यानस्य धारा निरन्तरं वृद्धिंगताऽभवत्। एकदा पंचदशदिनपर्यन्तं मौनपूर्वकं निरन्तर पर्वते स्थित्वा ध्यानमकरोत्। मात्रं आहारार्थं नीचैरवातरत् आहारस्य च पश्चात् पुनः उपरि गत्वा रात्रिं तत्रैव व्यतीतामकरोत्। आर्यिका पद्मावती च सर्वदा मात्रा सहैवातिष्ठत्। एतस्य मध्ये एकं दिनं मात्रा भगवतो बाहुबलिनः ध्यानं कुर्वन्त्यैव तस्यैव ध्यानस्य धारायां त्रयोदशद्वीपानां अष्टपंचाशत् उपरि शतचतुष्टयानां जिनचैत्यालयानां वन्दनां, तेषां स्थानानां अकृत्रिमछटाःवनखण्डानि स्वयं सिद्धाः प्रतिमाः सर्वमेव यथायथं मस्तिष्के दृष्टिगतं भवितुं प्रारभत्। विशेषेण आनन्दानुभवेन सार्धं ध्यानस्य सन्ततिः समाप्ताऽभवत्। मातुर्हर्षस्य पारावारः नासीत्। यदा प्रातः आहारस्य समये पर्वतात् नीचैरागता तु करणानुयोगस्य त्रिलोकसारग्रन्थं गृहीत्वा तस्मिन् यथावत्**

पूज्य माताजी की तरह निर्दोष संयम पालन की भावनावश इस नियम का पालन करने की उत्कट इच्छा है।

➢जम्बूद्वीप की प्रारंभिक उपज कहाँ से ?

ईसवी सन् 1965 में आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने संघ सहित कर्नाटक के श्रवणबेलगोला तीर्थक्षेत्र पर भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में चातुर्मास स्थापना किया। उस समय माताजी के संघ में आर्यिका पद्मावती जी, आर्यिका जिनमती माताजी, आर्यिका आदिमती जी, क्षुल्लिका श्रेयांसमती एवं क्षुल्लिका अभयमती जी थीं। आर्यिका आदिमती जी व क्षुल्लिका अभयमती जी की अस्वस्थता के कारण माताजी को वहाँ पर लगभग एक वर्ष रुकना पड़ा। जिसके मध्य कई बार विंध्यगिरि पर्वत पर भगवान बाहुबलि के चरण सामीप्य में माताजी को ध्यान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ध्यान की धारा निरन्तर बढ़ती गई। एक बार 15 दिन तक मौनपूर्वक लगातार पहाड़ पर रहकर ध्यान किया। मात्र आहार के समय नीचे उतरना, आहार के अनंतर पुनः ऊपर जाकर रात्रि वहीं व्यतीत करती थीं। आर्यिका पद्मावती जी हमेशा माताजी के साथ ही रहती थीं। इसी मध्य एक दिन माताजी द्वारा भगवान बाहुबलि का ध्यान करते-करते उसी ध्यान की धारा में तेरहद्वीप के चार सौ अट्ठावन जिन चैत्यालयों की वंदना, वहाँ की अकृत्रिम छटा, वन खण्ड, स्वयंसिद्ध प्रतिमाएँ सब कुछ यथावत् मस्तिष्क में दृष्टिगत होने लगा। विशेष आनन्दानुभव के साथ ध्यान सन्तति समाप्त हुई। माताजी के हर्ष का पारावार नहीं था। जब प्रातःकाल आहार के समय

रचनायाः वर्णनं पठित्वा अत्यधिका प्रसन्ना जाता। पंचदश दिनानां पश्चात् मौनस्यावधौ समाप्तौ सा स्वशिष्याः आर्यिकाः अपि समस्ताः रचनाः चित्रिताः अकरोत्। मातुः शिष्या जिनमती अकथयत् यत् इयं रचना पृथिव्यां अवश्यमेव साक्षात् भवितव्या।

माता स्वप्रवचनेषु अपि यदा अकृत्रिमचैत्यालयानां वैभवानां तेषां प्राकृतिकछटानां वर्णनमकरोत् तस्मिन् समये सर्वे श्रोतारः एकं क्षणं तत्रैव गत्वा स्वयंसिद्धप्रतिमानां ध्याने लीनाः अभवन्। यथा च इयं सूक्तिः प्रसिद्धा एव यत् ''वक्त्रं वक्ति हि मानसम्''**। सम्यक् तेनैव प्रकारेण मातुरन्तः करणात् उत्पन्नाः शब्दाः श्रोतॄन् प्रभावितान् कर्तुं अतिष्ठन्। अद्यापि तस्याः इयमेवान्तरंगा भावना तिष्ठति यत्** ''कदा तेषां अकृत्रिमचैत्यालयानां वन्दनां साक्षात् कर्तुं सौभाग्यं प्राप्नुयाम्।'' **भगवान् तस्याः इमां भावनामवश्यमेव पूरयिस्यति।**

कतिचित् दिनानि पश्चात् संघः श्रवणबेलगोलातीर्थात् विहृत्य सोलापुरमहाराष्ट्रं प्राप्तः। तत्रैकः श्राविकाश्रमोऽस्ति। यस्य संस्थापिका स्वर्गीया पद्मश्री सुमतिबाई शाह कर्मण्या महिलाऽऽसीत् तया सह तस्य संचालिका बालब्रह्मचारिणी विदुषी विद्युल्लता शाह (श्राविकाश्रमस्य संचालिकाऽपि) मातुरनन्यभक्तेषु एकाऽऽसीत्। अस्याः माता आर्यिका चन्द्रमती माता ज्ञानमती मात्रा सहैव आचार्यवीरसागरस्य संघेऽतिष्ठत्। ज्ञानमत्याः मातु सान्निध्ये किञ्चित् अध्ययनमपि करोति स्म। इदमेव कारणमासीत् यत् तस्याः मातरं ज्ञानमतीं प्रति विशेषा भक्तिरासीत्। अतः तेषां जनानामाग्रहवशात् माता ज्ञानमती सोलापुरस्य महिलाश्रमे एव चतुर्मासस्य

पहाड़ से नीचे आईं तो करणानुयोग के त्रिलोकसार ग्रंथ को उठाकर उसमें ज्यों की त्यों रचना का वर्णन पढ़कर अत्यधिक प्रसन्न हुईं। 15 दिन बाद मौन की अवधि समाप्त होने पर उन्होंने अपनी शिष्या आर्यिकाओं को भी सारी घटना बताई। माताजी की शिष्या आर्यिका जिनमती जी ने कहा कि यह रचना पृथ्वी पर अवश्य साकार होनी चाहिए।

माताजी अपने प्रवचनों में भी जब अकृत्रिम चैत्यालयों का वैभव, उनकी प्राकृतिक छटा का वर्णन करतीं, उस समय सभी श्रोता एक क्षण को वहीं पहुँचकर स्वयंसिद्ध प्रतिमाओं के ध्यान में लीन हो जाते। जैसा कि यह सूक्ति प्रसिद्ध ही है कि **''वक्त्रं वक्ति हि मानसम्''** ठीक इसी प्रकार माताजी के अन्तःकरण से निकले हुए शब्द श्रोताओं को प्रभावित किए बिना नहीं रहते। आज भी उनकी यही अन्तरंग भावना रहती है कि **''कब उन अकृत्रिम चैत्यालयों की वंदना साक्षात् करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होगा।''** भगवान उनकी इस भावना को अवश्य पूर्ण करेगा।

कुछ दिनों के बाद श्रवणबेलगोला से विहार करके आर्यिका संघ सोलापुर (महाराष्ट्र) आया। यहाँ पर एक श्राविकाश्रम है, जिसकी संस्थापिका स्व. पद्मश्री पं. सुमतिबाई शहा कर्मठ महिला थीं। साथ में वहाँ की संचालिका बाल ब्र. विदुषी विद्युल्लता शहा (श्राविकाश्रम की संचालिका) भी माताजी की अनन्य भक्तों में से हैं। इनकी मां आर्यिका चन्द्रमती जी, माताजी के साथ ही आचार्य वीरसागर जी महाराज के संघ में रहती थीं और ज्ञानमती माताजी से कुछ न कुछ अध्ययन भी करती थीं। यही कारण था कि उनकी माताजी के प्रति विशेष भक्ति थी अतः इन लोगों के आग्रह से माताजी

स्थापनामकरोत्। तस्मिन्नेव समये आचार्यविमलसागरस्य संघसहितः चतुर्मासः सोलापुरनगरे एवासीत्। द्वयोः संघयोः संगमस्तत्र धर्मप्रभावनायां विशेषसहकार्यभूत्। ज्ञानमत्याः मातुः सान्निध्ये तत्र शिक्षणशिविरस्यायोजनमभवत्। यस्मिन् प्रौढाः स्त्रीपुरुषाः सक्रियरूपेण भागमगृह्णन् ज्ञानार्जनं च कृतवन्तः। माता प्रतिदिनं विभिन्नविषयैः सह जैनभूगोले सम्यक् प्रकाशमपातयत्। येन ब्रह्मचारिण्याः सुमतिबाई इत्यस्याः हृदयेऽपि इमां रचनां पृथिव्यां निर्माणस्य लालसाऽभवत्। सा सोलापुरे अस्यै रचनायै केषांचित् स्थलानां चयनमकरोत्। मातरं च कतिचित् दिनेभ्यस्तत्रैव स्थित्वा मार्गदर्शनं कारयितुं निवेदनमकरोत्। सा बहुआग्रहमकरोत् यत् मातः! वयं भवत्या चर्यायां कस्यापि प्रकारस्य दोषमुत्पादयितुं न शक्ष्यामः। वयं मात्रं भवत्या दिशानिर्देशमिच्छामः। यतोहीयं रचना अद्यावधिः कुत्रापि न निर्मितास्ति। कस्यापि अभियन्तुः कलाविदश्च गम्योऽयं विषयो नास्ति। नन्दीश्वरद्वीपस्य रचनाः समवसरणस्य रचनास्तु अनेकेषु स्थानेषु निर्मिताः सन्ति अतस्तेषां अनुकरणे वयं कामपि बाधां न द्रक्ष्यामः। परन्तु इयं रचना तु केवलं भवत्याः मस्तिष्के एवास्ति, अतएव भवत्येव अस्याः सम्यक् मार्गदर्शनं कर्तुं शक्नोति। किन्तु मातुस्तत्र न स्थातुं कारणेन तत्र कार्यं संभवं नाभवत्। सोलापुरे ब्र. सुमतिबाई कुमारी विद्युल्लता च एते द्वे यथा तन्मयतया मातुः संघस्य च वैयावृत्तिमकुरुतां, तस्योदाहरणं मातुः प्रवचने अनेकशः श्रोतुममिलत्। ''विद्वत्तया सह साधुसेवायाः गुणैः वस्तुतः स्वर्णे सुगन्धेः कार्यं करोति।'' **अनेन प्रकारेण सोलापुरस्य चतुर्मासः मातुर्जीवनस्य अविस्मरणीय पृष्ठोऽस्ति।**

ने सोलापुर के महिलाश्रम में ही चातुर्मास स्थापन किया। उसी समय आचार्य श्री विमलसागर महाराज का संघ सहित चातुर्मास सोलापुर में ही शहर में हुआ। दोनों संघों का संगम वहाँ की धर्मप्रभावना में विशेष सहकारी बना। ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। माताजी प्रतिदिन विभिन्न विषयों के साथ-साथ जैन भूगोल पर अच्छा प्रकाश डालतीं, जिससे ब्र. सुमतिबाई के हृदय में भी इस रचना को पृथ्वी पर बनाने की लालसा जागृत हुई। उन्होंने सोलापुर में इस रचना हेतु कई स्थल चयन किए और माताजी से कुछ दिन यहीं रहकर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए निवेदन किया। उन्होंने बहुत आग्रह किया कि माताजी! हम आपकी चर्या में किसी प्रकार का दोष नहीं लगने देंगे, हमें मात्र आपके द्वारा दिशा-निर्देश चाहिए क्योंकि यह रचना आज तक कहीं भी बनी नहीं है, किसी इंजीनियर या आर्कीटेक्ट के गम्य भी यह विषय नहीं है। नंदीश्वर द्वीप की रचना, समवसरण की रचना तो कई जगह निर्मित हो चुकी हैं अतः उसकी नकल करने में हमें कोई परेशानी नहीं होगी किन्तु यह रचना मात्र आपके मस्तिष्क में है, आप ही इसका सही मार्गदर्शन दे सकती हैं, किन्तु माताजी के वहाँ नहीं रुकने के कारण वहाँ का कार्य संभव न हो सका। सोलापुर में ब्र. सुमतिबाई और कु. विद्युल्लता जी ने जिस तन्मयता से पूज्य माताजी की व संघ की वैयावृत्ति की, उसका उदाहरण माताजी के प्रवचन में कई बार सुनने को मिलता है– **''विद्वत्ता के साथ-साथ साधु सेवा का गुण वास्तव में सोने में सुगंधि का कार्य करता है।''** इस प्रकार से सोलापुर का चातुर्मास माताजी के जीवन का अविस्मरणीय पृष्ठ है।

मातुरियं हार्दिकेच्छा तु सततमेवासीत् यत् मम मस्तिष्कस्य रचना कुत्राापि पृथिव्यां साकारा भवतु किन्तु सा एतस्याः माध्यमां भवितुं नैच्छत्। तस्याः इच्छाऽऽसीत् यत् कोऽप्येनां स्वोत्तरदायित्वे कुर्यात्। इदमेवकारणमासीत् यत् कुत्रापि तस्याः योगो नाभवत्। वस्तुतस्तु एतानि महान्ति कार्याणि कस्यापि साधुं–श्रमणं विना असंभवानि सन्ति। अस्याः शताब्द्याः पुरातनेतिहासस्य दर्शनादपि इदमेव ज्ञायते यत् धार्मिकसाहित्यस्य तीर्थानां चोद्धारः साधुभिरेव जातः। चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यसम्राजः श्री शान्तिसागरस्य प्रेरणया प्राचीनाः सिद्धान्तग्रन्था–स्ताम्रपट्टे उत्कीर्णाः अभवन्, ये अद्यापि फलटणतीर्थे विराजन्ते। युगपर्यन्तं एते साहित्यिक–निक्षेपाः जैनधर्मस्य प्राचीनतां दर्शयिष्यन्ति। अननैव प्रकारेण कुन्थलगिरौ देशभूषण–कुलभूषणयोमुन्योः प्रतिमयोः स्थापनाऽपि आचार्यवर्यप्रेरणयैवाभवत्। तत्तीर्थं आचार्यश्रियै अतिप्रियमासीत्। अतएव सः तत्रैव संल्लेखनापूर्वकं स्वान्तिमस्य शरीरस्य त्यागमकरोत्। कुम्भोजबाहुबली यत् महाराष्ट्रस्य जीवंतं तीर्थमस्ति, तस्योद्धारोऽपि आचार्य श्रियः प्रेरणायैवाभवत्। अस्य सुन्दरं वर्णनं यथावत् डॉ. श्रीसुभाषचन्दअक्कोलेन ''आचार्यशान्ति–सागरजन्मशताब्दीमहोत्सव– स्मृतिग्रन्थेऽकृतम्''**। सः केन प्रकारेण मुनिसमन्तभद्राय कुंभोजतीर्थे बाहुबलिनः प्रतिमां स्थापयितुं प्रेरणां आशीर्वादं च प्रादात्। द्रष्टव्यम्–**

माताजी की हार्दिक इच्छा तो हमेशा रही कि मेरे मस्तिष्क की रचना कहीं न कहीं पृथ्वी पर अवश्य साकार हो जाए किन्तु वे इसमें माध्यम नहीं बनना चाहती थीं। इनकी इच्छा थी कि कोई इसे स्वयं अपनी जिम्मेदारी पर करवाए। यही कारण रहा कि कहीं इसका योग नहीं बना। वैसे तो ऐसे-ऐसे महान कार्य किसी साधु-संतों के आश्रय के बिना असंभव ही होते हैं। इस शताब्दी के पुराने इतिहास को देखने से भी यही ज्ञात होता है कि धार्मिक साहित्य तथा तीर्थों का उद्धार साधुओं के द्वारा ही हुआ है। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य सम्राट श्री शांतिसागर महाराज की प्रेरणा से प्राचीन सिद्धान्त ग्रंथ ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण हुआ, जो फलटण में आज भी विराजमान है। युगों युगों तक यही साहित्यिक धरोहर जैन धर्म की प्राचीनता को दर्शाएगा। इसी प्रकार से कुंथलगिरि में देशभूषण और कुलभूषण मुनिराजों की प्रतिमाओं की स्थापना भी आचार्यश्री की प्रेरणा से ही हुई। वह तीर्थ आचार्यश्री को अत्यंत प्रिय था इसीलिए उन्होंने वहीं पर सल्लेखनापूर्वक अपने अंतिम शरीर का त्याग किया। कुंभोज बाहुबली जो महाराष्ट्र का जीवन्त तीर्थ है, उसका उत्थान भी आचार्य श्री की प्रेरणा से ही हुआ। इसका सुन्दर वर्णन ज्यों की त्यों डा. श्री सुभाषचन्द अक्कोले ने **''आचार्य शांतिसागर जन्मशताब्दी महोत्सव स्मृति ग्रन्थ''** में किया है। उन्होंने किस प्रकार से मुनि समन्तभद्र जी को कुम्भोज में बाहुबली की प्रतिमा स्थापित करने की प्रेरणा और आशीर्वाद प्रदान किया। देखिए–

''तुमची इच्छा येथे हजारों विद्यार्थ्यांनी राहावे शिकावे.....हा तुम्हा सर्वांना आशीर्वाद आहे।''

इसका हिन्दी अर्थ यह है–

''भवतः आन्तरिकइच्छा इयमस्ति अत्र सहस्रशो विद्यार्थिनः धर्मध्यानं कुर्युः, इत्यहं जानामि। एतं कल्पवृक्षमारोप्य गच्छामि। भगवतो अधिष्ठानं सर्वाव्यापि कार्यमपि पूरयितुं समर्थोऽसि। यथासंभवं दीर्घपाषाणं प्राप्य इदं कार्यं पूर्णं करोतु।''

मुनिसमन्तभद्रं प्रति दृष्टिं विस्तार्य संकेतमदात्–''भवतः प्रकृतिं सम्यक् जानामि। इयं तीर्थभूमिरस्ति। मुनिभिर्विहारः कर्तव्यः। इति सर्वमान्यो नियमोऽस्ति। पुनरपि विहरन् यस्य प्रयोजनस्य पूर्तिः कर्तव्यास्ति तत् एकस्मिन् स्थानेऽत्र स्थित्वा करोतु। इदं तीर्थक्षेत्रमस्ति। एकस्मिन् स्थाने स्थातुं न कापि बाधा। येन प्रकारेण संभवं, कार्यं शीघ्रं पूरयितुं प्रयत्नः कर्तव्यः। कार्यमवश्यमेव पूर्णं भविष्यति। भवद्भ्यः सर्वेभ्यः मम शुभाशीर्वादोऽस्ति।''

आचार्यरत्नं श्रीदेशभूषणोऽयोध्यायां भगवतो ऋषभदेवस्य विशालप्रतिमां स्थापिताम–कारयत्। जयपुरखानिया स्थानस्य चूलगिरिपर्वतस्तस्यैवोपहारोऽस्ति। सः स्व गृहस्थावस्थायाः जन्मभूमौ कोथलीस्थाने कियन्तं विशालकार्यमकारयत्। गुरुणां प्रेरणाः आशीर्वादाश्च भक्तानां कार्यकलापेषु सम्बलं प्रदाति। आचार्यश्रीविमलसागरः सम्मेदशिखरे समवसरणस्य रचनां निर्मापितामकारयत्। सोनागिरौ च तत्प्रेरणयैव नंगस्य अनंगस्य च मूर्ती गुरुकुलस्य च स्थापना अभवन्। एतेनैव प्रकारेण स्थाने–स्थाने आचार्यश्रियः प्रेरणया बहूनि धार्मिककार्याण्यभवन्। आचार्यश्रियः विद्यासागरस्य प्रेरणया सागरे जबलपुरे च ब्राह्मीविद्याश्रमस्य स्थापना जाता,

---

''आपकी आन्तरिक इच्छा यह है कि यहाँ पर हजारों विद्यार्थी धर्माध्ययन करते रहें इसका मुझे परिचय है। यह कल्पवृक्ष खड़ा करके जा रहा हूँ। भगवान का दिव्य अधिष्ठान सब काम पूरा कराने में समर्थ है। यथासम्भव बड़े पाषाण को प्राप्त कर इस कार्य को पूरा कर लीजिए।''

मुनिश्री समन्तभद्र जी की ओर दृष्टि कर संकेत दिया– ''आपकी प्रकृति (स्वभाव) को बराबर जानता हूँ। यह तीर्थ भूमि है। मुनियों को विहार करते रहना चाहिए इस प्रकार सर्वमान्य नियम है, फिर भी विहार करते हुए जिस प्रयोजन की पूर्ति करनी है उसे एक स्थान में यहीं पर रहकर कर लो। यह तीर्थक्षेत्र है, एक जगह पर रहने के लिए कोई बाधा नहीं है। जिस प्रकार से हो सके, कार्य शीघ्र पूरा करने का प्रयत्न करना। कार्य अवश्य ही पूरा होगा, सुनिश्चित पूरा होगा। आप सबको हमारा शुभाशीर्वाद है।''

आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज ने अयोध्या में 1008 भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा स्थापित करवाई, जयपुर खानिया का चूलगिरि पर्वत उन्हीं की देन है। उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था की जन्मभूमि कोथली में कितना विशाल कार्य करवाया। गुरुओं की प्रेरणा व आशीर्वाद भक्तों के कार्यकलापों में संबल प्रदान करता है। आचार्यश्री विमलसागर महाराज ने सम्मेदशिखर में समवसरण की रचना बनवाई, सोनागिरि में उनकी प्रेरणा से नंग-अनंग की मूर्ति तथा गुरुकुल की स्थापना हुई। इसी प्रकार जगह-जगह आचार्यश्री की प्रेरणा से बहुत से धार्मिक कार्य हुए हैं। आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की प्रेरणा से सागर एवं जबलपुर (म.प्र.) में ब्राह्मी विद्या आश्रम की स्थापना

यस्मिननेकशतं अल्पवयस्काः बालिकाः ज्ञानार्जनं कृत्वा आत्मकल्याणस्य पथि अग्रसराः सन्ति। अनेनैव प्रकारेण धर्मगुरुणां प्रेरणाभिः सर्वदा समाजस्य धर्मस्य च उन्नतिर्भवति। निन्दायाः प्रशंसायाश्च प्रति अस्माकं साधूनां लक्ष्यं न भूत्वा आत्मनः परस्य च कल्याणं प्रत्येव भवति। निन्दकास्तु केवलं स्वकर्माणि बध्नन्ति यत् च ते भवे भवे भोक्तुं विवशाः भवन्ति। एकभवस्य अज्ञानता अनेकभवपरिवर्तनानां कारणं जायते। तदैव तु आचार्याः अकथयन्–

भुक्तिमात्रप्रदाने तु, का परीक्षा तपस्विनाम्।
ते सन्तः सन्त्वसन्तो वा, गृही दानेन शुद्धयति।।

अर्थात् गृहस्थस्य साधुनां निन्दया किं प्रयोजनं? ते तु आहारदानादिकाः स्व क्रियाः कृत्वा शुभभावान् बध्नन्ति। साधौ यदि साधुत्वं नास्ति तु तस्य फलं सः स्वयं भोक्ष्यते। श्रावकस्तु तस्य फले उत्तरदायी न भवत्येव।

वर्तमाने मनुष्याणां स्थितिरियमस्ति यत् व्यापारिकप्रबन्धेषु बद्ध्वा उत्कोचरूपेण सहस्रलक्षरूप्यकाणि दत्वापि शान्तनिद्रां न प्राप्तुं समर्थाः भवन्ति। यदा च प्रातःकालात् सांयकालपर्यन्तं आपादकण्ठं परिश्रमं कृत्वापि रक्तस्वेदयोः प्रवाहं कृत्वापि केवलं पारिवारिकसन्तुष्टिं सर्वे एव कुर्वन्ति। यदि एतद्विपरीतं सन्तोषपूर्वकं न्यायेनाल्पमपि धनोपार्जनं क्रियते, तस्मिन्नेव अल्पधर्मकार्येषु दानं दीयते तु साधूनां प्ररेणया कस्यापि धर्मतीर्थस्य जीणोद्धारः कार्यते तु तदधिकं श्रेयस्करमस्ति। किन्तु अस्य मूल्यांकनं केचिद् बिरलाः एव कर्तुं शक्नुवन्ति।

हुई, जिसमें सैकड़ों अल्पवयस्क बालिकाएँ ज्ञानार्जन करके आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर हैं। इसी प्रकार धर्मगुरुओं की प्रेरणा से हमेशा समाज एवं धर्म की उन्नति हुई है। निन्दा और प्रशंसा की ओर इन साधुओं का लक्ष्य न होकर आत्म और पर के कल्याण की ओर ही होता है। निन्दा करने वाले मात्र अपने कर्म का बंध कर लेते हैं जो कि उन्हें भव-भव में स्वयं को भोगना पड़ता है। एक भव की अज्ञानता अनेक भव परिवर्तनों का कारण बनती है। तभी तो आचार्यों ने कहा है–

भुक्तिमात्रप्रदाने तु का परीक्षा तपस्विनाम्।
ते सन्तः सन्त्वसन्तो वा गृही दानेन शुद्धयति।।

अर्थात् गृहस्थ को साधुओं की निंदा करने से क्या प्रयोजन? वह तो आहारदानादि अपनी क्रियाओं को करके शुभ भावों का बंध कर ही लेता है। साधु में यदि साधुता नहीं है, तो उसका फल उन्हें स्वयं भोगना पड़ेगा, श्रावक तो उसके फल में हकदार हो नहीं सकता।

वर्तमान में मनुष्यों की स्थिति यह है कि व्यापारिक उलझनों में उलझकर रिश्वत में हजारों, लाखों रुपया देकर भी चैन की नींद नहीं सो सकते। जबकि सुबह से शाम तक एड़ी से चोटी तक परिश्रम करके खून पसीना बहा करके केवल पारिवारिक संतुष्टियों के लिए सब कुछ किया जाता है। यदि इसकी जगह संतोषपूर्वक न्याय से थोड़ा धन कमाया जाए, उसी में से थोड़ा धर्मकार्यों में दान किया जाए, साधुओं की प्रेरणा से किसी धर्मतीर्थ का जीर्णोद्धार करा दिया जाए तो वह अधिक श्रेयस्कर है लेकिन इसका मूल्यांकन कोई विरले पुरुष ही कर सकते हैं।

पूज्या माता ज्ञानमती यावत्पर्यन्तं अस्मिन् रचनाकार्ये आत्मानं न अपातयत्, तावत्पर्यन्तं सा प्रादुर्भवितुं नाशक्नोत्। सोलापुरात् विहृत्य माता भ्रमणं कुर्वन्ती इन्दौर मध्यप्रदेशे स्वसंघेन सहागच्छत। इन्दौर नगरात् प्रायः 60 कि.मी. दूरे सनावदनगरस्य भाक्तिकजैन–समाजस्याग्रहेण मातुः संघस्य 1967 वर्षस्य चतुर्मासः सनावदनगरेऽभूत्। अत्रापि विशिष्टाः जनाः यदा मातुर्मस्तिष्कस्य रचनामशृण्वन् प्रबुद्धाश्च स्वरुचिपूर्वकं तां तत्र निर्मापयितुं विचारयामासुः। समीपे एव सनावद नगरात् 8–10 किलोमीटर दूरे सिद्धवरकूटे सिद्धक्षेत्रे स्थानस्यापि चयनमभूत्। चतुर्मासस्य समाप्तौ तदनन्तरं सनावद निवासिनां प्रेरणया माता सिद्धवरकूटस्य यात्रायै विहारमकरोत्। यात्रायां मात्रा सार्धं श्री रखबचन्द्रः कमलाबाई पाण्ड्या ब्र. मोतीचन्द्रः (क्षुल्लकमोतीसागरः) श्रीचन्द्रः त्रिलोकचन्द्रआदयो बहवो जनाः आसन्। सिद्धवरकूटः नर्मदानद्याः तटे स्थितोऽस्ति अतएव विशेषाकर्षणकेन्द्रमस्ति। नावा एककिलोमीटर नद्याः मार्गं पूर्णं कृत्वा यात्रिणः तत् क्षेत्रं प्राप्नुवन्ति। मातुःसंघे गताः मोतीचन्द्रादयः सर्वे जनाः एतया दृष्ट्या तत् स्थानं रचनानिर्माणाय अचिन्त् यत्। यत्र ते नर्मदाया जलं सुविधया प्राप्य स्वनिर्माणे नदीसमुद्रेभ्य जलप्रसारकाणां च सुन्दरतायै जलं पर्याप्तावस्थायां प्राप्तुं समर्थाः भवन्तु। बहुविस्तृतायाः भूमेः मापं प्राप्तमभूत्। रमणीयस्थानस्य कारणेन चतुर्मुखीनां दृष्टीनां केन्द्रः भवितुं प्रस्तावितः आसीत्। परन्तु तस्य स्थानस्यापि योगो नासीत्। अकस्मात् आचार्यवर्यस्य शिवसागरस्य संघात् सूचना प्राप्ता अभवत्, यत् मातरं कथय, इयं रचना

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जब तक इस रचना कार्य में स्वयं को नहीं डाला, तब तक वह प्रादुर्भूत न हो सकी। सोलापुर से विहार करके माताजी भ्रमण करते-करते इंदौर (म.प्र.) में अपने संघ सहित आ गईं। इंदौर से लगभग 60 किमी. दूर सनावद (म.प्र.) की भाक्तिक जैन समाज के आग्रह से माताजी के संघ का सन् 1967 का चातुर्मास सनावद में हो गया। यहाँ पर भी विशिष्ट व्यक्तियों ने जब माताजी के मस्तिष्क की रचना को सुना और समझा तो रुचिपूर्वक वहीं पर इसे बनवाने का विचार करने लगे। पास में ही सनावद से 8-10 किमी. दूर सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र पर स्थान भी चयन किया गया। चातुर्मास समाप्ति के अनंतर सनावद वालों की प्रेरणा से माताजी ने सिद्धवरकूट यात्रा के लिए विहार किया। साथ में श्री रखबचंद जी कमलाबाई पांड्या, ब्र. मोतीचंद जी (क्षु. मोतीसागर), श्रीचंद जी, त्रिलोकचंद जी आदि बहुत से लोग थे। सिद्धवरकूट नर्मदा नदी के तट पर बसा होने के कारण विशेष आकर्षण का केन्द्र है। नाव से एक मील नदी के रास्ते को तय करके यात्रीगण उस क्षेत्र पर पहुँचते हैं। यात्रा संघ में गए हुए मोतीचन्द आदि सभी लोगों ने इस दृष्टि से उस स्थान को रचना निर्माण के लिए चुना, जहाँ नर्मदा का जल सुविधापूर्वक प्राप्त करके अपने निर्माण में नदी-समुद्रों के लिए तथा फौव्वारों की सुन्दरता के लिए जल पर्याप्त अवस्था में प्राप्त कर सकें। बहुत लम्बी-चौड़ी जगह का माप लिया गया। रमणीक स्थान होने के कारण चउमुखी दृष्टियों का केन्द्र बनता किन्तु वहाँ का भी योग नहीं था। अचानक आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के संघ से सूचना आ गई कि माताजी से कहो कि यह रचना

महावीरजीतीर्थक्षेत्रे निर्मापिता भविष्यति। अतः सा शीघ्रमेव आर्यिकासंघेन सह अत्रागन्तुं प्रयासं करोतु। मातुर्हृदये प्रारम्भादेव अचला गुरुभक्तिरासीत्। गुरुभ्रातुराचार्यस्य सन्देशं प्राप्यैव शीघ्रमेव संघे आगच्छत्। तदापर्यन्तं मातुर्मनसि त्रयोदशद्वीपानां रचनायाः एव योजनाऽऽसीत्।

भवितव्यता बलीयसी भवति–**आचार्यसंघः महावीरजीक्षेत्रं प्राप्तुमेवासीत् परन्तु तत्र अकस्मात् आचार्यशिवसागरो रुग्णोऽभवत्। पश्यन्–पश्यन्नेव फाल्गुणअमावस्यायां तस्य समाधिरभवत्। अधुना तस्य संघस्य नेतृत्वं आचार्यधर्मसागरस्य हस्तगतमभवत्। आचार्यवर्यस्य समाधिना संघस्य वातवरणं शोकाकुलमासीत्। मातुरुत्साहोऽपि शीतलतां गतः। अंतोऽग्रे कापि वार्ता नाभूत्। माताऽपि संघेन सह विहारे प्रभावनायां च संलग्नाऽभवत्। महावीरजी तीर्थस्य पश्चात् 1969 वर्षे यदा संघस्य चतुर्मासः जयपुरे राजस्थाने आसीत्, तदा माता तत्र जैनज्योतिर्लोकः विषये शिविरस्यायोजनमकरोत्। तस्मिन् समये जनता करणानुयोगविषये नवं दिशाबोधं प्राप्नोत्। संघस्थः ब्र. मोतीचन्द्रः परिश्रमपूर्वकं कांश्चित् विशेषाः टिप्पणीरूपेण रचनाः अपि तत्पराः अकरोत्। केषांचित् दिनानां पश्चात् तासां टिप्पणीनां आधारेणैकं पुस्तकं ''जैनज्योतिर्लोकं'' लिखितमभूत्। यत् अद्यापि त्रिलोकशोधसंस्थाने उपलब्धमस्ति। मात्रे तु करणानुयोगस्य सम्पूर्णो विषयो हृदयंगतोऽभवत्। यदि स्वप्नेऽपि कोऽपि तत्सम्बन्धिनं प्रश्नं पृच्छति, तु तस्योत्तरमागमस्याधारेण प्रस्तुतमासीत्। अवश्यमेवैते पूर्वभवस्य संस्काराः कथिताः स्युः।**

महावीर जी तीर्थक्षेत्र पर बनेगी अतः वे शीघ्र ही आर्यिका संघ के साथ यहाँ आने का प्रयास करें। माताजी के हृदय में प्रारंभ से ही अटूट गुरु भक्ति थी। गुरु भाई आचार्यश्री का संदेश मिलते ही जल्दी ही संघ में जा पहुँचीं। तब तक तो माताजी के मन में तेरहद्वीप की रचना का ही प्लान था।

➢होनहार बहुत बलवान होती है–

आचार्य संघ महावीर जी पहुँचा ही था कि वहाँ पर आकस्मिक आचार्य श्री शिवसागर महाराज बीमार पड़ गए और देखते ही देखते फाल्गुनी अमावस्या को उनकी समाधि हो गई। अब उस संघ का नेतृत्व आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के हाथों में आ गया। आचार्यश्री की समाधि से संघ का वातावरण शोकाकुल सा रहा। माताजी का उत्साह भी ठंडा पड़ चुका था अतः आगे कोई बात नहीं की गई। माताजी भी संघ के साथ में विहार व धर्मप्रभावना करती रहीं। महावीर जी के बाद सन् 1969 में जब संघ का चातुर्मास जयपुर (राज.) में था, तब माताजी ने वहाँ पर जैन ज्योतिर्लोक विषय पर शिविर लगाया, उस समय जनता को करणानुयोग के विषय में नया दिशाबोध मिला। संघस्थ ब्र. मोतीचन्द जी ने परिश्रमपूर्वक कुछ विशेष नोट्स भी तैयार किए। कुछ दिनों बाद उन्हीं नोट्स के आधार पर एक पुस्तक ''जैन ज्योतिर्लोक'' लिखी गयी, जो आज भी त्रिलोक शोध संस्थान में उपलब्ध है। माताजी को तो जैसे करणानुयोग का सारा विषय हृदयंगम ही हो चुका था। यदि स्वप्न में भी कोई तत्संबंधी प्रश्न कर देवे, तो उसका उत्तर आगम आधारपूर्वक प्रस्तुत रहता था। अवश्य ही इन्हें कोई न कोई पूर्व भव के प्रबल संस्कार ही कहना पड़ेगा।

एकसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य ख्रिष्टाब्दस्य (1971 वर्षस्य) चतुर्मासः आचार्यसंघेन सहैव अजमेर (राजस्थाने) नगरे अभवत्। तस्य नगरस्य विशिष्ट श्रेष्ठी भागचन्द्रः सोनी तस्य धर्मपत्नी च ज्ञानेन प्रभावितौ भूत्वा मातुः समीपे अधिकं समयं निष्कास्य स्वाध्यायादिकस्य लाभं प्राप्नुताम्। चतुर्मासोऽपि सोनी महोदयस्य नसिया इति स्थानेऽभवत्। अतस्तत्रैव प्रवचनमायोजितमभवत्। एकस्मिन् दिने श्रेष्ठिनः समक्षं मातुर्वार्ताऽभवत्। सः रुचिपूर्वकं मातरं तस्यां नशियायाः एव उपरिकक्षे निर्मितां रचनामदर्शयत्। तस्यामपि किंचित् तथैव वस्तुस्थितिरासीत्, पंच मेरवोऽपि निर्मिताः आसन्। अद्यापि सम्पूर्णदेशस्य पर्यटकाः ता दृष्टुमागच्छन्ति। मातुर्मनोभावनाऽऽसीत् यत् कस्मिंश्चिद् विस्तृतेऽनावृते स्थाने इयं रचना निर्मिता स्यात्, किन्तु त्रयोदशद्वीपानां रचना तदा कोटीनां रूप्यकाणां मूल्यस्य कार्यमासीत्। अतः प्रश्नवाचकः चिह्नो भूत्वा स्थिता आसीत् यत् अयं राशिः कुतः समागमिष्यति? कोऽस्या उत्तरादायित्वं गृहीष्यति। अन्ततोगत्वा चिन्तनं विचारं च कृत्वा अयं निष्कर्षः प्राप्तमभूत् यत् केवलं जम्बूद्वीपस्य रचना साकारा भवेत्। अजमेरचतुर्मासस्य समाप्तौ संघस्य विहारोऽभूत्। अत्रतः किञ्चिद् दूरं ''पीसांगन'' नाम्नो ग्रामात् पूज्यामाता व्यावर राजस्थाननगरं प्रति विहारमकरोत्।

रवीन्द्रकुमारः केन प्रकारेण संघे आगच्छत्–**द्वापंचाशत्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1952) वर्षे यदा माता दीक्षायाः लक्ष्येण गृहमत्यजत् अर्थात् बाराबंकी नगरे विराजमानस्य आचार्यदेशभूषणस्य दर्शनस्य व्याजेन गृहान्निष्कान्ता, तदा रवीन्द्रकुमार (सर्वेभ्यः**

सन् 1971 का चातुर्मास आचार्य संघ के साथ ही अजमेर (राज.) में हुआ। वहाँ के सर सेठ भागचन्द जी सोनी और उनकी धर्मपत्नी ज्ञान से प्रभावित होने के कारण पूज्य माताजी के पास अधिक समय निकाल कर स्वाध्याय आदि का लाभ लेते। चातुर्मास सोनी जी की नशिया में ही हुआ था अतः वहीं पर प्रवचन भी होते थे। एक दिन सेठ जी के सामने माताजी की बात हुई, उन्होंने बड़ी रुचिपूर्वक माताजी को उसी नशिया में ऊपर कमरे में बनी हुई रचना को दिखाया, उसमें भी कुछ-कुछ वही झलक थी, बीच में पाँच मेरु भी बनाए गए थे। आज भी देश भर के पर्यटक उसे देखने जाते हैं। माताजी की मनोभावना थी कि कहीं खुले स्थान पर पृथ्वी पर यह रचना बने लेकिन तेरहद्वीप की रचना उस समय के लिए करोड़ों की लागत का कार्य था अतः प्रश्नवाचक चिन्ह बनकर खड़ा होता कि यह राशि कहाँ से आयेगी? कौन इसकी जिम्मेदारी लेगा? अन्ततोगत्वा सोच-विचार करके यह निष्कर्ष निकाला गया कि केवल जम्बूद्वीप की योजना को साकार करना चाहिए। अजमेर चातुर्मास समाप्त होने पर संघ का विहार हुआ। यहाँ से कुछ दूर ही ''पीसांगन'' नाम के गांव से पूज्य माताजी ने ब्यावर (राज.) की ओर विहार कर दिया।

➢रवीन्द्र कुमार जी कैसे आये संघ में–

सन् 1952 में जब माताजी ने दीक्षा के लक्ष्य से घर छोड़ा, अर्थात् बाराबंकी में विराजमान आचार्य श्री देशभूषण महाराज के दर्शन का बहाना बनाकर घर से निकलीं, तब रवीन्द्र कुमार (सबसे

लघुः भ्राता) आयुषि द्वयोर्वर्षयोरासीत्। तदा सः सम्यक्प्रकारेण स्वभगिनीं नैवापश्यत्। किन्तु पश्चात् लखनऊविश्वविद्यालये बी.ए. इत्युपाधये अध्ययनं कुर्वन् रवीन्द्रकुमारः स्वमात्रा–पित्रा, भ्रात्रा–भ्रातृजायया सह अष्टषष्ट्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1968 वर्षे) चतुर्मासस्य मध्ये प्रतापगढ़ राजस्थाने नगरे आगच्छत्। तदा पूज्या माता आचार्यश्रीशिवसागस्य संघे आसीत्। सः रवीन्द्रं कुशाग्रबुद्धिमवलोक्य तदा तस्मिन् समये गृहात् बहिः निष्क्रमणं कर्तुं तस्मै प्रेरणामदात् या च तस्य हृदयमूलस्य भित्तिरिव अतिष्ठत्। पुनः द्वासप्तत्यधिक एकोनविंशतिशततमे (1972 वर्षे) सा साकाररूपमगृह्णात्।

तस्मात् पूर्वं सप्तति–एकसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमेषु (1970–71 वर्षेषु) अस्य संघे स्तोकं–स्तोकं वासस्तु अभवत् परन्तु पश्चात् भ्रातरः गृहमानीय द्वासप्तत्यधि–कएकोनविंशतिशततमे (1972 वर्षे) अस्मै निर्मितवस्त्राणां नूतनप्रदर्शनकक्षं उद्घाटितं कृत्वा तस्मिन्नेव व्यस्तमकरोत्। एतच्छ्रुत्वा व्यावरनगरे स्वार्यिका संघेन विराजमानायाः मातुः प्रेरणां प्राप्य संघस्थः मोतीचन्द्रो वर्तमाने क्षुल्लकमोतीसागरः टिकैतनगरं गत्वा एनं प्राबोधयत् यत् चल, नवीनाय व्यापाराय मातुराशीर्वादं तु गृहाण। रवीन्द्रस्य इच्छायां सत्यामपि नूतनस्य व्यापारस्य उत्तरदायित्वं पारिवारिकस्य च स्नेहपूर्णदमनेन सः गन्तुं निषेधमकरोत्। परन्तु ब्र. मोतीचन्द्रः टिकैतनगरात् चलन्–चलन् अपि पुरुषार्थमकरोत् यत् केवलं द्वयोर्दिनयोः पुनः प्रत्यागच्छ आदि। तस्य मार्मिकाः शब्दाः उद्यमं विनैव रवीन्द्रं मातुः समीपमानयन्। परन्तु माता स्व चुम्बकीयोद्बोधने तं वैराग्यस्य घुट्टिकां पाययित्वा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतं

छोटे भाई) मात्र दो वर्ष के थे। उन्होंने उस समय तो अपनी जीजी को अच्छी तरह से देखा भी नहीं था किन्तु बाद में लखनऊ विश्वविद्यालय में बी.ए. का अध्ययन करते हुए रवीन्द्र जी अपने माता-पिता, भैय्या-भाभी के साथ सन् 1968 में चातुर्मास के मध्य प्रतापगढ़ (राज.) आए थे। उस समय पूज्य माताजी आचार्य श्री शिवसागर महाराज के संघ में थीं। उन्होंने रवीन्द्र जी की कुशाग्र बुद्धि देखकर उन्हें उस समय घर से निकलने की प्रेरणा दी थी, जो उनके हृदय में नींव की तरह बैठ गई, पुनः उसने साकार रूप लिया सन् 1972 में।

उससे पूर्व सन् 1970-71 में इनका संघ में थोड़ा-थोड़ा रहना तो हुआ किन्तु बाद में भाईयों ने घर ले जाकर अप्रैल 1972 में इन्हें रेडीमेड कपड़ों का नया शोरूम खुलवाकर उसमें व्यस्त कर दिया। यह सुनकर ब्यावर (राज.) में अपने आर्यिका संघ सहित विराजमान पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा पाकर संघस्थ ब्रह्मचारी मोतीचंद जी (वर्तमान में क्षुल्लक मोतीसागर हैं) ने टिकैतनगर जाकर इन्हें समझाया कि चलो, नये व्यापार के लिए माताजी का आशीर्वाद तो ले आओ। रवीन्द्र जी की इच्छा होते हुए भी नये व्यापार की जिम्मेदारी एवं पारिवारिक मोहपूर्ण दबाव के कारण उन्होंने जाने से मना कर दिया लेकिन मोतीचंद जी ने टिकैतनगर से वापस चलते-चलते भी पुरुषार्थ किया कि केवल दो दिन में वापस आ जाना.....आदि। उनके मार्मिक शब्दों ने बिना किसी तैयारी के भी रवीन्द्र जी को माताजी के पास पहुँचा दिया, फिर तो माताजी ने अपने चुम्बकीय उद्बोधन द्वारा

गृहीतुं तत्परमकरोत्। नागौरराजस्थाने च पूज्यस्य आचार्यस्य धर्मसागरस्य समीपे शीघ्रमेव मोतीचन्द्रेण सह रवीन्द्रं प्रेषयित्वा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतमदापयत्। तत्पश्चादपि यद्यपि सः गृहं गत्वा व्यापारमकरोत् परन्तु पुनरपि मातुः प्रेरणाऽऽसीत् यत् यदा विवाहो न कर्तव्यो तु व्यापारो किमर्थं कर्तव्यः? स्व अमूल्यसमयं अधुना व्यर्थं न कुरु, ज्ञानार्जनायैव जीवनस्य सार्थकताऽस्ति.....। आदिभिः प्रेरणाभिः रवीन्द्रं गृहात् निष्क्रास्यः संघे स्थितये महत्वपूर्णाया भूमिकायाः निर्वाहमकरोत्। अवधप्रान्तस्य च एकं मात्रं बालब्रह्मचारिणो नवयुवकस्य रूपेण तस्य कर्मयोगिनो नाम समस्तेभ्यः नवयुवकेभ्यः उदाहरणस्वरूपेण विख्यातमभूत्।

अस्मिन् जीवितकथानके यावत श्रेयः ज्ञानमतीमातरं प्राप्तं, तस्मादधिकः पुरुषार्थः ब्र. मोतीचन्द्रस्य प्रशंसनीय आसीत्। यः कदापि विस्मरणीयो नास्ति।

भारतस्य राजधान्यां दिल्ली नगर्यां पदार्पणम्–**अजमेर चतुर्मासस्य पश्चात् पुनः आचार्यसंघात् केचित् साधवः पृथक्–पृथक् विहारमकुर्वन्। संघस्थस्य सुपार्श्वसागरस्य निर्देशने केषांचित् मुनीनां संघः श्रीसम्मेदशिखरबुन्देलखण्डादितीर्थानां तीर्थयात्रायै निरगच्छत्। आर्यिका श्रीज्ञानमती स्वार्यिकासंघेन सह पीसांगन राजस्थानात् आचार्यश्रियः आज्ञां समादाय व्यावरनगरमागच्छत्। व्यावर नगरे दिल्ल्याः केचित् गण्याः मान्याः जनाः मातुः समीपे दिल्लीं प्रति विहारं कर्तुं प्रार्थनायै समागच्छन्।**

उन्हें वैराग्य की घूंटी पिलाकर आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत लेने को राजी कर लिया और नागौर (राज.) में विराजमान पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के पास शीघ्र ही मोतीचंद जी के साथ रवीन्द्र जी को भेजकर आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत दिलवा दिया। उसके बाद भी यद्यपि कुछ दिन उन्होंने घर जाकर व्यापार संभाला किन्तु पुनः माताजी की प्रेरणा रही कि जब विवाह नहीं करना है तो व्यापार किसके लिए करना? अपना अमूल्य समय अब व्यर्थ मत व्यतीत करो, ज्ञानार्जन में ही जीवन की सार्थकता है..... आदि प्रेरणाओं ने रवीन्द्र जी को घर से निकालकर संघ में रहने में अहम् भूमिका निभाई और अवध प्रान्त के एकमात्र बालब्रह्मचारी नवयुवक के रूप में उस कर्मयोगी का नाम समस्त नवयुवकों के लिए उदाहरण स्वरूप बन गया।

इस जीवन्त कथानक में जितना श्रेय पूज्य ज्ञानमती माताजी को प्राप्त है, उससे कहीं अधिक पुरुषार्थ ब्र. मोतीचंद जी का सराहनीय रहा है, जिसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

➢भारत की राजधानी दिल्ली में पदार्पण–

अजमेर चातुर्मास के पश्चात् पुनः आचार्य संघ से कुछ साधुओं ने अलग-अलग विहार किया। संघस्थ मुनि श्री सुपार्श्व सागर जी के निर्देशन में कुछ मुनियों का संघ सम्मेदशिखर, बुंदेलखण्ड आदि तीर्थों की यात्रा हेतु निकला एवं आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी अपने आर्यिका संघ के साथ पीसांगन (राज.) से आचार्यश्री की आज्ञा लेकर ब्यावर पधारीं। ब्यावर में दिल्ली के कुछ गणमान्य व्यक्ति पूज्य माताजी के पास दिल्ली की ओर मंगल विहार करने हेतु प्रार्थना करने आये।

द्वासप्तत्यधिकएकोनविंशतितमस्य ख्रिष्टाब्दस्य (1972 वर्षस्य) महावीरजयन्त्याः पश्चात् आर्यिकासंघस्य विहारो दिल्लीं प्रत्यभवत्। वैशाखज्येष्ठमासयोः तीव्रातपे कदाचित् चतुर्विंशति–पंचविंशति किलोमीटर पर्यन्तं चलितुं विवशाऽऽसीत्। आर्यिका श्रीरत्नमत्याः मातुर्जीवने इयं प्रथमा पदयात्राऽऽसीत्। वृद्धावस्थायां अस्य दीर्घविहारस्य कारणेन तस्याः पादयोः स्थूलता आगच्छत्। अतः शिविकायाः व्यवस्थाऽपि कृता। मातुरस्मिन् प्रवासे द्वौ मुनी वयस्कौ (श्री संभवसागर मुनिः वर्धमानसागरोऽपि) आस्ताम्। यौ प्रारम्भादेव मातुश्च शिष्यौ आस्ताम्। मातुश्च प्रेरणया तौ मुनिदीक्षां गृहीतवन्तौ। तौ द्वौ पंचसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमं (1975) वर्षपर्यन्तं सहचारिणौ अभवताम्।

पंचविंशतिशतनिर्वाणोत्सवे सान्निध्यम्–**चतुःसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे (1974 वर्षे) भगवतो महावीरस्वामिनः पंचविंशतिशततमः निर्वाण महोत्सवः राष्ट्रीयस्तरे आयोजितोऽभूत्। यस्मिन् पूज्यायाः आर्यिकाश्रियः पावनप्रेरणया अविश्रान्तप्रयासैश्च दिल्लीवासिनः आचार्यधर्मसागरस्य विशालं संघं दिल्ली नगर्यां आनीतवन्तः। तदानीं पर्यन्तं दिल्ली नगर्याः जनतायाः मनसि अयं भ्रम आसीत् यत् अत्र दिल्ल्यामेतावतो विशालस्य संघस्य निर्वाहःकेन प्रकारेण भविष्यति? तेभ्यः साधुभ्यः शूद्रजलस्य त्यागं कृत्वा कः आहारं दास्यति...इत्यादि। किन्तु माताश्री इदमुक्त्वा दिल्ली नगर्याः शिष्टमण्डलं आचार्य श्रियः समीपे अलवर नगरं प्रेषितमकरोत् यत् साधूनामाहारस्योत्तरदायित्वं ममोपर्यस्ति। यूयं तु केवलं प्रार्थनापूर्वकं तान् दिल्लीपर्यन्तमानयथ। अन्ते इदमेवाभूत्। आचार्यश्री संघेन सह दिल्लीमागच्छत्। सम्पूर्णे च**

सन् 1972 की महावीर जयंती के पश्चात् आर्यिका संघ का विहार दिल्ली की ओर हुआ। वैशाख, ज्येष्ठ मास की चिलचिलाती धूप में कभी-कभी 24-25 किमी. भी चलना पड़ता। आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के जीवन में यह प्रथम पदयात्रा थी, वृद्धावस्था में इस लम्बे विहार के कारण उनके पैरों में सूजन आ गई अतः डोली की व्यवस्था भी की गई। पूज्य माताजी के इस प्रवास में लघुवयस्क दो मुनिराज (मुनि श्री संभवसागर एवं मुनि श्री वर्धमान सागर) भी थे जो कि प्रारंभ में माताजी के ही शिष्य रहे थे और माताजी की प्रेरणा से ही मुनि बने थे, वे दोनों सन् 1975 तक साथ में रहे।

➢पच्चीस सौवें निर्वाणोत्सव में सानिध्य–

ईसवी सन् 1974 में भगवान महावीर स्वामी का पच्चीस सौंवा निर्वाण महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया, जिसमें पूज्य आर्यिकाश्री की पावन प्रेरणा एवं अथक प्रयासों से दिल्लीवासी आचार्यश्री धर्मसागर महाराज के विशाल संघ को दिल्ली लाए। उस समय तक दिल्ली की जनता को भय था कि यहाँ इतने बड़े संघ का निर्वाह कैसे होगा? उन साधुओं को शूद्रजल त्याग करके आहार कौन देगा इत्यादि किन्तु माताजी ने यह कहकर वहाँ के शिष्टमंडल को आचार्यश्री के पास अलवर भेजा कि साधुओं के आहार की जिम्मेदारी मेरी है, तुम लोग तो मात्र उन्हें प्रार्थनापूर्वक दिल्ली तक ले आओ। आखिर हुआ भी यही, आचार्यश्री संघ सहित दिल्ली पधारे और पूरे शहर में अनगिनत

नगरेऽगणितानि भोजनस्थानि उद्यतान्यभवन्। अत्र तु चतुर्थकालस्य दृश्यमिवोपस्थितमासीत्।

आर्यिकाश्रियः संकल्पशक्तिरद्भुताऽस्ति। या यदपि कार्यं हस्ते गृह्णाति तत् पूर्णसफलतया सह सम्पन्नं कृत्वा दर्शयति। अनेन प्रकारेण आचार्यश्रियो धर्मसागरस्य दिल्ल्यां पादार्पणेन पंचविंशतिशततमे निर्वाणोत्सवे चत्वारश्चन्द्राः संयुक्ता अभवन्। यस्य पूर्णं श्रेयः मात्रे एवास्ति। तस्मिन् समये केषुचित् सामाजिकशास्त्रीयविवादास्पदविषयेषु आचार्यश्रीः तां आर्यिकाश्रिय विचारविमर्शं कृत्वा समस्यानां गम्भीरतापूर्वकं समाधानमकरोत्। यत्तस्य सिंहवृत्तेः परिचायकोऽभूत्। अद्य दिल्लीपश्चिमोत्तरप्रदेशो नैव किन्तु संपूर्णस्य भारतस्य जैनजैनेतरसमाजस्तस्य निःस्पृहतां पूर्विकां सिंहवृत्तिं च स्मरति।

तीर्थक्षेत्रस्य हस्तिनापुरस्योद्धारः–**हस्तिनापुरस्य तीर्थक्षेत्रस्य निष्प्रयोजनानि वनानि आर्यिकाश्रियं स्वसंरक्षणहेतवे आह्वयन् तस्याश्च पादरजः प्राप्य हास्यं मन्दहास्यं च अकुर्वन्। चतुःसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे चतुर्मासात् पूर्वं ज्ञानमती माता स्वैकां शिष्यां सहचारिणीं कृत्वा हस्तिनापुरस्य तीर्थक्षेत्रस्य यात्रायै दिल्लीमहानगरात् निष्क्रान्ता। तया सह ब्र.मोतीचन्द्रोऽप्यासीत् संयोगवशात्तस्यै इदं तीर्थक्षेत्रमरोचत्। अत्रैव च ब्रह्मचारिणा मोतीचन्द्रेण सह हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्रस्य समितेः महामंत्रिणं सुकुमारचन्द्रस्य मवानानगरस्य श्रेष्ठिनं बूलचन्द्र लक्ष्मीचन्द्र प्रभृतीनां महानुभावानां सहयोगेन एकस्याः लघु भूम्याः चयनमभूत्। तत्र च सुमेरूपर्वतस्य भित्तेः मूलं निक्षिप्तं कारयित्वा सा पुनस्तीव्रगत्या दिल्लीमागच्छत्। यत्राचार्यसंघेन सह चतुर्मासं पूर्णमकरोत्।**

चौके लगे, मानो वहाँ चतुर्थकाल का दृश्य उपस्थित हो गया था।

आर्यिकाश्री में संकल्प शक्ति अद्भुत है, वे जिस कार्य को भी हाथ में लेती हैं, उसे पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न करके दिखलाती हैं। इस प्रकार आचार्यश्री धर्मसागर महाराज के दिल्ली पधारने से पच्चीस सौंवे निर्वाणोत्सव में चार चाँद लगे, जिसका अन्तरंग श्रेय पूज्य माताजी को है। उस समय कई सामाजिक एवं शास्त्रीय विवादास्पद विषयों में आचार्यश्री इन्हीं आर्यिकाश्री से विचार-विमर्श कर समस्याओं का गंभीरतापूर्वक समाधान करते थे जो उनकी सिंहवृत्ति का परिचायक बना। आज दिल्ली और सम्पूर्ण पश्चिमी उत्तरप्रदेश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत की जैन-जैनेतर समाज उनकी निस्पृहता, भोलेपन तथा सिंहवृत्ति को स्मरण करती है।

➢तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर का उद्धार–

हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के वीरान जंगल ने आर्यिकाश्री को अपने संरक्षण हेतु पुकारा और उनकी पदरज पाकर हँसने मुस्कराने लगा। सन् 1974 में चातुर्मास से पूर्व श्री ज्ञानमती माताजी अपनी एक शिष्या को लेकर हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र की यात्रा करने दिल्ली से निकलीं, साथ में ब्र. मोतीचंद जी थे। संयोगवश उन्हें यह तीर्थ पसंद आया और यहीं पर उन्होंने मोतीचंद जी द्वारा हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री बाबू सुकुमार चंद, मवाना के सेठ बूलचंद जी, लखमीचंद जी आदि महानुभावों के सहयोग से एक छोटी-सी भूमि का चयन कराया और सुमेरु पर्वत की नींव डलवाकर वे पुनः तीव्र गति से दिल्ली पहुँच गईं, जहाँ आचार्य संघ के साथ चातुर्मास सम्पन्न किया।

दिल्ली नगर्या एतस्यैतिहासिकचतुर्मासस्य पश्चात् सा स्वशिष्यायै कुमार्यै सुशीलायै मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां आचार्यस्य करकमलाभ्यां आर्यिका दीक्षा ग्रहीतामकारयत्। यस्याः नाम आर्यिका श्रुतमती इत्यभूत्। पंचसप्तत्यधिक एकोनविंशतिशततमे वर्षे जनवरी मासे ज्ञानमती माता आर्यिका संघेन सह हस्तिनापुर प्रति विहारमकरोत्। पुनः फरवरीमासे आचार्यश्रीः स्वचतुर्विधसंघेन सह मातुर्ज्ञानमत्याः प्रारम्भिक कर्मभूमेरवलोकनार्थं हस्तिनापुरमागच्छत्। माता समस्तसंघश्च प्राचीनमन्दिरे गुरुकुलस्य परिसरे अतिष्ठत्।

आचार्यसंघस्य हस्तिनापुरे प्रायः चतुर्णां मासानां प्रवासः अभवत्। अस्य मध्ये तीर्थक्षेत्रस्य जलमन्दिरस्य बाहुबलिमन्दिरस्य जम्बूद्वीपस्य स्थले विराजमानां कर्तुं भगवतो महावीरस्य प्रतिमायाश्च पंचकल्याणक प्रतिष्ठासंपन्नाऽभवत्। यस्यामाचार्यधर्मसागरः समस्तप्रतिमाभ्यः सूरिमंत्रं प्रदत्तमकरोत्। द्वितीयं च महाकार्यं संघस्थस्य मुनेः वृषभसागरस्य विधिपूर्वकं सल्लेखनया समाधिमरण स्याभूत्। द्वयोमहायज्ञयोः आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः महत्वपूर्णा भूमिका अभूत्। अस्याः एव प्रेरणाविशेषात् सोलापुरमहाराष्ट्रस्य प्रतिष्ठाचार्यः प. वर्धमानपार्श्वनाथः शास्त्री समाजस्यामन्त्रणेन आगत्य आर्ष परम्परानुसारेण प्रतिष्ठाविधिं सम्पन्नमकरोत्।

स्वत्वपूर्णा एका वार्ता–**आचार्यश्रीधर्मसागरो दिनांके 9–4–1975 वर्षे यदा संघसहितः हस्तिनापुरात् सहारनपुरं प्रति विहारं कर्तुं प्रारभत् तु सः प्रवचनसभायां पूज्यां ज्ञानमतीं मातरं महतोत्साहेन सम्बोधितां कुर्वन् अकथयत्–**

दिल्ली के इस ऐतिहासिक चातुर्मास के पश्चात् उन्होंने अपनी शिष्या कु. सुशीला को मगशिर कृ. 10 को आचार्यश्री से आर्यिका दीक्षा दिलाई जिनका नाम आर्यिका श्रुतमती जी रखा गया। जनवरी सन् 1975 में आपने अपने आर्यिका संघ सहित हस्तिनापुर की ओर विहार किया पुनः फरवरी में आचार्यश्री भी अपने चतुर्विध संघ सहित ज्ञानमती माताजी की प्रारंभिक कर्मभूमि के अवलोकनार्थ हस्तिनापुर पधारे। माताजी तथा समस्त संघ प्राचीन बड़े मंदिर तथा गुरुकुल परिसर में ठहरा।

आचार्य संघ का हस्तिनापुर में लगभग 4 माह का प्रवास रहा, इस मध्य तीर्थक्षेत्र के जल मंदिर, बाहुबलि मंदिर एवं जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान होने वाले कल्पवृक्ष भगवान महावीर स्वामी प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई, जिसमें आचार्यश्री ने समस्त प्रतिमाओं को सूरिमंत्र प्रदान किए तथा द्वितीय महाकार्य संघस्थ मुनि श्री वृषभसागर महाराज की विधिवत् सल्लेखनापूर्वक समाधिमरण का हुआ। दोनों महायज्ञों में आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन्हीं की प्रेरणा विशेष से सोलापुर (महा.) के प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री वर्धमान जी शास्त्री ने समाज के आमंत्रण पर पधारकर आर्ष परम्परानुसार प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न कराई।

➢अपनत्व भरी एक वार्ता–

आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज 9 अप्रैल 1975 को संघ सहित जब हस्तिनापुर से सहारनपुर की ओर विहार करने लगे, तो उन्होंने प्रवचन सभा में पूज्य ज्ञानमती माताजी को बड़े वात्सल्यपूर्वक सम्बोधित करते हुए कहा–

''मातः! अत्र भवत्याः अवस्थानं विना जम्बूद्वीपस्य निर्माणस्य महत् कार्यं सम्पन्नं भवितुं न शक्यते। तीर्थक्षेत्रे बहुभ्यः दिनेभ्यः स्थातुं न कापि बाधा। अतो भवती निर्विकल्पा भूत्वा हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे तिष्ठतु। जम्बूद्वीप रचना शीघ्रं पूर्णा भूत्वा भवत्याः मनोरथं सिद्धयतु, अयं मम भवत्यै बहु–बहु आशीर्वादोऽस्ति।''

आचार्यश्रियः एता वात्सल्यपूर्णाः वार्ताः पूज्यमात्रे संबलं प्राददुः। तस्याश्च दृढसंकल्पानां प्रतीका जम्बूद्वीपरचना अद्य संसारं स्व साकाररूपं दर्शयति।

जलात् भिन्नस्य कमलस्य अनुपमुदाहरणम्–**महापुरुषाः स्वमहत्तायाः प्रचारार्थं कस्यापि द्वारं न गच्छन्ति। परन्तु महत्ता स्वयमेव तेषां चरणानि परिचुम्ब्य स्वात्मानं धन्यां करोति। एषैव वार्ता पूज्यमातुर्जीवने चरितार्थाऽभवत्। सा स्वगृहत्यागमकरोत्तु निजात्मोद्धाराय, दीक्षाधारणमपि तया स्व स्त्रीपर्यायस्य छेदनार्थं, साहित्यस्य रचना कृता तु निजात्मनः पवित्रतायै स्वचैकाग्रतायैव शिष्याणां निर्माणमपि स्वसम्यग्दर्शनस्य संवेगअनुकम्पादिगुणानां वृद्ध्यर्थं या शिष्यान् च संसारसमुद्रात् समुत्तारणाय, जम्बूद्वीपकमलमन्दिरादीनां निर्मातुं प्रेरणां प्रादात्तु, स्वपिण्डस्थध्यानं साकारकरणहेतवे। सा आचार्यकुन्दकुन्देन कथितं** ''आदहिदं कादव्वं'' **इत्यादिसूत्रं आत्मनि धृत्वा सर्वमकरोत्। येन आत्महितेन सह परहितं तु स्वयमेव भवति।**

अद्य हस्तिनापुरे आगतानां प्रत्येकयात्रिणां मुखात् भक्त्याः अतिरेके इत्येव निःसरति–मातः! त्वया तु वने मंगलं कृतं, अस्य स्थानस्य तु भवती शरीरमेव परिवर्तितमकरोत्।

"माताजी! यहाँ आपके रुके बिना जम्बूद्वीप निर्माण का महान कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है। तीर्थक्षेत्र पर अधिक दिन रुकने में कोई बाधा नहीं है अतः आप निर्विकल्प होकर हस्तिनापुर तीर्थ पर रहें। जम्बूद्वीप रचना शीघ्र पूर्ण होकर आपका मनोरथ सिद्ध होवे, यह मेरा आपको खूब-खूब आशीर्वाद है।"

आचार्यश्री की इस अपनत्व भरी वार्ता ने पूज्य माताजी को संबल प्रदान किया और उनके दृढ़ संकल्प का प्रतीक जम्बूद्वीप रचना आज संसार को अपना साकार रूप दर्शा रही है।

➢जल तें भिन्न कमल का अनुपम उदाहरण–

महापुरुष अपनी महानता का प्रचार करने हेतु किसी के द्वार पर नहीं जाते बल्कि महानता स्वयं ही उनके चरण चूम-चूमकर स्वयं को धन्य करती है। यही बात पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन में चरितार्थ हुई है। उन्होंने गृहत्याग किया तो निज आत्मोद्धार के लिए, दीक्षा धारण की तो अपनी स्त्रीपर्याय का छेद करने के लिए, साहित्य सृजन किया तो निज आत्मा की पवित्रता और मन की एकाग्रता के लिए, शिष्यों का निर्माण किया तो अपने सम्यग्दर्शन के संवेग, अनुकम्पा आदि गुणों की वृद्धि हेतु तथा शिष्य को संसार समुद्र से पार करने के लिए एवं जम्बूद्वीप तथा कमल मंदिर आदि के निर्माण में प्रेरणा प्रदान की, तो अपने पिण्डस्थ ध्यान को साकार करने हेतु। उन्होंने आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी द्वारा कथित **'आदहिदं कादव्वं'** वाला सूत्र अपनाया, जिससे आत्महित के साथ-साथ परहित तो स्वयमेव ही हो रहा है।

आज हस्तिनापुर में आने वाले प्रत्येक तीर्थयात्रियों के मुँह से भक्ति के अतिरेक में यही निकल जाता है कि–

अत्रागत्य असीमशान्त्याः अनुभवो भवति यथा वयं स्वर्गे एव आगताः।

ज्ञानमत्याः मातुस्तदा मन्दस्मितमुद्रायामुत्तरं भवति—

''अरे भ्रातरः! वयं तु अकिंचनसाधवः स्म, न अस्माकं समीपे पणकोऽस्ति न किञ्चित् अन्यदपि धनम्, अस्यां स्थितौ यूयं स्वेन द्वारेण समस्तजैन समाजेन कृतं कार्यं मदीयं कथं कथयसि? बाढम्! मया तु केवलं शास्त्रेषु लिखितायाः जम्बूद्वीरचनायाः मानचित्रं व्यक्तं कृतम्, शेषं त्वस्मिन् मम किंचिदपि नास्ति।

तस्याः इदमान्तरिकरूपेण दत्तं समाधानं तस्याः निःस्पृहता च भक्तान् स्वत्वभावेन पूरयति। तदा ते अवबोधयितुं समर्थाः भवन्ति यत् वस्तुतः जम्बूद्वीपोऽयं तु अस्माकं सर्वेषामेवास्ति। वयमेतत्तु ज्ञानज्योतिर्माध्यमेन अथवा अत्र अस्याः साक्षात निर्माणं गतिशीलं वीक्ष्य शतानि सहस्राणि लक्षाणि वा रूप्यकाणि दाने दत्वा अमुं निर्मापितमकुर्म पूज्यमातुश्च दिव्यप्रेरणया अस्मभ्यं संबलं प्राप्तम्।

शतप्रतिशतं सत्यता त्वीयमस्ति यत् गणिन्यार्यिका जम्बूद्वीपस्य पावन प्रेरिकास्ति, निर्मात्री नास्ति। यतो हि तस्याः दैनिकजीवनस्य अर्धभागस्तु साहित्यसर्जने लेखने च व्यतीतो भवति, चतुर्थभागस्तु नित्यनैमित्तिक साधुक्रियासु, चतुर्थस्तु मानवविवशतया दुर्बलशरीरस्य पालने व्यतीतो भवति। यस्य प्रत्यक्षलाभः समाजाय प्राप्यते, तया विरचितैवृहद्विधानैः पूजनैः अध्यात्मिकसिद्धान्तन्यायकथादीनां साहित्येन।

माताजी! आपने तो जंगल में मंगल कर दिया है, यहाँ की तो आपने काया ही पलट दी है, यहाँ आकर असीम शान्ति मिलती है जैसे मानों स्वर्ग में ही आ गये हों।

ज्ञानमती माताजी का उस समय मन्द मुस्कराहट मुद्रा में उत्तर होता है—

''अरे भाई! हम तो अकिंचन साधु हैं, न हमारे पास पैसा है न कौड़ी, ऐसी स्थिति में तुम अपने (समस्त जैन समाज के) द्वारा किये कार्य को मेरा क्यों कहते हो? हाँ! मैंने तो मात्र शास्त्रों में छिपी जम्बूद्वीप रचना का नक्शा बताया है, बाकी मेरा इसमें कुछ भी नहीं है।''

उनका यह आन्तरिक निस्पृहतापूर्वक दिया गया समाधान भक्तों को और भी अधिक अपनत्व भाव से भर देता है। तब वे समझने लगते हैं कि हाँ, सचमुच! यह जम्बूद्वीप तो हम सभी का है, हमने ही तो ज्ञानज्योति के माध्यम से अथवा यहाँ इसका साक्षात् निर्माण चलता देखकर सैकड़ों, हजारों, लाखों रुपये खर्च करके इसे बनाया है और पूज्य माताजी की दैवी प्रेरणा ने हमें संबल प्रदान किया है।

शत प्रतिशत सत्यता भी यही है कि गणिनी आर्यिका श्री जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका हैं निर्मात्री नहीं, क्योंकि उनके दैनिक जीवन का अर्धभाग तो साहित्य सृजन-लेखन में व्यतीत होता है, चौथाई भाग अपनी नित्य नैमित्तिक साधु क्रियाओं में और चौथाई भाग मजबूरीवश कमजोर शरीर के पालन में व्यतीत होता है, जिसका प्रत्यक्ष लाभ समाज को प्राप्त हो रहा है उनके वृहद् विधान, पूजन, अध्यात्म, सिद्धान्त, न्याय, कथा आदि साहित्य के द्वारा।

अभिवन्दनीयाया गणिन्याः मातुर्जीवनस्य इयं व्यक्तिगतविशेषता लक्षिता यत् हस्तिनापुरे कोटीनां रूप्यकाणां व्ययेन निर्माणस्य कथां सा अद्यावधिः इदं न जानाति यत् कुतः? कथं? कतिपयैः? कस्मै निर्माणाय आगतनि व्ययीभूतनि च? पणक स्पर्शस्य वार्ता बहु दूरं वर्तते सा स्वसमक्षं तु रूप्यकाणां वार्तापि कथनाय नाज्ञापयत्।

संस्थानां मूर्तिमन्दिरादीनां निर्माणस्य प्रेरकाणां साधूनां प्रायः सम्पूर्णो विद्वत्समाजः आलोचनां करोति परन्तु तेभ्य पूज्यमातुर्निस्पृहजीवनमवश्यमेवावलोकनीयमस्ति। तस्याः जीवनं तु उद्घाटितपुस्तकामिव कदाचिदपि समीपात् दृष्टुं शक्यते। यथा पंचसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे ख्रिष्टाब्दे वर्षे फ्रांस देशस्य एका विदुषी शान्ता नामिकैका महिला, जैन साध्वीशोधकार्यसमये पूज्यायाः मातुः समीपे हस्तिनापुरमागत्य प्रायः एकमास पर्यन्तम तिष्ठत् चतुर्विंशतिहोरापर्यन्तं तस्या समीपे स्थित्वा आहारविहारं शाटिकाधारणसामायिक–प्रतिक्रमणस्वाध्यायशयनादीनां सर्वं सूक्ष्मतापूर्वकमवलोकयन्ती अतिष्ठत्। सा महिला मातुराहारस्य पश्चात् तस्याः एव स्थाल्यां तत् लवणं विना, घृतेन विना, मधुरतां विना नीरसं भोजनमपि ग्रहणमकरोत् कथयति च अनुभवेन विना अस्याः चर्यायाः वर्णनं शोधप्रबन्धे केन प्रकारेण लिखितुं शक्यते। अस्याः साक्षात् अनुभवस्याध्ययनस्य च पश्चात् सा शोधकर्त्री अज्ञाततीर्थयात्री नाम्ना लिखिते स्वशोधप्रबन्धे दिगम्बरजैनसाध्व्याः ज्ञानमत्याश्च मातुर्विषये सम्यक् प्रकारेण उल्लेखमकरोत्।

अभिवन्दनीय गणिनी माताजी के जीवन की यह व्यक्तिगत विशेषता देखी गई है कि हस्तिनापुर में करोड़ों रुपये के इस वृहद् निर्माण के पीछे उन्हें आज तक यह नहीं ज्ञात है कि कहाँ से? कैसे? कितना रुपया? किस निर्माण के लिए आया और खर्च हुआ है। पैसा छूने की बात तो बहुत दूर है, वे अपने समक्ष रुपयों की बात भी नहीं करने देती हैं।

संस्था तथा मूर्ति-मंदिर आदि के निर्माण की प्रेरणा देने वाले साधुओं की प्रायः आज का विद्वत् समाज आलोचना करता है किन्तु उनके लिए पूज्य माताजी का निस्पृह जीवन अवश्य ही अवलोकनीय है। उनका जीवन एक खुली पुस्तक के समान किसी भी समय नजदीकी से देखा जा सकता है। जैसा कि सन् 1975 में फ्रांस की एन. शान्ता नामक एक महिला, जैन साध्वियों पर रिसर्च करते समय पूज्य माताजी के पास हस्तिनापुर आकर लगभग एक महीने तक रुकीं और 24 घण्टे उनके समीप रहकर आहार, विहार, धोती पहनना, सामायिक करना, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, शयन आदि सब कुछ सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन करती थी। यहाँ तक कि वह महिला माताजी के आहार के पश्चात् उन्हीं की थाली में परोसा गया बिना नमक, बिना घी, बिना मीठे का नीरस भोजन भी करती और कहती कि अनुभव किये बिना इनकी चर्या का वर्णन थिसिस में कैसे लिखा जा सकता है? इस साक्षात् अनुभव एवं अध्ययन के पश्चात् उस शोधकर्त्री ने UNKNOWN PILGRIMS (अज्ञात तीर्थयात्री) नाम से लिखित अपने शोधग्रंथ में दिगम्बर जैन साध्वी एवं पूज्य ज्ञानमती माताजी के विषय में अच्छा उल्लेख किया है। उनमें से कुछ पंक्तियाँ यहाँ भी दृष्टव्य हैं–

मातुरिदं विशेषं पुण्यमेवावगन्तव्यं यत् तस्यै मोतीचन्द्रो यो वर्तमाने क्षुल्लकमोती–सागरोऽस्ति, ब्र. रवीन्द्रकुमारश्चैतौ द्वौ पुष्पदन्तभूतबलिनौ इव सुयोग्यौ शिष्यौ प्राप्तौ अभवताम्। यौ मात्रे कदापि निर्माणरुप्यकाणां च सम्बन्धितायाः शिरः पीडायाः अवसरं नादत्ताम्। वस्तुत् संयमसाधनाया क्षेत्रे योग्यानां शिष्याणामपि प्राप्तिरावश्यकं भवति। दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य सम्पूर्णा समितिः एतया वार्तया सुपरिचितास्ति यत् ''माता ज्ञानमती सत्यमेव जलात् भिन्नं कमलमित्युपमायाः सूक्तेः'' **अद्वितीयमुदाहरणमस्ति।**

Mataji shuns publicity. She pursues her task ardently, living her life in accordance with the stricth obervance of the Digambaras, caring nothing for honours nor for making a name for herself. She is truly called 'Jnanamati' and Sramani, as being one for whom the daily acquisition, enlargement and deepening of knowledge is the supreme task and it is this knowledge that she spontaneously and ceaselessly communicates to others, more by her life and her writings than by word of mouth. For her, knowing and teaching are one and the same thing.

Mataji has many interests and an openness of spirit, but she is totally gripped by and absorbed in the Digambara tradition and preeminently concerned to transmit it to others, which in itself is an enormous task. Within this tradition her particular interest is in those values which, just because they are truly spiritual, are also universal. However, the tradition through which these values are transmitted has become, during the course of the centuries, overloaded with certain subsidiary and sectarian practices and tendencies, furthermore, its close confinement within an, at time, fierce orthodoxy has often made it impenetrable, if not hostile, to other interpretations or to salutary changes. This fact Mataji does not always realise. She is even on occasion somewhat militant, in this sense that she is fully persuaded that the orthodox Digambara tradition is superior to others and that it maintains a rigorous fidelity to the teaching of the *tirthankaras*, which teaching, she believes, must be revitalised. This naturally leads to a certain critical and negative attitude towards the other sampradayas. Mataji's criticisms come from a sincere heart, one that is firmly determined to uphold what she believes to be the pure and original dharma, that men have gradually altered through their ignorance and cowardice. She considers, very reasonably, that the Scriptures and the works of the first acaryas are still available to recall us to the right path. So let us study them, she argues, and come out of our century old ignorance. And Mataji devotes all her energies to enlightening her disciples, the sravakas, sravikas and whoever comes to meet her. (पृष्ठ नं. 678-682-683)

पूज्य माताजी का यह विशेष पुण्य ही मानना होगा कि ब्र.मोतीचंद जी (वर्तमान क्षुल्लक मोतीसागर जी) एवं ब्र. रवीन्द्र जी इन्हें पुष्पदन्त और भूतबली के समान ऐसे सुयोग्य शिष्य मिले, जिन्होंने माताजी को कभी निर्माण तथा रुपये संबंधी सिर दर्द ही नहीं होने दी। वास्तव में संयम साधना के क्षेत्र में योग्य शिष्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की पूरी कमेटी इस बात से परिचित है कि **''ज्ञानमती माताजी सचमुच जल तें भिन्न कमल''** का अद्वितीय उदाहरण हैं।

वर्तमाने साधुसमाजे व्याप्तान् कान्चित् शिथिलाचारानवलोक्य जनाः सर्वानेव साधून् एककोट्याः मत्वा निन्दां प्रारब्यां कुर्वन्ति। किन्त्वहं स्वानुभवस्य तर्काणां चाधारेण गौरवपूर्वकं कथयितुं शक्नोमि यदद्य सर्वथा शिथिलाचारिणः साधवः न सन्ति। सूक्ष्मतया सामीप्येन च दर्शने पञ्चसप्ततिः प्रतिशतं शुद्धा परम्परा प्राप्यते, नात्र सन्देहः। सा च तु मुक्तिमार्गस्य पथि सन्ति अतः स्वात्मशोधनं कुर्वन्ति। इदमेवात्मशोधनकार्यं मोक्षप्राप्तौ तेषां सहायकं भवति। अस्मिन् कलियुगे पूज्यमाता ज्ञानमती यदि ''ब्राह्मी मातुः सदृशी'' **मान्यते तु न काप्यति– शयोक्तिरस्ति।**

पञ्चकल्याणकैः पावनं सान्निध्यम्–**यद्यपि स्वदीर्घकालीनदीक्षितजीवने आर्यिकाश्री अनेकस्थानेषु पंच कल्याणकप्रतिष्ठासु स्वसान्निध्यं प्रादात् किन्तु त्रिलोकशोधसंस्थानाय जम्बूद्वीपपरिसरेऽनेकपंचकल्याणकेषु तस्याः मंगलसान्निध्यं प्राप्तुं सौभाग्यं प्राप्तमभवत्–**

(1) पंचसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे फरवरी मासे भगवतो महावीरस्वामिनः प्रतिष्ठा (कमलमन्दिर)।

(2) नवसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मई मासे सुदर्शनमेरोः पंचकल्याणकप्रतिष्ठा।

(3) पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मई मासे श्रीजम्बूद्वीपजिनबिम्बप्रतिष्ठापना महोत्सवः।

वर्तमान में साधु समाज में व्याप्त कुछ शिथिलाचारों को देखकर लोग सभी साधुओं को एक कोटि में लेकर निंदा शुरू कर देते हैं किन्तु मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर गौरवपूर्वक कह सकती हूँ कि आज सर्वथा शिथिलाचारी साधु नहीं हैं, सूक्ष्मता एवं सामीप्य से देखने पर 75 प्रतिशत शुद्ध परम्परा मिल सकती है, इसमें कोई संदेह नहीं है। खैर! पर के द्वारा प्रमाणित अथवा अप्रमाणित मान लिए जाने पर सच्चे साधु की आत्मसाधना पर कोई असर नहीं पड़ता, वह तो मुक्तिमार्ग का पथिक होने के नाते अपना आत्म शोधन करता है, यही शोधन कार्य मोक्षप्राप्ति में उसे सहायक होता है। इस कलियुग में पूज्य ज्ञानमती माताजी को यदि **''ब्राह्मी माताजी का अवतार''** कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

➢पंचकल्याणकों में पावन सानिध्य–

यूँ तो अपने दीर्घकालीन दीक्षित जीवन में आर्यिकाश्री ने अनेक स्थानों पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में अपना सानिध्य प्रदान किया है किन्तु त्रिलोक शोध संस्थान को जम्बूद्वीप परिसर के अनेक पंचकल्याणकों में उनका मंगल सानिध्य प्राप्त करने का सौभाग्य मिल चुका है–

1. फरवरी सन् 1975 भगवान महावीर स्वामी की प्रतिष्ठा (कमल मंदिर)
2. मई सन् 1979 सुदर्शन मेरु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
3. मई सन् 1985 श्री जम्बूद्वीप जिनबिम्ब प्रतिष्ठापना महोत्सव

(4) सप्ताशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मार्च मासे श्री पार्श्वनाथपंचकल्याणक महोत्सवः।

(5) नवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मई मासे जम्बूद्वीपमहोत्सवः।

एतदतिरिक्तं द्विनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मार्च मासे, पंचनवत्यधिक–एकोनविंशतिशततमे, द्विसहस्रतमे, पंचाधिक द्विसहस्रतमे वर्षे च ईदृश्यः लघुपंचकल्याणक–प्रतिष्ठाः अपि भवत्यः सान्निध्ये जम्बद्वीपस्थले सम्पन्नाः अभवन्।

एतदतिरिक्तं द्विसहस्रतमे वर्षे दिल्ली नगया[4] त्रिकालंचतुर्विंशतेः, द्वासप्तति रत्न प्रतिमानां पंचकल्याणकप्रतिष्ठाऽभवत्। पुनः द्व्यधिकद्विसहस्रतमे वर्षे त्र्यधिकद्विसहस्रतमे वर्षे च भवत्याः प्रयागे कुण्डलपुर प्रवासे पंचकल्याणक प्रतिष्ठे हस्तिनापुरे सम्पन्ने अभवताम्। ययोः पीठाधीशक्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य सान्निध्यं प्राप्तमभूत्।

चतुर्मासाः कुत्र–कुत्र–**द्वापंचाशदधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे गृहपरित्यागस्य पश्चात् प्रायः चतुः–पंच मासपर्यन्तं तु ब्रह्मचारिण्याःअवस्थायां कुमारी मैना व्यतीतमकरोत्। यतो हि तस्मिन् समये पर्याप्तसंघर्षाणां सामाजिकविरोधानां च कारणेन सा दीक्षां न गृहीतुं विवशाऽऽसीत्। पुनः उचिते अवसरे प्राप्ते सति त्रिपंचाशदधिक एकोनविंशतिशत वर्षे चैत्र कृष्णप्रतिपदायां सा क्षुल्लिकादीक्षामगृह्णात्। षट्पंचाशदधिक एकोनविंशतिशततमे वर्षे च वैशाख कृष्ण द्वितीयायां आर्यिकादीक्षां गृहीत्वा देशस्य विभिन्नेषु भागेषु पदयात्राः कुर्वन्ती सा बहुधर्मप्रभावनामकरोत्। अद्यावधिं च करोति। तस्याः अधुनापर्यन्तं त्रिपंचाशदधिकएकोन–विंशतिशत वर्षात् अष्टाधिकद्विसहस्रवर्ष पर्यन्तं षट्पंचाशत् चतुर्मासाः निम्नलिखितेषु स्थानेषु संपन्नाः अभवन्।**

---

4. मार्च सन् 1987 श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक महोत्सव
5. मई सन् 1990 जम्बूद्वीप महोत्सव

इसके अतिरिक्त मार्च सन् 1992, अप्रैल 1995, सन् 2000 एवं सन् 2005 में ऐसी चार लघु पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं भी आपके सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर सम्पन्न हो चुकी हैं।

इसके अतिरिक्त सन् 2000 में दिल्ली में त्रिकाल चौबीसी की 72 रत्न प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई पुनः सन् 2002 और सन् 2003 में आपके प्रयाग एवं कुण्डलपुर प्रवास के मध्य दो पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ हस्तिनापुर में सम्पन्न हुईं जिसमें पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ।

➢चातुर्मास कहाँ-कहाँ–

सन् 1952 में गृहपरित्याग के बाद लगभग 4-5 माह तक तो ब्रह्मचारिणी अवस्था में कु. मैना ने बिताया चूँकि उस समय काफी संघर्ष एवं सामाजिक विरोधों के कारण वे दीक्षा न ले सकी थीं पुनः उचित अवसर पाते ही सन् 1953 में चैत्र कृ. एकम् को उन्होंने क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की तथा सन् 1956 में वैशाख कृ. दूज को आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर देश के विभिन्न अंचलों में पदयात्रा करते हुए खूब धर्मप्रभावना की एवं अद्यावधि कर रही हैं। उनके अब तक (सन् 1953 से 2008 तक) 56 चातुर्मास निम्न स्थानों पर सम्पन्न हो चुके हैं–

क्रमः	स्थानम्	ई.वर्षम्
1.	**टिकैतनगरे उत्तर प्रदेशे–क्षुल्लिकावस्थायाम्**	**1953**
2.	**जयपुर–राजस्थाने, क्षुल्लिकावस्थायाम्**	**1954**
3.	**म्हसवड–महाराष्ट्रे–क्षुल्लिकावस्थायाम्**	**1955**
आर्यिकावस्थायाः पश्चात्–		
4.	**जयपुरे–खानिया राजस्थाने**	**1956**
5.	**जयपुरे–खानिया**	**1957**
6.	**ब्यावरे–राजस्थाने**	**1958**
7.	**अजमेरे– ''**	**1959**
8.	**सुजानगढ़े ''**	**1960**
9.	**सीकरे ''**	**1961**
10.	**लाडनूं नगरे ''**	**1962**
11.	**कलकत्ता–प. बंगाले**	**1963**
12.	**हैदराबादे–आन्ध्रप्रदेशे**	**1964**
13.	**श्रवणबेलगोला तीर्थे–कर्नाटके**	**1965**
14.	**सोलापुरे–महाराष्ट्रे**	**1966**
15.	**सनावदनगरे–मध्यप्रदेशे**	**1967**

क्रम	स्थान	ईसवी सन्
1.	टिकैतनगर (उ.प्र.) (क्षुल्लिका अवस्था में)	1953
2.	जयपुर (राज.) (क्षुल्लिका अवस्था में)	1954
3.	म्हसवड़ (महा.) (क्षुल्लिका अवस्था में)	1955
4.	जयपुर खानिया (आर्यिका अवस्था से आगे के 50 चातुर्मास)	1956
5.	जयपुर खानिया	1957
6.	ब्यावर (राज.)	1958
7.	अजमेर (राज.)	1959
8.	सुजानगढ़ (राज.)	1960
9.	सीकर (राज.)	1961
10.	लाडनूं (राज.)	1962
11.	कलकत्ता (प. बंगाल)	1963
12.	हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)	1964
13.	श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)	1965
14.	सोलापुर (महा.)	1966
15.	सनावद (म.प्र.)	1967

16.	**प्रतापगढ़े राजस्थाने**	**1968**
17.	**जयपुरे राजस्थाने**	**1969**
18.	**टोंक नगरे राजस्थाने**	**1970**
19.	**अजमेरे ''**	**1971**
20.	**दिल्ली नगर्यां–पहाड़ीधीरज–उपनगरे**	**1972**
21.	**दिल्ली नगर्यां नजफगढ़े**	**1973**
22.	**दिल्ली नगर्यां लालमन्दिरे**	**1974**
23.	**हस्तिनापुरे–प्राचीन मंदिरे उत्तरप्रदेशे**	**1975**
24.	**खतौली नगरे ''**	**1976**
25.	**हस्तिनापुरे प्राचीन मन्दिरे उ.प्रदेशे**	**1977**
26.	**हस्तिनापुरे '' ''**	**1978**
27.	**दिल्ली–मोरीगेट उपनगरे**	**1979**
28.	**दिल्ली–कम्मोजी धर्मशालायाम्**	**1980**
29.	**हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे**	**1981**
30.	**दिल्ली कूचासेठ स्थाने**	**1982**
31.	**हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे**	**1983**

16.	प्रतापगढ़ (राज.)	1968
17.	जयपुर (राज.)	1969
18.	टोंक (राज.)	1970
19.	अजमेर (राज.)	1971
20.	दिल्ली (पहाड़ी धीरज)	1972
21.	दिल्ली (नजफगढ़)	1973
22.	दिल्ली (लाल मंदिर)	1974
23.	हस्तिनापुर (बड़ा मंदिर)	1975
24.	खतौली (उ.प्र.)	1976
25.	हस्तिनापुर (बड़ा मंदिर)	1977
26.	हस्तिनापुर (बड़ा मंदिर)	1978
27.	दिल्ली (मोरीगेट)	1979
28.	दिल्ली (कम्मो जी की धर्मशाला)	1980
29.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1981
30.	दिल्ली (कूचा सेठ)	1982
31.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1983

32.	**हस्तिनापुरे ''**	**1984**
33.	**हस्तिनापुरे ''**	**1985**
34.	**हस्तिनापुरे ''**	**1986**
35.	**हस्तिनापुरे ''**	**1987**
36.	**हस्तिनापुरे ''**	**1988**
37.	**हस्तिनापुरे ''**	**1989**
38.	**हस्तिनापुरे ''**	**1990**
39.	**सरधना नगरे उत्तरप्रदेशे**	**1991**
40.	**हस्तिनापुरे–जम्बूद्वीपे**	**1992**
41.	**अयोध्यायाम् उत्तरप्रदेशे**	**1993**
42.	**टिकैतनगरे बाराबंकी उत्तरप्रदेशे**	**1994**
43.	**हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे**	**1995**
44.	**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे महाराष्ट्रे**	**1996**
45.	**दिल्ली–चांदनीचौक उपनगरे**	**1997**
46.	**हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे**	**1998**
47.	**दिल्ली–कनाटप्लेस उपनगरे**	**1999**
48.	**दिल्ली–प्रीतविहारे**	**2000**

32.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1984
33.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1985
34.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1986
35.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1987
36.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1988
37.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1989
38.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1990
39.	सरधना (मेरठ) उ.प्र.	1991
40.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1992
41.	अयोध्या	1993
42.	टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.	1994
43.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1995
44.	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (महा.)	1996
45.	दिल्ली-चाँदनी चौक	1997
46.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	1998
47.	राजाबाजार, कनॉट प्लेस (दिल्ली)	1999
48.	दिल्ली-प्रीतविहार	2000

49. दिल्ली–अशोकविहारे 2001
50. प्रयागे ऋषभदेवदीक्षास्थल्यां 2002
51. कुण्डलपुरे नालंदा–विहारे 2003
52. कुण्डलपुरे नालंदा–विहारे 2004
53. हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे 2005
54. हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे 2006
55. हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे 2007
56. हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे 2008

एतेषु प्रत्येकचतुर्मासेषु शिविराः, गोष्ठ्यः, मण्डलविधानानि प्रभृतीनि अनेकअविस्मरणीयानि प्रभावनात्मकानि वृहत्कार्याणि संपन्नान्यभवन्।

व्यक्तित्वात् कर्तृत्वं प्रति–**दीक्षया अनन्तरं शिष्याणां संग्रहं–ज्ञान–ध्यानादिकं च प्रायः सर्वे साधवः कुर्वन्ति परन्तु ज्ञानमती माता सर्वै कार्ये सह कानिचित् एवं अविस्मरणीयानि कार्याण्यकरोत् यैस्तस्या नाम युगयुगेषु इतिहासपटले अंकितं स्थास्यति।**

1. साहित्य रचनाया शुभारम्भं कठिनात् कठिनानां सरलाच्च सरलानां ग्रन्थानां निर्माणमकरोत्। भवत्याः विरचितानां ग्रन्थानां संख्या शतद्वयाप्यधिका वर्तते येषु च प्रायः द्विशतग्रन्थाः लक्षाणां संख्यासु दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानेहस्तिनापुरे स्थापितया

49.	दिल्ली-अशोकविहार	2001
50.	ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद)	2002
51.	कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	2003
52.	कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	2004
53.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	2005
54.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	2006
55.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	2007
56.	हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप स्थल)	2008

इनमें से प्रत्येक चातुर्मासों में शिविर, सेमिनार, मंडल विधान आदि अनेक अविस्मरणीय प्रभावनात्मक वृहद् कार्य सम्पन्न हुए हैं।

➢व्यक्तित्व से कृतित्व की ओर–

दीक्षा लेने के बाद शिष्यों का संग्रह, ज्ञान, ध्यान आदि तो प्रायः समस्त साधुओं का लक्ष्य होता है किन्तु ज्ञानमती माताजी ने इन कार्यों के साथ-साथ कुछ ऐसे अविस्मरणीय कार्य किए हैं जिनके द्वारा युग-युग तक उनका नाम इतिहास पटल पर अंकित रहेगा।

1. साहित्य रचना का शुभारंभ करके कठिन से कठिन और सरल से सरल ग्रंथों का निर्माण किया। आपके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या दो सौ से भी अधिक है जिनमें से लगभग दो सौ ग्रंथ लाखों की संख्या में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर में स्थापित

वीरज्ञानोदय ग्रन्थमालया प्रकाशिताः सन्ति।

2. करणानुयोगसाहित्ये वर्णितां जम्बूद्वीपरचनां पृथिव्यां मूर्तरूप दानस्य प्रेरणा वैज्ञानिकदृष्टिकोणेन निर्माणस्य क्षेत्रे सदैव अविस्मरणीया स्थास्यति। येन प्रकारेण आचार्यश्रीशान्तिसागरस्य प्रेरणया कुन्थलगिरि कुम्भोजबाहुबली इत्येतयोः क्षेत्रयोरुद्धारोऽभूत् तथैव तीर्थनिर्माणस्य क्षेत्रे भवत्याः अपि महत्वपूर्णं योगदानमस्ति। हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपरचना प्रयागे दीक्षास्थलीतीर्थस्य निर्माणं, कुण्डलपुरे नालन्दायां भव्यतीर्थस्य निर्माणं, अयोध्यायां तीर्थस्य विकासः, मांगीतुंगी तीर्थस्य विकासस्तत्र पर्वते च भगवतः ऋषभदेवस्य शताष्ट फिट उत्तुंगा प्रतिमायाश्च निर्माणस्य प्रेरणा इत्यादीनि कार्याणि भवत्याः एव विराटव्यक्तित्वेन सम्पन्नानि भवितुमशक्नुवन्।

3. प्राचीनसाहित्यस्य भगवतो महावीरस्य च सिद्धान्तानां राष्ट्रीय स्तरेण प्रसारितान् कर्तुं शुभसंकल्पपूरितं कृत्वा नारीजातेः सम्मानं बर्द्धितमकरोत्। जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिःरथस्य प्रवर्तनं द्वयशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जून मासे भारतस्य तत्कालीनप्रधानमंत्रिण्या श्रीमत्या इन्दिरागांधीमहोदयया भवत्याः प्रेरणयैव कृतमासीत्। यस्य माध्यमेन अन्तर्राष्ट्रीयस्तरे जम्बूद्वीपरचना ख्यातिं प्राप्ता।

4. शिक्षायाः क्षेत्रे भवती सम्पूर्णेजैनसमाजे स्वकीर्तिमन्तं स्थापितं चकार। भवत्याः एवं प्रेरणया दिगम्बरजैनत्रिलोकसस्थानं लघुदीर्घान् महत्वस्य च प्रादेशिकराष्ट्रीयअन्तर्राष्ट्रीयाश्च शिविरसंगोष्ठयः आयोजिताः अकरोत्।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित भी हो चुके हैं।

2. करणानुयोग साहित्य में वर्णित जम्बूद्वीप रचना को पृथ्वी पर मूर्तरूप देने की प्रेरणा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्माण के क्षेत्र में सदैव अविस्मरणीय रहेगी। जिस प्रकार आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज की प्रेरणा से कुंथलगिरि और कुम्भोज बाहुबली तीर्थ का उद्धार हुआ है, उसी प्रकार तीर्थ निर्माण के क्षेत्र में आपका भी भरपूर योगदान है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना, प्रयाग में दीक्षास्थली तीर्थ का निर्माण, कुण्डलपुर (नालंदा) में भव्य तीर्थ का निर्माण, अयोध्या तीर्थ का विकास, मांगीतुंगी तीर्थ का विकास एवं वहाँ पर्वत पर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा आदि कार्य आपके ही विराट व्यक्तित्व के द्वारा सम्पन्न हो सके हैं।

3. प्राचीन साहित्य एवं भगवान महावीर के सिद्धान्तों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित करने का शुभ संकल्प पूरा करके नारी जाति का सम्मान बढ़ाया। जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन 4 जून 1982 को भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आपकी प्रेरणा से ही किया था, जिसके माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जम्बूद्वीप रचना को ख्याति प्राप्त हो सकी है।

4. शिक्षा के क्षेत्र में आपने सम्पूर्ण जैन समाज में अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। आपकी प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने छोटे-बड़े प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिविर-सेमिनारों के आयोजन भी सम्पन्न किए हैं।

5. भक्तिसंगीतक्षेत्रे तु भवती एकं नवीनमुदाहरणं प्रस्तुतं कृत्वा नवां दिशमदात्। इन्द्रध्वजकल्पद्रुमत्रिलोकसर्वतोभद्रसिद्धचक्रविश्वशान्तिमहावीरविधानानि वृहतां पूजनविधानानां रचनां कृत्वा भवती जैनसमाजस्य उपरि महान्तमुपकारमकरोत्। विंशतित्रिंशत् वर्षाणि पूर्वं तु एकस्य सिद्धचक्र विधानस्यैवानुष्ठानं जनाः अकार्षुः। परन्तु यदाप्रभृति माताश्रीः एतानि विधानान्यरचयत् तदा समयात् सम्पूर्णे एव भारते प्रायः प्रतिदिनमेव विधानानि सम्पन्नानि भवन्ति। येषां माध्यमेन जैनसमाजस्य सहस्रशो भक्ताः धार्मिकविधानानामनुष्ठानानि कृत्वा पुण्यानि गृह्णन्ति। स्वयं गायन वादनकलायाः आस्वादनेन रहिताः अपि छन्दशास्त्रस्य तलस्पर्शिअध्ययनं भवत्या कवित्वप्रतिभायाः परिचयं ददाति। एकस्मिन् विधाने प्रायः सप्तति–अशीति छन्दसां प्रयोगं कृत्वा चतुरनुयोगरूपांजिनवाणीमेव तेषु निबद्धामकरोत्। यदा कदापि कस्मिन्नगरे एतेषां विधानानां संगीतमयो ध्वनिः मुखरिता भवति तस्मिन् समये महतामपि नास्तिकानां पदानि तत्रैव वृद्धिंगतानि भवन्ति। न जानामि कति सुप्तहृदयानि तदा जागृतानि भवन्ति।

मातुस्तपोभूम्याः हस्तिनापुरस्य संक्षिप्तं ऐतिहासिकवर्णनम्–**अस्मात् समयात् कोटाकोटिवर्षेभ्यः पूर्वं तृतीयकाले इन्द्राज्ञया धनपतिः कुबेरः तीर्थंकरादित्रिषष्टिशलाकामहापुरुषेभ्यः अयोध्यासम्मेदशिखरं कुण्डलपुरपावापुर– उज्जयिनीहस्तिनापुरादीनां नगरीणां रचनां चकार। अनादिकालीनपरम्परानुसारेण अयोध्या सर्वदैव तीर्थंकराणां जन्मभूमिरासीत्। सम्मेदशिखरं च निर्वाणभूमिरासीत्। परन्तु वर्तमाने हुण्डावसर्पिणीकालस्य प्रभावात् केचित्तीर्थंकराः अन्यत्र**

---

5. भक्ति-संगीत के क्षेत्र में तो आपने एक नई मिशाल ही कायम करके दिखाई है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, तीनलोक, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान आदि वृहद् पूजन विधानों की रचना करके आपने जैन समाज के ऊपर महान उपकार किया है। आज से 20-30 वर्ष पूर्व तो एक सिद्धचक्र विधान का ही लोग यदा-कदा अनुष्ठान कर लिया करते थे किन्तु जब से पूज्य ज्ञानमती माताजी ने इन विधानों को रचा है, तब से भारत भर में लगभग प्रतिदिन विधानों का तांता सा लगा रहता है, जिसके माध्यम से जैन समाज के हजारों लोग धार्मिक अनुष्ठानों को करते रहते हैं। स्वयं गायन-वादन कला के आस्वाद से रहित होते हुए भी छन्दशास्त्र का तलस्पर्शी अध्ययन आपकी कवित्व शक्ति का परिचय देता है। एक-एक विधानों में लगभग 70-80 छंदों का प्रयोग करके चतुरनुयोग रूप जिनवाणी को ही उनमें निबद्ध कर दिया है। जब किसी नगर या शहर में इन विधानों की संगीतमयी ध्वनि मुखरित होती है, तब उस समय अच्छे-अच्छे नास्तिकों के कदम भी उसी ओर बढ़ने लग जाते हैं, न जाने कितने सुप्त हृदय जागृत हो जाते हैं।

➢माताजी की तपोभूमि हस्तिनापुर का संक्षिप्त ऐतिहासिक वर्णन–

आज से कोड़ाकोड़ी वर्षों पूर्व तृतीय काल में इन्द्र की आज्ञा से धनपति कुबेर ने तीर्थंकर आदि त्रेसठ शलाका महापुरुषों के लिए अयोध्या, सम्मेदशिखर, कुण्डलपुर, पावापुर, उज्जयिनी, हस्तिनापुर आदि नगरियों की रचना की थी। अनादिकालीन परम्परा के अनुसार अयोध्या हमेशा ही तीर्थंकरों की जन्मभूमि रही है और सम्मेदशिखर निर्वाणभूमि रही है किन्तु वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल के

जन्मग्रहणं चक्रुः। मोक्षं च अन्यत्र क्षेत्रेषु प्राप्तवन्तः। एतदेव कारणमस्ति यत् हस्तिनापुरस्य पुण्यभूमिरपि तीर्थंकरजन्मनगरीं भवितुं सौभाग्यं प्राप्नोत्।

तीर्थंकराः शान्तिनाथः कुन्थुनाथः अरनाथश्च एते त्रयस्तीर्थंकराः जन्म गृहीत्वा एतस्यां भूम्यामेव एकच्छत्रं राज्यमकार्षुः। एते त्रयः एव चक्रवर्तिनः कामदेवाश्चासन्। हस्तिनापुरं तेषां राजधान्यासीत्। चक्रवर्तिनो वैभवं भुंक्त्वा पुनस्तस्य त्यागं कृत्वा जैनेश्वरीं दीक्षां गृहीत्वा घातीनामघातीनां च कर्मणां क्षयं कृत्वा सम्मेदशिखरपर्वतात् निर्वाणं प्राप्तवन्तः।

एतेभ्योऽपि पूर्वं प्रथमतीर्थंकरः ऋषभदेवोऽपि वर्षीयउपवासस्यानन्तरं हस्तिनापुरनगर्या–माहारचर्यायै आगच्छत्। राजा श्रेयांससोमप्रभौ स्व पूर्वभवस्य जातिस्मरणेन तस्मै विधिवत् नवधाभक्तिपूर्वकं प्रतिग्रहणं कृत्वा इक्षुरसस्याहारमदत्ताम्। अद्यापि तद्दिनं अक्षयतृतीया नाम्ना जगत्प्रसिद्धं वर्तते। अद्यापि हस्तिनापुरे तत्समीपवर्तिषु क्षेत्रेषु इक्षोः सघना कृषिर्दृश्यते। येनात्र प्राप्तानां यात्रिणां मुखानि अनायासेनैव मधुराणि भवन्ति।

एतेन प्रकारेण अयोध्या इव हस्तिनापुरस्यापि प्राचीनता सिद्ध्यति। बाढम्! कालस्य प्रभावात् एताः नगर्यः अधुना लघ्व्यः जाताः। एतासां समीपवर्ती भूभागः पर्वतैः नदीभ्यः अन्यप्रदेशेभ्यश्च विभक्तोऽभवत्। अत्रैव अकम्पनाचार्यादिषु सप्तशतेषु मुनिषु राजा बलिः उपसर्गमकरोत्। विष्णुकुमार मुनिरुपसर्गस्य निवारणं विधाय रक्षाबन्धनस्य पर्वणः शुभारम्भमकरोत्।

प्रभाव से कुछ तीर्थंकरों ने अन्यत्र जन्म लिया और मोक्ष भी अन्य क्षेत्रों से प्राप्त किया। यही कारण है कि हस्तिनापुर की पुण्यभूमि को भी तीर्थंकर की जननी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ इन तीर्थंकरत्रय ने जन्म लेकर इसी भूमि पर एकछत्र राज्य किया, ये तीनों ही चक्रवर्ती और कामदेव पद के धारी हुए। हस्तिनापुर इनकी राजधानी थी। चक्रवर्ती का वैभव भोगकर पुनः उसका त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर घाति-अघाति कर्मों का नाश करके सम्मेदशिखर पर्वत से निर्वाण प्राप्त किया।

इससे भी पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव भी वर्षोपवास के अनंतर हस्तिनापुर नगरी में आहार चर्या के लिए आए थे, राजा श्रेयांस और सोमप्रभ ने अपने पूर्वभव के जातिस्मरण हो जाने से उन्हें विधिवत् नवधाभक्तिपूर्वक पड़गाहन कर इक्षुरस का आहार दिया। आज भी वह पवित्र दिवस अक्षयतृतीया के नाम से जगप्रसिद्ध है। हस्तिनापुर और उसके चारों ओर आज भी इक्षु (गन्ने) की सघन खेती देखी जाती है, जिससे यहाँ पर आने वाले हर यात्री का मुँह अनायास ही मीठा हो जाता है।

इस प्रकार अयोध्या के समान ही हस्तिनापुर की भी प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। हाँ! काल प्रभाव से ये नगरियाँ अब छोटी हो गई हैं। इनके आसपास का बहुभाग पर्वत, नदी तथा अन्य प्रदेशों में विभक्त हो गया है। यहीं पर अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों पर राजा बलि ने उपसर्ग किया था। विष्णुकुमार मुनि ने उपसर्ग का निवारण कर रक्षाबंधन पर्व का शुभारंभ किया

अद्यापि जनाः श्रावणशुक्लपूर्णिमायाः दिवसे परस्परं रक्षासूत्रं बद्ध्वा मान्यतां ददति। अभिनन्दनादिपंचशतमुनयो राज्ञः आज्ञया अत्रैव तैलयन्त्रे पीडिताः अभवन्, सेमरवृक्षस्य कार्पासं गुरुदत्तमुनेः सर्वतः लिप्त्वा भयंकरस्याग्नेरूपसर्गोऽभवत्। एवमेवानेकेतिहासाः अनेन तीर्थक्षेत्रेण संयुक्ताः विद्यन्ते। अतः एतत् क्षेत्रमैतिहासिकं तीर्थक्षेत्रं मान्यते।

भवितव्यतायाः वार्ता भवति। कोटाकोटिवर्षाणां पूर्वं यं सुदर्शनमेरुं पर्वतं हस्तिनापुरस्य राजा श्रेयांसः स्वप्नेऽपश्यत्, तं साकारं कर्तुं श्रेयः पूज्यायै मात्रे ज्ञानमत्यै प्राप्तम्।

दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य स्थापना–**आर्यिका संघस्य मंगलं पदार्पणं आषाढ–शुक्लएकादश्यां दिल्ली नगर्याः पहाड़ीधीरज इति नाम्नः प्रसिद्धे स्थानेऽभवत्। 1972 वर्षस्य च चतुर्मासः पहाड़ी धीरज स्थानस्य ''नन्हेमल घमण्डीलालस्य धर्मशालायां'' सम्पन्नोऽभवत्। दिल्ली नगर्यां आर्यिकाश्रियः ज्ञानमत्याः एष प्रथमः चतुर्मास ऐतिहासिकोऽभवत्। यतो हि** ''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थानस्य'' **द्वासप्तत्यधिक–एकोनविंशतिशततमे वर्षे पहाड़ीधीरजस्थाने स्थापनाऽभवत्। यस्य माध्यमेन अद्य देशविदेशेषु च धर्मप्रभावना संपाद्यते। हस्तिनापुरे जम्बूद्वीप रचनायाः निर्माणं, ग्रन्थानां प्रकाशनं, सम्यग्ज्ञानमासिकपत्रिकायाः प्रकाशनं, सम्पूर्णे देशे शिक्षणप्रशिक्षणशिविराणां राष्ट्रीयअन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठीनामायोजनं भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षाभूमौ प्रयागे भगवत् ऋषभदेवस्य दीक्षास्थली इत्यस्य तीथक्षेत्रस्य निर्माणं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे 'नंद्यावर्त महल'**

जिसे आज भी लोग श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन परस्पर में रक्षासूत्र बांधकर मनाते हैं, अभिनंदन आदि पाँच सौ मुनियों को राजा की आज्ञा से यहीं पर घानी में पेला गया था, सेमल की रुई गुरुदत्त मुनि के शरीर में लपेटकर भयंकर अग्नि का उपसर्ग हुआ। इस प्रकार अनेकों इतिहास यहाँ से जुड़े हुए होने से यह क्षेत्र ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र माना जाता है।

होनहार की बात होती है। कोड़ाकोड़ी वर्षों पूर्व जिस सुदर्शन मेरु पर्वत को हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने अपने स्वप्न में देखा था, उसे साकार करने का श्रेय पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को मिला।

➢दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना–

आर्यिका संघ का मंगल पदार्पण आषाढ़ शु.11 को दिल्ली के पहाड़ी धीरज पर हुआ और सन् 1972 का चातुर्मास पहाड़ी धीरज की ''नन्हेंमल घमण्डीलाल जैन धर्मशाला'' में सम्पन्न हुआ। दिल्ली में आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का यह प्रथम चातुर्मास अपने आप में ऐतिहासिक रहा क्योंकि **''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान''** की स्थापना सन् 1972 में ही पहाड़ी धीरज पर हुई, जिसके माध्यम से आज देश-विदेश में विस्तृत धर्म प्रभावना हो रही है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण, ग्रंथों का प्रकाशन, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन, पूरे देश में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों एवं राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों के आयोजन, भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि प्रयाग में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ का निर्माण, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल नाम से तीर्थ का निर्माण, अयोध्या, मांगीतुंगी

नाम्ना तीर्थस्य निर्माणं, अयोध्यामांगीतुंगी आदीनां तीर्थानां विकासाः आदीनि विभिन्नानि कार्याणि अनेनैव पंजीकृतेन संस्थानेन हस्तिनापुर कार्यालयेन संचालितानि क्रियन्ते।

हस्तिनापुरतीर्थविकासस्य प्रथमचरणम्–**अत्र इदं वक्तव्यमुचितं भविष्यति यत् 1972 वर्षे दिल्लीपहाड़ीधीरज स्थाने डॉ. कैलाश चन्द्रः लाला श्यामलालः वैद्यः शान्तिप्रसादः, कैलाशचन्द्र करोलबाग निवासी आदीनां महानुभावानां सहयोगेन एकस्याः संस्थायाः स्थापना जाता, यस्याः नाम दिगम्बर जैनत्रिलोकशोधसंस्थानं इति कृतम्। तस्यैव संस्थानस्य नाम्न हस्तिनापुरे प्रारम्भिकभूमिः क्रीताऽभवत्।**

पूज्या माता पुनः चतुःसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्रं प्रति विहारमकरोत्।

पूज्यायाः मातुः समीपे तदानीं ब्रह्मचारिणोमोतीचन्द्रादतिरिक्तं कोऽपि पुरुषार्थी शिष्यो नासीत्। रवीन्द्रोऽपि तदानीं गृहं गतः आसीत्। अधुना ब्र. मोतीचन्द्रेण सह मेरठ नगरस्य श्रेष्ठिनः सुकुमालचन्द्रस्य मवाना नगरस्य च श्रेष्ठिनः बूलचन्द्रस्य लक्ष्मीचन्द्रस्य च सहयोगः सुलभः आसीत्। पूज्याया मातुः आशीर्वादस्य तत्परतायाश्चेदं फलमासीत यत् हस्तिनापुरे तीर्थक्षेत्रे जैनमन्दिरात् अर्धफर्लांग दूरे 'नसिया' मार्गे तस्याः भूमेः केन्द्रविन्दौः मध्ये सुदर्शनमेरोः पर्वतस्य चतुःसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जुलाई मासे शिलान्यासं कारयित्वा माता निर्वाणोत्सवस्य निमित्तेन पुनः दिल्लीं प्रति विहारमकरोत्। तदापर्यन्तं आचार्यधर्मसागरस्य संघोऽपि दिल्ल्यां पदार्पणमकरोत्। आचार्यसंघेन सहैव माताऽपि दिल्ली

आदि तीर्थों के विकास आदि विभिन्न कार्य इसी रजिस्टर्ड संस्थान द्वारा हस्तिनापुर कार्यालय से संचालित किए जाते हैं।

➢हस्तिनापुर तीर्थ विकास का प्रथम चरण–

यहाँ यह बता देना उचित होगा कि सन् 1972 में दिल्ली पहाड़ी धीरज पर डॉ. कैलाशचंद जी, लाला श्यामलाल जी, वैद्य शान्तिप्रसाद जी, कैलाशचंद जी करोलबाग आदि महानुभावों के सहयोग से एक संस्था की स्थापना की गई थी, जिसका नाम ''दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान'' रखा गया। उसी संस्थान के नाम से हस्तिनापुर की प्रारंभिक भूमि क्रय की गई।

पूज्य माताजी ने पुनः सन् 1974 में हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र की ओर विहार किया।

पूज्य माताजी के पास फिलहाल उस समय ब्र. मोतीचन्द के सिवाय कोई पुरुषार्थी शिष्य नहीं था। रवीन्द्र जी भी उस समय घर गए हुए थे। अब मोतीचंद जी के साथ मेरठ के श्रेष्ठी बाबू सुकुमारचंद जी व मवाना के सेठ बूलचंद जी, लक्ष्मीचंद जी आदि लोगों का सहयोग मिलने लगा। पूज्य माताजी के आशीर्वाद और लगन का फल रहा कि हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर ही मंदिर से आधा फर्लांग दूर नसिया मार्ग पर उस भूमि के केन्द्र बिन्दु से बीचोंबीच में सुदर्शन मेरु पर्वत का जुलाई 1974 में शिलान्यास करवाकर माताजी निर्वाणोत्सव के निमित्त से पुनः दिल्ली विहार कर गईं। तब तक आचार्य धर्मसागर जी महाराज का संघ भी दिल्ली पदार्पण कर चुका था। आचार्यसंघ के साथ

नगर्यां लालमन्दिरे चतुर्मासस्य स्थापनामकरोत्। विभिन्नानां आचार्यमुनीनां च सान्निध्ये राजधान्याश्चतुर्णां सम्प्रदायानां सहयोगेन भगवतो महावीरस्य पंचविंशतिशततमस्य निर्वाणोत्सवः राजनेतृणां च सहकारेण आशातीताभिः सफलताभिः सार्धं संपन्नोऽभवत्। पूज्यः ऐलाचार्यो विद्यानन्दः केषुचित् विषयेषु मात्रा सह परामर्शमकरोत् अकथयच्च मातः! हस्तिनापुरे तीर्थक्षेत्रे अस्याः रचनायाः महत्ता अत्यधिकं वर्धिष्यति। सौभाग्यात् आचार्यप्रवरस्य धर्मसागरस्य संघः ऐलाचार्य विद्यानन्दश्च पंचसप्तत्यधिक एकोनविंशतिशततमे वर्षे फरवरी मासे हस्तिनापुरे समागताः। महत्याश्चरुचिपूर्वकं रचनास्थले भगवतो महावीरस्य प्रतिमायाः स्थापनाकाले ऐलाचार्यश्रीः प्रतिमायाः अधोभागेऽचलयन्त्रं स्थापयामास। तत् लघुमहावीरमन्दिरं जम्बूद्वीप रचनायाः चतुर्मख्यामुन्नतौ अनुपमप्रभावशाली च सिद्धमभूत्। आचार्यधर्मसागरस्य संघ हस्तिनापुरे प्रायः चतुरो मासान् अतिष्ठत्। सरधना निवासिनश्च तस्मिन् समये तत्परतया वैयावृत्तेः भोजनस्थानानि च योजयित्वा आहारदानस्य लाभं प्राप्नुवन्। आचार्यधर्मसागरो यदा हस्तिनापुरात् मंगलविहारं कर्तुं तत्परोऽभूत्तदा तस्मिन् समये मात्रे आशीर्वादं प्रदाय जम्बूद्वीपरचनाया निमित्तं हस्तिनापुरे एवं स्थातुं प्रेरणामदात्। अधुना मातुः संघे आर्यिका रत्नमती माताऽतिष्ठत्। आर्यिकारत्नमती माता ब्रह्मचारिभिः ब्रह्मचारिणीभिः सहैव माता हस्तिनापुरस्य प्राचीनमन्दिरेऽतिष्ठत्। ब्र. मोतीचन्द्रः ब्र. रवीन्द्रकुमारश्च यौ अस्याः रचनायाः कर्तारौ धर्तारौ मूलरूपौ च आस्तां तौ परिधेः कक्षे न्यवसताम्। माताश्रीः वयं च ब्रह्मचारिण्यः

ही माताजी ने भी दिल्ली के लाल मंदिर में चातुर्मास स्थापना की। विभिन्न आचार्य और मुनियों के सानिध्य में राजधानी में चारों सम्प्रदायों की ओर से भगवान महावीर 2500वाँ निर्वाण महोत्सव राजनेताओं के सहयोग से आशातीत सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ। पूज्य ऐलाचार्य श्री विद्यानन्दि महाराज कई विषयों में माताजी से परामर्श करते-करते अक्सर कहते कि माताजी! हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पर इस रचना की महत्ता अत्यधिक बढ़ेगी। सौभाग्य से आचार्यश्री धर्मसागर जी का संघ और एलाचार्य विद्यानन्दि जी महाराज भी फरवरी 1975 में हस्तिनापुर पधारे और बड़ी रुचिपूर्वक रचना स्थल पर भगवान महावीर प्रतिमा की स्थापना होते समय आचार्यश्री ने प्रतिमा के नीचे अचलयन्त्र स्थापित किया। वह छोटा सा महावीर मंदिर जम्बूद्वीप रचना की चउँमुखी उन्नति में अनुपम प्रभावशाली सिद्ध हुआ। आचार्य श्री धर्मसागर जी का संघ हस्तिनापुर में लगभग 4 महीने रहा। सरधना के निवासियों ने उस समय बड़ी तत्परता से वैयावृत्ति और चौके लगाकर आहार दान का लाभ लिया। आचार्यश्री जब हस्तिनापुर से मंगल विहार करने लगे, उस समय माताजी को आशीर्वाद प्रदान करके जम्बूद्वीप रचना के निमित्त हस्तिनापुर में ही रहने की प्रेरणा दी। अब माताजी के संघ में आर्यिका श्री रत्नमती माताजी रहीं। आर्यिका रत्नमती माताजी और ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों सहित माताजी तीर्थक्षेत्र के बड़े मंदिर में रहती थीं। ब्र. मोतीचन्द जी, ब्र. रवीन्द्र कुमार जी, जो इस रचना के कर्ताधर्ता और नींव थे, वे लोग मंदिर बाउण्ड्री के बाहर कमरे में रहते और माताजी तथा संघस्थ हम सभी ब्रह्मचारिणियाँ

मन्दिरस्य कक्षेषु अतिष्ठन्। मन्दिरात् जम्बूद्वीपस्थलपर्यन्तं गमने वृक्षाणां गुल्मानां च सघनताया कारणेन भयं प्रतीतमभवत्। वयमपि कदापि एकाकिन्यः अत्र आगन्तुं साहसं नाकुर्म। मात्रा सहैव प्रतिदिनं एकस्य वा द्वयोः दिनयोः पश्चात् अत्रागच्छाम।

जम्बूद्वीपस्थले केवलं एकस्य प्रहरिणः परिवारोऽवसत्। कार्यालयस्य प्रबन्धकस्य निवासाय जम्बूद्वीपस्थले कस्यापि निर्माणस्य अभावात् ते अपि प्राचीनात् मन्दिरात् बहिः एकस्मिन् कक्षे एव न्यवसन्। बाबू सुकुमालचन्द्र संघं प्रति विशेषरूपेण ध्यानयुक्तः आसीत्। आवश्यकतानुसारेण सर्वा सुविधाश्च प्रादात्। तस्य पत्नी प्रतिमाधारिणी व्रतयुक्ता महिलाऽऽसीत्। यदापि सा हस्तिनापुरमागच्छति सा सर्वदा आहारदानस्य वैयावृत्तेश्च भावैः मातुः सेवामकरोत्। यदा कदा स्वभोजनस्थानमायोजयति कदाचिच्च संघस्य पाकशालामागत्याहारं ददाति।

मातुः निमित्तात् इदानीं हस्तिनापुरे राजस्थानकर्नाटकगुजरात आंध्रउत्तरप्रदेशआदि सर्वेभ्यः प्रदेशेभ्यः जनाः आगन्तुमारभन्त्। पृष्ठे विस्मृतं च क्षेत्रमधुना प्रकाशे आगन्तुमशक्नोत्। क्षेत्रस्य पदाधिकारिणः सदस्याश्च बहुप्रसन्नाः आसन्। ते अकथयन् मातः! भवत्याः निमित्तात् अस्माकं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रः अवश्यमेव शीघ्रं पर्यटककेन्द्रो भविष्यति। क्षेत्रस्य मन्दिरे दानस्य राशिस्त्वस्माकं निवासात् वृद्धिगतैव भवति, यदा युष्माकं जम्बूद्वीपो निर्मितो भविष्यति तु विदेशिपर्यटकानामप्यागमनं, गमनं च भविष्यति तदा च हस्तिनापुरोऽयं जैन भूगोलस्यानु–संधानस्य विशेषकेन्द्रो भविष्यति। बहिः स्थानात् आगतस्य प्रत्येकदर्शनार्थिनो मुखात् इदमेव

मंदिर के कमरों में रहते थे। मंदिर से जम्बूद्वीप स्थल तक जाने में घने जंगल के कारण भय प्रतीत होता था। हम लोग भी कभी अकेले यहाँ तक आने की हिम्मत नहीं कर पाते थे। माताजी के साथ लगभग प्रतिदिन या एक-दो दिन बाद आते थे।

जम्बूद्वीप स्थल पर मात्र एक चौकीदार का परिवार रहता था। ऑफिस के मैनेजर के रहने के लिए स्थल पर अभी तक कोई निर्माण नहीं हो सकने के कारण वे भी बड़े मंदिर में ही बाहर के एक कमरे में रहते थे। बाबू सुकुमारचंद जी संघ का विशेष ध्यान रखते और आवश्यकतानुसार सारी सुविधाएँ भी प्रदान करते थे। उनकी ध.प. प्रतिमाधारी व्रतिक महिला थीं वे जब भी हस्तिनापुर आतीं, हमेशा आहारदान तथा वैयावृत्ति के भावों से माताजी की सेवा करतीं। कभी स्वयं अपना चौका लगातीं और कभी संघ के चौके में आकर आहार देतीं।

पूज्य माताजी के निमित्त से अब हस्तिनापुर में राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात, आसाम और उत्तरप्रदेश सभी ओर से लोग आने लगे। पिछड़ा और विस्मृत क्षेत्र अब प्रकाश में आने लगा। तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य बड़े प्रसन्न होते और कहते कि माताजी! आपके निमित्त से हमारा हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र अवश्य ही शीघ्र टूरिस्ट सेण्टर बन जाएगा। इस क्षेत्र के मंदिर में दान की रकम तो हमारी बढ़ती जा रही है, आपका जम्बूद्वीप बन जाने पर तो विदेशी पर्यटकों का भी यहाँ पर आना जाना रहेगा और तब यह जैन भूगोल के अनुसंधान का विशेष केन्द्र बन जाएगा। बाहर से आने वाले

श्रूयते यत् वयं मेरठसरधनापर्यन्तं तु सदैव व्यापारिकनिमित्ताद् आगच्छामः परन्तु हस्तिनापुरस्य दर्शनं कदापि नाकुर्म। ज्ञानमत्याः मातुः दर्शनात् वयं द्विगुणितं लाभं प्राप्नुमः इयं च प्रसन्नतायाः वार्ताऽस्ति। माता कदापि कमपि जम्बूद्वीपस्य रचनायै अन्येभ्यश्च कस्मैचिन्निर्माणाय धनस्य वार्ता नाकथयत्। यतो हि माता महति मन्दिरे एव अतिष्ठत् अतएव प्रत्येकयात्रिणः स्वयमेव दानस्य राशिमयच्छन्। स्वेच्छानुसारेण जम्बूद्वीप रचना निर्माणार्थमपि दानं प्रायच्छन्। जम्बूद्वीपस्थले सुमेरुपर्वतस्य निर्माणकार्यं यथाशक्ति प्रगतिशीलमासीत्। अत्रैकस्य कार्यालयस्य आवश्यकता अन्वभवत्। येन निर्माणस्य गतिविधिः सुचारुरूपेण सञ्चालयितुं नाशक्नोत्।

1975 वर्षे कार्यालयस्य मूलं निक्षिप्त, केषुचित् दिनेषु च सः निर्मितोऽभूत्। तस्मात् समयात् आरभ्य अद्यावधिः तस्य कार्यालयस्य गतिविधिभिः लघूनि महान्ति वाऽऽयोजनानि सफलानि जायन्ते। संस्थानस्य प्रबन्धकः कार्यालये तिष्ठति द्वौ च संघस्थौ ब्रह्मचारिणौ मोतीचन्द्रः रवीन्द्र कुमारश्च प्रातः कालादारभ्य सायं पर्यन्तं स्थले निर्माणादीनां गतिविधिं समीक्षेते, रात्रौ च शयनार्थं महति मन्दिरे एव अगच्छताम्। अहं च प्रातःकाले पूज्यया मात्रा सहैव महतो मन्दिरात् पूजनसामग्रीं जलघटे च शुद्धं जलं नीत्वा मन्दिरस्य च उद्घाटनकुंजिकां गृहीत्वा जम्बूद्वीपस्थलं आगच्छम्। यतो हि वयं सर्वे भगवतो महावीरस्य मन्दिरे एव अभिषेकं पूजनं च अकुर्म। मात्रे प्रारम्भादेव धार्मिकानुष्ठानेषु विधिविधानेषु च अधिका रूचिरासीत्। तदनुसारेणैव अस्याः सान्निध्ये सिद्धचक्रगणधरवलयशान्तिविधान ऋषिमण्डलादीनि विधानानि कृतान्यासन्।

हर दर्शनार्थी के मुँह से भी यही सुना जाता कि हम लोग मेरठ-सरधना तक तो हमेशा व्यापारिक निमित्त से आते रहते थे लेकिन हस्तिनापुर के दर्शन कभी नहीं किए थे। ज्ञानमती माताजी के दर्शन से हमें दोहरा लाभ प्राप्त हो रहा है, यह खुशी की बात है। माताजी ने कभी भी किसी से जम्बूद्वीप रचना तथा अन्य किसी निर्माण आदि के लिए पैसे की बात नहीं कही। चूँकि माताजी भी बड़े मंदिर में ही रहती थीं अतः हर यात्री वहीं पर दान की रकम देते थे और अपनी इच्छानुसार जम्बूद्वीप में भी दान देते। जम्बूद्वीप स्थल पर सुमेरुपर्वत का निर्माणकार्य यथाशक्ति चल रहा था। यहाँ पर एक ऑफिस की अत्यन्त आवश्यकता महसूस हो रही थी, जिससे निर्माण की गतिविधि सुचारूरूप से चल सके।

सन् 1975 में ऑफिस की नींव रखी गई, कुछ दिनों में वह तैयार हो गया। तब से लेकर आज तक उसी कार्यालय की गतिविधियों से छोटे-बड़े समस्त आयोजन सफल हो रहे हैं। संस्थान के मैनेजर कार्यालय में बैठते और दोनों संघस्थ ब्रह्मचारी (मोतीचन्द और रवीन्द्र कुमार) सुबह से शाम तक स्थल पर निर्माण आदि की कार्यवाही देखते और रात को सोने के लिए बड़े मंदिर में ही जाते। मैं प्रातःकाल पूज्य माताजी के साथ ही बड़े मंदिर से पूजन सामग्री और बाल्टी में शुद्ध जल तथा मंदिर की चाभी लेकर जम्बूद्वीप स्थल पर आती क्योंकि हम सभी लोग भगवान महावीर के मंदिर में ही अभिषेक-पूजन करते थे। माताजी को शुरू से ही धार्मिक अनुष्ठानों, विधि-विधानों में अधिक रुचि रही है, उसी के अनुसार हम लोगों के द्वारा भी सिद्धचक्र, गणधरवलय, शान्तिविधान, ऋषिमण्डल आदि अनेक विधान करवाए।

माता च स्वयमपि लक्षाणां मंत्राणां जाप्यमकरोत्। अहमिदमवगच्छामि यत् तस्याः तपस्यायाः मंत्राणां च प्रभावोऽस्ति यत् त्रिलोकशोध संस्थानस्य प्रत्येकानि कार्याणि निर्विघ्नानि सम्पन्नान्यभवन्।

जम्बूद्वीपस्थले सुमेरुपर्वतस्य कार्यं द्रुतगत्या प्रगतिशीलमासीत्। दिल्लीनगरस्य अभियन्तारः श्री के.सी. जैनः, के.पी. जैनः, एस.एस. गोयल रुड़कीनगरस्य च प्रसिद्धः अभियन्ता डॉ. ओ. पी. जैनः इत्येषां सर्वेषा अभियन्तृणां विशेषां मंत्रणां गृहीत्वा 101 फीट उच्चैः सुमेरुपर्वतस्य निर्माणमभूत्। यस्मिन् निम्नादारभ्यः उपरिपर्यन्तं 136 सोपानानां निर्माणमभवत्। ईषद्रक्त संगमर्मरप्रस्तरैर्निर्मितः सुमेरुपर्वतः भक्तेभ्यः विशेषः आकर्षणकेन्द्रोऽस्ति। अस्मिन् षोडशजिनप्रतिमाः सन्ति याः अकृत्रिमबिम्बाः इव एव वीतरागिण्या प्रभया युक्ताः विद्यन्ते। अयमेकोऽनुभवगम्यो विषयोऽस्ति यत् येऽपि दर्शकाः एतासां प्रतिमानां समक्षं सामीप्येन गत्वा दर्शनं कृत्वाऽऽत्मावलोकनं कुर्वन्ति तेऽभूतपूर्वां शान्तिं लभन्ते। ज्ञानमती माता अस्य पर्वतस्योपरि पाण्डुकवनं गत्वा बहुधा पर्याप्तहोरापर्यन्तं ध्यानमकरोत्। अद्यापि यदा कदा करोति। प्रातःकाले मध्याह्ने सांयकाले च त्रिषु समयेषु पर्वतोऽयं रागस्य परिवर्तनं कुर्वन्निव प्रतीयते। पूर्वदिशायां उदयं प्राप्तस्य सूर्यस्य रक्तत्वं यदा सुमेरुपर्वते पतति तदा तस्य आभा केसरीरागात् युक्ता जायते। पुरतो भद्रसालवनस्य प्रतिमायाः दर्शनकरणकाले पृष्ठतः सूर्यस्य विम्बः चमत्कृतं भामण्डलमिव प्रतीयते। मध्याह्ने 11 वादनकालात् अनन्तरं तप्तायमानस्य सूर्यस्य रश्मयः पूर्णं पर्वतं स्वर्णिमरूपेण परिवर्तितं कुर्वन्ति। पुनः सन्ध्याकाले विशेषरूपेण

माताजी स्वयं भी लाखों मंत्रों का जाप्य किया करती थीं, मैं समझती हूँ कि उनकी तपस्या एवं मंत्रों का ही प्रभाव है कि त्रिलोक शोध संस्थान के प्रत्येक कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुए हैं।

जम्बूद्वीप स्थल पर सुमेरु पर्वत का कार्य द्रुतगति से चल रहा था। दिल्ली के इंजीनियर श्री के.सी. जैन, के.पी. जैन, एस.एस. गोयल तथा रुड़की के प्रसिद्ध इंजीनियर श्री डॉ. ओ.पी. जैन की विशेष सलाह लेकर 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत का निर्माण हुआ। जिसमें नीचे से ऊपर तक 136 सीढ़ियाँ बनाई गईं। गुलाबी संगमरमर पत्थर से बना हुआ सुमेरु पर्वत भक्तों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है। इसमें 16 जिनप्रतिमाएँ हैं जो अकृत्रिम बिम्बों के समान ही वीतरागी छवि से युक्त हैं। यह एक अनुभवगम्य विषय है कि जो भी दर्शक इन प्रतिमाओं के समक्ष नजदीकी से जाकर दर्शन कर आत्मावलोकन करते हैं, उन्हें अभूतपूर्व शान्ति प्राप्त होती है। ज्ञानमती माताजी इस पर्वत के ऊपर पांडुकवन में जाकर बहुधा घण्टों ध्यान किया करती थीं। आज भी यदा-कदा करती हैं। प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों समय यह पर्वत रंग बदलता हुआ सा प्रतीत होता है। पूर्व दिशा के उगते सूर्य की लालिमा जब सुमेरु पर्वत पर पड़ती है, तब उसकी आभा केशरिया रंग से युक्त हो जाती है। सामने भद्रसाल वन की प्रतिमा का दर्शन करते हुए पीछे सूर्य का बिम्ब चमकते भामण्डल जैसा प्रतीत होता है। मध्याह्न 11 बजे के अनन्तर तप्तायमान सूर्य की किरणें उस पूरे पर्वत को स्वर्णिम रूप में परिवर्तित कर देती हैं पुनः संध्याकाल में विशेषरूप

शुक्लपक्षस्य चन्द्रिकारात्रौ धवलेन दुग्धेन इव चन्द्रमसः शीतलाः रश्मयः अभिषेकं कुर्वन्त्य इव प्रतीयन्ते। इयं न काप्यतिशयोक्तिः किन्तु सुमेरुपर्वते स्वयं सिद्धानां प्रतिमानां अतिशयः एव एवं चमत्कारं करोति।

सूर्योदयस्य सूर्यास्तस्य च मनोरमाणि दृश्यानि–**सुमेरुपर्वतस्य उपरि पाण्डुकवने आरोहणं प्रातःकाले सूर्यस्योदयस्य सांयकाले च अस्ताचलं प्रति गमनं कुर्वतः सूर्यविम्बस्य दर्शनं अतीव मनोज्ञं प्रतीयते। अन्यपर्वतीयक्षेत्राणि सन्ति किन्तु अयं विशेषं महत्वं प्रदर्शयितुं शक्यमासीत् किन्तु हस्तिनापुरेऽस्य विषयस्य प्रचारोऽस्मात् करणात् न कृतः यत् उपरि आरोहणंकाले तत्र स्थानं अत्यन्तमेव संकुचितमभवत्। यत्राधिकाः जनाः एकेन सहैव आरोढुं न शक्नुवन्ति। न च तत्र स्थितयेऽधिकं स्थानं वर्तते। अन्यथा अयं जम्बूद्वीपः आबूपर्वतः इव ख्याति प्राप्तुं समकक्षोऽभवत् ख्यातिस्तु अत्रास्त्येव। अस्मिन् रम्ये क्षेत्रे जनाः जम्बूद्वीपस्य दर्शनं कर्तुं प्रातः पंचवादनात् एव आगन्तुं प्रारब्धाः भवन्ति। मध्याह्नस्य तीव्रे आतपेऽपि सततमेव सुमेरुपर्वते यात्रिणामागमनं गमनं च चलितं भवति। रात्रावपि यात्रिणां हृदयेषु दर्शनस्यारोहणस्य च जिज्ञासा भवत्येव। किन्तु व्यवस्थायाः दृष्ट्या अन्धकारात् पूवमेव जम्बूद्वीपस्य द्वाराणि बद्धानि भवन्ति।**

सुदर्शनमेरोः पंचकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सवः–**उपर्युक्तस्य सुमेरोः निर्माणं 1979 वर्षेऽभूत्। पुनस्तस्य पंचकल्याणक महोत्सवोऽपि अप्रैल मासस्य 29 तिथेः तृतीय मई 1979 पर्यन्तं सम्पन्नोऽभवत्। अस्मात् महोत्सवात् पूर्वं ज्ञानमती माता स्वसंघेन सह दिल्ली नगर्यां**

से शुक्लपक्ष की चाँदनी रात्रि में धवल दुग्ध के समान चन्द्रमा की शीतल किरणें अभिषेक करती हुई प्रतीत होती हैं यह कोई अतिशयोक्ति नहीं बल्कि सुमेरुपर्वत में विराजमान स्वयंसिद्ध प्रतिमाओं का अतिशय ही इसे चमत्कृत कर रहा है।

➢सूर्योदय और सूर्यास्त के मनोरम दृश्य–

सुमेरु पर्वत में ऊपर पाण्डुकवन में चढ़ने पर प्रातः सूर्य के उदय का और शाम को अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य बिम्ब का दर्शन बड़ा सुन्दर लगता है। अन्य पर्वतीय क्षेत्रों की भांति इसका भी विशेष महत्त्व प्रदर्शित किया जा सकता था किन्तु हस्तिनापुर में इस विषय का प्रचार इसलिए नहीं किया गया कि ऊपर चढ़ते हुए स्थान अत्यन्त संकुचित रह गया है, जहाँ अधिक लोग एक साथ न चढ़ सकते हैं और न वहाँ बैठने की ही पर्याप्त जगह है वर्ना यह जम्बूद्वीप माउण्ट आबू जैसी ख्याति को प्राप्त हो सकता था। ख्याति तो यूँ भी बहुत है, इस रम्य क्षेत्र में लोग जम्बूद्वीप के दर्शन करने प्रातः 5 बजे से ही आने प्रारंभ हो जाते हैं। मध्याह्न की कड़कड़ाती धूप में भी सतत सुमेरु पर्वत पर यात्रियों का आवागमन चला करता है, रात्रि होते-होते भी यात्रियों के दिल में दर्शन की एवं सुमेरु पर चढ़ने की जिज्ञासा बनी रहती है किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से अंधकार होने से पूर्व ही जम्बूद्वीप के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं।

➢सुदर्शन मेरु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव–

उपरोक्त वर्णित सुमेरु पर्वत का निर्माण सन् 1979 में हुआ पुनः उसका पंचकल्याणक महोत्सव भी 29 अप्रैल से 3 मई 1979 तक सम्पन्न हुआ था। इस महोत्सव से पूर्व ज्ञानमती माताजी अपने संघ सहित

धर्मप्रभावनामकरोत्। संस्थानस्य कार्यकर्तारः मातरं महोत्सवे आगन्तुं न्यवेदयन्। तदा प्रथमबारमेव मातुः संघः हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपस्थले एव अतिष्ठत्।

जम्बूद्वीपे आवासगृहस्य प्रथमं निर्माणम्–**1978 वर्षे आचार्यकल्पः श्रुतसागरः हस्तिनापुरे पादार्पणमकरोत्। तस्मिन्नेव समये दिल्ल्याः उम्मेदमल पाण्ड्या सपरिवारं दर्शनार्थमागच्छत्। महाराजश्री अत्र स्थानाभावं वीक्ष्य पाण्ड्या महोदयं प्रेरयामास। तस्य प्रेरणानुसारेण द्वौ कक्षौ स्नानागारशौचालयसहितौ आवासगृहे निर्मापितौ। शनैः शनैः अन्यापि प्रगतिरभवत्। दानिनां भावनाः अभवन् अतः एतस्यैव आवासगृहस्य उपरि द्वि–त्रि कक्षाः निर्मिताः अभवन्। सुदर्शनमेरोः प्रतिष्ठायाः समयः समीपे एवासीत्। मातुः संघस्य आगमनं प्रस्तावितमासीत्। संघं स्थापयितुं एतस्यैवावासगृहस्य पुरतः तृणानां कुटीरौ निर्मितौ अभूताम्। तेषु माता अतिष्ठत्। प्रतिष्ठायाः द्विदिवसपूर्वं उम्मेदमलः पाण्ड्या महोत्सवस्य व्यवस्थां दृष्टुं हस्तिनापुरमागच्छत्। सः मातरं आग्रहपूर्वकं आवासभवने स्थितामकरोत्। स्वयं ते सर्वे वस्त्रशिविरेषु अतिष्ठन्, एष तेषां गुरुभक्तेरादर्शः आसीत्।**

सुदर्शनमेरोः प्रतिष्ठायाः कार्यक्रमाः प्रारब्धाः अभवन्। अस्मिन्नेवावसरे आचार्यः श्रीश्रेयांससागरः, यः 10 जून 1990 वर्षे आचार्यश्रीशान्तिसागरस्य परम्परायाः आसीत् पचमः पट्टाचार्योऽभवत्। सः स्वसंघेन सहितः आगच्छत्। तस्यैव करकमलाभ्यां सर्वप्रतिमाभ्यः सूरिमंत्रः प्रदत्तः। मुनिना सह आर्यिका अरहमती, श्रेयांसमती चास्ताम्। आर्यिका ज्ञानमती

दिल्ली में धर्मप्रभावना कर रही थीं। संस्थान के कार्यकर्ताओं ने पूज्य माताजी से महोत्सव में पधारने का आग्रह किया, उस समय प्रथम बार माताजी के संघ को जम्बूद्वीप स्थल पर ही ठहराया गया।

➢स्थल पर फ्लैट का प्रथम निर्माण–

सन् 1978 में हस्तिनापुर में पूज्य आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी महाराज पधारे, उसी समय दिल्ली से श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या सपरिवार दर्शनार्थ आए थे। महाराज श्री ने यहाँ पर स्थानाभाव देखकर पाण्ड्या जी को प्रेरणा दी। उनकी प्रेरणानुसार दो कमरे, बाथरूम, लैट्रीन, रसोई, स्टोर सहित फ्लैट का निर्माण हुआ। धीरे-धीरे और प्रगति हुई, दानियों की भावनाएँ हुईं अतः इन्हीं फ्लैट के ऊपर 2-3 कमरे बनाए गए। सुदर्शन मेरु प्रतिष्ठा महोत्सव का समय नजदीक आ रहा था। माताजी के संघ का आगमन होने वाला था। संघ को ठहराने के लिए इन्हीं फ्लैट के सामने फूस की झोपड़ियाँ बनाई गईं, उन्हीं में माताजी को ठहराया गया। प्रतिष्ठा के 2-4 दिन पूर्व उम्मेदमल पाण्ड्या महोत्सव की व्यवस्था देखने हेतु हस्तिनापुर आये और उन्होंने माताजी को आग्रहपूर्वक फ्लैट में ठहराया, स्वयं वे टेण्टों में ठहरे, यह उनकी गुरुभक्ति का नमूना था।

सुदर्शन मेरु जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव के कार्यक्रम प्रारंभ हुए। इसी सुअवसर पर पूज्य मुनि श्री श्रेयांससागर जी महाराज, जो 10 जून सन् 1990 को चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य बने, अपने संघ सहित पधारे। उन्हीं के करकमलों से समस्त प्रतिमाओं को सूरिमंत्र प्रदान किए गए। मुनिश्री के साथ में आर्यिका अरहमती

मात्रा सह रत्नमती आर्यिका आसीत्। इदं तु सर्वविदितमेवास्ति यत् आर्यिका रत्नमती आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः जन्मदात्री मातास्ति या च स्वयं ज्ञानमत्या मातुः शिष्यत्वं स्वीकार्य रत्नत्रयस्य साधनां प्रति अग्रेसराऽऽसीत्। पूज्या माता रत्नमती स्वशाररिकअस्वस्थतायाः कारणेन जम्बूद्वीप रचनायाः निमित्तेन हस्तिनापुरे शैत्यग्रीष्ममषकादीन्यनेकानि कष्टानि सोढ्वा सदैव मात्रे सहयोगं प्रादात्। तदैव निर्विघ्नरूपेण जम्बूद्वीपस्य सफलतापूर्वकं निर्माणं भवितुमशक्नोत्।

भारतस्य जैनसमाजस्य महोत्सवसमितेश्च सफलैसंयोजनैः प्रतिष्ठा महोत्सवोऽयं सानन्दं सम्पन्नोऽभूत्। प्रतिष्ठाचार्यः ब्रह्मचारी सूरजमलस्तन्मयतया सह महोत्सवं चकार। प्रतिष्ठायामस्यां भगवान् शान्तिनाथो विधिनायकः आसीत् यस्य पितरौ भवितुं सौभाग्यं कटकनिवासिना श्रेष्ठिना पुषराजेन तस्य धर्मपत्न्या च प्राप्तम्।

सर्वोत्तमा दर्शनीया सोपानपंक्तिः–**महोत्सवेऽस्मिन् सर्वाधिस्याकर्षणस्य केन्द्रः सोपान–पंक्तिरजायत्, यया शतैक फीट इत्युच्चैः सुमेरुपर्वतस्योपरि पाण्डुकवनं गत्वा भगवतो जन्माभिषेको निवृत्तः। इयं च सोपानपंक्तिः लौहस्य श्रृंखलाभिः दिल्लीनिवासिना नरेशकुमारेण अविश्रान्तपरिश्रमेण निर्मिता। इमां च सोपानपंक्ति दृष्टुं सहस्रशः नरनार्यः प्रतिदिनं आगच्छन्ति स्म, उपरि चारुह्य भगवतोऽभिषेकं कृत्वा आनन्दं प्राप्नुवन्।नव सप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे अप्रैल मासस्य त्रिंशत् दिनाँके भगवतः शान्तिनाथस्य जन्माभिषेक महोत्सवोऽस्य मेरोरेव**

माताजी और श्रेयांसमती माताजी थीं (जो क्रम से उनकी गृहस्थावस्था की माँ और पत्नी थीं) पूज्य ज्ञानमती माताजी के साथ आर्यिका श्री रत्नमती माताजी थीं। यह तो सर्वविदित ही है कि आर्यिका रत्नमती जी ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री माँ हैं जो स्वयं ज्ञानमती माताजी का शिष्यत्व स्वीकार करके रत्नत्रय साधना की ओर अग्रसर थीं। पूज्य रत्नमती माताजी ने अपनी शारीरिक अस्वस्थता के कारण जम्बूद्वीप रचना के निमित्त हस्तिनापुर में सर्दी, गर्मी, मच्छर आदि अनेकों कष्टों को सहन करके सदैव माताजी को सहयोग दिया, तभी निर्विघ्नरूप से जम्बूद्वीप का सफलतापूर्वक निर्माण हो सका।

भारत की समस्त जैनसमाज एवं महोत्सव समिति के सफल संयोजन में यह प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठाचार्य ब्र. सूरजमल जी ने तन्मयता के साथ महोत्सव कराया। इस प्रतिष्ठा में भगवान शांतिनाथ जी विधिनायक थे, जिनके माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ कटक निवासी सेठ श्री पूषराज जी एवं उनकी धर्मपत्नी को।

➢सर्वोत्तम दर्शनीय पैड़–

इस महोत्सव में सर्वाधिक आकर्षण का केन्द्र वह पैड़ बनी, जिसके द्वारा 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत के ऊपर पांडुक वन में जाकर भगवान का जन्माभिषेक किया गया। यह पैड़ लोहे के पाइपों से दिल्ली निवासी श्री नरेश कुमार जैन बंसल ने अथक परिश्रम के द्वारा बनवाई। इस पैड़ को देखने के लिए हजारों नरनारी प्रतिदिन आते और ऊपर चढ़कर भगवान का अभिषेक करके आनंदित होते थे। 30 अप्रैल 1979 को भगवान शांतिनाथ का जन्माभिषेक महोत्सव इसी मेरु की

पाण्डुकशिलायां सौधर्मैः इन्द्रैः कृतः आसीत्। तन्मनोरमं दृश्यं साक्षात् अकृत्रिमे मेरौ आरोहणं कुर्वतः इन्द्रपरिकरस्य इवानन्दमु– उपस्थितमकरोत्।

एतेन प्रकारेण विविधैरायोजनैः सह प्रतिष्ठामहोत्सवस्य कार्यक्रमः सम्पन्नो जातः। एकोनाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मई मासे जिनबिम्बाः सुदर्शनमेरोः भद्रसाल नन्दनसौमनसपाण्डुकवनेषु व्यराजन्त, यस्य फलस्वरूपेण मेरुपर्वतो धन्योऽभवत्। मानवमात्रस्य च मोक्षस्थानं साधयितुं सक्षमोऽभवत्।

अस्य पश्चात् जम्बूद्वीपस्थले पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे 'जम्बूद्वीपस्य जिनबिम्बप्रतिष्ठापनामहोत्सवः' **विशालस्तरेणाभवत्। यस्मिन् महोत्सवे समस्तदेशात् लक्षाधिकाः यात्रिणः हस्तिनापुरमागत्य जम्बूद्वीपरचनायाः दर्शनमकुर्वन्। परमपूज्यस्य आचार्यधर्मसागरस्य संघस्थानां साधूनां समुदायाः अस्मिन्नुत्सवे शुभागमनमकुर्वन्। पुनः मार्च 1987 वर्षे** ''श्री पार्श्वनाथ– पंचकल्याणकप्रतिष्ठा ब्रह्मचारिणो मोतीचन्द्रस्य च क्षुल्लकदीक्षा **संपन्ना जाता। अस्मिन्नुत्सवे परमपूज्यस्य आचार्य विमलसागरस्य संघेन सह पदार्पणमभूत्। एतस्य पश्चात् मई 1990 वर्षे श्री महावीरजिनपंचकल्याणक–महोत्सवोऽभवत्। अयं मेलापको** ''जम्बूद्वीप महोत्सवस्य'' **नाम्ना आयोजितोऽभूत्। पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः निर्देशानुसारेण प्रत्येक– पंचवर्षाणां पश्चात् अयं** ''जम्बूद्वीपमहामहोत्सवो'' **व्यापकस्तरेण आयोजितो भविष्यति अग्रे च समायोजितो भविष्यति। अस्यामेव शृंखलायां 1990 वर्षे 1995–2000–2005 वर्षेषु च चत्वारो महामहोत्सवाः**

पांडुक शिला पर सौधर्मादि इन्द्रों द्वारा किया गया था। वह मनोरम दृश्य साक्षात् अकृत्रिम मेरु पर चढ़ते हुए इन्द्र परिकर का सा आनन्द उपस्थित कर रहा था।

इस प्रकार से विविध आयोजनों के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 3 मई 1979 को 16 जिनबिम्ब सुदर्शन मेरु के भद्रसाल, नन्दन, सौमनस और पांडुक वनों में विराजमान हो गए, जिसके फलस्वरूप जीवन्त मेरु पर्वत अप्रतिम प्रतिभा का धनी हो गया और मानवमात्र के मनोरथ सिद्ध करने लगा।

इसके पश्चात् तो जम्बूद्वीप स्थल पर मई सन् 1985 में **'जम्बूद्वीप जिनबिम्ब प्रतिष्ठापना महोत्सव'** विशाल स्तर पर हुआ, जिसमें देश भर से लाखों यात्रियों ने हस्तिनापुर पधारकर जम्बूद्वीप रचना के दर्शन किये। परमपूज्य आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज के संघस्थ साधुगण इस महामहोत्सव में पधारे पुनः मार्च सन् 1987 में **''श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं ब्र. श्री मोतीचंद जी की क्षुल्लक दीक्षा** सम्पन्न हुई। इस महोत्सव में परमपूज्य आचार्यरत्न श्री विमलसागर जी महाराज का ससंघ पदार्पण हुआ। इसके बाद मई सन् 1990 में **श्री महावीर जिन पंचकल्याणक महोत्सव''** हुआ। यह मेला **''जम्बूद्वीप महामहोत्सव''** के नाम से आयोजित किया गया था। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के निर्देशानुसार प्रत्येक पांच वर्षों के बाद यह **''जम्बूद्वीप महामहोत्सव''** व्यापक स्तर पर मनाया जाता है और आगे भी मनाया जाता रहेगा। इसी शृंखला में सन् 1990, 1995, 2000 और 2005 के चार महामहोत्सव

सफलतापूर्वकं सपन्नाः जाताः। मातुश्च सान्निध्ये जम्बद्वीपस्थले अनेकपंचकल्याणक–प्रतिष्ठामहोत्सवाः संपन्नाः अभवन्।

ज्ञानज्योतिः प्रवर्तनस्य शुभः संकल्पः–**18 जुलाई 1981 दिनस्य तत् शुभदिनं, हस्तिनापुरे जम्बूद्वीप स्थले नवनिर्मितायाः धर्मशालायाः द्वितीयस्य कक्षसंख्यायां द्वादशे प्रथमो सम्मेलनोरभवत्। आर्यिकारत्नज्ञानमती माता स्वमस्तिष्के जम्बूद्वीपस्य प्रतिकृतिं सम्पूर्णे भारते भ्रमणं कारयितुं एकं भावं सयुक्तमकरोत्। अस्यैव विचार हेतवे इदं सम्मेलनं विचारविर्मशसभा आहूताऽभवत्। अष्टदिनेभ्यः पूर्वतः आयोजितः इन्द्रध्वजमण्डलविधानं विशाले स्तरे संचालितमासीत्। अनेकस्थानां जनाः विधाने भागं गृहीतुमुपस्थिताः आसन्। विचारविमर्शसमये प्रभाविता भूत्वा केचित् विद्वांसः श्रीमन्तश्च हस्तिनापुरमागच्छन्।**

मध्यान्हे द्वादशवादनसमयात् सभा प्रारब्धाऽभवत्। पण्डितकुंजीलालेन गिरिडीह निवासिना मंगलाचरणं कृतम्। महोत्सवस्य मंत्री रवीन्द्र कुमारः कार्यक्रमस्य रूपरेखां प्रस्तुतामकरोत्– मातुरियामिच्छास्ति यत् जम्बूद्वीपस्यैका प्रतिकृतिं रथरूपेण सुसज्जितां विधाय सम्पूर्णे भारते भ्रमणं कारयितव्या। येन अहिंसायाः नैतिकतायाः व्यापकः प्रचारो भूत्वा जम्बूद्वीपस्य महत्त्वं जनसामान्यं प्राप्तुं शक्नुयात्। **सर्वप्रथमं तस्य भ्रमणशीलस्य रथस्य नामकरणे विचारं कर्तुं प्रारब्धोऽभूत्। तदनुसारेणोपस्थिताः सर्वे महानुभावाः नाम प्रेषितवन्तः–**

सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं तथा पूज्य माताजी के सानिध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर अनेकों पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हुए हैं।

➢ज्ञानज्योति प्रवर्तन का शुभ संकल्प–

18 जुलाई 1981 का वह शुभ दिवस, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर नवनिर्मित धर्मशाला नं. 2 के कमरा नं. 12 में प्रथम मीटिंग हुई। आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने मस्तिष्क में जम्बूद्वीप के मॉडल को सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कराने हेतु एक भाव संजोया था। उसी के विचार हेतु यह मीटिंग बुलाई गई थी। 8 दिन पूर्व से आयोजित इन्द्रध्वज मण्डल विधान विशाल पैमाने पर चल रहा था। अनेक स्थानों के महानुभाव विधान में भाग लेने आए हुए थे। मीटिंग के विषय से प्रभावित होकर कई विद्वान एवं श्रीमान् भी हस्तिनापुर पधारे।

मध्यान्ह 1.00 बजे से मीटिंग प्रारंभ हुई। मंगलाचरण किया – पंडित श्री कुंजीलाल जी गिरिडीह वालों ने। संस्थान के मंत्री रवीन्द्र कुमार जी ने कार्यक्रम की रूपरेखा बताई – **माताजी की यह इच्छा है कि जम्बूद्वीप के एक मॉडल को रथ के रूप में सुसज्जित करके सारे हिन्दुस्तान में उसका भ्रमण कराया जाए ताकि अहिंसा और नैतिकता का व्यापक प्रचार होकर जम्बूद्वीप का महत्त्व जनसामान्य तक पहुँच सके।** सर्वप्रथम उस भ्रमण करने वाले रथ के नाम पर विचार करने का निर्णय हुआ। तदनुसार उपस्थित समस्त महानुभावों ने नाम प्रेषित किए –

(1) जम्बूद्वीपरथः।

(2) जम्बूद्वीपस्य ज्ञानरथः।

(3) ज्ञानचक्रम्।

(4) जम्बूद्वीपचक्रम्।

(5) जम्बूद्वीपस्य ज्ञानचक्रम्।

इत्यादिषु कतिचित्सु नामसु किमपि नाम निश्चितं भवितुं नाशक्नोत्। अन्ते एकं नामागतं– जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः। **यन्नाम सर्वसम्मतिपूर्वकं पारितमभूत्। तस्मिन्नन्तेऽयं निर्णयः पारितः यत् जम्बूद्वीपस्य प्रतिकृतिं निर्माप्य विद्युता, यन्त्रजलप्रवाहैश्च सुसज्जिता भूत्वा एकस्मिन् वाहने समायोजिता भूयात्। ज्योतिःशब्दं च द्योतितं कर्तुं एकं विद्युज्ज्योतिः प्रज्ज्वलितं भवेत्। अयं त्वासीत् जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिःरथस्य समायोजनस्य शुभसंकल्पः। इदानीं महतीं योजनां सफलतापूर्वकं संचालनार्थं समस्तोपस्थितविद्वांसः सहयोगं प्रदानं कर्तुं स्वस्वीकृतिं प्रदत्तवन्तः। सर्वप्रथमं पं. बाबूलालः जमादारः, पण्डितकुंजीलालः, प्राचार्यनरेन्द्रप्रकाशः फिरोजाबादनिवासी, डॉ. श्रेयांसकुमारः बडौतवासी, डॉ. सुशीलकुमारो मैनपुरी, श्रीशिवचरण–लालश्च मैनपुरीनिवासी आदिविद्वांसः स्वपूर्णं सहयोगं प्रदातुमकथयन्। सफलतापूर्वकं सभायाः कार्यं संचालितम्। यस्मिन् कतिचित् श्रीमन्तः इदमप्येकां मंत्रणामदुः यत् एतं सर्वं विधातुं त्वेकमेव प्रयोजनमस्ति–**जम्बूद्वीपस्य निर्माणम्। **अतः एताभ्यः कठिनताभ्यः ऊहापोहाच्च एतदेव**

---

1. जम्बूद्वीप रथ
2. जम्बूद्वीप ज्ञान रथ
3. ज्ञानचक्र
4. जम्बूद्वीप चक्र
5. जम्बूद्वीप ज्ञान चक्र

इत्यादि कई नामों में से कोई नाम निश्चित नहीं हो सका। अन्त में एक नाम आया– **जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति**। जो सर्वसम्मतिपूर्वक पास किया गया। उसमें यह निर्णय लिया गया कि जम्बूद्वीप का मॉडल बनाकर बिजली, फौव्वारों से सुसज्जित करके एक वाहन पर समायोजित किया जाए। ज्ञान के प्रतीक में विस्तृत साहित्य का प्रचार किया जाए एवं ज्योति शब्द को द्योतित करने के लिए एक विद्युत् ज्योति प्रज्वलित की जाए। यह तो रहा जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ के समायोजन का शुभसंकल्प, अब इस महती योजना को सफलतापूर्वक संचालन करने के लिए उपस्थित समस्त विद्वानों ने सहयोग प्रदान करने हेतु अपनी-अपनी स्वीकृति प्रदान की। सर्वप्रथम पं. बाबूलाल जी जमादार, पं. कुंजीलाल जी, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी (फिरोजाबाद), डॉ. श्रेयांस कुमार जैन (बड़ौत), डॉ. सुशील कुमार जैन (मैनपुरी), श्री शिवचरणलाल जी (मैनपुरी) आदि अनेक विद्वानों ने अपना पूर्ण सहयोग देने को कहा। सफलतापूर्वक मीटिंग की कार्यवाही चली, जिसमें कतिपय श्रीमन्तों की ओर से यह एक सुझाव भी आया कि यह सब कुछ करने का प्रयोजन तो एक ही है– **जम्बूद्वीप का निर्माण कराना।** अतः इन सब झंझटों

सम्यगस्ति यत् अस्मद् पंचाशत्श्रेष्ठिभ्यः प्रत्येकतः रूप्याणि गृहीत्वा पंचाशत् लक्षाणि रूप्यकाणि एकत्रितानि कृत्वा जम्बूद्वीपस्य निर्माणं भवेत्। ज्ञानज्योतिर्भ्रमणेन तु रूप्यकाणां शक्तेश्च संलग्नता भविष्यति, यन्महत्कार्यं विद्यते। पूज्या माता तेषां प्रस्तावमशृणोत् किन्तु मातुः कण्ठे इयं वार्ता नावतरत्। सा उपस्थितजनान् सम्बोधयन्ती अकथयत्—वयं केवलं जम्बूद्वीपमेव न निर्मातुं तत्पराः स्मः परन्तु सम्पूर्णे देशे जैनभूगोलअहिंसाधर्म– चरित्रनिर्माणयोजनानां च प्रचारं कुर्याम। जैनसमाजे धनस्य न्यूनता नास्ति, अतः प्रतिव्यक्तेः आर्थिकसहयोगं मानसिकं च सहयोगं प्राप्य इयं रचना सम्पूर्णविश्वस्य भूयात् ममेयं भावनास्ति।

मातुः समीपे मोतीचन्द्ररवीन्द्रकुमारौ च एतौ द्वौ प्रमुखौ स्तम्भौ ईदृशौ आस्तां, ययोः सबलस्कन्धेषु जम्बूद्वीपनिर्माणसदृशानि महान्ति कार्याणि प्रारब्धानि अभवन्। तयोश्च स्कन्धानामुपरि ज्योतिप्रवर्तनरथस्य कार्यस्य भारोऽपि उत्थापितः। समितिस्तु कार्यस्य प्रारम्भे सति सहयोगादीन् अदात् एव दास्यत्यपि। एतेषां दृढसंकल्पानामाधारेण माता निर्णयमदात् यत् ज्योतिःप्रवर्तनमवश्यमेव भविष्यति। सर्वं संयुज्य जम्बूद्वीप ज्योतिः प्रवर्तनस्य वार्ता निश्चिताऽभवत्। अत्रायं प्रश्नः उपस्थितोऽभवत् अस्योद्घाटनं कुत्र केन च कारितं भविष्यति?

ज्योतिःप्रवर्तनं भारतस्य राजधान्याम्—**त्रिलोकशोधसंस्थानस्य कार्यकर्तारः पूज्यमातुः समक्षं न्यवेदयन् यत् भवत्याः भावनानुसारेण यद्यस्य ज्योतिः रथस्य प्रवर्तनं दिल्ल्याः केनचित् राजनेत्रा च कारितं स्यात्तु अस्य राष्ट्रीयस्तरेण सम्मानोऽपि भविष्यति व्यापकरूपेण**

और ऊहापोहों से तो अच्छा है कि हम 50 श्रेष्ठियों से एक-एक लाख रुपया लेकर 50 लाख रुपया एकत्र करके जम्बूद्वीप को बना देंगे। ज्ञानज्योति के भ्रमण में तो पैसा और शक्ति दोनों लगेगा, जो बड़ा कठिन कार्य है। पूज्य माताजी ने उनके इस प्रस्ताव को सुना किन्तु माताजी के गले यह बात नहीं उतरी, उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा– **हमें मात्र जम्बूद्वीप नहीं बनाना है प्रत्युत् सारे देश में जैन भूगोल, अहिंसा धर्म और चरित्र निर्माण की योजना का प्रचार करना है। जैन समाज में पैसे की कमी नहीं है किन्तु जन-जन का आर्थिक एवं मानसिक सहयोग पाकर यह रचना सम्पूर्ण विश्व की बने, मेरी यह भावना है।**

माताजी के पास में मोतीचंद और रवीन्द्र कुमार ये दो प्रमुख स्तंभ ऐसे रहे, जिनके सबल कंधों पर जम्बूद्वीप निर्माण जैसे महान कार्य को प्रारंभ किया था और उन्हीं के ऊपर ज्योति प्रवर्तन के कार्य का बीड़ा भी उठाया गया। कमेटी तो कार्य प्रारंभ होने पर सहयोग देती ही रही है और देगी ही। इन्हीं दृढ़ संकल्पों के आधार पर माताजी ने निर्णय लिया कि ज्योति का प्रवर्तन अवश्य होगा। कुल मिलाकर जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन की बात तय हुई। अब प्रश्न यह उठा कि इसका उद्घाटन कहाँ से और किसके द्वारा कराया जावे?

➢ज्योति प्रवर्तन भारत की राजधानी से–

त्रिलोक शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं ने पूज्य माताजी के समक्ष निवेदन किया कि आपकी भावनानुसार अगर इस ज्योतिरथ का प्रवर्तन दिल्ली से एवं किन्हीं राजनेता के द्वारा कराया जाये,

च अहिंसाधर्मस्य प्रचारोऽपि भविष्यति। अस्य प्रारम्भिक रूपरेखा प्रवर्तनं उदघाटनं च सदृशं महत् कार्यं भवत्याः आशीर्वादं विना संभवं नास्ति। अतः भवती दिल्लीविहारस्य विचारं करोतु। यद्यपि मातुरिच्छा दिल्लीमहानगराय विहारस्य सर्वथैवनासीत् परन्तु जनानामत्याग्रहेण चतुर्मासस्य पश्चात् दिल्लीं प्रति विहारस्य कार्यक्रमं निर्मापयितुं तत्परता अयवत्। संघस्थायाः मातुः रत्नमत्याः सर्वथा इच्छानासीत् दिल्ली प्रति गन्तुं, यतो हि दिल्ल्याः वातावरणं तस्याः स्वास्थ्यायानुकूलं नासीत्। परन्तु एतस्य कार्यस्य रूपरेखां श्रुत्वा साऽपि निषेधं कर्तुं नाशक्नोत् आर्यिकासंघस्य च मंगलविहारः फाल्गुणकृष्णतृतीयायां, मार्च 1982 वर्षेऽभवत्। पञ्चदशदिनेषु माता दिल्लीं प्राप्ता।

ऐतिहासिकप्रवर्तनस्य पूर्वं संचालनं मोरीगेटक्षेत्रात्–**दिल्लीमोरीगेटस्थानस्य जैनसमाजस्याग्रहेण संघस्तत्रैव जैनधर्मशालायामतिष्ठत्। अधुना तु सर्वेषामिदमेव लक्ष्यमासीत् यत् जम्बूद्वीपस्य सुन्दरप्रतिकृतिः शीघ्रं प्रस्तुता भवतु। भारतस्य च तत्कालीननाया प्रधानमंत्रिण्या इन्दिरागांधीमहोदयायाः करकमलाभ्यां ज्योतिःरथस्योद्घाटनं भवेत्।**

श्रेयांसि बहुविघ्नानि–**महत्सु कार्येषु प्रायः विघ्नानि संभवन्त्येव। ज्ञानज्योतिरथस्य व्यापकरूपरेखां श्रुत्वा कतिपयविघ्नसन्तोषिणः स्वकार्यं प्रारभन्त। केषांचित् ज्योतिर्विदां भविष्यवाण्यभवत् यत् ज्योतिः प्रवर्तनं कदापि भवितुं नार्हति। श्रीमती इन्दिरागांधी केनापि मूल्येनागन्तुं नार्हति। एको ज्योतिषाचार्योऽकथयत् यत् प्रधानमंत्रिण्या उद्घाटनस्य तु**

तो इसका राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान भी होगा और व्यापकरूप में अहिंसा धर्म का प्रचार भी होगा। इसकी प्रारंभिक रूपरेखा एवं प्रवर्तन-उद्घाटन जैसा महान कार्य आपके आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है अतः आप दिल्ली विहार का विचार बनाइये। यद्यपि पूज्य माताजी की इच्छा दिल्ली के लिए विहार करने की बिल्कुल भी नहीं थी किन्तु लोगों के अति आग्रह से चातुर्मास के पश्चात् दिल्ली के विहार का प्रोग्राम बनने लगा। संघस्थ आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की बिल्कुल इच्छा नहीं थी दिल्ली जाने की, क्योंकि दिल्ली का वातावरण उनके स्वास्थ्यानुकूल नहीं पड़ता था लेकिन इस महान कार्य की रूपरेखा सुनकर वे भी मना न कर पाईं और आर्यिका संघ का मंगल विहार फाल्गुन वदी 3, मार्च सन् 1982 में हो गया। 15 दिन में माताजी दिल्ली पहुँच गईं।

➢ऐतिहासिक प्रवर्तन का पूर्व संचालन मोरीगेट-दिल्ली से–

दिल्ली मोरीगेट की जैन समाज के विशेष आग्रह पर संघ वहीं पर जैन धर्मशाला में ठहरा। अब तो सबका यही लक्ष्य था कि जम्बूद्वीप का सुन्दर मॉडल शीघ्र तैयार कराया जाए और भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के करकमलों से ज्योति का उद्घाटन कराया जाए।

➢श्रेयांसि बहुविघ्नानि–

बड़े-बड़े कार्यों में प्रायः विघ्न भी आया ही करते हैं। ज्ञानज्योति प्रवर्तन की व्यापक रूपरेखा सुन-सुनकर कतिपय विघ्न संतोषियों ने अपना कार्य शुरू कर दिया। कई ज्योतिषियों की भविष्यवाणी हुई कि ज्योति प्रवर्तन कदापि नहीं हो सकता है, इन्दिरा जी किसी कीमत पर नहीं आ

प्रश्नः एव नास्ति, सार्धंद्विमासादधिकं रथस्य भ्रमणं भवितुं नार्हति। इत्याद्यः वार्ताः जनाः स्वबुद्धेरनुसारेण कथयितुमारभन्त। किन्तु ज्ञानमत्याः मातुरुपरि कदापि कोऽपि प्रभावो नाभवत्। या संस्थायाः कार्यकर्तृभ्यः इदमेवोपदेशमदात् यत् ''स्वकार्येषु संलग्नाः भवत, निन्दां कुर्वतां कदापि प्रतिकारं न कुरुत। संघर्षान् सर्वदा विपत्तिं मत्वा पुरुषार्थं विधातुं पृष्ठे न गच्छत।'' **एतासां सूक्तीनामनुसारेण मोतीचन्द्ररवीन्द्रकुमारबाबूलाल जमादाराः अन्ये पदाधिकारिणश्च स्वकार्येषु व्यस्ताः आसन्।**

प्रधानमंत्रिण्याः समीपे शिष्टमण्डलम्–**त्रिलोकशोधसंस्थानस्यैकं शिष्टमण्डलं प्रधानमंत्रिण्याः निवासस्थाने उद्घाटनस्य प्रस्तावं गृहीत्वा प्राप्तम्। अल्पकालीनायाः वार्तायाः पश्चात् इन्दिरागांधी स्वीकृतिं न प्रायच्छत्। अनेकैः उच्चाधिकारिभिः प्रयत्नाः कारिताः, परन्तु सर्वमेव वृथैवासीत्। अधुना प्रधानमंत्रिण्याः, आगमनस्य विशेषा आशा दृष्ट्वा नाभवत्। तदा केचिज्जनाः मातरमनुरोधं कृतवन्तः यत् अस्योद्घाटनं केनापि सामाजिकमहानुभावेन कारयित्वा प्रारम्भो भवेत्। परन्तु माता एतदेवाकथयत् इदं धर्मप्रचारस्य कार्यमस्ति। इन्दिरागांधी अवश्यमेवागमिष्यति। एषः मम विश्वासोऽस्ति।**

जे.के. जैन महोदयस्यामूल्यः सहयोगः–**प्रधानमंत्रिणीमानेतुं प्रयासाः निरन्तरं गतिमन्तः आसन्। एकदैतदवगतम् यत् संसद्सदस्यः जे.के. जैनः इन्दिरायाः निकटवर्ती विद्यते अतस्तेन सह संपर्कोऽभवत्, सः प्रयासं कर्तुं वचनमदात्। भवितव्यतायाः इयं वार्ताऽऽसीत् यत्, तेषु**

सकती हैं। एक ज्योतिषाचार्य जी ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटन का तो कोई प्रश्न ही नहीं है एवं ढाई महीने से अधिक रथ का भ्रमण हो ही नहीं सकता है.....इत्यादि अनेकों बातें अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार लोग कहने लगे किन्तु ज्ञानमती माताजी के ऊपर किसी की बात का कभी असर नहीं हुआ, उन्होंने सदा संस्था के कार्यकर्त्ताओं को भी यही उपदेश दिया है कि **''अपने कार्य में सदा लगे रहो, बुराई करने वाले का कभी प्रतिकार मत करो, संघर्षों को चुनौती समझकर पुरुषार्थ करने में पीछे मत रहो।''** इन्हीं सूक्तियों के अनुसार मोतीचन्द जी, रवीन्द्र कुमार जी व पं. बाबूलाल जी जमादार तथा अन्य पदाधिकारीगण अपने कार्य में लगे रहे।

➢प्रधानमंत्री के पास डेपुटेशन–

त्रिलोक शोध संस्थान का एक डेपुटेशन प्रधानमंत्री के निवास स्थान पर उद्घाटन प्रस्ताव लेकर पहुँचा। थोड़ी देर की बातचीत के बाद इन्दिरा जी ने स्वीकृति नहीं दी। कई बार उच्चाधिकारियों के द्वारा कोशिशें कराई गईं किन्तु सब व्यर्थ था। जब प्रधानमंत्री के आने की विशेष उम्मीद नहीं दिखी, तब कई लोगों ने माताजी से अनुरोध किया कि इसका प्रवर्तन किसी सामाजिक व्यक्ति से करवाकर प्रारंभ किया जाये किन्तु माताजी ने यही कहा कि यह धर्म प्रचार का कार्य है, इन्दिरा जी अवश्य आएंगी, यह मुझे विश्वास है।

➢जे.के. जैन का अमूल्य सहयोग–

प्रधानमंत्री जी को लाने के प्रयास बराबर जारी रहे। एक बार यह ज्ञात हुआ कि संसद सदस्य जे.के. जैन इन्दिरा जी के निकटवर्ती हैं अतः उनसे संपर्क किया गया, उन्होंने प्रयास करने का वचन

दिनेषु मोतीचन्द्रो रवीन्द्रकुमारश्च दिल्ली नगर्यां नास्ताम्। अविश्रान्तप्रयासानां पश्चात् पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे मई मासे त्रयोविंशति दिनांके जे.के. जैन इत्यस्य दूरभाषः डॉक्टरकैलासचन्द्रस्य समीपमागतो यत् इन्दिराजी रथस्य प्रवर्तनाय स्वीकृति प्रदानमकरोत्। श्री कैलाशचन्द्रः आगत्य मात्रे शुभ सूचनामदात्। द्वितीये च दिने वयं जयपुरात् समागताः तु समाचारोऽयं ज्ञातोऽभूत्। पुनश्च त्रिदिवसानंतरं द्वयशीत्यधिक–एकोनविंशतिशततमे वर्षे जून मासे चतुर्दिनांके उद्घाटनस्य तिथिर्निश्चिताऽभवत्। तद् दिनं कीदृशमासीत्। श्रुत्वैव भावनाः सफलाः जाताः तत्परता चाधुना उच्चैरभवत्। समयोऽत्यल्पः एवासीत्। परन्तु मोतीचन्द्ररवीन्द्रकुमाराभ्यां सह सर्वे कार्यकर्तारः युक्ताः तत्पराश्चासन्। सम्पूर्णदिल्ल्यां प्रचारार्थं पर्याप्तानि वस्त्रेषु सूचनाः संलग्ना अभवन्। सम्पूर्णे देशे समाचाराः प्रेषिताः, दैनिकेषु च समाचारपत्रेषु विज्ञापनानि प्रकाशितान्यभवन्। नवे च ट्रकवाहने जम्बूद्वीपस्य प्रतिकृतिः सुसज्जिताऽभवत्। यस्य प्रवर्तनं ''जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिःरथः'' **इतिनाम्ना प्रवर्तनमारब्धुं प्रस्तावितमासीत्।**

ऐतिहासिको दिवसः–**पश्यन्–पश्यन् तद्दिवस मपि आगतम्। द्विदिनाभ्यां पूर्वादेव लालकिलाप्रांगणे विशालं मण्डपं मंचं च विधातुं व्यवस्था गतिशीला आसीत्। सुमेरुपर्वतस्य आकारस्य सुन्दरं द्वारं मण्डपस्य प्रमुखप्रवेशद्वारे निर्मितमासीत्। सम्पूर्ण दिल्ली नगर्यां प्रधानमंत्रिण्याः स्वागतार्थं प्रतिस्थानं तोरणानि सुसज्जितान्यभवन्। मंचस्य सम्पूर्णा व्यवस्था जे.के. जैन इत्यस्य हस्ते आसीत्। तदा पुष्पैः दीपकैश्च सुसज्जितो मंचः स्वातिथये आकुलतया**

दिया। होनहार की बात, उन दिनों मोतीचंद जी,रवीन्द्र जी और हम लोग कोई दिल्ली में नहीं थे। अथक प्रयासों के बाद 25 मई 1982 को जे.के. जैन का टेलीफोन डॉ. कैलाशचंद जी के पास पहुँचा कि प्रवर्तन के लिए इन्दिरा जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। डॉ. साहब ने आकर माताजी को खुशखबरी सुनाई और दूसरे दिन हम लोग जब जयपुर से आए, तो यह समाचार ज्ञात हुआ पुनः 2-3 दिन बाद 4 जून 1982 को उद्घाटन की तारीख निश्चित हो गई। बस फिर क्या था, सबकी भावनाएँ सफल हुईं, तैयारियाँ अब बहुत जोरों से होने लगीं। समय भी अल्प ही था किन्तु मोतीचंद, रवीन्द्र कुमार जी के साथ समस्त कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक जुटे हुए थे। सारी दिल्ली में प्रचारार्थ खूब बैनर लगाए गए, पूरे देश में खबरें भेजी गईं, दैनिक अखबारों में प्रतिदिन विज्ञापन छपने लगे और नये ट्रक चेचिस में जम्बूद्वीप का सुन्दर मॉडल सुसज्जित किया गया, जिसका **''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति''** रथ के नाम से प्रवर्तन प्रारंभ होने वाला था।

➢ऐतिहासिक दिवस–

देखते ही देखते 4 जून की तारीख भी आ गई। 2 जून से ही लालकिला मैदान में विशाल पांडाल और मंच बनाने की व्यवस्था चल रही थी। सुमेरु पर्वत के आकार का सुन्दर द्वार पांडाल के प्रमुख प्रवेश द्वार पर बनाया गया। सारी दिल्ली में प्रधानमंत्री के स्वागतार्थ तरह-तरह के सुन्दर तोरण बनाए गए। मंच की सारी व्यवस्थाएँ जे.के. जैन देख रहे थे, वह फूलों से और दीपों से सजा

प्रतीक्षारतः आसीत्। सभामंचस्य वामपक्षे पूज्यज्ञानमतीमात्रे आर्यिकायै रत्नमत्यै च पृथक् मंच निर्मितः आसीत्। मंचस्य दक्षिणे च एका तृणानां कुटी आसीत्। यत्र माता सभायाः पूर्वं स्थिताऽऽसीत् आगन्तुकेभ्यश्चातिथिभ्यस्तस्याः दर्शनस्य सौभाग्यं प्राप्तमासीत्।

इन्दिरायाः आगमनं, सर्वप्रथमं च मातुराशीर्वादः–**मध्याह्ने 2.30 वादनसमये प्रतिजनानां स्वागतं स्वीकुर्वन्ती प्रधानमंत्रिणी कारवाहनात् लालकिलाप्रांगणं प्रविष्टाऽभवत्। तया सह गृहमंत्री प्रकाशचन्द्रः सेठी, केन्द्रीयमंत्रिणोऽन्ये च केचिद् संसदसदस्याः आसन्। श्री जे.के. जैन महोदयः सर्वप्रथमं इन्दिरां सर्वागतान् च महानुभावान् मातुर्दर्शनमकारयत्, अन्ते सर्वे जनाः मंचमारूढाः, इन्दिरा च मात्रा सह कांचित् वार्तां कर्तुं तत्रैव स्थिता अभवत्। सा एका महिलाऽऽसीत् अतएव सा स्वहृदये उत्थितानां प्रश्नानां समाधानमपृच्छत्। वार्ता तु मात्रा सह एकान्तरूपेणाभवत्, इति तु न जानामि। परन्तु इन्दिरायाः धर्मं प्रति या निष्ठा यश्च विश्वासः आसीत् तन्न विस्मरणयोग्यम्। माता तस्यै एकस्मिन् लघुहारे निक्षिप्यैकं यंत्रमदात्। सा च श्रद्धावनता भूत्वा तत्कालमेव तत् ग्रीवायामधारयत्। अनेन सार्धमेव माता यस्यां मुंगेररत्नानां मालायां कोटिमंत्राणां जाप्यानि कृतानि तां तस्यै ददन्ती माताऽकथयत् यत् अनया मालया प्रतिदिनं** 'ॐ नमः' **मंत्रस्य जाप्यं कुर्वन्ती अवश्यमेव मनोरथान् पूरयिस्यसि। शिरो नत्वा सा एतामपि ग्रीवायामधारयत्। एतस्य मध्ये इन्दिरां वर्जयित्वा**

हुआ मंच अपने अतिथि की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था। सभा मंच के बायीं ओर पूज्य ज्ञानमती माताजी और रत्नमती माताजी के लिए अलग मंच बनाया गया एवं मंच के दायीं ओर एक फूस की झोपड़ी थी, जहाँ माताजी सभा से पूर्व बैठी हुई थीं तथा आने-जाने वाले दर्शनार्थियों को उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था।

➢इन्दिरा जी का आगमन और सर्वप्रथम माताजी का आशीर्वाद–

मध्यान्ह के ठीक 2.30 बजे जन-जन का स्वागत स्वीकार करती हुई प्रधानमंत्री की कार उस ऐतिहासिक लालकिला मैदान में प्रविष्ट हुई। उनके साथ में गृहमंत्री श्री प्रकाशचंद सेठी, केन्द्रीय मंत्री एवं कई संसद सदस्य भी आए। श्री जे.के. जैन ने सर्वप्रथम इन्दिरा जी व सभी साथियों को पूज्य माताजी के दर्शन कराए, अनंतर सभी लोग मंच पर आ गए किन्तु इन्दिरा जी माताजी से कुछ व्यक्तिगत वार्ता करने हेतु वहीं रुक गईं। एक महिला होने के नाते उन्होंने पूज्य माताजी से अपने हृदय के कुछ उद्गार व्यक्त करते हुए समाधान पूछा, बातें तो जो और जिस रूप में उन्होंने की हों, यह मुझे नहीं मालूम, किन्तु इन्दिरा जी की धर्म के प्रति जो निष्ठा और विश्वास मैंने देखा, वह सचमुच अविस्मरणीय है। पूज्य माताजी ने उन्हें एक पैण्डन में यंत्र रखकर दिया जिसे उन्होंने श्रद्धावनत होकर तत्काल गले में पहन लिया। इसके साथ ही माताजी ने जिस मूँगे की माला पर करोड़ों मंत्रों का जाप्य किया था, उस माला को उन्हें देते हुए कहा कि इस माला के द्वारा प्रतिदिन **''ॐ नमः''** मंत्र की एक माला अवश्य फेरें, इन्दिरा जी सिर झुकाकर सहर्ष उस माला को भी गले में डालकर बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने 20 मिनट तक माताजी से बातचीत की और

कोऽप्यन्यस्तत्र मातुः समीपे नासीत्। सा विंशति मिनट पर्यन्तं मात्रा सह वार्तां चकार सा अपूर्वं शान्तिमन्वभवत्।

अत्र तु मात्रा सह इन्दिरायाः वार्ता गतिशीला आसीत् तत्र च मण्डपे उपस्थित– सहस्राधिक जनसमूहः आतुरतया एव प्रियनेतुः प्रतीक्षायां रतः आसीत्। विंशति मिनट पश्चात् माता स्वमंचमागता, प्रधानमंत्रिणी च स्व मञ्चम्। तयोः पदार्पणेन सहैव समस्तजनता करतलध्वनिना गड् गड् इतिशब्दान् कुर्वन्ती अनयोः स्वागतं चकार। तस्य च स्वागतस्य प्रत्युत्तरं इन्दिरागांधी करौ योजयित्वा अभिवादनपूर्वकमदात्। सभायाः कार्यक्रमः स्वगत्या चलितः आसीत्। पूज्या माता सर्वेभ्यः स्वाशीर्वादमदात्।

पूज्यायाः ज्ञानमत्याः मातुराशीर्वादाः–

''ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः''

तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्तपर्यायैः।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थमालिका यत्र।।

युगस्यादौ तीर्थंकरः ऋषभदेवः यदा राजसभायां विराजमानः आसीत्, प्रजा आगत्य स्वसमस्यां प्रस्तुतामकरोत् यत् देव! अद्यप्रभृतिः वयं कल्पवृक्षेभ्यो भोजनादिकं समस्तं वस्तुजातं प्राप्नुम अद्यतश्च ते कल्पवृक्षाः फलानि न ददति, तु वयं स्वाजीविकायाः पालनं केन प्रकारेण कुर्याम तथा स्वजीवनस्य यापनं कथं करवाम। तीर्थंकरः ऋषभदेवस्तस्मिन्नेव

असीम शांति का अनुभव किया। इस मध्य माताजी और इन्दिरा जी के सिवाय अन्य कोई भी वहाँ उपस्थित नहीं था।

उधर माताजी और प्रधानमंत्री का वार्तालाप चल रहा था, इधर हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमुदाय आतुरतापूर्वक अपने प्रिय नेता की प्रतीक्षा कर रहा था। 20 मिनट बाद पूज्य माताजी अपने मंच पर पधारीं और प्रधानमंत्री जी अपने मंच पर। इनके पदार्पण करते ही सारी जनता ने करतल ध्वनि से गड़गड़ाहटपूर्वक स्वागत किया। उस स्वागत का प्रत्युत्तर इन्दिरा जी ने हाथ जोड़कर अभिवादनपूर्वक दिया। सभा का कार्यक्रम अपनी गति से चला। पूज्य माताजी ने अपना आशीर्वाद सभी को प्रदान किया।

➢परमपूज्य आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वचन–

''ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः''
तज्जयति परं ज्योतिः समं समस्तैरनन्त पर्यायैः।
दर्पणतल इव सकला प्रतिफलति पदार्थ मालिका यत्र।।

युग की आदि में तीर्थंकर ऋषभदेव जब राज्य सभा में विराजमान थे, प्रजा ने आकर अपनी समस्या रखी कि हे देव! अभी तक हम लोग कल्पवृक्ष से भोजन आदि सामग्री प्राप्त करते आये थे और आज वह कल्पवृक्ष फल नहीं दे रहे हैं, तो हम अपनी आजीविका का पालन कैसे करें तथा अपना जीवनयापन कैसे करें? तीर्थंकर ऋषभदेव उसी समय उसी जम्बूद्वीप के

समये जम्बूद्वीपस्य अन्तर्गते विदेहक्षेत्रे या स्थितिरस्ति, तस्य विषयेऽवलोक्य चिन्तयित्वा च युगस्यादिकालादेवास्यां पृथिव्यामपि षट् क्रियाणामुपदेशमदात्। तद् विदेहक्षेत्रं अस्यैव जम्बूद्वीपस्य मध्ये वर्तते। तस्मिन्नेव विदेहक्षेत्रे सुमेरुपर्वतोऽस्ति। यः एकलक्षयोजनानि उच्चैर्वर्तते। तस्मिन् पर्वते स्वर्गे च एकस्य केशस्यान्तरमस्ति। अर्थात् सः मध्यलोकस्य मापदण्डोऽस्ति। तस्मिन् सुमेरुपर्वते ऋषभदेवादारभ्य महावीरपर्यन्तानां तीर्थंकराणां जन्माभिषेकः कृताः विद्यन्ते। इत्थं अनन्तानन्तानां तीर्थंकराणां जन्माभिषेकाः तस्मिन्नायोजिताः। भविष्ये चास्मिन्नेव पर्वते अनन्तानन्ततीर्थंकराणां जन्माभिषेकाः आयोजिताः भविष्यन्ति। इदमेव कारणमस्ति यदयं पर्वतो महान् पूज्योऽस्ति। यश्च जम्बूद्वीपस्य मध्ये एव वर्तते। अद्यापि भवन्तः पण्डितानां मुखात् पुरोहितानां मुखात् शृण्वन्ति, प्रशस्तीनामुच्चारणे, कस्मिन्नपि संकल्पे जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे इत्यादीनि वाक्यानि। एतेन प्रकारेणेदं भरतक्षेत्रमस्यैव जम्बूद्वीपस्य एकोभागोऽस्ति। यच्च जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागो विद्यते। अस्य भरतक्षेत्रस्यार्य–खण्डे एव अद्यतनं सम्पूर्णं विश्वमस्ति। अस्य जम्बूद्वीपस्य रचनायां उपलब्धाया पृथिव्याः अतिरिक्तमपि पृथिवी अस्मिन् भूमण्डलेऽस्ति। अयं च दिशानिर्देशः वैज्ञानिकैः दीयते। अस्माकं साधनानि कतिचित् अल्पान्येव सन्ति, वैज्ञानिकानां यांत्रिकसाधनानि विशेषाणि सन्ति। ते चान्वेषणेऽग्रे गत्वा भवतः समक्षं किञ्चिन्नवं वस्तु प्रस्तुतं करिस्यन्ति। अयं च पूर्णो विश्वासोऽस्ति। अस्माकं महर्षयः इदं कथितवन्तः वृक्षेषु पादपेषु च जीवोऽस्ति। एवं विधाः बहवो विषयाः सन्ति यान् वैज्ञानिकाः असिद्धयन् यत् महर्षीणां कथनं सत्यमेवास्ति।

अंतर्गत विदेह क्षेत्र में जो स्थिति है, उसके बारे में देखकर-सोचकर युग की आदि से ही इस पृथ्वीतल पर भी 6 क्रियाओं का उपदेश दिया, वह विदेह क्षेत्र इसी जम्बूद्वीप के बीचों बीच में है। उसी विदेह क्षेत्र में सुमेरु पर्वत है, जो एक लाख योजन ऊँचा है उससे और स्वर्ग में मात्र एक बाल का अन्तर है अर्थात् वह मध्यलोक का मापदण्ड है। उस सुमेरु पर्वत पर ऋषभदेव से लेकर महावीरपर्यंत चौबीस तीर्थंकरों का जन्माभिषेक किया जा चुका है। अनंत-अनंत तीर्थंकरों का जन्माभिषेक उस पर मनाया जा चुका है और भविष्य में भी इसी पर्वत पर अनंत-अनंत तीर्थंकरों का जन्माभिषेक उत्सव मनाया जायेगा। यही कारण है कि यह पर्वत महान् पूज्य है, जो कि जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में है। आज भी आप लोग पंडितों के मुख से, पुरोहितों के मुख से सुनते होंगे, प्रशस्ति के उच्चारण में, किसी भी संकल्प में जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे, आर्यखण्डे इत्यादिरूप से, तो यह भरतक्षेत्र इसी जम्बूद्वीप का ही एक हिस्सा है जो कि जम्बूद्वीप के एक सौ नब्बेवाँ भाग प्रमाण है। इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में ही आज का उपलब्ध सारा विश्व है। इस जम्बूद्वीप की रचना में उपलब्ध पृथ्वी के अतिरिक्त भी पृथ्वी इस भूमण्डल पर है, यह दिशा-निर्देश वैज्ञानिकों को दिया जा रहा है। हमारे यहाँ साधन कुछ अल्प हैं, वैज्ञानिकों के यांत्रिक साधन विशेष हैं और वे खोज में आगे बढ़कर के आपके सामने कुछ न कुछ नई चीज उपस्थित करेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास है। हमारे महर्षियों ने यह बताया था कि पेड़ और पौधों में भी जीव है। आज के युग में वैज्ञानिकों ने भी सिद्ध कर दिया कि हाँ! पेड़

अनेकप्रकारेण इदं यदस्माकमार्यखण्डं विद्यते, यस्मिन् वयं वसामः, अनादिकालात् अस्ति, अस्य युगस्यादितः एव अनेका महापुरुषाः अत्र जन्मानि अगृह्णन्। यतो हि अयं महर्षीणां पुण्यशालिनां तपस्विनां च क्षेत्रमस्ति। तेऽत्र स्वसाधनानां तपस्यानां च बलात् स्वात्मानं तु पवित्रमकुर्वन्नेव, सहैव देशे सच्चारित्रस्य निर्माणं कृत्वा सर्वान् प्राणिनः पवित्रानकुर्वन्। सुखशान्तेश्च स्थापनां चाकुर्वन् मया जैनरामायणस्यैका सूक्तिः स्मर्यते–

यस्य देशं समाश्रित्य साधवः कुर्वते तपः।
षष्ठमंशं नृपस्तस्य लभते परिपालनात्।।

यं देशं समाश्रित्य साधवस्तपांसि कुर्वन्ति, तस्य देशस्य शासकास्तेषां परिपालनकारणात् तेषां साधूनां तपश्चर्यायाः षष्ठभागं पुण्यं प्राप्नुवन्ति। त्वहं स्पष्टरूपेण वक्ष्यामि यत् साधूनां तपश्चर्याणां पुण्यं इन्दिरागांधी स्वयमेव लभते। सा तत् पुण्यं स्वयमेव गृह्णाति, इयमस्याः भारतभूमेः विशेषं माहात्म्यमस्ति। वस्तुतस्तु इदं तु कथयितव्यमेवास्ति यत् इन्दिराजी बहुसौभाग्यशालिनी विद्यते। दशकेऽस्मिन् मयानुभूतं यत् अनेकधार्मिकायोजनेषु सा स्वामूल्यसमयं निष्कास्य भागं गृहीतुं तत्परा भवति। जैनसमाजस्यापि इदं न्यूना गौरवं नास्ति, यत् जैनसमाजं प्रति तस्याः एतावती प्रीतिरस्ति। धर्मचक्रमंगलकलशयोः प्रवर्तनमपि तस्याः एव हस्ताभ्यां भविष्यति, पश्यत, अद्य, अयं जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिरथस्य प्रवर्तनस्य पुण्यावसरोऽपि तयैव प्राप्यते। भवन्तश्चिन्तयन्तु, एकस्याः प्रधानमंत्रिणः प्रधानमंत्रित्वकाले

और पौधों में भी जीव है। ऐसे अनेक विषय हैं जिन्हें वैज्ञानिकों ने सिद्ध करके स्वीकार कर लिया है कि महर्षियों का कथन सत्य है। इस प्रकार ये जो हमारा आर्यखण्ड है, जिसमें हम लोग रहते हैं अनादिकाल से और इस युग की आदि से, यह समझिये अनेक महापुरुषों ने यहाँ जन्म लिया है ये महर्षियों का, पुण्यशाली तपस्वियों का क्षेत्र है। उन्होंने यहाँ पर अपनी साधना और तपस्या के बल से अपने को तो पवित्र बनाया ही, साथ ही देश में सत्चारित्र का निर्माण करके तमाम प्राणियों को पवित्र बनाया है और सुख-शांति की स्थापना की है। मुझे जैन रामायण की एक सूक्ति याद आती है–

यस्य देशं समाश्रित्य साधवः कुर्वते तपः।
षष्ठमंशं नृपस्तस्य लभते परिपालनात् ।।

जिस देश का आश्रय करके साधु तपस्या करते हैं, वहाँ के शासक उनका प्रतिपालन करने से उन साधुओं की तपश्चर्या का छटा भाग पुण्य प्राप्त कर लिया करते हैं। तो मैं ये स्पष्ट कहूँगी कि साधुओं के तपश्चरण का पुण्य इन्दिरा जी को स्वयं ही मिल रहा है। वे उस पुण्य को स्वयं ही ले लिया करती हैं, यह इस भारत भूमि का एक विशेष माहात्म्य है। वास्तव में ये तो कहना ही पड़ेगा कि इन्दिरा जी बहुत सौभाग्यशाली हैं। इस दशक में मैंने अनुभव किया कि अनेक धार्मिक आयोजनों में वे अपने अमूल्य समय को निकाल कर भाग लेती आ रही हैं। जैन समाज का भी यह गौरव कम नहीं है कि जैन समाज के प्रति उनकी इतनी प्रीति है। धर्मचक्र और मंगलकलश का प्रवर्तन भी उन्हीं के हाथ से होना और आज देखिये! ये जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति प्रवर्तन का पुण्य

एवंविधानि आयोजनानि भवन्तु सा च पुण्यावसरं प्राप्नोतु अयं नास्ति न्यून पुण्यस्य वार्ता। अहं तु इदमेव कथयिष्यामि यत् सत्यमेव इन्दिरासदृशी साहसी महिलारत्नं, या युगे एकां क्रान्तिं स्थापितवती, सत्यमेव इदं ज्योतिस्तस्याः हस्ताभ्यां प्रवर्तितं भूत्वा न जानामि, भारतस्य कतीनां प्राणिनां हृदयमाकर्षितं करिष्यति। पश्यन्तु, संसारे अज्ञानात् महान कोऽप्यन्धकारो नास्ति। ज्ञानात् महान् च विश्वे कोऽपि प्रकाशो नास्ति, इदं ज्ञानज्योतिः सम्पूर्णभारतदेशे भ्रमणं कृत्वा प्रतिकोणं प्राणिनामज्ञानान्धकारमपहरेत् ज्ञानस्य च प्रचारं करोतु, तेन सहैव सुखस्य शान्तेश्च सम्पूर्णे संसारे स्थापनां करोतु, प्रधानमंत्रिण्याश्च इन्दिरायाः शुभहस्ताभ्यां एवंविधानि पुण्यकार्याणि सदैव भवन्तु, इदं च जनतन्त्रात्मकशासनं च जनतायां धर्मनीतिमयमनुशासनं कुर्यात्। अयमेव मम शुभाशीर्वादः।

जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिषः प्रवर्तनस्य शुभावसरे प्रधानमंत्रिण्याः श्रीमत्याः इन्दिरायाः भाषणम्–

''पूज्या ज्ञानमती मातः उपस्थिताः सज्जनाः, भ्रातरः, भगिन्यश्च!

अहमत्यन्तमेव प्रसन्नतामनुभवामि यत् अस्मिन् शुभावसरे भवन्तो माम् निमन्त्रितामकुर्वन्। यदापीदृशोऽवसरोभवति, विशेषरूपेण धार्मिकोऽवसरः, यदा च देशस्य प्रतिकोणेभ्यः भ्रातरः भगिन्यश्च सर्वे जनाः समागच्छन्ति, तदा भारतस्यैकतायाः दृश्यं दृष्टुं प्राप्यते। अस्माकं भारतदेशः प्रायः ईदृशो देशोऽस्ति, यस्मिन् सर्वे धर्मावलंबिनः प्राप्यन्ते। अस्माकं नीतिरियमस्ति यत् सर्वेषां धर्माणामादरो भवतु। कस्यापि कस्यापि प्रकारस्य अपमानो न भवतु, न च निम्नं

अवसर भी इन्हीं को मिल रहा है। आप सोचेंगे एक प्रधानमंत्री के प्रधानमंत्रित्वकाल में इतने-इतने आयोजन होवें और उन्हें ही पुण्य अवसर मिले, यह कम पुण्य की बात नहीं है। मैं यही कहूँगी कि सचमुच में इन्दिरा जी जैसी साहसी महिला रत्न, जिनने इस युग में एक क्रान्ति लाई है सचमुच में यह ज्योति उनके हाथ से प्रवर्तित होकर न जाने भारत के कितने प्राणियों के हृदय के अंधकार को दूर करेगी, कितने मानुष के अंधकार को दूर करेगी। देखिये! संसार में अज्ञान से बढ़कर दूसरा कोई अंधकार नहीं है और ज्ञान से बढ़कर विश्व में दूसरा कोई प्रकाश नहीं है। यह ज्ञानज्योति सारे भारतवर्ष में भ्रमण कर कोने-कोने में प्राणियों के अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करे और ज्ञान का प्रचार करे, उसके साथ ही साथ सुख और शांति की सारे विश्व में स्थापना करे और प्रधानमंत्री इन्दिरागांधी के शुभ हस्तों से ऐसे-ऐसे पुण्य कार्य सदैव होते रहें तथा यह जनतंत्रशासन जनता में धर्मनीतिमय अनुशासन करता रहे, मेरा यही शुभाशीर्वाद है।

➢जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति प्रवर्तन के शुभ अवसर पर 4 जून 1982 को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी का भाषण–

''पूज्य ज्ञानमती माताजी और उपस्थित सज्जनों, भाईयों और बहनों!

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि इस शुभ अवसर पर आपने मुझे बुलाया है। जब ऐसा अवसर होता है विशेष करके धार्मिक अवसर, जब देश के कोने-कोने से बहन और भाई सब लोग आते हैं तो भारत की एकता का एक दृश्य देखने को मिलता है। हमारा भारत एक ऐसा देश है, जहाँ प्रायः विश्व के सभी धर्म हैं। हमारी नीति रही है कि सभी धर्मों का आदर हो, किसी का भी किसी प्रकार से

कर्तुं कापि वार्ता स्यात्। यतो हि सवेष्वेव धर्मेषु केचित् एवंविधाः सिद्धान्ताः भवन्ति, ये प्रतिजनं ऊर्ध्वोन्मुखं कर्तुं प्रयतन्ते, ये तस्यात्मकां शक्तिं प्रयच्छन्ति, याश्च जीवनस्य अतिकठिनताः भवन्ति यथा सर्वेषामेव जीवने भवति, स्यात् कोऽपि लघुर्वा महान्, तासां कठिनतानामपहरणं कर्तुं शक्तिं प्रयच्छन्ति। यथा जनः प्राप्नोति तथैव समग्रे देशे धर्मस्यादरो भविष्यति तु समग्रो देशः उपरि उत्थास्यति। अस्माकं प्रयत्नः अयमेवास्ति यदस्माकमयं देशं उपरि गच्छेत्। आर्थिकदृष्टिकोणेन जनानां जीवनं उपरि उत्तिष्ठेत्, निर्धनाः न्यूनाः भवन्तु, पृष्ठत्वं दूरीभवतु, किन्तु केवलं आर्थिकप्रगतिः पर्याप्ता नास्ति, इदं तु प्रारम्भादेवास्माकं नेतारः अकथयन् यत् यदि आर्थिक प्रगत्या सह भारतस्य संस्कृतिः भारतस्य सभ्यता, भारतस्य परम्पराः भारतस्य च सत्यविचाराः यदि एतेषु ध्यानं न दत्तं तु केवलमार्थिकप्रगत्या देशो महान् भवितुं न शक्ष्यति।

जम्बूद्वीपस्य वर्णनमस्माकं सर्वेष्वेव शास्त्रेष्वस्ति। यथा बौद्धानां, जैनानां, वैदिकानां च यानि वर्णनानि सन्ति, तानि केवलं भारतस्यैव न सन्ति, तस्मादपि महान्ति सन्ति। अस्मात् कोऽपि इदं नावगच्छेत् यत् अस्माकं स्वभावोऽन्योऽस्ति, वयं अन्येभ्यः किमपीच्छामः। वयं स्वभूम्या स्व जनताया च सन्तुष्टाः स्मः। वस्तुतस्तु एतासां सेवैव एतादृशं महत्कार्यमस्ति, यत् वयं प्रयत्नमेव कर्तुं शक्नुमः। युद्धे अपि या शक्तिरिच्छितास्ति यः साहसः भवितव्यः, तत्सर्वं धर्माणामुच्चविचाराणांधारणेन उच्चै भूत्वैव प्राप्तुं शक्यते। इयं दुःखस्य वार्तास्ति यत् मनुष्यजातिः एकस्मिन् ईदृशे समये, यदा विज्ञानेन अवदानं बहुवर्धितं, यदा बहुप्राकृतिकशक्तयो

न अपमान हो, न नीचा करने की कोई बात हो क्योंकि सभी धर्म में कुछ ऐसे सिद्धान्त होते हैं, जो व्यक्ति को ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं, जो उसकी आत्मा को शक्ति देते हैं, ताकत देते हैं और जो जीवन की सख्त कठिनाइयां होती हैं, जैसे सभी के जीवन में होती हैं चाहे कोई बड़ा हो या छोटा, उसका सामना करने की ताकत देते हैं। जैसे व्यक्ति को मिलता है उसी प्रकार से अगर सारे देश में धर्म का आदर होगा तो सारा देश ऊपर उठेगा। हमारा प्रयत्न यही है कि इस देश को ऊँचा उठाया जाये। आर्थिक दृष्टिकोण से लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठे, गरीबी कम हो, पिछड़ापन हट जाये लेकिन केवल आर्थिक प्रगति काफी नहीं है, यह शुरू से ही गांधी जी तथा अन्य नेताओं ने हमको बतलाया कि भारत की संस्कृति, भारत की सभ्यता, भारत की परम्परा और भारत के ऊँचे विचार इन चीजों पर यदि ध्यान नहीं दिया जायेगा तो केवल आर्थिक प्रगति से देश महान नहीं हो सकेगा।

जम्बूद्वीप का वर्णन हमारे सभी शास्त्रों में है जैसे बौद्धिक, जैनधर्म के और वैदिक में जो वर्णन है, वह केवल भारतवर्ष का नहीं है उससे बहुत बड़ा है। इससे कोई यह न समझे कि हमारी नीयत दूसरों पर है या हम दूसरों से कुछ चाहते हैं। हम अपनी धरती से और अपनी जनता से ही संतुष्ट हैं और यूं तो इनकी सेवा करना इतना बड़ा काम है कि प्रयत्न ही हम कर सकते हैं। सम्मुख लड़ाई के लिए भी जो शक्ति चाहिए और जो साहस चाहिए वह धर्म के द्वारा ऊँची विचारधारा, ऊँचे मूल्यों के द्वारा मिल सकते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि मनुष्य जाति एक ऐसे समय, जब विज्ञान के

नियन्त्रणमागताः, महान्ति कार्याणि जनाः विधातुं शक्नुवन्ति, एवंभूते समये या शक्तिस्तेषु संलग्नां कुर्वन्तु येऽस्माकं दुर्बलाः भ्रातरो भगिन्यश्च सन्ति तान् उत्थातुं संलग्नां कुर्मः ये च दुर्बलदेशा सन्ति तेषां सहायतां कुर्वन्तु। मनुष्यजातिः प्रायः इमां शक्तिं प्रायः युद्धेषु विवादेषु च प्रयोजयति, परस्परं प्रतियोगितां विधातुं, निम्नतां च नेतुं प्रयोजयति। परन्तु यदा कदा धर्मस्य विषयेऽपि भवन्तोऽपश्यन्, यत् अत्र केचित् साम्प्रदायिकविवादाः कलहा अभवन्। येषु ईदृश्योऽपि घटनाः घटिताः याभ्यः एतत् प्रतीत अभवत् यत् कोऽपि अपमानं कर्तुमिच्छति। इदमस्माकं भारतीयपरम्परायां न च कस्मिंश्चिदपि धर्मे एवं उक्तम् यदा च मम जनैः सह वार्ताः अभवन्, त्वहमपश्यं यत् कोऽप्येवं नेच्छति। अस्माभिः प्रयत्नः विधेयः यत् अस्माषु विवादमुत्पन्नं करोति तदहं धर्मं न मन्ये। इदं कथं संभवं भवेत्। अहमेकस्माद् धार्मिकपरिवारादागतास्मि। एकस्यां परम्परायां मम पालनपोषणमभूत्, यस्यां धर्मस्य भारतस्य संस्कृतेः सभ्यतायाश्चादरो भवति। यत्र वयं शिक्षिताः यत् वयं उच्चैर्भवितुं किमपि बलिदानं दातुं तत्पराः भवेम। वयं तु एतद्विचारयितुं न शक्नुमः यत् केनापि प्रकारेण धर्मे आक्रमणं भवेत्, अपमानो वा भवेत्, परान् निम्नस्तरस्य दर्शनार्थं विवशान् कुर्याम। परन्तु वयं त्ववगच्छामो यत् धर्मः उच्चैर्भविष्यति तु समाजोऽपि उच्चैः स्थातुं शक्ष्यति। देशोन्नतो भविष्यति, देशश्च बलं प्राप्स्यति।

यानि च अस्मत्सु काठिन्यानि सन्ति, तान्यपि सोढुं शक्तिः प्राप्स्यामः। जैनधर्मस्य ये

द्वारा जानकारी बहुत बढ़ी है, जब बहुत सी प्राकृतिक ताकतें काबू में आई हैं, बड़े-बड़े काम मनुष्य कर सकता है, ऐसे समय बजाय इसके कि इस ताकत को वो उसमें लगायें जो हमारे दुर्बल भाई और बहन हैं उनको उठायें, जो दुर्बल देश हैं उनकी सहायता करें, मनुष्य जाति इस ताकत को अक्सर लड़ाई-झगड़े में लगाती है, एक-दूसरे से मुकाबला करने में, नीचे घसीटने में। लेकिन कभी-कभी धर्म के बारे में भी आपने देखा होगा कि इधर कुछ कौमी दंगे हुए जिससे कुछ ऐसे घटनाएं हुई जिससे किसी न किसी धर्म का लगता था कि कोई अपमान करना चाहता है। यह हमारी भारतीय परम्परा में नहीं है और न किसी भी धर्म में ऐसा कहा है और मेरी जब-जब बातें हुई लोगों से, तो देखा कोई ऐसा नहीं चाहता है। हम सब लोगों की बड़ी कोशिश होनी चाहिए कि हम कौमी एकता एवं सब धर्म में आदर विशेष करें क्योंकि ये अफवाह उड़ाई गई है कि शायद मैं धर्म को नहीं मानती, यह कैसे हो सकता है। मैं एक धार्मिक परिवार से आई हूँ एक परम्परा में मेरा पालन-पोषण हुआ जिसमें धर्म का, भारत की संस्कृति, सभ्यता का आदर, यहाँ यह सिखलाया गया कि ऊँचा रखने के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार होना चाहिए। तो हम तो ऐसा विचार कर ही नहीं सकते कि किसी भी प्रकार से धर्म पर कोई हमला हो, अपमान हो या नीचा दिखाया जाये। बल्कि हम समझते हैं कि धर्म ऊँचा होगा तो समाज ऊँचा होगा, देश ऊँचा होगा और देश को बल मिलेगा।

जो अपने देश के भीतर की कठिनाईयाँ हैं उनका भी वह सामना कर सकेगा। जैनधर्म के जो

उच्चविचाराः सन्ति, तेऽपि भारतस्य भूम्याः एव निर्गताः सन्ति। भारतस्य विचारधाराभिः उत्पन्नाः सन्ति, भारतस्य विचारधारायामेव स्वगम्भीरं प्रभावं कुर्वन्ति। भवतां यत् भारतमस्ति, यश्च कस्यचिदपि धर्मोऽस्ति अहं चिन्तयामि यत् ते सर्वे जैनधर्मस्यैव उच्चविचाराः सन्ति। ते च सर्वैः पालयितव्याः। अहं जानामि यत् अस्माकं स्वातन्त्र्ययुद्धे तेभ्यो विचारेभ्यः गांधी कियन्तं महत्त्वमदात्। सः अस्माकं नेताऽऽसीत् तस्यैव चरणयोरुपविश्य वयं शिक्षां गृह्णीमः। अस्माकमपि प्रतिरोमं ताः शिक्षाः समाविष्टाः सन्ति। अस्माकं आन्दोलनं अहिंसायाः एवासीत् यच्च संसारस्य इतिहासे कदापि न दृष्टमभूत्। अनेन प्रकारेण तन्महदान्दोलनं अस्याः एव मार्गेणाभवत्। एवमेव वयं पश्येम यत् आधुनिकजीवने निर्धनतायाः दूरीकरणस्य कार्यक्रमः स्यात्, देशाय च बलं दातुं कार्यक्रमः, एते सर्वे कार्यक्रमाः अनेनैव मार्गेण भवितुं शक्यन्ते। अहिंसायाः मार्गेण, सहिष्णुतायाः मार्गेण अपरिग्रहस्य च मार्गेण, एताः वार्तास्तु भगवान् महावीरः अस्माभिः स्ववचनैः अकथयन्। ते सर्वे उपदेशाः देशं पुष्यन्ति, उपरि च कुर्वन्ति।

अयं प्रसन्नतायाः विषयोऽस्ति यत् मात्रा ज्ञानमत्या जम्बूद्वीपस्य इमां प्रतिकृतिं निर्मितामकारयत्, सा च जम्बूद्वीपस्य रचना हस्तिनापुरे रचिता भविष्यति तया रचनया जनाः अधिकाधिकरूपेण ज्ञानं प्राप्स्यन्ति। यत्र सः ज्ञानज्योतिः रथो भ्रमणं करिष्यति, तत्रापि जनाः एकां नवीनां सूचनां ज्ञानं च लब्धुं शक्ष्यन्ते। अहं तु भवतां पुरतः स्वाभारमेव प्रकटयितुं शक्नोमि, ये मां एतस्मिन् पुण्यावसरे आह्वयन् यदहमेतस्य रथस्य प्रवर्तनं कर्तुं शक्यामि। एतद् दृष्टवाऽहं अत्यन्तमेव प्रसन्नाऽस्मि, मातरं च पुनः पुनः प्रणमामि।''

ऊँचे विचार हैं वे भी भारत की धरती से निकले हैं, भारत की विचारधारा से निकले हैं और स्वयं उसी विचारधारा पर अपना प्रभाव गहरा डाले हैं। आप सबका जो भारत है व जो किसी का भी कुछ धर्म है मैं सोचती हूँ कि वे जैनधर्म के ऊँचे विचार हैं, उनको सभी मानें। हमें मालूम है कि हमारी आजादी की लड़ाई में कितना महत्व इन विचारों को गांधी जी ने दिया। वे चूँकि हमारे नेता थे और उनके चरणों में बैठ के हमने सीखा, तो हमारे भी रोम-रोम में ये चीजें आती हैं। हमारा आन्दोलन अहिंसा का था जो कि दुनिया के इतिहास में कभी नहीं देखा था। सबसे पहले बड़ा आन्दोलन इस रास्ते से हुआ। इसी प्रकार से हमें देखना है कि आजकल के जीवन में चाहे गरीबी हटाने का कार्यक्रम हो, देश को बलवान बनाने का कार्यक्रम हो, इसी रास्ते से बन सकता है। अहिंसा के रास्ते से, सहनशीलता के रास्ते से, सादगी में रहने से, इतनी बातें जो भगवान महावीर ने अपने वचन से छोड़ी हैं हमारे संग, वो चीजें हैं जो देश को मजबूत करती हैं ऊपर उठाती हैं।

यह प्रसन्नता का विषय है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी ने यह जम्बूद्वीप का मॉडल बनवाकर तथा जो हस्तिनापुर में बनाया जा रहा है, इससे लोग इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा ठीक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और जहाँ-जहाँ यह ज्योति जायेगी, वहाँ भी इसके द्वारा एक नई धार्मिक भावना जगेगी। मैं आपके सामने आभार ही प्रकट कर सकती हूँ कि ऐसे शुभ अवसर पर आपने मुझे बुलाया कि मैं इसका प्रवर्तन करूँ। यह देखकर मुझे बहुत खुशी है और माताजी को भी मैं बार-बार नमन करती हूँ।''

तव चरणयोः सर्वे नम्राः भवन्ति–**1979 वर्षे सुमेरुपर्वतस्य जिनचैत्यालयानां पंचकल्याणकप्रतिष्ठायां उत्तरप्रदेशस्य मंत्री रेवतीरमणः आगच्छत्। 1980 वर्षस्य अक्टूबरमासे मातुर्जन्मदिवसे केन्द्रीयनागरिकउड्डयनमंत्री ए.पी. शर्मा, केन्द्रीयो गृहमंत्री प्रकाशचन्द्रः सेठी चैतौ द्वौ महानुभावौ समागतौ। पूज्यमातुः सान्निध्ये 1982 वर्षे दिल्ल्याः लालकिला इति प्रांगणे तत्कालीनप्रधानमंत्री इन्दिरागांधी आगत्य जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः प्रतिकृतेः शुभप्रवर्तनस्य प्रारम्भमकरोत्। 1982 वर्षे 31 अक्टूबर दिने दिल्ली नगर्यां संसदसदस्यो राजीवगांधी जम्बूद्वीपसंगोष्ठयाः उद्घाटनं कृत्वा आशीर्वादं प्राप्नोत्। पंचाशीत्यधिकएकोन–विंशतिशततमे वर्षे जनवरी मासे केन्द्रीयस्वास्थ्यमंत्रिणी श्रीमती मोहसिना किदवई आर्यिका–श्रियोदर्शनार्थमागता।**

मातुः शुभाशीर्वादेन तस्याः एव सान्निध्ये पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जम्बूद्वीप जिनबिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवस्य रूपरेखा निर्मापयितुं उत्तर प्रदेशस्य तत्कालीनो मुख्यमंत्री नारायणदत्ततिवारी समागत्य अत्र हस्तिनापुरे रत्नत्रययनिलये उपविश्य समिते कार्यकर्तृभि सह कतिचित् होरापर्यन्तं वार्तालापमकरोत्।

प्रो. वासुदेव सिंहो मंत्री उत्तरप्रदेशस्य, अक्षयतृतीयादिने ध्वजारोहणं कृत्वा ''अन्तर्राष्ट्रीयजैन–गणितस्य एवं त्रिलोकविज्ञानसंगोष्ठयाः'' **उद्घाटनं चकार। पुनः पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे अप्रैल मासे अष्टाविंशति दिनांके तत्कालीनो रक्षामंत्री नरसिंहरावः जम्बूद्वीपस्थले हैलीकोप्टर इति यानेन आगत्य** ''जम्बूद्वीपअखण्डज्ञानज्योतिः'' **स्थापितमकरोत्। तदनन्तरं पंचाशीत्यधिक–एकोनविंशतिशततमे वर्षे अप्रेल मासे त्रिंशत् दिनांके तत्कालीनो मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेशस्य**

➢तव चरणों में सब झुकते हैं–

सन् 1979 में सुमेरुपर्वत के जिनचैत्यालयों की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में उत्तरप्रदेश के मंत्री रेवतीरमण जी आये। सन् 1980 में अक्टूबर में माताजी के जन्मदिवस पर केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ए.पी. शर्मा और केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाशचंद सेठी आए। पूज्य माताजी के सानिध्य में सन् 1982 में दिल्ली के लालकिला मैदान में तत्कालीन भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरागांधी ने पधारकर जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति के मॉडल का शुभ प्रवर्तन प्रारंभ किया। 31 अक्टूबर सन् 1982 को दिल्ली में श्री राजीव गांधी संसद सदस्य ने जम्बूद्वीप सेमिनार का उद्घाटन करके शुभाशीर्वाद प्राप्त किया। जनवरी सन् 1985 में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई पूज्य आर्यिकाश्री के दर्शनार्थ पधारीं।

माताजी के शुभाशीर्वाद से उन्हीं के सानिध्य में सन् 1985 के जम्बूद्वीप जिनबिंबप्रतिष्ठापना महोत्सव की रूपरेखा बनाने के लिए नारायणदत्त तिवारी (तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश) ने आकर यहाँ हस्तिनापुर के रत्नत्रयनिलय में बैठकर कमेटी के कार्यकर्ताओं से घंटों चर्चाएं की थीं।

प्रो. वासुदेवसिंह (मंत्री-उ.प्र.) ने अक्षयतृतीया के दिन झण्डारोहण करके **''अंतर्राष्ट्रीय जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान सेमिनार''** का उद्घाटन किया पुनः 28 अप्रैल 1985 को तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री नरसिंहराव ने जंबूद्वीप स्थल पर हेलीकॉप्टर से आकर **''जंबूद्वीप अखंडज्ञानज्योति''**

श्री नारायणदत्ततिवारी प्रतिष्ठासमारोहे समागत्य राज्याभिषेकस्य कार्यक्रमे भागमगृहणात्। पंचाशत् सहस्राणां जनतां संबोधितां कृत्वा साधुवर्गाणां मातुश्चाशीर्वादं प्रगृह्य जम्बूद्वीपस्योद्घाटनं कृत्वा विद्युद्दीपैः जलयंत्रैर्जलवृष्टिभिश्च जम्बूद्वीपं प्रकाशवन्तमकरोत्।

अस्याः एव प्रतिष्ठायाः मध्ये विधानसभाध्यक्षः हुकुमसिंहः, भूतपूर्व राज्यपालः श्रीकिदवई आदयोऽनेकनेतारः समागच्छन्।

सप्ताशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे पंचकल्याणकप्रतिष्ठायां आचार्यश्रीविमलसागरः ससंघोऽत्र आगच्छत् तदैव मार्च मासस्य अष्टमदिनांके तत्कालीनो रेलमंत्री श्रीमाधवराव सिन्धिया ब्रह्मचारिणो मोतीचन्द्रस्य क्षुल्लकदीक्षाग्रहणदिवसेऽत्रागच्छत्।

नवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जम्बूद्वीपमहामहोत्सवे पंचकल्याणकप्रतिष्ठायां च तत्कालीनः उद्योगमंत्री अजितसिंहो भारत शासनं, उत्तरप्रदेशस्य राज्यपालः सत्यनारायणरेड्डी च अत्र जम्बूद्वीपे समागतौ।

एक नवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे सरधना चतुर्मासे अक्टूबर मासस्य त्रयोविंशति दिनांके पूज्यमातुर्जन्मदिवससमारोहे श्रीमुरलीमनोहर जोशी अध्यक्षः भारतीयजनता पार्टी जे.के. जैनश्च राज्यसभासंसदसदस्यः समागतौ।

द्विनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे फरवरी मासस्य पंचदशदिनांके उत्तरप्रदेशस्य मुख्यमंत्री कल्याणसिंहो मातुर्दर्शनार्थं हस्तिनापुरमागच्छत्, 19 अगस्त 1992 दिने मध्यप्रदेशस्य लोकनिर्माणविभागस्य मंत्री श्री हिम्मतसिंहकोठारी सपरिवारं हस्तिनापुरमागत्य

को स्थापित किया था। अनंतर नारायणदत्त तिवारी (तत्कालीन मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश) ने 30 अप्रैल 1985 के प्रतिष्ठा समारोह में पधारकर भगवान के राज्याभिषेक कार्यक्रम में भाग लिया और पचासों हजार की जनता को संबोधित करके साधुवर्गों और पूज्य माताजी का शुभाशीर्वाद ग्रहणकर जंबूद्वीप का उद्घाटन करके विद्युत् दीपों और फव्वारों से जंबूद्वीप को जगमगा दिया था।

इसी प्रतिष्ठा के मध्य विधानसभा अध्यक्ष श्री हुकुमसिंह, भूतपूर्व राज्यपाल किदवई जी आदि अनेक नेतागण पधारे।

सन् 1987 की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज अपने विशाल संघ सहित यहाँ पधारे थे, तब 8 मार्च को ब्र.मोतीचंद की क्षुल्लक दीक्षा के दिवस श्री माधवराव सिंधिया तत्कालीन रेलमंत्री-भारत सरकार पधारे थे।

सन् 1990 में जंबूद्वीप महामहोत्सव एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में श्री अजितसिंह तत्कालीन उद्योगमंत्री भारत सरकार और बी. सत्यनारायण रेड्डी महामहिम राज्यपाल उत्तरप्रदेश पधारे थे।

सन् 1991 के सरधना चातुर्मास में 23 अक्टूबर के दिन पूज्य माताजी के जन्मदिवस समारोह में श्री मुरली मनोहर जोशी (राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी) और डॉ.जे.के. जैन (राज्यसभा सदस्य) पधारे।

15 फरवरी 1992 को उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह पूज्य माताजी के दर्शनार्थ

जम्बूद्वीपरचनाया दर्शनमकरोत् मातुश्च शुभाशीर्वादमगृहणात्। तत्पश्चात् 1994 वर्षे अयोध्यायां तत्कालीनो मुख्यमंत्री मुलायमसिंहो यादवः मातुर्दर्शनं कृत्वा स्वजीवनं धन्यमकरोत्। प्रधानमंत्री श्री अटलविहारी वाजपेयी द्विवारं 1998, 2000 वर्षयोः पूज्यमातुर्दर्शनं चकार, 2003 वर्षे च राष्ट्रपतिः ए.पी.जे. अब्दुल्लकलाम् मातुः दर्शनं कृत्वा स्वात्मानं धन्यमकरोत्। मातुः दिल्लीगुजरातमहाराष्ट्रेषु प्रदेशेषु मंगलस्य पदार्पणस्यावसरेषु तेषां प्रदेशानां मुख्यमन्त्रिभिः राज्यपालैश्च दर्शनं कृत्वा धर्मलाभः प्राप्तः। एतत्सर्वः मातुमर्हनीयस्यैव व्यक्तित्वस्य प्रभावोऽस्ति यत् सा सर्वेभ्यः उदारतापूर्वकं स्वाशीर्वादं प्रयच्छति।

इदं च अनेकराजनेतृणां जम्बूद्वीपस्य कार्यक्रमेष्वागमनं मातुराशीर्वादस्यैव सुफलं विद्यते। एते नेतारः समागत्य मात्रा सह राज्यस्य शान्तिहेतवे चर्चाः अकुर्वन्। माता च प्रायः सर्वेभ्यः एवं मांसमदिरादीनां त्यागं कारयित्वा अनेकानुपदेशान् प्रदाय धर्मस्य यंत्र, मंत्रान्, मालादीअपि अयच्छत्। अत्रान्यत्र च एम.एल.ए., एम.पी., आई.जी., डी.आई.जी. आयुक्तजिलाधीशा–उच्चतम–उच्चन्यायालस्य न्यायाधीशाः आदयः सर्वेऽत्र समागत्य मातुराशीर्वादान् प्राप्नुवन्। एन.सी.सी., सेनादीनां च शिविराः अत्र प्राकृतिकवातावरणे समायोज्यन्ते। येषु शिविरार्थिनः जम्बूद्वीपस्थलमागत्य गौरवयुक्तव्यक्तित्वस्य समक्षं नतमस्तका भवन्तः तस्याः कल्याणकारिणमुपदेशं आशीर्वादं च गृह्णन्ति।

हस्तिनापुर पधारे एवं 19 अगस्त 1992 को मध्यप्रदेश के लोकनिर्माण विभाग के मंत्री श्री हिम्मतसिंह कोठारी ने सपरिवार हस्तिनापुर पधारकर जंबूद्वीप रचना के दर्शन किए एवं पूज्य माताजी से शुभाशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद सन् 1994 में अयोध्या में तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने पूज्य माताजी के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य किया। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दो बार (सन् 1998 एवं 2000 में) पूज्य माताजी के दर्शन किये तथा सन् 2003 में राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने तो दर्शन करके अपने को बहुत ही धन्य-धन्य समझा। पूज्य माताजी के दिल्ली, गुजरात एवं महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में मंगल पदार्पण के अवसर पर वहाँ के मुख्यमंत्री, राज्यपाल आदि ने दर्शन करके धर्मलाभ प्राप्त किया। यह सब पूज्य माताजी के महनीय व्यक्तित्व का ही प्रभाव है जो वे सभी को उदारतापूर्वक अपना आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

यह अनेक राजनेताओं का जंबूद्वीप आदि के कार्यक्रमों में आगमन पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल आशीर्वाद का ही सुफल है। इन नेताओं ने आकर पूज्य माताजी से राज्य में शांति हेतु अनेक चर्चायें की थीं। माताजी ने भी प्रायः सभी को मांस, मद्य आदि का त्याग कराकर अनेक उपदेश देकर धर्म के यंत्र, मंत्र, जपमाला आदि भी दी हैं। यहाँ एवं अन्यत्र भी एम.एल.ए., एम.पी., आई.जी., डी.आई.जी., कमिश्नर, कलेक्टर, सुप्रीमकोर्ट, हाईकोर्ट के न्यायाधीश आदि पधारकर पूज्य माताजी से आशीर्वाद ग्रहण करते रहते हैं तथा एन.सी.सी., मिलिट्री आदि के कैम्प भी प्रायः हस्तिनापुर के प्राकृतिक वातावरण में आयोजित होते हैं, जिनमें शिविरार्थी जम्बूद्वीप स्थल पर आकर इन गरिमामयी व्यक्तित्व के समक्ष नतमस्तक होते हुए इनसे कल्याणकारी उपदेश एवं आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

केशलुंचनम्–**मुनीनामार्यिकाणां च चर्यायां केशलुंचनं तेषां मूलगुणोऽस्ति यत् च यतयः उत्तममध्यमजघन्यविधिना शास्त्रानुसारेण द्वयोस्त्रिषु चतुर्षुवा मासेषु सम्पन्नं कुर्वन्ति। माता च त्रिंपचाशत् वर्षीयेषु दीक्षितजीवनेषु प्रायः द्विशतबारान् केशानां लुंचनं चकार। प्रारम्भे तु द्वित्रिमासानामभ्यन्तरं शास्त्रोक्त्या मध्यमचर्यानुसारेण केशलुंचनं यत् तस्याः इष्टमासीत्। अयं च क्रमः त्रिंशत् वर्षाणि यावत् चलितोऽभूत्। तत्पश्चात् शारीरिकास्वस्थतायाः कारणेन त्रयाणां चतुर्णां मासानां मध्ये कर्तुमारभत्। तच्च तारतम्यं वर्तमानेऽपि प्रचलति।**

स्युस्तस्याः जीवनेकाश्चिदपि विपत्तयः किन्तु मातेयं सर्वदा स्वमूलगुणानां पालने सावधानाः लक्ष्यते। सा च सर्वदा स्वशिष्यवर्गान् अयमेवोपदेशं ददाति यत् ''शरीरं तु भवे भवे प्राप्यते किन्तु संयमस्तु दुर्लभतया एव प्राप्तः। शरीरस्य स्वास्थ्याय कदापि संयमस्य विराधना न कार्या। स्यात्तत् मुंचेत् तिष्ठेत् वा।''

अस्य सूत्रस्यानुसरणं सा स्व गम्भीरास्वस्थावस्थायामपि अकरोत्। 1985–86 वर्षे यदा अवधिज्वरेण पीलिया इतिरोगेण च सा मरणासन्नावस्थायामासीत् तथापि स्वकेशानां लुंचनस्य सा पूर्णं ध्यानमकरोत् एकस्मिन् दिने च सा मां अकथयत्–त्वं मह्यं भस्मानीय देहि, अद्याहं लुंचनं करिष्यामि। इदानीं चतुर्षु मासेषु अष्ट–दश दिनानि शेषाण्यासन्, किन्तु सा स्वयमेव स्वसम्पूर्णकेशानां लुंचनमकरोत्। नियमानुसारेण चोपवासमप्यकरोत्। अहं तस्यै हस्ताश्रयं दातुं प्रयत्नमकरवम् किन्तु प्रारम्भादेव स्वहस्ताभ्यां विधानस्य स्वभावस्य

➢**केशलोंच–**

दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं की चर्या में केशलोंच उनका एक मूलगुण है जो उत्तम, मध्यम, जघन्य विधि अनुसार दो, तीन, चार महीने में सम्पन्न करना होता है। पूज्य माताजी ने अपने 53 वर्षीय दीक्षित जीवन में लगभग 200 बार केशलोंच किए। प्रारंभ में तो दो से तीन माह के अंदर शास्त्रोक्त मध्यम चर्यानुसार केशलोंच करना ही इन्हें इष्ट था। यह क्रम लगभग 30 वर्ष तक चला है। उसके पश्चात् शारीरिक अस्वस्थता के कारण 3 से 4 माह के बीच में करने लगीं, वह तारतम्य वर्तमान में भी चल रहा है।

चाहे कैसी विकट परिस्थितियाँ इनके जीवन में क्यों न आईं किन्तु अपने मूलगुणों के पालन में पूज्य माताजी सर्वदा सावधान देखी गईं। ये हम शिष्यों को हमेशा यही शिक्षा देती रहती हैं कि **''शरीर तो भव-भव में प्राप्त होता है किन्तु संयम बड़ी दुर्लभता से मिला है। शरीर-स्वास्थ्य के लिए संयम की कभी विराधना नहीं करनी चाहिए, चाहे वह छूटे अथवा रहे।''**

इसी सूत्र का अनुसरण इन्होंने अपनी गंभीर अस्वस्थता में भी किया है। सन् 1985-86 में जब म्यादी बुखार एवं पीलिया के कारण ये मरणासन्न अवस्था में थीं, तो भी अपने केशलोंच के समय का इन्हें पूरा ध्यान रहा और एक दिन मुझसे बोलीं–तुम मुझे राख लाकर दे दो, मैं आज लोंच करूँगी। समय अभी 8-10 दिन शेष था 4 माह में, किन्तु उठकर अपने हाथों से ही अपने सिर के पूरे केशों का लोंच किया और नियमानुसार उपवास किया। मैंने कुछ सहारा लगाने का प्रयत्न भी

कारणेन स्वयमेव पूर्णं चकार। मां तु एकं केशमपि उत्खातयितुं नाज्ञापयत्।

अनेन दृश्येन वयं सर्वा आश्चर्यचकिताः आस्य। यतो हि तस्मिन् काले माता लघुशंकायै दीर्घशंकायै चावस्थातुमपि नाशक्नोत्। यदा च सा स्वयमेव शरीरपरिवर्तनमपि कर्तुम् समर्था नासीत्। मम प्रायः चतुर्विंशतिहोरासमये तस्याः समीपे उपस्थितिरासीत्। सर्वे शिष्यगणाः परिचर्यायां व्यस्ताः आसन्।

एतस्मिन् गम्भीरसमयेऽस्वस्थेषु क्षणेषु निरन्तरं होराद्वयं उपविश्य स्वहस्ताभ्यां केशानां लुंचनं केवलं दिव्यशक्तेरसीमात्मिकबलस्यैव च प्रतीकं विद्यते। तपस्यायां अनया दृढतयैवास्यै सदैव नवजीवनं प्रदत्तम्। अस्याः छत्रछायया अहमपि भगवन्तं प्रार्थयामि यत् मह्यमपि तादृशीं चारित्रिक दृढतां प्रददातु।

अपूर्वा कार्यक्षमता–**तस्याः दीर्घकालीनायाः अस्वस्थतायाः पश्चात् माताऽद्यापि कस्मात्चित् स्वस्थजनात् अधिकं कार्यं करोति। तस्यै शिष्याणामपि एक मिनट समयेऽपि रिक्तावस्थानं न रोचते। जीवनस्य प्रत्येक क्षणस्य सदुपयोगं कर्तुं शिक्षा तस्याः सान्निध्ये सहजमेव प्राप्यते। तदैव तु 1986 वर्षस्य मरणोन्मुखअस्वस्थतायाः पश्चादपि सा कल्पद्रुमसर्वतोभद्रत्रिलोकजम्बूद्वीपादिवृहन्मण्डलविधानान्यरचयत्। समयसारग्रन्थस्य चानुवादः कृतः। अनेकमौलिकग्रन्थानां सर्जनं कृतम्। अधुनापर्यन्तं सा सिद्धचक्रऋषभदेव–पार्श्वनाथविश्वशान्तिमहावीरगणधरवलयादीनां अनेकविधानानां रचनाः अकरोत्। विधानानां**

किया किन्तु प्रारंभ से ही अपने हाथ से करने की आदत होने के कारण धीरे-धीरे स्वयं करती रहीं, मुझे एक बाल भी नहीं उखाड़ने दिया।

इस दृश्य से हम सभी आश्चर्यचकित थे क्योंकि उन दिनों माताजी अशक्तता के कारण दीर्घशंका, लघुशंका के लिए खड़ी भी नहीं हो पाती थीं। यहाँ तक कि कुछ दिन तक करवट भी स्वयं बदलने में असमर्थ रहीं। मेरी लगभग 24 घंटे उनके पास ड्यूटी होती थी और सभी शिष्यगण परिचर्या में लगे हुए थे।

ऐसे गंभीर अस्वस्थ क्षणों में दो घण्टे लगातार बैठकर अपने हाथों से केश उखाड़ना मात्र कोई दैवीशक्ति एवं असीम आत्मबल का ही प्रतीक था। तपस्या की इसी दृढ़ता ने इन्हें सदैव नवजीवन प्रदान किया है। इनकी छत्रछाया मुझे भी ऐसी चारित्रिक दृढ़ता प्रदान करे, यही जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है।

➢अपूर्व कार्यक्षमता–

उस दीर्घकालीन अस्वस्थता के पश्चात् माताजी आज भी एक स्वस्थ व्यक्ति से कहीं अधिक कार्य करती हैं। उन्हें शिष्यों का भी एक मिनट खाली बैठना पसंद नहीं है। जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करने की शिक्षा उनके सानिध्य से सहज प्राप्त हो सकती है। तभी तो उन्होंने सन् 1986 की मरणोन्मुखी अस्वस्थता के बाद भी कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, जम्बूद्वीप आदि वृहद् मंडल विधानों की रचना की तथा समयसार ग्रंथ का अनुवाद किया, अनेक मौलिक ग्रंथों का सृजन किया तथा अब तक सिद्धचक्र, ऋषभदेव, पार्श्वनाथ, विश्वशांति महावीर विधान, गणधरवलय आदि

प्रायः चत्वारिंशत् संख्यायां रचनां व्यधात्। वर्तमाने च सिद्धान्तचिन्तामणिग्रन्थस्य संस्कृत टीकायाः लेखनं गतिशीलं वर्तते। एतदतिरिक्तं तस्याः समयस्तुः दैनिकक्रियासु स्वाध्याये भक्तेभ्यश्चाशीर्वादस्य प्रदाने व्यतीतो भवति।

शुद्धा प्रासुकलेखनी चिरं जीविष्यति–**कुन्दकुन्दउमास्वामिसमन्तभद्रअकलंकदेवान् आचार्यान् तु वयं नापश्याम, ये स्वहस्ताभ्यां लिखित्वा अस्मभ्यं स्वबहुमूल्याः साहित्यिक कृतयोऽदुः किन्तु तेषां सर्वेषां मिश्रितरूपं अस्मभ्यं गणिन्यामार्यिकायां ज्ञानमत्यां दृष्टुं प्राप्यते। या पूर्वाचार्याणां वाण्यानुस्यूतः एकं एकं शब्दं स्वग्रन्थेषु संयोजितमकरोत्। पापभीरुता यस्यां गूढतया लीनास्ति। मनसा निर्मितः एकः शब्दोऽपि यस्या कृतिसु नोपलभ्यते। एतस्यै शुद्धलेखिन्यै जगतः बारम्बारं नमः।**

प्रासुक लेखन्यास्माकं पाठकाः भ्रमिताः भवेयुः यतो जलं, दुग्धं खाद्यं चैते पदार्थाः प्रासुकाः भवितुं शक्यन्ते, किं लेखन्यपि कस्यापि प्रासुकी भवितुं शक्नोति। लेखन्यपि प्रासुकास्ति तर्हि तु तया प्रणीतेषु ग्रन्थेषु अतिशयो दृश्यते। शुष्कनीलग्रन्थिका स्व कमण्डलोः जले मिश्रितं कृत्वा लेखनीं तस्मिन् निमाज्जितां कृत्वा सा सदैव लेखनकार्यमकरोत्। चतुर्विंशतिहोराणां मर्यादायाः पश्चात् पुनः कमण्डलोः प्रासुकोष्णजलेन लेखनीं क्षालयित्वा द्वितीयां नवीनां मसीं मिश्रितां कृत्वा लेखनं, इदमेव तस्याः लेखनक्रमः आसीत्। 1969–70 वर्षे तु अष्टसहस्र्याः अनुवादस्य नवप्रतयस्तु अपरिपक्वपैंसिललेखन्या लिखिताः सन्ति। एका च प्रति मस्या लिखिता विद्यते।

लगभग 40 विधानों की रचना की। वर्तमान में षट्खण्डागम की सिद्धान्तचिंतामणि नामक संस्कृत टीका लेखन का नवीन कार्य चल रहा है। इसके अतिरिक्त उनका समय अपनी दैनिक क्रियाओं में तथा स्वाध्याय और भाक्तिकों को आशीर्वाद प्रदान करने में व्यतीत होता है।

➢शुद्ध प्रासुक लेखनी चिरकाल तक जीवन्त रहेगी–

आचार्य श्री कुंदकुंद, उमास्वामी, समन्तभद्र, अकलंकदेव तो हमने नहीं देखे, जो हमें अपने हाथों से लिखकर अमूल्य साहित्यिक कृतियाँ प्रदान कर गए किन्तु उन सबका मिलाजुला रूप हमें वर्तमान में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के अन्दर दृष्टिगत हो रहा है जिन्होंने पूर्वाचार्यों की वाणी से अनुस्यूत एक-एक शब्द अपने ग्रंथों में संजोया है, पापभीरुता जिनमें कूट-कूट कर भरी हुई है, मनगढ़ंत एक शब्द भी जिनकी कृतियों में उपलब्ध नहीं हो सकता, ऐसी शुद्ध लेखनी को जग का बारम्बार प्रणाम है।

प्रासुक लेखनी से हमारे पाठक भ्रमित हो सकते हैं कि पानी, दूध तथा खाद्य पदार्थ प्रासुक किये जाते हैं, क्या लेखनी भी किसी की प्रासुक हो सकती है? हाँ, लेखनी भी प्रासुक है तभी तो उनके द्वारा लिखित ग्रंथों में अतिशय देखा जा रहा है। सूखी नीली कोरस टिकिया का बुरादा अपने कमंडलु के जल में घोलकर फाउन्टेन पेन से डुबोकर उन्होंने सदैव लेखनकार्य किया। चौबीस घण्टे की मर्यादा के बाद पुनः कमंडलु के गरम-प्रासुक जल से पेन की निब धोकर दूसरी नई स्याही घोलकर लिखना यही उनका दैनिक लेखन क्रम था। सन् 1969-70 में अष्टसहस्री अनुवाद की 9 कापियाँ तो कच्ची पेंसिल से लिखी हैं और 1 कापी स्याही से लिखी है।

हस्तिनापुरस्य समीपस्थानां च नगराणां मंगलमयप्रवासः–**भगवतः ऋषभदेवस्य प्रथमकाल–माहारस्य स्थलं, भगवतः शान्ति–कुन्थु–अरजिनानां चतुर्णां कल्याणकानां भूमिः अन्यानपीति–हासान् स्वगर्भे धारयन्ती हस्तिनापुरनगरी ऐतिहासिकपौराणिकी त्वस्त्येव, जम्बूद्वीपस्य रचनायाः निर्माणे अस्याश्चेतनाया स्वरेषु नवजीवनं पूरितम्। स्वकर्मभूम्यां तपोभूम्यां च जम्बूद्वीपस्थले निर्मितायां** ''रत्नत्रयनिलय'' **वसतिकायामपि मातुः संसघं वास्तव्यं भवति। तस्याः शारीरिक–अस्वस्थता यत्र तां हस्तिनापुरे अधिकं प्रवासं कर्तुं बाध्यामकरोत् तत्र देशस्य विदेशस्य च जनास्तस्याः अधिकं लाभं प्राप्नुवन्ति। जम्बूद्वीपे आगतान् यात्रिणो यदि अत्र विराजिताया: ज्ञानमत्याः मातुर्दर्शनं न भवति तु ते आत्मानं वंचितं मत्वा कुत्रापि तामन्विष्य तस्याः दर्शनं कृत्वा स्वयात्रां सफलां मन्यन्ते।**

1969–80 वर्षे यदा बड़ौतमोदीनगरमेरठअमीनगरसरायप्रभृतिषु नगरेषु शीतकालीनस्य प्रवासस्य समये देशस्य सुदूरवर्तिभ्यः प्रान्तेभ्यः समागताः भक्ताः स्थानस्य ज्ञानं प्राप्य तत्रैवागच्छन्। एकदा बड़ौतनगरस्य निकटवर्तिनि एकस्मिन् लघु पोटास नाम्नि ग्रामे जापान देशात् प्राप्तः योशिमाशामिचिवाकी सज्जनः पूज्यमातुः संघस्य च दर्शनं कृत्वा अत्यन्तमेव हर्षितोऽभूत्। तेन सहागतः डाक्टर अनुपम जैनः तं जैनसाधूनां पदविहारस्य कष्टपूर्णतपस्यायाः विषये अकथयत् यच्छ्रुत्वा सः अत्यन्तमेव प्रभावितोऽभवत्।

➢**हस्तिनापुर तथा आसपास नगरों का मंगलमयी प्रवास–**

भगवान ऋषभदेव की प्रथम पारणा स्थली, भगवान शान्ति, कुंथु, अरहनाथ की चार कल्याणक भूमि एवं अनेक इतिहासों को अपने गर्भ में संजोए हुए हस्तिनापुर नगरी ऐतिहासिक एवं पौराणिक तो है ही, जंबूद्वीप के निर्माण ने इस चेतना के स्वरों में नवजीवन प्रदान कर दिया है। अपनी कर्मभूमि एवं तपोभूमि जंबूद्वीप स्थल पर निर्मित **''रत्नत्रय निलय''** वसतिका में भी पूज्य माताजी का ससंघ वास्तव्य रहता है। उनकी शारीरिक अशक्तता ने जहाँ उन्हें हस्तिनापुर में अधिक प्रवास के लिए बाध्य किया है, वहीं देश-विदेश की जनता को उनसे असीम लाभ प्राप्त हो रहा है। जंबूद्वीप दर्शनार्थ आने वाले अधिकतर यात्रियों को यहाँ यदि विहार कर रहीं ज्ञानमती माताजी के दर्शन नहीं होते हैं, तो वे अपनी यात्रा अधूरी समझकर उन्हें ढूंढते हुए कहीं न कहीं पहुँचकर दर्शन करके ही यात्रा को पूर्ण मानते हैं।

सन् 1989-90 में जब बड़ौत, मोदीनगर, मेरठ, अमीनगर सराय आदि नगरों में शीतकालीन प्रवास के समय देश के सुदूरवर्ती प्रान्तों से आए हुए भक्तगण स्थान का पता लगा-लगाकर दर्शनार्थ पहुँचे, उस समय बड़ौत के निकट एक पोयस नामक बहुत छोटे से ग्राम में विदेश (जापान) से पधारे हुए योशिमाशा मिचिवाकी पूज्य माताजी एवं संघ के दर्शनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनके साथ में पधारे डॉ. अनुपम जैन (इंदौर-म.प्र.) ने उन्हें जैन साधुओं के पद विहार, कठिन तपश्चर्या आदि के विषय में बतलाया जिसे सुनकर वे बड़े प्रभावित हुए।

अनेनैव प्रकारेण 1991 वर्षे हस्तिनापुरात् 50 किलोमीटर दूरे सरधना नगरे पूज्यमातुर्यदा ससंघश्चतुर्मासोऽभवत्, तत्र प्रतिदिनं तत्रोत्सव इव प्रतीतोऽभवत्। राजस्थान–महाराष्ट्रउत्तरप्रदेशमध्यप्रदेशादिभ्यः प्रदेशेभ्यः यात्रिणां वाहनानां निरन्तरमेवागमनमभूत्। सरधना निवासिनः अति प्रसन्नतयाऽतिथीनामातिथ्यं सत्कारं चाकुर्वन्। स्वनगरं चैकं जीवन्तं तीर्थं मन्यमानाः मोदमग्नाः अभवन्। हस्तिनापुरस्य समीपस्थेषु स्थानेषु–शतशो ग्रामेषु विशालजैनसमाजोऽस्ति, येषां सर्वेषां मनसीच्छाऽऽसीत् यत् माताश्री तेषां नगरेषु गच्छेत् तेभ्यश्च धर्मलाभं च ददातु। ते तया ज्ञानं च प्राप्नुवन्तु।

पश्चिमोत्तरप्रदेशे साधुसंघस्य विहारस्य प्रेरिका–**जम्बूद्वीपस्य रचनायाः माध्यमेन माता ज्ञानमती यत्र पश्चिमोत्तरप्रदेशाय विश्वस्य महान्तं न्यासं प्रादात् तत्र महान्तः साधवस्तेषां संघाश्च भवत्याः प्रेरणया प्रान्तेऽस्मिन् पदार्पणान्यकुर्वन्। येन जैनत्वस्य व्यापकप्रचारोऽभवत्।**

परमपूज्यस्य आचार्यधर्मसागरस्य पदार्पणस्य पश्चात् पंचसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे आचार्यकल्पश्रुतसागरस्य हस्तिनापुरे उत्तरप्रदेशस्य च कतिषुचिन्नगरेषु पदार्पणमभवत्। पुनः एकोनाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे सुमेरुपर्वतस्य प्रतिष्ठामहोत्सवे आचार्यकल्पस्य श्रेयांससागरस्य ससंघं पदार्पणमभवत्, यः नवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे आचार्यशान्ति–सागरस्य परम्परायां पंचमपट्टाचार्योऽभिषिक्तोऽभूत्। पंचाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जम्बूद्वीपजिनबिम्बप्रतिष्ठायां आचार्यश्री धर्मसागरस्य, संघस्थः मुनिर्निर्मलसागरः तेन सहैवान्येषां

इसी प्रकार सन् 1991 में हस्तिनापुर से 50 किमी. दूर सरधना नगर में पूज्य माताजी का जब संघ सहित चातुर्मास हुआ, तब वहाँ प्रतिदिन मेला सा लगा रहा। राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि अनेक प्रान्तों से यात्री बसों का तांता लगा रहा। सरधना निवासी बड़ी प्रसन्नता पूर्वक अतिथियों का आतिथ्य-सत्कार करते तथा अपने नगर को एक जीवंत तीर्थ मानते हुए फूले नहीं समाते। हस्तिनापुर के आस-पास सैकड़ों ग्रामों एवं शहरों में विशाल जैन समाज है, उन सभी की अपने-अपने नगरों में माताजी को ले जाकर सानिध्य प्राप्त करने एवं ज्ञान लाभ लेने की तीव्र अभिलाषा रहती है।

➢पश्चिमी उत्तरप्रदेश में साधुसंघ विहार की प्रेरिका–

जम्बूद्वीप रचना के माध्यम से श्री ज्ञानमती माताजी ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश को जहाँ एक विश्व की अद्वितीय धरोहर प्रदान की है, वहीं बड़े-बड़े साधु संत भी आपकी प्रेरणा से इस प्रान्त में पधारे, जिससे जैनत्व का विस्तृत प्रचार हुआ है।

परमपूज्य आचार्यश्री 108 धर्मसागर महाराज के पदार्पण के पश्चात् सन् 1975 में आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर महाराज का हस्तिनापुर एवं उत्तरप्रदेश के कुछ नगरों में पदार्पण हुआ पुनः सन् 1979 में सुमेरु पर्वत की प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर महाराज का ससंघ पदार्पण हुआ, जो सन् 1990 में आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य बने। सन् 1985 में जंबूद्वीप जिनबिम्ब प्रतिष्ठापना महोत्सव पर आचार्यश्री धर्मसागर महाराज संघस्थ मुनिश्री

मुनीनामार्यिकाणां च शुभागमनमभूत्। आचार्यः सुबाहुसागरश्च ससंघोऽत्रागच्छत्।

मातुः सदैव इयमिच्छास्ति यत् संसारे प्रथमं निर्मितस्याः जम्बूद्वीपरचनायाः दर्शनार्थं उत्तरप्रदेशस्य च जनतायाः धर्मलाभार्थं साधुसंघाः हस्तिनापुरे प्रान्तेऽस्मिन् चागच्छेयुः। स्व निकटस्थभक्तेभ्यः अस्मै कार्याय प्ररेणाः अपि ददाति। अस्या एव प्रेरणायाः फलस्वरूपेण सप्ताशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे सन्मार्गदिवाकरस्य आचार्यविमलसागरस्य विशालः संघः हस्तिनापुरे पदार्पणं व्यधात्। मेरठबड़ौतादिनगरेषु च केचित् कालं तस्य संघस्य प्रवास आसीत्। अनेनैव प्रकारेण मातुः प्रेरणया एकोनाशीत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे आचार्यः कुन्थुसागरस्य चतुर्विधसंघस्य हस्तिनापुरे पदार्पणमभूत्। अत्र चत्वारिंशत् दिनानां प्रभावना–पूर्णस्य प्रवासस्य पश्चात् बडौतमुजफ्फरनगरादिनगरेषु तस्य चतुर्मासोऽप्यभूत्।

पश्चिमोत्तरप्रदेशस्य समाजः पूज्यज्ञानमतीमातुरनयाप्रेरणया उदारतया च स्वात्मानं सौभाग्यशालिममन्यत्। तत्पश्चादपि आचार्यसुमतिसागरः आचार्य दर्शनसागरः, आचार्यः कल्याणसागरः अपि एते सर्वेऽस्मिन् प्रदेशे समागच्छन्। ते सर्वे जम्बूद्वीपरचनानिमित्तात् हस्तिनापुरमवश्यमेवागच्छन्ति। एतत्सर्वं ज्ञानमत्याः मातुरेव प्रेरणायाः फलमस्ति।

तन्मयता चिन्मयतामदात्–**कुशलो व्यापारी यदा व्यापारे तन्मयो भवति त्वेकस्मिन् दिने श्रेष्ठी जायते, कुशलश्चित्रकारः स्व चित्रकारिताया तन्मयो भूत्वाऽचेतनचित्रेभ्यो जीवनं**

निर्मलसागर जी एवं कतिपय मुनि-आर्यिकाओं का आगमन हुआ तथा आचार्यश्री सुबाहुसागर महाराज ससंघ पधारे।

पूज्य माताजी की सदैव यह हार्दिक इच्छा रही है कि संसार में प्रथम बार निर्मित जम्बूद्वीप रचना के दर्शनार्थ एवं उत्तरप्रदेश की जनता के धर्मलाभ हेतु साधु संघ हस्तिनापुर एवं इस प्रान्त में पधारें। अपने निकटस्थ भक्तों को वे इसके लिए प्रेरणा भी प्रदान करती रहती हैं। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप सन् 1987 में सन्मार्ग दिवाकर आचार्यश्री विमलसागर महाराज के विशाल संघ का हस्तिनापुर पदार्पण हुआ और मेरठ, बड़ौत आदि शहरों में भी कुछ समय तक संघ का प्रवास रहा। इसी प्रकार सन् 1989 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आचार्यश्री कुंथुसागर महाराज के चतुर्विध संघ का हस्तिनापुर पदार्पण हुआ। यहाँ 40 दिवसीय प्रभावनापूर्ण प्रवास के पश्चात् बड़ौत, मुजफ्फरनगर आदि नगरों में उनके चातुर्मास भी हुए।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश की जनता पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी की इस प्रेरणा, उदारता से अपने को सौभाग्यशाली मानती है। इसके अतिरिक्त आचार्य श्री सुमतिसागर महाराज, आचार्यश्री दर्शनसागर जी, आचार्यश्री कल्याणसागर जी आदि के संघ इस प्रदेश में पधारते रहे हैं, वे जंबूद्वीप रचना के निमित्त से हस्तिनापुर भी अवश्य पहुँचते हैं, यह सब पूज्य माताजी की प्रबल प्रेरणा एवं धर्मवात्सल्य का ही फल है।

➢तन्मयता ने चिन्मयता दी–

कुशल व्यापारी जब व्यापार में तन्मय होता है, तो एक दिन सेठ बन जाता है, कुशल चित्रकार अपनी चित्रकारी में तन्मय होकर अचेतन चित्रों में जान फूंक देता है, कुशल डाक्टर तन्मयता पूर्वक

ददाति, कुशलश्चिकित्सकस्तन्मयतापूर्वकं रोगिणामुपचारान्शल्य क्रियादीन् कृत्वा तेभ्यो नवजीवनं प्रददाति, ध्यानी दिगम्बरो मुनिर्ध्याने तन्मयो भूत्वा केवलज्ञानं प्राप्नोति, शिष्याश्च तन्मयतयाऽध्ययनं विधाय उच्चोपाधिं लभन्ते, गुरुस्तन्मयतापूर्वकं शिष्यानध्याप्य तानात्मनोऽप्युच्चैः करोति। कथनस्येदं तात्पर्यमस्ति यत् तन्मयता प्राणिनामुन्नतेः शिखरमधिष्ठापयति।

तच्छब्दे मयट् प्रत्ययं प्रयोज्य तद्रूपार्थे 'तन्मय' शब्दः प्रयुज्यते। पूज्या ज्ञानमती माता यदा स्वलेखने तन्मया भवति, तदा सा स्वदर्शनार्थमागतानां यात्रिणां ध्यानं विस्मरति। तदा तु आश्चर्यो भवति, यदा वयं सूचनां दद्मः यत् दूरस्थानेभ्यो यात्रिणो भवत्याः दर्शनार्थमागताः, भवती तान् हस्तमुत्थायाशीर्वादेनापिप्युपकृतान् नाकरोत्तदा कथयति यत् इदं तु मां ज्ञातं नासीत्, अहं तु लेखनं कुर्वन्ती साक्षात् समवसरणं अकृत्रिमचैत्यालयानां वा दर्शनार्थं गता आसम्।

3 जुलाई 1992 वर्षस्य वार्ताऽस्ति–मुख्यालयफतेहपुरउत्तरप्रदेशात् पुतानचन्द्रस्य सुपुत्रो यशवन्तकुमारः सुपुत्र्यादयश्च हस्तिनापुरमागच्छन्। मातुर्दर्शनं कृतं, अहं च द्वितीयकक्षे उपविश्य लेखने व्यस्ताऽऽसम्, ते मम समीपं आगच्छन् दर्शनं कृत्वाऽवदन्–स्यात् महती माता अस्मान् नाभ्यजानात्। अहं तानादाय पंचदश मिनट पश्चात् पुनः मातुः समीपं प्राप्ता। माता तानपश्यत् तान् च पुतानचन्द्रस्य विषयेऽपृच्छत्। पुनः साऽब्रवीत् यत् यूयं कदाऽऽगच्छथ, अहमकथयम्–एते त्वधुनैव भवत्याः दर्शनं कृत्वाऽगच्छन्। माता मन्दहास्यमकरोदब्रवीच्च अहं सिद्धभगवतो गुणेषु मग्नाऽऽसम्, (तदा सा सिद्धचक्र विधानस्य रचनायां तन्मयाऽऽसीत्)

मरीजों का इलाज, ऑप्रेशन आदि के द्वारा उसे नवजीवन प्रदान कर देता है, ध्यानी दिगम्बर मुनि ध्यान में तन्मय होकर केवलज्ञान को प्राप्त कर लेते हैं, शिष्य तन्मयतापूर्वक अध्ययन करके ऊँची-ऊँची डिग्री प्राप्त कर लेते हैं, गुरु तन्मयतापूर्वक शिष्यों को पढ़ाकर उसे अपने से भी अधिक योग्य बना देते हैं। कहने का मतलब यह है कि तन्मयता प्राणी को उन्नति के शिखर पर पहुँचा देती है।

तत् शब्द में मयट् प्रत्यय लगकर तद्रूप अर्थ में 'तन्मय' शब्द प्रयुक्त होता है। पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी जब अपने लेखन में तन्मय हो जाती हैं, तब उन्हें अपने दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों का भान ही नहीं रहता। आश्चर्य तो तब होता है, जब हम लोगों के द्वारा बताए जाने पर कि दूर-दूर से दर्शनार्थी आए हैं, आपने इन्हें हाथ उठाकर आशीर्वाद भी नहीं दिया, तब वे कहती हैं कि मुझे तो कुछ पता ही नहीं था, मैं लेखन करती हुई साक्षात् समवसरण या अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शनार्थ पहुँच गई थी।

3 जुलाई सन् 1992 की बात है–तहसील फतेहपुर (उ.प्र.) से पुतानचन्द जी के सुपुत्र यशवन्त कुमार एवं सुपुत्री आदि हस्तिनापुर आए, माताजी के दर्शन किए, मैं दूसरे कमरे में बैठी लिख रही थी, मेरे पास आए, दर्शन किए और बोले–शायद बड़ी माताजी ने हमें पहचाना नहीं। मैं उन्हें लेकर 15 मिनट बाद फिर माताजी के पास पहुँची, माताजी ने उन्हें देखा और उन लोगों से पुतानचंद जी के बारे में भी पूछा। फिर कहने लगीं कि तुम लोग कब आए हो? मैंने कहा–ये तो अभी आपके दर्शन करके गए हैं। माताजी मुस्कराने लगीं और बोलीं–मैं सिद्ध भगवान के गुणों में मगन थी (उस समय वे सिद्धचक्र विधान की रचना कर रही थीं) मुझे कुछ पता नहीं कि कौन, कब मेरे दर्शन

अहं नाजानं यत् कः कदा मम समीपे दर्शनार्थमागतः? अस्तु ते तु बराकाः, मातुः प्रवृत्तिमजानन्। अतोऽनिष्टं न मत्वा पुनस्तस्याः आशीर्वादमगृह्णन्, किन्तु बहुबारं एवं विधेषु प्रसंगेषु भक्तगणाः अप्रसन्नतामप्यनुभवन्ति। तेषां कथनमिदमस्ति यत् माता न्यूनतया अस्मान् प्रति वीक्ष्य अस्मभ्यं शुभाशीर्वादेनानुगृह्णातु। वयं दूरस्थानेभ्यः केवलं तस्याः एवं दर्शनार्थं– मागच्छामः, तस्याः एक दृष्टिमात्रेणास्माकं श्रान्तिर्दूरीभवति।

कस्मिंश्चिदंशे भक्तानां निजत्वपूर्णेदं कथनं मामापि सत्यमेव प्रतीयते अहं च हास्येन मातरं कथयामि– लेखनस्य समये तु भवत्या सह मयट् प्रत्यय एव प्रयुज्यते तदा भवती सत्यमेव तद्रूपेण परिणता भवति। तदा मातुः कथनं भवति यत् तन्मयतां विना सुन्दरकार्यस्योपलब्धिर्न भवति। अधिकबल प्रदानेन सा कथयति–यत् ध्यानमध्ययनं च तु साधोः लक्षणमेवास्ति, यदि तदापि श्रावकाः अनिष्ट मन्यन्ते त्वहं किं कर्तुं शक्नोमि। अधुना भक्तगणाः अस्मिन् विषये स्वयमेव विचारयन्तु। लेखनेऽध्ययने च व्यस्तां मातरं वीक्ष्य तस्याः वार्तालापसमये एवं वार्तां कुर्वन्तु। यतो हि तस्याः इयं तन्मयता यत्र तस्यै हितकारिण्यमस्ति, तत्रैव लक्षाधिकजनेभ्यः ज्ञानस्य भक्तेश्च मार्गं प्रशस्तं करोति। इयमेव तन्मयता तस्यै चिन्मयतां प्रददाति।

चारित्रचन्द्रिका इतिनाम्नः सार्थक्यम्?–**आचार्यकुन्दकुन्दस्य स्वामिनः वाक्यस्य 'चारित्तं खलु धम्मो' अनुसारेण जैनधर्मस्य मूलभित्तिश्चारित्र्ये एव निर्भराऽस्ति, सम्यग्दर्शनेन सह धृतः अल्पचारित्रमपि मोक्षमार्गस्य साधको भवति। यदा च सम्यग्दर्शनरहितं बहुतपस्या तपोयुक्तमपि चारित्रं संसारस्यैव कारणं भवति।**

करने आया? खैर! वे लोग तो बेचारे माताजी की प्रवृत्ति जानते थे, इसलिए बुरा न मानकर पुनः उनका आशीर्वाद ग्रहण किया किन्तु कितनी ही बार ऐसे प्रसंगों में कुछ भक्तगण नाराज भी होते हैं। उनका कहना रहता है कि माताजी कम से कम हमारी ओर देखकर आशीर्वाद तो प्रदान करें, हम लोग दूर-दूर से केवल इन्हीं के दर्शनार्थ तो आते हैं, उनकी एक दृष्टिमात्र से हमारी सारी थकान दूर हो जाती है।

किसी अंश में भक्तों की अपनत्व भरी यह शिकायत मुझे सत्य ही प्रतीत होने लगती है और मैं माताजी से हँसी-हँसी में कहती भी हूँ कि लेखन के समय आपके साथ तो 'मयट्' प्रत्यय ही लग जाता है, तब आप सचमुच तद्रूप परिणत हो जाती हैं। उस समय माताजी का कहना होता है कि तन्मय हुए बिना सुन्दर कार्य की उपलब्धि नहीं होती है। अधिक जोर देने पर वे कहने लगती हैं– ध्यान और अध्ययन तो साधु का लक्षण ही है इसमें भी श्रावक यदि बुरा मानें, तो मैं क्या कर सकती हूँ? अब भक्तगण इस विषय पर स्वयं विचार करें और लिखाई-पढ़ाई में व्यस्त पूज्य माताजी से उनके बातचीत के समय पर ही बात करने का प्रयास करें क्योंकि उनकी यह तन्मयता जहाँ उनके स्वयं के लिए हितकारी है, वहीं लाखों लोगों को ज्ञान और भक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। यही तन्मयता उन्हें चिन्मयता प्रदान करती है।

➢चारित्रचन्द्रिका नाम की सार्थकता–

आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के वाक्य "चारित्तं खलु धम्मो" के अनुसार जैनधर्म की नींव चारित्र पर ही टिकी है एवं सम्यग्दर्शन के साथ धारण किया गया अल्प चारित्र भी मोक्षमार्ग में साधक होता है, जबकि सम्यक्त्वरहित बहुत त्याग-तपस्यायुक्त चारित्र संसार का ही कारण होता है।

कसायपाहुड सूत्रग्रन्थस्य जयधवलाटीकायां श्रीवीरसेनाचार्येणोक्तम्–

णाणं पयासओ, तवो सोहओ संजमो य गुत्तियरो।
तिण्हं पि समाजोए, मोक्खो जिणसासणे भणिदं।।

अर्थात् ज्ञानं स्वपरप्रकाशकं भवति, तपसा आत्मतत्त्वस्य शोधनं भवति, संयमेन च आत्मनो रक्षा भवति, त्रयाणां च संयोगेनैकीकरणेन प्राप्तामवस्थां जैनशासने मोक्षस्य संज्ञा प्रदीयते।

तस्यैव मोक्षपदस्य शाश्वतीं सत्तां प्राप्तुमनादिकालात् मनुष्यगतौ सर्वांगीणयोग्यैः स्त्रीपुरुषैः अणुव्रतानि महाव्रतानि च धारयितुं परम्परा विद्यते। एताः एव अवस्थाः देशचारित्रस्य सकलचारित्रस्य नाम्ना विज्ञायते। गृहस्थाः श्रावकाः श्राविकाश्च पंचाणुव्रतानि, द्वादश व्रतानि, एकादशप्रतिमाः, इत्यादीनि व्रतानि प्रतिपाल्य देशसंयमिनः कथ्यन्ते। पञ्च महाव्रतानि, पंचसमितयः त्रयश्च गुप्तयः, इदं त्रयोदश प्रकाराणां चारित्रमंगीकृत्य मुनयः आर्यिकाश्च सकलसंयमिनो भवन्ति।

अस्य ग्रन्थस्य मूलनायिकारूपेण या गणिनीप्रमुखाया आर्यिकाशिरोमणेः यस्या ज्ञानमत्याः मातुर्जीवनदर्शनं ''चारित्रचन्द्रिका'' **नाम्न्यस्मिन् ग्रन्थे प्रस्तुतमभूत्, तस्यै कवेः एताः पंक्तयः सार्थिकाः प्रतीयन्ते–**

''अस्या कथनमस्ति वयं ज्ञानं धारयामः किन्तु चारित्रं न त्यजामः। येनाचरणं नष्टं भवेत् वयं तत् बीजं न वपामः।।चारित्र्यहीनं यदि ज्ञानं प्राप्तं तु नौः पारं न गमिष्यति। केवलाभिर्वार्ताभिरेताभिः

कसायपाहुड़ सूत्र ग्रंथ की जयधवला टीका में श्री वीरसेनाचार्य ने कहा भी है–

णाणं पयासओ तवो सोहओ संजमो य गुत्तियरो।
तिण्हं पि समाजोए, मोक्खो जिणसासणे भणिदं।।

अर्थात् ज्ञान स्व-परप्रकाशक होता है, तप से आत्मतत्त्व का शोधन होता है तथा संयम से आत्मा की रक्षा होती है एवं इन तीनों के संयोग-एकीकरण से प्राप्त अवस्था को जिनशासन में मोक्ष की संज्ञा प्रदान की गई है।

इसी मोक्षपद की शाश्वत सत्ता को प्राप्त करने हेतु अनादिकाल से मनुष्यगति में सर्वांगीण योग्य स्त्री-पुरुषों द्वारा अणुव्रत एवं महाव्रतरूप चारित्र धारण करने की परम्परा रही है। इन्हीं अवस्थाओं को देशचारित्र और सकलचारित्र के नाम से जाना जाता है। गृहस्थ श्रावक-श्राविकाएँ पाँच अणुव्रत, बारहव्रत, ग्यारह प्रतिमा आदि व्रतों को पालन करके देशसंयमी कहलाते हैं तथा पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्तिरूप तेरह प्रकार के चारित्र को धारण करने वाले सकलसंयमी होते हैं।

इस ग्रंथ की मूलनायिका के रूप में जिन पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन दर्शन को ''चारित्रचन्द्रिका'' नामक इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है, उनके लिए कवि की ये पंक्तियाँ बिल्कुल सार्थक लगती हैं–

इनका कहना हम ज्ञान रखें, लेकिन चारित्र न खो डालें।
आचरण छूट जावे जिससे, हम ऐसा बीज न बो डालें।।

जगतः उद्धारो न भविष्यति।।''

अर्थात् दृढेन सम्यक्त्वेन सह इयं अष्टादशवर्षीयातः अल्पायुषः चारित्रस्य यस्मिन् कण्टकाकीर्णे दुर्गमे पथि पदं निक्षिप्य पुष्पाणीव सुगन्धितमुपहारं जगतेऽअदात्, अयोध्यायां तेनैव प्रभाविताः भूत्वा श्रद्धालुभक्ताः एनां ''चारित्रचन्द्रिका'' इत्यलंकरणेन सम्मानितामकुर्वन्। सत्यमेव ते स्वामूल्यनिधेः मूल्यांकनमकुर्वन्। 1993 वर्षे प्राप्तस्य अस्योपाधेः सार्थकतया सम्पूर्णो देशः परिचितः स्यात् अनयैव भावनया पूज्यमातुः ज्ञानमत्याः जीवनस्यासीमितविशेषताः स्वसीमितशब्देषु प्रस्तुतीकरणस्यायं ममाभिप्रायस्तस्याः चारित्रस्य चन्द्रमसश्चन्द्रिकया अमावस्यान्धकारयुक्तं जीवनं प्रकाशयितुं मम प्रयासोऽस्ति।

अहं एकोनसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे तामेकस्याः कर्मठसाध्व्याः प्रतिजनहित-कारिण्याः च रूपेणापश्यम्। एकसप्तत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षात्तु आजन्मब्रह्मचर्यव्रत-मंगीकृत्य छायेव प्रतिपलं तस्याः समीपे स्थित्वा अस्याः वैराग्यमयजीवनस्य समस्तेभ्य कार्येभ्यः एको जन्मजातः शिशुरिव परिचयं प्राप्तुं सौभाग्यं प्राप्नवम्। अस्याः चारित्रस्य चन्द्रिकाया-धवलप्रकाशेन शतशः कुमारिकाः अमृतपानं कृत्वा निजात्मनः धन्यान् अकुर्वन्। अतएव विंशतिशताब्द्याः प्रथमाचार्यः चारित्रचक्रवर्ती शान्तिसागरः इव, यो मुनिपरम्परायाः जीर्णोद्धारकः आसीत्। सापि बालब्रह्मचारिणी आर्यिका परम्परायाः युगप्रवर्तिकारूपेण मान्या वर्तते।

।। इति द्वितीयोऽध्यायः।।

चारित्रहीन यदि ज्ञान मिला, तो बेड़ा पार नहीं होगा।
केवल कोरी इन बातों से, जग का उद्धार नहीं होगा।।

अर्थात् दृढ़ सम्यक्त्व के साथ इन्होंने 18 वर्ष की अल्प आयु से चारित्र के जिस दुर्गम कंटीले पथ पर कदम रखकर फूलों जैसा सुगंधित उपहार संसार को प्रदान किया है, उसी से प्रभावित होकर अयोध्या में श्रद्धालु भक्तों ने इन्हें ''चारित्रचन्द्रिका'' अलंकरण के द्वारा सम्मानित कर सचमुच में अपनी अमूल्य निधि का मूल्याकंन किया। सन् 1993 में प्राप्त इस उपाधि की सार्थकता से सम्पूर्ण देश परिचित हो इसी भावना से पूज्य ज्ञानमती माताजी के जीवन की असीमित विशेषताओं को अपने सीमित शब्दों में प्रस्तुत करने का यह मेरा अभिप्राय उनके चारित्र चन्द्रमा की चाँदनी से अपने अमावसी अंधियारे जीवन को प्रकाशित करने का प्रयास मात्र है।

मैंने सन् 1969 से इन्हें एक कर्मठ साध्वी एवं जन-जन की हितकारिणी जगन्माता के रूप में देखा है तथा सन् 1971 से तो आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेकर छाया की तरह हर पल पास में रहकर इनके वैराग्यमयी जीवन के समस्त पहलुओं से एक जन्मजात शिशु की तरह परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इनके चारित्र की चन्द्रिका-धवल चाँदनी से सैकड़ों सुकुमारिकाओं ने अमृतपान करके निज को धन्य किया है, इसीलिए बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर्य आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज (मुनि परम्परा के जीर्णोद्धारक) के समान ये भी बालब्रह्मचारिणी आर्यिकापरम्परा की युगप्रवर्तिका के रूप में मानी जाती हैं।

अध्याय - 3

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक

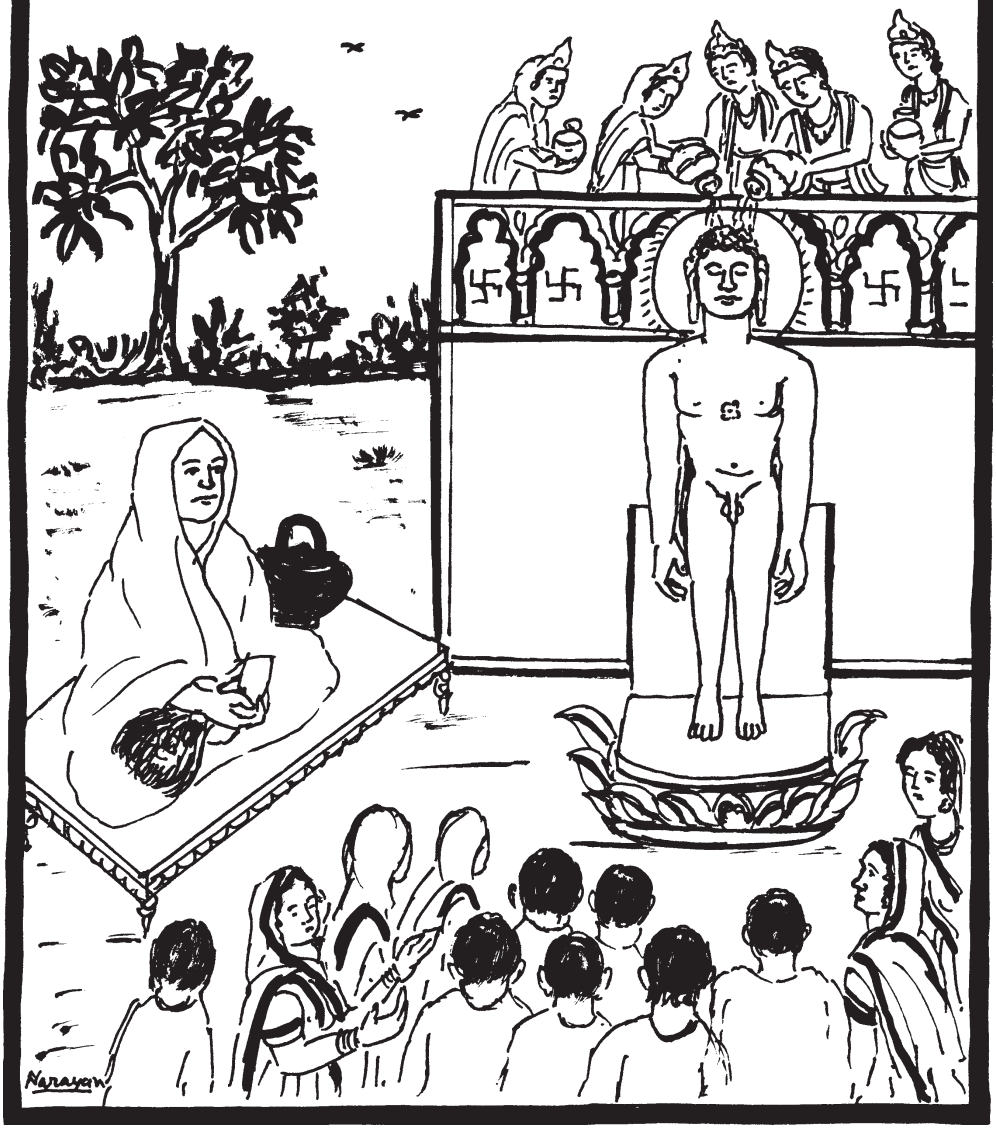

तृतीयोऽध्यायः

शाश्वततीर्थेऽयोध्यायां प्रथमतीर्थंकरस्य श्रीऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकः

दक्षिणभारतस्य श्रवणबेलगोलातीर्थस्य भगवतो बाहुबलिनो महामस्तकाभिषेकस्य परम्परा तु एकसहस्रवर्षेभ्यश्चलिता वर्तते, किंतूत्तरभारते महामस्तकाभिषेकस्य परम्परा प्रायो नैव दृष्टिगताऽभवत् अतः पूज्यमातुः प्रेरणया शाश्वततीर्थेऽयोध्यायां विराजमानायाः एकत्रिंशत् फीट उत्तुंगाया प्रथमतीर्थंकरस्य भगवतो ऋषभदेवस्य प्रतिमायाः महामस्तकाभिषेको युगेभ्यः एकं प्रेरणास्रोतोऽभवत्।

द्वितीयबारं कृतं ध्यानमद्वितीयं जातम्–**धनत्रयोदश्याः प्रत्यूषवेलाऽऽसीत्। यदा अष्टादशाधिक पंचविंशतिशततमः वीरनिर्वाणसम्वत्सर, समापनस्य मार्गं पश्यति स्म, हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रस्य जम्बूद्वीपस्थले युगप्रवर्तिका पूज्या १०५ गणिनी आर्यिकारत्नज्ञानमती, प्रातःकालस्य सामायिके सुमेरुपर्वते ध्यायन्ती अयोध्यायाः भगवतो ऋषभदेवस्य तस्मिन् ध्याने एव दर्शनमकरोत्। भगवतो महावीरस्य कमलमन्दिरस्य त्रिमूर्तिमन्दिरस्य च दर्शनं कृत्वा जम्बूद्वीपस्य प्रदक्षिणां कुर्वन्ती सा मामवदत्–**

चन्दनामति! अद्य मम भावाः अयोध्यातीर्थं प्रति विहाराय भवन्ति।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या में
प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक

दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबलि महामस्तकाभिषेक की परम्परा तो एक हजार वर्षों से चली आ रही है किन्तु उत्तर भारत में महामस्तकाभिषेकों की परम्परा प्रायः नहीं देखी जाती थी अतः पूज्य माताजी की प्रेरणा से शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विराजमान 31 फुट उत्तुंग प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक युग-युग के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया।

➢द्वितीय बार किया गया ध्यान अद्वितीय बन गया–

धनतेरस की प्रत्यूष बेला थी, जब वीर निर्वाण संवत् 2518 (सन् 1992) समापन की राह देख रहा था। हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र के जम्बूद्वीप स्थल पर युगप्रवर्तिका, पूज्य 105 गणिनी, आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रातःकालीन सामायिक में सुमेरु पर्वत का ध्यान करते-करते अयोध्या के भगवान ऋषभदेव का उन्हें ध्यान में ही दर्शन हो गया। भगवान महावीर स्वामी के कमल मंदिर एवं त्रिमूर्ति मंदिर के दर्शन करके जम्बूद्वीप की प्रदक्षिणा लगाते हुए वे मुझसे बोलीं–

"चन्दनामती! आज मेरे भाव अयोध्या तीर्थ की ओर विहार करने के लिए हो रहे हैं।"

अहमाश्चर्येण मातरं प्रति दृष्टुं प्रारभे अद्य का प्रबलप्रेरणा अस्यै प्राप्ताऽभवत्? यत्र तु शत–पञ्चाशत् किलोमीटर विहारायापि वैद्योऽनुमतिं न ददाति, यतश्चलनस्याधिक–श्रमतस्त्वस्याः स्वास्थ्याय प्रतिकूलं वर्तते, पुनः षण्णां शतानां कि.मी. अयोध्यापर्यन्तस्य मार्गः केन प्रकारेण चिन्तयितुमर्हति?

मम प्रश्नवाचकमुद्रां वीक्ष्य माता स्वयमेवादीत्–

अद्य प्रातःकालस्य ध्याने माम् अभ्यन्तरप्रेरणा प्राप्ताभवत् यत् अयोध्यायां विराजितस्य भगवतो ऋषभदेवस्य उत्तुंगप्रतिमायाः ''महामस्तकाभिषेकं'' **कारयितुमयोध्यां प्रति मया गन्तव्यम्।**

अल्पस्य वार्तालापस्य पश्चात् वयं स्ववसतिकां रत्नत्रयनिलयं प्राप्ताः, सामूहिकस्वाध्याया–नन्तरं क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य समक्षं चर्चा समागता, परन्तु वार्ता हास्ये एव उत्पतिता। इदमुक्त्वा यत् एतावता दीर्घविहारविषये चिन्तयितुं न शक्यते। 'न नवमनप्रमाणं तैलं भविष्यति न राधा नर्तिष्यति' **एतां सूक्तिमुच्चार्य वयं निश्चिन्ताः अभवाम, किन्तु प्रबलप्रेरणा शारीरिकशक्तिं क्व पश्यति?**

मातुश्चिन्तनं गतिशीलमासीत्, यत् स्वपरमपितुरादीश्वरपितामहस्य समीपे कदा केन प्रकारेण च गन्तव्यम्? रवीन्द्रकुमारस्तस्मिन् दिने दिल्ल्यामासीत्। अग्रिमदिने कार्तिककृष्ण–चतुर्दश्यां स हस्तिनापुरमागच्छत्, चतुर्मासससमापनस्य तस्यां तिथौ सर्वेषामेव साधूनामुपवासाः आसन्। अहं स्वकेशलुंचनमप्यकरवम्। मध्यान्हे एकादशवादनसमये माता रवीन्द्रमपि

मैं आश्चर्य से माताजी को देखने लगी कि आज कौन सी प्रबल प्रेरणा इन्हें प्राप्त हुई है? कहाँ तो सौ-पचास किलोमीटर विहार के लिए भी हकीम जी राय नहीं देते हैं क्योंकि चलने का अधिक परिश्रम इनके स्वास्थ्य के प्रतिकूल है, पुनः छह सौ किलोमीटर तक अयोध्या का रास्ता भला कैसे सोचा जा सकता है?

मेरी प्रश्नवाचक मुद्रा देखकर पूज्य माताजी स्वयमेव बोल पड़ीं–

''आज प्रातःकाल के ध्यान में मुझे अन्तर्प्रेरणा प्राप्त हुई है कि अयोध्या में विराजमान भगवान ऋषभदेव की उत्तुंग प्रतिमा का **''महामस्तकाभिषेक''** करवाने के लिए अयोध्या जाना है।''

थोड़े से वार्तालाप के बाद हम लोग अपनी वसतिका (रत्नत्रयनिलय) में आ गए। सामूहिक स्वाध्याय के अनन्तर क्षुल्लक मोतीसागरजी के समक्ष चर्चा आई लेकिन बात हँसी में उड़ गई। यह कहकर कि इतने लम्बे प्रवास के बारे में सोचा ही नहीं जा सकता है। ''न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'' इस सूक्ति को कहकर हम लोग निश्चिन्त हो गए किन्तु प्रबल प्रेरणा भला शारीरिक शक्ति कहाँ देखती है?

माताजी का चिन्तन चलता रहा कि अपने परमपिता आदीश्वर बाबा के पास कब और किस प्रकार पहुँचना है? ब्र.रवीन्द्र कुमार जी उस दिन दिल्ली गए हुए थे। अगले दिन कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को वे हस्तिनापुर आए, चातुर्मास समापन की उस तिथि को सभी साधुओं के उपवास थे, मैंने अपना केशलोंच भी किया था। केशलोंच के बाद मध्यान्ह 11 बजे पूज्य माताजी रवीन्द्र जी

कथयितुमारभत यत् मयाऽयोध्यातीर्थस्य यात्रायै विहारः कर्तव्यः।

अल्पसमयस्य परिहासस्य पश्चात् विहारस्यैषा भावना गम्भीररूपमधारयत्, माता चावदत्–विहारस्तु मया करणीय एवास्ति, अत्रास्ति वार्ता भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकस्य, तस्य भारं त्वमेव वहनं करिष्यसि।

एका वार्ता त्वत्र स्मरणीया वर्तते, यत् राजस्थानस्य राजधान्याः जयपुरनगरस्य जैनश्रावकाः द्विनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे सितम्बरमासे जयपुरे विशालस्तरेण कल्पद्रुम महामण्डलविधानमायोजितमकुर्वन्। आचार्यश्रीकुन्थुसागरस्य सान्निध्ये जम्बूद्वीपस्य सुप्रसिद्धौ विद्वांसौ पण्डित सुधर्मचन्द्रः शास्त्री, पण्डित नरेश कुमारः शास्त्री च तद्विधानं शास्त्रोक्तविधिना सम्पन्नमकारयताम्। विधाने द्वादशशत स्त्रीपुरुषा पूजनमकुर्वन्, पंचसहस्रजनाश्च तत संगीतमयं पूजनं श्रोतुमुपातिष्ठन्।

लक्षाधिकरूप्यकाणां व्ययं कृत्वा तस्य स्थानस्य श्रावकाः तद्विधानं सम्पाद्य राजस्थाने नवंकीर्तिमन्तं स्थापितवन्तः। पुनस्ते सर्वे निर्णीतवन्तः यत् कल्पद्रुमविधानस्य रचयित्र्याः मातुः ज्ञानमत्याः समीपे हस्तिनापुरं गत्वा तस्याः अभिनन्दनं सम्पद्यताम्।

द्विनवत्यधिक एकोनविंशतिशततमे वर्षे अक्टूबरमासस्य अष्टादशमदिनाँके रविवारे जयपुरात् चत्वारिंशद् बसवाहनै अनेकका: वाहनेषु च सहस्रसंख्यायां स्त्रीपुरुषाः हस्तिनापुर–मागच्छन्। जम्बूद्वीपस्य संस्थानस्य पदाधिकारिणश्च तेषां सर्वेषां यथोचितसत्कारमकुर्वन्। पुनः एकस्मिन् विशाले मण्डपे तत्र ते सर्वेऽष्टद्रव्यैः मातुः संगीतमयं पूजनमकुर्वन्, प्रशस्ति–

से भी कहने लगीं कि मुझे अयोध्या तीर्थक्षेत्र की यात्रा हेतु विहार करना है।

थोड़ी देर हँसी मजाक के बाद विहार की इस भावना ने गंभीर रूप धारण कर लिया और माताजी बोलीं– "विहार तो मुझे करना है, रही बात आदिनाथ स्वामी के मस्तकाभिषेक की, उसका भार तुम्हीं (रवीन्द्र जी) को लेना होगा।"

एक बात यहाँ और स्मरणीय है कि राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर के जैन श्रावकों ने सितम्बर 1992 में जयपुर में विशाल स्तर पर कल्पद्रुम महामंडल विधान आयोजित किया था। आचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराज के सानिध्य में जम्बूद्वीप के सुप्रसिद्ध विद्वान पंडित सुधर्मचन्द्र शास्त्री एवं पंडित नरेश कुमार शास्त्री ने उस विधान को शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न कराया था। विधान में 1200 नर-नारियों ने पूजन की तथा प्रतिदिन 5000 लोग उस संगीतमयी पूजन को सुनने आते थे।

लाखों रुपये खर्च करके वहाँ के श्रावकों ने उस विधान को सम्पन्न कर राजस्थान में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया पुनः उन सभी ने निर्णय किया कि कल्पद्रुम विधान की रचयित्री पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के पास जाकर उनका अभिनन्दन करना है।

दिनाँक 18 अक्टूबर 1992 रविवार को जयपुर से 40 बसों एवं अनेक कारों में हजारों नर-नारी हस्तिनापुर पधारे। जम्बूद्वीप संस्थान के पदाधिकारियों ने उन सबका यथोचित आतिथ्य किया पुनः एक विशाल पांडाल में वहाँ उन सभी ने माताजी की अष्टद्रव्य से संगीतमय पूजन की और एक

पत्रस्य च माध्यमेन ते मात्रे ''आर्यिकाशिरोमणिरित्युपाधिं'' **प्रदत्तवन्तः।**

प्रमोदे नृत्यन्तस्ते जयपुरनागरिकाः गणिन्याः आर्यिकायाश्चरणयोः श्रीफलं समर्प्य जयपुरे चतुर्मासं विधातुं साग्रहं न्यवेदयन्। इमां च प्रार्थनां तेऽकुर्वन् यत् वयं भवत्याः सान्निध्ये भवत्यैव रचितं ''सर्वतोभद्रविधानं'' **करिष्यामः। इदं च विधानं पूर्वविधानादपि वृहतारूपेण संपत्स्यंते। यस्मिन् पंचसहस्रश्रावकाः पूजने सम्मिलिताः भविष्यन्ति, पंचविंशतिसहस्रजनाः प्रतिदिनं भवत्याः प्रवचनं श्रुत्वा लाभान्विताः भविष्यन्ति। भवत्याः अयं जयपुरचतुर्मासः इतिहासस्य अविस्मरणीयः पृष्ठो लिखितो भविष्यति। भवत्याः स्वीकृतिं प्राप्यैव वयं भवत्याः संघस्य विहारं पूर्णरूपेण विधास्यामः, प्रतिदिनं व्यवस्थायां शतशः संख्यायां जनाः भवत्या सह पादविहारं करिष्यन्ति.....इत्यादि।**

अनेन प्रकारेण स्वभक्तिभावनाः प्रकटीकृत्य पूज्य मातुराशीर्वादं गृहीत्वा जयपुरस्य भक्तगणास्तु स्वस्थानं गताः, किन्त्वस्मभ्यं चिन्तनाय कंचित् विषयं प्रदाय गताः, यत् प्रत्यक्षरूपेण–परोक्षरूपेण च गुरुभक्तिः कीदृशी भवति ते प्रमाणमदुः?

राजस्थानं तु भक्तिक्षेत्रे सदैव सरसं तिष्ठति, अस्मादेव कारणात्तत्र साधूनां सान्निध्यं सदैव स्थीयते।

द्विनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे अक्टूबरमासस्य चतुर्विंशतितमे दिनाँके, कार्तिककृष्णचतुर्दश्यां यदा अयोध्या विहारस्य प्रारम्भिकवार्ता गतिशीलाऽऽसीत्, तदा रवीन्द्रो जयपुरभक्तानां वार्तामस्मारयत्। सोऽवदच्च, मातः! यदि विहारः एव करणीयोऽस्ति तु

प्रशस्तिपत्र के माध्यम से पूज्य माताजी को **''आर्यिकाशिरोमणि''** की उपाधि प्रदान की।

खुशी में झूमते हुए उन जयपुर के नागरिकों ने गणिनी आर्यिकाश्री के चरणों में श्रीफल भेंट करके जयपुर में चातुर्मास करने का साग्रह निवेदन किया तथा यह प्रार्थना की कि हम लोग आपके सानिध्य में आपके ही द्वारा रचित **''सर्वतोभद्रविधान''** इससे भी बड़े रूप में करेंगे, जिसमें 5 हजार नर-नारी पूजन में बैठेंगे तथा पचीसों हजार जनता प्रतिदिन आपका प्रवचन सुनकर लाभान्वित होगी। आपका यह जयपुर चातुर्मास हम इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ बनाएंगे, आपकी स्वीकृति प्राप्त होते ही हम लोग आपके संघ का विहार पूरी व्यवस्था के साथ कराएंगे, प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्ति आपके साथ पदविहार करेंगे.....इत्यादि।

इस प्रकार अपनी भक्ति भावनाएँ प्रगट कर तथा पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर जयपुर के भक्तगण तो चले गए किन्तु हम लोगों को कुछ चिन्तन करने का विषय वे प्रदान कर गए कि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष में गुरु भक्ति कैसे होती है?

राजस्थान तो यूं भी भक्ति के क्षेत्र में सदा सरस रहा है इसीलिए वहाँ हमेशा साधुओं का सानिध्य बना ही रहता है।

24 अक्टूबर 1992 कार्तिक कृ. चतुर्दशी को जब अयोध्या विहार की प्रारंभिक वार्ता चल रही थी, तब रवीन्द्र जी को जयपुर के भक्तों की बात याद आ गई और वे बोल पड़े कि ''माताजी! विहार

जयपुरं प्रति भवेत्, तत्र विशालस्तरीयाणि आयोजनानि भवितुमर्हन्ति। पुनः अस्माकं सर्वेषामिदं कथनमस्ति, यत् एतावते दीर्घविहाराय तु भवत्या चिन्तनीयं नैव यतो भवत्याः स्वास्थ्यमनुकूलं नैव वर्तते देशस्य च वातावरणमेतेषु दिनेषु सम्यक् नास्ति। अयोध्याविवादं गृहीत्वा कदापि– कुत्रापि कलहविवादौ भवितुं शक्नुतः।

तस्य दिनस्य वार्ता तु प्रायस्तत्रैव पूर्णाऽभवत्, तस्य पश्चात् कतिचिद्भ्यो दिनेभ्यो विहारस्य सम्बन्धिनी कापि चर्चा नाभवत् अतः वयमवागच्छाम, यत् मात्रा अयोध्याविहारस्य स्वनिश्चयः परिवर्तितः कृतः, परन्तु तस्याः हृदये अन्तःप्रेरणा निरन्तरं प्रवाहमानाऽऽसीत् या च 30 नवम्बर 1992 दिने पुनः प्रकटिताऽभवत्।

प्रबलेच्छया प्राप्तमेकं सम्बलम्–**एवमभूत् यदुत्तरप्रदेशस्य मुख्यालयफतेहपुरात् जैनसमाजस्य अध्यक्षः श्री सरोजकुमारः स्वनिकटस्थसहचारिभिः समं हस्तिनापुरे उपस्थितः आसीत्। ते मातुः समक्षं श्रीफलं समर्प्य अवधप्रान्ते विहारं कर्तुं न्यवेदयन्। तदा माता स्मितमुखी तं तस्याः दिशः मार्गं ज्ञातुमकथयत्। अवधस्य ये महानुभावाः स्वप्नेऽप्याशां नाकुर्वन् यन्माता तेषां नगराणि प्रति विहारं करिष्यति। ते यदापि अत्रागच्छन् निवेदनं तु अवश्यमेवाकुर्वन्, यत् मातः! किं भवती स्वजन्मभूमिं प्रति कदापि ध्यानं न दास्यति? भवत्याः क्षेत्रमेव भवत्याः सान्निध्यं प्राप्तुं सदा प्रार्थ्यते, इयं तु** ''दीपकस्य नीचैरन्धकारः'' **इत्युक्तिं साधयति।**

ही करना है तो जयपुर की ओर करिये, वहाँ विशाल स्तरीय आयोजन हो सकते हैं। फिर हम सभी का यह कहना रहा कि इतने लम्बे विहार के बारे में तो आपको सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है तथा देश के हालात भी इन दिनों ठीक नहीं चल रहे हैं। अयोध्या के विवाद को लेकर कहीं भी किसी भी समय झगड़ा हो सकता है।''

उस दिन की बात तो लगभग यहीं पूरी हो गई, उसके बाद कई दिनों तक कोई चर्चा विहार संबंधी नहीं हुई अतः हम लोगों ने समझा कि अब माताजी ने अयोध्या विहार का अपना निर्णय बदल दिया है लेकिन उनके हृदय में अन्तर्प्रेरणा बराबर चलती रही जो पुनः प्रगट हुई 30 नवम्बर 1992 को।

➢प्रबल इच्छा को मिला एक सम्बल–

हुआ यूं कि उत्तरप्रदेश की तहसील फतेहपुर से जैन समाज के अध्यक्ष श्री सरोज कुमार जैन अपने अन्य और निकटस्थ साथियों के साथ हस्तिनापुर आए हुए थे। उन्होंने पूज्य माताजी के पास श्रीफल चढ़ाकर अवध प्रान्त में विहार करने हेतु निवेदन किया, तब माताजी मुस्कुराकर उनसे उधर के रूट की जानकारी करने लगीं। अवध के उन महानुभावों को तो शायद स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी कि माताजी का हमारे नगरों की ओर कभी विहार हो भी सकता है। बस वे जब भी आते थे तो निवेदन अवश्य करते थे कि माताजी! क्या कभी आप अपनी जन्मभूमि की ओर भी ध्यान देंगी? आपका क्षेत्र ही आपका सानिध्य नहीं प्राप्त कर पा रहा है, यह तो **''दीपक तले अंधेरे''** वाली कहावत सिद्ध हो रही है।

सदा कालस्य श्रद्धाभक्त्यनुसारेण 30 नवम्बर दिने सरोजकुमारोऽकथयत् किन्तु अस्य अवसरस्य स्थितिं दृष्ट्वा सः कश्चिदाश्वस्तो जातः। किंचित्कालानन्तरं मां प्राप्य सोऽपृच्छत्–

मातः! किं वास्तवे संघस्य विहारोऽस्माकं प्रान्तं प्रति भवितुमर्हति?

अहमकथयम्–''अस्मिन् असंभवसदृश्यपि कापि वार्ता नास्ति, भक्त्याः बलेन सर्वमेव भवितुं शक्नोति।'' **तदाहं धनत्रयोदश्याः दिनस्य कांचिद् वार्तां तमकथयम्, तदा सः अत्यन्तमेव प्रसन्नो जातः, वक्तुमारभत् च** ''प्रतीयते अवधप्रान्तस्य 'लाटरी' उद्घाटनस्य दिनान्यप्यागच्छन्।''

तस्मिन समये हस्तिनापुरे क्षुल्लकमोतीसागरो रवीन्द्रश्च कोऽपि नासीत्। यतस्तौ क्षुल्लकमोतीसागरस्य जन्मभूमौ सनावदनगरे पंचकल्याणकप्रतिष्ठायै गतौ आस्ताम्।

एतौ द्वौ इदानीं सनावदनगरात् न प्रतिनिवर्तितौ, माता अयोध्यां प्रति विहारस्य व्यवस्थायै निर्देशं दातुं प्रारभत्।

मातुः पुष्टं निर्णयं विज्ञाय मम मनसि काचित् भीतिरिवाजायत्, यत् एवंविधे दुर्बले स्वास्थ्ये माता केन प्रकारेण इयद् दूरं विहारं करिष्यति? अहं मातरमकथयं, क्षुल्लको मोतीसागर रवीन्द्रयो चागतेसति भवती विचारविमर्शं कृत्वा विहर्तुं निर्णयं गृह्णातु। परन्तु सा केन वारिता भवितुं तत्परा आसीत्। साऽकथयत् त्वमधुना अवधप्रान्ते सूचनां दातुं शक्नोसि यत् फरवरी मासे मम विहारोहस्तिनापुरात् भविष्यति।

मम हृदयमधुनापर्यन्तमन्तरात् साक्षीभूतं नासीत् यन्मातुर्विहारो भविष्यत्येव, तथा अहं

सदैव की श्रद्धाभक्ति के अनुसार ही 30 नवम्बर को सरोज जी ने कहा था किन्तु इस बार की स्थिति देखकर वे कुछ आश्वस्त हुए और थोड़ी ही देर बाद मेरे पास आकर पूछने लगे–

''माताजी! क्या संघ का विहार वास्तव में हमारे प्रान्त की ओर हो सकता है?''

मैंने कहा–**''इसमें असंभव जैसी भी कोई बात नहीं है, भक्ति के बल पर सब कुछ संभव हो सकता है।''** फिर मैंने धनतेरस के दिन वाली थोड़ी सी बात भी उन्हें बताई, तब वे बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि **''लगता है अवध प्रदेश की लाटरी खुलने के दिन आ गए हैं।''**

उस समय हस्तिनापुर में क्षुल्लक मोतीसागर महाराज, ब्र.रवीन्द्र जी आदि कोई भी नहीं थे क्योंकि ये लोग सनावद (म.प्र.) क्षु. मोतीसागर जी की जन्मभूमि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में गए हुए थे।

ये लोग अभी सनावद से वापस भी नहीं आए थे, उससे पूर्व पूज्य माताजी ने अयोध्या की ओर विहार करने का 90 प्रतिशत मन बना लिया और मुझे विहार की व्यवस्था बनाने हेतु निर्देश देने लगीं।

माताजी का पक्का निर्णय सुनकर मुझे कुछ घबड़ाहट सी होने लगी कि इतने कमजोर स्वास्थ्य में माताजी इतनी दूर कैसे विहार करेंगी? मैंने माताजी से कहा कि क्षुल्लक जी और रवीन्द्रजी के आने पर आप विचार-विमर्श करके निर्णय लीजिए किन्तु वे भला अब किसकी मानने वाली थीं! उन्होंने कहा कि तुम उधर प्रान्त में अब सूचना करा सकती हो कि फरवरी में मेरा विहार हस्तिनापुर से होगा।

मेरा हृदय अभी तक अन्दर से गवाही नहीं दे रहा था कि माताजी का विहार हो ही जाएगा,

टिकैतनगरस्य श्रावकं प्रद्युम्नकुमारं (छोटी शाहनाम्नाख्यातं) फतेहपुरस्य च सरोजजैनं संभावितविहारस्य सूचनां प्रेषितामकरवम्। यस्मात् पुष्टो निर्णयः समाजस्य सम्मुखमागन्तुं शक्नुयात्।

6 दिसम्बर दिनं पुनः निर्णयस्य परिवर्तनं कर्तुमैच्छत्–**अयमेकोऽद्भुतः संयोगः कथितो भविष्यति, यन्माताऽत्यन्तमेव विवादितं प्रतिक्षणं च अग्निज्वालाभिर्लिप्तमयोध्यातीर्थक्षेत्रं प्रत्येव विहर्तुं निर्णयमगृह्णात्, मन्यतां यत् भगवतो ऋषभदेवस्य जन्मभूमेरेव प्रबलप्रेरणा तस्या आकर्षणमकरोत्। तदैव 6 दिसम्बर 1992 दिने एको महान् प्रसंगः उपातिष्ठत्, यदा अयोध्यायां हिन्दूमुस्लिमविवादः प्रबलतयोत्थितोऽभूत्। तदा च बहुस्त्रीपुरुषाः बलिवेद्यामारूढाः अभवन्।**

पश्चिमोत्तरप्रदेशस्य मवाना–मेरठ–सरधनादि नगराणां जनाः यदा अजानन् यन्माताज्ञानमती संघेन सह अयोध्यातीर्थं प्रति विहर्तुमस्ति, तदा भक्तगणाः हस्तिनापुरमागत्य स्व विज्ञप्तिं प्रस्तुतां कर्तुमारभन्त् ''यदस्मिन् वातावरणे अस्मात् स्थानात् भवत्याः अयोध्यां प्रति विहारः कथमप्युचितो न वर्ततेः।''

केचिज्जनाः वातावरणस्य भयमदर्शयन् केचिच्च मातुः स्वास्थ्यं प्रति सहानुभूतिं व्यक्तां कुर्वन्तोऽवदन् ''यन्मातः! भवती अत्रैव समीपवर्तिसु स्थानेसु स्तोकं–स्तोकं विहारं कुर्यात्, अधिकदूरवर्तिनी यात्रा न विचारणीया।'' **अनेनैव प्रकारेण अवधं प्रति विहारस्योष्णा–शीता च वार्ताः प्रचलिता आसन्, तदैव दिसम्बरस्यान्तिमसप्ताहे टिकैतनगरस्य छोटीशाहनाम्ना विख्यात**

फिर भी मैंने टिकैतनगर के श्रावक प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटीशाह) एवं फतेहपुर के सरोज जैन को संभावित विहार की सूचना भिजवा दी, ताकि पक्का निर्णय समाज के समक्ष आ सके।

➢6 दिसम्बर ने पुनः निर्णय बदलवाना चाहा–

यह एक अनहोना संयोग ही कहना पड़ेगा कि माताजी ने एक अत्यन्त विवादित एवं हरवक्त आग की लपटों में घिरे **''अयोध्या''** तीर्थक्षेत्र की ओर ही विहार करने का निर्णय लिया, मानो भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि की प्रबल प्रेरणा ही उन्हें खींच रही थी। तभी एक बड़ा भारी प्रसंग आया–6 दिसम्बर 1992 का, जब अयोध्या में हिन्दू-मुस्लिम विवाद जोरों से छिड़ गया और तमाम नरनारी बलिवेदी पर चढ़ गये।

पश्चिमी उत्तरप्रदेश के मवाना, मेरठ, सरधना आदि नगरों के लोगों को जब ज्ञात होना प्रारंभ हुआ कि पूज्य ज्ञानमती माताजी संघ सहित अयोध्या तीर्थ की ओर विहार करने वाली हैं, तब भक्तगण हस्तिनापुर आ-आकर अपनी विज्ञप्ति रखने लगे कि **''इस समय के माहौल में यहाँ से आपका अयोध्या के लिए विहार करना कथमपि उचित नहीं है।''**

कुछ लोगों ने माहौल का भय दिखाया एवं कुछ ने माताजी के स्वास्थ्य के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहा कि **''माताजी! अब आपको इधर ही आसपास थोड़ा-थोड़ा विहार करना चाहिए, ज्यादा दूर की यात्रा नहीं सोचना चाहिए।''** इसी तरह से अवध की ओर विहार करने की नरम-गरम वार्ता चलती रही, तभी दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में टिकैतनगर के प्रद्युम्न कुमार जैन

प्रद्युम्नकुमार सुभाषचन्द्रौ च हस्तिनापुरमागच्छतां, मातुश्चरणयोः श्रीफलं समर्पितमकुरुतां। छोटीशाहोऽकथयत्–''मातः! भवत्याः अस्य विहारस्य भारं अहमेव एकाकी गृहीष्यामि, संघश्च कस्यापि प्रकारस्य कष्टं न प्राप्स्यति।''

अनेकोहापोहानन्तरं माता स्वपूर्णां स्वीकृतिं अयोध्याविहाराय प्रादात्। संघपतिरूपेण च प्रद्युम्नकुमाराय मंगलाशीर्वादं प्रादात्। एतौ प्रसन्नमनसा गृहं प्रतिनिवर्तितौ। शनैः शनैश्च समाचारोऽयमवधस्य जनेषु वायुवत् प्रसारितोऽभवत्। एतस्य मध्ये एव ज्योतिषाचार्योऽपि अस्मभ्यं सूचनां प्रादात् यत् मातुः करकमलयोरयोध्याविकासस्य योगः एतावान् प्रबलोऽस्ति यत् कठिनतास्वप्यस्याः पदे स्थगिते न भविष्यतः।

अयोध्यायै विहारस्य मंगलमुहूर्तम्–**जनवरी मासे भीषणशीतस्य कारणात् विहारः संभवो नासीत् परन्तु ज्ञानमत्याः मातुरन्तरात्मा तु भगवतः ऋषभदेवस्य दर्शनाय व्याकुलः आसीत् अतः शुभमुहूर्तं निश्चितमभूत्–11 फरवरी 1993, फाल्गुणकृष्णपंचम्याः दिनस्य। यद्यपि मातुर्भक्तगणाः सम्यगजानन् यदनया संकल्पितं प्रत्येकपदं दृढतया सततमग्रे एव वर्धते, इदं कदापि पृष्ठे न गच्छति, तथापि तेषां रागिमनः गुरोः छायायाः दूरं भवितुं विकटतया पीडितमभूत् ते च प्रत्येकसंभवं प्रयत्नमकुर्वन् यन्मातुर्विहारः केनापि प्रकारेण स्थगितो भवेत्।**

तत्र चावधप्रान्ते हर्षस्य वातावरणं व्याप्तमासीत्, टिकैतनगरे संघपतिश्च छोटीशाह

उर्फ छोटी शाह तथा सुभाषचन्द्र जैन हस्तिनापुर पहुँचे और पूज्य माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल भेंट किया। छोटीशाह कहने लगे कि–**''माताजी! आपके इस विहार कराने का भार मैं अकेला उठाऊँगा और संघ को किसी तरह का कष्ट नहीं होने पाएगा।''**

अनेक ऊहापोहों के बाद माताजी ने अपनी पूर्ण स्वीकृति अयोध्या विहार के लिए प्रदान कर दी और संघपति के रूप में श्री छोटीशाह जी को मंगल आशीर्वाद दिया। ये लोग प्रसन्नमना घर वापस चले गये और धीरे-धीरे यह समाचार अवध की जनता में हवा की तरह फैल गया।इसी मध्य एक-दो ज्योतिषाचार्य ने भी आकर हम लोगों को बताया कि पूज्य माताजी के करकमलों से अयोध्या विकास का योग इतना प्रबल है कि कितनी भी अड़चनें आने पर इनके कदम अब रुक नहीं सकते हैं।

➢अयोध्या के लिए विहार का मंगल मुहूर्त–

जनवरी में भीषण सर्दी के कारण विहार करना संभव नहीं था किन्तु पूज्य माताजी की अन्तर आत्मा तो भगवान ऋषभदेव के दर्शन को व्याकुल थी अतः शुभमुहूर्त निश्चित किया-11 फरवरी 1993, फाल्गुन कृष्णा पंचमी का। यद्यपि माताजी के भक्तगणों को भली भाँति ज्ञात है कि इनके द्वारा संकल्पिक प्रत्येक कदम दृढ़ता के साथ सतत आगे ही बढ़ता है, वह कभी पीछे नहीं हटता तथापि उनका रागी मन गुरु छाया से दूर रहने की विकलता से तड़पने लगा और उन्होंने हर संभव प्रयत्न किये कि माताजी का विहार किसी तरह स्थगित हो जावे।

इधर अवध प्रान्त में हर्ष का वातावरण छाया था, टिकैतनगर में संघपति छोटीशाह जी विहार

महोदयः विहारस्य तत्परतायां युक्तः आसीत्। सः च नव फरवरी दिने स्वदलेन सह हस्तिनापुरं प्राप्तः, सः चासूचयत् यत् 8–10 दिनपूर्वं हस्तिनापुरस्य मनोजकुमारजैनस्य मवाना नगरस्य राकेश जैनस्य, (द्वौ एव वर्तमाने मेरठ नगरे वसतः) पत्राणि मम समीपे आगतानि, यत् देशस्य परिस्थितीनां कारणात् पूज्यंमातुर्विहारः स्थगितोऽभवत्, अतो भवन्तः इदानीं तत्परतां न दर्शयन्तु न च हस्तिनापुरमागच्छन्तु। तदा अयमप्रच्छत् तथापि भवताः पूर्णतत्परतया कथमागच्छन्? ते हसित्वावदन्–अन्ते तु भगवतो भक्तानां वशे भवन्ति, पुनरपि माता मह्यं स्वीकृतिं प्रायच्छत्, यदि किमपिकारणं स्यात्तुसंघेन सूचना प्राप्तव्याऽऽसीत्। अहं तु अचिन्तयं यत् हस्तिनापुरे सत्याग्रहं एव कर्तुं भवेत् किन्त्वहं संघं ग्रहणं विना न गन्तुं शक्नोमि।

पाठकाः प्रबुद्धाः एव सन्तु, यन्मोहवशात् एव एते भक्ताः मिथ्यापत्राणि प्रेषितान्यकुर्वन् किन्तुमातुर्विहारः संघ सहितः 11 फरवरी फाल्गुण कृष्ण पंचम्याः दिने द्विवादनसमये हस्तिनापुरात् अवधप्रान्तं प्रत्यभूत्। संयोग–वियोगाभ्यां सुख–दुःखाभ्यामनेकनेत्राण्यश्रु–पूरितान्यभवन्। जम्बूद्वीपस्य प्रतिकणं स्वमातरमवलोकयति स्म तथा तस्याः मनोकामनायाः सफलता हेतवे स्वमंगलभावान् प्रेषितानकरोत्।

ब्रह्मचारि रवीन्द्रो धैर्यरहितोऽभवत्–**संघो विहृत्येदानीं 8 किलोमीटर दूरे बहसूमा स्थाने एव प्राप्तोऽभवत्, तत्रैव द्वितीयदिने 12 फरवरी दिने प्रातः 11 वादनसमये टिकैतनगरवासी सुभाषचन्द्रः प्राप्तः, कथयितुमारब्धवान् यत् गतदिनात् यस्मात् समयात् भवतीयां विहारोऽभवत्**

की तैयारी में जुटे थे। वे समयानुसार 9 फरवरी को अपने लवाजमें के साथ हस्तिनापुर पहुँच गए और बताने लगे कि 8-10 दिन पूर्व हस्तिनापुर के मनोज कुमार जैन एवं मवाना (वर्तमान में दोनों मेरठ निवासी) के राकेश जैन के पत्र मेरे पास पहुँचे थे कि देश की परिस्थितियों के कारण पूज्य माताजी का विहार स्थगित हो गया है अतः आप लोग अब तैयारी न करें और न हस्तिनापुर आवें। तब मैंने पूछा–फिर भी आप पूरी तैयारी करके कैसे आ गए हैं? वे हंसकर कहने लगे–आखिर तो भगवान भी भक्तों के वश में होते हैं, फिर पूज्य माताजी ने मुझे स्वीकृति प्रदान की थी, यदि कोई कारण था तो संघ से कोई सूचना जाती। मैंने तो सोच लिया कि अब चाहे हस्तिनापुर में सत्याग्रह ही क्यों न करना पड़े किन्तु मैं संघ को लिए बिना वापस नहीं लौट सकता हूँ।

पाठक समझ गए होंगे कि मोह के कारण ही इन भक्तों ने झूठे पत्र डाल दिये थे किन्तु पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल विहार 11 फरवरी, फाल्गुन कृ. 5 को दिन में 2 बजे हस्तिनापुर से अवध प्रान्त की ओर हो गया। संयोग और वियोग के सुख-दुःख मिश्रित अनेक नेत्र अश्रुपूरित थे। जम्बूद्वीप का चप्पा-चप्पा अपनी माता को निहार रहा था तथा उनकी मनोकामना की सफलता हेतु अपने मंगल भाव प्रेषित कर रहा था।

➢ब्र. रवीन्द्र जी अधीर हो उठे–

संघ विहार करके अभी 8 किमी. दूर बहसूमा ही पहुँचा था, वहाँ दूसरे दिन 12 फरवरी को सबेरे 11 बजे सुभाषचन्द्र टिकैतनगर वाले पहुँचे और बताने लगे कि कल जब से आप लोगों का

तस्मात् समयादेव रवीन्द्रोऽत्यन्तमेव व्याकुलो विद्यते, पूर्णरात्रौ नास्वपत्, शब्दं कृत्वा रोदनशीलोऽस्ति। तस्य समाचारं विज्ञापयन् सुभाषचन्द्रः स्वयमपि विह्वलो भूत्वा वक्तुं प्रारभत् यत् वयं सर्वे रवीन्द्रकुमारं बहुशः उद्बोधयामः किन्तु सः इदानीं भोजनमपि नाकरोत्। तस्य नेत्राभ्यां निरन्तरमश्रुधारा प्रवाहमाना वर्तते, अधिकायां तु पृच्छायां सोऽवदत् यत् ''अहमेकाकी केन प्रकारेण स्थास्यामि?'' **अहं तं भवत्याः समीपे आनेतुं बहुप्रयत्नमकरवं, किन्तु सः नात्रागच्छति। अहमनुमानं करोमि यत् सः स्वात्मानं सर्वथैवैकाकिनमनुभूय चिन्तितोऽस्ति। मातः! इदानीं भवत्येव कांचित् प्रयत्नं करोतु, तस्य दशा तु अस्माभिर्नदृश्यते, भवत्याः दीर्घः प्रवासोऽस्ति, यदि तस्येयं दशा एव स्थास्यति तु केन प्रकारेण किं भविष्यति? मम मुखात् तत्कालमेव निर्गतं, मातः! यदि भवत्याः आदेशो भवतु तु अहं पुनः हस्तिनापुरं प्रतिनिवृत्य भ्रातरमवबोधयितुं गच्छेयम्।**

इमामद्भुतां घटनामाकर्ण्य माताप्याश्चर्यचकिता भूत्वा दुःखानुभूतिं चकार। बहसूमा ग्रामात् पंच वादनसमये मीरापुरं प्रति विहारः प्रस्तावितः आसीत्। तत्पूर्वमेव माता संघपतिं छोटीशाह महोदयं सुभाषं कुमारमिन्दुं कुमारीं सोनीं हस्तिनापुरं प्रेषितवती, यत् बलात् रवीन्द्रं मम समीपे आनयन्तु, सायं 4 वादनकाले संघस्य मीरापुरं प्रतिमंगलपदार्पणमभवत्। तत्र सर्वैः सह रवीन्द्रः आगच्छत्। तस्य नेत्रे एव अन्तर्वेदनां प्रकटितामकुरुतां, शनैः शनैः वार्तालापस्य पश्चात् सः अपि किंचित् शान्तोऽभवत् संघस्य च विहारो निर्विघ्नतया प्रारब्धोऽभूत् सर्वे च चलितुं प्रारभन्त, स्वगन्तव्यं प्रति, अयोध्यायाः पितामहस्य श्री ऋषभदेवस्य दर्शनस्य

विहार हुआ है, तब से रवीन्द्रजी अत्यन्त व्याकुल हैं,पूरी रात सोए नहीं हैं, बिलख-बिलख कर रो रहे हैं। उनका हाल बताते हुए सुभाषजी स्वयं भी विह्वल होकर कहने लगे कि रवीन्द्र को हम लोगों ने बहुत समझाया किन्तु उन्होंने अभी भोजन भी नहीं किया है, उनकी आँखों से निरन्तर अश्रुधारा बह रही है और ज्यादा पूछने पर वे कहते हैं कि **''मैं अकेला कैसे रहूँगा?''** मैंने आपके पास उन्हें लाने की बड़ी कोशिश की किन्तु वे यहाँ भी नहीं आ रहे हैं। मुझे लगता है कि वे अपने को निपट एकाकी अनुभव कर घबड़ा रहे हैं। माताजी! अब आप ही कुछ प्रयत्न कीजिए, उनकी दशा हमसे देखी नहीं जा रही है। आपका लम्बा प्रवास है, यदि इनका यही हाल रहा तो कैसे क्या होगा? मेरे मुँह से तुरंत निकला कि माताजी! यदि आप आदेश दें तो मैं वापस हस्तिनापुर भाई जी को समझाने चली जाऊँ?

यह अनहोनी घटना सुनकर पूज्य माताजी को भी आश्चर्य और दुःख हुआ। बहसूमा से मध्यान्ह 5 बजे मीरापुर के लिए विहार होना था उससे पूर्व माताजी ने संघपति छोटीशाह को, सुभाष को तथा कु. इन्दु, कु. सोनी को हस्तिनापुर भेजा कि जबर्दस्ती रवीन्द्रजी को मेरे पास ले आओ। शाम 4 बजे संघ का मीरापुर मंगल पदार्पण हुआ। वहाँ सबके साथ रवीन्द्र जी आए। उनकी आँखें ही अन्दर की वेदना प्रगट कर रही थीं। सबसे पहले तो स्नान करवाकर उन्हें जलपान कराया गया पुनः माताजी ने कहा कि अब तुम्हें हस्तिनापुर न जाकर मेरे साथ ही रहना है। धीरे-धीरे वार्तालाप होते-होते वे भी कुछ शान्त हुए और संघ का विहार निर्विघ्नतया प्रारंभ हुआ और सभी चल पड़े अपने

अभिलाषं गृहीत्वा।

अनेन प्रकारेण, तत्पश्चात् रवीन्द्रस्य हस्तिनापुरे संघे च गमनागमनस्य क्रमः गतिशीलः आसीत्। माता तस्मिन् दिने 1952 वर्षस्य तद् दिनमस्मरत्, यदा सा द्वयोर्वर्षयोः अनुजस्य रवीन्द्रस्य हस्ताभ्यां स्व शाटिकां मोचयित्वा गृहान्निष्क्रान्ता। पश्चात् स्वभगिन्याः वियोगे सः बहुरुग्णोऽभवत् परन्तु वैराग्यवती भगिनीं तिलमात्रमपि ममता नास्पृशत्। अस्मिन् समये तु कापि तत्समाना परिस्थितिर्नासीत्, परन्तु मातुर्विहारात् पूर्णो हस्तिनापुरोऽनेन प्रकारेण शून्योऽभवत् यत् तत्र वासिभ्यः आगंतुकेभ्यश्च जनेभ्यः कानिचित् दिनानि अनेन एव प्रकारेण दुःखदायकान्यभवन्।

चरणनिक्षेपणेनैव गंगायां निमग्नो जनः उत्तीर्णोऽभवत्–**घटनास्ति 13 फरवरी 1993 वर्षस्य, अपराह्न चतुः वादनकालस्य, यदा माता मीरापुरात् प्रस्थानं कृत्वा चतुर्दश किलोमीटर दूरे बैराजस्थानस्यातिथिभवनं प्राप्ता। बैराजस्थानस्य पुलिने एकोऽतिशययुक्तश्च–मत्कारोऽभूत्, यं सर्वे स्वनेत्रैरपश्यन्। एवमभूत्, यत् मातुरागमनात् एकहोरापूर्वं एकोजनः स्नानं कुर्वन् गंगायामपतत्। सः वराकस्तस्यां तीव्रधारायां पारं गन्तुं प्रयत्नमकरोत् परन्तु प्रायः निमज्जयितुमेवासीत् यन्मातुश्चरणे तस्मिन् पुलिनेऽपततां, न ज्ञायते कुतस्त्रयो जनाः आगत्य तस्मिन्नेव क्षणे तमरक्षन्। जलान्निर्गतस्य तस्य जनस्य दृष्टिः सर्वप्रथमं मातर्येवापतत्। सः च तत्रैव चीत्कारमकरोत्–मातः! भवत्कृपया अद्याहं रक्षितः, मह्यमाशीर्वादं प्रदेहि। रक्षकाश्च**

गन्तव्य की ओर अयोध्या के बाबा श्री ऋषभदेव के दर्शन की अभिलाषा लेकर।

इसके बाद रवीन्द्रजी का हस्तिनापुर और संघ में आने-जाने का क्रम बना रहा। पूज्य माताजी ने उस दिन सन् 1952 का वह दिन याद किया, जब वे दो वर्ष के छोटे भाई रवीन्द्र के हाथों से अपनी धोती छुड़ाकर सदा के लिए घर से निकली थीं। बाद में अपनी जीजी के वियोग में वह बहुत बीमार हुआ किन्तु वैरागन जीजी को तिल भर भी ममता न छू पाई थी। आज के इन क्षणों में तो ऐसी कोई परिस्थिति नहीं थी किन्तु पूज्य माताजी के विहार से पूरा हस्तिनापुर इस तरह वीरान हो गया था कि वहाँ रहने व आने वाले हर व्यक्ति को कुछ दिन इसी तरह दुःख उत्पन्न कराते रहे।

➢चरण पड़ते ही गंगा में डूबा व्यक्ति तिर गया–

घटना है 13 फरवरी 1993 के अपरान्ह 4 बजे की, जब पूज्य माताजी मीरापुर से चलकर 14 किमी. दूर बैराज के गेस्ट हाउस पर पहुँची थीं। बैराज के पुल पर एक अतिशय चमत्कार हुआ, जिसे सभी ने आँखों से देखा। हुआ यूँ कि माताजी के आने से एक घंटे पहले एक व्यक्ति स्नान करते-करते गंगा में गिर गया था। वह बेचारा उस तेज धार में तैरने की कोशिश कर रहा था किन्तु लगभग डूबने ही वाला था कि माताजी के चरण उस पुल पर पड़े और न जाने कहाँ से 3-4 व्यक्तियों ने आकर उसी क्षण उसे बचा लिया। पानी से निकलते ही उस गिरे हुए मनुष्य की दृष्टि सबसे पहले पूज्य माताजी पर पड़ी और वह वहीं चीख पड़ा–अरे अम्माजी! आपकी कृपा से आज मैं बचा हूँ,

जनाः कुतः समागताः, कुत्र च तेऽगच्छन्? किंचित् ज्ञातं नाभूत्। अतएवं तूक्तं कवयः तपस्विनां महिमानं वर्णयन्तोऽकथयन्–

''ते गुरवो यत्रापि पदं निक्षेपयन्ति तत्र जगति तीर्थं जायते।''

परीक्षायाः काठिन्यपूर्णानि क्षणानि–**सुकुमालसुकौशलादिमुनीनां, चन्दनबालासीता–दीनामार्यिकाणां कोमलकायायाः तेषां च कठोरतपसां कथाः पुराणेषु पठितुं प्राप्यन्ते। वर्तमानस्य साधवः साध्व्यश्च तां तपश्चर्यां कृत्वा स्वमानवपर्यायं सार्थकं कुर्वन्ति। अहम् श्रूयते यत् दीक्षाग्रहणस्य पश्चात् अनेकपरीक्षायाः घटिकाः सम्मुखमापतन्ति, ताभिः सदैवोत्तीर्णतयान्ते भविष्ये च संकटान् सोढुं क्षमता प्राप्यते। महतोत्साहेन सह अहमपि असीमितकल्पनाः कृत्वा हस्तिनापुरात् विहारमकरवम्, किन्तु अस्मिन् काले तु द्विदिने एवं व्यतीतेऽभवतां, यत् 13 फरवरी दिने मम पादयोः महान्ति व्रणानि समजायन्त। अंगुलिभिश्चलनेन संपूर्णांगुलिषु चणका इव व्रणान्यभवन्, इयं स्यान्मम कठिनपरीक्षासीत, यत् अस्मात् समयादेव ममेदृशी दशास्ति, त्वहं सप्तशत किलोमीटरदूरस्य मार्गेः केन प्रकारेण पारं गमिष्यामि। पूज्यमाता मामवलोक्य कदापि चिन्तामग्ना भवति यत् कथं किं भविष्यति? कदापि सा साहसं ददाति कथयति च पूर्वं मम पादयोः अपि ईदृशाः एव स्फोटाः समभवन्, रक्तश्च प्रस्रवति स्म। अहमकथयं यत् प्रतीयते भगवान् ऋषभदेवो मां कठिनं परीक्षते। मम जीवनस्यैताः पूर्वघटिकाः आसन्, यदा अहं साधुअवस्थायाः पदविहारस्य कष्टमसहे चलन्त्याः। यत् कष्टमभूत् तत्सर्वं**

मुझे आशीर्वाद प्रदान कीजिए। बचाने वाले आदमी भी कहाँ से आए थे एवं कहाँ चले गए? कुछ पता ही नहीं चला। इसीलिए तो कवियों ने तपस्वी सन्तों की महिमा बताते हुए कहा है–

''वे गुरु चरण जहाँ धरें, जग में तीरथ होय।''

➢परीक्षा की कठिन घड़ियाँ–

सुकुमाल, सुकौशल मुनियों की तथा चन्दनबाला, सीता आदि आर्यिकाओं की कोमल काया एवं उनके कठोर तप की कथाएँ पुराणों में पढ़ने को मिला करती हैं। वर्तमान के साधु-साध्वी भी उस तपस्या की साधना कर अपनी मानव पर्याय सार्थक करते हैं। मैंने सुना भी था कि दीक्षा लेने के बाद अनेक परीक्षा की घड़ियाँ सामने आती हैं, जिन्हें सहन करने से ही उत्तीर्णता प्राप्त होती है और भविष्य के संकट झेलने की क्षमता जागृत होती है। बड़े उत्साहपूर्वक मैंने भी असीमित कल्पनाएँ संजोकर हस्तिनापुर से विहार किया था किन्तु अभी तो दो दिन ही बीते थे कि 13 फरवरी को मेरे पैरों में बड़े-बड़े छाले पड़ गए। अंगुलियों के सहारे चलने से सारी अंगुलियों में भी चने जैसे फफोले उठ आए। यह शायद मेरी कठिन परीक्षा थी कि अभी से मेरा यह हाल है तो छह-सात सौ किलोमीटर का रास्ता कैसे पार कर पाऊँगी? पूज्य माताजी मुझे देखकर कभी चिन्तित होतीं कि कैसे क्या होगा? कभी वे साहस दिलातीं और कहतीं कि पहले मुझे भी इसी तरह छाले पड़ते थे, खून बहता था। मैंने कहा कि लगता है भगवान् ऋषभदेव मेरी कड़ी परीक्षा ले रहे हैं। मेरे जीवन की ये पहली घड़ियाँ थीं, जब मैंने साधु अवस्था का पद विहार कष्ट इस तरह झेला था। चलते समय जो कष्ट होता था, वह सब अपने

स्वविश्रामस्थले मातुराशीर्वादं मातृत्वस्नेहं च प्राप्य समाप्नोति।

आश्चर्यं तु मां स्वयमपि तस्मिन् दिनेऽभवत्, यदा 14 फरवरी दिने बिजनौर नगरे प्राप्ते सति 15 दिनांके प्रातः एकश्चिकित्सकमहोदयः आगत्य मम स्थितिं दृष्ट्वैव एकं महान्तं स्फोटं गृहीत्वा शमनमकरोत्, अधुना अन्तःस्थितं रक्तत्वक् दृष्टिमागतभूत्। प्रत्यक्षमेव प्रकटितमासीत् यत् अधुना कस्मैचित् कालाय विहारो भवितुं न शक्ष्यति। चिकित्सकः कंचित् लेपं विधाय पट्टिकामबध्नात् अवदच्च द्वि–चतुर्दिनानि चलितुं न शक्यते, अन्यथा 'सैप्टिक' भवितुं भयं वर्तते।

यस्माद् दिनात् हस्तिनापुराद् विहारोऽभूत प्रतिनगरे कार्यक्रमाः तिथीनामनुसारेण निर्धारिताः कृताः आसन्। अधुना बिजनौरनगरे स्थातुं तात्पर्यमासीत् अत्रैव कतिचित् दिनानिपर्यन्तं कार्यक्रमः अस्तव्यस्तः भविष्यति। 15 फरवरी दिनस्य तत्र विश्रामः आसीत्, अग्रिमदिनेअहं हृदये भगवन्तमस्मरं पूज्यमातुश्चाशीर्वादमगृहणाम्, मार्गः केन प्रकारेण पूर्णोऽभूत् मया न ज्ञातम्, मार्गे वर्षाऽभवत् तु अहं गमनेऽधिकां सुविधामन्वभवम्।

अहं मार्गे मात्रा पाठितमिदं मंत्रमवश्यमेवापठम्—

''ॐ ह्रीँ अनन्तबलप्राप्तये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः।''

यद्यपि 28 फरवरी पर्यन्त पादयो व्रणानि मह्यं महत्कष्टमदुः, पुनरपि विहारः कदापि न रुद्धः, एवं प्रभोराशीर्वादं मन्ये। स्यात् परीक्षामुत्तीर्णाप्यभवम्, तदैव स्वगन्तव्यं प्राप्ता

विश्रामस्थल पर पहुँचकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद एवं मातृत्व स्नेह पाकर समाप्त हो जाता था।

आश्चर्य तो मुझे स्वयं पर उस दिन हुआ, जब 14 फरवरी को बिजनौर पहुँचते ही 15 ता. को सुबह एक डाक्टर महोदय ने आकर मेरी स्थिति देखते ही एक बड़ा सा छाला पकड़कर नोंच दिया, अब अन्दर की लाल खाल दिखने लगी थी। प्रत्यक्ष जाहिर था कि अब कुछ दिन विहार नहीं हो सकता है। डॉक्टर ने कुछ मल्हम लगाकर पट्टी बाँध दी और बोले कि 2-4 दिन चलना नहीं है वर्ना सेप्टिक होने का डर है।

जिस दिन से हस्तिनापुर से विहार हुआ था, प्रत्येक नगर में प्रोग्राम तारीखों के हिसाब से अप-टू-डेट तैयार कर लिए गए थे। अब बिजनौर में रुकने का मतलब था कि आगे कई दिनों का कार्यक्रम अस्त-व्यस्त होता। 15 फरवरी को वहाँ विश्राम था, अगले दिन मैंने हृदय में भगवान का स्मरण किया और पूज्य माताजी का आशीर्वाद मिला, बस रास्ता कैसे तय हो गया, पता ही न चला। रास्ते में बरसात आई तो मुझे चलने में और अधिक सुविधा ही महसूस हुई।

हाँ! रास्ते में मैं सदैव पूज्य माताजी द्वारा बताया हुआ यह मंत्र अवश्य पढ़ती रहती थी– **''ॐ ह्रीं अनंतबलप्राप्तये श्री सिद्धपरमेष्ठिने नमः।''**

यद्यपि 28 फरवरी तक मुझे पैर के छालों से काफी तकलीफ रही, फिर भी विहार कभी रुका नहीं, इसे मैं प्रभु का आशीर्वाद समझती हूँ। शायद परीक्षा में उत्तीर्ण भी हुई तभी अपने गन्तव्य तक

अस्मि। मया सह टिकैतनगरस्य श्रीमदनलालो जैनः पदाभ्यां गच्छन्त्याः मम कष्टान्यन्वभवत्। सः स्व सहचारिणोऽवदत्–

''रक्तधारा पदेषु प्रस्रवन्त्यभवत्। चन्दनामती पदयात्रायां चलन्त्यासीत्।।''

अतएव जैनचर्या अस्मात् कारणात् असिधारा कथिता, यदस्यां कुत्रापि कस्या अपि शिथिलतायाः संभावना नास्ति। पंचमकालस्यान्तपर्यन्तं दिगम्बरजैनसाधुसाध्वीनामियं चर्याऽनेन प्रकारेणैव गतिशीला अवस्थास्यति, अस्यां सन्देहो न कर्तव्यः।

अहिच्छत्रतीर्थस्य प्रथमदर्शनं कृत्वा अमूल्योपहारं ददौ–**यथा नवायाः बध्वाः प्रथमबारं मुखं वीक्ष्य सर्वेपारिवारिकजनाः तस्यै किञ्चिदपि वस्तु उपहारे ददति तथैव माता** ''अहिच्छत्रतीर्थस्य'' **प्रथमदर्शनं कृत्वा तत्रैकं बहुमूल्यमुपहारं समर्पितमकरोत्।**

जीवने प्रथमबारं सा 13 मार्च 1993 तिथौ अहिच्छत्रं प्राप्ताऽभवत्। तत्र त्रयाणां दिनानां विश्रामोऽप्यभवत्। पुनस्तीर्थंकरपार्श्वनाथस्य दर्शनात् मातुर्हृदये भावना जागृताऽभवत् यदत्र त्रिंशत्चतुर्विंशतितीर्थंकराणां विंशत्यधिकसप्तशतप्रतिमाः विराजमानाः भवितव्याः। अस्याः एव भावनानुसारेण 16 मार्च 1993 मंगलवारे ऋषभजयन्त्याः महोत्सवे प्रवचनं कुर्वन्ती सा एतां योजनां घोषितवती अस्याश्च निर्माणस्योत्तरदायित्वं प्रेमचन्द्रजैनं मेरठनगरं समर्पितवती। जिनेन्द्र भक्तेरतिशयस्तत्कालमेव फलितः, दानदातृणां घोषणानन्तरमेव अनेक

पहुँच सकी। मेरे साथ में टिकैतनगर के श्री मदनलाल जैन पैदल चलते हुए मेरे कष्टों का अनुभव करते रहते थे। वे अपने साथियों से कहते थे–

रक्त की धारा पैरों से बहती रही,
चन्दनामती की पदयात्रा चलती रही।।

वास्तव में यह जैनीचर्या इसीलिए तलवार की धार के समान कही गई है कि इसमें कहीं किसी शिथिलता की गुंजाइश नहीं है। पंचमकाल के अंत तक दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की यह चर्या इसी प्रकार चलती रहेगी, इसमें संदेह नहीं करना चाहिए।

➢अहिच्छत्र तीर्थ के प्रथम दर्शन कर अमूल्य न्योछावर भेंट की–

जैसे नई दुल्हन का प्रथम बार मुख दर्शन करके सभी पारिवारिक जन उसे कुछ न कुछ भेंट देते हैं उसी प्रकार पूज्य माताजी ने **''अहिच्छत्र''** तीर्थ के प्रथम दर्शन कर वहाँ एक बहुमूल्य भेंट समर्पित की।

जीवन में प्रथम बार वे 13 मार्च 1993 को अहिच्छत्र पहुँची थीं। वहाँ 3 दिन विश्राम भी रहा पुनः तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के दर्शन से माताजी के हृदय में भावना जागृत हुई कि यहाँ तीस चौबीसी तीर्थंकरों की सात सौ बीस जिन प्रतिमाएँ विराजमान होनी चाहिए। इसी भावना के अनुसार उन्होंने 16 मार्च 1993 मंगलवार को भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती महोत्सव में प्रवचन करते हुए इस योजना को घोषित किया और इस निर्माण की जिम्मेदारी प्रेमचंद जैन, तेल वाले मेरठ निवासी को सौंपी। जिनेन्द्र भक्ति का अतिशय तुरंत फलित हुआ, योजना की घोषणा होते ही अनेक श्रद्धालुओं

श्रद्धालवः स्वनामानि प्रतिमा हेतवे लेखायितुमारभन्त। पश्यन्–पश्यन् लक्षाधिक रुप्यकाणि स्वीकृतान्यभवन्। पूज्या मातुरयमुपहारस्तदा साकाररूपमगृह्णात्। एतेन उपहारेण माता भगवतः पार्श्वनाथस्य चरणयोः स्वश्रद्धापुष्पाणि समर्पितानि मन्यते। तस्याः कथनमस्ति यत् साधुश्रावकयोः द्वयोरेव सम्मेलनेन तीर्थानां विकासः संभवति।

अहिच्छत्रस्यैका नवसंस्था 'ज्ञानतीर्थनाम्ना' **संस्थापिता विद्यते, तत्रैवास्माकं संघस्य त्रिदिनेभ्यः विश्रामस्थलमासीत्। अस्याः संस्थायाः प्रमुखं सलेकचन्द्रं दिल्ली निवासिनं माता मन्दिरनिर्माणस्योचितरूपरेखां** ''पार्श्वनाथ कलामन्दिर'' **नाम्नाः नवीनामाकर्षिकां योजनामपि अकथयत्। अस्यां भगवतः पार्श्वनाथस्य जीवनस्य सम्बन्धिताः विश्रुताः घटनाः दर्शिताः भवन्तु, तु जनताऽऽकर्षणं वर्द्धितं भविष्यति।**

बालकल्याणस्यानुपमं दृश्यम्–**बालकाः अस्माकं देशस्य समाजस्य चाधारशिलाः विद्यन्ते। तेभ्यः सम्बोधदानं साधूनामपि परमं कर्तव्यमस्ति। माता ज्ञानमती त्वस्यां दिशि पूर्णरुपेणाग्रसरा वर्तते। तदैव तु सा यत्राष्टसहस्रीसदृशानां कठिनतमग्रन्थानां अनुवादमकरोत् तत्रैव बालेभ्योऽपि** ''बालविकास नामानि'' **चत्वारि लघूनि पुस्तकान्यलिखत् यानि विभिन्नपरीक्षाकेन्द्रेषु पाठ्यन्ते।**

बरेली नगरे मंगलपदार्पणस्य पश्चात् तस्य नगरस्य वाक्कीलः सत्येन्द्र कुमार जैनः एकस्मिन् विद्यालये आशीर्वादप्रवचनं कारयितुं चर्चामकरोत्। पुनः 22 मार्च 1993 दिने

ने अपने-अपने नाम प्रतिमा हेतु लिखवाने शुरू कर दिये। देखते ही देखते लाखों रुपये की स्वीकृतियाँ हो गईं। पूज्य माताजी की वह भेंट वहाँ साकार रूप ले चुकी है। इस भेंट को पूज्य माताजी भगवान पार्श्वनाथ के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा पुष्प न्योछावर मानती हैं। उनका कहना है कि साधु और श्रावक दोनों के सम्मेलन से ही तीर्थों का विकास संभव है।

अहिच्छत्र की एक नई संस्था **''ज्ञानतीर्थ''** है, वहीं हमारे संघ का तीन दिन विश्राम रहा। इस संस्था के प्रमुख श्री सलेकचन्द्र जैन दिल्ली वालों को भी माताजी ने मंदिर निर्माण की उचित रूपरेखा तथा **''पार्श्वनाथ कला मंदिरम्''** नाम से नवीन आकर्षक योजना भी बताई जिसमें भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से संबंधित इलेक्ट्रॉनिक झांकियों को दर्शाया जावे, तो जनता का आकर्षण बढ़ेगा।

➢बाल कल्याण का अनूठा दृश्य–

बच्चे हमारे देश और समाज की आधारशिला हैं, उन्हें सम्बोधित करना साधुओं का भी परम कर्तव्य होता है। पूज्य ज्ञानमती माताजी तो इस दिशा में पूर्णरूप से अग्रसर रहती हैं। तभी तो उन्होंने जहाँ अष्टसहस्री जैसे क्लिष्टतम ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद किया, वहीं बालोपयोगी **''बाल विकास''** नाम से 4 लघु पुस्तकें भी लिखी हैं जो विभिन्न परीक्षा बोर्डों में पढ़ाई जा रही हैं।

बरेली में मंगल पदार्पण करने के बाद वहाँ के एडवोकेट सत्येन्द्र कुमार जैन ने एक स्कूल में पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्रवचन कराने की चर्चा की थी पुनः 22 मार्च 1993 को

''बरेली फ्लोरमिलस्थानात् फरीदपुरस्य'' **मार्गे सः विद्यालयः दृष्टिगतोऽभूत्। विद्यालयस्य नामासीत्**–''मानसस्थलीपब्लिकस्कूलः'' **इति। अत्र पूर्वनियोजितेन कार्यक्रमानुसारेण सम्पूर्णाध्यापकवर्गः संघस्य स्वागताय आतुरः आसीत्। विद्यालयस्य सभाभवनेऽस्माकं प्रवचनान्यभवन्। पुनः माता स्वमंगलोद्बोधने अहिंसा सदाचारविषये बालानवबोधयन्ती तस्य विद्यालयस्य शिक्षक शिक्षिकाभ्यश्चाशीर्वादमदात्।**

यस्याः दृष्टिमात्रेण पायसमक्षयं जातम्–**वार्तास्ति 24 मार्च 1993 वर्षस्य, यदा वयं प्रातः टिसुवास्थानात् फतेहगंज ग्राममागच्छाम। संघपतिः छोटीशाहमहोदयस्तस्मिन् दिने स्वातिथिभ्यः पायसभोज्यस्य प्रबन्धमकरोत्। संयोगवशात्तत्र टिकैतनगरस्य फतेहपुरस्य च केचिज्जनाः समुपागच्छन्। छोटीशाहमहोदयश्चिन्तितोऽभवत् पायसं न्यूनं न भवेत्, दुग्धस्य चाधिकमात्रायां प्राप्तेः कापि व्यवस्था नासीत्, सः च सर्वेभ्यः उदरपूर्णं पायसं भोजयितुमैच्छत्।**

पूज्यमाता समीपस्थे कक्षे एव भगवतोऽभिषेकं दृष्टुं गच्छति स्म। तत्र छोटीशाहमकथयत्– यदतिथिभ्यः कस्य पदार्थस्य पाकोऽभवत्? सोऽवदत् ''मातः! पायसं निर्मितमस्ति। इदं पश्यतु, तत्परमस्ति। भवत्याशीर्वादं ददातु, न्यूनं न स्यात् यतो हि जनाः अधिकाः सन्ति। पूज्यमाता अनायासमेव तस्मिन् दृष्टिपातमकरोत् अवदच्च— चिन्तां न कुरु, कापि न्यूनता न भविष्यति।

संघपतिः छोटीशाहोऽद्यापि तत्प्रसंगं स्मरन्नेव रोमांचितो गद्गदश्च जायते। अनेकजनानां समक्षं च कथयति, तस्मिन् दिने मम तत् अल्पमपि पायसमक्षयमभवत्। शतशः जनानां

''बरेली फ्लोर मिल'' से **''फरीदपुर''** के रास्ते में वह स्कूल आया। स्कूल का नाम था– **''मानस स्थली पब्लिक स्कूल''**। यहाँ पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार सारा स्टॉफ संघ के स्वागत को आतुर था। स्कूल के ''लेक्चर हॉल'' में हम लोगों के प्रवचन हुए पुनः माताजी ने अपने मंगल उद्बोधन में अहिंसा और सदाचार के विषय में बच्चों को बताया और वहाँ के शिक्षक-शिक्षिकाओं को आशीर्वाद प्रदान किया।

➢जिनकी दृष्टिमात्र से खीर अक्षय हो गई–

बात है 24 मार्च 1993 की, जब हम लोग प्रातः ''टिसुवा'' से ''फतेहगंज'' आए थे। संघ संचालक छोटी शाह जी ने उस दिन अपने अतिथियों के लिए खीर बनाई थी। संयोगवश वहाँ टिकैतनगर और तहसील फतेहपुर के कई लोग पहुँच गए थे अतः छोटी शाह को चिन्ता हो गई कि कहीं खीर कम ना पड़ जाए। दूध और मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी और वे सबको पेट भर खीर खिलाना चाहते थे।

पूज्य माताजी भोजनशाला के पास वाले कमरे में ही भगवान का अभिषेक देखने जा रही थीं कि वहीं छोटीशाह से बोल पड़ीं– मेहमानों के लिए क्या बनाया है? उन्होंने कहा– ''माताजी! खीर बनाई है। यह देखिये! बन गई है, आप आशीर्वाद दीजिए कि कम ना पड़े क्योंकि लोग ज्यादा हो गए हैं।'' पूज्य माताजी ने अनायास ही उस पर दृष्टि डाली और बोलीं– चिन्ता मत करो, कोई कमी नहीं होगी।''

संघपति छोटीशाह आज भी उस प्रसंग को याद करते ही रोमांचित और गद्गद हो जाते हैं तथा अनेक लोगों के समक्ष भी कहने लगते हैं कि उस दिन मेरी वह थोड़ी सी खीर अक्षय हो गई। सैकड़ों

भोजनानन्तरमपि तत् पायसं ग्रामवासिभ्यः भोजितम् पुनः अपि सायंकालस्य पश्चादपि अवशिष्टं पायसं पुनः प्रातःकाले केभ्याश्चिद् जनेभ्यो वितीर्य पात्राणि रिक्तानि जातानि।

एतत्सर्वं दीर्घकालीनायास्तपस्यायाः त्यागस्य च प्रभावोऽस्ति। यः पंचमकालेऽपि दृष्टिगोचरो भवति। गुरुकृपाप्रसादात् 1993–1994 च वर्षद्वयं छोटीशाह महोदयो आर्थिकदृष्ट्या अत्युत्तमोऽभूत्।

जैनेभ्योऽपि जैनत्वशिक्षा प्रदानस्यावश्यकता–**कथ्यते यत् सुप्तस्य जागरणस्य कलां तु संसारो जानाति, परन्तु जागृतानां मानवानां ज्ञानचक्षूंषि उन्मील्य जाग्रतकरणं केवलं सद्गुरवः एव जानन्ति। बरेली–सीतापुरस्य च मध्ये शाहजहाँपुरेऽपि जैनानां पर्याप्तसंख्या अस्ति। परन्तु तत्र गत्वा ज्ञातमभूत् यत् मन्दिरे पूजनं प्रक्षालं च कदापि सम्यक् न भवति।**

पूज्यमाता मन्दिरस्य वेद्यां या न्यूनताऽऽसीत् तां स्वहस्ताभ्यामेवापहरत् सर्वान् च जैनधर्मं प्रति जाग्रतानकरोत्। तत्र संघः 27–28 मार्चमासे अतिष्ठत्। मन्दिरस्य समीपे भगवानदासस्य गृहे एव वयमतिष्ठाम। गुरु चरणयोरुपदेशस्य च तत्र यः प्रभावः जातः तमद्यापिजनाः आगत्य वर्णयन्ति ज्ञानमत्याः मातुश्च कार्यक्रमाणां परिचयं प्राप्य ते तत्रैव गन्तुं प्रयतन्ते।

संकटो भयं मत्वाऽधावत्–**शाहजहाँपुरात् प्रायः 30 किलोमीटर दूरे स्थितस्य नहर उपनगरस्य एकस्मिन् महत्यावासेऽस्माकं रात्रिविश्रामः आसीत्। अत्र केचित् पुलिसकर्मिणः आगत्य**

लोगों के खाने के बाद भी मैंने वह खीर गाँव वालों को खिलाई, फिर भी शाम तक बची रही पुनः दूसरे दिन सवेरे कुछ लोगों को बाँटकर बर्तन खाली किया।

यह सब दीर्घकालीन तपस्या एवं त्याग का ही प्रभाव है जो पंचमकाल में भी दृष्टिगोचर हो रहा है। गुरु की कृपा प्रसाद से सन् 1993 एवं 1994 छोटीशाह के लिए आर्थिक दृष्टि से भी अति उत्तम रहे।

➢जैनियों को भी जैनत्व सिखलाने की आवश्यकता–

कहते हैं कि सोते को जगाने की कला तो संसार जानता है किन्तु जागते मानवों के ज्ञानचक्षु खोलकर जगाना केवल सद्गुरु ही जानते हैं। बरेली और सीतापुर के बीच में "शाहजहाँपुर" एक विख्यात शहर है। वहाँ जैन मंदिर है और लगभग 25-30 घर भी जैनियों के हैं किन्तु पहुँचने पर ज्ञात हुआ कि मंदिर में कभी पूजन प्रक्षाल भी ठीक से नहीं होती है।

पूज्य माताजी ने मंदिर की वेदी में जो कमी थी, उसे अपने हाथों से दूर किया तथा सबको जैन धर्म के प्रति जागरूक किया। वहाँ संघ 27-28 मार्च दो दिन रुका। मंदिर के पास ही भगवानदास जैन के मकान में ही हम लोग ठहरे थे। गुरुचरणों का एवं उपदेश का वहाँ जो प्रभाव पड़ा, उसे आज तक भी वहाँ के लोग आकर बताते हैं और ज्ञानमती माताजी के कार्यक्रमों का पता लगते ही वे लोग सदैव वहाँ पहुँचने की कोशिश करते हैं।

➢खतरा डरकर भाग गया–

शाहजहाँपुर से लगभग 30 किमी. दूर नहर कालोनी की एक कोठी पर हम लोगों का रात्रि विश्राम था। यहाँ रात्रि में कुछ पुलिसवालों ने आकर संघ के लोगों में दहशत पैदा कर दी कि यहाँ

संघस्यजनेषु भीतिमुत्पादयन् यदत्र तु नित्यमेव दुर्घटनाः भवन्ति, इदं तस्करदुराचारिणां च मुख्यालयमस्ति। भवन्तोऽत्र न तिष्ठेयुः यतो वयं सुरक्षां कर्तुं न शक्नुमः।

संघपतिः छोटीशाहो भयभीतोऽभवत् अवदच्च–इदानीं तु रात्रिर्जाता, अस्माकं साधवो रात्रौ न विहरन्ति, अतो वयमत्रैव स्थास्यामः। भवन्तो यां यां सहायतां कर्तुं शक्नुवन्ति, कुर्वन्तु अन्यथा वयं भाग्यस्याश्रये स्मः। सः मातरं एतां वार्तामकथयत् अवदच्च–यत् पुलिस–कर्मिणः उक्त्वा गताः यत् रात्रौ कोऽपि कक्षात् बहिर्न गच्छेत्।

माता मन्दहास्येनाकथयत् ''छोटीशाह! सर्वान् सूचय, कोऽपि कामपि चिन्तां न करोतु। यावत्बारं बहिर्गन्तुमिच्छेत्, गच्छेत्, कस्मै अपि कोऽपि संकटो न भविष्यति। अहं सर्वेषां सुरक्षायै उपविष्टास्मि।'' सर्वेजनाः अहसन्, किन्तु काश्चित् गृहस्थाः महिलाः आसन्, यासां समीपे 5–10 तोले स्वर्णाभूषणान्यासन्। अतः सर्वेषां मनसः अभ्यन्तरे भीतिः प्रविष्टाऽऽसीत्। प्रतिदिनमिव सर्वे मंगलप्रभाते चक्षूंषि उन्मीलितान्यकुर्वन्, कापि संकटस्य स्थितिः सम्मुखे नासीत्। ''साधूनां तपस्यायाः समक्षं अनेकसंकटाः स्वयमेव भयं मत्वा धावन्ति''**, इदं मया अस्मिन् प्रवासेऽनुभूतम्।**

सीतापुरात् प्रारब्धाऽभवत् अयोध्यायाः विकासयात्रा–**सीतापुरोऽवधप्रान्तस्य प्रवेशद्वारं मन्यते, तत्र 4 अप्रैल 1993, चैत्रशुक्लद्वादश्याः दिने गणिन्याः मातु संघस्य मंगलपादार्पणमभवत्। द्वितीये दिने तस्याः सान्निध्ये महावीरजयन्तीपर्व आयोजितम्, पुनः 8 अप्रैल–वैशाखकृष्ण–द्वितीयामार्यिकाश्रियः सप्तत्रिंशत्तमः आर्यिकादीक्षा समारोहजयन्तीसमारोहो महतोत्साहेनायोजितः।**

तो रोज दुर्घटनाएं होती हैं। यह डकैत-बदमाशों का अड्डा है, आप लोगों को यहाँ नहीं ठहरना चाहिए क्योंकि हम लोग सुरक्षा नहीं कर सकते हैं।

संघपति थोड़ा डर गए और बोले–अब तो रात हो गई है, हमारे साधु रात्रि में विहार नहीं करते हैं अतः हम लोग यहीं ठहरेंगे, आपसे जो सहायता बने कर देना अन्यथा हम लोग भाग्य भरोसे हैं। उन्होंने माताजी को यह बात बताई एवं बोले कि पुलिस वाले कह गए हैं कि रात्रि में कोई कमरे से बाहर मत निकलना।

माताजी ने मुस्कराकर कहा–''छोटी शाह! सबसे कह दो कोई चिन्ता न करें। जितनी बार जिसको बाहर निकलना है निकले, किसी को कोई खतरा नहीं रहेगा। मैं सबकी पहरेदारी करने के लिए बैठी हूँ।'' सभी लोग हँस पड़े किन्तु चूँकि कई गृहस्थ महिलाएं भी साथ में थीं, सबके पास 10-5 तोले सोने के जेवर भी थे अतः सबके मन के अन्दर डर घुसा था। प्रतिदिन की भाँति सबने मंगल प्रभात में आँखें खोलीं और कोई खतरे की स्थिति सामने नहीं आई। **''साधु की तपस्या के समक्ष ऐसे अनेक खतरे भी स्वयं डरकर भाग जाते हैं''** यह मैंने इस प्रवास में अनुभव किया।

➢सीतापुर से शुरू हुई अयोध्या की विकास यात्रा–

सीतापुर अवधप्रान्त का प्रवेश द्वार माना जाता है। वहाँ 4 अप्रैल 1993 चैत्र शु. 12 को पूज्य गणिनी माताजी के संघ का मंगल पदार्पण हुआ। दूसरे दिन उनके सानिध्य में महावीर जयंती पर्व मनाया गया पुनः 8 अप्रैल–वैशाख कृष्णा दूज को आर्यिकाश्री का 37 वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती

अवधप्रान्तस्य समस्तेभ्यो ग्रामनगरेभ्यो महान् जनसमूहः सीतापुरे स्वविभूतेः प्रथमं दर्शनं कर्तुमुपस्थितोऽभूत्।

अस्य स्थानस्य कर्मठकार्यकर्त्रा सुन्दरव्यवस्था कृता। सहगल धर्मशालायाः समीपे विशालमंडपे समारोहः संपन्नोऽभवत्। सभायाः मध्ये एव अयोध्यायाः विकासस्योद्धारस्य च वातावरणमजायत्। पूज्या माताऽयोध्यायां भूतभविष्यत्वर्तमानकालानां सम्बन्धितानां त्रिकालचतुर्विंशतितीर्थंकराणां 72 प्रतिमानामेकं नवं मन्दिरं निर्माणाय प्रेरणामदात्। तत्क्षणमेव 15 मिनट समयाभ्यन्तरे समस्तानां प्रतिमानां दातारोऽपि घोषिताः अभवन्। एवं शुभलक्षण–पूर्वकमयोध्यायाः विकासस्य प्रारम्भीकरणं भवत्।

विष्णुकुमार जैन, मुन्नेबाबू इति ख्यातोऽयं, तस्मिन् दिने मातुः समक्षं संकल्पमकरोत् यदि भवत्यायोध्यातीर्थे चतुर्मासं करिष्यति तदाऽहं स्वपूर्ण समयं तत्रैव व्यतीतं करिष्यामि। सः सपत्नीकः स्ववचनस्य निर्वाहमकरोत्। मातुश्च प्रवासे स्वपूर्ण समयमयोध्यायै एव प्रदत्तमकरोत्।

निजगृहे पुत्र्याः तीव्रं स्वरमाकर्ण्य दिल्लीवासिनः भाषितुं तत्पराः अभवन्–**दीक्षाजयन्त्याः प्रवचनसभायां पूज्यामातुः मम च ओजस्विनं प्रवचनं श्रुत्वा दिल्लीनगरात् समागता जिनेन्द्रप्रसाद–ठेकेदार–इत्यस्य पत्नी सौभाग्यवती विमला जैना वक्तुमुद्यताऽभवत्–**

''मातः! यथा पितुर्गृहे समागत्य पुत्र्याः वाणी तीव्रा भवति, तथैवाद्य मां प्रतीयते यत्

समारोह खूब धूम-धाम से आयोजित किया गया। अवधप्रान्त के समस्त ग्राम, नगर, शहरों की भारी भीड़ सीतापुर में अपनी विभूति के प्रथम दर्शन करने आई।

यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सुन्दर व्यवस्था बनाई। सहगल धर्मशाला के पास विशाल पांडाल में समारोह सम्पन्न हुआ। सभा के बीच में ही अयोध्या के उद्धार और विकास का माहौल बना। पूज्य माताजी ने अयोध्या में भूत, वर्तमान एवं भविष्यत्काल संबंधी त्रिकाल चौबीसी तीर्थंकरों की 72 प्रतिमाओं का एक नया मंदिर बनाने की प्रेरणा दी, तत्क्षण ही 15 मिनिट में समस्त प्रतिमाओं के दातार भी घोषित हो गए। इस प्रकार शुभलक्षणपूर्वक अयोध्या के विकास की कहानी का शुभारंभ हुआ।

सीतापुर निवासी एक वृद्ध महानुभाव विष्णुकुमार जैन (मुन्ने बाबू) ने उस दिन माताजी के समक्ष संकल्प किया कि यदि आप अयोध्या तीर्थ पर चातुर्मास करेंगी, तो मैं अपना पूरा समय वहीं निकालूँगा। उन्होंने सपत्नीक अपने वचन का निर्वाह किया और माताजी के प्रवास में अपना पूरा समय अयोध्या के लिए प्रदान किया।

➢पीहर में बेटी की तेज आवाज सुनकर दिल्ली वाले बोल उठे–

दीक्षा जयंती की प्रवचन सभा में पूज्य माताजी का एवं मेरा ओजस्वी प्रवचन सुनकर दिल्ली से आई जिनेन्द्र प्रसाद ठेकेदार की धर्मपत्नी सौ. विमला देवी बोल उठीं–

''माताजी! जैसे पीहर में पहुँचकर बेटी की आवाज तेज हो जाती है, वैसे ही आज मुझे लगता

भवत्सु जनेषु स्वपितुर्गृहेऽवधे आगतेषु पर्याप्तओजस्विता स्वत्वं च जागृतमभूत्, तदैव तु भवती अधिकारपूर्णभाषायामयोध्यायाः वार्तामकथयत् तस्य प्रान्तस्य जनतापि कतिभिः स्वत्त्वभावैः तां स्वीकृत्यातामुत्साहं प्रदर्शितमकरोत्।'' तस्याः कथनमासीत् यत् ''भवत्याः ईदृशी ओजस्विनी वाणी मया पूर्वं कदापि न श्रुता, त्वयं जन्मक्षेत्रस्य परमाणूनामेव प्रभावोऽस्ति।

दानं दत्वा मनसि विशेषो हर्षो भवितव्यः–**सीतापुरस्यैव एकः श्रावकोऽस्ति, श्री शीतलप्रसादः। तस्य पुत्रस्य वीरेन्द्रकुमारस्य गृहे ममाहारोऽभूत्। सः अत्यन्तधार्मिक प्रवृत्तेः श्रावकोऽस्ति। सर्वदा दानादिकं कुर्वन् तिष्ठति। तस्मिन् दिने ममाहारस्य पश्चात् सः अनायासेनैव वक्तुमारभत्–मातः! अहं संघे एकं ध्वनिविस्तारकं यंत्रं दातुमिच्छामि, अस्तु, साधवः संघसम्बन्धिव्यवस्थाविषये किमपि न कुर्वन्ति। अहमाहारस्य पश्चात् पुनः मन्दिरमागच्छम्। सः च महानुभावः संघमागत्य भगिनीभ्यः एकं ध्वनिविस्तारकयंत्रमयच्छत्। पुनः अग्रिमदिने सः मम समीपमागत्य वक्तुमारभत यत् मातः! मम तु तस्मिन् दिने एव एकस्मिन् होरासमये आपणे 25–30 सहस्ररूप्यकाणां आयोऽभवत्। वस्तुतः एतन्सर्वं गुरुभक्तेरेव महिमा वर्तते। तदैव तु दानविषये उक्तं यत्–**

''दानं दत्वा मनसि हर्ष विशेषो भवितव्यस्तेन, अस्मिन् भवे यशः परभवे च सुखं भवति।''

अवधस्य प्रथमकेशलुंचनं बिसवां नगरे–**कतिभ्यो दिनेभ्यः महमूदाबादनिवासिनः संघस्य**

है कि आप लोगों में भी अपने पीहर अवध में आने से काफी ओजस्विता और अपनत्व जागृत हो गया है। तभी तो आपने अधिकारपूर्ण भाषा में अयोध्या की बात कही और यहाँ की जनता ने भी कितने अपनत्व भाव से उसे स्वीकार कर यह उत्साह प्रदर्शित किया है।'' उनका कहना था कि ''आपकी ऐसी जोशीली वाणी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी तो यह जन्मक्षेत्र के परमाणुओं का ही प्रभाव है।''

➢दान देय मन हरष विशेषै–

सीतापुर के ही एक श्रावक हैं श्री शीतल प्रसाद जी। उनके लड़के वीरेन्द्र कुमार जी के यहाँ मेरा आहार हुआ था। वे अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के श्रावक हैं सदा दानादि करते रहते हैं। उस दिन मेरे आहार के बाद वह अनायास बोल पड़े–माताजी! मैं संघ में एक माइक सेट दान में देना चाहता हूँ। खैर, साधुओं को संघ संबंधी व्यवस्था से क्या लेना-देना? मैं आहार के बाद वापस मंदिर जी आ गई और वह महानुभाव संघ में आकर बहनों को एक माइक सेट दे गए पुनः अगले दिन वे मेरे पास आकर कहने लगे कि माताजी! मेरा तो उसी दिन 1 घण्टे में दुकान पर 25-30 हजार रुपये का फायदा हो गया। वास्तव में यह सब गुरुभक्ति एवं दान की महिमा है, तभी तो दान के विषय में कहा है कि–

''दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस परभव सुख देखे''।

➢अवध का पहला केशलोंच बिसवां में–

कई दिन से महमूदाबाद के लोग संघ के आगमन आदि का माहौल बनाते हुए अपेक्षा कर रहे

आगमनसम्बन्धिनं वातावरणं निर्मितं कुर्वन्तः अपेक्षन्ते स्म यत्, मातु केशलुंचनस्य कार्यक्रमं महमूदाबाद नगरे आयोजितं करिष्यामः। कार्यक्रमः प्रायः निर्णयस्य कोट्यामेव प्रस्तुतः आसीत्, किन्तु दिनांके 11 अप्रैल दिने माता स्वदैनन्दिनीमपश्यत् अवदत् यत् इदानीं तु महमूदाबादगमने 8–10 दिनानि व्यतीतानि भविष्यन्ति, मम च केशलुंचनस्य समयः आगच्छत्। अतोऽहमग्रिमदिने बिसवांग्रामे केशलुंचनं विधास्यामि।

अमुं अकस्मादागतं समाचारं श्रुत्वैव बिसवां निवासिनां यथा लाटरी एवं उद्घाटितमभूत्। ते शीघ्रतया एकस्यामेव रात्र्यां सम्पूर्णां व्यवस्थामकुर्वन। तत्र 'शिवाला'– प्रांगणे पाण्डालंनिर्मितं, जैन–अजैन–सर्वा जनता जैन साध्व्याः केशलुंचनस्य प्रथमं दृश्यं स्वनगरेऽपश्यत्। अस्मिन्नवसरे अहिंसा–शाकाहारसंगोष्ठी अपि आयोजिता, यस्यां स्थानीयाः 5–6 वक्तारः उत्तमानि वक्तव्यानि प्रस्तुतान्यकुर्वन्। केशलुंचनस्य व्याजात् स्थानीयजैन समाजाय प्रायः 35–40 सहस्ररुप्यकाणामायोऽभवत्। सामान्यवर्गः प्रबुद्धवर्गश्च संप्रदायस्य भेदभावं विनाश्य मातुः मंगलवाण्याः पूर्णं लाभं प्राप्नुवन्। मांसाहारमदिराद्यूतादीनां दुर्व्यसनानां शतशो जनाः त्यागमकुर्वन्। तत्र चागत महमूदाबादनगरस्य भाजपा भूतपूर्व विधायकोऽपि तस्मिन् दिने प्रवचनेन प्रभावितो भूत्वा मांसाहारस्य त्यागमकरोत्।

सिधौली नगरे मन्दिरसम्बन्धीविवादः दूरीभूतः–**15 अप्रैल 1993 दिने संघस्य प्रवेशः सिधौली नगरेऽभवत्। सम्पूर्णं नगरं तोरणद्वारैः सुसज्जितामासीत्। सर्वोदयविद्यालयस्य बालकाः शोभायात्रायां सम्मिलिताः भूत्वा मंगलामारर्तिकामवतारयन्। अत्रापि ''कनोडिया**

थे कि पूज्य माताजी का केशलोंच समारोह हम महमूदाबाद में मनाएँ। कार्यक्रम लगभग निर्णय की कोटि में ही पहुँच गया था किन्तु दिनाँक 11 अप्रैल को माताजी ने अपनी डायरी देखी तो बोल पड़ीं कि अभी महमूदाबाद पहुँचने में लगभग 8-10 दिन लग जाएंगे और मेरा केशलोंच का समय आ गया है अतः कल बिसवां में मैं केशलोंच करूंगी।

यह अनहोना समाचार सुनते ही बिसवां वालों की मानों लाटरी खुल गई। उन लोगों ने आनन-फानन में एक रात के अन्दर सारी तैयारी कर ली। वहाँ शिवाले के प्रांगण में पांडाल बना और जैन-अजैन तमाम जनता ने जैन साध्वी के केशलोंच का यह प्रथम दृश्य अपने नगर में देखा। इस अवसर पर अहिंसा-शाकाहार संगोष्ठी भी की गई, जिसमें स्थानीय 5-6 वक्ताओं ने अच्छे वक्तव्य प्रस्तुत किये। केशलोंच की बोलियों के माध्यम से स्थानीय जैन समाज को लगभग 35-40 हजार रुपये की आय हुई। सामान्य जनता एवं प्रबुद्ध वर्ग ने संप्रदाय का भेद मिटाकर माताजी की मंगलवाणी का पूरा लाभ उठाया तथा मांसाहार, शराब, जुंआ आदि व्यसनों का सैकड़ों लोगों ने त्याग किया। वहाँ पधारे महमूदाबाद के भूतपूर्व विधायक (भाजपा) ने भी उस दिन प्रवचन से प्रभावित होकर मांसाहार का त्याग कर दिया।

➢सिधौली में मंदिर संबंधी विवाद दूर हुआ–

15 अप्रैल 1993 को संघ का प्रवेश सिधौली में हुआ। सारा नगर तोरण द्वारों से सुसज्जित था, सर्वोदय स्कूल के बच्चों ने जुलूस में शामिल होकर मंगल आरती उतारी। यहाँ भी ''कनोड़िया

भवनस्य'' प्रांगणे ''अहिंसा सम्मेलने'' पूज्यमातुरस्माकं च प्रवचनान्यभवन्। कार्यक्रमे परगनाधिकारी डी.वाई.एस.पी. चागच्छताम्, ते मांसाहारस्य पूर्णरूपेण त्यागमकुरुताम्।

सिधौलीनगरे एकं जैनमन्दिरमस्ति। 1989 वर्षे तत्र अहं ब्रह्मचारिण्यारूपेण इन्द्रध्वजविधानमकारयम्, तदा मन्दिरे द्वे नवे वेदिके निर्मापयितुं योजना गतिशीलाऽऽसीत् किन्तु तयोः विस्तारीकरणे पारस्परिको विवादोऽभवत् अतः इदं कार्यमपूर्णमेवासीत्। पुनः सः विषयः मातुः समीपमानीतः। तदा सा परस्परं विचारविमर्शं कृत्वा शास्त्रीयाधारेण तेषां समाधानमकरोत्, येन तत्र स्थानीयाः सर्वे विवादाः शान्ताः अभवन्। मन्दिरस्य वृद्धिहेतवे मातुः सान्निध्ये शिलान्यासोऽभवत्। अधुना तस्य निर्माणं पूर्णमभवत्। तत्र च समाजस्य विशेषाग्रहेण ब्र. रवीन्द्र कुमारोऽपि जयपुरात् शीघ्रमागत्य तेषां प्रस्तावितः प्रतिमाः समानीय समाजाय प्रादात्। इदानीं तु तासां पंचकल्याणकप्रतिष्ठापि संवृत्ता।

महमूदाबादनगरे मातामहगृहरीत्या स्वागतम्–**जन्मनः सम्बन्धेन महमूदाबादनगरं पूज्यमातुरस्माकं च मातामह गृहमस्ति। अस्माकं मातुः मोहिनीदेव्याः पिता श्री सुखपाल जैनोऽस्य स्थानस्य बहुमतः पण्डितः प्रसिद्धः आसीत्। संयोगोऽपि कीदृशोऽभवत् यत् पितामहो मातुलश्च स्व भगिनीपुत्र्याः दर्शनाय पीड़ितौ अभवताम् यतः ज्ञानमती माता 1952 वर्षस्य पश्चात् कदापि तत्र नागता, यदा सौभाग्येन तस्या आगमनं अवधप्रान्तेऽभवत् तदा ते सर्वे मातुरागमनस्य पूर्वं स्वर्गलोकमगच्छन्। अस्माकं महमूदाबादगमनात् पूर्वमेव दिनाँके 21.2.1993 दिने एको**

भवन'' के प्रांगण में ''अहिंसा सम्मेलन'' में पूज्य माताजी एवं हम लोगों के प्रवचन हुए। कार्यक्रम में परगनाधिकारी तथा डी.वाई.एस.पी. आए और उन लोगों ने माँसाहार का पूर्णरूपेण त्याग किया।

सिधौली में एक जैन मंदिर है, वहाँ सन् 1989 में मैंने ब्रह्मचारिणी अवस्था में इन्द्रध्वज विधान करवाया था, उस समय से मंदिर में दो नई वेदियाँ बनाने की योजना चल रही थी किन्तु उसके विस्तारीकरण में आपसी विवाद हो गया था अतः वह कार्य अधूरा पड़ा था। पुनः वह विषय पूज्य माताजी के समक्ष आया, तब उन्होंने आपस में विचार-विमर्श करके शास्त्रीय आधार से उनका समाधान दिया, जिससे वहाँ के सारे विवाद समाप्त हो गए और मंदिर को बढ़ाने हेतु शिलान्यास माताजी के सानिध्य में हुआ, अब उसका निर्माण पूर्ण हो चुका है। वहाँ की समाज के विशेष आग्रह पर ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्रकुमार जी ने जयपुर से उनकी प्रस्तावित मूर्तियाँ भी शीघ्र बनवाकर समाज को दे दीं। उनकी अब पंचकल्याणक भी हो चुकी है।

➢महमूदाबाद में ननिहाल तरीके का स्वागत–

जन्म के रिश्ते से महमूदाबाद पूज्य माताजी एवं हमारा ननिहाल है। हमारी माँ मोहिनीजी के पिता श्री सुखपालदास जैन यहाँ के जाने माने पंडित कहे जाते थे। संयोग भी कैसा बना कि नाना-मामा अपनी नातिन और भानजी के दर्शन को भी तरस गए क्योंकि ज्ञानमती माताजी सन् 1952 के बाद कभी यहाँ आई ही नहीं थीं। अब जब सौभाग्य से उनका आगमन अवध में हुआ, तब वे सभी संसार से चले गए हैं। हम लोगों के महमूदाबाद पहुँचने से पूर्व 21 फरवरी 1993 को एक

मातुलो यस्य नाम भगवानदासः आसीत् सः अपि मातुरागमनस्य प्रसन्नताः हृदये निधायैव स्वर्गलोकं गतः।

अस्तु! एतैः सम्बंधिभिः सह मातुर्न किमपि प्रयोजनं? यद्येतान् प्रति अस्याः हृदये किञ्चिन्मात्रमपि स्नेहः स्यात्तु, किं चत्वारिंशत् वर्षेसु सा कदापि स्व जन्मक्षेत्रे गन्तुं विचारं नाकरोत्? इदं पृथिव्याः सौभाग्यमेव मंतव्यं यदयोध्यायाः भगवतः ऋषभदेवस्य दर्शनस्य निमित्तात् पूज्यामाता अवधप्रान्तमागच्छत् लघुनगरेभ्यश्च तस्याः शुभागमनस्य लाभः प्राप्तः।

अस्यामेव शृंखलायां महमूदाबाद नगरस्यापि सौभाग्यमासीत्। 20.4.1993 दिने नगरस्य प्रत्येकप्रतोली स्वपुत्र्याः प्रतीक्षायां प्रचुराणि पुष्पाणि विकीर्णानि कर्तुमातुरासीत्। यथैव संघस्य पदार्पणं नगरेऽभूत् यत् एककिलोमीटर दूरादेव श्रद्धालुभक्ताः बैण्डवादनेः संगीतमण्डलीभिश्च सह मातुः स्वागतं कर्तुं प्राप्ताः, कस्मिंश्चिद् विवाहेऽपि स्यात् एतावत्य प्रसन्नताः नायोजिताः। एतावती पुष्पवृष्टिः महमूदाबादनगरेऽभवत् पूर्णो हट्टः गुलाबपुष्पैः आच्छादितोऽभवत्।

नगरस्य राजाऽपि स्वागतार्थमागच्छत्। अत्र प्रायः अष्टदिनेषु वास्तव्यमभवत्। अस्यैव मध्ये चरित्रनिर्माणस्य संगोष्ठी सम्पन्नाऽभवत। अक्षयतृतीया पर्व चायोजितम् मातुश्च सार्वजनिकप्रवचनैः सम्पूर्णनगरस्य जनता लाभान्विता जाता।

अत्र समायोजितायामहिंसा संगोष्ठ्यां अहमदाबादनिवासी डॉ. श्री शेखरो जैनस्य,

---

मामा, जिनका नाम "भगवानदास" था, वे भी माताजी के आगमन की खुशियों को हृदय में रखकर ही स्वर्ग चले गये।

खैर! इन संबंधियों से अब माताजी को क्या लेना देना? यदि इनके प्रति इन्हें जरा भी स्नेह होता, तो क्या 40 वर्षों में कभी अपने जन्म क्षेत्र में जाने का विचार न बनातीं? यह तो धरती का सौभाग्य ही कहना होगा कि अयोध्या के भगवान् ऋषभदेव के दर्शन के निमित्त से पूज्य माताजी अवध में पधारीं और छोटे-छोटे नगरों को भी उनके पदार्पण का लाभ प्राप्त हुआ।

इसी शृंखला में महमूदाबाद का भी नम्बर आया था। 20 अप्रैल 1993 को नगर की हर गली अपनी बेटी की इन्तजारी में ढेरों पुष्प बरसाने को आतुर थी। ज्यों ही संघ का पदार्पण नगर में हुआ कि एक किमी. दूर से ही श्रद्धालुभक्त बैन्ड बाजे, संगीत मंडली आदि के साथ पूज्य श्री का स्वागत करने पहुँच गए। किसी विवाह में भी शायद ऐसी खुशियाँ नहीं मनाई गई होंगी, जो 20 अप्रैल को सब ने सामूहिक रूप से मनाई थी। इतनी पुष्पवृष्टि महमूदाबाद में हुई कि पूरा बाजार गुलाब के फूलों से पट गया था।

नगर के राजा साहब भी स्वागत करने आए। यहाँ लगभग 8 दिन वास्तव्य रहा, इसी मध्य चारित्र निर्माण संगोष्ठी हुई। अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया तथा माताजी के सार्वजनिक प्रवचनों से पूरे नगर की जनता ने लाभ प्राप्त किया।

यहाँ आयोजित अहिंसा संगोष्ठी में डा. शेखर जैन, अहमदाबाद एवं प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश

प्राचार्यनरेन्द्रप्रकाशो जैनस्य प्रवचनैः जनता लाभान्विताऽभवत्। द्वयोश्च विदुषोः स्वागतमभूत्।

आहारचर्यायाः विहंगमं दृश्यम्–**एषु नगरेषु 15–20 आहारस्थानानि संयुज्य यदा जनाः स्वगृहाणां पुरतः द्वारापेक्षणं कर्तुमवस्थिताः अभवन् तु सत्यमेव चतुर्थकाल इव दृश्यमुपातिष्ठत्। प्रत्येकश्रावकः ज्ञानमती मातरं विभिन्नप्रकाराणां विधीन् संयोज्य प्रतिग्रहणं कृत्वा याचकदृष्ट्या तां प्रति अपश्यत् नेत्राभ्यां चाकथयत्** ''हे मातः! मम गृहमागच्छतु'' **किन्तु आहारसमये साधुः न श्रेष्ठिनं न धनवन्तं पश्यति, न तेभ्यः स्वर्णमुद्राः रोचन्ते न फलानां राशिः। यत्र मातुर्विधिरभूत् सः स्वभाग्यस्य प्रशंसामकरोत्। आहारचर्यायाः समये शतशो जनाः अस्याः पृष्ठे चाधावन् यतः सम्पूर्णनगरे कौतुकमिदं दृष्टुमुत्साहितमभवत्। आहारस्यैतान् प्रसंगान् दृष्ट्वा मर्यादापुरुषोत्तमस्य आहारचर्या स्मृतिपथि आगच्छत्।**

लघुग्रामेषु महत्स्वागतमभूत्–**पैतेपुरबेलहराआदिग्रामवासिनोऽपि संघस्य हृदयं पूरयित्वा स्वागतमकुर्वन्। एक किलोमीटर दूरादेव शोभायात्रा, मातुरुपरि च मण्डपानि तोरणद्वाराणि च क्षेत्रे सुसज्जितान्यभवन्। मंगलप्रवचनानि च संघपते स्वागतं चैतेषु स्थानेषु स्मरणयोग्यमेवाभवत्।**

प्रथम मस्तकाभिषेकस्य इतिहासस्य श्रीगणेशः फतेहपुरनगरात्–**फतेहपुरनगरस्य अध्यक्षः सरोजकुमारो जैनः हस्तिनापुरादारभ्य सम्पूर्णे मार्गे निरन्तरमागमनमकरोत्। छोटीशाहं च**

जैन, फिरोजाबाद के प्रवचनों से जनता लाभान्वित हुई एवं दोनों विद्वानों का स्वागत हुआ।

➢आहारचर्या का विहंगम दृश्य–

इन नगरों में 15-20 चौके लगाकर जब लोग अपने-अपने घरों के आगे द्वारापेक्षण करने खड़े होते थे तो सचमुच चतुर्थकाल जैसा दृश्य उपस्थित होता था। हर श्रावक ज्ञानमती माताजी को तरह-तरह की विधि बनाकर पड़गाता और याचक दृष्टि से उनकी ओर देखकर मानों आँखों से कहता था कि **''हे माताजी! बस मेरे घर में आ जाओ।''** किन्तु साधु को आहार के समय न सेठ चाहिए न साहूकार, उन्हें न सोने की मुहरें चाहिए न अनेक फलों का ढेर। बस, जिसके यहाँ माताजी की विधि मिल गई, वही अपना भाग्य सराहने लगा। आहारचर्या के समय सैकड़ों व्यक्ति आगे-पीछे भागते थे क्योंकि पूरा नगर इस कौतुक को देखने के लिए उमड़ पड़ता था। आहार के इन प्रसंगों पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम की आहारचर्या का वर्णन अवश्य याद आता था।

➢छोटे-छोटे गाँवों में भी बड़ा स्वागत हुआ–

पैतेपुर और बेलहरा इन छोटे गाँव वालों ने भी संघ का जी भर कर स्वागत किया। 1 किमी. दूर से ही शाही जुलूस, पूज्य माताजी के ऊपर चंदोवा, नगर भर में तोरणद्वार आदि सजाए गए थे। सार्वजनिक सभाओं में मंगल प्रवचन, संघपति महोदय का भावभीना स्वागत इन सब कार्यों ने छोटे नगरों का नाम भी इतिहास में जोड़ दिया।

➢प्रथम मस्तकाभिषेक इतिहास का श्रीगणेश फतेहपुर से–

तहसील फतेहपुर की जैन समाज के अध्यक्ष सरोज कुमार जैन हस्तिनापुर से लेकर पूरे रास्ते बराबर आते रहे और छोटी शाह से मार्ग संबंधी व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करते रहे। इनके साथ

मार्गव्यवस्थायाः सम्बन्धिनीं जिज्ञासा अस्मैभासीत्। तेन सहानेकजनाः स्वनगरेषु पदार्पणस्य वार्तामकुर्वन्। पर्याप्तप्रतीक्षानन्तरं मातुः पदार्पणं 29 अप्रैल दिने फतेहपुर नगरेऽभूत। 3 किलोमीटर दूरादेव विशालायाः शोभायात्रायाः मध्ये पुष्पवृष्टेराकर्षकं दृश्यमासीत्। सर्वत्रैव स्वविभूतिं प्रति असीमवात्सल्यमासीत्।

2 मई 1993 दिने फतेहपुरे श्रावकसम्मेलनमयोध्यातीर्थविकास समितेः सभा पूर्वनियोजितौ आस्ताम्। सरोजकुमारस्तस्य सहयोगिनश्च रात्रौ जागरणं कृत्वा मण्डपं मंचं च सुन्दररीत्या सुसज्जितमकुर्वन्। अतिथीनां च हृदयं पूर्णीकृत्य स्वागतमकुर्वन्।

अयोध्यायाः विचारसभा सुमेरचन्दपाटनी महोदयस्याध्यक्षताया सम्पन्नाभवत्। तस्यामेव माता सर्वेषां समक्षं अयोध्यायां भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेक–महोत्सवस्य योजनां वर्णयन्ती महोत्सवसमितेर्घोषणामकरोत्। सा स्वमुखेनैव महोत्सवसमितेरध्यक्षरूपेण श्रीनिर्मल–कुमारसेठीं घोषितमकरोत् मंत्रिरूपेण श्री रवीन्द्रकुमारमघोषयत्, यौ सर्वैः प्रसन्नतापूर्वकं गुरोराज्ञारूपेण स्वीकृतौ। अनेनैव प्रकारेण समितेः कोषाध्यक्षः श्री छोटीशाहमहोदयो निर्वाचितः। कलशवितरणसमितेश्चाध्यक्षः सुमेरचन्द्रपाटनी नियुक्तोऽभवत्। महोत्सवस्य प्रचारप्रसारयोः कार्यक्रम प्रारम्भोऽभूत्।

फतेहपुरनगरे आर्यिकासंघस्य प्रवासो दिनचतुष्टयमेवासीत् किन्तु तेषां मध्ये एवं

में वहाँ के अनेक महानुभाव अहिच्छत्र से ही अपने नगर पदार्पण की बात करने लगे थे। काफी इंतजार के बाद 29 अप्रैल को पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल पदार्पण फतेहपुर में हुआ। 3 किमी. दूर से ही विशाल जुलूस के मध्य पुष्पवृष्टि का आकर्षक दृश्य था। स्वागत बैनर, अनगिनत तोरण, जगह-जगह दूध से चरण प्रक्षालन, मंगल आरती तथा जन-जन की आँखों में स्नेह अश्रु अपनी विभूति के प्रति असीम वात्सल्य के प्रतीक थे।

2 मई 1993 को फतेहपुर में श्रावक सम्मेलन एवं अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी की बैठक का कार्यक्रम पूर्वसुनियोजित था। सरोजकुमार जी एवं उनके सहयोगियों ने रात भर जागरण करके पांडाल एवं मंच को सुन्दर ढंग से सुसज्जित किया और आगत अतिथियों का जी भरकर स्वागत किया।

अयोध्या की बैठक श्री सुमेरचन्द पाटनी की अध्यक्षता में हुई। उसी में पूज्य माताजी ने सबके समक्ष अयोध्या में भगवान ऋषभदेव के महामस्तकाभिषेक महोत्सव की योजना बताते हुए एक महोत्सव समिति की घोषणा की। उन्होंने अपने श्रीमुख से ही महोत्सव समिति के अध्यक्ष के रूप में निर्मल कुमार जैन सेठी एवं महामंत्री के पद हेतु कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी का नाम घोषित किया, जिसको सभी ने प्रसन्नतापूर्वक गुरु आज्ञा रूप में स्वीकार किया। इसी प्रकार समिति के कोषाध्यक्ष छोटीशाह चुने गए एवं कलश आवंटन के अध्यक्ष सुमेरचन्द पाटनी बनाए गए और महोत्सव के प्रचार का कार्य यहीं से प्रारंभ हुआ।

फतेहपुर में मात्र 4 दिन आर्यिका संघ का प्रवास रहा किन्तु उसी मध्य अनेक निर्माणात्मक,

निर्माणात्मकशैक्षणिकसांस्कृतिककार्यक्रमाणां लाभं जैनअजैना सर्वे प्राप्नुवन्। पूज्यामातुः ''गणिनीपद–प्रतिष्ठापनामहोत्सवोऽपि'' 2 मई दिनेऽत्रैवायोजितः, यस्मिन्नेकाशोभायात्राऽऽयोजिता मातुहस्तयोश्चैकं अभिवन्दनपत्रं समर्पितम्, संघपतिः छोटीशाहोऽपि सम्मानपत्रेण सम्मानितोऽभूत्।

अतिशयक्षेत्रत्रिलोकपुरस्य दर्शनम्–**द्वाविंशतितमतीर्थंकरस्य नेमिनाथस्यातिशयैः पवित्रायां त्रिलोकपुर नगर्यां आर्यिकासंघस्य शुभागमनं 4 मई 1993 दिनेऽभवत्। अस्य क्षेत्रस्य कर्मठः कार्यकर्ता पदमचन्द्रो जैनः पूज्यमातुरनन्यो भक्तोऽस्ति। त्रिलोकपुरस्य कार्यक्रमस्य रचनायामयं महान्तं प्रयत्नमकरोत्, तदैवात्र द्विदिनाभ्यां संघस्य सान्निध्यं प्राप्तमभवत्। परिपूर्णातिथ्यस्य सत्कारस्य लाभं पदमचन्द्रः एव प्राप्तवान्। संपूर्णश्च समाजः गुरुवाण्याः आहारदानस्य वैयावृत्तेश्च पुण्यानि प्राप्तमकरोत्। पूज्यामाताप्यस्य क्षेत्रस्यविकासाय पूर्ण–रुचिमदर्शयत्। यस्य फलस्वरूपेण सा पुनः नवम्बर 1994 मासेऽत्र आगच्छत्, कल्पद्रुमविधानस्य भगवतो नेमिनाथस्य महामस्तकाभिषेकस्य च कार्यक्रमौ संघस्य सान्निध्ये संयोजितौ।**

पारिजातकल्पतरोः स्थापना–**भगवतो नेमिनाथस्य चरणसान्निध्ये आगमनात् पूर्वं पूज्यमाता त्रिलोकपुरायैकमुपहारं दातुं मनसि व्यचारयत्। सा अकथयत् यत् भगवतो नेमिनाथस्य समवसरणे चत्वारः सिद्धार्थवृक्षाः आसन्, यत् यस्मिन् चतुर्षु दिक्षु चतस्रः सिद्धप्रतिमाः**

सांस्कृतिक, शैक्षणिक कार्यक्रमों से जैन-अजैन सभी ने अपूर्व लाभ प्राप्त किया। पूज्य माताजी का **''गणिनी पद प्रतिष्ठापना समारोह''** भी 2 मई को यहीं मनाया गया जिसमें शोभायात्रा निकाली गई तथा माताजी के करकमलों में एक बृहद् अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया, संघपति छोटीशाह को भी सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

➢अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर के दर्शन–

बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के अतिशयों से पवित्र नगरी त्रिलोकपुर में 4 मई 1993 को आर्यिका संघ का शुभागमन हुआ। यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ता पदमचन्द जैन पूज्य माताजी के अनन्य भक्त हैं। त्रिलोकपुर कार्यक्रम बनवाने में इन्होंने अत्यन्त परिश्रम किया, तब वहाँ दो दिन संघ का सानिध्य प्राप्त हो सका। भरपूर स्वागत एवं आतिथ्य सत्कार का प्रमुख श्रेय पदमचन्द जी को प्राप्त हुआ तथा सारी समाज ने गुरुवाणी, आहारदान, वैयावृत्ति का पुण्य संचित किया। पूज्य माताजी ने इस अतिशय क्षेत्र के विकास में भी पूरी रुचि ली जिसके फलस्वरूप वे वहाँ दुबारा नवम्बर 1994 में गईं और कल्पद्रुम मंडल विधान, भगवान नेमिनाथ का मस्तकाभिषेक आदि कार्यक्रम उनके संघ सानिध्य में सम्पन्न हुए।

➢पारिजात कल्पवृक्ष की स्थापना–

भगवान नेमिनाथ के चरण सानिध्य में पहुँचने से पूर्व पूज्य माताजी ने त्रिलोकपुर को एक नई भेंट प्रदान करने का शुभ भाव बनाया था। उन्होंने बताया कि भगवान नेमिनाथ के समवसरण में चार सिद्धार्थ वृक्ष होते हैं जिसमें चारों दिशाओं में चार सिद्ध प्रतिमाएँ रहती हैं।

भवन्ति। तासां च नामानि नमेरु, मन्दार, सन्तानक, पारिजाताश्च सन्ति। ताभ्यः ''पारिजातकल्प–वृक्षस्य'' **स्थापनायाः निश्चयं यदा सा विधानस्य मध्ये प्रकटितमकरोत्, तदैव तत्कालं दानदातारः प्रस्तुताः अभवन्। अधुना सः कल्पवृक्षोऽपि प्रस्तुतोऽस्ति, चतसृभिः सिद्धप्रतिमाभिः समन्वितः सिद्धार्थवृक्षस्त्रिलोकपुरवासिभ्योः भक्तेभ्यः आकर्षणकेन्द्रोऽभवत्।**

इयमेकस्य सुखदसंयोगस्य वार्ता विद्यते यत् त्रिलोकपुरस्य समीपे एव ''बरोलिया'' नामकग्रामे पारिजातनामको वानस्पतिको वृक्षोऽप्यस्ति। यस्य विषये किंवदन्ती प्रचलितास्ति यत् पाण्डवाः वृक्षं स्वर्गात् नीचैः आनयन्। दूरवर्तिनः जनाः एनं वृक्षं दृष्टुमायान्ति यतः एशिया मध्ये केवलमेकस्मिन् स्थाने ''बरोलिया'' ग्रामे एव वृक्षः उपलभ्यते।

जन्मभूमेः रोमांचकमिलनम्–**माता कौशल्येव विरहाग्नौ दह्यमानायां टिकैतनगरजन्म–भूम्यामद्य स्व पूर्णिमाचन्द्रमसः दर्शनं भवितुमस्ति। अस्यामेव प्रसन्नतायां नव मई 1993 दिने नगरस्य प्रतिकणं नृत्यमिवाकरोत्। प्रत्येकगृहस्य द्वारे मंगलचत्वराणि पूरितान्यासन्। संघपतिः छोटीशाहस्त्वद्य प्रसन्नतायां न समायाति स्म, यतस्तस्य परिश्रमोऽद्य सफलो भूत्वा पुरतः प्रकटितोऽभवत्।**

टिकैतनगरे नगरसीमाप्रतीकानि मुख्यानि चत्वारि द्वाराणि निर्मितानि सन्ति, तानि चत्वारि प्राचीनसीमासूचकानि सन्ति। तत्र तु चत्वारि द्वाराणिपर्यन्त विशालशोभायात्रया चतुर्दिक्षु पुरातन परिधेः माता संघेन सह भ्रामिता। यदा प्रभृति अवधे संघस्य भ्रमणप्रारब्धं, प्रत्येक

उनके नाम हैं– नमेरु, मंदार, सन्तानक और पारिजात। इनमें से एक **''पारिजात कल्पवृक्ष''** की स्थापना त्रिलोकपुर में करने का संकल्प ज्यों ही उन्होंने त्रिलोकपुर में विधान के मध्य प्रगट किया, तत्क्षण दानदातार तैयार हो गये। अब वह कल्पवृक्ष भी तैयार हो चुका है और चार सिद्ध प्रतिमाओं से समन्वित सिद्धार्थ वृक्ष त्रिलोकपुर में भक्तों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

यह एक सुखद संयोग की बात है कि त्रिलोकपुर के पास ''बरोलिया'' नामक एक गांव में पारिजात नाम का वनस्पतिकायिक वृक्ष भी है जिसके बारे में किंवदन्ती चली आ रही है कि पांडव उसे स्वर्ग से लेकर आए थे। उसे देखने के लिए भी दूर-दूर से लोग जाते हैं क्योंकि एशिया में केवल एक स्थान ''बरोलिया'' में ही यह वृक्ष पाया गया है।

➢जन्मभूमि का रोमाँचक मिलन–

माता कौशल्या की भाँति विरह की अग्नि में जल रही टिकैतनगर जन्मभूमि को आज अपने पूनों के चाँद का दर्शन होने वाला है। इस खुशी में 9 मई 1993 को नगर का कण-कण झूम रहा था। हर घर के द्वार पर मंगल चौक पूरे गए थे। संघपति छोटीशाह तो आज फूले नहीं समा रहे थे क्योंकि उनका परिश्रम आज फलीभूत होकर सामने आया था।

टिकैतनगर में नगर सीमा के प्रतीक मुख्य चार फाटक बने हैं, वे चारों दिशाओं में पुरानी किलाबन्दी के सूचक हैं। उन चारों फाटकों तक विशाल जुलूस के साथ माताजी एवं संघ को घुमाया गया। जब से अवध में संघ का भ्रमण प्रारंभ हुआ था, प्रत्येक गाँव के लोग स्वागत करने के बाद

नगरवासिनः स्वागताचारस्य पश्चात् इदमेवाकथयन् यत् वयं तु किंचिदपि कर्तुं न शक्नुमः टिकैतनगरस्य प्रवेशो दर्शनीयो भविष्यति। श्रुत्वा–श्रुत्वा वयमपि चिन्तनमकुर्वम् यत् एते जनाः न जानन्ति किमर्थं ईदृशं चिन्तयन्ति। किन्तु यदा जन्मभूमेमृदः स्पर्शो जातः तदा तु अचिन्तयाम अस्मात् कतिचिद् गुणाधिका नगर्याः सज्जा, प्रदर्शनपटाः, तोरणद्वाराणि तु स्वागतस्य दृश्यमुपस्थितमेवाकुर्वन्, तेन सहैव ''अमरउद्योगात्'' प्रारब्धायां शोभायात्रायां 40 मोटर– साईकिलवाहनेषु केसरवर्णस्य ध्वजान् गृहीत्वा 40 युवानः, 40 महिलाः मंगलकलशान् गृहीत्वा अग्रे गच्छन्ति। पृथिव्यां जनसमूहेन सहैव गृहाणां पटलानि अपि नरनारीभिः पूरितान्यासन्। यतो हि सर्वे स्वविश्वविख्यातां विभूतिं दृष्टुं असन्तोषेण सह प्रतीक्षारताः आसन्। हर्षाश्रूणि च नगरवासिनां चक्षुषु न समाविष्टान्यासन् अतएव उत्प्लुत्य बहिरागन्तुमातुराण्यासन्।

हट्टस्य एकस्मिन् विशाले मण्डपे प्रवचनसभाऽऽयोजितासीत्। उत्तरप्रदेशस्य पूर्वमुख्यमंत्री कल्याणसिंहः समागत्य मातुश्चरणयोर्विनयांजलिं प्रादात् विशालं च जनसमूहं सम्बोधितमकरोत्। रामस्य अयोध्यागमनमिव इदं दृश्यं सर्वानेव भावविह्वलानकरोत्।

मातृभूमेरश्रूणि लेखनी लिखितुं न समर्था?–**तदेकमद्भुतमुष्णंवातावरणमासीत्, यदा टिकैतनगरे 26 मई 1993 दिने अयं निर्णयोभवितुं प्रस्तुतः आसीत् यत् पूज्यमातुश्च–तुर्मासोऽपि कस्मिन् स्थाने भवतु? टिकैतनगरस्य जनता अन्यस्थानेभ्यः निवेदनं कर्तुं समागतान् जनान् दृष्ट्वा–दृष्ट्वा आशान्ता आसीत्, ते भयभीताः आसन् यत् कोऽप्यन्यः**

यही कहते थे कि हम तो कुछ भी नहीं कर सकते हैं, टिकैतनगर का प्रवेश देखने लायक रहेगा। सुन-सुनकर हम भी सोचते थे कि ये जाने क्यों ऐसा सोच रहे हैं? किन्तु जब जन्मभूमि की माटी का स्पर्श हुआ तो देखा, इससे भी कई गुना अधिक नगरी की सजावट, बैनर, तोरणद्वार तो स्वागत का दृश्य उपस्थित कर ही रहे थे, उसके साथ ही ''अमर उद्योग'' से प्रारंभ हुए जुलूस में 40 मोटर साइकिलों पर केशरिया झण्डा लिए हुए नौजवान, 40 महिलाएँ मंगल कलश लिए हुए आगे चल रही थीं। धरती की भीड़ के साथ-साथ मकानों की छतें भी नर-नारियों से भरी हुई थीं क्योंकि सभी अपनी विश्वविख्यात विभूति को देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। हर्ष के अश्रु नगरवासियों की आँखों में समा नहीं रहे थे अतः छलककर बाहर आने को आतुर थे।

बाजार के एक विशाल पांडाल में मंगल प्रवेश की प्रवचन सभा हुई। उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह ने पधारकर पूज्य माताजी के चरणों में विनयांजलि अर्पित की तथा अपार भीड़ को सम्बोधित किया। राम के अयोध्या आगमन के समान ही इस दृश्य ने हर किसी को भाव विह्वल कर दिया था।

➢नहीं लेखनी लिख सकती है मातृभूमि के आँसू को–

वह एक अजीब गर्मागरम माहौल था, जब टिकैतनगर में 26 मई 1993 को यह निर्णय होने वाला था कि पूज्य माताजी के संघ का प्रथम चातुर्मास अवध के किस नगर में होगा? टिकैतनगर की जनता अन्य स्थानों से निवेदन करने आने वालों को देख-देखकर बेचैन थी, उन्हें डर था कि

अस्माकं मातरं अस्मत् नापहरेत्। विविधगीतभजनानां माध्यमेन सर्वे अनशनस्य प्रदर्शनस्य च रोषवचनान्यपि प्रकटितान्यकुर्वन्। 26 तिथिदिने सर्वे स्वभाग्यस्य निर्णयं श्रोतुमुत्सुकतया प्रतीक्षारताः आसन्। सर्वे निर्णयं श्रोतुं तत्रैवातिष्ठन् यत् यावत् वयं मातुश्चतुर्मासस्य निर्णयं न श्रोष्यामः, तावत् प्रभृति जलमपि न गृहीष्यामः इति केचिज्जनास्तु मनोभावनाः अकुर्वन्, बालक–बालिकाः युवानः सर्वे स्वप्रार्थनांपूर्णां कर्तुं प्रदर्शनार्थं हस्तपत्राणि प्रदर्शन–साधनानि च गृहीत्वावस्थितः आसन्, जलस्यान्नस्योपभोगं न कृत्वा मातुर्भवनस्य बहिः दिल्लीस्थलस्य वोट क्लबसदृश दृश्यमुपस्थितमकुर्वन्।

अहं स्वयं न जानामि यत् तानि कोमलानि क्षणान्यहं स्वलेखन्या केन प्रकारेण प्रकटीकरवाणि? यदा आत्मघातस्य वार्तापि कर्णयोरागताऽभूत्। टिकैतनगरस्य चौक हट्टः तस्मिन् भीषणे ग्रीष्मकालेऽपि जनसमूहेन पूर्णं व्याप्तमासीत्। नरनारीणां, बालकबालिकानां, युवकानां च सर्वेषां ओजोयुक्तानि मुखानि दृष्ट्वा वयमपि अनिर्णयस्य स्थितौ पतिता आस्म। तस्याः स्थितेः कश्चिदंशः वीडीओ कैसेट इत्यनेन तस्य स्थानस्य प्रत्यक्षदर्शिभिः एव वक्तुं शक्यो भवेत्। मम श्रोत्रयोस्तु अद्यापि तत्र गीतानां भजनानां पंक्तयो गुंजायमानाः सन्ति।

केषांचित् जनानां तु नेत्राणि रोदनं कुर्वन्त–कुर्वन्त स्थूलान्यासन्। प्रकोष्ठाद् बहिः प्रदर्शनार्थमुपस्थितान् युवकान् यदा ब्र. रवीन्द्रः किञ्चिदवबोधायितुं चेष्टामकरोत्, तदा जनास्तमुत्संगे उत्थायैकस्मिन् प्रकोष्ठेबद्धमकुर्वन्। ईदृशीं विचित्रां स्थितिं तु माताऽपि कदापि न दृष्टवती। अस्तु!

कहीं कोई हमारी माताजी को अब हमसे छीन न ले। अनेक गीत, भजनों के माध्यम से सबने अनशन धरने की भक्तिभरी धमकियाँ भी दे डाली थीं। 26 ता.को भाग्य परीक्षण का सभी को बेसब्री से इंतजार था। कोई उस दिन मंदिर में नियम लेकर बैठ गए थे कि जब तक यहाँ के चातुर्मास का निर्णय नहीं सुन लेंगे, तब तक अन्न-जल नहीं ग्रहण करेंगे, कितनों ने मनौतियाँ मान रखी थीं, कितने बाल-युवा दिलों ने माताजी के भवन के बाहर वोट क्लब का दृश्य उपस्थित कर तरह-तरह के पोस्टर, पेम्पलेट, नारे आदि अपनी माँग पूरी करने में लगाए थे।

मुझे स्वयं समझ नहीं आता है कि उन नाजुक क्षणों को मैं अपनी लेखनी से किस प्रकार लिखूँ? जब आत्मदाह तक की बात कानों में आ चुकी थी। टिकैतनगर का चौक बाजार उस भीषण गर्मी में भी जनसमूह से खचाखच भरा था। नर-नारियों, बालक-बालिकाओं, युवकों सबके जोशीले चेहरे देखकर हम सब भी असमंजस में पड़े थे। उस स्थिति का कुछ अंश वीडियो कैसेट से अथवा प्रत्यक्षदर्शियों से ही ज्ञात हो सकता है। मेरे कानों में तो आज भी वहाँ के 1-2 भजनों की पंक्तियाँ टकराती रहती हैं। जैसे–

''मेरी नगरी में चौमास, होगा ही होगा''.....।

''श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी को, मैं तो आज मनाय लूँगी।''

कितने लोगों की तो आँखें रोते-रोते सूज गई थीं। कमरे के बाहर धरना दिये हुए युवकों को जब ब्र. रवीन्द्र जी ने कुछ समझाने की कोशिश की, तो लोगों ने उन्हें गोद में उठाकर एक कमरे में बंद कर दिया। ऐसी विचित्र स्थिति पूज्य माताजी ने भी इससे पूर्व कभी नहीं देखी थी। खैर!

पर्याप्तोत्साहमये वातावरणे टिकैतनगरस्य चतुर्मासस्य घोषणा नवतिनव प्रतिशतं पूज्यमातुर्मुखारविन्देनाऽभूत्। नगरे च चतुर्दिक्षु दीपावलीवत् प्रसन्नता दृष्टिगोचरा अभवत्। फतेहपुर, बाराबंकी निवासिनां हृदयेषु तस्मिन् दिने चतुर्मासस्य स्वीकृतिं प्राप्तिं विना यद् दुःखमभूत तदपि लेखन्या वर्णयितुं न शक्यते।

अयोध्याविहारस्य भूमिका–**चतुर्मासस्य स्वीकृतिं प्राप्य नगरी आश्वस्ताऽऽसीत्। इदानीं तु आसाढ शुक्ल चतुर्दश्याः आगमने प्रायः चत्वारिंशद् दिनानि शेषाण्यासन्। 29 मई दिनात् 4 जून दिनपर्यन्तं लघुपंचकल्याणकमायोजितमभूत्। तस्यैव मध्ये लखनऊनगरात् एकस्मिन् दिने श्री सुमेरचन्द्रः पाटनी पूज्य मातुदर्शनार्थमागच्छत्। सः तदानीमयोध्या–तीर्थक्षेत्रसमितेरध्यक्षः आसीत् अतः स्वानुभवस्याधारेण अयोध्यातीर्थस्य दुर्दशायाः वर्णनं कर्तुं प्रारभत्–मातः! मम निवेदनमस्ति यत् भवती केचिद्भ्यो वर्षेभ्यः ब्र. रवीन्द्रमयोध्या–तीर्थस्य अध्यक्षं निर्वाचितं करोतु। तत्र च विकासं, जीर्णोद्धारं कारयितुम्, यमेव भवत्याः परमोपकारो भविष्यति। पूज्या माता तस्मै सांत्वनां प्रादात्। सः अयोध्या विकासे अन्यसमितिविषयेषु चर्चामकरोत्।**

पारस्परिकविचारविमर्शस्य पश्चाच्च ब्र. रवीन्द्रः प्रस्ताव प्रस्तुतवान्–मातः! अयोध्यायां यस्य त्रि–चतुर्विंशतिमन्दिरस्य निर्माणं भविष्यति, यदि तस्य मन्दिरस्य शिलान्यासः भवत्याः सान्निध्ये उचितं स्थानं वीक्ष्य भवतु, तु उत्तमं भविष्यति। अन्ततः चतुर्मासस्यापूर्वमयोध्यायाः विहारो निर्णीतोऽभवत्। जूनमासस्य अष्टम दिनांके च टिकैतनगरात् अयोध्यातीर्थं प्रति

काफी जोशीले वातावरण में टिकैतनगर चातुर्मास की 99 प्रतिशत स्वीकृति की घोषणा पूज्य गणिनी आर्यिका श्री के मुखारविन्द से हो गई और नगर में चारों ओर दीवाली जैसी खुशियाँ मनाई जाने लगीं। फतेहपुर, बाराबंकी आदि स्थानों के महानुभावों को उस दिन अपने नगरों में चातुर्मास की स्वीकृति न मिलने के कारण जो दुःख हुआ, उसे भी मेरी लेखनी लिखने में असमर्थ है।

➢अयोध्या विहार की भूमिका–

चातुर्मास की स्वीकृति पाकर नगरी आश्वस्त थी। अभी आषाढ़ सुदी चतुर्दशी आने में लगभग 40 दिन शेष थे। 29 मई से 4 जून तक लघु पंचकल्याणक का आयोजन हुआ। इसी के बीच एक दिन 3 जून को लखनऊ से सुमेरचन्द पाटनी पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आए। वे चूँकि उन दिनों अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष थे अतः अपने अनुभव के आधार पर अयोध्या की दुर्दशा का बखान करते हुए कहने लगे–माताजी! मेरा निवेदन है कि आप ब्र. रवीन्द्र जी को कुछ वर्षों के लिए अयोध्या का अध्यक्ष बना दें और वहाँ का विकास, जीर्णोद्धार करवा दें, यह आपका परम उपकार होगा। पूज्य माताजी ने उन्हें सांत्वना प्रदान की तथा अयोध्या की विकासशील गतिविधियों पर चर्चा की।

आपसी विचार के बाद ब्र. रवीन्द्रजी ने प्रस्ताव रखा कि माताजी! अयोध्या में जिस तीन चौबीसी मंदिर का निर्माण होगा, उसका शिलान्यास यदि आपके सानिध्य में उचित स्थान देखकर हो जावे तो उत्तम रहेगा। आखिरकार चातुर्मास से पूर्व अयोध्या का विहार निर्णीत हो गया और

संघस्य विहारोऽभवत्। 16 जून दिने च मातुः स्वध्यानस्यकेन्द्रं आदिप्रभोश्चरणयोः अयोध्यायामगच्छत्।

अश्रूण्यपि तीर्थाय उपहाराः अभवन्–**भवन्तः विचारयन्ति यत् अश्रूणि तीर्थाय उपहाराः कथं भवितुमर्हन्ति? रोदनं तु प्रायोऽशुभमेव मन्यते परन्तु भवतां ज्ञानमत्याश्चाश्रुष्वन्तरमस्ति, भवन्तस्तु सांसारिकभोगोपभोगवस्तुभ्योऽश्रूणि प्रवाहयन्ति, यदा तु ज्ञानमत्याः मातु अश्रूणि तीर्थस्य दुर्दशां वीक्ष्यानायासमेव नेत्रेभ्यो निर्गतान्यभवन्। तस्या हृदये एतस्याः वार्तायाः सीमातीतं दुःखमजायत् यदस्माकं प्रथमतीर्थंकरस्य जन्मभूमेरयोध्यातीर्थस्यैषा स्थितिर्विद्यते?**

अयमद्भुतः संयोगोऽस्ति तस्य स्थानस्य स्थितिं दृष्ट्वैव पूज्या माता एकस्य प्रतिशतस्य लाभं प्राप्तुमिच्छया त्रिनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य वर्षस्य चतुर्मासोऽयोध्यायामेव कर्तुं पुष्टनिर्णयमगृह्णात्, चतुर्मासकालेऽस्मिन् च सम्पूर्णोऽवधः पूर्णं लाभं प्राप्नोत्। भाद्रपदे दशलक्षणधर्मपर्वणि एकेन सहैव सप्तेन्द्रध्वजविधानानां अभूतपूर्वः कार्यक्रम सम्पन्नोऽभवत्। पुनः शरत्पूर्णिमायां त्रिनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे अक्टूबरमासस्य त्रिंशत्तमे दिनांके मातुः षष्ठीतमा जन्मजयन्ती आयोजिताऽभूत्।

अयोध्यायां घटिताः साक्षात् चमत्काराः–

(1) भूताः अपि प्रधाविताः– **अनेन प्रकारेण चतुर्मासे कार्यक्रमाणां शृंखलापि गतिशीला आसीत् द्वितीयतश्च मन्दिराणां, प्रकोष्ठानां, चरणपादुकानां जीर्णोद्धारः आदीनि निर्माणकार्याण्यापि तीव्रगत्या चलितान्यासन्। चतुःनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे फरवरी**

---

8 जून को टिकैतनगर से तीर्थ अयोध्या की ओर संघ का विहार हो गया, 16 जून को माताजी अपने ध्यान का केन्द्र आदिप्रभु के चरणों में पहुँच गईं।

➢आँसू भी तीर्थ के लिए उपहार बन गए–

आप सोच रहे होंगे कि भला आँसू उपहार कैसे बन सकते हैं? रोना तो प्रायः अशुभ माना जाता है परन्तु आपके और ज्ञानमती माताजी के आँसुओं में भी अन्तर है, आप तो सांसारिक भोगोपभोग वस्तुओं के लिए आँसू बहाते हैं जबकि ज्ञानमती माताजी के आँसू तीर्थ की दुर्दशा देखकर अनायास ही आँखों से निकल पड़े, उनको इस बात का बेहद दुःख हुआ कि हमारे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि की यह स्थिति है?

इसे अद्भुत संयोग कहें या चमत्कार? वहाँ की स्थिति को देखते ही पूज्य माताजी ने एक प्रतिशत छूट का लाभ उठाते हुए वर्ष 1993 का चातुर्मास अयोध्या में ही करने का पक्का निर्णय ले लिया। इस चातुर्मास काल में सम्पूर्ण अवध ने भरपूर लाभ लिया। भादों में दशलक्षण पर्व में एक साथ 7 इन्द्रध्वज विधानों का अभूतपूर्व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ पुनः शरदपूर्णिमा 30 अक्टूबर 1993 को पूज्य माताजी की 60वीं जन्मजयंती मनाई गई।

➢अयोध्या में हुए साक्षात् चमत्कार–

(1) भूत भी भाग गए–इस प्रकार चातुर्मास में कार्यक्रमों की शृंखला भी चलती रही और इधर मंदिर, कमरे, टोंकों के जीर्णोद्धार आदि का निर्माण कार्य जोरों पर चला। फरवरी 1994 में होने

मासे प्रस्तावितस्य महामस्तकाभिषेकमहोत्सवस्य तत्परता अपि व्यापकस्तरेणाभवत्। सर्वानेतान् कार्यक्रमान् वीक्ष्यायोध्यावासिनश्चकिताः आसन् यत् अत्र का दिव्यशक्तिरयोध्याया– मागता, यतो यस्याः प्रभावेनात्रासीमशान्तेः वातावरणं रचितमस्ति अहिंसायाश्च सूत्रपातोऽयोध्यायां प्रारम्भोऽभवत्।

अनेकमठाधीशाः अकथयन् यत् अयोध्यायाः रायगंज मन्दिरे भूतानां निवासः आसीत्, माता चागत्य तान् भूतान् शान्तानकरोत्। अतएव परिसरोऽयमिदानीं तु स्वर्गवत् प्रतीयते।

(2) वृश्चिकाणामातंकः नष्टोऽभूत–**यदा त्रिनवत्यधिकएकोनविंशतिशततमे वर्षे जूनमासे मातुः संघस्यायोध्यायां पदार्पणमभूत्, तदा रायगंज मन्दिरपरिसरे वृश्चिकानां भयंकरः आतंकः आसीत्, वृश्चिका एकं द्विजनमदशन् अपितु अनेकयात्रिणां चप्पल उपाहतत्सु प्रविष्टाः दृष्टाः अपि। पृथिव्यां कंचुकाः इव भ्रमतः वृश्चिकान् दृष्ट्वा वयमपि भयभीताः आस्म। एकदा माता मंत्रितान् सर्षपान् सर्वदिक्षु क्षेपणमकरोत्, तस्मात् कालात् ते सर्वे कुत्र गताः न ज्ञातमभूत्।**

(3) सर्पो बालिकायाः उदरे आरोहत्–**दशलक्षणधर्मपर्वणोऽन्ते एकस्मिन् दिने सुभाषचन्द्र–टिकैतनगरस्य पुत्री कुमारी सुवर्णा रात्रौ मातुः प्रकोष्ठे सुप्ताऽऽसीत्, रात्रौ एकवादनसमये तस्योदरस्योपरि एको दीर्घः सर्पः आरोहत्। सा हस्तेनास्पृशत् भयभीता च भूत्वा उत्थिता भवत्, अस्मान् जाग्रतानकरोत्। प्रथमं तु वयमचिन्तयाम कश्चित् जन्तुर्भविष्यति, तत्र कोऽपि सर्पो दर्शने न आगतः, पुनः तस्या कट पृष्ठे तत्र कटस्याधः दीर्घः कृष्णः सर्प**

वाले महामस्तकाभिषेक महोत्सव की तैयारियाँ भी व्यापक स्तर पर हुईं। इन सब कार्यकलापों को देखकर अयोध्यावासी आश्चर्यचकित थे कि यह कौन सी दिव्य शक्ति अयोध्या में आ गई है जिसके प्रभाव से यहाँ असीम शान्ति का वातावरण बना है और अहिंसा का सूत्रपात पुनः अयोध्या में हुआ है।

अनेक मठों के महन्त यह कहते कि इस रायगंज मंदिर में भूतों का निवास था, माताजी ने आकर उन भूतों को शांत कर दिया है इसीलिए यह परिसर अब स्वर्ग सा बन गया है।

(2) बिच्छुओं का आतंक टला–जब जून 1993 में पूज्य माताजी के संघ का अयोध्या में पदार्पण हुआ, तब रायगंज मंदिर परिसर में बिच्छुओं का भयंकर आतंक था। एक दो लोगों को बिच्छू ने काटा भी और कई यात्रियों की चप्पलों में, जूतों में घुसे दिखे। केचुओं की भांति जमीन पर घूमते सैकड़ों बिच्छू देखकर हम लोगों को भी डर लगता था। एक दिन माताजी ने मंत्रित सरसों सब दिशाओं में क्षेपण कर दी, फिर कभी बिच्छू के दर्शन नहीं हुए। वे सब कहाँ अन्तर्ध्यान हो गए, भगवान जाने!

(3) सर्प बालिका के पेट पर चढ़ गया–दशलक्षण पर्व के बाद एक दिन (2 अक्टूबर को) सुभाषचन्द जैन टिकैतनगर की पुत्री कु. सुवर्णा रात्रि में माताजी के कमरे में सो रही थी । लगभग 1 बजे रात में उसके पेट पर एक लम्बा सर्प चढ़ गया, उसने हाथ से छुआ और घबराकर उठ बैठी, हम लोगों को जगाया। पहले हमने सोचा कि कोई जन्तु होगा क्योंकि वहाँ कोई सर्प दिख नहीं रहा था। पुनः उसके कहने पर ठीक से देखा गया तो एक चटाई के पीछे लम्बा सा काला सर्प दिखा,

दृष्टोऽभवत्। तं च भृत्यो गृहीत्वा बहिरकुर्वन्। गुरोः कृपया एकस्याः बालिकाया महान् संकटो दूरोऽभूत् सा च गुरोरतिशयं वीक्ष्य अधिकप्रभाविताभवत्।

(4) आकस्मिकस्य विद्युतो व्यजनस्योपद्रवोऽपि दूरीभूतः–**संघस्थैका ब्रह्मचारिणी कुमारी वीणा एकस्मिन् दिने प्रकोष्ठे सुप्तासीत्, तया सहैव तस्या माता कुमुदिन्यप्यासीत्। ते द्वे वायोः व्यजनस्य मध्ये सुप्ते आस्ताम्, अकस्मात् वायुं न्यूनं कर्तुं वीणा नियामकयंत्रस्य समीपमागता, सा नियामकं न्यूनं कर्तुं प्रारभत् यत् प्रकोष्ठपटलात् वायुप्रक्षेपणव्यजनं नीचैरापतत्। पर्याप्तप्राचीनो भारवान् व्यजनमासीत्। पुत्री माता च द्वे एव भयभीते अभवतां, कापि केनापि हानिना युक्ते न अभवतां किन्तु प्रातः कुमुदिनी अकथयत्–मातः! यदि वीणा तदा उत्थिता नाभवत् तु तस्या एवोपरि पक्षस्य पातोऽभवत्, न जानामि का भवितव्यतासीत्। मयोक्तं यत्र माता सदृशी तपस्विनी विद्यंते तत्र कापि शंका न कार्या। इदं तु निश्चितमस्ति यतस्तस्मिन् दिने वीणायाः कश्चित् तीव्रपुण्योदयः समक्षमासीत् यस्तां भयंकरदुर्घटनया रक्षितामकरोत् अन्यथा सा रात्रौ द्विवादनसमये उत्थाय नियामकस्य समीपे कथं गच्छेत्? वायुपक्षात् किंञ्चिदेव दूरे तु नियामकः, तत्र पर्यन्तं बालिकायाः गमनं, पक्षस्य च पतनं सर्वमेव क्षणेष्वभवत्। माता अकथयत् यत् अद्य तव पुनर्जन्माभवत्, अतो भगवतः ऋषभदेवस्य मन्दिरे शान्तिविधानं कुरु। अस्य आकस्मिक संकटस्य समाप्तेः पश्चात् पुनः वीणा स्वप्रकोष्ठे व्यजनं संलग्नं कर्तुमेव न अदात्।**

उसे पकड़कर नौकर ने बाहर किया। गुरु की कृपा से एक बच्ची का बड़ा भारी संकट टला और वह गुरु तपस्या का अतिशय देखकर खूब प्रभावित हुई।

(4) आकस्मिक पंखे का उपद्रव भी टल गया–संघस्थ ब्रह्मचारिणी कु. बीना जैन एक दिन (15 अक्टूबर 1993 को) अयोध्या में त्यागीभवन के ही एक कमरे में सो रही थी, साथ में उसकी मम्मी कुमुदनी भी थीं। कमरे में बीचोंबीच में ठीक पंखे के नीचे दोनों सोई थीं, अकस्मात् बीना हवा कम करने के लिए स्विच बोर्ड के पास रेगूलेटर घुमाने पहुँची ही थी कि छत से पंखा कुंडे सहित जमीन पर धम से गिरा। काफी पुराना बहुत वजनदार पंखा था।माँ-बेटी घबड़ा गईं, किसी को कोई हानि नहीं पहुँची किन्तु सुबह कुमुदनी कहने लगीं कि माताजी! यदि बीना उस समय उठ न गई होती, तो उसी के ऊपर पंखा गिरता और न जाने क्या होता? मैंने कहा कि जहाँ पूज्य माताजी जैसी तपस्वी साधु की छत्र-छाया है, वहाँ कोई अनिष्ट की आशंका मत करो। यह तो निश्चित है कि उस दिन बीना का कोई तीव्र पुण्य सामने आ गया, जिसने उसे भयंकर दुर्घटना से बचा दिया। अन्यथा 2 बजे रात को वह उठकर स्विचबोर्ड तक जाती ही क्यों? पंखे से दो-तीन फुट की दूरी पर तो बोर्ड, वहाँ तक लड़की का जाना और पंखे का गिरना सब कुछ 10-20 सेकेन्डों में हो गया। पूज्य माताजी ने कहा कि आज तुम्हारा पुनर्जन्म हुआ है अतः भगवान ऋषभदेव के मंदिर में शांतिविधान कर लो। इस आकस्मिक संकट के टलने के बाद पुनः बीना ने अपने कमरे में छत का पंखा ही नहीं लगने दिया।

(5) संघपतेः व्यापारे आश्चर्यजनको लाभोऽभवत्– **गुरुभक्तौ कियती शक्तिरस्ति अस्यानुमानं स्यात् कश्चित् कर्तुं न शक्नोति। श्रीगौतमस्वामी आचार्यभक्तौ गुरोर्महत्वस्य वर्णनं कुर्वन् अकथयत्–**''गुरुभक्तेः संयमेन जीवः घोरसंसारसागरं तरति, अष्टकर्माणि छिन्दति जन्ममरणयो दुःखं न प्राप्नोति'' **पुनः गुरुभक्तिविधानेन यदि कोऽपि लाभोभवति तु न कापि महती वार्ता? जून मासस्य अष्टाविंशति दिनाँकस्य वार्तास्ति, संघपतिः छोटीशाह महोदयः आहारस्य पश्चात् मातुः समीपे उपविश्य कथयति यत् मातः! यस्मिन् समये वयं संघमत्रानेतुं व्ययं कृतवन्तः तु अस्मभ्यं बहुलाभोऽभवत्। एतत्सर्वं भवत्या आशीर्वादस्यैव फलमस्ति। वस्तुतो गुरुभक्तौ एतावती शक्तिरस्ति या तत्कालमेव फलति।**

(6) अग्नेः संकटोऽपि निवारितोऽभूत्–**दिनस्यैकस्य वार्ता अस्ति। वयमयोध्यायामुपविष्टा पं. ज्ञानचन्द्रशर्मणा वार्तालापे संलग्नाः आस्म। प्रायस्त्रिवादनस्य समयः आसीत्, अकस्मादेव तारस्वरेणाग्निरग्निरितिध्वनिः श्रुताभवत्। अतः ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यो समाचारं ज्ञातुं गताः तदैतद् ज्ञातं यत् भोजनशालायाः गैससिलैण्डरपात्रे अग्निः संलग्नोऽभवत्। अग्निः पर्याप्त–भयंकरः आसीत्, अतएव सर्वे जना बहुभयभीताः अभवन्। समीपे एव अन्यौ द्वौ गैससिलिंडरौ, मृदस्तैलस्यांगारिका, मृदस्तैलस्य शीताङ्गाराश्चादयः पदार्थाः निहताः आसन्, तत्रैव च रज्जौ वस्त्राणां समूहः शोषणाय लम्बमानानः आसीत्। त्रस्ताः सर्वे जनाः मातुः समीपमागताः अकथयन् च मातः! रक्षां विधेहि, अद्य न जानीम किं भवितुमर्हति। माता वदत्–यत् यूयं**

---

(5) संघपति बनने से व्यापार में आश्चर्यजनक लाभ हुआ–गुरुभक्ति में कितनी शक्ति है, इसका अंदाजा शायद ही कोई लगा सके। श्री गौतम स्वामी ने आचार्यभक्ति में गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है–**''गुरुभक्ति संजमेण या तरंति संसार सायरं घोरं, छिण्णन्ति अट्ठकम्मं जम्मं मरणं ण पावेन्ति''** अर्थात् गुरुभक्ति से भक्त इस संसाररूपी घोर व विशाल सागर को पार तो कर ही लेते हैं, अष्टकर्मों का नाश कर जन्म-मरण से भी मुक्त हो जाते हैं, फिर गुरु की भक्ति करने से अगर कोई लाभ हो जाये तो कोई बड़ी बात नहीं। 28 जून की बात है, संघपति श्री छोटीशाह जी आहार के बाद माताजी के पास बैठकर कहने लगे कि माताजी! इस बार हमने आपके संघ को लाने में खर्च किया तो हमारे व्यापार में बहुत लाभ हुआ। यह सब आपके ही आशीर्वाद का फल है। वास्तव में गुरुभक्ति में इतनी शक्ति है जो तत्काल फलित होती है।

(6) आग का खतरा भी टल गया–एक दिन की बात है। हम लोग अयोध्या में बैठे पं. ज्ञानचन्द्र जी शर्मा से कुछ बातचीत कर रहे थे। लगभग 3 बजा था। अचानक जोर-जोर से आग-आग की आवाज सुनाई देने लगी। माताजी ने ब्र. बहनों को पता लगवाने भेजा तो पता लगा कि भोजनशाला के गैस सिलेण्डर में आग लग गई है। आग काफी भयंकर थी, इसलिए सब लोग बहुत अधिक घबरा रहे थे। पास ही में और दो सिलेण्डर, स्टोव, मिट्टी का तेल, कोयला, आदि सामान रखा था तथा वहीं रस्सी पर ढेर सारे कपड़े सूख रहे थे। घबराए हुए सब लोग दौड़ते हुए माताजी के पास आए और कहने लगे–माताजी! रक्षा करो, आज पता नहीं क्या होने वाला है। माताजी

चिन्तां न कुरुत, भगवतः कृपया किमप्यनिष्टं न भविष्यति। तदनन्तरं सा कान्चिज्जनान् णमोकारमंत्रमुच्चारयितुं कान्चिच्च शान्तिभक्तिं कर्तुमुपादिशत् स्वयं च ध्याने उपाविशत्। सत्यमेव चमत्कारोऽभवत्! पूज्यमातुश्च प्रभावात् कस्यापि प्रकारस्य काचिद् हानिः नाभवत् आदिनाथभगवतः कृपाप्रसादात् द्विहोरापर्यन्तमग्निः ज्वलितः आसीत् अतिशयं पश्यतु, यत् पर्याप्तविलम्बस्य पश्चात् दमकलकार्यकर्तारः आगच्छन् तेन च किमप्यहितं नाभवत्। ते सिलैण्डरपात्रमुत्थाय जलाशयेऽपातयन्, पूर्णरूपेण च शान्तिरभवत्।

(7) धर्मो बहुःशक्तिशाल्यस्ति–**31 अगस्त 1993 दिनस्य घटना वर्तते। टिकैतनगरस्य, दरियाबादनगरस्य केचिज्जनाः अयोध्यायां दर्शनं कृत्वा मैटाडोर इतिवाहनेन स्वगृहं प्रति गच्छन्ति स्म। ते जनाः अयोध्यायाः रौनाही पर्यन्तमेव गताः, एका नीलगौः न जानामि कुतः समागत्य वाहनात् संघर्षणेन संलग्ना। दुर्घटना एतावती तीव्रा आसीत्, यत् वाहनस्य या दशा अभवत् तद् दृष्ट्वा प्रतीयते स्म यत् अस्मिन् कोऽपि जनः सुरक्षितो न स्यात् परन्तु कस्यापि किमप्यहितं नाभूत्। सर्वे पूर्णरूपेण सुरक्षिताः आसन्। धर्मस्य एतादृशी महिमानमवलोक्य ते सर्वे पुनः अयोध्यां प्रत्यागच्छन्। मातरं चाकथयन्–मातः! अद्य वयं सर्वे नवजीवनं प्राप्ताः, अयं सर्वः धर्मस्य अतिशयो भवत्या चाशीर्वादस्य प्रसादेनाभवन्।**

(8) मूठविद्यापि निरर्थका जाता–**अयोध्यायां वयं नित्यमिव स्व–स्व स्वाध्याये लीना आस्म, तदैव बछरांवा स्थानस्य एकः सज्जनो यस्य नाम कमलेश कुमारो जैन आसीत् मम**

बोलीं–देखो! तुम लोग कोई चिन्ता मत करो, भगवान की कृपा से कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा। इसके बाद उन्होंने सबको णमोकार मंत्र का पाठ करने व कुछ लोगों से शान्तिभक्ति का पाठ करने को कहा और स्वयं ध्यान में बैठ गईं। सचमुच चमत्कार हो गया। भगवान आदिनाथ की कृपाप्रसाद से किसी प्रकार का कोई भी खतरा नहीं हुआ। लगभग दो घण्टे तक आग जलती रही और अतिशय देखिए कि कोई अहित नहीं हुआ। काफी देर बाद जब दमकल आया तो उन लोगों ने सिलेण्डर को उठाकर पानी की टंकी में डाल दिया और पूर्णरूपेण शान्ति हो गयी।

(7) वास्तव में धर्म बहुत महिमाशाली है–31 अगस्त 1993 की बात है। टिकैतनगर व दरियाबाद के कई लोग दर्शन करके अयोध्या से वापस अपने घर मेटाडोर से जा रहे थे। वे लोग अयोध्या से रौनाही तक पहुँचे ही थे कि अचानक एक नील गाय पता नहीं कहाँ से आकर गाड़ी से टकरा गई। एक्सीडेंट इतना तेज था और गाड़ी की जो कंडीशन हुई थी, उसे देखकर लगता था कि शायद ही गाड़ी में कोई बचा हो, लेकिन किसी का कुछ भी अहित नहीं हुआ, सभी बाल-बाल बच गये थे। धर्म की ऐसी महिमा देख वह सभी लोग तुरंत वापस लौट आए और आकर माताजी से कहने लगे–माताजी! आज हम सभी को नई जिदंगी मिली है, यह सब धर्म का अतिशय और आपका आशीर्वाद है।

(8) मूठ विद्या भी निरर्थक हो गई–अयोध्या में हम नित्य की भांति अपने-अपने स्वाध्याय में लीन थे, तभी बछरांवा के एक सज्जन, जिनका नाम कमलेश कुमार जैन था, मेरे पास आए और

समीपे आगच्छत् अवदच्च–पञ्चदश दिनं पूर्वं कोऽपि मूठविद्या यस्य वर्णः कत्था इवासीत् मम वक्षस्थलाद् चतुरंगुल पूर्वमागत्यागच्छत्। तस्मिन् दिने तु मम प्राणाः रक्षिताः यतो मम ग्रीवायां मात्रा दत्तो यन्त्रः आसीत् मया च तत्कालं मातुः स्मरणं कृतम्। तदा मम प्राणास्तु सुरक्षिताः आसन् अहंचान्यानप्यकथयम् मया एकः ज्योतिषी पृष्टः सोअकथयत् मात्रा दत्तेन यंत्रेणैव तव रक्षा कृता। सः सज्जनः मातुः गुणानुवाद कर्तुं न श्रान्तः आसीत्।

(9) चोरिताः प्रतिमाः पुनः प्राप्ताः–**बेलहरा मन्दिरस्य प्रतिमाश्चौरैरपहृताः, अतः तस्य स्थानस्य जनाः पर्याप्तरूपेण पीडिताः भूत्वा पूज्याया मातुः समीपमागताः, तस्याश्च मंत्रं गृहीत्वा अगच्छन्। रक्षाबन्धन पर्वणः एकदिनपूर्वं सरोज जैनः, कृष्णकुमार जैन चुन्नू आदय बेलहरा निवासिनः केचिज्जनाः आगत्याकथयन्– मातः! भवती यं मंत्रमदात् तं कृत्वैव द्वितीयदिने प्रतिमाः स्वयमेव प्राप्ताः। यां जनास्तैः सहिताः प्रतिमां गृहीत्वा आनयन्। अकथयन्–अद्यैवैता प्रतिमाः वयं पुलिसकार्यालयात् प्राप्नुम तु वयमत्रागताः। बेलहराग्रामे 8–10 बारं प्रतिमाः चौरैरपहृताः किन्तु एषः प्रथमोऽवसरोऽस्ति यत् वयं प्रतिमाः प्राप्तवन्तः स्म। अयं मंत्रजाप्यस्य चमत्कार एवास्ति।**

(10) वाहनं गर्ते निपतितं तर्हि अपि न कोऽपि आहतोऽभूत्–**मातुः गृहस्थावस्था भगिनी त्रिशला लखनऊ नगरे वसति। मातुर्जन्मदिवसे दर्शनार्थमागता। कार्यक्रमस्य संपन्नतायाः पश्चात् सा लखनऊ नगरं प्रति गता। मार्गे एव ''उधौली'' नामकग्रामे तस्याः वाहनं एकस्मिन्**

बोले कि 15 दिन पहले कोई मूठ विद्या मेरे सामने आयी, जिसका रंग कत्थई था। वह मूठ विद्या मेरे सीने पर 4 अंगुल पहले तक आकर चली गई। उस दिन तो मेरे प्राण इसलिए बच गये कि मेरे गले में माताजी का दिया हुआ यंत्र था एवं मैंने तुरंत माताजी का स्मरण किया था। जब मैंने दूसरे लोगों को बताया तथा एक ज्योतिषी से पूछा तो उन ज्योतिषी महोदय का कहना था कि पूज्य माताजी के यंत्र ने ही तुम्हारी रक्षा की है। वे सज्जन पूज्य माताजी का गुणानुवाद करते नहीं थक रहे थे क्योंकि उन्हें नवजीवन प्राप्त हुआ था।

(9) चोरी हुई मूर्तियाँ वापस मिल गईं–बेलहरा के मंदिर की प्रतिमाएँ चोरी चली गई थीं, इसलिए वहाँ के लोग काफी परेशान हो पूज्य माताजी के पास आकर मंत्र ले कर गए थे। रक्षाबंधन पर्व के एक दिन पहले वहाँ सरोज जैन, कृष्ण कुमार जैन, चुन्नू आदि बेलहरा के कई लोग आकर कहने लगे कि माताजी! आपने जो मंत्र दिया था, वह करते ही दूसरे दिन प्रतिमाएँ स्वयमेव मिल गईं। वे लोग अपने साथ उन प्रतिमाओं को लेकर आए थे। बोले–आज ये प्रतिमाएँ हमें पुलिस के पास से प्राप्त हुई हैं, तो हम लोग यहाँ आए हैं। बेलहरा में 8-10 बार प्रतिमाओं की चोरी हुई है किन्तु प्रथम अवसर है जब हमें प्रतिमाएँ वापस मिली हैं। यह सब मंत्र जाप्य का ही चमत्कार है।

(10) गाड़ी गड्ढे में गिर गई, फिर भी किसी को चोट नहीं आई–पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की बहन श्रीमती त्रिशला जैन, जो कि लखनऊ में रहती हैं, पूज्य माताजी के जन्मदिवस पर उनके दर्शनार्थ पधारी थीं। कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् जब वे वापस लखनऊ

गर्तेऽपतत्। किन्त्वयं भगवतश्चमत्कार एवासीत् यत् न तु वाहनं क्षतिग्रस्तमभूत् न च कोऽपि शारीरिकक्षतिना ग्रस्तोऽभूत्। किन्तु एषः भगवतः ऋषभदेवस्यैव चमत्कारः आसीत् यत् वाहनं गर्ते पतितं स्यात् किन्तु कोऽपि क्षतिग्रस्तो नाभवत् इयमाश्चर्यस्यैव वार्ता अस्ति।

(11) बलवत्यां दुर्घटनायामपि सर्वे जनाः सुरक्षिताः एवासन्–**अनेनैव प्रकारेण एकश्चमत्कारोऽभवत्–सनावद नगरस्य महानुभावेन विमलचन्द्रेण सहयेऽपि जनाः मातुः दर्शनार्थं अयोध्यामागताः, निवर्तनकाले च तेषां मैटाडोर वाहनं लखनऊनगरस्य समीपे दुर्घटनाग्रस्तं अभवत्। सा दुर्घटना ईदृशी प्रबलाऽऽसीत् यत् पूर्णंवाहनं परिवर्तितमभूत् परन्तु चालकस्य किमप्यनिष्ट नाभवत् न च वाहनाभ्यन्तरे स्थिताः क्षतिग्रस्ताः अभवन्।**

(12) पादपीडा लुप्ताऽभवत्–**दीपावल्या पर्वणः पावनदिनमासीत्। अनेकश्रद्धालवः भक्ताः अनेकस्थानेभ्यः मातुर्दर्शनार्थमागताः। यतः चतुर्मासस्य निष्ठापनमभूत् अद्य च दिनं नववर्षस्य प्रारम्भदिनमासीत् अतः अवधस्य जनाः मातुर्दर्शनार्थंपर्याप्तसंख्यायामासन्। टिकैतनगरस्यैको जनः आगत्यैवावदत् यत् कतिचिद्भ्यो दिनेभ्यः मम जानुरतिशयपीडया पीडित आसीत्। उत्थातुस्थातुं च नाशक्नुवम् परन्त्वत्र पादनिक्षेपणैव मम पीडा लुप्ताभवत्, अयमेकोऽतिशयः त्वस्ति। अहमचिन्तयम् यत् यत्र तीर्थंकरमहापुरुषस्य छायास्ति पूज्य मातासमानायाः तपस्विन्याः तपस्यायाः परमाणवः चतुर्दिक्षु प्रसारिताः सन्ति, तत्र कस्यापि चमत्कारस्योत्पत्तिः कापि अतिशयोक्तिर्नास्ति।**

जा रही थीं तो रास्ते में "उधौली" नामक गांव में उनकी गाड़ी एक गड्ढे में गिर गई किन्तु भगवान का अतिशय एवं चमत्कार! न तो गाड़ी को कुछ नुकसान हुआ और न ही किसी को जरा सी भी चोट आई। यह सब भगवान ऋषभदेव का ही चमत्कार था अन्यथा गाड़ी गड्ढे में गिर जाए और किसी को चोट क्या खरोंच भी न आवे, यह आश्चर्य की ही बात है।

(11) जबरदस्त एक्सीडेण्ट में भी सभी लोग सुरक्षित थे–इसी प्रकार का एक चमत्कार हुआ सनावद के महानुभाव श्री विमलचंद जैन के साथ। वह भी अयोध्या पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे थे, वापसी में लखनऊ के पास उनकी मेटाडोर का एक्सीडेंट हो गया। एक्सीडेंट इतना जबरदस्त था कि पूरी गाड़ी ही उलट गई लेकिन न ही ड्राइवर को कुछ हुआ और न ही गाड़ी के अंदर बैठे किसी भी व्यक्ति को कुछ हुआ।

(12) पैरों का दर्द गायब हो गया–दीपावली पर्व का पावन दिन था। अनेक श्रद्धालु भक्त पूज्य माताजी के दर्शनार्थ अनेक स्थानों से पधारे थे। चूँकि चातुर्मास का निष्ठापन हुआ था और आज का दिन नववर्ष का प्रारंभ दिन भी था अतः आज अवध की जनता पूज्य माताजी के दर्शन के लिए मानो उमड़ पड़ी थी। टिकैतनगर से (जन्मभूमि से) एक चिरपरिचित सज्जन आते ही कहने लग गये कि कई दिन से मेरे घुटने में इतना दर्द था कि उठना-बैठना भी मुश्किल था और यहाँ पैर रखते ही दर्द गायब हो गया, यह एक अतिशय ही है। मैं सोचने लगी कि जहाँ तीर्थंकर महापुरुष की छत्र-छाया है तथा पूज्य माताजी जैसी तपस्विनी की तपस्या के परमाणु चारों ओर फैल रहे हों, वहाँ ऐसा चमत्कार होना कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है।

(1 3) यंत्र–मंत्रस्य प्रभावात् पारस्परिककलुषता दूरीभूता अभवत्– **23 जनवरी 1994 वर्षस्य वार्तास्ति। अवध प्रान्तस्यैकोजनः मात्रे आहारं दातुमयोध्यायामागच्छत्। पर्याप्तश्रद्धालुः आसीत् सदैव गुरुभक्तौ तत्परो भवति। तस्यैव गृहे मम क्षुल्लकमोतीसागरस्य चाहारोऽभूत् मध्याह्ने आगत्य सः मातु गुणानुवादमकरोत् अकथयच्च–मातः! अहं मातुः यंत्र–मंत्राणां साक्षात् चमत्कारमपश्यम्। नवम्बर मासस्य वार्तास्ति, मम गृहं निर्मातुमासीत् तत्र च प्रतिवेशी अल्पस्थानाय पर्याप्तं कलहमकरोत्। येन मम गृहंनिर्माणे पर्याप्तबाधासीत्। अहं मात्रा कीलेषु मंत्रः संलग्न कृत्वा अनयम्। यदा भूमौ ते कीलाः निपातिताः एकस्मिन दिने, प्रातः एव एवंभूतोऽतिशयोऽभूत् यत् मम प्रतिवेशी स्वयमागत्याकथयत्, भ्रातः! केचिज्जनां माम् भवतो विरुद्धं अकथयन् अतएवाहं कलहपरायणोऽभवम्, भवान् मम प्रतिवेशी अस्ति, सुखदुःखयोश्च आवामेव परस्परं कार्यं करिष्यावः एतत् सर्वं मातुः यंत्र–मंत्रस्यैव चमत्कारोऽस्ति यत् स्थानमपि प्राप्तं, परस्परं च वर्षाणां गतिशीला कलुषतापि नष्टाभवत्। माता वास्तवे देवीरूपेणास्ति।**

(1 4) पिच्छिकास्पर्शनेनैव कार्यसिद्धिरभवत्–**सामान्यतया बहवो जनाः मातुः समीपे आगच्छन्ति दर्शनं कृत्वा च आशीर्वादं प्राप्य प्रतिनिवर्तन्ते। परन्तु केचिद् भक्ताः ईदृशाः अपि भवन्ति येषु मातुः पिच्छिका स्पर्शनस्य महती लालसा भवति पूर्णश्रद्धया भक्त्या स्पृष्टा सा पिच्छिका,** ''या शतशो मंत्रैः मंत्रिता भवति'' **भक्तानां मनोरथान् पूरयति। सीतापुरस्यैका महिलास्ति–**

---

(13) यंत्र-मंत्र के प्रभाव से पारस्परिक कलुषता दूर हो गई– 23 जनवरी 1994 की बात है। अवध प्रांत के एक सज्जन चौका लगाने हेतु अयोध्या आये थे। काफी श्रद्धालु महानुभाव हैं, सदैव गुरुभक्ति में तत्पर रहते हैं। उन्हीं के यहाँ मेरा और क्षुल्लक मोतीसागर जी का आहार हुआ। मध्यान्ह में वह आकर पूज्य माताजी का गुणानुवाद करते हुए मुझसे कहने लगे कि माताजी! मैंने पूज्य माताजी के यंत्र-मंत्रों का साक्षात् चमत्कार देख लिया है। अभी नवम्बर की बात है, मेरा मकान बन रहा था और उसमें पड़ोसी ने थोड़ी सी जगह के लिए काफी तूफान मचा रखा था जिससे मेरा मकान बनने में काफी अड़चन आ रही थी। मैं माताजी से कीलों में मंत्र पढ़वाकर ले गया था, मैंने एक दिन वे कीलें गाड़ दीं और सुबह ही ऐसा अतिशय हुआ कि मेरे पड़ोसी महोदय स्वयं ही कहने लगे कि भैय्या! मुझे कई लोगों ने भड़का रखा था इसलिए मैं लड़ाई करता था, आप तो मेरे पड़ोसी हैं और सुख-दुख में हम दोनों ही एक-दूसरे के काम आएंगे। यह सब पूज्य माताजी के यंत्र-मंत्र का ही चमत्कार है कि जो जगह भी मिल गई और आपस में वर्षों से चली आ रही कलुषता भी दूर हो गई। माताजी वास्तव में कोई देवी का रूप ही हैं!

(14) पिच्छी लगते ही कार्य की सिद्धि हो गई– यूँ तो बहुत लोग पूज्य माताजी के पास आते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करके वापस चले जाते हैं। किन्हीं-किन्हीं को पिच्छी लगवाने की भी बहुत अधिक ललक होती है और पूर्ण श्रद्धा-भक्ति के साथ लगवाई गई वह पिच्छी **'जो सैकड़ों मंत्रों से मंत्रित होती है'** भक्तों के मनोरथों को पलक झपकते ही पूर्ण कर देती है। सीतापुर की एक महिला

श्रीमती किरण जैना। एकस्मिन् दिने सा आगत्य मामवदत्–यत् मातः! अहं पञ्चदशदिवस पूर्वं स्व सुतां गृहीत्वाऽत्रागता, सात्यन्तमेव पीड़िताऽऽसीत्। यत् कतिचित्भ्यो दिनेभ्यस्तस्याः मनसि अध्ययनरुचिर्नासीत्। तस्याः व्यक्तिगतअध्यापकेनापि अध्यापनं कर्तुं न्यषेधीत्। अत्रतः गत्वैव ज्ञातमासीत यदध्यापकोऽअध्यापनं कर्तुं स्वीकृतिमदात्, सा पुनः पुनः अकथयत् मातुः पिच्छिकायाः एव प्रभावोऽस्ति, यस्मिन् काले सा मात्रा पिच्छिकायाः स्पर्शनमकारयत्, तस्मिन्नेव काले तस्य पिता अध्यापकं तस्याः अध्ययनस्य विषयिकायां वार्तायां संलग्न आसीत्। तदेतत् कार्यसिद्धये कारणमभवत्।

(1 5) भगवतो पित्रोः स्वीकृतिं प्रदानात्पूर्वमेव चमत्कारोऽभवत्–**अयोध्यायां पञ्चकल्याणकस्य तत्परता तीव्रगत्या बलेन चासीत्, पंचकल्याणकप्रतिष्ठाहेतवे मातु पितुश्च नाम्नो चयनं कर्तुं विचारः प्रगतिशीलः आसीत्। बाराबंकी नगरस्यैकः श्रेष्ठी श्री चन्दनलाल जैनः आगत्य पूज्या मातरं भगवतः मातरं पितरं च भवितुं विनयमकरोत्। अन्ततोगत्वा सः सफलतां प्राप्नोत्। फरवरी मासस्य पंचविंशतितमस्य दिनस्य वार्तास्ति, चन्दनलालः आगत्य स्वकथां वर्णयन् अकथयत्–मातः! यस्मिन् दिने मह्यं मातुः पितुश्च स्वीकृतिः प्राप्ता, तस्मिन् दिने मह्यं एको न, द्वौ लाभौ प्राप्तौ अभवताम्, गृहं गत्वा प्रथमं तु मया ज्ञातं यत् ममोपरि यः लक्षरूप्यकाणामभियोगः संलग्न भवितुमासीत् सः स्वयमेव शान्तोऽभवत्। द्वितीयं च मया तस्मिन् दिने एव कति लक्षरूप्यकाणां वस्त्रविक्रयमकरवम्। इदं सर्वं पूज्यमातुरेव कृपाप्रसादोऽस्ति यतोऽस्मिन् दिने मह्यं भगवतः मातरं–पितरं च भवितुं वचनं प्राप्तमभवत्,**

हैं-श्रीमती किरन जैन। एक दिन वह आकर मुझसे कहने लगीं–माताजी! मैं अभी 15-20 दिन पूर्व अपनी लड़की को यहाँ लेकर आयी थी, वह बहुत परेशान थी। बात यह थी कि कुछ दिन से उसका पढ़ाई में दिमाग बिल्कुल नहीं लग रहा था, उसके ट्यूशन वाले टीचर ने पढ़ाने से इंकार कर दिया था। यहाँ से जाते ही ज्ञात हुआ कि टीचर ने ट्यूशन पढ़ाने की हाँ कर दी है। वह बार-बार कह रही थीं कि यह माताजी की पिच्छी का ही चमत्कार है, जिस समय यहाँ माताजी उस लड़की को पिच्छी लगा रही थीं, उसी समय सीतापुर में उसके पापा (नरेन्द्र जी) उस टीचर से पढ़ाई के विषय में बात कर रहे थे, वही पुण्य परमाणु कार्यसिद्धि में कारण बन गए।

(15) भगवान के माता-पिता बनने के पहले चमत्कार हो गया–अयोध्या में पंचकल्याणक की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में भगवान के माता-पिता हेतु नाम का चयन करना था। बाराबंकी के एक श्रेष्ठी महानुभाव श्री चंदनलाल जी आकर पूज्य माताजी से भगवान के माता-पिता बनने हेतु अनुनय-विनय करने लगे। अंततोगत्वा उन्हें सफलता मिल ही गई। 25 फरवरी की बात है, चंदनलाल जी आकर अपनी कथा सुनाते हुए कहने लगे–माताजी! जिस दिन मुझे भगवान के माता-पिता बनने की स्वीकृति प्राप्त हुई, उसी दिन मुझे एक नहीं, दो-दो फायदे हुए, एक तो घर जाते ही मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे ऊपर जो लाखों रुपये का मुकदमा चल रहा था, वह अपने आप समाप्त हो गया है और दूसरा मैंने उस दिन कई लाख रुपये का कपड़ा एक

अतएवैते अभूतपूर्वाश्चमत्काराः दृष्टाः अभवत्।

मणिकांचनयोरद्भुतः संयोगः—**भगवान् ऋषभदेवः कोटाकोटि वर्षाणि पूर्वमयोध्यायामजायत, किन्तु कालप्रहारैस्तस्यस्मृतिर्धूमिला जाता। अस्तु, तस्य वंशजं रामचन्द्रमयोध्या वासिनोऽवश्यमेव स्मरन्ति, यतस्तस्य अस्तित्वं मात्र नवलक्षवर्षपूर्वमस्ति।**

अस्यैव प्राचीनेतिहासस्य स्मृतिं कारयितुं 1951–52 वर्षे एकदा पुनः आचार्यरत्नं देशभूषणोऽवध प्रान्ते पदं न्यधात्। तस्यैव च पावनप्रेरणया अयोध्यायाः प्राचीनकटरामन्दिरे भगवतः ऋषभदेवस्य भरतबाहुबलिनश्च तिस्रः प्रतिमाः विराजमानाः अभवन्। तस्मिन्नेव समये सः एकां विशालां प्रतिमां भगवतः ऋषभदेवस्य विराजमानां कर्तुं प्रेरणामदात्। 1965 वर्षे तस्याः प्रतिमायाः निर्माणं पूर्णमभवत्, तदा पुनः आचार्यश्रियः सान्निध्ये रायगंजस्य प्रांगणे तस्याः 31 फुट उन्नतप्रतिमाया स्थापना पंचकल्याणकप्रतिष्ठापूर्वकं समजायत्। इति सर्वकार्य सम्पन्नतायामपि दुर्भाग्यवशात् अयोध्यातीर्थस्य विकासः समुचितो नाभूत्। नैतद् कोऽजानात् यदस्य तीर्थस्य विकासाय उद्धाराय च स्वयं अवधप्रदेशस्य ब्राह्मीव माता ज्ञानमती अत्रागमिष्यति! द्विनवत्यधिकएकोनविंशतितमस्य वर्षस्य धनत्रयोदश्याः दिनं ऐतिहासिक पृष्ठमभूत् ज्ञानमती मातरं अयोध्या विकासस्य स्मृतिं कारयितुं। तदैव तु सा प्रभुः प्रेरणां प्राप्य सर्वैनिषिध्यमानापि हस्तिनापुरात् स्व पितुः ऋषभदेवस्य दर्शनार्थं अयोध्यामागच्छत्।

दिन में बेचा। यह सब पूज्य माताजी की ही कृपाप्रसाद है कि उस दिन मुझे भगवान के माता-पिता बनने का वचन मिला, जिसके फलस्वरूप ये अनहोने चमत्कार हुए।

➢**मणि-कांचन का अद्भुत संयोग–**

भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जन्म लिया था किन्तु काल के थपेड़ों ने उनकी स्मृतियों को धूमिल कर दिया था। हाँ! उनके वंशज मर्यादा पुरुषोत्तम राम को अयोध्यावासी जरूर याद करते हैं क्योंकि उनका कथानक अभी मात्र 9 लाख वर्ष पुराना है।

इसी प्राचीन इतिहास की स्मृति दिलाने हेतु सन् 1951-52 में एक बार आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज अवध प्रान्त में पधारे और उनकी पावन प्रेरणा से अयोध्या के प्राचीन कटरा मंदिर में भगवान ऋषभदेव-भरत-बाहुबली की तीन प्रतिमाएँ विराजमान हुईं। उसी समय एक विशाल प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की उन्होंने यहाँ और विराजमान करने की प्रेरणा दी। उस प्रतिमा का निर्माण सन् 1965 में पूर्ण हुआ, तब पुनः आचार्यश्री के सानिध्य में रायगंज के प्रांगण में इस 31 फुट ऊँची प्रतिमा की स्थापना पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक हुई। इतना सब कुछ होने के बाद भी दुर्भाग्यवश अयोध्या तीर्थ का यथोचित विकास न हो सका। यह कौन जानता था कि इसका उद्धार करने एक दिन स्वयं अवध क्षेत्र की ब्राह्मी माता ज्ञानमती जी पधारेंगी! सन् 1992 में 23 अक्टूबर धनतेरस का दिन सचमुच ऐतिहासिक पृष्ठ बन कर आया था, ज्ञानमती माताजी को अयोध्या के विकास की स्मृति दिलाने। तभी तो मानो प्रभु की प्रेरणा पाकर वे सबके मना करने के बावजूद भी हस्तिनापुर से अपने पिता ऋषभदेव के दर्शनार्थ चल पड़ीं। 4 माह, 5 दिन की पदयात्रा के बाद उनका

चतुर्णां मासानां पंचदिनानां च पदयात्रायाः पश्चात् तस्याः संघसहितं पदार्पणमयोध्यायाः धरित्र्यामभूत्, तदा तु वसुन्धरायाः भाग्यमेव परिवर्तितमभवत्। या भूमिः शताब्दीभ्यः कस्यचित् साधोश्चतुर्मासं स्वनेत्राभ्यां नापश्यत् सा स्वपुत्र्याः ज्ञानमत्याः अत्र बलात् चतुर्मासं कारयित्वा अदर्शयत् यत् अहमधुना अबलानैव सबला भूत्वोपस्थितास्मि। अयं मणिकांचनयोः संयोगः एकः अद्भुतः संयोगः एवास्ति, यं विधाता कोटिवर्ष पूर्वमलिखत्।

बसन्तोत्सवः स्वचरमसीमायामासीत्–**भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकहेतवे चतुः–नवत्यधिकएकोनविंशतिशततमस्य वर्षस्य फरवरी मासस्य चतुर्विंशतितमं दिनांकं शुभमुहूर्तं माता ज्ञानमती विविध मुहूर्तज्ञानां मंत्रणां कृत्वा निश्चितमकरोत्। तस्यैव च निर्णीततिथ्यनुसारेण एका नव संघटिता** ''महामस्तकाभिषेकमहोत्सव समितिः'' **स्वकार्ये संलग्नाऽभवत्।**

दिनानि व्यतीतानि, मासाश्च व्यतीताः, पश्यन्नेव चायोध्यायां 24 फरवरी दिने बसन्तोत्सवस्य वर्णो व्याप्तोऽभवत्। प्रातःकालादेव पीतवस्त्रैः आच्छादितो जनसमूहः स्वपूर्व–निर्धारितान् कलशान् प्राप्तिहेतवे आतुरः आसीत्।

कलशव्यवस्थायाः आयोजकाः सुचारुव्यवस्थानिर्धारणाय मन्दिरात् बहिः पर्याप्तदूरतया परिधिं निर्मितामकुर्वन् यतः क्रमशः एव जनाः सोपानमार्गमारुह्य मंचपर्यन्तं गच्छन्तु स्वकलशान् च प्रभोः मस्तके पातयन्तु।

भगवतः ऋषभदेवस्य मस्तकाभिषेकं दृष्टुं पूज्यमातुर्निर्देशानुसारं मन्दिरात् बहिर्लघुद्वार–मपि त्रोटयित्वा पर्याप्तविस्तारयुक्तं कारितम्, यतः प्रत्येक दर्शनार्थी विना केनापि व्यवधानेन

संघ सहित पदार्पण अयोध्या की धरती पर हुआ, फिर तो वसुन्धरा के भाग्य ही पलट गए। जिस भूमि ने सदियों से किसी संत का चातुर्मास अपनी आँखों से नहीं देखा था, उसने अपनी पुत्री ज्ञानमती जी का जबर्दस्ती यहाँ चातुर्मास कराकर दिखा दिया कि अब मैं अबला नहीं सबला बन गई हूँ। यह मणिकांचन का संयोग एक अनहोना संयोग ही है, जिसे विधाता ने करोड़ों वर्ष पूर्व लिखा होगा।

➢बसन्तोत्सव अपनी चरम सीमा पर था–

भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक हेतु 24 फरवरी 1994 का शुभ मुहूर्त पूज्य माताजी ने अनेक मुहूर्तज्ञों से सलाह करके निश्चित किया और उसी निर्णीत तिथि के अनुसार एक नवीन गठित **''मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति''** अपने कार्य में संलग्न हो गई।

दिन बीते, माह बीते और देखते ही देखते अयोध्या में 24 फरवरी को बसन्तोत्सव का रंग छा गया। प्रातःकाल से ही केशरिया वस्त्रों में लिपटा विशाल जनसमूह अपने पूर्वनिर्धारित कलशों को पाने हेतु आतुर हो रहा था।

कलशव्यवस्था के आयोजकों ने सुचारू व्यवस्था बनाने के लिए मंदिर के बाहर काफी दूर से बेरीकेटिंग बनाई थी ताकि क्रम-क्रम से ही लोग सीढ़ियों से चढ़कर मचान तक पहुँचें और अपने कलशों को प्रभु के मस्तक पर ढुरा सकें।

भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक देखने हेतु पूज्य माताजी के आदेशानुसार मंदिर के बाहर लघुद्वार भी तोड़कर काफी बड़ा कर दिया गया था, जिससे प्रत्येक दर्शनार्थी ने बिना किसी व्यवधान

सम्पूर्णमहामस्तकाभिषेकं दृष्टं समर्थोऽभवत्। मन्दिराच्च बहि उभयतः पुष्टश्रेण्याः मार्गस्य निर्माणं कृतं, यस्मिन् एकमार्गात् आगमनस्य द्वितीयतश्च गमनस्य व्यवस्थाऽऽसीत्। पीतध्वजैः सुशोभिते सोपानमार्गे स्थाने–स्थाने स्वयंसेवकाः नियुक्ताः आसन्, ये कलशपत्रयुक्तान् स्त्रीपुरुषान् उपरि गन्तुं मार्गं दर्शयितुं कार्यमकुर्वन्।

मन्दिरस्य यथावत् समक्षं बहिरुच्चस्थाने सहस्राष्ट कलशाः स्वास्तिकस्याकारेण सुसज्जिताः आसन्। आम्रपत्रैः, पुष्पाणां कलिकाभिः नारिकेलैश्च सुसज्जितास्ते कलशाः वासन्तस्य शोभां विकीर्णवन्तः जनमानसं स्वात्मानं प्रति आकृष्टमकुर्वन्। सर्वप्रथमं तेषां सम्पूर्णकलशानां पूजा विहिता, पुनः प्रेरणास्रोतास्विन्याः पूज्यायाः मातुः अत्र च कृतं पादार्पणम् मुनीनां च मंगल सान्निध्ये मस्तकाभिषेकः प्रारब्धोऽभूत्। मस्तकाभिषेकात् पूर्वं स्वर्णकलशस्य दानदात्रे महावीरप्रसादजैनाय, दिल्ली निवासिने महोत्सवसमिति पक्षतः भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतीकमुपहृत्य च सम्मानः दत्तः, तीर्थंकरकलशस्य सौभाग्यं प्राप्तिकर्तृणां च महानुभावानां प्रतीकोपहारेण स्वागतमभूत्।

महावीरप्रसादजैन दिल्लीनिवासिना प्रथमाभिषेकः स्वर्णकलशेन कृतः–**यस्य महामस्तकाभिषेकस्य प्रतीक्षा सम्पूर्णवर्षात् कृतासीत्, तस्य प्रथमं सौभाग्यं श्रीमहावीरप्रसादजैनः दिल्ली प्राप्नोत्। फरवरी मासस्य चतुर्विंशतितमे दिनांके मध्यान्हे एकादश वादन पञ्चमिनट समये यदा सः वास्तविकं स्वर्णकलशं गृहीत्वा च धर्मपत्न्या परिवारेण सह च सोपानमार्गे आरोहणात् पूर्वं**

के पूरा अभिषेक देखा। मंदिर के बाहर दोनों ओर से मजबूत सीढ़ियों का निर्माण किया गया था, जिस पर एक ओर से जाने तथा दूसरी ओर से वापस आने की व्यवस्था थी। केशरिया झण्डों से सजी सीढ़ियों पर जगह जगह स्वयंसेवक नियुक्त किए गए, जो कलशपास लिये हुए नरनारियों को ही ऊपर चढ़ने दे रहे थे।

मंदिर के ठीक सामने बाहर चबूतरे पर 1008 कलश स्वस्तिक के आकार में सजाए गए थे। आम के पत्ते, फूल की माला एवं नारियल से सजे हुए वे कलश बसन्ती बहार बिखेरते हुए जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे। सर्वप्रथम उन समस्त कलशों की पूजन की गई पुनः प्रेरणास्रोत पूज्य माताजी एवं यहाँ पधारे मुनि संघ के मंगल सानिध्य में महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हुआ।मस्तकाभिषेक से पूर्व स्वर्णकलश की बोली लेने वाले श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट सेंटर-दिल्ली का महोत्सव समिति की ओर से भगवान ऋषभदेव का प्रतीक भेंट कर सम्मान किया गया तथा तीर्थंकर कलश करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले महानुभावों का भी भगवान ऋषभदेव का प्रतीक भेंट कर स्वागत किया गया।

➢महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली ने प्रथम अभिषेक स्वर्णकलश से किया–

जिस मस्तकाभिषेक की प्रतीक्षा वर्ष भर से की जा रही थी, उसका प्रथम सौभाग्य प्राप्त किया दिल्ली निवासी श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर ने। 24 फरवरी को मध्यान्ह 11 बजकर 5 मिनट पर जब वे असली सोने का सुसज्जित कलश लेकर अपनी धर्मपत्नी एवं परिवार सहित

अनेकश्रद्धालुजनाः स्वर्णकलशस्य स्पर्शनकार्ये निमग्नाःऽभवन्, तदा ऋषभदेवस्य जयकारैराकाशं गुंजायमानमभवत्। यथार्थे यदा एकादश वादने पञ्चदश मिनट समये भगवतो मस्तके प्रथमकलशधारासमये यत्र भक्ताः भावविह्वला अभवन्, तत्रैव मातुर्ज्ञानमत्याः हर्षाश्रूण्यपि भक्तानां दृष्टिभिः गुप्तानि नाभवन्।

यत् किञ्चिदपि तत्र तत्क्षणे भवितुं प्रगतिशीलमासीत्, तत्सर्वं स्वाभाविकमेव आसीत्। प्रत्येकश्रद्धालुश्चिन्तयितुं अशक्नोत् यां प्रबलां भावनां गृहीत्वा माताश्रीः अविश्रान्तपरिश्रमपूर्वकं अयोध्यामागच्छत्, अद्य तत् सफलीभूतं दृष्ट्वा तस्यास्तु नेत्रे वस्तुतः स्वानन्दोपहारं प्रभोश्चरणयो समर्पयितुं तत्परे अभवताम्।

कविवरस्य वादिराजस्यैता पंक्तयोऽत्र सार्थकाः भवितुमर्हन्ति–

आनन्दाश्रुस्नपितवदनं गद्गदंचाभिजल्पन्...।

सम्पूर्णः परिवारः तेन स्वर्णकलशेन क्रमशोऽभिषेकमकरोत्, पुनः सहर्षं उपहारे प्राप्तं तं पवित्रं कलशं मस्तकेन चुम्बितमकरोत्।

इदमत्र ज्ञातव्यमस्ति यत् महामस्तकाभिषेकमहोत्सवसमितेः पक्षतः समस्तेभ्यः कलशाभिषेक–कारकेभ्यः पूर्व योजनानुसारेण स्वर्ण–रजत–सामान्यकलशाः उपहाररूपेण प्रदत्ताः।

अस्यामेव शृंखलायां प्रथमस्वर्णकलशेनाभिषेकं कृत्वा श्रीमहावीरप्रसादो जैनः हर्षेण नृत्यं कुर्वन् सहस्राणां रूप्यकाणां रजतपुष्पाणां च रत्नवृष्टिं प्रभोः ऋषभदेवस्योपरि ज्ञानमत्याः मातुश्चोपरि चकार, येन सः निश्चयेनैव सातिशयं पुण्यबन्धमकरोत्।

सीढ़ियों पर चढ़ने से पूर्व अनेक श्रद्धालुओं को कलश का स्पर्श कराने लगे, तब भगवान ऋषभदेव की जय-जयकार से आकाश गुंजायमान हो उठा। ठीक 11 बजकर 15 मिनट पर भगवान के मस्तक पर प्रथम कलश की धारा होते ही जहाँ भक्तगण भावविभोर हो उठे, वहीं गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के हर्षाश्रु भी भक्तों की निगाहों से छिप न सके।

जो कुछ भी वहाँ उस क्षण हो रहा था, वह सब स्वाभाविक भी था। हर श्रद्धालु सोच सकता है कि जिस प्रबल भावना को संजोकर मातुश्री अथक परिश्रमपूर्वक अयोध्या में आई थीं, आज उसे सफलीभूत देखकर उनके वे नेत्र भला अपनी आनन्दभेंट प्रभु चरणों में क्यों न चढ़ाते!

श्री वादिराज मुनिराज की ये पंक्तियाँ यहाँ सार्थक सिद्ध हो रही थीं–

''आनन्दाश्रुस्नपितवदनं गद्गदं चाभिजल्पन्.....''

पूरे परिवार ने उस सोने के कलश द्वारा क्रम-क्रम से अभिषेक किया पुनः हर्षोल्लासपूर्वक भेंट में प्राप्त उस पवित्र कलश को मस्तक पर लगाया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि मस्तकाभिषेक महोत्सव समिति की ओर से समस्त कलश करने वालों को पूर्व योजनानुसार स्वर्ण, रजत एवं सामान्य कलश भेंट स्वरूप प्रदान किए गए।

इसी शृंखला में प्रथम स्वर्णकलश से अभिषेक करके महावीर प्रसाद जैन ने खुशी से नाचते हुए हजारों रुपयों की एवं रजत पुष्पों की रत्नवृष्टि प्रभु ऋषभदेव एवं ज्ञानमती माताजी के ऊपर कर डाली, जिससे उन्होंने निश्चित ही सातिशय पुण्य बंध कर लिया।

तीर्थंकरस्य मस्तके तीर्थंकरकलशैरभिषेकः–**यदा रजतधातुनिर्मितैस्तीर्थंकरस्यकलशैस्तीर्थंकरप्रभोराभिषेकोऽभूत्, तदा तीर्थंकरऋषभदेवस्य जयजयकारं कुर्वन्तो भक्तगणाः नृत्यैर्मत्ताः अभवन्, इदं सौभाग्यं प्राप्तकर्तुषु साहू अशोक कुमारो दिल्ली, निर्मल कुमारः सेठी, गजराजगंगवालः, श्रीपाल जैन मोटरवाले, श्री आर.के. जैन मुम्बई, श्री पदमचन्द जैन पाटनी–दिल्ली–श्री राजकुमारः जैन प्रीतमपुरा–दिल्ली, श्री शीतलप्रसादो जैन दिल्ली आदयः प्रमुखा आसन्।**

एतस्य पश्चात् गणधरकलशैरभिषेककर्तारः श्री अजितप्रसादः विनोदकुमारजैनः पटाखे वाले, देवेन्द्र कुमार जैन–प्रीति विहार दिल्ली निवासिनौ प्रमुखौ आस्ताम्। पुनः चक्रवर्ती कलशप्राप्तकर्तृणां चक्रवर्तिकलशैरभिषेककर्तारः सौभाग्यशालिनः आसन्–श्री पदमचन्द अशोक कुमार जैन इलाहाबादवासी, श्री प्रेमचन्द जैन पहाड़गंज दिल्लीवासी, कमलचंद जैनः खारीबावली, श्री आनन्द जी–दीपकजी–पूषारोड दिल्ली, श्री हेमचन्द विजयकुमार जैनः सरस्वती विहार दिल्ली, श्री देवकुमार सिंह कासलीवालः इन्दौर, मुकेश कुमार जैनः इन्दौर निवासी।

अभिषेकस्यां शृंखलायां भरतकलशैरभिषेकस्य पश्चात् पंचामृताभिषेकः प्रारब्धोऽभूत्।

पंचामृताभिषेकधाराभिरयोध्या केसरवर्णाभवत्–**तीर्थंकरगणधरादिकलशानामभिषेकस्य पश्चात् यदा पंचामृतस्य धाराः प्रारब्धा अभवन् तदा भक्ताः स्त्रीपुरुषाः स्वोत्पन्नभावान् रोद्धं समर्थाः न अभवन्, भावसिक्ता च नृत्यं कुर्वन्तोऽभिषेकस्य पवित्रगंगायां स्नातुं तत्पराः अभवन्।**

➢तीर्थंकर के मस्तक पर तीर्थंकर कलशों से महाभिषेक–

जब रजत धातु से निर्मित तीर्थंकर नामक कलशों से तीर्थंकर प्रभु का अभिषेक हुआ, तब तीर्थंकर ऋषभदेव की जय-जयकार करते हुए भक्तगण झूम उठे। इस सौभाग्य को प्राप्त करने वालों में साहू अशोक कुमार जैन, श्री निर्मल कुमार सेठी, श्री गजराज गंगवाल, श्री श्रीपाल मोटर वाले-दिल्ली, श्री आर.के.जैन-मुम्बई, श्री पदमचंद पाटनी-दिल्ली, श्री राजकुमार जैन-प्रीतमपुरा, दिल्ली, श्री शीतल प्रसाद जैन-दिल्ली आदि प्रमुख रहे।

इसके पश्चात् गणधर कलश से दिल्ली के श्री अजितप्रसाद विनोद कुमार जैन पटाखे वालों एवं श्री देवेन्द्र कुमार जैन प्रीतविहार-दिल्ली ने अभिषेक किया पुनः चक्रवर्ती कलश प्राप्त करने का सौभाग्य मिला श्री पदमचंद अशोक कुमार-इलाहाबाद, श्री प्रेमचंद जैन-पहाड़गंज, नई दिल्ली, श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली, श्री आनंद जी दीपक जी, पूषा रोड-नई दिल्ली, श्री हेमचंद विजय कुमार जैन, सरस्वती विहार-दिल्ली, श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल-इंदौर एवं श्री मुकेश कुमार जैन-इंदौर को।

अभिषेक की इसी शृंखला में भरतकलशों से अभिषेक के पश्चात् पंचामृत अभिषेक प्रारंभ हुआ।

➢पंचामृत की धाराओं ने अयोध्या को केशरिया कर दिया–

तीर्थंकर गणधर आदि 72 कलशों के जलाभिषेक के पश्चात् जब पंचामृत की धाराएँ शुरू हुईं, तो देखने वाले भक्त नर-नारी अपने उमड़ते भावों को रोक न सके और भावभीना नृत्य करते हुए अभिषेक की पवित्र गंगा में स्नान करने लगे।

सर्वप्रथमं शतशो नारिकेलशुद्धेन जलेन श्री नरेशचंद अभयकुमार बाराबंकी निवासी संपूर्णपरिवारेण सहाभिषेकं कृतवान्। इक्षुरसस्य दीर्घकायैः पूर्णघटैरभिषेकस्य विधानं कर्तुं सौभाग्यं प्राप्तवती श्री पुखराज पाण्ड्या अनूपबाई पाण्ड्या च गोरखपुर निवासिनी।

शत किलो नारंगरसेन श्रीमोतीचंदकासलीवाल जौहरी दिल्ली निवासी भगवतः ऋषभदेवस्याभिषेकमकरोत्। एकक्विन्टल द्राक्षाफलरसेन मस्तकाभिषेकं विधातुं सौभाग्यं श्री सुमेरचंद पाटनी लखनऊ निवासी प्राप्नोत्।

पञ्च किलो शर्करया श्री मुकेश कुमार जवाहरलाल सूरतनिवासी अभिषेकं व्यधात्, अनेनैव प्रकारेण दश किलो तन्दुलानां कल्कचूर्णेन यदा कोमलचन्दजैनः महमूदाबाद निवासी भगवतो मस्तकेऽभिषेकं कृतवान्, तु समस्तं मन्दिरं श्वेतमेघाच्छन्नामिवाभवत् तस्मिन् च कल्कचूर्णे मिश्रितेन कर्पूरेण संपूर्णं वातावरणं पूर्णरूपेण सुरभितमकरोत्, शतकिलो द्राडिमरसेन श्री मानमल झांझरी–झुमरीतलैया इत्यस्य सुपुत्रोऽभिषेकं व्यधात् शुद्धघृतस्य च अभिषेक कर्तृणां दानघोषणां कर्तुं सौभाग्यं श्री राजकुमार जैन–प्रतापगढ़ (उ.प्र.) निवासी प्राप्नोत्।

एतासामष्टधाराणां पश्चात् पञ्चशत लीटर दुग्धस्य महद्भिर्घटैः भगवतः ऋषभदेवस्य अभिषेकं यदा श्री उम्मेदमल पाण्ड्या दिल्ली निवासी अकरोत्, तदा तु अयोध्यायाः धरायां रामराज्यामिव पुनः दुग्धनद्य प्रवाहिताः अभवन्। श्वेतदुग्धस्य मध्ये केसरियावर्णस्य दुग्धस्य पतन्ती धारा प्रतिमायाः श्वेतवर्णं अत्यधिकं मुखरितं चकार।

सर्वप्रथम सैकड़ों नारियल के शुद्धजल से श्री नरेशचंद अभयकुमार जैन-बाराबंकी ने पूरे परिवार के साथ अभिषेक किया। इक्षुरस के दीर्घकाय 5 घड़ों से अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री पुखराज जी पाण्ड्या एवं अनूप बाई पाण्ड्या-गोरखपुर ने।

सौ किलो सन्तरे के रस से श्री मोतीचंद कासलीवाल जौहरी-दिल्ली ने भगवान ऋषभदेव का अभिषेक किया। 1 क्विंटल अंगूर के रस से मस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री सुमेरचंद पाटनी-लखनऊ ने।

शक्कर से निर्मित शुद्ध 5 किलो बूरे से श्री मुकेश कुमार जवाहरलाल जैन-सूरत वालों ने अभिषेक किया, इसी प्रकार 10 किलो चावल के आटे (कल्कचूर्ण) को कोमलचंद जैन-महमूदाबाद वालों ने जब भगवान के मस्तक पर डाला, तो पूरा मंदिर सफेद बादलों से आच्छन्न जैसा हो गया और उस कल्क चूर्ण में मिश्रित कर्पूर ने सारे वातावरण को अपनी सुगंध से महका दिया पुनः 100 किलो अनार के रस से श्री मानमल झांझरी-झुमरीतलैया के सुपुत्र ने अभिषेक किया और शुद्ध घृत से अभिषेक करने की बोली प्राप्त करने का सौभाग्य श्री राजकुमार जैन-प्रतापगढ़ (उ.प्र.) वालों को मिला।

इन अष्टधाराओं के पश्चात् 500 लीटर दूध से बड़े-बड़े घड़ों के द्वारा भगवान ऋषभदेव का अभिषेक जब श्री उम्मेदमल पाण्ड्या-दिल्ली ने किया, तब तो अयोध्या की धरा पर रामराज की तरह मानों फिर से दूध की नदी ही प्रवाहित हो गई प्रतीत हो रही थी। सफेद दूध के मध्य केशरिया दूध की पड़ती हुई धारा प्रतिमा के श्वेत वर्ण को अत्यधिक मुखरित कर रही थी।

भगवतो दुग्धस्नानेन सार्धं शतशो भक्ताः स्व चेतनामुपेक्ष्य स्वयं तस्य दुग्धाभिषेकस्य गन्धोदकसरोवरे स्नानं कृत्वा स्वशरीराणि परमपावनान्यकुर्वन्।

दुग्धस्य पश्चात् क्रमः आसीत् दधिस्नानस्य। अस्य सौभाग्यं श्री मनोजकुमारो मेरठ निवासी प्राप्तवान्। पञ्चाशत् लीटर दध्याः स्थूला धारा हिमस्य शकलमिव प्रतीता अभवत्। तत्पश्चात् मनोजकुमारस्य माता श्रीमती आदर्श जैना धर्मपत्नी च नविता जैना प्रभृतयः समस्तपरिवारो मिलित्वा पञ्चाशत् किलो सर्वौषधिचूर्णमिश्रितैरनेकघटजलैः सर्वौषधिअभिषेकं अकुर्वन्। अस्मिन् सर्वौषधि जले हरिद्रा–केसर–चन्दन–कपूर–ऐला–लवंग–जावित्री–जायफलादयोऽनेकाः सुगंधितपदार्थाः मिश्रिताः आसन्, येन मन्दिरं तु सुगन्धितमभूदेव, भक्तगणाः अपि स्ववस्त्राणि शरीराणि च सुगन्धितान्यकुर्वन्, सर्वदा–आरोग्यता प्राप्तिभावनया च शीशी–पात्र–मलमल प्रच्छन्नेषु च पूरयित्वा स्वगृहेषु अनयन्।

सरयू–जलमपि स्वप्रभोरभिषेकायातुरमभवत्–**महापुराणे वर्णनमस्ति यत् भगवतः ऋषभदेवस्य राज्याभिषेकसमयेऽयोध्यायाः नरनार्यः मृद्घटेषु कमलपत्राणां दलेषु च सरयूनद्याः जलं पूरयित्वा आनयन् तेन च भगवतः चरणयोरभिषेकमकुर्वन्।**

कोटाकोटि वर्षेभ्योऽयोध्यायां प्रवाहमाना सा सरयूः नदी अद्य पुनः स्व पुत्रमभिषेक्तु–मातुराभवत्। अतएव ज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणानुसारेणाद्य सरयूनद्याः जलं जिनेन्द्रप्रसादः जैन

भगवान के दुग्ध स्नान के साथ-साथ सैकड़ों भक्तों ने अपनी सुध-बुध खोकर नीचे स्वयं उस दुग्धाभिषेक के गंधोदक सरोवर में स्नान कर अपनी काया को परम पावन बनाया।

दूध के बाद क्रम आया दधिस्नपन का। इसका सौभाग्य श्री मनोज कुमार जैन (मेरठ निवासी) को मिला। 50 लीटर दही की मोटी धारा बर्फ के टुकड़ों के समान प्रतीत हो रही थी पुनः मनोज कुमार की मातेश्वरी श्रीमती आदर्श जैन एवं ध.प. सौ. नविता जैन आदि समस्त परिवार ने मिलकर 50 किलो सर्वौषधि चूर्ण से मिश्रित अनेक घड़ों जल से सर्वौषधि अभिषेक किया। इस सर्वौषधि में हल्दी,केशर, चंदन, कपूर, इलाइची, लवंग, जावित्री, जायफल आदि अनेक सुगंधित पदार्थ मिले हुए थे, जिससे मंदिर तो सुवासित हुआ ही, भक्तगणों ने भी अपने वस्त्रों को, शरीर को सुगंधित किया तथा सदा आरोग्यता प्राप्त करने की भावना से शीशी, पात्र एवं मलमल के छन्नों में भरकर अपने घर भी ले गए।

➢सरयू का जल भी आतुर हो उठा अपने प्रभु के अभिषेक को–

महापुराण में वर्णन आता है कि भगवान् ऋषभदेव के राज्याभिषेक के समय अयोध्या के नर-नारी मिट्टी के घड़ों में, कमलपत्र के दोनों में सरयू नदी का जल भरकर लाए थे और उससे भगवान के चरणों का अभिषेक किया था।

कोड़ाकोड़ी वर्षों से अयोध्या में सतत बह रही सरयू नदी आज पुनः अपने लाल के अभिषेक को आतुर हो उठी थी अतः पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणानुसार आज सरयू नदी का जल मंगल कलशों में भर कर लाया गया और उससे अभिषेक करने का अहोभाग्य मिला श्री जिनेन्द्र प्रसाद

ठेकेदारो दिल्ली निवासी तत्पत्नीं च विमला देवी च प्राप्तवन्तौ।

अकृत्रिमकेसरेण होलिका– **24 फरवरी दिने प्रातःकालादेव यत्रापारजनसमूहः भगवतो महामस्तकाभिषेकं कर्तुं दृष्टुं चातुरः आसीत्, तत्रैव व्यवस्थापकबन्धवः मस्तकाभिषेकस्य सामग्रीं प्रस्तोतुं व्यस्ता आसन्। बाराबंकी निवासी श्री सुशील कुमारो जैन तत्सहयोगिनश्च जयपुरात् समागतानां स्वयंसेवकानां सहायतया सर्वप्रकारस्य रसान् दुग्धादिवस्तूनि च समये प्रदाय मस्तकाभिषेकस्य कार्यक्रमं सफलमकुर्वन्।**

प्रातःकालादेव घर्षणशीलाः राशिमयः केसरः प्रगाढ़रक्तवर्णेन यदा मंचे आगतः, तदा सर्वभक्तानां मनांसि लुब्धायमानान्यभवन् सर्वेषां च मुखेभ्यः गीतस्यस्वराः अनायासमेव प्रस्फुरिता अभवन् ''केसरिया केसरिया अद्य प्रभोः वर्णः केसरिया''**....। अस्य स्वरतरंगस्य मध्ये पञ्चशत ग्राम केसरः, येन सम्पूर्णो घटः पूर्णः आसीत् तेन काश्मीरजेन केसरेण श्री मांगीलाल बाबूलाल जैन हैदराबादनिवासी अभिषेकक्रियां व्यधात्। तदा तु भगवान् ऋषभदेवः स्व वास्तविकवर्णे प्रकटितोऽभवत्। यथा चैत्यभक्तौ तस्य शरीरस्य वर्णः तप्तसुवर्णः इव मतोऽस्ति। उदीयमतः सूर्यस्य प्रभेव तप्तमयस्य वर्णः वस्तुत, एतावान् मनमोहकः आसीत्, यत्लेखन्या पत्रेषु नावतारयितुं शक्यते।**

श्री अतरसेनसत्येन्द्रकुमारजगाधरी निवासिनः केसर अभिषेकस्य पश्चात् गुलाब–गेंदा–चमेली आद्यनेकवर्णानां पुष्पैः नव पात्राणि पूर्णानि कृत्वा भगवतो मस्तके पुष्पवृष्टिमकरोत्।

जैन-ठेकेदार एवं उनकी ध.प. श्रीमती विमला देवी को।

➢असली केसर से होली–

24 फरवरी को प्रातःकाल से ही जहाँ अपार जनता भगवान का मस्तकाभिषेक करने और देखने के लिए उमड़ रही थी, वहीं व्यवस्थापक बंधु मस्तकाभिषेक की सामग्री तैयार करने में व्यस्त थे। बाराबंकी निवासी श्री सुशील कुमार जैन एवं उनके सहयोगियों ने जयपुर से पधारे स्वयंसेवकों की सहायता से सभी प्रकार के रस, दूध आदि वस्तुएँ समय पर प्रदान कर मस्तकाभिषेक कार्यक्रम सफल बनाया।

सुबह से घिसी जा रही ढेर सारी केशर गाढ़े सुर्ख रंग में जब मंच पर आई, तब सभी भक्तों का मन ललचा उठा और सबके मुंह से अनायास गीत के स्वर फूट पड़े **''केशरिया केशरिया, आज प्रभु का रंग केशरिया''**। इस स्वर लहरी के मध्य 500 ग्राम केशर, जिसे घिसने पर पूरा घड़ा भर गया था, उस काश्मीरी केशर से अभिषेक किया मांगीलाल बाबूलाल जैन पहाड़े-हैदराबाद ने। तब तो भगवान ऋषभदेव अपने असली रंग में आ गए थे। जैसा कि चैत्यभक्ति में उनके शरीर का वर्ण तपाये स्वर्ण के समान माना गया है। उगते हुए सूर्य की प्रभा के समान उस समय का वर्ण वास्तव में इतना मनमोहक था, जिसे लेखनी से पन्नों पर उतारा नहीं जा सकता है।

केशर अभिषेक के बाद गुलाब, गेंदा, चमेली आदि अनेक रंगों के पुष्पों को नई टोकरी में भरकर भगवान के मस्तक पर पुष्पवृष्टि की अतरसेन सत्येन्द्र कुमार जैन-जगाधरी वालों ने।

इतस्तु मन्दिरस्यान्तः पर्याप्तसमयपर्यन्तं भक्तगणाः भगवतोपरि पुष्पवृष्टौ लीनाः आसन् तत्र च बहिः अयोध्यायाः राजा पप्पू भैया विशेष वायुयानेन मन्दिरस्योपरि प्रचुरां पुष्पवृष्टिं कृत्वा महापुण्यार्जनमकरोत्। अस्मिन्नेव क्रमे डाक्टर विनयकुमारजैनः बाराबंकी निवासी सपरिवारं मंगलां आरतिकां विधातुं सौभाग्यं प्राप्तवान्। सुगन्धितजलस्य च धारा टिकैतनगर निवासिनौ प्रद्युम्नकुमारो जैनः–छोटी शाहः, कैलासचन्द्र जैनः सर्राफ इति द्वौ महाशयौ प्रवाहितवन्तौ।

प्रातः 11 वादनसमयात् प्रारब्धा महामस्तकाभिषेकशृंखला समाप्ता भवत् सायं पंचवादनसमये, तदा पूर्णकुंभेन महाशान्तिधारां श्री विजय कुमारो जैनः दरियागंज दिल्ली निवासी सपरिवार प्रवाहितामकरोत्। आर्यिकया गणिन्या ज्ञानमत्या शुद्धोच्चारणपूर्वकायामस्यां शान्तिधारायां विश्वशान्तिः जनकल्याणस्य च भावना मुखरिताभवत्।

महामस्तकाभिषेकस्य कार्यक्रमेऽस्मिन् श्री रवीन्द्रो जैनः मुम्बई निवासी स्व सुन्दराणि गीतानि प्रस्तुतान्यकरोत्।

अनेन प्रकारेण केसरीवर्णस्य होलिकाया पश्चात् सम्पूर्णदेशस्य श्रद्धालवः जयतु आदीश्वरो जयतु ऋषभदेवः इत्यादि जयध्वनिमकुर्वन्। अयोध्यायाश्चास्यां वसुन्धरायां प्रथम बारं आयोजितोऽयं महामस्तकाभिषेकः आशातीतसफलतापूर्वकं निर्विघ्नतया सम्पन्नोऽभवत्।

इधर तो अंदर काफी देर तक भक्तगण भगवान के ऊपर पुष्पवृष्टि करते रहे और उधर बाहर अयोध्या के राजा पप्पू भैय्या ने विशेष वायुयान के द्वारा मंदिर के ऊपर खूब पुष्पवृष्टि कर पुण्यार्जन किया। इसी क्रम में डॉ.विनय कुमार जैन-बाराबंकी ने सपरिवार मंगल आरती करने का सौभाग्य प्राप्त किया एवं सुगंधित जल की धारा टिकैतनगर निवासी प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी शाह) एवं कैलाशचंद जैन सर्राफ (लखनऊ) ने की।

प्रातः 11 बजे से प्रारंभ हुई महामस्तकाभिषेक शृंखला ने विराम लिया सायं 5 बजे, तब पूर्णकुंभ से महाशांतिधारा श्री विजय कुमार जैन दरियागंज-दिल्ली वालों ने सपरिवार किया। परमपूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि के शुद्धोच्चारणपूर्वक हुई इस शान्तिधारा में विश्वशांति एवं जनकल्याण की भावना प्रचारित हुई।

मस्तकाभिषेक के इस कार्यक्रम में रवीन्द्र जैन-मुम्बई ने अपने सुन्दर गीत प्रस्तुत किए, जिनके बोल निम्न प्रकार थे–

1. आओ आओ रे मेरे संग आओ रे,

गुण ऋषभदेव के गाओ रे।

2. आदिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक।

इस प्रकार केशरिया होली खेलते हुए देश भर के श्रद्धालु भक्त **जय आदीश्वर जय वृषभेश्वर** के नारे लगाते रहे एवं अयोध्या की वसुंधरा पर प्रथम बार आयोजित यह महामस्तकाभिषेक आशातीत सफलताओं के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

महामस्तकाभिषेकस्य पावनप्रसंगेऽस्मिन् दिनांके 24 फरवरी दिने एव संयोगवशात् अयोध्यायां परमपूज्यआचार्य श्री 108 सुमतिसागरस्यापि संघेन सह मंगलपादार्पणमभूत् आचार्यवर्यश्च संघेन सह शुभागमनं कृत्वा अभिषेकसमारोहमद्राक्षीत् भक्तेभ्यश्चाशीर्वादं ददौ।

उत्तरप्रदेशदूरदर्शनस्य कार्यक्रमस्य प्रसारणहेतवे लखनऊनगरात् श्रीमती सुधाजिंदलाः दूरदर्शनकैमरादलं नीत्वा आगच्छत्, फैजाबाद आकाशवाण्या च आकाशवाणी प्रसारणहेतवे डाक्टर दिलीप जैनः रेकार्डिंग करणाय तत्रस्थमहानुभावैः साकमागच्छत्। आकाशवाणी–फैजाबादनगरात् सम्पूर्णाः कार्यक्रमाः प्रसारिताः अभवन्। लखनऊआकाशवाण्या च दिनांके 25 फरवरी दिने सायं 5:50 वादनसमयात् 6.20 वादनकालपर्यन्तं दिनांक 24 फरवरी दिनस्य च महामस्तकाभिषेकस्य कार्यक्रमः 20 फरवरीदिने सभानामपि कार्यक्रमः प्रसारितोऽभवत्।

महामस्तकाभिषेकसमारोहे कलशव्यवस्थापकः श्री सरोजकुमारो जैनः फतेहपुरनिवासी यः समिते महामंत्री अप्यासीत्, सः सुचारुरीत्या कलशानां वितरणं क्रमानुसारेणाकरोत्। श्री प्रकाशचन्द्रजैनः, श्री विमलचंद जैनः सनावद निवासी राकेश जैनश्च मवाना निवासी, एतौ द्वौ अभिषेकस्थले व्यवस्था स्थापने सक्रियं सहयोगं दत्तवन्तौ, येन समस्ताः एव भक्तगणाः निर्विघ्नतया अभिषेकं विधातुमानन्दं प्राप्तवन्तः।

श्री ऋषभदेवमहामस्तकाभिषेकः योऽयोध्यायाः प्रथमः प्रमुखश्च कार्यक्रमः आसीत्, तस्य विषयेमया संक्षिप्तविवरणं यथादृष्टं तथैव प्रस्तुतं अकरवम्। एतदतिरिक्तं मस्तकाभिषेकात्

मस्तकाभिषेक के इस पावन अवसर पर 24 फरवरी को ही संयोगवश अयोध्या में परमपूज्य आचार्य श्री 108 सुमतिसागर महाराज का ससंघ मंगल पदार्पण हुआ और आचार्य महाराज ने ससंघ पधारकर अभिषेक समारोह देखा तथा भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किया।

उत्तरप्रदेश दूरदर्शन से कार्यक्रम का प्रसारण करने हेतु लखनऊ से श्रीमती सुधा जिंदल टी.वी. कैमरा टीम लेकर पधारीं तथा फैजाबाद आकाशवाणी से रेडियो प्रसारण हेतु डॉ. दिलीप जैन रेकार्डिंग कराने के लिए वहाँ के महानुभाव को साथ लाए। आकाशवाणी फैजाबाद से 19, 20, 23 और 24 फरवरी के पूरे कार्यक्रम रिले हुए तथा लखनऊ से दिनाँक 25 फरवरी को शाम 5.50 बजे से 6.20 बजे तक (आधा घंटा) 24 फरवरी का महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम एवं 20 फरवरी, 23 फरवरी की सभाओं का प्रसारण भी हुआ।

मस्तकाभिषेक समारोह में कलश व्यवस्थापक श्री सरोज कुमार जैन-फतेहपुर, संयुक्त महामंत्री महोत्सव समिति ने सुचारू ढंग से कलशों का आवंटन राशिक्रम के अनुसार किया तथा श्री प्रकाशचंद जैन सर्राफ, विमलचंद जैन-सनावद एवं राकेश जैन-मवाना (मेरठ) ने अभिषेक स्थल पर व्यवस्था बनाने में सक्रिय सहयोग प्रदान किया अतः निर्विघ्नरूप से सभी भक्तगणों ने मस्तकाभिषेक करने का आनंद प्राप्त किया।

श्री ऋषभदेव मस्तकाभिषेक, जो अयोध्या का प्रमुख और प्रथम कार्यक्रम था, उसके बारे में आँखों देखा संक्षिप्त चित्रण यहाँ मैंने प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त मस्तकाभिषेक से पूर्व

पूर्वं (19 फरवरीतः 23 फरवरी 1994 पर्यन्तं) अयोध्यायाः वसुन्धरायां ''जिनबिम्ब–पंचकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सवोऽपि संपन्नोऽभवत्, यस्मिन्ननेकराजनेतारः समागत्य मात्राऽऽशीर्वादं प्राप्तमकुर्वन्। 20 फरवरी दिने उत्तर प्रदेशस्य मुख्यमंत्री श्री मुलायमसिंह यादवः अयोध्यायाः विकासहेतवे काश्चित् घोषणाः अपि अकरोत्, याः निम्नलिखिताः सन्ति–

1. अयोध्यायां ''भगवान् ऋषभदेवनेत्रचिकित्सालयस्योद्घाटनं'' **भविष्यति।**

2. राजघाट राजकीय उद्यानस्य नाम ''ऋषभदेव उद्यानं'' **भविष्यति।**

3. फैजाबादस्य अवधविश्वविद्यालये ''ऋषभदेवजैनचेयर'' **इत्यस्य स्थापनायै शासनपक्षतः 25 लक्षरूप्यकाणामनुदानं घोषितम्।**

4. अयोध्यायां ''अवधप्रेसक्लब'' **इत्यस्य स्थापनायै भवननिर्माणाय च 10 लक्षरुप्य–काणामनुदानं घोषितम्।**

तासां घोषणानां पश्चात् मुख्यमंत्री अकथयत् यत् अयोध्यायै एकां महतीं योजनां जनकल्याणस्य दृष्ट्या निर्मितां कर्तुं प्रयत्नशीलोऽस्मि। समये तामपि घोषितां कृत्वा क्रियान्वितां कर्तुं मम तीव्रभावना अस्ति।

श्री मुलायमसिंहस्य भाषणस्य पश्चात् गणिनी श्रीज्ञानमती माता स्व आशीर्वादात्मक प्रवचने जनमानसं सम्बोधितं कुर्वन्ती अकथयत्–भगवान् ऋषभदेवोऽस्यामेवायोध्याभूमौ प्रजां जीवनं जीवितुं कलां अशिक्षयत्। असि–मसी–कृष्यादि षट्क्रियाभिः कर्म कर्तुं शिक्षां

(19 फरवरी से 23 फरवरी 1994 तक) अयोध्या की वसुन्धरा पर ''जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव'' भी संपन्न हुआ, जिसमें अनेक राजनेताओं ने पधारकर पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त किया। 20 फरवरी को उ.प्र. के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह जी ने अयोध्या क्षेत्र के विकास हेतु कुछ घोषणाएँ भी कीं, जो इस प्रकार हैं–

1. अयोध्या में **'भगवान ऋषभदेव नेत्र चिकित्सालय''** खोला जाएगा।
2. राजघाट राजकीय उद्यान का नाम **''ऋषभदेव उद्यान''** कर दिया जायेगा।
3. फैजाबाद के अवध विश्वविद्यालय में **''ऋषभदेव जैन चेयर''** की स्थापना हेतु 25 लाख रुपयों का सरकार की ओर से अनुदान घोषित किया।
4. अयोध्या में **''अवध प्रेस क्लब''** की स्थापना और भवन निर्माण हेतु 10 लाख रुपये का अनुदान घोषित किया।

इन घोषणाओं के पश्चात् मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मैं अयोध्या के लिए एक बहुत बड़ी योजना जनता के कल्याण की दृष्टि से बना रहा हूँ। समय आने पर उसे भी शीघ्र ही घोषित करके क्रियान्वित करने की तीव्र भावना है।

श्री मुलायम सिंह जी के भाषणोपरांत पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने आशीर्वादात्मक प्रवचन में जनमानस को सम्बोधित करते हुए कहा– भगवान् ऋषभदेव ने इसी अयोध्या की भूमि पर प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई थी। असि, मसि, कृषि आदि षट् क्रियाओं के द्वारा कर्म

प्रादात्। अतएवास्माकमेषां धरित्री कर्मभूमिरिति कथ्यते। महापुरुषाणां सिद्धान्ताः प्रतिप्राणि–कल्याणाय भवन्ति, कस्मैचिद्व्यक्तिविशेषाय न भवन्ति। सा अकथयत् यत् यथा वृक्षः भयंकराय सिंहाय दयायुक्तायै गवे च स्वच्छायां प्रददाति, तथैव सनातन जैनधर्मोऽपि सर्वेभ्यः आश्रयं प्रदाय पतितमपि पावनं करोति। इयं हर्षस्य वार्तास्ति यत् मुलायमसिंहो जन्मनैव शाकाहारी विद्यते। अधुना अयं स्वाहिंसककार्यकलापैः संसारेऽपि अहिंसाधर्मस्य प्रचुरं प्रचारं करोतु अयमेव तस्मै मम मंगल आशीर्वादोऽस्ति।

सनावदनिवासी श्रीचन्द्रो जैनः सप्तमप्रतिमामगृह्णात्–**अयोध्यायां भगवतो दीक्षाकल्याणकस्य शुभावसरे सनावद निवासी धर्मनिष्ठः श्रावकः श्रीचन्द्रो जैनः सप्तमप्रतिमायाः व्रतानि पूज्यमातुः सान्निध्ये ग्रहणमकरोत्। अयं सपत्नीक 1987 वर्षे क्षुल्लकमोतीसागरस्य दीक्षा समये हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपे आयोजितायाः पंचकल्याणकप्रतिष्ठायाः अवसरे पितरौ भूत्वा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतमगृह्णात्। पुनः अयोध्यायाः अस्मिन्नेव चतुर्मासे मातुः संघे एवं स्थित्वा अत्रापि कार्ये पूर्णं योगदानं प्रायच्छत्। तस्य सप्तमप्रतिमा ग्रहणकालेऽनेकाः गण्यमान्याः तस्य स्वागतमकुर्वन्।**

ज्ञातमस्ति यदयं ब्रह्मचारी केषांचित् वर्षाणां पश्चात् आचार्य श्रीरयणसागरात् दीक्षां गृहीत्वा ''मुनिरमेयसागरोऽभवत्'', पुनः अयं 2001 वर्षे समाधिमरणपूर्वकं नश्वरं शरीरं त्यक्तवान्।

करना बताया था। इसीलिए हमारी इस धरती को कर्मभूमि कहा जाता है। महापुरुषों के सिद्धान्त हर प्राणी के लिए होते हैं, किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार पेड़ खूंखार शेर और दयामयी गाय दोनों को समान रूप से छाया प्रदान करता है, उसी प्रकार सनातन जैनधर्म भी सभी को आश्रय देकर पतित को भी पावन बनाता है। यह प्रसन्नता की बात है कि मुलायम सिंह जी जन्म से ही शाकाहारी हैं, अब ये अपने अहिंसक कार्यकलापों से संसार में भी अहिंसा धर्म का खूब प्रचार करें, यही मेरा उनके लिए मंगल आशीर्वाद है।

➢श्रीचन्द्र जैन (सनावद) ने सप्तम प्रतिमा ग्रहण की–

अयोध्या में भगवान के दीक्षा कल्याणक के मंगल अवसर पर सनावद (म.प्र.) निवासी धर्मनिष्ठ श्रावक श्रीचंद जी ने सप्तम प्रतिमा के व्रत पूज्य माताजी से ग्रहण किए। आपने सपत्नीक सन् 1987 में क्षुल्लक मोतीसागर जी की दीक्षा के समय हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर माता-पिता बनकर आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया था पुनः अयोध्या के इस चातुर्मास में माताजी के संघ में ही रहकर यहाँ के कार्य में भी पूर्ण योगदान दिया। उनके सप्तम प्रतिमा लेने पर अनेक गणमान्य महानुभावों ने उनका स्वागत किया।

ज्ञातव्य है कि कुछ वर्षों बाद ये ब्र.जी आचार्य श्री रयणसागर जी महाराज से दीक्षा ग्रहण कर ''मुनि अमेयसागर'' बने पुनः इन्होंने सन् 2001 में समाधिमरणपूर्वक नश्वर शरीर का त्याग किया।

लखनऊ राजधान्यां व्यापकधर्मप्रभावना–**लखनऊ वसुन्धरा स्वराजमातुः रूपेण पूज्यगणिन्याः ज्ञानमत्याः भावसिक्तं स्वागतं तु अकरोदेव, दिनाँके 1मई 1984 वर्षे तस्याः दीक्षा जयन्त्याः समारोहो रवीन्द्रालये योजयित्वा त्यागस्यादर्शमपि प्रस्तुतमकरोत्। निरन्तरं द्विमासपर्यन्तं लखनऊ नगरस्य सर्वेषामुपनगरेषु आर्यिका संघस्य पदार्पणेन महती धर्म प्रभावनाऽभवत्। एतेन प्रवासेन जनताऽजानात् यत् आचार्यसंघः मुनिसंघश्च इव** ''गणिनी आर्यिकासंघोऽपि'' **त्यागज्ञानयोर्महिमाशाली भवति। अस्मात् पूर्वं लखनऊ नगरे सम्पूर्णेऽवधप्रान्ते च कदापि कस्याप्यार्यिका संघस्य पदार्पणं भवितुं नाशक्नोत्।**

इन्दिरानगरे श्रावकसम्मेलनं यदा दातारः आभूषणान्यपि त्यागाय प्रदत्तान्यकुर्वन्–**लखनऊ नगरस्यैकमुपनगरमिन्दिरा नगर कालोनी विद्यते, तत्र विशिष्ट शिक्षितं जैनसमुदायं लब्ध्वा पूज्या मातापि स्वज्ञानामृतस्य वितरणमुद्घाटितहृदयेनाकरोत्। पंच दिनानि तत्र विभिन्नविषयेषु संगोष्ठ्यः प्रचलिताः पुनः 19 जून 1994 दिने तत्रैकं श्रावकसम्मेलनमभवत्, यस्मिन् अनेक वक्तव्यैः सार्धमेव वयमपि जनान् सम्बोधितान् अकुर्म। तत्रैकस्य जिनमन्दिरस्य निर्माणं तेषु दिनेषु प्रगतिशीलमासीत्। प्रवचनस्य मध्ये काश्चित् महिलाः एतावत्या भावुकाः अभवन् यत् ताः स्वस्वर्णाभूषणान्यपि स्वशरीरादवतार्य मन्दिरनिर्माणाय दानेऽदुः। त्यागस्य दानस्य चेदमुदाहरणं प्रत्येक श्रावक–श्राविकाभ्योऽनुकरणीयं विद्यते, पश्यन्–पश्यन् तत्र मन्दिराय लक्षाधिकरुप्यकाणामनुदानं मन्दिरनिर्माणाय संचितमभूत्।**

➢राजधानी लखनऊ में व्यापक धर्म प्रभावना–

लखनऊ की वसुन्धरा ने अपनी राजमाता के रूप में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का भावभीना स्वागत तो किया ही और 1 मई 1994 को उनकी दीक्षा जयंती का समारोह रवीन्द्रालय में मनाकर त्याग का आदर्श भी प्रस्तुत किया। लगातार 2 माह तक लखनऊ की सभी कॉलोनियों में आर्यिका संघ के पदार्पण से महती धर्म प्रभावना हुई। इस प्रवास से जनता को ज्ञात हो सका कि आचार्य संघ एवं मुनि संघों के समान ही **'गणिनी आर्यिका संघ'** भी त्याग और ज्ञान के माध्यम होते हैं। इससे पूर्व लखनऊ तथा पूरे अवध में आज तक कभी किसी आर्यिका संघ का पदार्पण नहीं हुआ था।

➢इन्दिरा नगर में श्रावक सम्मेलन (जब दान के लिए स्वर्णाभूषण भी उतरने लगे)–

लखनऊ की एक कॉलोनी इन्द्रानगर है, जहाँ विशेष शिक्षित जैन समुदाय को पाकर पूज्य माताजी ने भी अपने ज्ञान का अमृत खुले दिल से वितरित किया। 5 दिन तक वहाँ विभिन्न विषयों पर संगोष्ठी चली पुनः 19 जून 1994 को एक श्रावक सम्मेलन हुआ, जिसमें अनेक वक्ताओं के साथ ही हम लोगों ने भी श्रावकों को सम्बोधित किया। वहाँ एक विशाल जिनमंदिर का निर्माण उन दिनों चल रहा था। प्रवचन के मध्य कुछ महिलाएँ इतनी भावुक हो उठीं कि उन्होंने अपने स्वर्ण आभूषण भी उतार-उतारकर मंदिर निर्माण के लिए दान कर दिये। त्याग और दान का यह अनुपम उदाहरण प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिए अनुकरणीय है, जब देखते ही देखते वाणी के जादू से लाखों रुपये का अनुदान मंदिर के लिए एकत्रित हो गया।

वर्षाणां मतभेदो यस्याः प्रेरणया स्नेहबन्धने परिवर्तितोऽभवत्–**बाराबंकी निवासिनां विशेष आग्रहेण पूज्यामाताऽऽर्यिका ज्ञानमती अत्र कतिचिद्भ्यो वर्षेभ्यः प्रचलितं पारस्परिकं मतवैभिन्य–सम्बन्धिविवादद्वयं महत्या कुशलतया अपहृत्य पारस्परिक सौहार्दस्य स्थापनामकारयत्।**

विवादग्रस्तं पक्षद्वयं मातरं करबद्धां प्रार्थनामकरोत् यद सामाजिकजनेषु निर्वाचनसम्बन्धी महान् विवादो वर्तते, येन पर्याप्तक्लेशोऽस्ति द्वितीयश्च संघर्षो महावीरविद्यालयस्य अस्ति। एतयोर्द्वयोर्विवादयोः कारणात् समाजे मतभेदः मनोभेदस्य कषायस्य च वातावरणं विद्यते, विवादमेतत् वयं भवत्याः आशीर्वादेन समाप्तुमिच्छामः। महत्या प्रसन्नतायाः विषयो अयमस्ति यत् अत्र प्रबुद्धाः जनाः इदं न्यवेदयन् यत् मातः! भवत्याः यः आदेशो भविष्यति, तं वयं सर्वोच्चन्यायालयस्य निर्णयादपि अधिकं महत्त्वं प्रदास्यामः, पुनः एवमभूत्।

पक्षद्वयस्य वार्तायाः श्रवणानन्तरं माता यमपि निर्णयं प्रादात्, तं पक्षद्वयं स्वीकृतमकरोत् परस्परं च कण्ठमिलनपूर्वकं विवादं समाप्तमकरोत्। वर्षद्वयात् यत्कार्यभारः नवीना समितिं न प्राप्नोत्, तत् प्राचीनसमितिः नवीनसमित्यै अदात्। यच्च गोलकमनुद्घाटितमासीत् तत् प्राचीनसमितिः नवीनसमित्यै समर्पयत्।

बाराबंकी वास्तव्यो जैनसमाजोऽद्यापि मातरं प्रति कृतज्ञोऽस्ति, अयं चानुभवति यत् मातुः संघस्य पदार्पणेनास्माकं लुप्तैक्यं पुनः प्राप्तमभूत्। गुरुसान्निध्येन प्राप्तायाः सुभिक्षतायाः अयमनुपममुदाहरणमस्ति।

➢वर्षों का मनमुटाव जिनकी प्रेरणा से स्नेहबंधन में बदल गया–

बाराबंकी वालों के विशेष आग्रह पर पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने यहाँ कई वर्षों से चले आ रहे आपसी मनमुटाव संबंधी दो विवादों को बड़ी ही कुशलतापूर्वक समाप्त करवाकर आपसी सौहार्द्र की स्थापना कराई।

विवादग्रस्त दोनों पक्षों के लोगों ने माताजी से करबद्ध निवेदन किया कि यहाँ समाज के लोगों में चुनाव संबंधी बहुत बड़ा विवाद है, जिससे काफी तनाव है तथा दूसरा संघर्ष महावीर विद्यालय का है। इन दोनों विवादों के कारण समाज में आपसी मतभेद-मनभेद व कषाय का वातावरण बना हुआ है, इसे आपके आशीर्वाद से हम लोग समाप्त करना चाहते हैं। प्रशंसा की बात यह रही कि अनेक प्रबुद्ध लोगों ने यह कहा कि पूज्य माताजी! आपका जो भी आदेश होगा, हम उसे सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से भी अधिक आदरपूर्वक स्वीकार करेंगे, पुनः हुआ भी यही।

दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद पूज्य माताजी ने जो भी निर्णय दिया, उसे सभी लोगों ने मान्य किया और आपस में एक-दूसरे के साथ गले मिलकर विवाद समाप्त कर दिया। दो वर्षों से जो चार्ज विद्यालय कमेटी को नहीं प्राप्त हुआ था, गोलक नहीं खुली थी, वह सब सम्पूर्ण चार्ज नई कमेटी को पुरानी कमेटी ने सौंप दिया।

बाराबंकी की जैन समाज आज भी पूज्य माताजी के प्रति पूर्ण कृतज्ञ है तथा यह महसूस करती है कि माताजी के संघ सहित पदार्पण से हमारी समाज की खोई एकता पुनः स्थापित हुई है। गुरुसानिध्य से प्राप्त होने वाली सुभिक्षता का यह अनुपम उदाहरण है।

स्नेहस्य विकटा स्थितिः—**बाराबंकी समाजस्य प्रमुखाः भक्तगणाः मातरं महान्तमनुरोधं कृतवन्तः यत् मातः! भवती अत्र चतुर्मासं विधाय अस्माकमैक्यस्योदाहरणं पश्यतु अस्मभ्यं च संघटितान् भूत्वा संघे सेवायाः अवसरं पददातु। अस्मिन् मध्ये एव लखनऊनगरस्य चारबागोपनगरात् धरणेन्द्र–हंसकुमार, श्रीमती त्रिशला जैनाः समाजस्य च प्रमुखाः नरनार्यः बाराबंकीमागत्य मातरं लखनऊ नगरे चतुर्मासं कर्तुं न्यवेदयन् महत्या च प्रभावनाया चतुर्मासं कारयितुं आश्वासं प्रदानं कुर्वन्तः श्रीफलं समर्पयन्। अत्र च टिकैतनगरस्य जनाः अपि आशान्विताः आसन्, यत् वर्षेऽस्मिन् माता अस्माकं ग्रामायैव चतुर्मासस्य लाभं प्रदास्यति अतस्तेऽपि विश्वासपूर्वकं बाराबंकीनगर्यां स्वश्रीफलं गृहीत्वाऽऽगच्छन्। सर्वे संघे स्वप्रभावं स्थापयितुं पूर्णप्रयासेषु संलग्नाः अभवन्। अधुना गतवर्षेण इव स्थितिः पुनः प्रकटिता अभवत्, लखनऊ निवासिनः राजधान्याः गरिमानुरूपेण व्यापिकां प्रभावनायाः वार्तामकुर्वन्, तैः सह बाराबंकीनगरस्य प्रतिष्ठिता श्रावकाः अपि स्वनगरस्य मोहं त्यक्त्वा लखनऊनगरे व्यापकप्रभावनायाः अनुमानं कृत्वा मातरं लखनऊचतुर्मासाय आग्रहं कृतवन्तः। तस्मिन् दिने अधिकाधिकोहापोहस्य स्थितेः कारणात् माता कमपि स्व निर्णयं नाश्रावयत्। पुनः द्विचतुर्दिनानां पश्चात् टिकैतनगरनिवासिनां पूर्णविश्वाससमन्वितमाग्रहं श्रीफलं च दृष्ट्वा तस्याः हृदयं द्रवितमभूत्, अस्मिन् वर्षे च टिकैतनगर चतुर्मासस्य सा पुष्टां स्वीकृतिं प्रादात्।**

➢**स्नेह की विकट स्थिति–**

बाराबंकी समाज के प्रमुख भक्तगण अब पूज्य माताजी से भारी अनुरोध करने लगे कि माताजी! अब आप यहाँ चातुर्मास करके हम लोगों की एकता का नमूना देखें तथा हमें संगठित होकर संघसेवा का अवसर प्रदान करें। इसी बीच लखनऊ चारबाग से धरणेन्द्र जैन, हंसकुमार जैन, श्रीमती त्रिशला जैन तथा समाज के अनेक प्रमुख नर-नारियों ने बाराबंकी पधारकर माताजी से लखनऊ चातुर्मास हेतु अनुरोध किया और भारी प्रभावना के साथ वहाँ चातुर्मास कराने का आश्वासन प्रदान करते हुए श्रीफल चढ़ाया। इधर टिकैतनगर के लोग तो पूर्व से ही आशान्वित थे कि इस बार पूज्य माताजी हमारे गांव को ही चातुर्मास का लाभ देंगी अतः वे लोग भी विश्वासपूर्वक बाराबंकी में अपना नारियल चढ़ाने आए। वे सभी अपने-अपने ढंग से संघ पर प्रभाव डालने के पूर्ण प्रयासों में लग गए। अब पिछले वर्ष जैसी ही स्थिति एक बार पुनः प्रगट हो गई, लखनऊ के श्रावकगण राजधानी की गरिमा के अनुरूप व्यापक प्रभावना आदि की बातें करने लगे और उनके साथ बाराबंकी के प्रतिष्ठित श्रावकगण भी अपने शहर का मोह छोड़कर लखनऊ चातुर्मास में संभावित प्रभावना का अनुमान लगाते हुए माताजी से लखनऊ के लिए ही आग्रह करने लगे। उस दिन अत्यधिक ऊहापोह की स्थिति के कारण पूज्य माताजी ने अपना कोई निर्णय नहीं सुनाया पुनः 2-4 दिन के बाद टिकैतनगर के लोगों का आग्रह तथा पूर्ण विश्वास समन्वित श्रीफल देखकर उनका हृदय पसीज गया और उस वर्ष टिकैतनगर चातुर्मास की उन्होंने पक्की स्वीकृति प्रदान कर दी।

अयं लघुग्रामः स्वकन्यायाः जगन्मातुः रूपेण प्रथमं चतुर्मासं कारयित्वा धन्यस्तु अभवदेव, अत्र निवासिभ्यः यस्य ज्ञानस्य लाभः एतेषु दिनेषु प्राप्तः सोऽप्यभूतपूर्वं एवासीत्

भव्यानां भाग्यवशात् संयोगवशाच्च–**वस्तुतः इदं टिकैतनगरनिवासिनां भाग्यमेवास्ति यत् पूज्या गणिनी आर्यिका श्रीः स्वयं स्वमुखारविन्देन विविधदुर्लभविषयाणां कक्षाभ्यः तलस्पर्शिज्ञानं प्रापयित्वा सा तेषां परीक्षां च कृत्वा अभीक्ष्णज्ञानोपयोगस्य च सन्देशं प्रादात्।**

अनेनैव प्रकारेण दशलक्षणधर्मस्य प्रवचनानि हट्टस्य चतुष्पथेषु निर्मितेषु मण्डपेषु अभवन् यैः हिन्दू–मुस्लिमाः सर्वे एव लाभं प्राप्नुवन् जैनसाध्व्याश्च विशालं व्यापकं सर्वोदयस्वरूपमवलोक्य स्वजीवनं धन्यमकुर्वन्।

1994 वर्षीयश्चतुर्मासः जन्मभूम्यां टिकैतनगरे–**यद्यपि लखनऊनगरे प्रवासस्य मध्ये नागरिकाः लखनऊनगरे चतुर्मासं कर्तुं मात्रे श्रीफलं समर्प्य न्यवेदयन् किन्तु 1993 वर्षे माता श्रीः टिकैतनगराय 99 प्रतिशतं चतुर्मासस्य स्वीकृतिं प्रदाय एकं प्रतिशतं विकल्पेऽयोध्यातीर्थक्षेत्रे चतुर्मासमस्थापयत् तदा टिकैतनगरनिवासिनो जनाः अत्यन्तमेव विषण्णाः अभवन्। अतः 1994 वर्षस्य चतुर्मासं माताश्रीः टिकैतनगरेऽकरोत्। चतुर्मासस्य मध्ये अनेकप्रकारेण धर्मप्रभावनात्मकाः कार्यक्रमाः सम्पन्नाः अभवन्।**

वह छोटा सा गाँव अपनी कन्या का जगन्माता के रूप में प्रथम चातुर्मास कराकर धन्य तो हुआ ही, वहाँ के नर-नारियों को जो ज्ञान का लाभ इन दिनों प्राप्त हुआ, वह तो अभूतपूर्व ही था।

➢भवि भागनवश जोगे वशाय–

असलियत में इसे टिकैतनगर की जनता का भाग्य ही कहना पड़ेगा कि पूज्य गणिनी आर्यिकाश्री ने स्वयं अपने मुखारविन्द से अनेक दुर्लभ विषयों की कक्षाओं का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त कराकर उनकी परीक्षा ली एवं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का जीवन्त संदेश प्रदान किया।

इसी श्रृंखला में दशलक्षण पर्व के प्रवचन बाजार के चौराहे पर बनाए गए भव्य पांडाल में हुए, जिससे हिन्दू-मुसलमान सभी ने लाभ उठाया तथा जैन साध्वी का विशाल-व्यापक-सर्वोदय स्वरूप देखकर अपने जीवन को धन्य किया।

➢सन् 1994 का चातुर्मास जन्मभूमि-टिकैतनगर में–

यद्यपि लखनऊ प्रवास के मध्य वहाँ के नागरिकों ने लखनऊ में चातुर्मास करने हेतु पूज्य माताजी से अनेक बार श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया किन्तु चूँकि सन् 1993 में पूज्य माताजी ने टिकैतनगर में 99 प्रतिशत चातुर्मास की स्वीकृति देकर एक प्रतिशत की छूट में अयोध्या तीर्थ पर चातुर्मास कर लिया था, उस समय टिकैतनगर के लोग बहुत दुःखी हो गए थे अतः सन् 1994 का चातुर्मास पूज्य माताजी ने टिकैतनगर में किया। चातुर्मास के मध्य अनेक प्रकार के प्रभावनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

संभावितकलहो वास्तविका क्षमावणी संजाता–**यथा हि विंशतिवर्षेभ्यःटिकैतनगरे क्षमावाणी पर्वणो दिने सामाजिक संघर्षो निर्वाचनादीन् गृहीत्वा अवश्यमेवाभवत्। इयं भाविनी आशंका मातुः समक्षमागता तु साकथयत् क्षमावणी पर्व त्वात्मशुद्धये आगच्छति, अतोऽस्मिन् दिने निर्वाचनंलेखादीन् गृहीत्वा विवादो न भवितव्यः अतस्तस्मै किंचिदतिरिक्तं दिनं निर्धारितं कुर्यात्। इदं च पर्व अत्यन्तसौहार्देन पारस्परिक क्षमापूर्वकंमायोजयतु। पूज्यमातुरियं भावना सफला जाता क्षमावणी च चिरकालानन्तरं तत्र निर्विवादं महतोत्साहेन सम्पन्नाऽभवत्।**

मातुरियं शिक्षाऽन्ये समाजाः अपि गृहीत्वा सामाजिकनिर्वाचनानि, आर्थिकव्यवस्थादीनां कार्याणि पर्वणो दिने न कृत्वा अन्यसाधारणतिथिषु कुर्युः येनास्माकं पर्वाणि जनाः शालीनतया समायोजयितुं शक्नुयुः।

आचार्यश्रीवीरसागरचरणस्थापना–**आश्विन कृष्ण अमावस्यायाः दिने गणिन्याः आर्यिकायाः दीक्षागुरोः आचार्य वीरसागरस्य पुण्यतिथिरायोजिता। तस्याः प्रेरणया च मन्दिरे सुमेरु–पर्वतस्य समक्षं आचार्यश्रियश्चरणे विराजमाने कृते। अत्र जनाः अपश्यन् यत् 1954 वर्षे आचार्यो वीरसागरो अत्र टिकैतनगरे संघेन सहागच्छत् तस्य च करकमलाभ्यां भगवतो नेमिनाथस्य प्रतिमा वेदिकायां प्रतिष्ठापिताऽभवत्। अतः 40 वर्षाणां पश्चात् तस्य चरणयोः स्थापनया तस्य स्मृतिः प्रत्यग्राभवत्।**

➢संभावित कलह वास्तविक क्षमावणी बन गई–

जैसा कि बीसों वर्ष से टिकैतनगर में क्षमावणी पर्व के दिन सामाजिक संघर्ष चुनाव आदि किसी न किसी विषय को लेकर अवश्य हुआ करता था। यह भावी आशंका पूज्य माताजी के समक्ष भी आई तो उन्होंने कहा कि क्षमावणी पर्व तो आत्मशुद्धि के लिए आता है, इस दिन सामाजिक चुनाव या आर्थिक लेखा-जोखा लेकर नहीं बैठना चाहिए किन्तु इसके लिए कोई अतिरिक्त दिवस निर्धारित करें और यह पर्व अत्यन्त सौहार्द्र पूर्वक पारस्परिक क्षमायाचना करके मनावें। पूज्य माताजी की यह भावना सफल हुई और क्षमावणी पर्व चिरकाल पश्चात् वहाँ धूमधाम से बिना विवाद के सम्पन्न हो गया।

पूज्य माताजी की यह शिक्षा अन्य समाजों को भी ग्रहण करके सामाजिक चुनाव, आर्थिक व्यवस्था आदि के कार्य पर्व के दिन न करके अन्य साधारण तारीखों में करना चाहिए ताकि हमारे पवित्र पर्व शालीनता के साथ लोग मना सकें।

➢आचार्य श्री वीरसागर महाराज चरण स्थापना–

आश्विन कृष्णा अमावस्या को गणिनी आर्यिकाश्री के दीक्षागुरु आचार्य श्री वीरसागर महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई तथा उनकी प्रेरणा से मंदिर जी में सुमेरु पर्वत के समक्ष आचार्यश्री के चरण विराजमान किए गये। यहाँ लोगों ने बताया कि सन् 1954 में आचार्यश्री वीरसागर महाराज अपने संघ के साथ टिकैतनगर पधारे थे और उनके पावन करकमलों से भगवान नेमिनाथ की प्रतिमा वेदी में विराजमान हुई थी। सो अब 40 वर्ष बाद उनके चरणों की स्थापना से पुनः उनकी स्मृतियाँ ताजी हो गईं।

जन्मभूम्यामायोजिता षष्ठीपूर्तिः–**अयं मणि.कांचनसंयोगः एवास्ति यत् यत्र ज्ञानमत्याः मातुः अष्टवर्षाणां शैशवं व्यतीतमभवत् तत्रैव ज्ञानमती माता स्वजीवनस्य षष्टिवर्षाणि पूर्णान्यकरोत्। नगरवासिनो महतोत्साहेन तस्याः षष्ठीपूर्तिसमारोहं समायोजयन्। तदन्तर्गतं विविधकार्यक्रमैः सह संपूर्णदेशात् 61 श्रेष्ठिनः समामन्त्र्य सम्मानिता अभवन्। एतस्मिन्नवसरे उत्तरप्रदेशस्य राज्यपालः श्री मोतीलाल बोरा, कारागारमंत्री अवधेशप्रसादः फैजाबादस्य पूर्वविधायकः श्री जयशंकर पाण्डे आदयोऽनेकशासनप्रशासनजनाः आगच्छन्। विशेषवार्ता तु इयमासीत् यत् कारागारमंत्री अस्मिन्नवसरे कारागारस्य 61 बद्धान् जनान् मुक्तान् कर्तुं घोषणामकरोत् स्वात्मानं च मानवकल्याणपथि गमनस्य संकल्पमकरोत्।**

प्रस्थानस्य रोमांचकक्षणानि, अश्रुभिः आर्द्राणि शरीरमनांसि च–**चतुर्मासस्य समापनस्य क्षणानि यथा यथा समीपमागच्छन् तथा–तथा नगरनिवासिनां विह्वलतायां वृद्धिरभवत् अन्यतश्च सा विह्वलता मंगलविहारस्य दिनेऽश्रुपूरितरूपेण प्रस्फुटिताऽभवत्। आश्चर्यं, मया जीवने एतादृशं करुणक्रन्दनं कदापि न दृष्टम्। गतवर्षे त्वहमचिन्तयम् यत् तेभ्यः स्व निधेश्चतुर्मासस्यावसरो न प्राप्तः अतएव ते एतावन्तो दुःखिनो सन्ति किन्त्वधुना चतुर्मासस्य पश्चात् इतिहासपुरुषो जीवन्धरः इव स्वमातरं स्वनगराद् गन्तुमेव नैच्छन् स्वेच्छायाश्चा–सफलतया तेषां समीपे रोदनात् अतिरिक्तं कोऽप्युपायो नासीत्। पूज्यमातुः संघेन सह**

➢जन्मभूमि में मनाई गई षष्ठी पूर्ति–

यह एक मणि-कांचन संयोग ही माना जाएगा कि जहाँ आठ वर्ष का शैशव बीता, वहीं ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन के साठ वर्ष पूर्ण किए। नगरवासियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक उनके **''षष्ठिपूर्ति''** समारोह को मनाया। इसके अन्तर्गत कई कार्यक्रमों के साथ-साथ देशभर से आमंत्रित 61 श्रेष्ठियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री मोतीलाल जी वोरा, कारागार मंत्री-श्री अवधेश प्रसाद जी एवं फैजाबाद के पूर्व विधायक श्री जयशंकर पांडे आदि अनेक शासन-प्रशासन के लोग पधारे। विशेष बात यह है कि कारागार मंत्री ने इस अवसर पर जेल से 61 कैदियों को रिहा करने की घोषणा करते हुए स्वयं भी मानव कल्याण के पथ पर चलने का संकल्प लिया था।

➢विदाई के रोमांचक क्षण, आँसुओं से भीगे तन-मन–

चातुर्मास समापन के क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे थे, नगरवासियों की विह्वलता बढ़ती जा रही थी और आखिर वह मंगलविहार के दिन अश्रु सरिता रूप में फूट पड़ी। ओह! मैंने आज तक जीवन में ऐसा करुण क्रन्दन नहीं देखा। पिछले वर्ष तो मैं सोचती थी कि इन्हें अपनी निधि के चातुर्मास का लाभ न मिलने के कारण ये इतने दुखी हो रहे थे, किन्तु अब चातुर्मास होने के बाद इतिहास पुरुष जीवन्धर के समान अपनी माता को अपने नगर से जाने ही नहीं देना चाहते थे और अपनी इच्छा सफल होती न देख रोने के सिवाय उनके पास कोई चारा भी न था। जिनमंदिर से पूज्य

जिनमन्दिरात् निष्क्रमणकाले प्रत्येकश्रावकाः स्वगृहस्य समक्षं तस्याश्चरणप्रक्षालनं कुर्वन् तस्या आरतिकां कृत्वैव प्रस्फुटितं रोदनमकरोत्। एतेषु भावसिक्तेषु प्रस्फुटितक्षणेषु अस्माकं तु संघस्य जनानां निष्ठुरतायामपि न्यूनताभवत् केषुचित् च स्थानेषु तेषां नेत्राण्यपि सजलान्यभवन्। ग्रामस्य प्रत्येकबालः युवा वृद्धो महिला च बहु रोदनमकुर्वन्। वयं तु कर्तव्यविमूढाः भूत्वा सर्वेषां मोहलीलाऽपश्याम अनुभवं चाकुर्म यदेतेषां मनोवेदनां वर्षाणि यावत् कोऽपि दूरीकर्तुं न प्रभविष्यति। अत्यन्तकठोरहृदयकारणादपि तस्मिन् समये पूज्यमाता तेषां सर्वेषां शोकस्योद्वेलितां सरितां दृष्टुं काठिन्यमन्वभवत्।

युवकानां च भजनपंक्तयः निरन्तरं 6 किलोमीटरपर्यन्तं गुंजायमाना अभवन्।

एनं बालस्वत्वं कथयामि धर्मस्नेहं वा। अद्याप्यहं यदा तस्य दृश्यस्य स्मरणं करोमि तु सम्पूर्णं शरीररोमांचितं भवति पुनः एकक्षणाय तामेव वीतरागावस्थां प्राप्तुं मनः आतुरं भवति यत्र रंचमात्रमपि मोहकर्मपीडितां कर्तुं नाशक्नोत्। यतो हि मोक्षप्राप्तिस्तु तस्यामवस्थयामेव प्राप्तुं शक्नुयात्।

प्राचीनकथानकानुसारेण यदा बलरामो कोलाहलं विलोक्य स्वरूपं प्रत्याकर्षणं दृष्ट्वा ध्याने उपस्थितं विघ्नं समवलोक्य जनानां स्नेहात् स्वात्मानं विमुखं कर्तुं मांगीतुंग्यां (महाराष्ट्रे) पर्वतं गत्वा वनं प्रति स्वमुखं विधाय जनतां प्रति च स्व पृष्ठं कृत्वा ध्यानेऽवस्थितोऽभूत् तथैव माताश्री– रपि स्वकर्तव्यस्य निर्वाहं कृत्वा सम्पूर्णनगरवासिनां स्नेहेन स्वात्मानं विमुखं कर्तुं प्रचलिता अन्यां

माताजी के संघ सहित निकलते ही प्रत्येक श्रावक अपने घर के समक्ष उनके चरण प्रक्षाल करते हुए आरती करते ही फूट-फूट कर रो पड़ते। इन भावभीने क्षणों में हमारे संघ के लोगों की भी निष्ठुरता में कमी आ गई और कई जगह उन सबकी आँखें भी सजल हो गईं। गाँव का हर वृद्ध,बालक, महिला, युवा सभी तो सिसकियाँ भर-भर कर रो रहे थे। हम तो किंकर्तव्य विमूढ़ हो सबके मोह की लीला देख रहे थे और महसूस कर रहे थे कि इनकी अन्तर्वेदना वर्षों तक कोई दूर नहीं कर पाएगा। अत्यन्त कठोर हृदय होने के बावजूद भी उस समय पूज्य माताजी उन सबके शोक की उमड़ती सरिता को देख पाने में कठिनाई महसूस कर रही थीं।

युवकों की भजन पंक्तियाँ निरन्तर 6 किमी. तक गूंजती रहीं और हजारों नर-नारियों को रुलाती रहीं–

''माता तुम न जाना भूल, तुम तो चलीं दूर-दूर, हमें याद रखना''।

इसे बाल अपनत्व कहूँ या धर्म स्नेह? आज भी जब मैं उस दृश्य का स्मरण कर लेती हूँ तो सारा शरीर रोमांचित हो जाता है पुनः एक क्षण को उस वीतराग अवस्था को प्राप्त करने के लिए मन आतुर होता है जिसमें रंचमात्र मोहकर्म सताने न पावे क्योंकि मोक्ष प्राप्ति तो उस अवस्था से ही हो सकती है।

प्राचीन कथानक के अनुसार जैसे बलराम जब कोलाहल देखकर, अपने रूप के प्रति आकर्षण देखकर, ध्यान में विघ्न उपस्थित होता देख कर, जनता के स्नेह से अपने को विमुख करने हेतु मांगीतुंगी (महाराष्ट्र में) पर्वत पर जाकर जंगल की ओर मुँह करके जनता की ओर पीठ करके ध्यान में खड़े हो गए थे। इसी प्रकार पूज्य माताजी भी अपने कर्तव्य का निर्वाह करने के पश्चात् सारे

दिशं प्रति। अधुना तस्याः लक्ष्यं भगवति ऋषभदेवे तीर्थेऽयोध्यायां च केन्द्रितमभवत्। येन तस्य तीर्थस्यापूर्णानि कार्याणि पूर्णानि भूत्वा क्षेत्रस्य कीर्तिध्वजो दिग्दिगन्तेषु चलायमानो भवतु।

अयोध्यातीर्थे पुनरागमनम्–**टिकैतनगरस्य चतुर्मासं सम्पाद्य माताश्रीः 16 दिसम्बर 1994 दिने पुनः अयोध्यामागच्छत्। तत्र शुभागमनस्य पश्चात् 14 फरवरी 1995 पर्यन्तं समवसरणमन्दिरनिर्माणस्य च कार्यं द्रुतगत्या संचालितामभूत् पुनः 15 फरवरी 1995 प्रारम्भे नवनिर्मितस्य समवसरणमन्दिरस्य पंचकल्याणकप्रतिष्ठां कारयित्वा माताश्री तीर्थस्य भगवतश्च श्रीचरणेषु स्वात्मनः सम्पूर्णस्य देशस्य द्वितीयमुपहारं समर्पयत्। प्रतिष्ठायाः अन्तिमदिने निर्वाणकल्याणकस्य दिने द्वयोर्नूतनमन्दिरयोः त्रिचतुर्विंशतिमन्दिरस्य समवसरण–रचना मन्दिरस्य च शिखरेषु कलशारोहणमभूत् 1994 वर्षे मातुः प्रेरणया मुख्यमंत्रिणा मुलायम सिंहेन घोषितस्य तत्र राजकीयउद्यानस्य नामकरणं भगवान् ऋषभदेवउद्यानं कारितम् तस्मिन् चोद्याने आर.सी.सी. पदार्थैर्निर्मिता भगवतः ऋषभदेवस्य विशालप्रतिमा स्थापिता जाता।**

विश्वविद्यालयः डी.लिट्. मानदेयोपाधिं प्रदाय स्वात्मानं गौरवान्वितमकरोत्–**अयोध्यायाः प्रवासमध्ये फैजाबाद स्थितस्य अवधविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः श्री के.पी. नौटियालः अनेकशः मातुर्दर्शनार्थमागच्छत् यदा च सोऽजानात् यत् माता अस्यैवावधप्रान्तस्य अमूल्यो मणिरस्ति इयं च एकस्मिन् लघुनगरे एकस्या लघुशिक्षायाः प्राप्तेः पश्चात् अपि सा स्वज्ञानस्याधारेण**

अवधवासियों के स्नेह से अपने को विमुख करने हेतु चल पड़ीं दूसरी दिशा की ओर। अब उनका लक्ष्य भगवान ऋषभदेव और तीर्थ अयोध्या पर केन्द्रित हो गया, जिससे वहाँ के अधूरे कार्य पूर्ण सम्पन्न होकर क्षेत्र की कीर्तिध्वजा दिग्दिगन्त में फहराने लगे।

➢अयोध्या तीर्थ पर पुनः आगमन–

टिकैतनगर में चातुर्मास सम्पन्न करने के पश्चात् पूज्य माताजी 16 दिसम्बर 1994 को पुनः अयोध्या पधारीं, वहाँ पहुँचने के बाद 14 फरवरी 1995 तक समवसरण मंदिर एवं रचना का निर्माण कार्य द्रुतगति से पूर्ण हुआ पुनः 15 फरवरी 1995 से नवनिर्मित समवसरण मंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाकर आर्यिकाश्री ने तीर्थ और भगवान के श्रीचरणों में अपनी एवं देशभर की ओर से द्वितीय धरोहर भेंट में चढ़ाई। प्रतिष्ठा के अंतिम दिवस अर्थात् निर्वाणकल्याणक के दिन दोनों नूतन मंदिरों (तीन चौबीसी मंदिर एवं समवसरण रचना मंदिर) के शिखरों पर कलशारोहण हुआ एवं सन् 1994 में पूज्य माताजी की प्रेरणा से मुख्यमंत्री मुलायम सिंह द्वारा घोषित वहाँ के राजकीय उद्यान का नामकरण ''भगवान ऋषभदेव उद्यान'' किया गया एवं उस उद्यान में भगवान ऋषभदेव की आर.सी.सी. से निर्मित विशाल प्रतिमा स्थापित हुईं।

➢विश्वविद्यालय ने डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान कर अपने को गौरवान्वित किया–

अयोध्या प्रवास के दौरान फैजाबाद के अवध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री के.पी. नौटियाल जी कई बार पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पधारे तथा जब उन्होंने यह जाना कि पूज्य माताजी इसी अवध प्रांत की अनमोल मणि हैं और इन्होंने एक छोटे कस्बे में छोटी सी लौकिक शिक्षा प्राप्त करने

द्विशतादधिकानां ग्रन्थानां रचनाः कृत्वा एकं कीर्तिमन्तं स्थापितमकरोत्, तदा सः स्वात्मानं गौरवान्वितं कृत्वाऽवदत्–मातः! वयं भवतीं विश्वविद्यालयस्य सर्वोच्चमानद–उपाधिना ''डी.लिट्'' **इत्यनेन विभूषितां कृत्वा स्वविश्वविद्यालयं गौरवान्वितं कर्तुमिच्छामः। माता हसित्वा तस्य वार्तायाः उपेक्षां कृतवती, साऽवदत्–भ्रातः! अस्माकं समीपे स्वगुरुणा प्रदत्तानि आर्यिका गणिनी च प्रदत्तानि पदानि सर्वाधिकमहत्त्वपूर्णानि सन्ति। शेषा कापि पदवी अस्मभ्यं न वांछिता।**

परन्तु एतत् कथ्यते यत् विचारकजनस्य मनसि यदि गहनतया कोऽपि विचार समाविश्यते तु स एकस्मिन् दिनेऽवश्यं मूर्तरूपं गृह्णाति, इदमेव अवधविश्वविद्यालयस्य कुलपतेरिच्छा सार्थकाभवत्, पूज्यमातुः वार्तां श्रुत्वा तस्मिन् समये तु कुलपतिः प्रस्थानमकरोत्, परन्तु जनवरी 1995 वर्षस्य अन्तिमसप्ताहे एकस्मिन् दिने सः केनापि समाचारं प्रेषितवान् यत् मुख्यमंत्रिणाः श्रीमुलायमसिंहेन यस्मिन् भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकस्य समये घोषितस्य भगवतः ऋषभदेवस्य जैन चेयर इत्यस्मै भवनं निर्मापयितुं शासनेन रूप्यकाणि लब्धानि। तस्य भवनस्य शिलान्यासहेतवे माताश्रीः मुहूर्तं निश्चिनोतु, स्व सान्निध्यं च प्रदानाय स्वीकृतिं ददातु।

शिलान्यासस्य वार्तायां पूज्यमाताश्री 5 फरवरी दिनस्य तिथिं घोषयन्ती स्वागमनस्य स्वीकृतिं प्रादात्। तस्मिन् दिने कुलपतिः स्व चिन्तनस्य बुद्धेश्च परिचयं ददन् शिलान्यासस्य पश्चात् तस्मिन्नेव दिने 5 फरवरी दिने पूज्यमातरं विश्वविद्यालयमानीय डी.लिट्

के बावजूद भी अपने ज्ञान के आधार पर एक-दो नहीं अपितु दो सौ से अधिक ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया है, तब वे अपने आपको गौरवशाली समझते हुए बोले–माताजी! हम आपको विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी मानद् उपाधि **''डी.लिट्.''** से सम्मानित करके अपने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाना चाहते हैं परन्तु पूज्य माताजी ने हंसकर उनकी बातों को टाल दिया वे बोलीं–भैय्या! हमारे पास तो अपने गुरु द्वारा प्रदत्त आर्यिका और गणिनी पद ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, शेष हमें कोई पदवी नहीं चाहिए।''

लेकिन ऐसा कहते हैं कि विचारक व्यक्ति के मन में यदि गहराई से कोई विचार समा जाता है, तो वह एक न एक दिन मूर्तरूप अवश्य लेता है। यही अवध विश्वविद्यालय के कुलपति जी के साथ भी हुआ, पूज्य माताजी की बात सुनकर उस समय तो कुलपति जी चले गए परन्तु जनवरी 1995 के अंतिम सप्ताह में एक दिन उन्होंने किसी के द्वारा समाचार भिजवाया कि मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक महोत्सव के मंच से घोषित ऋषभदेव जैन चेयर के भवन बनाने हेतु सरकार से पैसा प्राप्त हो गया है, उस भवन के शिलान्यास हेतु माताजी मुहूर्त निश्चित कर दें एवं अपना सानिध्य प्रदान करने हेतु स्वीकृति प्रदान करें।

शिलान्यास की बात आते ही पूज्य माताजी ने 5 फरवरी की तिथि घोषित करते हुए अपने पहुँचने की स्वीकृति दे दी। उस दिन कुलपति जी ने बहुत ही सूझ-बूझ का परिचय देते हुए शिलान्यास के पश्चात् उसी दिन (5 फरवरी 1995 को) पूज्य माताजी को विश्वविद्यालय लाकर

(साहित्यवारिधि) इति मानद–उपाधिं प्रदाय स्वविश्वविद्यालयस्य गौरवं वृद्धिंगतमकरोत्।

अयोध्यायाः मंगलविहारः–**भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्त्याः पश्चात् 28 मार्च 1995 दिने माताश्रीः स्व संघेन सह अयोध्यायाः मंगलविहारमकरोत्। ज्येष्ठपितामहस्य चरणं त्यजन्ती सापि मानसिकवेदनया सन्तप्ताऽऽसीत् सा स्वोद्बोधनेऽयोध्यावासिभ्योऽयोध्या–तीर्थस्य मनसा वाचा कर्मणा च तीर्थरक्षार्थं सन्देशमदात्। मातुः उत्तमभावनामहमेकस्मिन् भजने निबद्धामकरवम्, यस्मिन् समयानुसारेण तीर्थभक्तेभ्यो महती प्रेरणा प्रदात्ता।**

डी.लिट्. (साहित्य वारिधि) की मानद् उपाधि प्रदान करके अपने विश्वविद्यालय का गौरव वृद्धिंगत कर लिया।

➢अयोध्या से मंगल विहार–

भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती के पश्चात् 28 मार्च 1995 को पूज्य माताजी ने अपने संघ के साथ अयोध्या से मंगल विहार कर दिया। बड़े बाबा के श्रीचरण छोड़ते हुए उन्हें भी मानसिक वेदना हुई तथा उन्होंने अपने उद्बोधन में अवधवासियों को अयोध्या तीर्थ की तन-मन-धन से रक्षा करने का संदेश दिया। पूज्यश्री की उक्त भावना को मैंने एक भजन में संजोया, जिसने समय के अनुरूप तीर्थभक्तों को प्रबल प्रेरणा प्रदान किया–

भजन

तर्ज–हम लाए हैं तूफान से किस्ती निकाल के.....

निधियाँ कई दे दी हैं, अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना, मेरे भक्तों! संभाल के।।टेक.।।

आए थे कभी देशभूषण जी महामुनी।
जिनकी कृपा से ऋषभदेव मूर्ति है बनी।।
उपकार उनका लिख गया इस तीर्थ भाल पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।1।।

वीरान हो गई थी पुनः पुरी अयोध्या।
जिनधर्म की प्रभावना न हुई थी यहाँ।।
प्रचलित है रामजन्मभूमि की मिशाल से।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।2।।

इस अवध की अनमोल मणी ज्ञानमती माँ।
गणिनी शिरोमणी तथा चारित्र चन्द्रिका।।
उनकी गई इक दृष्टि अयोध्या विकास पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।3।।

निज संघ सहित आ गईं इस आदि तीर्थ पर।
फिर छा गई यह ऋषभ जन्मभूमि जगत पर।।

अनेन प्रकारेण अयोध्यायाः प्रतोल्यः, तत्रस्था जनता, तत्रत्यानि भवनानि सर्वे स्वपुत्री–प्रस्थानसमये शून्यतायाः अनुभवमकार्षुः। अयोध्यायाः पत्रकाराः बन्धवः, तत्रत्याः साधुमहापुरुषाः तां भाविनीं शून्यतां शब्दैः प्रकटयन्तः कथयन्ति–

पूज्य मातः! भवत्याः अत्रोपस्थित्या एतावन्ति दिनानि अयोध्यायां या चतुर्दिक्षु स्वस्थता–कुशलता चाभवत् भवत्याः गमनेन सहैव पुनः समाप्ता न भवेत, अतो भवती अयोध्यायाः प्रस्थानं न विदधातु, इदमेव भवत्यै अस्माकं निवेदनमस्ति। एकः प्रभावी मठाधीशः स्वोद्गारान् व्यक्तान् कुर्वन् कथयति–

''अयोध्यायां बहवो महान्तः सन्ति, किन्तु सन्तरूपेण भवतीं प्रथमबारमेव वयं प्राप्तामकुर्म। वास्तवे महत्तायाः अन्तकारिणः महान्तः कथ्यन्ते संसारस्य चान्तकारिणि मार्गे प्रचलन्तः सन्ताः कथ्यन्ते। यद्यस्माकं नगर्यां भवत्याः समानाः निःस्वार्थ सन्तः वसतु तु तस्याः उद्धारोऽवश्यमेव भविष्यति।''

सर्वेषां भावनानां सम्मानं कुर्वन्ती हृदयेन च सर्वेभ्यः आशीर्वादं प्रदानं कुर्वन्ती माताश्री 28 मार्च दिनस्य सायंकालपर्यन्तमयोध्याया अवधिं उत्तीर्णामकरोत् मनसि च प्रभोः मूर्तिं धारयन्ती स्वगन्तव्यं प्रति प्रस्थानमकरोत्। सम्पूर्णेषु षष्टिदिनेषु अयोध्या तीर्थक्षेत्रात् हस्तिनापुरस्य यात्रा सम्पन्नाभवत्।

अतिशायि कार्य हो गये हैं अल्पकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।4।।
फिर ना कभी वीरान हो जावे ये बगीचा।
श्री देशभूषण ज्ञानमती ने इसे सींचा।।
चैतन्य तीर्थ ''चन्दना'' गुरु ही त्रिकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।5।।

इस प्रकार अयोध्या की गलियाँ, वहाँ की जनता, वहाँ की इमारतें सब अपनी पुत्री को विदाई देते समय शून्यता का अनुभव कर रही थीं। अयोध्या के पत्रकार बंधु, वहाँ के सन्त-महन्त उस भावी शून्यता को शब्दों में प्रगट करते हुए कह रहे थे–

'पूज्य माताजी! आपके यहाँ पर विराजने से इतने दिन अयोध्या में जो चारों तरफ अमन–चैन हुई है, वह कहीं आपके जाते ही फिर न खत्म हो जाए, इसलिए आप अयोध्या से न जाएँ, यही आपसे हमारी प्रार्थना है।' एक प्रभावी महंत जी अपने उद्गार व्यक्त करते हुए बोले–

''अयोध्या में महन्त बहुत हैं किन्तु सन्त के रूप में हमने आपको पहली बार पाया है। वास्तव में महानता का अन्त करने वाले महन्त कहलाते हैं तथा संसार का अन्त करने के पथ पर चलने वाले सन्त कहे जाते हैं। यदि हमारी नगरी में आप जैसे निःस्वार्थ सन्त रहने लग जावें, तो इसका उत्थान अवश्य हो सकता है।''

सबकी भावनाओं का सम्मान करती हुईं, हृदय से जन-जन को आशीर्वाद प्रदान करती हुईं पूज्य माताजी ने 28 मार्च की शाम तक अयोध्या की सीमा पार कर ली और मन में प्रभु की मूरत बसाए हुए चल पड़ीं अपने गन्तत्व की ओर। पूरे 60 दिनों में अयोध्या से हस्तिनापुर की यात्रा सम्पन्न हुई।

सन्त समागमेन हृदयपरिवर्तनम्–**पदविहारं कुर्वतां जैनसाधुसाध्वीनां पुरत अनेकप्रसंगाः ईदृशाः संभवन्ति येषां उन्मुखतां तैरवश्यमेव कर्तव्या। अयोध्यायाः प्रस्थानं कुर्वन्तीं तां त्रिदिनानां पश्चात् मार्गे एव एकस्मिन् दिने एकः ठक्कुरोऽमिलत्, सः पंचशतरूप्यकाणि समर्पयत्। माताश्री मन्दहास्यं कुर्वन्ती अग्रे प्राचलत्, तु ठक्कुरमहोदयः रूप्यकाणि उत्थाय तानि गृहीतुं प्रार्थयत्। पुनः वयं तमकथयाम यत् जैनसाधवः पणाकं नैव स्पृशन्ति तस्य ग्रहणस्य रक्षितुं तु वार्ता बहु दूरवर्तिनी विद्यते। अस्माकं चर्चायाः पश्चात् सः प्रभावितो भूत्वा न्यवर्तत।**

संयोगवशात् अन्यस्मिन् दिने सायं 6 वादनकाले सः पुनः तत्रागतः, तत्रैकस्मिन् विद्यालये वयमतिष्ठाम। सः पुनः रूप्यकाणि समर्पयन् अकथयत्–

मातः! भवती गतदिने तु मां लोभयित्वा रूप्यकाणि नागृह्णात् किन्तु अद्य तु भवती गृहीतुं विवशा अस्ति, अहं रूप्यकाणां दानं विना न निवर्तिस्यामि।

''बाढम्, दानं विना त्वं न गमिष्यसि'' एषैव वार्तास्ति एतस्या एव वार्तायाः पुनरावृत्तिं कुर्वन्ती तं माता ज्ञानमती अवदत्, तदा सः पुनः तां रुप्यकाणि गृहीतुं प्रार्थनामकरोत्।

माताऽधुना तस्य बालकस्य भावुकतायां ध्यानमदात् अकस्मात् चावदत्–

अहं यदपि कथयामि त्वं स्वीकर्तुं तत्परोऽसि?

बाढं मातः! अहं सर्वस्वं तव चरणयो बलिदानं कर्तुं तत्परोऽस्मि ठक्कुरोऽवदत्।

➢सन्त समागम से हृदय परिवर्तन–

पद विहार करते हुए जैन साधु-साध्वियों को अनेक अनहोने प्रसंगों का सामना करना पड़ता है। अयोध्या से विहार करने के दो-तीन दिन पश्चात् ही एक दिन मार्ग में एक ठाकुर साहब मिले, उन्होंने पूज्य माताजी के पास आकर पाँच सौ रुपये का नोट चढ़ाया। माताजी मुस्कराकर आगे चल पड़ीं, तो ठाकुर साहब ने नोट उठाकर उनसे लेने का आग्रह किया। पुनः हम लोगों ने उन्हें बताया कि जैन साधु पैसा छूते भी नहीं हैं लेने और रखने की बात तो बहुत दूर है। कुछ देर चर्चा करने के बाद वे प्रभावित होकर वापस चले गए।

संयोगवश दूसरे दिन अगले गाँव में शाम को 6 बजे पुनः वे वहाँ आ गए, जहाँ एक स्कूल में हम लोग ठहरे थे। वे फिर रुपये चढ़ाकर कहने लगे-

अम्माजी! आपने कल मुझे फुसलाकर पैसे वापस कर दिए थे परन्तु आज तो आपको लेना पड़ेगा, मैं बिना दिये वापस नहीं जाऊँगा।

''अच्छा! बिना दिये तुम वापस नहीं जाओगे'' उसी की बात दुहराते हुए ज्ञानमती माताजी बोली, तब उसने फिर से उनसे रुपये ग्रहण करने की विनती की।

माता ने अब बच्चे की भावुकता पर ध्यान दिया और अकस्मात बोल पड़ीं–

''मैं जो कुछ भी कहूँ वह तुम मानने को तैयार हो?''

''हाँ हाँ माँ जी! मैं सब कुछ तुम्हारें चरणों में न्योछावर करने को तैयार हूँ।'' ठाकुर ने कहा।

माता किंचिद् विचार्याकथयत्–वत्स! साधुभ्यः रूप्यकाणि मतं (वोट) वा न रोचन्ते अहं तु भवतः खोट–दुर्गुणं वाञ्छामि। सः बराकोऽवदत् मातः! अहं न जानामि, भवती किं वाञ्छति?

मातुः स्वरः स्फुटोऽभवत्–वत्स! यदि मांसाहारं करोषि, तस्य परित्यागं कुरु।

इति श्रुत्वा सः वञ्चितः इव स्थितः अकथयच्च–

मातः! किं भवती अन्तर्यामिनी अस्ति। भवत्यवश्यमेव कापि दिव्य शक्तिरस्ति, या उक्तिं विनैव मम दुर्गुणमजानात्, वरम्, इदमेव दुर्गुणं मां दातुमकथयत्?

बाढमिति निश्चलायमानां दृष्ट्वैव ठक्कुरो नतमस्तको भूत्वा चरणयोरपतत् अवदच्च–

मातः! अद्याहं जीवनपर्यन्तं मांसाहारं त्यजामि भवत्याः चरणयोः।

तस्यानेकानि मित्राण्यपि समीपे स्थितानि आसन्, शतशो ग्रामीणाश्चासन्। ते सर्वे इदं दृश्यमवलोक्य माँसभक्षणस्य, मांसाहारस्य मदिरापानस्य त्यागमाजीवनमकुर्वन्। केषुचिच्च क्षणेषू पश्चात् तस्य ठक्कुरस्य माता, पत्नी बालाश्च सर्वे आगच्छन्। तेऽत्रागत्यानन्तरमेव प्रभाविताः जाताः। मातरं च कोटिशो धन्यवादं प्रदन्तोऽकथयन्–

श्रुता तु बहुशः आसीत् सतां महिमान् परन्तु अक्षिभिर्दृष्टा अद्य।

पुनः कतिचित् दिनानि सः ठक्कुरः मातुः समीपमागच्छत् मातुः शुभाशिषं च प्राप्य ग्रामपंचायतनिर्वाचने विजयी अभवत्। सम्प्रति सः मंत्रीपदे स्थितः, तदापि यथासमये पूज्या मातुः समीपे आगत्य आशीर्वादं गृह्णंति।

माताजी ने अब कुछ सोचकर कहा–वत्स। साधु को नोट या वोट नहीं चाहिए, उसे तुम्हारी खोट चाहिए। वह बेचारा बोल पड़ा–माँ! मैं समझा नहीं कि आप क्या चाहती हैं?

माँ का स्वर फूटा-बेटा! यदि माँसाहार करते हो तो छोड़ दो।

इतना सुनते ही वह ठगा सा रहा गया और कहने लगा–

माँ जी! क्या आप अंतर्यामी हैं? आपमें जरुर कोई दिव्यशक्ति है, जिसने बिना कुछ कहे मेरी खोट जान ली। अच्छा! आप यही खोट मुझे दे देने को कह रही थीं?

हाँ में सिर हिलते ही ठाकुर चरणों में नतमस्तक होकर बोल पड़ा–

"अम्मा! मैंने त्याग दिया आज आपके चरणों में जीवन भर के लिए माँसाहार को।"

उसके कई मित्र भी पास में खड़े थे और सैकड़ों ग्रामीण थे। उन सब ने यह दृश्य देखकर अण्डे खाने का, मांसाहार करने तथा शराब पीने का आजीवन त्याग कर दिया। कुछ ही क्षणों में वहाँ ठाकुर की माँ, पत्नी, बच्चे सब आ गए वे इस आकस्मिक त्याग से अत्यन्त प्रभावित हुए और पूज्य माताजी को कोटि-कोटि धन्यवाद देते हुए कहने लगे–

'सुनी तो बहुत थी सन्तों की महिमा पर आँखों से देखी है सच्ची कहानी"

पुनः कई दिनों तक वे ठाकुर साहब आते रहे और माताजी का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर ग्राम पंचायत के चुनाव में विजयी बने। वर्तमान में वे मंत्री पद पर हैं, तो भी समय-समय पर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त करने आते रहते हैं।

एवंभूतानि कानिचिदुदाहरणानि अस्मिन् पदविहारे प्रत्यक्षीकृतानि, यदा लघुग्रामवासिभिः अस्माकं लघुसंबोधनेषु विविधदुर्व्यसनानां परित्यागः कृतः।

मशकाः अपि परोक्षं गताः–**कुण्डासरनाम्नो ग्रामस्य वार्तास्ति, वयं तत्र रात्रिविश्रामाय एकस्मिन् चिकित्सकस्यगृहेऽतिष्ठाम, तौ पति–पत्न्यौ अति सज्जनावास्ताम्। प्रातः वयं यदा तस्मात् स्थानात् विहर्तुं तत्पराः आस्म, तु चिकित्सक महोदयोऽकथयत्–मातः! अत्र तु रात्रौ एतावन्तो मशकाः अभवन् यत् अत्रोत्थानं स्थितिः उपवेशनं, शयनं चात्यन्तमेव कठिनमभवत् परन्त्वद्य रात्रौ तु चमत्कार एवाभवत्। अद्य भवतामागमनेन विश्रामेण च चमत्कारवशादेकोऽपि मत्सरो न दृष्टिगतोऽभवत्। वास्तवे साधूनां चर्या एतादृशी भवति यत् मशकः कः, तेषां तपः प्रभावात् तु दुष्कालोऽपि दूरी भवति।**

बाबामहोदयः कान्चिज्जनान् शाकाहारिणोऽकरोत्–**हस्तिनापुरं प्रति वयं निरन्तरं गमनशीलाः आस्म। कुंवरगड्डी स्थानेऽस्माकमाहारः आसीत्। दिने एको वृद्धो बाबाजी महोदयो आगच्छत अकथयच्च–भवती द्विवर्षपूर्वं यत् प्रवचनमकरोत्, तेनाहं बहुप्रभावितोऽस्मि। इदमुक्त्वा सः द्विवर्षपूर्वं मया श्रावितां भिल्लेन काकस्य मांसाहारत्यागस्य कथां यथावत् श्रावयितुं तत्परोऽभवत्, यां श्रुत्वा वयं सर्वे महतीं प्रसन्नतामन्वभवाम, पुनः सः मात्रा स्वज्ञानवर्धनायैकं पुस्तकं ''आटे का मुर्गा'' इति प्राप्य प्रसन्नमनसा इदमुक्त्वा प्रस्थानमकरोत् यत् अधुनाऽहं प्रत्येकजनं शाकाहारिणं भवितुं प्रेरणां दास्यामि।**

ऐसे कई उदाहरण इस पद विहार में देखे गए, जब छोटे-बड़े ग्राम के वासियों ने हम लोगों के लघु संबोधन पर अनेक व्यसनों का त्याग किया।

➢मच्छर भी गायब हो गए –

कुण्डासर नामक गाँव की बात है। हम लोग वहाँ रात्रि विश्राम हेतु एक डॉ. के घर पर रुके हुए थे। वे पति-पत्नी अत्यन्त सज्जन थे। सुबह जब हम लोग वहाँ से विहार कर रहे थे तो डॉ. साहब ने कहा– माताजी! यहाँ तो रोज इतने मच्छर रहते थे कि बैठना, उठना, लेटना मुश्किल पड़ जाता था किन्तु आज रात को तो चमत्कार हो गया। आज आप लोगों के आगमन व विश्राम से चमत्कारवश एक भी मच्छर नहीं रहा। वास्तव में सन्तों की चर्या ऐसी होती है कि मच्छर क्या, उनके तप के प्रभाव से बड़े-बड़े अकाल भी दूर हो जाते हैं।

➢बाबाजी ने कई लोगों को शाकाहारी बनाया–

हस्तिनापुर की ओर हम लोग निरन्तर बढ़ते चले जा रहे थे। कुंवरगड्डी में हमारा आहार था। दिन में एक बुड्ढे बाबाजी आये और कहने लगे कि आपने दो वर्ष पूर्व यहाँ जो प्रवचन किया था, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। वे ऐसा कहकर मेरे द्वारा 2 वर्ष पूर्व सुनाई गई भील द्वारा कौवे के माँस त्याग की कथा ज्यों की त्यों सुनाने लगे, जिसे सुनकर हम सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई, फिर वह पूज्य माताजी से अपने ज्ञानवर्द्धन के लिए एक पुस्तक ''आटे का मुर्गा'' प्राप्त कर प्रसन्न मन से यह कहकर चले गये कि अब मैं हर एक व्यक्ति को शाकाहारी बनने की प्रेरणा देता हूँ।

मृदोऽपहरणकाले एव जलमागतम्–**स्वगृहस्थावस्थायाः मातामहगृहात्–महमूदाबाद नगरात् विहृय वयं 8 किलोमीटर दूरस्थं भेथरामाधव नामकं ग्रामं प्राप्ताः। तस्य ग्रामस्य विद्यालयं प्राप्य ब्रह्मचारिणीभ्यो भगिनीभ्योऽत्र प्रातः जलस्य कठिनताऽऽसीत्। तत्र संघस्थ प्रविष्टे सति। एकः श्रमिकः मृदमपाहत्। जलयंत्रसंलग्नकाले एव ट्यूबवैल, चलितुमारभत्। पश्चात् ग्रामवासिभिः ज्ञातमभवत् अत्र तु जलस्य महत्काठिन्यमासीत् अयं तु चमत्कारः एवास्ति यदद्यात्र जलमागतम्। ईदृश्येव घटना खैराबाद नामग्रामेऽभवत्, अत्रागते सति ब्रह्मचारिण्यः भगिन्योऽकथयन् यत् अत्र जलस्य महत्काठिन्यमासीत्, वयं काठिन्ये आस्म। ग्रामवासिनः पृच्छायां 'ट्यूबवैल' यंत्रं एककिलोमीटर दूरे स्थितमकथयन् अत्र कूपः सर्वथा शुष्कः आसीत् किन्तु मातुश्चमत्कारोऽस्ति यत् रात्रौ न कोऽपि जानाति यत् तस्मिन् कस्मात् स्थानात् पर्याप्तं जलमागच्छत् तेनैव च भोजनं निर्मितम्।**

सीतापुरेऽभवदवधयात्रायाः समापनम्–**गतवर्षेऽयोध्यायां धर्मामृतस्य वर्षां कुर्वन्ती पश्चात् माताश्रीरयोध्यायाः विहारं कृत्वा फतेहपुर, बेलहरा, पैतेपुर, महमूदाबाद, सिधौली आदीन् ग्रामान् च स्पृशन्ती 28 अप्रैल 1995 दिने सीतापुरं प्राप्नोत्। तस्याः मंगलपदार्पणेन मन्दिरस्य पृष्ठभागे एकस्य त्यागिभवनस्य शिलान्यासोऽभवत् तस्मादेव स्थानात् भक्ताः तस्यै, प्रस्थानमदुः।**

अस्मिन्नवसरे लखनऊ नगरात् श्री सुमेरचन्द्र पाटनी श्री विजयकुमारश्च समागच्छताम,

---

➢मिट्टी हटाते ही पानी आ गया–

अपने गृहस्थावस्था के ननिहाल महमूदाबाद से विहार कर हम लोग 8 किमी. दूर भेथरामाधव नामक गाँव के स्कूल में पहुँचे। ब्रह्मचारिणी बहनों को सुबह से यहाँ पानी की बड़ी दिक्कत थी। जब हम लोग वहाँ पहुँचे तो सामने ही एक मिस्त्री ने मिट्टी हटाई और मोटर लगाते ही ट्यूबवेल चलने लग गया। बाद में गाँव वालों से पता चला कि यहाँ तो पानी की बहुत ज्यादा दिक्कत थी, यह तो कोई चमत्कार है, जो आज यहाँ पानी आ गया। इसी प्रकार की एक घटना खैराबाद नाम के गाँव में हुई, यहाँ आते ही ब्र. बहनों ने बताया कि यहाँ पानी के लिए हम सब बहुत परेशान हुए, गाँव वालों से पूछने पर ट्यूबवेल 1 किमी. दूर बताया और यहाँ का कुंआ बिल्कुल सूखा पड़ा था किन्तु माताजी का चमत्कार कि रात में ही जाने कहाँ से उसमें खूब अच्छा पानी आ गया और उसी से चौका बनाया गया।

➢सीतापुर में हुआ अवध यात्रा का समापन –

पिछले वर्ष अयोध्या में धर्मामृत की वर्षा करने के बाद पूज्य माताजी अयोध्या से विहार करके फतेहपुर, बेलहरा, पैतेपुर, महमूदाबाद, सिधौली होती हुई 28 अप्रैल 1995 को सीतापुर पहुँचीं। उनके मंगलपदार्पण पर सीतापुर जैन मंदिर के पीछे एक त्यागीभवन का शिलान्यास हुआ तथा वहीं से भक्तों ने भावभीनी विदाई दी।

इस अवसर पर लखनऊ से श्री सुमेरचंद जैन पाटनी व श्री विजय कुमार जैन पधारे और

पाटनी श्रावकः च सभायां स्वविचाराभिव्यक्तिं कुर्वन् अकथयत्–यदहमद्य चतुर्दशमासानन्तरं मातुर्दर्शनं कर्तुमागतोऽस्मि। इदं अहं स्वदुर्भाग्यं मन्ये। अस्मिन् मध्ये कारणवशान्मम मनसि भ्रान्तधारणाः अजायन्त। यैः कारणैरहं संघस्य दर्शनार्थमागन्तुं नाशक्नवम् अयोध्यायाः द्वितीयपंचकल्याणकेऽपि भागं गृहीतुं नाशक्नवम्। अधुनाहं 5–7 दिनपूर्वं अयोध्यायां गत्वा आगतोऽस्मि। तत्र कार्यकलापानां यथा प्रशंसा भवेत् सा न्यूनैवास्ति। एतस्मिन्नल्पकाले यावन्ति निर्माणकार्याण्यभवन् इतिहासः तानि युगपर्यन्तं स्वर्णाक्षरेषु अंकितानि रक्षिष्यति। माताश्रीरधुना अवधप्रान्तात् विहारं कर्तुं तत्परास्ति, अहं कतिचिद्भ्यः दिनेभ्यः तस्याः दर्शनं कर्तुं क्षमायाचनां च कर्तुमागन्तुं विचारमकरवम्, किन्तु पारिवारिकपरिस्थितिवशात् नागन्तुं क्षमोऽभवम्। अद्यावधयात्रायाः समापनवेलायामागत्य ज्ञानमति मातरं संघं च क्षमायाचनं कुर्वन् इयमेवाशां करोमि यत् ममोपरि भवतीनां पूर्ववत् आशीर्वादः स्नेहश्च तिष्ठेत्। अन्ते पाटनी महोदयोऽकथयत् यत् अयोध्यायाः तीर्थस्य नवीनां समितिं प्रति मम पूर्णाऽऽस्थास्ति। तां प्रति मम कोऽपि दुर्भावो नास्ति। अद्य मातुः समक्षमहं पूर्ववार्तानां त्यागं कृत्वा गच्छामि। भ्राता रवीन्द्र महोदयोऽयोध्यायाः कार्येषु मम कमपि सहयोगं प्राप्तुमिच्छां करिष्यति अहं सदैव सहयोगं दास्यामि।

अवधयात्रायाः समापनसमये स्वमंगलोद्बोधने माताश्रीः गणिनी आर्यिका ज्ञानमती स्वाशीर्वादात्मकप्रवचनेऽकथयत्–साधवस्तु क्षमामूर्तयो भवन्ति।

पाटनी जी ने सभा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि **आज 14 महीने के बाद मैं पूज्य माताजी के दर्शन करने आया हूँ। इसे मैं अपना दुर्भाग्य मानता हूँ। इस मध्य मेरे मन में कारणवश कुछ गलतफहमी उत्पन्न हो गई थी जिनके कारण मैं संघ के दर्शन को नहीं आ सका और अयोध्या के द्वितीय पंचकल्याणक में भी भाग न ले सका। अभी मैं 5-7 दिन पूर्व ही अयोध्या होकर आया हूँ, वहाँ के कार्यकलापों की तो जितनी प्रशंसा की जावे, कम है। इतने कम समय में जो अनेक विशाल निर्माण हुए हैं, इतिहास उन्हें युगों-युगों तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रखेगा। पूज्य माताजी अब अवधप्रान्त से विहार कर रही हैं, मैं कई दिनों से उनके दर्शन करने एवं क्षमायाचना करने हेतु आने वाला था किन्तु पारिवारिक परिस्थितियों के कारण नहीं आ सका। आज अवध यात्रा के समापन की बेला में माताजी से व आर्यिका संघ से क्षमायाचना करता हुआ यही आशा रखता हूँ कि मेरे ऊपर आप लोगों का पूर्व जैसा आशीर्वाद तथा स्नेह बना रहेगा।** अन्त में पाटनी जी ने कहा कि **अयोध्या तीर्थक्षेत्र की नई कमेटी के प्रति मेरी पूर्ण आस्था है, उसके प्रति मेरा कोई दुर्भाव नहीं है। आज पूज्य माताजी के समक्ष मैं पुरानी बातों का त्याग करके जा रहा हूँ। भाई रवीन्द्र जी अयोध्या के कार्य में मुझसे जब भी कोई सहयोग मागेंगे, मैं सदैव सहयोग दूँगा।**

अवध यात्रा समापन के समय अपने मंगल उद्बोधन में परमपूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने आशीर्वादात्मक प्रवचन में कहा कि साधु तो क्षमा की मूर्ति होते हैं।

भवन्त सर्वे स्वशाश्वततीर्थस्य अयोध्यायाः विकासं कुर्वन्तु तं रक्षन्तु अयमेव मम मंगलाशीर्वादोऽस्ति।

आशीर्वादेन दुर्घटना गताऽभूत्–**5 मई तिथेर्वार्तास्ति, वयं बंथरा स्थानात् तिलहरस्नातकोत्तर महाविद्यालयं पदैर्विहृत्य प्राप्ताः संघस्य, ब्रह्मचारिण्यः भगिन्यः आगत्य अकथयन्–मातः! अद्य तु महदनिष्टं घटितमभूत् अन्यथा न कोऽपि जानाति किं भवितुमुपस्थितमासीत्। मम पृच्छायां ताः अकथयन् यत् अद्यास्माकं मेटाडोर वाहनस्य महती दुर्घटनाऽभवत्। भगवतः पेटिका अस्माभिः सहासीत् अतो वयं सुरक्षिताः स्मः। एवमभूत् यत् बन्थरा विद्यालयात् बहिरेकं लघु निर्मितमपूर्णं द्वारमासीत्। तस्मात् मेटाडोर निर्गन्तुमासीत् तु उपरि स्थाने निहतानि वस्तूनि तस्मात् द्वारात् घातं प्राप्तनि द्वारस्य चोभयतः स्तम्भौ उपरिभागश्च सर्वेऽस्माकं वाहनेऽपतन्। अग्रस्य सम्पूर्णं दर्पणं भग्नमभूत्, द्वारस्य विष्कम्भो भग्नः साधारणा च क्षतिर्वाहनस्याभवत्, किन्तु अस्मान् चालके च न काचित् क्षतिरभूत्। एतत्सर्वं भगवतश्चमत्कारो भवत्याश्चाशीर्वादस्य प्रभावोऽस्ति एतावत्याः भयानकदुर्घटनायाः पश्चादपि वयं भवत्याः पुरतः तिष्ठामः।**

व्यसनमुक्तेर्जीवितं सन्देशमुपदिशन्तः साधवः–**पूज्यमातुः प्रेरणयोपदेशेन च सर्वे जनाः माँसाहारं त्यजन्ति परन्तु यस्मिन् ग्रामे मुसलमानप्रधानोऽस्ति यश्च जाट जातीयः निवासी अस्ति तत्र जनाः मांसाहारं मदिरापानं च जीवनपर्यन्तं त्यागेनैकाद्भुता अविस्मरणीया च**

आप सभी अपने शाश्वत तीर्थ अयोध्या का सतत विकास करते हुए उसकी रक्षा करें, यही मेरा सबके लिए मंगल आशीर्वाद है।

➢आशीर्वाद से अनहोनी टल गई–

5 मई की बात है, हम लोग बंथरा से तिलहर डिग्री कालेज पदयात्रा करते हुए पहुँचे ही थे कि संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों ने आकर बताया कि माताजी! आज तो बड़ा अनिष्ट टला है वर्ना आज न जाने क्या होता? मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि आज हमारी मेटाडोर का बड़ा भारी एक्सीडेंट हुआ, भगवान की पेटी चूँकि साथ में थी इसलिए हम लोग बच गए। हुआ यूँ कि बंथरा स्कूल के बाहर एक छोटा सा आधा बना हुआ गेट था, उसमें से मेटाडोर निकलने लगी तो ऊपर कैरियर पर रखा सामान उस गेट से टकरा गया और गेट के दोनों पिलर और ऊपर का हिस्सा सारा का सारा हमारी मेटाडोर पर गिर गया। आगे का पूरा शीशा टूट गया, दरवाजे का लॉक टूटा और हल्की-फुल्की खरोंच गाड़ी में आयी किन्तु हममें से किसी को या ड्राइवर को एक खरोंच भी नहीं आयी। यह सब भगवान का चमत्कार और आपके आशीर्वाद का ही फल है कि इतने भयंकर एक्सीडेंट के बाद भी हम लोग सही–सलामत आपके सामने खड़े हैं।

➢व्यसन मुक्ति का जीवन्त संदेश देते हैं साधु-सन्त–

यूँ तो पूज्य माताजी की प्रेरणा व उपदेश से तमाम व्यक्ति मांसाहार का त्याग कर देते हैं परन्तु जिस गांव में ग्राम प्रधान मुसलमान हों और जाटों की बस्ती हो, वहाँ के लोग शराब व माँस का

वार्ता विद्यते। छजलेट ग्रामेऽपि एवमभूत्। वयं प्रायः एक फर्लांग अन्तः प्रविश्यैकस्मिन् जूनियरमाध्यमिकविद्यालयेऽतिष्ठाम, दिनस्य समयः आसीत्, हस्तिनापुरादागतं पण्डित नरेश–कुमारं माताश्री प्रवचनार्थं संकेतमकरोत् तस्य प्रवचनस्य पश्चात् क्षुल्लकमोतीसागर–स्याहिंसाधर्मे प्रवचनमारब्धम्, तस्य ग्रामस्य वासिनः अनेकजनाः तत्कालमेव मदिरायाः मांसस्य च त्यागमकुर्वन्।

गुरोरुपदेशो जीवनपरिवर्तने माध्यमोऽभूत्–**यथाऽहं पूर्वमेवाकथयम् यत् सज्जनसमागमो जीवने परिवर्तनं करोति। इयमेव परिस्थितिः पटपरागंज ग्रामेऽपि दृष्टाऽभवत्। ग्रामवासिनामुत्सुकतां दृष्ट्राहमपि अहिंसाधर्मे तेभ्यः उपदेशं दत्वा मद्यस्य मांसस्य च परित्यागं कर्तुं प्रेरणामदाम्। तस्मिन् काले यावन्तोऽपि ग्रामीणाः प्रवचनं श्रोतुमुपातिष्ठन् ते सर्वे 300–400 जनाः तत्कालमेव मद्यमांसयोस्त्यागेस्य नियममगृह्णन्। एवमेव मझावां ग्रामेऽपि केचिद् ग्रामीणा मातरमवदन्–मातः! अल्पोपदेशं श्रावय। माताश्री तेभ्यः मदिरा मांसयोस्त्यागं कर्तुं प्रेरणामदात्, अधुना मातुः समक्षमेव द्विशत ग्रामीणाः मद्यमांसयोस्त्यागमकुर्वन्।**

धीवरो मत्स्यवधस्य परित्यागमकरोत्–**एकस्मिन् भण्डिया नामके ग्रामे संघोऽत्र रात्रिविश्रामाय आसीत्। तत्र जनसमूहं दृष्ट्वा माता श्री क्षुल्लकमोतीसागरं प्रवचनार्थं संकेतमकरोत्। सः स्वप्रवचने धीवरस्यैकं प्राचीन कथानकमश्रावयत् अकथयत् च यत् सः एकस्मिन् दिने एकेन**

त्याग हमेशा के लिए कर दें, यह अपने आप में अनोखी एवं अविस्मरणीय बात है। छजलेट गाँव में भी ऐसा ही हुआ। हम लोग लगभग 1 फर्लांग अन्दर जाकर जूनियर हाईस्कूल में ठहरे, दिन का समय था। हस्तिनापुर से पधारे पं. नरेश कुमार शास्त्री को पूज्य माताजी ने प्रवचनार्थ इशारा किया, उनके प्रवचन के पश्चात् क्षुल्लक मोतीसागर महाराज का जैसे ही अहिंसा धर्म पर प्रवचन प्रारंभ हुआ, उस गाँव के लगभग 25-30 लोगों ने तुरंत ही शराब व मांस का त्याग कर दिया।

➢गुरु का उपदेश जीवन परिवर्तन में माध्यम बना–

जैसा कि मैंने आपको पहले बताया कि सन्त समागम मानव जीवन में परिवर्तन ला देता है। वही परिस्थिति पटपरागंज नामक गाँव में भी देखने मिली। गाँव वालों की उत्सुकता देखकर मैंने अहिंसा धर्म पर उन सभी को थोड़ा सा उपदेश देकर मद्य और मांसाहार त्याग करने की प्रेरणा दी, उस समय जितने भी ग्रामीण प्रवचन सुनने आए थे, उन 300-400 लोगों ने तुरंत मद्य एवं मांसाहार त्याग का नियम ले लिया। इसी प्रकार मझगवां गाँव में पूज्य माताजी से कुछ ग्रामीण बोले–अम्मा! थोड़ा उपदेश सुना दो। माताजी ने उनको माँसाहार व मदिरापान का त्याग करने का उपदेश दिया और माताजी के सामने ही लगभग 200 ग्रामीणों ने मद्य एवं मांस का त्याग कर दिया।

➢धीवर ने मछली मारने का त्याग कर दिया–

एक भन्डिया नामक ग्राम में संघ का रात्रि विश्राम था। वहाँ जनता की भीड़ उमड़ आने पर पूज्य माताजी ने क्षुल्लक मोतीसागर को प्रवचन के लिए संकेत किया। उन्होंने प्रवचन में धीवर का एक प्राचीन कथानक सुनाते हुए कहा कि उसने एक महात्मा जी से एक दिन नियम ले लिया कि 'पहली

महात्मना नियममगृह्णात् यत् प्रथमो मत्स्यः योऽपि मम जाले बद्धो भविष्यति तमहं मोचयिष्यामि। एतस्य च नियमस्यानुसारेण सः एकस्मै मत्स्याय पंचबारं जीवनदानमकरोत् अन्यस्य कस्यचिदपि मत्स्यस्य पाशे न आगमनादपि सः नियमं भंगं नाकरोत्। फलस्वरूपं सः तस्य परिवारश्च क्षुधा पीडिताः अभवन्।

तस्य नियमस्य प्रभावात् स धीवरोऽग्रिमजन्मनि एकस्य धनिनः श्रेष्ठिनः पुत्रोऽभवत्। जीवने च पंचबारं तस्य मृत्युना रक्षाभवत्। अतएव प्रत्येकं प्राणिनं आत्मवत् मत्वा तस्य हिंसा न कर्तव्या।

उक्त प्रवचने समाप्तौ एव सभायामेको धीवरो जनः उत्थानमकरोत्, सः च जीवने मत्स्यवधस्य भक्षणस्य च त्यागमकरोत्। क्षुल्लक महोदयस्तं सम्मानितमकरोत् पुनः केचिज्जनाः मांसाहारस्य त्यागमकुर्वन।

प्राचीनकालः इव अद्यापि सत्संगसभाभिः अनेकजीवानां कल्याणं भवति। पश्यन्तु! प्राचीनकथानके तु धीवरः प्रथममत्स्याय जीवनदानंदातुं नियमगृहणात् परन्तुं अयमत्र धीवरस्तस्मादप्याधिकसाहसस्य परिचयमदात्, निश्चितमेव तस्य भवःपरिवर्तिनं भविष्यति।

एतैर्लघुसंस्मरणैरवधयात्रायाः एकं पुराणं लिखितं भविष्यति, परन्त्वहं अत्र मात्र द्वि–चतुः उदाहरणानि विलिख्यैव साधु–सान्निध्ये भूतानां व्रतानां परोपकाराणां च वर्णनमकरवम्।

पुनः 28 मई 1995 दिने ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां माताश्रीः शान्तिनाथस्य जन्मनो, तपसः निर्वाणकल्याणकस्य च बेलायां संघेन सह हस्तिनापुरमागच्छत्।

मछली जो मेरे जाल में फँसेगी उसे मैं छोड़ दिया करूँगा।'' इस नियम के अनुसार उसने एक मछली को उसी दिन पांच बार जीवनदान दिया और कोई दूसरी मछली दिन भर जाल में न आने पर भी उसने नियम नहीं तोड़ा। भले ही उसे तथा उसके परिवार को भूखे रहना पड़ा।

उस नियम के प्रभाव से अगले जन्म में वह धीवर एक धनी सेठ का लड़का हुआ और जीवन में पाँच बार मृत्यु से उसकी रक्षा हुई। अतः प्रत्येक प्राणी को अपने समान मानकर किसी की हिंसा नहीं करना चाहिए।

उक्त प्रवचन समाप्त होते ही सभा में एक धीवर जाति का व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और उसने जीवन भर के लिए मछली मारने तथा खाने का त्याग कर दिया। क्षुल्लक जी ने उसे सम्मानित किया, पुनः कई लोगों ने मांसाहार का त्याग किया।

प्राचीन काल के समान आज भी साधुओं की सत्संग सभाओं से अनेक जीवों का कल्याण होता है। देखो न! पौराणिक धीवर ने तो पहली मछली को जीवन दान देने का नियम लिया था। किन्तु आज के धीवर ने उससे भी अधिक साहस का परिचय दिया, निश्चित ही उसका भव सुधरने वाला होगा।

ऐसे छोटे-छोटे संस्मरणों से अवध यात्रा का एक वृहत् पुराण तैयार हो सकता है किन्तु यहाँ मैंने केवल दो-चार उदाहरण लिखकर ही साधु-सानिध्य से होने वाले परोपकारों को प्रस्तुत किया है।

पुनः 28 मई 1995, ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी भगवान शान्तिनाथ के जन्म, तप एवं निर्वाणकल्याणक की पावन बेला में पूज्य माताजी अपने पूरे संघ के साथ हस्तिनापुर पधारीं।

तवैतस्यां त्यागप्रथायां कतिचिद्बालाः आगच्छन्–**अस्य हस्तिनापुरायोध्यायाश्च विहारमध्ये अनेकाचेतनोपलब्धीनां प्राप्तिरभूत् याभिः न केवलमवधस्य अपितु सम्पूर्णभारतस्य जनता लाभान्विता भविष्यति च, परन्तु एताभिः सहैव यासां चेतनोपलब्धीनां रूपेण माताश्री तिस्रः कन्या संसारकर्दमात् निष्कास्य त्यागमार्गे संलग्नाः कर्तुं प्रयत्नमकरोत्, सः युगपर्यन्तं अविस्मरणीयो भविष्यति। ताभ्यः, कुमारीभ्यः सारिका, इन्दु, अलकाभ्यो ममाशीर्वादोऽस्ति यत् यास्तिस्रः स्वलघुआयुषि असिधारेव कठिनं व्रतमंगीकृत्य त्यागस्य निरतिचारं पालनं कुर्वन्त्यः सदैव स्व चारित्रस्य वृद्धिमकुर्वन्। कुमारी सारिका मातुर्गृहस्थावस्थायाः लघुभगिन्याः, श्रीमत्याः कामिनी जैनायाः दरियाबादनिवासिन्या सुपुत्री अस्ति। कुमारी इन्दुरपि मातुर्गृहस्था–वस्थाया भ्रातुः स्वर्गीयप्रकाशचन्द्रस्य सुपुत्री अस्तिं। कुमारी अलकापि तस्या एव जन्मभूमेः टिकैतनगरस्य श्रावकस्य कोमलचन्द्रस्य सुपुत्री अस्ति, यत्र माता ज्ञानमती सदृश्यः साध व्योऽजायन्त। अनेकाश्चान्ये त्यागिनो व्रतिनश्च निरन्तरं त्यागमार्गेऽग्रे भूत्वा नगर्याः गौरवं वृद्धिंगतं कुर्वन्ति।**

हस्तिनापुरतीर्थे मंगलपदार्पणम्–**अनेन प्रकारेणायोध्यायाः अस्य क्षेत्रस्य पदविहारे विविधप्रकारस्य आम्लमधुराणामनुभवानामानन्दं प्राप्तं कृत्वा संघस्य मंगलपदार्पणं हस्तिनापुरस्य जम्बूद्वीपस्य क्षेत्रे अभवत्। तीर्थस्यातुलनीयं सौन्दर्यं विलोक्यैव चित्तमानन्देन पूरितमभूत्, दीर्घायाश्च यात्राया सम्पूर्णश्रान्तिः दूरमभवत्।**

➢तेरी इस त्यागप्रथा में, कितनी बालाएँ आईं –

वैसे तो माताजी को इस हस्तिनापुर से अयोध्या विहार के मध्य अनेक अचेतन उपलब्धियों की प्राप्ति हुई थी, जिससे पूरे अवध की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत देश की जनता लाभान्वित हो रही है और होती रहेगी परन्तु इनके साथ ही साथ जो चेतन उपलब्धियों के रूप में पूज्य माताजी ने तीन कन्याओं को संसाररूपी कीचड़ से निकालकर त्यागमार्ग में लगाने का उपक्रम किया है, वह युगों-युगों तक अविस्मरणीय रहेगा। उन कु. सारिका, कु. इन्दू एवं कु. अलका के लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है कि उन्होंने अपनी छोटी-छोटी उम्र में यह जो तलवार की धार के समान कठिन व्रत अंगीकार किया है, उसका निरतिचार पालन करते हुए सदैव अपने चारित्र की वृद्धि करें। कु. सारिका पूज्य माताजी की गृहस्थावस्था की छोटी बहन श्रीमती कामिनी जैन (दरियाबाद) की सुपुत्री हैं, कु. इन्दू भी पूज्य माताजी के ही गृहस्थावस्था के भ्राता स्व. श्री प्रकाशचंद जैन की सुपुत्री हैं और कु. अलका भी उसी जन्मभूमि टिकैतनगर के ही श्रावक श्री कोमलचंद्र जैन की सुपुत्री हैं। जहाँ पर पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसे महान साधु जन्मे हैं तथा अनेकों त्यागी, व्रती लगातार त्याग मार्ग में आगे बढ़कर नगरी का गौरव बढ़ा रहे हैं।

➢हस्तिनापुर तीर्थ पर मंगल-पदार्पण–

इस प्रकार अयोध्या से यहाँ तक के पदविहार में अनेक प्रकार के खट्टे-मीठे अनुभवों का आनन्द लेते हुए संघ का मंगल पदार्पण हस्तिनापुर के जम्बूद्वीप-स्थल पर हुआ। तीर्थ के अतुलनीय सौन्दर्य को देखते ही मन प्रसन्नता से भर उठा तथा इतनी लम्बी यात्रा की सारी थकान दूर हो गई।

मंगलप्रवेशस्यावसरे आयोजितायां प्रवचनसभायां सर्वप्रथमं क्षुल्लको मोतीसागरः स्व मंगलाचरणेऽकथयत्–दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य कार्यकर्तृणां कर्मठतायाः तेषामनुभवानां च प्रतिफलमस्ति यत् अल्पकालेनैवायोध्यातीर्थस्य उद्धारोऽभवत्।

पुनः अहं स्ववक्तव्येऽकथयं–यदेकः पथिकः कूपे निमग्नस्तु स्वप्राणरक्षायै रक्ष, रक्ष, इत्युक्त्वा क्रन्दनमकरोत्। एकः सिद्धान्तवादी तस्मै कर्मसिद्धान्तस्य भाषणं श्रावयित्वा गतोऽभूत्। एको नेता च ग्रामपंचायतस्य निन्दां कृत्वाऽगच्छत्। एकश्च क्रिश्चियनभ्राताऽवदत् यदहं साधनमानीय भवन्तं निःसारयामि, पुनस्तीर्थंकरमहावीरस्यैकः सत्यभक्तः भाषणं विनैव, विचारं विनैव शीघ्रं सहस्राणां तृणानां रज्जूनां सदुपयोगं कृत्वा स्व रज्जुआश्रयेण कूपात् तं दुखितं पथिकं बहिरकरोत्, पथिकश्च तस्मै कोटिशो धन्यवादमदात्। अनेनैव प्रकारेण हस्तिनापुर–अयोध्यायाश्च द्वावेव तीर्थौ महावीरस्य भक्तं स्वोद्धाराय आहूतवन्तौ, पूज्यज्ञानमत्याः मातुः रूपेण ताभ्यां सत्योद्धारकः प्राप्तोऽभवत्। द्वावेव तौ तीर्थे इदानीं विश्वस्य मानसपटलेऽंकितौ भूत्वा समक्षमानीतौ।

सभायाः अन्ते माताश्रीः सर्वेभ्यः, जनेभ्यः स्वमंगलाशीर्वादं प्रादात् अयोध्यायाः हस्तिनापुरस्य च पारस्परिकं सम्बन्धं योजयन्ती साऽकथयत्–हिन्दी वर्णमालायां प्रथमाक्षरं अकारोऽस्ति अन्तिमं चाक्षरं हकारोऽस्ति अतः अयोध्याया हस्तिनापुरस्य च मध्ये वर्णमालायाः शेषाक्षराणीव शेषाः समस्तास्तीर्थाः समाहिताः भवन्ति।

मंगल प्रवेश के अवसर पर आयोजित प्रवचन सभा में सर्वप्रथम क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज ने अपने मंगलाचरण में कहा–**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं की कर्मठता और उनके दीर्घकालीन अनुभव का ही प्रतिफल है, जो अयोध्या तीर्थ का इतने अल्पकाल में उद्धार हो गया।**

पुनः मैंने अपने वक्तव्य में कहा कि–एक पथिक कुंए में गिर गया, तो अपनी प्राणरक्षा के लिए बचाओ-बचाओ कहकर चिल्लाने लगा। एक सिद्धांतशास्त्री उसे कर्मसिद्धान्त का भाषण सुनाकर चले गये, एक नेता जी ग्राम पंचायत की बुराई करके चले गए और एक क्रिश्चियन भाई बोले–अभी साधन लाकर आपको निकालता हूँ पुनः तीर्थंकर महावीर के एक सच्चे भक्त ने बिना भाषण दिए, बिना विचार किए ही शीघ्र साथ में लाए छन्ना, लोटा, डोर का सदुपयोग किया और अपनी डोर के सहारे कुंए से उस दुखी पथिक को निकाल लिया, पथिक ने उसे कोटि-कोटि धन्यवाद दिया। इसी प्रकार हस्तिनापुर और अयोध्या दोनों तीर्थ उपेक्षितरूप में महावीर के भक्त को अपने उद्धार हेतु पुकार रहे थे, पूज्य ज्ञानमती माताजी के रूप में उन्हें सच्चा उद्धारक मिला और वे दोनों तीर्थ अब विश्व के मानस पटल पर उभरकर आए हैं।

सभा के अंत में पूज्य माताजी ने सभी उपस्थित भक्तों को अपना मंगलमयी आशीर्वाद प्रदान किया तथा अयोध्या और हस्तिनापुर का पारस्परिक संबंध जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि–**''हिन्दी वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' है और अंतिम अक्षर 'ह' है अतः अयोध्या और हस्तिनापुर के बीच में वर्णमाला के शेष समस्त अक्षरों की भांति शेष सभी तीर्थ समाहित हो जाते हैं।''**

वर्षायोगस्थापना–**पृथिव्यां स्वर्गतुल्यमान्यतां प्राप्तां हस्तिनापुरस्य धरां यस्मात् दिनात् माता प्राविशत् नित्यमेव लघवः महान्तश्च कार्यक्रमाः सम्पन्नतां प्राप्तुं प्रारभन्त। तस्यामेव शृंखलायां दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य पदाधिकारिणां विशेषाग्रहवशात् माताश्री 1995 वर्षस्य चतुर्मासं जम्बूद्वीपस्थलेऽस्थापयत्।**

चतुर्मासस्य मध्ये रक्षाबन्धन–दशलक्षणधर्म आदयः कार्यक्रमाः विशेष आयोजनपूर्वकं सम्पन्नाः अभवन्, जम्बूद्वीपस्य द्वितीयो महामहोत्सवः, गणिन्याश्च जन्मदिनमद्वितीयेन समारोहेण सम्पन्नतां प्राप्नुताम्।

स्वर्णे सुगन्धिः–**पंचवर्षाणां पश्चात् जम्बूद्वीपमहामहोत्सव समायोजितः अस्मात् कारणात् अधिकं महिमामण्डितमभवत्। एतस्मिन् दिने एवायोजनस्य प्रेरिकायाः चारित्रचन्द्रिकायाः गणिन्याः मातुः ज्ञानमत्याः जन्मनो वैराग्यस्य च जयन्त्यौ अपि आगते। एतद् दिनमासीत् आश्विनशुक्लापूर्णिमायाः शरत्पूर्णिमायाः, 8 अक्तूबर 1995, रविवारस्य। यदा चन्द्रमाः स्व संपूर्णाभिः कलाभिः परिपूर्णो भूत्वा स्वामृततुल्यान् रश्मिसमूहान् विकीर्णान् करोति, तस्याः एव शरत्पूर्णिमायाः रात्रेः प्रथमप्रहरे जन्मप्राप्ता कन्यारत्नं 1952 वर्षे शरत्पूर्णिमायाः दिने एव गृहबन्धनं त्यक्त्वा रत्नत्रयपन्थानं प्रति स्वचरणेऽग्रसारितेअकरोत्। अतएव शरत्पूर्णिमातिथिः वैराग्यदिवसेनापि प्रसिद्धा विद्यते।**

➢वर्षायोग स्थापना–

'धरती का स्वर्ग' कही जाने वाली हस्तिनापुर की धरती पर जिस दिन से पूज्य माताजी ने प्रवेश किया, नित्य ही छोटे-बड़े कार्यक्रम आयोजित होने लगे। इसी शृंखला में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों के विशेष आग्रह से पूज्य माताजी ने ईसवी सन् 1995 का वर्षायोग जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित किया।

चातुर्मास के मध्य रक्षाबंधन पर्व, दशलक्षण पर्व आदि कार्यक्रम विशेष आयोजनपूर्वक सम्पन्न हुए तथा जम्बूद्वीप का द्वितीय महामहोत्सव एवं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्मदिवस अद्वितीय समारोह के साथ मनाया गया।

➢सोने में सुगंधि–

पाँच वर्षों के बाद जम्बूद्वीप महामहोत्सव का यह आयोजन इसलिए और अधिक महिमामंडित बन गया क्योंकि उसी दिन आयोजन की प्रेरिका चारित्र चन्द्रिका गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की जन्म और वैराग्यजयन्ती भी आ गई थी। वह पवित्र दिवस था आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरदपूर्णिमा) 8 अक्टूबर 1995 रविवार का। जब चन्द्रमा अपनी सोलह कलाओं से परिपूर्ण होकर अमृतमयी किरणें बिखेरता है, उसी शरदपूर्णिमा की रात्रि के प्रथम प्रहर में जन्म लेने वाली कन्यारत्न ने सन् 1952 में शरदपूर्णिमा के दिन ही गृहबन्धन को त्याग कर रत्नत्रयपथ की ओर कदम बढ़ाए थे, इसीलिए शरदपूर्णिमा की तिथि वैराग्यदिवस से भी प्रसिद्ध हुई है।

जिलाधिकारिणो घोषणा–**तिथेः 8 अक्तूबर 1995 पर्यन्तमायोजिते जम्बूद्वीपमहामहोत्सवे मेरठनगरस्य पदाधिकारी माननीयो दीपकसिंघलः 6 अक्तूबर तिथौ समागत्य पूज्यायाः गणिन्याः मातुराशीर्वादं प्राप्नोत्। संस्थानपक्षतः जनपदाधिकारिणः भावसिक्तं स्वागतमभूत्। एतस्मिन्नवसरे जनपदाधिकारी महोदयः संस्थानेन मात्रा च कृतानां हस्तिनापुर विकासस्य कार्याणां प्रशंसां कुर्वन् अकथयत् यत् यथा श्रवणबेलगोला जैनसमाजस्य अन्तर्राष्ट्रीयः तीर्थोऽस्ति, तथैव जम्बूद्वीपोऽपि अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थरूपेण मन्तव्यः। सोऽकथयत् भवन्तो हस्तिनापुरस्य विकासस्य योजनां प्रस्तुतां कुर्वन्तु, तस्यां शासनस्य योऽपि सहयोगो वाञ्छितो भविष्यति, तमहं पूरयिष्यामि।**

नूतनमन्दिरेषु जिना विराजिताः अभवन्–**नवनिर्मितेषु शांतिनाथमन्दिरश्रीवासुपूज्यमन्दिरयोः ध्यानमन्दिरे च दिनाँकयोः 4–5 अक्तूबर 1995 वर्षयोः घटयात्रा पूर्वकं एकाशीति कलशैः वेदिकायाः शुद्धिरभवत्। धामसम्प्रोक्षणं वेदिवस्त्राच्छादनं च मन्दिराणां चतसृषु दिक्षु हवनं कारयित्वा समस्तः शास्त्रोक्तविधिः वेदिकासु संपन्नोऽभूत्। पुनः 6 अक्तूबर दिने प्रातः नववादन काले वेदिकासु भगवन्तो व्यराजन्त।**

सर्वप्रथमं भगवतः वासुपूज्यस्य प्रतिमां विराजमानां कर्तुं सौभाग्यं श्रीपाल जैनः मवाना निवासी प्राप्तवान, पुनः शान्तिकुन्थुअरभगवतां प्रतिमाः शान्तिनाथ मन्दिरे विराजमानाः कर्तुं सौभाग्यं श्रीराजकुमारो जैनः मेरठ निवासी प्राप्तवान्। अस्य मन्दिरस्य निर्माणमपि श्री राजकुमारो

➢जिलाधिकारी महोदय की घोषणा–

2 से 8 अक्टूबर तक आयोजित जम्बूद्वीप महामहोत्सव में मेरठ के जिलाधिकारी माननीय श्री दीपक सिंघल ने 6 अक्टूबर को पधारकर पूज्य गणिनी माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। संस्थान की ओर से माननीय जिलाधिकारी महोदय का भावभीना स्वागत किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी महोदय ने संस्थान व पूज्य माताजी द्वारा किये गये हस्तिनापुर विकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस प्रकार से श्रवणबेलगोला जैन समाज का अंतर्राष्ट्रीय स्तर का तीर्थ है, उसी प्रकार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का तीर्थ बना देना चाहिए। आपने यह भी कहा कि आप लोग हस्तिनापुर के विकास की योजना तैयार करें, उसमें शासन से जो भी सहयोग की जरूरत होगी, मैं उसे पूरा करूँगा।

➢नूतन मंदिरों में श्री जी विराजमान हुए–

नवनिर्मित श्री शांतिनाथ मंदिर, श्रीवासुपूज्य मंदिर एवं ध्यान मंदिर में दिनाँक 4-5 अक्टूबर 1995 को घटयात्रापूर्वक 81 कलशों से वेदी शुद्धि हुई और धाम सम्प्रोक्षण, वेदीवस्त्राच्छादन, मंदिरों की चारों दिशाओं में चतुर्दिक् हवन कराकर समस्त शास्त्रोक्त विधि सम्पन्न हुई। पुनः 6 अक्टूबर (आश्विन शु. 13) को प्रातः 9 बजे से वेदियों में भगवान विराजमान किये गये।

सर्वप्रथम वासुपूज्य भगवान की प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य मिला मवाना निवासी श्रीपाल जैन (भगत जी) को, पुनः भगवान् शांति-कुंथु-अरहनाथ की प्रतिमाएँ शांतिनाथ मंदिर में श्री राजकुमार जैन (लोहे वाले)-मेरठ सदर ने विराजमान कीं। इस मंदिर का निर्माण भी राजकुमार

जैनस्य पक्षतोऽभूत्।

तत्पश्चात् सर्वथा नूतनकलायुक्ते ध्यानमन्दिरे चतुर्विंशतितीर्थंकर समन्वितां 'ह्रीं' इत्यस्य धातुनिर्मिता प्रतिमा विराजमानां कर्तुं सौभाग्यं अहमदाबाद निवासिनौ हीरालाल जैनः तत्पत्नी च सौ. कान्ताबेन इति द्वौ प्राप्तवन्तौ।

कलशारोहणं ध्वजस्थापना च–**भगवतः वासुपूज्यस्य मन्दिरे शिखरपूजनेन कलशारोहणं श्री ऋषभकुमारो जैन जयपुर निवासी सपरिवारमकरोत्, शिखरे ध्वजं च श्री विजयकुमारो जैनः दरियागंज दिल्ली अखण्डध्वजं स्थापितमकरोत्।**

तीर्थंकर श्री शान्तिनाथस्य मन्दिरे मन्दिरस्य निर्माता श्री राजकुमारो जैनः मेरठ निवासी कलशारोहणमखण्डध्वजं च स्थापयितुं सौभाग्यं प्राप्तवान्।

अस्यामेव शृंखलायां ध्यानमन्दिरस्य उपरि श्री हंसकुमारो जैनः शालीमारबाग–दिल्ली कलशारोहणमकरोत्। श्री सुरेशचन्द्रोजैनः गोटे वाले गली गुलियान–दिल्ली सपरिवारः अखण्डध्वजस्य स्थापनामकरोत् स्व पुण्यकीर्तिपताकां तरंगितामकरोत्।

महामहोत्सवस्यावसरे महाभिषेकः–**विश्वस्यालौकिकस्य एकमात्रं च जम्बूद्वीपरचनायाः मध्ये निर्मितस्योन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्योपरि शरत्पूर्णिमायाः प्रातःकालादेव सामान्यजनसमूहाय गन्तुं प्रतिबन्धः आसीत् यतस्तस्मिन् दिने तत्र पाण्डुक शिलादिचतसृसु शिलासु तीर्थंकरभगवतां 1008 कलशैः महाभिषेको भवितुं प्रस्तावितः आसीत्। कलशाभिषेकं कर्तुमुल्लिखितान्**

जैन की ओर से ही हुआ है।

इसके पश्चात् बिल्कुल नये डिजाइन वाले नवनिर्मित ध्यान मंदिर में चौबीस तीर्थंकरों से समन्वित 'ह्रीं' की धातुनिर्मित प्रतिमा गुजरात (अहमदाबाद) निवासी श्री हीरालाल जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. कान्ताबेन को विराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

➢कलशारोहण एवं ध्वज स्थापना–

भगवान वासुपूज्य के मंदिर पर शिखरपूजन के साथ कलशारोहण श्री ऋषभकुमार जैन-जयपुर निवासी ने सपरिवार किया तथा श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज दिल्ली (सूर्या प्रिन्टर्स) ने अखंड ध्वज स्थापित किया।

तीर्थंकर श्री शांतिनाथ मंदिर पर मंदिर के ही निर्माता श्री राजकुमार जैन-मेरठ को कलशारोहण और अखंडध्वज स्थापना का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ।

इसी शृंखला में ध्यान मंदिर के ऊपर श्री हंसकुमार जैन, शालीमारबाग-दिल्ली ने कलशारोहण किया और श्री सुरेशचंद जैन गोटे वाले-गली गुलियान, दिल्ली परिवार ने अखंड ध्वज स्थापित कर अपनी पुण्यकीर्ति पताका फहराई।

➢महामहोत्सव के अवसर पर महाभिषेक–

विश्व की अलौकिक एवं एकमात्र जम्बूद्वीप रचना के मध्य निर्मित उत्तुंग सुमेरु पर्वत पर शरदपूर्णिमा की प्रातः से ही आम जनता के जाने पर प्रतिबंध लगा हुआ था, क्योंकि उस दिन वहाँ की पाण्डुक आदि चारों शिलाओं पर तीर्थंकर भगवन्तों का 1008 कलशों से महाभिषेक होने वाला

महानुभावान् क्रमशः उपरि स्थितान् कर्तुं चारु पुष्टा च व्यवस्थाऽऽसीत्।

जम्बूद्वीपस्य समक्षे एकस्मिन् वृहति मंचे अनेककर्मठमहानुभावानां सहयोगेन शास्त्रोक्तविधिना निर्मिते मण्डपे 1008 कलशाः जलेन पूर्णाः स्थापिताः आसन्। सुमेरुपर्वतस्य शिल्पेन निर्मिताः एते विविधवर्णाः कलशाः दर्शकेभ्यः विशेषाकर्षण केन्द्रा आसन। संसारे प्रथमबारं अस्य प्रकारस्य सुमेरुकलशा निर्मिताः आसन्, ये च अभिषेकविधातृभ्यः महानुभावेभ्य महोत्सवसमिते पक्षतः आहूताः आसन्। सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकवने निर्मितासु पाण्डुक–पाण्डुकंबला–रक्ता– रक्तकंबला एतासु चतसृषु शिलासु भरतक्षेत्र, पश्चिमविदेह, ऐरावत क्षेत्र, पूर्वविदेहे लब्धजन्मनां तीर्थंकराणामभिषेकः संपाद्यमाना। आसीत्, यो जन्माभिषेकस्य प्रतीकः आसीत्। तान् तीर्थंकरान् स्व एव शिलासु विराजमानान् कर्तुं सौभाग्यं निम्नलिखिता चत्वारः श्रावकाः प्राप्तवन्तः, एवं ते सौधर्मेन्द्ररूपेण वाद्यैः सह जिनप्रतिमाः त्रिमूर्तिमन्दिरात् सुमेरुपर्वतस्योपरि आनीतवन्तः।

1. श्री अनिलकुमारो जैनः, प्रीतविहार–दिल्ली निवासी।

2. श्री राजकुमारो जैनः, सफदरजंग एन्क्लेव–दिल्ली निवासी।

3. श्री ऋषभ कुमारो जैनः, जयपुर निवासी।

4. श्री राजेश कुमारो जैनः, सलावा–मेरठ निवासी।

था। कलशाभिषेक करने वालों को क्रम-क्रम से वहाँ तक पहुँचाने हेतु सुन्दर और मजबूत व्यवस्था बनाई गई।

जम्बूद्वीप के सामने एक बड़े चबूतरे पर अनेक कर्मठ महानुभावों के सहयोग से शास्त्रोक्त विधि से बनाए गए मंडल पर 1008 कलश जल भरवाकर स्थापित किये गए। सुमेरु पर्वत की ही डिजाइन में बने ये रंगबिरंगे कलश दर्शकों के विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। संसार में प्रथम बार इस प्रकार के सुमेरु कलश निर्मित हुए, जो अभिषेक करने वाले महानुभावों को महोत्सव समिति की ओर से भेंट कर दिए गए। सुमेरु पर्वत के पांडुक वन में बनी पाण्डुक, पांडुकबला, रक्ता और रक्तकंबला इन चार शिलाओं पर भरतक्षेत्र, पश्चिम विदेह, ऐरावत क्षेत्र और पूर्व विदेह में जन्में तीर्थंकरों का अभिषेक होना था, जो कि जन्माभिषेक का प्रतीक था। उन तीर्थंकरों को अपनी-अपनी शिलाओं पर विराजमान करने का सौभाग्य निम्न चार श्रावकों ने प्राप्त किया और सौधर्म इन्द्र के रूप में गाजे-बाजे के साथ जिन प्रतिमाओं को त्रिमूर्ति मंदिर से सुमेरु पर्वत के ऊपर ले गए–

1. श्री अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली
2. श्री राजकुमार जैन, सफदरजंग एन्क्लेव-दिल्ली
3. श्री ऋषभ कुमार जैन, जयपुर
4. श्री राजेश कुमार जैन-सलावा (मेरठ)

सुमेरुकलशेन प्रथमाभिषेकः–**पूर्वनियोजितव्यवस्थानुसारेण पूर्वं सुमेरु कलशेन अभिषेक–कारिभ्यो महानुभावेभ्यः स्वर्णस्य कलशाः निर्मिताः आसन्।**

सुमेरुकलशेन सर्वप्रथमाभिषेकं विधातुं सौभाग्यं ये महानुभावाः प्राप्नुवन्, तेभ्यः सः स्वर्णकलशः स्मृतिस्वरूपेण उपहारे दत्तः।

अन्यैः कलशैरपि क्रमशोऽभिषेककारिणो जनाः महतः पुण्यस्य संचयमकुर्वन्। महिलाभ्यः विशेषनिर्मिताः केसरिवर्णस्य शाटिकाः पुरुषेभ्यश्च श्वेत अन्तरीयोत्तरीयश्च सर्वेभ्यः प्रदत्ताः। तान् धृत्वा पंक्तिबद्धाः अवस्थिताः इन्द्रइन्द्राण्यश्च शोभया महाभिषेकस्य वातावरणमधिकं मनमोहकं कृतवन्तः।

गीतानां संगीतानां च मधुरध्वनीनां मध्येऽभिषेकं कुर्वन्तः भक्तगणाः अभिषेकं कुर्वन्तोऽतिष्ठन् नीचैश्च अभिषेक दर्शकेभ्यो जनसमूहेभ्यः मण्डपे क्लोजसर्किट दूरदर्शनस्य च व्यवस्थाऽऽसीत्, तेषु दृष्ट्वा ते सर्वे हर्षायमानाः भूत्वा नृत्यानि गीतानि च कुर्वन्तः आनन्दं प्राप्नुवन्। पूज्यगणिन्याः आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः, मम, क्षुल्लकमोतीसागरस्य, क्षुल्लिकाया श्रद्धामत्याः ब्रह्मचारिणीनां सम्पूर्णस्य संघस्य सान्निध्यं सर्वेभ्यः भक्तेभ्यः उत्साहं प्रादात् विविधैश्च विद्वद्भिः यत्र मंत्राणामुच्चारणं गतिशीलमासीत्, तत्रैव सामयिक भाषणैः सुमेरुपर्वतजम्बूद्वीपमहामहोत्सवानां च विषये अनेकानि तथ्यपूर्णानि ज्ञातव्यानि प्रसारितान्यभवन्।

➢ **'सुमेरु कलश' से प्रथम अभिषेक–**

पूर्व नियोजित व्यवस्थानुसार प्रथम नम्बर के 'सुमेरु कलश' से अभिषेक करने वाले महानुभावों के लिए स्वर्ण के कलश बनाए गए थे।

सुमेरु कलश से सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य जिन महानुभावों ने प्राप्त किया, उन्हें वह स्वर्ण कलश स्मृतिस्वरूप भेंट कर दिया गया।

अन्य कलशों के द्वारा भी क्रम-क्रम से समस्त नरनारियों ने अभिषेक कर असीम पुण्य संचित किया। महिलाओं के लिए स्पेशल बनी केशरिया साड़ियाँ तथा पुरुषों के लिए सफेद धोती-दुपट्टे भी सबको प्रदान किए गए। उन्हें पहनकर पंक्तिबद्ध खड़े हुए इन्द्र-इन्द्राणियों की शोभा से महाभिषेक का वातावरण और भी मनमोहक बन गया था।

गीत-संगीत की मधुर ध्वनियों के बीच न्हवन करने वाले भक्तगण अभिषेक करते रहे और देखने वाली जनता के लिए नीचे पांडाल में क्लोजसर्किट टी.वी. की व्यवस्था थी, उनमें देख-देखकर वे सभी हर्षायमान हो नृत्य-गीत करके आनंद प्राप्त कर रहे थे। पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी, मैं, क्षुल्लक मोतीसागर महाराज, क्षुल्लिका श्रद्धामती जी एवं समस्त ब्रह्मचारिणी बहनों सहित पूरे संघ का सानिध्य भी भक्तों को उत्साह प्रदान कर रहा था तथा विभिन्न विद्वानों के द्वारा जहाँ अभिषेक मंत्रों का उच्चारण चल रहा था, वहीं सामयिक भाषणों से सुमेरु पर्वत, जम्बूद्वीप और महामहोत्सव से संबंधित अनेक तथ्यपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हो रही थीं।

अयमभिषेक क्रमः तत्र प्रातः नववादनात् मध्याह्न एकवादनपर्यन्तं गतिशीलः आसीत्, यस्मिन् सुमेरुकलश, रत्नकलश, स्वर्णकलशैश्चाभिषेकविधानस्य पश्चात् केचिद् श्रद्धालवः पंचामृताभिषेकस्य विधानस्य पुण्यलाभं प्राप्नुवन्।

महोत्सवस्य जन्मजयन्त्याश्च विशालसभा–**रत्नत्रयनिलये प्रातः पंचवादनकालादेव अवधप्रान्तात् प्राप्तेन जनसमूहेन पुत्रजन्मतुल्यायाः प्रसन्नतायाः समायोजनं कृतम्, तैरत्र चरणप्रक्षालनेन आरतिकया भजनादिभिः वर्धापनैः पुष्पवृष्टिभिः जम्बूद्वीप परिसरोऽतिशय–सुगन्धितः कृतः, पुनरपि मध्याह्ने द्विवादनसमयात् जम्बूद्वीपस्य रचनायाः उत्तरदिशायां एकस्मिन् विशालमण्डपे सार्वजनिकसभायाः समायोजनमभूत्। अत्र मुख्यातिथिरूपेण भारतशासनस्य केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्रीचौधरीअजितसिंह पादार्पणमकरोत्।**

सभायाः प्रारम्भः संघस्थाभिः भगिनीभिः मंगलाचरणेन कृतः। महोत्सवसमितेः कार्यकर्तारः मुख्यातिथेः स्वागतमकुर्वन् तस्मै महोत्सवस्य प्रतीकः स्वर्णकलशः उपहारे दत्तवन्तः।

तदा माता सरस्वत्याः लक्ष्म्याः च रूपेण प्रतिष्ठापिता–**सभामंचे महति स्वसंघेन सह काष्ठासने विराजमाना पूज्या वात्सल्यमूर्तिः तीर्थोद्धारिका गणिनी श्रीज्ञानमती माताश्रीः सत्यमेव तद्दिने सरस्वत्याः लक्ष्म्याश्च प्रतिनिधित्वं कुर्वन्ती इव प्रतीताऽभवत्, यतस्तस्याः वामभागे सरस्वतीपुत्राणां विदुषां समूहः स्वमातुश्चरणयोः विनयांजलिं अर्पितां कर्तुमातुरो भूत्वाऽतिष्ठत्, तस्याश्च दक्षिणभागे राजनेतारः समाजनेतारः लक्ष्मीपुत्राः श्रीमन्तः स्वार्थांजलिं समर्पयितुं लालायिताः आसन्।**

यह अभिषेक क्रम प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 1 बजे तक चला, जिसमें सुमेरु कलश, रत्नकलश, सुवर्ण कलश करने के पश्चात् कुछ श्रद्धालुओं ने पंचामृत अभिषेक करने का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

➢महोत्सव एवं जन्मजयंती की विशाल सभा–

यूँ तो प्रातः 5 बजे से ही 'रत्नत्रय निलय' में अवध प्रान्त से आई जनता ने पुत्र जन्म जैसी खुशियाँ मनाना प्रारंभ कर दिया था, चरण प्रक्षालन, आरती, भजन, बधाई, पुष्पवृष्टि, रत्नवृष्टि आदि से जम्बूद्वीप परिसर अतिशय सुगंधित हो गया था, फिर भी मध्यान्ह 2 बजे से जम्बूद्वीप रचना की उत्तर दिशा में एक विशाल पांडाल में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। यहाँ मुख्यअतिथि के रूप में पधारे भारत सरकार के केन्द्रीय खाद्य मंत्री-चौधरी श्री अजित सिंह जी।

सभा का शुभारंभ संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा 'शारद वंदना' से हुआ पुनः महोत्सव समिति के उपस्थित कार्यकर्ताओं ने मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत किया और उन्हें महोत्सव का प्रतीक **'सुमेरुकलश'** भेंट किया गया।

➢सरस्वती और लक्ष्मी का रूप बन गईं तब पूज्य माताजी–

सभा मंच पर बीचों बीच अपने संघ सहित काष्ठासन पर विराजमान पूज्य वात्सल्यमूर्ति-तीर्थोद्धारिका गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी सचमुच में उस दिन सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत हो रही थीं क्योंकि उनके बाईं ओर सरस्वती पुत्र विद्वानों का समूह अपनी माता के चरणों में विनयांजलि करने को आतुर बैठा था और उनके दाईं ओर राजनेता-समाजनेता, लक्ष्मीपुत्र श्रीमानगण अपनी अर्थांजलि समर्पित करने को लालायित थे।

सर्वेषां मुखेभ्यः श्रद्धापूरिताः शब्दाः मुखरिताः अभवन् यतः इयं शारदामाता स्वज्ञानलक्ष्म्या आत्मानं तु अक्षयनिधेः भण्डारमकरोत् शून्याय हस्तिनापुरायापि साक्षात् समवसरणस्य स्वरूपं प्रदाय संसारे विख्यातमकरोत्।

यस्याः वचनेभ्यः सरस्वत्याः जिनवाण्याः रसः स्रवति सम्यग्ज्ञानस्यामृतं वर्षति, न्यायस्य रूपं भाति, भक्त्याः प्रवाहः प्रवहति, सिद्धान्तस्य समुद्रो निर्गच्छति, अध्यात्मस्य तेजः दृश्यते, वात्सल्यस्य भावः सुरभितं करोति, निस्पृहतायाः सूत्रं प्राप्यते, निश्छलतायाः मूर्तिरूपं प्रफुल्लितं भवति, ईदृशी न्यायप्रभाकरी, विद्यावाचस्पतिः साहित्यवारिधिः आर्यिकारत्नं श्री ज्ञानमती माता आधुनिक युगस्य सरस्वत्याः रूपमस्ति, तदैव निर्दोषज्ञानस्य प्राप्तेरिच्छया विद्वज्जनाः अस्याः सान्निध्यं प्राप्य अतिहर्षिताः भवन्ति।

अस्याः जिह्वायै दीर्घकालीना भाषासमितिः वचनसिद्धिं प्रादात् अतः यस्याः एकस्य प्रेरणया तीर्थोद्धाराय, मन्दिर निर्माणाय, शिक्षाक्षेत्राय, साहित्य प्रकाशनाय, महामस्तकाभिषेकादि–महोत्सवेभ्यः श्रेष्ठिगणाः स्वार्थांजलिं समर्पयितुं उत्सुकाः तिष्ठन्ति, सा श्रेष्ठिनां श्रद्धापूर्णे मनसि एकास्ति यत् तीर्थंकर जन्मभूमेरुद्धाराय विकासानां निस्पृह निश्छल च भावना तस्याः हृदये पूर्णतया परिपूरिताऽस्ति। सा अनेककर्मठसाधुभ्यः श्रावकेभ्यश्च प्रेरणाः दात्री अस्ति, यत् तीर्थंकराणां जन्मभूमयः अनेकतीर्थक्षेत्राण्यद्यापि सर्वथोपेक्षितानि सन्ति, तेषामुद्धार–विकासानां प्रचारस्य कार्यं यदि प्रत्येक साधुसंघः प्रत्येक ग्रामनगरस्य श्रेष्ठिनः स्वोपरि

सभी के मुंह से श्रद्धापूरित शब्द निकल रहे थे कि **''इन शारद माता ने अपने ज्ञान की लक्ष्मी से निज को तो अक्षय निधि का भंडार बनाया ही है, इस वीरान हस्तिनापुर तीर्थ को भी साक्षात् समवसरण का स्वरूप प्रदान कर संसार में अमर कर दिया है।''**

जिनके वचनों से सरस्वती–जिनवाणी का रस टपकता है, सम्यग्ज्ञान का अमृत बरसता है, न्याय का रूप झलकता है, भक्ति का प्रवाह छलकता है, सिद्धान्त का समन्दर निकलता है, अध्यात्म का तेज दिखता है, वात्सल्य का भाव महकता है, निस्पृहता का सूत्र मिलता है, निश्छलता का मूर्तिरूप खिलता है, ऐसी न्यायप्रभाकर, विधानवाचस्पति, साहित्य वारिधि, विद्यावाचस्पति, आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी इस युग की सरस्वती का रूप हैं तभी निर्दोष ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से विद्वत्गण इनके सानिध्य को प्राप्त कर अतिहर्षित होते हैं।

जिनकी जिह्वा को दीर्घकालीन भाषासमिति ने वचनसिद्धि प्राप्त करा दी है अतः जिनकी एक प्रेरणा पर तीर्थोद्धार, मंदिर निर्माण, शिक्षा क्षेत्र, साहित्य प्रकाशन, महामस्तकाभिषेक आदि महोत्सवों के लिए श्रेष्ठीगण अपनी अर्थांजलि समर्पित करने को उत्सुक रहते हैं, वे श्रीमानों की श्रद्धापात्र इसीलिए हैं कि तीर्थंकर जन्मभूमियों के उद्धार-विकास की निश्छल और निस्पृह भावना उनके अंदर कूट-कूट कर भरी हुई है। वे अनेक कर्मठ साधुओं तथा श्रावकों को भी प्रेरणा दिया करती हैं कि तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि के प्रतीक कई तीर्थ आज बिल्कुल उपेक्षित हैं, उनके उद्धार-विकास-प्रचार का कार्य यदि एक-एक साधुसंघ और एक-एक गाँव, शहर के श्रेष्ठी अपने ऊपर ले लें,तो

ग्रहणन्तु, तु निश्चितमेव तेषां तीर्थानां यशः संसारे प्रसारितं भविष्यति श्रीमतां धनस्य सदुपयोगश्च भविष्यति।

श्रुतज्ञानस्य लक्ष्मी यस्यै पूर्वभवादेव प्राप्तास्ति, तस्यां मातरि लक्ष्मीः सरस्वती च शब्दौ पर्यायवाचिनौ एव प्रतीयेते।

कल्पवृक्षे सुमेरौ च सज्जिताः द्विषष्ठि दीपाः प्रज्वलिताः–**गतवर्षे मातुः षष्टिपूर्तिः महोत्सवो जन्मभूम्यां टिकैतनगरे सम्पूर्णावधवासिनो असीमोल्लासेन सह समायोजितमकुर्वन्। यस्मिन्नुत्तर प्रदेशस्य राज्यपालमहोदय समागत्य 61 दीपयुक्तं कल्पवृक्षं, स्वास्तिकं, ॐ च प्रज्वलितान् कृत्वा तत्र जनसमूहाय शरत्पूर्णिमायाः आलोकं प्रादात्। अस्मिन् वर्षे तानि पावनानि क्षणानि मातुस्तपोभूम्यां माननीय केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्री अजितसिंह प्राप्तवान्। समारोहस्य संचालको ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार सभाध्यक्षश्च श्रीमहावीर प्रसादजैन बंगाली स्वीट दिल्ली च माननीयं मुख्यातिथिं मंचे सुसज्जितस्य सुन्दर सुमेरुपर्वस्य, कल्पवृक्षस्य, स्वास्तिकस्य च निकटे आनीतवन्तौ, यत्र सः विद्युदुपकरणस्य दमनं कृत्वा 62–62 विद्युतप्रभाः प्रकाशिताः अकरोत्। एतानि त्रीणि उपकरणानि टिकैतनगरस्य भरतसेनायाः कर्मठनवयुवका परिश्रमेण– तत्पराणि कृत्वाऽऽनीतवन्तः। स्वविभूतेश्चरणयोः प्रभांजलिं समर्प्य सम्यक् दिशं प्रदानाय तेषां अयं प्रयासः सफलीभूतो भवतु, इयं मंगलकामनास्ति।**

समयसारोत्तरार्धस्य विमोचनम्–**पूज्यार्यिकया हिन्दी ज्ञानज्योतिःटीकायाः रचितस्य**

निश्चित ही शीघ्र उन तीर्थों का यश संसार में फैल जाएगा और श्रीमानों के धन का सदुपयोग भी हो जावेगा।

श्रुतज्ञान की लक्ष्मी जिन्हें पूर्व भव के संस्कारों से प्राप्त हुई है, उन पूज्य माताजी में लक्ष्मी और सरस्वती पर्यायवाची के समान ही प्रतीत होती हैं।

➢कल्पवृक्ष और सुमेरु में सजे 62 दीप जल उठे–

पिछले वर्ष पूज्य माताजी का षष्टिपूर्ति महोत्सव जन्मभूमि टिकैतनगर में पूरे अवधवासियों ने असीम उल्लास के साथ मनाया था, जिनमें उत्तरप्रदेश के महामहिम राज्यपाल जी ने पधारकर 61 दीप वाले कल्पवृक्ष, स्वस्तिक और ॐ को प्रज्वलित कर वहाँ की जनता को शरदपूर्णिमा का आलोक प्रदान किया था। इस वर्ष वे पावन क्षण मातुश्री की तपोभूमि में माननीय केन्द्रीय खाद्य मंत्री श्री अजित सिंह को प्राप्त हुए। समारोह के संचालक कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी तथा सभाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जैन (बंगाली स्वीट) अतिथि महोदय को मंच पर सुसज्जित सुन्दर सुमेरु पर्वत, कल्पवृक्ष और स्वस्तिक के निकट ले गए, जहाँ उन्होंने बिजली का स्विच दबाया और 62-62 विद्युत प्रभाएँ चमक उठीं। ये तीनों आइटम टिकैतनगर की भरतसेना के कर्मठ नवयुवक परिश्रम पूर्वक तैयार करवाकर लाए थे। अपनी विभूति के चरणों में प्रभांजलि अर्पित कर सम्यक् दिशा प्रदान करने हेतु उनका यह प्रयास सफलीभूत हो, यही मंगलकामना है।

➢समयसार उत्तरार्ध का विमोचन–

पूज्य आर्यिका श्री द्वारा हिन्दी ज्ञानज्योति टीका में रचित समयसार ग्रंथ के पूर्वार्द्ध का प्रकाशन

समयसारग्रन्थस्य पूर्वभागस्य प्रकाशनं तु 1990 वर्षेऽभूत्, तस्यैव ग्रन्थस्योत्तरार्धस्य प्रकाशनमधुना भवितुमशक्नोत्। अस्य विमोचनमद्य शरत्पूर्णिमायाः दिवसे मुख्यातिथिनाभवत् सः च मातुः करकमलयोः समयसारमुपाहरत्। अधुनां साधूनां विदुषां च चिरप्रतीक्षिता आशा पूर्णाभवत्, अतस्तेऽधुना सम्पूर्ण समयसारग्रन्थस्य स्वाध्यायस्य लाभं प्राप्स्यन्ति। एतेषु ग्रन्थेषु माताश्रीः आचार्य अमृतचन्द्रस्यात्मख्यातिटीकायाः आचार्य जयसेनस्य तात्पर्यवृत्ति टीकाया द्वयोः टीकयोः हिन्दी अनुवादेः सहैव प्रकाशितमकरोत्, स्थाने–स्थाने विशेषार्थानां माध्यमेन सिद्धान्तस्य उभयनयस्य च समन्वयं प्रदर्शितं कृत्वा वास्तवे सर्वांगीणमकरोत्।

गणिन्याः ज्ञानमत्या पुरस्कार, डॉक्टर अनुपमाय–**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थानेन घोषितः श्री अनिल कुमार जैन, कमल मन्दिर–दिल्लीवासिन सुपुत्रस्य अतिशयस्य जन्मोत्सवोपलक्ष्ये स्थापितः** ''गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कारः'' **प्रथमबारमेव डॉक्टर अनुपम जैन इन्दौरवासिने प्रदाय तं सम्मानितमकरोत्। सम्माने संस्थानेनैव डॉ. अनुपमाय एकलक्ष रुप्यकाणां राशिं, रजत प्रशस्तिपत्रं च उपहृतम्, उत्तरीयं श्रीफलं च समर्प्य तस्य स्वागतं कृतम्। अयं सम्मानः कार्यक्रमस्य मुख्यातिथेः खाद्यमंत्रिणः श्री अजितसिंहस्य करकमलाभ्यां अभूत्।**

महोत्सवसमितेः अध्यक्षः श्रीरवीन्द्रकुमारः सम्मानस्यास्मिन् प्रसंगे अकथयत् यत् जैनसमाजः प्रथमबारमेव महाराशियुक्तेन पुरस्कारेण कमपि जैनविद्वांसं सम्मानितमकरोत्।

तो सन् 1990 में हो चुका था, उसी टीका के उत्तरार्ध का प्रकाशन अब हो सका। उसका विमोचन भी आज शरदपूर्णिमा के दिन मुख्य अतिथि के द्वारा हुआ और उन्होंने पूज्य माताजी के करकमलों में समयसार ग्रंथ भेंट किया। साधु संघों तथा विद्वानों की चिरप्रतीक्षित आशा पूर्ण हुई, क्योंकि अब उन्हें पूरे समयसार ग्रंथ के स्वाध्याय का लाभ प्राप्त होगा। इन ग्रंथों में पूज्य माताजी ने आचार्य श्री अमृतचंद्र जी की आत्मख्याति टीका तथा आचार्य श्री जयसेन स्वामी की तात्पर्यवृत्ति दोनों संस्कृत टीकाओं की हिन्दी एक साथ प्रकाशित की है तथा स्थान-स्थान पर विशेषार्थों के माध्यम से सिद्धान्त को एवं उभयनय के समन्वय को प्रदर्शित कर ग्रंथ को वास्तव में सर्वांगीण बना दिया है। समारोह में उपस्थित विद्वानों को भी यह ग्रंथ भेंट में दिया गया।

➢**गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कार डॉ. अनुपम जैन को–**

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा घोषित तथा श्री अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर-दिल्ली द्वारा अपने सुपुत्र चिरंजीव अतिशय जैन के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में स्थापित **''गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती पुरस्कार''** द्वारा प्रथम बार डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को सम्मानित किया गया। इस सम्मान में संस्थान ने डॉ. अनुपम जी को एक लाख रुपये की नगद राशि, रजत प्रशस्ति पत्र भेंट किया तथा शॉल, माल्यार्पण एवं श्रीफल समर्पित कर स्वागत किया। यह सम्मान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय खाद्य मंत्री श्री अजित सिंह के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने सम्मान के इस प्रसंग में बताया कि जैन समाज के द्वारा प्रथम बार इतनी बड़ी राशि वाले पुरस्कार से किसी जैन विद्वान को सम्मानित किया

अस्मात् पूर्वं अस्माकं काश्चित् संस्थाः अन्येभ्यो जैनविद्वद्भ्यः महतः पुरस्कारान् अदुः किन्त्वत्र चयनसमितिः अनुपमजैनं सम्मानितं कर्तुं निर्णीतवती। एतस्य पुरस्कारस्य संस्थापकं श्री अनिल जैनः प्रति अपि महोत्सवसमितेः संस्थानस्य च आभारं प्रादर्शयामास।

डाक्टर अनुपमजैनस्य सामयिकं वक्तव्यम्–**जैनसमाजस्य नवोदितो युवको डॉक्टर अनुपम जैनः एनं सम्मानं प्राप्य गणिन्याः आर्यिकायाः समस्तसंघस्य चरणेषु नमनमकरोत्, पुनः स्वसंक्षिप्ते वक्तव्ये सोऽब्रवीत् यत् धर्मं समाजं च प्रति चाहमद्यावधि यदपि योगदानमकरवम् तत्सर्वं पूज्यमातुरेवोपकारोऽस्ति। अद्यतः पंचदशवर्षाणां पूर्वमहं तस्या दर्शनमकरवं, तदाप्रभृत्येवाहमत्यन्तमेव प्रभावितोऽस्मि, अस्या एव प्रेरणया स्वमुख्यविषयेण गणितेन सहैव स्तोकं–स्तोकं धार्मिकाध्ययनं कर्तुमपि स्व लक्ष्य निर्धारितमकरवम्।**

संस्थानस्य पदाधिकारिणो मम कांचित् योग्यतामवलोक्य माम अत्रत्यैः शैक्षणिकगति– विधिभिः सह समायोजयन्, येन राष्ट्रीयअन्तर्राष्ट्रीयसंगोष्ठीनामायोजनेषु मां सक्रियरूपेण भागं गृहीतुमवसरः प्राप्तः। मम हार्दिकी भावनास्ति यत् पूज्यमात्रा निर्देशितानि साहित्यिककार्याणि संस्थानस्य च शैक्षणिकयोजनाश्च प्रचुरप्रगतिपथि अग्रसारिता कृत्वाहं उत्तरदायित्वस्य निर्वाहं कर्तुं शक्ष्यामि।

अद्यास्य सम्मानस्य मंगलकारिणि अवसरेऽहं त्रिलोकशोधसंस्थानं प्रति स्वाभारं प्रकाशयामि साधुजनेभ्यश्च अस्यैवाशीर्वादस्य आशां करोमि यत् जीवने आत्मविद्यां प्राप्य

गया है। इससे पूर्व हमारी कतिपय संस्थाओं ने अन्य विद्वानों को ही ऐसे बड़े सम्मान प्रदान किए हैं किन्तु यहाँ पर चयन समिति ने डॉ. जैन को सम्मानित करने का निर्णय लिया। इस पुरस्कार के संस्थापक श्री अनिल जैन के प्रति भी महोत्सव समिति एवं संस्थान ने आभार प्रगट किया।

➢डॉ. अनुपम जैन का सामयिक वक्तव्य–

जैन समाज के नवोदित युवक डॉ. अनुपम जैन ने इस सम्मान को प्राप्त कर पूज्य गणिनी आर्यिका श्री तथा समस्त संघ के चरणों में नमन किया पुनः अपने संक्षिप्त वक्तव्य में उन्होंने कहा कि धर्म और समाज के प्रति मैंने आज तक जो कुछ भी अपना योगदान दिया है, वह सब पूज्य माताजी की ही देन है। आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व मैंने इनके दर्शन किए, तब से ही मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ और इनकी प्रेरणा से अपने मुख्य विषय गणित के साथ थोड़ा-थोड़ा धार्मिक अध्ययन करने का भी लक्ष्य बनाया।

संस्थान के पदाधिकारियों ने मुझमें कुछ योग्यता देखकर यहाँ की अकादमिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों के साथ मुझे जोड़ा, जिससे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजनों में मुझे सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। मेरी हार्दिक भावना है कि पूज्य माताजी द्वारा निर्देशित साहित्यिक कार्यों तथा संस्थान की अकादमिक योजनाओं को खूब प्रगतिपथ पर अग्रसर कर अपने दायित्व का निर्वाह कर सकूँ।

आज के इस सम्मान के मंगल अवसर पर मैं त्रिलोक शोध संस्थान के प्रति आभार प्रगट करता हूँ तथा साधुजनों से इसी आशीर्वाद की आशा करता हूँ कि जीवन में आत्मविद्या को प्राप्त कर

सम्यग्ज्ञानस्य सारं गृहीतुं शक्नुयाम्।

श्री णमोकार महामंत्रस्य कोशस्योद्घाटनं एका (नूतनयोजना)–**धनानामादानं प्रदानं च कर्तुं कोशास्तु भूतले लक्षाधिका सन्ति, किन्तु णमोकारमहामंत्रस्य आदानप्रदानयोः कोशाः कुत्रापि न सन्ति, अतः मातुः प्रेरणया जम्बूद्वीपस्थले णमोकारमहामंत्रस्य अधिकोशस्य स्थापना 8 अक्तूबर 1995 शरत्पूर्णिमायाः दिनेऽभवत्। यस्याः उद्घाटनं केन्द्रीयखाद्यमंत्री श्री अजितसिंहोऽकरोत्।**

अधिकोशस्य योजना–**अस्मिन् अधिकोशे श्रद्धालवः णमोकार मंत्रं लेखाय पुस्तिकासु णमोकार मंत्रं लिखित्वा संचितं कर्तुं प्रभविष्यन्ति। एतदर्थं विशेषप्रकारस्य रिक्तपुस्तिकाः श्रीअमरचन्दः होमब्रेड मेरठनगरस्य सौजन्येन प्रकाशिताः अभवन्। 8 अक्तूबर दिने लेखनपुस्तिकायाः विमोचनं श्री आनन्द प्रकाशो जैनः सोरम निवासी, दिल्ली अकरोत्। पुनस्तत्कालमेव बैंककार्यालयात् पुस्तिकानां वितरणं प्रारम्भमभवत्। णमोकारमंत्रस्य लेखनेच्छवः महानुभावाः ताः सहस्रपुस्तिकाः गृहीत्वा लेखनकार्यस्य शुभारंभं तीर्थक्षेत्रादेवाकुर्वन्।**

एतासु पुस्तिकासु अधिकोशस्यानुसारेण मंत्र–लेखनस्य नियमाः उद्देश्याश्च लिखिताः सन्ति। लेखकान् च हीरक–स्वर्ण–रजत पदकैः सम्मानितान् कर्तुं च योजनास्ति। एतस्याः योजनायाः लाभं प्रत्येकप्रान्तस्य नर–नार्यः आबालवृद्धाः प्राप्नुवन्ति। इच्छुकसज्जनाः जम्बूद्वीपस्थले स्थापितेन अधिकोशेन सम्पर्कं कुर्युः।

सच्चे ज्ञान का सार ग्रहण करूँ।

➢श्री णमोकार महामंत्र बैंक का उद्घाटन (एक अप्रत्याशित नूतन योजना)–

पैसों के लेन-देन वाले बैंक तो दुनिया में लाखों हैं किन्तु णमोकार मंत्र का लेन-देन करने वाले बैंक आज तक कहीं भी नहीं थे सो पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर एक **''णमोकार महामंत्र बैंक''** की स्थापना 8 अक्टूबर 1995 शरदपूर्णिमा को हुई, जिसका उद्घाटन केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्री अजित सिंह ने किया।

➢बैंक की योजना–

इस बैंक में श्रद्धालुभक्तों को णमोकार महामंत्र लेखन पुस्तिकाओं में लिखकर जमा करना होगा। इसके लिए विशेष प्रकार की कापियाँ श्री अमरचंद होमब्रेड-मेरठ के सौजन्य से प्रकाशित हुईं। 8 अक्टूबर को लेखन पुस्तिका का विमोचन श्री आनंद प्रकाश जैन (सौरम वाले)-दिल्ली ने किया। पुनः तत्काल ही बैंक कार्यालय से कापियों का वितरण प्रारंभ हो गया। महामंत्र लिखने के इच्छुक नर-नारियों ने दो घंटे में ही 1 हजार कापियाँ लेकर लेखन कार्य का शुभारंभ तीर्थक्षेत्र से ही कर दिया।

इन कापियों में बैंक के साथ मंत्र लेखन के समस्त नियम और उद्देश्य लिखे हैं तथा लेखकों को हीरक पदक, स्वर्ण पदक और रजत पदक से सम्मानित करने की योजना भी है। इन योजनाओं का लाभ प्रत्येक प्रान्त के नर-नारी आबाल-वृद्ध उठा रहे हैं। अन्य इच्छुकजन जम्बूद्वीप स्थल पर बने स्थाई बैंक से सम्पर्क करें।

नेतृणां द्वे महामहोत्सवे आगमनस्य सुखदसंयोगः–**सभायाः मध्ये पीठाधीशः क्षुल्लको मोतीसागरः अद्य जम्बूद्वीप महामहोत्सवस्य वैशिष्ट्यं वर्णयितुमकथयत् यत् ''चौधरी अजितसिंहस्येदं परमसौभाग्यमेवास्ति यत् सोऽद्य द्विवारं मातुराशीर्वादं प्राप्तुमागच्छत्। पंचवर्षपूर्वं भवान् 1990 वर्षेऽपि जम्बूद्वीपस्य प्रथममहामहोत्सवे केन्द्रीय उद्योगमंत्रिरूपेण समागच्छत् अद्य च पुनः तस्मिन् महामहोत्सवे भवतः आगमनमेकः सुखदसंयोग एवास्ति। भविष्येऽपि सः जम्बूद्वीपस्थले समागत्य पूज्यमातुराशीर्वादं गृहणातु, अयमेव मम आशीर्वादोऽस्ति।**

मुख्यातिथेरजितसिंहस्य भाषणम्–**पूज्यमातः ज्ञानमति! एतस्मै जम्बूद्वीपमहोत्सवाय देशस्य प्रतिकोणतः समागताः श्रद्धालवः!**

अयं महयमपारहर्षस्य विषयोऽस्ति यदहं जम्बूद्वीपस्यास्मिन् महोत्सवस्यावसरे भवद्भिः सह वार्तालापं करोमि। अस्मात् पूर्वमहं जम्बूद्वीपस्य महोत्सवे 1990 वर्षे भवतां मध्ये उपस्थितः आसम्। अहमेतां महामहोत्सवसमितिं प्रति स्वाभारं प्रकटयामि यत् ते अस्मिन् महति अवसरे समारोहस्यायोजनमकुर्वन् माम् च भवन्तं द्वि शब्दै वक्तुमवसरोऽदुः। एतस्यां पवित्रायां नगर्यां हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपनाम्ना यः विकासोऽभवत् सः माम् लुब्धमकरोत्। अत्र मन्दिराणि, भवनानि, प्रतिमाश्च सम्पूर्णं च क्षेत्रं महतां सुन्दररूपेण विकसितं कृतम्। जम्बूद्वीपस्य चर्चाःस्माकं प्राचीनसाहित्ये पुनः–पुनः प्राप्यते, यस्य तात्पर्यमस्ति यत् अस्य

➢नेताजी का दो महामहोत्सव में आने का सुखद संयोग–

सभा के मध्य स्वस्ति श्री पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर महाराज ने आज के संदर्भ में जम्बूद्वीप महामहोत्सव का वैशिष्ट्य बताते हुए कहा कि ''चौधरी अजित सिंह जी का यह परम सौभाग्य ही है, जो वे दुबारा आज पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त करने पधारे हैं। आज से पाँच वर्ष पूर्व सन् 1990 में भी जम्बूद्वीप के प्रथम महामहोत्सव में आप केन्द्रीय उद्योगमंत्री के रूप में पधारे थे और आज पुनः उसी महामहोत्सव में आना एक सुखद संयोग ही मानना पड़ेगा। भविष्य में भी वे जम्बूद्वीप स्थल पर पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद ग्रहण करें, यही उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरा शुभाशीर्वाद है।''

➢मुख्य अतिथि श्री अजित सिंह का भाषण–

पूज्यनीया माता ज्ञानमती जी, इस जम्बूद्वीप महोत्सव के लिए देश के कोने-कोने से आये हुए श्रद्धालुजन!

यह मेरे लिए अपार हर्ष का विषय है कि मैं जम्बूद्वीप के इस महामहोत्सव के शुभ अवसर पर आपसे बातचीत कर रहा हूँ। इससे पहले भी वर्ष 1990 में इस महामहोत्सव में मैं आप लोगों के बीच आ चुका हूँ। मैं इस महामहोत्सव समिति के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इतने बड़े पैमाने पर इस समारोह का आयोजन किया और मुझे आपसे दो शब्द कहने का मौका दिया। ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप के नाम से जो विकास किया गया है, वह मुझे काफी लुभावना लगा। यहाँ के मंदिर, भवन, प्रतिमाएँ और पूरा क्षेत्र बहुत ही सुन्दर रूप से विकसित किया गया है। जम्बूद्वीप की चर्चा हमारे प्राचीन साहित्य में बार-बार मिलती है और इसका मतलब न

सम्बन्धो न केवलमस्माकं देशेन, किन्तु सम्पूर्ण विश्वेन अस्ति। हस्तिनापुरमस्माकं देशस्य सर्वप्राचीनं नगरमस्ति। इदं क्षेत्रं अस्माकमितिहासेन, संस्कृत्या च धर्मेण युक्तमस्ति।

भारतमेकधर्मप्रधानो देशोऽस्ति किन्तु अस्माकं देशे धर्मस्यार्थः केनचित् संकीर्णविचारेण नास्ति, किन्तु सर्वदैव मानवधर्मेण मानवकल्याणेन चास्ति। अस्माकं शास्त्रेषु धर्मस्य चर्चा समाजस्य धारणशक्तिरूपेण विद्यते। ''धारयते इति धर्मः'' **धार्यते धर्म अर्थात् धर्मः सा शक्तिरस्ति या समाजं योजयतिं संघटितं करोति एकसूत्रे च बध्नाति। अद्य समाजे विघटनस्य शक्तयः सक्रिया सन्ति, तदर्थे धार्मिक भावनाया विकासः अति आवश्यकोऽस्ति, जैन धर्मश्च यो मानवतायां अहिंसायां च विशेषं बलं ददाति, मानवएकतायै एकं महत्वपूर्णां भूमिकां निर्वोढुं क्षमोऽस्ति। जैनविचारधारा अस्माकं देशस्यातिप्राचीनविचारधारा वर्तते। भगवतो महावीरात् पूर्वं त्रयोविंशति तीर्थंकराः अभवन्। जैनमतं भारतीय समाजे प्रचलितस्य जातिभेद–भावानां विरुद्धमासीत्। तद् महिलाभ्य सर्वदैव सम्मानमदात्। जैनधर्मानुसारेण प्राणी लघुना महान स्वकर्मभिर्भवति लघो लघुरपि प्राणी स्वकर्मणां बलेन आत्मानं शुद्धं कर्तुं प्रभवति। चारित्र्यं जैनमते मूलसिद्धान्तरूपेण मतम्।**

जैनमते मोक्षाय शाश्वताध्यात्मिकतां च उच्चतां प्राप्तुं बाह्यप्रदर्शनस्य कर्मकाण्डस्य च स्थाने आचरणस्य सभ्यतायां बलप्रदानमुक्तम्। भगवान् महावीरः व्यक्तित्वस्य सामाजिकस्या–ध्यात्मिकस्य चोद्धाराय स्वात्मानं मनः शुद्धं सरलं च कर्तुं बलं प्रादात्। जैनधर्मे आध्यात्मि–

केवल हमारे देश से बल्कि पूरी पृथ्वी से है। हस्तिनापुर हमारे देश का सर्वप्राचीन नगर है। यह नगर हमारे इतिहास, संस्कृति एवं धर्म से जुड़ा हुआ है।

भारत एक धर्मप्रधान देश रहा है लेकिन हमारे देश में धर्म का अर्थ किसी संकीर्ण विचार से नहीं है बल्कि हमेशा मानव धर्म या मानव कल्याण से रहा है। हमारे शास्त्रों में धर्म की चर्चा समाज को धारण करने वाली शक्ति के रूप में हुई है। **''धारयते इति धर्मः''** अर्थात् धर्म वह शक्ति है जो समाज को जोड़ती है, संगठित करती है व एक सूत्र में बांधती है। आज जबकि समाज में विघटन की शक्तियाँ सक्रिय हैं, सही अर्थों में धार्मिक भावना का विकास अति आवश्यक है और जैनधर्म जो मानवता व अहिंसा पर विशेष जोर देता है, सामाजिक एकता के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। जैन विचारधारा हमारे देश की बहुत पुरानी विचारधारा है। भगवान महावीर से पहले इसमें 23 तीर्थंकर हो चुके हैं। जैन मत भारतीय समाज में चल रहे जाति-पाति के भेदभाव के विरुद्ध रहा है। इसने महिलाओं को हमेशा से ही सम्मान दिया है। इसके अनुसार आदमी बड़ा व छोटा अपने कर्मों से होता है और छोटे से छोटा आदमी भी अच्छे कर्मों के बल पर अपने जीवन को सुधार सकता है। सम्यक् आचरण को जैनदर्शन में मूल सिद्धान्त के रूप में माना गया है।

जैनमत में मोक्ष को सांसारिक और आध्यात्मिक ऊँचाई हासिल करने के लिए बाहरी दिखावे और कर्मकाण्ड की जगह पर आचरण की सभ्यता पर बल दिया है। भगवान महावीर ने व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक उद्धार के लिए अपनी आत्मा को, अपने मन को, शुद्ध, सरल बनाने

कोत्थानाय मोक्षं प्राप्तुं सम्यग्दर्शनं सत्यविश्वासं सम्यग्ज्ञानं–समीचीनं ज्ञानं, सम्यक्–चारित्रं–सत्यमाचरणं च कथितम्। एतत्सर्वं जैनधर्मे रत्नत्रयं कथ्यते। सम्यक् आचरणाय जैनमते पञ्च मूलसिद्धान्ता महाव्रतरूपेण मताः। स्पष्टमस्ति यदैषां पञ्चमहाव्रतानां यथासंभवं अधिकाधिकं पालनं कर्तव्यम्, एतेनैवास्माकं समाजे परस्परंस्नेहस्य सामंजस्यस्य च भावना भवितुं शक्यते। शान्तेरहिंसायाश्च यं सन्देशं भगवान् महावीरोऽदात् तस्याः आवश्यकताद्य पूर्वस्मादपि अधिका वर्तते, यतोऽद्यस्माकं पुरतः सर्वत्र अशान्तिः दृश्यते कुत्रचित् सम्प्रदायमाश्रित्य कुत्रचिच्च जातीयप्रभावात्।

जैनमतानुसारेण प्रतिप्राणिनि आत्मनो निवासो विद्यते। मनुष्येभ्यः केवलं न, वृक्षपादपेभ्यश्चास्माकं हृदयेऽहिंसाया भावना भवितव्या। अधुना अनेकाः वृक्षाश्च छिद्यन्ते, पक्षिणां पशूनां च हत्या संजायते, एतेनास्माकं वातावरणे प्रदूषणमुत्पन्नमभवत्, पर्यावरणेऽसन्तुलनमजायत्। एतस्मिन् मानवतायाः भावना अपि अनिवार्या विद्यते, जैनविचारविश्वासिनां भवतामस्मिन् सहयोगः सम्यक् भावानामुत्पादयितुं शक्नोति। वयमत्र प्राप्नुमो यत् प्राचीनकालादेवास्मिन् देशे अनेकाः भ्रान्तीः अभव उत्पन्नाः विवादाः अप्यभवन्। जैनधर्मः सहस्रशो वर्षाणां पश्चादपि एका जीविता शक्तिः विद्यते। अस्मिन् देशे साहित्य क्षेत्रेषु कलासंस्कृतिव्यापार तेषां तु जैनानां महत् योगदानं वर्तते। प्राचीन कालादेव प्राकृतं

पर बल दिया है। जैनधर्म में आध्यात्मिक उत्थान या मोक्ष प्राप्ति के लिए सम्यग्दर्शन अर्थात् सच्चे विश्वास, सम्यग्ज्ञान यानि सच्चा ज्ञान, सम्यक्चारित्र यानी सही आचरण को कहा है। इसे जैनधर्म में त्रिरत्न कहा जाता है। सम्यक् आचरण के लिए जैनमत में पाँच बुनियादी सिद्धान्त यानी पाँच महाव्रत हैं। जाहिर है कि इन पाँच महाव्रतों का जहाँ तक हो सके, अधिक से अधिक पालन किया जाये, तो हमारे समाज में पारस्परिक स्नेह व सामंजस्य की भावना पनप सकती है। शांति व अहिंसा का जो संदेश भगवान महावीर ने दिया, उसकी जरूरत आज हमें पहले से अधिक है जबकि हमारे चारों तरफ आज सैलाब दिखाई पड़ते हैं, कहीं मजहब को लेकर ,कहीं जातीय दंगों को लेकर।

जैनमत के अनुसार कण-कण में आत्मा का निवास माना है अर्थात् मनुष्यों के लिए ही नहीं, पेड़-पौधों के लिए भी हमारे दिल में अहिंसा की भावना होनी चाहिए। आज अनेक जंगल व पेड़-पौधे काटे जा रहे हैं, पक्षी व पशुओं की हत्या हो रही हैं, उससे हमारे माहौल में प्रदूषण फैल गया है, पर्यावरण में असंतुलन आ गया है। ऐसे में मानवता की भावना होना हमारे लिए बहुत जरूरी है और जैन विचार मानने वाले आप लोगों का इसमें सहयोग अच्छी भूमिका अदा कर सकता है। यहाँ हम यह पाते हैं कि प्राचीनकाल से इस देश में बहुत सी विचारधाराओं ने, भ्रम ने जन्म लिया है तथा बहुत से गौण भी हो गये हैं। जैनधर्म हजारों साल बाद भी हमारे बीच में एक जीवित शक्ति है। इस देश के साहित्य, कला, संस्कृति, व्यापार व उद्योग को सुदृढ़ बनाने में जैनों का बड़ा योगदान है। पुराने समय से ही जैनियों में प्राकृत आम लोगों की भाषा है, जिसने कि पहले प्राकृत, अर्धमागधी, शौरसेनी

जैनानां सामान्यभाषा वर्तते, यस्यां प्राकृते अर्धमागधी शौरसेनी आदि तास्वेवभाषासु आचार्याः स्वविचारान् प्रकाशयामासुः। अद्य समये च हिन्दी मराठी गुजराती आदि सर्वासां भाषाणां प्राकृतमेव जननी वर्तते। कलाया क्षेत्रे वृहत्स्तूपाः, मूर्तयः विशेषतः श्रवणबेलगोला तीर्थे गोम्मटेश्वरस्य मूर्तिः, गुहाः प्रभृतयः जैनानां योगदाने गण्यन्ते, अहं पुनः भवतामाभारं प्रकाशयामि, यत् हस्तिनापुरस्य विकासाय भवन्तः यं प्रयासमकुर्वन्, तस्य प्रशंसां करोमि, आशां च करोमि यत् स्थानमिदं तीर्थस्थलपर्यटनस्थलस्य रूपेण अग्रसारिभूत्वा सर्वेषां समक्षं आगच्छतु तस्मै च भवन्तोऽस्माकं यं सहयोगमेष्यन्ति वयमुद्यताः तिष्ठामः। पूज्य मातुश्चरणयो नमनं भवद्भ्यश्च धन्यवादाः।

भगवान् ऋषभदेवोऽयोध्या च अस्याः गणिन्याः हृदये वसति–**अहं स्वविनयांजलिवक्तव्येऽ–कथयम् यत् आकाशात् उच्चादर्शानां, पर्वतेभ्यः कठोर तपसां, नदीसरिताभ्यश्च दीर्घकीर्ति–पताकायाश्च नामास्ति–आर्यिका ज्ञानमती। एतस्याः जीवनस्य प्रतिक्षणं स्वर्णाक्षरेषु अंकितं भवितुमितिहासस्य पृष्ठोऽस्ति।**

सा स्वजीवनं मात्रं वर्षेभ्यः नैव, अलौकिक कार्यैः महत्कर्तुं एकमुदाहरणं अस्थापयत्।

मंत्री चरणप्रक्षालनस्य सौभाग्यं प्राप्तवान्–**पारम्परिकव्यवस्थानुसारं मातुः पादप्रक्षालनं–**

आदि में अपने विचारों को प्रकट किया और आजकल हिन्दी, मराठी, गुजराती आदि सभी भाषाएँ जिस स्वरूप में हैं, उनमें जैन सम्प्रदाय का बड़ा योगदान है। कला के क्षेत्रों में बहुत से स्तूप, मूर्तियाँ खासकर श्रवणबेलगोला में गोम्मटेश्वर की मूर्ति, गुफा स्थापत्य जैनियों की देन है। मैं फिर से आप लोगों का आभार प्रकट करता हूँ, हस्तिनापुर के विकास के लिए आप लोगों ने जो प्रयास किया है, उसकी सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह जगह बड़े तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थल के रूप में उभर कर आए और इसके लिए आप हमारा जो भी सहयोग चाहेंगे, उसके लिए हम तैयार हैं। पूज्य माताजी के चरणों में नमन, आप सबको धन्यवाद!

➢भगवान ऋषभदेव और अयोध्या तो इनके अन्तस में व्याप्त है–

मैंने अपने विनयांजलि वक्तव्य में कहा कि आकाश से ऊँचे आदर्श, पर्वत से कठोर तप और नदी सरिताओं से लम्बी कीर्तिपताका से युक्त व्यक्तित्व का नाम है–आर्यिका ज्ञानमती। इनके जीवन का एक-एक क्षण स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाला ऐतिहासिक पन्ना है। एक अंग्रेजी लेखक की ये पंक्तियाँ इनके जीवन पर पूर्णरूप से घटित होती हैं–

Count your night by stars, not shadows.
Count your life with smiles, not tears.
And with joy and every birthday.
Count your age by friends, not years.

अर्थात् इन्होंने अपने जीवन को मात्र वर्षों से नहीं, अलौकिक कार्यों से महान बनाने में एक मिशाल कायम की है।

➢मंत्री जी ने चरण प्रक्षालन का सौभाग्य लिया–

पारम्परिक व्यवस्थानुसार पूज्य माताजी के चरण प्रक्षाल-पिच्छिका परिवर्तन आदि की बोलियाँ

पिच्छिका परिवर्तनं च प्रति प्रार्थिनां दानघोषणाः प्रारब्धाः, तदानीं माननीयोऽजितसिंहस्योत्कण्ठां दृष्ट्वा तस्मै मातुश्चरणप्रक्षालनस्यावसरः प्रदत्तः। माननीयोऽजितसिंहो दुग्धै जलैश्च मातुश्चरणौ प्रक्षाल्य हर्षितोऽभूत् चरणोदकेन च स्वमस्तकं पवित्रमकरोत।

तस्मिन्नेव क्रमे पिच्छिका प्रदानस्य सौभाग्यं श्री कमलकुमारो जैनः–मौसमविहारो दिल्ली निवासी प्राप्तवान्। सः सपरिवारं मंचमागत्य पूज्यमातुः करकमलयोः नवीनां पिच्छिकां प्रादात्, पुरातनां च पिच्छिकां प्राप्नोत्। दिगम्बर जैन साधूनां संयमोपकरणं पिच्छिका अस्ति, यस्य ग्रहे इयं पिच्छिका तिष्ठति, तस्य गृहे सदैव धनधान्यस्य वृद्धिर्भवति।

अस्मिन्नेव सन्दर्भे प्रत्यक्षघटितोऽतिषयः स्मर्यते यत् 10–12 वर्षेभ्यः पूर्वं एक सज्जनः स्वप्नेऽपश्यत् यत् मातुः ज्ञानमत्याः पिच्छिकया बहुमूल्यानि रत्नानि वर्षन्ति, सः स्वप्नानुसारेण एकस्मिन् दिने हस्तिनापुरमागत्य मातुर्हस्तस्य पिच्छिकां गृहीत्वा नवीनां प्रदायागच्छत्, अतस्तेन सह चमत्कारः एवाभवत् यत् पिच्छिकया गृहे प्रविष्टे सति सः एकं नवीनंपैट्रोलपम्पस्य क्रयमकरोत् केषुचिद् दिनेषु सः अनेकानां पैट्रोलपम्पानां स्वाम्यभवत्। अस्याः घटनायाः पश्चात् सोऽद्यापि कथयति यत् मातुः पिच्छिकया तु सत्यमेव रत्नानि वर्षन्ति। वस्तुस्तस्तु यथा पिच्छिकया साधुजनाः सर्वदा समस्तजीवान् रक्षन्ति, तां हस्तेन गृहीत्वा साधुजनाः सामायिकं प्रतिक्रमणं न जानामि कतीनां मंत्राणां जाप्यादिकान् कुर्वन्ति, तु एवं भूतानां चमत्काराणां प्रकटनं कस्या अतिशयोक्तेर्वर्णनं नास्ति।

प्रारंभ हुईं, उस समय माननीय श्री अजित सिंह जी की उत्कण्ठा को देखकर पूज्य माताजी के चरण प्रक्षालन करने का सुअवसर उन्हें प्रदान किया गया। माननीय मंत्री जी दूध और जल से पूज्य माताजी के पावन चरण धोकर हर्षित हुए एवं उस चरणोदक को मस्तक पर लगाया।

इसी क्रम में पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य श्री कमल कुमार जैन-मौसम विहार-दिल्ली को प्राप्त हुआ। उन्होंने सपरिवार मंच पर आकर पूज्य माताजी के करकमलों में नवीन पिच्छी प्रदान कर उनकी पुरानी पिच्छी प्राप्त की। जैन साधु के संयम का उपकरण पिच्छी है, यह जिन्हें प्राप्त होती है, उनके घर में सदैव धन-धान्य की वृद्धि होती है।

इसी संदर्भ में एक प्रत्यक्ष घटित अतिशय याद आ रहा है कि 10-12 वर्ष पूर्व एक सज्जन ने स्वप्न देखा कि ज्ञानमती माताजी की पिच्छी में से कीमती रत्न झड़ रहे हैं फिर उन्होंने स्वप्न के अनुसार एक दिन हस्तिनापुर आकर माताजी से उनके हाथ की पुरानी पिच्छी लेकर नई प्रदान कर गए पुनः उनके साथ वास्तव में चमत्कार हो गया कि पिच्छी घर में पहुँचते ही एक नये पेट्रोलपम्प को खरीदा और कुछ ही दिनों में वे कई पेट्रोल पम्प के मालिक बन गए। इस घटना के पश्चात् वे आज भी कहते हैं कि माताजी की पिच्छी से तो सचमुच रतन ही बरसते हैं। दरअसल जिस पिच्छिका से साधुजन सदा समस्त जीवों की रक्षा करते हैं, उसे हाथ में लेकर सामायिक-प्रतिक्रमण तथा न जाने कितने मंत्रों का जाप्य आदि करते हैं, उसमें ऐसे चमत्कार प्रगट हो जाना कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है।

जन्मजयन्त्याः अस्मिन् पावनप्रसंगे शौचस्योपकरणं ''कमण्डलुं'' प्रादातु श्री कमलकुमारो जैनो दिल्ली निवासी/ज्ञानस्योपकरणं शास्त्राणि उपहर्तुमागच्छत् श्री राजकुमारो जैनः वीरा बिल्डर्स दिल्ली निवासी, कमलाकारैः 62 सज्जितैर्दीपकैरावर्तिकामकरोत् श्री मनोजकुमारो जैनः सपरिवारः मेरठ निवासी, तदा मातुः ज्ञानमत्याः जय–जयकारै वातावरणं गुंजितमभवत्।

सम्पूर्णस्य समारोहस्याधारशिलायाः ज्ञानमत्याः गणिन्याः देशवासिभ्यः पावनसन्देशः–**''ओम् नमः सिद्धेभ्यः'' अस्माकं विद्वांसो भक्तगणाश्च किमिदं विस्मरन्ति यत् अद्य मम जन्मदिनं नास्ति किन्तु त्रिचत्वारिंशत्तमं संयमदिनमस्ति। 62 वर्षेभ्यः पूर्वं तु शरत्पूर्णिमायां ममैतस्य नश्वरशरीरस्य जन्माभवत्। संयमधारिणां सम्मानं कर्तुमस्माकं देशस्य परम्परास्ति। अस्मै आचार्यैरुक्तं यत्–**''देवा वि तस्स पणमन्ति, जस्स धम्मे सया मणो'' **अर्थात् यस्य हृदये धर्मो विद्यमानोऽस्ति देवाः अपि तं नमन्ति। अतोऽद्य भवन्तः मम नैव, धर्मस्य जयन्ती समायोजयन्ति।**

जैनरामायणस्य एषा महती चार्वी वातोस्ति यत् ''यं देशमाश्रित्य साधवस्तपस्यां कुर्वन्ति तस्य देशस्य राजानः साधोस्तपस्यायाः षष्ठभागं पुण्यं स्वत एव लब्धं भवति।'' **इति आधारेणास्माकं तपस्यायाः पुण्यं राजनेतारोऽपि लभन्ते, अनेन पुण्यकोशो न हीयते किन्तु वर्धते एव। अधुना मंत्री अजितसिंहः रत्नत्रयस्य सुन्दरव्याख्यां करोति स्म, अतः इदं रत्नत्रयं धृत्वा जनाः शाश्वतपदस्य प्राप्तिं कुर्वन्तु, अयमेव तस्मै मम मंगल आशीर्वादोऽस्ति।**

जन्मजयंती के इस पावन प्रसंग पर शौच का उपकरण 'कमण्डलु' प्रदान किया श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली ने। ज्ञान का उपकरण 'शास्त्र' भेंट करने के लिए श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली वाले पधारे और कमलाकार आरती में सजे 62 दीपकों से आरती उतारी– श्री मनोज कुमार जैन (मेरठ) सपरिवार ने, तब पूज्य ज्ञानमती माताजी की जयजयकारों से वातावरण गूंज उठा।

➢**सम्पूर्ण समारोह की आधारशिला गणिनी आर्यिका श्री का देशवासियों के लिए पावन संदेश–**

''ॐ नमः सिद्धेभ्यः'' हमारे विद्वान् और भक्तगण शायद यह भूल जाते हैं कि आज मेरा 62वाँ जन्मदिन नहीं, बल्कि 43वाँ संयमदिवस है। 62 वर्ष पूर्व तो शरदपूर्णिमा को मेरे इस नश्वर शरीर का जन्म हुआ था। खैर! संयम धारण करने वाले संयमियों का सम्मान करना हमारे देश की परम्परा रही है और इसके लिए आचार्यों ने कहा भी है– **''देवा वि तस्स पणमंति, जस्स धम्मे सया मणो''** अर्थात् जिसके हृदय में धर्म विद्यमान है, देवता भी उसको नमस्कार करते हैं। अतः आप लोग आज मेरी नहीं, धर्म की जयंती मना रहे हैं।

जैन रामायण में एक बहुत सुन्दर बात आई कि **''जिस देश का आश्रय लेकर साधु तपस्या करते हैं, उस देश के राजा को साधु की तपस्या का छठा भाग पुण्य स्वयं प्राप्त हो जाता है।''** इस आधार से हम लोगों की तपस्या का पुण्य हमारे राजनेता भी ले रहे हैं, इससे पुण्य का खजाना कम न होकर बढ़ता ही रहता है। अभी मंत्री अजित सिंह जी रत्नत्रय की सुन्दर व्याख्या कर रहे थे, सो इसी रत्नत्रय को धारण करके वे अपनी आत्मा को अजित पद की प्राप्ति करावें, यही उनके लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है।

जातिसंघटना–**अद्यास्मिन् प्रसंगेऽहमेकां वार्तां कर्तुमिच्छामि यत् कानिचित् दिनानि पूर्वमेका चर्चा समायाता यत् शासनं जैनसमाजं अल्पसंख्यकश्रेण्याः पृथगकरोत्। अयमेको विषयोऽस्ति यच्छासने जैनसमाजस्यैतावती उपेक्षा किमर्थमस्ति? एतासां सर्वासां मूलकारणमस्त्यस्माकं संगठनस्य न्यूनता। वयं सर्वे संघाटितो भूत्वा अग्रे गच्छेम अतो यदा अखिलभारतीयस्य संस्थाःअस्यां दिशि किमपि दृढं चरणं न उत्थापयन्ति, तदा जनसाधारणस्य ध्वनिरेव शासनस्य कर्णयो गन्तव्यः, वयं अजितसिंहसदृशानां नेतृणां माध्यमेन आत्मनो वार्तां शासनं प्रति प्रापयामः यद्यनेनापि सफलता न प्राप्नुमः तु आन्दोलनं कुर्वन्तु। यतो जैनाः अहिंसकाः सन्ति, किन्तु कापुरुषाः नैव सन्ति।**

अनेन साकमेकः उपायो मम ध्याने आगच्छत् यं अहमनेकसभासु अकथयम् यत् जैनधर्मः एकः प्राकृतिकधर्मोऽस्ति न च जातिविशेषोऽस्ति। जैनधर्मावलम्बिनां 84 जातयः प्राचीनकालात् फूलमालपचीसी जयमालायां पठिताः सन्ति। अग्रवाल– खण्डेलवालपल्लीवाल– बघेरवालपोरवाड्लमेचूपरवारगोलालारे आदीनां सर्वासां जातीनां स्वास्तित्वं वर्तते, एताः सर्वाः केनापि प्रकारेण जीविता सन्ति। कालानुसारेण तासां नामसु किंचिद् परिवर्तनं भवति। यथा आम्रगुलाबगोधूमतन्दुलादीनामनेकाः जातयो भवन्ति, तथैव 84 जातयो जैनानां मताः सन्ति। एतासु कासांचित् जातीनां प्रबलाः संघटनाः निर्मिता सन्ति, किन्त्वद्यापि काश्चिज्जातयाः स्वसंघटने पृष्ठगामिन्यः सन्ति। प्रत्येक जातयः स्व संयोजकादीन् निर्वाचितान् कृत्वा

➢**जाति संगठन पर बल–**

आज के इस प्रसंग में मुझे एक बात और कहनी है कि अभी कुछ दिनों से चर्चा सामने आई है कि सरकार ने जैनियों को अल्पसंख्यक की श्रेणी से अलग कर दिया है। यह एक विषय बन गया है कि सरकार में जैनियों की इतनी उपेक्षा क्यों है? इन सबका मूल कारण है हमारी संगठन शक्ति की कमी। हम सबको संगठित होकर कदम उठाना चाहिए क्योंकि जब अखिल भारतीय स्तर की संस्थाएँ इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही हैं, तब जनता की आवाज ही सरकार तक जानी चाहिए और अजित सिंह जैसे नेताओं के माध्यम से अपनी बात सरकार को पहुँचाएं तथा यदि इसमें भी सफलता न मिले तो आन्दोलन करें, क्योंकि जैनी अहिंसक हैं किन्तु कायर नहीं हैं।

इसके साथ एक उपाय मेरी समझ में और आया है जिसे मैं कई सभाओं में कह चुकी हूँ कि जैनधर्म एक प्राकृतिक धर्म है न कि जाति विशेष है। जैनधर्म पालन करने वालों की 84 जातियाँ पुरानी फूलमाल पच्चीसी में पढ़ी जाती थीं। अग्रवाल, खण्डेलवाल, पल्लीवाल, बघेरवाल, पोरवाड, लमेचू, परवार, गोलालारे आदि सभी जातियों का अपना अस्तित्व है, ये सभी किसी न किसी रूप में अनादि हैं। काल के अनुसार केवल उनके नामों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। जैसे आम, गुलाब, गेहूँ, चावल आदि में अनेक जातियाँ होती हैं, वैसे ही 84 जातियाँ जैनियों की मानी गई हैं। इनमें से कई जातियों के सशक्त संगठन बने हुए हैं किन्तु अभी कई जातियाँ अपने संगठन में पीछे हैं सो प्रत्येक जाति को अपने-अपने संयोजक आदि बनाकर जातीय संगठन मजबूत करना चाहिए तथा

जातीयसंघटनां पुष्टां कुर्वन्तु राष्ट्रीयजनगणनायां च सर्वे जैनाः अवश्यमेव लिखितव्याः किन्तु जनाः स्व नामानि कासलीवाल–सेठी–छाबडा–पाण्डया आदीनेव प्रधानं कुर्वन्ति, एतेन तेषां–तासां जैनत्वं नैव प्रतिभाति अतः गोत्रं प्रमुखं कुर्वन्ति तु तस्य पश्चात् जैन शब्दमवश्यमेव प्रयुक्तं कुर्वन्तु स्वसंघटितस्वरूपं च शासनस्य पुरतः प्रदर्श्य अल्पसंख्यकश्रेणीं प्राप्तां कुर्वन्तु।

जम्बूद्वीप महामहोत्सवेऽत्र अनेकाः धार्मिकाः शैक्षणिकाश्च कार्यक्रमाः संपन्नाः अभवन्। तेषां सर्वेषां पुण्यवर्गणाः सम्पूर्णे विश्वे प्रसारिताः भूत्वा सुखशान्तिं समृद्धिं क्षेमं च स्थापितं करिष्यन्ति। एतदतिरिक्तं समारोहस्य संचालकाः, तस्मिन् भागं गृहीतारः अनुमोदकाश्च सर्वे जनाः असीमपुण्यभागिनो भवन्तु, अयमेव मम सर्वेभ्यः मंगल आशीर्वादोऽस्ति।

अनेन प्रकारेण शरत्पूर्णिमायाः अमृत बेलायां देशस्य जनता पूर्णिमायाः चन्द्र तुल्यायाः चारित्र चन्द्रिकायाः गणिन्या आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः दीर्घस्य–स्वस्थस्य जीवनस्य मंगलकामनामकरोत् पूज्यश्रियश्च मंगलाशीर्वादंमगृहणात् पुनः विलम्बरात्रिपर्यन्तं भजननृत्यआरतिकां संगीतानां कार्यक्रमाः संचालिताः अभवन्। भक्तगणाः स्वभक्तिं च प्रादर्शयन्। माता च नभसः चन्द्रमसः साक्षौ स्वज्ञानं परिमार्जितमकरोत्। पश्चात् यदा घटिकायां 9–15 वादनमभवत्, तत्कालमेव वास्तविक जन्मनः सूचनां प्रददन्तः अवधात् समागताः नरनार्यः जनाः रथालीशरव ढोल मंजीरा आदीनां वादनं प्रारब्धमकुर्वन्। महिला वर्धापन गीताः अगायन् बालिकाश्च मंगल गानानि अकथयन्, पुरुषाश्च विनयांजलिं

राष्ट्रीय जनगणना में सभी को जैन अवश्य लिखना चाहिए किन्तु लोग अपने गोत्र कासलीवाल, सेठी, छाबड़ा, पाण्ड्या आदि को ही प्रधान कर देते हैं, इससे उनके नाम में जैनत्व नहीं झलकता है अतः यदि गोत्र प्रमुख करें तो उसके बाद जैन शब्द जरूर लिखें और अपना संगठित स्वरूप सरकार के समक्ष रखकर अल्पसंख्यक की श्रेणी प्राप्त करें।

जम्बूद्वीप महामहोत्सव में यहाँ पर अनेक धार्मिक और शैक्षणिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं। उन सबकी पुण्यवर्गणाएँ सारे विश्व में फैलकर सुख-शांति-समृद्धि और क्षेम को स्थापित करेंगी। इसके साथ ही समारोह को सम्पन्न करने वाले, उसमें भाग लेने वाले, अनुमोदना देने वाले सभी लोग असीम पुण्य के भागी बनें, सबका कल्याण हो, यही मेरा आप सबके लिए मंगल आशीर्वाद है।

इस प्रकार शरद पूर्णिमा की अमृतमयी बेला में देश की जनता ने पूनों के चाँदस्वरूप पूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना की तथा पूज्यश्री का अमृतमयी आशीर्वाद ग्रहण किया पुनः देर रात तक आरती-भजन-नृत्य-संगीत का कार्यक्रम चलता रहा, भक्तगण अपनी भक्ति प्रदर्शित करते रहे और माताजी नभ के चन्द्रमा की साक्षी में अपना ज्ञान परिमार्जित करती रहीं। देखते ही देखते घड़ी में ज्यों ही 9 बजकर 15 मिनट हुए, तुरंत असली जन्म की सूचना देते हुए अवध से आए नर-नारियों ने घंटे, थाल और ढोल-मंजीरे बजाने शुरू कर दिए। महिलाओं ने बधाई गीत गाए, बालिकाओं ने मंगल गान गाए और पुरुषों ने अपने विनयभाव

प्रस्तुतवन्तः। इमां पूर्णां चन्द्रिकां विकीर्य पूर्णिमायाश्चन्द्रः स्व स्वर्णिम आयुषः नवाध्यायमुद्–घाटितमकरोत्।

अनेन प्रकारेण विभिन्नकार्यक्रमाणां मध्ये वर्षायोगस्य चत्वारो मासाः कदा व्यतीताः अभवन्, न कोऽप्यजानात्। अन्ततः कार्तिककृष्णा अमावस्यायाः दिने दीपावलीपर्वणा सहैव चतुर्मासस्य समाप्तेर्घटिकापि आगच्छत्। कमलमन्दिरे भगवतो महावीरस्य निर्वाणोत्सवस्यावसरे आयोजितेन निर्वाणमोदक कार्यक्रमेण सहैव माताश्रीः शास्त्रोक्तविधिना चतुर्माससमापनस्य घोषणामकरोत्।

।। इति तृतीयोऽध्यायः।।

प्रस्तुत किए। इस प्रकार पूर्ण चाँदनी को फैलाकर पूनों के चाँद ने अपनी सुनहरी आयु का नया अध्याय खोल दिया।

इस प्रकार विभिन्न कार्यक्रमों के मध्य वर्षायोग के 4 महीने कब व्यतीत हो गए, पता ही नहीं चला। आखिरकार कार्तिक कृ. अमावस्या को दीपावली पर्व के साथ ही चातुर्मास समापन की घड़ी भी आ गई। कमल मंदिर में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर आयोजित निर्वाणलाडू कार्यक्रम के साथ ही पूज्य माताजी ने शास्त्रोक्त विधि द्वारा चातुर्मास समापन की घोषणा कर दी।

अध्याय-4

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा

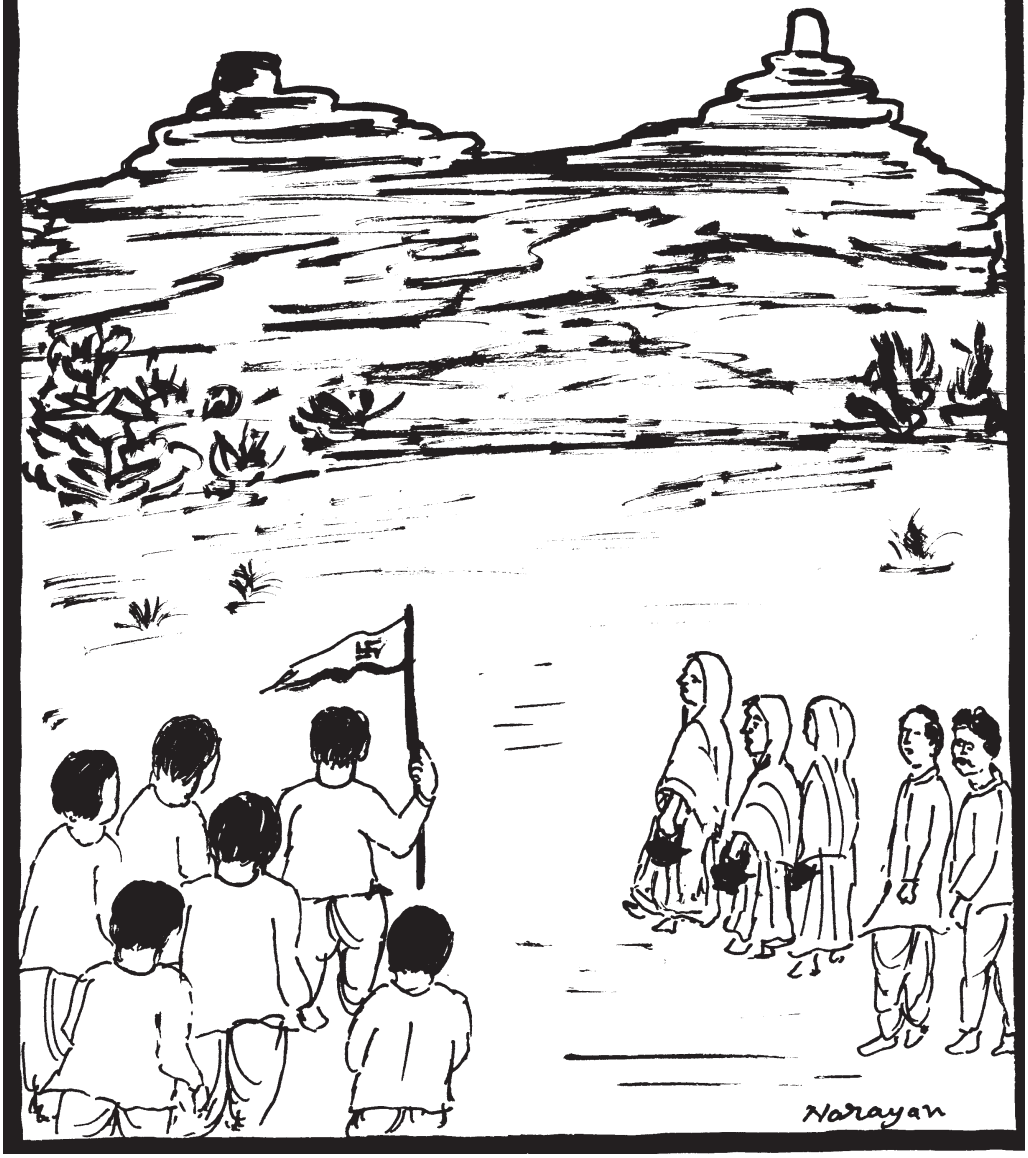

चतुर्थोऽध्यायः

मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रस्य पर्वतीया यात्रा

चतुर्मासस्य समाप्तेरिदानीं प्रायः एको मास एव व्यतीतोऽभवत् यत् माताःश्री एकस्मिन् दिने मानसिकं चिन्तनं कृत्वा अनायासमेव 25 नवम्बर 1995 दिने एतं निर्णयमगृह्णात् यदहं स्वशरीरस्वास्थ्यमप्युपेक्ष्य भगवतो रामस्य निर्वाणभूमये, विंशतिशताब्द्याः प्रथमाचार्यस्य श्री शान्तिसागराचार्यस्य अक्षुण्णपरम्पराया पंचमपट्टाचार्यस्य स्वर्गीयश्रेयांससागरस्य कर्मभूमये मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्राय विहारोऽवश्यमेव करिष्यामि।

कतिचिद्भ्यो वर्षेभ्यः मांगीतुंगीतीर्थे विराजमानायाः पूज्यार्यिकायाः श्रेयांसमतीमातुः निवेदनपूर्णानि पत्राणि प्राप्तानि, मांगीतुंगीक्षेत्रस्य न्यासमण्डलस्यापि अत्याग्रहः आसीत् यत् माताश्रीः एकदा मांगीतुंगीक्षेत्रे चरणन्यासं कृत्वा अस्य क्षेत्रस्य वर्षेभ्योऽवरुद्धां पंचकल्याणकप्रतिष्ठां सम्पन्नां कारयतु अतः पूज्या माताश्रीः अन्ततो निवेदनं स्वीचकार एव।

पर्वतेभ्यः नदीनां निष्कासनस्यानादिपरम्परा विद्यते किन्तु नदी कदाचित् पर्वताय जन्म ददाति एतच्छ्रवणे, पठने कदापि नागतम्। एतस्यैवदृष्टपूर्वस्येतिहासस्य परिचयं कारयितुं गणिन्या आर्यिकया मात्रा ज्ञानमत्या हस्तिनापुरादारभ्य मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रपर्यन्तं कृतेयं पर्वतीया यात्रा।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की पर्वतीय यात्रा

चातुर्मास समाप्त हुए अभी लगभग एक माह ही व्यतीत हुआ था कि पूज्य माताजी ने एक दिन मानसिक चिन्तन करके अनायास ही 25 नवम्बर 1995 को यह निर्णय ले लिया कि मुझे अपने शरीर-स्वास्थ्य को भी न देखकर भगवान राम की निर्वाणभूमि एवं बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचमपट्टाचार्य स्व. 108 श्री श्रेयांससागर जी महाराज की कर्मभूमि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए विहार अवश्य करना है।

चूँकि कई वर्षों से मांगीतुंगी तीर्थ पर विराजमान पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के निवेदन भरे पत्र आ रहे थे तथा मांगीतुंगी क्षेत्र ट्रस्ट मंडल का भी अतीव आग्रह था कि पूज्य माताजी एक बार मांगीतुंगी पधारकर यहाँ की वर्षों से अवरुद्ध पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न करा दें अतः पूज्य माताजी ने आखिरकार उनके निवेदन को स्वीकार कर ही लिया।

पर्वत से नदियों के निकलने की अनादि परम्परा है किन्तु नदी कभी पर्वत को जन्म देती हो ऐसा सुनने, देखने अथवा पढ़ने में नहीं आया। इसी अदृष्टपूर्व इतिहास का परिचय कराती है गणिनी शिरोमणि आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की हस्तिनापुर से मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र तक की यह पर्वतीय यात्रा।

निर्णयस्य पश्चात् मात्रं द्वयोर्दिनयोरन्तरालं दत्त्वा 27 नवम्बर 1995, मार्गशीर्ष–शुक्लषष्ठीदिने हस्तिनापुरजम्बूद्वीपे विराजमानाभ्य अतिशयकारिणीभ्य सिद्धप्रतिमाभ्यः नमनं कृत्वा पूज्यमाताश्रीः संघसहिता मंगलविहारमकरोत्। गंगातटात् ज्ञानगंगेयं यदा प्रवाहमाना पर्वतस्य वन्दनां कर्तुं प्राचलत्, तदा मार्गे विभिन्नानि पर्वतीयकार्याणि संपन्नानि भवितुं आरभन्त।

निर्वाचनस्य विजयश्रिया प्रारभत् विहारस्य प्रथमं चरणम्–**आचार्यपूज्यपादस्वामिना रचितयाः ईर्यापथशुद्धेः श्लोकोऽस्ति—**

श्रीमुखालोकनादेव, श्रीमुखालोकनं भवेत्।
आलोकनविहीनस्य, तत्सुखावाप्तयः कुतः।।

अर्थात् अन्तरंग–बहिरंगलक्ष्म्याः युक्तस्य श्रीजिनेन्द्रभगवतो मुखस्यावलोकनकर्तारो जनाः लक्ष्मीं–धनं प्राप्नुवन्ति। अयं जिनेन्द्रदर्शनस्य महत्तां प्रकटनपरः श्लोकोऽस्ति, यस्य सारांशोऽस्ति यत् व्यावहारिक–आन्तरिकां च लक्ष्मीं प्राप्तुं आर्हन्त्यलक्ष्मीं प्राप्तस्य भगवतो जिनेन्द्रस्य भक्तिरावश्यकी अस्ति।

पूज्या गणिन्यार्यिका माता ज्ञानमती 27 नवम्बर 1995 दिने मध्याह्ने 3 वादनसमये तीर्थक्षेत्रपरिसरात् स्वशिष्यमण्डल्याः सार्धं जय–जयकारस्य वातावरणे मांगीतुंगीक्षेत्रस्य लक्ष्यं गृहीत्वा मंगलविहारमकरोत्। हस्तिनापुरकेन्द्रीयनगरे पत्रालयकार्यालयो वर्तते, किंचित्

निर्णय के पश्चात् मात्र 2 दिन का अन्तराल देकर 27 नवम्बर 1995, मगशिर शु. षष्ठी को हस्तिनापुर जम्बूद्वीप में विराजमान अतिशयकारी सिद्ध प्रतिमाओं को नमन करके पूज्य माताजी ने संघ सहित मंगल विहार कर दिया। गंगा के तट से यह ज्ञान की गंगा जब बहती हुई पर्वत की वन्दना हेतु चल पड़ी, तो मार्ग में अनेक पर्वतीय कार्य होने लगे।

➢चुनाव की विजयश्री से प्रारंभ हुआ विहार का प्रथम दौर–

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित ईर्यापथ शुद्धि का एक श्लोक है–

श्रीमुखालोकनादेव,श्रीमुखालोकनं भवेत्।
आलोकन विहीनस्य, तत्सुखावाप्तयः कुतः।।

अर्थात् अन्तरंग और बहिरंग लक्ष्मी से युक्त श्री जिनेन्द्र भगवान के मुख का अवलोकन करने वाले मनुष्य को लक्ष्मी–धन की प्राप्ति होती है। इससे विपरीत भगवान का दर्शन नहीं करने वाले को उस लक्ष्मी सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है? यह जिनेन्द्र दर्शन की महत्ता को प्रगट करने वाला श्लोक है जिसका सारांश है कि व्यवहारिक और आत्मिक दोनों प्रकार की लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए आर्हन्त्य लक्ष्मी को प्राप्त भगवान जिनेन्द्र की भक्ति करना आवश्यक है।

पूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी ने 27 नवम्बर 1995 को मध्यान्ह 3 बजे तीर्थ क्षेत्र परिसर से अपनी शिष्यमंडली के साथ जय जयकार के वातावरण में मांगीतुंगी का लक्ष्य लेकर मंगल विहार किया। आगे हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन (जहाँ 15 हजार की जनसंख्या है)

पूर्वमेव पत्रालयस्य समीपे मनोजकुमार जैनस्य माता श्रीमती आदर्श जैना धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीअनन्तवीर्यजैनस्य हस्तिनापुरनिवासिनी, मेरठप्रवासिनी संघं स्वगृहचैत्यालयस्य दर्शनं कर्तुं निवेदयितुं तत्रासीत्, परिवारेण सहावस्थिताऽऽसीत्, तेषां हस्तेषु प्रचुराणि पुष्पाण्यासन्।

सा प्रथमबारमेव हस्तिनापुरक्षेत्रस्य निर्वाचने सदस्यतायै भारतीयजनतापार्टीपक्षतः अवस्थितासीत् मातुराशीर्वादस्तु पूर्वमेवागृह्णात्, तस्मिन् दिने जयपराजययोः निर्णयो घोषयितुं तत्परः आसीत् अतस्तस्याः सम्बन्धिजनाः मवानानगरे आसन्।

संयोगस्य वार्तास्ति, पूज्या माता वयं च यदा तस्याः समीपे गन्तुमेव आस्म, पुष्पैः पूर्णाः तस्याः अंजलयः गुरोश्चरणयोः अर्पयितुमेवासन्, तस्मिन्नेव समये कश्चिदागत्य तस्यै सन्देशमदात् यत् ''भवती निर्वाचने विजयिनी अभवत् अतः वर्धनां स्वीकरोतु।'' **श्रीमती आदर्शजैना सर्वप्रथमं गुरोश्चरणयो नमनमकरोत् पश्चात् पुष्पांजलिं च विकीर्णां कुर्वन्ती वक्तुमारभत् यत्** ''मातुर्वरदोहस्तौ एव अद्य महत्याः सफलतायाः हेतू स्तः, यं तस्मादतिरिक्तं किन्चित् कारणं न मन्ये।''

तस्यै मंगलमाशीर्वादं प्रदाय मातुः संघोऽग्रेऽगच्छत्, अस्माकं तस्मिन् दिने रात्रिनिवासो ''मवानानगरे'' **भवितुमासीत्, तत्र नगरप्रवेशकाले पूर्वमेवाशीर्वादेन लाभान्विताः विजयिन्यः महिलाः पूज्यमातुर्दर्शनं प्राप्तुमागच्छन् पुनः ताभ्यः अहिंसया सदाचारेण सह समाजसंचालनाय आशीर्वादं प्रादात्।**

से कुछ पूर्व ही पोस्ट आफिस के मोड़ के पास मनोज कुमार जैन की मम्मी श्रीमती आदर्श जैन (ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन, हस्तिनापुर निवासी, मेरठ प्रवासी) संघ को अपने गृह चैत्यालय का दर्शन करने को निवेदन करने हेतु परिवार के साथ खड़ी थीं, उनके हाथों में ढेर सारे फूल थे।

वे प्रथम बार हस्तिनापुर टाउन एरिया के चुनाव में मेम्बरशिप के लिए भारतीय जनता पार्टी की ओर से खड़ी हुई थीं। पूज्य माताजी का आशीर्वाद पहले ही ग्रहण कर चुकी थीं, उस दिन हार-जीत का निर्णय मिलने वाला था अतः उनके संबंधीजन मवाना गए हुए थे।

संयोग की बात, पूज्य माताजी एवं हम लोग ज्यों ही उनके समीप तक पहुँचने वाले थे और पुष्पों से भरी उनकी अंजुली गुरुचरणों में न्यौछावर होने ही वाली थी, उसी समय किसी ने आकर उन्हें संदेश दिया कि **''आप चुनाव में विजयी हो गई हैं अतः बधाई स्वीकार करें।''** श्रीमती आदर्श जैन ने सर्वप्रथम गुरुचरणों में नमन किया और पुष्पांजलि बिखेरती हुई कहने लगीं कि **''माताजी का वरदहस्त ही मेरे लिए सबसे बड़ी सफलता का संबल है, मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं मानती।''**

उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करता हुआ गणिनी माताजी का संघ आगे बढ़ा, हमारा उस दिन का प्रथम रात्रिविश्राम **''मवाना''** नगर में होना था, वहाँ नगर प्रवेश करते ही पूर्व में आशीर्वादप्राप्त विजयी महिलाएँ पूज्य मातुश्री के दर्शन करने आ गईं, माताजी ने उन्हें पुनः अहिंसा एवं सदाचारपूर्वक समाज संचालन का शुभाशीष प्रदान किया।

तदनन्तरं वयं द्वयोर्दिनयोः पश्चात् ''मेरठ'' **नगरं प्राप्नुम, तत्रापि पूर्व परिचिताः विजयिन्यो नगरप्रमुखाः मातुराशीर्वादं प्राप्तुमागच्छन् शाकाहारिण्यो भवितुं न्यायेन च जनताकार्यं कर्तुं संकल्पमगृह्णन्। एवमेव मोदीनगरे, गाजियाबादादिनगरेषु विजयिनीनां समाचाराः प्राप्नुवन्, तदा माता सर्वेभ्यः परोक्षरूपेण चाशीर्वादान् प्रादात्। जनता तस्याः एतस्याः उदारतायां कोटिशो वंदनां कृत्वा स्वात्मानं धन्यामकरोत् अनेन च विजयकथानकेन सह संघस्य प्रभावनापूर्णो मंगल विहारो द्रुतगत्या प्रारम्भोऽभवत्, शुभशकुनस्याधारेण च सर्वमेव धर्मस्य संघस्य च विजय एव प्रारभत्।**

उत्तरवासिनां दृष्टौ इयं विदेशयात्रा आसीत्–**यदा पश्चिमोत्तरप्रदेशवासिनः इदमजानन् यत् ज्ञानमती माताश्रीः उत्तरं भारतं त्यक्त्वा अतिदूरप्रदेशं गन्तुं निश्चयं चकार, तु ते चिन्तिताः अभवन्। मातरं अवबोधयितुमपि प्रयासमकुर्वन् यत्** ''भवत्याः स्वास्थ्यमधुना विहार योग्यं न वर्तते, भवत्यस्मिन् क्षेत्रे विहृत्यास्मभ्यं ज्ञानलाभं प्रददातु, भवतीं विना जम्बूद्वीपस्य शोभा समाप्ता भविष्यति. .....इत्यादि।''

यदा विहारस्य चर्चा दैनिक समाचारपत्रेषु प्रकाशिताऽभवत्, तु मेरठ निवासिनी श्रीअमरचन्द्रस्य होमब्रेड इत्यस्य धर्मपत्नी कमलेशजैना आगत्य अवदत् अद्य प्रातः मन्दिरे चर्चाऽऽसीत् यत् ''ज्ञानमती माताश्रीः विदेशं गन्तुं तत्परास्ति।'' **सा पुनः मामपृच्छत्** ''किं दिगम्बर जैनसाधवः साध्व्यश्च विदेशं गन्तुं शक्नुवन्ति?'' **अहं हसितुं प्रारभे, तदा च व्यचारयम्**

उसके पश्चात् हम लोग 2 दिन बाद **''मेरठ''** शहर में पहुँचे, वहाँ भी माताजी से पूर्व परिचित विजयी नगरप्रमुख आशीर्वाद लेने आए और शाकाहारी होने तथा न्यायपूर्वक जनता का कार्य करने हेतु संकल्प लिया। इसी प्रकार मोदीनगर, गाजियाबाद आदि नगरों में भी विजयश्री प्राप्त करने वालों के समाचार मिले, तब माताजी ने सभी को प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से आशीर्वाद प्रदान किया। जनता ने उनकी इस उदारता पर कोटि-कोटि वन्दन करके अपने को धन्य माना और इस विजय कथानक के साथ संघ का प्रभावनापूर्ण मंगल विहार द्रुतगति से प्रारंभ हुआ, तो शुभ शकुन के आधार पर सर्वत्र धर्म की, संघ की विजय ही विजय होती चली गई।

➢उत्तर वालों की दृष्टि में यह विदेश यात्रा थी–

जब पश्चिमी उत्तरप्रदेश वालों को ज्ञात हुआ कि ज्ञानमती माताजी उत्तर भारत को छोड़कर बहुत दूर जा रही हैं, तब अनेक भक्त चिन्तित हो उठे और माताजी को समझाने का भी प्रयास किया कि **''आपका स्वास्थ्य अब बहुत ज्यादा विहार के लायक नहीं है, आप इधर इलाके में ही विहार करके हम लोगों को ज्ञान लाभ प्रदान करें, आपके बिना जम्बूद्वीप की रौनक समाप्त हो जाती है.....इत्यादि।''**

जब विहार की चर्चा दैनिक अखबारों में आ गई, तब मेरठ निवासी श्री अमरचन्द जैन होमब्रेड की धर्मपत्नी सौ. श्रीमती कमलेश जैन ने आकर मुझसे कहा कि आज सवेरे मंदिर में चर्चा हो रही थी कि **''ज्ञानमती माताजी विदेश जा रही हैं।''** वे पुनः मुझसे पूछने लगीं कि **''क्या दिगम्बर जैन**

यत् ''पश्य! अस्माकं जनता कीदृशी अज्ञानयुक्ता मुग्धा च वर्तते, ममत्वपरिणामैश्च पूर्णास्ति, यत् सा मातरं स्वात्मनः दूरं गच्छन्तीमवलोक्य मोहं संवृतं कर्तुं न प्रभवति, तदैव तया क्रियमाणं प्रदेशपरिवर्तनं वीक्ष्य देशस्यैव परिवर्तनं मत्वा एतां विदेशयात्रामवगन्तुं प्रारभन्त।''

पुनः अहं कमलेशमवदम् यत् दिगम्बरजैनसाधूनां आर्यिकाणां च यावजीवनं पदविहारस्य नियमो भवति, वायुयाने, रेलवाहने, मोटरे आदि समस्तेषु वाहनेषु उपवेष्टुं त्यागिन्यो भवन्ति अतस्ताः विदेशं गन्तुं प्रभवन्त्येव न। अद्य पर्यन्तं कस्यापि मुनेरार्यिकायाश्च विदेशयात्रायाः उदाहरणं नास्ति अतः तेभ्यः इत्थं चिन्तनमपि दोषपूर्णमस्ति। एतेभ्यः साधुभ्यः अतिरिक्तं भट्टारकगणः ब्रह्मचारिण्यः केचिज्जैनविद्वांसश्च विदेशं गत्वावश्यमेव यथोचितां धर्मप्रभावनां कर्तुं शक्नुवन्ति।

परन्तु अस्याः यात्रायाः विषयेऽहं इदमवश्यमेवान्वभवम्, यत् समस्त स्त्री–पुरुषाः ज्ञानमती मातरं अत्यन्तस्नेहपूर्णाभिर्दृष्टिभिरवलोक्य नमन्ति एतद् वक्तुं च बाध्याः भवन्ति यत् ''माताश्रीः अतिदीर्घां यात्रामचिन्तयत्, भगवान् एतस्याः स्वास्थ्यं सम्यक् रक्षतु सम्पूर्णश्च संघः शीघ्रमेव मांगीतुंगीक्षेत्रात् उत्तरभारते प्रत्यागच्छतु। अस्मभ्यमेतासां दर्शनं शीघ्रं प्राप्नोतु, एषैव भावना विद्यते।''

दिल्लीनगर्यां तु काश्चित् पुरातनाः परिचिताः महिलाः रोदनं कुर्वन्त्यः परस्परं वार्तालापमकुर्वन् यत् अस्माकं माता अस्मद्दूरदेशं गच्छति। न जानामि, मम जीवने एतस्याः पुनर्दर्शनं भविष्यति न वा।

साधु-साध्वी विदेश जा सकते हैं?'' मैं हँसने लगी और फिर विचार आया कि **''देखो! हमारी जनता कितनी भोली, अन्जान और ममत्व परिणामों से परिपूर्ण है कि वह माताजी को अपने से दूर जाती देखकर मोह को संवृत नहीं कर पाती है, तभी उनके द्वारा किये जाने वाले प्रदेश परिवर्तन को देश का ही परिवर्तन मानकर इसे विदेश यात्रा समझने लगी है।''**

पुनः मैंने कमलेश जी को बताया कि दिगम्बर जैन मुनि एवं आर्यिकाओं को चूँकि जीवनभर पदविहार का नियम होता है, हवाई जहाज, रेल, मोटर आदि समस्त वाहन पर बैठने के लिए पूर्ण त्यागी होते हैं अतः वे विदेश जा ही नहीं सकते हैं। आज तक कोई भी मुनि-आर्यिकाओं के विदेश यात्रा के कोई उदाहरण भी नहीं हैं अतः उन लोगों के लिए ऐसा सोचना भी दोषास्पद है। हाँ, इन साधुओं से अतिरिक्त भट्टारकगण, ब्रह्मचारिणी बहनें एवं कुछ जैन विद्वान् विदेशों में जाकर अवश्य यथायोग्य धर्मप्रभावना करते हैं।

वैसे इस यात्रा के विषय में मैंने यह जरूर अनुभव किया कि हर स्त्री-पुरुष पूज्य ज्ञानमती माताजी को अत्यन्त स्नेहपूर्ण नजरों से देखकर नमन करते और यह कहने को बाध्य हो जाते कि **''माताजी ने बहुत लम्बी यात्रा सोच ली है, भगवान इनका स्वास्थ्य ठीक रखे और पूरा संघ कुशलतापूर्वक शीघ्र मांगीतुंगी से वापस उत्तर भारत में आवे, हमें इनके पुनः दर्शन जल्दी ही प्राप्त हों, यही भावना है।''**

दिल्ली में तो कुछ पुरानी परिचित महिलाएँ सिसक-सिसक कर रोती हुई आपस में कह रही थीं कि हमारी माताजी हमसे दूर जा रही हैं। पता नहीं, मेरे जीवन में इनका पुनः दर्शन होगा या नहीं।

अहं ताभ्यः अतिधैर्यमदां यत् भवन्त्यः स्व हृदयं संकीर्णं न कुर्वन्तु, किन्तु तास्तु स्ववृद्धावस्थया, रुग्णतया, गुरुवियोगेन च एतैःकारणैः दुःखानुभूतिमकुर्वन्। माता च ताः महता प्रेम्णा तीर्थवन्दनायाः महत्वं प्रदर्श्य शान्ताः अकरोत् तथा सर्वाभ्यः बहून् आशीर्वादान् दत्वा महाराष्ट्रात् शीघ्रमेव आगमनस्याश्वासनमदात्।

मांगीतुंगी क्षेत्रस्य नामापि जनाः सम्यक् न अजानन्–**उत्तरप्रदेश–हरियाणा– राजस्थानादि–प्रान्तेषु यदास्माकं भ्रमणमभूत्, तदा अपश्याम–यत् कश्चिद् कथयति यत्** ''माताश्रीः मांगातुंगां गच्छति, कश्चिच्च मानतुंगगिरिं कथयति''**, तै सम्यक्तया मांगीतुंगी क्षेत्रस्य नामापि न ज्ञातमासीत्। एतां स्थितिमवलोक्य यदा वयं सिद्धक्षेत्रस्य महत्वे प्रकाशमपातयामः तदा जनता कथयति यदधुना भवतां निमित्ताद् अस्माकं दर्शनमपि भविष्यति। अनेन प्रकारेण सहस्रशः नरनार्यः जीवने प्रथमबारं मांगीतुंगीक्षेत्रस्य दर्शनानां सौभाग्यं मातुस्तत्र पदार्पणस्य पश्चात् प्राप्नुवन्।**

स्यात् अनया स्थित्या अवगतो पूज्यः आचार्यः विद्यानन्दो दिल्लीनगर्यामकथयत् यत् ''अधुना मांगीतुंगीक्षेत्रस्य प्रसिद्धिः विश्वव्यापिनी भवितुमर्हति यतः ज्ञानमती सदृशी कर्मठसाध्व्याः चरणे तं क्षेत्रं प्रति वर्द्धितेऽभवतां।''**सः मातुरेतां यात्रां प्रति मंगलकामनां कुर्वन् ''कुन्दकुन्दभारती'' संस्थाया विहारस्य समये ब्रह्मचारिणे रवीन्द्रमहोदयायैकं मंगलकलशं प्रादात्।**

मैंने उन्हें बहुत धैर्य बंधाया कि आप लोग अपना दिल इतना छोटा न करें किन्तु वे तो अपनी वृद्धावस्था, रुग्णता तथा गुरुवियोग के कारण दुःख का अनुभव कर रही थीं। पूज्य माताजी ने उन सबको बड़े प्रेम से पुण्यतीर्थ की वंदना का महत्त्व बताकर शांत किया तथा सबके लिए खूब-खूब आशीर्वाद देते हुए महाराष्ट्र से शीघ्र वापस आने का आश्वासन दिया।

➢मांगीतुंगी का नाम भी लोग ठीक से नहीं जानते थे–

उत्तरप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान आदि प्रान्तों में जब हम लोगों का भ्रमण हुआ, तब देखा कि कोई कहता– **माताजी मांगातुंगा जा रही हैं, कोई मानतुंगगिरि कहते, कोई मांगेतुंगे** इत्यादि, उन्हें मांगीतुंगी का ठीक से नाम तक नहीं मालूम था। यह स्थिति देखकर जब हम लोग उस सिद्धक्षेत्र के महत्व पर प्रकाश डालते, तब जनता कहने लगती थी कि अब आपके निमित्त से हमारे दर्शन भी हो जायेंगे। इस प्रकार हजारों नर-नारियों को जीवन में पहली बार मांगीतुंगी के दर्शनों का सौभाग्य पूज्य ज्ञानमती माताजी के वहाँ पहुँचने पर प्राप्त हुआ।

शायद इसी स्थिति से अवगत पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद महाराज ने दिल्ली में कहा था कि **''अब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र की प्रसिद्धि विश्वव्यापी होने वाली है क्योंकि ज्ञानमती माताजी जैसी कर्मठ साध्वी के कदम उस ओर बढ़ गए हैं।** उन्होंने इस यात्रा के प्रति मंगल कामना करते हुए माताजी के ''कुन्दकुन्द भारती'' से विहार के समय कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी को एक मंगल कलश प्रदान किया था।

समयानुसारं शब्दानामन्वेषणम्–**दिल्लीप्रवासस्यान्तिमश्रृंखलायां दिनांके 17 दिसम्बर 1995 दिने पूज्याचार्यस्य विद्यानन्दस्य गणिन्याश्च ज्ञानमत्याः मिलनं कुन्दकुन्दभारत्या–मभवत्। यत् परमवात्सल्यस्यांगप्रतीकरूपेण जैनसमाजाय आदर्शोऽभवत्। तस्मिन् समये द्वयोर्ज्ञानिनोः समस्ततत्त्वचर्चयोर्विचारयोश्च आदानप्रदाने अभवताम्। आचार्यश्री अमरकोशस्यैकां पंक्तिं विलिख्य मातुः प्रकोष्ठे प्रेषितामकरोत्, या तस्य गुणग्राहकतायाः सामयिकशब्दान्वेषणस्यैव विशेषताऽऽसीत्। पंक्तिर्निम्नप्रकारेणास्ति–**

स्यादाचार्याऽपि च स्वतः (अमरकोष 2/6/14)

अस्यार्थोऽयम् यत् या नारी शब्दानां व्याख्या कर्तुं स्वतः समर्था अस्ति, सा ''आचार्या'' **इति संज्ञां सार्थकं करोति, विद्यानंदि आचार्यः स्वयमपि प्रवचने ज्ञानमतिमातरं** ''आचार्या'' **इति संज्ञया संबोधनमकरोत्। यद्यपि दिगम्बरजैनपरम्परायां आर्यिकाभ्यः अस्याः पदव्याः प्रयोक्तुं परम्परा नास्ति तां** 'गणिनी' **इति सर्वोत्कृष्ट पदव्या एव अलंकृता, तथापि ज्ञानी तु अद्यापि ज्ञानिनां मूल्यांकनं करोति, वास्तवेन तु गणिनी शब्दो आचार्या शब्दस्येव पर्यायवाची शब्दोऽस्ति। अन्यत्रापि उक्तं च–**

विद्वान् एव विजानाति, विद्वज्जनपरिश्रमम्।
न हि वन्ध्या विजानाति, पुत्रप्रसववेदनाम्।।

अर्थात् विद्वानेव विदुषां मूल्यांकनं करोति।

➢समयानुसार शब्दों की खोज–

दिल्ली प्रवास की अंतिम श्रृंखला में दिनाँक 17 दिसम्बर 1995 को आचार्य श्री विद्यानंद महाराज एवं गणिनी आर्यिका संघ का मिलन कुन्दकुन्द भारती में हुआ, जो परम वात्सल्य अंग के प्रतीक रूप में जैन समाज के लिए एक आदर्श बना। उस समय दोनों ज्ञानियों में तमाम तत्त्वचर्चा एवं विचारों के आदान-प्रदान हुए। महाराज श्री ने अमरकोष की एक पंक्ति लिखकर माताजी के कमरे में भिजवाई, जो उनकी गुणग्राहकता एवं सामयिक शब्दान्वेषण की ही विशेषता थी। पंक्ति निम्न प्रकार से है–

''स्यादाचार्याऽपि च स्वतः'' (अमरकोश, 2/6/14)

इसका अर्थ है कि जो स्वतः ही शब्दों की व्याख्या करने वाली नारी है वह **''आचार्या''** संज्ञक है। इसी बात को उन्होंने प्रवचन में भी कहकर ज्ञानमती माताजी को **'आचार्या'** संज्ञा से सम्बोधित किया था। दिगम्बर जैन परम्परा में आर्यिकाओं के लिए यद्यपि इस पदवी की परम्परा नहीं है, उन्हें **'गणिनी'** के रूप में ही सर्वोच्च पदवी से अलंकृत किया है, फिर भी ज्ञानी की कीमत ज्ञानी पुरुष ही कर सकते हैं, यह बात एक सूक्तिश्लोक भी बताता है–

विद्वान् एव विजानाति, विद्वज्जन परिश्रमम्।
न हि वन्ध्या विजानाति, पुत्रप्रसववेदनाम्।।

अर्थात् विद्वान ही विद्वानों का मूल्यांकन करते हैं।

संघपतेर्नम्रतायाः त्यागस्य चाद्वितीयमुदाहरणम्–**11 दिसम्बर 1995 दिने दरियागंज दिल्लीस्थे जैनबालाश्रमस्य प्रांगणे मातुः स्वागतसभाऽऽयोजिताभवत्। तस्यां सभायां जैनसमाजस्य शीर्षनेता साहू अशोककुमारो जैनः (अधुना स्वर्गीयः) संघं मांगीतुंगीपर्यन्तं प्रापयितुमुत्तरदायित्वं गृहीतुं महावीरप्रसाद बंगाली स्वीट सैन्टर साउथ एक्सटेंशन दिल्ली निवासिनं शिरस्त्राणं बद्ध्वा स्वागतमकरोत् तत्र च तस्मै** ''संघपतिरिति'' **उपाधिः प्रदत्तः।**

स्वागतानन्तरं महावीरप्रसादो जैनः स्वसंक्षिप्तोद्बोधनेऽकथयत्–**अहं तु संघसेवकः सामान्य–श्रावकोऽस्मि, मां संघपतिं न कथय। अद्यावसरेऽहं मातरं एकां याचनां कर्तुमिच्छामि। यथा भगवान् रामं नदी उत्तारण काले नाविक प्राह, ''भगवन् राम! यथाहं भवन्तं नदीपारमानीतवान् तथैव भवानपि माम् संसारसमुद्रात् पारं नयतु, तदतिरिक्तमहं भवन्तं किमप्यन्यं मूल्यं नेच्छामि''।** ''तथैव हे मातः! अहं त्वां मांगीतुंगीक्षेत्रस्य यात्रां कारयिस्यामि किन्तु ममापि भवतीमेषा प्रार्थनास्ति, यत् भवती मां सिद्धशिलायाः यात्रामवश्यमेव कारयतु।''

अस्याः यात्रायाः प्रारम्भकालादेव महावीरप्रसादः मांगीतुंगीप्रापणे पञ्चकल्याणकपर्यन्तं च शर्करायास्त्यागमकरोत्, यश्तु अत्याग्रहस्य पश्चात् सः 23 मई 1969 दिने पूर्णमकरोत्। इदं तस्य नम्रतायाः त्यागस्य चोदाहरणं विद्यते। दिल्ली सदृश्यामत्याधुनिकनगर्यां वासिनावपि तौ पतिपत्न्यौ वास्तवे आदर्शगुरुभक्तौ स्तः। अस्य धर्मपत्नी कुसुमलतापि व्रतो–

➢संघपति की नम्रता और त्याग का अद्वितीय उदाहरण–

11 दिसम्बर 1995 को दरियागंज-नई दिल्ली के बाल आश्रम प्रांगण में दिल्ली पंचायत के द्वारा पूज्य माताजी की स्वागत सभा आयोजित की गई थी। उस सभा में जैन समाज के शीर्ष नेता साहू अशोक कुमार जैन (अब स्वर्गीय) ने संघ को मांगीतुंगी तक पहुँचाने की जिम्मेदारी लेने वाले लाला श्री महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट सेंटर-साउथ एक्स., नई दिल्ली का पगड़ी बांधकर स्वागत किया और वहीं से उन्हें **''संघपति''** की उपाधि दी गई।

➢स्वागत के पश्चात् महावीर प्रसाद ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा–

''मैं तो संघ की सेवा करने वाला सामान्य श्रावक हूँ मुझे संघपति मत कहिए। आज के मौके पर मैं पूज्य माताजी से एक मांग करना चाहता हूँ। जैसे भगवान राम को नदी पार करवाने के पश्चात् मल्लाह ने उनसे कहा था कि ''भगवन्! जिस प्रकार मैंने आपको नदी पार कराई है, उसी प्रकार आप भी मुझे इस संसाररूपी नदी से पार लगा देना, इसके अतिरिक्त मैं आपसे और कोई कीमत नहीं चाहता हूँ।'' इसी प्रकार **पूज्य माताजी! मैं तो आपको मांगीतुंगी की यात्रा कराऊँगा ही, लेकिन मेरी भी आपसे यह प्रार्थना है कि आप मुझे सिद्धशिला की यात्रा अवश्य करा देना।''**

इस यात्रा के प्रारंभ होते ही महावीर प्रसाद जी ने मांगीतुंगी पहुँचने एवं पंचकल्याणक होने तक शक्कर का त्याग कर दिया, जो अत्यन्त आग्रह के पश्चात् उन्होंने 23 मई 1996 को पूर्ण किया। यह उनकी नम्रता एवं त्याग का ही उदाहरण है। दिल्ली जैसी आधुनिक नगरी में रहते हुए भी यह दम्पत्ति वास्तव में आदर्श गुरुभक्त हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमलता जी व्रत-

पवासाहारदानवैयावृत्तिकरणेषु राज्ञी चेलनायाः उदाहरणं प्रस्तुतं करोति। तयोरेतैरेव संस्कारैः संस्कारितः समस्तः परिवारः अत्यन्तमेव धर्मनिष्ठो विद्यते।

ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धमिदं वचः–**आचार्यपूज्यपादस्वामिनः उक्तयाः नीत्याः अनुसारेण इदं सत्यमस्ति यत्** ''यस्य समीपे यद्वस्तु भवति सः तदेव दातुं शक्नोति'' **अर्थात् सन्त साधवो ज्ञानस्य चारित्रस्य च प्रतिमूर्तयो भवन्ति अतस्ते सर्वेभ्यः स्वोपदेशमाध्यमेन ज्ञानं प्रददति, श्रेष्ठिनां समीपे धनं भवति अतस्ते जिनमन्दिराणां, मूर्ति आदीनां निर्माणं गुरूणां विहारे च आर्थिकं योगदानादिकं दत्त्वा स्वद्रव्यस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति।**

यद्यपि संघपतिः संघसंचालनस्य पूर्णभारं वोढुं संकल्पमगृह्णादेव, पुनरपि दिल्ली निवासी द्वितीयः श्रेष्ठी प्रेमचन्द जैनोऽपि स्वौदार्यस्य परिचयं ददन् संघस्थस्य कर्मयोगिनो ब्र. रवीन्द्रकुमारस्य संकेतमात्रेणैव मंगलविहारस्य मार्गस्य सर्वेक्षणहेतवे नवीनं वाहनं तस्मै प्रादात्। एतदतिरिक्तं सः संघस्य सेवायै सदा हस्तौ योजयित्वा निवेदनं करोति यत् मम योग्यसेवां मामवश्यमेव कथनीया। एतत्सर्वं तस्य पुण्यस्यैव प्रभावोऽस्ति यत् सः स्वाग्रजन्मने स्वसुरक्षितकोशं तत्परं कर्तुं प्रभवति।

दिल्ली महानगरात् प्रस्थानं कृत्वा मातुः संघसहितं मांगीतुंगीतीर्थे पदार्पणं सम्पूर्णपंचमासानां पश्चात् 27 अप्रैल 1996 दिनेऽभवत्। अस्य मध्ये उत्तरप्रदेश–दिल्ली–हरियाणा–राजस्थान–मध्यप्रदेश–महाराष्ट्रषट्प्रदेशेषु विभिन्नानां, नवनिर्माणयोजनानां

उपवास, आहारदान, वैयावृत्ति आदि करने में रानी चेलना का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन्हीं के संस्कारों से संस्कारित पूरा परिवार अत्यन्त धर्मनिष्ठ है।

➢**ददाति यत्तु यस्यास्ति, सुप्रसिद्धमिदं वचः–**

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी की उक्त नीति के अनुसार यह सत्य है कि **''जिसके पास जो वस्तु होती है, वह वही दे सकता है''** अर्थात् सन्त-साधु ज्ञान तथा चारित्र की प्रतिमूर्ति होते हैं अतः वे सबको अपने उपदेशों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते हैं, इसी प्रकार श्रेष्ठी जनों के पास धन होता है अतः वे जिनमंदिर, मूर्ति आदि का निर्माण, गुरुओं के विहार में आर्थिक योगदान आदि देकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करते हैं।

यूँ तो संघपति ने संघ संचालन का पूर्णभार वहन करने का संकल्प लिया ही था, फिर भी खारीबावली दिल्ली के द्वितीय श्रेष्ठी लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन ने भी अपनी उदारता का परिचय देते हुए संघस्थ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी के एक इशारे पर मंगल विहार के मार्ग का सर्वेक्षण करने हेतु नई ''टाटा सूमो'' गाड़ी उन्हें प्रदान की। इसके अतिरिक्त भी वे सदा संघ की सेवा हेतु हाथ जोड़कर निवेदन करते कि मेरे योग्य सेवा मुझे अवश्य बताइये। यह सब उनके पुण्य का ही प्रभाव है कि वे अगले जन्म के लिए अपना रिजर्व फण्ड तैयार कर रहे हैं।

दिल्ली से विहार करके पूज्य माताजी का संघ सहित मांगीतुंगी में मंगल पदार्पण पूरे पाँच माह के पश्चात् 27 अप्रैल 1996 को हुआ। इस मध्य उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश

धर्मप्रभावनानां चानेकविशालकार्याणि संपन्नान्यभवन्, यानि समये–समये सम्यग्ज्ञान–स्यान्यपत्राणां च माध्यमेन भवद्भिः ज्ञातान्येव। अत्र संक्षेपेणाहं तेषां स्थानानां नामानि प्रस्तुतानि विधाय पाठकान् तेभ्यः परिचितान् कर्तुं वाञ्छामि। यत्र अयोध्यायाः मांगीतुंगीक्षेत्रयोः च मध्ये माताश्रीः नवनिर्माणं कर्तुं प्रेरणाः अदात्।

वर्षम् 1993–94

कुत्र	किम्
1. अहिच्छत्रं तीर्थक्षेत्रम् (उ.प्र.)	**त्रिंशच्चतुर्विंशति–मन्दिरम् (एकादश शिखरयुक्तम्)**
2. अयोध्या (उ.प्र.)	**समवसरणं–त्रिचतुर्विंशति मन्दिरम्**
3. त्रिलोकपुरम् (उ.प्र.)	**पारिजातचैत्यवृक्षः**
4. टिकैतनगरम् (उ.प्र.)	**ह्रीँ–विंशतितीर्थंकरप्रतिमाः, नूतनजिनालयनिर्माणस्य च शिलान्यासः**
5. सिधौली (उ.प्र.)	**मन्दिरविस्तारीकरणस्य शिलान्यासः**
6. फतेहपुरः (उ.प्र.)	**विद्यालयस्य शिलान्यासः**
7. सीतापुरम् (उ.प्र.)	**स्वाध्यायभवनम्**
8. दरियाबादः (उ.प्र.)	**श्री ऋषभदेवउद्यानम्**

वर्षम् 1995–1996

9. मेरठ नगरं (कमलानगरम्)	**विशंति तीर्थंकरं चतुर्विंशति तीर्थंकरं कमलरचना**

और महाराष्ट्र इन छह प्रान्तों में विभिन्न नवनिर्माण योजनाएँ एवं धर्म-प्रभावना के अनेक विशाल कार्य सम्पन्न हुए, जो समय-समय पर सम्यग्ज्ञान तथा अन्य अखबारों के माध्यम से आपको ज्ञात हुए हैं। यहाँ संक्षेप में मैं उन स्थानों के नाम प्रस्तुत करके पाठकों को उनसे परिचित कराना चाहती हूँ, जहाँ (अयोध्या एवं मांगीतुंगी के मध्य) पूज्य माताजी ने नवनिर्माण कराने की प्रेरणा प्रदान की–

सन् 1993-94 में–

कहाँ	क्या
1. अहिच्छत्र तीर्थ (उ.प्र.)	तीस चौबीसी मंदिर (11 शिखर का)
2. अयोध्या (उ.प्र.)	समवसरण एवं तीन चौबीसी मंदिर
3. त्रिलोकपुर (उ.प्र.)	पारिजात चैत्यवृक्ष
4. टिकैतनगर (उ.प्र.)	ह्रीँ एवं बीस तीर्थंकर प्रतिमा, नूतन मंदिर निर्माण का शिलान्यास
5. सिधौली (उ.प्र.)	मंदिर विस्तारीकरण का शिलान्यास
6. तहसील फतेहपुर (उ.प्र.)	विद्यालय शिलान्यास
7. सीतापुर (उ.प्र.)	स्वाध्याय भवन
8. दरियाबाद (उ.प्र.)	श्री ऋषभदेव उद्यान

सन् 1995-96 में–

9. मेरठ (कमलानगर)	बीस तीर्थंकर एवं चौबीस तीर्थंकर कमल रचना

१०. प्रीतविहार–दिल्ली (अनिलकुमारस्य गृहांगणे)	**ऋषभदेव–कमलमन्दिरम्**
११. श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्रं श्री शान्तिवीरनगरम् (राजस्थानम्)	**मन्दारकल्पवृक्षः**
१२. केशवरायपाटनम् (राजस्थानम्)	**पंचपहाड़ी–दिव्यध्वनिस्तम्भः**
१३. पिडावा (राजस्थानम्)	**श्री पार्श्वनाथसमवसरणरचना**
१४. जयसिंहपुरम् (उज्जैनः म.प्र.)	**श्री महावीरतपोभूमिः, आचार्य शान्तिसागर मांगलिक भवनम्।**
१५. लक्ष्मीनगरं (उज्जैनः)	**आ. शान्तिसागर–मांगलिक भवनम्**
१६. श्री गोम्मटगिरिः इन्दौर (म.प्र.)	**ह्रीं प्रतिमा स्थापना**
१७. सुदामानगरम् (इन्दौर–म.प्र.)	**त्रिकाल चतुर्विंशति जिनप्रतिमाः, आचार्य शान्तिसागरस्य वीरसागरस्य च चरणम्**
१८. सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रम्	**मध्यलोक रचना**
१९. सनावदः (म.प्र.)	**णमोकारधाम**
२०. पावागिरिः ऊन सिद्धक्षेत्रम्	**सुवर्णभद्रादिचतुर्मुनीनां चरणम्, आ. शान्तिसागर–वीरसागरयोश्चरणम्**

---

10. प्रीतविहार-दिल्ली (अनिल जैन की कोठी के प्रांगण में)	ऋषभदेव कमलमंदिर
11. महावीर जी अतिशय क्षेत्र श्री शान्तिवीर नगर (राज.)	मन्दार कल्पवृक्ष
12. केशवरायपाटन (राज.)	पंचपहाड़ी एवं दिव्यध्वनि स्तंभ
13. पिड़ावा (राज.)	श्री पार्श्वनाथ समवसरण रचना
14. उज्जैन (जयसिंहपुर) म.प्र.	महावीर की उपसर्गविजयभूमि एवं आ. शांतिसागर मांगलिक भवन
15. लक्ष्मीनगर, उज्जैन	आ. शांतिसागर मांगलिक भवन
16. गोम्मटगिरी, इंदौर (म.प्र.)	ह्रीं प्रतिमा स्थापना
17. सुदामानगर, इंदौर	तीस चौबीसी जिन प्रतिमा, आचार्य श्री शांतिसागर जी एवं वीरसागर जी महाराज के चरण
18. सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र	मध्यलोक रचना
19. सनावद	णमोकार धाम
20. पावागिरि-ऊन सिद्धक्षेत्र	सुवर्णभद्र आदि चार मुनियों के चरण तथा आ. शांतिसागर-वीरसागर जी के चरण

21. धूलिया शान्तिनगरं (महा.)	**दिगम्बर जैन छात्रावासस्य शिलान्यासः**
22. मांगीतुंगी–सिद्धक्षेत्रम्	**सहस्रकूटकमलमन्दिरम्, नवग्रहचरणम्, सीता मातुः चरणं (पर्वते)**
23. चांदवड़ (महा.)	**नवग्रह 9 चरणम् (नवग्रह शान्तिमन्दिर हेतवे)**
वर्ष 1996–97	
24. पावागढः (गुजरात)	**ध्यान मन्दिरे–ह्रीं प्रतिमा, उद्याने सीता–लव–कुश इतिहासः**
25. ईडर (गुजराते)	**पहाड़ी स्थाने ह्रीँ प्रतिमा, पहाड़ी क्षेत्रस्य ऋषभदेवगिरि नामकरणम्**
26. तारंगाजी–सिद्धक्षेत्रम्	**भगवतः ऋषभदेवस्य ग्रेनाइट प्रतिमा**
27. डेरोल (गुजरात)	**विंशति तीर्थंकर चरणानि, आ. शान्तिसागर वीरसागरयोः चरणम्**
28. खेरवाड़ा (राजस्थानम्)	**लघुपर्वतस्योपरि कैलाशपर्वतस्य शिलान्यासः**
29. ऋषभदेवः–केसरिया जी	**पहाड़ी स्थाने– अयोध्या नगर्याः रचना शिलान्यासः**
30. सलुम्बरः (राजस्थानम्)	**प्रयागरचना**
31. झाडोलः (राजस्थानम्)	**ह्रीं प्रतिमायाः स्थापना प्रेरणा**
32. देवपुरा (राजस्थानम्)	**नवग्रहशान्ति मन्दिरम्**

21. शांतिनगर-धूलिया (महा.)	दि. जैन छात्रावास का शिलान्यास
22. मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र	सहस्रकूट कमल मंदिर, नवग्रह चरण एवं सीता माता के चरण (पर्वत पर)
23. चाँदवड़ (महा.)	नवग्रह के 9 चरण (नवग्रह शांति मंदिर हेतु)
सन् 1996-97 में–	
24. पावागढ़ (गुजरात)	ध्यान मंदिर में ह्रीँ की प्रतिमा, उद्यान में सीता-लवकुश का इतिहास
25. ईडर (गुजरात)	पहाड़ी पर ह्रीँ की प्रतिमा, पहाड़ी को ऋषभदेवगिरि नामकरण
26. तारंगा जी सिद्धक्षेत्र (गुज.)	भगवान ऋषभदेव की ग्रेनाइट प्रतिमा, आ. शांतिसागर जी की प्रतिमा (गुफा में)
27. डेरोल (गुज.)	बीस तीर्थंकर के चरण, आ. शांतिसागर, वीरसागर महाराज के चरण
28. खेरवाड़ा (राज.)	पहाड़ी पर कैलाशपर्वत का शिलान्यास
29. ऋषभदेव केशरिया जी	पहाड़ी पर अयोध्या नगरी की रचना का शिलान्यास
30. सलूम्बर (राज.)	प्रयाग रचना
31. झाड़ोल (राज.)	ह्रीँ प्रतिमा स्थापना की प्रेरणा
32. देवपुरा (राज.)	नवग्रहशांति मंदिर

33. उदयपुरम् (राजस्थानम्)	**महावीर स्वामिनः समवसरणं (यंत्र स्थापना), ऋषभदेव प्रतिमा स्थापना**
34. लावा (राजस्थान)	**ॐ ह्रीं प्रतिमयोः स्थापना**
35. केकड़ी (राजस्थानम्)	**सम्मेदशिखररचना**
36. रेवाडी (हरियाणा)	**कैलाशपर्वतस्य वेदिका (मन्दिरे)**

एतेषु अनेकस्थानेषु संघपति, महावीर प्रसादो जैनः बंगाली स्वीट सैन्टर दिल्ली, प्रेमचन्द प्रदीपकुमारश्च खारीबावली दिल्ली एतौ द्वौ लक्षाधिकरुप्यकाणि दानरूपेण घोषितानि कृत्वा कीर्तिमन्तं स्थापितमकुरुताम्। अनेनैव प्रकारेण मातुर्भक्ताः समये–समये प्रदाय कतिचित्सु योजनासु सहयोगं प्रदाय पुण्यलाभं प्राप्नुवन्।

इदं तु अहं नवनिर्माणस्य योजनानां संक्षिप्तमुल्लेखमकरवम्। एतदतिरिक्त केषुचिन्नगरेषु गृहचैत्यालयानि, अतिथिभवनानि, औषधालयानां निर्माणस्यापि प्रेरणाः प्रादात्। येभ्यः कानिचित् निर्माणानि पूर्णान्यभवन्, अन्येषु च स्थानेषु यथायोग्यं निर्माणकार्यं गतिशीलं वर्तते।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे 108 फीट उत्तुंगांया भगवत् ऋषभदेवस्य प्रतिमायाः निर्माणस्य प्रेरणा–**मांगीतुंगी गिरौ उपविश्यैकस्मिन् दिने ध्यानं कुर्वन्तीं मातरं आभासोऽभवत् यत् अत्र कस्मिन्नपि पाषाणखण्डे पूर्वमुख्याः भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमायाः अखण्डं पाषाणं प्रच्छन्नमस्ति, यस्याः निर्माणं भवितव्यं, पुनः वास्तुशास्त्रिणः पृच्छायां ज्ञातमभवत् यत् मांगीपर्वतस्य नीचैः सुध–बुध गुहायाः उपरि वस्तुतः 500 फुट एकं अखण्डपाषणखण्डं**

---

33. उदयपुर (राज.)	महावीर स्वामी का समवसरण (यंत्र स्थापन)
34. लावा (राज.)	ॐ और ह्रीं की प्रतिमाएँ
35. केकड़ी (अजमेर-राज.)	सम्मेदशिखर रचना
36. रेवाड़ी (हरियाणा)	कैलाशपर्वत की वेदी (मंदिर में)

इनमें से अनेक स्थलों पर संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन-बंगाली स्वीट सेंटर एवं लाला प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन-खारीबावली दिल्ली ने लाखों रुपये की दानराशि घोषित करके कीर्तिमान स्थापित किया। इसी प्रकार से पूज्य माताजी के अन्य कई भक्तों ने समय-समय पर पहुँचकर कई योजनाओं में सहयोग प्रदान कर पुण्यलाभ प्राप्त किया।

यह तो मैंने नवनिर्माण की योजनाओं का संक्षिप्त उल्लेख किया है इसके अतिरिक्त कई नगरों में गृहचैत्यालय, अतिथिभवन, औषधालय आदि के निर्माण की भी प्रेरणा प्रदान की है, जिनमें से कई निर्माण तो पूर्ण हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों पर यथायोग्य निर्माणकार्य चल रहे हैं।

➢मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण की प्रेरणा–

मांगीतुंगी पर्वत पर बैठकर एक दिन ध्यान करते हुए पूज्य माताजी को आभास हुआ कि यहाँ की किसी चट्टान में पूर्वमुखी भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का अखण्ड पाषाण छिपा हुआ है, जिसका निर्माण होना चाहिए। पुनः वास्तुशास्त्री से जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि मांगी पर्वत के नीचे (सुधबुध-गुफा के ऊपर) वास्तव में 500 फुट की एक अखंड चट्टान कसौटी के अमूल्य पाषाण की

निकषस्यामूल्यपाषाणस्य विद्यते। एतत्सर्वं ज्ञात्वा समस्तजनसमूहस्य प्रतिरोमं पुलकितमभवत् क्षेत्रस्य न्यासस्य सदस्याः श्री जयचन्द्र कासलीवालं विधायकः, महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र समितेरध्यक्षः डा. पन्नालाल पापड़ीवालोऽन्येत्र पूज्यमातरं तां प्रतिमां साकारां कर्तुं बारम्बारं निवेदितवन्तः। 27 अक्तूबर दिने अस्याः घोषणायां सति दिल्ली–महाराष्ट्रयोरनेकाः दानिनः लक्षरुप्यकाणां राशिं लेखितमकुर्वन्। अस्याः प्रतिमायाश्च निर्माणस्य दुरूहकार्यभारं मुख्यरूपेण कर्मयोगिने ब्रह्मचारिणे रवीन्द्राय, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवालाय, आमदार कासलीवाल महोदयाय समर्पितम्, प्रगतिकार्यं निरन्तरं वर्धते। विशाला प्रतिमेयं विश्वस्यामूल्या अनुपमा च कृतिभविष्यति, या युगपर्यन्तं दिगम्बरत्वस्य छवि प्रकटिता करिष्यति। अस्य कठिनकार्यस्य निर्विघ्नसमाप्तिहेतवे पूज्यमाता सर्वेभ्यः एकस्य मंत्रस्य जाप्यं कर्तुमादेशमदात्। मंत्रो निम्नप्रकारेणास्ति–

''ॐ ह्री श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः''

भवन्तः सर्वे पाठकजनाः अपि अस्य मंत्रस्य जाप्यमवश्यमेव कुर्वन्तु, यतो हि पुण्यार्जनेन साकं जिनप्रतिमायाः निर्माणमपि भवतां मानसिकसहयोगस्य प्राप्तिर्भवितुं शक्नुयात्।

संक्रान्तेः प्रादेशिकप्रथा अतिविचित्रा प्रतीताभवत्–**14 जनवरी 1996 दिने वयं राजस्थानस्य बांदीकुई नगरे आस्म। तत्र भोजनगृहे पूज्यमातरमष्टमीदिने सर्वथा नीरसमाहारं कुर्वन्ती–मवलोक्य जनाः अवदन् यत्** ''अद्य दिने तु अस्माकं प्रान्ते धनिनां निर्धनानां च गृहेषु दालबाटीचूरमा अवश्यमेव भक्ष्यते'', **अतो माताश्रीरप्यद्य नीरसं भोजनं न कुर्यात्। अहमकथयम् यत् एतास्तु**

है। यह सब जानकर सारी जनता का रोम-रोम पुलकित हो उठा एवं क्षेत्र के ट्रस्टी तथा श्री जयचंद जैन कासलीवाल (एम.एल.ए.) तथा डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल (अध्यक्ष- महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी) ने पूज्य माताजी से उस प्रतिमा को साकार करवाने हेतु बारम्बार निवेदन किया। 27 अक्टूबर को इसकी घोषणा होते ही दिल्ली, महाराष्ट्र के अनेक दानियों ने लाखों रुपये की न्योछावर राशि लिखवा दी। उस प्रतिमा निर्माण का दुरूह कार्यभार मुख्यरूप से कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र जी, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल जी एवं आमदार कासलीवाल जी को सौंपा गया, प्रगति कार्य निरन्तर चल रहा है। यह विशाल प्रतिमा विश्व की एक अनुपम कृति होगी, जो युगों-युगों तक दिगम्बरत्व का अलख जगाती रहेगी। इस कठिन निर्माणकार्य की निर्विघ्न सफलता हेतु पूज्य माताजी ने सभी को एक मंत्र जपने का आदेश दिया जो निम्न प्रकार है–

''ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः''

आप सभी पाठकजन भी इस मंत्र की माला अवश्य फेरें ताकि पुण्यार्जन के साथ-साथ जिनप्रतिमा के निर्माण में भी आपका मानसिक सहयोग प्राप्त हो सके।

➢संक्रान्ति की प्रादेशिक प्रथा बड़ी विचित्र लगी–

14 जनवरी 1996 को हम लोग राजस्थान के बाँदीकुई नगर में थे, वहाँ चौके में पूज्य माताजी को अष्टमी के दिन बिल्कुल नीरस आहार करते देखकर लोगों ने कहा कि **''आज के दिन तो हमारे प्रान्त में गरीब-अमीर सभी के घरों में ''दाल-बाटी-चूरमा'' अवश्य खाया जाता है।** अतः माताजी

प्रान्तीयपरम्पराः सन्ति, उत्तरप्रदेशस्यावधक्षेत्रे अद्य दिने जनाः मासं तन्दुलैः सह मिश्रितं कृत्वा खादन्ति, अनेनैव प्रकारेण भिन्न-भिन्न प्रदेशेषु भिन्नाः परम्पराः भविष्यन्ति।

पुनस्तस्य स्थानस्य केचिद् भ्रातरो भगिन्यश्चाकथयन् ''यदद्य संक्रान्तिदिनेऽस्माकं प्रान्ते बालाः वृद्धाः महिलाश्च गुटिकाभिरवश्यमेव क्रीडन्ति ये च न क्रीडन्ति तेषां शरीरे स्फोटाः त्वक्रोगाश्च उत्पद्यन्ते। अनेनैव प्रकारेण शलभाः अप्यद्य प्रचुरतया उड्डीयन्ते, केचिच्च बालकाः शलभान् उड्डितान् कुर्वन्ति छिन्दन्ति पटलेभ्यश्च पतित्वा आहताः भवन्ति, किन्तु शलभानामुत्पातनं न त्यजन्ति।

एताः विचित्राः परम्पराः वार्ताश्च श्रुत्वा वयमाश्चर्ययुक्ताः अभवाम यत् जनाः कीदृश्याः धारणाः निर्धारयन्ति ताश्च प्राचीनप्रथानुसारेण संचालिताः कुर्वन्ति। शलभानामुत्पातनस्य परम्परा गुजरात प्रान्तेऽपि दृष्टिमायाताः।

सत्संगेन बालहृदयपरिवर्तनम्–**सतां विषये उक्तं यत्–**

ते गुरवो मम हृदये तिष्ठन्तु ये भवजलमध्ये पोतसमानाः विद्यन्ते। स्वयं तरन्ति परान् च तारयन्ति, ते एवंभूताः ऋषीणां राजानः विद्यन्ते।''

आत्मकल्याणं परप्राणिनां च कल्याणं कुर्वतां साधूनां साध्वीनां च प्रवचनैः सान्निध्येन च न कोऽपि जानाति कतिहृदयानि परिवर्तितानि भूत्वा ते मांसाहारिणः स्थानात् शाकाहारिणः व्यसनिनां च स्थानात् निर्व्यसनिनो भवितुं दृश्यन्ते एव। एतेन सार्धमेव तेषां वैराग्यप्रतिभाः

को भी आज नीरस भोजन नहीं करना चाहिए। मैंने कहा कि यह तो प्रान्तीय परम्पराएँ हैं, उत्तरप्रदेश के अवध इलाके में आज के दिन लोग उड़द की खिचड़ी बनाकर खाते हैं, इसी प्रकार अलग-अलग प्रदेश में अलग-अलग परम्पराएँ होंगी।

पुनः वहाँ के कई भाई-बहनों ने बताया कि ''आज संक्रान्ति के दिन हमारे प्रान्त में बच्चे-बूढ़े महिलाएँ सभी गोलियाँ जरूर खेलते हैं और जो लोग नहीं खेलते हैं, उनके शरीर में फोड़े-फुंसी-गुमड़े आदि निकल आते हैं। इसी प्रकार पतंग भी आज खूब उड़ाई जाती है, कितने बच्चे पतंग उड़ाते-काटते छतों से गिरकर घायल भी होते हैं किन्तु पतंग उड़ाना छोड़ते नहीं हैं।''

ये विचित्र परम्परापोषक बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लोग कैसी-कैसी धारणाएँ बना लेते हैं और उन्हें प्राचीन प्रथा के आधार पर चलाते रहते हैं। संक्रान्ति के दिन पतंग उड़ाने की परम्परा गुजरात में भी देखने को मिली।

➢सत्संग से बाल-हृदय परिवर्तन–

सन्तों के बारे में कवियों ने कहा ही है कि–

ते गुरु मेरे उर बसहुं, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरें पर तारहीं, ऐसे श्री ऋषिराज।।

आत्मकल्याण एवं पर प्राणियों के कल्याण करने वाले साधु-साध्वियों के प्रवचन एवं सानिध्य से न जाने कितने हृदय परिवर्तन होकर माँसाहारी से शाकाहारी एवं व्यसनी से निर्व्यसनी बनते तो देखे ही जाते हैं, इसके साथ-साथ उनकी वैराग्य प्रतिमा की चुम्बकीय शक्ति से बहुत सारी

अपि चुम्बकीय शक्त्या वैराग्यमार्गेऽग्रसारिण्यो भवन्ति। ज्ञानमती माता तु अस्याः वार्तायाः जीवदुदाहरणमस्ति यस्याः प्रेरणयाऽनेकस्त्री–पुरुषाः, बालकाः–बालिकाः, युवकाः–युवत्यश्च, ब्रह्मचारिण्यः, आर्यिकाः, क्षुल्लिकाः, क्षुल्लकाः, मुनयः, आचार्यादिपदेषु प्रतिष्ठिताः सन्ति।

27 फरवरी 1996 दिने मध्यप्रदेशस्योज्जैन जनपदे स्थिते सुसनेर नगरस्य चतुष्पथे संभूतेन मातुः प्रवचनेन प्रभाविता भूत्वा तस्य नगरस्य श्रावकस्य निर्मलकुमारस्य एकैव सुपुत्री कुमारी प्रीतिः मातरं पितरं च कथनेन विनैव अस्माभि साकं तस्मात् स्थानात् प्रचलिता, पर्याप्तसंघर्षस्य च पश्चात् सा वैराग्यमार्गमागत्य मात्रा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतं द्वितीयप्रतिमां चागृह्णात्। पूज्यायाः मातुः छत्रछायायां तस्याः सात्विकं जीवनं ज्ञानामृतेन सिंचितं भवति। इदं हृदयपरिवर्तनं मात्रं 4–5 होरायाः सत्संगेन कस्यापि प्रेरणां विनैवाभवत्। सा बालिकावदत् यत् मात्रा रचितानि पुस्तकानि पठित्वाऽहमचिन्तयं यदहं तस्याः एव ज्ञानमत्याः मातुराश्रयं गृहीत्वा व्रतं गृहीस्यामि, तु माता ज्ञानमती स्वयं मां गृहीतुं सुसनेरमागता। एते अद्भुत संयोगाः वस्तुतः अविस्मरणीयाः भवन्ति।

एकस्य कर्मठतया सम्पूर्णसमाजो लाभान्वितोऽभवत्–**23 फरवरी 1996 दिने राजस्थाने साल्याखेड़ी इतिग्रामे पिडावा नगरस्य धर्मबन्धवोतत्र संघं नेतुं निवेदयितुमागच्छन् परन्तु ज्ञातमभवत् यत् पिडावा नगरं प्राप्तुं कश्चित् मार्गः वर्द्धितो भविष्यति शासकीयमार्गश्च नितान्तं दुःखदोऽस्ति। अस्माकं पादानां कष्टमवलोक्य माताश्रीः तत्र गन्तुं स्वीकृतिं न**

भव्यात्माएँ भी वैराग्य मार्ग में अग्रसर हो जाती हैं। पूज्य ज्ञानमती माताजी तो इस बात की जीवन्त उदाहरण हैं जिनकी प्रेरणा से अनेकों स्त्री-पुरुष, बालक-बालिकाएँ, युवक-युवती, ब्रह्मचारिणी, आर्यिका, क्षुल्लिका, क्षुल्लक, मुनि, आचार्य आदि पदों पर आसीन हुए हैं।

27 फरवरी 1996 को मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले में स्थित सुसनेर नगर के चौराहे पर हुए पूज्य माताजी के प्रवचन से प्रभावित होकर वहाँ के श्रावक निर्मल कुमार जैन लुहाड़िया की एक मात्र पुत्री कु. प्रीति जैन माता-पिता से कुछ कहे बिना ही हम लोगों के साथ वहीं से चल पड़ी और काफी संघर्ष के बाद उसने वैराग्य मार्ग में आकर पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं दो प्रतिमा ग्रहण कर ली। पूज्य माताजी की छत्रछाया में उसका सात्विक जीवन ज्ञान के अमृत से सिंचित हो रहा है। यह हृदय परिवर्तन मात्र 4-5 घण्टे के सत्संग से ही बिना किसी प्रेरणा के हो गया। इस बालिका ने कहा कि पूज्य माताजी द्वारा रचित पुस्तकें पढ़कर कई बार मैं सोचा करती थी कि मैं इन्हीं ज्ञानमती माताजी के पास कभी न कभी जरूर जाकर व्रत लूंगी, तो शायद पूज्य माताजी मुझे लेने ही सुसनेर आ गईं। यह अनहोने संयोग वास्तव में अविस्मरणीय हो जाते हैं।

➢एक की कर्मठता से पूरा समाज लाभान्वित हो गया–

23 फरवरी 1996 को राजस्थान में साल्याखेड़ी ग्राम में पिड़ावा के धर्म बन्धु वहाँ संघ को ले जाने हेतु निवेदन करने आए किन्तु पता चला कि पिड़ावा जाने से कुछ रास्ता बढ़ जायेगा एवं सड़क बहुत खराब है। हम लोगों के पैरों की तकलीफ देखकर पूज्य माताजी ने वहाँ जाने की स्वीकृति

प्रादात्। ते जनाः बहुआग्रहेण विनैव रात्रौ प्रत्यगच्छन्।

इतश्च झालरापाटनादिनगराणां महानुभावाः न कोऽपि जानाति किमर्थं मातरं पिडावा पदार्पणाय प्रचुरमाग्रहमकुर्वन्। अतोऽद्य तेषां श्रावकाणां प्रतिगते सति मातुर्मनसि कष्टमासीत् यदेकः वृहत्समाजो धर्मकार्यात् वंचितो स्थास्यति किन्तु कापि वास्तविकतेयमप्यासीत् यत् पिडावा समाजे कश्चिद् प्रमादः आसीत् यतस्ते पूर्वमागत्य किमपि निवेदनं नाकुर्वन्। अधुना वयं 24 फरवरी दिने साल्याखेड़ी ग्रामात् पिडावा नगरस्य मार्गं पृष्ट्वा वयं देहरिया ग्राममागच्छाम। तस्मात् स्थानात् राजस्थानस्य सीमानं त्यक्त्वा मध्यप्रदेशस्य प्रारब्धाऽभवत्।

तस्मिन् दिने मध्यान्हे एक वादनकाले पिडावा नगरस्य कैश्चित् नर–नारीभि सह तस्य स्थानस्य पटवारी धर्मसिंहजैनः आगच्छत् श्रीफलं च समर्प्य मातरं वक्तुं प्रारभत्, यत् ''भवती पिडावा नगरं तु गमिष्यत्येव, तत्र 350 गृहाणां दिगम्बरजैनसमाजो वर्तते, ते सर्वे भवत्याः आगमनस्य प्रतीक्षां कुर्वन्ति।''

माताश्रीः वयं च हसितुं प्रारभन्त, तान् च अकथयाम अधुना प्रयासो वृथैवास्ति। यतस्तं मार्गं पृष्ठे त्यक्त्वा वयं मध्यप्रदेशमागच्छाम। पुनरपि पटवारी महोदयः पूर्णाग्रहेण वक्तुं प्रारभत् यत् मातः! अस्मात् स्थानात् सर्वथा लघुरेकोऽपरिपक्वो मार्गो विद्यते येन पिडावा केवलं 10–12 किलोमीटर भविष्यति। भवत्याः सान्निध्ये तत्र समवसरणरचनायाः कार्यमपि संपन्नं भविष्यति। ग्रामाय समस्तजनसमूहाय च भवत्याः आशीर्वादः प्राप्तव्योऽस्ति।

नहीं दी, वे लोग बहुत ज्यादा आग्रह भी न करके रात्रि में वापस चले गये।

इधर 3-4 दिनों से झालरापाटन आदि नगरों के महानुभाव न जाने क्यों माताजी से पिड़ावा पदार्पण के लिए खूब आग्रह कर रहे थे इसीलिए आज उन श्रावकों के वापस चले जाने पर भी माताजी के मन में खटकता रहा कि एक बड़ा समाज धर्मलाभ से वंचित रह जाएगा। जबकि कुछ वास्तविकता यह भी थी कि पिड़ावा की समाज में शायद थोड़ी सुस्ती थी क्योंकि उन्होंने पहले से आकर कोई निवेदन नहीं किया था। अब हम 24 फरवरी को साल्याखेड़ी से पिड़ावा वाला रास्ता पीछे छोड़कर देहरिया आ गए, यहाँ से राजस्थान छूटकर मध्यप्रदेश की सीमा प्रारंभ हो गई।

उस दिन मध्यान्ह में 1 बजे पिड़ावा के कुछ नर-नारियों को साथ लेकर वहाँ के पटवारी धनसिंह जैन आ गए और श्रीफल चढ़ाकर माताजी से कहने लगे कि **''आपको पिड़ावा तो चलना ही पड़ेगा, वहाँ 350 घर का दिगम्बर जैन समाज है, वे सब आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।''**

माताजी एवं हम सब हँसने लगे और उनसे कहा कि अब प्रयास करना बेकार है क्योंकि वह रास्ता पीछे छोड़कर हम मध्यप्रदेश में आ गए हैं। फिर भी पटवारी जी पूरे आग्रह के साथ कहने लगे कि माताजी! यहाँ से एक बिल्कुल छोटा कच्चा रास्ता है, जिससे पिड़ावा केवल 10-12 किमी. पड़ेगा। हमें आपके सानिध्य में वहाँ समवसरण रचना का कार्य भी प्रारंभ करना है तथा गाँव की समस्त जनता को आपका आशीर्वाद दिलवाना है।

तेषां अत्यधिकनिवेदनेन माताश्रीः करुणरसेनार्द्रा भूत्वा पिडावा गमनस्य स्वीकृतिं प्रादात्। पुनश्च वयं पिडावा नगराय विहारमकुर्म। वयं च तेन मार्गेण चलितुं विवशाः अभवाम, यत्र संभवतो मनुष्याणां तु किम् पशूनां आवागमनं न संभवं स्यात्। नदीपर्वतकण्टक प्रस्तरादिकान् केनापि प्रकारेण सायं सूर्यास्तात् पर्यन्तं पारं कृत्वा वयं 10 किलोमीटर मार्गं पारं कृत्वा शेरपुर नामकं ग्राममागच्छाम, अग्रिमदिने च 26 फरवरी दिने प्रातः 9.30 वादन समये पिडावा स्थानं प्राप्नुम। तत्र पाण्डाले सभा संयोजिता। मन्दिराणां दर्शनानि कृत्वा वयं सर्वे सभामंचमागच्छाम, यत्र मम क्षुल्लकप्रवरस्य प्रवचनानन्तरं ''भगवान पार्श्वनाथस्य समवसरणस्य'' **निर्माणस्य घोषणायाः समये एव दानदातारः स्व अर्थांजलिदाने दातुं प्रारभन्त्। पुनरमातु–राशीर्वादात्मकं प्रवचनमभूत्। मध्याह्ने द्विवादनसमये समवसरणस्य शिलान्यासोऽ–सीमोत्साहेन सम्पन्नोऽभवत्। पुनः समाजाय मंगलाशीर्वादं प्रदाय संघस्याग्रे प्रस्थानमभवत्।**

अग्रमार्गोऽप्यत्यन्तमेव दुःखदः आसीत्, येनास्माकं पादानि पर्याप्तरूपेण आहताः अभवन् किन्तु तदैव पिडावा जनानां सन्तोषदायिकां प्रसन्नतामवलोक्य मातुर्मुखादिदमेव निरगच्छत् पश्य! एकस्य जनस्य पुरुषार्थात् महते समाजाय लाभः प्राप्तोऽभूत्, 2–4 जनानां चोदासीनतया सम्पूर्णो ग्रामो धर्मलाभात् वञ्चितः स्यात्।

एकस्य श्रावकस्य श्रद्धा–**अस्य मध्ये शेरपुरस्य निवासी श्रावकोऽकथयत् अहं 4–5 दिनपूर्वं स्वप्नमपश्यम् यत् माताश्रीः अस्माकं ग्राममागच्छत् किन्तु यदा अशृण्वम् यत् भवती**

उनके अत्यधिक निवेदन पर माताजी ने करुणारस से आर्द्र होकर पिड़ावा जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी पुनः हम लोगों ने पिड़ावा के लिए विहार कर दिया और हमें उस मार्ग से चलना पड़ा, जहाँ संभवतः कभी कोई मनुष्य तो क्या पशुओं का आवागमन भी नहीं होता होगा। नदी, पहाड़, कंकड़, पत्थर, कांटे आदि को किसी भी तरह से शाम सूर्यास्त से पूर्व तक पार किया गया, तब हम 10 किमी. चलकर शेरपुर नामक ग्राम में पहुँचे तथा अगले दिन 25 फरवरी को प्रातः 9.30 बजे पिड़ावा पहुँच गये। वहाँ पांडाल में सभा तैयार थी, मंदिरों के दर्शन करके हम सब सभामंच पर पहुँचे, जहाँ मेरे एवं क्षुल्लक जी के प्रवचनों के पश्चात् **''भगवान पार्श्वनाथ समवसरण''** निर्माण की घोषणा होते ही दानदातारों ने अपनी अर्थांजलियाँ भेंट करनी शुरू कर दीं पुनः पूज्य माताजी के आशीर्वादात्मक प्रवचन हुए। मध्यान्ह में 2 बजे समवसरण का शिलान्यास असीम उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ पुनः जनता को मंगल आशीर्वाद प्रदान कर संघ का आगे की ओर प्रस्थान हो गया।

आगे का रास्ता भी अत्यंत खराब था, जिससे हम लोगों के पैर काफी छिल गये, छाले पड़ गए लेकिन साथ-साथ चल रहे पिड़ावा के श्रावकों की सन्तोषजनक प्रसन्नता देख-देखकर माताजी के मुख से यही निकला कि देखो! एक व्यक्ति के पुरुषार्थ से इतनी बड़ी समाज को लाभ मिल गया और 2-4 व्यक्तियों की उदासीनता के कारण पूरा गाँव धर्मलाभ से वंचित रह जाता।

➢एक श्रावक की श्रद्धा–

इस मध्य शेरपुर के एक मात्र निवासी जैन श्रावक कहने लगे कि मैंने 4-5 दिन पूर्व स्वप्न देखा कि माताजी हमारे यहाँ पधारी हैं किन्तु जब सुना कि आप सीधे सुसनेर जा रही हैं,

केनापि रोधेन विना सुसनेरं गच्छति, त्वहं स्वदुर्भाग्ये अश्रूणि प्रवाहितानि कृत्वा सन्तोषम–धारयम्। परन्त्वद्य भवतीं स्वग्रामे प्राप्य अहं प्रसन्नो भूत्वा स्वस्मिन्नेव न समायोजनं करोमि यतो मम स्वप्नः सत्यं साकारोऽभवत्।

प्रातः पिडावा गमनसमये मार्गे एको युवकः आगत्यावदत् यदहमद्य सम्पूर्ण रात्रौ कर्णपीडया व्याकुलः आसम्, एकस्मिन् समयेऽपि निद्रा नागता, केनापि उपचारेण लाभो नाभवत्। पुनरप्युत्थाय बलादहं भवतीनां दर्शनार्थमचलम्। मातः! अहं स्वयमाश्चर्येऽस्मि यत् अत्रागत्य मस्तकस्य नम्रीभूते काले एव कर्ण पीडा न जानामि कुत्र पलायिता। सः सज्जनः तस्मात् दिनात् परमगुरु भक्तोऽभवत्। एवमेव कतिचिदेव नर–नार्य शरीररोगाणां लाभं मातुर्वात्सल्य–पूर्णाशीर्वादेन लभन्ते, भवत्यास्तेजसा एव प्रभावोऽस्ति। यथा स्वामिना समन्तभद्राचार्येणोक्तम्–

उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात् पूजा।
भक्तेः न सुन्दररूपं स्तवनात्कीर्तिषु तपोनिधिषु।।

अर्थात् सन्तसाध्वीभ्य नमनमात्रेण उच्चैर्गोत्रस्य बन्धो भवति, तेभ्यः आहारप्रदानेन भोगोपभोगसामग्री प्राप्यते, तेषामुपासनया मनुष्योऽपि पूजापात्रं भवति, तेषां भक्त्या सुन्दर रूपं प्राप्यते तेषां च स्तवनैः स्वयशः कीर्तेर्वृद्धिर्भवति।

इत्थमनेकानेकगुणसमन्वितस्यः गुरोश्चरणयोः कृतः नमस्कारः यदि शरीरस्य आधिव्याधिं नाशयति, त्वस्मिन्न् काप्यतिशयोक्तिः।

तो मैंने अपने दुर्भाग्य पर दो आँसू बहाकर संतोष कर लिया था लेकिन आज आपको अपने गांव में पाकर मैं फूला नहीं समा रहा हूँ क्योंकि मेरा सपना सच में साकार हो गया है।

सुबह पिड़ावा जाते समय रास्ते में एक युवक ने आकर बताया कि मैं आज रातभर कान के दर्द से छटपटाता रहा, एक मिनट भी नींद नहीं आई, कोई दवा से लाभ नहीं हुआ, फिर मैं उठकर जबर्दस्ती आप लोगों के दर्शन हेतु चल दिया। माताजी! मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा है कि यहाँ आकर मस्तक झुकाते ही मेरे कान का दर्द न जाने कहाँ चला गया। वह सज्जन उस दिन से परमगुरुभक्त बन गये। इसी प्रकार कितने ही नर-नारियों को तन-मन-धन का मनवाञ्छित लाभ पूज्य माताजी के वात्सल्यमयी आशीर्वाद से प्राप्त हो जाता है, जो उनके अखण्ड तप-तेज का ही प्रभाव है। जैसा कि आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने कहा भी है–

उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो, दानादुपासनात्पूजा।
भक्तेः सुन्दररूपं, स्तवनात्कीर्तिषु तपोनिधिषु।।

अर्थात् तपोनिधि सन्त-साध्वियों को नमन करने मात्र से उच्चगोत्र का बंध होता है, उन्हें आहार आदि दान देने से भोगोपभोग सामग्री प्राप्त होती हैं, उनकी उपासना से मनुष्य भी पूजा का पात्र बन जाता है, उनकी भक्ति करने से सुन्दर रूप मिलता है तथा उनके गुणों का स्तवन करने से अपने यशकीर्ति की वृद्धि होती है।

ऐसे अनेकानेक गुणों से समन्वित गुरु चरणों में किया गया नमन यदि शारीरिक-आधि-व्याधि को दूर कर दे, तो उसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

देवानां स्मृतिमकारयत् एकस्य भक्तस्य आजादकुमारस्य सेवा–**पिडावा नगरात् अग्रेऽपि सुसनेरपर्यन्तं मार्गाऽपि प्रस्तरयुक्तः कण्टकाकीर्णश्चासीत्। तस्मात् स्थानात् विहारकाले मार्गे शाजापुरमध्यप्रदेशस्य अभियन्ता सनावदनिवासी आजादकुमारः आगच्छत् पदविहारस्य च कठिनां परिस्थितिमवलोक्य रात्रौ प्रतिगतः।**

पुनः 26 फरवरी दिने यदा वयं बोलियाबारीस्थानात् श्यामपुरमगच्छाम तु मार्गे अपश्याम यत् शतशः श्रमिकाः मार्गात् प्रस्तरशकलान् प्रस्तरान् च दूरीकृत्य मार्जन्या स्वच्छतामकुर्वन्। वयमचिन्तयाम यत् स्यात् मार्गनिर्माणहेतवे शासकीयादेशानुसारेण इदं कार्यं सम्पद्यते किन्तु ते जनाः अकथयन् यत् ''भवतां सर्वेषां साधूनां पदविहारस्य कष्टानि दृष्ट्वा अभियन्तुः आजादकुमारस्य आदेशेन इयं स्वच्छता गतिशीला वर्तते। सुसनेरपर्यन्तं मार्गोऽयं भवद्भ्यः स्वच्छः प्राप्तो भविष्यति।''

इमां सेवाभावनामवलोक्य पूज्या माताकथयत् यत् पूर्वकाले यदा भगवतः समवसरणं विहारमकरोत् तु वायुकुमाराः देवाः पवनेन पृथिवीं स्वच्छामकुर्वन्, मेघकुमाराः देवा जलेन सर्वथा शुद्धामकुर्वन्, अद्य मम भक्तः आजादकुमारः देवसमानः स्वाधिकारं प्रयुज्य मार्गं निष्कण्टकमकरोत्। अनेनायं असीमपुण्यस्य संचयं कृत्वा गुरोर्भक्तेरद्वितीयमुदाहरणं प्रस्तुतमकरोत्।

मांगीतुंगीतीर्थस्य कीटाः पलायमानाः अभवन्–**मर्यादापुरुषोत्तमभगवतां रामादीनां नवनवति–कोटिमुनीनां निर्वाणभूमौ मांगीतुंगीक्षेत्रे यदार्यिकायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः चतुर्मासः गतिशीलः**

➢देवों की याद दिला दी एक भक्त आजाद कुमार जैन की सेवा ने–

पिड़ावा से आगे सुसनेर तक का रास्ता भी बहुत अधिक पथरीला एवं कंकरीला था। वहाँ से विहार करते हुए रास्ते में शाजापुर-मध्यप्रदेश के इंजीनियर आजाद कुमार जैन (सनावद निवासी) आ गये और पदविहार की कठिन परिस्थिति देखकर रात्रि में वापस चले गये।

पुनः 26 फरवरी को प्रातः जब हम बोलियाबारी से श्यामपुर जा रहे थे तो रास्ते में देखा कि सैकड़ों मजदूर सड़क से कंकड़-पत्थर दूर करके झाड़ू लगा रहे थे। हम सोचने लगे कि शायद सड़क बनाने हेतु सरकारी आदेशानुसार यह कार्य हो रहा है लेकिन उन लोगों ने बताया कि **''आप सभी साधुओं के पदविहार का कष्ट देखकर इंजीनियर साहब आजाद कुमार जैन के आदेश पर यह सफाई चल रही है, सुसनेर तक यह सड़क आपको बिल्कुल स्वच्छ मिलेगी।''**

यह सेवा देखकर पूज्य माताजी कहने लगीं कि पहले जब भगवान् का समवसरण विहार करता था, तो वायुकुमार देव हवा से पृथ्वी स्वच्छ करते थे, मेघकुमार देव धरती को जल से एकदम शुद्ध करते थे। आज मेरे भक्त आजाद ने देवता के समान ही अपने अधिकार का सदुपयोग करके सड़क को निष्कंटक बना दिया, इससे इन्होंने असीम पुण्य का संचय कर गुरुभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

➢मांगीतुंगी के कीड़े पलायमान हो गये थे–

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम आदि निन्यानवे करोड़ मुनिराजों की निर्वाणभूमि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर जब पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का वर्षायोग चल रहा था, अत्यधिक

आसीत्, वर्षाधिक्येनापि तत्र कदापि वर्षोद्भवाः कीटाः दंशकाः मत्सराः दृष्टिगताः नाभवन्, तदा तत्र तिष्ठन्त्यः आर्यिकाः श्रेयांसमती, सुगुणमती, सुदृष्टिमती, मातरोऽनेकशः कथनमकुर्वन् यत् मातः! प्रतिवर्षं वर्षायां यत्र सर्पाः, वृश्चिकाः पर्याप्तमात्रायां दृष्टिगता अभवन्, मत्सराणां कारणेन त्वत्र विद्युत्प्रकाशविधानमपि कठिनमासीत् परन्तु अस्मिन् अवसरे अधुना नैकोऽपि मत्सरो दृश्यते न सर्पादीनां भयं अनुभूयते। मातुः तपः प्रभावं वयं प्रत्यक्षं पश्यामः।

वस्तुतः मांगीतुंगीक्षेत्रे मई मासस्य पंचकल्याणकमहोत्सवस्य समये माताश्रीः पर्याप्तमंत्राणां माध्यमेन कील, यंत्रादीन् संलग्नान् अकारयत्, फलस्वरूपेण तत्र सर्वविघ्नानां शान्तिरभवत्।

मुनिरयणसागरस्य गुणग्राहकत्वम्–**मांगीतुंगीपंचकल्याणकावसरे मुनेर्दयासागरस्य शिष्यस्य मुनेः रयणसागरस्य अपि मंगलपादार्पणमभवत्। वयं तस्य प्रथमबारमेव दर्शनमकुर्म। सोऽपि मातरं ज्ञानमती प्रथमबारमेव मिलित्वा परमप्रसन्नोऽभवत्। सः महोत्सवस्य पश्चादपि एकस्मै मासाय मांगीतुंगी क्षेत्रे स्थित्वा विभिन्नविषयेषु मात्रा सह चर्चामकरोत्। समस्तपरम्परायाः आगमस्य च ज्ञानं मात्रा ग्रहणं कृत्वा सः सदैवाकथयत्–मातः! आचार्यशान्तिसागरस्य परम्परायां यां प्रभावपूर्णामभिवृद्धिमकरोत् तां वयं कदापि विस्मर्तुं न शक्नुमः, भवत्याः ज्ञानस्य समक्षं तु वयं बालकसदृशाः स्मः। मुनि भगवतः ऋषभजयन्त्यामपि स्वसक्रिययोगदानमाश्वासनं ददत् अकथयत् यदहं यत्रापि स्थास्यामि भवत्या प्रेषितान् सर्वान् कार्यक्रमान् सामाजिक स्तरेणावश्य मेवायोजितान् कारयिस्यामि, इदं तस्य गुणग्राहकताया एव प्रतीकमस्ति।**

वर्षा होने के बावजूद भी वहाँ कभी बरसाती कीड़े, डाँस, मच्छर आदि नहीं दिखते थे, तब वहाँ रहने वाली आर्यिका श्री श्रेयाँसमती माताजी, सुगुणमती माताजी, सुदृष्टिमती माताजी आदि कई बार कहा करती थीं कि "माताजी! हर वर्ष तो यहाँ पर बरसात में सर्प, बिच्छू खूब दिखते थे, मच्छरों के कारण तो यहाँ बिजली जलाना ही मुश्किल था किन्तु इस बार न एक मच्छर दिख रहा है और न सर्पादि का कोई उपद्रव है। आपके तप का यह प्रभाव हम लोगों को प्रत्यक्ष देखने को मिल रहा है।"

दरअसल, मांगीतुंगी में मई के पंचकल्याणक महोत्सव के समय माताजी ने पर्याप्त मंत्रों के माध्यम से कील, यंत्र आदि लगवाए थे उसी के फलस्वरूप वहाँ समस्त विघ्नों की उपशांति हो गई थी।

➢मुनि श्री रयणसागर जी की गुणग्राहकता–

मांगीतुंगी के पंचकल्याणक में पूज्य मुनि श्री रयणसागर महाराज (परमपूज्य स्व. मुनि श्री दयासागर जी महाराज के शिष्य) का भी मंगल पदार्पण हुआ था। हम लोगों ने उनके पहली बार दर्शन किए थे और वे भी पूज्य ज्ञानमती माताजी से प्रथम बार मिलकर अतीव प्रसन्न थे। उन्होंने प्रतिष्ठा महोत्सव के पश्चात् भी 1 माह मांगीतुंगी में रुककर अनेक विषयों पर माताजी से चर्चा की, तमाम परम्परा एवं आगम से संबंधित ज्ञान को ग्रहणकर वे सदैव कहा करते थे कि अम्मा! आपने आचार्य शांतिसागर महाराज की परम्परा में जो प्रभावक अभिवृद्धि की है, उसे हम लोग कभी भूल नहीं सकते, आपके ज्ञान के समक्ष हम तो बिल्कुल बालक के समान हैं। पूज्य महाराजश्री ने भगवान् ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव में भी अपना सक्रिय योगदान प्रदान करने का आश्वासन देते हुए कहा कि मैं जहाँ भी रहूँगा, आपके द्वारा भेजे गये सभी कार्यक्रम सामाजिक स्तर पर अवश्य आयोजित कराऊँगा, यह उनकी गुणग्राहकता का ही प्रतीक है।

पूज्यमुनेर्नवदीक्षितः शिष्य नवोदितं प्रतिभया संपन्नं क्षुल्लकं मयंकसागरं मिलित्वापि महती प्रसन्नताभवत्। सोऽपि सदैव पठनपाठने गुरुभक्तौ च लीनः आसीत्। भविष्ये च एताभ्यां गुरुशिष्याभ्यां जैनधर्मस्य महती प्रभावना भविष्यति, इत्याशा वर्तते।

गणेशीलालस्य भावनापि सफला जाता–**मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रे पंचषष्टिवर्षेभ्यः स्वसमर्पित–सेवायाः प्रदाता वयोवृद्धो ब्रह्मचारी गणेशीलालोऽपि, च मांगीतुंगी न्याससमितेर्महामंत्री वर्तते, सः अनया व्यथया पीडितः आसीत् यत् अधुना स्यादहं अस्य क्षेत्रस्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठां दृष्टुं समर्थोः न भविष्यामि किन्तु मातुः ज्ञानमत्याः प्रबलपुरुषार्थेन यदा तत् दुर्लभं क्षणं तस्य जीवनकाले सुलभमभवत्, तु 85 वर्षीयो ब्रह्मचारी महोदयः प्रसन्नतायां मग्नोऽभवत्। सः जीवनस्य समापनकाले जैनेश्वरीं दीक्षां गृहीत्वा समाधिं प्राप्नोत्।**

एकदा मांगीतुंगीक्षेत्रे पारस्परिकचर्चाया मध्ये यदा सः ज्ञानमत्या मातुः कठोरचर्यायाः विषये एतदजानात् यत् ''तस्याहारव्यवस्थाया संघस्य च अर्थव्यवस्थाया कदापि कस्याः अपि समितेः मन्दिरस्य च दानस्य अंश दानेन चैकत्रितस्य धनस्य उपयोगो न भवति एषः तस्याः कठोरनियमोऽस्ति।'' **तु आश्चर्यपूर्वकं महतीं प्रसन्नतां व्यक्तामकरोत् अकथयत्–भवती सदृश्यः विरलाः साध्व्यः एव एवंभूतान्नियमान् पालयितुं समर्थाः सन्ति, तदैव तु भवत्याः वचनवर्गणाभिः समाजाः नवचेतनां प्राप्तुं समर्थाः सन्ति।**

गृहचैत्यालयाय संघस्य प्रतिमामप्यदात्–**संघस्य विहारो यदा दिल्ली नगरात् मांगीतुंगी**

पूज्य मुनि श्री के दीक्षित शिष्य, नवोदित प्रतिभा सम्पन्न क्षुल्लक मयंकसागर जी से भी मिलकर खूब प्रसन्नता हुई, वे भी सदैव पठन-पाठन, गुरुभक्ति में लीन रहते थे तथा भविष्य में इन गुरु-शिष्य से जिनधर्म की अतिशय प्रभावना होगी, ऐसी पूर्ण आशा है।

➢ब्र. गणेशीलाल जी की भावना भी सफल हुई–

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पर 65 वर्षों से अपनी समर्पित सेवा प्रदान करने वाले वयोवृद्ध ब्रह्मचारी गणेशीलाल जी (महामंत्री मांगीतुंगी ट्रस्ट कमेटी) भी इस व्यथा से पीड़ित थे कि शायद अब मुझे यहाँ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा देखने को नहीं मिलेगी किन्तु पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रबल पुरुषार्थ से जब वह दुर्लभ क्षण उनके जीवनकाल में सुलभ हो गया, तो 85 वर्षीय ब्रह्मचारी जी फूले नहीं समाए। उन्होंने जीवन के समापन काल में जैनेश्वरी दीक्षा लेकर समाधि की प्राप्ति की।

एक बार मांगीतुंगी में पारस्परिक चर्चा के दौरान जब उन्हें ज्ञानमती माताजी की कठोरचर्या के बारे में यह ज्ञात हुआ कि **''उनकी आहार व्यवस्था एवं संघ व्यवस्था में कभी किसी कमेटी का, मंदिर के दान का, चन्दे से इकट्ठा किया हुआ पैसा नहीं लिया जा सकता है ऐसा उनका कट्टर नियम है।''** तो उन्होंने आश्चर्यपूर्वक बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और कहने लगे कि आप जैसे विरले साधु ही ऐसे नियम पालन कर सकते हैं, तभी तो आपकी वचनवर्गणा से समाजों को नई चेतना प्राप्त होती है।

➢गृह चैत्यालय के लिए संघ की प्रतिमा भी दे दी–

संघ का विहार जब दिल्ली से मांगीतुंगी की ओर हुआ, तो दिनाँक 18 दिसम्बर 1995 को

क्षेत्रं प्रत्यभवत्, तु 18 दिसम्बर 1995 दिने सैनिकक्षेत्रे महासभायाः अध्यक्षस्य निर्मलकुमार जैनस्यावासे विश्रामोऽभूत्। सः विहारस्य पश्चात् मातरमकथयत् यत् अद्याहं सीतापुरात् भगवतः प्रतिमामानेतुं व्यवस्थामकरवम् यत् मातुः करकमलाभ्यां तां स्वगृहे विराजमानां कारयित्वा गृहचैत्यालयस्य निर्माणं कारयिष्यमि किन्तु कारणवशात् प्रतिमायाः आनयने विलम्बोऽभूत्। श्रेष्ठिनो मुखे कांचिदुदासीनतां निरीक्ष्य माताश्रीः तत्कालमेव ध्वनिमकरोत् निर्मल! चिन्तां न कुरु, अहं तव गृहे संघस्य प्रतिमां विराजमानां करोमि, यूयं तस्य सेवां पूजां कृत्वा सद्गृहस्थेः संचालनं कुरुथ, अयमेव मम मंगल–आशीर्वादोऽस्ति।

श्रेष्ठिनः प्रसन्नता पारं न गता, तत्र प्रतिमां विराजमानां कृत्वा हस्तिनापुरात् जम्बूद्वीपात् द्वितीयां प्रतिमां गृहीत्वा अग्रे विहारस्य कार्यक्रमः यथावत् गतिमान् अभवत्।

वस्तुतः आचार्यशान्तिसागरस्य आचार्यवीरसागरस्य आज्ञानुसारेण तयोः परम्परायाः सर्वे आचार्याणां आर्यिकाणां च संघे चैत्यालयानां व्यवस्था अद्यापि प्रवर्तते। यतस्तयोः कथनमासीत् कतिचित्सु स्थानेषु मन्दिराणि न प्राप्यन्ते तु तत्र साधुभ्यः साध्वीभ्यश्च दर्शनार्थं संघे प्रतिमायाः संरक्षणमावश्यकं वर्तते। देवदर्शनं विना आचार्य श्री शिवसागरधर्मसागरदेश–भूषणविमलसागराः कोऽप्याचार्यः देवदर्शनं विना आहारं नागृह्णात्।

अस्या एवार्षपरम्परायाः निर्वाहाय पूज्यज्ञानमत्याः मातुः संघेऽपि प्रायः एकस्याः जिनप्रतिमायाश्चैत्यालयस्तिष्ठति। दिल्ल्याः पश्चात् ईदृशः प्रसंगोपस्थितोऽभूत् दिनांके

सैनिक फार्म में महासभा अध्यक्ष निर्मल कुमार जैन सेठी की कोठी पर रुकना हुआ। वे विहार के पश्चात् पूज्य माताजी से कहने लगे कि आज मैंने सीतापुर से भगवान् की प्रतिमा मंगवाई थी कि माताजी के करकमलों से मैं उन्हें अपने घर में विराजमान करवाकर गृहचैत्यालय बनाऊँगा किन्तु कारणवश वह प्रतिमा आ नहीं पाई है। सेठी जी के चेहरे पर थोड़ी सी उदासी देखकर पूज्य माताजी तुरंत बोल पड़ीं– निर्मल! चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे यहाँ अपने संघ की प्रतिमा विराजमान कर देती हूँ, तुम लोग उनकी सेवा-पूजा करके सद्गृहस्थी का संचालन करो, यही मेरा मंगल आशीर्वाद है।

सेठी जी की प्रसन्नता का पार नहीं रहा, वहाँ प्रतिमा विराजमान करने के बाद संघ के लिए जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से दूसरी प्रतिमा मंगवाकर आगे विहार का कार्यक्रम यथावत् चला।

दरअसल चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री वीरसागर महाराज की आज्ञानुसार उनकी परम्परा के सभी आचार्य एवं आर्यिकाओं के संघ में चैत्यालय की व्यवस्था आज भी चल रही है क्योंकि उनका कहना था कि कितने ही स्थानों पर मंदिर नहीं मिलते हैं, तो वहाँ साधु और श्रावक-श्राविकाओं को दर्शन करने के लिए संघ में प्रतिमा रखना अति आवश्यक है। जिनेन्द्र दर्शन के बिना आचार्य श्री शिवसागर जी, आचार्य श्री धर्मसागर जी, आचार्य श्री देशभूषण जी, आचार्य श्री विमलसागर जी आदि कोई भी आहारचर्या नहीं करते थे।

इसी आर्षपरम्परा के निर्वाह हेतु पूज्य ज्ञानमती माताजी के संघ में भी प्रायः एक जिनप्रतिमा का चैत्यालय रहता ही है। दिल्ली के पश्चात् ऐसा प्रसंग आया दिनाँक 11 अप्रैल

11 अप्रैल 1996 दिने सेन्धवा–मध्यप्रदेशे, यदा निहालचंद जैन पाटनी महोदयस्य गृहे वयमतिष्ठाम, तत्र च ज्ञातमभूत यत् अष्टादशगृहाणिजैन श्रावकाणां सन्ति, किन्तु मन्दिरदर्शनं विना तेषां जीवनं संचाल्यते, अग्रे तेषां जनानां मनसि मन्दिरनिर्माणस्येच्छापि वर्तते किंत्वधुना सफलता प्राप्ता न भवति। समस्यां श्रुत्वा माताश्री स्व चैत्यालयस्य महावीर स्वामिनः प्रतिमां पाटनी महोदयस्य गृहे एव उपरिप्रकोष्ठे गृहचैत्यालयं स्थापयित्वा विराजमानामकारयत्। निर्माणाय प्रस्ताविताय मन्दिराय तत्कालमेव पर्याप्तधनराशेः स्वीकृतिरभवत्। अस्यैव हर्षोल्लासस्य वातावरणे संघस्य सायं पंचवादनसमये अग्रिमस्थानाय विहारोऽभवत्। मांगीतुंगी क्षेत्राच्च वयं तत्कालमेव जिनप्रतिमायाः व्यवस्थामकुर्म।

एवमेव कतिसुचित्स्थानेषु संघस्य प्रतिमां दत्वा पूज्यमाताश्री अनेक भव्यजनेभ्यः सम्यग्दर्शनप्राप्तेः माध्यमं प्रादात्, अयं तस्याः उदारताया वात्सल्यस्य परिचायकोऽस्ति।

ग्रामे 'सर्कस' आगच्छत्–**भौतिकतायाः अस्मिन् युगे दिगम्बर जैन साधूनां साध्वीनां च मंगल पदविहारो धर्मात् अनभिज्ञप्राणिभ्यो वस्तुतः महदाश्चर्यस्य कारणं वर्तते। आधुनिकं समयात् 70–80 वर्षेभ्यः पूर्वं यदा विंशतिशताब्द्याः प्रथमाचार्यस्य चारित्रचक्रवर्तिनः श्रीशान्तिसागरस्य संघ दक्षिणभारतात् उत्तर भारतं प्रत्यागच्छत्, तदा संघपतिः श्रेष्ठी पूनमचन्द्र घासीलाल जवेरी बम्बई निवासी वृषभशकटेषु संघसंचालनस्य सम्पूर्णवस्तूनि स्थापयित्वा सम्पूर्णां यात्रां सम्पन्नामकारयत् परन्त्वद्य तु भौतिकसंसाधनानि संघ संचालकानां संपूर्णां समस्यां दूरमकुर्वन्।**

1996 को सेन्धवा (म.प्र.) में, जब निहालचंद जैन पाटनी के घर में हम लोग ठहरे और वहाँ ज्ञात हुआ कि 8-10 घर जैन श्रावकों के हैं किन्तु मंदिर दर्शन के बिना उनका जीवन निर्वाह चल रहा है, आगे उन लोगों में मंदिर बनाने की इच्छा भी है लेकिन अभी सफलता नहीं मिल पा रही है। समस्या सुनकर माताजी ने तुरंत अपने चैत्यालय वाली महावीर स्वामी की प्रतिमा पाटनी जी के घर में ही ऊपर कमरे में गृहचैत्यालय बनाकर विराजमान करवा दी और बनने वाले मंदिर के लिए भी उसी समय काफी धनराशि की स्वीकृतियाँ हो गईं। इसी हर्षोल्लास के वातावरण में संघ का शाम को 5 बजे आगे के लिए विहार हो गया और मांगीतुंगी से हमें जिनप्रतिमा उसी दिन मंगवानी पड़ी।

इसी प्रकार कई स्थानों पर संघ की प्रतिमा देकर पूज्य माताजी ने अनेक भव्य प्राणियों को सम्यग्दर्शन प्राप्ति का माध्यम प्रदान किया, जो उनकी उदारता एवं वात्सल्य का परिचायक है।

➢गाँव में सर्कस आया है?

भौतिकवादी इस युग में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों का मंगल पदविहार धर्म से अनभिज्ञ लोगों के लिए वास्तव में बड़े अचम्भे का कारण बन रहा है। आज से लगभग 80 वर्ष पूर्व जब बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का संघ दक्षिण भारत से उत्तरप्रांत की ओर आया था, तब संघपति सेठ पूनमचंद घासीलाल जवेरी (बम्बई) ने बैलगाड़ियों में संघ संचालन का सारा सामान रखकर पूरी यात्रा सम्पन्न कराई थी परन्तु आज तो भौतिक संसाधनों ने संघ संचालकों की सारी समस्या ही हल कर दी है।

मातुः संघस्य संघपतिः महावीरप्रसादो जैनः बंगाली स्वीट दिल्ली निवासी प्रारम्भादेव विहारव्यवस्थायै वाहनानां–ट्रक, मैटाडोर, मोटर साइकिलस्य, महत्–लघुकार्येभ्यः 2–3 साईकिल वाहनानां प्रबन्धमकारयत्। संघस्था ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यः संघस्य कुशल संचालनं कुर्वन्त्यः 10 जनवरी 1996 दिने राजस्थानस्य एकस्य ग्रामस्य ''ढिगवडा'' स्थानस्य विद्यालये आगच्छन्। सर्वप्रथमं ताः रात्रिविश्रामस्य वस्तूनि तन्दुलानां ग्रासं, कटान् पट्टादीनि जालसदृशानि ट्रकवाहने गृहीत्वा आगच्छन्, यतः शरदः ऋतुरासीत्, सायं पञ्चवादने वयमपि तत्र आगच्छाम। तर्हि कुमार्यौ, वीना–आस्था, भगिन्यौ अकथयताम् यत् अत्रागमनस्य समये एव विद्यालयस्य बालकानामध्यापकानां ग्रामवासिनां च समूहः उपस्थितोऽभवत्। ते अस्मान् अपृच्छन्–

भगिन्यिः! किमयं सर्कसस्य शकटः आगच्छत्? किमत्र सर्कस प्रदर्शनं भविष्यति? वयमकथयाम यत् नैव, अत्र तु जैनसाध्व्यः ज्ञानमत्याः संघः आगमिष्यति। ताः सर्वाः अत्र रात्रिविश्रामं करिष्यन्ति। शकटात् वस्तूनां अवतारणकाले वयं शुष्क ग्रासान् अवतारयामः, यान् वयं भवतीनां शयनाय प्रकोष्ठे अनयाम, तु तेऽपृच्छन् यत्।

किं भवतीभिः सह अश्वाः अपि सन्ति? तेषां भक्षणार्थं किं भवन्त्यः ग्रासादीनि अपि सहैव रक्षन्ति?

एतत्सर्वस्य कथनकाले ताः बालाः उच्चैरहसन् अकथयन् च मातः! यदा वयं अधुना तेषु ग्रामेषु, यत्र जैन श्रावकाः न वर्तन्ते, तत्र विद्यालयेषु, पंचायतगृहेषु, डाक–निवासेषु च वयं

पूज्य माताजी के संघ के संघपति महावीर प्रसाद जैन बंगाली स्वीट, दिल्ली वालों ने प्रारंभ से विहार की व्यवस्था हेतु दो गाड़ियाँ (ट्रक एवं मेटाडोर), मोटर साइकिल तथा छोटे-मोटे कार्यों के लिए 2-3 साइकिलों का प्रबंध कर लिया था। संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें संघ का कुशल संचालन करती हुई 10 जनवरी 1996 को राजस्थान के एक गाँव ''ढिगवड़ा'' के स्कूल में पहुँचीं। सबसे पहले वहाँ रात्रिविश्राम का सामान (चावल की घास, चटाई, पाटे आदि) जालीनुमा बने हुए ट्रक में लेकर वे लोग गई थीं क्योंकि सर्दी का मौसम था। शाम को 5 बजे हम लोग भी वहाँ पहुँच गये तो कु.बीना, आस्था आदि बहनें कहने लगीं कि यहाँ आते ही स्कूल के बच्चे, अध्यापक तथा गाँव के लोगों की भीड़ लग गई और वे हम लोगों से पूछने लगे कि–

''दीदी! क्या यह सर्कस की गाड़ी आई है? आज यहाँ सर्कस दिखाया जायेगा क्या?'' हमने कहा कि नहीं, यहाँ पर जैन साध्वी ज्ञानमती माताजी का संघ आ रहा है, वे लोग यहाँ रात्रि विश्राम करेंगी। गाड़ी से सामान निकालते हुए हमने घास के बोरे उतरवाये जो कि आप लोगों के सोने हेतु हम कमरे में ले जा रहे थे, तो उन लोगों ने पूछा कि–

''क्या आपके साथ घोड़े भी हैं? उन्हें खिलाने के लिए घास वगैरह भी क्या आप साथ में ही रखती हैं?''

इतना सब बताते हुए वे बालिकाएँ जोर-जोर से हँसने लगीं और कहने लगीं–माताजी! जब हम लोग छोटे-छोटे उन गाँवों में, जहाँ जैन श्रावक नहीं होते हैं वहाँ, स्कूल, पंचायत भवन,

गच्छामः, तु जनाः विभिन्नप्रकाराणां प्रश्नान् कुर्वन्ति। माताश्रीरकथयत्–पश्यन्तु! अस्माकं जैनसाधूनां साध्वीनां च चर्यैव एतादृशी अस्ति, यां अन्येभ्यः अवबोधनं कठिनमस्ति। यूयं च एतत् ध्याने कुरुथ यत्तेषां प्रश्नानामुत्तराणि प्रौढतया दत्त, कदापि तेषां वार्तासु हास्यं न कुरुथ।

वयं पदविहारमध्ये येषु ग्रामेषु जैन श्रावका न भवन्ति, तत्र विद्यालयेषु एव स्थातुं विवशाः भवामः, तदा चानेकप्रसंगानां प्रत्यक्षीकरणं भवति पुनस्तत्र प्रवचन–प्रश्नमंच–पुरस्कारादीनां आयोजनं कृत्वा सहस्रेभ्यो बालकेभ्य बालिकाभ्यः अध्यापकाध्यापिकाभ्यः धर्मस्य ज्ञानं दत्त्वा अपूर्वप्रसन्नतां वयमनुभवामः।

भगवान् राम इव तीर्थोद्धारः–**19 मई 1996 दिने मांगीतुंगी क्षेत्रे एकां विशालसभां सम्बोधितां कुर्वन्ती गणिनी आर्यिका ज्ञानमती एकां पौराणिकीं घटनामश्रावयत्–यत् नवलक्ष–वर्षाणि पूर्वं मर्यादा पुरुषोत्तमो रामो यदा वने भ्राम्यन् कुंथलगिरि निकटे आगच्छत्, तु तत्र ग्रामात् बहिरपश्यत् यत् सर्वे नारी–नराः सायंकाले स्व शिरःसु वस्तूनि धारयन्तोऽग्रे आगच्छन्ति। सः लक्ष्मणेन ज्ञातमकरोत् यदत्र सायंकाले कोऽपि दैत्यः भयंकरं शब्दमकुर्वन् गच्छति, यस्य कारणेन नगरस्य सर्वे जनाः भयात् म्रियन्ते, गर्भवतीनां स्त्रीणां गर्भाः पाताः भवन्ति, कतिचिद् बालाः कालस्य कपोले गच्छन्ति, अतएव ते सर्वे नरनार्यः सायंकाले ग्रामं त्यक्त्वा पलायन्ते प्रातःकाले च ग्रामं प्रत्यागच्छन्ति, एतच्छ्रुत्वा**

डाकबंगले आदि स्थानों पर पहुँचते हैं, तो लोग तरह-तरह के प्रश्न पूछकर हम लोगों का मनोरंजन कर देते हैं। ये सब सुनकर पूज्य माताजी कहने लगीं कि– "देखो! हम जैन साधु-साध्वियों की चर्या ही ऐसी है, जिसे अन्य लोगों के लिए समझना बड़ा कठिन है। तुम लोग इतना अवश्य ध्यान रखना कि इन प्रश्नों का उत्तर हमेशा प्रौढ़तापूर्वक देना और कभी उनकी हँसी मत उड़ाना।"

हम लोगों को पदविहार के मध्य जिन गाँवों में जैन श्रावक नहीं होते हैं, वहाँ स्कूल, कॉलेज में ही ठहरना पड़ता है, तब अनेक प्रकार के प्रसंगों का सामना करना पड़ता है पुनः वहाँ प्रवचन-प्रश्नमंच, पुरस्कार आदि आयोजित करके हजारों-हजार बालक-बालिकाओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं को धर्मज्ञान देकर अपूर्व प्रसन्नता का अनुभव होता है।

➢भगवान राम के समान तीर्थ का उद्धार–

मांगीतुंगी में 19 मई 1996 को पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए एक पौराणिक घटना सुनाई कि आज से नौ लाख वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम वन में विचरण करते-करते कुंथलगिरि के निकट जब आये, तो वहाँ गाँव के बाहर देखा कि शाम को सारे नर-नारी अपने-अपने सिर पर सामान लिए आगे चले जा रहे हैं। उन्होंने लक्ष्मण से पता लगवाया तो ज्ञात हुआ कि यहाँ पर कोई दैत्य शाम होते ही भयंकर शब्द करता है, जिसके कारण नगर के तमाम लोग भय के कारण मर जाते हैं, गर्भवती स्त्रियों के गर्भपात हो जाते हैं, कितने ही बालक काल के गाल में समाहित हो जाते हैं इसीलिए ये सब नर-नारी शाम को गाँव छोड़कर भाग जाते हैं और प्रातःकाल गाँव में वापस आ जाते हैं, यह सुनकर

सीताकथयत् सायंकालो भवितुमेव, अतो वयमपि ग्रामीणै सह चलामः, प्रातश्च पुनः आगमिष्यामः। रामोऽवदत्—नैव, वयमद्य तस्य दैत्यस्य समक्षं भूत्वा नगरवासिनां संकटमपहरिष्यामः। सीतायाः हठस्य पश्चात् अपि सः नामन्यतक, शीघ्रं तदा च सर्वे कुन्थलगिरिं पर्वतमारूढाः। तत्र ते पश्यन्ति यत् द्वौ मुनी प्रवरौ स्वाखण्डे ध्याने मग्नौ स्तः। सायंकाल समये एकस्य दैत्यस्य भयंकरो ध्वनिः श्रुतः अभवत्, ध्वनिना पर्वतः कम्पायमानोऽभवत्। भयभीतां सीतां सः द्वयोर्मुन्योर्मध्ये उपविष्टामरोत् स्वयं च धनुष्टंकारेण दैत्यस्य साम्मुख्यमकरोत्। अल्पेनैव कालेन दैत्यस्य शक्तिः कुण्ठिताभवत् सः च रामं बलभद्रस्यावतारं मत्वा स्वविक्रियां समाप्याधावत्। एतेन प्रकारेण मुन्योरुपसर्गः समाप्तोऽभूत तौ च शुक्लध्यानेन केवलज्ञान प्राप्नुताम्। तदा तत्र देवाः अपि समागत्य गन्धकुट्याः रचनां कृत्वा कुलभूषणदेशभूषणौ नामकौ मुनी अपूजयन् पुनः रामचन्द्रस्तस्मिन् पर्वते स्थित्वा कतीनांचित् जिनालयानां निर्माणमकारयत्।

अनेन प्रवचनेन लक्ष्यते यत् रामचन्द्रसदृशाः महापुरुषाः अपि तीर्थोद्धारं मुनिरक्षणं च पूर्णपुरुषार्थेनाकुर्वन्। इदं तु नवलक्षवर्ष पूर्वस्य कथानकमस्ति, परन्तु एतत्प्रतीयते स्वयं माता ज्ञानमती रामस्य रूपं धारणं कृत्वा हस्तिनापुर—अयोध्या—मांगीतुंगीनाम्नायन्तेषां च तीर्थानामुद्धारस्य दायित्वस्य वहनमकरोत्। सा एतेषां उद्धाराय अनेकसंघर्षान् कष्टानि च सोढुं तत्परास्ति, सा स्वपुरुषार्थात् विचलिता न भवति निस्पृहवृत्तिना च भाविताः तस्याः

सीता कहने लगी कि शाम हो रही है, अभी यहाँ वही भयंकर शब्द शुरू हो जायेगा। इसीलिए हम भी गाँव वालों के साथ चलें और प्रातः वापिस आ जायेंगे। लेकिन राम ने कहा— नहीं, हम लोग आज उस राक्षस से आमना-सामना करके नगर वालों के संकट को दूर करेंगे। सीता के जिद्द करने पर भी वे राजी नहीं हुए और जल्दी-जल्दी वे सभी कुंथलगिरि के पर्वत पर चढ़ गए। वहाँ सामने देखते हैं कि दो महान मुनिराज अपने अखण्ड ध्यान में लीन हैं। सायंकाल होते ही एक राक्षस की भयंकर आवाज से पर्वत हिलने लगा। भयभीत हुई सीता को उन्होंने दोनों मुनियों के बीच में बिठा दिया तथा स्वयं धनुष की टंकार से उस दैत्य का सामना करने लगे। थोड़ी ही देर में दैत्य की शक्ति कुंठित हो गई और वह इन्हें नारायण व बलभद्र का अवतार मानकर अपनी विक्रिया समाप्त कर भाग गया। इस प्रकार मुनियों का उपसर्ग दूर होते ही शुक्लध्यान के द्वारा उन्होंने केवलज्ञान की प्राप्ति कर ली। तब वहाँ देवों ने भी आकर गंधकुटी की रचना करके कुलभूषण, देशभूषण नामक केवली भगवंतों की महान पूजा की पुनः रामचन्द्र ने बहुत समय तक उस पर्वत पर रहकर कई जिनालयों का निर्माण कराया।

इस प्रवचन से परिलक्षित होता है कि रामचन्द्र जैसे महापुरुष भी तीर्थों के उद्धार एवं मुनियों की रक्षा हेतु पूर्ण पुरुषार्थ करते थे। यह तो नौ लाख वर्ष पूर्व का प्राचीन कथानक है किन्तु ऐसा लगने लगता है कि साक्षात् राम का रूप धारण करके ही पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर, अयोध्या, मांगीतुंगी एवं अन्य अनेक तीर्थों के उद्धार का बीड़ा उठाया है। उन्हें इन उद्धारों के लिए कितने ही संघर्ष एवं कष्ट झेलने पड़ते हैं, तो भी वे अपने पुरुषार्थ से विचलित नहीं होती हैं तथा निस्पृहवृत्ति

भावनाः आशातीताभिः सफलताभिः संपन्नाः भवन्ति। एतदेव कारणमस्ति यत् मांगीतुंगी क्षेत्रं जनाः न अजानन्, अधुना तत् सम्पूर्णे देशे प्रख्यातमभवत्।

महाराष्ट्रस्य लघुभ्रमणं नवं अनुभवमदात्–**नीतिकाराः अकथयन् यत्–**

पद्मिन्यो राजहंसाश्च निर्ग्रन्थाश्च तपोधनाः।
यत्र देशे प्रसर्पन्ति सुभिक्षं तत्र जायते।।

अर्थात् यस्मिन् देशे पद्मिनीजातीनां स्त्रियः, राजहंसाः निर्ग्रन्थाः जैनसाधवो विचरणं कुर्वन्ति तत्र सुभिक्षं जायते। नीतिरियं तु 9 जून 1996 दिवसे तदैव सार्थकाऽभवत्, यदा गणिनी ज्ञानमती माता मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे चतुर्मासं कर्तुं स्वीकृतिमदात्। तस्याः प्रवचनस्य पश्चात् यदा ज्ञानमती माता मण्डपादुत्थाय त्यागिभवनमागच्छत् तदैव मेघो देवः मूसलाधार वर्षाभिः तां प्रति आदराञ्जलिं प्रादात्। पुनः महाराष्ट्रस्य जनसमूहोऽपि चतुर्मासात् पूर्वं सार्धे एक माससमये तां स्वनगरेषु नेतुं लालायितोऽभवत्। मालेगांव–नाँदगाँव– सटाणा–कोपर–गाँवादि–स्थानानां प्रमुखाः जनाः श्रीफलं समर्प्य निवेदनं चाकुर्वन्।

ऋतुः स्वास्थ्यं च यद्यपि द्वयोरनुकूलता नासीत् तथापि भक्तानां भक्तिर्मनः–उद्वेलितमकरोत् माताश्रीश्च 2 जुलाई 1996 दिने मालेगांव नगरस्य प्रमुखं लक्ष्यं गृहीत्वा स्वसंघेन सह विहारपथारूढाऽभवत्। विहारस्य द्वयोः दिनयोः पश्चात् मालेगांव निवासिनां

से भायी गई उनकी भावना आशातीत सफलताओं के साथ सम्पन्न होती है। यही कारण है कि जिस मांगीतुंगी तीर्थ को लोग जानते भी नहीं थे, वह सारे देश में अब प्रसिद्धि को प्राप्त हो गया।

➢**महाराष्ट्र का लघु भ्रमण नया अनुभव दे गया–**

नीतिकारों ने कहा है कि–

पद्मिन्यो राजहंसाश्च, निर्ग्रन्थाश्च तपोधनाः।
यत्र देशे प्रसर्पन्ति, सुभिक्षं तत्र जायते।।

अर्थात् पद्मिनी जाति की स्त्रियाँ, राजहंस, निर्ग्रन्थ साधु-साध्वी जहाँ भी विचरण करते हैं, वहाँ सुभिक्ष हो जाता है। यह नीति तो 9 जून 1996 रविवार को तभी सार्थक हो गई थी, जब मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर वर्षायोग स्थापना की स्वीकृति पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रदान कर दी थी। उस प्रवचन सभा के पश्चात् ज्यों ही माताजी पांडाल से उठकर त्यागीभवन में पहुँचीं, त्यों ही मूसलाधार वर्षा के द्वारा मेघदेवता ने उनके प्रति आदरांजलि प्रगट की थी पुनः महाराष्ट्र के अन्य नगरों की जनता भी चातुर्मास से पूर्व डेढ़ माह के समय में उन्हें अपने शहरों में ले जाने के लिए लालायित हो उठी और मालेगांव, नाँदगाँव, सटाणा, कोपरगाँव आदि स्थानों से पधारे प्रमुख जनों ने श्रीफल चढ़ाकर निवेदन भी किया।

मौसम और स्वास्थ्य यद्यपि दोनों की विशेष अनुकूलता नहीं थी फिर भी भक्तों की भक्ति ने मन को उद्वेलित किया और 2 जुलाई 1996, आषाढ़ शुक्ला दूज को माताजी मालेगांव का प्रमुख लक्ष्य लेकर अपने संघ के साथ विहार कर गईं। विहार के दो दिन पश्चात् मालेगांव वालों को सूचना

सूचना प्राप्ता यत् ''ज्ञानमत्याः मातुः अस्माकं नगराय विहारोऽभूत्'' **अतस्ते मार्गे आगत्य कार्यक्रमस्य रूपरेखामवागच्छन्। मंगलविहारस्यायमनुभवोऽपि स्वस्मिन्नपूर्व एवासीत्, यत् साधवे विहारात् पूर्वं गन्तव्यस्थानाय सूचना प्रदानमावश्यकं न वर्तते, ते तु अतिथयो भवन्ति अतः कदापि, कस्मै अपि स्थानाय विहारं कर्तुं प्रभवन्ति, अस्मात् तान् निश्चितरूपेण नवाः अनुभवाः प्राप्यन्ते। उक्तं च–**

तिथिपर्वोत्सवा सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना।
अतिथिं ते विजानीयात्, शेषंमभ्यागतं विदुः।।

अर्थात् सर्वेभ्यः तिथिपर्वउत्सवेभ्यः ते साधवः साध्व्यश्च सर्वदा दूरे एव तिष्ठन्ति, अतस्तेषामतिथिर्नाम यथार्थमस्ति शेषान् सर्वान् च ''विद्वांषोऽभ्यागतसंज्ञया'' **संबोधितान् अकुर्वन्।**

वयं तान् अहसाम, ते च अस्मान् अहसन्–**वयं 4 जुलाई दिने पदविहारं कुर्वन्तः प्रातः 8 वादने ''आसखेड़ा'' विद्यालयमागच्छाम, तत्र संघस्य ब्रह्मचारिण्यः भगिन्यः आहारचर्यायाः व्यवस्थामकुर्वन्। विद्यालयस्याध्यापकानामभिरुचिं वीक्ष्य तत्र मध्याह्नकालीनस्य प्रवचनस्यायोजनमभवत्। समस्तस्य विद्यालयस्य प्रायः 1000 छात्राः प्रवचनसभायामे–कत्रिताः अभवन्। सभामंचे सर्वप्रथमं ब्रह्मचारिभ्यां श्रीचन्द्र–गौतमचन्द्राभ्यां सह क्षुल्लक–मोतीसागरस्य पदार्पणमभवत्। तं च एकस्योत्तरीयस्य कौपीनस्य च वेशभूषायां वीक्ष्य सर्वेषां बालकानां हास्यस्य प्रवाहोऽस्फुटत्। अध्यापकाः अनुशासनपूर्णदृष्ट्या तान् शान्तानकुर्वन्**

मिली कि **''ज्ञानमती माताजी का मांगीतुंगी से हमारे शहर के लिए विहार हो चुका है''** पुनः उन लोगों ने मार्ग में आकर कार्यक्रम की रूपरेखा समझी। मंगल विहार का यह अनुभव भी अपने आप में अपूर्व ही था कि साधु को विहार से पूर्व गन्तव्य स्थान के लिए सूचित करना कोई आवश्यक नहीं है, वे तो अतिथी होते हैं अतः कभी भी, कहीं भी बिना सूचना के विहार कर सकते हैं, इससे उन्हें निश्चित ही नये-नये अनुभव प्राप्त होते हैं। कहा भी है–

तिथिपर्वोत्सवा सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना।
अतिथिं ते विजानीयात्, शेषमभ्यागतं विदुः।।

अर्थात् समस्त तिथियाँ, पर्व और उत्सवसंबंधी विकल्पों से ये साधु-साध्वी सदा ही दूर रहते हैं, इसीलिए इनका ''अतिथि'' यह यथार्थ नाम है तथा शेष लोगों को विद्वानों ने **''अभ्यागत''** संज्ञा से सम्बोधित किया है।

➢हम उन्हें हँसे, वे हमें हँस रहे थे–

हम लोग 4 जुलाई को पदविहार करते हुए प्रातः 8 बजे ''आसखेड़ा'' के विद्यालय में पहुँचे, जहाँ संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों ने आहारचर्या की व्यवस्था की हुई थी। स्कूल के अध्यापकों की अभिरुचि देखकर वहाँ मध्यान्हकालीन प्रवचन का आयोजन किया गया। सारे स्कूल के लगभग 1000 बालक-बालिकाएँ प्रवचन सभा में एकत्रित हुए, सभामंच पर ब्र. श्रीचन्द जी एवं ब्र. गौतमचन्द जी के साथ सर्वप्रथम क्षुल्लक श्री मोतीसागर महाराज का पदार्पण हुआ और उन्हें एक चादर-लंगोट की वेशभूषा में देखकर सब बच्चों की हँसी का फौव्वारा छूट पड़ा। अध्यापकों ने अनुशासनपूर्ण दृष्टि

ब्र. गौतमचन्द्रश्च मराठीभाषायां प्रवचनं कृत्वा जैनगुरूणां महत्तां विद्यार्थिनां च गुणान् प्रत्यपादयत्।

तदनन्तरं क्षुल्लकमोतीसागरः स्व प्रवचनेऽकथयत् यत्–''मां दृष्ट्वा भवन्तः अहसन्, भवतश्चावलोक्याहं हसितुमुपक्रमे। यत् आधुनिकयुगेऽपि भवन्तः छात्राः नेकर–कञ्चुक वेशभूषया सह स्व शिरःसु श्वेतटोपिकां धारयन्ति। यतः इयं भवतो विद्यालयस्य वेशभूषास्ति, तथैवास्माकमपि इयं वेशभूषा वर्तते। अस्माकं देशस्य राष्ट्रपितुर्महात्मनः गांधीमहोदयस्यापि प्रायः इयमेव वेशभूषासीत् या च साधुतायाः प्रतीका वर्तते।''

साधुगणाः चलन्तः–सर्पन्ता विद्यालयाः भवन्ति, एतेभ्यो चरित्रनिर्माणस्य अपूर्वा प्रेरणा देशाय समाजाय प्राप्ता भवति। पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः सदृशी महती साध्वी अप्यद्य भवतां विद्यालये पदार्पणमकरोत्, या नारीणां उत्थाने जैन समाजे एकं कीर्तिमन्तमस्थापयत्।

एकः कवि अस्याः विषये अकथयत्–

ये कथयन्ति नारीजीवनं मधुररसस्य रक्तिमा विद्यते, सा त्याग–तपस्यां न जानाति, सा तु पुष्पाणां शाखास्ति। ये च कथयन्ति यत् योगेषु नारी नर इव कदा भवति? एवंभूतेभ्यो जनेभ्यः ज्ञानमत्याः जीवनं एकमुदाहरणमस्ति।

एतस्य पश्चात् ममोद्बोधनमभूत्। पुनः माता ज्ञानमती विद्यालयस्य छात्र–छात्राभ्यः, अध्यापक–अध्यापिकाभ्यः नगरस्य च नागरिकेभ्यः मंगलमाशीर्वादं प्रादात्। विद्यालयोऽयं

से उन्हें शान्त किया और ब्र. गौतमजी ने मराठी भाषा में प्रवचन करके जैन गुरुओं की महत्ता तथा विद्यार्थी के गुणों पर भी प्रकाश डाला।

उसके बाद मोतीसागर महाराज ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि– **''आप लोग मुझे देखकर हँस रहे हैं एवं आप लोगों को देखकर मुझे हँसी आ रही है कि आज के इस आधुनिक युग में भी आप बालकगण नेकर-शर्ट की ड्रेस के साथ-साथ सिर पर सफेद टोपी लगाए हुए हैं। जैसे यह आपके स्कूल की ड्रेस है, वैसे ही यह हमारी ड्रेस है। हमारे देश के राष्ट्रपति महात्मागांधी की भी लगभग ऐसी ही वेशभूषा थी जो कि साधुता की प्रतीक थी।**

साधुगण चलते-फिरते विद्यालय होते हैं, इनसे चारित्र निर्माण की अपूर्व प्रेरणा देश और समाज को प्राप्त होती है। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जैसी महान् साध्वी का पदार्पण आज आपके स्कूल में हुआ है, जिन्होंने नारी उत्थान के लिए जैन समाज में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। एक कवि ने इनके लिए कहा है–

जो बतलाते नारी जीवन, लगता मधुरस की लाली है।
वह त्याग तपस्या क्या जाने, कोमल फूलों की डाली है।।
जो कहते योगों में नारी, नर के समान कब होती है।
ऐसे लोगों को ज्ञानमती का, जीवन एक चुनौती है।।

इसके पश्चात् मेरा उद्बोधन हुआ। पुनः गणिनी माताजी ने स्कूल के बालक-बालिकाओं को, अध्यापकों एवं नगर के नागरिकों को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। यह स्कूल

''कर्मवीर भाऊरावपाटिलस्य'' स्मृतौ रौय्यत समाजेन स्थापितो विद्यते, अत्र टोपिकाधारणं प्रत्येकछात्राय आवश्यकं वर्तते।

अहं चिन्तयामि यत् अद्य सम्पूर्णे भारते दिगम्बरजैनसाधूनां चतुर्विधसंघस्य विहारो भवति, जैनाः चाजैनाश्च तेषां दर्शनं सुलभतया कुर्वन्ति, यतः विहारस्य समये अधिकांशरूपेण साधवः विद्यालयेषु एवं स्थातुं समर्थाः भवन्ति। पुनरपि अद्य अस्याः साधुचर्यायाः अनभिज्ञाः जनाः मुनीनां, क्षुल्लकानां ऐलकानां च मुद्राः स्मितेनैव पश्यन्ति। धन्या इयं जैनिनां चर्या! यस्या एकस्मिन् दिने पृथिव्यां एकछत्रं शासनमासीत्, किन्तु सः प्राकृतिकः सार्वभौमः जैनधर्मः अस्यां शताब्द्यां अन्यधर्माणामपेक्षया पृष्ठगतो विद्यते।

एकस्य शिम्पिनः आपणिः पवित्राभवत्–**आसखेड़ा स्थानात् वयं 4–5 किलोमीटर गत्वा विश्रामाय स्थानस्य गवेषणामकुर्म, किन्तु यदा संघव्यवस्थापको निरीक्षणमकरोत्तु ज्ञातमभवत् यत् 13 किलोमीटर पूर्वं किमपि स्थानं विश्रामयोग्यं नासीत्। अतस्तस्मिन् दिने विद्यालये एव विश्रामोऽभवत्। 5 जुलाई दिने च तत्रतः विहारोऽभूत्। तदा संयोगवशात् 7 किलोमीटर दूरे मुख्यमार्गे एव एकस्य शिम्पिनो नवेऽर्धनिर्मिते गृहे स्थानं प्राप्तम्, तत्रैव च तस्य दिनस्याहारोऽभवत्। ज्ञातमभवत् यत् सम्पूर्णः परिवारः शाकाहारी वर्तते। अत्यन्तमेव प्रसन्नतया साकं माताश्रीः तस्मै** ''धर्मलाभस्याशीर्वादं'' **प्रादात्, तेः प्रसन्नतया न समायोजितोऽभूत्**

''कर्मवीर भाऊरावपाटील'' की स्मृति में रैय्यत समाज द्वारा निर्मित है, यहाँ टोपी लगाना प्रत्येक विद्यार्थी को आवश्यक है।

मैं सोचती हूँ कि जब आज पूरे भारत में दिगम्बर जैन साधुओं के चतुर्विध संघ का विहार हो रहा है, जैन-अजैन सभी को उनके दर्शन भी सुलभतया होते हैं क्योंकि विहार करते समय साधुओं को अधिकतर विद्यालयों में ही ठहरना पड़ता है, फिर भी अभी इस साधुचर्या से अनभिज्ञ लोगों के लिए मुनि और क्षुल्लक, ऐलक की मुद्रा हास्यास्पद ही बनी हुई है। धन्य है यह जैनी चर्या! जिसका धरती पर कभी एकछत्र शासन था किन्तु वह प्राकृतिक सार्वभौम जैनधर्म इस सदी में अन्य धर्मों की अपेक्षा पीछे हो रहा है।

➢एक शिम्पी की दुकान पवित्र हुई–

आसखेड़ा से हम लोगों को 4-5 किमी. जाकर रात्रि विश्राम करना था किन्तु जब संघ व्यवस्थापक ने सर्वे किया तो ज्ञात हुआ कि 13 किमी. से पहले ठहरने का कोई स्थान नहीं है अतः उस दिन विद्यालय में ही रात्रि विश्राम हुआ और 5 जुलाई को प्रातः वहाँ से विहार हुआ, तब तक संयोगवश 7 किमी. दूर मेनरोड पर ही एक शिम्पी के नये अधबने मकान में जगह मिल गई और वहीं उस दिन का आहार हुआ। मध्यान्ह में मकान मालिक ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक पूज्य माताजी से अपनी कपड़े की दुकान पर चरण रखने का निवेदन किया। आगे के लिए विहार करते समय हम लोग उनकी दुकान से होकर निकले चूँकि घर और दुकान की दीवार एक ही थी, माताजी ने उनसे शाकाहार के बारे में पूछा तो ज्ञात हुआ कि पूरा परिवार शाकाहारी है। अत्यन्त प्रसन्नता के साथ माताजी ने उन्हें **''धर्मलाभ''** आशीर्वाद दिया, वे सभी फूले नहीं समा रहे थे तथा माताजी से

पुनश्च निवर्तनकाले तस्मादेव मार्गात् आगन्तुं न्यवेदयत्।

मालेगांव नगरस्य केचित् प्रमुखश्रावकाः अपि तत्रागताः, ते तेषां जनानां गुरुभक्तिमवलोक्य तेषां भाग्यस्य प्रशंसामकुर्वन्। वस्तुतः साधवस्तु आकाशमिव विशालहृदयाः भवन्ति, तदैव प्रतु जनेभ्यः तेषामाशीर्वादस्य लाभः प्राप्यते।

एकः कविरकथयत्, यत्–

''साधोः जातिं न पृच्छ, अस्मात् ज्ञानं गृहाण। असेः मूल्यं पृच्छ, असित्राणं तत्रैव मुंच।
साधुं प्रति जातेः भेदभावं त्यक्त्वा प्रतिप्राणी तस्य ज्ञानस्य लाभं प्राप्नुयात्।''

तीव्रभक्तिः भावनायाः परिवर्तनमकरोत्–**महाराष्ट्रस्य दिगम्बरजैनसमाजस्य लोकप्रियो नेता नासिक जनपदस्य माननीयो विधायकः श्रीजयचन्द्रः कासलीवालः 5 जुलाई दिने ''चांदवड'', स्थानात् द्वे वाहने गृहीत्वा मार्गे श्रीफलं समर्पयितुमागच्छत् अकथयच्च मातः! भवत्या अस्माकं चाँदवाड् ग्रामेऽवश्यमेव गन्तव्यम्, यदि भवती अस्मात् स्थानादेव स्वमार्ग परिवर्तनं करोतु, तु केवलं 10–5 किलोमीटर अन्तरं भविष्यति, निवर्तने च अस्मात् स्थानात् मालेगाँव नगरे स्थित्वा मांगीतुंगी क्षेत्रस्य मार्गः सुखकारी भविष्यति अन्यथा मालेगाँवतः चाँदवड् गमने भवतीनां 40 किलोमीटर अधिकं चलितव्यं भविष्यति। किमपि भवतु, भवत्या चाँदवड् नगरं तु गन्तव्यमेव। अतो वयं सर्वे समाजजनाः भवतीं निवेदयितुं प्राप्ताः।**

विधायकमहोदयस्य सुपुत्री कुमारी प्रीतिः जैना अस्माभिः सह मांगीतुंगी क्षेत्रादेव पदयात्रायां

पुनः इसी रास्ते से वापसी में जाने का आग्रह कर रहे थे।

मालेगांव के कुछ जैन समाज के प्रमुख श्रावक भी वहाँ पहुँच गए थे, उन्होंने उन महानुभावों की गुरुभक्ति देखकर उनके भाग्य की सराहना की। वास्तव में साधु तो आकाश के समान विशाल हृदय वाले ही होते हैं, तभी जन-जन को उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का लाभ मिलता है। एक कवि ने कहा भी है–

जाति न पूछो साधु की, ले लो इनसे ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

अर्थात् साधु के प्रति जाति-पाँति का भेदभाव छोड़कर प्राणीमात्र को उनके ज्ञान का लाभ उठाना चाहिए।

➢तीव्र भक्ति ने भावना बदल दी–

महाराष्ट्र की दिगम्बर जैन समाज के लोकप्रिय नेता नासिक जिले के सम्माननीय विधायक (आमदार) श्री जयचंद जी कासलीवाल 5 जुलाई को ''चांदवड़'' से दो गाड़ियाँ लेकर रास्ते में श्रीफल चढ़ाने आ गए और कहने लगे कि माताजी! आपको हमारे चाँदवड़ जरूर चलना है, यदि आप यहीं से अपना रास्ता बदल दें तो केवल 10-5 किमी. का अन्तर पड़ेगा और वापस वहाँ से मालेगाँव होकर मांगीतुंगी का मार्ग ठीक रहेगा अन्यथा मालेगांव से चाँदवड़ जाने पर आपको 40 किमी. अधिक चलना पड़ेगा। कुछ भी हो, आपको चांदवड़ तो चलना ही पड़ेगा। इसीलिए हम सभी समाज के लोग आपसे निवेदन करने आए हैं।

विधायक जी की सुपुत्री कु. प्रीति जैन हमारे साथ मांगीतुंगी से ही पैदल चल रही थी, उसने

सहवर्तिनी आसीत्, सा मातुः अस्वीकृतिं वीक्ष्य आग्रहं सत्याग्रहे परिवर्तितमकरोत्। अन्ततोगत्वा प्रीतिः पूर्ण चतुर्मासपर्यन्तं मांगीतुंगी तु क्षेत्रात् तु सहैवासीत अग्रेऽपि च विहारे सहगमनस्य विचाराभिव्यक्तिमकरोत्।

एताः सर्वाः परिस्थितीरवलोक्य माताश्रीः मालेगाँव नगरात्, चांदवड़ नगरं गन्तुं स्वीकृतिं प्रादात्। यद्यपि वयं मांगीतुंगी क्षेत्रात् मालेगाँव नगरस्य भावनां गृहीत्वैव निरगच्छाम, चातुर्मासात् पूर्वं कुत्रापि अन्यत्र गमनस्य न तु समय एव आसीत् न च स्वास्थ्यम् किन्तु आमदारस्य, तत्पत्न्याः अर्चनायाः तत्पुत्र्याश्च प्रीत्याः आग्रहं समाजस्य च विशेषनिवेदनं सा परिहर्तुं समर्था नाभवत् तीव्रां भक्तिं चावलोक्य तस्याः भावनायां परिवर्तनं जातं सा चांदवड़ गमनस्य स्वीकृतिं प्रादात्।

कुमार्वोः प्रीत्याः पल्लव्याश्च पदयात्रा संघेन सह–**देशे विदेशे च ख्यातिप्राप्ता विश्वस्य लघिष्ठा अद्भुतकार्यदर्शिका कुमारी पल्लवी गुलाबचन्दजैनकासलीवाल ओझर निवासिन्यपि स्व पितृव्यस्य सुपुत्र्या ज्येष्ठभगिन्या प्रीत्या सहैव मांगीतुंगीक्षेत्रे पूज्यमातुः सान्निध्ये 25 जून दिने कतिचिद्भ्यो दिनेभ्यः धार्मिकाध्ययनार्थमागच्छत्। पुनः अस्माकं मालेगांव नगरं प्रति विहारोऽभवत्, तु एते द्वे बालिकेऽपि सहैव पदयात्रां कुर्वन्त्यौ गुरुभक्तेः वैंयावृत्तेराहारदानस्य च धार्मिकशिक्षणस्य लाभं प्राप्तकारिण्यौ अभवतां।**

मार्गे केषुचित्स्थानेषु जनाः जादूकारिणीं पल्लवीमवलोक्य आश्चर्य चकिताः आसन् यत् लघिष्ठा सुकुमारी आधुनिकसुविधासु निवासिनी कन्येयं मात्रा सह केन प्रकारेण प्रचलिता

माताजी की अस्वीकृति देखकर आग्रह को सत्याग्रह में परिवर्तित कर दिया। अन्ततोगत्वा प्रीति ने पूरे चातुर्मास तक मांगीतुंगी रहने का एवं आगे भी विहार में साथ चलने का भाव व्यक्त किया।

इन सब परिस्थितियों को देखकर पूज्य माताजी ने मालेगांव से चाँदवड़ जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। यद्यपि हम लोग मांगीतुंगी से मात्र मालेगांव की भावना लेकर ही निकले थे, चातुर्मास से पूर्व और कहीं अधिक जाने का न तो समय ही था और न स्वास्थ्य, किन्तु आमदार जी, उनकी पत्नी सौ. अर्चना जैन, पुत्री प्रीति जैन के आग्रह तथा समाज के विशेष निवेदन को वे टाल न पाईं और तीव्र भक्ति देखकर उनकी भावना परिवर्तित हो गई। उन्होंने चांदवड़ जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

➢कु. प्रीति एवं कु.पल्लवी की पदयात्रा संघ के साथ–

देश-विदेशों में ख्याति प्राप्त विश्व की सबसे छोटी जादूगर कु. पल्लवी गुलाबचंद जैन कासलीवाल-ओझर निवासी भी अपने काका की सुपुत्री बड़ी बहन प्रीति के साथ मांगीतुंगी में पूज्य गणिनी माताजी के पास 25 जून को कुछ दिनों के लिए धार्मिक अध्ययन करने आई थी पुनः हम लोगों का मालेगांव की ओर विहार हो गया, तो ये दोनों बालिकाएँ भी साथ में पदयात्रा करती हुईं गुरुभक्ति, वैयावृत्ति, आहारदान, धर्मशिक्षण आदि का लाभ प्राप्त करने लगीं।

मार्ग में कितनी जगह लोग जादूगरनी पल्लवी को देखकर आश्चर्य चकित होते थे कि इतनी छोटी, सुकुमार और आधुनिक सुविधाओं में रहने वाली यह कन्या माताजी के साथ कैसे चल रही

विद्यते। अस्याः एतैर्जनैः सह मनः केन प्रकारेण रमते? परन्तु इमां वार्तां भवन्तः साक्षात् तां पृष्ट्वा पश्यन्तु तु सा कथयति यत् वयम् ''यमानन्दनेन संघेन सह प्रवासे प्राप्नवम्, तादृशीं अनुभूतिं अहं कदापि न प्राप्नवम्।'' **एतत्सर्वं पूज्यमातुः तेजोमयस्य व्यक्तित्वस्यैवाकर्षणं विद्यते।**

प्रायः 200 किलोमीटरस्य अस्याः यात्रायाः पश्चात् यदा मांगीतुंगी क्षेत्रात् 30 जुलाई दिने स्वमहाविद्यालयस्य प्रारम्भकारणेन मात्रा–पित्रा सह पुनः गृहं प्रति गन्तुं प्रवृत्ताभवत् तु तस्याः अश्रूणि गुरुचरणयोः प्रक्षालनं कृत्वा तस्याः अन्तर्वेदनां प्राकटयन्।

ज्वलन्ती पृथिवी पादान् तप्तायमानानकरोत्–**वयं 7 जुलाई 1996 दिवसे, रविवारे, मालेगांव नगरस्य कैम्पक्षेत्रे आगच्छाम, तु तत्र समाजः मध्याह्नकालीनं प्रवचनं एकस्मिन् सभागृहे आयोजितमकरोत् वयं च 2 फर्लांग दूरं तत्र गन्तुं विवशाः अभवाम। तस्मिन् मार्गे पृथिव्यां पादधारणं उग्रे पात्रे पादन्यासदृश आसीत्। केवलं तत्र गमनकाले एव केषांचित् चरणेषु घाताः अभवन् एकस्य ब्रह्मचारिण्याः पादौ स्फोटककारणेन स्फटितौ इवाभवताम्। अस्तु! इयं साधुचर्यायाः कठोरतामनुभूय वयं असहामहे किन्तु उपानवन्तः, सर्वदा वाहनस्य प्रयोगं कारिणो जनाः अस्य परीषहस्यानुमानमपि ज्ञातुं समर्थाः नासन्।**

किमपिस्यात्, पंचमकालस्य हीनसंहननधारिणो मनुष्याः अपि दिगम्बर जैनदीक्षां गृहीत्वा असंख्यकर्मणां निर्जरां कर्तुं क्षमा विद्यन्ते, इयं च वार्ता भावसंग्रहे स्पष्टं कथितम्–

है? इसका इन त्यागीवर्गों के साथ मन कैसे लगता है? किन्तु यह बात आप उससे साक्षात् पूछकर देखें तो वह कहती है कि **''जो आनन्द मैंने इस संघ के साथ प्रवास में प्राप्त किया है, वैसी अनुभूति मुझे कभी नहीं हुई।''** यह सब पूज्य माताजी के तेजोमय व्यक्तित्व का ही आकर्षण है।

लगभग 200 किमी. की इस पदयात्रा के पश्चात् जब मांगीतुंगी से 30 जुलाई को वह अपना कालेज प्रारंभ हो जाने के कारण मम्मी-पापा के साथ वापस घर जाने लगी, तो उसके अश्रु गुरुचरणों का प्रक्षालन करते हुए उसकी अन्तर्वेदना को प्रगट कर रहे थे, जो धर्म संस्कारों के प्रतीक थे।

➢जलती धरती ने पैरों को तप्तायमान कर दिया–

हम लोग 7 जुलाई 1996 रविवार को मालेगाँव के कैम्प एरिया में पहुँचे, तो वहाँ की जैन समाज ने मध्यान्हकालीन प्रवचन कार्यक्रम एक हॉल में आयोजित किया और हम लोगों को दो फर्लांग दूर वहाँ जाना पड़ा। उस मार्ग में धरती पर पैर रखना तपे तवे पर पैर रखने के सदृश था। केवल वहाँ जाने तक में ही कुछ के पैरों में छाले आ गए और एक ब्रह्मचारी जी के तो पैरों में चीरा लगकर फट सा गया। खैर! यह साधुचर्या की कठोरता समझकर हम सभी ने समताभावपूर्वक सहन किया किन्तु जूते, चप्पल पहनकर चलने वाले, सदा वाहन आदि पर चलने वाले गृहस्थ श्रावक इस परीषह का अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं।

कुछ भी हो, पंचमकाल के हीनसंहननधारी मनुष्य भी दिगम्बर जैनी दीक्षा धारण करके असंख्य कर्मों की निर्जरा कर सकते हैं, यह बात भावसंग्रह (प्राकृत) में स्पष्ट की गई है–

वरिससहस्सेण पुरा, जं कम्मं हणइ तेण काएण।
तं कम्मं वरिसेण हु, णिज्जरयइ हीणसंहणणे।।

अर्थात् चतुर्थकाले मुनिगणा, यानि कर्माणि उत्तमसंहननशरीरस्य कारणेन तपः कृत्वा एकसहस्र वर्षेषु नष्टान्यकुर्वन्, तानि कर्माणि अद्य हीनसंहननशरीरधारिणः साधव एकवर्षस्य तपस्यया नष्टानि कर्तुं शक्यन्ते। अतएव आधुनिककाले वयं स्वदुर्बलं सुकुमारं च शरीरं तपसोऽग्नौ तर्पयितुं पुरुषार्थं कुर्मः, तदैव ते शरदः ग्रीष्मस्य शूलस्य पुष्पस्य च कष्टानि सोढुं कष्टं नैव, किन्तु आह्लादमनुभवन्ति।

पंचामृताभिषेको महाराष्ट्रस्य परिचायकोऽस्ति–**बहुसमयात् पूर्वमहमशृण्वम् यद्दक्षिणभारते तेरापंथ–बीसपंथयोः कोऽपि भेदभावो न वर्तते। तत्र प्रत्येकदिगम्बरजैन मन्दिरे स्त्रीपुरुषाः सर्वे मिलित्वा प्राचीनशास्त्रीयपरम्परानुसारेण जिनेन्द्रभगवतः पंचामृताभिषेकं कुर्वन्ति। अस्याः शताब्द्याः प्रथमाचार्यश्चारित्रचक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महाराजोऽपि तां परम्परां मत्वा सर्वदैव भगवतः पंचामृताभिषेकमपश्यत्।**

महाराष्ट्रप्रान्ते वयं यस्मात्कालात् आगच्छाम, श्रद्धालुभक्तो मातुर्मन्दिरस्य प्रवेशकाले एवाभिषेकं दर्शयितुमातरो भवति, अत्र च गृहे–गृहे निर्मितस्य स्वगृहस्य चैत्यालयस्य दर्शनं कारयितुं संघं च तत्र नेतुं प्रयासं कुर्वन्ति, किन्तु मालेगांव नगरे 8 जुलाई 1996 दिने यदा मातुः संघसहितो मंगल प्रवेशोऽभवत्, तु तत्र मन्दिरेऽभिषेकस्य या शास्त्रीयां

वरिससहस्सेण पुरा, जं कम्मं हणइ तेण काएण।
तं कम्मं वरिसेण हु, णिज्जरयइ हीण संहणणे।।

अर्थात् चतुर्थकाल में मुनिगण जितने कर्मों को उत्तम संहनन वाले शरीर से तप करके एक हजार वर्ष में नष्ट करते थे, उतने कर्मों को आज के हीन संहननधारी साधु एक वर्ष की तपस्या द्वारा नष्ट कर सकते हैं। इसीलिए आज के युग में हम लोग अपने कमजोर एवं सुकुमार शरीर को तपस्या की अग्नि में तपाने का पुरुषार्थ करते हैं, तभी इन्हें गर्मी, सर्दी, शूल-फूल के कष्ट सहन करने में कष्ट नहीं, बल्कि आल्हाद का अनुभव होता है।

➢पंचामृत अभिषेक महाराष्ट्र की पहचान है–

बहुत पहले से सुना करती थी कि दक्षिण भारत में तेरहपंथ-बीसपंथ का कोई भेदभाव नहीं रहता है, वहाँ प्रत्येक दिगम्बर जैन मंदिर में स्त्री-पुरुष सभी मिलकर प्राचीन शास्त्रीय परम्परानुसार जिनेन्द्र भगवान् का पंचामृत अभिषेक करते हैं। इस शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महाराज भी इसी परम्परा को मानकर सदैव भगवान का पंचामृत अभिषेक देखा करते थे।

यूँ तो महाराष्ट्र प्रान्त में हम लोग जब से आए थे, तब से प्रत्येक गाँव में श्रद्धालु भक्त पूज्य माताजी को मंदिर में प्रवेश करते ही अभिषेक दिखाने को आतुर रहते थे तथा इधर घर-घर में बनाए हुए अपने गृह चैत्यालय का दर्शन कराने भी संघ को ले जाने का प्रयास करते थे किन्तु मालेगाँव शहर में 8 जुलाई 1996 को जब गणिनी माताजी का संघ सहित मंगल प्रवेश हुआ, तो वहाँ के मंदिर में अभिषेक की जो शास्त्रोक्त प्रक्रिया देखी, वह मेरे लिए

परम्परामपश्याम, सा मह्यं अविस्मरणीया वर्तते। तत्र श्रावकश्राविकाश्च पण्डितेनाशाधरेणरचितस्य संस्कृताभिषेकपाठस्य सुन्दरे स्वरे उच्चारणं कुर्वन्तः प्रायः एकहोरासमयेऽभिषेकमपूरयन् संघाय च पवित्रं गन्धोदकं प्रादुः।

यत्र दक्षिणभारते पंथवादस्य निष्पक्षरूपेण एकरूपता विद्यते, तत्रैवोत्तरभारते द्वयोः पंथयोः प्रचलनं वर्तमानेऽपि दृष्टुं शक्यते कुत्रचिच्च तेरहपंथस्य आकर्षणाग्रहोऽपि शुद्ध तेरापंथ नाम्ना प्रारम्भोऽभवत्। एषु विवादेषु मात्रे ज्ञानमत्यै सदैव सामंजस्यस्थितिरेव रोचते, इदमेव कारणमस्ति यत् तस्याः पावनप्रेरणया 1972 वर्षे स्थापितस्य दिगम्बर जैन त्रिलोकशोधसंस्थानस्य पंजीकृत समितौ 1975 वर्षे एव नियमोऽयं पारितः यत्–''वर्तमाने दिगम्बर जैनाम्नाये बीसपंथः तेरहपंथश्च एतौ द्वौ पंथौ प्रचलितौ स्तः। जम्बूद्वीपस्य सर्वेषु जिनमन्दिरेषु द्वयोः पंथयोरनुयायिनोऽभिषेकं पूजनं च कर्तुं प्रभवन्ति स्वेच्छानुसारेण, अत्र न कोऽप्यस्ति पंथवादस्य विवादः।''

तस्य अस्याः दीर्घदर्शितायाः कारणेन उत्तरदक्षिणयोः पूर्व पश्चिमयोश्च चतुर्भ्याः दिग्भ्योः सम्पूर्णदेशस्य च जनता या जम्बूद्वीप रचनायाः दर्शनं कर्तुं हस्तिनापुरमागच्छति, तस्मै उक्तं शिलालेखं दृष्ट्वा परम प्रसन्नतायाः अनुभवो भवति। पूज्यमातुः ज्ञानमत्याः उदारनीत्या ते सन्तोषमनुभवन्ति।

साधुसंघाः वास्तवे चलन्तो विश्वविद्यालयाः सन्ति–**भारतस्य प्रत्येकभागे यत्र शतशो विश्वविद्यालयाः उद्घाटिताः सन्ति, तत्र अनेक स्थाने** ''अद्य ओपन विश्वविद्यालयाः'' **अपि**

अविस्मरणीय हो गई। वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं ने पं. आशाधर जी द्वारा रचित संस्कृत अभिषेक पाठ का सुन्दर स्वर में उच्चारण करते हुए लगभग 1 घंटे में अभिषेक पूर्ण किया और संघ को पवित्र गन्धोदक प्रदान किया।

जहाँ दक्षिण भारत में पंथवाद की निष्पक्ष रूप से एकरूपता है, वहीं उत्तर भारत में दोनों पंथों का प्रचलन वर्तमान में देखा जा रहा है तथा कहीं-कहीं तेरहपंथ की खींचातानी भी शुद्धतेरहपंथ के नाम पर शुरू हो गई। इन विवादों में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी सदैव सामञ्जस्य की स्थिति ही पसंद करती हैं, यही कारण है कि उनकी पावन प्रेरणा से सन् 1972 में स्थापित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की रजिस्टर्ड कमेटी में सन् 1975 में ही यह रेजूलेशन पास किया गया कि– **''वर्तमान में दिगम्बर जैन आम्नाय में बीसपंथ और तेरहपंथ ये दो पंथ प्रचलित हैं। जंबूद्वीप के सभी जिनमंदिरों में दोनों पंथ के अनुयायी अपनी-अपनी इच्छानुसार अभिषेक पूजा कर सकते हैं, यहाँ पंथवाद का कोई विवाद नहीं रहेगा।''**

उनकी इस दीर्घदर्शिता के कारण उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों दिशाओं से तथा सारे देश की जनता, जो जम्बूद्वीप रचना के दर्शन करने हस्तिनापुर पहुँचती है, उसे उपर्युक्त शिलालेख देखकर परम आह्लाद का अनुभव होता है तथा पूज्य ज्ञानमती माताजी की उदारनीति से उन्हें संतोष मिलता है।

➢**साधु संघ वास्तव में चलते-फिरते विश्वविद्यालय होते हैं–**

हिन्दुस्तान के प्रत्येक प्रदेश में जहाँ सैकड़ों विश्वविद्यालय खुले हुए हैं, वहीं अनेक स्थान पर

सन्ति। दिल्लीनगर्यां एकः ''इन्दिरागांधी ओपन विश्वविद्यालयोऽस्ति''**, यत्र सहस्रशो विद्यार्थिनः आवेदनपत्राणि पूरयित्वा गृहे स्थिताः पठितुं परीक्षाश्च दातुमधिकारिणः सन्ति।**

इयं तु लौकिकं शिक्षणं प्राप्योदरपूर्तये विद्यां पाठयितुं विश्वविद्यालयानां वार्तास्ति किन्तु साधु–साध्वीनां संघास्तु वस्तुतश्चरित्रनिर्माणस्य आध्यत्मिकतायाश्च ओपन विश्वविद्यालयाः सन्ति। साधु श्रृंखलायां तु पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता तु सर्वेभ्यः एका उदाहरणमस्ति। तया प्रारब्धस्य कस्यापि कार्यस्य कृते सति प्रायः सर्वे साधुसंघाः तं मार्गमनुसरन्ति। यथा–बालब्रह्मचारिणी भूत्वा त्यागमार्गमनुसरणं, ग्रन्थानां लेखनं, शास्त्रोक्तस्य नवनिर्माणस्य प्रेरणा प्रदानं, शिविराणां संगोष्ठीनां चायोजनमित्यादीनि कार्याणि तस्याः जीवितस्येतिहासस्य प्रतीकानि सन्ति।

तस्याः विषये सरसकविना लिखितम्–''वस्तुतोऽस्याः नार्यः शक्तिं नरो ना जानात्, मन्दिरे सा मीरास्ति तु रणे लक्ष्मीबाई अस्ति। ज्ञानक्षेत्रे ज्ञानमत्याः क्षमताद्भुतास्ति। सत्यमेव यदि प्रच्छ्यते तु नार्यः एव कारणेनेयं पृथ्वी गौरवशालिनी विद्यते।''

मालेगाँवनगरे प्रवेशे सति नगरस्य स्त्रीपुरुषाणां उल्लासं दृष्ट्वा मातास्मानादिशत् अत्र पंचदिनानां ''ध्यान शिविरं–शिक्षण शिविरं'' **चायोज्य सर्वेभ्य चिरस्थायिज्ञानदानं कृत्वा गन्तव्यम्। अतः 8 जुलाई मध्याह्नादेव बालेभ्यः प्रौढ स्त्री पुरुषेभ्यश्च बालविकासस्य**

आज **''ओपन यूनिवर्सिटी''** भी हैं। दिल्ली में एक **''इन्दिरागाँधी ओपन यूनिवर्सिटी''** है, जहाँ से हजारों विद्यार्थी फार्म भरकर घर बैठे पढ़ने और परीक्षा देने के अधिकारी होते हैं।

यह तो लौकिक शिक्षण प्राप्त करके पेट भरने वाली विद्या सिखाने वाले विश्वविद्यालयों की बात हुई किन्तु साधु-साध्वियों के संघ तो असलियत में चारित्र निर्माण और आध्यात्मिकता के खुले विश्वविद्यालय होते हैं। साधु श्रृंखला में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी तो सबके लिए एक मिशाल हैं ही, उनके द्वारा कोई भी कार्य शुरू किये जाने पर प्रायः सभी साधुसंघ उस मार्ग का अनुसरण करते हैं जैसे– बाल ब्रह्मचारिणी बनकर त्याग मार्ग को अपनाना, ग्रन्थ लेखन करना, शास्त्रोक्त नवनिर्माण की प्रेरणा देना, शिविर-सेमिनारों का आयोजन कराना,..... इत्यादि कार्य उनके जीवन्त इतिहास के प्रतीक हैं।

उनके बारे में सरस कवि ने लिखा है–

सच तो इस नारी की शक्ती, नर ने पहचान न पाई है।
मन्दिर में मीरा है तो वह, रण में भी लक्ष्मी बाई है।।
है ज्ञान क्षेत्र में ज्ञानमती, नारी की कला निराली है।
सच पूछो नारी के कारण, यह धरती गौरवशाली है।।

मालेगांव पहुँचते ही वहाँ के स्त्री-पुरुषों का उत्साह देखकर पूज्य माताजी ने हम लोगों को आदेश दिया कि यहाँ 5 दिन का **''ध्यान शिविर एवं शिक्षण शिविर''** आयोजित करके सबके लिए चिरस्थाई ज्ञान प्रदान करके जाना है। बस, 8 जुलाई की मध्यान्ह से ही बच्चों एवं प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों

द्रव्यसंग्रहस्य च कक्षानामारम्भो जातः रात्रौ च पुरस्कारार्थं प्रश्नमंचः, आरती प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता प्रातःकाले च ध्यानाभ्यासादयोऽनेकाः कार्यक्रमाः 12 जुलाई पर्यन्तं प्रचलिताः अभवन्, यैः बहु जनसमूहो ज्ञानलाभं प्राप्नोत्।

पदस्थस्य ध्यानस्य अन्तर्गतं 'ह्रीं' बीजाक्षरस्य ध्यानाभ्यासः–**अहं प्रातःकालस्य कक्षायां 8.30 वादनात् 9.15 वादनपर्यन्तं योगसाधनायाः विभिन्नानां चरणानां महत्वं प्रदर्श्य 9, 10, 11 जुलाई दिनेषु त्रिषु दिवसेषु 'ह्रीं' बीजाक्षरस्य तिसृसु श्रेणीसु ध्यानमकारयं, यः तत्र श्रद्धालुभ्यः चिरस्मृतेः प्रतीकमभवत् तत्र च सः ध्यानस्य आडियो कैसेट तत्र कैम्प मन्दिरे अनेकस्त्रिपुरुषान् अद्यापि ध्यानस्याभ्यासं कारयितुं साधनं वर्तते।**

कषायेषु क्रोधः सर्वजघन्योऽस्ति–**पूज्य गणिन्या ज्ञानमत्याः प्रवचनं प्रतिदिनमेव प्रातःकाले ध्यानसाधनायाः अनन्तरमेव अभवत् सा च प्रतिदिनं स्वप्रवचने नित्यमेव नूतन–दुर्लभविषयाणां प्रतिपादनमकरोत्, यथा कर्मभूमीनां व्यवस्था, जैनज्योतिर्लोकः, जैन भूगोलं, गुरुभक्त्या प्राप्ता तपो शक्तिः, भगवता ऋषभदेवेन प्रतिपादिताः षट्क्रियाः इत्यादि–अनेक शास्त्रीयप्रकरणानां सरलतया स्पष्टीकरणमकरोत्। सर्वे विषयाः सर्वेषां सरलतया हृदयंगमाः भवन्ति सर्वे जनाश्च जीवने प्राप्तस्य अस्य दुर्लभसन्तसमागमस्य भूयशः प्रशंसामकुर्वन्।**

अस्यामेव प्रवचनशृंखलायां दिनांके 10 जुलाई बुधवार दिने सा त्रिलोकस्य स्वरूपं

के लिए बाल विकास तथा द्रव्यसंग्रह की कक्षाएँ शुरू हो गईं और रात्रि में इनामी प्रश्नमंच, आरती प्रतियोगिता, अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता तथा प्रातःकाल में ध्यानाभ्यास आदि अनेक कार्यक्रम 12 जुलाई तक चले, जिनसे भारी जन-समूह ने ज्ञान लाभ प्राप्त किया।

➢पदस्थ ध्यान के अन्तर्गत ''ह्रीं'' बीजाक्षर का ध्यानाभ्यास–

मैंने प्रातःकाल की कक्षा में 8.30 से 9.15 बजे तक योगसाधना के विभिन्न पहलुओं का महत्त्व बताकर 9-10-11 जुलाई को तीन दिन में ''ह्रीं'' बीजाक्षर का तीन श्रेणियों में ध्यान कराया, जो वहाँ के श्रद्धालुओं के लिए चिरस्मृति का प्रतीक बन गया और वह ध्यान की ऑडियो कैसेट वहाँ कैम्प मंदिर में अनेक स्त्री-पुरुषों को आज तक भी ध्यान का अभ्यास करा रही है।

➢कषायों में क्रोध सबसे अधिक बुरा है–

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का प्रवचन प्रतिदिन प्रातःकाल ही ध्यानसाधना के बाद होता था और वे प्रतिदिन नये-नये दुर्लभ विषयों का प्रतिपादन अपने प्रवचन में करती थीं, जैसे–कर्मभूमियों की व्यवस्था, जैन ज्योतिर्लोक, जैन भूगोल, गुरुभक्ति से प्राप्त तपोशक्ति, भगवान् ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित षट्क्रिया आदि अनेक शास्त्रीय प्रकरणों का सरलरूप में स्पष्टीकरण करतीं, जो आसानी से सबको हृदयंगम हो जाते और सभी लोग जीवन में मिले इस दुर्लभ सन्तसमागम की भूरि-भूरि सराहना करते थे।

इसी प्रवचन शृंखला में दिनाँक 10 जुलाई बुधवार को उन्होंने तीन लोक का स्वरूप

प्रतिपादितमकरोत् अधोलोकस्य च कारणभूतानाचतुःकषायाणां विषये प्रतिपादनं कुर्वन्ती सा अकथयत्–यत् यद्यपि चत्वारः एवं कषायाः अनिष्टकारिणः सन्ति, ते आत्मानं कषन्ति, तेभ्यश्च लोभः पापस्य पिता कथितम्, मानेन नरकगतेः प्राप्तिः कथिता, मायया तिर्यग्गतिः प्राप्यते, परन्तु अद्यास्मिन् विषये व्यचिन्तयं यत् मानमायालोभास्तु आत्मने एव घातकाः भवन्ति, परन्तु क्रोधस्तु स्वपरयोरहितं विधाय जन्म–जन्मान्तरेषु वैरबन्धनं वर्द्धयति।

पश्यन्तु! एको वशिष्ठनामको मुनिः एकदा मथुरायाः गोवर्द्धनपर्वते एकमासस्योपवासं गृहीत्वा ध्याने लीनः आसीत्। तस्य तपस्यया प्रभावितो भूत्वा मथुरायाः राजा उग्रसेनः नगरे घोषणामकारयत् यत् मुनिराजस्य मासोपवासस्यावसानेऽहं स्वभवने तस्मै आहारख्य दानं कारयिष्यामि, अन्यस्य कस्यापि गृहे भोजनं न पक्तं भविष्यति। मासस्योपवासस्य पश्चात् यदा वशिष्ठो मुनिर्नगरे आहारार्थमागच्छत्, तदा महाराज उग्रसेनः कार्यव्यस्ततया आहारं दातुं व्यस्मरत्, अतो मुनिश्चर्यां कृत्वा न्यवर्तत्, अनेनैव प्रकारेण द्वि–त्रि बारं राजा अनेनैव प्रकारेणाकथयत्, किन्तु समयागते स व्यस्मरत्, तेन कारणेन मुनिवरः आहारलाभं न प्राप्नोत्।

एकदा चर्यां कुर्वन् सः मुनिः अशक्ततावशात् भूमौ पपात्, तदा नगरस्य जनता अकथयत् यत् हा! अस्य नगरस्य राजा महान् दुष्टोऽस्ति, यो भक्त्याः प्रदर्शनं कृत्वा मानस्य कारणेन न तु अस्मान् आहारदानस्यावसरं ददाति न च स्वयं आहारं ददाति। एतान् शब्दान् मुनिरशृणोत् तदैव सः क्रोधितो भूत्वा निदानमकरोत् यत् ''अग्रेजन्मनि अस्य राज्ञः पुत्रो भूत्वा एनं प्रति क्रोधं

बतलाया तथा अधोलोक को प्राप्त कराने वाली चार कषायों के बारे में बताते हुए कहा – यूँ तो कषाएँ चारों ही बुरी हैं, वे आत्मा को कस रही हैं और इनमें से लोभ को पाप का बाप भी कह दिया है, मान से नरकगति की प्राप्ति बताई है, माया से तिर्यंचगति मिलती है किन्तु जहाँ तक मैंने इस विषय में चिन्तन किया तो निष्कर्ष निकाला कि मान, माया और लोभ तो स्वयं के लिए ही घातक होती हैं जबकि क्रोध कषाय स्व और पर दोनों का अहित करके जन्म-जन्मान्तर में वैर बन्धन को बढ़ाती है।

देखो! एक वशिष्ठ नामक मुनि एक बार मथुरा के गोवर्द्धन पर्वत पर एक मास का उपवास लेकर ध्यान में लीन थे। उनकी तपस्या से प्रभावित होकर मथुरा के राजा उग्रसेन ने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि मुनिराज के मासोपवास का पारणा मैं अपने राजमहल में ही आहार देकर करवाऊँगा, अन्य किसी के घर में चौका नहीं लगेगा। महीने भर के उपवास के बाद जब वशिष्ठ मुनिराज शहर में आहार के लिए आए, तब राजा उग्रसेन कार्यव्यस्तता में आहार देना भूल गए अतः मुनि चर्या करके वापस चले गये। इसी प्रकार दो-तीन बार राजा ने इसी प्रकार कहा और समय आने पर वे भूल गए, जिससे मुनिराज को आहार लाभ प्राप्त नहीं हो सका।

एक बार चर्या करते हुए वे मुनि अशक्तावश भूमि पर गिर पड़े, तब नगर की जनता कहने लगी कि हाय! यहाँ का राजा बड़ा दुष्ट है, जो भक्ति का प्रदर्शन करके घमण्ड के कारण हम लोगों को आहारदान न तो देने देता है और न स्वयं ही देता है। ये शब्द मुनि ने सुन लिए और उसी समय उन्होंने क्रोधित होकर निदान कर दिया कि **''अगले जन्म में इस राजा का पुत्र होकर इसका बदला चुकाऊँ''**

करिष्यामि।'' **अनेन प्रकारेण मिथ्यात्वपूर्वकं कषायपरिणामैर्मृत्वा सः उग्रसेनस्य राज्ञ्याः गर्भमागच्छत् कंसस्य रूपेण जन्म गृहीत्वा स स्व पितरं पाशयुक्तमकरोत् पुनः कृष्णो जन्म गृहीत्वा तस्य वधं कृत्वा स्व मातामहमुग्रसेनं बन्धनमुक्तमकरोत्। पश्यतु! क्रोधकारणादेको मुनि स्वतपस्यां मिथ्यामकरोत् प्रतिभवं च नरकादीनां गतीनां दुःखानि असहत्। क्रोधे जनः हिताहितस्य विवेकं विस्मरति। सः अग्नेः प्रतिकृतिर्भवति, अतो जनास्तं** ''आगबबूला'' **इति कथयन्ति।**

क्रोधः कदापि क्रोधेन शान्तं कर्तुं न शक्यते, सः तु क्षमा जलेनैव शमितुं शक्यते। भगवतः पार्श्वनाथस्योदाहरणं क्षमायां प्रसिद्धमस्ति कमठस्य च नाम क्रोधे प्रसिद्धिं प्राप्तम्। अद्य दृश्यते यत् कश्चित् मुनिः कषायस्योग्रतया किञ्चिन्मात्रं निमित्तमासाद्य धावति, कथयति च ममापमानोऽभूत्, परन्तु साधवे इदं कथनमुचितं नास्ति। मुनिस्तु किं, गृहस्थोऽपि क्रोधं कषायं न्यूनं कर्तुं अभ्यासं कुर्यात् अधोगतिं च गन्तुमात्मनो रक्षां कुर्यात्।

गुरोः किंचित् अस्वस्थतायाः समाचारं प्राप्य धावन् आगतः लाला प्रेमचन्द्रः—**गुरोः शिष्यस्य च निश्छलप्रेम्णः वार्ताः इतिहासेसु बहुधा पठ्यन्ते श्रूयन्ते च—**

''गुरुणां शिष्याणां च काः वार्ताः अज्ञाताः सन्ति। सागरो जानाति यत् विन्दौ कति जलमस्ति।''

किन्तु वर्तमाने यदा विशिष्टभक्तानां गुरुभक्तिर्यदा समक्षं दृष्टुं प्राप्यते, तु सम्राट् चन्द्रगुप्तस्य स्मृतिरागन्तुं न निवर्तिता भवति, यो मुनिर्भूत्वा श्रुतकेवलिनो भद्रबाहोः वने द्वादशवर्षस्य भक्तिं कृत्वा देवानामप्यासनं कम्पितमकरोत्।

इस प्रकार मिथ्यात्व पूर्वक कषाय परिणामों से मरकर वह उग्रसेन की रानी के गर्भ में आ गया और कंस के रूप में जन्म लेकर उसने अपने पिता को बन्दी बनाया पुनः कृष्ण ने जन्म लेकर उसका वध करके अपने नाना उग्रसेन को बन्धन मुक्त किया था। देखो! क्रोध के कारण एक मुनि ने अपनी तपस्या मिथ्या कर दी एवं भव-भव में नरक आदि गतियों के दुःख उठाए। क्रोध में व्यक्ति को हिताहित का विवेक नहीं रह जाता है। वह अग्नि की प्रतिकृति बन जाता है इसीलिए उसे **''आगबबूला''** कहने लगते हैं।

क्रोध को कभी भी क्रोध से शान्त नहीं किया जा सकता है, उसे तो क्षमा जल से ही शमन कर सकते हैं। भगवान् पार्श्वनाथ का उदाहरण क्षमा में प्रसिद्ध है तथा कमठ का क्रोध में नाम मशहूर हुआ है। आज देखा जाता है कि कोई-कोई मुनि कषाय की उग्रता से जरा सा निमित्त बनाकर भाग जाते हैं और कहने लगते हैं कि मेरा अपमान हो गया लेकिन साधु के लिए यह कथमपि उचित नहीं है। मुनि तो क्या गृहस्थ को भी क्रोष कषाय को कम करने का अभ्यास करना चाहिए एवं अधोगति में जाने से बचना चाहिए।

➢गुरु की किञ्चित् अस्वस्थता का समाचार पा दौड़े आए लाला प्रेमचंद जी–

गुरु और शिष्य के निश्छल प्रेम की बातें इतिहासों में कई बार पढ़ी और सुनी थीं कि–

''गुरु और शिष्य की कौन-सी बात अंजानी है।
सागर को मालूम है कि बूँद में कितना पानी है।।''

किन्तु वर्तमान में जब विशिष्ट भक्तों की गुरुभक्ति सामने देखने को मिलती है, तो सम्राट चन्द्रगुप्त की स्मृति आए बिना नहीं रहती जिन्होंने मुनि बनकर श्रुतकेवली भद्रबाहु की जंगल में बारह वर्षों तक भक्ति करके देवों के भी आसन को कम्पित कर दिया था।

मालेगाँव नगरस्य विहारस्य पूर्वं एकदा ज्ञानमत्याः मातुः स्वास्थ्यं शरीरादिकैः परिश्रमैः किञ्चिद् क्षीणं जातम्, एष समाचारः केनापि प्रकारेण दिल्लीनगर्यां स्थितौ संघपति महावीरप्रसाद, प्रेमचन्दौ अजानीताम्, तु तौ अतिव्याकुलौ अभवतां द्वौ च तत्कालं मांगीतुंगीं गन्तुं तत्परौ अभवताम्, एतस्य मध्ये एव द्वौ अजानीतां यत् अनिलकुमारः कागजी स्वास्थ्यस्य समाचारं ज्ञातुमगच्छत्, तदा रवीन्द्रस्य दूरभाषोऽपि प्राप्नोत् यत् स्वास्थ्यमधुना मध्यममस्ति। कस्याश्चिद् दुर्बलतावशात् काचित् स्वास्थ्ये अव्यवस्था अभवत्। अनिलश्च दिल्ल्यां गत्वा मातुः स्वास्थ्यस्य सूचनां सर्वेभ्योऽदात् किन्तु सर्वस्य श्रवणस्य पश्चादपि लाला प्रेमचन्दः खारीबावली दिल्ली निवासी शान्तो नाभवत्। वयं सर्वे तत्र गायत्रीभवनेऽतिष्ठाम, यदा सः मातरं सर्वं कुशलसमाचारमपृच्छत्, तदैव शान्तेः श्वासं गृहीत्वा स्नानभोजनादिकमकरोत्।

पुनः प्रेमचन्द्रः त्रि–चतुर्भ्यो दिनेभ्यः संघेन सहैवावर्तत्। संघस्थाभ्यः ब्रह्मचारिणीभ्यः भगिनीभ्यः सर्वां संघव्यवस्थासंबन्धिनीं सूचनां प्राप्याकथयत् यत् ''पूज्या माता अस्माकं देशस्य एतादृशः निधिरस्ति तस्याः समक्षं स्वर्णरजतहीरक–मौक्तिका–माणिक्यादिसमस्तानां रत्नानां किमपि मूल्यं नास्ति। एतस्याः लघुं कष्टमपि श्रुत्वा वयं व्याकुलाः भवामः। भवन्तोऽस्याः स्वस्थतायाः पूर्णं ध्यानं कुर्वन्तु, यत् वयम् अस्याः दिशः विहारं कारयित्वा दिल्लीं प्रति प्रस्थानस्य कार्यं कर्तुं करणीयमस्ति, महान्ति च धर्म कार्याणि अस्याः माध्यमेन करणीयानि सन्ति।''

तस्यैतां भक्तिपूर्णां वार्तां निशम्य अहमकथयम्–प्रेमचन्द्र! असाताकर्मणः समक्षं कदापि

मालेगाँव विहार से पूर्व एक बार पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का स्वास्थ्य शारीरिक आदि परिश्रम के कारण कुछ नरम हो गया था, वह खबर किसी तरह से दिल्ली में संघपति महावीर प्रसाद एवं प्रेमचंद जी को पता लगी, तो उन्हें खूब बेचैनी हो गई और दोनों तुरंत मांगीतुंगी जाने को तैयार हो गये। इसी मध्य इन लोगों को ज्ञात हुआ कि अनिल कुमार जैन कागजी स्वास्थ्य समाचार लेने जा चुके हैं, तब तक रवीन्द्र जी का फोन भी मिल गया कि स्वास्थ्य अब मध्यम है, कुछ कमजोरी विशेष के कारण गड़बड़ हो गया था। अनिल जी ने भी पुनः दिल्ली पहुँचकर सबको माताजी की स्वस्थता की सूचना दे दी थी किन्तु सबसे सुनने के बावजूद भी लाला प्रेमचंद जैन-खारीबावली दिल्ली वालों को चैन न पड़ी। हम लोग ''गायत्री भवन'' में ठहरे हुए थे, जब उन्होंने पूज्य माताजी से सारे कुशल समाचार पूछ लिए, तभी चैन की साँस लेकर स्नान-भोजन आदि किया।

पुनः प्रेमचंद जी तीन-चार दिन संघ के साथ ही रहे और संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से सारी संघ व्यवस्था संबंधी जानकारी लेकर कहने लगे कि **''पूज्य माताजी हमारे देश की ऐसी निधि हैं, जिनके समक्ष सोना, चाँदी, हीरा, मोती, माणिक्य सारे रत्नों की कीमत भी कुछ नहीं है। इन्हें जरा भी कष्ट होते ही हम लोग बेचैन हो जाते हैं, आप लोग इनकी स्वस्थता का पूरा ध्यान रखें क्योंकि हम लोगों को अभी इन्हें कुशलतापूर्वक इधर से विहार कराकर दिल्ली ले जाना है और बड़े-बड़े धर्मकार्य इनके माध्यम से सफल करना है।''**

उनकी यह भक्तिपूर्ण वार्ता सुनकर मैंने कहा–प्रेमचंद जी! असाता कर्म के आगे कभी-कभी

वैद्योपचाराः अप्यसफलाः भवन्ति। माता एतैः लघुकष्टैः कदापि भयवती न भवति। तस्याः तत्वज्ञानं–भेदविज्ञानं अतिदृढं वर्तते अतो भवन्तोऽपि चिन्तां न कुर्वन्तु। भवतो मातरं वयं कुशलतापूर्वकमेव सदा पश्यामः कुशलतापूर्वकं च एषा दिल्ली पर्यन्तां दीर्घां यात्रां करिष्यति। अस्तु! स्व भक्त्याः परिचयं दत्वा सः श्रावकरत्नं तु न्यवर्तत् किन्तु तस्य भावनानां चर्चा वयं कतिचिद् दिनानिपर्यन्तमकुर्म।

गुरु चरणाभ्यां नगरस्य सम्पूर्णास्वच्छता वर्षया क्षालिताभवत्–**9 जुलाई रात्रौ अतिघनघोरा वर्षाभवत्। सम्पूर्णाः ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यः मातुः समीपे एव गायत्रीं भवने सुप्ता आसन्। प्रायः 11 वादन समयात् 2 वादन समयपर्यन्तं रात्रौ भीषणदुर्गन्धयुक्ता दुर्गन्धिः अस्मान् सर्वानेव पीडितानकरोत्। केनापि प्रकारेण प्राणायामपूर्वकमुपविश्य वयं मालां परिवर्तितामकुर्म। पुनः किञ्चित् कालानन्तरं दुर्गन्धेः समाप्तौ काचिन्निद्रा समायाता। प्रातरुत्थाय प्रतिक्रमण–सामायिकादीनां क्रियाणां पश्चात् अहमकथयम् अद्यास्मात् स्थानात् कुत्रचित् विहारः कर्तव्यः यतोऽस्यां दुर्गन्धौ 3–4 दिनानि व्यतीतानि कर्तुं कठिनानि वर्तन्ते।**

अस्माकमाकुलतां वीक्ष्य पूज्या माता अकथयत्–''वत्साः! साधुः सुगन्धौ दुर्गन्धौ च सदा समताभावं धारयति।'' अन्या वार्ता मां प्रतीयते यदत्र कापि महती प्रणालिका समीपे एवास्ति तस्यां च सम्पूर्णस्य नगरस्यास्वच्छता प्रवाहं कृत्वा आगच्छत्, अतोऽस्य कारणात् दुर्गन्धिः प्रसूताभवत्। संभवतोऽस्यां तीव्रवर्षायां सा प्रवाहिता भवेत्, त्वधुना वातावरणं स्वच्छं भूत्वा सम्यक् भविष्यति।

बाह्य उपचार भी असफल हो जाते हैं। माताजी इन छोटे-छोटे कष्टों से कभी घबराती नहीं हैं, उनका तत्त्वज्ञान, भेदविज्ञान बहुत दृढ़ है अतः आप लोग भी घबराया मत करो। आपकी माताजी को हम लोग कुशलतापूर्वक ही सदा देखते हैं और सकुशल ही ये दिल्ली तक की लम्बी यात्रा भी तय कर लेंगी। खैर! अपनी गुरुभक्ति का परिचय देकर वे श्रावकरत्न तो वापस चले गए किन्तु उनकी भावनाओं की चर्चा हम कई दिन तक करते रहे।

➢गुरु चरणों से शहर की सारी गंदगी वर्षा में धुल गई–

9 जुलाई की रात्रि में बहुत घनघोर वर्षा हुई। पूज्य माताजी के पास ही गायत्री भवन के हॉल में सारी ब्रह्मचारिणी बहनें सोई हुई थीं। लगभग 11 बजे से 2 बजे रात तक भीषण दुर्गन्ध युक्त बदबू ने हम सबको बेचैन कर दिया, किसी तरह प्राणायाम पूर्वक बैठकर हम सब लोग माला फेरते रहे पुनः कुछ देर तक बदबू शान्त होने के बाद किंचित् निद्रा आई और सुबह उठकर प्रतिक्रमण, सामायिक आदि नित्य क्रिया के पश्चात् मैंने कहा कि आज यहाँ से कहीं अन्यत्र विहार कर देना चाहिए क्योंकि इस दुर्गन्ध में 3-4 दिन निकाल पाना बड़ा कठिन है।

हम लोगों की आकुलता देखकर पूज्य माताजी कहने लगीं–''बेटा! साधु को सुगंध और दुर्गन्ध दोनों में समता भाव रखना होता है।'' दूसरी बात मुझे लगता है कि यहाँ पास में कोई बड़ा नाला है और उसमें पूरे शहर की गंदगी बहकर आई थी, उसी कारण बदबू फैल गई थी संभवतः इस तेज बरसात में वह सारी बह गई होगी, तो अब वातावरण स्वच्छ होकर सब ठीक हो जाएगा।

किञ्चित् कालानन्तरमेव तस्य स्थानस्यैको गुरुभक्तः श्री हीरालालो जैनः पहाड़े आगच्छत् अकथयच्च, मातः! अत्र भवत्याः चरणन्यासेन दुष्कालस्यघोषणा भवन्ती–भवन्ती वारिताभवत्। 4–5 वर्षाणां पश्चादत्र प्रथमबारं ईदृशी वर्षाभवत् कृषकेभ्यश्च महती सहायता प्राप्ताभवत्। अस्माकं स्तोकं परिवर्तितं पक्षं वीक्ष्य सोऽवदत्, यत् मालेगाँव नगरे 80 प्रतिशतं जनता मुसलमान धर्मावलम्बिव्यस्ति अतोऽस्य नगरस्य पर्यावरणं दूषितं तिष्ठति किन्त्वद्य भवत्याः आशीर्वादेन सा समस्ताऽस्वच्छता क्षालिता भूत्वा प्रावहत्, इदानीं कापि दुर्गन्धिर्न आगमिष्यति। अस्मभ्यं भवन्त्यः शक्तिमाशीर्वादं च प्रददतु यत् वयं जैन उपनगरस्य समीपे स्व ''साधुभ्यस्त्यागिभवनस्य'' **निर्माणं कुर्याम, यतस्तेषां चर्या निर्बाधरूपेण संचालिता भवेत्। अधुना वयं विवशतया स्वत्यागिवर्गान् यत्र–तत्र स्थापितान् कुर्म।**

स्मरणीयं वर्तते, यत् मालेगांव नगरे 100 गृहाणि दिगम्बर जैन धर्मावलम्बिनां सन्ति, ते समीपस्थेभ्यो ग्रामेभ्योऽत्र आगत्य निवासं कुर्वन्ति सर्वेषां च सहयोगेनात्र एकस्य विशाल जैन मन्दिरस्य धर्मशालायाश्च निर्माणमभवत्।

तत्पश्चात् चाँदवड़–महाराष्ट्रं गत्वा 26 जुलाई 1996 दिने मांगीतुंगी क्षेत्रमागच्छाम। 29 जुलाई दिने च तत्र वर्षायोगस्य स्थापना अभवत्। पुनः 11 नवम्बर दिने चतुर्मासं समाप्य 15 नवम्बर 1996 दिने दिल्लीं प्रति मंगलविहारमकुर्म।

समाजानां समयसूचकता–**राजस्थाने ''रठोड़ा'' नामकः एको लघुः ग्रामो विद्यते। अत्र**

थोड़ी देर बाद वहाँ के एक गुरुभक्त महानुभाव श्री हीरालाल जैन पहाड़े आए, वे कहने लगे कि माताजी! यहाँ आपके चरण पड़ते ही दुष्काल घोषित होते-होते बच गया। 4-5 वर्षों बाद पहली बार इधर ऐसी वर्षा हुई है, किसानों को इससे भारी राहत मिली है। हमारे थोड़े से बदलते रुख को देखकर वे बोले कि मालेगांव में 80 प्रतिशत मुसलमान जनता रहती है इसीलिए यहाँ का पर्यावरण दूषित रहता है किन्तु आज वह सारी गंदगी आपके आशीर्वाद से धुलकर बह गई है, अब कोई बदबू नहीं आएगी। हमें आप लोग आशीर्वाद और शक्ति प्रदान करें कि हम जैन कालोनी के निकट अपने साधुओं के लिए **''त्यागी भवन''** बनाएँ ताकि उनकी चर्या निर्बाधरूप से चल सके। अभी हमें मजबूरी में त्यागियों को यत्र-तत्र ठहराना पड़ता है।

याद रहे, मालेगांव में लगभग 100 घर दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों के हैं, जो आस-पास के गाँवों से यहाँ आकर बसे हैं और सबके सहयोग से वहाँ एक विशाल दिगम्बर जैन मंदिर एवं जैन धर्मशाला का निर्माण हुआ है।

इसके पश्चात् चाँदवड़ (महाराष्ट्र) जाकर 26 जुलाई 1996 को वापस मांगीतुंगी पहुँचे तथा 29 जुलाई को वहाँ वर्षायोग स्थापन हुआ। पुनः 11 नवम्बर को चातुर्मास सम्पन्न करके 15 नवम्बर 1996 (कार्तिक शु. 5) को दिल्ली की ओर मंगल विहार हुआ।

➢**समाजों की समयसूचकता–**

राजस्थान में ''रठोड़ा'' नामक एक छोटा सा गाँव है, जहाँ जैन समाज अत्यन्त श्रद्धालु

जैनसमाजस्य सदस्याः अत्यन्तमेव श्रद्धालवो गुरुभक्ताश्च सन्ति। वयं पूर्वमेवाजानीम यत् अस्य ग्रामस्य 6–7 श्रावकाः मुनिदीक्षां गृहीतवन्तः। आचार्यश्रीधर्मसागरस्य संघे मुनिः श्रीभूपेन्द्रसागरो योगीन्द्रसागरश्च समाधिस्थौ अभवताम्, तयोर्गृहस्थावस्थायाः भ्रातरः बन्धवश्चापि समागत्य पूज्यमातरं रठोड़ा गमनाय प्रचुर आग्रहमकुर्वन्। लघुग्रामस्य कारणेन प्रतोल्यः अस्वच्छाः आसन् किन्तु सर्वेषां पवित्रं भावमवलोक्य संघस्तत्र गतः।

अग्रिमस्य निश्चित कार्यक्रमास्यानुसारेण 18 जनवरी 1997 दिने तत्र आहारोऽभवत्। मध्याह्नकालीनस्य प्रवचनस्य पश्चात् सायं 3.30 वादनसमये तत्रात् विहारोऽभवत्। पर्याप्तदूर– पर्यन्तं ग्रामवासिनः प्रेषयितुमागच्छन्, मार्गे चलतः जनान् वयमप्रच्छाम–यत् ''भवन्तोऽद्य सम्पूर्णे दिने अस्माकं प्रवासे, शोभायात्राद्येकस्मिन्नपि आयोजने स्वग्रामस्य साधूनां जयकारं नाकुर्वन्, किं भवतां तान् प्रति श्रद्धा नास्ति?''

एतच्छ्रुत्वा रठोड़ा समाजस्य प्रमुखाः जनाः अकथयन्–यत् मातः! अस्माकं नीतिरियमस्ति यत् यस्य वरस्य वरयात्रास्ति, तस्यैव गीतानि गातव्यानि। ये साधवोऽस्माकं ग्रामे आगच्छन्ति वयं तेषामेव जयकारं कुर्मः। ग्रामस्य साधुषु अस्माकं पूर्णश्रद्धा वर्तते, भवत्सदृशीनां च साध्वीनां मुखारविन्देन वयं स्वसाधूनां प्रशंसां श्रुत्वा असीम प्रसन्नतामनुभवामः वयमेतच्च चिन्तयामः यदस्माकं जयकारापेक्षया परेभ्यः श्रवणं श्रेयस्करमस्ति यतः स्वमुखेन तेषां प्रशंसाकरणे का रोचकतास्ति?

गुरुभक्त है। हमें पहले ही ज्ञात हो गया था कि इस गाँव में 6-7 श्रावक मुनि बन चुके हैं। आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघ में मुनि श्री भूपेन्द्र सागर एवं योगेन्द्र सागर महाराज समाधिस्थ हो चुके हैं उनके गृहस्थावस्था के भाई-बन्धुओं ने भी आकर पूज्य माताजी से रठोड़ा चलने का खूब आग्रह किया। छोटा गांव होने के नाते गलियाँ थोड़ी गंदी भी थीं लेकिन सबकी पवित्र भावना देखते हुए संघ को वहाँ जाना पड़ा।

आगे के अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार 28 जनवरी 1997 को वहाँ आहार हुआ और मध्यान्हकालीन प्रवचन के पश्चात् शाम 3.30 बजे वहाँ से विहार हो गया। काफी दूर तक गांव के सैकड़ों नर-नारी भेजने आए, रास्ते में चलते हुए हमने कुछ लोगों से पूछा कि **''आप लोगों ने आज पूरे दिन हमारे प्रवास, जुलूस आदि किसी भी आयोजन में अपने गाँव के साधुओं की एक बार भी जयकार नहीं बोली, क्या आप लोगों की उनके प्रति श्रद्धा नहीं है?''**

यह सुनकर रठोड़ा समाज के प्रमुख लोग कहने लगे कि ''माताजी! हमारी नीति तो यह है कि जिस दूल्हे की बारात निकलती हो, उसके ही गीत गाने चाहिए। जो साधु हमारे गांव में आते हैं, हम उनकी जयकार करते हैं। हमारे गांव के साधुओं में हमारी पूरी श्रद्धा है तथा आप जैसे लोगों के मुखारविन्द से हम अपने साधुओं की प्रशंसा सुनकर असीम प्रसन्नता का अनुभव कर लेते हैं और हम यह सोचते हैं कि हमारे जय बोलने की अपेक्षा दूसरों से सुनना ज्यादा अच्छा है क्योंकि अपने ही मुँह मियां मिट्ठू बनने में क्या मजेदारी है?''

अस्य प्रकारस्य वातावरणं आचार्यशान्तिसागरछाणीवतः जन्मभूम्यां दृष्टम्। छाणी–श्रावकाणां समयसूचकता वास्तवेऽनुकरणीया आदर्शरूपेण च प्राप्ताभवत्। अस्य विहारस्य मध्ये एकं स्थानमीदृशमपि प्राप्तं, यत्र ज्ञातमभवत् यत् येऽपि साधवोऽत्रागच्छन्ति, तेभ्यः अस्य ग्रामस्य जन्मप्राप्तानां साधूनां जयकारं कारयितुं जनाः बलप्रयोगं कुर्वन्ति, किन्तु नायं वास्तविक गुरुभक्तेरादर्शः। यतोऽयं विषयः साधूनां व्यक्तिगतश्रद्धायाः अस्ति, समाजोऽस्मिन् तान् बाध्यान् न कुर्यात्। चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरस्य जयकारः प्रत्येक धर्म–सभायामवश्यमेव वक्तव्यं, यतस्तस्यैव कृपयाऽस्यां विंशतिशताब्द्यां दिगम्बरसाधूनां निर्बाधं दर्शनं प्राप्यते।

मम दृष्ट्यां तु प्रत्येकजिनमन्दिरस्य अन्तर्भागे बहिश्च एताः सूक्तयः चित्रकारैः लिखिताः भवितव्याः।

1. प्रति प्रतोल्यां नादो गुंजितो भवेत्–**ऋषभदेवो जयतु आदिनाथः।**

2. जैनं जयतु शासनम्–**वन्दे शान्तिसागरम्।**

साधौ मानो नास्ति, अपमानः कीदृशः?–**धर्मप्राणस्य भारतदेशस्य वसुन्धरायां साधूनां प्रति आस्था प्रायः सर्वेषु सम्प्रदायेषु अद्यापि चरमोत्कर्षे दृश्यते। दिगम्बरजैन साधुसाध्वीनां कठोरतपः त्यागं च प्रति तु प्रत्येक प्राणी नतमस्तको भूत्वा गौरवमनुभवति, परन्तु पुनरपि पदविहारं कुर्वन्तः वयम् साधवः कदाचित् विपरीतमपि भाषमाणाः भवन्ति।**

इसी प्रकार का वातावरण आचार्य शांतिसागर महाराज छाणी वालों की जन्मभूमि छाणी (राजस्थान) में भी देखने को मिला। गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रान्त के अनेक ऐसे गाँव के श्रावकों की समयसूचकता वास्तव में सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श के रूप में प्रतीत हुई। इस प्रवास के मध्य एक स्थान ऐसा भी मिला, जहाँ पर ज्ञात हुआ कि जो भी साधु यहाँ आते हैं, उनसे इस गांव के जन्में साधु की जय बोलने की जबर्दस्ती कुछ लोग करते हैं लेकिन यह वास्तविक गुरुभक्ति का नमूना नहीं है क्योंकि यह विषय साधुओं की व्यक्तिगत श्रद्धा का है, समाज को इसमें उन्हें बाध्य नहीं करना चाहिए। हाँ! चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की जय प्रत्येक धर्म सभाओं में अवश्य बोलना चाहिए क्योंकि उनकी ही कृपा से इस बीसवीं शताब्दी में दिगम्बर सन्तों के निर्बाध रूप से दर्शन प्राप्त हो रहे हैं।

मेरी दृष्टि से तो प्रत्येक जिनमंदिरों के अंदर और बाहर पेन्टर से निम्न पंक्तियाँ लिखवा देनी चाहिए, जो बच्चे-बच्चे के मुँह से जुलूस आदि के नारे के रूप में उच्चारण भी कराना चाहिए–

1. गली-गली में गूंजे नाद– ऋषभदेव जय आदिनाथ।।

2. जैनं जयतु शासनम्– वन्दे शान्तिसागरम्।।

➢साधु के मान ही नहीं तो अपमान कैसा?

धर्मप्राण भारतदेश की इस वसुधा पर सन्तों के प्रति आस्था लगभग सभी सम्प्रदायों में आज भी चरमसीमा पर देखी जाती है और दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों के कठोर त्याग के प्रति तो प्रत्येक प्राणी नतमस्तक होकर गौरव का अनुभव करता है, फिर भी कभी-कभी पदविहार करते हुए हम साधुओं को कुछ विपरीत अनुभव भी आते हैं।

25 जुलाई 1996 दिनस्य वार्तास्ति, यदा संघ मांगीतुंगीक्षेत्रे चतुर्मासस्य स्थापनायै चाँदवड़ नगरात् मांगीतुंगीं प्रति गच्छति स्म, मध्ये तहाराबादात् पूर्वं करंजाड नामकः एको लघुग्रामः आसीत्। तत्र विद्यालये व्यवस्थापकाः आहारव्यवस्थामकुर्वन्। यदा वयं तत्र प्राप्ताः, भगिन्यः भोजनालयात् बहिरेवास्माकं आहारस्य व्यवस्थामकुर्वन्। पृच्छायां ज्ञातं यत् अस्य स्थानस्य जनाः अन्यान् प्रकोष्ठान्न दास्यन्ति। तत्र द्वौ विद्यालयौ आस्तां, तयोः प्रकोष्ठाः अपि विस्तृताः स्वच्छाः दृश्यन्ते स्म, किन्तु विद्यालयस्य जनानामनुमतिं विना कोऽपि तेषु प्रवेशं कर्तुं नाशक्नोत्। यथा–तथा च कष्टमनुभूय शुद्धिं आहारादिकानि सर्वाणि कार्याणि कृतान्यभवन्।

वयं परस्परं विचारमकुर्म यत् पश्य! अज्ञानिजीवानां कीदृशी स्थितिर्विद्यते, ये साधुचर्यायाः महत्त्वमेव न जानन्ति। अस्तु! साधवस्तु प्रत्येकप्रकारस्य प्रसंगेषु समताभावमंगीकृत्य प्रसन्नतया तान् तहेरन्। वयमकथयाम यदेकस्मिन् दिने द्विप्रकारस्य अनुभवौ समायातौ। गतदिने सायं अस्मात् स्थानात् 9 किलोमीटर पूर्वं बनौली नामके ग्रामे वयमेकस्य अजैनस्य गृहे रात्रौ विश्रामं कृत्वा अद्य प्रातः तस्मात् स्थानात् निरगच्छाम, तु समीपस्थः गृहस्य एकः सज्जनः पूज्यमातुश्चरणस्पर्शं कृत्वा अकथयत् यत् ''अस्माकं भाग्ये भवत्याः सत्संगः नासीत् अतएव भवती मम गृहे नातिष्ठत्, यदाहमुत्साहपूर्वकं गतदिने स्वगृहं रिक्तमकरवम्, यन्माताऽत्र स्थास्यति अस्मभ्यं च धर्मलाभस्यावसरः प्राप्स्यति।''

दिनाँक 25 जुलाई 1996 की बात है, जब संघ मांगीतुंगी में चातुर्मास स्थापित करने हेतु चाँदवड़ (महाराष्ट्र) से मांगीतुंगी जा रहा था, बीच में तहाराबाद से पूर्व करंजाड नाम का एक छोटा सा गांव था। वहाँ स्कूल में व्यवस्थापकों ने आहार की व्यवस्था की थी। हम लोग जब वहाँ पहुँचे, तो संघस्थ बहनों ने चौके के बाहर बरामदे में ही हमारे बैठने का इंतजाम किया था, पूछने पर ज्ञात हुआ कि यहाँ के लोग अन्य कमरे नहीं देंगे। आमने-सामने वहाँ दो स्कूल थे, उनमें कमरे भी खुले हुए साफ दिख रहे थे किन्तु स्कूल के लोगों की अनुमति बिना संघ का कोई व्यक्ति उनमें घुसा नहीं और जैसे-तैसे तकलीफ सहन करके शुद्धि, आहार आदि सभी कार्य किये गये।

हम लोग आपस में विचार करने लगे कि देखो! बेचारे अज्ञानी जीवों की कैसी स्थिति है, जो साधुचर्या की महत्ता ही नहीं जानते हैं। खैर! साधुओं को तो हर तरह के प्रसंगों में समता भाव रखकर खुशी-खुशी उन्हें झेलना होता है। हमने कहा कि एक ही दिन में दो तरह के अनुभव आ गये। कल शाम को यहाँ से 9 किमी. पहले बनौली नामक ग्राम में हम एक अजैन व्यक्ति के यहाँ रात्रि विश्राम करके आज सुबह वहाँ से निकलने लगे, तो पास के घर वाले एक सज्जन ने पूज्य माताजी के चरणस्पर्श करते हुए कहा कि ''मेरे भाग्य में आपका सत्संग नहीं था इसीलिए आप मेरे यहाँ नहीं ठहरीं, जबकि मैंने कल बड़े उत्साहपूर्वक अपना मकान खाली कर दिया था कि माताजी यहाँ ठहरेंगी और हमें उनसे धर्मलाभ का अवसर प्राप्त होगा।''

अस्मिन् विषये वयं किंचिन्नाजानीम, गतग्रामस्य सटाणा निवासिभिः श्रावकैर्यदुक्तं, वयं तत्रैवातिष्ठाम। तस्य जनस्य नेत्रयोः प्रेम्णा अश्रूणि आगतानि तु माताश्रीः तस्मै संबोधनं कृत्वा प्रचुर आशीर्वादं प्रादात् विहारं च कृत्वाग्रे करंजाडमागत्य तस्मात् विपरीतां स्थितिमपश्याम, तु हास्येन सह तान् जीवान् प्रति करुणापि जाग्रताभवत्।

मध्याह्नस्य सामायिकस्य पश्चात् माताश्रीः मां क्षुल्लकं मोतीसागरमकथयत् यत् ''विद्यालयस्य बालका अध्यापकाश्च प्रवचनेन लाभान्विताः भवेयुः।'' **तदा अहमवश्यमकथयम् यत् मातः! एतावती उदारता तु न भवितव्या, यत्र साधून् प्रति श्रद्धायाः भावाः न सन्ति, तत्र वृथैव प्रवचनेन को लाभः? किन्तु माताकथयत्–वत्से! ईदृशं नैव चिन्तयतु, धर्मात् अनभिज्ञेभ्य एतेभ्योऽज्ञानिप्राणिभ्यः सम्बोधनप्रदानं साधूनां कर्तव्यमस्ति। एतान् प्रसंगान् दृष्ट्वा वयं अपमानं न अवागच्छाम। यतो मम गुरुः आचार्यः शान्तिसागरः वीरसागरश्च अकथयतां–यदा साधौ मानः स्वयमेवनास्ति तदा तस्यापमानः कथं भवितुं शक्नोति?**

पुनः वयं तत्र प्रवचनमकुर्म, प्रश्नमंचमायोजयित्वा बालेभ्य दश पुरस्कारानपि प्रदात्तान् अकुर्म। एतत् सर्वमालोक्य विद्यालयस्य बालकाः अध्यापकाश्च जैनसाधूनां चर्याभिः अत्यन्तमेव प्रभाविताः अभवन् केचिज्जनाश्च मांसाहारस्य, मद्यपानस्यादि परित्यागं धूम्रपानस्य द्यूतस्य च त्यागमकुर्वन्, येन वयमपि प्रसन्नाः अभवाम।

वस्तुतो जैनसाधुचर्यायाः इयं विचित्रतास्ति। अनेकनगरेषु वराकाः जैन श्रावकाः इच्छां

इस विषय में हमें कुछ मालूम भी नहीं था, पिछले गाँव सटाणा के श्रावकों ने जहाँ बताया, हम वहीं रुक गए। उन महानुभाव की आँखों में प्रेम के अश्रु आ गये तो माताजी ने उन्हें सांत्वना देते हुए खूब-खूब आशीर्वाद प्रदान किया और विहार करके आगे करंजाड आकर इससे ठीक विपरीत स्थिति देखी, तो हँसी भी आई और उन जीवों पर करुणा भी जागृत हुई।

मध्यान्ह की सामायिक के बाद माताजी ने मुझे एवं मोतीसागर जी को कहा कि **''स्कूल के अध्यापक एवं बच्चों को प्रवचन सुनाना है।''** तब मैंने अवश्य कहा कि ''माताजी! इतनी उदारता तो नहीं करनी चाहिए जहाँ साधुओं के प्रति श्रद्धा के भाव नहीं हैं, वहाँ फालतू प्रवचन करने से क्या लाभ?'' किन्तु माताजी कहने लगीं– नहीं बेटा! ऐसा नहीं सोचा जाता है, धर्म से अनभिज्ञ इन अज्ञानी प्राणियों को सम्बोधन प्रदान करना साधुओं का कर्तव्य है। इन प्रसंगों में हमें अपना अपमान नहीं मानना चाहिए क्योंकि मेरे गुरु महाराज आचार्य शांतिसागर एवं वीरसागर महाराज कहा करते थे कि साधु के जब मान ही नहीं होता, तो उनका अपमान कैसे हो सकता है?

पुनः हम लोगों ने वहाँ प्रवचन किया, प्रश्नमंच करके बच्चों को 10 पुरस्कार भी प्रदान किये गये। यह सब देखकर स्कूल के अध्यापक एवं बच्चे सभी जैन सन्तों की चर्या से अत्यन्त प्रभावित हुए और कई लोगों ने शराब, अण्डा, माँस, बीड़ी, सिगरेट, जुआ आदि व्यसनों का त्याग किया, जिससे हम लोगों को भी बड़ी प्रसन्नता हुई।

वास्तव में जैन साधुचर्या की यह विचित्रता ही है। अनेक शहर एवं नगरों में जैन श्रावक बेचारे

कुर्वन्ति यत् साधोः मातुः चरणे केनापि प्रकारेण मदीये गृहे पतताम् किन्त्वाहारस्य भोजनशालां विना, चैत्यालयं विना अथवा अन्य कंचित् विशेषं प्रसंगं विना साधवस्तत्र न गच्छन्ति? किन्तु विहारं कुर्वन्त्यः मार्गे विद्यालयेषु, पटेलपाटिलवैष्णवाणां गृहेषु मन्दिरेषु वा स्थानेषु वयं स्वयमेव तिष्ठामः यतः 15 तः 25 किलोमीटर अधिकदूरे एकस्मिन् दिने पद विहारो भवितुं न शक्यते।

संघर्षाः विजये परिवर्तिताः अभवन्–**पूज्या गणिनी ज्ञानमती स्वगुरोः सूक्तिं मान्यतां दत्वा सदैव संघर्षेषु विजयं प्राप्नोत् यत्** ''सूचिकया कार्यं कुरु कर्तरिकया नैव'' **अर्थात् सामाजिक संघटनायां बलं दत्वा सर्वे एकतायाः सूत्रे बद्धाः भवेयुः, विघटनकार्यं कदापि न विधेयम्। मंगलविहाराणां मध्ये अनेकस्थानेषु अनेकाः संघर्षाः समाप्ताः भूत्वा सामाजिकैकताया स्थापनाभवत् किन्तु कानिचित् स्थानानि तु अस्याः वार्तायाः अविनाशि संस्मरणानि भूत्वा स्थितानि सन्ति, यथा—**

1. उज्जैनमध्यप्रदेशे दिगम्बरजैन समाजे कतिचिद्भ्यः वर्षेभ्यः परस्परं विघटनमासीत। यस्य कारणेन मुनिसंघव्यवस्था समितेः मंचेषु अपि कदापि ते विरोधिनः नैव उपविष्टाः अभवन्। महावीर जयन्त्याः वार्षिकान् कार्यक्रमान् अपि द्वौ पक्षौ पृथक्–पृथक् योजयित्वा द्वे रथयात्रे आयोजयताम्। एताः सर्वाः वार्ताः यदा मातुर्ज्ञाने आगच्छन्, तु तत्र 6 मार्च 1996 दिने यदा मातुः 43 तम क्षुल्लिकादीक्षादिनं आयोजितमभवत् मातुश्च प्रेरणया तत्र जयसिंहपुरास्थाने ''भगवतो महावीरस्य तपोवनस्य'' शिलान्यासोऽभवत्, तस्यामेव

तरसते रहते हैं कि महाराज या माताजी के चरण किसी तरह मेरे घर में पड़ जाएँ किन्तु आहार का चौका या चैत्यालय हुए बिना अथवा किसी विशेष प्रसंग के अतिरिक्त साधु उनके यहाँ जाते नहीं हैं किन्तु विहार करते हुए मार्ग में स्कूलों में तथा पटेल, पाटील, वैष्णव मकान-मंदिर आदि स्थानों पर हम लोग अपने आप ठहरते हैं क्योंकि 15 से 25 किमी. से अधिक एक दिन में पदविहार नहीं हो पाता है।

➢संघर्ष विजय में परिवर्तित हो गये–

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपने गुरु की सूक्ति का सदैव पालन करके संघर्षों पर विजय प्राप्त की है कि **''सुई का काम करो कैंची का नहीं''** अर्थात् सामाजिक संगठन पर बल देकर सबको एकता के सूत्र में बाँधना चाहिए, विघटन का कार्य कभी नहीं करना चाहिए। मंगल विहारों के मध्य यूँ तो अनेक स्थानों पर कई संघर्ष समाप्त होकर सामाजिक एकता की स्थापना हुई है किन्तु कुछ स्थान तो इस बात के अमिट संस्मरण ही बनकर रह गए। जैसे–

1. उज्जैन (म.प्र.) की दिगम्बर जैन समाज में कई वर्षों से आपसी फूट थी। जिसके कारण मुनिसंघ व्यवस्था कमेटी के मंच पर भी कभी उन विरोधियों को बिठाया नहीं जाता था। महावीर जयंती के वार्षिक कार्यक्रम भी दोनों ग्रुप अलग-अलग मनाकर दो रथयात्रा निकालते थे। ये सब बातें माताजी को ज्ञात हुईं तो वहाँ 6 मार्च 1996 को जब माताजी का 43वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस मनाया जा रहा था एवं माताजी की प्रेरणा से वहाँ जयसिंहपुरा में ''भगवान् महावीर तपोवन'' का

मंगलवेलायां माता द्वौ पक्षौ निरपेक्षभावेन बोधयित्वा क्षणमात्रे सभायाः मध्ये परस्परं क्षमायाचनां कारयित्वा तयो परस्परं कण्ठग्रहणं अकारयत् सभायां च द्वयोः पक्षयोः घोषणा अभवत् यत् ''अद्य दिनात् वयं संयुक्ताः भूत्वा धर्मप्रभावनाकार्याणि करिष्यामः। महावीरजयन्त्यां एकैव रथयात्रा भविष्यति, तस्मिन् दिने सर्वेषां सामूहिकभोजं भविष्यति, उज्जैने पदार्पणं कुर्वतां सर्वसाधुसाध्वीनां च सदैव सम्मानो भविष्यति, इत्यादिः।''

2. वयं द्रुतगत्या मांगीतुंगीं प्रति अचलाम यत् 16 अप्रैल 1996 दिने नरडाणा–महाराष्ट्रस्य निकटे एकस्या लौहकार्यशालायां रात्रिविश्रामः आसीत्। 17 अप्रैल दिने प्रातः विहृत्य सोनागिरं प्राप्तव्युमासीत् तदा प्रातःकाले पञ्चवादनसमये मांगीतुंगीक्षेत्रात् ब्रह्मचारी गणेशीलालः महामंत्री–क्षेत्र समितिः, डॉ. पन्नालालपापड़ीवाल महामंत्री–मांगीतुंगी पंचकल्याणकसमितिः रविकुमारो जैनः न्यासी आदयः केचिज्जनाः आगत्य गतदिने मांगीतुंगी क्षेत्रे 16 तिथौ घटितायाः अघटितायाश्च घटनाविषये वदन्तः पर्याप्तां चिन्तां रोषं च प्राकटयन्। तेषां संक्षिप्तं विवरणमाकर्ण्य मातुर्मुखात् तत्कालमेव निर्गतं यत् ''कामपि चिन्तां न कुरुथ, संकटः आगच्छत्, दूरोऽभवत्, अधुना युष्माकं कार्यक्रमो निर्विघ्नं गौरवशालिना प्रकारेण संपत्स्यते। यदि कोऽप्यस्मिन् विघ्नं कर्तुं प्रयासमकरोत्, तु सः सफलो न भविष्यति। यूयं स्वकार्ये संलग्नाः भवत, अन्यं प्रति किमपि लक्ष्यं न कुरुत।''

इमां गुरुवाणीमाकर्ण्य सर्वे कार्यकर्तारः प्रसन्नाः भूत्वा स्व–स्वकार्ये संलग्नाः अभवन् प्रतिष्ठाकार्ये

शिलान्यास हो रहा था, उसी मंगलबेला में माताजी ने दोनों पक्षों को निष्पक्षरूप से समझाकर क्षणमात्र में सभा के अंदर परस्पर में क्षमायाचना करवा कर उन्हें गले मिलवा दिया और सभा में दोनों पक्षों की ओर से घोषणा कर दी गई कि **''आज से हम सब एकजुट होकर धर्मप्रभावना के कार्य करेंगे, महावीर जयंती में एक ही रथ निकलेगा, उस दिन सबका सामूहिक भोज होगा तथा उज्जैन में पधारने वाले सभी साधु-साध्वियों का सदैव सम्मान होगा इत्यादि।''**

2. हम लोग तेज रफ्तार से मांगीतुंगी की ओर बढ़े जा रहे थे कि 16 अप्रैल 1996 को नरडाणा (महाराष्ट्र) के निकट एक लोहा फैक्ट्री में रात्रि विश्राम था। 17 अप्रैल को प्रातः विहार करके सोनगिर पहुँचना था तभी प्रातः 5 बजे मांगीतुंगी से ब्र. गणेशीलाल जी (महामंत्री क्षेत्र कमेटी), डा. पन्नालाल पापड़ीवाल (महामंत्री-मांगीतुंगी पंचकल्याणक समिति), रविकुमार जैन (ट्रस्टी) आदि कई लोगों ने आकर मांगीतुंगी में कल 16 तारीख को घटी अघटित घटना के बारे में बताते हुए काफी चिन्ता एवं रोष व्यक्त किया। उनकी संक्षिप्त रिपोर्ट सुनकर पूज्य माताजी के मुँह से तत्काल निकल पड़ा कि **''कोई चिन्ता मत करो, संकट आया था, टल गया, अब तुम्हारा कार्यक्रम बिल्कुल निर्विघ्न शानदार सम्पन्न होगा। यदि किसी ने इसमें विघ्न डालने का जरा भी दुष्प्रयास किया, तो वह सफल नहीं हो पायेगा। तुम लोग अपने कार्य में लग जाओ और दूसरी ओर कोई लक्ष्य मत दो।''**

यह गुरुवाणी सुनकर सभी कार्यकर्त्ता प्रसन्न होकर अपने-अपने कार्यों में संलग्न होकर प्रतिष्ठा

च निमग्नाः अभवन्। 2–4 दिनानि पश्चात् सर्वाणि विघ्नानि स्वयमेव शान्तान्यभवन्। मातुः संघस्य मांगीतुंगी पदार्पणं, 1150 प्रतिमानां पंचकल्याणकं मुनिसुव्रतनाथभगवतः 21 फुट उत्तुंगायाः प्रतिमायाः महामस्तकाभिषेकः आदयः समस्ताः समारोहाः आशातीतया सफलतया सह संपन्ना अभवन्। तत्रोपस्थितां एकलक्षजनतां वीक्ष्य महाराष्ट्रस्य मुख्यमंत्री मनोहरजोशी अपि स्व भाषणे अकथयत् यत् ''अहं अधुनापर्यन्तं महाराष्ट्रस्य कस्यामपि राजनैतिक सभायामपि एतावन्तं जनसमूहं नापश्यम्।

3. मांगीतुंगी क्षेत्रात् वयं दिल्लीं प्रति शीघ्रतया विहारे आस्म, मार्गे 27 फरवरी दिने राजस्थानस्यैकं प्रसिद्धनगरं 'केकड़ी' आगम्, वयं तत्र प्रातः 9 वादनसमये आगच्छाम, त्रिवादनसमये च विहारोऽभूत्, किन्तु एतेषु 6 होरासमयेषु केकड़ी नगरे कायाकल्पोऽभवत्। तत्र वयं प्राचीन प्रतिमाभिः युक्तानां चतुर्णां जिनमन्दिराणां दर्शनमकुर्म एकस्मिन् च नवनिर्मित आदिनाथमन्दिरे स्थानं दृष्ट्वा माताश्रीः सम्मेदशिखरस्य रचनायाः निर्माणस्य प्रस्तावमकरोत्, तत्कालमेव दानिनामिच्छा साकारा अभवत्। पूर्ण प्रारूपं 15 मिनट समये समक्षमायातं आर्थिकलाभेनापि परिपूर्णोऽभवत्।

मध्यान्हे एकवादनसमये तस्यैव मन्दिरस्य विशालसभाभवने प्रवचनसभा संचालिताऽसीत्, तस्याः मध्ये एकः द्वौजनौ क्षुल्लकमोतीसागरमकथयतां यत् अत्र समाजे कतिचिद्भ्यः वर्षेभ्यः संघर्षो विद्यमानोऽस्ति। अस्य मन्दिरस्य मूर्तौ न्यायालयस्याभियोगः चलति। वयमेतेन विघटनेन

के कार्य में लग गये। 2-4 दिन बाद सारे विघ्न स्वयमेव शान्त हो गये और माताजी के संघ का मांगीतुंगी में पदार्पण, ग्यारह सौ पचास प्रतिमाओं का पंचकल्याणक एवं मुनिसुव्रत भगवान् की 21 फुट उत्तुंग प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक आदि समस्त समारोह आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुए। वहाँ उपस्थित 1 लाख जनता को देखकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मनोहर जी जोशी भी भाषण में कहने लगे कि **मैंने आज तक महाराष्ट्र की किसी राजनीतिक सभा में भी इतनी अपार भीड़ नहीं देखी।**

3. मांगीतुंगी से हम सभी वापस दिल्ली की ओर अत्यन्त शीघ्रता के साथ विहार कर रहे थे, रास्ते में 27 फरवरी को राजस्थान का एक नगर ''केकड़ी'' आया, वहाँ प्रातः 9 बजे पहुँचे और मध्यान्ह 3 बजे विहार हो गया किन्तु इन छह घंटों में ही केकड़ी की काया पलट हो गई। वहाँ अत्यन्त प्राचीन प्रतिमाओं सहित चार जिनमंदिरों के दर्शन किये और एक नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में जगह देखकर माताजी ने सम्मेदशिखर की रचना निर्माण की बात कही, तो तुरंत दानदातारों की इच्छा साकार हो गई और पूरा प्रारूप 15 मिनट में तैयार होकर आर्थिक लाभ से भी परिपूर्ण हो गया।

मध्यान्ह में 1 बजे से उसी मंदिर के विशाल हॉल में प्रवचन सभा चल रही थी, इसी मध्य 1-2 महानुभावों ने क्षुल्लक मोतीसागर जी को बताया कि यहाँ कई वर्षों से समाज में काफी आपसी संघर्ष चल रहा है, इस मंदिर की मूर्ति पर कोर्टकेस चल रहा है, हम लोग इस फूट के कारण परेशान

पीडिताः स्मः। यदि माताश्रीः अस्माकमेतं विवादं मैत्रीरूपेण परिवर्तितं कारयतु, तु वयं तस्याः बहुआभारिणो भविष्यामः।

मम प्रवचनस्य मध्ये एव क्षुल्लक महोदयो मातरं सर्वां वार्तामसूचयत्, तदा ज्ञातमभवत् यदेते सज्जनाः अस्मिन् मन्दिरे कदापि चरणन्यासमपि न कुर्वन्ति, ते अद्य भवत्याः प्रवचनश्रवणार्थमागच्छन् ते चाद्य सम्मेदशिखरयोजनायामद्य प्रथमं नाम आलेखयन्। कश्चिज्जनः आगत्य इदमपि अकथयत् यत् अनेकसाधवःसाधर्मिमहानुभावाश्च अस्मिन् विषये पुरुषार्थमकुर्वन् किन्तु अद्यावधिः सफलता न दृश्यते।

पूज्या माता संक्षेपेणैव परिस्थित्याः परीक्षणमकरोत् सभायां च तौ द्वौ पक्षौ सम्बोधितौ अभवताम्। सम्पूर्णः समाजः आश्चर्यचकितो भूत्वा अपश्यत् यत् काचित् विचित्रताभवत्। संयोगवशात् तेन लघु सम्बोधनेनैव द्वौ तौ प्रतिद्वन्द्विनौ परस्परं क्षमायाचनां कृत्वा ग्रीवायां बद्धौ अभवताम्, तदैव सभायां घोषणा अभवत् यत् अद्यदिनात् अस्माकं सर्वः वैरविरोधः समाप्तोऽभवत् वयं चाग्रे कार्येषु सर्वसहयोगं प्रदास्यामः। सर्वेषां नरनारीणां नेत्रेषु प्रेमाश्रूण्यासन्। धन्यः धन्यः, जयः जयः इतिध्वनिः सवेषां मुखेभ्यः निरगच्छत्। ते वराकाः उच्चस्वरेण ध्वनिमकुर्वन् यत् ईदृशी माता अत्र पुनः पुनः आगच्छतु। हे ज्ञानमति मातः! तवायुषि मम जीवनस्य क्षणान्यपि युक्तानि स्युः, भवती दीर्घमायुः लभताम्।

अस्मात् स्थानात् विहारस्य पश्चात् भागचन्द्रः एडवोकेटः मार्गेऽकथयत् यत् अद्यात्र यानि आश्चर्यजनककार्याणि षड्होरासमयेषु भवन्, तानि षट् मासेऽपि संभवानि नासन्।

हैं। पूज्य माताजी यदि हमारे इस झगड़े को मैत्री में परिवर्तित करा दें, तो हम उनके बड़े आभारी होंगे।

मेरे प्रवचन के बीच में ही महाराज जी ने पूज्य माताजी को सारी बात बताई, तभी ज्ञात हुआ कि जो सज्जन इस मंदिर में कभी पैर भी नहीं रखते थे, वे आज आप लोगों का प्रवचन सुनने यहाँ आए हैं और उन्होंने सम्मेदशिखर की नवनिर्माण योजना में आज पहला नाम अपना लिखाया है। किसी व्यक्ति ने आकर यह भी बताया कि कई सन्तों एवं महानुभावों ने अनेक बार इस विषय में पुरुषार्थ किये हैं लेकिन आज तक सफलता नहीं मिल सकी है।

पूज्य माताजी ने संक्षेप में ही स्थिति का परीक्षण किया और सभा में उन दोनों पार्टियों को सम्बोधन प्रदान किया। सारी समाज आश्चर्यचकित हो देख रही थी कि कौन सा जादू हो गया है। संयोगवश उस लघु सम्बोधन से ही दोनों प्रतिद्वन्द्वी आपस में क्षमायाचना करके सबके सामने गले मिल गये तथा सभा में घोषणा कर दी कि आज से हमारा समस्त वैर विरोध समाप्त हो गया तथा हम आगे सभी कार्यों में पूरा सहयोग प्रदान करेंगे। सभी नर-नारियों के नेत्रों में हर्ष के अश्रु थे एवं धन्य-धन्य, जय-जय की ध्वनि सबके मुख से निकल रही थी। बेचारे जोर-जोर से कहने लगे कि ऐसी माता यहाँ फिर-फिर आवें, हे ज्ञानमती माताजी! तुम्हारी आयु में मेरे जीवन के क्षण भी लग जाएँ, तुम्हें ऐसी लम्बी उमर मिले।

यहाँ से विहार करने के बाद भागचन्द जैन एडवोकेट रास्ते में कहने लगे कि आज यहाँ जो आश्चर्यजनक कार्य 6 घण्टे में हुए हैं, वे छह माह में भी संभव नहीं थे। माताजी! हमारे

मातः! अस्माकं केकड़ी जनाः अद्य अतिप्रसन्नाः सन्ति, भवती यत् समाजैक्यमकारयत्, तमुपकारं वयं कदापि विस्मर्तुं न शक्नुमः।

अत्र प्रसंगवशात् मम ध्याने आगच्छत् यत् 3–4 दिनानि पूर्वं केकड़ी नगरात् श्री भागचन्द्रः (वकीलः), मोहनलालो जैनः कटारिया आदयः केचित् महानुभावाः शाहपुरे मातरमामन्त्रणार्थमागच्छन्। पुनः मया सह पदयात्रा कुर्वन् भागचन्द्रः मामकथयत्, मातः! शयनं कुर्वन्नहं गतरात्रौ स्वप्नेऽपश्यम् यत् महतो गजस्योपरि एको लघुः गजः आरूढो वर्तते द्वौ च प्रेमपूर्वकमालिंगनं कुरुतः। ममैतस्य स्वप्नस्य किं फलं भवितुमर्हति? कृपया भवती वक्तुं कष्टं करोतु। एतत् मम शुभस्याशुभस्य वा प्रतीकमस्ति?

अहमकथयम् यत् पश्य! नत्वहं निमित्तज्ञा अस्मि, न ज्योतिर्ज्ञानवती, किन्तु भवतः स्वप्नं श्रुत्वा इदमवश्यं प्रतीयते यत् अयं स्वप्नः कस्यापि मंगलमिलनस्य स्वप्नो विद्यते। वाक्कीलोऽकथयत् यत् पूज्यमातुः ज्ञानमत्याः दर्शनादधिकं किं मंगल मिलनं भविष्यति? किन्त्वद्य यत् असंभवसामाजिकसंघटनायाः कार्य एवं मंगलमिलनस्य कार्यमभवत्, तदाहं वाक्कीलमकथयं यत् भवतः स्वप्नो वास्तवे त्वद्य साकारोऽभवत्।

केकड़ी नगरे निवाई राजस्थान निवासिनः केचिज्जनाः मातरं निवाई नगरे पदार्पणस्य आग्रहं कर्तुमागच्छन्, एतं सर्वं चमत्कारं स्वनेत्रैः प्रत्यक्षं दृष्ट्वा लालचन्द्रः, भागचन्द्रः एतौ द्वौ अन्ये च महानुभावाः मातरं न्यवेदयन् यत् मातः! अस्माकं निवाई नगरे गतवर्षात्

केकड़ी के लोग आज अतीव प्रसन्न हैं, आपने जो सामाजिक एकता हमारे यहाँ स्थापित करवा दी है, उस उपकार को हम लोग कभी भूल नहीं सकते हैं।

यहाँ प्रसंगोपात्त मुझे ध्यान आ गया कि 3-4 दिन पहले केकड़ी से भागचन्द जी वकील साहब, मोहनलाल जैन कटारिया आदि कुछ महानुभाव शाहपुर में माताजी को आमंत्रण देने आए थे पुनः विहार में मेरे साथ पैदल चलते हुए भागचन्द्र वकील साहब ने मुझे कहा–"माताजी! कल सोते हुए पिछली रात्रि में मैंने स्वप्न देखा कि एक बड़े से हाथी के ऊपर एक छोटा हाथी चढ़ा हुआ है एवं दोनों प्रेमपूर्वक आलिंगन कर रहे हैं। मेरे इस स्वप्न का क्या फल हो सकता है? कृपया आप बताने का कष्ट करें कि यह मेरे शुभ का प्रतीक है या अशुभ का?

मैंने कहा कि देखो! न तो मुझे निमित्त ज्ञान है, न ही ज्योतिषज्ञान, किन्तु आपका स्वप्न सुनकर जरुर लगता है कि यह किसी न किसी मंगल मिलन का प्रतीक है। वकील साहब बोले कि पूज्य ज्ञानमती माताजी जैसी महान् साध्वी के दर्शन से ज्यादा और मंगल मिलन क्या होगा? लेकिन आज जब अनहोना सामाजिक संगठन का कार्य हुआ, तब मैंने वकील साहब से कहा कि आपका स्वप्न वास्तव में तो आज साकार हुआ है।

केकड़ी में निवाई (राज.) के कई लोग पूज्य माताजी को निवाई चलने का आग्रह करने हेतु आए हुए थे, यह सारा चमत्कार प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखकर लालचन्द जी, भागचन्द जी आदि महानुभाव विनम्र निवेदन करने लगे कि माताजी! हमारे निवाई में पिछले वर्ष से काफी सामाजिक

पर्याप्तविघटनमभवत्, वयं तेन दुःखिताः स्मः। वयं विश्वासं कुर्मो यत् भवत्याश्चरणन्यासेन तत्रापि अपूर्वा शान्तिः स्थापिता भविष्यति, अतो भवती दयां कृत्वा तत्रावश्यमेव पादन्यासं करोतु। तेषामाग्रहस्य पश्चादपि यतो माधोराजपुरा नगरस्य जयपुरस्य दिल्लीनगर्याश्च पदार्पणस्य तिथयः पूर्वघोषिताः आसन् अतः निवाई निवासिनः निराशां दृष्टा विवशाः अभवाम, परन्तु तत्र वासी श्रीलालचन्द्रः अस्माभिः सह आमेरपर्यन्तं निरन्तरं पदयात्रामकरोत्, प्रस्थानकाले च तस्य नेत्राभ्यां धर्म–प्रेम्णोऽविरलाश्रुधारा निर्गताऽभवत्, सा तस्य गुरोः भक्त्याः प्रतीका आसीत्।

कादेड़ा ग्रामः स्यात् अस्यामेव प्रतीक्षायां आसीत्–**25 फरवरी 1997 दिने सायंकाले वयं बच्छखेड़ा ग्रामात् कादेड़ा ग्रामे आगच्छाम। तत्र मुख्यमार्गे एव स्थापिते ग्रामे रक्तमरीचिकाणां विक्रयकेन्द्रस्य कारणेन भीषण तीक्ष्णतासीत्। कुमारी वीणा शास्त्री तस्य स्थानस्य निरीक्षणं कृत्वा यदाऽऽगच्छत् तदा अधिक छिक्काभिः पीडिताऽऽसीत्, साब्रवीत् यत् ग्रामे तु मरीचिकाणां गन्धकारणेन भवन्त्य स्थातुं न शक्ष्यन्ति अतोऽहं ग्रामात् पूर्वं विद्यालये रात्रौ स्थातुं व्यवस्थां कृत्वा अत्रागच्छम्। वयं तत्रैव गत्वाऽतिष्ठाम पुनः 26 दिनांके प्रातः अग्रे 'खबास' ग्रामाय विहारकाले मार्गे एव निर्मितस्य जिनमन्दिरस्य दर्शनमकुर्म, तत्र मातुः मंगल प्रवचनमप्यभवत् किन्तु तत्र विचित्रा स्थितिरासीत् यत्—**

मन्दिरे प्राचीना मनोज्ञा संगमरमरप्रस्तरस्य कलात्मकवेदिका निर्मितास्ति, सर्वाः जिनप्रतिमाः वेदिकाया बहिर्विराजमानाः सन्ति वेदिकाः च सर्वथा रिक्तास्ति, किन्तु वेदिकायाः शुद्धिः

फूट हो गई है, हम लोग उससे बहुत दुःखी हैं। हमें विश्वास है कि आपके चरण पड़ने से वहाँ भी अपूर्व शांति की स्थापना होगी अतः आप दया करके वहाँ जरुर चलें। उनके अत्यन्त आग्रह के बावजूद भी चूँकि माधोराजपुरा, जयपुर और दिल्ली पदार्पण की तारीखें पहले ही निश्चित हो चुकी थीं अतः निवाई वालों को निराश होना पड़ा पुनः वहाँ के लालचन्द जी हमारे साथ में आमेर तक बराबर पैदल चलते रहे और वापस जाते समय उनकी आँखों से धर्मप्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल रही थी, जो उनकी गुरुभक्ति का प्रतीक थी।

➢कादेड़ा ग्राम शायद इसी इन्तजार में था–

25 फरवरी 1997 की शाम को हम लोग बच्छखेड़ा से कादेड़ा पहुँचे, वहाँ मेनरोड पर ही बसे गाँव में लालमिर्चों का बाजार होने के कारण भीषण तीक्ष्णता थी। कु. बीना शास्त्री वहाँ का सर्वे करके जब वापस आई तो खूब छींक रही थी, उसने बताया कि गाँव में तो धाँस के कारण आप लोग ठहर ही नहीं सकती हैं इसीलिए मैं गाँव के पहले स्कूल में रात्रि विश्राम की व्यवस्था करके आई हूँ। हम सब वहीं जाकर ठहरे पुनः 26 ता. को प्रातः आगे ''खबास'' गाँव के लिए विहार करते समय सड़क पर ही बने जिनमंदिर के दर्शन किए, वहाँ पूज्य माताजी का मंगल प्रवचन भी हुआ किन्तु वहाँ विचित्र स्थिति देखने को मिली कि–

मंदिर में प्राचीन सुन्दर संगमरमर की कलात्मक वेदी बनी हुई है लेकिन बड़ी-बड़ी पद्मासन मूर्तियाँ बाहर रखी हुई हैं और वेदी बिल्कुल खाली पड़ी है। पूछने पर ज्ञात हुआ कि 30 साल से

प्रतिष्ठा च भवितुं नाशक्नोत्। पृच्छायां ज्ञातं यत् अत्र जैन समाजस्य केवलं दश गृहाणि सन्ति, ते सर्वे निवासिनः कार्ये शिथिलाः सन्ति, उदासीनाः वर्तन्ते अतएव अद्यावधिः इदं कार्यं सम्पन्नं नाभवत्। क्षुल्लको मोतीसागरो मार्गेऽपि तेभ्यो महतीं प्रेरणामदात् यत्ते वेदिकायां भगवन्तं शीघ्रातिशीघ्र विराजमानं कुर्वन्तु, अनेन समाजोन्नतिर्भविष्यति।

तैः यथार्थरूपेण स्वीकृतिर्न प्राप्ता अतएव ''केकड़ी'' **श्रावकाणामुपरि अस्य कार्यस्य भारं पातयन्ती माता उक्तवती यत् भवन्तः साधारणमायोजनं कृत्वा 2–4 सहस्राणि रुप्यकाणां व्ययेन वेदी प्रतिष्ठां कारयन्तु, वयं हस्तिनापुरात् विद्वांसं प्रेषयित्वा इदं सर्वं कार्यं सर्वथा संक्षेपेण कारयिष्यामः पुनः घीसालाल जैनः केकड़ीनिवासी आश्वासनमदात् पूज्यमाता च तत्कालमेव 10 मार्च तिथेः 13 मार्च पर्यन्तं मुहूर्तं निश्चित्य सभायां घोषणामकरोत्।**

निश्चितमुहूर्तानुसारेण पं. प्रवीणचन्द्र शास्त्री–जम्बूद्वीपहस्तिनापुरः तत्र प्रेषितः, वेदी प्रतिष्ठापूर्वकं भगवान् वेदिकायां व्यराजत्। सर्वे आनन्दयुक्ताः भूत्वा प्रचुर जय–जयकारमकुर्वन् पुनः केचित् महानुभावा जयपुरं समागत्य अस्मान् अकथयन् यत् मातः! 5–7 सहस्राणां जनसमूहः कादेड़ा स्थाने उपस्थितः आसीत् केषांचित् दातृणां दानघोषणाः तत्राभवन्, भवत्यः आशीर्वादेन महान समारोहः संपन्नोऽभवत्, अग्रेऽपि भवती अस्मासु ईदृशीमेव कृपादृष्टिं करोतु।

ईदृश्याः घटनाः वास्तवेऽपूर्वसंयोगं भवितव्यतामेव सूचयन्ति अन्यथा यत् कार्यं त्रिंशद्वर्षेभ्योऽवरुद्धमासीत्, तत् ज्ञानमत्याः मातुः क्षणिक पदार्पणेन पूर्णमभवत्, प्रबलनिमित्ताद् अतिरिक्तं एवं किञ्चित् अन्यत् न वक्तुं शक्यते।

वेदी बनी हुई है किन्तु वेदी प्रतिष्ठा, शुद्धि आदि नहीं हो पा रही है। यहाँ जैन समाज के मात्र 8-10 घर हैं, वे सब कार्य में ढीले हैं, उदासीन हैं, इसीलिए आज तक यह कार्य नहीं हो पाया। क्षुल्लक मोतीसागर जी ने रास्ते में भी उन लोगों को काफी प्रेरणा दी कि वेदी में भगवान् शीघ्रातिशीघ्र विराजमान करो, इससे समाज की उन्नति होगी।

उनके द्वारा ठीक से स्वीकार न करने पर **''केकड़ी''** के श्रावकों के ऊपर इस कार्य का भार डालते हुए कहा गया कि आप साधारण आयोजन करके 2-4 हजार रुपया खर्च कर वेदी प्रतिष्ठा करा लें, हम हस्तिनापुर से विद्वान् भेजकर यह सारा काम बिल्कुल संक्षेप में करा देंगे पुनः घीसालाल जैन केकड़ी ने आश्वासन दिया और पूज्य माताजी ने तुरंत 10 मार्च से 13 मार्च 1997 का मुहूर्त निश्चित करके सभा में घोषणा कर दी।

निश्चित मुहूर्त के अनुसार पंडित प्रवीणचंद शास्त्री-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर को वहाँ भेजा गया, वेदी प्रतिष्ठापूर्वक भगवान् वेदी में विराजमान हो गये। सभी ने आनन्द विभोर होकर खूब जयजयकार किया पुनः कुछ महानुभाव आकर जयपुर में हम लोगों से बताने लगे कि माताजी! 5-7 हजार की भीड़ कादेड़ा में हुई तथा कई लाख रुपये की बोलियाँ हो गईं, बहुत अच्छा समारोह आपके आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ, आगे भी आप हम सभी पर ऐसी ही कृपादृष्टि रखिएगा।

ऐसी अनहोनी घटनाएँ वास्तव में अपूर्व संयोग या होनहार को ही सूचित करती हैं अन्यथा जो कार्य 30 वर्ष से रुका पड़ा था, वह ज्ञानमती माताजी के क्षणिक पदार्पण से पूर्ण हो जाए, प्रबल निमित्त के अतिरिक्त इसे और कुछ नहीं कहा जा सकता है।

कालानुसारेण साधुचर्यायां चिन्तनं भवितव्यम्–**वयं गुजरातस्य एकस्मिन्नगरे ईडर नामकनगरेऽगच्छाम। तत्रातिभक्तिमान् समाजोऽस्ति मन्दिरेषु च पर्याप्तप्राचीनाः प्रतिमाः व्यराजन्त्। एकस्मिन् लघुपर्वते प्राचीनं जैनमन्दिरं विद्यते, तस्मै मातुः प्रेरणानुसारेण ''ऋषभदेवगिरिः'' नाम दत्तम्।**

अस्मिन् ईडर नगरेऽहमाहारचर्यायाः समये त्रिचतुर्भ्यः भोजनस्थानेभ्यः निवर्तिता अभवम् पुनः प्रकाशचन्द्रजैनस्य श्रावकस्य गृहे आहारोऽभूत्। कारणमिदमासीत् यत् भोजनस्थाने स्टोव–अग्नौ भोजनं पाचितमासित् आहारकाले च स्टोव इत्यस्य बहिष्कृतेऽपि मृदः तैलस्य महान् दुर्गन्धः आसीत्। मम मतौ नागतं यन्मया आहारः कर्तव्यः न वा यतोऽस्माकं संघपरम्परायां–आचार्य शान्तिसागरपरम्परायां स्टोव–गैस अग्नौ वा पाचित भोजनं साधुभ्यः न भक्ष्यमस्ति अतएवाहं तेभ्यः गृहेभ्यः न्यवर्तयम्, प्रशस्ते च आहारस्थाने आहारग्रहणस्य पश्चात् मातरं न्यवेदयम् यदीदृशेऽवसरे किं कर्तव्यम्?

साऽकथयत्, यत् त्वम् सम्यक् अकरोः। यतोऽस्मिन् विषये कोऽपि सामूहिकनिर्णयो नास्ति अतएव प्राचीनपरम्परानुसारेण काष्ठे अंगारे वा पाचितमाहारमेवास्माभिः ग्रह्यमस्ति।

तथापि मम मान्यतास्ति यदेतेषु समसामयिक विषयेषु सर्वे साधवो मिलित्वा विचारः करणीयो विद्यते केषांचिच्च तथ्यानामुद्घोषणा भवितव्या, यथा अद्यकालात् 32 वर्षाणि पूर्वं

➢काल के अनुसार साधुचर्या पर चिन्तन होना चाहिए–

हम लोग गुजरात के एक शहर ''ईडर'' में गए। वहाँ अत्यन्त भक्तिमान समाज है तथा मंदिरों में काफी प्राचीन प्रतिमाएँ हैं। यहाँ एक छोटी सी पहाड़ी पर दिगम्बर जैन मंदिर है, उसे पूज्य माताजी की प्रेरणा से ''ऋषभदेवगिरि'' नाम प्रदान किया गया है।

इस ईडर शहर में आहारचर्या के समय मैं 3-4 चौके से वापस लौटी पुनः प्रकाशचन्द जैन नाम के श्रावक के चौके में आहार हुआ। कारण यह था कि चौके में स्टोव पर खाना बनाया गया था और आहार के समय स्टोव बाहर कर दिये जाने पर भी मिट्टी के तेल (घासलेट, कैरोसिन) की काफी दुर्गन्ध थी। मुझे समझ में नहीं आया कि आहार करूँ या न करूँ? क्योंकि अभी तक अपनी संघ परम्परा (आचार्य शांतिसागर परम्परा) में गैस या स्टोव का बना भोजन साधुओं के आहार में खुला नहीं है। इसीलिए मैं उन घरों से लौट आई एवं प्रशस्त चौके में आहार करने के बाद मैंने पूज्य माताजी से निवेदन किया कि ऐसे अवसर पर क्या करना चाहिए?

उन्होंने तो मुझे कहा कि तुमने ठीक किया। चूँकि इस विषय पर अभी कोई सामूहिक निर्णय नहीं हुआ है इसीलिए पुरानी परम्परानुसार लकड़ी या कोयले की अग्नि पर बना भोजन ही अपने को लेना है।

फिर भी मेरा कहना यही है कि इन सामयिक समस्याओं पर साधुओं को एकजुट होकर मीटिंग करना चाहिए और कुछ तथ्यों की सामूहिक उद्घोषणा होनी चाहिए। जैसे आज से 32 वर्ष पूर्व

दिसम्बर 1974 वर्षे आचार्यः श्रीधर्मसागरः मेरठनगस्य धर्मशालायामुपविश्य 40 साधूनां साध्वीनां च मध्ये कूपजलसम्बन्धिनं निर्णयमनयत् यत् बोरिंगहस्तनलस्य जलं कूपजलवदेव शुद्धमस्ति यतो ह्यधुना ग्रामेषु कूपाः शुष्काः वर्तन्ते। तेषां जलमस्वच्छममेयं चास्ति। गृहस्थश्च लघुचक्कीगोधूमचूर्णं भोज्ये प्रयोक्तुं शक्नोति..... इत्यादि पुनः फरवरी 1975 वर्षे हस्तिनापुरे आचार्यश्रीः भोजनस्थाने मण्डपस्य विषये निर्णयमदात् यत् लिन्टर युक्तेषु स्वच्छंसु पटलेषु मण्डपस्य विना भोजनं गृहीतुं शक्यते, केषुचिच्च च ग्रासतृणनिर्मितेषु पटलेषु मण्डपमावश्यकं वर्तते। एतेन निर्णयानुसारेणैव तस्य संघस्य परम्परायां मध्यमस्तरीयाणां क्रियाणां परिपालनं भवेत्। सम्भवतः ईदृशीनां समस्यानां समाधानहेतवे मूलाचारे आचार्य कुन्दकुन्ददेवः पंचसु–पंचसु वर्षेसु साधवः एकत्रिताः भूत्वा ''युगप्रतिक्रमणं'' **कर्तुं निर्देशमदात्, परन्तु वर्तमाने सा परम्परा लुप्तैवाभवत्। 1987 वर्षे हस्तिनापुरे पूज्या गणिनी माता ज्ञानमती आचार्यविमलसागरेण सह तस्य युगप्रतिक्रमणस्य प्रारम्भीकरणमकरोत् तत्पश्चाच्च सा स्व संघैव पंच–पंचवर्षाणां पश्चात् इदं प्रतिक्रमणं करोति। इदमुत्तमं भवेत्, यदि एकसहस्रसंख्यायां विद्यमानाः आचार्याः उपाध्यायाः मुनयः आर्यिकाः क्षुल्लकाः क्षुल्लिकाः आदयः सर्वे कस्मिन्नपि तीर्थे नगरे वा एकत्रिताः भूत्वा नम्रभावेन परस्परं एकस्य द्वितीयस्य चानुभवान् शृण्वन्तु सर्वे च मिलित्वा किमपि समाधानमन्विष्य समाजे एक समानायाः प्रवृत्तेर्दिग्दर्शनं कारयन्तु।**

दिसम्बर 1974 में परमपूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने मेरठ शहर की रेलवे रोड स्थित धर्मशाला में बैठकर 40 साधु-साध्वियों के बीच में कुएँ के जल से संबंधित निर्णय लिया था कि बोरिंग एवं हैण्डपम्प का जल कुएँ के समान ही शुद्ध है क्योंकि आजकल गाँवों के कुएँ सूख गए हैं, उनका पानी सड़ रहा है तथा घरों की छोटी चक्की का आटा चौके में प्रयोग किया जा सकता है.....इत्यादि पुनः फरवरी 1975 में हस्तिनापुर में आचार्यश्री ने चौके के चंदोवे के विषय में निर्णय दिया कि लिन्टर वाली साफ-सुथरी छतों में बिना चंदोवे के भी आहार हो सकता है और कड़ियों की घास-फूस वाली छत में चंदोवा लगाना आवश्यक है। इन्हीं निर्णयों के अनुसार उस संघ परम्परा में मध्यम स्तरीय क्रियाओं का परिपालन चल रहा है। संभवतः इन्हीं जैसी तमाम समस्याओं के समाधान हेतु ही मूलाचार में आचार्य श्री कुंदकुंददेव ने पाँच-पाँच वर्ष में साधुओं को एक जगह एकत्रित होकर **''युगप्रतिक्रमण''** करने का निर्देश दिया है लेकिन वर्तमान में वह परम्परा लुप्त ही हो गई। सन् 1987 में हस्तिनापुर में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने आचार्य विमलसागर महाराज के साथ में उस युगप्रतिक्रमण का प्रारंभीकरण किया और उसके बाद वे अपने संघ में ही 5-5 वर्ष के बाद यह प्रतिक्रमण किया करती हैं। क्या ही अच्छा हो, यदि 1000 की संख्या में विद्यमान आचार्य, उपाध्याय, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि सभी किसी तीर्थ या शहर में एकत्रित होकर उदार भाव से एक-दूसरे के अनुभव सुनें एवं सब मिलकर कुछ न कुछ समाधान ढूँढकर समाज में एक सदृश प्रवृत्ति का दिग्दर्शन करायें।

स्वप्ने सरस्वत्याः वार्ता साकारोऽभवत्–**पूज्या गणिनी माता ज्ञानमती दिनांके 8 अक्तूबर 1995 दिवसे हस्तिनापुरे जैन सिद्धान्तस्य सर्वोच्चग्रन्थस्य षट्खण्डागमस्य ''सिद्धान्त–चिन्तामणिं'' संस्कृतटीकां लिखितुं दुरुहकार्यं प्रारम्भमकरोत् पुनः 27 नवम्बर दिने मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्राय हस्तिनापुरात् विहारमकरोत्, तदा केवलं 25–30 पृष्ठानां लेखनकार्यमभवत्, अस्मिन् विषये सा एकस्मिन् दिने चिन्तिताभवत् यदहं दीर्घं विहारमचिन्तयं, किन्तु ममेदं लेखनकार्यं मार्गे तु भवितुं न शक्यते, कदा केन प्रकारेण वा टीकेयं पूर्णा भविष्यति?**

संयोगवशात् अग्रिमदिने मातैकं स्वप्नमपश्यत् यत् ''सरस्वती साक्षात् प्रकटिता भूत्वा मां कथयति यत्– ''ज्ञानमति! त्वं चिन्तां न कुरु, तव लेखनं निरन्तरं गतिशीलं स्थास्यति, मार्गे कापि बाधा त्वां बाधितां न करिष्यति।''

माताश्रीः प्रातः मां वदन्ती अकथयत् यत् ''जीवने प्रथमबारं मम सरस्वत्या सह वार्ताभवत्। न जानामि कति सफलतामहं प्राप्स्यामि।''

आश्चर्यं नैव, स्यादियमतिशयोक्तिरेवास्ति यदस्यां यात्रायामपि मातुर्लेखनकार्यं निरन्तरं प्रगतिशीलमासीत् 7 मार्च 1997 दिने च केवल 463 दिवसेषु 1000 पृष्ठेषु प्रथमखण्डस्य षट् पुस्तकानां संस्कृतटीकायाः ऐतिहासिक लेखनकार्यं पूर्णमभवत् द्वितीयखण्डस्य च लेखनकार्यं प्रारभत्।

अस्य मध्ये मांगीतुंगी क्षेत्रात् विहारकालेऽपि यथार्थं अस्य प्रकारस्य स्वप्नोऽभूत् यत्सरस्वती

➢स्वप्न में सरस्वती की बात साकार हो गई–

पूज्य गणिनी माताजी ने 8 अक्टूबर 1995 को हस्तिनापुर में जैन सिद्धान्त के सर्वोच्च सूत्रग्रंथ षट्खण्डागम की "सिद्धान्तचिन्तामणि" नाम की संस्कृत टीका लेखन का दुरूह कार्य शुरू किया था पुनः 27 नवम्बर को मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के लिए हस्तिनापुर से विहार कर दिया, तब तक केवल 25-30 पृष्ठों का लेखन हुआ था, इस बारे में उन्हें एक दिन चिन्ता हो गई कि मैंने इतना लम्बा विहार सोच तो लिया है किन्तु मेरा यह लेखन का कार्य रास्ते में तो हो नहीं सकता है, कैसे और कब यह टीका पूरी होगी?

संयोगवश दूसरे दिन रात्रि में माताजी ने स्वप्न देखा कि "सरस्वती माताजी साक्षात् प्रगट होकर मुझसे कह रही हैं–"**ज्ञानमती जी! तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारा लेखन बराबर चलता रहेगा, रास्ते में तुम्हें कोई बाधा नहीं होगी।''**

माताजी ने सुबह मुझे बताते हुए कहा कि **''जीवन में पहली बार मेरी सरस्वती माता से वार्ता हुई है। पता नहीं कितनी सफलता मुझे मिलेगी!''**

आश्चर्य ही नहीं, शायद यह अतिशयोक्ति ही है कि इस यात्रा में भी माताजी का लेखन कार्य बराबर चलता रहा और 7 मार्च 1997 को कुल 463 दिन में 1000 (एक हजार) पृष्ठों में प्रथमखण्ड की छहों पुस्तकों की संस्कृत टीका का ऐतिहासिक लेखन कार्य पूर्ण किया एवं द्वितीय खण्ड का कार्य प्रारंभ किया।

इस मध्य मांगीतुंगी से विहार करते समय भी ठीक उसी प्रकार का स्वप्न हुआ कि सरस्वती

माता कथयति–''पश्य ज्ञानमति! अहं त्वामकथयम् यत् तव कार्यं रुद्धं न भविष्यति। अधुना तु प्रसन्नासि त्वम् ?''

प्रातः समये पुनः माताश्रीः वक्तुमारभत्–चन्दनामति! पश्य, यत् सरस्वत्या मात्रा कथिताः सर्वाः वार्ताः साकाराः अभवन्। अहं तु जीवने प्रथमबारमेव एतेन प्रकारेण स्वप्नेषु सरस्वती मात्रा सह साक्षात्कारमकरवम्।

अद्य दिनस्य क्षणेषु माम् प्रतीयते यत् यथा पुष्पदन्त–भूतबलिमुन्योः समक्षं मंत्रा सिद्धाः देव्या प्रकटिता अभवन् ताभ्यां च षट्खण्डागमस्य सूत्रग्रन्थस्य लेखनकार्यं पूर्णतायां देवाः समागत्य तयोः पूजामकुर्वन्, एवमेव यदि शारदामातरं दीर्घकालात् सेवमानायां ज्ञानमत्या प्रसन्ना भूत्वा चक्रेश्वर्यादयः काश्चित् व्यन्तरदेव्यः स्वप्ने तस्यै समाधानं प्रदाय सन्तुष्टां अकुर्वन्, तु स्यात् काप्यतिशयोक्तिपूर्णा वार्ता नास्ति।

तद् दृश्यमवलोक्य हृदयं कम्पितमभूत्–**19 जनवरी 1997 दिने वयं ''हाथरवा'' ग्रामात् ''बड़ाली'' ग्राममागच्छाम। तत्र विद्यालयेऽतिष्ठाम, एकस्य दिगम्बरजैनस्य चिकित्सकस्य गृहे आहारस्य प्रबन्धः आसीत्, तत्राहारस्य पश्चात् ''खेडब्रह्मा'' ग्रामं प्रति विहारकाले केचिज्जनाः अकथयन् यत् अधुनैव किञ्चित् मासपूर्वं भूगर्भात् 27 जिनप्रतिमाः प्रकटिताः अभवन्, ताभ्यः प्रायः 15–16 प्रतिमास्तु ईडर निवासिनः दिगम्बरजैनश्रावकाः गृहीत्वा तत्र मन्दिरे विराजमानाः अकुर्वन्, यासां दर्शनमपि वयं कृत्वा आगच्छाम, एतदतिरिक्तं 26 प्रतिमाः अत्र श्वेताम्बरजैनमन्दिरे विराजमानाः सन्ति।**

माता कह रही हैं–**''देखो ज्ञानमती जी! मैंने तुमसे कहा था न कि तुम्हारा काम नहीं रुकेगा। अब तो तुम खुश हो?''**

सुबह होते ही फिर पूज्य माताजी कहने लगीं– चन्दनामती! देखो, सरस्वती माता की कही हुई सारी बातें कैसी साकार हो रही हैं। मैंने तो जीवन में पहली बार ही इस प्रकार स्वप्नों में सरस्वती देवी से साक्षात्कार किया है।

आज के क्षणों में मुझे लगता है कि जैसे पुष्पदन्त-भूतबली मुनियों के समक्ष मंत्र सिद्ध से देवियाँ प्रगट हो गई थीं और उनके द्वारा षट्खण्डागम सूत्रग्रंथ का लेखन पूर्ण कर दिये जाने पर देवताओं ने आकर उनकी पूजा की थी, उसी प्रकार यदि शारदा माता की दीर्घकाल से सेवा कर रहीं अर्थात् साहित्य सृजन कर रहीं ज्ञानमती माताजी से प्रसन्न होकर चक्रेश्वरी आदि कोई व्यन्तर देवियाँ स्वप्न में उन्हें समाधान देकर सन्तुष्ट कर दें, तो शायद कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।

➢दिल दहल गया वह दृश्य देखकर–

19 जनवरी 1997 को हम ''हाथरवा'' से ''बड़ाली'' नामक गाँव में पहुँचे। वहाँ स्कूल में ठहरे, एक दिगम्बर जैन डॉक्टर महानुभाव के घर में चौके लगे, वहाँ आहार के पश्चात् ''खेडब्रह्मा'' की ओर विहार करते समय कुछ लोगों ने बताया कि यहाँ अभी कुछ माह पूर्व भूगर्भ से 27 जिनप्रतिमाएँ निकली थीं, उनमें से लगभग 15-16 प्रतिमाएँ तो ईडर के दिगम्बर जैन श्रावकों ने ले जाकर वहाँ मंदिर में विराजमान की हैं, जिनके दर्शन भी हम लोग करके आए हैं, इसके अतिरिक्त 26 प्रतिमाएँ यहाँ श्वेताम्बर जैन मंदिर में विराजमान हैं।

वयं ताः दृष्टुं ग्रामस्य अन्तः अगच्छाम, तस्य सूचीकारस्य गृहमपश्याम यत्र स्नान–गृहस्य निर्माणाय खननसमये अकस्मात् ताः सर्वाः प्रतिमाः भूगर्भात् प्रकटिताः अभवन्। बड़ालीनगरे दिगम्बर जैन समाजो नास्ति, श्वेताम्बराणां तत्र बाहुल्यं वर्तते, अतएव दिगम्बरजैनसमाजः ताः सर्वाः प्रतिमाः प्राप्तुं नाशक्नोत्। यदा वयं तस्मिन् श्वेताम्बरमन्दिरे तासां मूर्तीनां स्थितिं दृष्टुं गताः, तु सत्यमेव हृदयं कम्पितमभवत्। ते जनाः ताः मूर्तीः न केवलं स्वाधिकारेऽकुर्वन् अपितु सर्वासां मूर्तीनां लिंगानि छिन्नानि अकुर्वन् यदप्येतत् विचारणीयं जघन्यं कृत्यमस्ति। नव मूर्तीनां निर्माणं स्व–स्वमतानुसारेण कोऽपि कारयतु, इदं तु सहजं सुलभं वर्तते, किन्तु प्राकृतिक प्राचीनानां दिगम्बर जैन प्रतिमानां दिगम्बरत्व मुद्रायाः छेदनस्य दुस्साहसः अग्रिमभवे किं फलं प्रदास्यति? चिन्तन्तु पापभीरवः च यत् वयं कस्यापि साधारणमनुष्यस्य, योऽस्माकं शत्रुरस्ति, तस्यापि किमपि अंग प्रत्यंगं च छेदनं कुर्मः तु एकः नैतिकापराधः मान्यते, तु त्रिलोकनाथस्य भगवतः प्रतिमासु एव एतादृशानि प्रहारकरणानि अपराधोऽस्ति न वा? स्वयं चिन्तनं कुरुत।

यदि साधुदीक्षामगृह्णारतु सोढुमेव भविष्यति–**अनेकशः आहारस्य पश्चात् महिलानां एकं गीतं श्रूयते–**

''मातः! दीक्षां देहि, त्वया सह यास्यामि। अहं मोदकभक्षणपरास्मि, रोटिका मह्यं न रोचते। रोटिकयां निर्वाहं करिष्यामि किन्तु त्वया सह यास्यामि।''

हम उन्हें देखने गाँव के भीतर गए, तो उस दर्जी के घर को देखा जहाँ बाथरूम बनाने के लिए खुदाई करते हुए अचानक वे सारी प्रतिमाएँ भूगर्भ से निकल पड़ीं। बड़ाली में चूँकि दिगम्बर जैन समाज है नहीं, श्वेताम्बरों की वहाँ पर बहुलता है इसीलिए दिगम्बर समाज को वे सारी मूर्तियाँ नहीं मिल सकीं। हम जब उस श्वेताम्बर मंदिर में उन मूर्तियों की स्थिति देखने गये तो सचमुच दिल दहल गया। उन लोगों ने मूर्तियों को अपने कब्जे में ही नहीं किया बल्कि सभी प्रतिमाओं के लिंग काट दिए। वैसे यह अत्यन्त विचारणीय जघन्य कार्य है। नई मूर्तियों का निर्माण अपने-अपने मतानुसार कोई भी करा ले, यह तो सहज सुलभ है किन्तु प्राकृतिक दिगम्बर प्राचीन प्रतिमाओं की दिगम्बरत्व मुद्रा काटने का दुःसाहस भला अगले भव में क्या फल प्रदान करेगा? थोड़ा सोचें एवं पाप भीरु बनें कि यदि हम किसी साधारण मनुष्य, जो अपना शत्रु है, उसके भी कोई अंग प्रत्यंग को काट दें तो एक नैतिक अपराध माना जाता है, तो तीन लोक के नाथ भगवान की प्रतिमाओं पर ऐसे प्रहार करना अपराध है या नहीं? स्वयं चिन्तन करें।

➢साधु बने हैं तो सहना ही पड़ेगा–

कई बार आहार के पश्चात् महिलाओं को एक गीत गाते सुना जाता है–

''माताजी दीक्षा दे दो, चलूँगी थारे साथ।
मैं लड्डू खाने वाली, मुझे रोटी लगे उदास।
रोटी में गुजर करूँगी, चलूँगी थारे साथ।।''

एतद् गीतमाकर्ण्य कदाचिदहमहसम् अचिन्तयम् यत् ''श्रावकजनास्तु बराकाः भक्तिवशात् आहारे एतानि वस्तूनि निर्मितानि अकुर्वन्, यत् वयं साधुजनाः तानि दृष्ट्वैव क्लेशमनुभवामः स्वचर्याणां च–स्वाध्याय–सामायिकादीनां क्रियाणां अप्रमादचर्या निर्वाहहेतवे कदाचित् वयं तेषां वस्तूनां त्यागमपि कर्तुं विवशाः भवामः, तथापि महिलाः गीते अनेन प्रकारेण किमर्थं वदन्ति? किन्तु नवे ग्रामे, नवेषु प्रदेशेषु पदविहारसमये आहारसम्बन्धिताः सर्वेऽनुभवाः प्राप्नुवन्ति, तु तासां पंक्तयः सार्थक्याः प्रतीयन्ते।''

वयं राजस्थानस्य एकस्मिन् ग्रामे झालरापाटने आस्म, तत्रानेक आहारस्थानेसु यत्र–यत्र यस्य विधिः दृष्टस्तत्र तत्र अगच्छाम। मम यत्र प्रतिग्राहणमभवत्, तत्राहारस्य समस्तेषु वस्तुषु लवणस्थाने निर्मली मिश्रिता आसीत। समीपे उपविष्टाः संघस्थाः ब्रह्मचारिण्यः भगिन्यः शोधनं कृत्वा जनेभ्यः आहारं दापयन्ति स्म। मह्यं सूप–शाक किमपि नारोचत् किन्तु साधुचर्यायाः कठिनतामवगम्य प्रायः प्रतिदिनमिवाहारमगृह्णम्। कोऽपि किमपि नाजानात् काचित् अरुचिकरास्ति। फलेस्वपि लवणमवधार्य निर्मल्या मिश्रणं कृत्वा ददति स्म, संकेतं कर्तुं स्वभावो नासीत् अतोऽहं कानिचित् फलान्यपि अगृहणम् पुनः आहारस्य पश्चात् यदाहं स्थानमागत्य पूज्यमातरं प्रत्याख्यानमगृह्णम् तदा अकथयम् यत् आहारे निर्मली ग्रहणकारणेन मनो वमनं कर्तुमिवास्ति। माता अल्पं अमृतधाराया घृतस्य च लेपनमकारयत् कथयितुं च प्रारभत् यत्—

यह गीत सुनकर कभी मैं हँसा करती थी और सोचा करती थी कि ''श्रावक लोग तो बेचारे भक्तिवश चौके में इतनी सारे चीजें बनाते हैं कि हम साधुजन उन्हें देखकर ही घबड़ा जाते हैं और अपनी चर्या-स्वाध्याय-सामायिक आदि क्रियाओं की निष्प्रमाद चर्या निर्वाह हेतु कभी-कभी हमें उन चीजों का त्याग भी करना पड़ता है, फिर ये महिलाएँ गीत में ऐसा क्यों बोलती हैं? किन्तु वास्तव में नये गाँव, नये प्रदेशों में पदविहार करने पर आहारसंबंधी तमाम अनुभव आते हैं, तो उनकी पंक्तियाँ सार्थक प्रतीत होने लगती हैं।''

हम राजस्थान के एक गाँव झालरापाटन में थे, वहाँ अनेक चौकों में जहाँ-जहाँ जिसकी विधि मिली, वहाँ गये। मेरा जहाँ पड़गाहन हुआ, वहाँ आहार की सारी वस्तुओं में नमक की जगह फिटकरी मिली हुई थी। संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें पास में बैठकर शोधन कर-करके लोगों से आहार दिलवा रही थीं। मुझे दाल, सब्जी कुछ अच्छी नहीं लग रही थी किन्तु साधुचर्या की कठिनता समझ-समझ कर लगभग प्रतिदिन की भाँति ही आहार ले लिया, कोई कुछ समझ नहीं पाया कि कुछ गड़बड़ है। यहाँ तक कि फलों में भी नमक समझकर फिटकरी मिला-मिला कर देते रहे, संकेत न करने की आदत के कारण मैंने थोड़े-बहुत फल भी ले लिए पुनः आहार के बाद जब मैंने स्थान पर आकर पूज्य माताजी से प्रत्याख्यान ग्रहण करते समय बताया कि आहार में फिटकरी लेने के कारण जी मिचली हो रही है। माताजी ने थोड़ा अमृतधारा और घी की मालिश करवाई और कहने लगीं कि–

वत्से! यदि साधुरसि, तु एतत्सर्वं तु सोढव्यमेव अन्यथा कर्मनिर्जरा केन प्रकारेण भविष्यति? ईदृशा अनुभवाः प्रायः कुत्रचित् आगच्छन्त्येव। यदा लवणस्य स्थाने अन्यत् वस्तु, लवणाधिक्यं वा लवणमप्रयुक्तभोजनं स्यात् तदा गुरुकृपया प्रसन्नतया सहनेन किमपि कष्टं नानुभूयते आहारे च कटु तूमड़ी आदीनामितिहासं स्मृत्वा कष्टं सोढुं अपूर्वा क्षमतापि उपजायते।

कुमार्याः सुवर्णायाः अपूर्वा पदयात्रा–**साधुभिः सह सर्वेषामेव ग्रामाणां नगराणां च श्रावकाः श्राविकाश्च अल्पाधिकदूरमार्गे पदैः चलित्वा तान् गृहीतुं प्रस्थातुं वा गच्छन्त्येव परन्तु तैः सह सहस्राणां किलोमीटराणां पदयात्रिणः जनाः न्यूनमेव प्राप्यन्ते, तेषु न्यूनजनेषु एका युवती बालाऽऽसीत् सुवर्णा जैना, या उत्तरप्रदेशस्य टिकैतनगरात् मांगीतुंगीमागत्य संघेन सह विहर्तुं हार्दिकेच्छां व्यक्तामकरोत्। स्वपितरं सुभाषचन्द्र जैनेन बलात् अनुमतिमप्यगृह्णात्। तदा तु सा सम्पूर्णाणां 135 दिनानां पदयात्रां अस्माभिः सह कुर्वन्ती पुष्पाणां–शूलानां, नदीनां–पर्वताणां, प्रस्तरकणानां–प्रस्तराणां च मार्गाणां अस्माभिः सह पादैः चलित्वा गुरुकृपायाः लाभं प्राप्नोत्। मध्ये भ्रातुः भ्रातृजायाः चागमनेऽपि यात्रां त्यक्त्वा सा न प्रतिनिवृत्ता अतएव सम्पूर्णायाः यात्रायाः कटु–मधुरान् अनुभवान् प्राप्य सा जीवने प्रथमं अमूल्यावसरं प्राप्नोत्। ज्ञातव्यमस्ति यत् कुमारी सुवर्णा पूज्य ज्ञानमत्याः मातुः गृहस्थावस्थायाः भ्रातु पुत्री अस्ति।**

अन्य पुण्यशालिनोऽपि पदयात्रायां भागमगृह्णन्–**मांगीतुंगीक्षेत्रात् दिल्लीपर्यन्तं विहारे सुवर्णायाः पश्चात् द्वितीये स्थाने सर्वाधिकपदयात्रायाः सौभाग्यं प्राप्तवन्तौ उज्जैन–मध्यप्रदेश**

"बेटा! साधु बने हो, तो यह सब तो सहना ही पड़ेगा वर्ना कर्म निर्जरा कैसे होगी?" ऐसे अनुभव कई जगह प्रायः आते ही रहते हैं, जब या तो नमक की जगह दूसरी चीज या नमक बहुत अधिक हो गया अथवा डाला ही नहीं गया, तो गुरुकृपा से खुशी-खुशी सहन करने में कोई कष्ट महसूस नहीं होता है और आहार में कड़वी तूमड़ी आदि के इतिहास याद करके कष्ट सहन करने की अपूर्व क्षमता भी आती है।

➢कु. सुवर्णा जैन की अपूर्व पदयात्रा–

यूँ तो साधुओं के साथ सभी गाँव-शहरों के श्रावक-श्राविकाएँ थोड़ी-बहुत दूर तक पैदल चलकर उन्हें लेने या पहुँचाने तो जाते ही हैं किन्तु उनके साथ हजारों किमी. की पदयात्रा करने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं, उन कम लोगों में एक युवा बालिका रही-सुवर्णा जैन, जिसने उत्तर प्रदेश के टिकैतनगर ग्राम से मांगीतुंगी आकर संघ के साथ विहार करने की हार्दिक इच्छा व्यक्त की एवं अपने पिता सुभाषचन्द्र जैन से जबर्दस्ती आज्ञा भी ले ली। फिर तो उसने पूरे 135 दिन की पदयात्रा हम लोगों के साथ करते हुए फूल-शूल, नदी-पहाड़, कंकड-पत्थर के मार्ग तय किये एवं अपूर्व प्रसन्नता के साथ गुरुसानिध्य का लाभ उठाया। बीच में भैया एवं पापा के आने पर भी यात्रा छोड़कर वह वापस नहीं गई अतः पूरी यात्रा के खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्तकर उसने जीवन में प्रथम अमूल्य अवसर प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि कु. सुवर्णा पूज्य ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की भतीजी है।

➢अन्य पुण्यशालियों ने भी पदयात्रा में भाग लिया–

मांगीतुंगी से दिल्ली तक के विहार में सुवर्णा के पश्चात् द्वितीय नम्बर में सर्वाधिक पैदल चलने

निवासिनौ दुर्लभकुमारो जैनः तत्पत्नी च श्रीमती सुदेश जैना, यौ 5 जनवरी 1997 दिनात् 6 मार्च पर्यन्तं 814 किलोमीटर पर्यन्तं अस्माभिः सह चलित्वा सुखदुःखयोः सर्वेषु क्षणेषु सदा मन्दहास्येन युक्तौ आस्ताम्।

एवमेव ब्र. गौतमचन्द्रः तत्पत्नी ब्र. इन्दुमती जैना औरंगाबादनिवासिनौ, कुमारी साधना मांगीतुंगी, शुभचन्द्रो जैन, टिकैतनगर निवासी, कु. प्रीति जैना चांदवड (महा.) निवासिनी, कुमार्यौ समता नम्रता च श्रीरामपुर निवासिन्यौ, श्रीमती कान्ता जैना धर्मपत्नी हीरालालस्य अहमदाबाद निवासिनी, महावीर प्रसादो जैनः लावा (राजस्थान) निवासी, लालचन्द्रजैनः निवाईवासी श्रीमती कुमुदिनी जैना तस्या सुपुत्री च कु. सरिता जैन कानपुर निवासिन्यौ, श्रीमती मालती जैना तत्पुत्रश्च पारस जैन दिल्ली आदयः शतशः किलोमीटर दीर्घां पदयात्रां कृत्वा सत्संगस्य पूर्णं लाभं प्राप्तवन्तः। एवमेव मांगीतुंगी गमनकाले सौभाग्यवती शोभा जैना शरदपहाड़े च श्रीरामपुर (महा.) निवासिनौ, प्रवीण–प्रमोद जैनौ मांगीतुंगी निवासिनौ, विशाल–रिंकेश–दीपेश–रूपेशाः सर्वे सनावद निवासिनः कुमारी ऋतु जैन सनावद निवासिनी, नवयुवक मण्डलं कापडणा (महाराष्ट्र) आदीनां पदविहारे महत्वपूर्णं योगदानमासीत्।

सुकुमारबालिकानां अश्रान्तपरिश्रमः–**अस्मिन् दीर्घे पदविहारे सर्वाधिका चिन्तेयमासीत् यत् लाला महावीर प्रसादो जैनः संघपतिः लक्षाणां रूप्यकाणां व्ययं तु करिष्यति किन्तु मार्गे संघसंचालनस्य दुरुहभारं कः धारणं करिष्यति? संघे स्थिताः लघ्व्याः कोमलाः ब्रह्मचारिण्यः**

का सौभाग्य प्राप्त किया दुर्लभ कुमार जैन-उज्जैन (म.प्र.) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश जैन ने, जो 5 जनवरी 1997 से 6 मार्च तक 814 किमी. हम लोगों के साथ चलकर सुख-दुःख के सभी क्षणों में सदा मुस्कराते रहे।

इसी प्रकार से ब्र. गौतमचन्द्र और उनकी ध.प. सौ. ब्र. इन्दुमती जैन-औरंगाबाद (महा.), कु. साधना-मांगीतुंगी, शुभचन्द्र जैन (टिकैतनगर-उ.प्र.), कु. प्रीति जैन-चांदवड़ (महा.), कु. समता एवं नम्रता जैन-श्रीरामपुर (महा.), सौ. कान्ता जैन ध.प. हीरालाल जैन-अहमदाबाद, (गुज.), महावीर प्रसाद जैन-लावा (राज.), लालचंद जैन-निवाई (राज.), श्रीमती कुमुदनी जैन एवं उनकी सुपुत्री कु. सरिता जैन-कानपुर (उ.प्र.), श्रीमती मालती जैन एवं उनके सुपुत्र चि. पारस जैन-दिल्ली आदि ने सैकड़ों किमी. की पदयात्रा करके सत्संग का पूरा-पूरा लाभ उठाया। इसी प्रकार मांगीतुंगी जाते समय सौ. शोभा एवं शरद पहाड़े-श्रीरामपुर (महा.), प्रमोद एवं प्रवीण जैन-मांगीतुंगी, विशाल जैन, रिंकेश, दीपेश, रूपेश-सनावद (म.प्र.), कु.ऋतु जैन-सनावद, नवयुवकमंडल-कापडणा (महा.) आदि का पदविहार में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

➢सुकुमार बालिकाओं का अथक परिश्रम–

इतने लम्बे विहार में सबसे बड़ी चिन्ता यह थी कि लाला महावीर प्रसाद जी संघपति के रूप में लाखों रुपया तो खर्च कर देंगे किन्तु रास्ते में संघसंचालन का दुरूह कार्य कौन करेगा? संघ में रहने वाली छोटी-छोटी कोमल ब्रह्मचारिणी कन्याएँ मात्र आत्मकल्याण और विद्या अध्ययन के

कन्याः केवलमात्मकल्याणाय विद्याध्ययनाय च मातुश्छत्रछायायां तिष्ठन्ति। तासां समीपे संघ विहारस्य न त्वनुभवः आसीत् न चैतावान् परिश्रमः तासां वशे आसीत्। पूज्या माता कदाचित् स्वास्थ्य कारणेन कदाचिच्च अन्याः सर्वां कठिनताः अवलोक्य एवं विहारं रोद्धुं तत्परा आसीत्।

पुनरपि एकस्मिन् दिनेऽहमकथयम् यत् मातः! मम कारणात् इमां यात्रां स्थगितां न करोतु, भवत्याः आशीर्वादः प्रतिपल यदा मह्यम् प्राप्तोऽस्ति, तदा मयि अवश्यमेव शक्तिरागमिष्यति विश्वासं च करोमि यदियं यात्रा निर्विघ्नं संपत्स्यते।

पुनः कुमारी वीणा–आस्था च यदा इदमकथयतां यत् मार्गेऽधुना संघ संचालनस्य समस्या वर्तते, मातुः मांगीतुंगी विहाराय पूर्णेच्छा वर्तते। तदा ते द्वे भगिन्यौ तत्कालमेव आश्वासनं दत्वा अकथयतां यत् मातः! भवती निश्चिन्ता भूत्वा विहारं करोतु, समस्ताः व्यवस्थाः कृत्वा भवत्यो यात्रायां सहभागिन्यौ भविष्यावः। द्वे च भगिन्यौ ब्र. श्रीचन्द्रश्च सम्पूर्णायाः व्यवस्थायाः भारमगृह्णन्। तैः सह कुमारी सारिका, कुमारी चन्द्रिका, कुमारी इन्दुः, कुमारी अलका, कुमारी प्रीतिरादयः सुकुमार्यः बालिकाः अत्यन्तेन परिश्रमेण इमां यात्रां सम्पन्नां अकारयन्, तत् अवश्यमेव चिरस्मरणीयं वर्तते। दिल्ली नगर्याः भक्त–श्रावकाः प्रत्येकस्य ग्रामस्य च श्रावकाः एताः कन्याः अवलोक्याकथयन् मातः! तव संघस्य बालिकास्तु प्रत्येककार्ये निपुणाः वर्तन्ते, मंचे भजनगायनस्य, भाषणस्य, पाकस्थाने, अध्ययनकाले अध्यापने वा, सर्वेषु क्षेत्रेषु एता सर्वाः पूर्णकुशलतया भागं गृह्णन्ति। अहमकथयम् यत्

लिए माताजी की छत्रछाया में रहती हैं। उन्हें संघविहार कराने का न तो अनुभव ही था और न इतना परिश्रम करना ही उनके बस का था। पूज्य माताजी कभी मेरे स्वास्थ्य की वजह से और कभी अन्य सबकी परेशानी देखकर इस विहार से पीछे हट जाती थीं।

फिर जब एक दिन मैंने कहा कि पूज्य माताजी! मेरे कारण आप इस यात्रा को मत स्थगित कीजिएगा, आपका आशीर्वाद जब प्रतिपल मुझे प्राप्त हो रहा है, तब मुझे अवश्य शक्ति मिलेगी और मुझे विश्वास है कि यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होगी।

पुन. कु. बीना-आस्था को भी जब मैंने बताया कि अब केवल रास्ते में संघ संचालन की समस्या है वर्ना माताजी की मांगीतुंगी विहार करने की पूरी इच्छा बन गई है, तब उन दोनों बहनों ने तुरंत आश्वासन देते हुए कहा कि माताजी! आप निश्चिंत होकर विहार कीजिए, हम लोग सारी व्यवस्था संभालकर आपकी यात्रा में सहभागी बनेंगे। इस प्रकार दक्षिण यात्रा शुरू हुई और दोनों बहनों ने तथा ब्र. श्रीचन्द जी ने सारी संघव्यवस्था संभाली, उनके साथ-साथ कु. सारिका, कु. चन्द्रिका, कु. इन्दु, कु. अलका एवं कु. प्रीति आदि छोटी-छोटी सुकुमार बालिकाओं ने जिस अथक परिश्रम से यह यात्रा सम्पन्न कराई है, वह वास्तव में अविस्मरणीय है। दिल्ली के भक्त श्रावक एवं हर गांव के लोग इन कन्याओं को देखकर कहने लगते कि माताजी! आपके संघ की बहनें तो प्रत्येक कार्य में निपुण हैं, स्टेज पर चाहे भजन गाने का हो या भाषण करने का, चौके में हो या अध्ययन में अथवा अध्यापन आदि सभी क्षेत्र में ये लोग पूर्ण कुशलता के साथ भाग लेती हैं। मैंने

एतत् सर्वं पूज्यमातुराशीर्वादस्यैव फलमस्ति। यत् अस्याः समीपे स्थितः प्रत्येकजनः सर्वतोमुखीप्रतिभायाः सम्पन्ना संजायते।

स्वकर्तव्यं पालयन्त्यः एताः बालिकाः मार्गे सर्वेषां सुख–दुःखानामनुभवं कृत्वा च सर्वदा स्थिरतायाः एव परिचयमदुः। ताभ्यः मंगलआशीर्वादं दत्वाहं ताभ्यः चरित्रवृद्धेः मंगलकामनां करोमि।

दीक्षास्थल्याः माधोराजपुरानगरस्य आत्मीयता–**अद्य समयात् 50 वर्षाणि पूर्वं राजस्थानस्य यस्यां पवित्रायां नगर्यां माधोराजपुरे नाम्नि नगरे युगस्य प्रथमा बालब्रह्मचारिणी आचार्य–श्रीवीरसागरस्य करकमलाभ्यां आर्यिकादीक्षां गृहीत्वा** ''ज्ञानमती'' **नाम प्राप्तमकरोत्। तस्य नगरस्य श्रावकाणां अत्यधिकाया भक्त्या कारणेन माधोराजपुरा नगरेऽपि संघस्य पदार्पणं गुरुवारे 6 मार्च 1997 दिवसेऽभवत्। ज्ञानमती मातापि दीक्षायाः पश्चात् प्रथमबारं तत्रागच्छत्, अतएव तस्य स्थानस्य उत्साहस्य प्रसन्नतायाश्च किमपि स्थानं नासीत्।**

नगरप्रवेशस्य वेलायां दिल्लीनगरात् संघपतिरपि पूर्णेन दलबलेन सह तत्रागच्छत् यतस्तान् माधोराजपुरावासिनः अत्याग्रहपूर्वकं निमन्त्रणं प्रैषयन्। दीक्षानगरी नववधूरिव बहुसज्जिताऽभवत्, तत्रैव राजकीयप्राथमिकविद्यालयात् प्रारम्भायां शोभायात्रायां विशेषरूपेण त्रयोऽश्वाः अपि आगताः, ये राजस्थानस्य, अवधस्य दिल्लीराजधान्या च नाम्ना प्रतिनिधित्वं कुर्वन्तः तत्र नवयुवकान् समुपवेश्याग्रेऽचलन्। नगरे प्रवेशद्वारे अन्यत्र च द्वारेषु मातुर्विशालानि

कहा कि यह सब पूज्य ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद का ही फल है, जो कि उनके पास रहने वाला हर व्यक्ति सर्वतोमुखी (आलराउन्डर) हो जाता है।

अपने कर्तव्य का पालन करते हुए इन बालिकाओं ने रास्ते के सारे सुख-दुःखों का अनुभव करते हुए भी सदैव मुस्कराहट का ही परिचय दिया। इसके लिए उन्हें बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद देते हुए मैं उनके चारित्रवृद्धि की मंगल कामना करती हूँ।

➢दीक्षास्थली माधोराजपुरा की आत्मीयता–

आज से 50 वर्ष पूर्व राजस्थान की जिस पवित्र नगरी माधोराजपुरा में युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी ने आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा धारणकर **''ज्ञानमती''** नाम प्राप्त किया था, वहाँ के श्रावकों की अत्यधिक भक्ति के कारण माधोराजपुरा में भी संघ का पदार्पण गुरुवार, 6 मार्च 1997 को हुआ। पूज्य माताजी भी दीक्षा के बाद पहली बार वहाँ पहुँच रही थीं इसीलिए वहाँ के उत्साह एवं प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था।

नगर प्रवेश की मंगल बेला में दिल्ली से भी संघपति जी पूरे दलबल के साथ पहुँच गये क्योंकि उन सभी लोगों को माधोराजपुरा वालों ने अतीव आग्रहपूर्वक आमंत्रण भेजा था। दीक्षा नगरी जहाँ किसी नववधू की भांति खूब सजाई गई थी, वहीं राजकीय प्राथमिक विद्यालय स्कूल से प्रारंभ होने वाले जुलूस में विशेष रूप से तीन घोड़े भी मंगाए गए थे, जो राजस्थान, अवध एवं राजधानी दिल्ली के नाम से प्रतिनिधित्व करते हुए वहाँ के नवयुवकों को बैठाकर आगे-आगे चल रहे थे। मुख्य

चित्राणि संलग्नानि आसन्। विविधप्रकारस्य वस्तुभिः विद्युता, झालर–घन्टादिभिः रचितान्यासन्, सर्वेषां जातीनां सम्प्रदायानां च प्रमुखाः नागरिकाः स्वनेत्राणि विस्तार्य स्वनिधेः स्वागतं कर्तुमातुराः आसन्। गुलाबपुष्पाणां च रत्नानां तारकाणां च वर्षां कृत्वा भवनानां पटलेभ्यः अट्टालिकाभ्यः पतोलीभ्यश्च उत्प्लुत्य जनाः जयनिनादैः जयकारैश्च नगरीं गुंजायमानामकुर्वन्।

पूज्या माता तत्र त्रीणि दिनान्यतिष्ठत् तु हिन्दवः, मुसलमानाः जैनादयश्च सर्वासां जातीनां बन्धवः स्व विपणीः प्रतिष्ठानानि च बद्धान्यकुर्वन् प्रवचन सभायां च भागमगृह्णन्। ग्रामे याः अपि संस्थाः, समितयः, समाजाश्चासन्, सर्वासां प्रायः 20–25 प्रतिनिधयः मातुः सम्मानमकार्षुः पुनः तेभ्यः मातुः चित्रं, पूज्यमात्रारचितं साहित्यं च उपहाररूपेण दत्तम्।

पुत्र्या आगमनस्यापि मुहूर्तं भवति–**वयं 5 मार्च दिने सायं फागीस्थानात् विहृत्य 5 किलोमीटर दूरे एकस्यां जलपान कुट्यामागच्छाम, तस्मात् स्थानात् माधोराजपुरा केवलं 3 किलोमीटर दूरे आसीत्। यद्यपि तत्र स्थानमल्प किन्तु विस्तृतक्षेत्रस्य कारणात् ते जनाः मण्डपं, अस्थायिवस्त्रगृहाणि कृत्वा रात्रौ पर्याप्तं भजन–कीर्तनं कृतवन्तः, शतशो जनाः रात्रौ तत्रैव शयनमकुर्वन्।**

6 मार्च दिने प्रातः 7 वादनसमये माधोराजपुरा नगरस्य केचित् पुरुषाः 1–2 महिले चागत्य मातरं श्रीफलं समर्पयन्, अस्मभ्यं च सर्वाभ्यः शाटिकाः उपाहरन् अवदन् च ''मातः! अधुना भवती पितृगृहं प्रति प्रस्थानं करोतु, वयं भवतीं प्रस्थानं कारयितुं आगच्छाम।'' **इदं श्रुत्वा वयं**

प्रवेशद्वार पर एवं अन्य कई द्वारों पर माताजी के बड़े-बड़े फोटो (कट आउट) लगाए गए थे। तरह-तरह के झाड़-फानूस, बिजली, झालर, घंटे आदि सजाकर समस्त जाति-सम्प्रदाय के नागरिक पलख पांवड़े बिछाकर अपनी निधि का स्वागत करने को आतुर थे। गुलाब के फूलों की वृष्टि, रतन एवं सितारों को बरसाकर मकानों की छत से, अटारियों से एवं गलियों से उछल-उछलकर लोग नारे एवं जयजयकारों से नगरी को गुंजायमान कर रहे थे।

पूज्य माताजी वहाँ तीन दिन रुकीं तो हिन्दू, मुसलमान, जैन आदि सम्पूर्ण जाति-बन्धुओं ने अपनी दुकानें एवं समस्त प्रतिष्ठान बंद रखे तथा प्रवचन सभा में भाग लिया। गाँव में जितनी भी संस्थाएँ, कमेटी, सोसाइटी थीं, सभी के लगभग 20-25 प्रतिनिधियों ने माताजी का सम्मान किया पुनः उन्हें संघपति की ओर से माताजी के लेमिनेटेड चित्र एवं कुछ साहित्य भेंट किया गया।

➢बेटी विदा कराने का भी मुहूर्त होता है–

हम लोग 5 मार्च की शाम को फागी से विहार करके 5 किमी. दूर एक प्याऊ पर आ गये थे, जहाँ से माधोराजपुरा केवल 3 किमी.था। यद्यपि वहाँ स्थान अत्यन्त अल्प एवं खराब था किन्तु खुला एरिया होने के कारण उन लोगों ने शामियाना, टेन्ट वगैरह लगाकर रात में खूब भजन-कीर्तन किया, सैकड़ों लोग रात में वहीं सोये।

6 मार्च को प्रातः 7 बजे माधोराजपुरा के कुछ पुरुष एवं 1-2 महिलाओं ने आकर माताजी को श्रीफल चढ़ाया, हम सभी को साड़ियाँ भेंट की और बोले कि **''माताजी! अब आप पीहर की ओर प्रस्थान करें, हम आपको विदा कराने आए हैं।''** यह सुनकर हम लोग हँसने लगे। वे पुनः बोले

अहसाम, ते पुनः प्रत्यवदन् यत् गतदिने बुधवारः आसीत्, अस्माकं राजस्थाने बुधवारे पुत्रीं प्रस्थितां न कुर्वन्ति अतएव गतदिने सायंकाले भवतीभ्यः अत्र स्थातुं कष्टमदाम अन्यथा केवलं 2 किलोमीटर दूरे स्थिते माधोराजपुरे विद्यालये भवतीनां रात्रि विश्रामं कर्तुं प्रबन्धमकुर्म।''

पूज्या माता तु ईदृशेषु व्यावहारिक प्रसंगेषु सर्वथा अनभिज्ञाऽऽसीत् अतः सा बहुसंकोचमनुभवति एतासु लघ्वीसु मनोरञ्जकवार्तासु। अत्रापि उक्तां वार्तां श्रुत्वैव सा लज्जायाः कारणेन शिरः नतमकरोत्। तेषां जनानां च स्थानात् बहिः गतेषु सति अस्मानभाषत्–''इदं सर्वं किं भवति? मह्यं इदं नाटकं न रोचते। साधूनामपि किं पितृगृहं पतिगृहं वा भवति?'' **वयं शिष्याः केनचिद् हास्येन सह इमं विषयं इदमुक्त्वा समाप्तमकुर्म यत्** ''भवत्याः ज्ञानमत्या पर्यायस्य जन्मभूमिस्तु इदं नगरमस्त्येव। अतः प्रथमबारं भवत्याः आगमनमनुभूय जनेषु उत्साहो विद्यते, तत्रैव सांसारिक स्वत्वप्रकटनेन यदि केचित् स्नेहयुक्ताः शब्दाः मुखेन निर्गच्छन्ति, त्वस्मिन् लज्जायाः का वार्तास्ति?''

मातुः सुन्दरं गौरवर्णं मुखं लज्जावशात् रक्तमिवाभवत्, अन्ततः स्वदीक्षाभूमेः नागरिकाणामप्रतिमं वात्सल्यमवलोक्य गौरवं तु अभवदेवयत् अद्यापि न्यूनातिन्यूनं तेषां सर्वेषां मनसि त्यागं त्यागिनां च प्रति नम्रभावनास्ति, या च सम्पूर्णस्य ग्रामस्य सर्वतोमुखे उन्नतेः प्रतीकं विद्यते।

अस्तु! गुरुवारे प्रातः अस्याः मंगलरीतेः प्रथायाश्च पश्चात् माधोराजपुरा नगरे पूज्यमातुः

कि कल बुधवार था, हमारे राजस्थान में बुधवार को बेटी नहीं विदा करते हैं, इसीलिए कल शाम को हमने आपको यहाँ ठहरने का कष्ट दिया वर्ना केवल दो किमी. चलकर ही माधोराजपुरा के सुन्दर स्कूल में आपका रात्रि विश्राम कराते।''

पूज्य माताजी तो ऐसे व्यवहारिक प्रसंगों से पूर्ण अनभिज्ञ रही हैं अतः वे बहुत संकोच करने लगती हैं इन छोटी-छोटी मनोरंजक बातों पर। यहाँ भी उक्त बात सुनते ही उन्होंने शरम के कारण सिर झुका लिया और उन लोगों के कमरे से बाहर जाते ही हमसे बोलीं– **''यह सब क्या हो रहा है? मुझे यह ड्रामा अच्छा नहीं लगता। साधुओं का भी भला कोई पीहर या ससुराल होता है।''** हम सब शिष्यों ने किंचित् हँसी के साथ इस विषय को यह कहकर समाप्त किया कि **''आपकी ज्ञानमती पर्याय की जन्मभूमि तो यह है ही, फिर पहली बार आगमन के कारण जहाँ लोगों में जोश-खरोश है, वहीं सांसारिक अपनत्व भी उमड़ पड़ने से यदि कोई स्नेहिल शब्द मुँह से निकल जाते हैं, तो इसमें शरमाने की क्या बात है?''**

माताजी का सुन्दर गौरवर्णी चेहरा लज्जावश लाल सुर्ख सा हो गया, आखिर अपनी दीक्षाभूमि के नागरिकों का अप्रतिम वात्सल्य देखकर हृदय में गौरव तो हुआ ही होगा कि कम से कम आज भी उन सबके मन में त्याग एवं त्यागियों के प्रति नम्र भावना है जो कि पूरे गाँव की सर्वतोमुखी उन्नति का प्रतीक है।

खैर! गुरुवार को प्रातः इस मंगल रश्म रिवाज के पश्चात् माधोराजपुरा में पूज्य माताजी का

संघसहितां गुरु–पुत्री च द्वयोः रूपेण मंगलं पदार्पणमभवत्। न जानामि इयं रीतिरन्येषु प्रान्तेषु विद्यते न वा यत् पुत्रीं कस्मिन् दिने प्रस्थानं कारयन्ति कस्मिन् दिने च न कारयन्ति? अहमस्मिन् विषये किंचित् न जानामि।

सम्बन्धोऽपि निर्गतोऽभूत्–**अधुना तु माता अल्पायामेव वार्तायां संकोचमन्वभवत् अधुना तु वार्ता तस्मादपि अग्रे वर्द्धिताभवत्, यदा नगरस्यान्तः प्रवेशकाले एव उच्चध्वनिः श्रवणे आगतः** ''मम प्रिया भगिनी आगच्छत्, ज्ञानस्य गंगा आनयत्।'' ''प्रत्येक मातुः पुत्री कीदृशी भवतु ज्ञानमती सदृशी भवतु''**.....आदिः। किञ्चित् कालानन्तरमेव ज्ञातमभवत् यत् शोभायात्रायां यौ मंगलकलशं गृहीत्वा सर्वेषामग्रे चलितवन्तौ, ते रांवका दिगम्बरजैनपरिवारस्य जनौ आस्ताम्, एतयोः माता–पिता श्रीमती श्रीमान् सागरचन्द्रौ रांवका च पूज्य मातु दीक्षायां तस्याः माता–पिता च अभवतां। सन्तोषकुमारो जैन रांवका तस्य ज्येष्ठः पुत्रः अस्ति। तस्य सम्पूर्णः परिवारः तस्मिन् दिने विशेषरूपेण स्वागतमकरोत्। शोभायात्रायाः मध्ये मातुः मंगल आवर्तिका यदा रांवका सदनस्य बहिः अवतारिता, तु वृद्धा माता आगत्य मातुः चरणाभ्यां सहालिंगिता अभवत् हर्षाश्रुभिः च सह तस्याः पादप्रक्षालनमकरोत्। इदं दृश्यं अत्यन्तमेव हृदयद्रावकं प्रेरकं चाभवत्। वास्तवे तासां प्रसन्नतानां वर्णनं लेखन्या कर्तुं न शक्यते। आगन्तुका सहस्रशो जना तानि दृश्यानि दृष्ट्वा द्रविताः अभवन्।**

अहं तस्मिन् दिने स्व सार्वजनिकवक्तव्येऽकथयं यत् ''यदा अत्र मातुः आर्यिका दीक्षा

संघ सहित गुरु एवं बेटी दोनों रूप में मंगल पदार्पण हो गया। पता नहीं ये रिवाज अन्य प्रान्तों में भी हैं या नहीं कि बेटी को किस दिन विदा नहीं कराते हैं और किस दिन कराते हैं? मुझे भी इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है।

➢रिश्तेदारी भी निकल गई–

अभी तो माताजी को छोटी सी बात में ही संकोच उत्पन्न हो रहा था और अब बात उससे भी आगे बढ़ गई, जब नगर के अन्दर प्रवेश करते ही ऊँची ध्वनि सुनाई पड़ने लगी– **''मेरी बहना आई है, ज्ञान की गंगा लाई है''** एवं **''हर माँ की बेटी कैसी हो, ज्ञानमती जी जैसी हो.**.....आदि। कुछ देर बाद ही ज्ञात हुआ कि जुलूस में जो मंगल कलश लेकर सबसे आगे चल रहे थे, वे राँवका दिगम्बर जैन परिवार के लोग थे, इनके माता-पिता श्रीमती एवं श्री सागरचन्द जैन राँवका पूज्य माताजी की दीक्षा के समय उनके माता-पिता बने थे। संतोष कुमार जैन राँवका उनके सबसे बड़े सुपुत्र हैं, उनके पूरे परिवार ने उस दिन विशेष रूप से स्वागत किया। जुलूस के बीच में माताजी की मंगल आरती जब राँवका मकान के पास उतारी गई, तो बूढ़ी माँ जी आकर माताजी के चरणों से लिपट गईं और हर्ष के अश्रुओं से उनके चरणप्रक्षाल करने लगीं। वह दृश्य अत्यन्त हृदयद्रावक एवं प्रेरक बन गया था। वास्तव में इन खुशियों का वर्णन लेखनी के द्वारा नहीं किया जा सकता है। आगन्तुक हजारों अतिथि उन दृश्यों को देखकर द्रवित हो गये थे।

मैंने उस दिन अपने सार्वजनिक वक्तव्य में कहा था कि ''जब सन् 1956 में यहाँ माताजी की

1956 वर्षेऽभवत्, तदा तस्या माता–पितरौ टिकैतनगरे स्वस्थरूपेण स्थितौ आस्तां, न जानामि किमर्थं तौ न सूचितौ, यत् तव पुत्र्याः दीक्षा भवति, अहं स्व चेतनायां प्रवाहितामश्रुधारां अपश्यम्। तौ पुत्र्याः दीक्षां दृष्टुं चिन्तितौ आस्तां अकथयतां च आवां किमपराधमकुर्व, यत् आवामेकं पत्रं दत्वा नाहूतौ। आवां तामुत्पन्नामकुर्व। आवां तया सह तीव्रं मोहमधारयाव परन्तु तां आवां गृहीत्वा तु न आगच्छाव।''

अस्यां घटनायां ज्ञानमत्याः मातुः निःस्पृहता, निष्ठुरता, निर्मोहिता च प्रचुरतयैव भविष्यति, किन्त्वाचार्यसंघस्य व्यवहारशून्यतापि मनसि अपि नागतं यत्र सर्वेषां समीपे दीक्षायाः प्रसन्नानि आमन्त्रणानि च प्रेषितानि सन्ति, तत्रैव मूलदीक्षार्थिन्याः गृहे ग्रामे वा परिचयं पृष्ट्वा समाचारोऽपि न प्रेषितः स्यात्।

अस्तु! दीक्षा तु अभवदेव, वैशाख कृष्ण द्वितीयायाः दिने गृहीता दीक्षा द्वितीयायाः चन्द्रइव असीमवृद्धौ परिणताभूत् किन्तु गृहावस्थायाः मातुः पितुः परिवारस्य न आगमनात् अस्य ग्रामस्य रांवका परिवारस्य पुण्यं जागृतमभवत्, यत् भवे भवे तैः स्मरणीयं भविष्यति। माधोराजपुरानगरस्य नागरिकाः यदि ज्ञानमतीं मातरं स्वग्रामस्य पुत्रीं मन्यन्ते, तु ग्रामस्य बालः अस्याः भ्राता, भ्रातृपुत्राः भवन्ति। सर्वे चास्याः आदर्शानां पालनं कुर्वन्त त्यागस्य सदाचारस्य च परिचयं दद्युः।

आर्यिका दीक्षा हो रही थी, तब इनके माता-पिता पूर्ण स्वस्थरूप में टिकैतनगर (उ.प्र.) में मौजूद थे लेकिन न जाने क्यों? उन्हें खबर भी नहीं दी गई कि तुम्हारी बेटी की दीक्षा हो रही है। मैंने अपने होश में उन माता-पिता की अविरल अश्रुधारा देखी है, जो बेटी की दीक्षा देखने को तरस गये और कहते रह गये कि आखिर हमने क्या गुनाह किया था, जो हमें एक पत्र देकर बुलाया भी नहीं गया। हमने उसे पैदा किया था, हमें उससे तीव्र मोह था लेकिन हम उसे उठाकर तो नहीं ले आते।''

इसमें ज्ञानमती माताजी की निस्पृहता, निष्ठुरता और निर्मोहिता तो प्रमुख रही ही होगी किन्तु आचार्यसंघ की व्यवहारशून्यता भी माननी ही होगी कि संघ के किसी साधु, ब्रह्मचारी, साध्वी आदि किसी के मन में भी न आया कि जहाँ सबके पास दीक्षा के पोस्टर-पत्र आमंत्रण हेतु भेजे जा रहे हैं, वहीं मूल दीक्षार्थी के घर या गाँव में भी पता पूछकर एक समाचार भी तो भेजा जाये।

खैर! दीक्षा तो हो ही गई और वैशाख कृष्णा दूज के दिन ली गई दीक्षा दूज के चाँद की तरह ही असीम वृद्धि में परिवर्तित हुई किन्तु गृहस्थावस्था के माता-पिता परिकर के न आने से इस राँवका परिवार का पुण्य जागृत हुआ, जो भव-भव में उन लोगों के लिए अविस्मरणीय रहेगा। माधोराजपुरा के नागरिक यदि ज्ञानमती माताजी को अपने गाँव की पुत्री मानते हैं, तो यहाँ का बच्चा-बच्चा इनका भाई और भतीजा है और सभी को इनके आदर्शों का पालन करते हुए त्याग एवं सदाचार का परिचय देना चाहिए।

दीक्षायाः वटवृक्षस्याद्भुतसंयोगः–**वयम् तत्रागत्य मातरमप्रच्छाम, यत्** ''भवत्याः दीक्षा कस्मिन् स्थाने अभूत्?'' **साकथयत्–माम् अधिका स्मृतिस्तु न विद्यते, किन्तु धूमिला स्मृतिः अधुना विद्यते यत्तत्र एको महान् वटस्य वृक्षः आसीत्। अस्माकं जिज्ञासां ज्ञात्वा माधोराजपुरावासिनः जनाः अस्मान् तस्मिन् मुख्ये स्थाने आनयन्, यत्र 1956 वर्षे पूज्यमातु दीक्षाऽभवत्। मुख्यस्य हट्टस्य तस्मिन् स्थाने प्राचीनो महान् दीर्घः एकः वटस्य वृक्षः आसीत्। मातापि तं दृष्ट्वा दीक्षा समयस्य सम्पूर्णं दृश्यं स्मृतिपथि आनयत्।**

अस्मिन् प्रसंगे अहमकथयम् यत् माताश्रीः भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मभूमेरयोध्यायाः छत्रछायायां जन्म गृहीत्वा तस्य–पुत्री ब्राह्मी गणिनी इव मार्गमन्वसरत् इयमपि च संयोगस्य वार्ता इवास्ति यत् भगवान् वृषभदेवः वटवृक्षस्याधः दीक्षामगृह्णात्, तु मातुर्गुरुदेवः अपि अस्याः दीक्षायै वटवृक्षयुक्त स्थानमचिनोत्, स्यादेतत् कारणमस्ति यत् भगवान् वृषभदेवोऽस्याः परमाराध्यः इष्ट देवोऽस्ति, तस्य परमाणवः केचित् अस्याः शरीरे समाविष्टाः अभवन्, तदैव ज्ञानस्य अजस्रधारां प्रवाहितां कुर्वन्ती यत्र सा द्विशताधिकान् ग्रन्थान् विलिख्य नारी गरिम्णः कीर्तिमानमस्थापयत्, वर्तमाने च षट्खण्डागम ग्रन्थे ''सिद्धान्तचिन्तामणिरिति'' नाम्नीं संस्कृत टीकां लिखति, तत्रैव भगवतः वृषभदेवस्य जन्मजयन्ती महोत्सवं, अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सवं, भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणं श्रीविहारं आदीनां अनेककार्यक्रमाणा–मायोजनं कारयित्वा जनं–जनं जैनधर्मस्य प्राचीनतया परिचितमकरोत्।

➢**दीक्षा में वटवृक्ष का अद्भुत संयोग–**

हमने वहाँ पहुँचकर माताजी से पूछा कि **''आपकी दीक्षा किस स्थान पर हुई थी?''** वे कहने लगीं कि मुझे ज्यादा स्मृति तो नहीं है किन्तु धुंधली सी याद ताजी हो रही है कि वहाँ पर एक बड़ का बहुत बड़ा पेड़ था। हमारी जिज्ञासा जानकर माधोराजपुरा के लोग हमें उस मुख्य स्थान पर ले गये, जहाँ सन् 1956 में पूज्य माताजी की दीक्षा हुई थी। मेन बाजार के उस स्थान पर एक बहुत पुराना खूब बड़ा वटवृक्ष था। माताजी को भी उसे देखते ही दीक्षा के समय का सारा नजारा याद आ गया।

इस प्रसंग में मैंने कहा कि माताजी ने भगवान् ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या की छत्रछाया में जन्म लेकर उनकी पुत्री ब्राह्मी गणिनी जैसा ही मार्ग स्वीकार किया और यह भी संयोग की ही बात है कि ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी, तो माताजी के गुरुदेव ने भी उनके लिए वटवृक्ष वाला स्थान ही चुना, शायद इसीलिए भगवान् ऋषभदेव इनके परमइष्ट आराध्य देव बन गये, उनके परमाणु ही कुछ इनके अन्दर समा गये, तभी ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित करती हुईं जहाँ इन्होंने दो सौ से अधिक ग्रन्थ लिखकर नारी गरिमा का कीर्तिमान स्थापित किया, वर्तमान में षट्खंडागम की संस्कृत टीका, ''सिद्धान्तचिन्तामणि'' का लेखन कर रही हैं, वहीं भगवान् ऋषभदेव का जन्मजयंती महोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर जन-जन को जैनधर्म की प्राचीनता से परिचित किया है।

तस्य प्राचीन वटवृक्षस्याधोऽवस्थाय ग्रामवासिनः पूज्यया मात्रा स्वकल्याणहेतवे किंचित् सन्देश आशीर्वादं च प्राप्नुवन् अनेकानि च चित्राणि अंकितान्यकुर्वन्।

तस्य शौण्डस्य पौत्रमपि अपश्याम–**ब्रह्मचारिणः सूरजमलस्य बाबामहोदयस्य निवाई वासिनो मुखेन तु वयमनेकशोऽशृणुम, यत् मातुः दीक्षासमये एकदीर्घः शौण्डः सभामुत्तीर्य मंचस्य समीपेऽस्याः मंगलप्रांगणस्य समक्षं (यत्र सा दीक्षायै उपविष्टा अभवत्) नतमस्तकोऽभवत्। तदा सर्वे जनास्तं भव्यप्राणिनं मत्वा मोदकान् फलानि च भक्षणायादुः। इमामेव वार्तां तत्र माधोराजपुरा निवासिनो जनाः तस्य वटवृक्षस्याधः अवस्थाय केचित् प्रत्यक्षदर्शिनः प्रौढाः अस्मान् अकथयन्। तेन सह एका रोमांचकघटना इयमपि ज्ञाताभवत् यत् ग्रामवासिनः तं शौण्डं मातुः दीक्षायाः पश्चादपि जीवन पर्यन्तं मोदकान्, अन्यान् मिष्टपदार्थान् तस्मै शौण्डाय भक्षणार्थं अदुः।**

केचिज्जनाः अकथयन् तं वयं जैन श्रावकः इव अमन्यामहे सः च कदापि कस्यापि हानिं नाकरोत्। इदं तु अवश्यमासीत् यत् यदापि कस्यापि गृहस्य विपणेर्वा पुरस्तात् गत्वा तिष्ठति, तदा जनाः तत्रैव मिष्ठान्नं भक्षणार्थमदुः। यदि कोऽपि अरुचिपूर्वकं तस्मै मिष्टान्नमदात् तदा सः तस्यारुचिं ज्ञात्वा मिष्टान्नं नाभक्षयत्। अग्रे च गच्छति। एवमेव ग्रामे तं श्रावकसदृशं मत्वा तं प्रति मिष्ट व्यवहारोऽभवत्।

सर्वाधिकं त्वाश्चर्यं तदाभवत्, यदा ज्ञातमभवत् यत् 3–4 वर्षाणि पूर्वं यदा तस्य

उस प्राचीन वटवृक्ष के नीचे खड़े होकर ग्रामवासियों ने पूज्य माताजी से अपने कल्याण हेतु किंचित् सन्देश व आशीर्वाद प्राप्त किया तथा कई फोटो खिंचवाए।

➢उस सांड के पोते को भी देखा–

ब्र. सूरजमल बाबाजी-निवाई (राज.) वालों के मुख से तो कई बार हम लोग सुना करते थे कि माताजी की दीक्षा के समय एक बड़ा सांड सभा को पार करके सीधे मंच के पास इनके मंगल चौक (जिस पर इन्हें दीक्षा के लिए बिठाया जा चुका था) के समक्ष नतमस्तक हो गया था। तब तमाम लोगों ने उसे कोई भव्य प्राणी समझकर लड्डू-फल खिलाए थे। वही बात माधोराजपुरा में उस वृक्ष के नीचे खड़े कई प्रत्यक्षदर्शी प्रौढ़ व्यक्तियों ने हम सबको बताई। उसके साथ एक रोमांचक घटना यह ज्ञात हुई कि गाँव के लोग उस सांड को माताजी की दीक्षा के बाद से लेकर जीवनपर्यन्त लड्डू या अन्य मिष्ठान्न ही खिलाते रहे।

कुछ लोगों ने बताया कि उसे हम लोग जैन श्रावक जैसा मानते थे और वह कभी किसी को हानि नहीं पहुँचाता था। हाँ, इतना अवश्य था कि वह जिस मकान या दुकान के सामने जाकर खड़ा हो जाता, वही उसे मिठाई खिलाने लगते तथा यदि कभी कोई उसके सामने अरुचि से मिठाई पेश करता था, तो वह पता नहीं कैसे उसकी मनोभावना दूषित जानकर मिठाई नहीं खाता और आगे बढ़ जाता। कुल मिलाकर पूरे कस्बे में उसे देवता जैसा मानकर उसकी आवभगत की जाती थी।

सबसे अधिक आश्चर्य तो तब हुआ, जब पता लगा कि अभी 3-4 वर्ष पूर्व ही वह मरा है। उसके

मृत्युरभवत्, तदा ग्रामवासिनस्तस्य शवयात्रायायोजितवन्तः। तस्य चान्तिमसंस्कारस्थले स्मृति स्वरूपं एकः चत्वरः निर्मितोऽभूत्। तदाहं तेभ्यः जनेभ्यः मंत्रणामदां यत् कदाचित् अस्य चत्वरस्य निमित्तात् मिथ्यात्वस्य प्रचारो न भवेत्, अतः भवन्तो एकस्मिन् शिलापट्टे लेखनं कारयन्तु यत् ''अत्र एकोऽहिंसक पशुः भूत्वा सदाचारी मानव इव व्यवहारमकरोत्। ज्ञानमत्याः मातुः दीक्षासमये नम्रतायाः परिचयं दत्वा अयं सर्वेषां हृदये स्व स्थानं निर्मितमकरोत्। तस्यैव स्मृतयेऽस्य चत्वरस्य निर्माणमभवत्। भवन्तः सर्वेऽस्य जीवनात् प्रेरणां प्राप्नुवन्तु।''

तस्मात् स्थानात् वयं सर्वे विश्रामस्थलं प्रति आगच्छाम, तु मार्गे एकं शौण्डमुप–विष्टमपश्याम, ग्रामवासिनोऽकथयन् मातः! ''अयं तस्यैव शौण्डस्य पौत्रोऽस्ति। अस्मै अपि सर्वे भक्षणार्थं मोदकान् ददति।'' अस्माकं स्थिरतायां सः पश्यन्नेवातिष्ठत् पुनः केचिज्जनाः नुक्तीमिष्तन्नं गृहीत्वा आगच्छन् तस्मै च महता प्रेम्णा भक्षणार्थमदुः। केचित् बालाः तेन सह व्यंसकतामकुर्वन् तु सः धावितुं प्रारभत् पुनः जनानवलोक्य शान्तभावेनातिष्ठत्। अस्मिन् केचित् पूर्वजन्मसंस्काराः अवश्यमेव भवितव्याः। संभवमस्ति यत् पूर्वजन्मनि अयं सतां सत्संगमकरोत् किन्तु कैश्चित् मायाचारादीनां कारणेन मृत्वा तिर्यगभवत् अधुना सन्तचरणयोर्नमनेन किंचित् जातिस्मरणं, स्यात् अग्रसमयाय वा शुभगतिबन्धोऽअभवत् अत स शान्तेः परिचयोऽदात्।

माधोराजपुरा ग्रामस्य जनसंख्या 10–12 सहस्राणां विद्यते, येषु प्रायः 70 गृहाणि

मरने पर गाँव में उसकी शवयात्रा निकाली गई और उसके अंतिम संस्कार स्थल पर स्मृतिस्वरूप एक चबूतरा बनाया गया। तब मैंने उन लोगों को सलाह दी कि कहीं इस चबूतरे के निमित्त से किसी मिथ्यात्व का प्रचार न होने लगे इसीलिए आप लोग यहाँ एक शिलापट्ट लिखवाकर लगा दें कि **''यहाँ दफनाया गया सांड एक अहिंसक पशु बनकर सदाचारी मनुष्य के समान क्रिया करता था। पूज्य ज्ञानमती माताजी की दीक्षा के समय अत्यन्त नम्रता का परिचय देकर इसने सबके हृदय में अपना स्थान बना लिया था, इसीलिए नगरवासियों ने उसकी स्मृति में इस चबूतरे का निर्माण कराया है, आप सब इसके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें।''**

वहाँ से हम अपने विश्रामस्थल की ओर लौट रहे थे, तो रास्ते में एक सांड बैठा था, गाँव के लोगों ने बताया कि ''माताजी! यह उसी सांड का पोता है, इसे भी सब लड्डू खिलाते हैं।'' हमारे खड़े होने पर वह थोड़ी देर देखता ही रहा पुनः एक थाल में कुछ लोग नुक्ती ले आए और उसे बड़े प्रेम से खिलाया। कुछ बच्चों ने छेड़खानी की तो वह भागने लगा किन्तु हम लोगों को देखकर पुनः शान्तभाव से बैठ गया। इसमें कुछ न कुछ पूर्व जन्म के संस्कार अवश्य होंगे। हो सकता है पहले मनुष्य पर्याय में इसने सन्तों का सत्संग किया हो किन्तु कुछ मायाचारी आदि कारणों से मरकर तिर्यंच बन गया और अब संत चरणों में नमन करने से कुछ जातिस्मरण हो गया हो, या आगे के लिए शुभगति का बंध हो गया हो इसीलिए उसने इतनी शान्तता का परिचय प्रदान किया।

माधोराजपुरा कस्बे की यूँ तो कुल आबादी 10-12 हजार है, जिसमें लगभग 70 घर जैन

जैन समाजस्य सन्ति, चत्वारि जैन मन्दिराणि सन्ति, यानि प्राचीनतायाः परिचयं ददंति। दीक्षास्थल्याः पृष्ठभागे एव विशालः प्राचीनदुर्गोऽस्ति, सः खण्डहररूपेण विद्यते, तमपि वयं दृष्टुमगच्छाम, तु कानिचित् ऐतिहासिक तथ्यानि ज्ञातानि।

तीर्थंकरस्य तपः कल्याणकस्य वनस्थली–**माधोराजपुरा नगरवासिनः जनाः यद्यपि नगरमेतत्** ''ज्ञानमती दीक्षावनस्थली'' **रूपेण विकसितं कर्तुमैच्छन्, तेन निमित्तेनैव तत्रैका महतीं भूमिं पूर्वस्मादेव ते निश्चितामकुर्वन्, तस्मिन् स्थाने पूर्वनिर्धारितयोजनानुसारेण दिल्लीमहानगरस्य प्रसिद्धस्य–मान्यस्य भक्तस्य श्री कमलचन्द्रस्य खारीबाबली दिल्ली निवासिनः सौजन्येन एकस्य** ''ज्ञानमती कीर्तिस्तम्भस्य'' **शिलान्यासः कारितः किन्तु ज्ञानमती माता तु सदैव स्वगुरोस्तीर्थंकराणां नाम्ना वा महतीं योजनां साकारां कर्तुमेव स्वसफलतां मन्यते। यदा कीर्तिस्तम्भस्य वार्तां मातरं ज्ञाताभवत तु सावदत् यत् अहं तु पूर्वसमायादेव माधोराजपुरा नगराय सर्वथा नवीनायाः रचनायाः नामकरणं अचिन्ततयं, तदस्ति ''तीर्थंकर तपः कल्याणकस्य वनस्थली'', अस्मिन् चतुर्विंशति तीर्थंकराणां पृथक्–पृथक् दीक्षावृक्षान् निर्मितान् कृत्वा तेषामधः पिच्छी– कमण्डलुसहितानां भगवतां मूर्तयो विराजमानाः भविष्यन्ति।**

सम्पूर्णां योजनां सभायां घोषणाकाले मिनट समये एव साकारा अभवत् 7 मार्च दिने च महतोत्साहेन सह शिलान्यासोऽभवत्, यस्मिन् समीपस्थानां सहस्रशः नरनार्यः भागं गृहीत्वा अर्थांजलिं समर्पयन्।

समाज के हैं, 4 जैन मंदिर हैं, जो अपनी प्राचीनता का परिचय दे रहे हैं। दीक्षास्थली के पीछे ही विशाल प्राचीन किला खण्डहर के रूप में पड़ा है, उसे भी हम लोग देखने गये तो कई ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात हुए।

➢**तीर्थंकर तपकल्याणक वनस्थली–**

माधोराजपुरा के लोग इस नगर को यद्यपि **''ज्ञानमती दीक्षा वनस्थली''** के रूप में विकसित करना चाहते थे, उसी निमित्त से वहाँ एक बड़ी जमीन पहले से ही उन लोगों ने निश्चित कर रखी थी। उस स्थान पर पूर्व निर्धारित योजनानुसार दिल्ली के जाने माने भक्त श्रेष्ठी कमलचन्द जैन-खारीबावली के सौजन्य से एक **''ज्ञानमती कीर्तिस्तंभ''** का शिलान्यास कराया गया किन्तु ज्ञानमती माताजी तो सदा अपने गुरु या तीर्थंकरों के नाम से ही बड़ी-बड़ी योजना साकार करने में अपनी सफलता मानती हैं। उन्हें जब कीर्तिस्तंभ की बात पता चली तो कहने लगीं कि मैंने तो पहले से ही माधोराजपुरा के लिए बिल्कुल नई रचना निर्माण का भाव संजोया हुआ है। वह है–''तीर्थंकर तपकल्याणक वनस्थली'' इसमें चौबीस तीर्थंकरों के अलग-अलग दीक्षावृक्ष बनाकर उनके नीचे पिच्छी-कमंडलु सहित ध्यानमुद्रा में भगवन्तों की प्रतिमा विराजमान होंगी।

सारी योजना सभा में घोषित होते ही मिनटों में साकार हो गई और 7 मार्च को भारी उत्साह के साथ शिलान्यास हुआ, जिसमें आसपास के नगरों के हजारों नर-नारियों ने भाग लेकर अर्थांजलि चढ़ाई।

धार्मिकपंथवादस्य प्रान्तीयपरम्परा–**वयं जन्मतः उत्तरप्रदेशस्य निवासिनः स्मः, तस्मिन्नपि अयोध्यायाः समीपवर्ति पूर्वीयोत्तर प्रदेशे बाल्यादेव कदापि बीसपन्थस्य तेरहपन्थस्य वा चर्चां न अशृणुम। तत्र सर्वेषु मन्दिरेषु नारी–पुरुषाः समानरूपेण पूर्णशुद्धिं पूर्वकं मन्दिरेषु अभिषेकपूजनमकुर्वन्, तत्र सैव परम्पराऽद्यापि वर्तते। यदि कुत्रचित् अल्पाधिकः तेरहपंथ–पण्डितानां प्रभावोऽप्यभवत्, तथापि कट्टरवादिता नास्ति। अनेनैव प्रकारेण पुष्पार्पण–पंचामृताभिषेकादयः एताः सर्वाः क्रियाः निर्विवादमपश्याम किन्तु पश्चिमोत्तरप्रदेशे आगमनस्य पश्चात् वयं पंथवादस्य भेदमजानीम तु माताश्रीः सर्वदा एतेषु विषयेषु मध्यस्थैव वर्तते, तस्याः कथनमस्ति यत्र ''यस्य यादृशी परम्परास्ति तत्र तां तथैव कर्तुं सुविधां प्रदत्त। वयं तस्याः किं ग्रहणं प्रदानं च भवतु। अतएव तया सह कदापि कस्यापि विवादो नाभवत्। सा च कुत्रापि कदापि हस्तक्षेपं नाकरोत्। यदि कोऽप्यागमपरिप्रेक्ष्ये किमपि ज्ञातुं जिज्ञासां आकथयत् तु सा तस्य समाधानमवश्यमेवाकरोत्।**

प्रायः त्रिंशत् वर्षेभ्यः उत्तरप्रदेशस्य तेरहपंथपरम्परां पश्यामः। वयं प्रायः तस्यां एव अभ्यस्ता अभवाम किन्तु अश्रुणम यत् अस्मिन् उत्तरप्रदेशे श्रेष्ठिनां गृहे महिला अपि यदा गोम्मटेश्वरबाहुबलिनः उत्सवे गच्छन्ति तु भगवतोऽभिषेकं कृत्वा आगच्छन्ति अस्मिन् प्रान्ते च परम्परायाः अभावात् नात्र कुर्वन्ति।

यदा 1993–94 वर्षयोः माताश्रीः अयोध्यां प्रति विहारमकरोत् तु तत्र अहं सर्वनगरेषु

➢धार्मिक पंथवाद की प्रान्तीय परम्परा–

हम लोग जन्मतः उत्तरभारत के निवासी हैं, उसमें भी अयोध्या की तरफ पूर्वी उत्तरप्रदेश में बचपन से कभी तेरहपंथ-बीसपंथ की चर्चा ही नहीं सुनी थी। उधर सभी मंदिरों में स्त्री-पुरुष समानरूप से पूर्ण शुद्धिपूर्वक मंदिरों में अभिषेक-पूजा करते थे, वहाँ वही परम्परा आज भी है। यदि कहीं-कहीं थोड़ा बहुत तेरहपंथी पण्डितों का असर भी हुआ है तो भी कट्टरवादिता नहीं है। इसी प्रकार फल-फूल चढ़ाना, पंचामृत अभिषेक ये सभी बातें निर्विवाद रूप से देखते थे किन्तु पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आने के पश्चात् हम लोगों को पंथवाद का भेद आदि ज्ञात हुआ तो माताजी सदा इन विषयों में मध्यस्थ ही रहीं, उनका कहना रहा कि ''जहाँ जिनकी जैसी परम्परा है वहाँ उन्हें वैसा ही करने दो, हमें उनसे क्या लेना-देना। इसीलिए कभी भी उनके साथ किसी का कोई विवाद नहीं हुआ और उन्होंने कहीं पर कभी भी कोई हस्तक्षेप नहीं किया। हाँ, यदि किसी ने आगम के परिप्रेक्ष्य में कभी जानने की इच्छा प्रगट की तो उसका समाधान अवश्य किया।

लगभग 30 वर्ष से उत्तरप्रदेश की तेरहपंथ परम्परा देखते-देखते हम लगभग उसी के आदी हो गये थे किन्तु सुनते अवश्य थे कि इन उत्तर भारत में श्रेष्ठियों के घर की महिलाएँ भी जब गोम्मटेश्वर बाहुबली के उत्सव में जाती हैं तो भगवान् का अभिषेक करके आती हैं और इस प्रान्त में परम्परा न होने से यहाँ नहीं करती हैं।

जब सन् 1993-94 में अयोध्या की ओर माताजी ने विहार किया, तो वहाँ सभी नगरों में वही

तामेव प्राचीनपरम्परामपश्यम्। तत्र जनान स्वगृहे कस्यापि नूतनस्य फलस्य आम्रद्राक्षाफलादीनां आगमनं दृष्ट्वां प्रथमं मन्दिरे समर्प्य खादन्ति अन्येभ्यश्च खादितुं यच्छन्ति। यदा 1995–96 वर्षे वयं दक्षिणभारतं प्रति विहारमकुर्वम तु राजस्थाने द्वे एव मान्यते प्राप्नुम, मध्यप्रदेशे 90 प्रतिशतं तेरहपंथस्य 10 प्रतिशतं बीसपंथमपश्यम। तथा महाराष्ट्र प्रांते तु शतप्रतिशतं बीसपंथपरम्परा एव दृश्यते। गुजराते च प्रायः बीसपन्थस्य परम्परैवास्ति, राजस्थानस्य मेवाड़बागड संभागे च बीसपन्थपरम्परास्ति। पुनः राजस्थाने च मिश्रिता व्यवस्थास्ति, हरियाणा प्रदेशे च प्राय तेरहपन्थपरम्परा दृश्यते, राजधानी दिल्ल्यां च समन्वयवादिनः कट्टरवादिनश्च द्विप्रकारस्य जनाः सम्पर्के आगच्छन्ति किंत्वस्माकं केनापि सह विवादो न वर्तते। एतास्तु श्रावकस्य क्रियाः सन्ति, मम बुद्धौ तु एतयोः साधूनां हस्तक्षेपो न भवितव्य यदि कुर्वन्ति, तु प्राचीनाचार्यै प्रणीतान् ग्रन्थानाश्रित्य श्रावकेभ्यः यथार्थ मार्गदर्शनं कर्तव्यम् अन्यथा यथा च आचार्य श्री शिवकोटिः भगवतीआराधना ग्रन्थे अकथयत् यत्–

पदमक्खरं च एक्कं पि जो ण रोचेदि सुत्तणिद्दिट्ठं।
सेसं रोचंतो विहु मिच्छाइट्ठी मुणेयव्वो।।

अर्थात् शास्त्रे वर्णितस्यैकस्याप्यक्षरस्य पदस्य च श्रद्धानं न करोति, सः मिथ्यादृष्टिरस्ति। आगमोऽस्माकं कस्यापि संपत्तिर्नास्ति अतो वयं तस्मिन् कस्यापि प्रकारस्य परिवर्तनं कर्तुमधिकारिणो न स्मः। स्व स्वार्थसिद्धिं विना वयं तस्य निष्पक्षभावेनाध्ययनं कुर्याम, जीवने

पुरानी परम्परा देखी। उधर के लोग अपने घर में कोई भी नया फल आम-अंगूर आदि आने पर पहले मंदिर में चढ़ाकर खाते-खिलाते हैं। जब सन् 1995-96 में हमने दक्षिण भारत की ओर विहार किया, तो राजस्थान में दोनों मान्यताएँ मिलीं, मध्यप्रदेश में 90 प्रतिशत तेरहपंथ एवं 10 प्रतिशत बीसपंथ देखा तथा महाराष्ट्र में शतप्रतिशत बीसपंथ परम्परा है, गुजरात में प्रायः बीसपंथ ही है, राजस्थान के मेवाड़ एवं बागड़ संभाग में कट्टर बीसपंथ परम्परा है पुनः शेष राजस्थान में मिली-जुली व्यवस्था तथा हरियाणा में प्रायः तेरहपंथ आम्नाय देखी एवं राजधानी दिल्ली में समन्वयवादी और कट्टरवादी दोनों तरह के लोग सम्पर्क में आते हैं किन्तु हम लोगों को किसी से कोई विवाद नहीं रहता। ये तो श्रावक की क्रियाएँ हैं, मेरी समझ में तो इसमें साधुओं को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और यदि करते हैं, तो प्राचीन आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का आश्रय लेकर श्रावकों का सही मार्गदर्शन ही करना चाहिए अन्यथा जैसा कि आचार्य श्री शिवकोटि ने भगवती आराधना ग्रन्थ में कहा है कि–

पदमक्खरं च एक्कं पि, जो ण रोचेदि सुत्तणिद्दिट्ठं।
सेसं रोचंतो विहु, मिच्छाइट्ठी मुणेयव्वो।।

अर्थात् शास्त्र में वर्णित एक भी पद या अक्षर का जो श्रद्धान नहीं करता है, वह मिथ्यादृष्टि माना जाता है।

आगम हमारी किसी की व्यक्तिगत बपौती नहीं है अतः हम उसमें किसी तरह का हेरफेर करने के अधिकारी भी नहीं हो सकते हैं। अपनी स्वार्थसिद्धि की बजाय हमें उसका निष्पक्ष भाव से

च व्यवहारः कर्तव्यः, तदैव शास्त्र स्वाध्यायस्य सार्थकता भवेत्।

श्री गुणधराचार्यः आत्मानुशासने अकथयत्–

शास्त्राग्नौ मणिवद्भव्यः, विशुद्धो भाति निर्वृतः।
अंगारवत्खलो दीप्तो, मली व भस्म वा भवेत्।।

अर्थात् शास्त्राग्नौ तप्ताः भूत्वा भव्यप्राणिनस्तु रत्नवत् विशुद्धाः–निर्मलाः भवन्ति दुर्जनप्राणिनश्च तस्मिन् अंगारवत् तप्ताः भवन्ति अथवा दग्ध्वा भस्मीभूताः जायन्ते।

पंचमकाले शास्त्राण्येवास्माकं ज्ञाननेत्राणि विद्यन्ते, तेषां ज्ञानदायकाः साधवः साध्व्यश्चास्माकं परमेश्वराः विद्यन्ते अतएव देवशास्त्रगुरुषु श्रद्धानं कृत्वा स्व सम्यग्दर्शनं दृढं कर्तव्यम् न च पंथवादस्य दुराग्रहं गृहीत्वा तन्मलिनं कर्तव्यम्।

महिलानां भिन्ना भिन्ना वेशभूषाः–**अस्मिन् शृंगारयुगे तु बालिकानां महिलानां च परिवर्तनशीलायां वेषभूषाया न काप्याधारशिला विद्यते। कदाचित् बालिका बालकानां वेशभूषां धारयन्ति कदाचिच्च बालकाः बालिकानां वेशभूषां सलवार–पठानी शूटादिकं धारयन्ति। कदाचित् बालिकाकेशसज्जां बालकाः वत् निर्मापयन्ति तु कदाचित् पुरुषा स्वकेशान् बालिकाः वत् दीर्घान् कुर्वन्ति। पाश्चात्य संस्कृतेरपि पूर्णः प्रभावः भारतीयवेशभूषायां लक्ष्यते। येन प्रायः प्रत्येकाभिभावकः स्व कन्यानां सुरक्षामाश्रित्य चिन्तितो विद्यते।**

अध्ययन करके जीवन में उतारना चाहिए, तभी शास्त्रस्वाध्याय की सार्थकता हो सकती है।

श्री गुणभद्रस्वामी ने आत्मानुशासन में कहा भी है–

शास्त्राग्नौ मणिवद्भव्यः, विशुद्धो भाति निर्वृतः।
अंगारवत्खलो दीप्तो, मली व भस्म वा भवेत् ।।

अर्थात् शास्त्ररूपी अग्नि में तपकर भव्य प्राणी तो मणि (रत्न) के समान विशुद्ध–निर्मल हो जाते हैं तथा दुर्जन प्राणी उसमें अंगारे के समान तप्त हो जाते हैं अथवा जलकर राख–भस्मीभूत हो जाते हैं।

पंचमकाल में शास्त्र ही हमारे लिए ज्ञान नेत्र हैं, उनका ज्ञान कराने वाले साधु-साध्वी ही हमारे परमेश्वर हैं अतः देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान करके अपने सम्यग्दर्शन को दृढ़ करना चाहिए न कि पंथवाद का दुराग्रह पकड़कर उसे मलिन करना चाहिए।

➢महिलाओं की भिन्न-भिन्न वेशभूषा–

इस फैशनवादी युग में तो लड़कियाँ एवं महिलाओं की बदलती वेशभूषा की तो कोई एक आधारशिला नहीं रह गई है। कभी लड़कियाँ लड़कों की ड्रेस पहनने लगती हैं, तो कभी लड़के लोग लड़कियों की ड्रेस सलवार जैसे पठानी सूट आदि पहनने लगते हैं। कभी लड़कियाँ हेयर स्टाइल लड़कों जैसे बनवाने लगती हैं, तो कभी पुरुष अपने बाल लड़कियों जैसे थोड़े लम्बे कर लेते हैं। पाश्चात्य संस्कृति का भी भरपूर असर भारतीय पहनावे पर आ गया है, जिससे प्रायः हर माँ-बाप अपनी लड़कियों की सुरक्षा को लेकर चिन्तित रहने लगे हैं।

वयं कस्यापि प्रान्तस्य महत्सु नगरेषु अगच्छाम, तु तत्र शृंगारपरकाः वेशभूषाः वीक्ष्य प्रान्तीयपरम्परायाः अधिकमनुमानं न प्रतीयते परन्तु लघुमहत्ग्राम–नगरेषु अस्माकं विहारोऽभवत्, त्वश्यमेव तेषां संस्कृतेः, वेशभूषादीनामनुमानमभवत्। उत्तरप्रदेश–दिल्ली–हरियाणा–राजस्थान–मध्यप्रदेशेषु तु प्रांतेषु महिलाः शाटिकां धृत्वा शिरश्च आवृतं कुर्वन्ति। परन्तु कर्नाटक–महाराष्ट्र–गुजराते महिलाः शिरं उद्घाटितमेव कुर्वन्ति केशेषु च पुष्पाणां गुच्छानां संलग्नां कर्तुं सामान्य परम्परा विद्यते। कर्नाटके आवरणरहितानि शिरांसि धारणमेव विवाहाय प्रस्तूयन्ते शिरसामावरणं च जनाः अशुभं मन्यन्ते। तेषां कथनमस्ति यत् अस्मिन् प्रान्ते विधवाः एव शिरांसि आच्छादयन्ति।

राजस्थाने समृद्धपरिवाराणां यत्र नवबधूनां दीर्घाण्यवगुण्ठनान्यपहृतानि, तत्र प्राचीनं–महिलाः रूढिवादिताया: पूर्णरूपेण पालनं कुर्वन्त्यः पर्याप्तं दीर्घमवगुण्ठनं प्रयोजयन्ति। पुरुषेष्वपि नवयुवकाः नवां वेशभूषामगृह्णन् किन्तु प्राचीनाः जनाः अद्यापि धोतिकां–कंचुकं पुरातनराजस्थानस्य शिरस्त्राणं धारयन्ति। वेशभूषा च पुलिन्दानामिव वन्या दृश्यन्ते। राजस्थानस्य ग्रामीणा महिलाः एकहस्तप्रमाण अवगुण्ठनं कृत्वापि दूरस्थानात् शिरःसु त्रयान् घटान् निधाय वामभागे चैकं घटं निधाय जलं पूरयित्वा आनयन्ति। यदा ताः अस्मान् मार्गे चलन्तीः पश्यन्ति तु एकं नेत्रमुन्मूल्य अवगुण्ठनेनास्मान् वीक्ष्य अहसन् परन्तु वयं तासां मुखानि दृष्टुं न समर्थाः अभवाम। बागड् प्रदेशे कुत्रचित् वयमपश्याम् यत् महिलाना–

जब हम किसी प्रान्त के बड़े शहरों में गये, तो वहाँ की फैशनपरक वेशभूषाएँ देखकर प्रान्तीय परम्परा का ज्यादा अनुमान नहीं लग पाता था किन्तु जब छोटे-बड़े ग्राम-कस्बों में हमारा विहार हुआ, तो जरूर उनकी संस्कृति, पहनावा आदि का परिचय हुआ। उत्तरप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में तो प्रायः महिलाएँ साड़ी पहनकर सिर ढकती हैं किन्तु कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं गुजरात में महिलाएँ सिर खुला ही रखती हैं और बालों में फूल के गुच्छे या लड़ी लगाने की आम परम्परा है। कर्नाटक में खुले सिर ही विवाह होते हैं और सिर ढकने को लोग अशुभ मानते हैं। उनका कहना है कि इधर प्रान्त में विधवा होने के बाद महिलाएँ सिर ढकती हैं।

राजस्थान के बड़े घरानों में जहाँ नई वधुओं के लंबे घूंघट हट गये हैं, वहीं पुरानी महिलाएँ पूरी तरह से रूढ़िवादिता का पालन करती हुई काफी लम्बा घूंघट निकालती हैं। पुरुषों में भी नवयुवकों ने नई वेशभूषा अपना ली है किन्तु पुराने लोग अभी भी धोती-कुर्ता एवं राजस्थानी पगड़ी बाँधे हुए देखे जाते हैं। बहुत छोटे गांव में भी आदिवासियों के सिर पर बाबा आदम के जमाने की पुरानी पगड़ी दिखाई देती है तथा पहनाव भीलों जैसा जंगली लगा। राजस्थान की ग्रामीण महिलाएँ एक हाथ लम्बा घूंघट करके भी दूर-दूर से सिर पर 3-3 घड़े एवं बगल में एक घड़ा दबाकर पानी भरकर लाती हैं। वे जब हम लोगों को सड़क पर पैदल चलते देखतीं, तो एक आँख खोलकर घूंघट के अन्दर से ही देखकर हँसने लगती थीं लेकिन हमें उनके चेहरे नहीं दिखते थे। बागड़ में कहीं-

मवगुण्ठनानि तु पर्याप्तदीर्घाणि सन्ति परन्तु वक्षस्थलमुदरंच सर्वणि अनावृतानि भवन्ति। तु किञ्चित् हास्यमपि जायते तासां चाज्ञानतापूर्णां रूढ़िवादितामवलोक्य आश्चर्यमपि जायते। एवमेव बालिकाः अपि केवलं अन्तरंगवस्त्रं पेटीकोटलघुकंचुकब्लाउजवेशभूषायां दृष्ट्वा संघस्य जना प्रचुरं हास्यमकुर्वन् किन्तु क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य भयात् सर्वे स्वस्वकार्येषु संलग्नाः अभवन्।

गुजरात प्रान्ते विहारकाले वयं ब्यारा नामके ग्रामे प्रवेशमकुर्म, त्वेका वाक्कील बाला–महिला मया सह गमनमकरोत्। कस्याश्चित् चर्चायाः मध्येऽहं तामपृच्छम् यत् तव पतिः किं करोति? तव श्वसुरालयः कुत्र विद्यते? सा विहस्याब्रवीत्, मातः! अहं तु कुमार्यस्मि। अहं किंचित् संकुचितेवाभवम्। तदाऽहमकथयं तु एवं पादयोर्नूपुरं ग्रीवायां च मंगलसूत्रं किमर्थं धारयसि, एतानि तु सौभाग्यस्य प्रमुखचिह्नानि सन्ति।

तस्मिन् काले सहचारिण्योऽन्याः अपि महिलाः अकथयन् अस्माकं गुजराते ईदृशी कापि परम्परा न विद्यते, कुमार्यः कन्याः अपि रुचिवशात् एतानि धारयन्ति सौभाग्यवत्यश्च नैवापि धारयन्ति। अत्र एतद् ज्ञातव्य–मस्ति यत् सम्पूर्णे उत्तरभारते विवाहस्य पश्चादेव महिला नूपुरौ मंगलसूत्रं च धारयन्त्यः दृश्यन्ते। एतासां परम्पराणां ज्ञानं विना कुत्रचित् समस्यायाः साम्मुख्यं भवति।

इत्थमेवोत्तरभारते लौकी नामकं शाकं महत् लाभप्रदं मत्वा श्रावकाः साधवश्च सर्वे एव

कहीं हमने देखा कि महिलाओं के घूंघट तो खूब लम्बे हैं किन्तु छाती-पेट सब खुले रहते हैं। तो किंचित् हँसी भी आती और उनकी अज्ञानतापूर्ण रूढ़िवादिता पर आश्चर्य भी होता। इसी प्रकार कहीं-कहीं लड़कियों को भी केवल पेटीकोट-ब्लाउज पहने देखकर संघ के लोग खूब हँसते थे किन्तु क्षुल्लक मोतीसागर महाराज के डर से सब शीघ्र ही गंभीरतापूर्वक अपने-अपने काम में लग जाते थे।

गुजरात प्रांत में प्रवेश करते ही हम ब्यारा नामक गाँव से विहार कर रहे थे, तो एक वकील लड़की मेरे साथ चल रही थी। कुछ चर्चा के मध्य मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे पति क्या करते हैं? तुम्हारी ससुराल कहाँ है? वह हँसकर बोली कि माताजी! मैं तो अभी कुँवारी हूँ। मैं थोड़ा झेंप सी गई तुरंत मैंने कहा कि फिर तुमने पैर में बिछुए और गले में मंगलसूत्र क्यों पहना है? ये तो सुहाग के प्रमुख चिन्ह होते हैं।

उस समय साथ चल रही और भी महिलाएँ बताने लगीं कि हमारे गुजरात में ऐसी कोई परम्परा नहीं है, कुँवारी कन्याएँ भी शौक में ये चीजें पहन लेती हैं और सुहागन नहीं भी पहनती हैं। तब मुझे पहली बार वहाँ की परम्परा के बारे में कुछ ज्ञान हुआ कि गुजरात में ऐसा भी होता है। जबकि पूरे उत्तर प्रान्त में विवाह के पश्चात् ही महिलाएँ बिछुए और मंगलसूत्र पहनती देखी जाती हैं। इन प्रान्तीय परम्पराओं को जाने बिना कई जगह समस्या का सामना करना पड़ता है।

इसी प्रकार उत्तर भारत में लौकी नामक सब्जी को बड़ी लाभप्रद मानकर श्रावक-साधु सभी

भक्ष्यन्ति किन्तु दक्षिणभारते लौकीमभक्ष्यं मत्वा कोऽपि न खादति। एवं काश्चित् वार्ताः प्रान्तीयपरम्परासु आधारिताः सन्ति, याः ज्ञात्वैव कश्चिन्निर्णयो विधातव्यः।

ऋतोर्धन्यवादः कथं करवाणि?–**मातुः प्रवचने एकां कथाम् सदैव श्रृणोम्यहं, यत्—**

पद्मिन्याः जातेः स्त्रियः राजहंसाः निर्ग्रन्थाश्च साधुसाध्व्यो यत्र विचरन्ति, तत्र सुभिक्षो भवति। अस्मिन् दुःषमाकालेऽस्माकं देशे न तु पद्मिन्यः स्त्रियो विद्यन्ते, न मानसरोवरोऽस्ति यत्र राजहंसाः विचरन्ति, न च ऋद्धिधारिणो जिनकल्पिनो महामुनयो विद्यन्ते न च विशल्यासमाः दिव्यशक्तिधारिण्यः कन्याः सन्ति, यासां दृष्टिमात्रेण सर्वे रोगाः शोकाः महामार्यश्च नश्यन्ति किन्तु अद्यापि कठोरतपस्विनः तपस्विन्यश्च साधुसाध्व्योः ये दीर्घकालीनदीक्षाधारिणो अद्याप्यस्मिन् धरातले विद्यन्ते, ये श्लोकार्थं अंशमात्रं साकारं कुर्वन्ति, येषां–यासां पुरतः प्रकृतिः नम्रा भवति।

अस्माकमस्मिन् दीर्घे प्रवासेऽपि अस्माभिः सह मातुः ज्ञानमत्याः प्राचीन प्रतिमेव अतिशयः एवासीत् यत् प्रकृतिः ऋतोरनुकूलतां विधाय प्रतिपदमस्माकं सहयोगमकरोत्। मांगीतुंगीगमनकाले वयं 27 नवम्बर 1995 दिनात् 15 फरवरी 1996 दिनपर्यन्तं केवलमेकस्मिन्नेव समये दिने 1 वादनसमयात् 4 वादनसमयपर्यन्तं विहारमकुर्म, तत्पश्चात् प्रातः मध्याह्ने च द्वयोः समययोः चलित्वा सम्पूर्णेषु पंचमासेषु 1620 किलोमीटरस्य मार्गः

खाते हैं किन्तु दक्षिण प्रान्त में लौकी को अभक्ष्य मानकर कोई भी नहीं खाते हैं। ऐसी कई बातें प्रान्तीय परम्पराओं पर आधारित हैं, जिन्हें जानकर ही कोई निर्णय करना चाहिए।

➢मौसम का धन्यवाद कैसे करें?

पूज्य माताजी के प्रवचन में कई बार सुना करती थी–

पद्मिनी जाति की विशेष स्त्रियाँ, राजहंस और निर्ग्रंथ तपोधन-साधु-साध्वी जिस देश में विचरण करते हैं, वहाँ स्वयमेव सुभिक्ष हो जाया करता है। इस दुःषमकाल में हमारे भारत देश में न तो पद्मिनी स्त्रियाँ हैं, न मानसरोवर पर रहने वाले राजहंस हैं, न हि ऋद्धिधारी जिनकल्पी महामुनि हैं और न ही विशल्या जैसी दिव्यशक्तिधारिणी कन्याएँ हैं, जिनकी दृष्टिमात्र से सारे रोग-शोक-महामारी नष्ट हो जाये किन्तु फिर भी कठोर तपस्या करने वाले एवं दीर्घकालीन दीक्षा लक्ष्मी से समन्वित कुछ साधु-साध्वी आज भी इस धरती पर उपर्युक्त श्लोकार्थ को अंशमात्र साकार करने वाले अवश्य विद्यमान हैं, जिनके समक्ष प्रकृति को नमन करना ही पड़ता है।

हमारे इस लम्बे प्रवास में भी हमारे साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्राचीन प्रतिमा की भाँति अतिशय ही रहा कि प्रकृति ने मौसम की अनुकूलता करके पग-पग पर हमारा सहयोग किया। मांगीतुंगी जाते समय हम 27 नवम्बर 1995 से 15 फरवरी 1996 तक केवल एक ही समय दिन में 1 बजे से 4 बजे तक चलते थे, उसके बाद सुबह-दोपहर दोनों समय चलकर पूरे पाँच महिने में 1620 किमी. का रास्ता तय किया था किन्तु

पारमकुर्म किन्तु प्रत्यागमनकाले 1800 किलोमीटर मार्गं केवलं 135 दिनेषु (सार्धपंचमासेषु) प्राचलाम, तस्मिन् विशेषं निमित्तं ऋतोऽनुकूलता आसीत्। दिसम्बर–जनवरीमासयोः उत्तरीयक्षेत्रेषु कठोरशरदःसमयो भवति, तस्मिन् समये वयं महाराष्ट्रस्य गुजरातस्य च मार्गेषु द्वयोः समययोः अचलाम, तत्रस्यः गुलाबवर्णः ऋतुः अस्माकं विहारे अति सहायकः आसीत् पुनः 23 जनवरी दिनात् राजस्थाने यदास्माकं प्रवेशोऽभवत्, तु भीषणस्य शीतस्य ऋतुः प्रारब्धः आसीत् अतः तथापि प्रातः 7–8 वादने चलनात् कदाप्यसुविधा नाभवत्। अतो वयं कदापि कुत्रापि पूर्वनिर्धारितसमयात् विलम्बान्नागच्छाम परन्तु कुत्रचित्तु अधिकचलनात् समयात् एकदिनपूर्वमेवागच्छाम। यो मार्गाऽस्मभ्यं दीर्घ इव प्रतीतोऽभवत् सोऽपि ऋतोनुकूलतया मात्रा पठितस्य मंत्रस्य जाप्याच्च शीघ्रमेव पारं गतः।

जयपुरात् दिल्लीपर्यन्तं मार्गः 270 किलोमीटरो विद्यते। तस्य चिन्ता केभ्यश्चिद् दिनेभ्यः आसीत् यत् 30 मार्च दिने दिल्ली प्रवेशस्य तिथिर्निर्धारिता आशा वा आसीत्, 16 मार्चस्य सायं वयं जयपुरान्निर्गताः, तु मध्यस्य केवल 13 दिनेषु अस्माकमत्यन्तमेव श्रान्ताः पादाः अस्मान् दिल्लीं केन प्रकारेण नेष्यन्ति? किन्तु वयं तु निरन्तरं मंत्र–जाप्यं कुर्वन्त्यः अग्रे वर्द्धिताः अभवाम।

वयं निरन्तरं 22–23 किलोमीटर चलनेन अग्रे गताः, 29 मार्च दिने सायं पञ्चवादने एव दिल्लीनगर्याः दरियागंज–बालाश्रमे आगच्छाम। मध्ये 26–27 मार्च दिनयोः भीषणं तापं वीक्ष्य वयं किञ्चिद् व्याकुलाः अभवाम, किन्तु 27 मार्च दिने यदा ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारः कैलाशचन्द्र जैन–करोलबागेन, नरेश जैन बंसलाभ्यां अस्माकं समीपे समाचारं प्रैषयत् यत्

वापसी में 1800 किमी. केवल 135 दिन में (साढ़े चार माह में) चले, उसमें खास निमित्त मौसम की अनुकूलता का रहा। दिसम्बर, जनवरी के महीने में उत्तरी इलाकों में जबर्दस्त सर्दी होती है, उस समय हम महाराष्ट्र और गुजरात की सड़कों पर दोनों समय चलते थे, वहाँ का गुलाबी मौसम हमारे विहार में अतीव सहायक रहता था पुनः 23 जनवरी से राजस्थान में जब हमारा प्रवेश हुआ, तो भीषण ठंड का दौर निकल चुका था अतः वहाँ भी सुबह 7-8 बजे से चलने में कभी असुविधा नहीं हुई। इसीलिए हम कहीं भी पूर्व निर्धारित समय से लेट नहीं पहुँचे बल्कि कहीं-कहीं तो ज्यादा चलने के कारण समय से एक दिन पूर्व ही पहुँच गये। जो रास्ता हमें बहुत लम्बा लग रहा था, वह भी मौसम के सहयोग एवं माताजी द्वारा प्रदत्त मंत्र जाप्य से शीघ्र ही पार हो गया।

जयपुर से दिल्ली तक सड़क मार्ग 270 किमी. है, उसकी चिन्ता कई दिन पूर्व से थी कि 30 मार्च को दिल्ली प्रवेश की तारीख दे दी गई है और 16 मार्च की शाम को हम जयपुर से निकलेंगे, तो बीच के केवल 13 दिनों में हमारे अत्यन्त थके पैर हमें दिल्ली कैसे पहुँचा देंगे? किन्तु हम तो निरन्तर मंत्रजाप्य करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

हम रोज 22-23 किमी. की रफ्तार से चले और 29 मार्च की शाम 5 बजे ही दिल्ली के दरियागंज बाल आश्रम में पहुँच गये। बीच में 26-27 मार्च की भीषण गर्मी देखकर हम थोड़ा परेशान हुए पुनः 27 तारीख को जब ब्र. रवीन्द्र जी ने कैलाशचंद्र जैन-करोलबाग एवं नरेश जैन बंसल से

गुड़गाँव नगरात् 15 किलोमीटर मार्गं यदि भवन्तः पारं गच्छेयुः, तु नरेशबंसलस्य प्रदर्शनप्रकोष्ठे यदि रात्रौ विश्रामं कुर्वन्तु, तस्य महती इच्छा वर्तते। मयोक्तं यत् अस्मिन् भीषणे आतपे एषा दीर्घयात्रा संभवैव नास्ति, किन्तु अहं न जानामि कश्चमत्कारोऽभवत् यत् मध्याह्ने मेघाः आच्छादिताः शीतलाः वायवश्च चलिताः, अनेन प्रकारेण चलिताः यदयं ग्रीष्मस्य ऋतुरेव नास्ति।

अहं यद्यपि गुड़गांव नगरेऽपि 2 किलोमीटर अधिकं चलित्वा एकस्य भक्तस्य गृहं आगच्छम्, प्रातश्च 10 किलोमीटर अचलम्, पुनरपि पादयोर्न जानामि कुतः शक्तिः समागता, यत् हसित्वा–मन्दहास्येन मार्ग पारं गतोऽभवत्। संभवतस्तस्मिन् दिने सम्पूर्णप्रवासापेक्षया सर्वाधिकः (26 किमी.) यात्राऽभवत्। पुनरपि रात्रौ तीव्रवर्षायाः कारणेन अग्रिमदिने 29 मार्चं प्रदर्शनप्रकोष्ठात् 10 किलोमीटर चलित्वा सफदरजंगएन्क्लेव उपनगरे राजकुमारजैनवीरा बिल्डर्स, इत्यस्यावासे आगच्छाम, तत्राहारं कृत्वा सायंकाले दरियागंज स्थाने प्राप्नुम।

ऋतुः एतेषु सर्वेषु प्रसंगेषु सहायतां दत्वा वास्तवे सन्ततपस्यायाः प्रभावस्य परिचयमदात्। तस्य धन्यवादः केषु शब्देषु वर्णितः स्यात्? सः तु सर्वदा तपस्विनां साधनासु बाधको न भूत्वा साधकः एव तिष्ठति, एवमेव समयस्य आवश्यकता विद्यते अन्यथा अस्यां धरित्र्यां प्राकृतिकः प्रकोपः मानवानां दानवतायाः कारणेन स्वविकरालरूपं धारयति। तस्य दूरकरणे एषां तपस्यां तेषां चात्मिकं तैजः साधनमस्ति, न किमपि अन्यत्।

हमारे पास समाचार भिजवाया कि गुड़गाँवा से 15 किमी. यदि चल लें, तो नरेश बंसल के शोरूम पर रात्रि विश्राम कर लें, उनकी बड़ी इच्छा है। मैंने कहा कि इस गर्मी में इतना लम्बा चलना दोपहर में संभव ही नहीं है किन्तु पता नहीं क्या चमत्कार हुआ कि दोपहर में बादल घिर आए, ठंडी-ठंडी हवा ऐसी चलने लगी, जैसे गर्मी का मौसम ही न हो।

मैं यद्यपि गुड़गाँवा में भी 2 किमी. अधिक एक भक्त के यहाँ चलकर आई थी और सुबह तो 10 किमी. चली ही थी, फिर भी पैरों में न जाने कहाँ से शक्ति आ गई कि हँसते-मुस्कराते रास्ता पार हो गया। संभवतः उस दिन पूरे प्रवास का सबसे ज्यादा किमी. (26 किमी.) चलना पड़ा था। फिर रात में तेज बरसात आने से अगले दिन 29 मार्च को शोरूम से 10 किमी. चलकर सफदरजंग एन्क्लेव में राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स की कोठी पर आए, वहाँ आहार करके शाम को दरियागंज पहुँचे।

मौसम ने इन सब प्रसंगों में साथ देकर वास्तव में सन्त तपस्या के प्रभाव का परिचय प्रदान किया है। उसका धन्यवाद भला किन शब्दों में किया जाये? वह तो बस सदा तपस्वियों की साधना में बाधक न बनकर साधक बना रहे, यही समय की माँग है वर्ना इस धरती पर प्राकृतिक प्रकोप मानवों की दानवता के कारण अपना विकराल रूप धारण किए हुए हैं जिन्हें दूर करने में मात्र सन्तों की तपस्या, आध्यात्मिकता ही साधन है, बाकी कुछ नहीं।

न्यूनतायाः प्रयत्ने मार्गोऽधिकः दीर्घोऽभवत्–**यदा गुजरात प्रान्तात् दिल्ली गमनस्य मार्गं निश्चितमकुर्म, तु एतद् प्रतीतमभवत् यत् मार्गस्य दीर्घता त्वश्यमेव वृद्धिंगताभवत् किन्तु सर्वेऽवबोधयन् मातः! भवती मध्यप्रदेशस्य न्यूनतम मार्गेण शिवपुरीं मार्गेण गमिष्यति तु प्रायः 1300 किलोमीटर यदि गुजरात मार्गेण गमिष्यति तु 100 किलोमीटर अधिकस्य मार्गस्य यात्रा भविष्यति किन्तु सम्पूर्णो गुजरातः, यो भवत्याः सुदर्शनपिपासुर्विद्यते सः लाभान्वितो भविष्यति। सर्वेषां भक्तिपरकाः वार्ताः श्रुत्वा माताश्री गुजरातस्य निर्णयमकरोत् तत्पश्चात्तु मार्गः वृद्धिंगतः एवाभवत्। सर्वप्रथमं तु अहमदाबाद नगरं यत् मांगीतुंगी क्षेत्रात् 350 किलोमीटर दूरमासीत्, अस्माकं पावागढ़ सिद्धक्षेत्रगमनेन 500 किलोमीटर दूरमभवत्। पुनस्तस्य प्रान्तस्य अत्याग्रहे ईडर, हिम्मतनगर, सलालादीनां क्षेत्राणां विहारकारणेन मार्गोऽधिकोऽभवत् अग्रे च स्थानेसु श्रीचन्द्रो वाहनं नीत्वा दीर्घमार्गं न्यूनं कर्तुमगच्छत्, तु अनभिज्ञतायाः कारणेन सः मार्गोऽत्यधिकः एवाभवत् पुनः श्रावकाः अकथयन् यत् यदि भवन्त्योऽनेन मार्गेण गमनं अकुर्वन् तु 10–15 किलोमीटर न्यून मार्गो भविष्यति। कुत्रचित्षु स्थानेषु तथैव वार्ताः श्रुत्वा वयं परस्परं अकथयाम यत्** ''यथा–यथा औषधं कुर्वन्तोऽचलाम'' तदा–तदा रोगः वृद्धिमेव गतः।'' **पुनरपि वयं सकुशलाः अतिष्ठाम, कापि रुग्णता नाभवत् अयमेव महान् प्रभोराशीर्वादः आसीत्। तारंगासिद्धक्षेत्रस्य वन्दनायै अपि प्रायः 80 किलोमीटर, अणिन्दा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्राया दर्शन हेत्वपि 30–40 किलोमीटर मार्गः वृद्धिंगतोऽभवत्।**

➢घटाने की कोशिश में रास्ता बढ़ता ही गया–

गुजरात प्रान्त से विहार करके जब दिल्ली जाने का रूट बना, तो लग रहा था कि रास्ता थोड़ा जरूर बढ़ रहा है किन्तु सबने समझाया कि माताजी! आप मध्यप्रदेश के सबसे कम वाले शिवपुरी रूट से जाएँगी, तो लगभग 1300 (तेरह सौ) किमी. और गुजरात होकर जाने में केवल 100 (सौ) किमी. ज्यादा पड़ेगा परन्तु सारा गुजरात, जो आपके दर्शनों का प्यासा है, उसे लाभ मिल जायेगा। सबकी भक्तिपरक बातें सुनकर माताजी ने गुजरात का निर्णय दे दिया। उसके बाद तो रास्ता बढ़ता ही चला गया। सबसे पहले जो अहमदाबाद मांगीतुंगी से केवल 350 किमी. था, हमें पावागढ़ सिद्धक्षेत्र होकर जाने में 500 किमी. पड़ गया, पुनः उस प्रान्त वालों के अत्यधिक आग्रह पर ईडर, हिम्मतनगर, सलाल आदि नगरों का दौरा करने पर रास्ता अधिक हो गया और आगे कई जगह ब्र. श्रीचन्द जी गाड़ी लेकर लम्बे रास्ते को कम करने गये, तो अनभिज्ञता के कारण वह रूट ज्यादा हो गया, फिर श्रावकों ने बताया कि आप यदि उस रास्ते से आते तो 10-15 किमी. कम चलना पड़ता। कई जगह ऐसी ही बातें सुनकर हम लोग हँसते और आपस में कहते कि **''ज्यों-ज्यों दवा करने चले, त्यों-त्यों मरज बढ़ता ही जा रहा है।''** फिर भी हम सब सकुशल रहे, कोई बीमार नहीं हुआ, यही सबसे बड़ा प्रभु का आशीर्वाद रहा। तारंगासिद्धक्षेत्र की वंदना के लिए भी लगभग 80 किमी. एवं अणिंदा पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र के दर्शन हेतु भी 30-40 किमी. बढ़ाये गये।

प्राचीन शिष्याणां मिलनम्–**मातुः सर्वप्राचीनशिष्यासु आर्यिका जिनमतिः आदिमती चास्तां। दक्षिण भारतस्य यात्रासमये मातावादीत् यत् जिनमतिः मां अवश्यमेव मिलिष्यति किन्तु 1 फरवरी 1996 दिने इन्द्रगढ़े राजस्थाने ज्ञातमभवत् यत् जिनमत्याः मातुः अत्यधिक रक्तक्षयात् 30 जनवरी दिने समाधिरभूत। शिष्यायाः वियोगवृत्तान्तमाकर्ण्य यद्यपि पर्याप्तसमयाय हृदये विक्षिप्तताया: अनुभूतिरभवत्, पुनः स्वतत्वज्ञानेन सा अस्मभ्यं प्राचीनवार्ताः श्रावयित्वा श्रद्धांजलिःसभाऽयोजत् शनैःशनैश्च सर्वं सामान्यमभवत्।**

इदानीं यदा माता गुजरातात् राजस्थानं विहृत्य दिल्लीं प्रति गन्तुमासीत् तदा तत्र साबलास्थाने विराजिता द्वितीया प्राचीनशिष्या आदिमत्यै मात्रे श्रुतमत्यै च सन्देशं प्रैषयत् यत् कुत्राप्यागत्य मिलनमवश्यमेवास्ति। तत्र च तयोरिच्छासीत् स्वमातरं मिलनस्य। तत्र लोहारिया नगरस्य प्रमुखाः श्रावकाः नाथूलाल सेठ, मगनलालादीनां पर्याप्तप्रयासः आसीत् यत् वयं मातरं लोहारिया नगरमवश्यमेव नेस्यामः तत्रैवास्य वर्षस्य चतुर्मासमपि कारयिष्यामः किन्तु यात्रा काचित् ईदृशी संवृत्ता यत् लोहारिया नगरेण सह डूंगरपुर, सागवाड़ा आदीनां विशेषभक्तिमतां नगराणां श्रावकाः रुदन्तः एवातिष्ठन् माता तत्र गन्तुं न शशाक। यतो दिल्ली पर्यन्तायाः सर्वाः तिथयः निर्धारिताः अभवन् अस्य च 100 किलोमीटर क्षेत्रवर्धनैन सर्वः एव कार्यक्रमः परिवर्तितो स्यात् पुनः उग्रेण ग्रीष्मेणापि हृदयं कम्पमानमासीत्। दीर्घयात्रायाः कारणेन वयमपि पर्याप्तश्रान्ताः स्म अतः सर्वाः परिस्थितीः वीक्ष्य माताश्रीः भक्तानां दुःखैः

➢**पुरानी शिष्याओं का मिलन–**

पूज्य माताजी की सबसे पुरानी शिष्याओं में आर्यिका जिनमती जी, आदिमती जी थीं। दक्षिण भारत की यात्रा के समय माताजी बोली थीं कि कहीं न कहीं जिनमती जी मुझे जरूर मिलेंगी लेकिन 1 फरवरी 1996 को इन्द्रगढ़ (राज.) में पता लगा कि जिनमती माताजी की अत्यधिक रक्तक्षय के कारण 30 जनवरी को समाधि हो गई। शिष्या के वियोग का समाचार सुनकर यद्यपि काफी देर हृदय में विक्षिप्तता रही, फिर अपने तत्त्वज्ञान से उन्होंने हम सबको पुरानी बातें सुनाकर श्रद्धांजलि सभा रखी और धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य हो गया।

अब जब माताजी को गुजरात से राजस्थान होकर दिल्ली जाना था, तब वहाँ साबला में विराजमान दूसरी पुरानी शिष्या आदिमती माताजी एवं श्रुतमती माताजी को कहलवाया कि कहीं न कहीं आकर मिलना जरूर है। उधर उन लोगों की तीव्र इच्छा थी अपनी अम्मा से मिलने की। बीच में लोहारिया के प्रमुख श्रावक नाथूलाल सेठ, मगनलाल जैन आदि काफी प्रयासरत थे कि पूज्य माताजी के संघ को हम लोहारिया जरूर ले जायेंगे और वहीं इस वर्ष का चातुर्मास भी करायेंगे किन्तु रूट कुछ इस प्रकार बना कि लोहारिया के साथ-साथ डूंगरपुर, सागवाड़ा आदि विशेष भक्तिमान नगरों के श्रावक भी रोते ही रह गये और माताजी वहाँ न जा सकीं। चूँकि दिल्ली तक की सारी तारीखें पूर्व निर्धारित हो चुकी थीं और इस सौ किलोमीटर के एरिये को बढ़ा देने से सारा प्रोग्राम उलट-पुलट हो जाता, फिर आगे की गर्मी से भी जी घबड़ा रहा था। लम्बी चलाई के कारण हम सब काफी थके भी थे अतः सारी परिस्थितियाँ देखकर माताजी ने भक्तों के दुःख से दुःखी होने

दुःखितापि सा तान् सर्वान् निषेधमकरोत् सलुम्बरराजस्थाने च आदिमतीं श्रुतमतीं नवदीक्षितां सुबोधमतीं च मातुः आगमनस्य सन्देशं प्रैषयत्।

वयं केसरिया क्षेत्रात् विहारं कुर्वन्त्यः 29 जनवरी 1997 दिने प्रातः सलुम्बर नगरमागच्छाम इतश्च साबलानगरात् विहृत्य एताः तिस्रः मातरः 28 जनवरी दिने सलुम्बरमागच्छन्। प्रातः नगरप्रवेशात् पूर्वमेव एताः मातरो मार्गे आगच्छन् स्व मातरं च मिलित्वा अहसन्। माता ताः अति वात्सल्यपूर्वकमपश्यत् 22 वर्षेभ्यश्च वियुक्तयो शिष्ययोः सुख दुःखं पृष्ट्वा ताभ्यः सान्त्वनां प्रादात्। द्वयोर्दिनयोर्वयं ताभ्यः सह स्थित्वा विचाराणां च आदान–प्रदानयोश्च अवसरं प्राप्नुम। आदिमती–श्रुतमती मातरौ पूज्यमातुः प्रचुराः वैयावृत्तिमकुरुताम्। तयो अनेकाः शिक्षाः प्राप्नुवन् पुनः पुनश्च गुरुदर्शनस्येच्छां व्यक्तां कुर्वन्त्यः तृतीये दिने अस्माकं विहारस्य पश्चात् ताः अपि साबलां प्रति विहारमकुर्वन्। गुरुशिष्ययोतद् मिलनं वास्तवे इतिहासस्यैकमंगमभवत् मम मनोभावना च प्रबला भूत्वा संकल्पे परिवर्तिताभवत् यत् ''अहं गुरोः छत्रछायां जीवने कदापि न त्यक्ष्यामि येन जीवितावस्थायां गुरुवियोगस्य दुःखं अहं न सोढुं विवशा स्याम्।''

क्षुल्लक मोतीसागरस्यापूर्वं समर्पणम्–**मातुः वर्तमाने संघस्थ शिष्येषु क्षुल्लकमोतीसागरः सर्वाधिकः प्राचीनः शिष्योऽस्ति। 1967 वर्षात् सनावद (म.प्र.) चतुर्मासात् मातुः शिष्यत्वं**

के बावजूद भी उन सबको मना कर दिया और सलूम्बर (राज.) में आदिमती माताजी, श्रुतमती जी एवं नवदीक्षित आर्यिका सुबोधमती जी को आने का संदेश भिजवा दिया।

हम लोग इधर केशरिया जी से विहार करते हुए 29 जनवरी 1997 को प्रातः सलूम्बर पहुँचे थे और उधर साबला से विहार करके ये तीनों माताजी 28 जनवरी को सलूम्बर आ गई थीं। सुबह नगर प्रवेश से पूर्व ही ये माताजी रास्ते में आ गईं और अपनी अम्मा से चिपककर सिसक-सिसककर रोने लगीं। माताजी ने उन्हें खूब वात्सल्यपूर्वक देखा और 22 वर्ष से बिछुड़ी शिष्याओं का सुख-दुःख पूछकर उन्हें सांत्वना प्रदान की। दो दिन तक वहाँ उन लोगों के साथ हम सभी को रहने का, विचारों के आदान-प्रदान का मौका मिला। आदिमती माताजी, श्रुतमती माताजी ने पूज्य माताजी की खूब वैयावृत्ति की, उनसे अनेक शिक्षाएँ प्राप्त की तथा पुनः-पुनः गुरुदर्शन की इच्छा व्यक्त करते हुए तीसरे दिन हम लोगों के विहार के पश्चात् वे भी साबला की ओर विहार कर गईं। गुरु-शिष्य का यह रोमांचक मिलन वास्तव में इतिहास का एक अंग बन गया और मेरी मनोभावना प्रबल होकर संकल्प में परिवर्तित हुई कि **''मैं गुरु की छत्रछाया जीवन में कभी नहीं छोडूंगी ताकि जीवित रहते हुए गुरुवियोग का दुःख मुझे सहन न करना पड़े।''**

➢क्षुल्लक मोतीसागर जी का अपूर्व समर्पण–

पूज्य माताजी के वर्तमानकालीन संघस्थ शिष्यों में क्षुल्लक मोतीसागर महाराज सर्वाधिक पुराने शिष्य हैं। सन् 1967 में सनावद (म.प्र.) चातुर्मास से माताजी का शिष्यत्व

स्वीकृत्य अद्यावधिः 40 वर्षेषु ब्रह्मचारिणो मोतीचन्द्रात् क्षुल्लको मोतीसागरो भूत्वा यत्राध्यात्मिकोन्नतेर्मार्गं प्रशस्तमकरोत्, तत्रैव धर्मप्रभावनायाः प्रत्येक कार्ये बीजारोपणस्य श्रेयोऽपि असौ प्राप्नोत्। जम्बूद्वीपस्य निर्माणं–ज्ञानज्योतिः रथप्रवर्तनं–अयोध्या–विकासः–मांगीतुंगी पंचकल्याणकं–प्रयाग–कुण्डलपुरयोः तीर्थनिर्माणं–भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरण श्रीविहारो–भगवान महावीर ज्योतिःरथस्य प्रवर्तनादीन्यन्यानि च यानि कार्याणि मातुः प्रेरणया अभवन्, तेषु सर्वेषु कार्येषु क्षुल्लकमोतीसागरस्य समर्पणं सदैव स्मरणीयं विद्यते। यद्यपि क्षुल्लकाय पदविहारो मुनिरार्यिकावत् अनिवार्यो नास्ति, तथाप्ययं अयोध्या–मांगीतुंगी क्षेत्रस्य च पूर्णां यात्रां प्रायः 6000 किलोमीटराणां दीर्घं पदविहारं कृत्वापूर्वधर्मप्रभावनायाः कार्यमकरोत् संघस्य च व्यवस्थां महता मनोयोगेन निर्वहनमकरोत्।

पूज्य मातुश्चरणयोः क्षुल्लक महोदयस्यानेन प्रकारेणैव समर्पितभावेन जीवितः स्यात् स्वस्थजीवने च सर्वतोमुखप्रगतिर्भवतु, इयमेव मम मनोकामना विद्यते।

ब्रह्मचारिणो रवीन्द्रकुमारस्य कर्मठता–**योग्यस्य जनस्याभिज्ञानं तस्य कर्मठव्यक्तित्वेनैव भवति। ते च कर्मठ व्यक्तित्वसंपन्नाः जनाः समाजे विरलाः एव भवन्ति। मातुः संघस्थः कर्मयोगी रवीन्द्रकुमारः तेषु विरलेषु नवयुवकेसु त्वन्यतमोऽस्ति। जैनसमाजस्य क्षितिजे दैदीप्यमानः अद्भुतकारकोऽस्ति, यो विद्वत्तया सह अपूर्वकार्य प्रणाल्याः क्षमताया धनी विद्यते। मात्रा संकल्पितस्य प्रत्येकसाहित्यिक–निर्माणात्मक–सर्जनात्मककार्याणि समाजे**

स्वीकार करने के बाद आज तक 40 वर्षों में ब्र. मोतीचंद से क्षुल्लक मोतीसागर बनकर जहाँ आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है, वहीं धर्मप्रभावना के प्रत्येक कार्य में बीजारोपण करने का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है। जम्बूद्वीप निर्माण, ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन, अयोध्या विकास, मांगीतुंगी पंचकल्याणक, प्रयाग एवं कुण्डलपुर तीर्थ निर्माण, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार, भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन तथा अन्य-अन्य तमाम कार्य जो पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से हुए, उन सबमें क्षुल्लक मोतीसागर जी का समर्पण सदा अविस्मरणीय रहा है। यद्यपि क्षुल्लक के लिए पदविहार करना मुनि-आर्यिका के समान अनिवार्य नहीं है, फिर भी इन्होंने अयोध्या एवं मांगीतुंगी यात्रा का पूरा प्रवास (लगभग 6 हजार किमी.) पैदल ही करके अपूर्व धर्मप्रभावना का कार्य किया है एवं संघ की व्यवस्था को बहुत ही मनोयोग से संभाला है।

पूज्य माताजी के श्रीचरणों में क्षुल्लक जी की इसी प्रकार से समर्पित भावना सदा बनी रहे तथा इनके स्वस्थ जीवन में सर्वतोमुखी प्रगति हो, यही मेरी मंगल कामना है।

➢ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्र जी की कर्मठता–

योग्य व्यक्ति की पहचान उनके कर्मठ व्यक्तित्व से होती है और वे कर्मठ व्यक्तित्व समाज में बिरले लोग ही होते हैं। पूज्य माताजी के संघस्थ कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी उन बिरले नवयुवकों में से ही जैन समाज के क्षितिज पर चमकते अनोखे सितारे हैं, जो विद्वत्ता के साथ-साथ अपूर्व कार्यप्रणाली की क्षमता के धनी हैं। पूज्य माताजी के द्वारा संकल्पित प्रत्येक साहित्यिक, निर्माणात्मक,

मूर्तरूपप्रदानशीलं, रवीन्द्रकुमारं समाजे प्रायः प्रत्येक जनो जानाति। तस्य कार्यशीलताया कर्मठतायाश्च कारणेन अयोध्यामांगीतुंगी–प्रयागकुण्डलपुरादीनां विकासस्य विशालकार्याणि मातुर्भावनानुरूपाणि संपन्नान्यभवन्। तथैव यत्रावध जैनसमाजः अयोध्या तीर्थक्षेत्रसमितेः द्विवारं अध्यक्षपदे नियुक्तवान्, एनं मांगीतुंगी क्षेत्रे निर्माणाधीना 108 फुट उत्तुंग भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमानिर्माणयोजनायामपि दक्षिणभारतस्य जनता प्रमुखमकरोत् मांगीतुंग्याश्च जटिलकार्याय पञ्चकल्याणक महोत्सवस्य सम्पन्नतायै रवीन्द्रकुमारस्य तत्रानेकनगरेषु स्वागतमभवत्।

महाराष्ट्रप्रान्तस्यैतिहासिको महोत्सवः–**लघु सम्मेदशिखर नाम्नो विख्यातं महाराष्ट्रप्रान्तस्य सर्वप्राचीनं दिगम्बरजैनसिद्धक्षेत्रं मांगीतुंगी क्षेत्रमधुना सम्पूर्णस्य भारतस्य मानसपटले अंकितं भूत्वा आगच्छत्। 55 वर्षेभ्यः पश्चात् तत्र 19 मई 1996 दिनात् 23 मई 1996 दिनपर्यन्तं पंचकल्याणक महोत्सवः भगवतश्च मुनिसुव्रतनाथस्य महामस्तकाभिषेक–समारोहश्च आशातीतसफलताभिः सह संपन्नौ अभवतां, तस्मै तत्र पदार्पणं कुर्वतां धर्म–गुरुणां मंगल आशीर्वादाः, दिल्ली–राजस्थान–मध्यप्रदेश–गुजरात–महाराष्ट्र, उत्तर–प्रदेश अवधादीनां प्रान्तानां आर्थिक सहयोगः अनेककर्मठकार्यकर्तृणां कठिनः परिश्रमः, महाराष्ट्रस्य जनतायाः अदम्योत्साहः, प्रदेशस्य दैनिक पत्राणां सम्पादकानां संवाददातृणां च प्रचारात्मकः सहयोगः, प्रादेशिकदूरदर्शनविभागस्य सहयोगः, जैन पत्र–पत्रिकाणां च सहयोगः,**

सृजनात्मक कार्यों को समाज में मूर्तरूप प्रदान करने वाले रवीन्द्र जी से देश की लगभग समस्त जनता परिचित हो चुकी है। उनकी लगनशीलता एवं कर्मठता के फलस्वरूप ही अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग, कुण्डलपुर आदि के विशाल कार्य पूज्य माताजी की भावना के अनुरूप सम्पन्न हुए हैं। इसीलिए जहाँ अवध की जनता ने उन्हें अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी का दो बार अध्यक्ष बनाया, वहीं मांगीतुंगी में निर्मित होने वाली 108 फुट उत्तुंग भगवान् ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा निर्माण योजना का भी इन्हें दक्षिण भारत की जनता ने प्रमुख बनाया तथा मांगीतुंगी के जटिल कार्य पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न कराने के पश्चात् उधर के अनेक नगरों में रवीन्द्र जी का भावभीना स्वागत हुआ।

➢महाराष्ट्र प्रान्त का ऐतिहासिक महोत्सव–

लघु सम्मेदशिखर के नाम से जाना जाने वाला महाराष्ट्र प्रान्त का सर्वप्राचीन दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी तीर्थ अब सम्पूर्ण भारत के मानस पटल पर उभर कर आ गया है। 55 वर्षों के पश्चात् वहाँ 19 मई से 23 मई 1996 तक पंचकल्याणक महोत्सव एवं तीर्थंकर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक समारोह जिन आशातीत सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ, उसके लिए वहाँ पधारे धर्म गुरुओं के मंगल आशीर्वाद, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, अवध आदि प्रान्तों का आर्थिक सहयोग, अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत, महाराष्ट्र की जनता का अदम्य उत्साह, प्रदेश के दैनिक अखबारों के संपादक एवं संवाददाताओं का प्रचारात्मक सहयोग, प्रादेशिक दूरदर्शन विभाग का सहयोग, जैन पत्र-पत्रिकाओं

प्रतिष्ठाचार्याणामनेक सहयोगि विदुषां च वैधानिक सहयोगः, पुलिस विभागस्य, प्रशासनस्य सहयोगः आदयोऽनेकानि निमित्तानि दृष्टिगोचराणि भवन्ति।

वर्षा ऋतुः पार्वत्यस्थलस्य स्मृतिमकारयत्–**अत्र सर्वाधिकं सहयोगं ऋतुरदात्, यस्मै आयोजकगणाः पूर्वतः एव चिन्तिताः आसन् यत् एतस्मिन् भीषणग्रीष्मज्येष्ठमासे कति यात्रिणोऽत्रागमिष्यन्ति, कथं च ग्रीष्मं सहिस्यन्ते? किन्त्वेषः अतिशयश्चमत्कारः एव अवगन्तव्यः यत् दिने ग्रीष्मोष्णवायूनां नाम नासीत्, सायंकालस्य प्रारम्भसमये एवं ऋतुः पार्वत्ये प्रदेशे स्वयमेव सुखदोऽभवत्। रात्र्याः अन्तिम प्रहरे तु जनाः लघु शीत निर्वाहकानि वस्त्राणि आच्छाद्य शान्तेर्निद्रां प्राप्नुवन्, प्रातः स्नानायोष्णं जलं अन्विष्यमाणाः जनाः स्वपात्राणि गृहीत्वा भ्रमन्तो नागच्छन् पुनः सर्वेषां मुखेभ्यः इदमेव निर्गतमभूत् यत् अत्रागत्य तु शिमला मसूरीवत् पवित्रस्थलस्यानन्दोऽनुभूयते। पवित्रतीर्थस्य वन्दनाभिः सार्धमेव गुरुदर्शनं पंचकल्याणकमहोत्सवं चावलोक्य पुण्यसंचयोऽपि जायते।**

भूमिदेवाः जलसमस्यां अपहृतामकुर्वन्–**मांगीतुंगी क्षेत्रे पञ्चकल्याणकं विधातुं दीर्घकालात् जलसमस्यापि अबाधत। यस्याः कारणेन न्यासिनोऽपि अकथयन् यत् यावत् जल–व्यवस्था न जायते तावद् वयं महोत्सवं कारयितुं केन प्रकारेण समर्थाः भवितुं शक्नुमः? तदा 15 दिसम्बर 1995 दिने पूज्यामाताऽकथयत् यत्** ''सर्वां चिन्तां त्यक्त्वा यत्रापि खननं भविष्यति तत्रैव जलं निर्गतं भविष्यति। पञ्चकल्याणक महोत्सवः मई मासे एव संपत्स्यते। सर्वे

का सहयोग, प्रतिष्ठाचार्य तथा उनके सहयोगी विद्वानों का वैधानिक सहयोग, पुलिस विभाग, प्रशासन सहयोग आदि अनेक निमित्त दृष्टिगोचर होते हैं।

➢ठण्डे मौसम ने हिल स्टेशन की याद दिला दी–

यहाँ पर सर्वाधिक सहयोग मौसम ने दिया, जिसके लिए आयोजकगण पूर्व से चिंतित थे कि इतनी भीषण गर्मी वाले ज्येष्ठ माह में कितने यात्री यहाँ आएंगे और कैसे गर्मी सहन करेंगे? किन्तु इसे अतिशय चमत्कार ही कहना होगा कि दिन में लू-लपट का नाम नहीं था एवं शाम होते ही मौसम हिल स्टेशन जैसा सुहावना हो जाता था। पिछली रात्रि में तो सभी लोग हल्की रजाइयाँ अथवा मोटी चादरें ओढ़कर चैन की नींद सोते थे, सुबह स्नान में गरम पानी खोजते यात्री अपनी-अपनी बाल्टियाँ लेकर टहलते नजर आते पुनः सभी के मुँह से यही निकलता था कि यहाँ आकर तो शिमला-मसूरी आदि हिल स्टेशन जैसा आनन्द आ रहा है एवं पवित्र तीर्थ की वंदना के साथ ही, गुरुदर्शन तथा पंचकल्याणक महोत्सव देखकर पुण्य संचय भी हो रहा है।

➢भूमि देवता ने जल समस्या हल कर दी–

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक करने में दीर्घकाल से जल की समस्या भी बाधा उत्पन्न कर रही थी, जिसके कारण वहाँ के ट्रस्टी कहा करते थे कि जब तक पानी की व्यवस्था नहीं होगी, तब तक हम लोग महोत्सव कैसे कर सकते हैं? तब 15 दिसम्बर 1995 को पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि ''**सब चिंता छोड़ दो, जाओ, जहाँ खुदाई करोगे, वहीं पानी**

जनाश्च जलं पीत्वा तृप्ताः भविष्यन्ति।'' **अभवच्चैवमेव। तत्र पार्वत्यक्षेत्रे यत्र प्रस्तराणां खण्डेषु कदापि जलदर्शनं नाभवत् तत्र भगवतः मुनिसुव्रतनाथस्य मातुश्च नामोच्चार्य एवं 'वोरिंग' विधिना जलं निर्गतमभवतु, तच्च नालिकाभिः सम्पूर्ण जनता समीपे आगच्छत्। येन जनता जलस्याभावमनुभवितुं न शशाक।**

सिद्धक्षेत्रस्य प्रथमश्चतुर्मासः अपूर्वसिद्धेः प्रतीकोऽभवत्–**यद्यपि पूज्यामाता त्यागमार्गे जीवनस्य चरणन्यासस्य पश्चात् तस्याः अनेक चतुर्मासाः विभिन्नप्रान्तानां नगरेषु तीर्थक्षेत्रेषु च सम्पन्नाः अभवन् किन्तु सा कदापि कस्मिन्नपि सिद्धक्षेत्रे चतुर्मासं नाकरोत्। सः संयोगं 1996 वर्षे 99 कोटि मुनिवराणां भूमिं सिद्धक्षेत्रं मांगीतुंगी क्षेत्रं प्राप्नोत्।**

असौ सिद्धक्षेत्रस्यातिशयोऽस्ति वा श्रेयांसमती मातुः संघस्य च प्रबला इच्छास्ति, अथवा महाराष्ट्रस्य नासिक जनपदस्य लोकप्रियविधायकस्य श्री जयचन्द्र कासलीवालस्य महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र समितेरध्यक्षस्य श्री पन्नालाल पापड़ीवालस्य च पुरुषार्थोऽस्ति अथवा गणिन्या मातुः ज्ञानमत्याः हार्दिक इच्छा?

किमपि कथितं भवेत् किन्तु सर्वेषां तर्काणां पृष्ठत निर्वाणभूमिं प्रति अन्तर्निहिता मातुः भक्तिर्भावना तु स्वीकर्तव्यैव अतः आग्रहकाले यदा एकस्मिन् दिने भक्ताः एतस्यां वार्तायां मातुर्ध्यानं केन्द्रितमकुर्वन् यत् भवत्याः एकश्चतुर्मासस्तु सिद्धक्षेत्रेऽवश्यमेव भवितव्यः।

निकल पड़ेगा, पंचकल्याणक मई में ही होगा और सब लोग पानी पीकर पानी-पानी हो जायेंगे।'' और हुआ भी यही कि उस पहाड़ी क्षेत्र पर जहाँ पत्थर की चट्टानों में कभी-कहीं पानी नहीं दिखता था, वहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ एवं माताजी का नाम लेकर बोरिंग कराते ही पानी निकल पड़ा और वह पाइप लाइनों से पूरी जनता तक पहुँचाया गया, जिससे जनता को जल के अभाव का सामना नहीं करना पड़ा।

➢सिद्धक्षेत्र का प्रथम चातुर्मास अपूर्व सिद्धी का प्रतीक बना–

यूँ तो पूज्य माताजी द्वारा त्यागमय जीवन में कदम रखने के पश्चात् उनके अनेक चातुर्मास विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न शहरों एवं तीर्थों पर सम्पन्न हो चुके थे किन्तु उन्होंने अभी तक किसी सिद्धक्षेत्र पर चातुर्मास नहीं किया था, वह संयोग मिला सन् 1996 में 99 करोड़ मुनिवरों की निर्वाणभूमि सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी को।

इसे सिद्धक्षेत्र का अतिशय कहा जाए, आर्यिका श्रेयांसमती माताजी व संघ की प्रबल इच्छा कही जाए या महाराष्ट्र की जनता का भाग्य, नासिक जिले के लोकप्रिय विधायक (आमदार) जयचंद कासलीवाल और डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल (महाराष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष) का अकाट्य पुरुषार्थ कहा जाये, अथवा पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आन्तरिक भावना?

जो कुछ भी मानें किन्तु उसके पीछे निर्वाणभूमि के प्रति छिपी माताजी की अनन्य भक्ति भावना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा क्योंकि आग्रह करते-करते जब एक दिन भक्तों ने इस बात पर माताजी का ध्यान केन्द्रिय किया कि आपका एक चातुर्मास सिद्धक्षेत्र पर भी होना चाहिए, तब उन्होंने चिन्तन

तदा सा चिन्तनमकरोत् अस्मान् चाकथयत् यत् वस्तुतोऽहं 1952 वर्षे श्रावणमासे गृहमत्यजं तदा तस्य समयस्य मध्ये मम 44 चतुर्मासेसु कोऽपि सिद्धक्षेत्रे न विद्यते, 1963 वर्षे सम्मेदशिखरस्य योगोऽपि समागतः किन्तु कलकत्ता निवासिनामत्याग्रहवशात् अहं दशसु दिनेषु 300 किलोमीटरस्य तीव्रगत्या पदयात्रां कृत्वा कलकत्ता नगरं प्राप्य चतुर्मासं स्थापितमकरवम्। इदानीं ममेच्छा वर्तते यदस्मिन् सिद्धक्षेत्रे एकं चतुर्मासं कुर्याम्। वयं (अहं क्षुल्लक मोतीसागरः, ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमारश्च) अकथयाम, यत् भवत्याः इच्छां आदेशं प्रति तु वयं विनयावनताः स्मः वयं कामपि मंत्रणां अनेन प्रकारेण दातुं समर्थाः न स्मः। सर्वेषां मिश्रितेन योगदानेन चतुर्मासः मांगीतुंगी क्षेत्रेऽभवत्। सः च मातुः सिद्धक्षेत्रस्य च द्वयोर्जीवने सिद्धेः प्रतीको जातः।

सहस्रकूटकमलमन्दिरे एकाऽपूर्वरचना–**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे प्रायः 10 वर्षाणि पूर्वं स्वर्गीय–पंचमस्य पट्टाधीशस्य आचार्यश्रेयांससागरस्य प्रेरणया धातोः 1008 खड्गासन–प्रतिमानां निर्माणाय दातारो धनमदुः किन्तु ताः प्रतिमाः अद्यावधिः निर्मिताः न भवितुमशक्नुवन्। गणिन्याः आर्यिकायाः मातुः ज्ञानमत्याः इच्छावशात् प्रतिमाः जयपुरात् निर्मिताः भूत्वा आनीतां समये च तासां प्राणप्रतिष्ठाः चाभवत्।**

अस्य मध्ये एकदा माता ज्ञानमती आर्यिकां श्रेयांसमतीमपृच्छत् यदेताः सहस्रकूटप्रतिमाः कुत्र विराजमानाः भविष्यन्ति? तदा माता श्रेयांसमती विश्वहितकरस्य सातिशयस्य चिन्तामणेः पार्श्वनाथस्य मन्दिरस्य शिखरे नीत्वा स्थानमदर्शयत्, यत्र शिखरे त्रिकोणानां वृत्ताकारः

किया और हम लोगों से कहने लगीं कि वास्तव में मैंने सन् 1952 के श्रावण मास में घर छोड़ा और तब से आज तक मेरे 44 चातुर्मासों में कोई सिद्धक्षेत्र चातुर्मास स्थल नहीं है। सन् 1963 में सम्मेदशिखर का योग भी आया था किन्तु कलकत्ता वालों के अत्यधिक आग्रह से मैंने 10 दिन में 300 किमी. की तीव्र गति की पदयात्रा करके कलकत्ता पहुँचकर चातुर्मास स्थापित किया था। अब मेरी कुछ इच्छा है कि इस सिद्धक्षेत्र पर एक चातुर्मास कर ही लें।" हम लोगों ने (मैंने, क्षुल्लक मोतीसागर जी और ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने) कहा कि आपकी इच्छा और आदेश के समक्ष हम विनयावनत हैं और हम कुछ भी सुझाव कैसे दे सकते हैं? सबके मिले-जुले योगदान से चातुर्मास मांगीतुगी में हो गया और वह पूज्य माताजी तथा सिद्धक्षेत्र दोनों के जीवन में अपूर्व सिद्धि का प्रतीक बन गया।

➢सहस्रकूट कमलमंदिर एक अपूर्व देन–

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर लगभग 10 वर्ष पूर्व स्व. पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज की प्रेरणा से धातु की एक हजार आठ खड्गासन प्रतिमाओं के निर्माण हेतु दातारों ने पैसे दिए किन्तु वे प्रतिमाएँ अभी निर्मित नहीं हो सकी थीं। गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिकारत्न श्री श्रेयांसमती माताजी की प्रबल प्रेरणा से वहाँ के ट्रस्टीगण मई 1996 तक वे समस्त प्रतिमाएँ जयपुर से बनवाकर ले आये और समय से उनकी प्राण-प्रतिष्ठा भी हो गई।

इसी मध्य जब पूज्य माताजी ने एक दिन आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी से पूछा कि ये सहस्रकूट प्रतिमाएँ कहाँ विराजमान होंगी? तब श्रेयांसमती माताजी ने विश्वहितंकर सातिशय चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर के शिखर पर ले जाकर स्थान दिखाया, जहाँ शिखर में तीन कटनी का

लघुः चत्वरः आसीत्, तत्र स्थानं एतावत् संकीर्णमासीत् यत् कोऽपि जनो गत्वा दर्शनमेव कर्तुं न शक्नोति। तं दृष्ट्वा माताऽकथयत्–

मह्यं तु एतत् स्थानं सहस्रकूटजिनालयाय सर्वथा न रोचते। अतस्ताभ्यः प्रथमबारं निर्मिताभ्यः खड्गासनाभ्यः सहस्रकूटप्रतिमाभ्यस्तु मन्दिरं पृथगेव निर्मापितं भवेत्।

एतच्छ्रुत्वा श्रेयांसमती माता, केचिच्च न्यासमण्डलस्य सदस्याः अवदन्–

''मातः! वयं तु अस्मिन् विषये किञ्चिन्न व्यचारयाम। भवत्यै यथा रोचते, तादृशं मन्दिरं निर्मातुं आदेशं करोतु।''

तस्मिन् दिने माता किञ्चित् चिन्तनमकरोत्, एकं कमलमन्दिरं निर्माप्य तस्य 108 दलेषु एताः प्रतिमाः विराजमानाः कर्तुं मंत्रणामदात्। यथैव तस्य मन्दिरस्य घोषणामकरोत् दानदातृणां समूहः आगतः तत्कालमेव लक्षाधिकरूप्यकाणां स्वीकृतिरभवत्। एतत्पश्चात् समस्या आसीत् यत् मन्दिरस्य निर्माणं केन प्रकारेण कश्च कारयिष्यति? क्षेत्रे तु विशालं मुनिसुव्रतनाथस्य मन्दिरमेव अपूर्णं विद्यते। यात्रिणां सुविधार्थं अनेकवर्षेभ्यः स्वीकृतानां 20 प्रकोष्ठानां निर्माणमपि अपूर्णमेवासीत्। अधुना तु नवनिर्माणस्य उत्तरदायित्व को गृहीष्यति? किन्तु सर्वेषां न्यासिनामियं हार्दिक इच्छासीत् यत् यथा माता ज्ञानमती स्थाने– स्थाने नवाः योजनाः साकाराः अकारयत् तथैवात्रापि काचित् नवीनरचना अवश्यमेव निर्मापिता स्यात्।

न्यासमण्डलं विचिन्त्य–विचार्य कमलमन्दिरस्य निर्माणस्य संयोजकं डाक्टर पन्नालालपापड़ी–

गोल छोटा सा चबूतरा बना था, वहाँ जगह इतनी छोटी थी कि अन्दर जाकर तो कोई दर्शन ही नहीं कर सकता था। उसे देखकर माताजी कहने लगीं–

''मुझे ये स्थान सहस्रकूट जिनालय के लिए बिल्कुल पसंद नहीं है। इतनी सुन्दर प्रथम बार निर्मित खड्गासन सहस्रकूट प्रतिमाओं के लिए तो मंदिर अलग से ही बनना चाहिए।''

यह सुनकर श्रेयांसमती माताजी एवं कुछ ट्रस्टी महानुभाव बोल पड़े–

''माताजी! हम लोगों ने तो अभी तक इस बारे में कुछ सोचा भी नहीं है। आप जैसा चाहें, वैसा मंदिर बनवा दीजिए।''

उस दिन माताजी ने कुछ चिन्तन किया और एक कमल जिनालय का निर्माण करवाकर उसकी 108 पंखुडियों पर ये प्रतिमाएँ विराजमान करने की प्रेरणा दी। ब्र.रवीन्द्र जी से उसकी रूपरेखा बनवाकर क्षुल्लक मोतीसागर महाराज ने 22 मई 1996 को विशाल सभा में ज्यों ही उस मंदिर की घोषणा की, दानदातारों की भीड़ लग गई और शीघ्र ही लाखों रुपये की स्वीकृतियाँ हो गईं। इसके पश्चात् समस्या थी कि मंदिर का निर्माण कैसे और कौन करवाएगा? क्षेत्र पर तो विशाल निर्माणाधीन मुनिसुव्रत मंदिर ही अभी अधूरा पड़ा था, यात्रियों की सुविधा हेतु अनेक वर्षों से स्वीकृत 20 कमरों का निर्माण भी आज तक पूरा नहीं हो पाया था, तो अब बिल्कुल नया काम करवाने की जिम्मेदारी भला कौन लेता? किन्तु सभी ट्रस्टियों की इच्छा थी कि माताजी ने जैसे जगह-जगह नई योजनाएँ साकार करवाई हैं, उसी प्रकार यहाँ भी कोई न कोई नई रचना अवश्य बन जावे।

ट्रस्टियों ने सोच-विचार कर कमल मंदिर के निर्माण का संयोजक डॉ. पन्नालाल जैन

वालामकरोत् किन्तु सोऽपि एतावन्तं महान्तं कार्यं अक्तूबरपर्यन्तं त्रिमासादन्तरमेव कारयितुं कठिनतामन्वभवत्। एतां सर्वां प्रक्रियां कार्यस्य आरम्भे च रोधं दृष्ट्वा गणिनी माता ज्ञानमती कमलमन्दिरस्य निर्माणस्य समस्तं कार्यभारं ब्रह्मचारिणि रवीन्द्रकुमारे निक्षिप्य अकथयत् यत् ''24 अक्टूबर आश्विन् शुक्ल त्रयोदशी दिने शुभ मुहूर्ते कमलमन्दिरस्य 108 दलेषु सहस्रकूटस्य 1008 प्रतिमाः विराजमानाः भवितव्याः।''

एतासां सर्वासां वार्तानामनन्तरं स्थानस्य पूर्णरूपेण निश्चयं कृत्वा 5 जून 1996 दिने शिलान्यासः तस्मिन् स्थानेऽभवत् यत्र तीर्थक्षेत्रस्य महामंत्री ब्रह्मचारी गणेशीलालः सपरिवारः 65 वर्षेभ्यः न्यवसत्। यः स्वेच्छया स्व अहोभाग्यं गृहावासं परिवर्तितामकरोत्। तत्पश्चात् 2 जुलाई 1996 दिने मातुर्मंगलविहार मालेगाँव नगरं प्रत्यभवत्। रवीन्द्रकुमारश्च हस्तिनापुरमागच्छत्। अस्य मध्ये जीर्णभवनं कातयितुं स्वच्छतादिकार्याणि डा. पन्नालाल पापड़ीवाला द्रुतगत्या अकारयत्। पुनः मातुः संघः 28 जुलाई दिने मांगीतुंगीमागच्छत्। 29 जुलाई आषाढ़ शुक्ल चतुर्दश्यां पूज्या गणिनी ज्ञानमती, आर्यिका श्रेयांसमती च एतयोः द्वयोः संघौ वर्षायोगस्थापनामकुरुतां, ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारश्च कमल मन्दिरस्य मानचित्रं निर्मापितं कृत्वा कार्यारम्भमकरोत्। सः आसामप्रदेशस्य ठेकेदारं वासुदेवपालं 108 कमलदलानां निर्मातुं ठेकाकार्यमदात्, किन्तु अगस्त मासस्यान्तिम– सप्ताहपर्यन्तं निर्माणस्य मंदां स्थितिं वीक्ष्य क्षुल्लक मोतीसागरश्चिन्तितोऽभवत्। सः रवीन्द्रकुमाराय परामर्शमदात्

पापड़ीवाल को बनाया किन्तु वे भी इतना बड़ा कार्य अक्टूबर तक मात्र 3 महीने के अन्दर करवाने में परेशानी महसूस कर रहे थे। यह सारी प्रक्रिया तथा प्रारंभ में कार्य की रुकावट आदि देखकर पूज्य गणिनी माताजी ने कमल मंदिर के निर्माण की जिम्मेदारी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के ऊपर डालते हुए कहा कि **''24 अक्टूबर आश्विन शुक्ला त्रयोदशी को शुभ मुहूर्त में कमल की 108 पंखुडियों पर सहस्रकूट की 1008 प्रतिमाएँ विराजमान करना है।''**

इतनी सब बात होने के बाद जगह का पूर्णरूपेण निर्णय हेकर 5 जून 1996 को शिलान्यास उस स्थान पर किया गया, जहाँ तीर्थक्षेत्र के महामंत्री वयोवृद्ध ब्र. गणेशीलाल जी सपरिवार 65 वर्षों से निवास कर रहे थे। उन्होंने स्वेच्छा से अपना अहोभाग्य समझते हुए टूटे-फूटे जीर्ण मकान को छोड़कर नए कमरों में गृहस्थी परिवर्तन कर लिया। उसके बाद 2 जुलाई 1996 को पूज्य माताजी का मालेगांव की ओर ससंघ मंगल विहार हो गया और रवीन्द्र जी हस्तिनापुर चले गये। इस मध्य जीर्ण मकान को गिरवाने, नींव खुदवाने आदि का काम डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल ने द्रुतगति से करवाया पुनः पूज्य माताजी का संघ 26 जुलाई को मांगीतुंगी पहुँच गया। 29 जुलाई (आषाढ़ शु. 14) को पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी, इन दोनों संघों ने वर्षायोग स्थापना की और रवीन्द्र जी ने कमल मंदिर का नक्शा बनवाकर कार्य प्रारंभ करवा दिया। उन्होंने आसाम के कारीगर वासुदेवपाल को 108 पांखुडी बनाने का ठेका दे दिया किन्तु अगस्त के अंतिम सप्ताह तक निर्माण की मंद स्थिति देखकर क्षुल्लक मोतीसागर जी को चिंता हुई और उन्होंने

यदिदं मन्दिरं अक्टूबरपर्यन्तं पूर्णं भवितुं न शक्नोति एतत् वास्तवे पूर्णं कर्तुं त्वं हस्तिनापुरात् स्व श्रमिकान् निरीक्षकान् च आहूतान् कर्तुं विवशः भविष्यसि।

तदा ब्र. रवीन्द्रकुमारः दूरभाषं कृत्वा स्व सम्पूर्णं निर्माणदलमाह्वयत्। सितम्बर मासाच्च कार्यं द्रुतगत्या प्रारम्भो अभवत्। अनेन प्रकारेण 3–4 बारं हस्तिनापुरात् निरीक्षकः शरीफः अहमदः शिल्पकारश्च श्रमिकाः अयस्काराः काष्ठाकाराश्च इत्यादयः 20–25 जनाः मांगीतुंगीमागत्य 20 अक्तूबर 1996 पर्यन्तं बहिः स्थानस्य रेलिंग सहितं पूर्णं सहस्रकूटं कमलमन्दिरं निर्माप्य क्षेत्राय प्रादात्, यस्मिन् 25 अक्टूबरपर्यन्तं वेदिकयोः शुद्धे प्रतिष्ठायाः कार्यमभवत् 24 अक्तूबर दिने प्रातः 9 वादनसमये प्रतिमाः व्यराजन्त मध्याह्ने च त्रिवादन समये मन्दिरे कलशारोहणैन ध्वजारोहणेन च अतिशयकान्त्याः उद्योतोऽभवत्। मन्दिरस्योद्घाटनं 26 अक्तूबर दिने संघपति लाला महावीरप्रसादो जैनः बंगला स्वीट सैन्टर दिल्ली अकरोत् द्वयोश्च संघयोः पावनसान्निध्ये अस्य वृहतः कार्यस्य पूर्णतायां गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुराशीर्वादात्मकमुद्बोधनं प्राप्य जन–मनः आह्लादितमभवत्।

महाराष्ट्रस्य सुदूरवर्तिनां च प्रान्तानां सर्वे तीर्थयात्रिणोऽत्रागत्येदमेवोक्तवन्तः यत् त्रिसुमासेषु तु मांगीतुंगी क्षेत्रस्य कायाकल्पः एवाभवत्। केवलमेकस्य कमलमन्दिरस्य पूर्णतायै एव न पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः प्रायः षण्मासस्य प्रवासस्यान्तर्गत शासनस्य समाजस्य

रवीन्द्र जी को परामर्श देते हुए कहा कि ''यह मंदिर इस गति से अक्टूबर तक तैयार नहीं हो सकता है। इसे वास्तव में पूरा करने के लिए तुम्हें हस्तिनापुर से अपने कारीगर, सुपरवाइजर आदि को बुलाना पड़ेगा।''

तब रवीन्द्र जी ने तत्काल फोन करके हस्तिनापुर से अपनी पूरी निर्माण की टीम बुलाई और सितम्बर से कार्य तूफानी स्तर पर प्रारंभ हो गया। इस प्रकार 3-4 बार में हस्तिनापुर से सुपरवाइजर (शरीफ अहमद), मिस्त्री, मजदूर, लुहार, बढ़ई आदि लगभग 20-25 व्यक्तियों ने मांगीतुंगी पहुँचकर 20 अक्टूबर 1996 तक बाहर की रेलिंग आदि सहित पूरा ''सहस्रकूट कमल मंदिर'' तैयार करके क्षेत्र को प्रदान कर दिया, जिसमें 22 से 24 अक्टूबर तक वेदी शुद्धि, प्रतिष्ठा का कार्य हुआ एवं 24 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे प्रतिमाएं विराजमान हो गईं तथा मध्यान्ह 3 बजे मंदिर पर कलशारोहण, ध्वजारोहण द्वारा अतिशय कान्ति का उद्योत होने लगा। मंदिर का उद्घाटन 26 अक्टूबर को संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन (बंगाली स्वीट सेंटर-दिल्ली) ने किया तथा दोनों संघों के पावन सानिध्य में इस वृहत् कार्य की पूर्णता पर गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वादात्मक उद्बोधन को पाकर जनमानस आल्हादित हो गया।

महाराष्ट्र एवं सुदूरवर्ती प्रान्तों के तमाम तीर्थयात्रियों ने यहाँ पहुँचकर यही कहा कि 3 माह में मांगीतुंगी की तो काया ही पलट गई है। मात्र एक कमल मंदिर की पूर्णता ही नहीं, पूज्य ज्ञानमती माताजी के लगभग 6 माह के प्रवास के अंतर्गत सरकार एवं समाज सभी

च सर्वेषामेव सक्रियः सहयोगः प्राप्तोऽभूत्, यः क्षेत्रस्य चतुर्मुख्याः प्रगतेः कारणमभवत्। नासिक जनपदस्य लोकप्रियो विधायकः श्री जयचन्द्रो जैनः कासलीवालः महाराष्ट्र शासनस्य पक्षतः मांगीतुंगी क्षेत्रस्य पर्वतस्य शिखरपर्यन्तं विदयुत्प्रकाशस्य स्थायिव्यवस्थामकारयत्। यात्रिभ्यो धर्मशालायाः पर्वतस्य निकटे सोपानपर्यन्तं गमनार्थं पुष्टं राजमार्गमपि निर्मापितम–कारयत्।

इत्थं सिद्धक्षेत्रस्यायं प्रथमश्चतुर्मासः महाराष्ट्रप्रान्ताय अपूर्वसिद्धेः प्रसिद्धेश्च निमित्तमभूत् यतो हि शासनात् अतिरिक्तं दिगम्बर जैन समाजस्यापि आशातीतः सहयोगः प्राप्तोऽभूत्।

मांगीतुंगीक्षेत्रे एकोऽदभुतः संयोगो दृष्टिमागतः–**चतुर्मासस्य मध्ये कल्पद्रुम–इन्द्रध्वज सिद्धचक्रादीनि अनेकानि लघूनि महान्ति च 60 विधानानि संपन्नान्यभवन्। 28 अक्तूबर 1996 दिने च मातुः त्रिषष्टितमं जन्मदिनमायोजितम्। तस्मिन्नेव दिने मांगीतुंगीक्षेत्रे एकेऽभूतपूर्वः संयोगः दृष्टिमागतः योऽतिशयस्यैव द्योतकः आसीत्। पूज्या माता मार्च 1996 मासे घोषणामकरोत् यत् अप्रैल 1997 तः सम्पूर्णे देशे प्रथमतीर्थंकरस्य भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्त्याः महामहोत्सवस्य राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीयस्तरेण आयोजनं प्रारब्धं भविष्यति, यो जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः सार्वभौमिकतायाश्च परिचायको भविष्यति। अस्य व्यापकस्य समारोहस्यान्तर्गते माताश्रीः अयोध्याप्रयागहस्तिनापुरेषु तीर्थेषु जन्मनः दीक्षायाः आहारचर्यायाश्च प्रतीकानां निर्माणस्य प्रेरणाः अदात्, तु प्रयागात् डॉक्टर प्रेमचन्द्रो जैनः**

का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ, जो क्षेत्र की चतुर्मुखी प्रगति का कारण बना। नासिक जिले के लोकप्रिय विधायक (आमदार) श्री जयचंद जैन कासलीवाल ने महाराष्ट्र सरकार की ओर से मांगीतुंगी पर्वत की चोटी तक विद्युत प्रकाश की स्थाई व्यवस्था करवा दी, यात्रियों को धर्मशाला से पर्वत के निकट सीढ़ियों तक जाने हेतु पक्की सड़क पुल का निर्माण भी करवा दिया।

इस प्रकार सिद्धक्षेत्र का यह प्रथम चातुर्मास महाराष्ट्र प्रान्त के लिए अपूर्व सिद्धी एवं प्रसिद्धी में निमित्त बन गया, क्योंकि शासन के अतिरिक्त दिगम्बर जैन समाज का भी आशातीत सहयोग प्राप्त हुआ।

➢मांगीतुंगी में एक और अनहोना संयोग देखने को मिला–

चातुर्मास के मध्य कल्पद्रुम, इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र आदि कुल मिलाकर छोटे-बड़े लगभग 60 विधान सम्पन्न हुए एवं 26 अक्टूबर 1996 शरदपूर्णिमा को पूज्य माताजी का 63वाँ जन्मजयंती महोत्सव मनाया गया। उसी दिन मांगीतुंगी में एक अनहोना संयोग और भी देखने को मिला जो अतिशय का ही द्योतक था। हुआ यूँ कि पूज्य माताजी ने मार्च 1996 में घोषणा की थी कि अप्रैल सन् 1997 से पूरे देश में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्मजयंती महामहोत्सव राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाना प्रारंभ किया जाएगा, जो जैनधर्म की प्राचीनता, सार्वभौमिकता का परिचायक होगा। इस व्यापक समारोह के अन्तर्गत माताजी ने अयोध्या, प्रयाग, हस्तिनापुर में जन्म, दीक्षा एवं आहारचर्या के प्रतीक निर्मित करने की प्रेरणा की, तो प्रयाग से डॉ. प्रेमचंद जैन वहाँ की

प्रयागस्य योजनाकार्यं बोद्धुं मांगीतुंगीमागच्छत्। माताश्रीस्तमकथयत् यत् प्रयागे धातोरेकं विशालं वट्वृक्षं निर्माप्य तस्याधस्तात् भगवतः ऋषभदेवस्य पिच्छिकाकमण्डलुसहितायाः मुनिमुद्रायाः खड्गासन प्रतिमा विराजमाना करणीया अस्ति यतः प्रयागे भगवतः उत्कृष्टस्य त्यागस्य कारणेनैव सार्थक नामवानस्ति। अस्याश्चर्चायाः मध्ये एव श्री प्रेमचन्द्र प्रदीपकुमार जैनः खारीबावली दिल्ली अकथयत् यत् ''प्रयागे इयं सर्वा वटवृक्ष योजना मम पक्षतो निर्मिता भवेत्'' **संघपतिः महावीर प्रसादश्चाकथयत् यत्** ''मम पक्षतः प्रयागे भगवतः ऋषभदेवस्य 21 फुट उत्तुंगायाः पद्मासनप्रतिमाया निर्माणं भवेत्।'' **एतयोर्द्वयो दानिनोः दिगम्बर जैन–त्रिलोकशोधसंस्थानस्य प्रयागस्य च जैनानां पुरतः सम्मानोऽभवत्।**

सभायां उपस्थितः सर्वोजनसमूहो आश्चर्यचकितो भूत्वा अवादीत् यत् ''इयं कीदृशी शक्तिरस्ति या जिह्वायाः वचनानां निर्गमनकाले एव भक्तजनाः तानि पूर्णानि कर्तुमग्रे तिष्ठन्ति। अहमकथयम् यत् एतत्सर्वं भगवन्तं प्रति मातुः अप्रतिमभक्त्याः एव चमत्कारोऽस्ति अस्मादेव कारणात् अस्याः प्रत्येककार्यं विधातुं चक्रेश्वर्याः देव्याः शक्तिर्धावति।''

मातुरयं सिद्धक्षेत्रस्य प्रथमश्चतुर्मासः जनेभ्यः कस्यचिदपि कार्यस्य सिद्धेः कारणमभवत् इयं प्रसन्नतायाः वार्तास्ति। इत्थमेव भविष्येऽपि गुरुप्रेरणा समाजस्य कल्याणं करोतु इयमेव मम मंगल कामनास्ति।

मांगीतुंगी क्षेत्रात् विहार–**मूर्तिनिर्माणस्य घोषणया यत्रैकतः सर्वेषां हृदयानि प्रसन्नतयाभिभूतानि**

योजना को समझने हेतु मांगीतुंगी पधारे थे। माताजी उन्हें बता रही थीं कि प्रयाग में धातु का एक विशाल वटवृक्ष बनाकर उसके नीचे भगवान ऋषभदेव की पिच्छी-कमण्डलु सहित मुनि मुद्रा की खड्गासन प्रतिमा विराजमान करना है क्योंकि प्रयाग भगवान के उत्कृष्ट त्याग के कारण ही सार्थक नाम वाला है। इस चर्चा के मध्य में ही श्री प्रेमचंद प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली-दिल्ली ने कहा कि **''प्रयाग में यह वटवृक्ष की पूरी योजना मेरी ओर से बनाई जावे''** तथा संघपति महावीर प्रसाद जी बोले कि **''मेरी ओर से प्रयाग में भगवान ऋषभदेव की 21 फुट पद्मासन प्रतिमा का निर्माण करवा दीजिए।''** इन दोनों दानी महानुभावों का दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-हस्तिनापुर एवं प्रयाग की ओर से सम्मान किया गया।

सभा में उपस्थित समस्त जनसमूह आश्चर्यचकित हो कहने लगा कि **''यह कैसी जादुई शक्ति है, जो जिह्वा से वचन निकलते ही भक्तगण आगे से आगे उन्हें पूर्ण करने को तैयार खड़े रहते हैं।'** मैंने कहा कि **''यह सब भगवान के प्रति माताजी की अप्रतिम भक्ति का ही चमत्कार है इसीलिए इनके प्रत्येक कार्य के पीछे चक्रेश्वरी देवी की शक्ति दौड़ती रहती है।''**

पूज्य माताजी के जीवन में सिद्धक्षेत्र का यह प्रथम चातुर्मास जन-जन के लिए किसी न किसी कार्य की सिद्धि का प्रतीक बन गया, यह प्रसन्नता की बात है। भविष्य में इसी प्रकार से गुरु प्रेरणा प्रत्येक समाज का कल्याण करे, यही मंगलकामना है।

➢मांगीतुंगी तीर्थ से विहार–

मूर्ति निर्माण की घोषणा से जहाँ एक ओर सभी के हृदय खुशी से अभिभूत हो रहे थे, वहीं

आसन् तत्रैव मातुः मांगीतुंगीक्षेत्रात् विहारस्य घोषणा सर्वानेव गंभीरमुद्रायामपातयत्। गतसमये 6–7 मासेभ्यः मातुः सान्निध्ये यः उल्लासः उत्साहश्च दृष्टिमायातः, तस्य सर्वेषां हृदये लोपस्य भयमासीत्। पूज्या आर्यिका श्रेयांसमती तस्याश्च संघस्य सर्वाः आर्यिकाः पूज्याया मातुरसीमवात्सल्यं प्राप्य हृदयेऽभिभूताः आसन्। माता स्वकार्यक्रमानुसारेण 14 नवम्बर 1996 दिने चतुर्मासं पूर्णं कृत्वा तस्मात् स्थानात् विहारमकरोत्। 30 मार्च 1997 दिने च संघसहिता भारतस्य राजधानीदिल्लीमागच्छत्।

आर्यिकायाः मातुः वात्सल्यं न विस्मरणयोग्यम्–**यस्मात् दिनात् वयं हस्तिनापुरात् मांगीतुंगीं प्रति विहारमकुर्म, तस्मात् दिनादेव मांगीतुंग्यां विराजमानायाः पूज्यमातुः श्रेयांसमत्याः अतिरिक्तं आर्यिका श्री सुगुणमती, श्रीचन्द्रमती, श्री सुदृष्टिमती, श्री मनोमती, श्री दक्षमती सर्वाः आर्यिकाः मातरश्च अतिप्रसन्नाः आसन् यत् अनेन निमित्तेन वयं पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः दर्शनं तस्याश्च शिक्षणं दीर्घकालीनोऽनुभवश्च प्राप्तो भविष्यति। अस्माकं निर्विघ्नायाः यात्रायाः सम्पन्नताहेतवे सर्वाः मातरः जाप्यादिकानुष्ठानानिचाकुर्वन्। तत्र चागते सति सर्वासामसीमवात्सल्यं अस्माकं सर्वां श्रान्तिं चापाहरत्।**

मांगीतुंगी पञ्चकल्याणकस्य चतुर्मासस्य च प्रवासकाले सर्वाभिः मातृभिः सह व्यतीतानि स्वाध्याय–आगमचर्चा, वैयावृत्यादीनां स्मरणीयानि क्षणानि सर्वदैव स्मृतिपथि आयान्ति।

पूज्य माताजी के मांगीतुंगी से विहार की घोषणा ने सभी को गंभीर मुद्रा में डाल दिया। पिछले 6-7 महीनों से माताजी के सानिध्य में जो उल्लास एवं उमंग देखने को मिलती थी, सभी को उसके खो जाने का डर था। आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी, उनके संघ की सभी आर्यिकाएँ, पूज्य माताजी के असीमवात्सल्य को पाकर हृदय से अभिभूत थीं। खैर..... चातुर्मास के उपरान्त अपने पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार पूज्य माताजी ने 14 नवम्बर 1996 को वहाँ से विहार कर दिया एवं 30 मार्च 1997 को संघ सहित भारत की राजधानी दिल्ली पहुँच गईं।

➢आर्यिका माताजी का वात्सल्य भुलाया नहीं जा सकता–

जिस दिन से हम लोगों ने हस्तिनापुर से मांगीतुंगी की ओर विहार किया था, उस दिन से ही मांगीतुंगी में विराजमान पूज्य आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी के अतिरिक्त आर्यिका श्री सुगुणमती माताजी, आर्यिका श्री चन्द्रमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माताजी, आर्यिका श्री मनोमती माताजी, आर्यिका श्री दक्षमती माताजी आदि आर्यिकाएँ भी अतीव प्रसन्न थीं कि इस निमित्त से हमें पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन एवं उनसे ज्ञानार्जन और दीर्घकालीन अनुभव भी प्राप्त हो सकेगा। हम लोगों की निर्विघ्न यात्रा सम्पन्नता हेतु इन सभी माताओं ने जाप्यादि के अनुष्ठान भी किये थे तथा वहाँ पहुँचने पर इन लोगों के असीम वात्सल्य ने हमारी सारी थकान दूर कर दी थी।

मांगीतुंगी पंचकल्याणक एवं चातुर्मास के प्रवासकाल में पूज्य सभी माताजी के साथ बिताए गए स्वाध्याय, आगमचर्चा, वैयावृत्ति आदि के स्वर्णिम क्षण सदैव याद आते हैं। गणिनी माताजी के

गणिनीं मातरं ज्ञानमतीं प्रति तु एतासां प्रगाढ भक्तिस्त्वासीदेव, मह्यं अल्पदीक्षितायै आर्यिकायै क्षुल्लकं मोतीसागरं प्रति अपि सर्वदा विनयः, वात्सल्यं गुणग्राहकता च सर्वदैव प्रतिबिम्बितासीत्। इदमेव कारणमासीत् यत् तत्र प्रत्येककार्यं कृत्वा लेखनादिकं च कृत्वापि वयं श्रान्ताः न आस्म।

तत्रैकात्यधिकप्राचीन अतार्किकविचारशीला माता मनोवती आसीत्। या आहार समये कंचित् श्रावकं कांचिद् श्राविकां च 'पोलिस्टर' वस्त्राणि धारयन्तं पश्यति कस्याश्चित् च चूडायां 'रबरं' हस्ते अंगुलिका च दृष्ट्वा, तु कदाचित् व्याकुलीभूय आहारमपि अत्यजत्, अथवा पर्याप्तं हूत्कारं कृत्वा आहारस्थानात् बहिः तान् पलायितान् अकरोत्। अहं ब्रह्मचारिण्यः भगिन्यश्च तया सह हास–परिहासं च अकुर्म, परन्तु सा कदापि अनिष्टं न मत्वा सर्वदा स्मितस्यैव परिचयमदात् अकथयच्च यूयं प्रचुरं हसथ एतत् मह्यं रोचते एव। अहं किं करवाणि एतत्सर्वं दृष्ट्वा अहं चिन्ताकुला भवामि।

माता यदा तां अवाबोधयत् तु महता विनयभावने अकथयत् ''ईदृशी वात्सल्यमयी माता मां भाग्येनैव मिलिता, एवं बालवत् अवबोधदायिका मां जीवने कदापि नामिलत्। भवत्या विहारस्य पश्चात् माम् अनेन प्रकारेण अवबुद्धां कः करिष्यति।''

इत्थमेव एका वयोवृद्धा मातासीत् सुगुणमती आर्यिका। दिने 4–5 बारं मन्दिरे दर्शनार्थं गच्छति, कदाचित् पतनेन आघातसहनेनापि 2–4 बारं मन्दिरगमनेन विना सा धैर्यं न अधारयत्, क्षुल्लको मोतीसागरस्तां ''दर्शनमती'' इति कथयितुमारब्धवान् किन्तु सा सर्वथा

प्रति इन लोगों की अगाढ़ श्रद्धा-भक्ति तो थी ही, मुझ लघु दीक्षित आर्यिका व क्षुल्लक मोतीसागर जी के लिए भी सदा विनय, वात्सल्य एवं गुणग्राहकता ही झलकती थी। यही कारण रहा कि हम सबको भी वहाँ का प्रत्येक कार्य जम्बूद्वीप के समान अपना प्रतीत होता था और कठिन से कठिन कार्य करके, लेखन आदि का परिश्रम करके भी हमें थकावट महसूस नहीं होती थी।

वहाँ कुछ अत्यधिक पुराने एवं दकियानूसी विचारों वाली एक आर्यिका मनोमती जी थीं, जो चौके में किसी श्रावक-श्राविका को पॉलिस्टर के कपड़े पहने देख लेतीं या किसी की चोटी में रबड़ बैंड, हाथ में अंगूठी आदि देख लेतीं, तो कभी-कभी बेचैन होकर आहार छोड़ देतीं या काफी हूँ हूँ करके चौके के बाहर से उन्हें भगा देती थीं, तो मैं तथा संघ की ब्रह्मचारिणी बहनें उनके साथ खूब मजाक भी करती थीं लेकिन उन्होंने कभी बुरा न मानकर सदैव मुस्कराहट का ही परिचय देते हुए कहा कि तुम खूब हँस लो, मुझे अच्छा लगता है, परन्तु मैं क्या करूँ? मुझे यह सब देखकर घबड़ाहट होने लगती है।

पूज्य माताजी जब उन्हें समझातीं, तो वे बड़े विनय भाव से कहने लगतीं कि **ऐसी वात्सल्यमयी माँ मुझे बड़े भाग्य से मिली है, इस प्रकार बच्चों के समान प्यार से समझाने वाला मुझे जीवन में कोई नहीं मिला था। आपके जाने के बाद मुझे इस तरह से कौन समझाएगा ?**.....इत्यादि।''

इसी प्रकार एक वयोवृद्ध आर्यिका श्री सुगुणमती माताजी दिन में 4-5 बार मंदिर दर्शन करने जातीं, कभी-कभी गिर जाने पर चोट लगने पर भी उन्हें 2-4 बार मंदिर दर्शन के बिना चैन नहीं पड़ती थी, तो क्षुल्लक मोतीसागर जी ने उन्हें 'दर्शनमती' कहना शुरू कर दिया लेकिन वे बिल्कुल

अभद्रं न मत्वा इदमेवाकथयत् यत् ''भवतां प्रेम सर्वदा स्मृतिपथं आयास्यति। भवतीनां सर्वासां या जीवनशैल्यस्ति, सामूहिकमध्ययनमस्ति, सामूहिकस्वाध्यायोऽस्ति, संघस्यानु– शासनादिकं दृष्ट्वा मनः महानन्दं लभते।''

अनेन प्रकारेण आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माता पूज्यायै गणिन्यै मात्रे शास्त्र आगारात् शास्त्राणां प्रदाने, वैयावृत्तौ, पिच्छिका निर्माणे आदिप्रत्येक कार्ये प्रतिक्षण तत्परासीत्। अस्माकं च सुख दुःखानां ध्यानकरणेन च प्रसन्नतामन्वभवत्। लघुवयस्कायाः मातुः नवोदिता– प्रतिभा भविष्ये निश्चितमेव गुरुपरम्परायां वृद्धौ चतुरः चन्द्रान् संलग्नान् करिष्यति।

चतुर्मासे श्रावणशुक्लाष्टम्यां औरंगाबादस्यैका ब्रह्मचारिणी राजाबाई इति नाम्ना ख्याता आर्यिका दीक्षां गृहीत्वा शैलवती नाम प्राप्नोत्। सापि मांगीतुंगी क्षेत्रेण संयुक्तैका शृंखलाखण्डमस्ति। एताभिः सर्वाभिः मातृभिः संयुक्तस्यार्यिकासंघस्य वात्सल्यमधुना तु अस्माकं जीवनस्य अविस्मरणीयांग भूत्वा स्थितमस्ति यतः पदविहारिणां साधूनां मिलनं तु यदा कदैव संभवति।

हरियाणा राज्ये प्रेरणाप्रदः प्रतिबन्धः–**23 मार्च 1997 दिने वयं राजस्थानस्य शाजांपुर डाकभवनेऽतिष्ठाम। अग्रिम दिने 24 मार्च दिने होलिकासीत् अतः सर्वत्र मदिरायाः विपणिषु सर्वे नृत्यन्तः इव दृष्टिगोचराः अभवन्। तस्मिन् दिने सायंकाले राजस्थानस्य सीमानमतिक्रम्य ''बावल'' नाम्नः ग्रामस्य विद्यालयमागच्छाम तु हरियाणा प्रान्तस्य सीम्नः प्रारम्भकाले तत्रस्थ**

भी बुरा न मान कर यही कहती रहतीं कि **''आप लोगों का प्रेम हमेशा याद आएगा तथा आप सभी का दिन भर कार्य करने का जो सुन्दर तरीका है, सामूहिक स्वाध्याय, सामूहिक अध्ययन, संघ का अनुशासन आदि देखकर मन बड़ा प्रसन्न होता है।''**

इस प्रकार आर्यिका श्री सुदृष्टिमती माताजी हमेशा पूज्य गणिनी माताजी के लिए शास्त्रभंडार से शास्त्र निकालना, वैयावृत्ति करना, पिच्छी बनाना आदि प्रत्येक कार्य हेतु हरदम तैयार रहतीं और हम लोगों के सुख-दुःख का भी खूब ध्यान रखते हुए प्रसन्नता का अनुभव करतीं। इन छोटी उम्र वाली माताजी की नवोदित प्रतिभा भविष्य में निश्चित ही गुरु परम्परा वृद्धि में चार चाँद लगाएगी।

चातुर्मास में श्रावण शु. 8 को औरंगाबाद की एक ब्रह्मचारिणी राजाबाई कासलीवाल ने आर्यिका दीक्षा लेकर शैलमती नाम प्राप्त किया। वे भी मांगीतुंगी के इतिहास से जुड़ी एक कड़ी हैं। इन समस्त माताओं से युक्त आर्यिका संघ का वात्सल्य अब तो हमारे जीवन का अविस्मरणीय अंग ही बनकर रह गया है क्योंकि पदविहारी साधुओं का मिलन तो यदा-कदा ही संभव होता है।

➢हरियाणा राज्य में प्रेरणादायी प्रतिबंध–

23 मार्च 1997 को हम लोग राजस्थान के ''शाजांपुर'' के डाकबंगले में ठहरे थे। अगले दिन 24 मार्च को होली थी इसीलिए जगह-जगह शराब की दुकानों पर लोग झूमते नजर आते थे। उस दिन शाम को ठीक 6 बजे राजस्थान प्रान्त की सीमा समाप्त करके ''बावल'' नामक गाँव के स्कूल में आए तो हरियाणा की सीमा प्रारंभ होते ही वहाँ के लोगों ने बताया कि

जनाः अवदन यत् ''मातः! अस्माकं हरियाणा प्रांते तु शासनस्य नियमः निर्धारितोऽस्ति यत् मदिरां पीत्वा यदि कोऽपि वाहनं चालयन् प्राप्तस्तु पिबन् च कोऽपि राजमार्गे दृष्टः अथवा मदिरायाः पात्राणि अन्येभ्यः ददन् गृहीतस्तु सरलतया कारागारे प्रक्षिप्ता भवेत्। एतदतिरिक्तं सम्पूर्णे हरियाणाप्रदेशे कोऽपि मदिरा विक्रयकेन्द्रश्चालयितुं न शक्नोति, ''अयं शासकीय प्रतिबन्धोऽस्ति।''

एवं प्रतिबन्धं श्रुत्वा महती प्रसन्नताभवत् वयं चाकथयाम यत् यदि सर्वेषु प्रदेशेषु ईदृशा एव नियमाः स्युः, तु अस्माकं देशः ''स्वर्णचटकायाः'' **सार्थकतां प्राप्नोतु, यं हरियाणा–प्रदेशं वयं विकृतप्रदेशं अमन्यामहे, तत्रैव महती सदाचार प्रवृत्तिः दृष्टुं अयात्। वयं तु होलिकायाः दुलहाण्डी दिवसेऽपि द्वयोः समयो पदैः विहारमकुर्म। रेवाड़ी–दिल्ली नगरयोः श्रावकाः अस्माभिः सहैवासन्। कुत्रापि कस्याश्चिदपि प्रकारस्य समस्यां समक्षं नागच्छत्।**

टूरिंग शिलान्यासः–**वयं मांगीतुंगी क्षेत्रात् विहार कुर्वन्त्यो स्थाने–स्थाने नवीनानां योजनानां शिलान्यासान् कृत्वा आगच्छाम, तस्यामेव शृंखलायां हरियाणाप्रदेशोऽपि अस्पृश्यो नाभवत्। रेवाड़ी नगरस्य माडलटाउन क्षेत्रे निर्मातुं प्रस्ताविताय मंदिराय पूज्या माता कैलासपर्वतस्य वेदिकायाः शिलान्यासं संघस्थाः ब्रह्मचारिण्यः प्रेषयित्वा अकारयत् यतः 25 मार्च दिने तत्र चैत्र कृष्ण एकम् तिथौ मातुः चतुश्चत्वारिंशततमं क्षुल्लिकादीक्षादिनं नगरे आयोजितमभवत् पुनस्तस्मिन्नेव दिने अग्रे धारूहेड़ा ग्रामाय विहारोऽप्यासीत् किन्तु 26 मार्च दिने धारूहेड़ाः**

"माताजी! हमारे हरियाणा में तो सरकार की ओर से कानून लागू है कि शराब पीकर यदि कोई गाड़ी चलाता पाया गया, पीता हुआ कोई सड़क पर देखा गया अथवा शराब की बोतलें लेकर किसी को पकड़ा गया तो उसे सीधे जेल भेज दिया जाता है। इसके साथ ही पूरे हरियाणा में कोई शराब की दुकान नहीं खोल सकता है **''यह राजकीय प्रतिबंध है।''**

यह प्रतिबंध सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई और हमने कहा कि यदि इसी प्रकार हर प्रदेशों में ऐसे ही कानून बन जाएं, तो हमारा देश **''सोने की चिड़िया''** की सार्थकता को पा जावे, जिस हरियाणा को हम बहुत बिगड़ा हुआ क्षेत्र माना करते थे, वहाँ बहुत ही सदाचार प्रवृत्ति देखने को मिली। यहाँ तक कि हम लोगों ने होली (दुलहंडी) के मुख्यदिवस पर भी दोनों समय पदविहार किया। रेवाड़ी एवं दिल्ली के श्रावक साथ रहे, कहीं भी किसी प्रकार की समस्या सामने नहीं आई।

➢टूरिंग शिलान्यास–

यूँ तो हम लोग मांगीतुंगी से विहार करते हुए जगह-जगह नई-नई योजनाओं के शिलान्यास करते आए थे। उसी शृंखला में हरियाणा प्रान्त भी अछूता नहीं रहा, रेवाड़ी के मॉडल-टाउन एरिया में नवनिर्मित होने वाले मंदिरजी के लिए पूज्य माताजी ने कैलाशपर्वत की वेदी का शिलान्यास संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों को भेजकर करवाया क्योंकि 25 मार्च को वहाँ चैत्र कृष्णा एकम तिथि को पूज्य माताजी का 44वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस शहर में मनाया जा रहा था पुनः उसी दिन आगे धारूहेड़ा के लिए विहार भी था किन्तु 26 मार्च को धारूहेड़ा

ग्रामाद् बहिः मुख्ये राजमार्गे ''जैन पब्लिक विद्यालये'' **पूज्यां मातरं अस्मान् च सर्वान् निवेद्य देवेन्द्रकुमारो नामस्तत्र श्रावकोऽवदत् यत् गतवर्षेऽस्मात् स्थानात् प्रस्थानकाले भवत्याशीर्वादं प्रादात्, तु अस्मभ्यं महती भूमिः विद्यालयस्योद्यानार्थं प्राप्ताभूत, अधुना भवती तमाशीर्वादं ददातु, यत् वयं अस्याः भूमेः श्रेष्ठं विकासं कर्तुं शक्नुयाम।**

पूज्यमाता अस्माभिः सह लघुं विचार–विमर्शं कृत्वा अकथयत् यत् अस्य उद्यानस्य नाम ''भगवान् ऋषभदेवोद्यानं'' **कुर्वन्तु अस्मिन्नुद्याने च एकं लघुकैलासपर्वतं निर्माप्य तस्मिन् भगवतः ऋषभदेवस्य पद्मासनां प्रतिमां विराजमानां कुरुथ। येनोभयतः निर्गतयोः राजमार्गयोः चलतां पथिकानां दृष्टिः भगवति पततु अनायासं च ते स्वपापानां क्षयं कर्तुं सफलाः भवेयुः।**

धारूहेड़ा ग्रामस्य ये 4–5 जना अस्माभिः सहासन्, तेभ्योऽयं प्रस्तावोऽरोचत् पुनस्तु ''शुभस्यशीघ्रमियं'' **नीतिसार्थकाभवत् पश्यन पश्यन्नेव च कैलासपर्वतस्य स्थानं निश्चितमभवत्। मात्रा करकमलाभ्यां तत्र रक्षायंत्रं स्थापितं कर्तुं गर्तस्य खननं प्रारब्धमभवत् पुनः एकः सज्जनोऽवदत् यत् ''मातः! यदि भवत्यादेशं करोतु तु शिलान्यासः अपि भवतु। अहं 5 मिनट समये समस्तां सामग्रीमानयामि।'' मातु स्वीकृतेरनन्तरमेव सम्पूर्ण समारोह एकस्मिन् होरा समये एव संपन्नोऽभवत्। तदा तत्र 20–25 जनाः ग्रामस्य एकत्रिता अभवन्। क्षुल्लक मोतीसागरस्य प्रेरणया तत्र दानध्वनिरप्यभवत्, तु तत्क्षणमेव लक्षाधिकाः**

पहुँचते ही चमत्कार की मानो पराकाष्ठा ही हो गई। हुआ यूँ कि धारूहेड़ा में गाँव से बाहर मेन हाईवे रोड पर **''जैन पब्लिक स्कूल''** में पूज्य माताजी व हम सभी को जरा सी देर रोककर देवेन्द्र कुमार जैन नामक वहाँ के श्रावक ने कहा कि पिछले वर्ष यहाँ से जाते समय आपने आशीर्वाद दिया था, तो हमें खूब बड़ी भूमि स्कूल के पार्क हेतु मिल गई है, अब आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि हम इस भूमि का अच्छा विकास कर सकें।

पूज्य माताजी हम लोगों के साथ लघु विचार-विमर्श करके बोलीं कि इस पार्क का नाम **''भगवान ऋषभदेव पार्क''** रखो तथा इस पार्क में एक छोटा सा कैलाशपर्वत बनाकर उस पर भगवान ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा विराजमान करो ताकि दोनों ओर से निकली मुख्य सड़कों पर चलते पथिकों की दृष्टि भगवान् पर पड़े और अनायास ही वे अपने पापों का नाश करने में सफल हो सकें।

धारूहेड़ा के जो 4-5 लोग साथ थे, उन्हें यह प्रस्ताव बहुत अच्छा लगा फिर तो **''शुभस्य शीघ्रं''** वाली नीति सार्थक हो गई और देखते ही देखते कैलाशपर्वत का स्थान निश्चित हो गया, पूज्य माताजी के करकमलों से वहाँ रक्षायंत्र स्थापित करवाने के दृष्टिकोण से गड्ढा खुदने लगा, फिर एक सज्जन बोले कि ''माताजी! यदि आप आदेश करें तो शिलान्यास ही हो जाये। मैं अभी 5 मिनट में सारी सामग्री ले आता हूँ।'' माताजी की स्वीकृति होते ही सारा समारोह घंटे भर में सम्पन्न हो गया। तब तक गाँव के 20-25 नर-नारी भी वहाँ आ गये थे, क्षुल्लक मोतीसागर जी की प्रेरणा से बोली भी हुईं, तो मिनटों में 1 लाख से अधिक धनराशि एकत्रित हो गई। सभी ने उत्साहपूर्वक

दानराशयोऽपि एकत्रिताः अभवन्। सर्वे सोत्साहं कैलासपर्वतस्य शिलान्यासमकुर्वन् पुनः मातु संघस्य ''धारूहेड़ाग्रामे'' पदार्पणमभवत् आहारस्य च पश्चात् मध्याह्नस्य प्रवचनं कृत्वा यदा वयमचलाम।

तदा केचिदकथयन् संघे तु इयं देवोपनीता इव व्यवस्था प्रतीयते। यत् 2–4 घण्टा समयेष्वेव समाजाय भवतः संघस्य माध्यमेन विविधाः उपलब्धयोऽभवन्। तस्मिन् दिने त्वहमपि अकथयम् यत् ''मातः! अधुना तु भवती वास्तवे ''शिलान्यासमती–निर्माणमती'' **च रूपेण साकारा भवति। यतोऽधुना तु चलनेनैव शिलान्यासा भवितुमारब्धाः भवन्ति।**

णमोकार बैंकस्य शाखाः–**जम्बूद्वीप स्थले हस्तिनापुरे पूज्यायाः मातुः प्रेरणया 8 अक्तूबर 1995 दिने शरत्पूर्णिमायां** ''णमोकार महामंत्रस्य बैंकस्य'' **स्थापनाऽभवत् पुनः उत्तरप्रदेश–दिल्ली–हरियाणा–राजस्थान–मध्यप्रदेश–महाराष्ट्र–गुजरातप्रान्तेषु संघस्य विहारकाले बैंकस्य द्विशताधिकाः शाखाः उद्घाटिताः। 50 सहस्राधिकाश्च निःशुल्काः लेखन–पुस्तिकाः दानदातृणां पक्षतः लेखकेषु वितरिताः अभवन्। एतेषु दश वर्षेषु णमोकारमहामंत्रस्य बैंके कोट्यधिक मंत्राणां संग्रहोऽभवत्।**

महिला संघटनस्य शाखा समितयः–**मार्च 1996 मासे इन्दौर (म.प्र.) नगरे मातुः प्रेरणयाशीर्वादेन च तस्याः एव सान्निध्ये एकं** ''अखिलभारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संघटन'' **नाम्ना महिलानां संघटनं परितमभवत्, यत् अन्य समस्त सभानां संस्थानां च**

कैलाशपर्वत का शिलान्यास किया पुनः माताजी के संघ का 'धारूहेड़ा'' गाँव के अन्दर पदार्पण हुआ और आहार के पश्चात् मध्यान्ह प्रवचन करके 4 बजे ही आगे विहार हो गया।

इतना सब देखकर कई नगरों के लोग तो कहने लगते थे कि आपके संघ में यह तो देवोपुनीत जैसी व्यवस्था लगती है कि 2-4 घंटों में ही आपके संघ के माध्यम से समाज को कई प्रकार की उपलब्धियाँ हो जाती हैं। उस दिन तो मैं भी कह उठी कि ''माताजी! आप वास्तव में अब **''शिलान्यासमती''** और **''निर्माणमती''** के रूप में ही साकार हो रही हैं क्योंकि अब तो चलते-फिरते शिलान्यास होने लगे हैं।

➢णमोकार बैंक की शाखाएँ–

जम्बूद्वीपस्थल-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से 8 अक्टूबर 1995, शरदपूर्णिमा को **''णमोकार महामंत्र बैंक''** की स्थापना हुई थी पुनः उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात प्रान्तों में संघ भ्रमण के दौरान दो सौ से अधिक बैंक की शाखाएँ खुलीं और 50 हजार से अधिक निःशुल्क लेखन पुस्तिकाएँ दानदातारों की ओर से लेखकों को वितरित की गईं। इन 10 वर्षों में बैंक में करोड़ों मंत्रों का संग्रह हो चुका है।

➢महिला संगठन की इकाई समितियाँ–

मार्च 1996 में इंदौर (मध्यप्रदेश) में पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से उन्हीं के सानिध्य में एक **''अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन''** नाम से महिलाओं का संगठन गठित हुआ,

राजनीतेः दूरं सामाजिक कुरीतीनां निवारणाय सक्रियमस्ति अनेकेषु च प्रान्तेषु अस्य 175 शाखाः उद्घाटिताः सन्ति, याः सक्रियं कार्यं कृत्वा नारी जागरणं उत्थापयितुमग्रसराः सन्ति।

सम्पूर्णो विहारः स्वप्नवत् संपन्नोऽभूत्—**स्व निश्चितकार्यक्रमानुसारेण यदा वयं दिल्ली–नगर्यां 31 मार्च 1997 दिने लालकिला प्रांगणं प्राप्ताः, तु संघपतिः महावीर प्रसादो जैनः, तत्पत्नी कुसुमलता, प्रेमचन्द्रः–खारीबावली, कमलचन्द जैनाः सर्वे महानुभावाः अकथयन् यत् मातः! अद्यैतत् प्रतीयते यत् एतत्सर्वं स्वप्नः आसीत्। किमियं वास्तवे सत्यघटनास्ति यत् भवन्त्यः 3600 किलोमीटर पादविहारं कृत्वा निवृन्ताः सन्ति?**

सत्यमेव स्वप्नं मन्तुमहं स्वयमपि सम्मिलिता अस्मि बुद्धौ न आगच्छति यत् महतीभिः धर्म प्रभावनाभिः सह उत्तरप्रदेशात् दक्षिण–पश्चिम सीम्नां स्वपदैरेवविहारकरणं वास्तवे भगवतः ऋषभदेवस्य जाप्यं मंत्रः मातुश्चाशीर्वाद एवास्माकं सम्बलमासीत्। पाठकजनाः एवं स्वप्नं पूर्णं सत्यमेव मन्यन्तां स्वात्मबलं च वृद्धिंगतं कृत्वा देवशास्त्रगुरूणां परमभक्ताः भवन्तु।

धर्मगुरुभि सह वात्सल्यपूर्णं मिलनम्–**हस्तिनापुरात् मांगीतुंगीं प्रति, मांगीतुंगी तथा च दिल्लीप्रवासपर्यन्तं मध्ये केषुचित् स्थानेषु दिगम्बर जैनाचार्यैः मुनिभिः आर्यिकाभिश्च मिलित्वा अनेक सामाजिकविषयेषु चर्चाः अभवन्। तेषां साधुनां स्थानानां च विवरणं निम्नप्रकारेणास्ति–**

जो अन्य समस्त सभा, संस्थाओं की राजनीति से दूर सामाजिक कुरीतियों को हटाने हेतु सक्रिय है तथा अनेक प्रान्तों में इसकी लगभग 175 इकाई समितियाँ खुल चुकी हैं, जो सक्रिय कार्य करती हुई नारी जागरण की ओर अग्रसर हैं।

➢स्वप्नवत् सारा विहार सम्पन्न हो गया–

अपने निश्चित कार्यक्रमानुसार जब हम लोग 30 मार्च 1997 को लालकिला मैदान दिल्ली आ गए, तो संघपति महावीर प्रसाद जी, उनकी पत्नी सौ. कुसुमलता जी, प्रेमचंद जी-खारीबावली, कमलचंद जैन आदि महानुभाव कहने लगे कि माताजी! आज ऐसा लग रहा है, मानो यह सब स्वप्न था। क्या यह वास्तव में सत्य घटना है कि आप लोग 3600 किमी. एक वर्ष में चलकर वापस आ गये हैं?

सत्य को ही स्वप्न समझने में मैं स्वयं भी सम्मिलित हो गई और समझ नहीं आया कि इतनी भारी धर्मप्रभावना के साथ उत्तर से दक्षिण-पश्चिम की सीमाओं को अपने ही पैरों से नाप लेना वास्तव में भगवान ऋषभदेव का जाप्य मंत्र एवं पूज्य माताजी का आशीर्वाद ही हमारा संबल रहा है। पाठकजन इस स्वप्न को पूर्ण सत्य ही मानें और अपने आत्मबल को वृद्धिंगत कर देव-शास्त्र-गुरु के परमभक्त बनें।

➢धर्मगुरुओं से वात्सल्यपूर्ण मिलन–

हस्तिनापुर से मांगीतुंगी एवं मांगीतुंगी से वापस दिल्ली प्रवास तक मध्य में कुछ स्थानों पर दिगम्बर जैन आचार्यों, मुनियों एवं आर्यिकाओं से भी मिलकर अनेक सामयिक विषयों पर चर्चाएं हुईं, वे स्थान और साधु के नाम इस प्रकार हैं–

आचार्य श्री विद्यानन्दः	**दिल्ली**
आचार्य श्री सन्मति सागरः, संघश्च	**दिल्ली**
आर्यिका कुलभूषणमती	**श्री महावीर जी**
मुनिः सिद्धान्तसागरः	**सवाई माधोपुरम्**
मुनि श्री तरुण सागरः	**कोटा**
मुनिः श्री निजानन्द सागरः	**इन्दौरः**
मुनिः श्री रयण सागरः	**मांगीतुंगी**
आर्यिका श्रेयांसमती माताजी	**मांगीतुंगी**
आर्यिका कीर्तिमती माताजी	**महुआ (गुज.)**
मुनिः श्री कीर्तिधरनन्दी महाराजः	**अहमदाबाद**
मुनि श्री हेमन्तसागरः विरागसागरश्च	**खेरवाड़ा, केसरिया जी (राज.)**
आर्यिका श्री आदिमतीः श्रुतमती च	**सलूम्बरः (राज.)**
आचार्य श्री पद्मनन्दि संघश्च	**देवपुरा (राज.)**
आचार्य अभिनन्दनसागरः संघश्च	**उदयपुरम्**
आचार्य श्री नेमिसागरः	**दिल्ली लालमन्दिरम्**

---

1. आचार्य श्री विद्यानंद महाराज	– दिल्ली
2. आचार्य श्री सन्मतिसागर महाराज संघ	– दिल्ली
3. आर्यिका कुलभूषणमती माताजी	– महावीर जी (राज.)
4. मुनि श्री सिद्धान्तसागर महाराज	– सवाई माधोपुर (साहू सीमेंट फैक्ट्री)राज.
5. मुनि श्री तरुणसागर महाराज	– कोटा (राज.)
6. मुनि श्री निजानंदसागर महाराज	– इंदौर (म.प्र.)
7. मुनि श्री रयणसागर महाराज	– मांगीतुंगी (महा.)
8. आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी	– मांगीतुंगी (महा.)
9. आर्यिका श्री कीर्तिमती माताजी	– महुवा (गुज.)
10. मुनि श्री कीर्तिधरनंदी महाराज	– अहमदाबाद
11. मुनि श्री हेमंतसागर एवं विरागसागर महाराज	– खेरवाड़ा एवं केशरिया जी (राज.)
12. आर्यिका श्री आदिमती एवं श्रुतमती माताजी	– सलूम्बर (राज.)
13. आचार्य श्री पद्मनंदि महाराज संघ	– देवपुरा (राज.)
14. आचार्य श्री अभिनन्दन सागर महाराज संघ	– उदयपुर (राज.)
15. आचार्य श्री नेमिसागर महाराज	– दिल्ली-लालमंदिर

राजनेतृभ्यः मंगलाशीर्वादाः–**अनेक नगरेषु लघवः महान्तः राजनेतारः, पुलिस अधिकारिणः, पटवारी, नगर प्रमुखाः, सरपंचाः आदयः समागत्य पूज्यमातुश्चरणयोर्वन्दनं कृत्वा शुभाशीर्वादं प्राप्तवन्तः। तेषु केषांचित् प्रमुखाणां नेतृणां नामानि प्रसंगोपात्तानि अत्र दीयन्ते–**

के	कुत्र
1. श्री चरतीलाल गोयलः दिल्ली विधानसभाध्यक्षः	**दिल्ली–दरियागंजे**
2. श्री मनोहरः जोशी मुख्यमंत्री महाराष्ट्रम्	**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे**
3. श्री जयचन्द जैनः कासलीवालः विधायकः	**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे**
4. महाराष्ट्र शासनस्य विभागीय मंत्रिणः	**मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रे**
5. श्री शंकर सिंहः बाघेला मुख्यमंत्री गुजरात प्रदेशः	**अहमदाबादः (गुजरातप्रान्तः)**
6. श्री कृष्णपालसिंह राज्यपालः–गांधीनगर (गुजरात)	**गुजरात प्रांतः**
7. दीप्तिबेन पटेल चेयरमैन महिला उत्कर्ष मण्डलम् गुजरातः	**अहमदाबादः**
8. आनन्दी बेन पटेला सांसदा	**अहमदाबादः**
9. भावनाबेन दवे (भूतपूर्वा मेयरः)	**अहमदाबादः**

➢राजनेताओं को मंगल आशीर्वाद–

अनेक नगर एवं शहरों में छोटे-बड़े राजनेता, पुलिस अधिकारी, पटवारी, नगरप्रमुख, सरपंच आदि ने आकर पूज्य माताजी के श्रीचरणों में वंदन कर शुभाशीर्वाद प्राप्त किया है, उनमें से कुछ प्रमुख नेताओं के नाम प्रसंगोपात्त यहाँ दे रही हूँ–

नेता के नाम	कहाँ आए?
1. श्री चरती लाल गोयल (दिल्ली प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष)	दरियागंज, दिल्ली
2. श्री मनोहर जोशी -मुख्यमंत्री महाराष्ट्र प्रदेश	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
3. श्री जयचंद जैन कासलीवाल (विधायक) महाराष्ट्र	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
4. महाराष्ट्र शासन के अनेक विभागीय मंत्री	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र
5. श्री शंकर सिंह वाघेला मुख्यमंत्री गुजरात प्रदेश	अहमदाबाद (गुजरात)
6. श्री कृष्णपाल सिंह -महामहिम राज्यपाल गांधीनगर (गुजरात)	गुजरात
7. दीप्तीवेनपटेल चेयरमैन महिला उत्कर्ष मंडल गुजरात	अहमदाबाद
8. आनन्दीबेनपटेल सांसद	अहमदाबाद
9. भावनाबेन दवे (भूतपूर्व मेयर अहमदाबाद)	अहमदाबाद

10. लीलाबेन अध्वर्यु (निगमपार्षदा)	**अहमदाबादः**
11. श्री दिनेश चन्द्रः रावलः	**अहमदाबादः**
(चेयरमैन इण्डियन काउंसिल आफ वेलफेयर)	
12. श्री विजय भाई पटेलः (सांसद)	**अहमदाबादः**
13. श्री यतीन भाई ओझा (सदस्य विधान सभायः)	**अहमदाबादः**
14. श्री शान्तिलालः चपलोतः	
(राजस्थान विधान सभायाः अध्यक्षः)	**सलूंबरः (राज.)**
15. श्री साहिबसिंह वर्मा (मुख्यमंत्री दिल्ली–प्रदेशः)	**दिल्ली लालकिला मैदान**
16. श्री जयप्रकाशः अग्रवालः (सांसदः)	**दिल्ली लालकिला मैदान**
17. कु. पूर्णिमा सेठी (विधायिका)–दिल्ली	**दिल्ली लालकिला मैदान**
18. श्री मदनलालः गाबाः (विधायकः)	**ऋषभ विहार–दिल्ली**
19. डॉ. हर्षवर्धनः (स्वास्थ्य शिक्षा मंत्री)	**दिल्ली**
20. श्रीमती मिथिलेश जैन (अध्यक्षा पर्यावरण विभागः)	**दिल्ली**
21. श्री जयप्रकाशः अग्रवालः सांसदः	**ऋषभ विहार'दिल्ली**
22. श्री वीरेन्द्र कुमारो जैनः (वित्तराज्यमंत्री)	**सूर्यनगरः–गाजियाबादः**
23. वासुदेव कप्तानः (विधायकः–दिल्ली प्रदेशः)	**लालकिला मैदान, दिल्ली**

---

10. लीलाबेन अध्वर्यु (कार्पोरेटर)	अहमदाबाद
11. श्री दिनेश चंद रावल	
(चेयरमेन इंडियन काउंसिल ऑफ वेलफेयर)	अहमदाबाद
12. श्री विजय भाई पटेल (सांसद)	अहमदाबाद
13. श्री यतीन भाई ओझा (विधान सभा सदस्य)	अहमदाबाद
14. श्री शांतिलाल चपलोत (राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष)	सलूम्बर (राज.)
15. श्री साहिब सिंह वर्मा (मुख्यमंत्री दिल्ली प्रदेश)	लालकिला मैदान दिल्ली
16. श्री जय प्रकाश अग्रवाल (सांसद)	लालकिला मैदान, दिल्ली
17. कु. पूर्णिमा सेठी (विधायक) दिल्ली	लालकिला, दिल्ली
18. श्री मदनलाल गाबा (क्षेत्रीय विधायक)	ऋषभविहार, दिल्ली
19. डा. हर्षवर्धन (स्वास्थ्य एवं शिक्षामंत्री-दिल्ली प्रदेश)	ऋषभविहार, दिल्ली
20. श्रीमती मिथिलेश जैन (अध्यक्ष पर्यावरण विभाग)	ऋषभविहार, दिल्ली
21. श्री जय प्रकाश अग्रवाल (सांसद)	ऋषभविहार, दिल्ली
22. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन	
(वित्त राज्य मंत्री भारत सरकार)	सूर्य नगर (गाजियाबाद)
23. श्री वासुदेव कप्तान-विधायक दिल्ली प्रदेश	लालकिला मैदान, दिल्ली

राजधान्यां प्रवेशसमये एव कार्यक्रमाणामारम्भः–**अधुना तु दिल्लीवासिनोऽप्यजानन् यत् ज्ञानमती माता न तु स्वयं क्रियारहिता तिष्ठति न च अन्यानपि रिक्ततायां उपवेष्टुं पश्यति अतः दिल्लीनगर्यां 30 मार्च 1997 प्रवेशसमये एव 2 अप्रैल दिने भगवतः ऋषभदेवस्य जयन्ती महोत्सवस्य विशेषः कार्यक्रम दिगम्बर जैन त्रिलोकशोधसंस्थानस्य, जम्बूद्वीप हस्तिनापुरस्य अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायतस्य च संयुक्ततत्त्वावधाने रथयात्रया दिगम्बर–जैन लालमन्दिरे शताष्ट रजत कलशैः भगवतः ऋषभदेवस्य जन्माभिषेकपूर्वकं च आयोजिता। तत्र इदं च** ''भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्ती महोत्सवस्य'' **वर्षरूपेण घोषितम्।**

एतस्मिन्नेवावसरे पूज्यमातुः प्रेरणया चांदनी चौक दिल्लीनगया' अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संघटनस्य शाखायाः अपि दीपं प्रज्ज्वलितं कृत्वोद्घाटनमभवत्। वर्तमाने समये दिल्लीनगर्यां तस्याः महिला संघटनस्य विभिन्नेषु उपनगरेषु प्रायः 50 शाखाः कार्यं कुर्वन्ति।

➢राजधानी में प्रवेश के साथ ही कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हो गया–

अब तक दिल्ली वाले भी अच्छी तरह से समझ चुके हैं कि ज्ञानमती माताजी न तो स्वयं खाली बैठती हैं और न वे किसी को जरा भी देर खाली बैठने देती हैं अतः दिल्ली में 30 मार्च 1997 को मंगल प्रवेश होते ही 2 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव का विशेष कार्यक्रम दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत के संयुक्त तत्त्वावधान में रथयात्रा एवं दिगम्बर जैन लाल मंदिर में 108 चाँदी के कलशों से भगवान ऋषभदेव का जन्माभिषेकपूर्वक मनाया गया तथा इस वर्ष को **''भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव वर्ष''** घोषित किया गया।

इसी अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से चाँदनी चौक, दिल्ली में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की इकाई का दीप जलाकर उद्घाटन किया गया। वर्तमान में दिल्ली की विभिन्न कॉलोनियों में उस महिला संगठन की लगभग 50 इकाईयाँ कार्य कर रही हैं।

अध्याय-5

ऐतिहासिक कार्यकलाप एवं प्राचीन तीर्थ प्रयाग का उद्भव

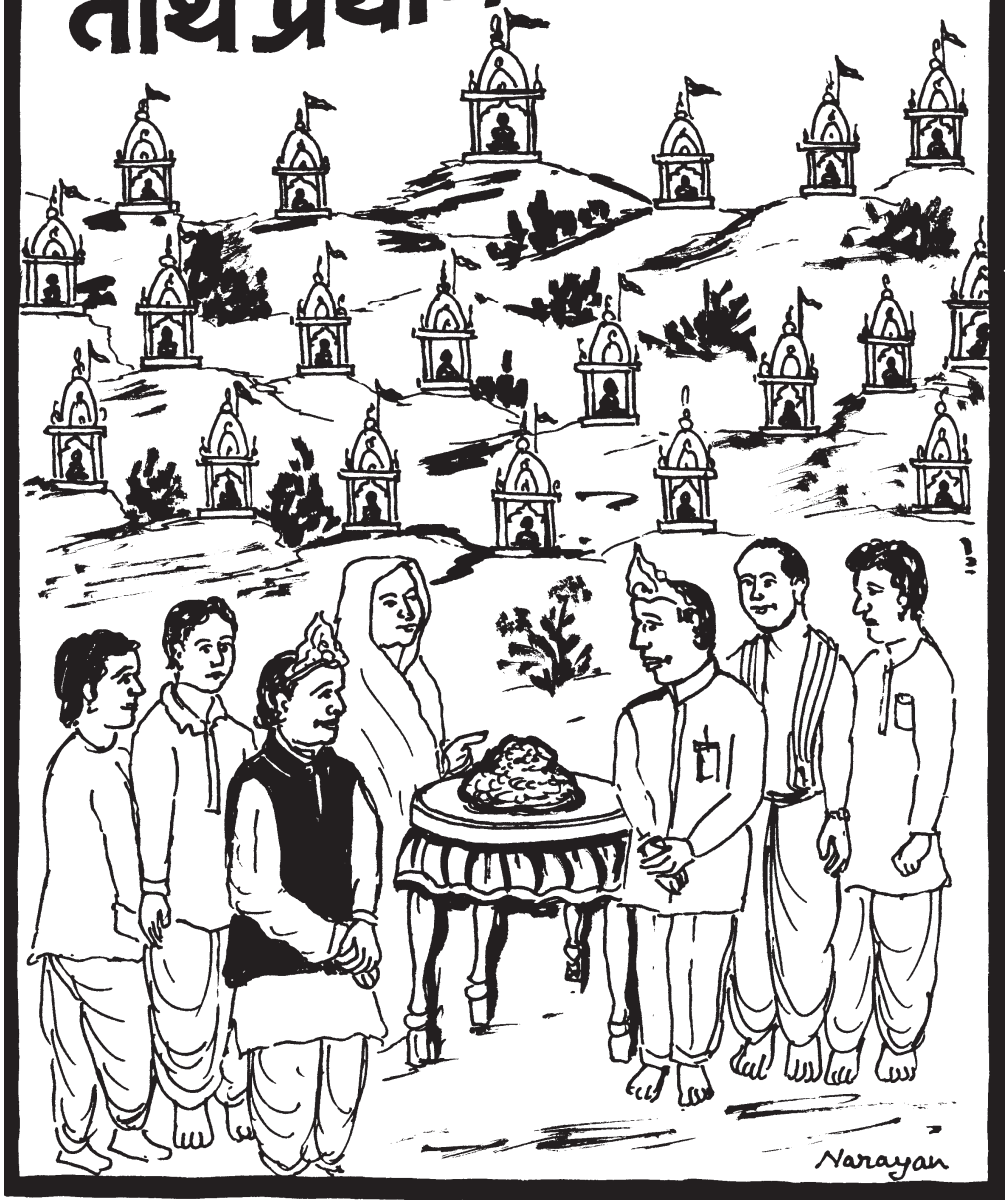

पञ्चमोऽध्यायः

ऐतिहासिककार्यकलापाः प्राचीनतीर्थस्य प्रयागस्योद्भवः

इयं उक्तिः सुष्ठु वर्तते–

''इतिहासनिर्मातारो भवन्ति विरलाः प्राणिनः। इतिहासं पठित्वा भवन्ति कति ज्ञानिनः।''

अर्थात् संसारे केचिद् विरलाः आत्मानः एव स्वादर्शैः कुर्वन्ति इतिहासस्य निर्माणम् पुनस्तैर्निर्मितमितिहासं पठित्वा न जानामि कति भव्यात्मानः स्वश्रेयो मार्गं प्रशस्तं कुर्वन्ति। पूज्या ज्ञानमती एतादृश्येव नारी विद्यते, या स्वप्रत्येककार्यकलापेन प्रतिजनेभ्यः प्रेरणाः दत्वा नवानामितिहासानां निर्माणमकरोत्। एतस्याः जीवनस्यैतिहासिकघटनाः यद्यप्यनेकाः सन्ति, तथाप्यहमत्र प्रसंगोपात्तैः प्रमुखकार्यकलापै पाठकान् अवगतान् कारयामि।

प्रीतविहारे दिल्लीनगर्यां कमलमन्दिरस्य निर्माणम्–**दिल्लीनगर्याः एकः श्रावकः श्रीअनिलकुमारो जैनः पूज्यया मातुः मांगीतुंगीगमनकाले स्वावासस्य प्रांगणे एकस्य गृहचैत्यालयस्य निर्माणस्य भावनानुसारेण भूमौ एकस्य यंत्रस्य स्थापनामकारयत्। यंत्रस्य चमत्कारस्वरूपं सः तत्र मातुः प्रेरणया कमलमन्दिरस्य निर्माणमकारयत् पुनश्च संघस्य दिल्लीनिवृत्तिकालपर्यन्तं तस्य मन्दिरस्य निर्माणं पूर्णमभवत्। अतः जून 1997 मासे अत्यन्तप्रभावनापूर्वकं भगवतः ऋषभदेवस्य सवा दो फुट उत्तुंगपद्मासने स्थितायाः धातोः**

ऐतिहासिक कार्यकलाप एवं प्राचीन तीर्थ प्रयाग का उद्भव

'''इतिहास बनाने वाले, होते हैं विरले प्राणी।
इतिहास को पढ़कर फिर तो, बन जाते कितने ज्ञानी।।''

अर्थात् संसार में कुछ विरली महान आत्माएँ ही अपने आदर्शों के द्वारा इतिहास का निर्माण करती हैं पुनः उनके द्वारा निर्मित इतिहास को पढ़कर न जाने कितनी भव्यात्माएँ अपना कल्याणमार्ग प्रशस्त करती हैं। पूज्य ज्ञानमती माताजी एक ऐसी ही ऐतिहासिक नारी हैं, जिन्होंने अपने प्रत्येक कार्यकलाप के द्वारा जन-जन को प्रेरणाएँ प्रदान करके नए-नए इतिहासों का निर्माण किया है। इनके जीवन की ऐतिहासिक घटनाएँ यद्यपि अनेकानेक हैं, फिर भी यहाँ प्रसंगोपात्त मैं कतिपय प्रमुख सृजनात्मक कार्यकलापों से पाठकों को अवगत कराती हूँ।

➢प्रीतविहार (दिल्ली) में कमल मंदिर का निर्माण–

दिल्ली के एक श्रावक श्री अनिल कुमार जैन ने पूज्य माताजी से मांगीतुंगी जाते समय अपने मकान के लॉन में एक गृह चैत्यालय बनाने की भावनानुसार जमीन में यंत्र स्थापित कराया था। यंत्र के चमत्कार स्वरूप वहाँ उन्होंने माताजी की प्रेरणा से कमल मंदिर बनवा लिया और वापस संघ के दिल्ली आने तक उस मंदिर का निर्माण पूरा हो गया। अतः जून 1997 में अत्यन्त प्रभावनापूर्वक भगवान ऋषभदेव की सवा दो फुट पद्मासन धातु प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

प्रतिमायाः पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सवं: संघसान्निध्ये सम्पन्नोऽभवत्। अद्य तत् कमलमन्दिरं दिल्लीनगर्याः एकं चमत्कारिकं ''भगवतः ऋषभदेवः कमल मन्दिर'' **नाम्ना प्रसिद्धमभवत्। तस्य निर्माता पुण्यशाली श्रावकोऽनिलो जैनः मातुरनन्यभक्तोऽस्ति।**

एकदैव संपन्नानि चतुर्विंशतिकल्पद्रुमविधानानि विहंगमदृश्यमुपस्थितमकुर्वन्–**प्रायः इदं दृश्यते यत् यद्येकं मण्डलविधानमपि कर्तुं कोऽपि वांछति तु सः महान् चिन्तितो भवति यत् केन प्रकारेण विधानमिदं प्रभावनापूर्वकं संपत्स्यते? कति च जनाः सम्मिलिताः भविष्यन्ति? परन्तु ज्ञानमती माता कदापि नकारात्मकनीत्या न चिन्तयति। अहं माता च मिलित्वा दिल्लीनगर्यामेकस्य भक्तिमहाकुम्भस्य विराटआयोजनदृष्ट्या चतुर्विंशतितीर्थंकराणां समवसरणानि युगपत् रचयित्वा कल्पद्रुमविधानस्य योजनामकारयताम्, पुनः सा एकं द्वे वा न, अपितु चतुर्विंशतिकल्पद्रुम–विधानानि कारयितुं घोषणामकरोत्। ये ये महानुभावाः तत् दृश्यमपश्यन्, तेऽद्याप्यागत्येदमेव कथयन्ति, मातः! तस्मिन् काले तु एतत् न प्रतीतमभवत् यदयं पञ्चमकालो प्रवर्तते, सर्वथा चतुर्थकालं इव दृश्यं सर्वत्र दृष्टिगोचरमभवत्। सम्मिलिताः सहस्रशो जनाः केसरिवर्णस्य परिधाने पूजनमकुर्वन्। यदा दिल्लीसदृश्याः आधुनिकनगर्याः निवासिषु एतस्याः भक्तिभावनायाः आशा नासीत् परन्तु तद्विधानमवलोक्य तु विश्वासोऽयं जातः, यदद्यापि समाजेषु देवशास्त्रगुरुन् प्रति अचला श्रद्धाभक्तेर्भावना भरितास्ति।**

अनेन प्रकारेण भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्ती– महोत्सवेवर्षे इदमेकोऽभूतपूर्वभक्तेरायोजनं सम्पन्नमभवत्।

महोत्सव संघ सानिध्य में सम्पन्न हुआ। आज वह कमल मंदिर दिल्ली का एक चमत्कारिक **''भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर''** के नाम से प्रसिद्ध हो चुका है। उसके निर्माता पुण्यशाली श्रावक अनिल जी माताजी के अनन्य भक्त हैं।

➢एक साथ चौबीस कल्पद्रुम विधानों ने विहंगम दृश्य उपस्थित कर दिया!–

अक्सर यह देखा जाता है कि किसी को अगर एक मण्डल विधान करना है तो उसे बड़ी चिंता हो जाती है कि कैसे यह विधान प्रभावनापूर्वक सम्पन्न होगा? कितने लोग करेंगे? लेकिन ज्ञानमती माताजी ने कभी नकारात्मक ढंग से सोचना सीखा ही नहीं है। मैंने और माताजी ने मिलकर दिल्ली में एक भक्ति महाकुंभ का विराट आयोजन कराने की दृष्टि से चौबीस भगवन्तों के समवसरण एक साथ बनाकर कल्पद्रुम विधान की योजना बनाई, पुनः उन्होंने एक साथ एक-दो नहीं अपितु चौबीस कल्पद्रुम विधान कराने की घोषणा कर दी। जिन-जिन महानुभावों ने वह दृश्य देखा है, वे आज भी आकर यही कहते हैं कि माताजी! उस समय तो ऐसा लगता ही नहीं था कि इस समय पंचमकाल चल रहा है, बिल्कुल चतुर्थकाल जैसा दृश्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होता था। एक साथ हजारों लोग केशरिया परिधान में पूजन करते थे जबकि दिल्ली जैसी आधुनिक नगरी के वासियों में इतनी भक्तिभावना की उम्मीद नहीं थी परन्तु उस विधान को देखकर तो विश्वास हो गया कि आज भी समाजों में देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति की भावना भरी हुई है।

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में यह एक अभूतपूर्व भक्ति आयोजन सम्पन्न हुआ।

समवसरणप्रवर्तनेन सह जन्मजयन्तीवर्षस्य समापनमभवत्–''भगवान् ऋषभदेवो जैनधर्मस्य प्रथमतीर्थंकरो विद्यते अतो भगवान् महावीरो जैनधर्मस्य संस्थापको नास्ति'', **अनया वार्तया प्रतिजनं परिचितं कारयितुं पूज्यमातुर्मनसि 1992 वर्षादेव रुचिरासीत् अतोऽयोध्या–तीर्थविकासः, शताष्ट फुट मानस्य प्रतिमायाः निर्माणस्य प्रेरणा, चतुर्विंशति कल्पद्रुमविधानानि आदीनि प्रभावनात्मककार्याणि प्रतिसमयमभवन्, तस्यामेव शृंखलायां पूज्यमाता दिगम्बरजैन–त्रिलोकशोधसंस्थानस्य कार्यकर्तृभ्यः** ''भगवान् ऋषभदेवसमवसरणस्य श्रीविहारस्य'' **नाम्ना सम्पूर्णे भारते एकं रथं भ्रामयितुं प्रेरणामदात्। तेन रथेन सार्धमेव जन्मकल्याणकस्य प्रतीकेन एकेन विशालेन ऐरावतगजेन समन्वितो द्वितीयो रथोऽपि निर्मापितः। एतयोर्द्वयोः रथयोरुद्घाटनं** 22 मार्च 1998 **दिने ऋषभजयन्तीदिने जन्मजयन्तीमहोत्सवस्य वर्षस्य समापनावसरे** राजधान्याः दिल्लीनगर्याः लालकिलाप्रांगणात् केन्द्रीयवित्तमंत्रिणो धनञ्जयकुमारस्य अध्यक्षतायामभवत् **पुनः** 9 अप्रैल 1998 दिने **भगवतो महावीरस्य जन्मजयन्तीदिने तत्कालीनः प्रधानमंत्री** श्रीअटलविहारी वाजपेयी **भारतभ्रमणहेतवे एतयोः रथयोः प्रवर्तनं चकार। निरन्तरं त्रिवर्षपर्यन्तं सम्पूर्णे भारते समवसरणश्रीविहारेण भगवतः ऋषभदेवस्य सिद्धान्तानां व्यसनमुक्तेः, सदाचारशाकाहाराणां व्यापकः प्रचारः प्रसारः कृताः, सोऽविस्मरणीयो विद्यते।**

प्रतिदिनं नवं तव जीवनस्य भवति–**वास्तवे ज्ञानमत्याः मातुर्जीवनस्य यदि सूक्ष्मतया निरीक्षणं क्रियते, तु तस्या जीवनस्य प्रतिक्षणं, प्रतिपलं, तस्याः प्रतिचिन्तनं, तस्याः प्रतिपदं, तस्याः**

➢समवसरण प्रवर्तन के साथ जन्मजयंती वर्ष का समापन हुआ–

''भगवान ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर हैं अतः भगवान महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं हैं'' इस बात से जन-जन को परिचित कराने हेतु पूज्य माताजी के मन में सन् 1992 से लगन लगी थी अतः अयोध्या तीर्थ का विकास, 108 फुट मूर्ति निर्माण प्रेरणा, 24 कल्पद्रुम विधान आदि कुछ न कुछ प्रभावनात्मक कार्य समय-समय पर हुए, उसी श्रृंखला में पूज्य माताजी ने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं को **''भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार''** के नाम से पूरे भारत में एक रथ घुमाने की प्रेरणा दी। उस रथ के साथ-साथ जन्मकल्याणक के प्रतीक में एक **विशाल ऐरावत हाथी** से समन्वित दूसरा रथ भी बनाया गया। इन दोनों रथों का **उद्घाटन 22 मार्च 1998** को ऋषभजयंती के दिन जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के समापन अवसर पर **राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान से केन्द्रीय वित्तराज्यमंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता** में हुआ पुनः **9 अप्रैल 1998** को भगवान महावीर जन्मजयंती के दिन तत्कालीन **प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने भारतभ्रमण हेतु इन रथों का प्रवर्तन किया। निरन्तर तीन वर्षों तक सम्पूर्ण भारत में इस समवसरण श्रीविहार के द्वारा भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों का एवं व्यसनमुक्ति, सदाचार, शाकाहार का जो व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है, वह अविस्मरणीय है।

➢हर दिन नया तेरे जीवन का होता है–

वास्तव में ज्ञानमती माताजी के जीवन का अगर सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाये, तो उनके

प्रतिदिनं, कस्याश्चिदपि नवोपलब्धेः प्राप्तेः कारकं भवति। एतासामेवोपलब्धीनां क्रमे ज्ञानमती माता व्यचारयत् यत् येभ्यः स्थानेभ्यः शिक्षायाः प्रचारप्रसारो भवति, तेषां कुलाधिपतीन् भगवतः ऋषभदेवस्य जीवनेन परिचितान् विधातुं परमावश्यकं विद्यते अतः सा अस्माभिः सह विचारविमर्शं विधाय ''भगवान् ऋषभदेवराष्ट्रीयकुलपतिसम्मेलनस्य'' **आयोजनार्थं प्रेरणामदात्।**

दिल्लीनगर्याः विहारं कृत्वा हस्तिनापुरे आगमनस्य पश्चात् पूज्यमातुः सान्निध्ये 4 अक्तूबर दिनात् 6 अक्तूबर 1998 पर्यन्तं इदमायोजनं निश्चितमभूत्, यस्मिन् सम्पूर्णस्य देशस्य विश्वविद्यालयानां 30 कुलपतयः, केचित् पूर्वकुलपतयः शताधिकाश्च प्राध्यापकविद्वांस भागमगृह्णन्। सर्वे च एतां वार्तां स्वीकृतवन्तः यत् अधुनापर्यन्त वयं भगवन्तं महावीरं ''जैनधर्मस्य संस्थापकं मन्यामहे परन्त्वद्य एषा वार्ता ज्ञाताभवत् यत् ''जैनधर्मः प्राकृतिकः शाश्वतः धर्मोऽस्ति, भगवतः ऋषभदेवाच्च महावीरपर्यन्तं अस्य युगस्य 24 तीर्थंकरा सन्ति।''

भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणोत्सवः अन्तर्राष्ट्रीयस्तरेणायोजितः–**यस्मात् कालात् दिगम्बरजैन त्रिलोकशोध संस्थानस्य स्थापना जाता, तस्मात् कालादेवास्य कार्यकलापाः सर्वतोमुखा, सर्वोदययुक्ता राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीयस्तरस्य सन्ति, अतएव विभिन्नसंस्थानां कार्यकर्तारोऽपि एतद् जैनधर्मस्य शक्तिभवनं कार्यकर्तृणां प्रशिक्षणकेन्द्रं च मन्यन्ते।**

भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्त्याः भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणश्रीविहारस्य पश्चात्

जीवन का हर क्षण, हर पल, उनकी हर सोच, उनका हर कदम, उनका हर दिन किसी न किसी नई उपलब्धि को प्राप्त कराने वाला होता है, इन्हीं उपलब्धियों के क्रम में ज्ञानमती माताजी ने विचार किया कि जहाँ से शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता है, उनके कुलाधिपतियों को भगवान ऋषभदेव के जीवन से परिचित कराना परम आवश्यक है अतः उन्होंने हम लोगों के साथ विचार-विमर्श करके **''भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन''** आयोजित करने की प्रेरणा प्रदान की।

दिल्ली से विहार करके हस्तिनापुर आने के पश्चात् पूज्य माताजी के सानिध्य में 4 से 6 अक्टूबर 1998 तक यह आयोजन रखा गया, जिसमें पूरे देश के विश्वविद्यालयों से लगभग 30 कुलपति, कुछ पूर्व कुलपति एवं शताधिक प्रोफेसर विद्वानों ने भाग लिया। सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि अभी तक हम लोग भगवान महावीर को जैनधर्म का संस्थापक मानते थे परन्तु आज यह बात ज्ञात हुई है कि **''जैनधर्म प्राकृतिक शाश्वत धर्म है और भगवान ऋषभदेव से महावीर तक इस युग के 24 तीर्थंकर हुए हैं।''**

➢भगवान ऋषभदेव का निर्वाण महोत्सव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया–

जब से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना हुई है, तब से ही इसके कार्यकलाप सर्वतोमुखी, सर्वोदयी एवं राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रहे हैं, इसीलिए विविध संस्थाओं के कार्यकर्ता भी इसे जैनधर्म का पावर हाउस, कार्यकर्ताओं का ट्रेनिंग सेंटर आदि कहते हैं।

भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार के पश्चात् पूज्य

पूज्यायाः मातुरिच्छाभवत् यत् भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणोत्सवः इदानीमन्तर्राष्ट्रीयस्तरे आयोजितः स्यात्, अतः 4 फरवरी 2000 दिने, माघकृष्ण चतुर्दश्यां भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाण कल्याणकदिवसे निर्वाण महोत्सवस्योद्घाटनं राजधान्याः दिल्ल्याः लालकिला प्रांगणे तत्कालीनः प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी महोदयोऽकरोत्, यस्मिन् कृत्रिमस्य विशालकैलाशपर्वतस्य समक्षं सर्वप्रथमं प्रधानमंत्री निर्वाणमोदकं समर्पयत्, पुनः सभाध्यक्ष–स्तत्कालीनः केन्द्रीयवित्तराज्यमंत्री श्री धनञ्जयकुमारो जैनो द्वितीयमोदकं समर्पयत्, तत्पश्चात्तु सहस्रशो नरनार्यः पंक्तिबद्धाः भूत्वा भक्तिभावपूर्वकं सहस्राष्ट निर्वाणमोदकान् समर्प्य स्वजीवनं धन्यमकुर्वन्। तस्मिन्नेव समये लालकिला प्रांगणे–दिल्लीनगर्यां कैलाशपर्वते विराजमानार्थं प्रस्तावितानां द्वासप्तति रत्नप्रतिमानां पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा जाता, दिनांकात् 4 फरवरी तः 10 फरवरी पर्यन्तं च ''विशालः ऋषभदेवमेलापकोऽपि'' आयोजितोऽभवत्, यं देशविदेशानां लक्षाधिकनरनार्योऽपश्यन्।

जम्बूद्वीपस्य तृतीयोमहामहोत्सवः 2000 वर्षे आयोजितः–**जम्बूद्वीपरचनायाः निर्माणस्य पूर्णतायाः पश्चात् सन् 1985 वर्षे पूज्यामाता संस्थानस्य कार्यकर्तृभ्यः प्रेरणां प्रादात् यत् प्रतिपंचवर्षे** ''जम्बूद्वीपस्य महामहोत्सवस्य'' **आयोजनं भवितव्यं, तस्याः प्रेरणानुसारं 1990–1995 वर्षयोश्च द्वौ महामहोत्सवौ सम्पन्नौ अभवतां, पुनः 2000 वर्षे भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाण महोत्सवस्य संपन्नतायाः पश्चात् पूज्यामाता दिल्लीनगर्याः विहारं कृत्वा हस्तिनापुरमागच्छत्, तत्र तस्याः सान्निध्ये चैत्रशुक्ल त्रयोदश्याः वैशाख कृष्ण पञ्चमी**

माताजी की इच्छा हुई कि भगवान ऋषभदेव का निर्वाण महोत्सव अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाये अतः 4 फरवरी 2000 को (माघ कृ. 14, भगवान ऋषभदेव निर्वाण कल्याणक दिवस) निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया, जिसमें कृत्रिम-विशाल कैलाश पर्वत के समक्ष सर्वप्रथम प्रधानमंत्री जी ने निर्वाणलाडू समर्पित किया पुनः सभाध्यक्ष तत्कालीन केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री वी.धनन्जय कुमार जैन ने द्वितीय लाडू चढ़ाया, उसके बाद तो हजारों नर-नारियों ने पंक्तिबद्ध होकर भक्तिभावपूर्वक 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाकर अपने जीवन को धन्य किया। इसी अवसर पर लालकिला मैदान-दिल्ली में कैलाशपर्वत पर विराजमान होने वाली 72 रत्नप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई एवं 4 से 10 फरवरी तक ''विशाल ऋषभदेव मेला'' भी आयोजित हुआ, जिसे देश-विदेश के लाखों नर-नारियों ने देखा।

➢जम्बूद्वीप का तृतीय महामहोत्सव सन् 2000 में मनाया गया–

जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण होने के बाद सन् 1985 में पूज्य माताजी ने संस्थान के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान की थी कि प्रत्येक पाँच वर्षों में **''जम्बूद्वीप महामहोत्सव''** का आयोजन करना है। उनकी प्रेरणानुसार सन् 1990 और 1995 में दो महोत्सव सम्पन्न हो चुके थे पुनः सन् 2000 में भगवान ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की सम्पन्नता के पश्चात् पूज्य माताजी दिल्ली से विहार करके हस्तिनापुर पहुँचीं, वहाँ उनके सानिध्य में चैत्र शुक्ला 13 से वैशाख कृष्णा 5

16 तः 23 अप्रैल 2000 पर्यन्तं पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठापूर्वकं जम्बूद्वीपमहामहोत्सवस्य कार्यक्रमः सम्पन्नोऽभूत्, एतत् सर्वं पञ्चकल्याणकं प्रथमबारं विमलेशदीपकयोः गुलमोहरपार्क, दिल्लीनगर्याः अर्थ सौजन्येन सम्पादितम्।

इतिहासकारसम्मेलनं नवीनमितिहासमस्थापयत्–**जम्बूद्वीप महोत्सवस्य सम्पन्नतायाः पश्चात् 11 जून 2000 दिने हस्तिनापुरे त्रिलोकशोधसंस्थानेन ''जैनधर्मस्य प्राचीनताविषये'' एकदिवसीया संगोष्ठी आयोजिता, यस्यां अनेकाः उच्चकोट्याः इतिहासकाराः विद्वांसश्च सम्मिलिताः अभवन् दिल्लीतश्च एन.सी.ई.आर.टी. पक्षतः आगतः इतिहासस्य प्राध्यापकः श्री प्रीतीशः आचार्यः सर्वेषां विदुषां आलेखान् श्रुत्वा संगोष्ठ्याः विवरण शिक्षाविभागं प्रेषयितुमाश्वासनं प्रादात् पुनः यदा माताश्रीः हस्तिनापुरात् विहृत्य दिल्लीनगर्यां प्रीतविहार–कमलमन्दिरमागता, तदा तत्र एन.सी.ई.आर.टी. संस्थायाः निर्देशकः प्राध्यापकः जे.एस. राजपूतः पूज्यमार्तुदर्शनार्थमागतः। अनेकचर्चावार्तामध्ये सः इतिहासस्य नवीनपुस्तकेषु संशोधनस्य विश्वासं दत्वा पूज्यां मातरं जैनधर्मस्यैकमधिकृतं पाठं लिखित्वा दातुमकथयत् यश्च केषांचिद् दिनानां पश्चात् तत्समीपे प्रेषितः। एतस्य मध्ये तत्कालीनो मानवसंसाधन–विकासमंत्री डॉ. श्री मुरली मनोहरः जोशी अपि द्विबार मातुः सकाशं दर्शनार्थमागतः, पाठ्यपुस्तकेषु च यथायोग्यस्य संशोधनस्य वार्तायां सः अकथयत् यत्** ''प्रत्येकधर्मस्य अधिकृतैः साधुभिः विशिष्टैर्विद्वद्भिश्च लेखं प्रमाणितं कृत्वैव पाठ्यपुस्तकेषु प्रकाशितो भवेत्, ईदृशो

(16 से 23 अप्रैल 2000) तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक जम्बूद्वीप-महामहोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यह पूरा पंचकल्याणक प्रथम बार विमलेश एवं दीपक जैन-गुलमोहर पार्क, दिल्ली के अर्थ सौजन्य से सम्पन्न किया गया।

➢इतिहासकार सम्मेलन ने नया इतिहास कायम किया–

जम्बूद्वीप महोत्सव की सम्पन्नता के पश्चात् 11 जून 2000 को हस्तिनापुर में त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा ''जैनधर्म की प्राचीनता'' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें अनेक उच्चकोटि के इतिहासकार एवं विद्वान् पधारे तथा दिल्ली से एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से पधारे इतिहास के रीडर श्री प्रीतीश आचार्य ने सभी विद्वानों के आलेख सुनकर संगोष्ठी की रिपोर्ट शिक्षा विभाग तक पहुँचाने का आश्वासन दिया पुनः जब पूज्य माताजी हस्तिनापुर से विहार करके दिल्ली (प्रीतविहार-कमल मंदिर) पहुँचीं, तब वहाँ एन.सी.ई.आर.टी. के डायरेक्टर प्रो. जे.एस. राजपूत पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पधारे तथा अनेक चर्चाओं के दौरान उन्होंने इतिहास की नई पाठ्यपुस्तकों में संशोधन करने का विश्वास दिलाते हुए पूज्य माताजी से जैनधर्म का एक अधिकृत पाठ लिखकर देने को कहा जो कि कुछ ही दिन पश्चात् उनके पास भिजवा दिया गया। इस बीच तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी भी दो बार पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आए और पाठ्यपुस्तकों में यथायोग्य संशोधन की बात पर उन्होंने कहा कि **''हर धर्म के अधिकृत साधु-संतों एवं विशिष्ट विद्वानों से लेख को प्रमाणित करवाकर ही पाठ्यपुस्तकों में**

मम प्रयासोऽस्ति।''

अनेन प्रकारेण मात्रा पुरुषार्थेनान्ततः एकस्मिन् दिने सफलता प्राप्ता, यदा संसदभवनस्य सत्रेषु अपि पाठ्यपुस्तकानां संशोधनविषये विस्तृता चर्चाः अभवन् जैनधर्मेण च सह अन्य धर्मावलम्बिनः प्रति लिखितानां असत्यवार्तानां केषुचिद् विषयेषु संशोधनं (2003 वर्षस्य संस्करणेषु) अभवत्। अग्रेऽपि पुरुषार्थस्य पश्चात् अन्येषां विवादास्पदविषयाणां परिवर्तनं संभवं विद्यते।

द्वितीया सहस्राब्द्याः अन्तिमश्चतुर्मासः स्वर्णाक्षरेस्वंकितो भविष्यति–**यदा समस्तं जगत् 2000 वर्षे द्वितीयायाः सहस्राब्द्याः प्रस्थानं तृतीयायाश्च सहस्राब्द्याः आगमनस्योत्सव–मायोजितमकरोत्, तदा ज्ञानमत्याः मातुर्मनः एकस्य नवीनस्य तीर्थस्य निर्माणस्य योजनां निर्मितामकरोत्। सा अनिलकुमारस्य प्रीतविहारदिल्लीनिवासिनः तीव्रभावनानुसारेण 2000 वर्षस्य चतुर्मासं स्वप्रेरणया निर्मिते भगवतः ऋषभदेवस्य कमलमन्दिरेऽकरोत्। तस्य चतुर्मासस्य मध्ये दिल्लीनगर्यां कैलासमानसरोवरयात्रा, 48 भक्तामर मण्डलविधानं इत्यादयोऽनेकाः भव्यकार्यक्रमाः सम्पन्नाः अभवन्। भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षाज्ञानकल्याणकस्य भूमौ प्रयागे–इलाहाबादे नवीनस्य तीर्थस्य निर्माणस्य रूपरेखां प्रस्तुतामकरोत्। एतत् कमलमन्दिरे विराजमानायाः ऋषभदेवस्य मनोहारिण्याः प्रतिमायाः अतिशयश्चमत्कारः एव मन्तव्यः।**

अहं तु स्वर्णमन्दिरस्य निर्माणं करिस्यामि–**एकस्य बालकस्य भावनां पश्यन्तु! यस्मात् समयात् अनिलकुमार कमलमन्दिरस्य निर्माणमकारयत्, तत्पुत्रोऽतिशयो जैनोऽनेकबारमिमां**

प्रकाशित हो, ऐसा मेरा प्रयास है।''

इस प्रकार पूज्य माताजी द्वारा पुरुषार्थ करते-करते आखिर एक दिन सफलता मिली, जब संसद भवन के सत्रों में भी पाठ्यपुस्तकों के संशोधन की विस्तृत चर्चा चली और जैनधर्म के साथ-साथ अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति लिखी गई असत्य बातों का कुछ अंशों में संशोधन (सन् 2003 के संस्करणों में) हुआ था। आगे भी पुरुषार्थ करते रहने से अन्य विवादास्पद विषयों का परिवर्तन भी संभव है।

➢द्वितीय सहस्राब्दि का अन्तिम चातुर्मास स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा–

जब सारी दुनिया सन् 2000 में द्वितीय सहस्राब्दि की विदाई और तृतीय सहस्राब्दि के आगमन का जश्न मना रही थी, ऐसे समय में ज्ञानमती माताजी का अन्तर्मन एक नवीन तीर्थ के निर्माण की योजना बना रहा था। उन्होंने अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली की तीव्र भावनानुसार सन् 2000 का चातुर्मास स्वप्रेरणा से निर्मित भगवान ऋषभदेव कमल मंदिर में किया। उस चातुर्मास के मध्य दिल्ली में कैलाश मानसरोवर यात्रा, 48 भक्तामर मण्डल विधान आदि कई भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए तथा भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में नवीन तीर्थ निर्माण की रूपरेखा तैयार हुई। इसे कमल मंदिर में विराजमान भगवान ऋषभदेव की मनोहारी प्रतिमा का अतिशय चमत्कार ही समझना चाहिए।

➢मैं तो सोने का मंदिर बनवाऊँगा–

एक बालक की भावना तो देखिए! जब से अनिल जी ने कमल मंदिर का निर्माण कराया, उनके पुत्र अतिशय जैन ने कई बार ये भावना प्रगट की कि मैं भी बड़ा होकर पापा की तरह एक बड़ा सा मंदिर

भावनां प्रकटितामकरोत् यदहमपि वयस्को भूत्वा स्वपितावत् एकं महन्मंदिरं निर्मापितं करिष्यामि। पृच्छायां यत् कस्य प्रकारस्य मन्दिरस्य निर्माणस्य भवतो भावना विद्यते, सः बालकस्तत्काल–मुत्तरमदात् पिता तु संगमरमरस्य मन्दिरस्य निर्माणमकरोत् अहं तु स्वर्णमन्दिरस्य निर्माणं कारयिष्यामि।

वस्तुतः सम्राजा चन्द्रगुप्तेन दृष्टः स्वप्नः साकारः इव भवितुं प्रस्तावितः अभवत्।

श्रीज्ञानमतीं मातरं वयं तीर्थनिर्माणं कारयन्तीमपश्याम–**यस्मात् कालात् गणिन्याः मातुर्मनसि प्रयागतीर्थस्य निर्माणस्य योजना प्रादुरभूत्, तस्मात् कालादेव सा तत्र कीदृशस्य मन्दिरस्य निर्माणं भवितव्यं, केन प्रकारेण किं कर्तव्यमस्ति, का आकर्षकरचनानिर्मिता भवितव्या? आदिवार्ताः अचिन्तयत्। उपतिष्ठन्ती, उपविशन्ती, चलन्ती सा एतस्मिन् विषये निमग्नासीत् यत् प्रयागे तीर्थे ''भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षास्थली'' नाम्ना तीर्थनिर्माणं कर्तव्यमस्ति।**

अन्ततः प्रीतविहार–दिल्लीनगर्याश्चतुर्मासस्य संपन्नतायाः पश्चात् सा संघेन सह इलाहाबादाय मंगलविहारमकरोदेव। तत्र भूमेः क्रयं कृत्वा भ्राता रवीन्द्रः तत्र मातुः प्रेरणानुसारेण कार्यारम्भं तु अकरोदेव। तत्र गत्वा माताश्रीः बहुप्रसन्नचित्ताभवत्।

एतस्य पश्चात्तु निर्माणकार्येषु न जानीमः केन प्रकारेण गतिरागच्छत्, पश्यन्–पश्यन्नेव भगवतः ऋषभदेवस्य चतुर्दश फुट उत्तुंगपद्मासनप्रतिमायाः 51 फुट उच्चैर्स्तम्भोपरि विराजमानं, द्वासप्तति जिनप्रतिमाभिः समन्वितस्य विशालकैलासपर्वतस्य रचनायाः निर्माणं, वटवृक्षमन्दिरस्य निर्माणं, समवसरणमंदिरस्य निर्माणं इत्यादीनि कार्याणि शीघ्रतया

बनवाऊँगा। पूछने पर कि किस प्रकार का मंदिर बनवाने की आपकी भावना है, उस बालक ने तुरंत उत्तर दिया कि ''पापा ने तो संगमरमर का मंदिर बनवाया है, मैं सोने का मंदिर बनवाऊँगा।''

वास्तव में सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वारा देखे गए स्वप्न साकार होते दिखाई दे रहे हैं।

➢श्री ज्ञानमती माताजी को हमने तीर्थ बनाते देखा–

जब से पूज्य माताजी के मन में प्रयाग तीर्थ बनाने की योजना आई थी, तब से ही वे वहाँ कैसा मंदिर बनाना है, कैसे क्या करना है, कौन सी आकर्षक रचना बननी चाहिए? आदि-आदि बातें ही सोचती रहती थीं। उठते-बैठते, चलते-फिरते बस उन्हें यही एक धुन थी कि 'इलाहाबाद-प्रयाग' में 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली' नाम से तीर्थ का निर्माण करना है।

आखिरकार प्रीतविहार-दिल्ली में चातुर्मास सम्पन्न करने के पश्चात् उन्होंने संघ सहित इलाहाबाद के लिए मंगलविहार कर ही दिया। वहाँ भूमि क्रय करके भाई रवीन्द्र जी वहाँ पर पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार निर्माणकार्य तो प्रारंभ करा ही चुके थे। वहाँ पहुँचकर पूज्य माताजी बहुत ही प्रसन्न हुईं।

उसके बाद तो निर्माणकार्य में न जाने कहाँ से गति आ गई, देखते ही देखते भगवान ऋषभदेव की 14 फुट पद्मासन प्रतिमा का 51 फुट ऊँचे स्तम्भ के ऊपर विराजमान होना, 72 जिनप्रतिमाओं से समन्वित विशाल कैलाशपर्वत की रचना बनना, वटवृक्ष मंदिर का निर्माण, समवसरण मंदिर का

सम्पन्नान्यभवन् एतत्प्रतीतोऽभवत् यत् कापि दैवीशक्तिरेवागता।

स्वनेत्रयोः पुनः एव विशालतीर्थस्य निर्माणमवलोक्यैवाहं काश्चित् पंक्तीः संयुज्यालिखम्–

''श्री ज्ञानमतीं मातरं वयं तीर्थनिर्माणं कारयन्तीमपश्याम। इयमस्ति इतिहासप्रणेत्री।''

प्रयागतीर्थाय मात्रा वास्तविकमहाकुम्भस्यरूपकं प्रस्तुतं कृतम्–**विश्वस्य क्षितिजे महाकुम्भनगर्याः रूपेण विख्यातां प्रयागं–इलाहाबादनगरीं को न जानाति? आध्यात्मिकमैतिहासिकं सांस्कृतिकं च वैभवं स्वस्मिन् पुंजीभूतं कृत्वा इयं नगरी गंगायमुनासरस्वतीनदीनां त्रिवेण्याः संगमस्थला वर्तते। कथ्यतेऽत्र गंगा–यमुने नद्यौ तु बहन्त्यौ आगत्य मिलितेः सरस्वती चादृश्यरुपेण प्रवाहमाना वर्तते। कोटिकोटिहिन्दूभक्तानामास्थायाः केन्द्रं विन्दुरस्ति, अस्मिन् संगमस्थले आगत्यानेकहिन्दूश्रद्धालवो भक्ताः अस्यां स्नानं कृत्वा स्व मानवजीवनं धन्यं मन्यन्ते स्वात्मानं च पुण्यशालिनं मन्यन्ते किन्तु वास्तवे यदि वयं प्राचीने इतिहासे दृष्टिपातं कुर्मस्तु ज्ञायते यत् कोटाकोटीवर्षाणि पूर्वं जैनधर्मस्य प्रथमस्तीर्थंकरो भगवान् ऋषभदेवः अयोध्या नगर्यां जन्म गृहीत्वा यत्र कर्मभूमेः आदौ प्रजां जीवनं जीवितुं कलाया शिक्षामदात्, राजनीते, न्यायनीतेः वर्णव्यवस्थायाश्च सूत्रपातमकरोत् तत्रैव नीलांजनायाः नृत्येन वैराग्यं प्राप्य अस्यैव प्रयागस्य पवित्रायां धरायां वटवृक्षस्याधः प्रथमां जैनेश्वरीं दीक्षां गृहीत्वा मुनिपरम्परां**

निर्माण आदि इतनी शीघ्रता से सम्पन्न होते चले गए, ऐसा लग रहा था कि मानो कोई दैवी शक्ति ही आ गई हो।

अपनी आँखों के सामने इतना बड़ा तीर्थ निर्मित होते देखकर ही मैंने कुछ पंक्तियाँ संजोई थीं–

श्री ज्ञानमती माताजी को हमने तीर्थ बनाते देखा,
ये हैं इतिहास प्रणेता।

➢प्रयाग तीर्थ की यात्रा ने असली महाकुंभ का रूपक प्रस्तुत किया–

विश्व के क्षितिज पर महाकुंभ नगरी के रूप में विख्यात प्रयाग-इलाहाबाद नगरी को कौन नहीं जानता? आध्यात्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव को स्वयं में समेटे यह नगरी गंगा,यमुना एवं सरस्वती नदियों की त्रिवेणी का संगम स्थल है। कहा जाता है कि यहाँ गंगा और यमुना नदियाँ तो बहती हुई आकर मिलती हैं और सरस्वती अदृश्य रूप से इसमें प्रवाहमान हैं। करोड़ों-करोड़ों हिन्दुओं की आस्था के केन्द्र बिन्दु इस संगम स्थल पर आकर अनेकों हिन्दू श्रद्धालु भक्त इसमें स्नान करके अपने मानव जीवन को धन्य समझते हैं तथा स्वयं को पुण्यशाली मानते हैं। किन्तु वास्तव में हम प्राचीन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हमें ज्ञात होता है कि आज से कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या नगरी में जन्म लेकर जहाँ कर्मभूमि की आदि में प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई, राजनीति, न्यायनीति, वर्णव्यवस्था आदि का सूत्रपात किया, वहीं नीलांजना के नृत्य से वैराग्य को प्राप्त कर इसी प्रयाग की पवित्र धरती पर वटवृक्ष के नीचे प्रथम जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुनि परम्परा

प्रादुर्भूतामकरोत् सः च वटवृक्षोऽद्यापि कोटिवर्षाणां पश्चादपि प्रयागस्य भूमौ अवस्थितो भूत्वा भगवतः ऋषभदेवस्य मुनिपरम्परायाश्च प्रारम्भकरणस्य गौरवगाथायाः मौनभाषायां दिग्दर्शनं करोति।

महानुभावाः। यत्र तस्य वटवृक्षस्याधः घोरातिघोरं तपश्चरणं कृत्वा सः आदिब्रह्मादिभिः सहस्राष्ट नामभिः समलंकृतो भगवान् ऋषभदेवः सम्यग्दर्शनं–सम्यक्ज्ञानं–सम्यक्चारित्रं रूपायां रत्नत्रयस्य त्रिवेण्यां स्नानं कृत्वा स्व अपूर्वां आत्मनो विशुद्धिं प्राप्य परमात्मस्वरूपं प्राप्नोत् वास्तविकरूपेण च सः एव त्रिवेणी संगमरूपेण ज्ञातमभवत्, यस्मिन् अवगाहनं कृत्वा कोऽपि प्राणी स्वात्मानं परमात्मानं कर्तुं प्रभवति परन्तु युगपरिवर्तितमभवत् इतिहासश्च परिवर्तितोऽभवत्, सतयुगं कलियुगे परिवर्तितमभूत, यस्याः प्रयागस्य नगर्याः विषये जैनरामायणे पद्मपुराणे वर्णनं प्राप्यते–

प्रजाग इति देशोऽसौ, प्रजाभ्योऽस्मिन् गतो यतः।
प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः प्रयागस्तेन कीर्तितः।।281।।

अर्थात् भगवान् ऋषभदेवोऽयोध्यायाः जनसमूहात् दूरो भूत्वा यत् स्थानं प्राप्नोत्, तस्य स्थानस्य नाम ''प्रयागो'' **अभवत्। भगवान ऋषभदेवश्चास्मिन् स्थाने बहुयागं त्यागमकरोत् अतएव अस्य नाम** ''प्रयागः'' **इति प्रसिद्ध अभवत्।**

तं प्रयागतीर्थं जनाः कालदोषात् विस्मृतमकुर्वन् यतस्तत्र द्वादश वर्षाणां पश्चात् संगमतटे महाकुम्भोत्सवः आयोजितो भवति अतः सा विश्वं महाकुम्भनगर्या रूपेण मान्यतां प्राप्नोत्

को प्रादुर्भूत किया था और वह वटवृक्ष आज करोड़ों वर्ष बाद भी प्रयाग की भूमि पर अवस्थित रहकर भगवान ऋषभदेव एवं मुनि परम्परा के प्रारंभीकरण की गौरव गाथा का दिग्दर्शन करा रहा है।

महानुभावों! चूँकि उस वटवृक्ष के नीचे घोरातिघोर तपश्चरण कर उन आदिब्रह्मा आदि 1008 नामों से समलंकृत भगवान ऋषभदेव ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्ररूपी रत्नत्रयी त्रिवेणी में अवगाहन कर अपनी आत्मा की विशुद्धि कर परमात्म स्वरूप की प्राप्ति की थी और वास्तविक रूप में वही त्रिवेणी संगम के रूप में जाना गया था, जिसमें अवगाहन करके कोई भी प्राणी अपनी आत्मा को परमात्मा बना सकता है परन्तु युग बदला और इतिहास भी बदल गया, सतयुग कलियुग में परिवर्तित हो गया, जिस प्रयाग नगरी के बारे में जैन रामायण-पद्मपुराण में वर्णन आता है–

प्रजाग इति देशोसौ, प्रजाभ्योस्मिन् गतो यतः।
प्रकृष्टो वा कृतस्त्यागः, प्रयागस्तेन कीर्तितः।।281।। (तृतीय पर्व, पृ. 51)

अर्थात् भगवान ऋषभदेव अयोध्या की प्रजा समूह से दूर हो जिस स्थान पर पहुँचे थे, उस स्थान का नाम **'प्रयाग'** प्रसिद्ध हो गया अथवा भगवान ने उस स्थान पर बहुत भारी याग अर्थात् त्याग किया था, इसीलिए उसका नाम **''प्रयाग''** प्रसिद्ध हो गया।

उस प्रयाग तीर्थ को लोग कालदोषवश विस्मृत कर बैठे और चूँकि वहाँ प्रति 12 वर्षों में संगम के तट पर महाकुंभ मेला लगता है अतः उस तीर्थ को विश्व महाकुंभ नगरी के रूप में जानने लगा

किन्तु युगस्य परिवर्तनस्य पश्चादपि धरित्र्याः पावनता भारतवर्षाय अनेकमहापुरुषान् प्रादात्। दक्षिणभारते यत्रैकश्चारित्रचक्रवर्ती जन्म गृहीत्वा मुनिपरम्परायाः पुनरुद्धारमकरोत्, तत्रैवोत्तरभारतमेकस्यै चारित्रचन्द्रिकायै जन्म दत्वा संसारस्य कन्याभ्यः मातुः ब्राह्म्याः मार्गं प्रशस्तमकरोत्। दक्षिणभारतस्य तस्य रत्नस्य नामासीत् ''चारित्रचक्रवर्ती आचार्यशान्तिसागर–महाराजः'' उत्तरभारतस्य चास्याः निधेर्नामास्ति ''चारित्रचन्द्रिका गणिन्यार्यिका ज्ञानमती माता'' तं चारित्रचक्रवर्तिनं गुरुवर त्वहं स्वचर्मचक्षुभ्यां दृष्टुं न क्षमाऽभवम् किन्तु तस्य प्रतिनिधित्वं कारयन्तीं तां चारित्रचन्द्रिकां दृष्टुं वयं पुण्यावसरं प्राप्नुमः। सा स्व 53 वर्षीये तपस्विजीवने यदचिन्तयत्, तत् कृत्वा दर्शयत्। तस्याः कार्यकलापान् दृष्ट्वा प्रतीयते यत् तस्यै तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमीः पंचकल्याणकभूमीः प्रति अत्यधिकरुचिर्विद्यते निरन्तरं च सा सर्वेभ्यः इमामेव प्रेरणां ददाति यत् स्वसर्वस्वबलिदानं कृत्वा वयमेतेषां तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमीनां पंचकल्याणकभूमीनां च संरक्षणाय–संवर्द्धनाय, विकासाय–जीर्णोद्धाराय च सर्वदा संलग्नाः भवेम।

प्रत्येकधरित्र्याः गर्भे तस्याः भवितव्यं लिखितं वर्तते एकस्मिन् अज्ञातकोणे प्रच्छन्नं भवति समये चागते सति तदेव जन्मकुण्डली भूत्वा प्रकटितं भवति, इयमेव घटना प्रयागतीर्थेन सह घटिताभवत्, यदैनं पावनं तीर्थं गृहीत्वा कोटिशो हिन्दवः एकविंशतिशताब्दयाः प्रथमं महाकुम्भमायोजयन्, तस्मिन् समये गणिनी ज्ञानमती माता नवायै शताब्द्यै नवोपहाररूपेण

किन्तु युग परिवर्तन के बाद भी धरती की पावनता ने भारत देश को अनेक इतिहासपुरुष प्रदान किए हैं। दक्षिण भारत में जहाँ एक चारित्रचक्रवर्ती ने जन्म लेकर मुनि परम्परा का पुनरुद्धार किया, वहीं उत्तर भारत ने एक चारित्रचन्द्रिका को जन्म देकर संसार की कन्याओं के लिए माता ब्राह्मी का पथ प्रदर्शित किया है। दक्षिण भारत के उस रत्न का नाम था 'चारित्रचक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी महाराज' और उत्तर भारत की इस निधि का नाम है–''चारित्र चन्द्रिका गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी'' उन चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर को तो मैं अपने चर्मचक्षुओं से देख नहीं पाई किन्तु उनका प्रतिनिधित्व कर रहीं उन चारित्रचन्द्रिका को देखने का हमें पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपने 53 वर्षीय तपस्वी जीवन में जो सोचा, वह करके दिखलाया। उनके कार्यकलाप देखने से ज्ञात होता है कि उन्हें तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं पंचकल्याणक भूमियों से अत्यधिक लगाव है और वह निरन्तर सभी को यही प्रेरणा देती हैं कि हमें अपना सर्वस्व न्योछावर करके भी इन तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि एवं पंचकल्याणक भूमियों के संरक्षण-संवर्धन, विकास एवं जीर्णोद्धार में लगना चाहिए।

प्रत्येक धरती के गर्भ में उसका भविष्य लिखा हुआ एक अज्ञात कोने में छिपा रहता है और समय आने पर वही जन्मकुंडली बनकर प्रकट होता है, यही घटना प्रयाग तीर्थ के साथ घटी, जब इस पावन तीर्थ को लेकर करोड़ों हिन्दू इक्कीसवीं सदी का प्रथम महाकुंभ मना रहे थे, उस समय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने नई सदी को नव उपहार के रूप में 'तीर्थंकर ऋषभदेव

''भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षास्थलीप्रयागतीर्थरूपेणानुपममुपहारं'' समर्पयत्, यत्युग–युगान्तरेभ्योः जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः पताकां च जीवितां रक्षिष्यति।

तीर्थाः एव तीर्थाणां निर्माणं कुर्वन्ति–''ये संसारसागरं तारयन्ति ते एव तीर्थाः सन्ति''**, अस्माकं पूर्वाचार्याणां इदं कथनं सदाकालात् प्रसिद्धमस्ति। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान– सम्यक्चारित्र रूपस्य आत्मस्वरूपे निर्विकल्पसमाधेः स्थितिः 'भावतीर्थः' कथ्यते तस्य च भावतीर्थस्य उपलब्धिकारकाणां महापुरुषाणां चरणानि यां भूमिं स्पृशन्ति सा स्वयमेव तीर्थरूपेण जायते। मम कथनस्य तात्पर्यमिदमस्ति यत् तीर्थंकाराणां गर्भजन्मतपःज्ञाननिर्वाणरूपैः पंचकल्याणकैः समन्विताया: भूमेः भावपूर्णवन्दनपूजनादिकाः क्रियाः अपि साधुभ्यः श्रावकेभ्यश्च संसारसागरात् उत्तीर्णतायै सन्ति।**

यथा च कथितमपि–

''शालिपिष्टमपि शर्करायुक्तं माधुर्यं स्वादकारि विद्यते यथा–तथैव पुण्यपुरुषाणां पदरजोभिः धरा पवित्रा भवति।''

जैनधर्मस्य प्रथमं तीर्थंकरं भगवन्तं ऋषभदेवं विश्वक्षितिजे प्रतिष्ठापयितुं लक्ष्यं यदा माता गणिनी ज्ञानमती आत्मनि स्थापितमकरोत्, तदा न जानामि काश्चिद् विचारशृंखलाः तस्याः हृदये जन्म गृहीत्वा मूर्तरूपं धारयितुं प्रारभन्त, स्यादिदमेव कारणमस्ति यत् जैनधर्मस्य प्राचीनतायां विषये उत्थितस्य प्रश्नचिह्नस्य पूर्णतया निराकरणहेतवे यत्र सा भगवतः

दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ' के रूप में एक अनुपम सौगात भेंट की, जो युगों-युगों तक जैनधर्म की प्राचीनता एवं उसकी यशपताका को जीवन्त रखेगा।

➢तीर्थ ही तीर्थ का निर्माण करते हैं–

'जो संसार सागर से तिरावे, वही तीर्थ है' हमारे पूर्वाचार्यों का यह कथन सदाकाल से प्रसिद्ध है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्चारित्र रूप आत्मस्वरूप में निर्विकल्प समाधि की स्थिति को 'भावतीर्थ' कहा जाता है और इस भावतीर्थ की उपलब्धि कराने वाले महान पुरुषों के चरण जिस भी धरा को स्पर्श करते हैं, वह स्वयमेव ही तीर्थ स्वरूप हो जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि तीर्थंकर के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान व निर्वाण रूप पंचकल्याणकों से समन्वित भूमि की भावपूर्ण वंदना-पूजन आदि क्रियाएं भी साधुओं व श्रावकों के लिए संसार सागर से पार कराने वाली होती हैं। जैसा कि कहा है भी.....

शालिपिष्ट भी शर्करयुत, माधुर्य स्वादकारी जैसे।
पुण्य पुरुष के पदरज से ही, धरा पवित्र हुई वैसे।।

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को विश्व के क्षितिज पर प्रतिष्ठित करने के लक्ष्य को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने जब आत्मसात किया, तो न जाने किन-किन विचार शृंखलाओं ने उनके हृदय में जन्म लेकर मूर्तरूप धारण करना प्रारंभ कर दिया और शायद यही कारण है कि जैनधर्म की प्राचीनता पर उठे प्रश्नचिन्ह का पूर्ण निराकरण करने हेतु जहाँ उन्होंने

ऋषभदेवस्य गर्भजन्मकल्याणकाभ्यां पवित्रायाः शाश्वतजन्मभूमेः अयोध्यातीर्थस्य पुनरुद्धारस्य शंखनादमकरोत्, तत्रैव भगवतः तपसां केवलज्ञानस्य कल्याणकयो भूमिं प्रयागमपि अस्पृश्यं नात्यजत् तं च ग्रन्थेभ्यो नीत्वा जनमानसस्य तीर्थं रचयितुं उत्कटं संकल्पमकरोत्।

भूमिरपि नासीत् किन्तु पंचकल्याणकस्य घोषणामकरोत्–**यस्याः जीवनस्य प्रत्येकं क्षणं स्वर्णिमस्येतिहासस्य एको नवीनो पृष्ठोऽस्ति, यस्याः प्रत्येकं चरणं एकस्य नवस्य तीर्थस्य निर्माणस्य प्रारम्भोऽस्ति, यस्या विचारपरम्परायाः प्रत्येक बिन्दुः स्वात्मनि सागरस्यागाधतां समाहितं कर्तुमस्ति, यस्यां लेखन्या निर्गतः प्रत्येकशब्दो जिनागमस्य सारो विद्यते, तस्याः मातुः ज्ञानमत्याः सर्वतोमुख्यः प्रेरणाः सदैव अस्मभ्यमादर्शाः सन्ति। यदि तु एतत् कथ्यते यत् ज्ञानमत्याः मातुः शब्दकोशे असंभवनाम्नः कोऽपि शब्दो न विद्यते त्वियं नास्ति अतिशयोक्तेर्वार्ता।**

जनसाधारणाय यत्रेयं वार्ता बहु विशेषतां धारयति यत् वयं यदि एकं लघुगृहमपि निर्मातुमिच्छामा, तु एकस्य भूखण्डस्यापेक्षा भवति किन्तु सरस्वतीरूपा ज्ञानमती माता तु योजनाया प्रारम्भकाले एव तस्यै मूर्तरूपं ददाति, स्यादिदं कश्चिद् तीर्थस्य निर्माणं कश्चित् महोत्सवो वा, इयमेव वार्ता प्रयागतीर्थस्य विषयेऽभवत् यन्माताश्रीः पंचकल्याणकस्य, महाकुम्भस्य मस्तकाभिषेकादीनां कार्यक्रमाणां घोषणामकरोत्, प्रयागाय विहाराय समयेऽपि निश्चितोऽभवत् परन्तु आश्चर्यमिदमस्ति यत् अस्मिन् काले प्रयागतीर्थाय भूमिरपि न

भगवान ऋषभदेव के गर्भ एवं जन्मकल्याणक से पावन शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या तीर्थ के पुनरुद्धार का शंखनाद किया, वहीं भगवान की तप एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि 'प्रयाग' को भी अछूता न रखा और उसे ग्रंथों से निकालकर जनमानस का तीर्थ बनाने हेतु उत्कट संकल्प कर लिया।

➢भूमि भी नहीं थी और पंचकल्याणक की घोषणा कर दी–

जिनके जीवन का प्रत्येक क्षण स्वर्णिम इतिहास का एक नवीन पृष्ठ है, जिनका प्रत्येक कदम एक नये तीर्थ के निर्माण का प्रारंभ है, जिनकी विचार परम्परा का प्रत्येक बिन्दु अपने में सागर की गहराइयों को समाहित किए हुए है, जिनकी लेखनी से निकला प्रत्येक शब्द जिनागम का सार है, ऐसी पूज्य माताजी की सर्वतोन्मुखी प्रेरणाएँ सदैव ही हम सभी के लिए आदर्श रही हैं। अगर यह कहा जाए कि ज्ञानमती माताजी की डिक्शनरी में असंभव नाम का कोई शब्द नहीं है, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।

जनसाधारण के लिए जहाँ यह बात बहुत विशेषता रखती है कि अगर हमें एक छोटा सा घर भी बनाना है, तो हमें भूखण्ड की आवश्यकता होगी किन्तु सरस्वतीस्वरूपा ज्ञानमती माताजी तो योजना के प्रारंभ होते ही उसे मूर्तरूप दे देती हैं, फिर चाहे वह किसी तीर्थ का निर्माण हो अथवा कोई महोत्सव इत्यादि, यही बात प्रयाग तीर्थ के लिए भी लागू हुई कि पूज्य माताजी ने पंचकल्याणक, महाकुंभ मस्तकाभिषेक इत्यादि कार्यक्रमों की तिथियाँ घोषित कर दीं, प्रयाग के लिए विहार का समय निश्चित कर लिया पर आश्चर्य यह कि अभी तीर्थ निर्माण के लिए भूमि ही नहीं क्रय की गई

क्रीताऽभवत्। अन्ततोगत्वा समितिसदस्यैः सह भ्राता रवीन्द्रः द्वि–त्रिबारं इलाहाबादमगच्छत् तस्य सविधे मातुराशीर्वादः जिनेन्द्रभक्तेश्चमहिमासीत् अस्मिन् प्रयासे एव इलाहाबाद नगराद् द्वादश किलोमीटर दूरे बनारस वायुयानमार्गे दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानपक्षतः भूमेः क्रयोऽभूत्। 3 जुलाई 2000 वर्षस्य दिवसः शुभदिवसः इतिहासस्य पृष्ठेसु अंकितोऽभवत्, यदैकस्य प्राचीनतीर्थस्य प्रकटीकरणस्य शुभयोगः उपस्थितोऽभवत्।

तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थली तीर्थस्य शिलान्यासः–**मातुः प्रेरणया राजधान्यां दिल्लीनगर्यां भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाणमहामहोत्सवस्य वर्षस्यान्तर्गतं** ''कैलासपर्वतमानसरोवरयात्रायाः'' **आयोजनं प्रचलितमासीत्। माताश्रीः वयं च इदानीं तस्य कृत्रिमपर्वतस्य वन्दनां कृत्वा यत्र तमादिप्रभुं अस्मराम, तत्रैव भ्राता रवीन्द्रकुमारः समितेश्च कार्यकर्तारः, ''भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षास्थलीप्रयागस्य'' शिलान्यासहेतवे पूज्यमातुराशीर्वादं प्राप्य प्रयागं प्रति प्रस्थिताः अभवन्। 4 अक्तूबर 2000 दिने प्रातः 9 वादनमंगलबेलायां शिलान्यासस्य कार्यक्रमोऽत्यन्त सफलतापूर्वकं सम्पन्नोऽभवत्। इलाहाबादमण्डलस्य मण्डलायुक्तस्य श्री सदाकान्तमहोदयस्योद्बोधनं उत्साहेन सहाभवत्। तदैव माता बहु प्रसन्नासीत् अकथयच्च–चन्दनामति! यथा नेता सुभाषचन्द्रबोसः निनादमकरोत् यत्** ''त्वं मह्यं रक्तं देहि, अहं तुभ्यं स्वतन्त्रतां दास्यामि''**, तथैव प्रकारेण वर्तमाने मम नादोऽस्ति** ''यूयमस्मभ्यं सहयोगं दत्त, वयं तुभ्यं तीर्थं प्रदास्यामः।'' **तस्मिन् काले मातुरुत्कटां प्रभुभक्तिमवलोक्य मनसि**

थी! अन्ततोगत्वा समिति के सदस्यों को साथ लेकर भाई रवीन्द्र जी दो-तीन बार इलाहाबाद गए और यह भी पूज्य माताजी का आशीर्वाद और जिनेन्द्र भक्ति की महिमा ही थी कि 2-3 बार के प्रयास में ही इलाहाबाद शहर से 12 किमी. दूर बनारस हाइवे पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर की ओर से भूमि का क्रय किया गया। 3 जुलाई 2000 का शुभ दिवस इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया, जब एक प्राचीन तीर्थ के प्रकटीकरण का शुभ योग आया।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ का शिलान्यास–

माताजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अन्तर्गत **''कैलाश पर्वत मानसरोवर यात्रा''** का आयोजन चल रहा था। पूज्य माताजी एवं हम सभी उस कृत्रिम पर्वत की वंदना कर जहाँ उन आदिप्रभु को स्मरण कर रहे थे, वहीं भाई जी एवं समिति के कार्यकर्तागण 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग' के शिलान्यास हेतु माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर प्रयाग की ओर रवाना हो गए। 4 अक्टूबर 2000, प्रातः 9 बजे की मंगलबेला में शिलान्यास का कार्यक्रम अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इलाहाबाद मण्डल के मण्डलायुक्त श्री सदाकांत जी का उद्बोधन अत्यन्त उत्साहपूर्वक हुआ। आज माताजी बहुत प्रसन्न थीं, कहने लगीं-''चन्दनामती! जैसे नेताजी सुभाषचंद बोस ने नारा दिया था कि **''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा''** उसी प्रकार वर्तमान में मेरा नारा है कि **''तुम हमें सहयोग दो, हम तुम्हें तीर्थ देंगे।''** उस समय माताजी की उत्कट प्रभुभक्ति देखकर मन में रोमांच हो आया कि जिन चारित्रचक्री गुरु

रोमांचोऽभवत् यत् यस्य चारित्र चक्रवर्तिनो गुरोरियं शिष्यास्ति, तस्य छाया त्वस्यां प्रतिबिम्बिता भवितुं शक्यते एव। अर्थव्यवस्थायाः कारणैः कार्येषु बाधा भवति, अन्यथा न जानामि मातुर्भावनास्तु कतिविधाः उच्चाः सन्ति, याभि जैनधर्मः आकाशस्योच्चतां प्राप्तुं शक्नोति।

नैकस्त्रयो संघपतयः तत्पराः अभवन्–**दिगम्बरजैनसाधूनां पदविहारपरम्परा अनादि–कालीनास्ति। पदविहारस्य महत्ता आनन्दश्च प्रथगेवास्ति। साधोः पादविहारेण समाजे नूतनं जागरणं जायते। प्रति नगर–ग्रामस्य जनमानसाय साधुदर्शनेन सहैव जीवननिर्माणाय प्रेरणा लभ्यते। न केवलं जैनाय, जैनेतराय च साधोर्मंगलवाण्याः श्रवणस्यावसरः प्राप्यते। वाणी तु मानव प्रतिदिनं शृणोति, किन्तु भाषणात् पूर्वं यस्य महापुरुषस्य जीवने वाण्याः सारोऽवतरति, तस्य वाण्याः प्रभावोऽवश्यमेव भवति पुनश्च जिनसंस्कृतेः रक्षिकायाः साधिकायाश्च पूज्यमातुः ज्ञानमत्याः विहारस्य वार्ता यदि स्यात्तु कथनेन किम्!**

पूज्यमातुर्मस्तिष्के यदा प्रयागं प्रति मंगलविहारस्य वार्ता आगच्छत् तु जनाश्चैतां वार्तामशृण्वन्, मातुर्मंगलविहारार्थं नैकः किन्तु त्रयः संघपतयः समुद्यताः अभवन्। सर्वप्रथमं अयोध्यातीर्थं प्रति मंगलविहारकारक संघपतिः लाला प्रद्युम्नकुमारः टिकैतनगरनिवासी समागत्य मात्रे श्रीफलं समर्प्य आवेदयत्, स्नानादिकाभिः दैनिकक्रियाभिर्निवृत्य पूजापाठादिकं अकरोदेव तदैव आनन्दकुमारो जैनः ''जैन मार्बल होम'' मेरठ निवासी यः पर्याप्तदिनेभ्यः मातुर्मंगलविहारहेतवे

की यह शिष्या हैं, उनकी छाया तो इनमें पड़ना स्वाभाविक ही है। वैसे कई बार अर्थव्यवस्था के कारण कार्यों में रुकावट आ जाती है अन्यथा माताजी की भावनाएँ तो ना जाने कितनी ऊँची हैं, जिससे जैनधर्म आकाश की ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है।

➢एक नहीं तीन-तीन संघपति तैयार हो गए–

दिगम्बर जैन साधुओं के पदविहार की परम्परा अनादिकालीन है। पदविहार की महत्ता एवं आनन्द कुछ अलग है। साधु के पदविहार से समाज में नूतन जागृति आती है। नगर-नगर, डगर-डगर के जनमानस को साधु दर्शन के साथ-साथ जीवन निर्माण की प्रेरणा प्राप्त होती है। जैन ही नहीं, जैनेतर नागरिक को भी साधु की मंगल वाणी सुनने का अवसर सहज ही प्राप्त हो जाता है। वाणी तो मानव दिन भर सुनता है किन्तु बोलने से पहले जिस महापुरुष के जीवन में वाणी का सार अवतरित हो चुका है, उनकी वाणी का प्रभाव अचूक होता है और फिर जिनसंस्कृति की संरक्षिका और संवाहिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल विहार की बात हो, तो फिर कहना ही क्या!

पूज्य माताजी के मस्तिष्क में जब प्रयाग की ओर मंगल विहार की बात आई और लोगों तक यह बात गई, बस माताजी का मंगल विहार कराने हेतु एक नहीं तीन-तीन संघपति तैयार हो गये। सर्वप्रथम अयोध्या तीर्थ की ओर मंगल विहार करवाने वाले संघपति लाला श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (छोटी शाह)-टिकैतनगर वालों ने आकर माताजी से श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया और स्नानादि दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर पूजा-पाठ कर ही रहे थे कि इतने में मेरठ निवासी श्री आनन्द कुमार जैन, (जैन मार्बल होम) जो काफी दिनों से माताजी से आगामी विहार हेतु संघपति बनने का निवेदन

संघपतिपदस्य भारमुद्वोढुं न्यवेदयत्, आगत्य साष्टांगं मातुश्चरणयोरपतत् पुनः पुनः न्यवेदयच्च, तत्रैव श्री महावीरप्रसादो जैनोऽपि अयमेव स्वप्नमवधार्यातिष्ठत् यदिदं सौभाग्यं तु मह्यमेव प्राप्तव्यमस्ति। माताश्रीः सर्वानेव कथितवती यत् यस्य पुण्यं वर्तते, सः तदवसरं प्राप्स्यति। अन्ततः मेरठ निवासिनः श्रीआनन्दकुमारजैनमार्बलहोम, इत्यस्य पुण्योदयोऽभवत्। यः प्रयागस्य यात्रां कारयित्वा स्व चंचललक्ष्म्याः सदुपयोगेन सह अतिशयं पुण्यं संचयमकरोत्। अस्यां चैतिहासिकशृंखलायां स्वनामापि अंकितमकारयत्। केषांचिद् दिनानां पश्चात् श्री महावीरप्रसादस्य धर्मपत्नी कुसुमलता आगत्य मामवदत् मातः! यदाऽयमजानात् यदस्याः ऐतिहासिकयात्रायाः सौभाग्यं कश्चिदन्यः प्राप्नोत्, तु सः बहुरोदनमकरोत्। तस्याः वार्तामाकर्ण्य तु एतत् प्रतीतमभवत् यत् एतादृशेनः विराटव्यक्तित्वेन् संपन्नायै प्रतिभायै एकस्तु किं शतशत संघपतयोऽपि यदि आतुराः भवन्ति तु अस्मिन्न कापि आश्चर्यस्य वार्ता।

प्रभोः ऋषभदेवस्य प्रथमं मुखावलोकनपूर्वकं प्रारभत् प्रयागयात्रायै मंगलविहारः–**श्री भूपालकविना विरचिते** ''जिनचतुर्विंशतिका स्तोत्रे'' **अत्यन्तमेव सुन्दरं सजीवं च वर्णनमस्ति–**

श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमा–क्रीडानिधानं महत्।
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयम्।।

कर रहे थे, आकर साष्टांग माताजी के चरणों में लेट गए और बार-बार निवेदन करने लगे, उधर संघपति महावीर प्रसाद जी तो मन में यही स्वप्न संजोए बैठे थे कि यह सौभाग्य मुझे ही मिलने वाला है। इधर माताजी ने सभी का आग्रह देखकर यही कहा कि जिसका पुण्य होगा, उसे यह अवसर मिल जाएगा और आखिर पुण्य का उदय आया मेरठ निवासी श्री आनन्द जैन (जैन मार्बल होम) का, जिन्होंने प्रयाग यात्रा करवाकर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करने के साथ-साथ सातिशय पुण्य का संचय कर लिया और इस ऐतिहासिक कड़ी में अपना नाम भी अंकित करा लिया। कुछ दिनों बाद महावीर प्रसाद जी की धर्मपत्नी कुसुमलता जी आकर मुझसे बताने लगीं कि माताजी! जब इन्हें पता लगा कि इस ऐतिहासिक यात्रा का सौभाग्य किसी और को प्राप्त हो गया है, तो यह बहुत रोये। उनकी बात सुनकर यही लगा कि ऐसी विराट व्यक्तित्व की धनी ऐतिहासिक प्रतिभा के लिए अगर एक क्या सौ-सौ संघपति भी आतुर हो उठें, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

➢**प्रभु ऋषभदेव के प्रथम मुखावलोकन पूर्वक प्रारंभ हुआ प्रयाग का मंगल विहार–**

श्रीभूपाल कवि विरचित **'जिनचतुर्विंशतिका'** स्तोत्र में बड़ा ही सुन्दर एवं सजीव वर्णन आया है–

श्री लीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं,
वाग्देवीरतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्।
स स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं,
प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनाङ्घ्रिद्वयम्।।

अर्थात् यो जनः प्रतिदिनं प्रातःकाले जिनेन्द्रस्य भगवतो दर्शनं करोति, सः बहुसंपत्तिशाली भवति, पृथ्वी तस्य वशे भवति, तस्य कीर्तिः सर्वत्र प्रसरतिः, सः सर्वदा प्रसन्नास्तिष्ठति, सः अनेकविद्याः लभते, युद्धे तस्य विजयो भवति, अधिककथनेन किम्? सः सर्वोत्सवं प्राप्नोति। अयं जिनेन्द्र दर्शनस्य महत्ता प्रकटनपरः श्लोको वर्तते। यस्य तात्पर्यमिदमस्ति यत् भगवतो दर्शनमात्रेणैव महतां कार्याणां सिद्धिर्भवति।

अयमद्भुतसंयोग एवास्ति यत् प्रयागे–इलाहाबादे नवनिर्माणाधीनायां ''तीर्थंकरऋषभदेव–दीक्षास्थल्यां'' **विराजितुं प्रस्तावित भगवतः ऋषभदेवस्य चतुर्दश फुट उत्तुंगप्रतिमा जयपुरात् प्रयागाय 30 अक्तूबर 2000 दिने प्रचलिताभवत्। मातुर्विहारस्य च शुभमुहूर्तं 1 नवम्बर 2000 दिने आसीत्। 1 नवम्बरदिने 'ट्राला' दिल्लीनगर्याः गन्तुं प्रस्तावितः आसीत्। श्री रवीन्द्रकुमारस्य भ्रातुः प्रयासैः तत् वाहनं प्रीतविहारं आनीतम् माता च सर्वप्रथमं प्रभोः ऋषभदेवस्य मुखावलोकनमकरोत् धार्मिकःविधयश्च सम्पन्नाः अभवन्। अहं क्षुल्लक–मोतीसागरश्च ट्रालाभ्यन्तरं गत्वा प्रतिमायां स्वास्तिकचिह्न– मंकितमकुर्व। उल्लासपूर्णे च वातावरणे मुखावलोकनस्य कार्यक्रमः सम्पन्नोऽभवत्। तत्पश्चाच्च प्रातः 10 वादने कमलमन्दिरात् संघस्य विहारोऽभवत्। वस्तुतः प्रभोः मुखावलोकनपूर्वकं प्रारब्धः अयं विहारः स्वर्णाक्षरेषु लेखनीयो स्वर्णिम पृष्ठोऽभवत्।**

विदेशेष्वपि भगवतः ऋषभदेवस्य नामागच्छत्–**नवसहस्राब्देः प्रवेशकाले सम्पूर्णे विश्वे शान्तिं समरसतां च स्थापयितुं सम्पूर्णविश्वस्य धर्माचार्याणां** ''विश्वशान्तिशिखरसम्मेलनं''

अर्थात् जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल के समय जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करता है, वह बहुत ही सम्पत्तिशाली होता है, पृथ्वी उसके वश में रहती है, उसकी कीर्ति सब ओर फैल जाती है, वह हमेशा प्रसन्न रहता है, उसे अनेक विद्याएँ प्राप्त हो जाती हैं, युद्ध में उसकी विजय होती है, अधिक क्या कहें, उसे सब उत्सव प्राप्त होते हैं। यह जिनेन्द्र दर्शन की महत्ता को प्रकट करने वाला श्लोक है जिसका तात्पर्य है कि जिनेन्द्र भगवान के दर्शन मात्र से ही स्वयमेव बड़े-बड़े कार्यों की सिद्धि हो जाती है।

यह एक अद्भुत ऐतिहासिक संयोग ही रहा कि प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में नवनिर्माणाधीन **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली''** में विराजमान होने वाली भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग प्रतिमा जयपुर से प्रयाग के लिए 30 अक्टूबर 2000 को रवाना हो चुकी थीं और माताजी के विहार का शुभ मुहूर्त 1 नवम्बर 2000 का निकला था। 1 नवम्बर को ट्राला दिल्ली से होते हुए जाना था, तो भाई जी के प्रयासों के फलस्वरूप उसे प्रीतविहार लाया गया और पूज्य माताजी ने संघ सहित प्रभु ऋषभदेव का प्रथम मुखावलोकन कर कुछ धार्मिक विधि सम्पन्न कराई। मैंने एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी ने ट्राले के अन्दर जाकर प्रतिमा पर स्वस्तिक आदि बनाया। बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मुखावलोकन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् प्रातः 10 बजे कमल मंदिर से संघ सहित मंगल विहार हुआ और वास्तव में प्रभु के मुखावलोकनपूर्वक प्रारंभ हुआ यह विहार स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

➢विदेशों में भी भगवान ऋषभदेव का नाम पहुँचाया–

नई सहस्राब्दि के प्रवेश पर सम्पूर्ण विश्व में शांति एवं समरसता स्थापित करने हेतु विश्वभर

संयुक्तराष्ट्रस्य तत्त्वावधाने न्यूयार्क अमेरिकायां दिनांकात् 28.8.2000 दिनात् 31.8.2000 दिन पर्यन्तमायोजितमभवत्।

तस्मिन् शिखरसम्मेलनेऽहं ससम्मानं पत्रेण निमंत्रिताऽभवम् परन्तु साध्वीचर्यायाः आबद्धताकारणेन ममास्मिन् सम्मेलने भागं गृहीतुं सम्भवं नासीत् अतः मातुराज्ञानुसारेण ब्रह्मचारिणं रवीन्द्रकुमारस्य तत्र प्रेषयितुं निर्णयोऽभवत्। सम्पूर्णभारतस्य शताधिकधर्माचार्यैः सहैव दिगम्बरजैनसमाजस्य धर्माचार्यरूपेण रवीन्द्र कुमारस्यास्मिन् शिखर सम्मेलने भागग्रहणं न केवलं गौरवस्य हर्षस्य च विषयः आसीत् परन्तु अनादिनिधनस्य शाश्वतस्य जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः अस्य च सार्वभौमिकसिद्धान्तानां उपयोगितां अन्तर्राष्ट्रीयस्तरे स्थापयितुं मूलस्य प्रस्तरः इवासिद्धयत्। अस्मिन् शिखरसम्मेलने अस्यैव प्रयागस्य ऋषभदेवस्य चित्रेण सह जैनधर्मस्य भगवतः ऋषभदेवस्य परिचयः प्रयागे च प्रस्तावितायाः पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठायाः अंग्रेजी परिचयपत्रस्य माध्यमेन विदेशेषु भगवतः ऋषभदेवस्य परिचयः प्रयागे च प्रस्तावितायाः पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठायाः अंग्रेजी–परिचयपत्रस्य माध्यमेन विदेशेषु भगवतः ऋषभदेवस्य महत्ता प्रकाशिताऽभवत् अनेक धर्माचार्यैः सह च विश्वस्य प्रतिकोणं सम्मेलने समागताः अतिथयः विदेशिनश्च जैनधर्मस्य साररूपेण ज्ञानं प्राप्नुवन्।

प्रीतविहारस्य चेतनलालस्यापि पुण्यं जागृतमभवत्–**आचार्यपद्मनन्दिरचितायां** ''पद्मनन्दि–पंचविंशतिकायां'' **दानस्य बहुसुन्दरविवेचनमुक्तम् यत्–**

के धर्माचार्यों का **''विश्व शांति शिखर सम्मेलन''** यूनाइटेड नेशन्स द्वारा न्यूयार्क (अमेरिका) में 28 से 31 अगस्त 2000 तक आयोजित किया गया।

उस शिखर सम्मेलन में मुझे पत्र द्वारा ससम्मान आमंत्रित किया गया था परन्तु साध्वी चर्या के नियमों की आबद्धता के कारण मेरा इसमें भाग लेना संभव नहीं था अतः पूज्य माताजी की आज्ञानुसार कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को भेजने का निर्णय लिया गया। सम्पूर्ण भारतवर्ष से निमंत्रित सौ से अधिक संप्रदाय के धर्माचार्यों के साथ ही दिगम्बर जैन समाज के धर्माचार्य के रूप में ब्र.रवीन्द्र जी का इस शिखर सम्मेलन में भाग लेना मात्र गौरव एवं हर्ष का ही विषय नहीं था, वरन् अनादि निधन शाश्वत जैनधर्म की प्राचीनता एवं इसके सार्वभौम सिद्धान्तों की विश्वभर के लिए उपयोगिता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में यह नींव का पत्थर सिद्ध हुआ। इस शिखर सम्मेलन में इन्हीं प्रयाग के भगवान ऋषभदेव के चित्र सहित जैनधर्म एवं भगवान ऋषभदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं प्रयाग में होने वाली पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के English Folder के माध्यम से विदेशों तक भगवान ऋषभदेव की धूम मच गई और अनेकों धर्माचार्यों के साथ-साथ विश्व के कोने-कोने से सम्मेलन में पधारे अतिथियों एवं विदेशियों ने जैनधर्म का साररूप ज्ञान प्राप्त किया।

➢प्रीतविहार निवासी चेतनलाल जी का भी पुण्य जागृत हो उठा–

आचार्य पद्मनंदि रचित **''पद्मनंदिपंचविंशतिका''** नामक ग्रंथ में दान का बड़ा ही सुन्दर वर्णन आया है कि–

आयास कोटिभिरुपार्जितमंगजेभ्यो, यज्जीवितादपि निजाद्दयितं जनानाम्।
वित्तस्य तस्य सुगतिः खलु दानमेक–मन्या विपत्तय इति प्रवदन्ति सन्तः।।

अर्थात् नानाविधैः दुःखैर्यद् धनमुपार्जितं यच्च पुत्रेभ्यः स्व जीवनादपि प्रियमस्ति, तस्य धनस्य यदि सुगतिरस्ति, सा केवलं दानमेवास्ति। तद् धनं दानैन सफलं भवति, किन्तु दानाद् अतिरिक्तं धनं विपत्तेरेव कारणमस्ति, एतत् सज्जनाः पुरुषाः वदन्ति अतः भव्यजीवाः स्वोपार्जितं धनं दाने एव व्ययं कुर्युः।

अस्य श्लोकस्य तात्पर्यमिदमस्ति यत् अस्मभ्यं पुण्ययोगात् चंचल लक्ष्म्याः प्राप्तिरभूत्, तस्याः वयं उत्तमपात्रस्य दाने उपयोगं कृत्वा आगामि पुण्यस्य विधानं कुर्याम यतोऽस्मभ्यं धनस्य प्राप्तिरपि पूर्वोपार्जितेन पुण्येनैव समभवत्। तथैव पुण्यबन्धस्य सुअवसरो दिल्लीप्रीतविहारस्य निवासी श्री चेतनलालो जैन प्राप्नोत्। यतो मातुः ससंघः कमलमन्दिरात् विहारो भूत्वा रात्रि विश्रामः श्री चेतनलालस्य विशेषाग्रहेण तस्य निर्माण्यामभवत् पुनोऽग्रिम दिने प्रातःकालीनसभायां अल्पेनैव सम्बोधनेन तस्य पत्नी सुलोचना प्रयागतीर्थे निर्माणाय प्रस्तावितस्य कैलासपर्वतस्य तत्र च विराजमानाय प्रस्तावितानां द्वासप्तति जिनप्रतिमानां निर्माणस्य स्वीकृतिमदात् स्व चंचललक्ष्म्याश्च सदुपयोगं कुर्वन्ती सातिशयस्य पुण्यस्य बंधं चकार। यतः शास्त्रेषु कथितम्–

ये धान्यतुल्यं जिनमंदिरं निर्माप्य तस्मिन् सर्षपतुल्याः जिनप्रतिमाः विराजमानाः कुर्वन्ति,

---

आयासकोटिभिरुपार्जितमङ्गजेभ्यो यज्जीवितादपि निजाद्दयितं जनानाम्।
वित्तस्य तस्य सुगतिः खलु दानमेक-मन्या विपत्तय इति प्रवदन्ति सन्तः।।

(पृष्ठ 95, श्लोक 7)

अर्थात् नाना प्रकार के दुःखों से जो धन पैदा किया गया है तथा जो पुत्रों से व अपने जीवन से भी अधिक प्यारा है, उस धन की यदि अच्छी गति है, तो केवल दान ही है। अर्थात् वह धन केवल दान से ही सफल होता है किन्तु दान के अतिरिक्त दिया हुआ धन विपत्ति का कारण है, ऐसा सज्जन पुरुष कहते हैं इसलिए भव्यजीवों को अपना कमाया हुआ धन दान में ही खर्च करना चाहिए।

इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि हमें पुण्य योग से चंचला लक्ष्मी की प्राप्ति हुई है, उसका उपयोग हमें उत्तम पात्र के दान में करके आगामी पुण्य का बंध कर लेना चाहिए क्योंकि हमें ज्ञान की प्राप्ति भी पूर्वोपार्जित पुण्य के उदय से हुई है। ऐसा ही पुण्यबंध का सुअवसर दिल्ली-प्रीतविहार निवासी लाला श्री चेतनलाल जी को प्राप्त हुआ। हुआ यूँ कि पूज्य माताजी का ससंघ कमल मंदिर से विहार होकर रात्रि विश्राम चेतनलाल जी के अतीव आग्रह पर उनकी फैक्ट्री पर हुआ पुनः अगले दिन प्रातःकालीन सभा में उन्हें मात्र थोड़ा सा सम्बोधन प्राप्त होते ही उनकी पत्नी श्रीमती सुलोचना जी ने प्रयाग तीर्थ पर निर्मित होने वाले कैलाशपर्वत एवं उसमें विराजमान होने वाली 72 प्रतिमाओं के निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करते हुए सातिशय पुण्य का बंध कर लिया क्योंकि शास्त्रों में कहा है–

जो धनिया के बराबर जिनमंदिर बनाकर उसमें सरसों बराबर जिनबिंब विराजमान करते हैं,

तेषां अनन्त पुण्यस्य कल्पनां कर्तुं न शक्यते पुनः ये उत्तुंगस्य जिनभवनस्य निर्माणं कारयित्वा जिनबिम्बस्य स्थापनां कुर्वन्ति, तस्य प्राणप्रतिष्ठां कारयन्ति, तेषामपूर्वपुण्यस्य वर्णनं कर्तुं साक्षात् शारदामातापि न शक्नोति।

दादरीग्रामे विराजमानाभवत् भगवतः पार्श्वनाथस्य प्रतिमा–**संघस्य विहारः प्रयागं प्रति प्रवर्तितः आसीत्। 4 नवम्बर 2000 दिने मातुः 'चिटहरा' ग्रामे स्थितिरासीत्, चिटहराग्रामात् 2 किलोमीटर दूरे दादरी नामके लघुग्रामे केचित् जैनश्रावकाः वसन्ति तत्र किमपि जैनमन्दिर नासीत्।**''श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथमन्दिरस्य'' **नाम्ना मन्दिरस्य निर्माणकार्यं प्रगतिशीलमासीत्, तेषां जैनानामल्पेनैवाग्रहेण माताश्रीः तत्र स्थित्वा सर्वेभ्यः स्वमंगल आशीर्वादं प्रादात् स्वहस्तेन च सरस्वत्याः–लक्ष्म्याः प्रतिमे विराजमाने अकरोत् अग्रिम दिने च संघस्थब्रह्मचारिणीं भगिनीं प्रेषयित्वा भगवतः पार्श्वनाथस्य प्रतिमामपि विराजमानां कर्तुमादिशत्।**

एकघण्टा समयस्य अल्पप्रवासस्य अचलप्रभावस्य ज्ञानं तेषां वार्ताभिरभवत्, यदा अस्मान् किञ्चिद् दूरमागतैः श्रावकैः कथितं यत् मातः! अद्य वयं यां प्रसन्नतामनुभवामः, तस्याः वर्णनं शब्दैः कर्तुं न शक्यते। अस्माकं मनस्सु साधून् प्रति भ्रान्तधारणाभवत्। अत्र कश्चिद् कालपूर्वमेकः साधुरागच्छत् आगत्य च प्रकोष्ठस्य द्वारं बद्धमकरोत् पुनः किंचिन्नोक्त्वा प्रस्थानमकरोत्, तत्पश्चात् अन्यः एकः साधुरागच्छत्, वयं तं प्रवचनाय न्यवेदयाम, तदासौ अकथयत् यदहं 10–20 जनानां मध्ये प्रवचनं न करोमि, यदि 500 जनाः उपस्थिताः

उनके अनंत पुण्य की कल्पना नहीं की जा सकती है, फिर जो उत्तुंग जिनभवन का निर्माण कराकर जिनबिंब स्थापना कर उनकी प्राणप्रतिष्ठा कराते हैं, उनके अपूर्व पुण्य का वर्णन करने में तो साक्षात् शारदा माता भी सक्षम नहीं हैं।

➢दादरी में विराजमान हुईं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा–

संघ का विहार प्रयाग की ओर चल रहा था। 4 नवम्बर 2000 को माताजी को चिटहरा ग्राम में रुकना था, चिटहरा से 2 किमी. दूर दादरी नाम के छोटे से गांव में कुछ जैन श्रावक रहते थे किन्तु वहाँ कोई मंदिर नहीं था, **'श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर'** के नाम से मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा था, उन जैन श्रावकों के थोड़े से आग्रहमात्र से माताजी ने वहाँ रुककर सभी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया तथा अपने हाथ से सरस्वती-लक्ष्मी की प्रतिमा विराजमान की पुनः अगले दिन संघस्थ ब्र. बहन को भेजकर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा भी विराजमान करने को कहा।

एक घंटे के उस अल्प प्रवास की अमिट छाप का पता उनकी बातों से चला, जब हमें कुछ दूर तक छोड़ने आए वहाँ के श्रावकों ने बताया कि माताजी! आज हमें जितनी प्रसन्नता हुई है, उसका वर्णन हम शब्दों में नहीं कर सकते हैं। हम लोगों के मन में साधुओं के प्रति गलतफहमी बैठ गई थी, दरअसल यहाँ कुछ समय पूर्व एक साधु आए और आते ही कमरा बंद कर लिया पुनः बिना कुछ कहे ही चले गए, उसके पश्चात् एक साधु और आए, हमने उनसे प्रवचन के लिए निवेदन किया तो वे कहने लगे कि मैं 10-20 लोगों में प्रवचन नहीं करता हूँ, 500 लोग हों, तभी

सन्ति, तदैव प्रवचनं करोमि। सः च सम्बोधनेन विनैवागच्छत्, अद्य च वयं यदा ज्ञानमतीं मातरमकथयाम, सा तत्कालमागत्य प्रवचनं प्रारभत्, तया वयं अत्यधिकं प्रसन्नाः स्मः। तदाहमकथयं–भ्रातः! अस्माकं साधवः किमर्थं दीक्षामधारयन्? परोपकाराय, स्वपरकल्याणाय, ख्यातिलाभाय, पूजायैव न दीक्षिताः। यदि अस्माकं प्रवचनस्य श्रोतारः 10 जनाः अपि विद्यन्ते, तेन किम्? तेभ्यः एकोऽपि यदि सम्यक्वार्तामगृहणात्तु अस्माकं प्रवचनं सार्थकं विद्यते। वयं तु किम्? अस्माकं महती माता अपि लघुग्रामनगरेषु अजैनानपि दिने प्रायः 1–2 बारं प्रवचनस्य माध्यमेन सम्बोधनं प्रदाय तान् अहिंसक सदाचारमयजीवनं जीवितुं प्रेरणाः प्रददाति। इति श्रुत्वा ते चकिताः आसन् मातुश्च सरलतायाः अग्रे नतमस्तकाः अभवन्।

विश्वहिन्दूपरिषदः राष्ट्रीयकार्याध्यक्ष मातुर्दर्शनार्थं लघुग्रामे आगच्छत्–**दादरी ग्रामादग्रे वयं चिटहराग्रामस्य विद्यालयेऽतिष्ठाम। तत्र वयं सूचिताः यत् विश्वहिन्दूपरिषदः राष्ट्रीयकार्याध्यक्षोऽशोकसिंहलमहोदयो मातुर्दशनार्थमत्रागच्छति। लघुग्रामस्य जीर्णशीर्ण द्वयोः प्रकोष्ठयोः भगिन्यः यथा–तथा व्यवस्थामकुर्वन्। प्रायः दशवादने सिंघलमहोदयः आगच्छत्, 11 वादनपर्यन्तं च मात्रा सह बहुरुचिपूर्वकं वार्तामकरोत् प्रयागस्य च महाकुम्भमेलापके नवमधर्मसंसदः मंचमागत्य जैनधर्मस्य प्रतिनिधित्वं कर्तुमाग्रहमकरोत्। तस्मिन् काले तस्य मुखमुद्रया प्रतिभासिता प्रसन्नता इदं स्पष्टमकरोत् यत् राजकीय प्रतिष्ठायां वसन् सिंघलः लघुनगरे गुरुदर्शनं कृत्वा अपरिमितां प्रसन्नतामन्वभवत्।**

प्रवचन करता हूँ और वे बिना कुछ सम्बोधन दिए ही चले गए और आज जब हम लोगों ने ज्ञानमती माताजी से कहा तो वे तुरंत आकर प्रवचन करने लगीं, इससे हमें बेहद खुशी हुई है। तब मैंने कहा– भइया! अपन साधु काहे के लिए बने हैं? परोपकार के लिए, स्व-पर कल्याण के लिए न कि ख्याति, लाभ, पूजा के लिए और अगर हमारे प्रवचन सुनने वाले 10 भी लोग हों तो क्या, उनमें से एक ने भी अच्छी बात ग्रहण कर ली, तो हमारा प्रवचन करना सार्थक हो गया। हम क्या, हमारी बड़ी माताजी भी छोटे-छोटे गाँव-कस्बों में अजैन श्रावकों तक को प्रायः दिन में 1-2 बार प्रवचन के माध्यम से सम्बोधन प्रदान कर उन्हें अहिंसक एवं सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। यह सुनकर वे दंग रह गए और माताजी की सरलता के आगे नतमस्तक हो उठे।

➢विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष माताजी के दर्शन के लिए छोटे से गाँव में आ गए–

दादरी से आगे हम लोग चिटहरा के प्राइमरी स्कूल में ठहरे थे, वहाँ हमें सूचना मिली कि विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष अशोक सिंघल जी पूज्य माताजी के दर्शन करने के लिए यहाँ पधार रहे हैं, छोटे से गाँव के टूटे-फूटे स्कूल के मात्र 2 कमरों में जैसे-तैसे बहनों ने व्यवस्था की थी। करीब 10 बजे सिंघल जी आए और 11 बजे तक माताजी से बहुत ही रुचिपूर्वक वार्ता की और प्रयाग के महाकुंभ मेले में नवम धर्मसंसद के मंच पर पधारकर जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करने का आग्रह किया। उस समय उनकी मुखमुद्रा से झलकती प्रसन्नता यह स्पष्ट बता रही थी कि राजसी ठाठ से रहने वाले सिंघल जी को उस छोटे से कस्बे में गुरु दर्शन कर अपरिमित प्रसन्नता हुई।

विहारेण सह लेखनी अपि प्रगतिशीलासीत्–**त्यागस्य वैराग्यस्य च मूर्तिः पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता स्व नश्वर शरीरं किञ्चिन्न गणयन्ती सदैव धर्मप्रभावनायां, संस्कृतिसुरक्षाय धर्मधर्मायतनानां सुरक्षायै जिनवाण्याश्च सेवायामहर्निशं समर्पितमकरोत्, तदैवाद्य तस्याः लेखन्या द्विशताधिका ग्रन्थाः निर्गताः भूत्वा प्रतिजने ज्ञानस्य, भक्तेः, अध्यात्मस्य नवचेतनायाश्च संचारं कुर्वन्ति। अस्याः विराट् व्यक्तित्वस्य मूल्यांकनं मात्र शब्देषु वर्णनं कर्तुं केवलं कठिनं नास्ति, किन्तु असंभवमेव विद्यते। डॉक्टर कस्तूरचन्द कासलीवालो जयपुरस्तु तस्याः परिचयं ददत् अकथयत्–**

''ज्ञानमती माता तव इदमेवाभिज्ञानं। एकस्मिन् हस्ते पिच्छिका द्वितीये च जिनवाणी।''

स्यात्तीर्थं, मन्दिरं, वनं वा नगरं एकान्तस्थानमस्तु वा विशालो जनसमूह, मातुः लेखनी धाराप्रवाहेन संस्कृत भाषायां सततं चलायमाना तिष्ठति। यदि साधारण जनः एकं पत्रमपि लिखितुमिच्छति, तु 10 बारं चिन्तयति किन्तु माताश्रीस्तु मुखे लेखन्यां च सर्वदा सरस्वती वासं करोति। भवान् कदापि तया लिखितं पृष्ठं पुस्तकं च पश्यतु, कुत्रापि काचिद् अशुद्धिः प्राप्तुं न शक्यते। प्रयागयात्रायाः मध्ये द्वयो, समययोः विहारः संचालितः आसीत्, किन्तु माताश्रीः तदा समयं प्राप्य, लिखितुं प्रवृत्ता आसीत्। यतो हि भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मकल्याणकः समीपे आसीत् मातुश्च भावना अस्मिन् वर्षे भगवतो महावीरस्य

➢विहार के साथ-साथ लेखनी भी चल रही थी–

त्याग और वैराग्य की जीवन्त मूर्ति पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने इस नश्वर शरीर को कुछ न गिनते हुए सदैव धर्मप्रभावना, संस्कृति सुरक्षा, धर्म-धर्मायतनों की रक्षा और जिनवाणी माँ की सेवा में अहर्निश अपने जीवन को समर्पित किया है, तभी आज इनकी सर्वदा प्रवाहमान लेखनी से 200 से अधिक ग्रंथ निःसृत होकर जन-जन में ज्ञान, भक्ति, अध्यात्म व नूतन चेतना का संचार कर रहे हैं। इनके विराट व्यक्तित्व का मूल्यांकन चंद शब्दों में कर पाना कठिन ही नहीं, असंभव सा प्रतीत होता है, डॉ. कस्तूरचंद जैन कासलीवाल-जयपुर ने तो इनकी पहचान बताते हुए कहा है–

ज्ञानमती माताजी तेरी यही निशानी,
एक हाथ में पिच्छी, दूजे में जिनवाणी।।

चाहे तीरथ हो या मंदिर, जंगल हो या शहर, एकान्त स्थान हो या विशाल जनसभा, माताजी की लेखनी धाराप्रवाह संस्कृत भाषा में चलती रहती है। अगर आम आदमी को एक छोटा सा पत्र भी लिखना हो, तो 10 बार सोचता है किन्तु माताजी के मुख में व लेखनी में तो साक्षात् सरस्वती विराजमान हैं, आप कभी भी उनका लिखा कोई भी पेज उठाकर देख लें, कहीं कोई काट-पीट, कोई अशुद्धि नहीं मिल सकती। प्रयाग यात्रा के मध्य दोनों समय विहार चल रहा था, फिर भी माताजी को जैसे ही समय मिलता, वह अपना लेखन कार्य प्रारंभ कर देती थीं। चूँकि भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव नजदीक आ रहा था और माताजी की भावना इस वर्ष में प्रभु

चरणयोः कामपि स्व नवीनां कृतिं समर्पयितुमासीत्, अतः सा भगवतो महावीरस्य 2526 तमस्य निर्वाणदिवसस्य समापने 2627 तमस्य वर्षस्य प्रारम्भे कार्तिककृष्ण एकम्तिथौ मंगलाचरणपूर्वकं तस्य प्रारम्भीकरणमकरोत् तदेव च गतिप्रदानहेतवे सा विश्वशान्तिमहावीरविधानाय 2600 मंत्रान् रचयितुं प्रवृत्ता आसीत्।

ऐतिहासिकस्य जैनस्वर्णमन्दिरस्य दर्शनमकुर्म–**नव नवम्बर दिने वयं खुर्जा (बुलन्दशहर) नगरे आगच्छाम। अत्र द्वे दिगम्बरजैनमन्दिरे स्तः। मध्याह्ने वयं संघेन सह द्वयोर्मन्दिरयोर्दर्शनार्थमगच्छाम। वृहन्मन्दिरं द्विशतवर्ष प्राचीनमस्ति, अस्मिन् मंदिरे कुन्दनकार्यमपि बहुमूल्यमस्ति। इदं तु भारतवर्षस्यैकप्राचीनबहुमूल्यन्यासरूपेणोत्तर प्रदेशस्य जैनसमाजस्य गौरवमस्ति। अत्र स्वर्णस्य पर्याप्तविशालो रथो विद्यते, काष्ठस्य च ऐरावतगजोऽस्ति, विशाले शास्त्रभाण्डारे हस्तलिखिताः ताडपत्रीयग्रन्थाः विद्यन्ते। एतेषु ग्रन्थेषु वयमेकं स्वर्णाक्षरेषु लिखितं तत्त्वार्थसूत्रग्रन्थमपश्याम मणीनां स्वर्णस्य च वर्णानां चित्राण्यपश्याम। तत्पश्चात् लघुमन्दिरस्य दर्शनमकुर्म। तत्रापि सम्पूर्णे मन्दिरे कुन्दनस्य कार्यमस्ति। प्राचीनन्यासस्य जिनसंस्कृतेर्वैभवस्य च लघूमादर्शं वीक्ष्य मनः गद्गदमभवत्। तदा ताम्रपत्राणि पश्यन्ती माताऽवदत् यत्–चन्दनामति! तानि दृष्ट्वा अहं आचार्यं शान्तिसागरं स्मरामि, यः निरन्तरं परिश्रमेण ताम्रपत्रेषु धवलाग्रन्थमुत्कीर्णमकारयत्। वर्तमाने तु एतत्सर्वमस्मभ्यं प्राचीनन्यास–रूपेण विद्यते, येषां सुरक्षा विधानं प्रत्येकजैनस्य कर्तव्यमस्ति। वयमेतद् वीक्ष्य सहजतयानुमानं**

महावीर के चरणों में अपनी कोई कृति समर्पित करने की थी अतः उन्होंने भगवान महावीर के 2526वें निर्वाण दिवस के समापन एवं 2527वें वर्ष के प्रारंभ में कार्तिक कृष्णा एकम की तिथि में मंगलाचरणपूर्वक उसका प्रारंभीकरण कर दिया था और उसी को गति प्रदान करने हेतु वे विश्वशांति महावीर विधान के लिए 2600 मंत्र बना रही थीं।

➢**ऐतिहासिक जैन स्वर्ण मंदिर के दर्शन किए–**

9 नवम्बर को हम लोग खुर्जा (बुलंदशहर) पहुँचे। यहाँ 2 दिगम्बर जैन मंदिर हैं। मध्यान्ह में संघ सहित दोनों मंदिरों के दर्शन करने गए। बड़ा मंदिर 200 वर्ष पुराना है, यहाँ पूरे मंदिर में कुन्दन का काम है। यह मंदिर भारतवर्ष की एक प्राचीन बहुमूल्य धरोहर के रूप में उत्तरप्रदेश की जैन समाज का गौरव है। यहाँ सोने का काफी बड़ा रथ है, लकड़ी का ऐरावत हाथी है, विशाल शास्त्र भण्डार में हस्तलिखित ताड़पत्र के ग्रंथ हैं। इन शास्त्रों में एक स्वर्णाक्षरों में लिखित तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथ देखा तथा मणि एवं स्वर्ण के सुन्दर रंगीन चित्र देखे। उसके पश्चात् छोटे मंदिर के दर्शन किए। वहाँ भी कुन्दन का काम पूरे मंदिर में है। प्राचीन धरोहर एवं जिनसंस्कृति के वैभव का छोटा सा नमूना देखकर मन गद्गद हो उठा। उस समय ताम्रपत्रों को देखते हुए माताजी ने बताया कि– ''चंदनामती! इन्हें देखकर मुझे आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की स्मृति हो आई, जिन्होंने अथक परिश्रमपूर्वक ताम्रपत्रों पर धवला ग्रंथ को उत्कीर्ण कराया था। वर्तमान में यह सब हमारे लिए प्राचीन धरोहर के रूप में हैं, जिनकी सुरक्षा करना प्रत्येक जैन श्रावक का कर्त्तव्य है।

कुर्मो यत् अस्मात् दिनात् 100 वर्षाणि पूर्व अस्माकं जिनसंस्कृतेः वैभवं कीदृक् वृहत् आसीत् किन्तु कालदोषवशात् पर्याप्तं लुप्तप्रायः विद्यते। अधुनाऽस्माकं पुरतो यः पूर्वाचार्याणां न्यासोऽस्ति, आचार्योऽकथयत् ''सः अस्माभिः स्व– सर्वस्वस्य बलिदानं कृत्वा रक्षणीयोऽस्ति।'' खुर्जानगरस्यैकदिनस्य प्रवासः आसीत् यतः खुर्जानगरस्य 'खुरचन' अति प्रसिद्धं विद्यते, अस्माभिः सह चलन् दिल्ली निवासी श्री पुष्पेन्द्रोऽकथयत् यत् मातः! वयं त्वत्र खुरचन मिष्टान्न अखादाम, कार्यकर्तृभ्य अपि आदाय, गृहाय च बद्धवां नयामः, श्रुत्वा वयमहसाम यत् श्रावकेभ्यः एतत् सर्वं रोचते वयं च धर्मस्य खुरचनं–सारं गृहीत्वा प्रसन्नाः स्मः।

अलीगढ़े मस्तकाभिषेकस्य प्रेरणां प्रादात्–**मातुरियं भावनास्ति यत् वयं शासनपतेर्महावीरस्य शासनकाले निराबाधरूपेण स्वचर्यां पालयामः, तस्य 2600 तमो जन्मकल्याणकमहोत्सवः राष्ट्रीयस्तरेण समायोजितो भवेत्, 2500 तमस्य निर्वाणोत्सवः इव प्रत्येक प्रतोल्यां हट्टे च भगवतो महावीरस्य नाम गुंजायमानं भवेत् अतः सा प्रतिस्थानं सर्वेभ्यः इदं महोत्सववर्ष विभिन्न कार्यक्रमैः सह समायोजयितुं प्रेरणामदात्। 14 नवम्बर दिने माताश्रीः अलीगढ़स्य छिपैटी स्थाने स्थितस्य मन्दिरस्य दर्शनार्थमगच्छत्, तत्र च मन्दिरे भगवतो महावीरस्य 8–9 फुट उत्तुंगां पद्मासनप्रतिमां वीक्ष्य सा तत्र जनान् महावीरजयन्ती अवसरे सहस्राष्ट कलशैः भगवतो महावीरस्य मस्तकाभिषेकस्य प्रेरणामदात्, तां सर्वे प्रसन्नतापूर्वकं**

हम इसे देखकर सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि आज से कुल 100 वर्ष पूर्व हमारी जिनसंस्कृति का वैभव कितना वृहत् रहा होगा किन्तु कालदोषवश काफी कुछ लुप्तप्राय हो गया और अब हमारे पास जो पूर्वाचार्यों की धरोहर है, आचार्य महाराज कहते थे कि ''हमें अपना सर्वस्व न्योछावर कर उसे बचाना चाहिए।'' खुर्जा में एक दिन का प्रवास था चूँकि खुर्जा की खुरचन बड़ी मशहूर है, हमारे साथ चल रहे दिल्ली निवासी पुष्पेन्द्र जी कहने लगे कि माताजी! हमने तो यहाँ की खुरचन खाई भी, स्टॉफ वालों को खिलाया भी और घर के लिए भी बांधकर ले जा रहे हैं। सुनकर हँसी भी आई कि श्रावकों को इन सब चीजों में ही विशेष आनन्द आता है और हम लोग धर्म की खुरचन का स्वाद लेने में खुश होते हैं।

➢अलीगढ़ में मस्तकाभिषेक की प्रेरणा प्रदान की–

माताजी की यह भावना थी कि जिन शासनपति भगवान महावीर के शासनकाल में हम लोग निराबाधरूप से अपनी चर्या का परिपालन कर रहे हैं, उनके 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाए और 2500वें निर्वाण महोत्सव की तरह हर गली-कूचे में भगवान महावीर की अनुगूंज फैल जाए अतः वह स्थान-स्थान पर सभी को इस महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा प्रदान कर रही थीं। 14 नवम्बर को माताजी अलीगढ़ के छिपैटी मंदिर के दर्शनार्थ गईं, वहाँ मंदिर जी में भगवान महावीर की 8-9 फुट की पद्मासन प्रतिमा देखकर उन्होंने वहाँ के लोगों को महावीर जयंती पर 1008 कलशों से भगवान महावीर के

स्वीकृतमकुर्वन् मातुश्च दूरदृष्टिं प्राशंसन्।

एटानगरस्येतिहासे त्रिवेणीसंगमस्य अद्भुतशृंखलायोजिता अभवत्–**एटानगरे पूज्यो मुनिः अमितसागरः गणिनी माता विशुद्धमती च प्रागेव विराजमानौ अभवताम्, आर्यिकायाः श्री विशुद्धमत्याः संघस्थाः भगिन्यः 2–3 दिनेभ्यो निरन्तरं पूज्यायाः ज्ञानमत्याः मातुर्दर्शनार्थं–मागच्छन् यतः एताः अधुनापर्यन्तं मातरं नापश्यन् अतो मिलनस्योत्कंठयैव द्वौ संघौ विराजमानौ आस्ताम्। 19 दिसम्बर 2000 दिने पूज्यमातुः पदार्पणं संघ सहितं शोभायात्रापूर्वकं एटा नगरेऽभवत्। एताभ्यां द्वाभ्यां संघाभ्यां सह मातु संघस्य मिलनं सत्यमेव तस्य स्थानस्येतिहासे त्रिवेणी संगमस्य शृंखलामयोजयत्। त्रयाणां संघानां पारस्परिकमिलनेन वात्सल्येन च सम्पूर्णसमाजः भावमुग्धः अभवत् मातुश्चरणयोः बारम्बारं एटा चतुर्मासार्थं न्यवेदयत्। प्रवेशस्यास्यां धर्मसभायामत्युत्साही मुनिरमितसागरः मातरं प्रति सुन्दरशब्देषु अकथयत् यत् अद्य मां ज्ञानमत्यां मातरि नार्यः त्रिरूपाणि–(सरस्वती–लक्ष्मी–दुर्गाणां) दृश्यन्ते, पुनः सः तस्य रोचकं विश्लेषणमकरोत्।**

द्विदिवसीयेऽस्मिन् प्रवासे त्रयाणामेव संघानां परस्परं अनेकसैद्धान्तिकचर्चाः अभवन्, पुनः 21 नवम्बर दिने यदा वयं एटा नगरात् प्रस्थानं कर्तुमुद्यताः अभवाम, तु गणिनी विशुद्धमती किंचिद्दूरं मोक्तुमागच्छत् मुनेरमितसागरस्य संघस्था साधवोऽकथयन् मातः!

महामस्तकाभिषेक का आयोजन करने की प्रेरणा प्रदान की, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया और माताजी की दूरदृष्टि की प्रशंसा की।

➢एटा के इतिहास में त्रिवेणी संगम की अद्भुत कड़ी जुड़ गई–

एटा शहर में पूज्य मुनि श्री अमितसागर महाराज एवं गणिनी श्री विशुद्धमती माताजी पूर्व से ही विराजमान थीं, आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी की संघस्थ बहनें 2-3 दिन से बराबर पूज्य माताजी के दर्शन हेतु आ रही थीं चूँकि इन लोगों ने अभी तक माताजी को देखा नहीं था अतः मिलने की उत्कंठा से ही दोनों संघ विराजमान थे। 19 नवम्बर 2000 को प्रातः पूज्य माताजी का संघ सहित मंगल पदार्पण भव्य शोभायात्रापूर्वक एटा शहर में हुआ। इन दोनों संघों के साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ का मिलन सचमुच वहाँ के इतिहास में त्रिवेणी संगम की कड़ी को जोड़ गया। तीनों संघों के पारस्परिक मिलन व वात्सल्य से सारा समाज भावविभोर हो गया तथा पूज्य माताजी के श्रीचरणों में एटा चातुर्मास हेतु बारम्बार निवेदन करने लगा। प्रवेश की इस धर्मसभा में अति उत्साही मुनि श्री अमितसागर महाराज ने माताजी के प्रति बड़े ही सुन्दर शब्दों में कहा कि आज ज्ञानमती माताजी में मुझे नारी के तीन रूप (सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा) दिख रहे हैं, पुनः उन्होंने इसका रोचक विश्लेषण किया।

दो दिवसीय इस प्रवास के मध्य तीनों संघों की आपस में अनेक सैद्धान्तिक चर्चाएं हुईं पुनः 21 नवम्बर को हम जब एटा से निकलने लगे, तो गणिनी विशुद्धमती माताजी थोड़ी दूर तक भेजने आईं और मुनि श्री अमितसागर महाराज के संघस्थ साधुओं ने माताजी से कहा कि-माताजी! ऐसा

ईदृशमाशीर्वाद देहि यत् भवत्याः भ्रातृव्योऽमितसागरः प्रचुरधर्मप्रभावनां कुर्यात् वयं च तस्य पुत्राः भूत्वा पर्याप्त धर्म साधनां कुर्याम। श्रुत्वा मनसि अति आह्लादोऽभवत् पुनः वयं एटा नगरात् कुरावली नगरं प्रति विहाराय प्रस्थिताः। वस्तुतः मुनिरमितसागर आचार्यधर्मसागरस्य शिष्योऽस्ति, आचार्यधर्मसागरः पूज्यमाताश्रीः द्वौ एव एकस्यैव गुरोः वीरसागरस्य शिष्यौ स्तः अतएव स्वपितुर्धर्मसागर आचार्यस्य गुरोः भगिनीरूपेण मुनिरमितसागरः उपहासे एतां पितुर्भगिनी कथयित्वा स्वात्मानं तस्याः पितृव्योऽकथयत्। तस्याशयस्तु तस्य मातरं प्रति गुणग्राहकतैवासीत्।

दिगम्बर जैनचतुर्विधसंघस्य सम्मेलनं भगवतः ऋषभदेवस्य संगोष्ठ्याश्च आयोजनमभवत्–

साधु साध्व्यश्चलन्तस्तीर्थाः एव मताः। प्रवाहमाना धारा इव ते एकस्मात् स्थानात् द्वितीयं स्थानं गच्छन्तो भव्यान् मोक्षमार्गमुपदिशन्ति अतएव तेषां पास्परिकं मिलनं यदा कदैव भवति यदि च भवत्यपि तदा काचिदुपलब्धिस्त्वश्यमेव भवन्ति।

एतदेव एटा नगरे त्रयाणां संघानां मिलनेनाप्यभवत्। त्रिवेणी संगमः इव तिसृणां नदीनां सम्मेलनप्रसंगे दिगम्बर जैन मुनि–आर्यिका–श्रावक–श्राविकाणां चतुर्णामेव संघानामैतिहासिक–सम्मेलनमभवत्, यस्मिन् भगवतः ऋषभदेवस्य संस्कृति साक्षात् स्वमुद्राभिः प्रकटिता मुनिवराणां आर्यिकाणां चोपकारै सम्पूर्णः समाजः परिचितोऽभवत् पुनः पुनश्चेतादृशानां संघानां मिलनस्य कामनामकरोत्।

आशीर्वाद रखना कि आपका भतीजा (अमितसागर जी) खूब धर्मप्रभावना करता रहे और हम लोग उनके बेटे बनकर धर्मसाधना करते रहें। सुनकर मन में बड़ा आल्हाद हुआ पुनः हम वहाँ से कुरावली की ओर विहार कर गए। दरअसल ये मुनि अमितसागर जी आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के शिष्य हैं और धर्मसागर जी एवं ज्ञानमती माताजी एक ही गुरु आचार्यश्री वीरसागर जी के शिष्य हैं, इसीलिए अपने पिता धर्मसागर जी की गुरु बहिन के नाते अमितसागर महाराज ने इन्हें मजाक में ही बुआ कहकर अपने को इनका भतीजा कह दिया था। इसका आशय तो मात्र उनकी माताजी के प्रति गुणग्राहकता ही था।

➢**दिगम्बर जैन चतुर्विध संघ सम्मेलन एवं भगवान ऋषभदेव संगोष्ठी का भी आयोजन हुआ–**

संत-साधु चलते फिरते तीर्थ माने जाते हैं। बहती धारा के समान ये एक स्थान से दूसरे स्थान पर पदविहार कर भव्यों को मोक्षमार्ग का उपदेश देते रहते हैं अतः उनका आपस में मिल पाना प्रायः कम ही हो पाता है और जब कभी होता है, तो कोई न कोई विशेष उपलब्धि अवश्य हो जाती है।

यही एटा शहर में तीनों संघों के मिलन पर भी हुआ। त्रिवेणी संगम के सदृश तीन महानदियों के सम्मिलन प्रसंग पर दिगम्बर जैन मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविकाओं के चतुर्विध संघ का ऐतिहासिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें भगवान ऋषभदेव की संस्कृति को साक्षात् अपनी मुद्रा द्वारा प्रदर्शित करने वाले दिगम्बर मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं के उपकारों से सम्पूर्ण समाज परिचित हुआ और पुनः-पुनः ऐसे संघों के मिलन की भावना करने लगा।

साधुसाध्व्यश्च देशस्य समाजस्य च दिशानिर्देशका भवन्ति–**अस्य सम्मेलनस्य प्रमुखा प्रेरयित्री पूज्यमाता ज्ञानमती वर्तमानयुगे एतादृशानां सम्मेलनानामुपयोगितां प्रदर्शयन्त्यकथयत्–यतः साधु–साध्व्यः एव देशस्य समाजस्य च दिशा–निर्देशकाः भवन्ति, अतएव तेऽपि स्वयमपि समये–समये परस्परं संघेनसह मिलित्वा विचाराणामादान–प्रदानं कुर्युः आगम आलोके च यतेश्चर्यायाः विश्वे विचार–विनिमयं कुर्युः।**

प्राचीन–परम्परानुसारेण इतिहासः साक्षी अस्ति यत् पूर्वमपि साधु साध्वीनां विशालानि सम्मेलनान्यभवन्। तस्मिन्नेव सम्मेलने आचार्य श्री धरसेनस्वामी द्वौ योग्यौ शिष्यौ स्वपत्रेणामन्त्रितौ कृत्वा ताभ्यां स्वश्रुतज्ञानं प्रादात्, अतएवाद्यास्माकं पुरतः षट्खण्डागम सदृशानां सूत्रग्रन्थानां रचना दृश्यते, एवं विधानां सम्मेलनानामद्यापि महत्यावश्यकता वर्तते।

कन्नौजनगरे एकदैव द्वौ लाभौ–**इत्र सुगन्धितपदार्थाय देशविदेशयोः प्रसिद्धस्य कन्नौज नगरस्य भाग्यमपि प्रसन्नमभवत् यत् तस्मै अनेकानि सौभाग्यानि एकदैव प्राप्तान्यभवन्। 1 दिसम्बर 2000 दिने माताश्रीः कन्नौजे मंगल प्रवेशमकरोत् अग्रिमदिने च मातुः केशलुंचनं निर्धारितमासीत्, तदैव सायंकाले तत्र मातुः प्रेरणया प्रधानमंत्रिणा अटलविहारी वाजपेयीमहोदयेन प्रवर्तितः** ''भगवान् ऋषभदेवसमवसरण श्रीविहाररथस्य'' **विशालस्यैरावत गजस्यागमनमभवत्। भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सवस्य वर्षस्यान्तर्गतं प्रवर्तितस्यास्य रथस्य दिल्ली–हरियाणा–राजस्थान–मध्यप्रदेशानां स्थानेषु परिभ्रम्य धर्मस्य**

➢साधु-साध्वी देश और समाज के दिशा-निर्देशक होते हैं–

इस सम्मेलन की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्तमान युग में ऐसे सन्त सम्मेलनों की उपयोगिता बतलाते हुए कहा कि साधु-साध्वी ही चूँकि देश और समाज के दिशा-निर्देशक होते हैं अतः उन्हें स्वयं भी समय-समय पर एक-दूसरे संघ के साथ मिलकर विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए तथा आगम के आलोक में यतिचर्या का विश्व में विचार विनिमय करना चाहिए।

प्राचीन परम्परानुसार इतिहास साक्षी है कि पहले भी साधु-संघों के विशाल सम्मेलन हुआ करते थे। उसी सम्मेलन में आचार्य श्री धरसेन स्वामी ने दो योग्य शिष्यों को अपने पत्र द्वारा आमंत्रित करके उन्हें अपना श्रुतज्ञान प्रदान किया था, तभी आज हमारे सामने षट्खण्डागम जैसे सूत्र ग्रंथों की रचना दिख रही है। ऐसे सम्मेलनों की आज भी महती आवश्यकता है।

➢कन्नौज में दो लाभ एक साथ–

इत्र के लिए देश-विदेश में मशहूर कन्नौज नगरी का भी मानो भाग्य खिल उठा कि कई-कई सौभाग्य उसे एक साथ प्राप्त हो गए। 1 दिसम्बर 2000 को माताजी ने कन्नौज में मंगल प्रवेश किया और अगले दिन पूज्य माताजी को केशलोंच करना था, उसी शाम वहाँ पर माताजी की प्रेरणा से प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रवर्तित **''भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ''** व विशाल ऐरावत हाथी रथ आ पहुँचा।' भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत प्रवर्तित इस रथ का दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर घूमकर धर्म

विजयपताकां आन्दोलितां कुर्वन् अधुनोत्तरप्रदेशे भ्रमणं प्रारब्धमभवत् 2 दिसम्बर दिने च अस्य कन्नौजनगरे कार्यक्रमः आसीत्। मध्याह्ने पाण्डाले एव मातुः केशलुंचनमभवत्। तदैव समवसरणश्रीविहारस्य सभा संचालिताभवत्। तत्र कन्नौज निवासिनः एकस्मिन् पक्षे तु केशलुञ्चनस्य वैराग्यवर्धकं दृश्यमपश्यन् अभिभूताश्चाभवन्, तत्रैव समवसरणस्य दर्शनं कृत्वामोदन्त। माताश्री अद्य बहुप्रसन्नासीत् यतः दिल्लीनगर्याः समवसरणस्य प्रवर्तनस्य पश्चात् अद्य प्रथमबारं समवसरणस्य दर्शनमकरोत् अतः उपवासेऽपि सा शोभायात्रया–सह प्रचलिता। वस्तुतो जिनेन्द्रस्य भगवतः भक्तिः मातुः हृदये दृढ़तया पूर्णास्ति। अतएव तस्यामात्मशक्तिरपि सहजतया सुलभा भवति।

तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्यां प्रयागे तीर्थे जिनमन्दिराणां शिलान्यासोऽभवत्–**प्रयागं प्रति प्रस्थायमानस्य संघस्य मंगल पादार्पणं औद्योगिकनगर्यां या वस्त्रोद्योगाय प्रसिद्धास्ति, तस्यां कानपुर नगर्यामभवत्। यत्र 10 दिसम्बर 2000 दिने प्रयागे आयोजितस्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठामहोत्सवस्य सन्दर्भे एका विचारसभा आयोजनाय प्रस्तावितासीत्, यस्यां सभायां स्थानात्–स्थानात् बहवो जनाः सम्मिलिताः अभवन्। अस्यां सभायां श्रीप्रकाशोजायसवालः सांसदो यः उत्तरप्रदेशस्य कांग्रेस अध्यक्षोऽस्ति, सोऽप्यागच्छत्, स्व सुन्दराणां विचारणां चाभिव्यक्तिमकरोत्। 11 दिसम्बर 2000 दिने प्रयागतीर्थे निर्माणाय प्रस्तावितानां जिनमन्दिराणां शिलान्याससमारोहस्य कार्यक्रमः आसीत् अतः कार्यकर्तृणामेकः समूहोऽनेकभक्तजनाश्च सभायाः पश्चात् प्रयागं प्रति प्रस्थिताः अभवन्।**

की विजयपताका को फहराते हुए अब उत्तरप्रदेश में भ्रमण प्रारंभ हुआ था और 2 दिसम्बर को इसका कन्नौज में कार्यक्रम था। मध्यान्ह में पाण्डाल में ही माताजी का केशलोंच हुआ और उसी सभा में समवसरण श्रीविहार की सभा चली। जहाँ कन्नौज निवासी एक ओर केशलोंच का वैराग्यवर्धक दृश्य देखकर अभिभूत हो रहे थे, वहीं समवसरण के दर्शन कर प्रसन्न हो रहे थे। स्वयं माताजी भी आज बहुत प्रसन्न थीं क्योंकि दिल्ली से समवसरण प्रवर्तन के बाद आज प्रथम बार पूज्य माताजी को समवसरण के दर्शन हुए थे अतः माताजी का उपवास होने के बाद भी वे जुलूस में साथ-साथ चलीं। वस्तुतः जिनेन्द्र भगवान की भक्ति पूज्य माताजी के अन्दर कूट-कूट कर भरी है। इससे उनमें आत्मशक्ति आ जाना सहज सी बात है।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर जिनमंदिरों का शिलान्यास हुआ–

प्रयाग तीर्थ की ओर विहार करते हुए संघ का मंगल पदार्पण औद्योगिक नगरी (कपड़ा उद्योग) के रूप में मशहूर कानपुर शहर में हुआ। जहाँ 10 दिसम्बर 2000 को प्रयाग में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के संदर्भ में एक मीटिंग रखी गई, जिसमें स्थान-स्थान से अनेकों लोग पधारे। इस सभा में श्रीप्रकाश जायसवाल (सांसद एवं उ.प्र. कांग्रेस अध्यक्ष) भी पधारे और अपने सुन्दर विचार व्यक्त किए। 11 दिसम्बर को प्रयाग तीर्थ पर निर्मित होने वाले जिनमंदिरों का शिलान्यास समारोह का कार्यक्रम था अतः कार्यकर्ताओं का एक समूह एवं अनेक भक्तगण सभा के पश्चात् प्रयाग की ओर रवाना हुए।

तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्यां प्रयागे 11 दिसम्बर मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमायाः दिने भव्यशिलान्याससमारोहः सम्पन्नोऽभवत् यस्यां चतुर्दश फुट उत्तुंगा पद्मासना भगवतो प्रतिमा एकपंचाशत् फुट उच्चेतः कैलासपर्वत निर्माणाय प्रस्तावित वेदिका, दीक्षाकल्याणक–तपोवनं, समवसरणमन्दिरं, कीर्तिस्तम्भः, गणिनी ज्ञानमतीनिलयं, पंचकल्याणकप्रतिष्ठा हेतवे मंचानां शिलान्यासाः सम्पन्नाः अभवन्। यः योऽपि अस्य सामयिकस्य कार्यस्य विषये अशृणोत् सः बहुप्रशंसां कुर्वन् अकथयत् यच्छीघ्रमेवायमद्वितीयस्तीर्थो भारतस्य न्यासो भवितुं प्रस्तुतोऽस्ति।

यस्य समीपे यद्वस्तु भवति, सः तदेव ददाति–**आचार्यस्य श्रीपूज्यपादस्वामिन उक्ता नीतिरत्यन्तमेव सारपूर्णा सत्यकथनं च प्रकटनपरास्ति, यत् यस्य सविधे यद्वस्तु भवति सः तदेव ददाति। दिगम्बरजैनसाधवो दर्शन–ज्ञान–चारित्राणां प्रतिमूर्तयो भवन्ति अतो भव्यजनान् उपदिशन्तो ज्ञानं ददति रत्नत्रयस्य च सततं प्रेरणाः ददति। अनेनैव प्रकारेण श्रावकेभ्यः आचार्याः षडावश्यकस्योपदेशं प्राददुः, तस्य परिपालनार्थं ते स्व धनस्य सदुपयोगं कुर्वन्तः दानं–पूजां–जिनमन्दिराणां निर्माणं–पंचकल्याणकप्रतिष्ठाः–मूर्तेर्निर्माणं, गुरुभ्यः विहारस्य व्यवस्थां कुर्वन्ति, अनेकानि अन्यान्यपि कार्याणि कृत्वा पुण्योपार्जनं विदधति।**

तथैव संघपतिमहोदयः स्वकर्तव्यस्य पूर्णतया निर्वाहं कुर्वन् न केवलं स्वद्रव्यस्य सदुपयोगमकरोत् अपितु विहारे पदयात्रां कृत्वा यात्रायाः आनन्दमनुभवन् संघ व्यवस्थामपि

तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग में 11 दिसम्बर, मगशिर शुक्ला पूर्णिमा के दिन भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें 14 फुट पद्मासन भगवान की 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत पर बनने वाली वेदी, दीक्षाकल्याणक तपोवन, समवसरण मंदिर, कीर्तिस्तंभ, गणिनी ज्ञानमती निलय एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु मंच निर्माण के शिलान्यास सम्पन्न हुए। जिस-जिस ने भी इस समसामयिक कार्य के बारे में सुना, उसने खूब प्रशंसा करते हुए कहा कि शीघ्र ही यह अद्वितीय तीर्थ भारत की धरोहर बनने जा रहा है।

➢जिसके पास जो चीज होती है, वह वही देता है–

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी की उक्त नीति बड़ी ही सारपूर्ण एवं सत्य कथन को बताने वाली है कि जिसके पास जो चीज होती है, वह वही देता है। दिगम्बर जैन साधु दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्रतिमूर्ति होते हैं अतः भव्यजनों को उपदेश देते हुए ज्ञानदान देते हैं तथा रत्नत्रय की सतत प्रेरणा प्रदान करते हैं। इसी प्रकार श्रावक के लिए आचार्यों ने षट्आवश्यक कर्त्तव्यों का उपदेश दिया है, उसका परिपालन करने हेतु वे अपने धन का सदुपयोग करते हुए दान, पूजा, जिनमंदिर निर्माण, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, मूर्ति निर्माण, गुरुओं के विहार आदि पुण्यकार्यों को करते हैं।

वैसे तो संघपति महोदय अपने कर्तव्य का पूर्णतया निर्वहन करते हुए न सिर्फ अपने द्रव्य का सदुपयोग कर रहे थे अपितु विहार में पैदल चलकर यात्रा का आनंद लेते हुए संघ व्यवस्था भी देख

अपश्यत्। दीर्घं विहारं ऋतुं च निरीक्ष्य सः संघ विहाराय नवंवाहनं 'ट्रक' निर्मापितमकरोत् यदा च प्रयागतीर्थाय पंचकल्याणक हेतवे कानपुरे सभा चलायमाना आसीत् तदा सः स्वल्पामेव प्रेरणां प्राप्य महोत्सवे सौधर्मेन्द्रस्य कार्याय अपि सः स्वीकृतिं प्रायच्छत् स्वस्य च चंचलायाः लक्ष्म्याः सदुपयोगं विधाय महत् पुण्यार्जनमकरोत्।

सत्संगेन जीवनदिशा परिवर्तते–**मार्गे पदविहारसमये विद्यालयेषु अवस्थानस्यावसरोऽधिकः प्राप्यते। लघूनां ग्रामाणां कारणेन तत्र जनता किंचित् आश्चर्यजनकवस्तुवत् अस्मान्, कश्चित् सर्कसवत् ब्रह्मचारिणीभगिनीः तासां वस्तुजातं वीक्षन्ते सर्वं वस्तुज्ञानाय च जिज्ञासामपि कुर्वन्ति अतो वयं तान् प्रवचनमाध्यमेन जैनसाधुसाध्व्याः चर्यामपि वदामः। इत्थमेव वयमेकदैकस्मिन् विद्यालयेऽतिष्ठाम, ज्ञातमभवत् अस्य ग्रामस्य प्रमुखस्यायं विद्यालयोऽस्ति, अत्र समीपे एव च एकं कपिलाश्रमोऽप्यभवत् यदा च सूचितोऽभवत् तदा सोऽपि सत्संगं प्राप्तुं तत्रैवागच्छत्। वार्तानां मध्ये सः पृष्टा यत् भवान् शाकाहारी अस्ति मांसाहारी वा? तदा सः मेजर युधिष्ठिरसिंहः उवाच यत् मातः! यतोऽहं पूर्वं सेनायामासम्, अतोऽहं मांसाहारी अस्मि। तदा क्षुल्लको मोतीसागरस्तं शाकाहारस्य मांसाहारस्य च विषयेऽकथयत् मांसाहारस्य त्यागस्य प्रेरणां प्रादात्, तदा तु सः विचारं विनैव मांसाहारत्यागस्य शाकाहारस्य च नियममगृहणात्।**

अनेनैव प्रकारेण अन्येषु च स्थानेषु ग्रामनिवासिनोऽस्माकं प्रवचनं श्रुत्वा मदिरायाः मांसाहारस्य द्यूतस्य चानेकदुर्व्यसनानां त्यागमकुर्वन्।

रहे थे। लम्बे विहार और मौसम को देखते हुए उन्होंने संघ विहार हेतु नई गाड़ी (ट्रक) बनवाई तथा जब प्रयाग तीर्थ के पंचकल्याणक हेतु कानपुर में मीटिंग चल रही थी, तो उन्होंने थोड़ी सी प्रेरणा प्राप्त होते ही महोत्सव के सौधर्म इन्द्र बनने हेतु भी अपनी स्वीकृति प्रदान की और अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर महान पुण्य अर्जित कर लिया।

➢सत्संग से जीवन की दिशा बदल जाती है–

रास्ते में पदविहार करते समय स्कूलों में ठहरने का अवसर ज्यादा आता है और छोटे-छोटे गाँव होने से वहाँ की जनता किसी अजूबे की भांति हम लोगों और किसी सर्कस की भांति ब्रह्मचारिणी बहनों व उनके सामान को देखते हैं और सब कुछ जानने की जिज्ञासा भी रखते हैं अतः उन्हें हमें प्रवचन के माध्यम से जैन साधु-साध्वी की चर्या बतानी पड़ती है। ऐसे ही एक बार हम लोग एक स्कूल में ठहरे, पता लगा यहाँ के मुखिया का यह स्कूल है और यहीं पास में उन्होंने 'कपिल आश्रम' के नाम से एक आश्रम बनवा रखा है,उनको जब सूचना मिली, तो वे भी सत्संग सुनने के उद्देश्य से स्कूल में आ गए। बातों-बातों में उनसे पूछा गया कि आप शाकाहारी हैं या मांसाहारी? तो उन्होंने (मेजर युधिष्ठिर सिंह) जवाब दिया कि माताजी! मैं चूँकि पहले फौज में था अतः मैं मांसाहारी हूँ। तब क्षुल्लक मोतीसागर जी ने उन्हें शाकाहार और मांसाहार के बारे में बताते हुए मांसाहार त्याग करने की प्रेरणा प्रदान की, फिर तो बिना कुछ सोचे ही उन्होंने पूर्णरूपेण मांसाहार का त्याग कर शाकाहार का नियम ले लिया।

इसी प्रकार और भी अनेक स्थानों पर गांव वालों ने हम लोगों के प्रवचन सुनकर शराब, मांसाहार, जुआ खेलना आदि अनेक व्यसनों का त्याग किया।

अतएव सत्संगतिविषये कथितेयं सूक्तिः पूर्णतया चरितार्था भवति, यत्–

''दुर्जनेऽपि हि सौजन्यं, सुजनैर्यदि संगमः।।''

अर्थात् सज्जनानां समागमेन दुर्जने मनुष्येऽपि सज्जनतायाः प्रवेशो भवति।

न्यायालयस्य नगरे इलाहाबादे प्रवेशोऽभवत्–**अनेकाः पौराणिककथाः ऐतिहासिक कथाः स्वगर्भे धारयन्ती इलाहाबादनगरी वर्तमाने उत्तरप्रदेशे सर्वोच्चन्यायालयस्यरूपेण प्रसिद्धा वर्तते, यत्रोच्चन्यायालयमागत्य जनः सर्वदा न्याय प्राप्तिमपेक्षते। 1 नवम्बर 2000 दिने दिल्लीनगर्याः पदविहारं कृत्वा, प्रयागतीर्थं स्वलक्ष्यं निर्धारितं कृत्वा वयं संघ सहिताः स्व लक्ष्यस्यान्तिम–स्थानमागच्छाम। यद्यपि जैनसाधोः किमपि निश्चितं स्थानं न भवति, परन्तु येन लक्ष्येण विहरन्ति, लक्ष्यसिद्धौ निसर्गतः प्रसन्नता भवत्येव।**

29 नवम्बर तिथौ प्रातःकाले इलाहाबादस्यैवैकस्मिनुपनगरे प्रीतमनगरे श्री पी.के. जैन वाक्कीलस्य निवासस्थाने आहारोऽभवत् आहारस्य सामायिकस्य च पश्चात् 12:15 वादनकाले इलाहाबाद जीरोरोडस्थितायां धर्मशालायां मंगलपदार्पणहेतवे ततो विहारोऽभवत्। अद्य इलाहाबादस्य नागरिकाणामुत्साहो दर्शनीय एवासीत्, एतत् प्रतीतमभवत् यत् ते किमपि बहुमूल्यं निधिं प्राप्नुवन्। 2 वादनसमये प्रयागहोटल स्थानात् शोभायात्रा प्रारभत्, जैनविद्यालयस्य 500 बालाः हस्तेषु सुन्दर सूक्तीनां पट्टानि नीत्वा सहचारिणोऽभवन्, प्रतिस्थानं संलग्नाः बैनराः जनजनं मातरं प्रति श्रद्धां दर्शयन्ति स्म। स्वरूपरानी पार्क

इसीलिए सत्संगति के बारे में कही गई उक्त सूक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती है कि–

दुर्जनेऽपि हि सौजन्यं, सुजनैर्यदि सङ्गमः।।

अर्थात् सज्जनों के समागम होने से दुर्जन मनुष्य में भी सज्जनता आ जाती है।

➢न्यायालय की नगरी इलाहाबाद में हुआ मंगल प्रवेश–

अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं को अपने गर्भ में समेटे इलाहाबाद नगरी वर्तमान में उत्तरप्रदेश के उच्च न्यायालय के रूप में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ की हाईकोर्ट में आकर व्यक्ति को सर्वदा न्याय प्राप्ति की आशा रहती है। 1 नवम्बर 2000 को दिल्ली से पदविहार कर, प्रयाग तीर्थ को अपना लक्ष्य बनाकर हम संघ सहित अपनी मंजिल के आखिरी पड़ाव पर आ गये थे। यूँ तो जैन साधु का कोई नियत स्थान नहीं होता, पर जिस लक्ष्य से विहार करते हैं, उसकी सिद्धि हो जाने पर निसर्गतः प्रसन्नता होती ही है।

29 तारीख को प्रातःकाल इलाहाबाद की ही एक कालोनी प्रीतमनगर में श्री पी.के. जैन (वकील) के निवास पर आहार हुआ और आहार व सामायिक के पश्चात् 12.15 बजे इलाहाबाद की जीरोरोड स्थित जैन धर्मशाला में मंगल पदार्पण हेतु वहाँ से विहार हुआ। आज इलाहाबाद के नागरिकों का उत्साह देखते ही बनता था, ऐसा लग रहा था कि उन्हें कोई अनमोल निधि मिल गई हो। 2 बजे प्रयाग होटल के पास से जुलूस प्रारंभ हुआ। जैन विद्यालय के 500 बच्चे हाथों में सुन्दर-सुन्दर सूक्तियों के बैनर लेकर चल रहे थे, स्थान-

जीरोरोड इत्यस्य पाण्डाले संपन्नायां धर्मसभायां मुख्यातिथिरूपेण श्री के.पी. श्रीवास्तवः इलाहाबादस्य प्रमुखो नागरिकः, विधानसभायाः अध्यक्षेण सह अनेकाः जैन–अजैन जनाः सकृन्मातुर्दर्शनलालसया अपारजनसमूहस्य रूपेणातिष्ठन्। वस्तुतो मातुर्विषये उक्ताः एताः पंक्तयः सार्थकाः सन्ति–

''यद्यपि कति मातारः अभवन् कति च भविष्यन्ति, यासां त्याग तपस्याभिः दशदिशः गौरवयुक्ताः सन्ति। परन्तु वर्तमाने ज्ञानमती सदृशी न कापि माता विद्यते, यस्याः चरणयोः प्रतिक्षणं दुःखेभ्यः सुखं प्राप्यते।''

प्रथमं दर्शनं कृत्वामूल्या कृतिरुपाहरत्–**जैनधर्मानुसारेण वीरनिर्वाणसम्वत् सर्वाधिक प्राचीनतायाः कारणेन भगवतो महावीरस्य निर्वाण प्राप्तेरग्रिमं दिवसं कार्तिकशुक्ल एकम वर्षस्य प्रारम्भो अर्थात् नववर्षं सम्मान्यते परन्तु वर्तमाने ईसवीवर्षमधिकं प्रचलने विद्यते, अतः 1 जनवरी सम्पूर्णभारते वर्षस्य प्रथमदिनं मत्वा जनाः नाना प्रकारैस्तद्मानयन्तः स्व प्रसन्नतां प्रकटयन्ति। नानाविधानामुपहाराणां शुभकामनापत्राणां च परस्परमादान–प्रदानं कृत्वा मोदन्ते। इयं एका साधारणा वार्ता विद्यते किन्तु दिगम्बरजैनसाधु–साध्व्यः ये परमपितापरमेश्वरं, मातरं जिनवाणीं जिनधर्मं च स्व सर्वस्वं मन्यन्ते, तेभ्य प्रत्येकदिवसस्य**

स्थान पर लगे बैनर जन-जन की माताजी के प्रति श्रद्धा को दर्शा रहे थे। स्वरूपरानी पार्क-जीरोरोड के पाण्डाल में हुई धर्मसभा में मुख्य अतिथि श्री के.पी. श्रीवास्तव, इलाहाबाद के मेयर तथा विधानसभा अध्यक्ष के साथ-साथ अनेक जैन-अजैन लोग एक बार माताजी के दर्शन की लालसा से अपार जनसमूह के रूप में उपस्थित हुए थे। वास्तव में पूज्य माताजी के बारे में कही हुई ये पंक्तियां कितनी सार्थक हैं–

यूँ तो कितनी हो चुकीं और कितनी होंगी माताएँ हैं।
जिनकी तप-त्याग-तपस्या से, गौरवमय दशों दिशाएँ हैं।।
पर वर्तमान में ज्ञानमती, माता सी कोई न माता हैं।
जिनके चरणों में दो क्षण को, दुःख को भी सुख मिल जाता है।।

➢प्रथम दर्शन कर अमूल्य कृति भेंट की–

जैनधर्म के अनुसार वीर नि.सं. सर्वाधिक प्राचीन होने से भगवान महावीर के निर्वाण प्राप्ति का अगला दिवस कार्तिक शुक्ला एकम् वर्ष का प्रारंभ अर्थात् नया वर्ष माना जाता है परन्तु वर्तमान में ईसवी सन् अधिक प्रचलन में है अतः 1 जनवरी को सम्पूर्ण भारत में इसे ही वर्ष का प्रथम दिवस मानकर लोग नाना प्रकार से उसे मनाते हुए अपनी खुशियाँ प्रकट करते हैं। अनेकों प्रकार से ग्रीटिंग्स, गिफ्ट आइटम का अपने प्रियजनों में आदान-प्रदान व पार्टी देना आदि एक साधारण सी बात है परन्तु दिगम्बर जैन साधु-साध्वी जो परम पिता परमेश्वर, माँ जिनवाणी तथा जिनधर्म को अपना सर्वस्व मानते हैं, उनके लिए प्रत्येक दिवस का शुभारंभ जिन मुखावलोकन से होता है और

शुभारम्भो जिनमुखावलोकनेनैव भवति, कमपि विशेषं दिवसमपि ते प्रभुभक्तिं जिनधर्मस्य प्रभावनां च मुख्यतां ददति पुनश्च तत् रक्षाबन्धनं स्यात् दीपावली वा, वर्षस्य प्रारम्भ दिवसो भवतु वा अन्यत् किञ्चित्।

पुनरपि अस्माकं नववर्षस्य 2001 तमस्य प्रथमदिवसस्य शुभारम्भः निर्माणाधीने तीर्थराजप्रयागे मंगलप्रवेशेन तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य प्रथमदर्शनेनाभवत्। इदमभूत् यत् वयं 1 नवम्बर 2000 दिने दिल्लीनगर्याः विहारं कृत्वा 29 दिसम्बर दिने प्रयागे प्रवेशमकुर्म। 58 दिवसीयस्यास्य विहारस्य पश्चात् इलाहाबादवासिनां अत्याग्रहवशात् 3 दिषु जैन विद्यालये स्थितेः पश्चात् 1 जनवरी 2001 दिनस्य प्रातः 8 वादने ततश्चलित्वा 13 किलोमीटर दूरे बनारस हाईवे राजमार्गे निर्माणाधीनायां ''तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्यां तीर्थे'' **11.15 वादने मंगलप्रवेशोऽभवत्। अत्र च समागत्याल्हादस्य कारणेन हर्षस्याश्रूणि प्रावहन्, दृष्ट्वा परमप्रसन्नताभवत् यत् ब्रह्मचारिणो रवीन्द्रस्य कुशलनेतृत्वे सम्पूर्णमेव निर्माण कार्यं प्रबलतया संचालितमस्ति। तस्मिन् काले तीर्थं प्रविश्य प्रतिष्ठाप्याया–जिनप्रतिमायाः प्रथमं दर्शनं कृत्वा माताश्री स्वनूतनकृतिरूपेण भगवतः ऋषभदेवस्य श्रीचरणयोः** ''विश्वशान्ति महावीर विधानं'' **समर्पितं विधाय आल्हादमन्वभवत्। कार्तिक कृष्ण अमावस्यायां 27.10.2000 दिने मंगलाचरणपूर्वकं प्रारब्धस्यातिशयकारिणो महावीरविधानस्य लेखनकार्यं 1.1.2001, वीर निर्वाण सम्वति 2527 पौष शुक्ला षष्ठी दिने सम्पूर्णमभवत्। 66 दिन पर्यन्तं लिखितायां 135 पृष्ठानामस्यां कृत्यां अन्तर्ज्ञानेनोद्भूताः शब्दाः अस्याः कार्यसिद्धौ कारणं**

किसी विशेष दिवस में भी वह प्रभुभक्ति व जिनधर्म प्रभावना को ही मुख्यता देते हैं, फिर चाहे वह रक्षाबंधन हो या दीपावली, वर्ष का प्रारंभ दिवस हो या अन्य कुछ।

फिर भी हमारे नव वर्ष 2001 के नूतन वर्ष प्रथम दिवस का शुभारंभ निर्माणाधीन तीर्थराज प्रयाग में मंगल प्रवेश एवं तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रथम दर्शन से हुआ। हुआ यूँ कि हम लोगों ने 1 नवम्बर 2000 को दिल्ली से विहार करके 29 दिसम्बर को प्रयाग शहर में प्रवेश किया। 58 दिवसीय इस विहार के पश्चात् इलाहाबादवासियों के अतीव आग्रह पर 3 दिन जैन विद्यालय में रहने के बाद 1 जनवरी 2001 को प्रातः 8 बजे वहाँ से चलकर 13 किमी. दूर बनारस हाइवे रोड पर निर्माणाधीन **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ''** पर 11.15 पर मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ आकर परम आल्हाद के कारण हर्ष के अश्रु आ गए, देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ब्र.रवीन्द्र जी के कुशल नेतृत्व में सारा निर्माण कार्य खूब जोरों से चल रहा है। उस समय तीर्थ क्षेत्र पर प्रवेश कर प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमा का प्रथम दर्शन कर माताजी ने अपनी नूतन कृति के रूप में भगवान ऋषभदेव के श्रीचरणों में **''विश्वशांति महावीर विधान''** को समर्पित कर परम आल्हाद का अनुभव किया। कार्तिक कृष्णा अमावस 27-10-2000 को मंगलाचरणपूर्वक प्रारंभ किए गए अतिशयकारी महाविधान का लेखन 1-1-2001, वीर नि. सं. 2527, पौष शु. षष्ठी को पूर्ण हुआ। 66 दिन तक लिखी गई 135 पृष्ठों की इस कृति में अन्तर्ज्ञान से निकले शब्द इनकी कार्यसिद्धि में कारण तो बने ही,

त्वासन्नेव, निराबाधसहचलिताः एते लेखनमन्त्रा अस्मभ्यं शक्तिमदुः, तदैव व्यापकप्रभावनापूर्णा यात्रा संपन्नाऽभवत् धरायै चैतया दीक्षास्थलीरूपया उपलब्धिः प्राप्ता।

एकोऽजैन व्यक्तिः वसतिकायाः दानं कृत्वा महतः पुण्यस्य संचयमकरोत्—

स्वामिसमन्तभद्राचार्यः रत्नकरण्डनाम्नि ग्रन्थे दानस्यातिसुन्दरं महत्त्वं प्रादर्शयत्–

क्षितिगतमिववटबीजं, पात्रगतं दानमल्पमपि काले। फलतिच्छायाविभवं, बहुफलमिष्टं शरीरभृताम्।

यथा वटस्य बीजं बहुलघु भवति, परन्तु तेन लघुना बीजेन एतावान् विशालः वृक्षो जायते यत् यस्य छायायां सहस्रशो जनाः उपवेष्टुं शक्नुवन्ति, तेनैव प्रकारेण पात्रेभ्यो दत्तमल्पमपिदानं विशिष्ट फलं प्रयच्छति।

दानस्य समये दातुः विशुद्धभावाः भवन्ति, यत् येषां तुलना कारयितुं न शक्यते। तैरेव विशुद्धपरिणामैः जीवस्य कुगतेर्बन्धो भूत्वा परभवसम्बन्धिनः आयुषो अन्तो यदि नाभवत् सः कुगतिबन्धं छित्वा सुगतिबन्धं करोति। अन्यत् किम्? ये दानस्यानुमोदनां कुर्वन्ति तेऽपि भोगभूमिसदृशेषु उत्तम क्षेत्रेषु जायन्ते। यस्य प्रत्यक्षमुदाहरणं आहारदानदात्रा राज्ञा वज्रजंघेन राज्ञ्या श्रीमत्या च सह सिंहाः–शूकराः–नकुलाः–मर्कटाः अपि अनुमोदनामात्रेण उत्तमा भोगभूमिं प्राप्नुवन्।

दीक्षास्थल्यां यद्यपि निर्माणकार्यं द्रुतगत्या गतिशीलमासीत् किन्तु अधुना तत्र निवासस्य

निराबाध चलने वाले इस लेखन के मंत्रों ने हम सभी को शक्ति प्रदान की, तभी व्यापक प्रभावनापूर्वक यह यात्रा सम्पन्न हुई और इस धरा को दीक्षास्थली तीर्थ जैसी महान उपलब्धि हुई।

➢**एक अजैन व्यक्ति ने वसतिका दान देकर महान पुण्य का संचय कर लिया–**

स्वामी समन्तभद्राचार्य ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार नामक ग्रंथ में दान का बड़ा सुन्दर महत्व बताया है–

क्षितिगतमिव-वटबीजं, पात्रगतं दानमल्पमपि काले।
फलतिच्छायाविभवं, बहुफलमिष्टं शरीरभृताम्।।

जिस प्रकार वट का बीज बहुत छोटा होता है परन्तु उस छोटे बीज से इतना विशाल वृक्ष होता है कि जिसकी छाया में हजारों पुरुष बैठ सकते हैं, उसी प्रकार पात्रों को भक्तिपूर्वक दिया हुआ थोड़ा भी दान विशिष्ट फल को देता है।

दान देते समय दातार के इतने विशुद्ध परिणाम होते हैं, जिसकी तुलना नहीं की जा सकती है। उन्हीं विशुद्ध परिणामों के कारण जिस जीव के कुगति बंध होकर परभव संबंधी आयु का बंध यदि नहीं पड़ा है, तो वह कुगति बंध को छेदकर सुगतिबंध को कर लेता है। और तो क्या? दान देने की अनुमोदना करने वाले भी भोगभूमि जैसे उत्तम क्षेत्र में जाकर जन्म धारण करते हैं, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आहारदान देने वाले राजा वज्रजंघ, रानी श्रीमती के साथ-साथ सिंह, सूकर, नेवला, बंदर जैसे पशु थे, जिन्होंने अनुमोदनामात्र से उत्तम भोगभूमि प्राप्त की।

दीक्षास्थली तीर्थ पर यूँ तो निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था किन्तु अभी वहाँ ठहरने जैसी

कापि व्यवस्था नासीत्। दिने माताश्रीः वयं च तत्र गत्वा एकस्मिन् लघुनि वस्त्रकुटीरे अतिष्ठाम माताश्रीश्च तत्र सामायिक–ध्यान–जाप्यादीनि कार्याण्यकरोत्। प्रतिदिन ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यः भगवन्तं तत्र विराजमानं कृत्वा विधानपूजाः अकुर्वन् किन्तु संगमस्य तटस्य अत्यधिकशीतकारणेन च अनाच्छादिते स्थाने स्थितिः तत्र कार्यकर्तृभ्यः इष्टं नासीत् अतस्ते मातरं पुनः पुनः आग्रहमकुर्वन् यत् इदानीं भवन्त्यः तु कस्मैचित् कालाय इलाहाबाद नगरे तिष्ठन्तु, परन्तु मम इयं विशेषेच्छा आसीत् यत् वयमत्रैव तीर्थे एव तिष्ठेम। संयोगवशात् नगरे नवस्थापिताया: अखिलभारतीयदिगम्बरजैनमहिलासंगठनस्य इलाहाबादशाखायाः अध्यक्षा श्रीमती साधना जैना मातुः दर्शनार्थं तत्रागच्छत्, अस्माकमिच्छामवलोक्य समीपस्यस्यैवैकस्या–जैनस्य गृहस्थस्य समीपे गत्वा वार्तालापमकरोत्। भव्यपरिणामी सः गृहस्थः प्रसन्नतया स्व आधुनिक गृहस्य त्रीणि कक्षाणि रिक्तानि कृत्वा महतः पुण्यस्य संचयमकरोत्। तत्कालमेव संघस्थाः ब्रह्मचारिण्यः तत्र गत्वा स्वच्छतां विधाय रात्रिविश्रामस्य व्यवस्थामकुर्वन् अस्माकं च कतिपयदिनपर्यन्तं रात्रिकालीनप्रवासः तस्यैव गृहेऽभवत्। तस्मिन्नेव समीपे एकम् अन्यच्च गृहम् आसीत्। यदा ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यो गत्वा तं वार्तालापमकुर्वन् तदा सोऽपि स्वकक्षाणि रिक्तानि कर्तुं तत्परोऽभवत्, तत्र भगिन्यः स्ववासस्य भोजनालयस्य च व्यवस्थामकुर्वन्।

लोकनिर्माणराज्यमंत्री मातुर्दर्शनार्थमागच्छत्–**दीक्षास्थल्यां तीर्थे पदार्पणेन सहैव पूज्यमातु–र्दर्शनार्थमनेकनेतारः, प्रशासनिकाधिकारिणः अनेकसंस्थानां च प्रतिष्ठित– पदाधिकारिणः**

कोई व्यवस्था नहीं थी। दिन में माताजी और हम लोग वहाँ जाकर एक छोटे से कपड़े के टेंट में रुक जाते थे और माताजी सामायिक, ध्यान व अनेकों जाप्यादि वहाँ करती थीं, प्रतिदिन ब्रह्मचारिणी बहनें भगवान को वहाँ विराजमान करके विधानपूजा करती थीं किन्तु संगम का तट और अत्यधिक सर्दी होने से खुले में रहना वहाँ के कार्यकर्ताओं को इष्ट नहीं था अतः उन्होंने माताजी से बार-बार यही आग्रह किया कि अभी आप कुछ दिन इलाहाबाद शहर में रुकिए परन्तु मेरी विशेष इच्छा थी कि हम लोग अब यहीं तीर्थ पर ही रुकें। संयोगवश शहर से नवगठित अ.भा.दि. जैन महिला संगठन-इलाहाबाद इकाई की अध्यक्षा-श्रीमती साधना जी माताजी के दर्शनार्थ वहाँ आई थीं, हम लोगों की इच्छा देखकर उन्होंने पास के ही एक अजैन गृहस्थ के पास जाकर बातचीत की। भव्यपरिणामी उस गृहस्थ ने खुशी-खुशी अपने छोटे से घर के तीन कमरे खाली करके महान पुण्य का संचय कर लिया। शीघ्र ही संघस्थ ब्र. बहनों ने वहाँ जाकर सफाई करके रात्रि विश्राम की व्यवस्था कर दी और हमारा कई दिनों तक रात्रिकालीन प्रवास उसके घर में रहा। वहीं पास में ही एक और अजैन के काफी पुराने मकान में भूसे से भरे दो कमरे थे, जब ब्र. बहनों ने उनसे जाकर बात की, तो वह भी अपने कमरे खाली करने को तैयार हो गया और उसमें बहनों ने अपने ठहरने व चौके की व्यवस्था की।

➢**लोक निर्माण राज्यमंत्री माताजी के दर्शनार्थ पधारे–**

दीक्षास्थली तीर्थ पर पदार्पण के साथ ही पूज्य माताजी के दर्शनार्थ अनेक नेतागण, प्रशासनिक

आगत्य मातुर्दर्शनमकुर्वन्। 2 जनवरी 2001 दिने इलाहाबाद निवासिना भाजपा नेत्रा श्री सुनील कुमारेण सह लोकनिर्माणविभागस्य राज्यमंत्री श्री राकेशदत्तस्तिवार्यागच्छत् सः च लोकनिर्माणविभागेन महाकुम्भमेलापरिसरे भवितुं प्रस्तावित ''भगवान् ऋषभदेवसनातन–संस्कृतिसंगमे'' **अनेकपट्टेषु प्रवेशद्वारेषु च जैनदीक्षास्थल्यास्तीर्थस्य नामानि लिखितानि कर्तुं वार्तामकथयत्।**

अस्मात्पूर्वं गोवंशरक्षा मांसस्य च निर्यात विरोधपरिषदः राष्ट्रीयोपाध्यक्षः श्री के.एल. गोधा महोदयः, उदयपुर निवासी अनेकबारं मातुः समीपमागत्य कुम्भमेलापके जिनशासनस्य प्रभावनाहेतवे पुनः पुनः आग्रहमकरोत्। इदानीमपि तस्यागमनं संचालितमासीत्। विशेषमाग्रहं कृत्वान्ततः सः मेलापकपरिसरे जैनधर्मस्य प्रभावनाहेतवे 4 दिनानां कार्यक्रमस्य स्वीकृतिं प्राप्नोत्। बहु प्रसन्नश्च भूत्वास्मिन् कार्ये संलग्नोऽभवत्।

भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमा कैलाशपर्वते व्यराजत्–**दीक्षास्थल्याः तीर्थस्य परिसरस्य मध्ये भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणस्थलीं भारतभूमिं साकारां कृत्वा जनं–जनं तस्याः सहजतया सुलभतया च दर्शनं कारयितुं कैलासपर्वतस्य प्रतिकृतेः निर्माणकार्यं द्रुतगत्या गतिशीलमासीत्। 17 जनवरी पावनदिवसे माघकृष्णाष्टम्यां एकपंचाशत् फुट उच्चैनिर्माणाधीने कैलासपर्वते निर्मितायां वेदिकायां पूज्यमातुः संघस्य सान्निध्ये 'क्रेन' यंत्रेण मूर्तेरारोहणस्य प्रक्रिया अपराह्ण 3 वादनतः आरब्धाभवत्। सर्वप्रथमं यस्मिन् कमले भगवन्तं विराजमानं कर्तुं**

अधिकारी एवं अनेकों संस्थाओं के प्रतिष्ठित पदाधिकारियों का आवागमन प्रारंभ हो गया। 2 जनवरी 2001 को इलाहाबाद निवासी भाजपा नेता श्री सुनील कुमार जैन के साथ लोकनिर्माण राज्यमंत्री श्री राकेश दत्त तिवारी आये और उन्होंने लोकनिर्माण विभाग द्वारा महाकुंभ मेला परिसर में होने वाले **''भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम''** में अनेकों प्रवेश द्वार एवं बोर्डों पर जैन तीर्थ दीक्षास्थली का नाम लिखवाने की बात कही।

इससे पूर्व गोवंश रक्षा एवं मांस निर्यात विरोध परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री के.एल. गोधा जी-उदयपुर (राज.) कई बार माताजी के पास आकर कुंभ मेले में जैन शासन की प्रभावना करने हेतु बार-बार आग्रह कर रहे थे। अभी भी उनका आना बराबर चालू था और विशेष आग्रह कर आखिरकार उन्होंने मेला परिसर में जैनधर्म की प्रभावना हेतु 4 दिवसीय कार्यक्रम की स्वीकृति प्राप्त कर ली और बहुत प्रसन्न होकर इस कार्य में लग गए।

➢कैलाशपर्वत पर विराजमान हुईं भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा–

दीक्षास्थली तीर्थ परिसर के बीचोंबीच में भगवान ऋषभदेव की निर्वाणस्थली को भारत भू पर साकार कर जन-जन को उसका सहजता-सुलभता के साथ दर्शन करवाने हेतु कैलाशपर्वत की प्रतिकृति का निर्माण कार्य भी द्रुतगति से चल रहा था, 17 जनवरी के पावन दिवस, माघ कृष्णा अष्टमी को 51 फुट ऊँचे निर्माणाधीन कैलाशपर्वत के ऊपर निर्मित की गई वेदी पर पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में क्रेन द्वारा मूर्ति चढ़ाने की प्रक्रिया अपरान्ह 3 बजे से प्रारंभ हुई। सर्वप्रथम जिस

प्रस्तावितमासीत्, तदारूढमभवत् पुनः 18 जनवरी दिने मध्याह्ने 11.5 वादनसमये क्रेन यन्त्रेणैव भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमा कमलासने व्यराजत। यथा–यथा प्रतिमा ऊर्ध्वोन्मुखी अभवत् तथा–तथैव भक्तानां जयकारै आकाशमण्डलं गुंजायमानमभवत्। प्रतिमायाः विराजमानायां सत्यां मातुश्चनेत्रयोः हर्षाश्रूणि निर्गतान्यभवन्। तदाहमजानां यदद्यास्माकं यात्रा पूर्णाभवत्। यस्यादिप्रभोः सर्वोदयकारकान अहिंसामयान् च सिद्धान्तान् जैनधर्मस्य च प्राचीनतां लक्ष्यीकृत्य वयं निर्गताः, तद् दिनमिदानीं दूरं न वर्तते। अधुना तीर्थोऽयं जिनधर्मस्य सांस्कृतिको न्यासो भूत्वा विश्वक्षितिजे उदयमानभानुरिव चमत्कृतो भविष्यति। सम्पूर्णविश्वे च जैनधर्मस्य तीर्थंकरपरम्परायाश्च कीर्तिध्वजो तरंगितो भविष्यति।

प्रयागस्य महाकुम्भमेलापके प्रथमबारं जैनधर्मस्य प्रतिनिधित्वम्–**एतदपि स्वर्णिमेतिहासस्य निर्माणमेव कथितं भविष्यति, यदा प्रयागस्य विश्वविश्रुते 12 वर्षीये महाकुम्भमेलापके प्रथमबारं माताश्रीः जैनधर्मस्य प्रतिनिधित्वमकरोत्। कतिचिद् मासेभ्यः विश्वहिन्दू परिषदः उच्चस्तरीयया समित्याः कार्यकर्तृभ्यः निवेदने सति माताश्रीः** ''धर्मसंसदि'' **संघसहिता स्व सान्निध्यं प्रदातुं स्वीकृतिं प्रायच्छत्। पुनः भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्याः प्रयागस्य दिगम्बरजैनतीर्थसमितेः गोवंश रक्षायाः मांसनिर्यातविरोधपरिषदश्च संयुक्ततत्त्वावधाने कुम्भमेलापकपरिसरे जैनधर्मस्य कार्यक्रमः आयोजितोऽभवत्।**

18 जनवरी दिने भगवतः मूर्तिं कैलासपर्वते विराजमानां कारयित्वा पश्चात् गर्जनवादनानां

कमल पर श्रीजी को विराजमान करना था, उसे चढ़ाया गया पुनः 18 जनवरी को मध्यान्ह 11.5 बजे क्रेन द्वारा ही भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा कमलासन पर विराजमान की गई, ज्यों-ज्यों प्रतिमा जी ऊपर चढ़ रही थीं, त्यों-त्यों भक्तों के जयकारों से सम्पूर्ण आकाशमंडल गुंजायमान हो रहा था, प्रतिमा विराजमान होते ही पूज्य माताजी की आंखों से हर्षाश्रु छलकने लगे, तब मुझे लगा कि मानो आज हमारी यात्रा पूर्ण हुई है, जिन आदि प्रभु के सर्वोदयी-अहिंसामयी सिद्धान्तों एवं जैनधर्म की प्राचीनता के दिग्दिगन्त्व्यापी प्रचार-प्रसार के लक्ष्य को लेकर हम निकले थे, वह दिन अब दूर नहीं है। अब यह तीर्थ जिनधर्म की सांस्कृतिक धरोहर बनकर विश्व के क्षितिज पर उदीयमान सूर्य की भांति चमकेगा और सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म एवं तीर्थंकरपरम्परा की कीर्तिध्वजा लहराएगी।

➢प्रयाग के महाकुंभ मेले में प्रथम बार जैनधर्म का प्रतिनिधित्व–

यह भी स्वर्णिम इतिहास का निर्माण ही कहा जाएगा, जब प्रयाग के विश्वप्रसिद्ध 12 वर्षीय महाकुंभ मेले में प्रथम बार जैनधर्म का प्रतिनिधित्व पूज्य माताजी ने किया। कई माह पूर्व से विश्व हिन्दू परिषद की उच्च स्तरीय समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा निवेदन किए जाने पर माताजी ने परिषद द्वारा आयोजित **''धर्म संसद''** (नवम) में संघ सहित अपना सानिध्य प्रदान करने की स्वीकृति दी पुनः तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं गोवंश रक्षा तथा मांस निर्यात विरोध परिषद के संयुक्त तत्वावधान में कुंभ मेला परिसर में जैनधर्म का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

18 जनवरी को भगवान की मूर्ति कैलाशपर्वत पर विराजमान करने के पश्चात् गाजे-बाजे एवं

जयघोषाणां च मध्ये शताष्ट कलशान् मस्तके धारयन्तीनां शचीनां शतशो जैन विद्यालयस्य बालकानां चोपस्थितिसहितायां शोभायात्रायां भगवन्तमान्दोलिकायां विराजमानं कृत्वा माताश्रीः वयं सर्वे संघसहिताः महाकुम्भमेलापकपरिसरे प्रवेशमकुर्म। यत्र ''ऋषभदेवमण्डपे'' **ध्वजोत्तोलनं, भगवतः पंचामृताभिषेको महाशान्तिधारा च सम्पन्नाः अभवन्। प्रतिदिनं च मध्याह्ने संघस्थाभिः भगिनीभिः दिल्ली निवासिना च प्राध्यापक टीकमचन्द्रेणानेकविधानानि आयोजितानि, यत्र जैनसमाजस्य महानुभावैः सह अजैनजनाः अपि समागत्य जैनधर्मस्य ज्ञानं प्राप्नुवन्।**

भगवान् ऋषभदेव सनातनसंस्कृतिसंगमः –**19 जनवरी 2001 दिने मेलापक परिसरे मंगलप्रवेशेन सहैव विश्वहिन्दूपरिषदः कार्यकर्तारो अस्मान् स्वपाण्डाले आनीतवन्तः। तदाहं सिंघलमहोदयेनाग्रहविशेषात् अद्य विश्वस्य सर्वप्रधानायाः ज्वलन्तायाः समस्यायाः मुक्तिं प्राप्तुं भगवतः ऋषभदेवस्य अहिंसात्मकनीतौ पारस्परिकबन्धुत्वे संघटनात्मकशक्तौ च धर्मसंसदः मंचात् समस्तसाधुसमूह मध्येऽहं प्रकाशमपातयम्, यं श्रुत्वा तेऽजानन् यत् अहिंसैव एकं ईदृशं प्रबलं साधनं विद्यते, येन वयं विश्वे शान्तिं–मैत्रीभावं च पुनः स्थापयितुं शक्नुमः।**

वस्तुतस्तु अहिंसाधर्मस्य पावन सूक्ष्मं विवेचनमाचार्याः जैनधर्मेऽकुर्वन्, तादृशमन्यत्र कुत्रापि प्राप्तुं न शक्यते। 20 जनवरी दिने माताश्रीः अस्मादेव मंचात् भगवन्तं ऋषभदेवं मानवीय संस्कृतेः प्रथमं प्रतिपादकं साधयन्ती यदा सा तस्य सर्वोदयात्मकान् सिद्धान्तान् विश्वशान्तये सर्वाधिकान् प्रासंगिकान् अब्रवीत्तु जनाः भगवतो जयघोषैः समस्तं परिसरं

जयघोषों के बीच 108 कलशों को मस्तक पर धारण किए हुए इन्द्राणियों तथा सैकड़ों स्कूली बच्चों (जैन विद्यालय, प्रयाग) सहित जुलूस में भगवान को पालकी में विराजमान करके माताजी एवं हम सभी ने संघ सहित महाकुंभ मेला परिसर में प्रवेश किया। जहाँ **''ऋषभदेव मण्डप''** में झण्डारोहण तथा भगवान का पंचामृत अभिषेक एवं महाशांतिधारा सम्पन्न की गई तथा प्रतिदिन मध्यान्ह में संघस्थ बहनों एवं प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली द्वारा अनेकों विधानों का आयोजन किया गया, जिसमें जैनसमाज के अलावा अजैनों ने भी पधारकर जैनधर्म की महिमा को जाना।

➢**भगवान ऋषभदेव सनातन संस्कृति संगम–**

19 जनवरी 2001 को मेला परिसर में मंगल प्रवेश के साथ ही विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता हमें अपने पाण्डाल में ले गए। उस समय मैंने सिंघल जी के आग्रह विशेष पर आज के विश्व की सबसे ज्वलंत समस्या आतंकवाद से निपटने हेतु भगवान ऋषभदेव की अहिंसामयी नीति एवं आपसी बन्धुत्व तथा संगठनरूप शक्ति पर धर्मसंसद के मंच से समस्त साधु-सन्तों के बीच प्रकाश डाला, जिसे सुनकर उन्हें लगा कि अहिंसा ही एक ऐसा प्रबल साधन है, जिसके द्वारा हम विश्व में शांति व मैत्रीभाव की पुनर्स्थापना कर सकते हैं।

वास्तव में अहिंसा धर्म का जितना सूक्ष्म विवेचन आचार्यों ने जैनधर्म में किया है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता है। 20 जनवरी को माताजी ने इसी मंच से भगवान ऋषभदेव को मानवीय संस्कृति का प्रथम प्रतिपादक सिद्ध करते हुए जब उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वशांति के लिए सर्वाधिक प्रासंगिक बताया, तो अपार जनसमूह ने भगवान के जयघोषों से समस्त परिसर को

गुंजायमानमकुर्वन्। यदि इदं कथितं स्यात् यत् महाकुम्भमेलापकस्य मध्ये जैनधर्मस्यायं ज्वाज्वल्यमान सूर्योदयः युग–युगान्तरेभ्यः शाश्वतस्येतिहासस्य निर्माणमकरोत्, तु न कापि अतिशयोक्तेर्वार्ता।

भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणोत्सवे मेलापकपरिसरे जैनपाण्डाले प्रथमबारमेव सहस्राष्ट निर्वाणमोदकाः समर्पिताः–**अयमेकः अनुद्भुत संयोगः आसीत्, यदा मेलापकपरिसरस्य मध्ये प्रथमबारं जैनमंचात् भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणमहोत्सवः बहुशोभयाऽऽयोजितोऽभवत्। निर्वाणदिवसस्य पूर्वसन्ध्यायां 21 जनवरी दिने अस्मिन्नेव मण्डपे विशिष्टानामतिथीनां मध्ये यदा सहस्राष्ट निर्वाणमोदकाः समर्पिताः अभवन्, तु उपस्थिनां अतिथीनां भक्तानां च भावधारा कोटिवर्षाणां पूर्वस्येतिहासं प्रस्तुतमकरोत्।**

भक्त्याः आयोजनेन गद्गदभूत्वा संघपतिः लालामहावीरप्रसादोऽवदत–मातः! मम सर्वेभ्यः सहस्राष्ट स्थालीनां मोदकानां च वितीर्णस्य भावोऽस्ति पुनः मातुराज्ञां प्राप्य सः सर्वेभ्यो जैनाजैनेभ्यः स्थालीं मोदकान् च व्यतरत्, कलशयात्रायां च शताष्ट महिलाभ्यः कलशान् शटिकाश्चोपाहरत्। विश्वहिन्दूपरिषदः कार्यकारि अध्यक्षस्य श्री अशोकसिंघलस्य, भारतीयजीव–जन्तुकल्याणमण्डलस्य राष्ट्रीयाध्यक्षस्य न्यायमूर्तेः श्री गुमानमल लोढा महोदयस्य, आचार्यधर्मेन्द्रस्य, गोवंशरक्षायाः मांसनिर्यात विरोधपरिषदश्च राष्ट्रीयोपाध्यक्षस्य श्री के. एल. गोधा महोदयस्य–उदयपुर, श्री हुकमचंद सांवला इन्दौरस्य आदीनां महानुभावानामु–पस्थित्या भगवतः ऋषभदेवस्य जैनसंस्कृतौ च तेषां ओजस्विभि संभाषणैः सभा अत्यन्त

गुंजायमान कर दिया। अगर यह कहा जाए कि महाकुंभ मेले के मध्य जैनधर्म के इस जगमगाते सूर्योदय ने युगों-युगों के लिए शाश्वत इतिहास का निर्माण कर दिया, तो शायद कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं होगी।

➢भगवान ऋषभदेव निर्वाणोत्सव पर मेला परिसर के जैन पाण्डाल में 1008 निर्वाणलाडू चढ़ाए गए–

यह एक अनहोना संयोग था, जब मेला परिसर के मध्य प्रथम बार जैनमंच से भगवान ऋषभदेव का निर्वाण महोत्सव इतनी धूमधाम से मनाया जा रहा था। निर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर 21 जनवरी को इसी मण्डप में विशिष्ट अतिथियों के बीच जब 1008 निर्वाण लाडू चढ़ाए गए, तो उपस्थित जनसमूह के उत्साह एवं भक्तिभाव की धारा ने करोड़ों वर्ष पूर्व का इतिहास सजीव कर दिया।

भक्ति आयोजन से गद्गद हुए संघपति लाला महावीर प्रसाद जी बोले–माताजी! मेरी सभी को 1008 थाल एवं लाडू बांटने की भावना है पुनः उन्होंने माताजी की आज्ञा पाकर जैन-अजैन सभी को थाल एवं लाडू वितरित किए तथा कलश यात्रा में 108 महिलाओं को कलश, साड़ियाँ आदि भेंट की। विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल, भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री गुमानमल लोढ़ा, आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी, गोवंश रक्षा एवं मांस निर्यात विरोध परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-श्री के.एल. गोधा-उदयपुर, श्री हुकुमचंद साबला-इंदौर आदि महानुभावों की उपस्थिति एवं जैन संस्कृति तथा भगवान ऋषभदेव पर हुए उनके ओजपूर्ण

गरिमापूर्ण वातावरणे सम्पन्नाभवत्। अस्मिन् चतुर्दिवसीयकार्यक्रमे ''भगवतः ऋषभदेवस्य शताधिकचित्राणां चित्रप्रदर्शन्याः'' **माध्यमेन भारतीयसंस्कृतेः व्यसनमुक्तेः अहिंसाधर्मस्य भगवतोः ऋषभदेवमहावीरयोश्च जीवनदर्शनेन जनसमूहः परिचितोऽभूत्। पुनः नवनिर्मिते प्रयागतीर्थेऽपि माघकृष्ण चतुर्दश्यां** ''भगवतः ऋषभदेवस्य निर्वाणकल्याणकदिवसे'' **निर्वाण मोदकाः समर्पिताः।**

दीक्षास्थली तीर्थे प्रथमबारं व्रताचारः बालकस्य मुण्डनं नामकरणं चाभवत्–**मानवजीवने संस्काराणामत्यन्तमेव महत्त्वमस्ति, बालकः सच्चरित्रतायाः पाठं प्रथमबार स्व गृहादेव पठति। यदि बालकस्य संस्कारा सन्ति तु देशधर्मसमाजकुलेभ्यः श्रेष्ठो नागरिकः, श्रेष्ठः श्रावकः, उत्तमकार्यकर्ता, श्रेष्ठश्च कुलदीपक उपलभ्यते, कुसंस्काराणां च प्रभावं सर्वे मन्यन्ते। जैनधर्मे जीवस्य गर्भे आगमनस्य पश्चात् मृत्युपर्यन्तं षोडश संस्काराः मताः। यदि मातरो गुरुसान्निध्यं प्राप्य एतान् संस्कारविधीन् क्रमशः सम्पन्नान् कुर्वन्ति, तु सन्तानं निश्चयेन प्रतिभासम्पन्नं तेजस्वि च भवति।**

महानुभावाः! संस्काराः एव तु पाषाणस्य मूर्तौ क्रियन्ते, तदैव तु सा भगवान् भूत्वा अस्मभ्यं जैनत्वस्य पाठं पाठयति। मातुः सदैव इयं प्रेरणा प्रत्येक गृहस्थाय भवति यत् यथासंभव प्रत्येक श्रावकः एतान् षोडशसंस्कारान् स्वगृहे जन्मप्राप्तौ गर्भस्थशिशौ अवश्यमेव प्रत्यारोपितान् कुर्यात्। तस्याः प्रेरणां प्राप्य तस्याः गृहस्थावस्थायाः अनुजः श्री प्रकाशचन्द्रः

संभाषणों से सभा अत्यन्त गरिमामयी वातावरण में सम्पन्न हुई। इस चतुर्दिवसीय कार्यक्रम में **''भगवान ऋषभदेव चित्र प्रदर्शनी''** के सैकड़ों चित्रों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, व्यसनमुक्ति, अहिंसा धर्म एवं भगवान ऋषभदेव-महावीर स्वामी के जीवन दर्शन से जनसाधारण को परिचित कराया गया। पुनः नवनिर्मित प्रयाग तीर्थ में भी माघ कृष्णा चतुर्दशी को **''भगवान ऋषभदेव निर्वाणकल्याणक दिवस''** पर निर्वाणलाडू चढ़ाया गया।

➢**दीक्षास्थली तीर्थ पर प्रथम बार हुआ व्रताचार एवं बालक का मुण्डन व नामकरण संस्कार –**

मानव जीवन में संस्कारों का अत्यधिक महत्व है। The Charity begin at home अर्थात् बालक सच्चरित्रता का प्रथम पाठ अपने घर से ही सीखता है। यदि जीवन में सुसंस्कार हैं तो देश, धर्म, समाज व कुल को एक अच्छा नागरिक, अच्छा श्रावक, अच्छा कार्यकर्ता और अच्छा कुलदीपक मिलता है और कुसंस्कारों का प्रभाव तो सभी जानते हैं। जैनधर्म में जीव के गर्भ में आने से लेकर मृत्युपर्यन्त षोडश संस्कार माने गए हैं। अगर माताएं गुरु सानिध्य में जाकर इन सभी संस्कार विधि को क्रमशः सम्पन्न करती हैं, तो सन्तान वास्तव में बहुत ही प्रतिभासम्पन्न व तेजस्वी होती है।

महानुभावों! संस्कार ही तो पाषाण की मूर्ति पर किए जाते हैं, जब वह भगवान बनकर हमें जैनत्व का पाठ सिखाती है। पूज्य माताजी की सदैव यही प्रेरणा प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिए रहती है कि जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक श्रावक को इन षोडश संस्कारों को अपने घर में जन्म लेने वाले गर्भस्थ शिशु में अवश्य प्रत्यारोपित करना चाहिए। उनकी ही प्रेरणा प्राप्त कर उनके गृहस्थावस्था

समये–समये स्वगृहस्य वधूः नवजात शिशुं च मातुः समीपे आनीय तस्य व्रताचार, मुण्डन, नामकरण, लेखन, प्रथमबारचलनमादीन् संस्कारान् अकारयत्। 40 दिनानां शिशुं गृहीत्वा यदा माता प्रथमबारं मन्दिरं गच्छति, तदा तत्क्रिया अवधप्रान्ते व्रताचार–वर्ताचार कथ्यते।

तस्मै अयमेकः सुखदः संयोगः एवासीत्, यत् यस्मिन् प्रयागतीर्थे भगवान ऋषभदेवः अद्यतः कोटिवर्षेभ्यः पूर्वं प्रथमं केशलुंचनं कृत्वा मुनिपरम्परायाः अस्मिन् युगे प्रारम्भीकरणमकरोत्, तस्यैव तीर्थस्य पवित्रेऽस्थाने आगत्य सर्वप्रथमं तस्मै स्वपुत्रस्य राजनजैनस्य पत्न्याः प्रियंकायाः तयोश्च नवजातशिशोः व्रताचार–मुण्डन–नामकरणस्य च सुयोगः प्राप्तोऽभूत्। 27 जनवरी दिने सर्वप्रथमं बालकं जिनमन्दिरस्य दर्शनं कारयित्वा पश्चात् तः पूज्यमातुः समीपमानीतः तु माताश्रीः शिशोः कर्णे णमोकारमंत्र श्रावयित्वा तं जैनं चकार, पुनस्तस्य उत्सवः नामाकरोत्। इदं श्री प्रकाशचन्द्रस्य पुण्यमेवासीत् यत् तस्य प्रत्येकपुत्र–पुत्री–प्रपोत्रः– प्रपौत्रीश्च स्वयं पूज्यमातुः श्रीमुखेन नाम प्राप्नुवन्।

अत्र तु प्रसंगं लेखनीबद्धं कर्तुं केवलमिदं तात्पर्यमस्ति यत् प्रत्येक जैन श्रावकः अनया घटनया एनां शिक्षां प्राप्नोतु यत् वयं स्व पुत्र–पुत्रीणां–पौत्राणां च नामकरणानि आदयः संस्कारा गुरुणां समक्षमेव कुर्याम। येन गुरुप्रदत्तानां तेषां संस्काराणां माध्यमेन प्रत्येक बालक–बालिकाः शिक्षां प्राप्य स्व भाविजीवनस्य निर्माणं कर्तुं शक्नुयुः।

के छोटे भाई श्री प्रकाशचंद जी समय-समय पर अपने घर की बहुओं व उनके नवजात शिशु को माताजी के पास लाकर उनके व्रताचार, मुण्डन, नामकरण, लेखन, प्रथम बार चलना आदि संस्कारों को करवाते रहते थे। 40 दिन के बच्चे को लेकर जब माँ पहली बार मंदिर जाती है, उसे अवध प्रान्त में व्रताचार – वर्ताचार कहते हैं।

उनके लिए यह एक सुखद संयोग ही था कि जिस प्रयाग तीर्थ में भगवान ऋषभदेव ने आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम केशलोंच कर मुनि परम्परा का इस युग में प्रारंभीकरण किया था, उसी तीर्थ की पवित्र गोद में आकर सर्वप्रथम उन्हें अपने सुपुत्र राजन जैन की पत्नी श्रीमती प्रियंका एवं उनके नवजात शिशु का व्रताचार, मुण्डन एवं नामकरण संस्कार करवाने का सुयोग प्राप्त हुआ। 27 जनवरी को सर्वप्रथम बालक को जिनमंदिर के दर्शन करवाकर जब वे लोग उसे पूज्य माताजी के पास लाए तो माताजी ने शिशु के कान में णमोकार मंत्र सुनाकर उसे जैन बनाया पुनः उसका 'उत्सव' नाम रखा। यह प्रकाशचंद जी का पुण्य ही रहा है कि उनके प्रत्येक पुत्र-पुत्री, पोते-पोतियों यहाँ तक कि स्वयं उनको भी पूज्य माताजी के श्रीमुख से नाम प्राप्त हुआ।

यहाँ यह प्रसंग लेखनीबद्ध करने का तात्पर्य मात्र इतना है कि प्रत्येक जैन श्रावक को इस बात से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि हमें अपने पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोते आदि के नामकरण आदि संस्कार गुरुओं के समक्ष ही करना चाहिए ताकि गुरु द्वारा प्रदत्त उन संस्कारों के माध्यम से प्रत्येक बालक-बालिका शिक्षा प्राप्त कर अपने भावी जीवन का निर्माण कर सके।

साकारोऽभवत् तीर्थस्य विकसितं स्वरूपम्–**मात्रं केषांचित् दिनानां अल्पावधौ विकसितं स्वरूपं प्राप्तवते दीक्षास्थली तीर्थाय यदा मातुः सदृश्याः साध्व्याः सान्निध्यं प्राप्तं, तु सः तया प्रवाहितायां अजस्रज्ञानधारायां अक्षयवटः इव अभिसिंचितो भूत्वा स्व ज्ञानच्छायया देशं विदेशान् च संतृप्तान् कर्तुं प्रारभत्। इदानीं तु पश्यन्–पश्यन्नेव स समयोऽपि उपस्थितोऽभवत्, यदा सर्वासामेव प्रतिमानां प्राणप्रतिष्ठाः कृत्वा ताः भगवतः रूपेण प्रतिष्ठिताः भवेयुः। अतः मातुः प्रेरणया श्री रवीन्द्रः अन्ये च कार्यकर्तारः 4 फरवरी तः 8 फरवरी 2001 पर्यन्तं** ''भगवतः ऋषभदेवस्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठायाः महाकुम्भमहामस्तकाभिषेकस्य'' **चायोजनमकुर्वन्, यस्य ध्वजारोहणं मातुः अग्रण्यो भक्तः श्री अनिल जैन, प्रीतविहार–दिल्ली 29 जनवरी 2001 दिने अकरोत्। 4 फरवरी दिनात् 8 फरवरी पर्यन्तं गर्भ–जन्म–दीक्षा–ज्ञान–निर्वाणानां पंचकल्याणकानां दिग्दर्शनं कारितम् आगमोक्ताश्च सर्वाः आन्तरिक क्रियाः सम्पाद्य पाषाण प्रतिमा च जगत् पूज्या कृता।**

तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्याः तीर्थस्य प्रयागस्य लोकार्पणम्–**दिनांक 4 फरवरी 2001 दिने मध्याह्ने 1 वादनसमये केन्द्रीय मानवसंसाधनविकासमंत्री भारतवर्षशासनस्य श्री मुरली मनोहर जोशी महोदयः उत्तरप्रदेशस्य च लोकनिर्माण विभागस्य राज्यमंत्री श्री राकेशदत्तत्रिपाठी पूज्यमातुर्दर्शनार्थं समागतौ जोशी महोदयश्च तीर्थस्य लोकार्पणं कृत्वा परमप्रसन्नतां व्यक्तामकरोत्। यदा वयं तं स्वप्रवचन माध्यमेनास्यतीर्थस्य महत्तां, जैनधर्मस्य**

➢साकार होता तीर्थ का विकसित स्वरूप–

मात्र कुछ माह की ही अल्पावधि में विकसित स्वरूप प्राप्त करते दीक्षास्थली तीर्थ को जब पूज्य माताजी जैसी महान साध्वी का सानिध्य प्राप्त हुआ, तो वह उनके द्वारा प्रवाहित अजस्र ज्ञानधारा में अक्षयवट की भांति अभिसिंचित होकर देश-विदेश को अपनी ज्ञानछाया से संतृप्त करने लगा और अब तो देखते ही देखते वह समय भी आ गया, जब सभी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा कर उन्हें जगत्पूज्य भगवान बनाना था। अतः पूज्य माताजी की प्रेरणा से ब्र. रवीन्द्र जी व अन्य कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा 4 फरवरी से 8 फरवरी 2001 तक **''भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक''** का विराट आयोजन किया गया, जिसका झण्डारोहण 29 जनवरी 2001 को माताजी के अनन्य भक्त श्री अनिल जैन (कमल मंदिर)-प्रीतविहार, दिल्ली ने किया। 4 फरवरी से 8 फरवरी तक गर्भ, जन्म, दीक्षा आदि पांचों कल्याणकों का दिग्दर्शन कराया गया तथा समस्त आगमोक्त अंतरंग क्रियाएं सम्पन्न कर पाषाण प्रतिमा को जगत्पूज्य बनाया गया।

➢तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ का लोकार्पण–

4 फरवरी 2001 को मध्यान्ह 1 बजे केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री (भारत सरकार) श्री मुरली मनोहर जोशी एवं उ.प्र. लोक निर्माण राज्यमंत्री श्री राकेश दत्त त्रिपाठी पूज्य माताजी के दर्शन हेतु पधारे और जोशी जी ने तीर्थ का लोकार्पण कर परम प्रसन्नता व्यक्त की। उन्हें जब हम लोगों ने अपने प्रवचन के माध्यम से इस तीर्थ की महत्ता, जैनधर्म की प्राचीनता एवं पाठ्य

प्राचीनतां, पाठ्यपुस्तकानां माध्यमेन जनभ्रान्तेरुत्पादकानां अंशानां विषये अकथयाम तु सोऽब्रवीत्–

मातः! अहं स्वात्मानं धन्यं मन्ये यत् भवत्याः प्रेरणया यस्य तीर्थस्य निर्माणमभवत् अहं तस्य लोकार्पणहेतवे सुअवसरं प्राप्नवम्। अवश्यमेव वयं स्वपूर्व जन्मनि कानिचित् श्रेष्ठकार्याणि अकुर्म, यदस्मभ्यं भारतस्य सन्तानां पुण्यसाधकानां तपसां च फलं प्राप्यते। जैनधर्मः शाश्वतो धर्मोऽस्ति, सः न कस्याः अपि जातेः सम्प्रदायस्य वा अस्ति, किन्तु मानवधर्मोऽस्ति। मात्रा श्रवणानन्तरं मम ध्याने इयं वार्ता आगच्छत् पाठ्यपुस्तकानि चाहमपश्यम्, सर्वेषामेव धर्माणां, वास्तविकअंशानां सत्यता स्यात्, केऽपि धर्मानुयायिनः अघातपूर्णाः न स्युः, असन्तोषापमानौ न स्याताम्, एतां वार्तां ध्याने कुर्वन् आगामिपाठ्यक्रमे निश्चितरूपेण परिवर्तनं भविष्यति।

संगमस्य जलेन प्रभोर्जन्माभिषेकोऽभवत्–**प्रयागे पंचकल्याणकस्य मध्ये 5 फरवरी दिने सौधर्मेन्द्रः श्री आनन्द कुमारो जैनः–मेरठ निवासी स्वेन्द्रपरिवारेण सह संगमस्य तटात् जलमानेतुमैरावतं गजमुपविश्य भव्यशोभायात्रया सह तत्रागच्छत्, तस्मिन् समये संगमतटे गीत–भजन–नृत्यपूर्वकं निर्गतायास्तस्याः शोभायात्रायाः दृश्यमेवालौकिकमासीत्, सा शोभायात्रा संगमतटमागत्य एकस्यां सुन्दरश्रेण्यां पंक्तिबद्धाभवत्, या वस्तुतः यथार्थस्य जन्माभिषेकस्या–भासमकारयत्। सर्वे इन्द्र इन्द्राण्यः कलशान् संगमजलेन पूर्णान् कृत्वा पुनः भव्यशोभायात्रया न्यवर्तन्त। तीर्थपरिसरे च नवनिर्मितायां पाण्डुकशिलायां जिनशिशोः शताष्ट कलशैः स्नानं कारयित्वा शची–श्रीमती अलका जैन मेरठ निवासिनी तीर्थंकरशिशुं वस्त्राभरणैरलंकृतं कृत्वा पितरौ समर्पयत्।**

पुस्तकों के माध्यम से लोगों को दिग्भ्रमित किए जाने वाले अंशों के बारे में बताया तो वे बोले–

माताजी! मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि आपकी प्रेरणा से जिस तीर्थ का निर्माण हुआ है मुझे उसके लोकार्पण हेतु आने का सुअवसर मिला। जरूर हमने पिछले जन्मों में कुछ अच्छे कार्य किए होंगे, जो हमें भारत के आध्यात्मिक संतों की पुण्य साधना एवं तपस्या का फल मिलता है। जैनधर्म शाश्वत धर्म है, वह किसी जाति सम्प्रदाय का नहीं बल्कि मानवधर्म है। माताजी से चर्चा होने पर मेरे ध्यान में बात आई और मैंने पुस्तकों को देखा, सभी धर्मों के वास्तविक अंशों की सत्यता रहे, किसी धर्म के मानने वालों को चोट न पहुँचे, असंतोष व अपमान न हो, इस बात का ध्यान रखते हुए आगे आने वाले पाठ्यक्रम में निश्चित बदलाव होगा।

➢संगम के जल से हुआ प्रभु का जन्माभिषेक–

प्रयाग में पंचकल्याणक के मध्य 5 फरवरी को सौधर्म इन्द्र श्री आनन्द कुमार जैन-मेरठ अपने इन्द्र परिवार के साथ संगम के तट से जल लाने हेतु ऐरावत हाथी पर बैठकर भव्य जुलूस के साथ वहाँ गए, उस समय संगम तट पर गीत, भजन, नृत्यपूर्वक निकली उस शोभायात्रा का दृश्य ही अलौकिक था, वह जुलूस संगम के तट पर जाकर एक सुन्दर सी कतार में पंक्तिबद्ध हो गया, जो कि सचमुच के जन्माभिषेक जैसा आभास करवा रहा था। सभी इन्द्र-इन्द्राणी कलशों में संगम का जल भरकर पुनः भव्य जुलूसपूर्वक वापस आए और तीर्थ परिसर में नवनिर्मित पाण्डुकशिला पर जिनशिशु का 108 कलशों से न्हवन कर शचि (श्रीमती अलका जैन-मेरठ) ने तीर्थंकर शिशु को वस्त्राभरणों से अलंकृत कर माता-पिता को सौंप दिया।

तीर्थंकरस्य भगवतो जन्माभिषेको मुनिभिरपि दर्शनीयो विद्यते–**प्रसंगोपात्तहमत्रैकां वार्तां कथयितुमिच्छामि, यतो हि विषयः प्रवर्तते, तीर्थंकरस्य भगवतो जन्माभिषेकं, वर्तमाने केचिद् साधवः इदमुक्त्वा जन्माभिषेकमहोत्सवस्य शोभायात्रायां पाण्डुकशिलायां जन्माभिषेकं दृष्टुं न गच्छन्ति यत्** ''साधवः केवलं दीक्षाकल्याणके एव गच्छेयुः, जन्मकल्याणके ते भागं गृहीतुं न शक्नुवन्ति।'' **अस्मिन् विषये आगमे प्रमाणं प्राप्यते यत् चारणऋद्धिधारिणो मुनयोऽपि जिनेन्द्रभगवतो जन्माभिषेकं महता भक्तिभावेन पश्यन्ति। यथा महापुराणग्रन्थे वर्णनं प्राप्यते–**

सानन्दं त्रिदशेश्वरैः सचकितं देवीभिरुत्पुष्करैः
सत्रासं सुरवारणैः प्रणिहितैरात्तादरं चारणैः।
साशंकं गगनेचरैः किमिदमित्यालोकितो यः स्फुरन्
मेरोर्मूर्द्धिन स नोऽवताज्जिनविभोर्जन्मोत्सवाम्भः प्लवः।।216।।(पर्व 13)

अर्थात् मेरोः पर्वतस्य मस्तके स्फुरायमानोऽभवत् जिनेन्द्रभगवतो जन्माभिषेकस्य सः जलप्रवाहः अस्मान् सर्वान् रक्षतु, यं इन्द्राः महतानन्देन, देव्यः आश्चर्येण, देवानां गजाः शुण्डामुच्चैर्विधाय महताभयेन, चारणऋद्धिधारिणो मुनयः एकाग्रचित्तेन महता आदरेण, विद्याधराश्च ''एतत् किं'' इत्याशंकया अपश्यन्।

एतेन सिद्ध्यति यत् वर्तमाने दिगम्बरजैनमुनयः आचार्याः उपाध्यायादयः जन्मकल्याणक–शोभायात्रायां सम्मिलने रंचमात्रमपि दोषं नान्वभवेयुः। विंशतिशताब्द्याः प्रथम आचार्यस्य

➢तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक मुनियों द्वारा भी दर्शनीय है–

प्रसंगोपात्त यहाँ एक बात अवश्य बताना चाहूँगी। चूंकि विषय चल रहा है तीर्थंकर भगवान के जन्माभिषेक का और वर्तमान में कुछ साधु यह कहकर जन्मकल्याणक महोत्सव के जुलूस एवं पाण्डुकशिला पर होने वाले जन्माभिषेक को देखने नहीं जाते हैं कि **''साधुओं को मात्र दीक्षाकल्याणक आदि में जाना चाहिए, जन्मकल्याणक में वे भाग नहीं ले सकते हैं।''** इस विषय में आगम में प्रमाण मिलता है कि चारणऋद्धिधारी मुनि भी जिनेन्द्र भगवान का जन्माभिषेक बड़े भक्ति-भाव से देखते हैं। जैसा कि महापुराण नामक आर्ष ग्रंथ में वर्णन आया है–

सानन्दं त्रिदशेश्वरैः सचकितं देवीभिरुत्पुष्करैः,
सत्रासं सुरवारणैः प्रणिहितैरात्तादरं चारणैः।
साशंङ्कं गगनेचरैः किमिदमित्यालोकितो यः स्फुरन्,
मेरोर्मूर्द्धिन स नोऽवताज्जिनविभोर्जन्मोत्सवाम्भः प्लवः।।216।। (पर्व 13)

अर्थात् मेरुपर्वत के मस्तक पर स्फुरायमान होता हुआ जिनेन्द्र भगवान के जन्माभिषेक का वह जलप्रवाह हम सबकी रक्षा करे, जिसे कि इन्द्रों ने बड़े आनन्द से, देवियों ने आश्चर्य से, देवों के हाथियों ने सूंड ऊँची करके बड़े भय से, चारण ऋद्धिधारी मुनियों ने एकाग्रचित्त होकर बड़े आदर से और विद्याधरों ने ''यह क्या है'' ऐसी शंका करते हुए देखा था।''

इससे सिद्ध होता है कि वर्तमान के दिगम्बर मुनि, आचार्य या उपाध्याय आदि को जन्मकल्याणक जुलूस में सम्मिलित होने में रंचमात्र भी दोष नहीं है। बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती

चारित्रचक्रवर्तिनः श्रीशान्तिसागरस्य परम्परायां आचार्यः श्री वीरसागरः, श्री शिवसागरः आचार्यो धर्मसागरश्चान्येऽआचार्याः चतुर्विधेन संघेन सहिताः जन्माभिषेकमपश्यन्। तीर्थंकरस्य भगवतो जन्मकल्याणको दिव्योऽलौकिकश्चभवति। अतः सामान्य मुनयः आचार्याश्च तस्य जन्माभिषेकं दृष्टुं कमपि विकल्पं न कुर्युः। तीर्थंकरस्य महिम्नो वर्णनं तु अनिर्वचनीयं विद्यते।

अखिलभारतीय महिलासंगठनस्याधिवेशनम्–**5 फरवरी दिने प्रयागे पूज्यमातुः प्रेरणया गठितस्य अ.भा.दिगम्बर जैनमहिलासंगठनस्य अधिवेशनमभवत्, यस्मिन् देशस्य प्रतिकोणेभ्यः संगठनस्य पदाधिकारिण्यः भगिन्यः समागत्य स्वविचारान् प्रगतिविवरणं च प्रस्तुताः अकुर्वन्। अधिवेशनस्य सभाध्यक्षा श्रीमती कुसुमलता जैना, दिल्ली निवासिनी धर्मपत्नी लाला महावीर प्रसादस्य संघपतेः, मुख्यातिथिः श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी पूर्व नगराध्यक्षा इलाहाबादस्यासीत्। सा अस्मिन्नवसरे समागत्य अपारां प्रसन्नतां व्यक्ती कुर्वन्ती अकथयत् यत् पूज्यमाता ज्ञानस्य देव्याः सरस्वत्याः रूपेणास्ति, सा स्व सम्पूर्णमेव जीवनं परोपकाराय समर्पितमकरोत्, एतेनैतत् प्रतीयते यत् सन्तऋषीणां चास्यां भारतभूमौ अस्माकं महिलाः बहुयोगदानमकुर्वन्। भवत्याः आशीर्वादेन तपस्यया च प्रत्येकमानवो निश्चितमेव मार्गदर्शनं प्राप्स्यति।**

जैनधर्मो बहु प्राचीनधर्मोऽस्ति। भगवतः ऋषभदेवस्य नाम्नैवास्य स्थानस्य प्रयागः इति नामकरणमभवत्, एषा भूमिस्तस्य चरणधूलिना पुनीता अभवत्। अस्यां धरित्र्यां पूज्यमाताश्रीः आशीर्वादप्रदानाय समागता विद्यते। अ.भा.दि.जैनमहिलासंगठनस्य कर्मठतां कुशलतां

श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज, आचार्य श्री धर्मसागर महाराज आदि चतुर्विध संघ सहित जन्माभिषेक देखते थे। तीर्थंकर भगवान का जन्मकल्याणक दिव्य अलौकिक होता है अतः सामान्य मुनि एवं आचार्यों को उनका जन्माभिषेक देखने में कोई विकल्प नहीं करना चाहिए। तीर्थंकर की महिमा का वर्णन तो अनिर्वचनीय है।

➢अखिल भारतीय दि. जैन महिला संगठन का अधिवेशन–

5 फरवरी को प्रयाग में पूज्य माताजी की प्रेरणा से गठित अ.भा.दि. जैन महिला संगठन का अधिवेशन हुआ, जिसमें भारत के कोने-कोने से संगठन की पदाधिकारी बहनों ने पधारकर अपने विचार एवं प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। अधिवेशन की सभाध्यक्ष श्रीमती कुसुमलता जैन-दिल्ली ध.प. महावीर प्रसाद जैन (संघपति) एवं मुख्य अतिथि श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी (पूर्व मेयर-इलाहाबाद) थीं। उन्होंने इस अवसर पर पधारकर अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य माताजी ज्ञान की देवी सरस्वती रूप हैं, इन्होंने अपना पूरा जीवन परोपकार हेतु समर्पित किया है, इससे ऐसा लगता है कि सन्तों और ऋषियों की इस भारत भूमि में हमारी महिलाओं ने बहुत योगदान दिया है। आपके आशीष व आपकी तपस्या से हर मानव को निश्चित ही मार्गदर्शन मिलेगा।

जैनधर्म बहुत प्राचीन धर्म है, भगवान ऋषभदेव के नाम से ही इस स्थान का नाम प्रयाग पड़ा, यह धरती उनकी चरणधूलि से पवित्र हुई है। इसी धरती पर माताजी आशीर्वाद देने हेतु पधारी है।

चापश्यम्। केवलं पंचवर्षाणां कार्यकाले कुशलतापूर्विकायै समाजसेवायै भवन्त्यो वर्धापनस्य पात्राणि सन्ति। अस्माद् शिक्षिताः महिलाः शिक्षां प्रसारयिष्यन्ति। अहिंसाया सत्कर्मणां च कार्याणि महिलाः मात्रा ग्रहणं कृत्वा जनेषु प्रसारयिष्यन्ति, अस्यां, दीक्षास्थल्यां मातुर्योगदानं प्रयागं समृद्धं करोति। भविष्ये माताश्रीः यानपि निर्देशान् दास्यति, अहं तेषां परिपालनं करिष्यामि। अस्य महाकुम्भस्य अवसरे भवतीनां सर्वासां प्रयागनगरे स्वागतमस्ति। पुनोऽहं माता च समस्ताभ्यः महिलासंगठनस्य भगिनीभ्यः श्रीमती जोशी महोदयायै च मंगल आशीर्वादं दत्तवत्यः। विदेशपर्यन्तं च भगवतः ऋषभदेवस्य प्रचारं–प्रसारं च कर्तुं ताभ्यः प्रेरणां अदाम्। अग्रेऽपि भगवतो महावीरस्य 2600 तमे जन्मनो महोत्सवे प्रचारं–प्रसारं कर्तुं महिला प्रोत्साहिताः।

प्रयागतीर्थे प्रथमबारं पूज्यया मात्रा द्वेकन्ये ब्राह्मी सुन्दरी च परिकल्प्य विद्यादानम्–**पंचकल्याणके प्रथमबारं दृश्यमानमिदं दृश्याद्भुतमेवासीत, यदा पूज्यामाता भगवतः ऋषभदेवस्य पुत्र्योः ब्राह्मी सुन्दर्योः विद्याध्ययनस्य दृश्यं दर्शयन्ती स्वयं स्वहस्ताभ्यां रजतस्य स्थाल्यां द्वेकुमार्यौ कन्ये विद्याध्ययनमकारयत्, यस्मिन् दृश्ये ब्राह्मी पात्रं भवितुं सौभाग्यं मेरठ निवासिनीं कुमारी मानवी जैना सुन्दरीं च भवितुं इलाहाबाद निवासिनी रूबी जैनां प्राप्तमकुरुताम्। अनेन सहैव भगवता ऋषभदेवेन प्रदत्तस्य विद्याध्ययनस्य राजनीतेश्च वर्णनं माता श्रीः स्वोपदेशेनाकरोत्।**

अस्मिन्नवसरे मुख्यातिभिरूपेण न्यायमूर्ति श्री डी.पी.एस. चौहानः, मुख्याधिकारी मध्यप्रदेश लीगल सर्विस अथारिटी जबलपुरस्य, डॉक्टर अरविन्द कुमारो जैनः–स्वास्थ्य

अ.भा.दि. जैन महिला संगठन की कर्मठता, कार्यकुशलता देखी, मात्र 5 वर्षों में की गई समाजसेवा हेतु आप बधाई की पात्र हैं। हममें से शिक्षित महिलाएँ शिक्षा का प्रचार करेंगी, अहिंसा व सत्कर्म के कार्य को माताजी से सीखकर लोगों तक फैलाएंगी, इस दीक्षास्थली में माताजी का योगदान प्रयाग को समृद्ध कर रहा है, भविष्य में माताजी जो निर्देश देंगी, मैं उसका परिपालन करूँगी। इस महाकुंभ के अवसर पर आप सबका प्रयाग नगर में स्वागत है। पुनः पूज्य माताजी ने एवं मैंने सभी महिला संगठन की बहनों एवं श्रीमती जोशी को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया तथा विदेशों तक भगवान ऋषभदेव का प्रचार करते हुए, आगे भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मोत्सव पर भी प्रचार-प्रसार करने की उन्हें प्रेरणा प्रदान की।

➢प्रयाग तीर्थ पर प्रथम बार पूज्य माताजी द्वारा दो कन्याओं को ब्राह्मी-सुन्दरी बनाकर विद्यादान–

पंचकल्याणक में प्रथम बार दिखाया जाने वाला यह दृश्य अद्भुत ही था, जब पूज्य माताजी ने भगवान ऋषभदेव की ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों के विद्याध्ययन के दृश्य को दर्शाते हुए स्वयं अपने हाथों से रजत थाल में दो क्वांरी कन्याओं को विद्याध्ययन करवाया, जिसमें ब्राह्मी बनने का सौभाग्य-कु. मानवी जैन-मेरठ एवं सुन्दरी बनने का सौभाग्य-कु. रूबी जैन -इलाहाबाद को प्राप्त हुआ। इसके साथ ही भगवान ऋषभदेव द्वारा दिये गये विद्यादान एवं राजनीति का वर्णन पूज्य माताजी ने अपने उपदेश में किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति श्री डी.पी.एस. चौहान (चेयरमैन-म.प्र. लीगल सर्विस अथॉरिटी, जबलपुर), डॉ. अरविंद कुमार जैन-स्वास्थ्य राज्यमंत्री (उ.प्र.)

राज्यमंत्री उत्तर प्रदेशः नारदर्न इण्डिया पत्रिकायाः सम्पादकः श्री प्रेमशंकर दीक्षितः आगच्छन्, येषां समितिपक्षतः स्वागतमभवत्। माननीयः स्वास्थ्य राज्यमंत्री अकथयत् यत् सा सर्वा व्यवस्था, या वर्तमानेऽस्ति, भगवता ऋषभदेवेन दत्तास्ति, भगवान् सर्वेभ्यो जीवनं जीवितुं कलामुपादिशत्, यस्य वर्णनं वेदेष्वपि लभ्यते। वयं पंचकल्याणकं जैनरामलीलां कथयामः, भगवान् ऋषभदेवो नवनिधीन् चतुर्दशरत्नानि च त्यक्त्वा विभावपरिणतेच्छेदमकरोत्। अस्माकमपि भवतो निवेदनमस्ति यत् सर्वेभ्यो जैनदर्शनस्य भगवतः ऋषभदेवस्य च स्वरूपं उक्त्वा संस्कारितान् कुर्वन्तु। स्यात् भगवान् ऋषभदेवः, रामः स्यात् भरतो वा स्यात्, मनुष्येभ्य एव भगवान जातः, अन्ये च वदन्ति यत् भगवान् अस्मान् अकरोत्, या तेषां मिथ्याभ्रान्तिर्विद्यते।

अयोध्यायाः महन्तस्य गोपालदासस्यागमनम्–**प्रयागतीर्थस्य भगवतः ऋषभदेवस्य च दर्शनार्थमागतः अयोध्यायाःलघुसैनिकनगरस्य महन्तः नृत्यगोपालदासः पूज्यमातुः गुणानां वात्सल्यपूर्णरूपस्य च प्रशंसामकुर्वन् अकथयत् यत् जैनधर्मे त्यागस्य तपस्यायाश्च प्राधान्यं वर्तते, जैन साधु–साध्व्यः कठोरं तपः कुर्वन्ति। जैनधर्मो मानवताया संवर्द्धनं संरक्षणं च कुर्वन्ति, एवंभूतमेव समत्वं ममत्वं च अस्मभ्यं प्राप्नुयात्, एषैव कामनास्ति।**

इलाहाबादस्य विकास प्राधिकरणस्य सचिवः इष्टदेवप्रसादरायः अभियन्ता च के.के. पाण्डेयोऽपि समागत्य मातुर्दर्शनं कृत्वा स्वात्मानं गौरवान्वितमकुरुताम्।

7 फरवरी दिने प्रयागतीर्थः कस्मैचित् क्षणाय हस्तिनापुरोऽभवत्–**भगवतः ऋषभदेवस्य पावनभूमौ प्रयागे दीक्षां गृहीत्वा षट् मासेषु योगे लीनतायाः पश्चात् यदा मुनिपरम्परां**

तथा नार्दर्न इण्डिया पत्रिका के सम्पादक श्री प्रेमशंकर दीक्षित जी पधारे, जिनका कमेटी की ओर से स्वागत किया गया। माननीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री जी ने कहा कि यह सारी व्यवस्था जो वर्तमान में है, वह भगवान ऋषभदेव की देन है, भगवान ने सबको जीवन जीने की कला सिखाई, जिनका वर्णन वेदों में भी आता है। हम लोग पंचकल्याणक को जैन रामलीला कहते हैं, भगवान ऋषभदेव ने नौ निधियाँ व चौदह रत्नों को त्यागकर विभाव परिणति को मिटाया, हमारा भी आपसे निवेदन है कि सबको जैन दर्शन व भगवान का स्वरूप समझाकर संस्कारित करें। चाहे भगवान ऋषभदेव हों, भरत हों या राम हों, इंसान में से ही भगवान बने हैं और बाकी लोग समझते हैं कि भगवान ने हमें बनाया है, जो उनकी मिथ्या भ्रांति है।

➢अयोध्या के महन्त नृत्यगोपालदास जी का आगमन–

प्रयाग तीर्थ एवं भगवान ऋषभदेव के दर्शनार्थ पधारे हुए अयोध्या की छोटी छावनी के महन्त नृत्य गोपालदास जी ने पूज्य माताजी के गुणों एवं वात्सल्यमयी रूप की प्रशंसा करते हुए कहा कि जैनधर्म में त्याग-तपस्या की प्रधानता है। जैन साधु-साध्वी कठोर तप करते हैं, जैनधर्म मानवों का संवर्धन एवं संरक्षण कर रहा है, इसी प्रकार की समता-ममता हमें मिले, यही कामना है।

इलाहाबाद विकास प्राधिकरण सचिव श्री इष्टदेव प्रसाद राय एवं मुख्य अभियंता श्री के.के. पाण्डेय जी ने भी पधारकर पूज्य माताजी के दर्शन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया।

➢7 फरवरी को प्रयाग तीर्थ कुछ क्षण के लिए हस्तिनापुरी बन गया–

भगवान ऋषभदेव प्रयाग की पावन भूमि पर दीक्षा ग्रहण कर छः माह योग में लीन रहने के

जीवितां कर्तुं हेतवे आहारचर्या प्रतिपादयितुं आहाराय निरगच्छत् तदा कोऽप्याहारविधिं नाजानात् अतः जनता भगवन्तं नाना प्रकाराणां वस्त्राभूषणानि, मिष्टान्नानि, भोजनं, पुत्र्यादीः च दर्शयित्वा तेषां ग्रहणस्य प्रार्थनामकरोत्। षण्मासानां भ्रमणस्य पश्चात् तस्मै हस्तिनापुरस्य पावनधरायां तस्य नगरस्य युवराजः श्रेयांसः अष्टानां भवानां पूर्वस्य स्मृतिपूर्वकं आहारस्य विधेः ज्ञाते सति वर्षस्य 39 दिनानां उपवासस्य पश्चात् प्रथमबार इक्षुरसस्याहारमदात्। सा तिथिः वैशाख शुक्ला तृतीया आसीत् या ''अक्षयतृतीयायाः'' **नाम्ना अक्षया अभवत्।**

तामेवाहारचर्यायाः स्मरणं कारयन् भगवतः आहारचर्यायाः दृश्यं यदा तीर्थपरिसरे दर्शितमभूत् तु कस्मैचित् क्षणाय प्रयागतीर्थः हस्तिानापुररूपेण परिवर्तितोऽभवत्। आहारचर्यायाः समये यत्र–तत्र वस्त्राभरणादीनि गृहीत्वा भगवतः आह्वानं कर्तृणां जनानां अद्भुत एवं दृश्यमासीत्। यदा श्रेयांसस्य नृपतेः प्रासादे भगवतः प्रतिग्राहणमभूत्, तदा जयजयकारैः पाण्डालं गुंजायमानमभवत्।

दीक्षाकल्याणके तपोवनस्योद्घाटनम्–**दीक्षास्थलीतीर्थे नवनिर्मितस्य कोटिवर्षेभ्यः पूर्वं प्रथमदीक्षायाः स्मृतिं कारयन् चिरस्थायि कुर्वत् ''भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षाकल्याणक–तपोवनस्योद्घाटनं'' मुख्यातिथिरूपेण समागतेन महामहिम्ना श्री विष्णुकान्त शास्त्रिणा उत्तरप्रदेशस्य राज्यपालेन सभाध्यक्षेण च अशोक सिंघलेन 7 फरवरी दिने मध्यान्हे एक–वादन समये अभवत्। अस्मिन्नेवावसरे माननीयस्य राज्यपालस्य भ्रातुः पुत्री जया कालिया या समाजकल्याण संस्थायाः राष्ट्रीय सदस्या आसीत् न्यायमूर्तिश्च श्री राधेश्याम गुप्ताऽपि**

पश्चात् जब मुनिपरम्परा को जीवन्त रखने हेतु (आहारचर्या बतलाने हेतु) आहारार्थ निकले, तब किसी को भी आहार की विधि न मालूम होने से जनता भगवान को नाना प्रकार के वस्त्राभरण, मिष्ठान्न, भोजन, पुत्री आदि दिखाकर उन्हें ग्रहण करने की प्रार्थना करते थे। छः माह के भ्रमण के पश्चात् उन्हें हस्तिनापुर की पावन धरा पर वहाँ के युवराज श्रेयांस ने आठ भव पूर्व के जातिस्मरणपूर्वक आहार की विधि ज्ञात होने पर एक वर्ष 39 दिन के उपवास के बाद प्रथम बार इक्षुरस का आहार दिया, वह तिथि वैशाख शु. तीज थी, जो **'अक्षय तृतीया'** के नाम से अक्षय हो गई।

उसी आहारचर्या की याद दिलाता भगवान की आहारचर्या का दृश्य जब तीर्थ परिसर में दर्शाया गया, तो कुछ क्षण के लिए प्रयाग तीर्थ हस्तिनापुरी के रूप में परिवर्तित हो गया। आहारचर्या के समय यत्र-तत्र जेवर, कपड़े आदि लेकर भगवान को बुलाते लोगों का अजब ही नजारा था और जब श्रेयांस राजा के महल में भगवान का पड़गाहन हुआ, तो जयजयकारों से पाण्डाल गुंजायमान हो उठा था।

➢दीक्षाकल्याणक तपोवन का उद्घाटन–

दीक्षास्थली तीर्थ पर नवनिर्मित करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम दीक्षा की स्मृति को चिरस्थाई बनाने वाले ''भगवान ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक तपोवन'' का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे महामहिम श्री विष्णुकांत शास्त्री (राज्यपाल उत्तरप्रदेश) एवं सभाध्यक्ष श्री अशोक सिंघल द्वारा 7 फरवरी को मध्यान्ह 1 बजे हुआ। इसी अवसर पर माननीय राज्यपाल जी की भतीजी 'जया कालिया (राष्ट्रीय सदस्य-समाज कल्याण बोर्ड), न्यायमूर्ति श्री राधेश्याम गुप्ता

अन्ये च प्रशासनिकाधिकारिणः समागच्छन्।

कार्यक्रमस्य शुभारम्भः राज्यपालेन दीप प्रज्ज्वलनेन संघस्थानां भगिनीनां मंगलाचरणेनाभवत्। पीठाधीशो क्षुल्लक मोतीसागरोऽकथयत् यत् नेतारः भाषणमधिकं कुर्वन्ति, किन्तु कार्यं न्यूनं कुर्वन्ति, अद्य वयं प्रसन्नतामनुभवामो यत् महामहिमः राज्यपालः कार्याणां कर्ता नेतास्ति। यस्मिन् कालेऽहं अशृणवं यत् ईदृशो अद्वितीयो राज्यपालः, यो भगवतः ऋषभदेवस्य शिक्षां स्वयं तु स्व जीवनेऽअंगीकृतवान्, किन्तु राज्यपालपदे नियुक्तिकाले एव घोषणामकरोत् यत् अस्माकं राजभवने मांसः तु कः, प्याजवनस्पतिरपि प्रयुक्ता न भविष्यति, श्रुत्वा वयं असीम प्रसन्नतामन्वभवाम। मातुः नेतृणा आह्वानस्येदमेवोद्देश्यमस्ति यत् अत्र समागमनेन तेभ्यः शाकाहारस्य प्रेरणा प्रदीयताम्।

महामहिम्ना 'प्रयागतीर्थवन्दना' पुस्तकस्य विमोचनम्–**महामहिमराज्यपालः गणिन्या ज्ञानमत्या मात्रा संस्कृत भाषायां रचितस्य 'प्रयागतीर्थवन्दना' नामकस्य नूतन पुस्तकस्य विमोचनमकरोत्। स्वहस्ताक्षरैः युक्तमेकं प्रति मातुः करकमलयोः समर्पितमकरोत्।**

पुनोऽहं राज्यपालमकथयं यत् वर्ष 1998 वर्षे 'ऋषभदेवसमवसरण श्रीविहारस्य' **राजधान्याः दिल्लीनगर्याः प्रवर्तनकाले प्रधानमंत्री मात्रा प्राप्तात् षष्ठांशाशीर्वादात् अपि अधिकस्य कामनामकरोत्। तदा माता श्रीरकथयत् यत् वयं स्वतपस्यायाः पुण्यं दास्यामः शासनं च स्थिरं भविष्यति, सा श्री अटलाय भगवतः ऋषभदेवस्य चरणचिह्नमुपाहरत् पुनः 4 फरवरी 2000 दिने निर्वाणोत्सवस्योद्घाटनावसरे आगतः प्रधानमंत्री पुनस्तेषामेव**

(उ.प्र. सरकार) व अन्य प्रशासनिक अधिकारी पधारे।

कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय राज्यपाल जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं संघस्थ बहनों के मंगलाचरण पूर्वक हुआ। पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने कहा कि नेता भाषण अधिक करते हैं किन्तु काम कम करते हैं, आज हमें प्रसन्नता है कि महामहिम जी काम करने वाले नेता हैं। जिस दिन से मैंने सुना कि ऐसे अद्वितीय राज्यपाल, जिन्होंने भगवान ऋषभदेव की शिक्षा को स्वयं तो अपने जीवन में उतारा ही, बल्कि राज्यपाल बनते ही घोषणा कर दी कि हमारे राजभवन में मांसाहार क्या, प्याज भी इस्तेमाल नहीं होगा, सुनकर बेहद खुशी हुई। माताजी को नेताओं को बुलाने का यही उद्देश्य रहा है कि यहाँ आने पर उन्हें शाकाहारी जीवन की प्रेरणा दी जाए।

➢महामहिम द्वारा 'प्रयाग तीर्थ वंदना' पुस्तक का विमोचन–

महामहिम जी ने पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा संस्कृत भाषा में लिखित 'प्रयाग तीर्थ वंदना' नामक नूतन कृति का विमोचन किया और स्वहस्ताक्षर युक्त एक प्रति माताजी के करकमलों में भेंट की।

पुनः मैंने महामहिम जी को बताया कि सन् 1998 में **''ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार''** का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन करते समय प्रधानमंत्री जी ने माताजी से प्राप्त छठे अंश आशीर्वाद से भी अधिक की कामना की थी, उस समय माताजी ने कहा था कि हम अपनी तपस्या का पुण्य देंगे और सरकार स्थिर होगी, उन्होंने अटल जी को भगवान ऋषभदेव के चरणचिन्ह दिये, पुनः 4 फरवरी 2000 को निर्वाणोत्सव के उद्घाटन पर आए प्रधानमंत्री जी ने फिर वही शब्द दोहराए कि तब का

शब्दानां पुनरावृत्तिमकरोत् यत् तस्य कालस्याशीर्वादः मह्यं कार्यकारी सिद्धोऽभूत, अधुना अस्यावसरस्याशीर्वादोऽग्रे कार्योपयोगी भविष्यति। एतच्छ्रुत्वा राज्यपालः अतिप्रसन्नोऽभवत्।

पूज्या गणिनी माताऽकथयत्–**इयं सैव पवित्र भूमिरस्ति, यत्र भगवान् दीक्षां गृहीत्वा वटवृक्षस्याधः केवलज्ञानं प्राप्नोत्। महामहिमसदृशानां जनानामस्मिन् धर्ममंचे आगमनस्य इदमेवतात्पर्यमस्ति, यत्ते स्वकर्मभिः आच्छादितमावरणमपाकृत्य वास्तविकं ज्ञानं प्राप्नुवन्तु। जैनधर्मः शम–दम शासनरूपं विद्यते, यत्रेन्द्रियाणां दमनं कषायाणां च शमनं क्रियते। राज्यपालमहोदयः उत्तर प्रदेशस्य गौरवमस्ति। यदि सम्पूर्णो देशः एतत्कार्यं प्रचलितं करोतु, कीदृशमेव श्रेष्ठं भवतु! आवश्यकता विद्यते भगवतो ऋषभदेवस्य महावीरस्य–सिद्धान्तानां विश्वे स्थापनायाः। राज्यपालो भारतीयां संस्कृतिमक्षुण्णां कृत्वा चरमं शिखरं नयतु। सिंघल सदृशाः महापुरुषाः रामस्य जन्मभूमेः रक्षायां तस्य मर्यादायाः रक्षायां सफलाः भवन्तु, अयमेव ममाशीर्वादोऽस्ति।**

राज्यपालः भारतगौरवस्योपाधिना विभूषितः–**अस्मिन्नवसरे राज्यपालमहोदयस्य शुद्धसात्विक धर्माचरणेन च युक्तेनजीवनेन प्रभाविताः भूत्वा दीक्षास्थल्याः कर्मठ कार्यकर्तारः तं** ''भारतगौरवोपाधिना'' **सम्मानितं कृत्वा प्रशस्तिपत्रमुपाहरन्।**

माता सर्वेषामेव कार्याणां अथ करोति, इति न करोति–**पूज्यायाः गणिन्या ज्ञानमत्याः जीवनस्येयं विशेषता विद्यते यत् सा प्रत्येक कार्यस्याथ करोति इति न करोति। अर्थात् माताश्रीः यत् कार्यं**

आशीर्वाद अभी तक मेरे काम आया, अब आज का आशीर्वाद आगे तक काम आएगा। यह सुनकर राज्यपाल जी बहुत प्रसन्न हुए।

➢पूज्य गणिनी माताजी ने कहा–

यह वही पवित्र भूमि है, जहाँ भगवान ने दीक्षा लेकर वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था। महामहिम जैसे लोगों का इस धर्ममंच पर आने का यही तात्पर्य है कि वे अपने कर्मों से ढके आवरण को हटाकर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करें। जैनधर्म शम-दम शासनरूप है, जहाँ इन्द्रियों का दमन व कषायों का शमन किया जाता है, राज्यपाल जी उत्तरप्रदेश का गौरव हैं, अगर सारा देश ऐसा ही क्रम लागू करे, तो क्या ही अच्छा हो! आवश्यकता है भगवान ऋषभदेव-महावीर के सिद्धान्तों को विश्व में पहुँचाने की। राज्यपाल जी भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखकर चरम शिखर पर पहुँचावें और सिंघल जी महापुरुष राम की जन्मभूमि की रक्षा के साथ मर्यादा की रक्षा के कार्य में सफल हों, यही आशीर्वाद है।

➢राज्यपाल जी भारत गौरव की उपाधि से सम्मानित–

इस अवसर पर राज्यपाल जी के शुद्ध-सात्त्विक व धर्माचरण से युक्त जीवन से प्रभावित होकर दीक्षास्थली तीर्थ के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें **''भारत गौरव''** की उपाधि से सम्मानित कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया।

➢माताजी प्रत्येक कार्य का अथ करती हैं इति नहीं–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के जीवन की यह विशेषता है कि वह प्रत्येक कार्य का अथ करती हैं इति नहीं। अर्थात् माताजी सर्वप्रथम तो जो कार्य हाथ में लेती हैं, उसे शीघ्र ही मूर्तरूप देते हुए उसे

हस्ते गृह्णाति, तस्मै शीघ्रमेव मूर्तरूपं दत्वा पूर्णतां प्रददाति, तस्य च समापनात् पूर्वमेव नूतनकार्यस्य घोषणां करोति। यतोऽधुना भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहोत्सवस्य अन्तः समापनं प्रस्तावितमासीत् अतः माताश्रीः भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मजयन्त्याः अवसरे समितिं घटितां कृत्वा अकथयत् यत् कौशाम्ब्यां महावीरस्वामिनः आहारभूमौ भगवतो महावीरस्य चन्दनबालायाश्च आहारमुद्रायाःमूर्तिः विराजमाना भविष्यति। वयं भगवतः ऋषभदेवस्योत्सवमायोजनं कुर्वन्त्य इयं संकल्पं कुर्याम यत् एकस्मिन् वर्षे बहुकार्यं विधाय महावीरजयन्तीवर्षमायोजयिष्यामः।

माननीयो राज्यपालोऽकथयत्–**अस्माकं परम्परायामद्भुतायाः समदर्शितायाः आभासः प्राप्यते। प्रत्येक धर्मो भगवन्तं केनापि रूपेण मन्यते। नारदीयसूत्रे लिखितं वर्तते–यत् यस्तीर्थस्य निर्माणं करोति, भवसागरात् पारं नयति, सः तीर्थंकरोऽस्ति। एवंभूतं प्रथमं तीर्थंकरं ऋषभदेवमहं प्रणमामि। अस्माकं संस्कृतिः बहुसमृद्धा वर्तते। विविधपरम्पराणां अस्मिन् समावेशोऽस्ति, तस्मिन् जैनशासनस्य विशेषमहत्वमस्ति। यस्यां भगवतः दीक्षास्थल्यां वयमुपस्थिताः स्मः, सः अहिंसायाः षट्कर्मणामुपदेशमदात्। एषां वीराणामहिंसा वर्तते, न तु कापुरुषाणाम्। अस्य तीर्थस्य श्रद्धाशीघ्रमेव पूर्णरूपा क्रमशः भविष्यति।**

श्री सिंघलोऽकथयत्–**अयमस्ति महान् प्रसंगः, स्वदेशे महापुरुषेभ्यः उचितस्थान प्रदानमिदं**

पूर्णता प्रदान करती हैं और उसके समापन के पूर्व ही नूतन कार्य की घोषणा कर देती हैं। चूँकि अभी भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव का समापन हो रहा था अतः माताजी ने भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मोत्सव पर समिति बनाने की घोषणा करते हुए कहा कि मैं किसी भी कार्यक्रम का समापन नहीं करना चाहती, अथ हो और समाप्ति न हो, यह निर्वाण महोत्सव का समापन भले ही हो किन्तु कार्य की इति नहीं है क्योंकि अब भगवान ऋषभदेव को आदि में लेकर भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव पर कौशाम्बी में महावीर स्वामी की आहार भूमि पर भगवान महावीर व चन्दनबाला की आहारमुद्रा की मूर्ति विराजमान की जाएगी। हम भगवान ऋषभदेव का उत्सव मनाते हुए यह संकल्प करते हैं कि एक वर्ष में बहुत कुछ कार्य करते हुए महावीर जयंती वर्ष को मनाएंगे।

➢माननीय श्री महामहिम जी ने कहा–

हमारी परम्परा में अद्भुत समदर्शिता का आभास मिलता है। प्रत्येक धर्म भगवान को किसी न किसी रूप में मानता है। नारदीय सूत्र में लिखा है–जो तीर्थ का निर्माण करे, भवसागर से पार करे, वह तीर्थंकर है। ऐसे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। हमारी संस्कृति बहुत समृद्ध है, अनेक परम्पराओं का इसमें समावेश है जिसमें जैनशासन का विशेष महत्व है। जिन तीर्थंकर भगवान की दीक्षाभूमि पर हम खड़े हैं, उन्होंने अहिंसा, षट्कर्म का उपदेश दिया। यह वीरों की अहिंसा है, कायरों की नहीं। इस तीर्थ की श्रद्धा शीघ्र ही मूर्तरूप लेगी।

➢श्री सिंघल जी ने कहा–

यह बड़ा ऐतिहासिक प्रसंग है, अपने देश में महापुरुषों को उचित स्थान प्रदान करना भक्तों का

भक्तानां कर्तव्यमस्ति, अतएवाहं तां भामाशाह इति कथयामि। महान् आनन्दस्य विषयोऽयं यत् प्रथमबारं महाकुम्भनगरे पूज्यमातुः प्रयत्नैः महतः आनन्दस्य कार्यमभवत्। निर्वाणोत्सवः आयोजितः। अहं मन्ये यत् वास्तवे भारतवर्षं एव जैनोऽस्ति, जैनाश्च भारतवर्षमस्ति। ज्ञानमती माता अस्माकं देशे महान्तमुपकारमकरोत्, यत् वयं व्यस्मराम, तस्य स्मृतिमकारयत्।

गुजरातप्रदेशे घटितेन भूकम्पेन त्रस्तजनेभ्यः प्रार्थना कृता–**भूकम्पः एका प्राकृतिक आपदा विद्यते, कथ्यते यदा भूमौ निरीह जीवेषु अत्याचाराः अनाचाराश्च वर्धमानाश्चरमसीमां स्पृशंति, तदा पृथिव्याः मातुर्हृदयमपि विह्वलं भवति तस्याः हृदये चोत्पन्ना क्रान्तिः भूकम्परूपेण परिणमति। स्यादिदमेव कारणमस्ति यदद्य भूमौ वर्धमानानां अत्याचाराणाम्–अनाचाराणामेव प्रतिफलानि सन्ति। प्रतिवर्षं कुत्रचिदपि भयावहाः भूकम्पाः जायन्ते, कुत्रचित् जलप्लावनं भवति, तु कुत्रचित् सुनामी तरंगाः स्व भयानक कार्यं कुर्वन्ति, तेषां विषये चिन्तनमात्रेणैव सम्पूर्णं शरीरं हृदयं च कम्पमानं भवति। तस्याः एव प्राकृतिक आपदः रूपेण विनाश दृश्यं घटितं गुजरातस्य भूकम्पेन। 26 जनवरी 2001 दिने घटितेन तेन भूकम्पेन जनसहायतार्थं यत्र देशस्य बालका समक्षमागताः, तत्रैव पञ्चकल्याणके विश्वशान्ति महायज्ञस्य माध्यमेन शान्तेः, सुरक्षाकामनाभिः सहैव दीक्षास्थल्यां समागताः सहस्रसंख्यायां श्रद्धालवो भक्ताश्च सर्वेषां मृतकानां, तेषां परिवाराणां, भूकम्पेन त्रस्तानां लक्षाधिकानां गृहहीनानां जनानां शान्तये भगवन्तं ऋषभदेवं प्रार्थयन्, अत्रैव जनाश्चार्थिकानुदानमपि घोषितमकुर्वन्।**

कार्य है इसीलिए मैं इन्हें भामाशाह कहता हूँ। बड़े आनन्द का विषय है कि प्रथम बार पूज्य माताजी के प्रयत्नों से बहुत आनन्दपूर्वक महाकुंभ नगर में कार्यक्रम हुआ, निर्वाण उत्सव मनाया गया। मैं मानता हूँ कि वास्तव में भारत ही जैन है और जैन ही भारत है। ज्ञानमती माताजी ने हमारे देश पर बड़ा उपकार किया है, हम जिसे भूल गए थे, इन्होंने उसे स्मृत करवा दिया है।

➢गुजरात में आए भूकंप से संत्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना की गई–

भूकंप एक प्राकृतिक आपदा है, कहा जाता है कि जब धरती पर निरीह जीवों पर अत्याचार-अनाचार बढ़ते-बढ़ते चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तब धरती माता का हृदय भी विह्वल हो उठता है और उसके हृदय में मची उथल-पुथल भूकंप का रूप ले लेती है। शायद यही कारण है कि आज धरती पर बढ़ते अत्याचार-अनाचार के प्रतिफल में प्रतिवर्ष कहीं न कहीं भयावह भूकंप आते हैं, कहीं बाढ़ आ जाती है, कहीं सुनामी लहरें अपना कहर बरपा देती हैं, उनके बारे में सोचने मात्र से ही सारा शरीर और हृदय कांप उठता है। उसी प्राकृतिक आपदा का एक कहर बरपा गुजरात में आये विनाशकारी भूकंप से। 26 जनवरी 2001 को आए उस भूकंप में जनसहायतार्थ जहाँ देश का बच्चा-बच्चा उमड़ पड़ा, वहीं पंचकल्याणक में विश्वशांति महायज्ञ के माध्यम से शांति, सुरक्षा की कामना के साथ-साथ दीक्षास्थली पर पधारे हजारों श्रद्धालु भक्तों ने सभी मृतकों के, उनके परिवारों के एवं भूकंप से त्रस्त लाखों-लाख बेघर हुई जनता की शांति हेतु भगवान ऋषभदेव से मंगल प्रार्थनाएँ की तथा अनेक लोगों ने आर्थिक अनुदान भी घोषित किया।

भव्य समवसरणरथस्य शोभायात्रा–**7 फरवरी 2001 दिने सायं पंचवादनसमये भगवतः केवलज्ञानस्य सम्पूर्णा क्रियाः सम्पादिताः अभवन्, यस्मिन् संयोगवशात् भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणश्रीविहारस्य रथस्यागमनेन तस्याः शोभा द्विगुणिताभवत्। तस्मिन्नेव भरतचक्रवर्ति–आदीन् क्रमशः समुपवेश्य द्वादशसभानां दृश्यमुपस्थितं कृत्वा शोभायात्रा समायोजिता।**

मंचे आवरणस्याभ्यन्तरे विराजमानाभ्यः जिनप्रतिमाभ्यः, कैलासपर्वतं तपोवनादिषु विराजमानाभ्यः जिनप्रतिमाभ्यः सूरिमंत्रं प्रदाय केवलज्ञानस्य घोषणाकाले एव आवरणमपहृतम–भवत्, क्षणमात्रेणैव द्वादशसभानां दृश्यमुपातिष्ठत्।

वास्तविककैलासपर्वते निर्वाणमोदकाः समर्पिताः–**यस्मात् कैलासपर्वतात् भगवान् ऋषभदेवो मोक्षं प्राप्तवान, तस्यैव कैलासपर्वतस्य भव्यायां प्रतिकृतौ विराजमानस्य भगवतः ऋषभदेवस्य चतुर्दश फुट उत्तुंगा मनोहारिणी प्रतिमा निर्वाणकल्याणकस्य पश्चात् पूज्याभवत्। पुनः भगवतः सम्मुखं पूजनपूर्वकं निर्वाणमोदकाः समर्पिताः। अस्याः भव्यप्रतिकृतेः निर्माणस्य पुण्यं प्राप्तकर्त्री श्रीचेतनलालप्रीतविहार दिल्लीनगर्याः धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना जैना सपरिवारमुपस्थाय परमानन्देन सह भगवन्तं अभ्यसिंचत्।**

समवसरणमन्दिरस्योद्घाटनम्–**यस्मिन् पुरिमताल पुष्पोद्याने भगवान् ऋषभदेवो दिव्यं केवलज्ञानं प्राप्नोत् वर्तमाने तदद्यावधि प्रयागे एव मान्यते। भगवतः केवलज्ञानसमये एव धरात् पंचसहस्रधनुषः विंशति सहस्रहस्तादुपरि अधरआकाशे कुबेरः समवसरणमरचयत्।**

➢भव्य समवसरण रथ की शोभायात्रा–

7 फरवरी 2001 को सायं 5 बजे भगवान के केवलज्ञान की सम्पूर्ण क्रियाएं सम्पन्न हुईं जिसमें संयोगवश भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ के आगमन से उसकी शोभा द्विगुणित हो उठी और उसी में भरत चक्रवर्ती आदि को क्रम से बिठाकर 12 सभा का दृश्य उपस्थित कर शोभायात्रा निकाली गई।

मंच पर परदे के अन्दर जिनप्रतिमाओं एवं कैलाशपर्वत, तपोवन आदि में विराजमान जिनप्रतिमाओं को सूरिमंत्र प्रदान कर केवलज्ञान की घोषणा होते ही पर्दा खुल गया और क्षणमात्र में 12 सभाओं का दृश्य उपस्थित हो गया।

➢असली कैलाशपर्वत पर चढ़ाया गया निर्वाणलाडू–

जिस कैलाशपर्वत से भगवान ऋषभदेव ने मोक्ष प्राप्त किया, उसी कैलाशपर्वत की भव्य प्रतिकृति पर विराजमान 14 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की मनोहारी प्रतिमा निर्वाणकल्याणक के पश्चात् परम पूज्य बन गई, पुनः श्रीजी के सम्मुख पूजनपूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। इस भव्य प्रतिकृति के निर्माण का पुण्य प्राप्त करने वाली श्रीमती सुलोचना जैन ध.प.श्री चेतनलाल जैन-प्रीतविहार, दिल्ली ने सपरिवार उपस्थित होकर परम आनंद के साथ भगवान का अभिषेक किया।

➢समवसरण मंदिर का उद्घाटन–

जिस पुरिमतालपुर के उद्यान में भगवान ऋषभदेव को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी, वर्तमान में वह उद्यान भी प्रयाग में ही माना जाता है। भगवान के केवलज्ञान होते ही धरती से 5 हजार धनुष (20 हजार हाथ) ऊपर अधर आकाश में धनकुबेर ने समवसरण की रचना की थी,

तस्यैव समवसरणस्य भव्या प्रतिकृतिः एकरथरूपेण पूज्यमातुः पावनप्रेरणया राजधान्याः दिल्लीनगर्याः लालकिला प्रांगणात् 1998 वर्ष उद्घाटिताभवत्। यां भारतभ्रमणहेतु तत्कालीन भारतप्रधानमंत्री श्री अटलविहारी महोदयः प्रवर्तिनामकरोत्, त्रिवर्षपर्यन्तं च भारतस्य प्रतिकोणं अहिंसा, शाकाहार, विश्वमैत्री तीर्थंकरभगवतश्च सर्वोदयसिद्धान्तानां प्रचारस्य, प्रसारस्य– पश्चात् प्रयागतीर्थस्यास्मिन्नेव जिनमन्दिरे विराजमानाभवत्। तीर्थस्य गौरवं अध्यक्षः केन्द्रीयवस्त्रराज्यमंत्री श्रीधनञ्जयकुमारो जैनोऽस्योद्घाटनं कृत्वा परमप्रसन्नतामभि– व्यक्तामकरोत्। अस्मिन्नेवावसरे अ.भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्रसमितेरध्यक्षः– साहू रमेशचन्द्रोऽप्यागच्छत्। साहूमहोदयस्तीर्थस्य प्रथमं दर्शनं कृत्वा भावमुग्धोऽभवत्, अकथयच्च तीर्थंकर ऋषभदेवस्य दीक्षाभूमौ आगमनस्य निमित्तेनाहं पञ्चाशत् वर्षाणां पश्चात् प्रयागस्य भूमौ आगच्छम्। तीर्थक्षेत्रसमितेरध्यक्षत्वेनाहं परमप्रसन्नोऽस्मि यदेकस्य प्राचीनतीर्थस्य पुनरुद्धारो भूत्वा तीर्थानां शृंखलायां युक्तमभवत्, एवंभूतायां पवित्रस्थल्यां वयमुत्सवं योजयामा, सर्वेभ्यः वर्धापनम्।

अहं विश्वासं ददामि यत् पूर्णमनोयोगेन सह तीर्थाणां सेवायां कार्यं करिष्यामि।

श्रीधनञ्जयोऽकथयत्–**अस्यां दीक्षास्थल्यामागमनस्याहं सौभाग्यं प्राप्नवम्, महती प्रसन्नता भवत्। यस्यां भूमौ भगवान अस्मभ्यं जीवनं जीवितुं पाठमपाठयत्, तत्र पूज्यायाः मातुः प्रेरणया संभूतं निर्माणकार्यमवलोक्य प्रसन्नतामन्वभवम्।**

उसी समवसरण की भव्य प्रतिकृति एक रथ के रूप में पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से राजधानी दिल्ली के लाल किला मैदान से सन् 1998 में उद्घाटित हुई, जिसे भारत भ्रमण हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रवर्तित किया और लगभग 3 साल तक भारत के कोने-कोने में अहिंसा, शाकाहार, विश्वमैत्री तथा तीर्थंकर भगवान के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के बाद प्रयाग तीर्थ के इसी जिनमंदिर में विराजमान की गई। तीर्थ के गौरव अध्यक्ष एवं केन्द्रीय वस्त्र राज्यमंत्री (भारत सरकार) श्री वी. धनंजय कुमार जैन ने इसका उद्घाटन कर परम प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर अ.भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष-साहू रमेश चंद जैन भी पधारे। साहू जी तीर्थ के प्रथम दर्शन कर भावविभोर हो उठे और बोले-तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षाभूमि पर आने के निमित्त से मैं 50 वर्ष बाद प्रयाग की धरती पर आया हूँ। तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष होने के नाते मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि एक प्राचीन तीर्थ पुनरुद्धार होकर तीर्थों की श्रृंखला में जुड़ गया, ऐसी पवित्र स्थली पर हम उत्सव मना रहे हैं, सभी को बधाई।

मैं विश्वास दिलाता हूँ कि पूर्ण मनोयोग के साथ तीर्थों की सेवा में संलग्न रहूँगा।

➢श्री धनंजय जी ने कहा–

इस दीक्षास्थली पर आने का मुझे सौभाग्य मिला, बड़ी प्रसन्नता हुई। जिस भूमि से भगवान ने हमें जीवन जीने का पाठ दिया, वहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुए निर्माणकार्य को देखकर प्रसन्नता हुई।

माननीयस्य प्रधानमंत्रिणोऽध्यक्षतायां वयमस्मिन् वर्षे भगवतो महावीरस्य 2600 तंमं जन्मजयन्ती महोत्सवमायोजयामः। सम्पूर्णेभारते 2002 वर्षपर्यन्तं एष कार्यक्रम प्रचलितो भविष्यति, यस्मिन् केन्द्रीय शासनेन शत कोटिरुप्यकाणां व्ययस्य घोषणामकरोत्। 6 अप्रैल दिवसे शाकाहार दिनस्य घोषणाभवत्। 6 अप्रैल 2001 दिनात् अप्रैल 2002 पर्यन्तं ''अहिंसावर्ष'' घोषितमभवत्। पूज्या माता समये–समयेऽस्मभ्यं मार्गदर्शनं प्रादात्, येन तीर्थंकराणां सिद्धान्तान् ज्ञात्वा प्रत्येकमानवः शान्त्या जीवितुं सक्षमः स्यात्। सर्वे चैकत्रिताः समस्तं भूमण्डलं समृद्धिमयं कर्तुं प्रयत्नं करिष्यन्ति। अस्याः भूमेः अत्यन्तमेव गौरवं शान्तिकार्यं सम्पादितं, तस्मिन्नहं सम्पूर्णो जैन समाजश्च भवत्याः सहभागिनः अस्ति।

अस्मिनेवावसरे पूज्यया गणिन्या ज्ञानमत्या हस्तलिखितस्य 2600 मंत्रैः समन्वितस्य विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य हस्तलिखितायाः प्रतेर्लोकार्पणं श्री धनञ्जयेन मुख्यातिथिना कृतमभूत्।

बसन्तोत्सवस्य बासन्ती वातावरणे एकविंशति तमायाः शताब्द्याः प्रथमो महाकुम्भः–**पश्यन्–पश्यन् सा पावना घटिका समायाता, यस्याः तस्मात् दिनात् प्रतीक्षा आसीत्, यस्मात् दिनात् अस्मै तीर्थाय साकाररूपस्य प्रदानस्य घोषणाऽभवत्। प्रातःकालादेव केसरवर्णस्य वस्त्राणि धारयन् जनसमूहः स्वपूर्वनिर्धारितान् कलशान् प्राप्तुमातुरः संजातः।**

उपरि गन्तुमुभयत पुष्टा श्रेणयः निर्मिताः आसन्। अस्मिन् एकपक्षतः आरोहणस्य द्वितीयतश्चावतरणस्य व्यवस्थाऽऽसीत्। केसरवर्णध्वजाभिः सुसज्जितासु श्रेणीषु प्रतिस्थानम–

माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में इस वर्ष भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव हम मना रहे हैं। पूरे भारत में सन् 2002 तक यह कार्यक्रम चलेगा, जिसमें केन्द्र सरकार द्वारा 100 करोड़ रुपये का ऐलान किया गया है। 6 अप्रैल को शाकाहार दिवस की घोषणा हुई है। 6 अप्रैल 2001 से अप्रैल 2002 तक ''अहिंसा वर्ष'' घोषित हुआ है। पूज्य माताजी हमें समय-समय पर मार्गदर्शन देती रहें, जिससे तीर्थंकरों के सिद्धान्तों को समझकर हर मानव शांति से जी सके, सब एकत्रित होकर सारी दुनिया को समृद्धिशाली बना सकें। इस भूमि पर बहुत ही गौरवशाली कार्य हो रहा है, जिससे मैं एवं सारा जैन समाज आपके साथ जुड़ा है।

इसी अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा हस्तलिखित 2600 मंत्रों से समन्वित विश्वशांति महावीर विधान की हस्तलिखित प्रति का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्री धनंजय जी द्वारा किया गया।

➢बसन्तोत्सव के बसंती माहौल में इक्कीसवीं सदी का प्रथम महाकुंभ–

देखते ही देखते वह पावन घड़ी आ गई, जिसका उस दिन से इंतजार था, जिस दिन से इस तीर्थ को साकाररूप देने की घोषणा हुई थी। प्रातःकाल से ही केशरिया वस्त्रों में लिपटा विशाल जनसमूह अपने पूर्वनिर्धारित कलशों को पाने हेतु आतुर हो उठा था।

ऊपर जाने के लिए दोनों ओर से मजबूत सीढ़ियाँ बनाई गई थीं, जिस पर एक ओर से चढ़ने तथा दूसरी ओर से उतरने की व्यवस्था थी। केशरिया झण्डों से सजी सीढ़ियों पर स्थान-स्थान पर

वस्थिताः सुयोग्यकार्यकर्तारः कलशपत्रं वीक्ष्यैव नरनारीः उपरि आरोढुमनुमतिं अदुः।

कैलाशपर्वतस्य समक्षे सुन्दर चतुष्के भरतसेना–टिकैतनगरस्य कर्मठैः कार्यकर्तृभिः सज्जिताः महाकुम्भस्याकृतिवन्तः 1008 स्वर्ण–रजतादि महाकुंभाः बसन्ती शोभां विकीर्णां कुर्वन्त जनमानसं स्वाभिमुखमकुर्वन्।

स्वर्णमहाकुम्भेन प्रथमाभिषेकः–**नगर्यां स्थापितायामस्यां तीर्थभूमौ अभिषेक्तुमातुराणां बन्धूनां पंक्तिरासीत्। प्रथमस्वर्णकुंभं नीत्वा संघपतिमहावीरप्रसादेन सह तत्कालीन वस्त्रराज्यमंत्री श्री धनञ्जय कुमारः उपरि गत्वा यथा मंत्रोच्चारण– प्रारम्भकाले अभिषेकमारभत्, उपस्थितो जनसमूहो भावमुग्धोऽभवत्। मध्याह्न 11.15 वादने कृतोऽयं प्रथमोऽभिषेक वास्तवे इतिहासस्य स्वर्णिमपृष्ठोऽभवत्।**

यैः यैः कलशैः प्रभोर्मस्तकेऽभिषेकः समभवत्, तस्मिन्नेव वर्णे भगवान् सर्वेषां नेत्रेभ्यः आनन्दकारी प्रतीतोऽभवत्। श्वेतस्य दुग्धस्य पतनेन सम्पूर्णा प्रतिमा श्वेताभवत्, दधिपतनेन प्रतीमभवत् यत् सम्पूर्णप्रतिमायाः उपरि मौक्तिकानां वर्षाभवत्। केसरसर्वौषधिसुगन्धिना यत्र सम्पूर्णं वातारण सुरभितमभवत्, तत्रैव पुष्पवृष्ट्या विकीर्णानि पुष्पाणि धनकुबरेण कृतयाः रत्नवृष्ट्याः स्मृतिमकारयन्। अनेन पंचामृतेनभिषेकेण कैलाशपर्वतस्तु सुवासितोऽभूदेव, भक्तगणः स्व शरीरं वस्त्राणि च सुगन्धितान्यकुर्वन् कांच पात्रेषु पच्छन्नेषु स्टीलपुटिकासु च पूरयित्वा स्वगृहाणि अनयन्।

खड़े सुयोग्य कार्यकर्ता कलश पास देखकर ही नर-नारियों को ऊपर चढ़ने दे रहे थे।

कैलाशपर्वत के ठीक सामने चबूतरे पर भरत सेना-टिकैतनगर के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा सजाए गए महाकुंभ की आकृति के 1008 स्वर्ण, रजत आदि महाकुंभ बसन्ती बहार बिखेरते हुए जनमानस को अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे।

➢**स्वर्ण महाकुंभ से प्रथम मस्तकाभिषेक–**

दुल्हन के समान इस नूतन तीर्थ भूमि पर अभिषेक करने को आतुर बंधुओं का तांता लगा था। प्रथम स्वर्ण महाकुंभ कलश लेकर लाला महावीर प्रसाद जी के साथ वस्त्र राज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जी ने ऊपर पहुँचकर ज्यों ही मंत्रोच्चारण प्रारंभ होते ही कलश प्रारंभ किया, उपस्थित भक्तगण भावविभोर हो उठे और हों भी क्यों न, मध्यान्ह 11.15 मिनट पर किया गया यह प्रथम कलश वास्तव में इतिहास का अमिट पन्ना जो बनकर रह गया था।

जिन-जिन कलशों से प्रभु के मस्तक पर अभिषेक हो रहा था, उस-उस वर्ण में भगवान सभी के नेत्रों को आनन्दकारी लग रहे थे। सफेद दूध के पड़ते ही पूरी प्रतिमा श्वेतवर्णी हो उठी, दधि पड़ते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानों घड़े भर मोती प्रभु के ऊपर बरसाए गए हों, केशर और सर्वौषधि की सुगंधि से जहाँ सारा वातावरण महक उठा, वहीं पुष्पवृष्टि में बरसाए गए पुष्प धनकुबेर के द्वारा की जाने वाली रत्नवृष्टि की याद दिला रहे थे। इस पंचामृत अभिषेक से कैलाशपर्वत तो सुवासित हुआ ही, भक्तगणों ने अपने वस्त्रों को, शरीर को सुगंधित किया और शीशी, छन्ने एवं स्टील की डिब्बियों में भरकर अपने घर भी ले गए।

एतद् दृश्यं दृष्ट्वा कैलाशपर्वतस्य प्रतिकृतेर्निमात्री श्री चेतनलालस्य धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना जैना सपरिवारं दृष्ट्वा परमप्रसन्नाऽऽसीत्। कैंसररोगस्य रुग्णावस्थया ग्रस्तापि तस्याः तीव्राभिलाषा तां तस्मिन् महाकुम्भस्य व्याकुले जनसमूहे कैलाशपर्वतस्य दर्शनं कर्तुं शक्तिं प्रादात्। आश्चर्य तु तदासीत्, यदा सा रात्रौ उपविश्य सम्पूर्णं सांस्कृतिकं कार्यक्रममपश्यत्। पुनः कार्यक्रमस्य समापनस्य पश्चात् सा सकुशलं दिल्लीमागच्छत् अस्यैव पुण्यस्य फलस्वरूपेण अग्रे सा निराकुलतापूर्वकं जून 2001 वर्षे समाधिं प्राप्य स्वर्गवासिनी अभवत्।

सम्पूर्णाः व्यवस्थाः दर्शकान् मंत्रमुग्धान् चक्रुः–**सर्वे आगन्तुकाः अतिथयः इलाहाबादस्य च जैनसमाजः आश्चर्यचकिताः आसन् यत् त्रयाणां मासानां मध्ये तीर्थनिर्माणेन सहैवैतावती सुन्दरव्यवस्थाभवत्, यस्या वयं कल्पनां नाकुर्म। आवास–भोजन–जल–साजसज्जा–पाण्डाल व्यवस्थादीनां याः व्यवस्थाः आसन्, सर्वे एव समागताः अतिथयो मुक्तकण्ठेन प्रशंसामकुर्वन्।**

प्रस्थानवेलायां कानिचित् हर्षपूरितानि नेत्राणि मातुर्गुणगानेन हर्षितानि आसन्–**महाकुम्भमस्तकाभिषेकसमापनवेलायां सर्वेभ्यो मातुर्वात्सल्यपूर्णं आशीर्वादात्मकं प्रवचनमपि प्राप्तमभवत्, यत् श्रुत्वा सर्वेषां नेत्रेषु हर्षपूरितान्यश्रूणि प्रावहन्, सर्वे चावदन्–मातः! त्वं धन्यासि, तव महिमापाराऽस्ति।**

तीर्थोऽयं अन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहामहोत्सवस्यैतिहासिक न्यासोऽस्ति–**''शास्त्रेष्वाचार्याः अकथयन् यत् शतानां नवमन्दिराणां निर्माणेन यत् पुण्यं प्राप्यते, तस्मात् कतिचित् गुणमधिकं**

इस दृश्य को कैलाशपर्वत की प्रतिकृति के निर्माता श्री चेतनलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती सुलोचना जैन सपरिवार देखकर परम हर्षित हो रही थीं, कैंसर जैसी घातक बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद भी उनकी तीव्र अभिलाषा ने उन्हें महाकुंभ मेले की भयंकर भीड़ में कैलाशपर्वत के दर्शन की शक्ति प्रदान कर दी। आश्चर्य तो तब हुआ, जब वे रात में बैठकर पूरा सांस्कृतिक कार्यक्रम रुचिपूर्वक देखती रहीं। पुनः कार्यक्रम समापन के बाद सकुशल वे दिल्ली पहुँच गईं और इसी पुण्य के फलस्वरूप आगे वे निराकुलतापूर्वक जून 2001 में समाधिपूर्वक स्वर्गवासी हो गईं।

➢सम्पूर्ण व्यवस्थाओं ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया–

सभी आगन्तुक अतिथिगण और इलाहाबाद जैन समाज आश्चर्यचकित था कि मात्र 3 माह के भीतर तीर्थ निर्माण के साथ इतनी सुन्दर व्यवस्था हुई है, जिसकी हमने कल्पना तक नहीं की थी। आवास, भोजन, पानी, साजसज्जा, पाण्डाल व्यवस्था आदि जितनी भी व्यवस्थाएं की गयी थीं, सभी की पधारे हुए लाखों श्रद्धालुओं ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

➢समापन की विदाई बेला में कई हर्षपूरित नेत्र माताजी का गुणगान कर रहे थे–

महाकुंभ मस्तकाभिषेक समापन की बेला में सभी को पूज्य माताजी का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद प्रवचन भी प्राप्त हुआ, जिसे सुनकर सभी के नेत्रों में हर्षपूरित अश्रु भर गए और सभी बोल उठे– हे माता! तू धन्य है, तेरी महिमा अपरम्पार है।

➢ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव की ऐतिहासिक धरोहर है यह तीर्थ–

''शास्त्रों में आचार्यों ने कहा है कि सौ नये मंदिर का निर्माण कराने से जो पुण्य अर्जित होता

पुण्यमेकस्य प्राचीनस्य जीर्ण–शीर्ण मन्दिरस्य तीर्थंकर भगवतो गर्भजन्मादीनां भूमीनां चोद्धारेण, संरक्षणेन–संवर्धनेन च भवति। एताः पंचकल्याणकभूमयः प्राचीनमन्दिराणि चास्माकं प्राचीनन्यासाः सन्ति धर्मस्य च प्रतीकानि सन्ति, एतेषां रक्षणमस्माकं प्रथमं कर्तव्यमस्ति। ते तीर्थाः अस्माकं धर्मस्तम्भाः विद्यन्ते, आधारशिलाः सन्ति। एते सदैव धर्मस्य प्रेरणां दत्वास्माक–मात्मकल्याणं कर्तुं सदैव सहायकाः भवन्ति।''

शास्त्रपुराणेषु एतान् तीर्थान् अचेतनाः तीर्थाः पंचपरमेष्ठिभगवन्तश्च चेतनतीर्था मताः। वर्तमाने चेतनतीर्थेभ्य अचेतनतीर्थानां विकासो जीर्णोद्धारः संरक्षणं संवर्धनं च सम्भवमस्ति। स्यादिदमेव कारणमस्ति यत् गणिनीप्रमुखा माता ज्ञानमती सदैव तीर्थंकराणां कल्याणकानां भूमीनां विकासादिकार्येषु स्वयमपि तत्परा विद्यते, सर्वेभ्यश्च तेषु दत्तचित्तेभ्यो भवितुं प्रेरणां प्रददाति। वस्तुतः अस्याः एव प्रेरणयाः प्रतिफलं इयं ''तीर्थंकरऋषभदेवदीक्षा–स्थल्यस्ति''**, या कोटिवर्षाणां पूर्वइतिहासं वर्तमाने पुनः जीवितं करोति। भगवतः ऋषभदेवस्यान्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहोत्सवस्य समापनावसरे निर्मितः तीर्थोऽयं सर्वेषां जैन धर्मावलम्बिनामैतिहासि– कन्यासोऽस्ति। यः युगयुगान्तरपर्यन्तं ताः स्मृतीः नूतनाः कुर्वन् तीर्थंकराणां भगवतां अहिंसा–अनेकान्तवाद–विश्वमैत्री–प्राणिमात्रं प्रतिकरुणा सदृशान् सर्वोदय सिद्धांतान् प्रति जने प्रतिष्ठापितान् करिष्यति। अतएव ईदृश्याः इतिहासप्रणेत्र्याः मातुर्विषये मया लिखितम्–**

है, उससे कई गुना अधिक पुण्य एक पुराने जीर्ण-शीर्ण मंदिर अथवा तीर्थंकर भगवन्तों की गर्भ, जन्मादि पंचकल्याणक भूमियों के उद्धार, संरक्षण-संवर्धन करने में है। ये पंचकल्याणक भूमियाँ एवं प्राचीन मंदिर हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं और धर्म के प्रतीक हैं, इनकी रक्षा करना हम सबका प्रथम पुण्य कर्त्तव्य है। वे तीर्थ हमारे धर्म के स्तम्भ हैं, आधारशिला हैं। ये हमें सदैव धर्म की प्रेरणा देकर हमारा आत्मकल्याण कराने में सहायक होते हैं।''

शास्त्र-पुराणों में इन तीर्थों को अचेतन तीर्थ एवं पंचपरमेष्ठी भगवन्तों को चेतन तीर्थ माना है। वर्तमान में चेतन तीर्थों के द्वारा ही इन अचेतन तीर्थों का विकास, जीर्णोद्धार, संरक्षण-संवर्धन संभव है। शायद यही कारण है कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी सदैव तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों के विकासादि में स्वयं भी तत्पर रहती हैं और सभी को उसमें दत्तचित्त रहने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। वस्तुतः इसी प्रेरणा का प्रतिफल यह **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली''** तीर्थ है, जो करोड़ों वर्ष पूर्व के इतिहास को वर्तमान में पुनः जीवन्त कर रहा है। भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव के समापन अवसर पर निर्मित यह तीर्थ समस्त जैनधर्मावलम्बियों की ऐतिहासिक धरोहर है, जो युगों-युगों तक उन स्मृतियों को तरोताजा करते हुए तीर्थंकर भगवन्तों के अहिंसा, अनेकान्तवाद, विश्वमैत्री, प्राणीमात्र के प्रति करुणा जैसे सर्वोदयी सिद्धान्तों को जन-जन में प्रतिष्ठापित करता रहेगा। इसीलिए ऐसी इतिहास प्रणेत्री माता के बारे में मैंने लिखा–

''अस्याः युग प्रणेत्र्याः मातुः यशः युगे युगे अमरं भविष्यति। 'चन्दनामतीः' प्रत्येककविरस्याः गुणगानं करिष्यति। एतेन पुण्येन एतस्यै शीघ्रमेव तीर्थंकरपदं प्राप्तं भविष्यति। सास्ति इतिहासप्रणेत्री।''

तीर्थे प्रथमबारं केशलुंचनसौभाग्यमहमपि प्राप्नवम्–**यस्यां पवित्रायां धरायां कोटिवर्षपूर्वं सिद्धप्रभोः साक्षीं गृहीत्वा भगवान् ऋषभदेवः पंचमुष्ठिकेशलुंचनं व्यधात् जैनेश्वरीं दीक्षां चांगीकृत्य मुनि परम्परां जीवितामकरोत्, तस्यामेव पावनधरायां तीर्थस्य नवनिर्माणस्य पश्चात् प्रथमबारमहं केशलुंचनं विधातुं सौभाग्यं प्राप्नवम्। अस्मिन्नवसरे श्री विक्रमाजीत तिवारी ए.डी.एम.एफ इलाहाबादनिवासी, श्री मुन्नीलाल पाण्डे च एस.डी.एम. समागत्य पूज्यमातुराशीर्वादं प्राप्नुताम्। तस्मिन् समये माता उपस्थितौ मुख्यातिथी, विभिन्नान् पत्रकारान् जनसमूहं च केशलुंचनस्यमहिमानं प्रतिपादयन्ती अकथयत् यत् भगवान ऋषभदेव प्रयागे एव वटवृक्षस्याधः प्रथमं केशलुंचनमकार्षीत्। पुनः यदा सः केवलज्ञानं प्राप्नोत् तदा तस्य समवसरणे तस्य पुत्रः वृषभसेनः ब्राह्मीसुन्दरी पुत्र्यौ च केशलुंचनं कृत्वा मुनेरार्यिकायाश्च दीक्षां गृहीत्वा प्रथमगणधरस्य प्रथमगणिन्याश्च पदं प्राप्नुवन्।**

श्री तिवारीं 15 फरवरी दिने गोरखपुर विश्वविद्यालयात् पी.एच.डी. उपाधेः प्राप्तिकरणेन कैलाशपर्वतस्य स्मृतिचिन्हं प्रदाय समित्या सम्मानितोऽभूत्।

इस तीर्थ प्रणेत्री माता का, यश युग-युग अमर रहेगा।
''चन्दनामती'' हर कवि इनका, पावन यशगान करेगा।। पावन.....
इस पुण्य से इनको तीर्थंकर पद, निश्चित शीघ्र मिलेगा।।
ये हैं इतिहास प्रणेता।।

➢**तीर्थ पर प्रथम केशलोंच का सौभाग्य मुझे भी मिल गया–**

जिस पवित्र धरा पर आज से करोड़ों वर्ष पूर्व सिद्ध प्रभु की साक्षी लेकर भगवान ऋषभदेव ने पंचमुष्टि केशलुंचन किया था और जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुनिपरम्परा को जीवन्त किया था, उसी पावन भूमि पर तीर्थ के नवनिर्माण के पश्चात् प्रथम बार मुझे केशलोंच करने का सौभाग्य प्राप्त हआ। इस अवसर पर श्री विक्रमाजीत तिवारी (ए.डी.एम.एफ.) इलाहाबाद और श्री मुन्नीलाल पाण्डे (एस.डी.एम.) ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय माताजी ने उपस्थित मुख्य अतिथि, विभिन्न पत्रकारों तथा जनसमूह को केशलोंच की महिमा बताते हुए कहा कि भगवान ऋषभदेव ने प्रयाग में ही वटवृक्ष के नीचे प्रथम केशलोंच किया था पुनः जब उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया, तब उनके समवसरण में उनके पुत्र वृषभसेन एवं ब्राह्मी-सुन्दरी पुत्रियों ने केशलोंच कर मुनि और आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर प्रथम गणधर तथा प्रथम गणिनी का पद प्राप्त किया था।

तिवारी जी को 15 फरवरी को गोरखपुर विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि मिलने के उपलक्ष्य में कैलाशपर्वत का मोमेन्टो देकर कमेटी द्वारा सम्मानित किया गया।

तीर्थेऽनेक विधानानि सम्पन्नान्यभवन्–**तीर्थेऽस्मिन् पंचकल्याणकस्य पूर्णतायाः पश्चात् अनेक लघूनि वृहन्ति विधानानि प्रारब्धान्यभवन्। सर्वप्रथमं कैलासपर्वतस्य गुहामन्दिरे 16 फरवरी दिनात्** ''समवसरणं विधानं'' **प्रारब्धमभवत्, यस्मिन् हजारीबागनगरस्य काश्चित् महिलाः संघस्था कुमारी इन्दुश्च भागमगृहणन्। पुनः अष्टाह्निकायां इलाहाबादस्य जैनसमाजः** ''सिद्धचक्र विधानस्य'' **च पाठमकरोत्। एतदतिरिक्तं 1 जनवरी 2001 दिने पूज्यमातुः तीर्थे प्रवेशादारभ्य यावत् काल प्रवासः आसीत्, तावत् कालं निरन्तरं संघस्थाः भगिन्यः ऋषभदेवविधानं, शान्तिविधानं, ऋषिमण्डलविधानं अन्यानि च विधानानि संपन्नानि अकुर्वन्। जिनेन्द्र भगवतो भक्तिं स्व प्रमुखं ध्येयं मन्यमानायाः मातुः इदमेव कथनमासीत् यत् भगवतः भक्त्या अनेकमहत्यः आपदः दूरीभूयालौकिक सुखेन सहैवाध्यात्मिक सुखमपि लभ्यते, अतो वयं स्वजीवने प्रतिदिनं कंचित् समयं प्रभुभक्तयेऽवश्यमेव व्यतीतं कुर्याम।**

यात्रिणामागमनपि प्रारब्धमभवत्–**फाल्गुन शुक्ल अष्टमी, 3 मार्च 2001 दिने संघस्थस्य क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य पंचदशतमं दीक्षादिनमासीत्, तस्मिन् दिने प्रातःकालादारभ्य सायंपर्यन्तं बहुयात्रिणः समायाताः यद्यपि क्षेत्रे स्थातुं व्यवस्था इदानीं पूर्णरूपेण नासीत्, परन्तु यावती व्यवस्थाऽऽसीत्, तस्यामेव सन्तुष्टो भूत्वा महान् प्रसन्नोऽभूत्। तीर्थस्य मातुश्च दर्शनं कृत्वा स्वभाग्यस्य प्रशंसामकरोत्। तत्पश्चात्तु यात्रिणामागमनं प्रारब्धमभवत्, तत् शनैः शनैः वृद्धिं गतोऽभवत्। अद्य सम्मेदशिखरतीर्थस्य तीर्थयात्रायाः प्रत्येकयात्री इमं**

➢तीर्थ पर अनेकों विधान सम्पन्न हुए–

इस तीर्थ पर पंचकल्याणक की पूर्णता के पश्चात् से अनेकों लघु एवं वृहद् विधान प्रारंभ हो गए। सर्वप्रथम कैलाशपर्वत के गुफा मंदिर में 16 फरवरी से **'समवसरण विधान'** प्रारंभ हुआ, जिसमें हजारीबाग की कुछ महिलाओं एवं संघस्थ ब्र.कु. इन्दु ने भाग लिया पुनः अष्टान्हिक पर्व में इलाहाबाद जैन समाज द्वारा **''सिद्धचक्र पाठ''** किया गया। इसके अतिरिक्त 1 जनवरी 2001 को पूज्य माताजी के तीर्थ पर मंगल प्रवेश से लेकर जब तक प्रवास रहा, तब तक निरन्तर संघस्थ बहनों द्वारा ऋषभदेव विधान, शांतिविधान, ऋषिमण्डल विधान आदि अनेकों विधान आयोजित होते रहे। जिनेन्द्र भगवान की भक्ति को अपना प्रमुख ध्येय मानने वाली पूज्य माताजी का यही कहना रहता है कि भगवान की भक्ति से बड़ी-बड़ी आपदाएँ दूर होकर अलौकिक सुख के साथ-साथ आध्यात्मिक सुख भी मिलता है अतः हमें अपने जीवन में प्रतिदिन कुछ समय प्रभु भक्ति के लिए अवश्य निकालना चाहिए।

➢यात्रियों का भी आवागमन प्रारंभ हो गया–

फाल्गुन शु. अष्टमी, 3 मार्च 2001 को संघस्थ क्षुल्लक मोतीसागर जी का 15वाँ दीक्षा दिवस था, उस दिन सुबह से लेकर शाम तक सैकड़ों तीर्थयात्री आ गये और भले ही तीर्थ पर ठहरने की व्यवस्था अभी पूर्णरूपेण नहीं हो पाई थी, परन्तु जितनी व्यवस्था हो सकी, वह उसमें ही संतुष्ट हो बड़े प्रसन्न हुए और तीर्थ व माताजी के दर्शन कर अपना अहोभाग्य माना। उसके बाद तो यात्रियों का जो आवागमन प्रारंभ हुआ, वह धीरे-धीरे बढ़ता चला गया, आज शिखरजी की यात्रा करने वाले

तीर्थमागत्य तीर्थदर्शनेन सहैव तस्य सुन्दरव्यवस्थां वीक्ष्य परमां प्रसन्नतामनुभवन्ति।

भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मतपःकल्याणकं पूज्यमातुश्च केशलुञ्चनम्–**चैत्र कृष्ण नवमी तिथिः भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मनः तपसश्चकल्याणकाभ्यां पवित्रा विद्यते। दीक्षास्थली तीर्थे भगवतो जन्मनः तपसां च कल्याणकस्यावसरे पूज्यमातुः केशलुञ्चनमभवत्। सभायाः पश्चात् कैलासपर्वते विराजमानस्य महतो भगवतः पंचामृताभिषेकोऽभवत्। वटवृक्षस्याधश्च ध्यानस्थस्य महामुनेः शताष्ट कलशैरभिषेकोऽभवत्।**

अद्य पावनदिनेऽहं दीक्षावतो भगवतः समीपे एकं नवं कमण्डलुं निधाय मात्रा शुद्धमकारयम्। नवां च पिच्छिकां निधाय पूज्यमात्रेअदाम्, तस्मिन् दिने महत् सौभाग्यं प्रतीतमभवत् यत् प्रयागे वास्तविकदीक्षा नगरे प्रभोरेव दीक्षादिने दीक्षोपकरणानि वयं प्राप्नुम।

एकमैतिहासिकं दिनम्–**27 मार्च 2001 दिनस्य तिथिमहमैतिहासिकमस्मात्कारणतः अकथयम् यत् यस्य पवित्रस्य वटवृक्षस्याधो भगवान् ऋषभदेवः कोटिवर्षाणि पूर्वं दीक्षामगृह्णात् सः अद्यापि वंशपरम्परयाऽक्षयो भूत्वा सैनिक क्षेत्रेऽवस्थितोऽस्ति तं च वटवृक्षं दृष्टुं वयं पूज्ययामात्रया सहाद्य पूर्वनिर्धारितकार्यक्रमानुसारं 7 वादनसमये आगताः। यतस्तस्मिन् क्षेत्रे शासकीय नियमानुसारेणैव गन्तुं शक्यते, अतएव ताः सम्पूर्णाः औपचारिकताः जैनतीर्थस्य कार्यकर्तारः पूर्वस्मादेव पूर्णाः कृत्वा शासनादेशमगृह्णन्। पूज्यमाता पूर्वस्मादेव भगवतः**

प्रत्येक यात्री इस तीर्थ पर आकर तीर्थदर्शन के साथ वहाँ की सुन्दर व्यवस्था से परम प्रसन्न होते हैं।

➢भगवान ऋषभदेव का जन्म-तपकल्याणक एवं पूज्य माताजी का केशलोंच समारोह–

चैत्र कृष्णा नवमी की तिथि भगवान ऋषभदेव के जन्म एवं तपकल्याणक से पावन है। दीक्षास्थली तीर्थ पर भगवान के जन्म व तपकल्याणक अवसर पर पूज्य माताजी का केशलोंच हुआ। सभा के पश्चात् कैलाशपर्वत पर विराजमान बड़े भगवान का पंचामृत अभिषेक हुआ तथा वटवृक्ष के नीचे ध्यानस्थ महामुनि का 108 कलशों से अभिषेक हुआ।

आज के पावन दिवस मैंने दीक्षा वाले भगवान के पास एक नया कमण्डलु रखकर माताजी से शुद्ध करवाकर लिया और नई पिच्छी रखवाकर पूज्य माताजी ने ग्रहण की, सो उस दिन बड़ा सौभाग्य प्रतीत हुआ कि प्रयाग के असली दीक्षानगर में प्रभु के दीक्षाकल्याणक के दिवस दीक्षा के उपकरण हम लोगों ने प्राप्त किए।

➢एक ऐतिहासिक दिवस–

27 मार्च 2001 की तिथि को मैंने ऐतिहासिक इसलिए बताया क्योंकि जिस पवित्र वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव ने आज से करोड़ों वर्ष पूर्व दीक्षा ली थी, वह आज भी वंश परम्परा से अक्षय होकर मिलिट्री एरिये में स्थित है और उसी वटवृक्ष को देखने के लिए हम सभी पूज्य माताजी के साथ आज पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 7 बजे पहुँच गए। चूँकि उस एरिया में सरकारी आदेशानुसार ही जाया जा सकता है अतः उन सभी औपचारिकताओं को जैन तीर्थ के कार्यकर्ताओं ने पूर्ण कर सरकारी आदेश ले लिया था। पूज्य माताजी ने पहले से ही भगवान ऋषभदेव के चरण बनवा लिए थे अतः सभी

ऋषभदेवस्य चरणचिह्नं निर्मितमकार्षीत्। अतः सर्वाः संघस्थाः ब्रह्मचारिण्यः भगिन्यः चरणचिन्हं पूजनसामग्रीं, जलं यंत्रं च आत्मना सहानयन्, तत्र गत्वा ताः अक्षयवटवृक्षस्याधः यन्त्रं स्थापयित्वा तत्रैव भगवतश्चरणचिह्नं विराजमानं कृत्वा तेषामभिषेकं पूजनं च अकारयन्, सामूहिकं भक्तामरस्तोत्रस्य पाठोऽभवत्, मातुश्च संक्षिप्तमुद्बोधनमभवत्।

तत्रास्मभ्यं जैन समाजस्य जनाः अवदन् यत् इदानीं 2–3 वर्षाणि पूर्वमत्र भगवतश्चरण चिह्नानि विराजमानान्यासन् वयं च अक्षयतृतीयाः दिने सम्पूर्ण जैन समाजेन सहागत्य भक्तामरस्तोत्रस्य पाठमप्यकुर्म। अधुना पुनश्चरण स्थापनां दृष्ट्वा ते सर्वे परमानन्दिता अभवन्। अस्य प्रकरणस्य लेखनपर्यन्तं ज्ञातमभवत् यत् भगवतः ऋषभदेवस्य तत् श्रीचरणमिदानीमपि वटवृक्षस्याधः यथावत् विराजमानं विद्यते। अत्रापि तत्र सा किंवदन्ती प्रसिद्धा वर्तते यत् अस्य वटवृक्षस्याधो भगवान् ऋषभदेवः केवलज्ञानं प्राप्नोत्।

सम्पूर्णाः हिन्दूसमाजजनाः एव वटवृक्षमतिपूज्यं मन्यन्ते महत्या श्रद्धया चैनमक्षयवटवृक्षं मत्वा दर्शनं कुर्वन्ति।

॥ इति पंचमोऽध्यायः॥

ब्रह्मचारिणी बहनों ने चरण, पूजन सामग्री, जल एवं यंत्र साथ में ले लिए थे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने अक्षयवट के नीचे यंत्र स्थापित कर वहीं भगवान के चरण विराजमान कर उनका अभिषेक-पूजन कराया, सामूहिक भक्तामर स्तोत्र का पाठ हुआ और माताजी का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ।

वहाँ हमें जैन समाज के लोगों ने बताया कि अभी 2-3 वर्ष पूर्व तक यहाँ भगवान के चरण विराजमान थे और हम लोग प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया के दिन सारी जैन समाज के साथ आकर भक्तामर स्तोत्र का पाठ भी किया करते थे। अब पुनः चरण स्थापना करते देखकर उन सभी को परम आल्हाद हुआ। इस प्रकरण को लिखने तक ज्ञात हुआ है कि भगवान ऋषभदेव के वे श्रीचरण वटवृक्ष के नीचे ज्यों की त्यों विराजमान हैं। आज भी वहाँ यह किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि इसी वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव को दिव्य केवलज्ञान प्रगट हुआ था।

पूरी हिन्दू समाज के लोग इस वटवृक्ष को बहुत ही पूज्य मानते हैं और बड़ी श्रद्धा से इसे अक्षयवट मानकर दर्शन करते हैं।

अध्याय-6

भगवान महावीर

2600वाँ

जन्मकल्याणक महोत्सव

षष्ठोऽध्यायः

भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मकल्याणकमहोत्सवः

इदमस्माकं भारतस्य गौरवमस्ति, यदस्मिन् देशे भगवन्तं ऋषभदेवात् प्रारभ्य महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतिः तीर्थंकरभगवन्तो जन्मानि अगृह्णन् देशं सनाथं च कृतवन्तः। भगवन्तं महावीरं जन्मगृहीत्वा 2599 वर्षाणि व्यतीतान्यभवन्। 6 अप्रैल 2001, चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने तस्य 2600 तमं जन्मकल्याणकमहोत्सवमायोजनार्थमनेकराष्ट्रीय–केन्द्रीयसामाजिकस्तराणां समितयः संघटिताः अभवन्। याभ्यः भगवतो महावीरस्य 2600 तमायाः दिगम्बरजैनराष्ट्रीय समितेः महामंत्रिणं श्री डी.के. जैन एडवोकेट महोदयं–दिल्लीं पूज्या माता 13.3.2001 दिने दीक्षास्थलीतीर्थस्य स्थानात् प्रेरणाप्रदेन पत्रेण सह निम्नलिखितं प्रारूपं प्रेषितमकरोत्–

भगवतो महावीरस्य 2600 तमायाः जन्मजयन्त्याः प्रस्तावितं प्रारूपम्–**यथा 1974 वर्षे भगवतो महावीरस्य 2500 तमस्य निर्वाणमहोत्सवस्यावसरे जैनधर्मस्य व्यापकप्रभावनायाः सुअवसरं देशः प्राप्नोत्, तथैव पुनः तस्यैव भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्यायोजनार्थं स्वर्णिमोऽवसरः सर्वेभ्यः प्राप्तोऽस्ति।**

एतन्निश्चितमस्ति यत् अग्रसमये निकटभविष्ये अस्माकं वा युष्माकं च जीवनकाले उक्तप्रकारस्याः शताब्द्याः–सहस्राब्द्याः महोत्सवमायोजनार्थं पुण्यावसरः प्राप्तो न भविष्यति

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव

यह हमारे भारत का गौरव ही है कि इस देश में भगवान ऋषभदेव से लेकर महावीरपर्यंत 24 तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लेकर इसे सनाथ किया है। भगवान महावीर को जन्म लेकर 2599 वर्ष व्यतीत हो गए और 6 अप्रैल 2001, चैत्र शुक्ला तेरस को उनका 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव मनाने हेतु अनेक राष्ट्रीय, केन्द्रीय, सामाजिक स्तर की कमेटियाँ बनाई गई थीं, जिनमें से भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव दिगम्बर जैन राष्ट्रीय समिति के महामंत्री श्री डी.के. जैन एडवोकेट-दिल्ली को पूज्य माताजी ने 13-3-2001 को दीक्षास्थली तीर्थ से एक प्रेरणापत्र के साथ निम्न प्रारूप भिजवाया–

➢भगवान महावीर 2600वाँ जन्मजयंती का प्रस्तावित प्रारूप–

जैसा कि सन् 1974 में भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर जैनधर्म की व्यापक प्रभावना का सुअवसर देश को प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार पुनः उन्हीं भगवान महावीर स्वामी का 2600वाँ जन्मकल्याणक मनाने का स्वर्णिम अवसर हम सभी को प्राप्त हुआ।

यह निश्चित है कि आगे निकट भविष्य में हमारे और आपके जीवनकाल में उक्त प्रकार के शताब्दी या सहस्राब्दी महोत्सव मनाने का पुण्य अवसर नहीं आएगा कि जिसके माध्यम से हम

यत् यस्य माध्यमेन वयं तीर्थंकराणां नाम्नां सिद्धान्तानां च प्रचारं प्रसारं च विश्वस्तरेण कर्तुं शक्नुमः अतोऽस्मिन् स्वर्णिमावसरे वर्षैकपर्यन्तं भगवतो महावीरस्य विविधैरायामैः सह गुणगानं कर्तुं केचित् प्रेरणाविन्दवोऽत्र प्रस्तुताः सन्ति—

प्रेरणास्पदाः संकेतविन्दवः–

1. अन्तिमस्य तीर्थंकरस्य भगवतो महावीरस्य 2600 तमायाः जन्मजयन्त्याः महोत्सवस्य वर्षे महावीरेण सहैव प्रथमस्य तीर्थंकरस्य भगवतः ऋषभदेवस्य नाम, परिचयः तथैव च मानवीयसंस्कृतिं प्रति कृतानामुपकाराणां वर्णनं समस्तेन साहित्येन सहावश्यमेव प्रकाशितं भवेत्।

2. अस्य वर्षस्यान्तर्गते चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमीनां विकासं केन्द्रीयदिगम्बरजैन–समित्या कर्तुं पूर्णः प्रावधानो निर्मितो भवतु। तासु जन्मभूमिसु एकः कीर्तिस्तम्भो निर्मितोभवेत् तत्र च लब्धजन्मनां भगवतां जीवनपरिचयः शिलालेखे उत्कीर्णो भवेत्।

3. एतेषु कार्येषु केन्द्रीयसमित्यार्थिकसहयोगस्यानुमानितव्ययोऽवश्यमेव निर्धारितः स्यात् अन्यासामुपेक्षितानां तीर्थंकरजन्मभूमीनां विकासः आर्थिकसमस्यायाः कारणैः रुद्धो न भविष्यति।

4. सर्वेषां तीर्थंकराणां जन्मभूमिसु अन्यकल्याणकभूमीनां क्षेत्रेषु तेषां–तेषां भगवतामेकैका विशालप्रतिमा विराजमाना भवतु, यया तेषां तीर्थानाम् माहात्म्यं वृद्धिंगतं भवितुं शक्नुयात्। यत्र–तत्रान्य तीर्थाणां निर्माणस्य स्थाने कल्याणक भूमीनामुद्धारो विकासश्च भवेत्। अन्यथा तं विना अस्माकं प्राचीना संस्कृतिर्लुप्ता भविष्यति।

तीर्थंकरों के नाम और सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर कर सकें अतः इस स्वर्णिम अवसर में एक वर्ष तक भगवान महावीर का विविध आयामों के साथ गुणगान करने के लिए कुछ प्रेरणाबिन्दु यहाँ प्रस्तुत हैं–

प्रेरणास्पद संकेत बिन्दु–

1. अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में महावीर के साथ-साथ प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का नाम, परिचय एवं उनके द्वारा मानवीय संस्कृति के प्रति किए गए उपकारों का वर्णन समस्त साहित्य के साथ अवश्य प्रकाशित किया जावे।

2. इस वर्ष के अन्तर्गत चौबीसों तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का विकास केन्द्रीय दिगम्बर जैन समिति द्वारा करने का पूरा प्रावधान बने। उन जन्मभूमियों पर एक-एक कीर्तिस्तंभ बनाए जाएँ तथा वहाँ पर जन्मे भगवान के जीवन परिचय को शिलालेख पर उत्कीर्ण कराया जाए।

3. इन कार्यों में केन्द्रीय समिति द्वारा आर्थिक सहयोग का बजट अवश्य बनाएं अन्यथा उपेक्षित पड़ी तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास आर्थिक समस्या के कारण रुक जाता है।

4. सभी तीर्थंकरों की जन्मभूमि या अन्य कल्याणक की भूमि वाले तीर्थों पर उन-उन भगवन्तों की एक-एक बड़ी प्रतिमा विराजमान की जावें, ताकि उन तीर्थों का माहात्म्य वृद्धिंगत हो सके। इधर-उधर अन्य नये तीर्थों को बनाने की बजाय कल्याणक भूमियों का उद्धार एवं विकास करना चाहिए क्योंकि इसके बिना हमारी प्राचीन संस्कृति विलुप्त हो रही है।

यथा–पूज्या माता कोटिवर्षाणां प्राचीन किन्तु विलुप्तां भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षायाः ज्ञानस्य कल्याणकभूमौ प्रयागे ऋषभदेवदीक्षास्थलीतीर्थस्य निर्माणमकारयत् जनमानसं च पौराणिकेनैतिहासेन परिचितमकारयत्।

अस्तु! प्रयागे तु तीर्थस्य नाम्नि किमपि स्थानं नैवासीत् न च तीर्थक्षेत्रसमितेः सूच्यां प्रयागतीर्थस्यास्तित्वमासीत्, अत्र तु दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानेन, जम्बूद्वीप–हस्तिनापुरेण सम्पूर्णं कार्यं नवरूपेण 'हाईवे' स्थाने भूमिं क्रीत्वा स्थापना कृता विद्यते किन्तु अन्येषां तीर्थंकराणां कल्याणकभूमिषु तीर्थस्य नाम्ना स्थानं तु विद्यते एव तत्र तानि विकसितानि विधाय प्रचारस्यावश्यकता वर्तते। प्रसंगानुसारेणाहमत्र तीर्थंकराणां सर्वासां जन्मभूमीनां नामानि प्रस्तौमि, यासां दर्शनानि कृत्वा भवन्तः तत्र दृश्यमानानां न्यूनतानां दूरीकरणार्थं समाजस्य ध्यानं केन्द्रितं कर्तुमुद्यताः स्युः—

तीर्थंकरस्य नाम	जन्मभूमिः
1. पंचतीर्थंकराः–ऋषभोऽजितोऽभिनन्दनः सुमतिरनन्तनाथाश्चैतेषां पंचानाम्	**अयोध्या**
2. संभवनाथः	**श्रावस्ती**
3. पद्मप्रभः	**कौशाम्बी**
4. सुपार्श्वपार्श्वनाथौ	**वाराणसी**
5. चन्द्रप्रभः	**चन्द्रपुरी**

जैसे– पूज्य माताजी ने करोड़ों वर्ष प्राचीन किन्तु विलुप्त हो चुकी भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग में ऋषभदेव दीक्षास्थली का निर्माण करवाकर जनमानस को पौराणिक इतिहास से परिचित करवाया है।

खैर! प्रयाग में तो तीर्थ के नाम पर कोई स्थान ही नहीं था, न ही तीर्थक्षेत्र कमेटी की लिस्ट में प्रयाग तीर्थक्षेत्र का अस्तित्व था, यहाँ तो त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा सारा कार्य नये सिरे से हाइवे पर जमीन खरीदकर किया गया है किन्तु अन्य तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों पर तीर्थ के नाम से स्थान तो हैं ही, बस उन्हें विकसित करके प्रचार में लाने की आवश्यकता है। प्रसंगानुसार मैं यहाँ तीर्थंकरों की सभी जन्मभूमियों के नाम दे रही हूँ, जिनके दर्शन कर आप सभी को वहाँ दिखने वाली कमियों को दूर करने हेतु समाज का ध्यान केन्द्रित करना है–

तीर्थंकर का नाम	**जन्मभूमि**
1. पाँच तीर्थंकर-ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति, अनन्तनाथ	अयोध्या
2. संभवनाथ	श्रावस्ती
3. पद्मप्रभनाथ	कौशाम्बी
4. सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ	वाराणसी
5. चन्द्रप्रभु	चन्द्रपुरी

6. पुष्पदन्तनाथः — काकन्दी
7. शीतलनाथः — भद्दिलपुरम्
8. श्रेयांसनाथः — सिंहपुरी–सारनाथः
9. वासुपूज्यनाथः — चम्पापुरी
10. विमलनाथः — कम्पिलापुरी
11. धर्मनाथः — रतनपुरी
12. शान्ति–कुन्थु–अरनाथाः — हस्तिनापुरम्
13. मल्लिनाथनमिनाथौ — मिथिलापुरी
14. मुनिसुव्रतनाथः — राजगृही
15. नेमिनाथः — शौरीपुरम्
16. महावीरस्वामी — कुण्डलपुरम्

5. वर्तमाने देशे प्रायः 230 विश्वविद्यालयाः सन्ति, तेषु भगवतो महावीरस्य नाम्ना एका संगोष्ठी योज्या।

6. सर्वेभ्यो विश्वविद्यालयेभ्यः भगवतां महावीरः ऋषभदेवचतुर्विंशति तीर्थंकराणा च सम्बन्धिनं साहित्यं निःशुल्कं प्रदत्तं स्यात्, येन तत्रैकः जैन पुस्तकालयो निर्मितो भवेत्।

7. भगवतो महावीरस्याजन्मकल्याणकस्य पावने प्रसंगे समस्तानां दिगम्बराणां

---

6. पुष्पदंतनाथ — काकन्दी
7. शीतलनाथ — भद्दिलपुर
8. श्रेयांसनाथ — सिंहपुरी (सारनाथ)
9. वासुपूज्य — चंपापुरी
10. विमलनाथ — कंपिलापुरी
11. धर्मनाथ — रतनपुरी
12. शांति, कुंथु, अरनाथ — हस्तिनापुरी
13. मल्लिनाथ, नमिनाथ — मिथिलापुरी
14. मुनिसुव्रतनाथ — राजगृही
15. नेमिनाथ — शौरीपुर
16. महावीर स्वामी — कुण्डलपुर

5. वर्तमान में देश के अन्दर लगभग 230 विश्वविद्यालय हैं, उनमें भगवान महावीर के नाम से एक संगोष्ठी कराई जावे।

6. सभी विश्वविद्यालयों में भगवान महावीर, ऋषभदेव एवं चौबीसों तीर्थंकरों से संबंधित दिगम्बर जैन साहित्य निःशुल्क प्रदान किया जाए, जिससे वहाँ एक जैन लाइब्रेरी बन जावे।

7. महावीर जन्मजयंती के इस पावन प्रसंग पर समस्त दिगम्बर जैनाचार्य आदि चतुर्विध संघों

जैनाचार्याणां आदीनां चतुर्विधसंघानां एका समन्वयसमितिर्योज्या, केषुचिच्च स्थानेषु चतुर्विध–संघसम्मेलनान्यायोजितानि भवन्तु, येन समाजस्य पुनः संघटनस्य रूपं संपत्स्यते।

8. दिगम्बरजैनसंप्रदायस्य साध्वीनामेका ''साध्वीपरिषद्'' **संघटिता स्यात्, या नार्याः शक्तेः प्रतीका भविष्यति।**

9. जन्ममहोत्सवस्य वर्षस्य समापनावसरे 2002 वर्षे विश्वस्तरेणैकं ''भगवान् महावीर विश्वशान्तिशिखरसम्मेलनमायोजितं'' **भवेत्।**

इदं विशालं कार्यं शासकीयसमित्याः सहयोगेनैव पूर्णसंभवं भवितुमर्हति अतोऽस्मिन् विषये शासनस्य समक्षं प्रारूपं निर्माय प्रस्तुतं भवेत्।

भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य महोत्सवस्य हेतवे गणिनीप्रमुखायाः ज्ञानमत्याः मातुः प्रधानमंत्रिणे श्रीअटलबिहारी महोदयाय प्रेरणासन्देशः–**मार्च 1998 वर्षे विश्वस्य सर्वस्य महतः प्रजातन्त्रस्य ''भारतदेशस्योत्तरदायित्वं'' प्रधानमंत्रिणो रूपेण धारणस्य पश्चात् महता सौभाग्येन भवान् मम संघस्थसान्निध्ये महावीरजयन्ति 9 अप्रैल 1998 दिने दिल्ल्याः तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम स्थानात् महावीरस्य पूर्वजस्य प्रथमतीर्थंकर–भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणरथस्य भारतभूमौ भ्रमणहेतवे प्रवर्तनमकरोत्, तस्य रथस्य माध्यमेन तीर्थंकराणां–परम्पराणां महतः सिद्धान्तान् प्रतिजनः संकल्पितान् कर्तुं महतीं सफलतां प्राप्नोत्।**

अस्यामेव शृंखलायां 4 फरवरी 2000 दिने दिल्लीनगर्याः 'लालकिला' प्रांगणे मम

की एक समन्वय समिति बनाई जाय तथा कुछ स्थानों पर चतुर्विध संघ सम्मेलन भी आयोजित किए जावें, इससे समाज में पुनर्संगठन का रूप बनेगा।

8. दिगम्बर जैन आम्नाय की साध्वियों की एक **''साध्वी परिषद''** बनाई जावे, जो नारी शक्ति की प्रतीक होगी।

9. जन्ममहोत्सव वर्ष के समापन अवसर पर सन् 2002 में विश्व स्तर पर एक **''भगवान महावीर विश्वशांति शिखर सम्मेलन''** कराया जावे।

यह विशाल कार्य सरकारी समिति के सहयोग से ही पूर्ण संभव हो सकता है अतः इस विषय में सरकार के समक्ष प्रारूप बनाकर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

➢भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव हेतु गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के लिए प्रेरणा संदेश–

मार्च 1998 में विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र **''भारतदेश''** की बागडोर प्रधानमंत्री के रूप में संभालने के पश्चात् महान सौभाग्य से आपने मेरे ससंघ सानिध्य में महावीर जयंती 9 अप्रैल 1998 को दिल्ली के तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम से महावीर के पूर्वज प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के समवसरण रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन किया था। उस रथ के माध्यम से तीर्थंकर परम्परा के महान सिद्धान्तों को जन-जन में संकल्पित करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

इसी शृंखला में 4 फरवरी 2000 को आपने दिल्ली के लाल किला मैदान में मेरी प्रेरणा एवं

प्रेरणायामुपस्थित्यां च तत्कालीनस्य केन्द्रीयवित्तराज्यमंत्रिणः श्री वी. धनञ्जयकुमारजैन–स्याध्यक्षतायां ''भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहामहोत्सवस्योद्घाटनमकरोत्।'' इदं महोत्सववर्षमपि राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीयस्तरेण भगवतः ऋषभदेवस्य सर्वोदयपूर्णशिक्षाः–विश्वमैत्री–पारस्परिकं सौहार्दं–अहिंसा–अनेकान्तवाद–पर्यावरणशुद्ध्यादीनां विविधायोजनैः सह सम्पूर्णे विश्वे प्रसारयितुं पूर्णरूपेण सफलमभवत्। अस्यैव निर्वाणमहोत्सवस्य वर्षस्य भव्यं समापनं महाकुम्भमेलोपकस्य विश्वप्रसिद्धायां भूमौ प्रयागे तीर्थे ''तीर्थंकरऋषभदेव दीक्षास्थली'' प्रयागस्य मध्ये जैन तीर्थक्षेत्रस्य निर्माणेन सह कृतम्, यस्य उद्घाटनं लोकार्पणं च 4 फरवरी 2001 दिने भवत एव मंत्रिमण्डलस्य केन्द्रीय मानव संसाधन विकासमंत्रिणः श्री मुरली मनोहर जोशी महोदयस्य करकमलाभ्यां संपन्नमभवत्। अस्य तीर्थस्येयमेव विशेषता विद्यते यत् युगान्तं तीर्थंकराणां वाणीं प्रचारयितुं स्थायिकेन्द्रं संसाराय प्राप्तमभवत्।

अधुना इदं महतः सौभाग्यस्य विषयोऽस्ति यत् यस्य तीर्थंकर ऋषभदेवस्य प्रचार–प्रसारस्य भवान् अनेन प्रकारेण प्रद्योतनमकरोत्, तस्यैव तीर्थंकर परम्परायां अन्तिमस्य चतुर्विंशतितमस्य तीर्थंकरस्य भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मजयन्ति महोत्सवस्य शुभारम्भः 6 अप्रैल 2001 दिने राजधान्यां दिल्लीनगर्यां भवंति। अद्य वास्तविकता तु इयमेवास्ति यदेतेषां तीर्थंकराणां भगवतां सिद्धान्ताः एवाधुना विश्वाय सर्वाधिकाः आवश्यकाः विद्यन्ते। एतेषां सिद्धान्तानां च प्रचार–प्रसारे सहभागिता महतः पुण्यस्य कार्यमस्ति। मम भवतेऽयमेव मंगल प्रेरणा सन्देशः आशीर्वादश्चास्ति यत् अहिंसायाः युगपुरुषस्य भगवतो महावीरस्य

उपस्थिति में तत्कालीन केंद्रीय वित्तराज्यमंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता में ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' का उद्घाटन किया था। यह महोत्सव वर्ष भी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भगवान ऋषभदेव की सर्वोदयी शिक्षाओं-विश्वमैत्री, पारस्परिक सौहार्द, अहिंसा, अनेकान्तवाद, पर्यावरण शुद्धि इत्यादि को विविध आयोजनों के साथ विश्वभर में फैलाने में पूर्ण सफल हुआ। इसी निर्वाण महामहोत्सव वर्ष का भव्य समापन महाकुंभ मेले की विश्व प्रसिद्ध भूमि प्रयाग तीर्थ पर ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली'' प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र के निर्माण के साथ किया गया जिसका उद्घाटन एवं लोकार्पण 4 फरवरी 2001 को आप ही के मंत्रीमण्डल के केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस तीर्थ की यही विशेषता है कि युगों-युगों तक तीर्थंकरों की वाणी को प्रचारित करने वाला यह स्थायी केन्द्र संसार को प्राप्त हुआ है।

अब यह बड़े सौभाग्य का विषय है कि जिन तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार का आपने इस प्रकार प्रद्योतन किया, उन्हीं की तीर्थंकर परम्परा के अंतिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के 2600वें जन्मजयंती महोत्सव का शुभारंभ आप 6 अप्रैल 2001 को राजधानी दिल्ली में कर रहे हैं। वास्तविकता तो यही है कि इन तीर्थंकर भगवन्तों के सिद्धान्त ही आज विश्व के लिए सर्वाधिक आवश्यक हैं और इन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनना महान पुण्य का विषय है। मेरा आपके लिए यही मंगल प्रेरणा संदेश एवं आशीर्वाद है कि अहिंसा के युगपुरुष भगवान महावीर के

सिद्धान्तानां छत्रछायायां भवतो धर्ममयं शासनं सुरक्षितं भूत्वा समस्ते देशे विदेशेषु च शान्तिकारि, सुभिक्षकारि कल्याणकारि च सिद्धं भवतु, इयमेव मम हार्दिकभावना विद्यते।

पूज्यमातुः राष्ट्राय मंगलसन्देशः–**प्रथमतीर्थंकरस्य भगवतः ऋषभदेवस्य परम्परायां अन्तिमस्य चतुर्विंशतितमस्य भगवतो महावीरस्वामिनः 2600 तमो जन्मजयन्ती महोत्सव वर्षं ''अहिंसा वर्षरूपेण'' राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीयस्य च स्तरेण व्यापकरूपेण आयोजितं संपत्स्यते, अयमत्यन्तमेव हर्षस्य गौरवस्य च विषयोऽस्ति।**

अधुनाकालस्य युगे चतुर्विंशतितीर्थंकराणां भगवतां तेषु पद्चिह्नेषु चलतां च महापुरुषाणां सर्वोपयोगिनः सिद्धान्तान् यथा– पारस्परिकसामञ्जस्यं–विश्वमैत्री–अहिंसा–अनेकान्त–पर्यावरण–रक्षादीन् व्यावहारिकरूपेण आत्मसात् विधातुं परमावश्यकता विद्यते, यतोऽद्य तेषामेव प्रकाशविन्दूनां माध्यमेन वर्तमाने भविष्ये च मानवजीवनस्य अस्तित्वस्य च मार्गः आलोकितं भवितुं शक्यते।

भगवान महावीरोऽहिंसाया अग्रदूतो युगपुरुषः आसीत्। यस्मिन् काले धरित्र्यां हिंसायाः भीषणज्वाला दह्यमानाऽऽसीत्, तस्मिन् समयेऽहिंसारूपां शीतलजलवृष्टिं कृत्वा भगवान महावीरः सम्पूर्णमानवतायै अत्यन्त सौम्यकारिणं धर्मस्य पीड़ाहरम् दिव्यौषधं प्रादात्। ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' **अर्थात्** ''यदात्मने प्रतिकूलमस्ति, तादृशं व्यवहारमन्यैः सह न कुर्यात्।'' **ईदृशं करुणापूर्णं सिद्धान्तं विश्वाय प्रदाय सः सर्वानेव प्राणिनः आत्मवत् अवगत्य**

सिद्धान्तों एवं जनकल्याणी वाणी का आप एवं आपकी सरकार खूब प्रचार-प्रसार करें तथा इन्हीं सिद्धान्तों की छत्रछाया में आपका धर्ममयी शासन सुरक्षित रहते हुए समस्त देश एवं विदेश में शांतिकारी, सुभिक्षकारी एवं कल्याणकारी सिद्ध हो, यही मेरी हार्दिक भावना है।

➢**पूज्य माताजी का राष्ट्र के नाम मंगल संदेश–**

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की तीर्थंकर परम्परा में अंतिम एवं चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव वर्ष 'अहिंसा-वर्ष' के रूप में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से मनाया जा रहा है, यह अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है।

आज के युग को चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों एवं उनके पदचिन्हों पर चलने वाले महापुरुषों के सर्वोपयोगी सिद्धान्तों जैसे– पारस्परिक सामंजस्य, विश्वमैत्री, अहिंसा, अनेकांत, पर्यावरण रक्षा इत्यादि को व्यवहारिक रूप से आत्मसात् करने की महती आवश्यकता है क्योंकि इन्हीं प्रकाश बिन्दुओं के माध्यम से वर्तमान एवं भविष्य में मानव जीवन एवं अस्तित्व का पथ आलोकित हो सकता है।

भगवान महावीर स्वामी अहिंसा के अग्रदूत युगपुरुष थे। जिस समय धरती पर हिंसा की भीषण ज्वाला धधक रही थी, ऐसे समय में अहिंसारूप शीतल जलवृष्टि करके महावीर ने सम्पूर्ण मानवता को अत्यन्त सौम्यकारी धर्म का दिव्य मलहम प्रदान किया था। **''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''** अर्थात् **''जो स्वयं को प्रतिकूल हो, ऐसा व्यवहार दूसरों के साथ भी न करें''** जैसा करुणामयी सिद्धान्त विश्व को देकर उन्होंने सभी प्राणियों को आत्मवत् समझकर सभी के

सर्वैः सह मित्रस्य व्यवहारं कर्तुं अमरसन्देशं प्रादात्।

वयं सर्वेऽपि परस्परं मैत्रीभावं धारयन्तः विगतवर्षेभ्यः सर्वेभ्यः विघटनकारिभ्यः सन्दर्भैः मुखं परिवर्त्य पूर्णतया संघटिताः भूत्वा स्वपरकल्याणस्य महल्लक्ष्यं पूरयन्तः स्वसद्भाव पूर्णेनाचरणेन संसाराय पुनः एकबारं महावीरस्य स्मृति दद्याम, तद्युगं च पुनर्जीवितं कुर्याम। अधुनैवैतस्मात् पूर्वं भवन्तो भगवतो महावीरस्य भगवत वृषभदेवस्य यत् अन्तर्राष्ट्रीयस्य निर्वाणमहोत्सवस्य वर्षमायोजितमकुर्वन्, तस्यामेव शृंखलायां परम्परायां च भगवतो महावीरस्यायं महोत्सवोऽपि समस्ताय विश्वाय मानवतायै च पूर्णमंगलकारी, कल्याणकारी सुभिक्षकारी च भवतु, इयमेव मम हार्दिक भावना विद्यते।

विभिन्नसामाजिकसंस्थाभ्य–विद्वद्भ्यः–युवाभ्यः–महिलाभ्यश्च वार्षिककार्यकलापहेतवे प्रेरणाबिन्दवः–**भारतीयसमाजस्याधारशिलायाः रूपेण शिक्षाजगतः कीर्तिमतो विद्वज्जनान् भाविपरम्परायाः उन्नायकान् युवकवर्गान् पातिव्रत्यसंस्कृतेः जीवित्प्रतीकः नारीसमूहं बालिकानां च धर्मधुरायाः संपादकानां बालपरम्परां भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मोत्सववर्षस्य सन्दर्भे स्वसक्रियां भूमिकां निर्वाह हेतवेऽहमुक्तसंस्थानां माध्यमेनाह्वयामि यत् जीवने प्राप्तानां तेषां स्वर्णिमक्षणानां प्रतिपलस्य मूल्यांकनं कुर्वन्तु स्वसुन्दरैः कार्यकलापैश्च जिनशासनं विश्वस्य क्षितिजे नीत्वा धर्मप्रभावनायाः पुण्यं प्राप्नुवन्तु।**

धर्मप्रभावनायाः शृंखलायां निम्नलिखिताः बिन्दवः प्रस्तूयन्ते, यान् भवन्तः स्थानीयसमाजेन,

---

साथ मैत्री का व्यवहार करने का अमर संदेश प्रदान किया था।

हम सबको भी परस्पर मैत्रीभाव धारण करते हुए विगत वर्षों में घटित सभी विघटनकारी संदर्भों से मुख मोड़कर पूर्ण संगठित होकर स्व-पर कल्याण का महान लक्ष्य पूरित करते हुए अपने सद्भावपूर्ण आचरण से संसार को एक बार पुनः भगवान महावीर का स्मरण दिला देना है, उस युग को पुनर्जीवित कर देना है। अभी इससे पूर्व में आप सबने भगवान महावीर के पूर्वज भगवान ऋषभदेव का जो अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष मनाया, उसी श्रृंखला में एवं परम्परा में भगवान महावीर का यह महोत्सव भी समस्त विश्व एवं मानवता के लिए पूर्ण कल्याणकारी, मंगलकारी एवं सुभिक्षकारी हो, यही मेरी हार्दिक भावना है।

➢विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, विद्वानों, युवाओं एवं महिलाओं के लिए वार्षिक कार्यकलाप हेतु प्रेरणा बिन्दु–

भारतीय समाज की आधारशिला के रूप में शिक्षा जगत् के कीर्तिमान स्वरूप विद्वज्जन, भावी पीढ़ी के उन्नायक युवावर्ग, पातिव्रत्य संस्कृति की जीवन्त प्रतीक नारीसमाज एवं कलिकाल में धर्मधुरा की संवाहक बालपीढ़ी को भगवान महावीर के 2600वें जन्मोत्सव वर्ष के संदर्भ में अपनी सक्रिय भूमिका निर्वाह करने हेतु मैं उक्त संस्थाओं के माध्यम से आह्वान करती हूँ कि जीवन में प्राप्त हुए इन स्वर्णिम क्षणों के एक-एक पल का मूल्यांकन करें तथा अपने सुन्दर कार्यकलापों से जिनशासन को विश्व के क्षितिज पर पहुँचाकर धर्मप्रभावना का पुण्य प्राप्त करें।

धर्मप्रभावना की श्रृंखला में निम्न संकेत बिन्दु प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिन्हें आप स्थानीय समाज,

जनपदस्तरेण, प्रदेशस्तरेण, राष्ट्रीयस्तरेण च सम्पन्नान् कृत्वा स्वोत्तरदायित्वं निर्बोढुं शक्नुवन्ति–

सांकेतिकाः प्रेरणाबिन्दवः–

1. सम्पूर्णस्य देशस्य दिगम्बर जैन मन्दिरेषु 2600 प्रतिमा (ऋषभदेवस्य महावीरस्य च युगलप्रतिमाः) विराजमानाः कृताः।

2. 26 तीर्थानां जीर्णोद्धारं विकासं च कृत्वा तत्र कीर्तिस्तम्भानां स्मारकाणां च निर्माणम्।

3. 2600 मंत्रैः समन्वितं विश्वशान्ति महावीर विधानं षड्विंशति स्थानेषु 2600 इन्द्र–इन्द्राणिभिः सम्पन्नं भवतु।

4. षड्विंशति महिलाभिः कलशयात्रा भवतु।

5. षड्विंशति महाकुम्भैर्भगवतो महावीरस्य पाण्डुकशिलायामभिषेको भवतु।

6. 26–26 विदुषां प्रत्येक प्रान्ते सम्मानो भवतु।

7. 26–26 प्रतिभाशालिनीनां महिलानां प्रत्येकप्रान्ते सम्मानो भवतु।

8. 26–26 विशिष्टकार्यकर्तृणां युवकानां प्रत्येकप्रान्ते सम्मानो भवतु।

9. 26–26 कुमारी कन्यानां (विशिष्टकार्यसम्पादिन्यः सन्ति) ताषां प्रत्येकप्रान्ते सम्मानो भवतु।

10. 26–26 वीरबालानां प्रत्येकप्रान्ते सम्मानो भवतु।

11. महिलासंघटनस्य समस्तानां शाखानां स्थानीय समाजस्य 26 विशिष्टमहिलाभ्यः

जिला स्तर, प्रदेश स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न करके अपना उत्तरदायित्व निभा सकते हैं–

सांकेतिक प्रेरणा बिन्दु–

1. पूरे देश के दिगम्बर जैन मंदिरों में 2600 प्रतिमाएँ (ऋषभदेव एवं महावीर की युगल प्रतिमा) विराजमान करना।

2. 26 तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास करके वहाँ कीर्तिस्तंभ, स्मारक आदि बनावें।

3. 2600 मंत्रों से समन्वित विश्वशांति महावीर विधान 26 स्थानों पर 2600 इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा सम्पन्न हो।

4. 2600 महिलाओं द्वारा कलश यात्रा हो।

5. 2600 महाकुंभों द्वारा भगवान महावीर का पाण्डुकशिला पर अभिषेक किया जावे।

6. 26-26 विद्वानों का प्रत्येक प्रांत में सम्मान होवे।

7. 26-26 प्रतिभाशाली महिलाओं का प्रत्येक प्रांत में सम्मान होवे।

8. 26-26 विशिष्ट कार्यकर्ता युवकों का प्रत्येक प्रांत में सम्मान किया जावे।

9. 26-26 कुमारी कन्याओं (विशेष कार्य करने वाली) का प्रत्येक प्रांत में सम्मान हो।

10. 26-26 बहादुर बच्चों का प्रत्येक प्रांत में सम्मान हो।

11. महिला संगठन की समस्त इकाईयाँ स्थानीय समाज की 26 विशिष्ट महिलाओं को

''माता त्रिशला'' पुरस्कारः प्रदत्तो भवतु।

12. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन केन्द्रीयमहिलापरिषद् 2600 निर्धनानां बालानां शिक्षायाः प्रबन्धं करोतु।

13. प्रत्येक संस्था 26–26 महावीर संगोष्ठीनामायोजनं करोतु।

14. 26 प्रशिक्षणशिविरान् (दशलक्षणपर्वणः प्रवचनार्थं गमनहेतवे विद्वज्जनानां निर्माणाय) आयोजितान् करोतु।

15. चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां कल्याणकभूमीनां च जीर्णोद्धारो विकासश्च भवेत्। तेभ्यः एकैक संस्था एकैकस्य तीर्थस्य विकासस्योत्तरदायित्वं गृहीतुं शक्नोति।

16. 26 विश्वविद्यालयेषु महाविद्यालयेषु च दिगम्बरजैनग्रन्थसहिता एकैक गोदरेज अलमारी उपहारे दीयताम्।

17. 26–26 दानिनां श्रेष्ठीनां प्रत्येकप्रान्ते सम्मानो भवतु।

18. 26–26 कीर्तिस्तम्भाः प्रत्येकप्रान्ते निर्मिताः भवेयुः।

कीर्तिस्तम्भस्य मानचित्रं आदर्शश्च जम्बूद्वीप हस्तिनापुरे उपलब्धमस्ति, तस्यैव एकः आदर्शः कीर्तिस्तम्भः तीर्थंकरऋषभदेवदीक्षास्थल्यां प्रयागे तीर्थे निर्मितमस्ति।

19. 26 राजकीयउद्यानानि (सम्पूर्णे देशे) निर्मितानि भवन्तु तेषु च भगवतो महावीरस्य प्रतिकृतिर्निर्मिता स्यात्।

''माता त्रिशला'' पुरस्कार से सम्मानित करें।

12. अ.भा.दि. जैन केन्द्रीय महिला संगठन 2600 गरीब बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करें।

13. प्रत्येक संस्था 26-26 महावीर संगोष्ठियाँ कराने की जिम्मेदारी लेवे।

14. 26 प्रशिक्षण शिविर (दशलक्षण पर्व के प्रवचन में जाने हेतु विद्वान बनाने के लिए) आयोजित हों।

15. 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमि एवं कल्याणक भूमियों का जीर्णोद्धार तथा विकास हो। उनमें से एक-एक संस्था एक तीर्थ के विकास की जिम्मेदारी ले सकती है।

16. 26 विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में दिगम्बर जैन ग्रंथों सहित एक-एक गोदरेज अलमारी भेंट की जाये।

17. 26-26 दानी श्रेष्ठियों का सम्मान प्रत्येक प्रान्त में किया जाए।

18. 26-26 कीर्तिस्तंभ प्रत्येक प्रांत में निर्मित हों (कीर्तिस्तंभ का नक्शा एवं मॉडल जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में उपलब्ध है, उसी का नमूना एक कीर्तिस्तंभ तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर निर्मित हो चुका है)।

19. 26 राजकीय उद्यान (देश भर में) महावीर के नाम पर किए जाएं तथा उनमें भगवान महावीर का स्टेचू बने।

20. प्रत्येकनगरे ग्रामे च 2600–2600 जनाः अष्टमूलगुणानां पालनस्यापेक्षापत्राणि पूर्णानि कुर्यः।

21. 2600 नगरेषु माँस विक्रयकेन्द्राणां समाप्तयेऽभियानस्यारम्भः।

22. माँसनिर्यातविरोधाय प्रत्येकजनपदेभ्यः 2600–2600 पत्राणि केन्द्रशासनाय प्रेषितानि स्युः।

टिप्पणी–**पूज्या गणिनीप्रमुखा श्रीज्ञानमती माताश्रीः 7 इंचमानस्य खड्गासनायाः ऋषभदेवमहावीर स्वामिनोः प्रतिमाः पंचकल्याणकप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठिता अकरोत्, इच्छुकजनाः जम्बूद्वीपहस्तिनापुरे एतयोर्द्वयोः प्रतिमयोर्युगलं प्राप्तुं शक्नुवन्ति।**

विश्वशान्तिमहावीर विधानेन सह प्रारब्धोऽभवत् प्रयागे भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मजयन्ती महोत्सवः–**पूज्यमातुः संघसान्निध्ये 1 अप्रैल दिनात् 9 अप्रैल 2001 दिन पर्यन्तमायोजितस्य अस्य विधानस्य सौधर्मेन्द्रेन्द्राणीं भवितुं सौभाग्यं श्रीकृष्णकुमारो जैनः श्रीमती साधना जैना च प्राप्नुताम्। 2600 मंत्रैः समन्वितेन, सुमेरुपर्वतस्याकर्षकमंडलेन युक्तैः रत्नैश्च पूजाजाप्येन स्वस्मिन् अद्भुतेऽस्मिन् मण्डलविधाने अनेकधर्मनिष्ठाः श्रद्धालवो भक्ताः शान्तिधारायाः, रत्नजाप्यस्य, मण्डलविधानस्य, आरत्यादेः सौभाग्यं प्राप्नुवन्।**

प्रयागवासिनो जीवनेऽमूल्यानि क्षणानि प्राप्नुवन्–**इदं प्रयागवासिनां परमं सौभाग्यमेवासीत् यस्याः पूज्याया ज्ञानमत्याः मातुः दिल्लीनिवासिनः 2600 तमायाः जन्मजयन्त्याः महामहोत्सवाय**

---

20. प्रत्येक शहर, ग्राम और नगर में 2600-2600 लोगों से अष्टमूलगुण पालन का फार्म भरवाना।

21. 2600 नगरों में मांस की दुकानें बंद करने का अभियान चलाना।

22. मांस निर्यात के विरोध में प्रत्येक जिले से 2600-2600 पत्र केन्द्र सरकार को भिजवाना।

नोट– पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 7 इंच की खड्गासन ऋषभदेव एवं महावीर स्वामी की प्रतिमाएँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठित की हैं, सो इच्छुकजन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में इन दोनों प्रतिमाओं का जोड़ा प्राप्त कर सकते हैं।

➢विश्वशांति महावीर विधान के साथ प्रारंभ हुआ प्रयाग में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव–

पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में 1 अप्रैल से 9 अप्रैल 2001 तक आयोजित इस विधान के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनने का गौरव श्री कृष्ण कुमार जैन एवं श्रीमती साधना जैन को प्राप्त हुआ। 2600 मंत्रों से समन्वित, सुमेरु पर्वत के आकर्षक मण्डल से युक्त और रत्नों द्वारा पूजा-जाप्य से स्वयं में अद्भुत इस मण्डल विधान में अनेक धर्मनिष्ठ श्रद्धालु भक्तों ने शांतिधारा, रत्नजाप्य, मण्डल विधान, आरती आदि का सौभाग्य प्राप्त किया।

➢प्रयागवासियों को जीवन में अमूल्य क्षण प्राप्त हुए–

यह प्रयागवासियों का परम सौभाग्य ही था कि जिन पूज्यनीया ज्ञानमती माताजी का दिल्ली निवासी 2600वें जन्मजयंती महामहोत्सव हेतु पलक पांवड़े बिछाकर इंतजार कर रहे थे, उनके

चक्षु–पलकदलानि विस्तार्य निरन्तरं तस्याः प्रतीक्षामकुर्वन्, तस्याः सान्निध्ये तेभ्यः भगवतो महावीरस्य महोत्सवमायोजितं सुअवसरः प्राप्तोऽभवत यतो महोत्सवोऽयमितिहासस्य स्वर्णिमपृष्ठो भूत्वा युगयुगान्तराय चिरस्थायिनीं स्मृतिं जन–जनेभ्यो प्रदानं करिष्यति।

पूर्वनिर्धारितेन कार्यक्रमानुसारेण प्रातः 5.30 वादनसमये बैण्डवादनैः सह नगरस्य मुख्यमार्गैः प्रभातपरिक्रमा निष्कासिताभवत्, पश्चान्मातुः प्रेरणया जन्मोत्सवस्य प्रसन्नतायां नवनिर्मित 'महावीरजयन्तीभवने' जनसमूहैः घण्टा–वादन–शंख–रक्कादीन् वादयित्वा भगवतश्चरणयो– र्दीपकफलादीनि समर्पितानि कृतानि इन्द्रैश्च कृतायाः रत्नवृष्ट्याः प्रतीकरूपेण रत्नवृष्टिं कृत्वा तानि रत्नानि जनसमूहाय वितीर्णान्यभवन्। जन्ममहोत्सवस्य ध्वजोत्तोलनं 7 प्रातः 7.15 वादने स्वरूपरानी वाटिकायामभवत्, पश्चात् धर्मसभा समायोजिता, अस्यां मुख्यातिथिरूपेण इलाहाबाद विश्वविद्यालयस्य कुलपति श्री जी.वी. मेहता, कौशाम्ब्याश्च युवा जनपदाधिकारी श्री पार्श्वसारथी शर्मा विशिष्टा अतिथिश्च श्रीमती उषा मेहता समागच्छन्। पूज्यमाताश्रीः एतानतिथीन् उपस्थितजनसमुदायं च सम्बोधितान् कुर्वन्ती तान् भगवतो महावीरस्य जीवनेन परिचितान् अकारयत् अब्रवीच्च यदहमेकवर्षीयस्यायोजनस्य मध्ये प्रस्तावितानां कार्यक्रमाणां रूपरेखामरचयम् यस्यां इलाहाबाद विश्वविद्यालये ''जैनपीठस्य स्थापना, 26 संगोष्ठीनाः 26 श्रीमतां जनानां सम्मानम् आदयः सन्ति, येषामग्रेऽहं विस्तृतां चर्चां विधास्यामि। सा अद्य पवित्रेऽवसरे राष्ट्रपतयेः प्रधानमंत्रिणे अन्येभ्यश्च शासकगणेभ्यः स्व हृदयेऽहिंसां धारयित्वा अहिंसक राष्ट्रस्य विश्वशान्तेश्च स्थापनायाः आशीर्वादमदात्।

सानिध्य में उन्हें भगवान महावीर का महोत्सव मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ चूँकि यह महोत्सव इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ बनकर युगों-युगों के लिए चिरस्थायी स्मृति जन-जन को प्रदान करेगा।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रातः 5.30 बजे बैण्ड-बाजे के साथ शहर के मुख्य मार्गों से प्रभात भेरी निकली, पश्चात् माताजी की प्रेरणा से जन्मोत्सव की खुशी में नवनिर्मित 'महावीर जयंती भवन' में जनता द्वारा घंटा, बाजे, शंख, ढोलक आदि बजाकर भगवान के चरणों में दीपक, फल आदि समर्पित किए गए और इन्द्रों द्वारा की गई रत्नवृष्टि के प्रतीकरूप रत्नवृष्टि कर उन रत्नों को जनता में वितरित किया गया। जन्म महोत्सव का झण्डारोहण प्रातः 7.15 बजे स्वरूपरानी पार्क में हुआ, पश्चात् धर्मसभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जी.वी. मेहता तथा कौशाम्बी के युवा जिलाधिकारी श्री पार्श्वसारथी शर्मा जी व विशिष्ट अतिथि श्रीमती उषा मेहता जी पधारे। पूज्य माताजी ने इन अतिथियों एवं उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्हें भगवान महावीर के जीवन से परिचित करवाया और कहा कि मैंने एकवर्षीय आयोजन के मध्य होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई है जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय में **''जैन चेयर की स्थापना''**, 26 संगोष्ठी, 26 धीमान व्यक्तियों का सम्मान आदि प्रमुख हैं, जिनकी आगे मैं विस्तृत चर्चा करूँगी। साथ ही उन्होंने आज के पवित्र अवसर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अन्य शासकगणों को अपने हृदय में अहिंसा धारण कर अहिंसक राष्ट्र व विश्वशांति की स्थापना का आशीर्वाद दिया।

प्रोफेसर महोदयेन सम्यग्ज्ञानं मासिक पत्रिकायाः अप्रैल मासस्य महावीरजयन्ती अंकस्य विमोचनं कृतम्। सम्माननीयैरतिथिजनैश्च समवसरणश्रीविहारस्य रथे जन्मकल्याणकस्य प्रतीके ऐरावतगजस्य रथे स्वास्तिक रचना कृताः भव्याऽद्भुता च रथयात्रा नगरस्य विभिन्नैः मार्गैः चलायमानाभवत्, यस्यां बैण्डवादनं, भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणश्रीविहाररथः, ऐरावतगजरथः, पारम्परिको रथः, 26 अश्वाः, गजाश्च, इन्द्राणीनां मंगलकलशयात्रा, महावीर अहिंसादलरूपाणां 2600 बालकानां ध्वजा शोभायात्राः आदिभिः प्रतिजनस्य प्रशंसा–केन्द्राण्यभवन्। स्थाने–स्थाने च प्रसाद वितरणं प्रतीकरूपेण चानेकानि वस्तूनि वितीर्णान्यभवन्। शोभायात्राया समापनं पाण्डुकशिलायां जन्माभिषेक पूर्वकमभवत् तत्पश्चाच्च सामूहिकं–प्रीतिभोजमभवत्। अस्मिन्नवसरे जैन समाजस्य सर्वाण्येव प्रतिष्ठानानि वद्धानि आसन। रात्रौ सांस्कृतिककार्यक्रमात् पूर्वं धर्मसभायां अनेकप्रशासनिकाधिकारिणः मंत्रिगणाश्च समागताः, यस्यां लोकनिर्माणविभागस्य मंत्रिणा श्री ओमप्रकाश सिंहेन मात्रा रचितस्य ''भगवान महावीरः केन प्रकारेणाभवत्?'' **पुस्तकस्य विमोचनं कृतम् भगवतः पालनायाः च कार्यक्रमोऽभूत्।**

तीर्थंकर शिशोः 1008 कलशैर्जन्माभिषेकः–**7 अप्रैल 2001 दिने प्रातः भगवतो महावीरस्य 1008 कलशैर्जन्माभिषेकोऽभवत्। पूज्यमाता आचार्यकुन्दकुन्दरचितायाः निर्वाणभक्तेः प्रमाणं दर्शयित्वाकथयत् यत् भगवतो महावीरस्य जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यां रात्रावभवत् चैत्र शुक्ल चतुर्दश्याः दिने प्रातः चेन्द्राश्च भगवन्तं सुमेरुपर्वतमानीय जन्माभिषेक–मकुर्वन्। तत्पश्चात् भगवतो महावीरस्य बाल क्रीड़ानां मनमोहकः कार्यक्रमोऽभवत्।**

प्रो. महोदय द्वारा सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका अप्रैल माह के महावीर जयंती अंक के विमोचन एवं सम्माननीय अतिथियों द्वारा समवसरण श्रीविहार रथ व जन्मकल्याणक प्रतीक ऐरावत हाथी रथ पर स्वस्तिक बनाकर भव्य एवं अद्भुत रथयात्रा जुलूस शहर के विभिन्न मार्गों से निकला, जिसमें बैण्ड, बाजे, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ, ऐरावत हाथी रथ, पारम्परिक रथ, 26 घोड़े, हाथी, इन्द्राणियों की मंगल कलश यात्रा, महावीर अहिंसा रैली रूप 2600 बच्चों का ध्वजा जुलूस जन-जन की प्रशंसा का केन्द्र बने। स्थान-स्थान पर प्रसाद वितरण व प्रतीक रूप में अनेक वस्तुएँ बाँटी गईं। जुलूस का समापन पाण्डुक शिला पर जन्माभिषेकपूर्वक हुआ और उसके बाद सामूहिक प्रीतिभोज हुआ। इस अवसर पर जैन समाज के सारे प्रतिष्ठान बंद रहे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम से पूर्व धर्मसभा में अनेक प्रशासनिक अधिकारी व मंत्रीगण पधारे, जिसमें लोक निर्माण विभाग एवं सिचाई मंत्री श्री ओमप्रकाश सिंह द्वारा पूज्य माताजी द्वारा रचित ''भगवान महावीर कैसे बने?'' कृति का विमोचन किया गया तथा भगवान को पालना झुलाने का कार्यक्रम हुआ।

➢तीर्थंकर शिशु का 1008 कलशों से जन्माभिषेक–

7 अप्रैल को प्रातः भगवान महावीर का 1008 कलशों से जन्माभिषेक हुआ। पूज्य माताजी ने आचार्य कुन्दकुन्द रचित निर्वाणभक्ति का प्रमाण दिखाकर बताया कि भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला 13 की रात्रि में हुआ था और चैत्र शु. 14 को प्रातः इन्द्रों ने जिनशिशु को ले जाकर सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक किया था। इसके बाद भगवान की बालक्रीड़ा का सुन्दर व मनमोहक कार्यक्रम हुआ।

सुमेरुपर्वते जन्माभिषेकेणोद्घाटितोऽभवत् 2600 तमो महावीर महोत्सवः–**हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपस्य यथार्थमध्ये विश्वस्य प्रथमकृतिरूपेण निर्मितस्य 101 फुट उच्चस्य सुमेरु–पर्वतस्य पाण्डुकशिलायां पूज्यमातुः प्रेरणया तत्र पदाधिकारिभिः संघस्थाभिश्च ब्रह्मचारिणीभिः भगिनीभिः 6 अप्रैल दिने एव प्रातः 6 वादने महावीरस्वामिनोः जन्माभिषेको विहितः, तत्पश्चाच्च सर्वत्र 2600 जन्मकल्याणकस्योत्सवः विविध आयोजनैःसहआयोजयितुं प्रारभत्।**

संघेन पञ्चस्थानेषु एक सहैव महावीरजयन्ती सम्पन्नाभवत्–**पूज्यायाः मातुः पावनया प्रेरणया संघस्थभ्रात्रा भगिनीभिश्च पंचस्थानेषु एक सहैव महावीर जयन्तिः समायोजिता। सर्वप्रथमं हस्तिनापुरस्य सुमेरुपर्वते संघस्थाभ्यां ब्रह्मचारिणीभ्यां कुमारीभ्यां वीणा– आस्थाभ्यां जन्माभिषेकस्य कार्यक्रमः सम्पन्नोऽभवत् पुनः ऋषभदेवस्य दीक्षाऽस्थल्यां प्रयागे तीर्थे ब्र. चन्द्रिकया जन्मकल्याणकस्य प्रतीकस्वरूपैर्महावीरस्वामिनः 108 कलशैः जन्माभिषेकः कारितः। प्रयागनगरे मातुः सान्निध्ये कार्यक्रमोऽभूत्, दिल्ली राजधान्यां महोत्सवोद्घाटनस्य राष्ट्रीय–कार्यक्रमे ब्रह्मचारि रवीन्द्रकुमारः ब्रह्मचारिण्योऽपि सहभागिनोऽभवन्। तथा लखनऊनगरस्य चोद्घाटनसभायां ब्रह्मचारी रवीन्द्रो सम्मिलितोऽभवत्।**

वास्तवे मातुरिच्छा भावना च सदैवेयमेव भवति यदहं केषुचित्सु स्थानेषु नैव, अपितु एकसहैव सम्पूर्णे एव भारते भव्यस्तरेण तीर्थंकराणां कल्याणकतिथीनामुत्सवं कारयाणि, येन जिनधर्मपताका सर्वत्रः आन्दोलिता भवतु स्यादिदमेव कारणमस्ति यत् ''भावना भवनाशिनी भवति'' इयं सूक्तिश्चरितार्था भूत्वा तया आयोजितः प्रत्येक कार्यक्रमो लघुर्वा वृहत् वा महत्या सफलतया सम्पन्नो जायते।

➢सुमेरु पर्वत पर जन्माभिषेक से उद्घाटित हुआ 2600वाँ महावीर महोत्सव–

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना के बीचों-बीच में विश्व की प्रथम कृति के रूप में निर्मित 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से वहाँ के पदाधिकारियों एवं संघस्थ ब्र. बहनों द्वारा 6 अप्रैल को ही प्रातः 6 बजे महावीर स्वामी का जन्माभिषेक किया गया, उसके पश्चात् सर्वत्र 2600वें जन्मकल्याणक उत्सव को विभिन्न आयोजनों के साथ मनाना प्रारंभ हो गया।

➢संघ द्वारा पाँच स्थानों पर एक साथ महावीर जयंती सम्पन्न की गई–

पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से संघस्थ भाई जी एवं बहनों द्वारा 5 स्थानों पर एक साथ महावीर जयंती मनाई गई। सर्वप्रथम हस्तिनापुर के सुमेरु पर्वत पर संघस्थ ब्र.कु. बीना-आस्था द्वारा जन्माभिषेक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ पुनः ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर ब्र. चन्द्रिका द्वारा जन्मकल्याणक के प्रतीकरूप महावीर स्वामी का 108 कलशों से अभिषेक कराया गया। प्रयाग शहर में माताजी के संघ सानिध्य में कार्यक्रम हुआ, दिल्ली में राष्ट्रीय उद्घाटन कार्यक्रम में ब्र. रवीन्द्र जी व संघस्थ बहनों ने भाग लिया तथा लखनऊ की उद्घाटन सभा में भाई रवीन्द्र जी ने भाग लिया।

वास्तव में पूज्य माताजी की तो सदैव यही उत्कट भावना रहती है कि मैं मात्र 2-4 स्थान पर ही नहीं अपितु एक साथ सम्पूर्ण भारत में भव्य स्तर पर तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक तिथियों का उत्सव करवाऊँ, जिससे जिनधर्म की पताका चहुँओर फहराए और शायद यही कारण है कि ''भावना भवनाशिनी होती है'' यह सूक्ति चरितार्थ होकर उनके द्वारा आयोजित प्रत्येक लघु अथवा वृहद् कार्यक्रम महती धर्मप्रभावनापूर्वक सम्पन्न होते हैं।

विश्वे एक एव सुमेरुपर्वतोऽस्ति, यस्तीर्थंकराणां जन्माभिषेकैः पावनं पूज्यं च वर्तते– **जैनपुराणेषु वर्णनं लभ्यते यत् त्रिषु लोकेषु त्रिषु कालेषु च सुमेरुपर्वतः सर्वाधिको महान् पूज्यश्च वर्तते। यद्यपि सः 16 चैत्यालयानां युक्तकारणेन सर्वपूज्यः एवास्ति, तथापि यदा तीर्थंकरो जायते, तु सौधर्मेन्द्राः सर्वप्रथमं जिनशिशुं सुमेरोः पर्वतस्य पाण्डुकशिलायां विराजमानं कृत्वा तस्य जन्माभिषेकं कुर्वन्ति, येन पर्वतस्यास्य पूज्यतानन्तगुणं वृद्धिं याति। शास्त्रेषु वर्णितोऽयं सुमेरुपर्वतो न केवलमनुपलब्धोऽपि तु अतिदुर्लभो वर्तते।**

अद्य भारतधरित्र्याः 20 कोटिमील दूरस्थितस्य सुमेरोर्दर्शन साधारणो मनुष्यः तस्य दर्शनवन्दनयोः सौभाग्यात् वञ्चितो भवति, केवलं ऋद्धिधारिणो मुनयः एव तस्य सुमेरोर्दर्शनं कृत्वा स्व पुण्यं प्रशंसन्ति। वर्तमाने तु वयं तं सुमेरुं प्राप्तुं न शक्नुमः किन्तु पूज्यमातुः प्रेरणया मेरठ जनपदस्य हस्तिनापुरे तीर्थे निर्मितस्य शताष्ट फुट उच्चस्य सुमेरुपर्वतस्य दर्शनं कृत्वा स्वकर्मबन्धनानि छेत्तुं शक्नुमः। यथा जैनशास्त्रेषु वर्णितमस्ति, तेनैव प्रकारेण भद्रशाल–नन्दनवन–सौमनसवन–पाण्डुकवनेषु च षोडश चैत्यालयैः संयुक्तोऽयं सुमेरुपर्वतो न केवलं भारतस्यापितु विश्वस्यानुपमा कृतिर्विद्यते, यत्र 136 सोपानानां माध्यमेन उपरि गते सति एतत् प्रतीयते यत् वस्तुतो वयं वास्तविकस्य सुमेरोर्दर्शनमकुर्म। वस्तुतः अस्मा–दधिका पुण्यस्य वार्ता अस्मभ्यं का भवितुमर्हति यत् यस्याः कृतेर्वयं दर्शनं स्वप्नेऽपि कर्तुं न कल्पामहे साऽस्मभ्यमस्यां भूमौ प्राप्तुं सुलभैव विद्यते।

➢विश्व में एक ही सुमेरु पर्वत है जो तीर्थंकरों के जन्माभिषेक से पावन एवं पूज्य है–

जैन पुराणों में वर्णन आता है कि तीनों लोकों एवं तीनों कालों में सुमेरु पर्वत सबसे अधिक महान एवं पूज्य है। वैसे तो यह 16 चैत्यालयों से युक्त होने से सर्वपूज्य है ही तथापि जब तीर्थंकर जन्म लेते हैं, तो सौधर्म इन्द्र सर्वप्रथम जिनबालक को सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर विराजमान करके उनका जन्माभिषेक करते हैं, जिससे इस मेरु पर्वत की पूज्यता अनन्तगुणा वृद्धिंगत हो जाती है। शास्त्रों में वर्णित वह सुमेरुपर्वत अनुपलब्ध नहीं प्रत्युत् अतिदुर्लभ है।

आज भारत की धरती से 20 करोड़ मील की दूरी पर स्थित होने के कारण साधारण मनुष्य उसके दर्शन-वंदन के सौभाग्य से वंचित रह जाते हैं, केवल ऋद्धिधारी मुनि ही उस सुमेरुपर्वत के दर्शन करके अपने पुण्य की सराहना करते हैं। वर्तमान में भले ही हम उस सुमेरु पर्वत तक नहीं पहुँच सकते किन्तु पूज्य माताजी की प्रेरणा से मेरठ जिले के हस्तिनापुर तीर्थ पर निर्मित 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत के दर्शन करके अपने कर्मबंधन को काट सकते हैं। जैसा कि शास्त्रों में वर्णन है, ठीक उसी प्रकार भद्रशालवन, नन्दनवन, सौमनसवन एवं पाण्डुकवनों में 16 चैत्यालयों से संयुत यह सुमेरु पर्वत भारत ही नहीं अपितु विश्व की एक अनुपम कृति है, जहाँ 136 सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर पहुँचने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो हमने असली सुमेरु पर्वत के ही दर्शन कर लिए हों। वास्तव में इससे अधिक हमारे लिए पुण्य की बात और क्या हो सकती है कि जिस कृति की हम और आप स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकते थे, वह हमें इस धरती पर साक्षात् प्राप्त हो रही है।

अत्रास्य सुमेरोर्महत्तायाः वर्णनस्योद्देश्यं एकमात्रैवास्ति यत् वर्तमाने च भगवतो महावीरस्य 2600 तमे जन्मोत्सवं वयं राष्ट्रीय स्तरेण मन्यामहे तस्य सर्वप्रथमं साक्षात् सम्बन्धश्च सुमेरुपर्वतेणास्ति। भगवान् महावीरो बिहारस्य कुण्डलपुरनगर्यां जन्मागृहणात्, तदा सौधर्मेन्द्रस्तस्य सर्वप्रथमं सहसाष्ट कलशैः जन्माभिषेकं सुमेरुपर्वतस्योपरि कृतवान्। एतेनैवोद्देश्येन मातुः कृतौ ''विश्वशान्ति महावीर विधाने'' तस्यैव सुमेरुपर्वतस्य मण्डलस्याकारो विद्यते, 2600 अर्घ्यैश्च सह मण्डले 2600 रत्नानि समर्पणस्य नवा परम्परापि विधाने दर्शिता विद्यते।

भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवस्य राष्ट्रीयस्तरेण भव्योद्घाटनम्–

विश्ववन्द्यस्य भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक महोत्सवस्य आयोजनस्य शुभाः घटिकाः असंख्याभिः प्रसन्नताभिः सह अस्माकं पुरतः प्रस्तुताः सन्ति, यदा च जनतया सहैव भारतशासनमपि महावीरमहोत्सवस्यायोजनस्य घोषणां कृत्वा सर्वेभ्यः महावीरेण परिचितो भवितुं स्वर्णावसरं प्रादात्। अस्य राष्ट्रीयमहोत्सवस्य भव्योद्घाटनं भारतस्य तत्कालीनेन प्रधानमंत्रिणा श्री अटलबिहारी वाजपेयी महोदयेन 6 अप्रैल 2001 दिने प्रातः 10 वादन काले दिल्लीनगर्याः इन्दिरागांधी स्टेडियम स्थाने कृतम्। अस्मिन् पावनेऽवसरे माननीय–प्रधानमंत्रिणा सह गृहमंत्री–श्री लालकृष्णः आडवाणी, संचारमंत्री श्री रामविलास पासवानः, केन्द्रीयो मंत्री–श्री सुन्दरलाल पटवा, केन्द्रीयो वस्त्रराज्यमंत्री–श्री वी. धनञ्जय कुमाराः

यहाँ इस सुमेरु पर्वत की महत्ता को बतलाने का एकमात्र उद्देश्य यह है कि वर्तमान में जो भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया है उसका सबसे पहला और सीधा संबंध सुमेरु पर्वत से है। भगवान महावीर स्वामी ने कुण्डलपुर नगरी (बिहार) में जन्म लिया था, तो सौधर्म इन्द्र ने सबसे पहले उनका 1008 कलशों से जन्माभिषेक सुमेरु पर्वत पर ही किया था। इसी सुमेरु पर्वत के महत्त्व को आम जनता तक पहुँचाने के उद्देश्य से पूज्य माताजी की कृति ''विश्वशांति महावीर विधान'' में इसी सुमेरु पर्वत के मण्डल का आकार है तथा 2600 अर्घ्यों के साथ मण्डल पर 2600 रत्न चढ़ाने की नई परम्परा भी इसमें दर्शाई गई है।

➢भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव का राष्ट्रीय स्तर पर भव्य उद्घाटन समारोह–

विश्ववंद्य भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव को मनाने की शुभ घड़ियाँ असंख्य खुशियाँ लेकर हम सबके समक्ष आ गईं, जब जनता के साथ-साथ भारत सरकार ने भी महावीर जन्मोत्सव मनाने की घोषणा कर धरती को महावीर से परिचित होने का स्वर्णिम अवसर प्रदान कर दिया। इस राष्ट्रीय महोत्सव का भव्य उद्घाटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 6 अप्रैल 2001 को प्रातः 10 बजे दिल्ली के इन्दिरागांधी (इंडोर) स्टेडियम में किया गया। इस पावन अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ गृहमंत्री–श्री लालकृष्ण आडवाणी, संचार मंत्री–श्री रामविलास पासवान एवं केन्द्रीय मंत्री–श्री सुन्दरलाल पटवा, केन्द्रीय

अपि उपातिष्ठन्। उद्घाटनं त्वभवदेव, शासनं च अस्मै महोत्सवाय शत कोटिरूप्यकाणामनुदानं घोषयत् पत्रटिकटमपि घोषितमकरोत् किन्त्वेकं अघटितकार्यं तस्यां सभायामभवत्, यज्जैन दिगम्बर समाजायैकं कटुमनुभवं प्रादात्। आचार्य विद्यानन्दस्तस्यां सभायां द्वाभ्यां मुनिभ्यां सह सान्निध्यं प्रदातुमगच्छत् किन्तु ते कारणवशात् क्रीड़ास्थलाद् बहिरेवागच्छन्।

अत्रास्मिन् प्रसंगे ज्ञातव्यमस्ति यत् 1974 वर्षे भगवतो महावीरस्य 2500 तमो निर्वाणाः महोत्सवो राष्ट्रव्यापिना स्तरेण शासनेन समाजेन आयोजितोऽभवत्, तत् सम्पूर्णमेव दृश्यमद्यापि मम नेत्रयोः पुरतो विद्यते, यदा 1972 वर्षे एव दिल्ली समाजस्य प्रमुखाः कार्यकर्तारः श्री परसादी लाल पाटनी– श्री पारसदास जैन मोटर वाले– डाक्टर कैलाश चन्द्र जैनः, राजा ट्वाइजः आदयोऽनेक महानुभावाः ब्यावरनगरं गत्वा मातरं निर्वाणमहोत्सवस्य रूपरेखां दर्शयित्वा दिल्लीनगर्यां पदार्पणस्य निवेदनमकुर्वन्, तेषां च निवेदनं स्वीकृत्य पूज्या माता संघसहिता राजस्थानात् प्रस्थाय दिल्ली नगर्यां समागच्छत्। तदाऽऽचार्यरत्नं श्री देशभूषणो महाराजः चांदनीचौक उपनगरे, कम्मोजी धर्मशालायां व्यराजत् माता च पहाड़ीधीरजस्थाने चतुर्मासं स्थापयित्वा आचार्यरत्नस्य दर्शनार्थं समागच्छत् तदा आचार्यमुखेनानेकशो निर्वाणमहोत्सवस्य चर्चाः श्रुताः अभवन्। स्थानकवासिजैनसमाजस्य मुनिः सुशील कुमारः, आचार्य श्रीदेशभूषणो महाराजः साहू शान्तिप्रसादो जैनश्च तस्य विषयस्य रूपरेखां प्रस्तोतुं पूर्णमनोयोगेन संलग्नाः आसन् पुनः 1973 वर्षे मुनि श्रीविद्यानन्दो

वस्त्रराज्यमंत्री– श्री वी. धनंजय कुमार भी उपस्थित थे। उद्घाटन तो हो गया और सरकार ने इस महोत्सव हेतु 100 करोड़ रुपये का अनुदान घोषित करते हुए डाक टिकट भी जारी कर दिया परन्तु कुछ ऐसा अघटित कार्य उस सभा में हो गया, जो दिगम्बर जैन समाज के लिए एक कटु अनुभव प्रदान कर गया। पूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज दो मुनियों के साथ उस सभा में सानिध्य प्रदान करने गये थे किन्तु वे कारणवश स्टेडियम के बाहर से ही वापस आ गये।

यहाँ इस प्रसंग में ज्ञातव्य है कि सन् 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव राष्ट्रव्यापी स्तर पर सरकार एवं समाज द्वारा मनाया गया था। वह पूरा दृश्य आज भी मेरी आँखों के समक्ष है, जब सन् 1972 में ही दिल्ली के प्रमुख कार्यकर्ता श्री परसादी लाल जैन पाटनी, श्री पारसदास जैन मोटर वाले, डॉ.कैलाशचंद जैन राजा ट्वायज आदि अनेक महानुभावों ने ब्यावर (राज.) में जाकर पूज्य माताजी को निर्वाण महोत्सव की रूपरेखा बताकर दिल्ली पधारने हेतु निवेदन किया और उनके निवेदन को स्वीकार कर माताजी अपने संघ सहित राजस्थान से दिल्ली पधारीं। उस समय आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज चांदनी चौक, कम्मोजी की धर्मशाला में विराजमान थे और माताजी पहाड़ी धीरज-दिल्ली में चातुर्मास स्थापित करके आचार्यश्री के दर्शनार्थ आया करती थीं जिससे आचार्यश्री के मुख से कई बार महावीर निर्वाणोत्सव की व्यापक चर्चाएँ सुनी गईं। स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के मुनि श्री सुशील कुमार जी, आचार्य देशभूषण महाराज एवं साहू शान्तिप्रसाद जैन उस विषय की रूपरेखा तैयार करने में पूरे मनोयोग से लगे हुए थे पुनः

दिल्लीमागच्छत्, तदा तस्मिन्नुपर्युक्ते विचारविमर्शे विद्यानन्दस्य मातुर्ज्ञानमत्याश्च पूर्णसहयोगः गृहीतः आसीत्।

तस्मिन् समये विभिन्नसम्प्रदायेषु विभक्तो सम्पूर्ण जैनसमाजः एकचित्तीभूय प्रत्येक–प्रकारेण स्व संघटितं रूपं प्रदर्शयामास, येन प्रभाविता भूत्वा तत्कालीना प्रधानमंत्रिणी श्रीमती इन्दिरागांधी शासकीयस्तरेण समितिं योजयित्वा कार्यक्रमस्य व्यापिकां रूपरेखामरचयत्। तस्याः एकतायाः उदाहरणमेव आचार्य श्री देशभूषणमुखेन श्रुतमस्ति–

1972 वर्षे एकस्मिन् दिने संसद्भवने महावीरमहोत्सवस्य सभासीत्। मुनिसुशील–कुमारस्तस्यां भागं गृहीतुमागच्छत्। अहमपि जैनसमाजस्य जनैर्निषिद्धोऽपि 2–3 भक्तान् नीत्वा संसदो भवनमगच्छम् किन्तु तत्र दिगम्बरजैनसाधूनां प्रवेशस्य निषेधः आसीत् अहं प्रधानमंत्रिण्याः सुरक्षाकर्मिभिः बहिरेव स्द्धोऽभवम्। अहमापत्तिं विनैव तत्रैवावतिष्ठम् अन्तश्च यदा मुनिः सुशीलकुमारः इमां सूचनां प्राप्नोत् सोऽपि बहिरेवागच्छत् प्रधानमंत्रिणां च स्पष्टतया सोऽकथयत् यद्यस्माकं आचार्यो देशभूषणः संसदोऽस्यां सभायां नागमिष्यति तदाऽहमपि सभायां भागं न गृहीष्यामि अयं च कार्यक्रमो भवितुं न शक्यते। मुनेरिदमैक्यं मैत्रीभावं च वीक्ष्य इन्दिरा मां ससम्मानं संसदो भवनेऽनयत् निर्वाणसम्बन्धिनी च सा सभा सुन्दरवातावरणे संपन्नाऽभवत्।''

दिल्ली नगर्याः इदं धर्मप्रभावनात्मकं वातावरणमवलोक्य तदैव माताश्री अनेकानि

सन् 1973 में मुनि श्री विद्यानंद जी महाराज-दिल्ली पधारे, तब उपर्युक्त विचार-विमर्श में विद्यानंद महाराज एवं ज्ञानमती माताजी का पूरा सहयोग लिया जाता था।

उस समय विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त सम्पूर्ण जैन समाज ने हर तरह से एकजुट होकर अपना संगठित रूप प्रस्तुत किया था,जिससे प्रभावित होकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सरकारी स्तर पर कमेटी गठित कर कार्यक्रम की व्यापक रूपरेखा बनाई थी। इस संगठन का एक उदाहरण आचार्य श्री देशभूषण महाराज के मुख से सुना है–

''सन् 1972 में एक दिन संसद भवन में महावीर निर्वाण महोत्सव की बैठक थी। मुनि सुशील कुमार जी उसमें भाग लेने आए। मैं भी दिगम्बर समाज के लोगों द्वारा मना करने पर भी 2-3 भक्तों को लेकर संसद भवन पहुँचा किन्तु वहाँ दिगम्बर साधुओं का प्रवेश निषिद्ध होने के कारण मुझे प्रधानमंत्री के सुरक्षाकर्मियों ने बाहर ही रोक दिया। मैं बिना एतराज के वहीं खड़ा रहा और अंदर मुनि सुशील कुमार जी को यह सूचना मिलते ही वे भी बाहर आ गए तथा इन्दिरा जी से उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यदि हमारे आचार्य देशभूषण महाराज संसद की इस मीटिंग में नहीं आएंगे, तो मैं भी मीटिंग में भाग नहीं लूँगा और यह कार्यक्रम होना संभव नहीं है। मुनि जी की ऐसी एकता एवं मैत्री भावना देखकर इन्दिरा जी मुझे ससम्मान संसद भवन में ले गईं और निर्वाण महोत्सव संबंधी वह मीटिंग बड़े सुन्दर वातावरण में सम्पन्न हुई।''

दिल्ली के इस धर्मप्रभावक वातावरण को देखकर तभी पूज्य माताजी ने अनेकानेक प्रेरणा भरे

प्रेरणापूरितानि पत्राणि प्रेषयित्वा आचार्यधर्मसागरमपि संघ सहितं दिल्लीमहानगरे पादार्पणं कर्तुं न्यवेदयत् पुनः जुलाई 1974 मासे आचार्यसंघस्य दिल्लीनगर्यां मंगलप्रवेशोऽभवत्। नवम्बर 1974 मासे च भगवतो महावीरस्य 2500 निर्वाणमहोत्सवोऽनेकाभिरुपलब्धिभिः सह सम्पन्नोऽभवत्। इयं वार्ता मया एतेन कारणेनोल्लिखिता, यत् तस्मात्समयादारभ्य अद्यतनायां स्थित्यां देशस्य राजनीतिरिवैव जैन समाजस्याखण्डतायामपि विघटनमभवत्, एतत् कटु सत्यं अस्माभिः सर्वैरेव स्वीकर्तव्यम्। सामाजिकसंघटने विश्वासिनो उदारहृदयाः ये साधवः श्रावकाश्चासन्, अद्य तेभ्यः केषांचित् अस्तित्वं अस्मान् त्यक्त्वा परलोकं गतं विद्यते संकीर्णविचारधारायाश्च केचिज्जनाः स्वद्वेषजालं विस्तीर्णं अकुर्वन् सामान्यतया शासनस्य पुरतोऽपि स्वाखण्डतायां भेदं कृत्वा प्रसन्नतामनुभवन्ति। अत्रैतद् विचारणीयमस्ति यत् आचार्यो देशभूषण महाराजः संसदोऽभ्यन्तरे समाचार प्रेषणं विनैव यदि न्यवर्तत्, तु समस्यायाः समाधानं कदापि संभवं नासीत्।

द्वयोः सार्वजनिकसभयोः पृथ्वी–आकाशवत् महदन्तरमासीत्–**13 नवम्बर 1974 दिने महावीर निर्वाणोत्सवस्य रामलीला प्रांगणस्य दिल्लीनगर्या मुख्यसभा 6 अप्रैल 2001 दिने महावीर जयन्ती महोत्सवस्य इन्दिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम स्थाने च उद्घाटनसमारोहस्य सभायाम् पृथ्वी–आकाशयोरिव महत् अन्तरं दृष्टिगतमभवत्, यस्य टी.वी. दूरदर्शनस्य आस्था संचारे प्रसारणं वीक्ष्य दिगम्बरजैनसमाजस्य सर्वे भाक्तिकाः अतिस्तब्धाऽभवन्। कुत्र**

पत्र भेजकर आचार्यश्री धर्मसागर महाराज को भी संघ सहित दिल्ली पधारने का निवेदन किया था पुनः जुलाई 1974 को आचार्य संघ का दिल्ली आगमन हुआ और नवम्बर 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ था। यह बात मैंने यहाँ इसीलिए उल्लिखित की है कि उस समय से लेकर आज तक की स्थिति में देश की राजनीति के समान ही जैन समाज की अखण्डता में भी बिखराव आया है, इस कटुसत्य को हम सभी को स्वीकार करना पड़ेगा। सामाजिक संगठन में विश्वास रखने वाले उदारहृदयी जो साधु एवं श्रावक उस समय थे, आज उनमें से कुछ का साया हमारे ऊपर से उठ गया है और संकीर्ण विचारधारा के कुछ लोग अपना द्वेषजाल फैलाकर सरेआम सरकार के सामने भी अपनी अखण्डता में दरारें डालकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। यहाँ सोचने की बात यह है कि आचार्य देशभूषण महाराज संसद के अन्दर समाचार दिए बिना यदि बाहर से वापस चले गए होते, तो समस्या का समाधान कदापि नहीं होता।

➢जमीन आसमान का अन्तर था दोनों सार्वजनिक सभाओं में–

13 नवम्बर 1974 में महावीर निर्वाणोत्सव की रामलीला मैदान दिल्ली की मुख्य सभा तथा 6 अप्रैल 2001 में महावीर जयंती महोत्सव की इन्दिरा गांधी स्टेडियम दिल्ली के उद्घाटन समारोह की सभा में जमीन-आसमान का अन्तर दिख रहा था, जिसका टी.वी. के आस्था चैनल पर प्रसारण देखकर दिगम्बर जैन समाज के बच्चे-बच्चे के मन को आघात पहुँचा। कहाँ

1974 वर्षे दिगम्बर जैन साधूनां साध्वीनां च अल्पसंख्यायां सत्यामपि तस्मिन् मंचे 62 साधवः साध्व्यश्च व्यराजन्त्, कुत्र अधुना प्रायः सहस्र साधूनां साध्वीनां च अस्तित्वे तेभ्यः 6 अप्रैल 2001 दिने स्टेडियम स्थाने मंचे कोऽपि साधुः कापि साध्वी क्षुल्लकः क्षुल्लिका च दृष्टिगोचराः नाभवन्। दिल्लीसमाजस्य पदाधिकारिणः दिल्लीनगर्यां समीपस्थान साध्वीः साधून च निमंत्रिताः कुर्युः। यदि पदाधिकारिभिः ते निमन्त्रिता अभवन्, तु सर्वे–साधु–साध्व्यः कार्यक्रमे उपस्थिताः भवेयुः। आश्चर्यकारिणी वार्ता तु इयमस्ति यत् श्वेताम्बर समाजस्य आगतेभ्य साधुभ्यश्च कोऽपि प्रधानमंत्रिणीं अन्ये चागतान् शासनाधिकारिणः भगवतो महावीरस्य जन्मोत्सवस्यायोजनहेतवे एकस्यापि वाक्यस्याशीर्वादं नाकथयन्। यदा च अस्मात् पूर्वं 9 अप्रैल 1998 दिने 4 फरवरी 2000 दिने च भगवतः ऋषभदेवस्य कार्यक्रमेषु समागत्य प्रधानमंत्री मातुराशीर्वादात्मक प्रवचनं स्ववक्तव्ये देशस्य रक्षायै कवचरूपेण स्वीकृतमकरोत्।

इमा विषमपरिस्थितिं लेखनी लिखितुं नार्हति–**प्रयागे विराजितां पूज्यमातरं अस्मान् च यदा प्रयागनिवासिनो दूरदर्शनस्य माध्यमेन इदं दृश्यमदर्शयन् प्रत्यक्षदर्शिनां च मुखेन दृश्यं श्रुत्वा हृदय ययाऽन्तर्वेदनया पूरितमभवत् तमहं स्वलेखन्या लिखितुमपि समर्था नास्मि। पूज्यायाः मातुर्मुखात्तु पुनः पुनः अयमेव शब्दो निर्गतोऽभवत् यत् यदि महामनिस्विनः आचार्य देशभूषणः, आचार्य सुशीलकुमारः, साहू शान्तिप्रसादश्च यद्यद्य जीविताः अभवन्**

सन् 1974 में दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की अल्प संख्या होते हुए भी उस मंच पर 62 साधु-साध्वी विराजमान थे और कहाँ अब लगभग एक हजार-साधु-साध्वियों के रहते हुए भी उनमें से 6 अप्रैल को स्टेडियम में मंच पर एक भी साधु-साध्वी, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि में से कोई अस्तित्व नजर नहीं आया। दिगम्बर जैन समाज के पदाधिकारियों को दिल्ली एवं आस-पास उपस्थित मुनि-आर्यिकाओं, क्षुल्लक-क्षुल्लिका आदि को आमंत्रित करना चाहिए था। यदि पदाधिकारियों द्वारा उन्हें आमंत्रित किया गया था, तो उन सभी साधु-साध्वियों को कार्यक्रम में उपस्थित होना चाहिए था। आश्चर्य की बात यह रही कि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के भी पधारे साधु-साध्वी में से किसी ने प्रधानमंत्री एवं अन्य आगन्तुक शासनाधिकारियों को भगवान महावीर जन्मोत्सव को आयोजित करने हेतु एक भी वाक्य का आशीर्वाद नहीं बोला, जबकि इससे पूर्व 9 अप्रैल 1998 एवं 4 फरवरी 2000 को भगवान ऋषभदेव के कार्यक्रमों में पधारकर प्रधानमंत्री जी ने पूज्य माताजी के आशीर्वादात्मक प्रवचन को अपने वक्तव्य में देश रक्षा के लिए कवचरूप स्वीकार किया था।

➢नहीं लेखनी लिख सकती है ऐसी विषम परिस्थिति को–

प्रयाग में विराजित पूज्य माताजी एवं हम लोगों को जब प्रयागवासियों ने टी.वी. के माध्यम से वह दृश्य दिखाया और उस दृश्य को प्रत्यक्षदर्शियों के मुख से सुना गया, तो जिस अन्तर्वेदना का अनुभव हुआ, उसे मैं अपनी लेखनी से लिख भी नहीं सकती। पूज्य माताजी के मुख से तो बार-बार यही शब्द निकला कि वे महामना आचार्य देशभूषण महाराज, आचार्य सुशील मुनि एवं साहू शान्तिप्रसाद जैन यदि आज जीवित होते, तो ऐसा दृश्य कदापि उपस्थित नहीं होता, किन्तु तत्त्वज्ञानी

तु इदं दृश्यं कदापि उपस्थितं न भवेत् किन्तु तत्त्वज्ञानिनी माताश्रीः पुनः पुनः कथयति यत् किं यस्मात् गृहात् महतां वृद्धानामस्तित्वं गतं भवति, तस्मिन् गृहे विवाहाः अन्यानि च वृहन्ति लघूनि वा कार्याणि समाप्तानि भवन्ति? कदापि नैव, किन्तु गृहस्य भाविनी परम्परा तस्मादपि अधिकेनोत्साहेन प्रतिष्ठया च समस्तान्येव व्यावहारिक कार्याणि सम्पन्नानि करोति। तेनैव प्रकारेणास्माकं समाजस्य कर्णधाराः अपि प्राचीनसाधु–साध्वीनां सान्निध्यैः लाभं प्राप्नुयुः महावीर जन्मोत्सवं चाधिकेनोत्साहेन सहायोजितं कुर्युः। सामाजिकानां विघटनकारिणां व्यक्तित्वानां हस्तक्षेपेण सदैव सावधानाः भवेयुः स्वगौरवस्य च रक्षां कुर्युः।

उत्तरप्रदेशस्य राजधान्यां लखनऊ नगरे महावीरस्वामिनः 2600 तमस्य जन्मोत्सवस्य कार्यक्रमः–**उत्तर प्रदेशस्य राजधान्यां लखनऊ नगरे 2600 तमे महावीर जन्मोत्सवे लखनऊ नगरे विभिन्नैर्मार्गैः भगवतो महावीरस्य निर्गच्छन्ती रथयात्रा हजरतगंज स्थाने एकस्याः सभायाः रूपेण परिवर्तिताभवत्। मंचे माननीयो मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंहः, नगर आवासमंत्री श्री लालजी टण्डनः, नगरस्य प्रमुखः श्री एस.सी.रायः, पूर्व राज्यमंत्री श्री राजेन्द्रः तिवारी, फलोद्यानमंत्री श्री धनराज यादवः सभायाश्च प्रमुखवक्ता कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रश्च उपातिष्ठन्।**

दीप प्रज्ज्वलनस्य स्वागतसम्मानस्य पश्चात् श्री धर्मवीरो जैनः (सेवा निवृत्तोऽभियन्ता), स्वागतभाषणं प्रस्तुतमकरोत् शासनस्य च सहयोग विषये प्रकाशमपातयत्। पश्चात् कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रो जैनः केन्द्रीय शासनेनायोजितायामुद्घाटनसभायां प्रकाशं पातयन् भगवतो महावीरस्य जीवने दर्शने स्व विचाराभिव्यक्तिमकरोत् पुनः सः मंत्रिमहोदयं न्यवेदयत् यत्

माताजी पुनः कहती हैं कि क्या जिस घर से बड़े-बूढ़े लोगों का साया उठ जाता है, उस घर में शादी, विवाह या अन्य बड़े-छोटे कार्य बंद हो जाते हैं? कभी नहीं, बल्कि घर की भावी पीढ़ी उससे भी अधिक धूमधाम से सभी व्यवहारिक कार्यों को सम्पन्न करती है, उसी प्रकार हमारी समाज के कर्णधारों को भी प्राचीन साधु-साध्वियों के अनुभव का लाभ उठाते हुए महावीर जन्मोत्सव को अतीव उत्साह के साथ मनाना चाहिए तथा सामाजिक विघटनकारी व्यक्तित्व से सदैव सावधान रहकर अपनी अस्मिता की रक्षा करनी चाहिए।

➢उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में महावीर स्वामी 2600वाँ जन्मजयंती कार्यक्रम–

उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में 2600वें जन्मजयंती महोत्सव पर लखनऊ के विभिन्न मार्गों से भगवान महावीर की निकलती हुई रथयात्रा हजरतगंज में एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। मंच पर माननीय मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह, नगर आवासमंत्री श्री लालजी टंडन, नगर प्रमुख श्री एस.सी. राय, पूर्व राज्यमंत्री-श्री राजेन्द्र तिवारी, फल एवं उद्यान मंत्री-श्री धनराज यादव एवं सभा के प्रमुख वक्ता कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन एवं स्वागत सम्मान के पश्चात् श्री धर्मवीर जैन (रिटायर्ड इंजी.) ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए शासन से सहयोग के मुद्दे पर प्रकाश डाला। पश्चात् कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने केन्द्रीय सरकार द्वारा आयोजित उद्घाटन सभा पर प्रकाश डालते हुए भगवान महावीर के जीवन

लखनऊ नगरस्य एकस्योद्यानस्य नाम भगवतो महावीर स्वामिनः नाम्ना भवतु तस्मिन् च भगवतो महावीरस्य मूर्तिं विराजमानां कर्तुं शासनं जैनसमाजायानुमतिं प्रदद्यात्।

मुख्यमंत्री स्वभाषणेऽकथयत् यत् सर्वप्रथमं अहं भवद्भ्यः महावीर जयन्त्याः वर्धापनं प्रयच्छामि। पूर्ण विश्वासेन सह कथयामि यत् अद्य भारतस्य संस्कृतेरैक्यमखण्डतां च रक्षितुं जैन समाजस्य पूर्णयोगदानं वर्तते। अहं प्रधानमंत्रिणे धन्यवादं ददामि प्रादेशिकस्तरेण भगवता महावीरस्य महोत्सव समितेः गठनमकरोत् अहं च तस्याः समितेः अध्यक्षः निर्वाचितोऽस्मि। अहमस्मिन् पावनेऽवसरे लखनऊ नगरस्य हाथी उद्यानस्य नाम महावीरोद्यानस्य नाम्नोद्घोषयामि भगवतो महावीरस्य च मूर्तिं स्थापयितुमनुमन्ये।

अस्मिन्नवसरे मेरठ निवासि आनन्दकुमारजैनः उद्याने प्रतिमां स्थापयितुं घोषणामकरोत्।

अनेकमहानुभावैः पूज्यां मातरं प्रति अत्याग्रहः—**राजधान्यां दिल्ली नगर्यां भगवतो महावीरस्योजन्मकल्याणक महोत्सवस्योद्घाटन सत्रे घटितया अप्रत्याशित घटनया सम्पूर्णजैनसमाजे व्याप्तमौदासीन्यं कष्टं चानुभूय साहू रमेशचन्द्रादीनां महानुभावानां दूरभाषाः ब्रह्मचारिणो रवीन्द्रस्य समीपे आगन्तुं प्रारब्धाः अभवन्, जनास्तु इदं कथयितुमारभन्त् यत् यदि माताश्रीः दिल्लीनगर्यामभवत्तु 2600 तमस्य जन्मोत्सवस्योद्घाटनसमारोहस्य दृश्यमेव पृथक् अभवत्। भ्रातः! भवान् तु यथोचितं कृत्वा मातरं शीघ्रातिशीघ्रं दिल्ली नगरे आनयतु। यद् भूतं तदधुना प्रतिनिवर्तितुं न शक्नोति किंन्तु अधुना वयं वर्षैकस्यान्तर्गतं मातुः**

दर्शन पर प्रकाश डाला पुनः मंत्री महोदय से कहा कि लखनऊ के एक पार्क का नाम भगवान महावीर स्वामी के नाम से हो और उसमें भगवान महावीर की मूर्ति स्थापित करने की अनुमति जैन समाज को प्रदान करें।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने भाषण में कहा कि सर्वप्रथम मैं आप सबको महावीर जयंती की बधाई देता हूँ और पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि आज भारत की संस्कृति की एकता एवं अखण्डता को कायम रखने में जैनधर्म का पूर्ण योगदान रहा है। मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने प्रादेशिक स्तर पर भगवान महावीर महोत्सव समिति का गठन किया है और मैं इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया हूँ। मैं इस पावन दिवस पर लखनऊ के हाथी पार्क का नाम महावीर पार्क के नाम से घोषित करता हूँ एवं भगवान महावीर की मूर्ति स्थापित करने की अनुमति देता हूँ।

इस अवसर पर मेरठ से पधारे श्री आनंद जैन—जैन मार्बल होम ने अपनी ओर से पार्क में मूर्ति स्थापना करने की घोषणा की।

➢अनेक गणमान्य महानुभावों द्वारा पूज्य माताजी से किया गया अतीव आग्रह—

राजधानी दिल्ली में जन्मजयंती महोत्सव के उद्घाटन सत्र में घटित अप्रत्याशित घटना से सम्पूर्ण जैन समाज में छाई उदासीनता एवं कष्ट को देखते हुए साहू रमेश जी जैन आदि अनेकानेक गणमान्य महानुभावों के फोन ब्रह्मचारी रवीन्द्र जी के पास आने लगे और लोगों ने तो यहाँ तक कहना प्रारंभ कर दिया कि अगर माताजी दिल्ली में होतीं, तो 2600वें जन्मोत्सव के उद्घाटन समारोह का नजारा ही अलग होता। भाई जी! आप तो कैसे भी करके माताजी को जल्दी से जल्दी दिल्ली ले आओ। जो हो गया, वह तो अब वापस नहीं आ सकता किन्तु अब आगामी 1 वर्ष के

वात्सल्यपूर्णप्रेरणया दिशानिर्देशेन च एतस्यैकं नवं रूपं प्रदास्याम, येन जना एतां घटनां विस्मृत्यास्य 2600 तमस्य जन्मोत्सवस्यैका स्मरणीयां छविं स्वमनःसु रचयन्तु।

पूज्यमातुः 46 तमं आर्यिकादीक्षा दिनम्–**9 अप्रैल 2001, वैशाख कृष्ण द्वितीयायाः दिने वृहत्शांतिधारापूर्वकं विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य सम्पन्नतया सह पूज्यायाः मातुः 46 तमस्य आर्यिकादीक्षा दिवसस्य कार्यक्रमा प्रारभन्त्, यस्मिन्ननेक महानुभावाः मातुश्चरणयोः स्व विनयाञ्जलीः समर्पयन्।**

कौशाम्ब्याः––प्रभासगिरेः तीर्थस्य पदाधिकारिणो विनम्राः प्रार्थयन्–**इलाहाबादस्य निकटे भगवतः पद्मप्रभोर्गर्भजन्म कल्याणकाभ्यां पवित्रं कौशाम्बी तीर्थं विद्यते, तस्माच्च किञ्चिद् दूरं स्थितं प्रभासगिरि (पभौसा) तीर्थं विद्यते यत् भगवतः पद्मप्रभोः दीक्षा–ज्ञानकल्याणकाभ्यां पवित्रमस्ति विश्वस्य प्राचीनैतिहासिकनगर्या सह जैन संस्कृतेः प्रतीकं, भक्तेरास्थायाश्चा उपासनायाः साधनायाश्च केन्द्रं विद्यते। आत्मकल्याणस्य पाठं पाठयितुं तत्परेण येन कौशाम्बीतीर्थेन सह यत्र भगवतः पदमप्रभोरितिहासः संयुक्तो विद्यते, तत्रैवाद्य दिनात् प्राय 2600 वर्षाणि पूर्वस्य इतिहासोऽपि संयुक्तोऽस्ति, यदा महासत्या चन्दनबालया भगवतो महावीरायाहारदाने प्रदाने सति न केवल पंचाश्चर्याणां वृष्टिरभवत् अपितु चन्दनायाः लौहशृंखलायां छेदनस्यापि चमत्कारोऽभवत्।**

अयं एकः सुखसंयोगः स्वर्णे च सुगन्धेरिवाभवत्, यत्र निर्वाणोत्सवस्य समापनेन सहैव भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मजयन्तीसमारोह उपस्थितोऽभवत्, तत्र कौशाम्ब्या–

अन्तर्गत हम माताजी के वात्सल्यपूर्ण प्रेरणा एवं दिशानिर्देश में इसे एक नया रूप प्रदान करेंगे ताकि लोग इस घटना को भूलकर इस 2600वें जन्मोत्सव की एक यादगार छवि अपने मन में बनावें।

➢पूज्य माताजी का 46वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस–

9 अप्रैल 2001, वैशाख कृ. दूज को वृहद् शांतिधारापूर्वक विश्वशांति महावीर विधान की सम्पन्नता के साथ पूज्य माताजी का 46वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, जिसमें अनेकों महानुभावों ने पूज्य माताजी के चरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की।

➢कौशाम्बी-प्रभाषगिरि तीर्थ के पदाधिकारियों ने विनम्र प्रार्थना की–

इलाहाबाद (प्रयाग) के निकट ही भगवान पद्मप्रभु के गर्भ एवं जन्मकल्याणक से पवित्र कौशाम्बी तीर्थ है तथा उसी से कुछ दूरी पर स्थित प्रभाषगिरि (पभौसा) तीर्थ है जो भगवान पद्मप्रभु के दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र विश्व की प्राचीन ऐतिहासिक नगरी होने के साथ ही जैन संस्कृति का प्रतीक, भक्ति व आस्था का आधार, उपासना और साधना का केन्द्र है। आत्मकल्याण का पाठ पढ़ाने वाले इस कौशाम्बी तीर्थ के साथ जहाँ भगवान पद्मप्रभु का इतिहास जुड़ा है, वहीं आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व का इतिहास भी जुड़ा है, जब महासती चंदना द्वारा भगवान महावीर को आहारदान देने पर न केवल पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई थी अपितु चंदना की लौहश्रृंखला टूटने का चमत्कार भी हुआ था।

यह एक सुखद संयोग और सोने में सुहागा वाली बात हुई, जहाँ निर्वाणोत्सव के समापन के साथ ही भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मजयंती महोत्सव आ गया, वहीं कौशाम्बी-प्रभाषगिरि के

प्रभासगिरेः कार्यकर्तारः एकं स्वर्णिमवसरं प्राप्नुवन् ''भगवतो महावीरस्वामिनः चमत्कारिक आहारभूमेः भगवतश्च पद्मप्रभोः जन्मभूमेरुद्धारस्य।''

यतः शास्त्र–पुराणानां वार्ता तु केचित् जनाः एवं जानन्ति अतएव कार्यकर्तृणां तीव्राग्रहवशात् अस्मै प्राचीन कथानकाय साकाररूपं प्रदानाय माता इलाहाबाद नगरे ऋषभदेवस्य दीक्षा स्थल्यां तीर्थे समागत्य पुनः 21 अप्रैल दिने कौशाम्बीतीर्थं प्रति मंगलविहारमकरोत्।

कौशाम्बी तीर्थे मंगलप्रवेशः–**30 अप्रैल 2001 दिने, वैशाखशुक्ल सप्तम्यां वयं पूज्यया मात्रा सह कौशाम्बीतीर्थे मंगल प्रवेशमकुर्म। अत्रास्माकं प्रवासः श्वेताम्बर मंदिरे आसीत्, अस्यैव मन्दिरस्य पुरतः दिगम्बर जैन समाजस्य 3000 गज प्रमाणा भूमिर्विद्यते, तस्या मातुः सान्निध्ये शिलान्यासं विधाय प्रातः 9.30 वादनसमये भगवतः पद्मप्रभोश्चरण चिह्नानि विराजमानि कृतानि।**

सुमेरुपर्वतस्य द्वाविंशं प्रतिष्ठापना दिनम्–**यतो हि 30 अप्रैल दिने हस्तिनापुरे निर्मितस्य सुमेरोः पर्वतस्य द्वाविंशं प्रतिष्ठापना दिनमप्यासीत्, अतस्तस्योपलक्षे संघस्थाः ब्रह्मचारिण्यो भगिन्यः ससंगीतं सामूहिकरूपेण जम्बूद्वीपपूजां, सुमेरुपर्वतपूजां, महावीर पूजां पद्मप्रभोर्भगवतश्च पूजां अकुर्वन्। सायंकाले प्रतिक्रमणानन्तरं माताश्रीः प्रकोष्ठात् श्वेताम्बरमन्दिरादीनि दृष्टुं निर्गताभवत् अकस्मादेव च ग्रामस्य मन्दिरं प्रति तस्याश्चरणेऽ–वर्धताम्, 2 किलोमीटरस्य पदविहारस्य पश्चात् माता भगवतः पद्मप्रभोर्जन्मभूमिमागच्छत्।**

कार्यकर्ताओं को एक सुनहरा मौका मिल गया ''महावीर स्वामी की चमत्कारिक आहारभूमि एवं भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमि के उद्धार का''।

चूँकि शास्त्र-पुराणों की बातें कतिपय लोग ही जानते हैं अतः कार्यकर्ताओं के अतीव आग्रह से इस प्राचीन कथानक को साकाररूप प्रदान करने हेतु पूज्य माताजी ने इलाहाबाद शहर से ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ पर पधारकर पुनः 21 अप्रैल को कौशाम्बी तीर्थ की ओर मंगल विहार किया।

➢कौशाम्बी तीर्थ पर मंगल प्रवेश–

30 अप्रैल 2001, वैशाख शु. सप्तमी को हम लोगों ने पूज्य माताजी के साथ कौशाम्बी तीर्थ पर मंगल प्रवेश किया। यहाँ हमारा प्रवास श्वेताम्बर मंदिर में रहा, इसी मंदिर के सामने दिगम्बर जैन समाज की 3000 गज की जगह पड़ी है, उसमें पूज्य माताजी के सानिध्य में शिलान्यास करके प्रातः 9.30 बजे भगवान पद्मप्रभु के चरण चिन्ह विराजमान किए गए।

➢सुमेरु पर्वत का 22वाँ प्रतिष्ठापना दिवस–

चूँकि 30 अप्रैल को हस्तिनापुर में निर्मित सुमेरु पर्वत का 22वाँ प्रतिष्ठापना दिवस भी था अतः उसके उपलक्ष्य में संघस्थ ब्र. बहनों ने संगीत के साथ सामूहिक रूप में जम्बूद्वीप पूजा, सुमेरु पर्वत पूजा, महावीर पूजा एवं पद्मप्रभु भगवान की पूजन की। सायंकाल प्रतिक्रमण के पश्चात् माताजी कमरे से बाहर श्वेताम्बर मंदिर आदि देखने हेतु निकलीं और अकस्मात् ही गांव के मंदिर की ओर उनके चरण चल पड़े, 2 किमी. के पदविहार के पश्चात् माताजी भगवान पद्मप्रभु की जन्मभूमि में पहुँच गईं।

स्यात् भवितव्यतायै अयमेव स्वीकारः आसीत्–**अकस्मात् संभूतोऽयं विहारः एकदा तु संघस्थान् जनान् आश्चर्यं अकरोत्। परन्तु स्यादियमेव भवितव्यताऽऽसीत्, तस्मादेवकारणात्तु मातुश्चरणे तां भूमिं प्रति अचलतां, यस्यां प्रतिकणं महाप्रभोः पद्मप्रभस्य जन्मनः परमाणवोऽद्यापि विद्यमानाः वर्तन्ते, यत्र कदाचिदिन्द्राज्ञया धनकुबेरः प्रभोर्जन्मनः पूर्वमेव रत्नवृष्टिमकरोत्, यत्र सुर–नरवन्दितः प्रभुः शैशवावस्थायामान्दोलने आन्दोलितोऽभवत्। यत्र देवः स्वर्गादागत्य प्रभोर्जन्मोत्सवमायोजयन्, यत्र प्रभुः शैशवात् बाल्यावस्थामागत्य देव बालकैः सहाक्रीडत् कुमारावस्थायां च जन–जनाकर्षणकेन्द्रमभवत्, अद्य सैव नगरी कालदोषवशात् वृथोपेक्षिता चासीत्। पूज्या माता संघ सहिता तां दिशं प्रति मंगल पदार्पणमकरोत् तत्र च प्रभोर्दर्शनस्य पश्चात् रात्रिविश्रामप्यकरोत् परन्तु क्षेत्रस्य वृथात्वं एकमात्रस्य च जैनमन्दिस्य जीर्ण–शीर्ण दशां वीक्ष्य मातुर्मनसि वेदनाजायत्, साऽकथयत्– चन्दनामतिः! यदयैकः साधुः श्रेष्ठी वा एकैकस्य जन्मभूमेर्विकासस्योत्तरदायित्वं गृहणातु, तु तद्दिनं दूरं नास्ति, यदास्मिन् देशे पुनः सर्वत्र जिनधर्मस्य पताका तरंगिता भविष्यति परन्तु कदाचित् इयं वार्ता सर्वागमता भवेत्।**

अग्रिमदिने माता तस्य तीर्थस्य पदाधिकारिभ्यः प्रेरणां प्रदाय तीर्थमिदं विकसित कर्तुं वार्तामकथयत्। जीवरक्षोपकरण पिच्छिकां शौचस्योपकरणं कमण्डलुं च धारकाः अपरिग्रहिणः साधवस्तु महाव्रतिनः सन्ति, ते तु केवलं श्रावकेभ्यः प्रेरणां दातुमेव शक्नुवन्ति। वस्तुतस्तु

➢**शायद होनी को यही मंजूर था–**

अकस्मात् हुए इस विहार ने एक बार तो संघ के लोगों को हैरत में डाल दिया परन्तु शायद यही होनहार थी, तभी तो माताजी के चरण अनायास ही उस भूमि की ओर चल पड़े, जहाँ के कण-कण में भगवान पद्मप्रभु के जन्म के परमाणु आज भी विद्यमान हैं, जहाँ कभी इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने प्रभु के गर्भागम से पूर्व रत्नवृष्टि की थी, जहाँ सुर-नर वंदित प्रभु शैशवावस्था में पालने में झूले थे, जहाँ देवों ने स्वर्ग से आकर प्रभु का जन्मोत्सव मनाया था, जहाँ प्रभु शैशव से बाल्यावस्था में आकर देव बालकों के संग खेले थे और कुमारावस्था में जन-जन के आकर्षण का केन्द्र बने थे, आज वही नगरी कालदोषवश वीरान एवं उपेक्षित थी, माताजी ने संघ सहित उस ओर मंगल पदार्पण किया और वहीं प्रभु के दर्शन के पश्चात् रात्रिविश्राम भी किया परन्तु तीर्थ की वीरानियत एवं एकमात्र प्राचीन जिनमंदिर की जीर्ण-शीर्ण दशा देखकर माताजी को आन्तरिक वेदना हुई, वे कहने लगीं– चंदनामती! अगर एक-एक साधु अथवा श्रेष्ठी एक-एक जन्मभूमि के विकास का कार्यभार अपने ऊपर ले लें, तो वह दिन दूर नहीं, जब इस देश में पुनः सर्वत्र जिनधर्म का ध्वज लहराएगा लेकिन यह बात कैसे सबको समझाई जाए।

अगले दिन माताजी ने वहाँ के पदाधिकारियों को अनेक प्रेरणाएँ देकर इसे विकसित स्वरूप प्रदान करने की बात कही। जीव रक्षा का उपकरण पिच्छी एवं शौच का उपकरण कमण्डलु मात्र अपने पास रखने वाले अपरिग्रही, महाव्रती साधु तो मात्र श्रावक को प्रेरणा ही दे सकते हैं वस्तुतः

ईदृशी परमपावना वसुन्धरा शीघ्रमेव विकसिता भूत्वा विश्वस्य क्षितिजं स्पृशेत्, इयमेव शुभकामना विद्यते।

प्रभाषगिरिस्तीर्थं चमत्कृतमभूत् विश्वस्य व्योम्नि–**सतां विषये कथितमस्ति–**''यत्र गुरुणां चरणानि पतन्ति, तस्य स्थानस्य रजोऽपि चन्दनं भवति। मरुस्थलेऽपि कलकलनिनादिनी गंगा प्रवाहमाना भवति।''

एताः पंक्तयो मातुर्जीवने पूर्णतया चरितार्थाः भवन्ति। यत्रापि तस्याः चरणे पतिते, तत्र वनेऽपि मंगलमभवत्, जीर्ण–शीर्णावस्थायां विद्यमानानि तीर्थक्षेत्राणि विकसितानि रूपाणि प्राप्नुवन्। प्रभाषगिरितीर्थे 2 मई 2001 दिनात् 7 मई 2001, वैशाख शुक्ल दशम्याः वैशाख शुक्ल पूर्णिमा पर्यन्तं आयोजितायां ''तीर्थंकरमहावीरजिनबिम्बपंचकल्याणकप्रतिष्ठायां महामस्तकाभिषेक महोत्सवे'' **स्व मंगलं सान्निध्यं प्रदानार्थं सा 1 मई दिने मंगल प्रवेशमकरोत्। अयमेकः संयोग एवासीत् यत् पूज्यमातुः मंगलागमनेन सहैवाग्रेऽग्रे प्रतिष्ठेयाः भगवतः प्रतिमाऽऽगच्छत्, येन मातुर्मनसि महती प्रसन्नताऽजायत्। 2 मई दिने वयं ससंघ प्रभाषगिरि–तीर्थस्य वन्दनार्थमगच्छाम। लघुकायां सुरम्यपर्वतशृंखलामवलोक्य मनः प्रसन्नमभवत्। तत्र वयं मात्रा सह भक्तिपाठमकुर्म। संघस्थाश्च भगिन्यो भगवतोऽभिषेक पूजनं चाकुर्वन्।**

8.30 वादनसमये प्रतिष्ठा महोत्सवस्य ध्वजारोहणमभूत् मध्याह्ने 3 वादनकाले च भगवतः पद्मप्रभोः सवा सात फुट उच्चा पद्मासना प्रतिमा 'क्रेन' यंत्रेण व्यराजत्। पश्चात्

ऐसी परम पावन वसुन्धरा शीघ्र ही विकसित होकर विश्व के क्षितिज पर पहुँचे, यही मंगल कामना है।

➢प्रभासगिरि तीर्थ चमक उठा विश्व के व्योम पर–

सन्तों के बारे में कहा है कि–

जहाँ पड़े गुरुचरण वहाँ की, रज चंदन हो जाती है।
मरुथल में भी कल-कल करती, कालिन्दी बह जाती है।।

यह पंक्तियाँ पूज्य माताजी के जीवन पर पूर्णतः चरितार्थ होती हैं। जहाँ भी उनके चरण पड़े हैं, वहाँ जंगल में मंगल हो गया, जीर्ण-शीर्ण अवस्था वाले तीर्थों ने विकसित स्वरूप प्राप्त कर लिया। प्रभाषगिरि तीर्थ पर 2 मई 2001 से 7 मई 2001, वैशाख शु. 10 से वैशाख शु. 15 तक आयोजित **''तीर्थंकर महावीर जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव** में अपना मंगल सानिध्य प्रदान करने हेतु उन्होंने 1 मई को मंगल प्रवेश किया। यह एक संयोग ही था कि पूज्य माताजी के मंगल आगमन के साथ-साथ आगे-आगे प्रतिष्ठेय भगवान की प्रतिमा जी आईं, जिससे माताजी के मन में बड़ी प्रसन्नता रही। 2 मई को हम पूरे संघ सहित प्रभाषगिरि पर्वत की वंदना हेतु गये। छोटी सी सुरम्य पहाड़ी देखकर मन प्रसन्न हो गया। हमने वहाँ माताजी के साथ भक्ति पाठ किया तथा संघस्थ बहनों ने भगवान का अभिषेक-पूजन किया।

8.30 बजे प्रतिष्ठा महोत्सव का झण्डारोहण हुआ एवं मध्यान्ह 3 बजे भगवान पद्मप्रभु की सवा सात फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा क्रेन द्वारा विराजमान की गईं। पश्चात् भगवान के गर्भकल्याणक

भगवतो गर्भकल्याणकस्यान्तरंगक्रियाभिः पंचकल्याणकप्रतिष्ठा प्रारभत्। 5 मई दिने प्रभावनापूर्वकं भगवतो महावीरस्य प्रथमाहारस्य दृश्यं प्रदर्शितमभवत् मानस्तम्भे च विराजमानानां भगवतां महामस्तकाभिषेकोऽभूत्।

विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य चमत्कारः–**4 मई 2001 दिने भगवतो दीक्षाकल्याणकदिवसे इलाहाबाद नगरादनेकमहानुभावाः समागताः आसन्? तेभ्यः एका महिला यस्याः नाम श्रीमती सीमा जैना (धर्मपत्नी स्वतन्त्र प्रकाश जैनस्य) कथयितुमारभत् यत् मातः! विश्वशान्तिमहावीर–विधाने उपविश्य मम जानोः पीडा सर्वथा समाप्ताभवत्, यदा त्वहं तस्मिन् उपवेष्टुं बहु अचिन्तयम्, यत् केन प्रकारेण उपवेष्टुं समर्था भविष्यामि किन्त्वहं यंत्रवत् प्रातः 2.30 वादने उत्थाय तेषु दिनेषु बहुपरिश्रममकरवं सर्वथा च स्वस्थातिष्ठम्। अयं तु मया सह साक्षात् चमत्कार एवाभवत्।**

वास्तवे यदि विचारं कृत्वा दर्शनं स्यात्तु आचार्याः जिनेन्द्र भक्तेः अचिन्त्यमहिम्नः वर्णनं कुर्वन्तोऽकथयन्–

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम्।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

पुनः ज्ञानमती माता सदृशी महती साध्वी, यस्याः प्रतिरोमं तीर्थंकर प्रभोर्भक्तिः समाहिता विद्यते यस्याश्च लेखन्यां शारदामातुर्वासोऽस्ति, तस्याः लेखन्या निर्मितेषु वीरगुणगायन कारकेषु मन्त्रेषु केऽपि चमत्काराः समागतास्तु काप्यतिशयोक्तेर्वार्ता न विद्यते।

आदि अन्तरंग क्रियाओं द्वारा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा प्रारंभ हो गई। 5 मई को प्रभावनापूर्वक भगवान महावीर के प्रथम आहार का दृश्य दिखाया गया एवं मानस्तंभ में विराजमान भगवन्तों का महामस्तकाभिषेक हुआ।

➢विश्वशांति महावीर विधान का चमत्कार–

4 मई 2001 को भगवान के दीक्षाकल्याणक दिवस पर इलाहाबाद से अनेक महानुभाव पधारे थे, मध्यान्ह में वे हमारे पास आकर दर्शन करके बैठ गए, उनमें से एक महिला जिनका नाम श्रीमती सीमा जैन (ध.प. श्री स्वतंत्र प्रकाश जैन) था, कहने लगीं कि माताजी! विश्वशांति महावीर विधान में बैठकर मेरे घुटने का दर्द बिल्कुल खत्म हो गया है जबकि मैं उसमें बैठने के लिए बहुत सोच रही थी कि कैसे बैठ पाऊँगी किन्तु मैंने मशीन के समान सुबह 2.30 बजे से उठकर उन दिनों खूब मेहनत की और बिल्कुल स्वस्थ रही। यह साक्षात् चमत्कार ही मेरे साथ हुआ है।

वास्तव में विचार करके देखा जाए तो आचार्यों ने जिनेन्द्र भक्ति की अचिन्त्य महिमा का वर्णन करते हुए कहा है–

एकापि समर्थेयं, जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं, दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः।।

फिर ज्ञानमती माताजी जैसी महान साध्वी, जिनके रोम-रोम में तीर्थंकर प्रभु की भक्ति ही समाई हो और जिनकी लेखनी में साक्षात् शारदा माता का वास हो, उनकी लेखनी से निःसृत वीर प्रभु के गुणगान करने वाले मंत्रों में कोई चमत्कार आ गए, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।

महासत्या चन्दनया महामुनये महावीराहारदानस्यैतिहासिकं दृश्यम्–**अस्याः प्रतिष्ठायाः ऐतिहासिकी विशेषताऽऽसीत् यत् 2565 वर्षाणां पूर्वस्येतिहासं साकारं कुर्वन्ती भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवस्यअन्तर्गते मातुः प्रेरणया महामुने–र्महावीरस्य तस्मै चाहारस्य प्रदानं कुर्वन्त्याः महासत्याश्चन्दनायाः प्रतिमायाः स्थापना कृता विद्यते, 7 मई दिने चापारजनसमूहस्य मध्ये महामुनेर्महावीरस्य आहारदानस्य दृश्यं दर्शितमभवत्। श्री महावीरप्रसादः बंगाली स्वीट सैन्टर दिल्ली अस्याः प्रतिमायाः स्थापनायाः प्रथमग्रासप्रदानस्य च पुण्यं प्राप्नोत्।**

इयमेव पवित्रा भूमिर्विद्यते, यत्र 2565 वर्षाणि पूर्वं राज्ञश्चेटकस्य पुत्र्या चन्दनया सह एकैतिहासिकी घटना घटिताभवत्, तामेको विद्याधरोऽपहृत्य अनयत् राज्ञश्च भयात् तां वने व्यपातयत्, पुनरेको भिल्लस्तामवलोक्य स्व राजानं समर्पयामास। भिल्लो राजा तां स्वपत्नी कारयितुमैच्छत् किन्तु तस्याः दृढतां वीक्ष्य तस्य भिल्लस्य माता चन्दनायाः रक्षामकरोत्। अन्ततः भिल्लश्चन्दनां कौशाम्ब्याः नगर्याः एकस्मै मित्रवराय श्रेष्ठिने प्रादात् सः तां स्वस्वामिनः वृषभसेनस्य समीपे प्रापयत्। श्रेष्ठी कुलीनां कन्यामवधार्य तां स्वपुत्रीवत् अरक्षत् किन्तु श्रेष्ठिनः पत्नी तां शंकापूर्णया दृष्ट्या दृष्ट्वा तां श्रेष्ठिनः अनुपस्थित्यां शृंखलाभिः बद्धवा अरक्षत् भक्षणार्थं च तस्यै मृदः पात्रे कांजी मिश्रितं धान्यस्य भक्तं दत्तवती। एकस्मिन् दिने कौशाम्ब्यां नगर्यां महामुनिर्महावीरस्य आहारार्थमागते सति साऽत्यन्तभक्तिपूर्वकं तां

➢महासती चंदना द्वारा महामुनि महावीर को आहार दान का ऐतिहासिक दृश्य–

इस प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक विशेषता रही कि 2565 वर्ष पूर्व के इतिहास को साकार करते हुए भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत माताजी की प्रेरणा से महामुनि महावीर एवं उनको आहार प्रदान करते हुए महासती चंदना की प्रतिमा की स्थापना की गई तथा 7 मई को अपार जनसमूह के मध्य महामुनि महावीर के आहारदान का दृश्य दिखाया गया। श्री महावीर प्रसाद जैन, बंगाली स्वीट, दिल्ली ने इस प्रतिमा की स्थापना एवं प्रथम ग्रास आहार देने का पुण्य प्राप्त किया।

यह वही पवित्र भूमि है, जहाँ 2565 वर्ष पूर्व राजा चेटक की पुत्री चंदना के साथ एक ऐतिहासिक घटना घटी थी, जिसे एक विद्याधर हरण कर ले गया और रानी के भय से उसे जंगल में डाल दिया, पुनः एक भील ने उसे देखकर अपने राजा को सौंप दिया। भील राजा ने उसे अपनी रानी बनाना चाहा किन्तु उसकी दृढ़ता देखकर उस भील की माता ने चंदना की रक्षा की, अनन्तर भील ने चंदना को कौशाम्बी नगरी के एक मित्रवर सेठ को दिया, उन्होंने उसे अपने स्वामी वृषभसेन के पास पहुँचा दिया, सेठ ने कुलीन कन्या समझकर उसे अपनी पुत्री के समान रखा परन्तु सेठानी ने उसे शंका भरी दृष्टि से देखकर उसे सेठ की अनुपस्थिति में सांकल से बांधकर रखा तथा खाने के लिए मिट्टी के सकोरे में कांजी से मिला हुआ कोदों का भात दिया करती थी, एक दिन कौशाम्बी नगरी में महामुनि महावीर के आहारार्थ आने पर उसने अत्यन्त भक्तिपूर्वक उन्हें पड़गाहना चाहा, उस

निमन्त्रायितुमेच्छत्, तदा तस्य लौहशृंखला छिन्नाभवत् सा च सुन्दरवस्त्राभूषणैः केशैश्च सुसज्जिताभवत्। शीलस्य महात्म्येन मृदःपात्र स्वर्णपात्रं धान्यान्यं च भक्ता शालितन्दुलानां पायसमभवत्। चन्दना महावीरस्य प्रतिग्रहणं कृत्वा भक्तिपूर्वक– माहारदानमयच्छत् देवाश्च पंचाश्चर्याणां वृष्टिमकुर्वन्।

तदेवं कथानकं साकाररूपं प्रदानार्थं तत्र तयो स्थायिस्मारकं निर्मितमभवत्, येन सर्वे महावीर स्वामिना सहैव महासत्याश्चन्दनायाः आदर्शमयेनेतिहासेन परिचिताः भवितुं शक्नुवन्ति।

दिल्लीं प्रति विहारस्य घोषणां श्रुत्वा सर्वे इलाहाबादवासिनोऽरुदन्–**राजधान्याः दिल्लीनगर्याः भक्तश्रेष्ठि–प्रतिष्ठितकार्यकर्तृणां पुनः पुनः दिल्लीं प्रति मंगलविहारस्य अत्यागृहं पश्यन्ती माताश्रीः 6 मई दिने सायंकालीनायां प्रवचनसभायां दिल्लीं प्रति मंगलविहारस्य तत्रैव च चतुर्मासस्य घोषणामकरोत्, तदा इलाहाबाद निवासिनोऽत्यंतमेव दुःखिताः अभवन्। काश्चित् महिलास्तु स्फुटस्वरेण रोदनमकुर्वन्। वास्तवे प्रायः 1 5 दिनेभ्यः इलाहाबाद निवासिनोऽनेकशः नारिकेलं समर्प्य नवीने तीर्थे चतुर्मासाय न्यवेदयन् ते च कथंचित् विश्वस्ताः इवासन् यत् दीक्षास्थल्यां चतुर्मासो भविष्यति, किन्त्वद्य निर्णयमाकर्ण्य सर्वे बहुदुःखिताः अभवन्।**

वस्तुतः साधुसाध्वीनामाहारविहारौ अनियतौ एव भवतः अतः प्रवहन्ती धारेव कदा कुत्र गतिं कुर्वन्तु किञ्चिन्निश्चितं न भवति। यत्र धर्मरक्षा, तीर्थरक्षयोः विषयाः समक्षं भवन्ति, तु भक्तानामाग्रहं त्यक्त्वा अपि तत्र लक्ष्यं भवत्येव अतः श्रावकश्राविकाश्च साधूना–

समय उसकी लौहशृंखला टूट गई और वह सुन्दर वस्त्राभूषणों, केशों से सुसज्जित हो गई। शील के माहात्म्य से मिट्टी का सकोरा स्वर्ण पात्र और कोदों का भात शाली चावलों की खीर बन गई। महावीर को चंदना ने पड़गाहन करके भक्तिपूर्वक आहारदान दिया और देवों ने पंचाश्चर्य वृष्टि की थी।"

उसी कथानक को साकाररूप प्रदान करने हेतु वहाँ उनका स्थाई स्मारक बनाया गया, जिससे सभी महावीर स्वामी के साथ ही महासती चंदनबाला के आदर्शमयी इतिहास से परिचित हो सकेंगे।

➢दिल्ली की ओर विहार की घोषणा सुन प्रयागवासी रो पड़े–

राजधानी दिल्ली के भक्तों, श्रेष्ठियों एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के पुनः-पुनः दिल्ली की ओर मंगल विहार के अतीव आग्रह को देखते हुए माताजी ने 6 मई को सायंकालीन प्रवचन सभा में दिल्ली की ओर मंगल विहार एवं वहीं के चातुर्मास की घोषणा कर दी, तो इलाहाबाद वालों को अत्यधिक दुःख हुआ। कुछ महिलाएँ तो फूट-फूट कर रोने लगीं। दरअसल लगभग 15 दिन से इलाहाबाद वालों ने कई बार नारियल चढ़ाकर नए तीर्थ पर चातुर्मास हेतु निवेदन किया था और उन्हें कुछ विश्वास सा हो गया था कि शायद दीक्षास्थली में ही चौमासा हो जाएगा किन्तु आज निर्णय सुनते ही सब बहुत दुःखी हुए।

वस्तुतः सन्त-साधु का आहार-विहार अनियत (अनिश्चित) ही होता है अतः बहती धार के समान कब किस ओर मुड़ जाएँ, कुछ निश्चित नहीं है। फिर जहाँ धर्मरक्षा, तीर्थरक्षा इत्यादि विषय सामने हों, तो भक्तों का आग्रह छोड़कर भी उस ओर लक्ष्य करना ही होता है अतः श्रावक-श्राविकाओं

मत्यधिकमोहे न पतेयुः।

भगवतो विमलनाथस्य जन्मभूमौ कम्पिलायां तीर्थे मातुश्चरणेऽपतताम्–**प्रयागतीर्थस्य विकसितं रूपं वीक्ष्य पूज्या माताश्रीः 22 अप्रैल 2001 दिने दिल्लीं प्रति मंगल विहारमकरोत्। विहारस्य शृंखलायां कन्नौज–फर्रूखाबाद–कायमगंजादीनि स्थानानि स्पृष्ट्वा जैनधर्मस्य त्रयोदशस्य तीर्थंकरस्य विमलनाथस्य गर्भ–जन्म–तपो–ज्ञानकल्याणकैः पवित्रायां भूम्यां श्रीकम्पिलाजीं फर्रूखाबाद जनपदे स्थिते दिगम्बरजैनतीर्थक्षेत्रे पूज्यमातुरागमने एकस्य नवीनसूर्यस्योदयोऽभवत्। यदास्य तीर्थस्य विकासहेतवे** ''सती द्रौपदी कला मन्दिरं'' **तीर्थंकर परम्परायाश्च प्रवर्तकस्यापि आदिब्रह्मणः भगवतः ऋषभदेवस्य सपादसप्त फुट मानस्योत्तुंग–पद्मासन–प्रतिमायाः स्थापनायाः माताश्रीर्घोषणामकरोत्।**

महत्याः शीलवत्याः महाभारतकालस्य सत्याः द्रौपद्या जन्मस्थली स्वयंवरस्थली च ''कम्पिलापुर्यां'' दशविद्युतझंकृतिभिः समन्वितस्य ''कलामन्दिरस्य'' उद्घोषणायाः पृष्ठे पूज्यमातुरियमेव भावनाऽऽसीत् यत् अस्याः माध्यमेन क्षेत्रस्य विकास–आकर्षणे च वृद्ध्या सहैव जनसाधारणाः यत्र भगवतः ऋषभदेवस्य महावीरस्वामिनश्च झंकृतिभिः जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः अविच्छिन्नपरम्परायाश्च ज्ञानं प्राप्स्यन्ति, तत्रैव भगवतो विमलनाथस्य जीवनवृत्तं सत्याः द्रौपद्याश्च पंचभर्तृणा पत्नी न भूत्वा तया एकपतिव्रतधर्मपालनेनोत्पन्नस्यैकशीलव्रतस्य माहात्म्यमपि समक्षं प्रकटयिष्यति।

को साधु-साध्वियों से ज्यादा मोह नहीं करना चाहिए।

➢**भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि कम्पिला जी तीर्थ पर पड़े पूज्य माताजी के चरण –**

प्रयाग तीर्थ का विकसित स्वरूप देखकर पूज्य माताजी ने 22 अप्रैल 2001 को दिल्ली की ओर मंगल विहार कर दिया। विहार की शृँखला में कन्नौज, फर्रुक्खाबाद, कायमगंज आदि स्थानों पर होते हुए जैनधर्म के तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ के गर्भ, जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक से पवित्र भूमि श्री कंपिला जी दि. जैन तीर्थ (जि. फर्रुखाबाद) में पूज्य माताजी के आगमन पर एक नवीन सूर्य का उदय हुआ, जब इस तीर्थ के विकास हेतु **'सती द्रौपदी कला मन्दिरम्''** एवं तीर्थंकर परम्परा के प्रवर्तक आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की सवा सात फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा की स्थापना की घोषणा पूज्य माताजी द्वारा की गई।

महान शीलवती महाभारत काल की सती द्रौपदी की जन्मस्थली एवं स्वयंवर स्थली 'कंपिला जी' में दस इलेक्ट्रानिक झांकियों से समन्वित 'कला मंदिरम्' की उद्घोषणा के पीछे पूज्य माताजी की यही भावना निहित रही कि इस माध्यम से क्षेत्र के विकास एवं आकर्षण में वृद्धि के साथ-साथ जनसाधारण को जहाँ भगवान ऋषभदेव-महावीर स्वामी की झाँकियों के द्वारा जैनधर्म की प्राचीनता एवं अविच्छिन्न परम्परा का ज्ञान होगा, वहीं भगवान विमलनाथ का जीवनवृत्त एवं सती द्रौपदी का पंचभर्तारी न होकर उनके द्वारा एक पतिव्रत धर्म पालन से उत्पन्न शील व्रत का माहात्म्य भी सामने आएगा।

एकदा पुनः खुर्जा नगरस्य स्वर्णमन्दिरस्य दर्शनं प्राप्तम्–**21 जून 2001 दिने वयं विहारं कुर्वन्त्यः खुर्जानगरं समागताः। पूर्वस्मिन् प्रयाग गमनकालेऽप्यस्माकमत्रागमनमभवत्। खुर्जा नगरमागत्याहं माताश्रीश्च अर्ध किलोमीटर अभ्यन्तरे गत्वा स्वर्ण मन्दिरस्य दर्शनमकुर्व। अस्य स्थानस्य प्रतोल्यः अति अस्वच्छाः आसन्, याः दृष्ट्वा मनसि घृणा त्वभवत्, किन्तु मन्दिरमागत्य सा असीमप्रसन्नतायां परिवर्तिताभवत् यतः कुन्दनस्य वृहत्शिल्पमयं इदमेव भारतस्यैतिहासिक मन्दिरमस्ति, अत्र स्वर्णमपि बहुमात्रायां जटितं विद्यते।**

अद्यतः 200 वर्षाणि पूर्वं पंचायतस्य सहयोगेन निर्मितेऽस्मिन् मन्दिरे पण्डितश्रेष्ठी मेवारामो जैनः रानीवाला पूर्णं स्वर्णस्य कुन्दनस्य कार्यमकारयत्, तस्य प्रपौत्रोऽशोककुमारो जैनोऽद्यापि तत्रैव वसति, इदं जैनमन्दिरमधुना जीर्णोद्धारमपेक्षते। विशेषरूपेणात्रदृष्टिमागतं यत् शीतलनाथभगवत वेदिकायाः पृष्ठभागस्तस्य भरितस्य कल्पवृक्षस्य संगमर्मरेण निर्मितं चिह्नं विद्यते, यस्मिन् सुवर्णस्य कार्यमस्ति, मन्दिरस्य च सर्वासु वेदिकासु लम्बमानानां छत्रत्रयाणां क्रमः उपरिदीर्घ, पुनः तस्मात् लघु अस्ति, यं माताश्रीः उचितं मन्यते।

एका आश्चर्यकारिणी घटना श्रवणगोचराभवत–**26 जून 2001 दिने वयं राजधान्याः निकटे नोएडा नगरेऽतिष्ठाम। सायंकाले काश्चित् महिलाः अत्र मातुर्दर्शनार्थमागच्छन् मां च ताः अकथयन यत् मातः! अत्र वयमपि ज्ञानमत्या मात्रा दत्तां रोटिकां कटोरदानपात्रे निक्षिप्य एकस्य सप्ताहस्य पश्चात् द्वे रोटिके भूत्वा निर्गते अपश्याम एतच्च सर्वासामेव महिलानां**

➢एक बार पुनः खुर्जा के स्वर्ण मंदिर के दर्शन मिले–

21 जून 2001 को हम लोग विहार करते हुए खुर्जा पहुँचे। पूर्व में प्रयाग जाते वक्त भी हमारा यहाँ आगमन हुआ था। खुर्जा पहुँचकर मैंने और माताजी ने आधा किमी. अंदर जाकर स्वर्ण मंदिर के दर्शन किए। यहाँ की गलियाँ बहुत गंदी थीं, जिन्हें देखकर मन में ग्लानि तो हुई, किन्तु मंदिर पहुँचकर वह असीम प्रसन्नता में परिवर्तित हो गई क्योंकि कुन्दन के वृहद् कसीदाकारी काम वाला यह भारत का एकमात्र ऐतिहासिक मंदिर है, यहाँ सोना भी भारी मात्रा में लगा हुआ है।

आज से 200 वर्ष पूर्व पंचायत के सहयोग से बने इस मंदिर में पं. सेठ मेवाराम जैन रानीवाला ने पूरा कुन्दन और सोने का काम कराया था, उनके वंशज (पड़पोते) अशोक कुमार जैन अभी यहाँ रहते हैं, यह मंदिर अब जीर्णोद्धार की हालत में है। विशेषरूप से यहाँ देखने में आया कि शीतलनाथ भगवान की वेदी के पीछे उनका भरा हुआ कल्पवृक्ष का संगमरमर से निर्मित चिन्ह है, जिसमें सोने का काम है तथा मंदिर की सभी वेदियों में लगे तीनों छत्रों का क्रम ऊपर बड़ा, पुनः उससे छोटा है, जो माताजी उचित मानती हैं।

➢एक आश्चर्यकारी घटना सुनने में आई–

26 जून 2001 को हम लोग राजधानी दिल्ली के निकट नोएडा में ठहरे हुए थे। शाम को यहाँ कुछ महिलाएं माताजी के दर्शनार्थ आईं और मुझसे कहने लगीं कि माताजी! यहाँ पर हम लोगों ने भी ज्ञानमती माताजी द्वारा दी गई रोटी कटोरदान में रखकर एक सप्ताह बाद दो रोटी बनकर

गृहेऽभवत्। यत् साधवस्तु आशीर्वादमात्रं ददति, न रोटिकादीन्। पुनः एषा वार्ता कदा केन च प्रसारिता। अनेनैव प्रकारेण अनेकजनैरेषा वार्ता श्रुताभवत् यदा च माता कदापि कस्मैचित् रोटिकां नादात् किन्तु अक्षीणमहानसऋद्धेर्मन्त्रमवश्यमेव प्रददाति।

प्रयागतीर्थे निर्माणसहयोगिनो महतः पुण्यस्य भागिनः सन्ति–**मात्रं एकस्मिन् वर्षे एव तीर्थं स्व विकसित रूपं प्राप्य विश्वस्य क्षितिजे ''तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्याः'' रूपेण प्रकटितमभवत्, इयमाश्चर्यस्यैव नैव, असंभवा इव वार्ता दृश्यते किन्तु तत् असंभवं कार्यं पूज्यमातुः मंगलाशीर्वादेन कर्मयोगिना रवीन्द्र महोदयेन तस्य च कर्मठसहयोगिभिः यया कुशलतया संभवरूपेण सम्पादितं, तद् देवोपनीतं कार्यमिवैव प्रतीतमभवत्। मूलादारभ्य शिखरपर्यन्त निर्मापिते तस्मिन् तीर्थे ये–ये महानुभावां स्व अर्थांजलिं भावांजलिं च समर्पयन् स्व च शरीरस्य मनसो धनस्य च सहयोगमदुः ये लघुकार्याच्चः महान्ति कार्याण्यकुर्वन्, ते सर्वे महतः पुण्यस्य भागिनस्तु सन्त्येव प्रशंसायाः पात्राण्यापि सन्ति, तेभ्यश्च मम मंगलकामनास्ति यत ते सर्वदैवानेन प्रकारेणैव तीर्थाणां सुरक्षाः विकासकार्येषु संलग्नाः भूत्वा जिनधर्मपताकां उच्चैर्विधातुं सहयोगिनो भूत्वा स्वात्मानमपि समुन्नतं कुर्युः।**

सुकुमार बालिकानां अश्रान्तं परिश्रमोऽपि न विस्मरणीयमः–**प्रयागतीर्थस्य निर्माणे यत्रानेक पुण्यशालिनोः भव्यात्मानः स्व प्रशंसनीय सहयोगं प्रदानमकुर्वन्, तत्रैव संघस्थानां लघुवयस्कानां**

निकलते देखा है और ऐसा तमाम महिलाओं के घर में हुआ है। लोगों ने इसे चमत्कार माना है कि जिसके यहाँ रोटी आएगी, उसकी खूब उन्नति होगी। सुनकर हमें बड़ी हँसी आई और आश्चर्य भी हुआ कि साधु तो मात्र आशीष देते हैं रोटी इत्यादि नहीं, फिर यह हवा किसके द्वारा और कैसे फैलाई गई है। इसी प्रकार अनेक लोगों से यह बात सुनी गई, जबकि माताजी ने कभी किसी को रोटी नहीं दी थी बल्कि अक्षीण महानस ऋद्धि का मंत्र अवश्य दिया करती हैं।

➢प्रयाग तीर्थ निर्माण के सहयोगी महान पुण्य के भागी हैं–

मात्र 1 वर्ष के अन्दर तीर्थ अपने विकसित स्वरूप को प्राप्त कर विश्व के क्षितिज पर ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली'' के रूप में प्रगट हो गया, यह आश्चर्य की ही नहीं, असंभव सी बात दिखती है, मगर उस असंभव कार्य को पूज्य माताजी के मंगल आशीर्वाद से कर्मयोगी रवीन्द्र जी एवं उनकी कर्मठ टीम ने जिस कुशलता के साथ संभव कर दिखाया, वह देवोपुनीत कार्य के समान ही प्रतीत हो रहा था। मूल से लेकर चूल तक बनने वाले उस तीर्थ में जिन-जिन महानुभावों ने अपनी अर्थांजलि, भावांजलि लगाई, अपना तन-मन-धन का सहयोग दिया अथवा छोटे कार्य से लेकर बड़े-बड़े कार्यों को सम्पादित किया, वे सब महान पुण्य के भागी होने के साथ प्रशंसा के भी पात्र हैं और उन सभी के लिए मेरी मंगलकामना है कि वे सदैव इसी प्रकार तीर्थ सुरक्षा व विकास कार्य में संलग्न रहकर जिनधर्म पताका को ऊँची रखने में सहयोगी बनकर अपनी आत्मा को भी समुन्नत बनावें।

➢सुकुमार बालिकाओं के अथक परिश्रम को भी नहीं भुलाया जा सकता–

प्रयाग तीर्थ के निर्माण में जहाँ अनेकों पुण्यशाली भव्यात्माओं ने अपना प्रशंसनीय सहयोग

ब्रह्मचारिणीनां भगिनीनामश्रान्तंपरिश्रमोऽपि न विस्मरणयोग्यं। यत्रास्मिन् कार्ये मातुः सततं प्रेरणा संघस्थस्य क्षुल्लकमोतीसागरस्य रवीन्द्रस्य च कर्मठता वर्णनयोग्यं, तत्रैव एताः भगिन्यः मात्रा निर्दिष्टे प्रत्येक कार्ये स्वाहर्निशं सहयोगप्रदानमकुर्वन्। तेषु कार्येषु मंचसंचालनं, भाषणं, आहारः, अध्ययनं, विहारः पदयात्रा तु सम्मिलिताः सन्त्येव, सर्वा व्यवस्थास्ताः सदैव प्रसन्नमनसोत्साहेन सह च कुशलतया च सम्पादयन्ति। एताषां भगिनीनां कार्यकुशलतां वीक्ष्य केचिज्जनाः मां कथयन्ति यत् मातः! भवतः संघस्थाः भगिन्यस्तु सर्वकार्येषु सर्वत्रैव सन्ति। केचित्तु एतासां भगिनीनां अष्टदिक्कुमारीभिः सह तुलनां कुर्वन्ति। इदं सर्वं मातुराशीर्वादस्यैव फलमस्ति।

मात्रं आत्मकल्याणाय विद्याध्ययनाय च मातुः छत्रछायायां तिष्ठन्त्यः एताः अष्टभगिन्यः कुमार्यः वीणा–आस्था–सारिका–चन्द्रिका–इन्दु–अलका–प्रीति–स्वात्यादयः सर्वाः मम मंगलाशीर्वादस्य पात्राणि सन्ति, याः ख्याति–लाभ–पूजादिभ्यः दूरे तिष्ठन्त्यः सदैव गुरुभक्ति आत्मकल्याणं च स्वलक्ष्यं निर्धारयन्तु स्व चरित्रं च वृद्धिंगतं कृत्वा शीघ्रमेव आर्यिका दीक्षां गृहीत्वा स्व जीवनस्य मन्दिरं कलशारोहणं कर्तुं सौभाग्यं प्राप्नुवन्तु।

प्रदान किया, वहीं संघ में रहने वाली छोटी-छोटी ब्रह्मचारिणी बालिकाओं के अथक परिश्रम को भी नहीं भुलाया जा सकता है। जहाँ इस कार्य में पूज्य माताजी की सतत प्रेरणा, संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी एवं ब्र.रवीन्द्र जी की कर्मठता ने रंग दिखाया, वहीं इन बहनों ने पूज्य माताजी द्वारा निर्देशित प्रत्येक कार्य में अपना अहर्निश सहयोग प्रदान किया, फिर चाहे वह स्टेज संभालना हो या भाषण करना, चौके में हो या अध्ययन में, विहार में मेरे साथ पैदल चलना हो या छोटी-छोटी व्यवस्था से लेकर कितनी भी बड़ी व्यवस्था क्यों न करनी पड़े, सदैव प्रसन्न मन से पूर्ण कुशलतापूर्वक प्रत्येक कार्य में भाग लेतीं तभी तो माताजी को लम्बे-लम्बे विहार करने में कुछ सोचना नहीं पड़ता है। इन सबकी कार्यकुशलता देखकर कई बार लोग आकर कहने लगते हैं कि माताजी! आपके संघ की बहनें तो आलराउण्डर हैं अर्थात् सर्वतोमुखी प्रतिभा की धनी हैं। साथ ही कई एक लोग कहते हैं कि माताजी! आपकी संघ की ये आठ बहनें अष्ट दिक्कुमारिकाओं के समान स्वर्ग से आई प्रतीत होती हैं जो अहर्निश आप सबकी सेवा में लगी रहती हैं। तब मेरे मुख से निकल पड़ता है कि यह सब पूज्य माताजी के आशीर्वाद का ही फल है, उनके पास रहने वाला हर व्यक्ति सर्वतोमुखी प्रतिभा का धनी हो जाता है।

मात्र आत्मकल्याण और विद्या अध्ययन के लिए माताजी की छत्रछाया में रहने वाली इन आठों ब्र. बहनों कु. बीना, आस्था, सारिका, चन्द्रिका, इन्दु, अलका, प्रीति व स्वाति के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है कि वे ख्याति, लाभ, पूजादि से दूर रहते हुए सदैव गुरुभक्ति व आत्मकल्याण को ही अपना मुख्य लक्ष्य बनाए रखें और क्रम-क्रम से अपने चारित्र को वृद्धिंगत करते हुए शीघ्र ही आर्यिका दीक्षा धारण कर अपने जीवनरूपी मंदिर पर कलशारोहण करने का सौभाग्य प्राप्त करें।

अशोकविहारे दिल्लीनगर्यां चतुर्मासस्य स्थापना–**3 जुलाई 2001 दिने सत्यवती–उपनगरात् दिल्लीनगर्याः विहारं कृत्वा वयं मात्रा सह चतुर्मासस्थलं प्रति पदार्पणमकुर्म। 1 किलोमीटर दीर्घायां शोभायात्रायां अपारजनसमूहस्योपस्थितिः आसीत् यत् केन प्रकारेण दिल्लीवासिनो मातुः प्रतीक्षायामासन्। सम्पूर्णे मार्गे 'बैनर' संलग्ना आसन्, पंचवर्णयुक्तानि द्वाराणि निर्मितान्यासन्, मंदिरस्य पुरतोऽपि पर्याप्तसुसज्जा आसीत्। मन्दिरे मंगलप्रवेशस्य सभायां संघपतेः आनन्दजैनः जैन मार्बलहोम स्वामिना, ब्र. रवीन्द्रेण सह संघस्थानां ब्रह्मचारिणिभिः सह नव वादनपर्यन्तं संचालितायां सभायां पश्चात् शोभायात्रया सह संघं वसतिकापर्यन्तं आनीतवान् मध्ये पंचाशदादि अधिकायां श्रावकाणां गृहाणां पुरतः पुष्पाणां रंगोलीनां सज्जासीत्, स्वागतं कुर्वन्तो जनाः मातुः पादप्रक्षालनं कृतवन्तः आरतिकां पुष्पवृष्टिं चाकुर्वन्।**

4 जुलाई 2001 दिने वर्षायोगस्थलस्य नाम ''महावीर निलयमिति'' घोषितमभूत्। अपरान्ह 3 वादने महावीरनिलयात् माताश्रीः शोभायात्रया सह मन्दिरमागता, यत्र वर्षायोगस्थापनायाः सभायोजिता। साहू रमेशचन्द्रस्य अध्यक्षतायां समायोजितायामस्यां सभायां मुख्य अतिथिरूपेण सांसदः श्री साहबसिंहः वर्मा विधायकश्च श्री दीपचन्द्रो बन्धुरास्ताम्। अस्मिन्नवसरे साहू रमेशचन्द्रः स्व वक्तव्येऽकथयत् यत् ''यदि माताश्रीः 6 अप्रैल दिनस्य कार्यक्रमे उपस्थिता आसीत्तु या घटना दिगम्बर जैन समाजेन सहाभवत् सा न स्यात्। वयं दीक्षास्थल्यामेव मातरं महावीरजयन्त्यां दिल्लीनगर्यां पदार्पणस्य निवेदनमकुर्म, किन्तु

➢**अशोक विहार-दिल्ली में वर्षायोग स्थापना–**

3 जुलाई को सत्यवती कालोनी से दिल्ली विहार करके हमने पूज्य माताजी के साथ चातुर्मास स्थल की ओर पदार्पण किया। एक कि.मी. लम्बे जुलूस में अपार जनसमूह की उपस्थिति यह दर्शा रही थी कि किस प्रकार दिल्लीवासी पूज्य माताजी का इंतजार कर रहे थे। पूरे रास्ते में बैनर लगे थे, पंचरंगी द्वार लगे थे तथा मंदिर के आस-पास भी खूब सजावट थी। मंदिर में मंगल प्रवेश की सभा में संघपति श्री आनंद जी -पवन जी (जैन मार्बल होम-मेरठ), ब्र. रवीन्द्र जी तथा संघस्थ बहनों का समाज द्वारा सम्मान किया गया। 9 बजे तक चली सभा के बाद जुलूस के साथ संघ को वसतिका तक लाने के मध्य पचासों घरों के आगे लोगों ने खूब स्वागत करते हुए पाद प्रक्षाल, आरती, पुष्पवृष्टि आदि की। हर घर के आगे फूल व रंगोली के चौक बने थे।

4 जुलाई 2001 को वर्षायोग स्थल का नामकरण ''महावीर निलय'' घोषित किया गया। अपरान्ह 3 बजे महावीर निलय से पूज्य माताजी जुलूस के साथ मंदिर जी में पहुँचीं, जहाँ वर्षायोग स्थापना की सभा हुई। साहू रमेशचंद जी की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री साहिब सिंह वर्मा एवं विधायक दीपचंद बंधु जी उपस्थित थे। इस अवसर पर साहू जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''यदि माताजी 6 अप्रैल के कार्यक्रम में होतीं, तो जो दुर्घटना दि. जैन समाज के साथ हुई है, वह न होती। हम लोगों ने दीक्षास्थली में ही माताजी से महावीर जयंती तक दिल्ली पधारने का निवेदन किया था लेकिन पदविहार करने

पदविहारिणां साधूनामपि स्व चर्या भवति। अस्तु! इदानीमहं विश्वासं करोमि यन्मातुर्निर्देशने आगामिकार्यक्रमैर्महती धर्मप्रभावना भविष्यति।

अद्य अवसरे दिल्लीनगर्याः सर्वेषामुपनगराणां मुख्यकार्यकर्तारः उपस्थिताः आसन्। महिला संघठनशाखानां प्रतिनिधिभिः सह अनेकमहानुभावाः उपातिष्ठन् सम्मर्दमध्ये च सर्वेषु अधिकोत्साहः आसीत्।

वीरशासनजयन्ती पर्वः–**तीर्थंकरमहावीरस्य केवलज्ञानस्य प्राप्तौ अपि 66 दिनानां पश्चात् गौतमगणधरे आगते सति तस्य दिव्यध्वनि व्यक्ताभवत् अर्थात् तस्मात् दिनादेव तस्य शासनं प्रारभत्। श्रावण कृष्ण प्रतिपदायाः तद् पावन दिनं ''वीरशासन जयन्ती पर्वरूपेण'' मान्यते।**

अस्मिन्नेव सन्दर्भे 6 जुलाई दिनात् 8 जुलाई 2001 दिनपर्यन्तं मातुः सान्निध्ये अशोकविहारे वीरशासन जयन्त्याः त्रिदिवसीयमायोजनमभवत्, यस्मिन् 6 जुलाई दिने भगवतो महावीरस्य समवसरणस्य रचनां कृत्वा गौतमगणधरस्य सामूहिकपूजा सम्पन्नाभवत्। 7 जुलाई दिने ''श्रुतस्कन्धविधानमभवत्''। 8 जुलाई दिने प्रातः विपुलाचलपर्वतस्य भव्या प्रतिकृति 2600 ग्रन्थानां च शोभायात्रा निर्गताभवत्। शोभायात्रायाः पश्चाच्च मन्दिरे जिनवाणी मातु दर्पणेऽभिषेकोऽभूत माताश्रीश्च जिनवाण्याः महत्त्वे प्रकाशमपातयत्।

सप्तदिवसीयो महावीरदेशनाशिविरः–**राजधान्यां दिल्लीनगर्यां मंगलपदार्पणेन चतुर्मासेन च सहैव माताश्रीः भगवतो महावीरस्य सम्बन्धिनामनेकानां लघुवृहतां च कार्यक्रमाणां रूपरेखां**

वाले साधुओं की भी अपनी चर्या है। खैर! अब मुझे विश्वास है कि माताजी के निर्देशन में आगामी कार्यक्रमों से अच्छी धर्मप्रभावना होगी।''

आज के सुअवसर पर दिल्ली की सभी कालोनियों के मुख्य कार्यकर्ता एवं महिला संगठन इकाइयों की प्रतिनिधियों के साथ-साथ अनेकों महानुभाव उपस्थित थे और भीड़भाड़ के मध्य सभी में अच्छा उत्साह था।

➢वीर शासन जयंती पर्व–

तीर्थंकर महावीर को दिव्य केवलज्ञान की उपलब्धि होने पर भी 66 दिनों के बाद गौतम गणधर के आने पर उनकी दिव्यध्वनी खिरी थी अर्थात् उस दिन से ही उनका शासन प्रारंभ हुआ था। श्रावण कृष्णा एकम के उस पावन दिवस को 'वीर शासन जयंती पर्व' के रूप में तब से ही मनाया जाता है।

इसी संदर्भ में 6 जुलाई से 8 जुलाई 2001 तक माताजी के संघ सानिध्य में अशोक विहार में वीरशासन जयंती का त्रिदिवसीय आयोजन रखा गया, जिसमें 6 ता. को भगवान महावीर के समवसरण की रचना कर गौतम गणधर की सामूहिक पूजन सम्पन्न की गई। 7 जुलाई को 'श्रुतस्कंध विधान' किया गया। 8 जुलाई को प्रातः विपुलाचल पर्वत की भव्य झांकी एवं 2600 ग्रंथों का जुलूस निकाला गया। जुलूस के पश्चात् मंदिर जी में जिनवाणी माता का अभिषेक (दर्पण में) हुआ तथा माताजी ने वीरशासन जयंती के महत्व पर प्रकाश डाला।

➢सप्त दिवसीय महावीर देशना शिविर–

राजधानी दिल्ली में मंगल पदार्पण एवं चातुर्मास स्थापना के साथ ही माताजी ने भगवान महावीर से संबंधित अनेक लघु एवं वृहत् कार्ययोजना की रूपरेखा बनाकर उसे क्रियान्वित करना

रचयित्वा तां क्रियान्वितां कर्तुं प्रारभत्। तस्यामेव शृंखलायां सा जन–जनान् महावीरस्य जीवनेन तस्य सिद्धान्तैश्च परिचितान् कारयितुं सप्तदिवसीयस्य महावीरदेशनाशिविरस्यायोजनं 9 जुलाई दिनात् 15 जुलाई पर्यन्तं प्रस्तुतमकरोत्।

यस्मिन् मात्रा सहैवाहं क्षुल्लकमोतीसागरश्च विविधविषयेषु कक्षाः गृहीतवन्तौ, येषु सामायिकं–द्वाद्वशांगज्ञानं ध्यानसाधनायाश्च विषयाः प्रमुखाः आसन्।

पी.एस.मोटर स्वामिनो रमेशचन्द्रस्याधिकोत्साहः–**11 जुलाई 2001 दिने श्री रमेश चन्द्रो जैनः, महावीर जन्मोत्सव दि. जैन राष्ट्रीय समितेर्महामंत्री श्री डी.के. जैन एडवोकेटः समागच्छताम्। मातुर्दर्शनस्य पश्चात् श्री रमेश चन्द्रः अकस्मात् सहसाऽब्रवीत यत् मातः! श्री रवीन्द्रो भ्राता अस्यां राष्ट्रीय महावीर समितौ विशेषं योगदानं कुर्यात् अस्मिन् सम्बन्धे च भवत्या यान्यापि कार्याण्यभवन् भवितुं प्रस्तावितानि च सन्ति, सर्वाण्यस्याः समितेरेवांगानि मतानि सन्ति। पूज्या माता तं द्वे–तिस्रः वार्ताः अकथयत्–**

(1) 21 अक्तूबर दिनात् 28 अक्तूबर पर्यन्तं आयोजनाय प्रस्तुतस्य विश्वशान्ति महावीर विधानस्य योजना।

(2) सम्पूर्णे देशे विषयाणां प्रेषणम्।

(3) विद्यालय–महाविद्यालयेषु स्वसाहित्यमुपलब्धं कृत्वा संगोष्ठी–नाटकादीनां च आयोजनम्।

श्री डी.के. जैनोऽपि स्वकाश्चित् योजनाः प्रस्तुताः कृतवान् किंत्वेतेषां योजनानां पुरतः

प्रारंभ कर दिया। इसी श्रृंखला में उन्होंने जन-जन को भगवान महावीर के जीवन एवं उनके कल्याणकारी सिद्धान्तों से परिचित करवाने हेतु सप्त दिवसीय महावीर देशना शिविर का आयोजन 9 जुलाई से 15 जुलाई तक किया।

जिसमें माताजी के साथ-साथ स्वयं मैंने, संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी ने अनेक विषय पर क्लास लीं, जिसमें सामायिक, द्वादशांग ज्ञान एवं ध्यान साधना के विषय प्रमुख रहे।

➢रमेश जैन (पी.एस.मोटर्स) का अत्यधिक उत्साह–

11 जुलाई 2001 को रमेश जैन (पी.एस.मोटर्स) एवं डी.के. जैन एडवोकेट (महावीर जन्मोत्सव दि. जैन राष्ट्रीय महासमिति के महामंत्री) पधारे। पूज्य माताजी के दर्शन करने के बाद रमेश जी एकदम बोल पड़े कि माताजी! रवीन्द्र जी को इस राष्ट्रीय महावीर समिति में सक्रिय योगदान देना है तथा इस संबंध में आपके द्वारा जो भी कार्य हुए हैं और होने वाले हैं वे सभी इस समिति के ही अंग माने जायेंगे। पूज्य माताजी ने उन्हें दो-तीन बातें बताईं–

1. 21 से 28 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले विश्वशांति महावीर विधान की भावी योजना।
2. पूरे देश में बोर्ड एवं होर्डिंग के मैटर भेजना।
3. स्कूल-कालेजों में अपना साहित्य भेजकर संगोष्ठी, नाटक आदि आयोजित कराना।

डी.के. जैन ने भी अपनी कुछ योजनाएं बताईं किन्तु इन लोगों के सामने आर्थिक समस्याएं

आर्थिकसमस्यानां कारणात् किमपि क्रियान्वितं भवितुं नाशक्नोत्। अस्तु! एतद् दृष्ट्वा प्रसन्नताऽभवत् यत् श्री रमेश चन्द्रोऽस्वस्थतायामपि महावीर जन्मोत्सवे पर्याप्तां सक्रिया भूमिकां निर्वाहितामकरोत्, मातुः दिल्लीनगर्यामुपस्थित्यैवैतेषु महानुत्साहोऽजायत्।

शालीमारबाग–उपनगरे दिल्लीनगर्यां मातुः संघ सान्निध्ये रक्षाबन्धन पर्व सोल्लासं सम्पन्नमभवत्–

30 जुलाई दिने प्रातः 6 वादने अशोकविहारात् शालीमारबाग मन्दिराय विहारोऽभवत्। अत्र जनेष्वपि महोत्साहः दृष्टः। तत्र गत्वा कलात्मकस्य मन्दिरस्य दर्शनं कृत्वा हृदयं गद्गदमभवत्। अत्र जनाः अकथयन् यत् 1997 वर्षे यस्मात् दिनात् पूज्यमाताऽत्र चतुरो यंत्रान् स्थापिता अकरोत्, तस्मात् दिनात् कार्यं तीव्रगत्या संचालितमभवत्। 1993 वर्षे जनाः मातुर्मार्गदर्शनहेतवे टिकैतनगरमपि अगच्छन्।

तत्र गत्वैव मन्दिरे प्रवचनसभाऽभवत्, यस्यां मध्ये मम त्रयोदश तमे दीक्षा दिवसे मातुर्वात्सल्यपूर्णो आशीर्वादः प्राप्तोऽभवत्। समाजेन मह्यं त्रयोदशग्रन्थाः उपाहृताः। 4 अगस्त दिने मध्याह्ने रक्षाबन्धन पर्वणः सामूहिकमायोजनमभवत्, अस्मात् पूर्वं प्रतिदिनं प्रशिक्षणशिविरः संचालितोऽभवत्। रक्षाबन्धनस्य शुभदिने दिल्लीनगर्याः अधिकांशेभ्यो उपनगरेभ्यः देशस्य च विभिन्नभागेभ्यः आगताः जैनबन्धवः भागं गृहीत्वा मातुः प्रेरणया धर्मध्वजे रक्षासूत्रमबध्नन् परस्परं च रक्षासूत्राणि बद्ध्वा राष्ट्र–धर्म–धर्मायतन–तीर्थ–साधु–सहधर्मिजनानां च रक्षायाः संकल्पमकुर्वन्।

होने से कुछ क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा था। खैर! यह देखकर प्रसन्नता हुई कि रमेश जी ने अस्वस्थ होकर भी महावीर जन्मोत्सव में काफी सक्रिय भूमिका निभाई, शायद पूज्य माताजी के दिल्ली पहुँच जाने से ही इनमें अतीव उत्साह आ गया था।

➢शालीमारबाग-दिल्ली में माताजी के संघ सानिध्य में रक्षाबंधन पर्व सोल्लास हुआ–

30 जुलाई को प्रातः 6 बजे अशोक विहार से शालीमार बाग मंदिर के लिए विहार हुआ। यहाँ के लोगों में भी विशेष उत्साह दिखा। वहाँ पहुँचकर सुन्दर कलात्मक मंदिर दर्शन करके हृदय अत्यन्त गद्गद हो गया। यहाँ के लोगों ने बताया कि सन् 1997 में जिस दिन से पूज्य माताजी ने यहाँ 4 यंत्र स्थापित किए हैं, उस दिन से कार्य तेजी से चलता ही गया। सन् 1993 में यहाँ के लोग इस मंदिर के बारे में माताजी का मार्गदर्शन लेते हेतु टिकैतनगर भी गए थे।

वहाँ पहुंचते ही मंदिर जी में प्रवचन सभा हुई, जिसमें मेरे 13वें दीक्षादिवस पर मुझे पूज्य माताजी का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद प्राप्त हुआ। समाज के द्वारा मुझे 13 ग्रंथ भेंट किए गए। 4 अगस्त को मध्यान्ह में रक्षाबंधन का सामूहिक आयोजन किया गया, इससे पूर्व प्रतिदिन शिक्षण शिविर चलाया गया। रक्षाबंधन के शुभ दिन दिल्ली की अधिकतर कालोनियों एवं देश के विविध अंचलों से पधारे जैन बंधुओं ने भाग लेकर माताजी की प्रेरणा से धर्मध्वज में रक्षासूत्र बांधा एवं परस्पर भी रक्षासूत्र बांधकर राष्ट्र, धर्म, धर्मायतन, तीर्थों, साधुओं एवं साधर्मी जनों की रक्षा का संकल्प लिया।

अस्मिन्नवसरे प्रख्यातः सांसद विधिवेत्ता च श्री एल.एम. सिंघवी महोदयोऽपि समागत्य पूज्यमातुराशीर्वादं प्राप्नोत्।

अस्मात् पूर्वं प्रातःकाले अकम्पनाचार्यादीनां सप्तशतमुनीनां विष्णुकुमारमुनेश्च सामूहिकपूजाः अभवन् भगवते श्रेयांसनाथाय च निर्वाणमोदकाः समर्पिताः।

पहाड़गंज–उपनगरे वार्षिकरथयात्रा–**दिल्लीनगर्याः पहाड़गंज उपनगरे प्रतिवर्षं वार्षिक–रथयात्रायाः आयोजनं भवति, परन्त्वस्मिन् वर्षे ते एतां विशेषरूपेणायोजयितुमैच्छन् अतस्ते मातुः श्रीचरणयोः श्रीफलं समर्प्य स्वमंगल सान्निध्यं दातुं मंगलकामनामकुर्वन्, माताश्री सहर्ष स्वीकृतमकरोत्। आश्विनकृष्ण चतुर्दश्यां, 16 सितम्बर दिने मध्याह्ने पहाड़गंजक्षेत्रस्य मुख्यराजमार्गेषु भव्यशोभायात्रा निर्गताभूत् आपणेश्च मध्ये मंचं रचयित्वा प्रवचनसभा संयोजिता।**

तस्मिन् दिने संघस्थस्य क्षुल्लक मोतीसागरस्य 62 तमस्य जन्मदिनस्यावसरे प्रातः सामूहिकं शान्तिविधानमभवत् दिने च वयं क्षुल्लकं प्रति शुभकामनाः व्यक्ताः अकुर्म।

2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य राष्ट्रीयसमितेरधिवेशनम्–**6 अप्रैल दिने भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक महोत्सववर्षस्य राष्ट्रीयस्तरेण उद्घाटनेन सहैव मुख्यरूपेण शासकीयराष्ट्रीय समिति, चतुर्णां सम्प्रदायानां महोत्सवमहासमिति, दिगम्बरजैन राष्ट्रीय समिति राज्यस्तरीयाश्चानेकसमितयः भगवतो महावीरस्य अस्य जन्मकल्याणकवर्षस्य कार्यक्षेत्रे पदार्पणमकुर्वन्।**

इस अवसर पर प्रख्यात सांसद एवं विधिवेत्ता श्री एल.एम. सिंघवी जी ने भी पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

इससे पूर्व प्रातःकाल अकम्पनाचार्यादि सात सौ मुनियों एवं मुनि विष्णुकुमार की सामूहिक पूजन हुई एवं भगवान श्रेयांसनाथ का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया।

➢पहाड़गंज में वार्षिक रथयात्रा–

दिल्ली की पहाड़गंज कालोनी में प्रतिवर्ष वार्षिक रथयात्रा का आयोजन होता है परन्तु इस वर्ष वे लोग इसे विशेषरूप से मनाना चाहते थे अतः उन्होंने माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल चढ़ाकर अपना मंगल सानिध्य प्रदान करने की भावना की, जिसे माताजी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आश्विन कृ. चतुर्दशी, 16 सितम्बर को मध्यान्ह में पहाड़गंज की मुख्य सड़कों पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई और बीच बाजार में मंच बनाकर प्रवचन सभा रखी गई।

उस दिन संघस्थ क्षुल्लक मोतीसागर जी के 62वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रातः सामूहिक शान्तिविधान हुआ एवं दिन में हम लोगों ने क्षुल्लक जी के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

➢2600वाँ जन्मकल्याणक राष्ट्रीय समिति का अधिवेशन–

6 अप्रैल को भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के राष्ट्रीय स्तर पर उद्घाटन के साथ-साथ मुख्यरूप से सरकारी राष्ट्रीय समिति, चारों जैन सम्प्रदाय वाली महोत्सव महासमिति, दिगम्बर जैन राष्ट्रीय समिति एवं अनेक राज्य स्तरीय समितियों ने भगवान महावीर के इस जन्मकल्याणक वर्ष के कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया।

एतासु भगवतो महावीरस्य 2600 जन्म महोत्सवस्य दिगम्बरजैन राष्ट्रीय समितेः प्रथममधिवेशनं पूज्यमातुर्मंगलसान्निध्ये श्रीमत्याः इन्दुजैनस्याध्यक्षतायां च 7 अक्तूबर दिने राजाबाजारकनॉटप्लेस दिल्लीनगर्यां सफलतापूर्वकं संपन्नमभवत्। सम्पूर्णात् देशात् आगताः कार्यकर्तारः स्वकीयक्षेत्रेषु सम्पादितानां महोत्सववर्षसम्बन्धिनां कार्यक्रमाणां विवरण प्रस्तुतं कुर्वन्तः भविष्याय मातुर्दिशा निर्देशान् प्राप्नुवन्। पूज्यमाताश्रीः अस्मिन्नवसरेऽकथयत् यत् जैन समाजः केवलं शासकीयानुदाने निर्भरो न भूत्वा स्वकार्याणां माध्यमेन वर्षमेतत् सार्थकं कुर्यात्। भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरूपेण कुण्डलपुरं स्मारकस्य च रूपेण वैशालीं विकसितां कर्तुं प्रेरणया सहैव दिल्लीनगर्यामेकं राष्ट्रीयसूचनाकेन्द्रं, कीर्तिस्तम्भान्, भगवतः महावीरस्य द्वाराणि जन्मकल्याणकसम्बन्धिवस्त्रप्रदर्शनानां संलग्नस्य प्रेरणाः अदात्।

श्रीमती इन्दुः जैना (चेयरमैन–टाइम्सग्रुप) युवकान् महिलाश्च अग्रे आगन्तुं प्रोत्साहनं प्रदानं कुर्वन्ती भगवतो महावीरस्य केन्द्रेण युवासंघटनस्य निर्माणस्याप्याह्वानमकरोत्। लखनऊ नगरात् श्री कैलाशचन्द्रो जैनः सर्राफः, इन्दौरनगरात् डॉक्टर अनुपम जैनः, दिल्लीनगर्या साहू रमेशचन्द्रो जैनः अन्यमहानुभावाश्च अपि सभां सम्बोधितामकुर्वन्। अधिवेशने डॉ. हुकुमचन्द्रो भारिल्लो जयपुरः, श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई सहिताः अनेकविद्वांसः गण्यमान्यकार्यकर्तारश्चापि समागच्छन्।

इनमें से भगवान महावीर 2600वाँ जन्म महोत्सव दिगम्बर जैन राष्ट्रीय समिति का प्रथम अधिवेशन पूज्य माताजी के मंगल सानिध्य में एवं श्रीमती इन्दू जैन (चेयरमैन-टाइम्स ग्रुप) की अध्यक्षता में 7 अक्टूबर को राजा बाजार, कनॉट प्लेस (दिल्ली) में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। देशभर से पधारे कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में किए गए महोत्सव वर्ष संबंधी कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत करते हुए भविष्य के लिए पूज्य माताजी से दिशा निर्देशों को प्राप्त किया। पूज्य माताजी ने इस अवसर पर कहा कि जैन समाज को मात्र सरकारी अनुदान पर आश्रित न होकर अपने कार्यों के माध्यम से इस वर्ष को सार्थक करना है। भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में कुण्डलपुर एवं स्मारक के रूप में वैशाली को विकसित करने की प्रेरणा के साथ-साथ दिल्ली में एक राष्ट्रीय जैन सूचना केन्द्र, कीर्तिस्तम्भों एवं भगवान महावीर द्वारों तथा जन्मकल्याणक संबंधी होर्डिंग लगाने की प्रेरणा भी पूज्य माताजी ने समाज को प्रदान की।

श्रीमती इन्दू जैन ने युवा पुरुष एवं महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करते हुए भगवान महावीर केन्द्र द्वारा युवा संगठन के निर्माण का आह्वान किया। लखनऊ (उ.प्र.) से श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ, इंदौर (म.प्र.) से डॉ. अनुपम जैन, दिल्ली से साहू श्री रमेशचंद जैन एवं अन्य महानुभावों ने भी सभा को सम्बोधित किया। अधिवेशन में डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल-जयपुर, श्री बसंत भाई दोशी-मुम्बई सहित अनेक विद्वान एवं गणमान्य कार्यकर्ता भी पधारे।

2600 मंत्रैः सह 2600 रत्नानि समर्पितानि 2600 मण्डलेषु–**यतो हि भगवतो महावीरस्य 2600 तमं जन्ममहोत्सववर्षं वर्तमान सहस्राब्द्याः एकं स्वर्णिमोपहारमानयत् इमं चोपहारं प्रत्येक जनो विविधानां कार्यकलापानां माध्यमेन विभक्तं कर्तुमैच्छत्, सहैव भगवन्तं महावीरं प्रति स्व श्रद्धायाः भक्तेर्विनयस्य च पुष्पाणि समर्प्य तानि च क्षणानि चिरस्थायीनि कर्तुं भावनामकरोत्, यतोऽयमवसरो जीवने पुनः प्राप्यमाणो नासीत्। यत्र स्वयं भारतशासनं तस्याहिंसावतारस्य भगवतो महावीरस्यैतत् 2600 तमं जन्ममहोत्सवं राष्ट्रीय स्तरेण** ''अहिंसावर्षस्य'' **रूपेण विविधकार्यकलापानां माध्यमेनायोजयित्वा तस्य महामानवस्य पवित्रे चरणयुगले स्व विनय पुष्पाञ्जलिं समर्पयितुमुद्यतः आसीत्। तत्र सम्पूर्णस्य जैनसमाजस्य गौरवाः साधुसाध्व्यः शीर्षस्थनेतारः श्रावकाश्चापि विविधधार्मिकशैक्षणिक सांस्कृतिक निर्माणकार्यैश्च स्व श्रद्धापुष्पाणि तस्मै समर्पयामासुः। यतो हि भारतीया संस्कृतिः युगानुयुगपर्यन्तं स्व श्रद्धा भक्तेश्च कारणैर्विश्वस्य मानसपटले स्मृती विस्तीर्णां कर्तुं स्थितं विद्यते। अतः पाश्चात्यसंस्कृतेः समावेशेऽपि अद्यापि देवशास्त्रगुरून् प्रति अचला श्रद्धा दृष्टिगता भवति।**

तीर्थंकरस्य महावीरस्य आराधनाकार्यक्रमे पूज्याश्रीज्ञानमती माता विविधानां कार्यकलापानां अन्तर्गतं तस्य 2600 गुणानां स्मरणं कुर्वन्ती 2600 मंत्रैः समन्वितं ''विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य'' **रचनां कृत्वा स्वयं तीर्थंकर महावीर प्रति स्व श्रद्धासुमनानि समर्पितानि अकरोत् तत्रैव तया नूतन रचनया सम्पूर्णो देशवासिनो भगवतो महावीरस्य**

➢छब्बिस सौ मंत्रों के साथ छब्बिस सौ रतन चढ़ाए गए 26 मंडलों पर–

चूँकि भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष वर्तमान सहस्राब्दि के लिए एक स्वर्णिम उपहार लाया और इस उपहार को प्रत्येक जनमानस विविध कार्यकलापों के माध्यम से विभक्त करना चाहता था, साथ ही भगवान महावीर के प्रति अपने श्रद्धा, भक्ति और विनय के पुष्प समर्पित कर उन क्षणों को चिरस्थाई करने की भावना थी क्योंकि यह अवसर पुनः जीवन में प्राप्त नहीं होने वाला था। जहाँ स्वयं भारत सरकार उन अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के इस 2600वें जन्मोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर **'अहिंसा वर्ष'** के रूप में अनेकों कार्यक्रमों के माध्यम से मनाकर उन महामानव के पावन चरणयुगल में अपनी पुष्पांजलि समर्पित कर रहा था, वहीं सम्पूर्ण जैन समाज के गौरव साधु-साध्वी, शीर्षस्थ नेता एवं श्रावक भी अनेक धार्मिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं निर्माण कार्यों के द्वारा अपने श्रद्धा पुष्प उन्हें समर्पित कर रहे थे। चूँकि भारतीय संस्कृति युगों-युगों से अपनी श्रद्धा-भक्ति के कारण विश्व के मानसपटल पर अपनी आभा को विस्तारित किए हुए है अतः पाश्चात्य संस्कृति का समावेश होते हुए भी आज तक देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा दृष्टिगत होती है।

तीर्थंकर महावीर की आराधना के इस क्रम में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेकानेक कार्यकलापों के अन्तर्गत उनके 2600 गुणों का स्मरण करते हुए 2600 मंत्रों से समन्वित **''विश्वशांति महावीर विधान''** की रचना करके जहाँ तीर्थंकर भगवान के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए, वहीं उस नूतन रचना से सम्पूर्ण देशवासियों को भगवान महावीर की सर्वोदयी गरिमा का भी

सर्वोदयिनः गरिम्णोऽपि परिचयं प्राप्नुवन्। दिल्ली निवासिनां अत्याग्रहवशात् मई–जून मासयोर्भीषण ग्रीष्मे विहारं कृत्वा जनसाधारणे भगवतो महावीरस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवं अनुगुंजित करणार्थं यदा माता विहारं कृत्वा दिल्लीं प्राविशत्, तु दिल्ली वासिसु पुनः एकदा आशाजागृताभवत्। तत्र समागत्य माताश्रीः कार्यकर्तृणां सभां विधाय ''विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य'' **वृहदायोजनस्य रूपरेखां जनतासमक्षं प्रस्तुतामकरोत्। जनजनस्य प्रशंसां प्राप्य इयं योजना गतिशीलाभवत्। एतस्य मध्ये एव दिल्लीनगर्याः प्रमुखजनानां आग्रहोऽस्मिन् प्रबलोऽभवत् यत् संघस्य प्रवासः दिल्लीनगर्यां कस्मिन्चिद् केन्द्रीयस्थाने भवेत्, यत्र स्थित्वा सरलतया एतस्य आयोजनस्य पूर्ण गतिविधयः संचालिताः भवितु स्युः। फलस्वरूपं अशोकविहारे चतुर्मासं संस्थाप्य पूज्या माताश्री श्रीअग्रवालदिगम्बरजैनमन्दिरे राजाबाजार–कनॉटप्लेसस्थाने ससंघं प्रवासमकरोत्।**

भगवतो भक्त्या विश्वशान्तिः संभाव्यते–**यतो हि अस्य राष्ट्रीययोजनहेतवे आयोजनस्थलस्य चयनस्य महत्वपूर्णा भूमिकाऽऽसीत्, अतएवानेकस्थानानां निरीक्षणस्य पश्चात् दिल्लीगेटस्थाने स्थितस्य फिरोजशाहकोटलाप्रांगणस्य चयनमभवत्, यस्मिन्** ''भगवतो महावीरमण्डपस्य'' **रूपेण भव्ये पाण्डाले 26 मण्डलानि विधाय आयोजनस्यास्य प्रारम्भीकरणमभवत्। अस्य मध्ये अमेरिका देशे 11 सितम्बर 2001 दिने विश्वव्यापारकेन्द्रे भूतस्य आतंकवादिनां आक्रमणस्य पश्चात् विश्वयुद्धसदृशं भयावहं वातावरणमजायताः, अस्यां विकटपरिस्थित्यां कदाचित्**

परिचय प्राप्त हुआ। दिल्लीवासियों के अतीव आग्रह पर मई-जून की भीषण गर्मी में विहार कर जनसाधारण में भगवान महावीर के जन्मकल्याणक महोत्सव को अनुगुंजित करने हेतु जब माताजी ने विहार कर दिल्ली में पदार्पण किया, तो दिल्लीवासियों में एक बार पुनः आशा जगी। वहाँ पहुँचकर माताजी ने कार्यकर्ताओं की मीटिंग करके **''विश्वशांति महावीर विधान''** के वृहत् आयोजन की रूपरेखा जनता के समक्ष रखी, जन-जन की सराहना को प्राप्तकर यह योजना गतिशील होने लगी। इसी मध्य दिल्ली के प्रमुख लोगों का आग्रह अत्यधिक प्रबल होने लगा कि संघ का प्रवास दिल्ली में ऐसे केन्द्रीय स्थल पर हो, जहाँ रहकर सरलता से इतने बड़े आयोजन की गतिविधियाँ संचालित की जा सकें, फलस्वरूप अशोक विहार में चातुर्मास स्थापित कर पूज्य माताजी ने श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर, राजाबाजार-कनॉट प्लेस में अपना ससंघ प्रवास रखा।

➢भगवान की भक्ति से विश्वशांति संभव है–

चूँकि इस राष्ट्रीय आयोजन हेतु आयोजन स्थल के चयन की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, अतएव अनेक स्थानों का निरीक्षण करने के पश्चात् दिल्ली गेट स्थित फिरोजशाह कोटला मैदान का चयन हुआ, जिसमें **''भगवान महावीर मण्डप''** के रूप में भव्य पाण्डाल के अन्दर 26 मण्डलों को बनाकर इस आयोजन का प्रारंभीकरण किया गया। इस मध्य अमेरिका में 11 सितम्बर 2001 को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकवादी हमले के बाद विश्वयुद्ध जैसा भयावह वातावरण निर्मित हो गया था, ऐसी

विधानं स्थगित कर्तुं वार्ताप्यागच्छत् किन्तु माताश्रीः दृढतापूर्वकं सर्वेभ्यः आदेशमदात् यदिदं भक्तेरायोजनमस्ति, नैतद् निवारयन्तु, भगवतश्च कृपया तै मन्त्रैः सम्पूर्णविश्वे शान्तिः स्थापिता भविष्यति। श्री एस.के. जैनेनातिरिक्तपुलिसायुक्तेन दत्त समस्तं सुरक्षाव्यवस्थायाः आश्वासनमपि कार्यक्रमस्य पूर्णतायां सर्वेभ्यः विशेषं सम्बलमभवत्।

विश्वशान्तिमहावीरविधानस्योद्घाटनम्–**वास्तवे एषामायोजनानामन्तः कोटीनां संख्यानां स्थितानां मन्त्राणां शान्तेः परमाणवः सम्पूर्णे विश्वे व्याप्ताः भूत्वा शान्तेः स्थापनां कुर्वन्ति। पूज्य मातुरलौकिककार्याणां गणनां स्थूलशब्दैः कर्तुं न समर्थाः स्मः, तया कृता अनुपमाः कृतयः विश्वासं प्राप्ताः बहुमूल्य उपहाराः इव विद्यन्ते तदैव तु महोत्सवे आगता मुख्यातिथिः साहू इन्दुरकथयत् यत् विश्वशान्तेः प्रेरणा विन्दवः अस्मभ्यं जैनधर्मेणैव प्राप्ताः सन्ति। इदं कथं प्राप्नुयात्? मातुः सदृश साधुसाध्वीनां कृपयैव संभवन्ति। श्री धनञ्जयस्तु अत्यन्तप्रसन्नतयाकथयत् यत् पूज्यमातु प्रेरणया वर्तमाने येऽपि कार्यक्रमाः सम्पन्नास्तेषु सर्वेषु भागं गृहीत्वा अहं पुण्यस्य प्राप्तकर्तास्मि। अद्य विश्वे मानसिकवेदनायाः वातावरणं विद्यते, सर्वे एव शान्तिमिच्छन्ति परन्तु वयं वास्तविकशान्तये स्वस्मिन् शान्तिं धारयामः। जैनधर्मः सदैव शान्तेः सन्देशं ददाति। पूज्यामाताश्रीः सदैव समसामयिकानि कार्याणि करोति, अनेन विश्वशान्ति विधानेन विश्वे निश्चितमेव शान्तिर्भविष्यति, ममायं विश्वासः।**

विषम परिस्थिति में कभी-कभी विधान का आयोजन स्थगित करने की बात भी आई किन्तु पूज्य माताजी ने दृढ़तापूर्वक सभी को आदेश दिया कि यह भक्ति का आयोजन है, इसे टालो मत और भगवान की कृपा से उन मंत्रों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित होगी। श्री एस.के. जैन-अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, दिल्ली द्वारा दिया गया समस्त सुरक्षा व्यवस्था का आश्वासन भी कार्यक्रम की पूर्णता में सभी के लिए विशेष सम्बल रहा।

➢**विश्वशांति महावीर विधान आयोजन का उद्घाटन–**

वास्तव में ऐसे आयोजनों के अन्दर करोड़ों की संख्या में होने वाले मंत्र के शांत परमाणु सम्पूर्ण विश्व में फैलकर शांति की स्थापना करते हैं। पूज्य माताजी के अलौकिक कार्यों की गणना हम शब्दों में नहीं कर सकते, उनके द्वारा प्रदत्त अनुपम कृतियाँ विश्व को मिली अमूल्य सौगात के रूप में हैं तभी तो महोत्सव में पधारीं मुख्य अतिथि साहू इन्दू जी ने कहा कि विश्व शांति की शुरूआत के प्रेरणाबिंदु हमें जैनधर्म के द्वारा ही प्राप्त होते रहे हैं और यह कैसे प्राप्त हों, यह माताजी जैसे सन्तों एवं साध्वियों की कृपा द्वारा ही संभव है। श्री धनंजय जी ने तो अत्यन्त प्रसन्न होते हुए कहा कि पूज्य माताजी की प्रेरणा से वर्तमान में जो भी कार्यक्रम हुए, सभी में मुझे भाग लेकर पुण्य प्राप्ति का अवसर मिला। आज दुनिया में तनाव का माहौल है, सब शांति चाहते हैं, पर हमें वास्तविक शांति के लिए स्वयं में शान्ति लानी होगी। जैनधर्म सदैव शांति का संदेश देता रहा है। पूज्य माताजी सदैव समसामयिक कार्य करती हैं, इस विश्वशांति विधान से विश्व में निश्चित ही शांति होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

पूज्या माता अस्मिन् उद्घाटनसत्रे सर्वेभ्यः स्व शुभाशीर्वादं प्रदायोद्घोषमकरोत्–द्विविधानि कार्याणि भवन्ति, प्रथमं तु स्थायीनि द्वितीयमस्थायीनि। यद्यप्येतानि मण्डल–विधानानि अस्थायीनि दृश्यन्ते, परन्त्वेतानि अस्माकमात्मने स्थायिपदं प्राप्तये महत योगदानं कुर्वन्ति। यथा–भोजनवस्त्राादीनि अस्थायीनि सन्ति, भवनं च स्थायि अस्ति, परन्तु भोजनादिकं विना वयं जीवितुं न शक्ष्यामः, तथैवात्मनः शुद्धिकारकाणि, स्थायिरूपप्रदानकारकाणि परमात्मपद प्रदाने सहायकाः सन्ति एतः विधान पूजनादिकाः कार्यक्रमाः विद्यन्ते, कर्तुं प्रेरणामाचार्याः ग्रन्थेषु प्रदानमकुर्वन्।

अद्य समये केषांचिज्जनानां दृष्ट्यां विद्यालय–चिकित्सालयादीनि स्थायीनि कार्याणि सन्ति, परन्तु मम कथनं तु इदमस्ति यत् यां विश्वशान्तिं वयमपेक्षामहे, सा विद्यालय–महाविद्यालय–चिकित्सालयादिषु नैव सुलभा, सा शान्तिस्तु अस्मभ्यं भगवतां भक्त्यैव प्राप्ता भविष्यति यतः एतेभ्यः निःसरन्त्यः रश्मयः एव सम्पूर्णे विश्वे शान्तिं करिष्यन्ति। आत्मनः शान्तये–शुद्धये–सिद्धये एतानि सर्वाणि स्थायीनि सन्ति। विश्वे शान्तये, पर्यावरण शुद्धये विश्वमित्रतायै च एतेषां योगदानममूल्यं वर्तते। भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मोत्सवस्य उद्घाटनस्य जातस्य कार्यक्रमस्य पश्चात् इदं प्रथमं राष्ट्रीयायोजनं जैनसमाजेन क्रियते, यस्मिन् विविधेभ्यः प्रान्तेभ्यः समागत्य जनाः अनुष्ठानं कुर्वन्ति। अनेन विश्वशान्ति–विधानेन सह अत्र मध्याह्ने प्रतिदिनं द्विघन्टापर्यन्तं निरन्तरं विश्वशांतिमंत्रस्य घोषो भविष्यति। सम्पूर्णे भारते विश्वशान्तये एषः मन्त्रसमूहः प्रेषितो भविष्यति। एतस्य केचित् लक्षाणि,

---

पूज्य माताजी ने इस उद्घाटन सत्र में सभी को अपना शुभाशीष प्रदान करते हुए उद्घोष किया–दो प्रकार के कार्य होते हैं एक स्थाई और दूसरे अस्थायी। यद्यपि यह मण्डल विधान अस्थायी दिखते हैं, पर यह हमारी आत्मा को स्थायी पद प्राप्त कराने हेतु बहुत बड़ा योगदान देते हैं। जैसे–भोजन, वस्त्र अस्थायी हैं, मकान स्थायी है परन्तु भोजन आदि के बिना हम नहीं रह सकते, उसी प्रकार आत्मा की शुद्धि करने वाले, स्थायी रूप देने वाले, परमात्मपद प्रदान करने वाले ये विधान-पूजन आदि कार्यक्रम हैं, जिन्हें करने की प्रेरणा आचार्यों ने ग्रंथों में भी दी है।

आजकल कुछ लोगों की दृष्टि में स्कूल, हॉस्पिटल आदि स्थाई कार्य हैं परन्तु मेरा कहना यह है कि जिस विश्वशांति की अपेक्षा हमें है, वह स्कूल, कॉलेज व अस्पतालों से नहीं मिल सकती है। वह शांति हमें भगवन्तों की भक्ति से ही मिलेगी क्योंकि इससे निकलने वाली किरणें ही सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना करेंगी। आत्मा की शांति, शुद्धि, सिद्धि के लिए यह स्थायी है, विश्व में शांति, पर्यावरण शुद्धि, विश्व मैत्री हेतु इसका अमूल्य योगदान है। भगवान महावीर के 2600वें जन्मोत्सव के उद्घाटन पर हुए कार्यक्रम के पश्चात् यह पहला राष्ट्रीय आयोजन जैन समाज द्वारा हो रहा है, जिसमें विभिन्न प्रान्तों से पधारकर लोग अनुष्ठान कर रहे हैं। इस विश्वशांति विधान के साथ यहाँ मध्यान्ह में प्रतिदिन 2 घण्टे तक बराबर विश्वशांति मंत्र का घोष चलेगा। सारे भारत में विश्वशांति हेतु यह मंत्र पहुँचाया जाएगा। इसकी कोई सवा लाख, कोई

केचित् 25 लक्षाणि तु केचित् 25 कोटीनि जाप्यानि कर्तुं व्यस्ताः सन्ति। अस्माकं भवतां च मुखोद्भूताः पंक्तयः भगवतो महावीरस्य समीपं सिद्धशिलां प्राप्य निवृत्य च भवतां मनोरथान् साधयिष्यन्ति।

राजानं सिद्धार्थं महाराज्ञीं त्रिशलां च भवितुं सौभाग्यं कौ प्राप्नुताम्?–**विश्वशान्तिमहावीर–विधानस्य 26 मण्डलेषु प्रथममण्डले राज्ञः सिद्धार्थस्य महाराज्ञ्याः त्रिशलायाश्च रूपेण श्रेष्ठी श्रीकमलचन्द्रः, खारीबावली–दिल्ली तस्य धर्मपत्नी च श्रीमती मैनासुन्दरी जैना पूजनस्य सौभाग्यं प्राप्नुताम्।**

प्रतिमण्डले समर्पितानि 2600 रत्नानि दृष्टुं महान् सम्मर्दः एकत्रितोऽभूत्–**अस्य विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य मुख्यानि आकर्षणानि आसन् प्रति मण्डलं समर्पणानि 2600 रत्नानि, यद्यपि प्रत्येकविधानानां स्व महत्वं भवति, परन्तु विधानमिदं रत्नैः पूजायाः कारणेन समस्तमण्डलविधानानां शिरोमुकुटमभवत्। शास्त्रपुराणेषु वर्णनं प्राप्यते यत् प्रथमं जनाः स्वर्णमुद्राणां समर्पणं कृत्वा, गजमुक्तान् समर्प्य भगवतोऽर्चामकुर्वन् परन्तु युगेऽस्मिन् कलौ भगवन्तं पूजयितुमयं प्रथमः अवसरः आसीत्, यं दृष्टुं भारतस्य प्रतिकोणेभ्यो जनाः समागच्छन् पूज्यमातरं च प्रशंसां कर्तुं श्रान्ताः न आसन्।**

मंत्रितरत्नानि गृहीतुं प्रतिस्पर्धा आसीत्–**भक्तास्यत्र मण्डले रत्नानि समर्प्य स्वभाक्तिं प्रदर्शयामासुः, तत्रैवास्मिन् विश्वशान्तिविधाने प्रस्तुयमानासु नवपूजासु नवजाप्यान्यभवन्,**

---

25 लाख तो कोई 25 करोड़ जाप्य कर रहे हैं। हमारे और आपके मुख से निकलने वाली पंक्तियाँ भगवान महावीर के पास सिद्धशिला तक पहुँचकर वापस आकर आपके मनोरथों को पूर्ण कर देंगी।

➢राजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला बनने का गौरव किसने प्राप्त किया–

विश्वशांति महावीर विधान के 26 मण्डलों में से प्रथम मण्डल में राजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला के रूप में श्रेष्ठी श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मैना सुन्दरी जैन ने पूजन करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

➢प्रत्येक मण्डल पर चढ़े 2600 रत्नों को देखने हेतु भीड़ उमड़ पड़ी–

इस विश्वशांति महावीर विधान का मुख्य आकर्षण थे प्रत्येक मण्डल पर चढ़ने वाले 2600-2600 रत्न, यूँ तो प्रत्येक विधानों का अपना महत्व होता है पर यह विधान रत्नों द्वारा पूजा के कारण समस्त मण्डल विधानों का शिरमौर बन गया। शास्त्र पुराणों में वर्णन मिलता है कि पहले लोग स्वर्ण दीनार चढ़ाकर, गजमोती चढ़ाकर भगवान की अर्चा करते थे, पर इस कलियुग में रत्नों द्वारा भगवान की पूजा करने का यह पहला पाठ था, जिसे देखने के लिए भारत के कोने-कोने से लोग आ रहे थे और पूज्य माताजी की प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

➢मंत्रित रत्नों को लेने की होड़ लग गई–

भक्तों ने जहाँ मण्डल पर रत्न चढ़ाकर अपनी भक्ति प्रदर्शित की, वहीं इस विश्वशांति विधान में होने वाली 9 पूजाओं में 9 जाप्य हुईं, जिनके 108 मंत्रों से उन रत्नों को मंत्रित कर कोई एक

एषां शताष्ट मंत्रैः तानि रत्नानि मंत्रितानि कृत्वा कोऽप्येकः धनकुबेर महानुभावोः तानि जनेभ्य व्यतरत्।

प्रत्येक मण्डलेभ्यः शताष्ट–शताष्ट रत्नानि एकस्मिन् कलशे एकत्रितानि विधाय प्रतिदिनं तानि प्रायः त्रीणि सहस्राणि रत्नानि वितीर्णान्यभवन्, तु तानि अमूल्यानि रत्नानि गृहीतुं प्रतियोगितेवाभवत्। प्रत्येको जनः स्वयं रत्नानि ग्रहणेन सह स्व मित्राण्यपि रत्नानि गृहीतुमाह्वयत्।

दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य कर्मठता विस्मर्तुं न शक्यते–**इदं सम्पूर्णायोजनं दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य कर्मठकार्यकर्तुभिरायोजितमासीत्, यस्य प्रत्यक्ष–मुदाहरणमिदमेवासीत् यत् आगतः कोऽपि बन्धुः पूजको वा कस्या अपि कष्टस्य साम्मुख्यं नाकरोत्। सर्वे प्रशंसां कर्तुमेव दृष्टाः। अस्मात् पूर्वमपि पूज्यायाः मातुः सत्प्रेरणया आयोजिते प्रत्येकस्मिन् राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीयकार्यक्रमे कार्यतत्परतां दृष्ट्वा विस्मयो भवति। यदीयं संस्था वर्तमानस्य सर्वासु संस्थासु सर्वतोमुखी जाग्रता कर्मणा च संस्था कथ्यते तु नात्र काप्यतिशयोक्तिः।**

पं. शिवचरणलालो जैनः मैनपुरी निवासी ''गणिन्या ज्ञानमत्याः पुरस्कारेण'' सम्मानितः–**25 अक्तूबर 2001 दिने सायंकालीनायां सभायां जैनसाहित्ये महत्वपूर्णं योगदानं प्रदात्रे सुप्रसिद्धाय जैनविदुषे पं. श्री शिवचरणलालाय मैनपुरी निवासिने श्री अनिलकुमार–अतिशयकुमारयोः (कमलमंदिर, प्रीतविहार, दिल्ली) सौजन्येन श्रीदिगम्बरजैनत्रिलोक–**

धनकुबेर महानुभाव उसे श्रद्धालुओं में वितरित करते थे।

प्रत्येक मण्डल से 108-108 रत्नों को एक कलश में एकत्रित कर प्रतिदिन जब उन लगभग 3 हजार रत्नों को वितरित किया जाता, तो उन अमूल्य रत्नों को लेने की एक होड़ सी लग जाती। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं रत्न लेने के साथ-साथ अपने इष्ट मित्रों को रत्न लेने हेतु बुलाकर लाता था।

➢दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की कर्मठता को भुलाया नहीं जा सकता–

यह सम्पूर्ण आयोजन दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित किया गया था, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण यही था कि आगत किसी भी दर्शनार्थी बंधु या पूजक को किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा अपितु सभी प्रशंसा करते ही देखे गए। इससे पूर्व भी पूज्य माताजी की सद्प्रेरणा से आयोजित प्रत्येक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में उनकी कर्मठता देखी जा चुकी है। अगर इस संस्था को वर्तमान की सभी संस्थाओं में सर्वतोमुखी, जागरूक व कर्मठ संस्था कहा जाए तो शायद कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

➢पं. शिवचरणलाल जैन-मैनपुरी का ''गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार'' से सम्मान–

25 अक्टूबर 2001 को सायंकालीन सभा में जैन साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने हेतु सुप्रसिद्ध जैन विद्वान् पं. श्री शिवचरणलाल जैन-मैनपुरी को श्री अनिल कुमार अतिशय कुमार जैन (कमल मंदिर), प्रीतविहार के सौजन्य से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-जम्बूद्वीप-

शोधसंस्थानस्य पदाधिकारिभिः शालपुष्पहारादिभिः सह एकलक्षरुप्यकाणां नगदराशिप्रशस्ति–पत्राभ्यां सह ''गणिनी ज्ञानमती पुरस्कारः'' प्रदत्तः। अस्मिन्नवसरे पुरस्कारप्रदाता श्री अनिल–कुमारोजैनः मातुरनन्तोपकारान् स्मरन् अकथयत् यत् इमं पुरस्कारमहमार्थिकदृष्ट्या महान्तं न मन्ये परन्तु अस्य विशेषता तु गणिन्यां ज्ञानमत्याः पुरस्कारस्य नाम्ना अस्ति, या अस्मै युगाय चलन्ती परिभाषाकोशरूपेण विद्यते। संस्थानस्य अध्यक्षः ब्र. श्री रवीन्द्रो जैनः पण्डित महोदयस्य विद्वत्तां प्रतिपादयन् तस्य चिरंजीवनस्य मंगलभविष्यस्य कामनामकरोत् समस्तेभ्यश्च विद्वद्भ्यः आभारं प्रकटयामास।

पूज्यमाताश्रीः 26 अक्तूबर दिने प्रातःकालीनसभायां पुरस्कृताय विदुषे पं. श्री शिवचरणलालाय शुभाशीर्वादं प्रदाय तं प्राचीनार्षपरम्परां च प्रति दृढं भवितुं प्रेरणामदात्। पं. शिवचरणलाल जैनः (मैनपुरी) स्व वक्तव्ये 1978 वर्षस्य प्रशिक्षणशिविरं स्वज्ञानस्य मूलंकथयन् अकथयत् यत् हस्तिनापुरे आयोजितस्य तस्य शिविरस्य मध्ये जैनसमाजस्य मूर्धन्यः विद्वांसः पं. मक्खनलाल शास्त्री–मुरैना, पं. मोतीचन्द्र कोठारी फलटणः, पं. लालबहादुर शास्त्री दिल्ली, पं. बाबूलाल जमादारेण सहिताः 80 विद्वांस मातुः मुखारविन्देन ''प्रवचन–निर्देशिकायाः'' **प्रशिक्षणं प्राप्य धन्यतामन्वभवन्। अहमपि तस्यैव शिविरस्य विद्यार्थी आसम् अद्य च तामेव प्रवचननिर्देशिकाग्रन्थं स्व पुरतः नियायाहं प्रवचनं करोमि। पण्डितमहोदयः संस्थानं अनिलं प्रति चाभारं व्यक्तीकुर्वन् श्रेष्ठिना विदुषां च सामंजस्यं स्थापयितुं आश्वासनमदात्।**

हस्तिनापुर के पदाधिकारियों द्वारा शाल, पुष्पहार आदि के साथ एक लाख रुपये की नगद राशि एवं प्रशस्ति पत्र के साथ "गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार" प्रदान किया गया। इस अवसर पर पुरस्कार प्रदाता श्री अनिल जैन ने माताजी के अनंत उपकारों का स्मरण करते हुए कहा कि यह पुरस्कार आर्थिक दृष्टि से मैं महान नहीं मानता वरन् इसकी विशेषता तो गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के नाम से है, जो इस युग के लिए मोबाइल एन्साइक्लोपीडिया हैं। संस्थान के अध्यक्ष ब्र.रवीन्द्र जी ने पंडित जी की विद्वत्ता बताते हुए उनके चिरंजीवी भविष्य की मंगल कामना की तथा समस्त विद्वानों के प्रति आभार व्यक्त किया।

पूज्य माताजी ने 26 अक्टूबर को प्रातःकालीन सभा में पुरस्कृत विद्वान श्री शिवचरणलाल जी के लिए शुभाशीर्वचन बोलते हुए उन्हें प्राचीन आगम एवं आर्षपरम्परा के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा प्रदान की। पण्डित श्री शिवचरणलाल जैन-मैनपुरी ने अपने वक्तव्य में सन् 1978 के प्रशिक्षण शिविर को अपने ज्ञान की नींव बताते हुए कहा कि हस्तिनापुर में आयोजित उस शिविर के अन्दर जैन समाज के मूर्धन्य विद्वान पं. मक्खनलाल जी शास्त्री-मुरैना, पं. मोतीचंद कोठारी-फलटण, पं. लालबहादुर शास्त्री-दिल्ली, पं. बाबूलाल जमादार सहित 80 विद्वानों ने माताजी के मुखारविन्द से "प्रवचन निर्देशिका" का प्रशिक्षण प्राप्त करके धन्यता का अनुभव किया था। मैं भी उसी शिविर का विद्यार्थी था और आज उसी प्रवचन निर्देशिका ग्रंथ को अपने सामने रखकर मैं प्रवचन करता हूँ। पण्डित जी ने संस्थान एवं अनिल जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्रेष्ठियों के साथ विद्वानों का सामंजस्य बनाने का आश्वासन दिया।

राष्ट्रीयश्रावकसम्मेलनम्–**27 अक्तूबर दिने प्रातः नववादनसमये विधानप्रमुखस्य राज्ञः सिद्धार्थस्य श्रीकमलचन्द जैन–खारीबावली, दिल्लीस्थस्याध्यक्षतायामायोजिते श्रावकसम्मेलने मुख्यातिथिः श्री शान्तिदेसाई महापौरः दिल्ली, आसीत्। विशिष्टाः अतिथयः साहूरमेशचन्द्रो जैनः, श्री जे.के. जैन आदयः आसन्। संघस्थः क्षुल्लकमोतीसागरः सभायाः मंगलाचरणमकरोत् पुनः अहं सम्मेलनस्यावश्यकतायामुपयोगिताया महत्त्वे प्रासंगिकतायां च प्रकाशं पातयन्ती उपस्थिताय जनसमूहाय इमामेव प्रेरणामदाम्, यत् यस्मिन् परिवारे कोऽपि प्रमुखो न भवति, सः परिवारो नश्यति यस्मिन् च देशे–समाजे च कोऽपि नायको नास्ति तौ देश समाजौ नश्यतः अतएवाद्य नायकस्यावश्यकता वर्तते। अद्य अस्मात् मंचान् महिलासंघटनं, विदुषां महासंघं, शास्त्रिपरिषदं, युवापरिषदं, महासमिति, महासभा, परिषदादि सर्वान् प्रति मम इदमेव कथनमस्ति यत् श्रावकैः सह साधवोऽपि स्युः, तदैव प्रगतिर्भविष्यति। वयं मुख्यरूपेण भगवतो महावीरस्य सिद्धान्तेषु अहिंसायाः प्रचारं, भ्रूणहत्यायाः निषेधं, मांसनिर्यातस्य विरोधं, दहेजप्रथायाः बहिष्कारं कृत्वा सदाचारस्य सम्मानं कुर्याम, एवं कृते सत्येव प्रतिभाः अग्रसराः भविष्यन्ति, येन वयं धर्मपरम्पराः अष्टादश सहस्रवर्षपर्यन्तं अक्षुण्णां सुरक्षितुं समर्थाः स्याम। ब्र. श्री रवीन्द्रः महोदयः अस्मात् मंचात् अकथयत् यत् मांगीतुंगीक्षेत्रस्या–खण्डशिलायां शताष्ट फुट उन्नतायाः प्रतिमायाः निर्माणं प्रगतिशीलं विद्यते। एतस्यै संस्थायै यदपि कार्यं समर्पितं भविष्यति, सदैव करिष्यति। अद्यावसरे माननीयः महापौरः, श्री सतीश निगम पार्षदः, साहू रमेशचन्द्रादयोऽपि सभामवबोधयन्।**

➢**राष्ट्रीय श्रावक सम्मेलन–**

27 अक्टूबर प्रातः 9 बजे विधान प्रमुख राजा सिद्धार्थ श्री कमलचंद जैन, खारीबावली-दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित श्रावक सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री शांति देसाई-महापौर (दिल्ली) विशिष्ट अतिथि-साहू रमेशचंद जैन एवं श्री जे. के. जैन आदि रहे। संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी ने सभा का मंगलाचरण किया पुनः मैंने इस सम्मेलन की आवश्यकता, उपयोगिता, महत्त्व एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जनसमूह को यही प्रेरणा दी कि जिस परिवार में कोई मुखिया नहीं होता है, वह परिवार नष्ट हो जाता है और जिस देश तथा समाज में कोई नायक न हो, वह देश तथा समाज नष्ट हो जाता है, अतएव हमें नायक की जरूरत है। आज के इस मंच से महिला संगठन, विद्वत् महासंघ, शास्त्री परिषद, युवा परिषद, महासमिति, महासभा, परिषद आदि से यही कहना है कि श्रावक के साथ साधुओं को भी रखें, तभी प्रगति होगी। हमें मुख्य रूप से भगवान महावीर के सिद्धान्तों में अहिंसा का प्रचार, भ्रूण हत्या का निषेध, मांस निर्यात का विरोध, दहेज प्रथा का विरोध कर सदाचार का सम्मान करना है, ऐसा करने पर वे प्रतिभाएँ आगे आएंगी, जिनसे हमें धर्म की परम्परा साढ़े 18 हजार वर्ष तक अक्षुण्ण रखनी है। ब्र. रवीन्द्र जी ने इस मंच से कहा कि मांगीतुंगी की अखण्ड शिला पर 108 फुट ऊँची प्रतिमा का निर्माण हो रहा है। इस संस्था को जो भी काम सौंपा जाएगा, सदैव करती रहेगी। आज के अवसर पर माननीय महापौर जी, सतीश जी-निगम पार्षद, साहू रमेश जी आदि ने भी सभा को सम्बोधित किया।

अस्मिन्नवसरे दिल्ली महिला आयोगस्य प्रमुखा श्रीमती अंजली राय अपि समागत्य मातुराशीर्वादं प्राप्नोत्। अस्मिन् राष्ट्रीय सम्मेलने सर्वसम्मत्या पारितैः प्रस्तावैः सह 2002 पर्यन्तं संचालयितुं जन्मकल्याणकस्य सम्बन्धिनां विविधकार्यक्रमाणां सम्पूर्णदेशे व्यापकस्तरेण प्रचार–प्रसार हेतवे ''भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य प्रचार समितिं'' घटितां कर्तुं घोषणाभवत्।

28 अक्तूबर मासे समापनसमारोहे–एको दृष्टिपातः–**28 अक्तूबर 2001 दिने प्रातः** ''विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य'' **समापनस्य समारोहस्य सभाभवत्, यस्यां मुख्यातिथिरूपेण प्रसिद्ध सांसदो, विधिवेत्ता न्यायविद् श्री एल.एम. सिंघवी, विशिष्टातिथिरूपेण श्री सलेकचंद कागजी, प्राध्यापक श्रीरतनचन्द्र जैनः, श्री एल.एल. आच्छादयः महोदयाः समागत्य पूज्य–मातुराशीर्वादं प्राप्नुवन्।**

सभायाः संचालनं कुर्वन् संघस्थः पीठाधीशः क्षुल्लक श्री मोतीसागरोऽकथयत् यत् महानुभावाः! ज्ञानमती माता एतैः कारणैर्महती नास्ति यत् सा महान्ति कार्याणि कारयति, प्रत्युत् अस्याः जीवनेन अस्माभिः सर्वप्रमुखां वार्तां एव शिक्षणीया वर्तते यत् वयं स्वजीवने सिद्धान्तान् चारित्रिकदृढ़तादिकं ख्याति–लाभ–पूजादीनां प्रवाहे पतितान् त्यजेयुः। अद्य महावीरशासनकाले अस्याः गणिन्याः मातु ज्ञानमत्याः जीवनं प्रत्येकजनाय विशेषतश्च साधु परम्परायै प्रेरकमस्ति। वर्तमाने समाजे ये इमां वार्तां कथयन्ति यत् भवती स्थायीनि आयोजनानि

इस अवसर पर दिल्ली महिला आयोग की चेयरमैन श्रीमती अंजली राय ने भी पधारकर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वसम्मति से पारित कतिपय प्रस्तावों के साथ 2002 तक चलने वाले जन्मकल्याणक संबंधी अनेकों कार्यक्रमों के देशभर में व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार हेतु ''भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव प्रचार समिति'' बनाने की घोषणा हुई।

➢28 अक्टूबर समापन समारोह-एक झलक–

28 अक्टूबर को प्रातः 9.30 बजे **''विश्वशांति महावीर विधान''** के समापन समारोह की सभा हुई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध सांसद, विधिवेत्ता एवं न्यायविद् श्री एल.एम. सिंघवी एवं विशिष्ट अतिथि श्री सलेकचंद कागजी, प्रो. श्री रतनचंद जैन एवं श्री एल.एल. आच्छा जी ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

सभा का संचालन करते हुए संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने कहा कि महानुभावों! ज्ञानमती माताजी इसलिए महान नहीं हैं कि वे बड़े-बड़े कार्य करवाती हैं प्रत्युत् इनके जीवन से हमें सबसे बड़ी बात यह सीखनी है कि हमें अपने सिद्धान्त, अपने जीवन में चारित्रिक दृढ़ता आदि को ख्याति, लाभ, पूजा के प्रभाव में बहकर छोड़ना नहीं है। आज महावीर के शासनकाल की गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए और खासतौर से साधु परम्परा के लिए एक आदर्श है। वर्तमान में जो समाज में यह बात कहते हैं कि आप स्थाई आयोजन रखिए,

रक्षतु, भवती निर्माणानि कुर्यात् ते भवन्तं जीवननिर्माणस्य दिशा दूरं नयन्ति। अद्य पूजा–भक्तिरेव माध्यमोऽस्ति पंचमकाले कर्मणां निर्जरायै, अस्मादतिरिक्तं भवद्भ्यः मोक्ष प्राप्तये कोऽपिः उपायो नास्ति।

माननीयः श्री सिंघवी अकथयत् यत् इदमेकस्य कार्यस्य समापनमस्ति, किन्त्वेकस्य अभियानस्य शुभारम्भोऽस्ति। अभियानेऽस्मिन् एका मर्यादा, एकस्याः भक्तेः स्वरः एकादृष्टिरेका सृष्टिश्च समागता तदर्थं च वयं मात्रे सहस्राणि लक्षाणि च धन्यवादान् दद्मः, तदप्यल्पमेव भविष्यति। गणिनीप्रमुखस्याः उपकारः सर्वेस्वप्यस्ति, यद्यपि सा स्वसम्पूर्णे जीवने स्वतपोभिः–साधनाभिः–शिक्षाभिः–सारस्वतोपकारैश्च अस्मानुपकृतानकरोत् किन्तु तस्याः दीर्घायां शृंखलायामेको महत् अवदानं युक्तमभवत्, तदस्ति ''विश्वशान्तिमहावीरविधानं'' **यत् 26 मण्डलविधानानां राष्ट्रीयायोजनरूपेणास्ति अर्थात् प्रत्येकमण्डलः शतवर्षाणां प्रतीकोऽस्ति, अनेन प्रकारेण 2600 वर्षाणां इदं भगवतों महावीरस्य विधानं एकस्योत्कृष्टस्योत्कर्षस्य क्षणमस्मभ्यं प्रस्तुतमकरोत्।**

भगवतो महावीरस्य 2600 तमेऽस्मिन् जन्मकल्याणकस्य मंचे एका छविः कुण्डलपुरस्य राजकुमारस्यास्ति द्वितीया च छविरस्ति तीर्थंकरस्य भगवतो महावीरस्य। अद्य वयम् एतयोः छव्योः अहिंसा–अनेकान्तस्य जीवनयात्रायां अपरिग्रहस्य च सिद्धान्तस्य उज्ज्वल छविं पश्याम्ः। अस्मभ्यमिदं क्षण 2600 वर्षाणां पश्चादेव प्राप्तम्, इदमस्मासु पूज्यमातुः ऋणमेवास्ति। इयं चैकप्रकारेण गंगोत्री यमुनोत्री च वर्तते, याः मंत्रैर्माध्यमैः इदं उपदेशं अस्मान् प्रति

आप निर्माण करिए, वह आपको जीवन निर्माण की दिशा से दूर ले जा रहे हैं। आज पूजा-भक्ति ही माध्यम है पंचमकाल में कर्म निर्जरा करने के लिए, इसके अलावा मोक्षप्राप्ति का कोई उपाय नहीं है।

और शायद यही कारण रहा कि इन सभी बातों पर दृष्टिपात करते हुए स्वयं माननीय सिंघवी जी ने कहा कि यह एक कार्य का समापन है किन्तु एक अभियान का शुभारंभ है। इस अभियान में एक मर्यादा, एक भक्ति का स्वर, एक दृष्टि और एक सृष्टि हुई है और उसके लिए हम माताजी को हजार-हजार, लाख-लाख धन्यवाद दें, तो भी थोड़ा होगा। गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का उपकार हम सब पर है, उन्होंने वैसे तो जीवन भर अपनी तपस्या, साधना, शिक्षा एवं सारस्वत उपक्रमों से हमें अनुगृहीत किया है किन्तु उस लम्बी श्रृंखला में आज एक बड़ा अवदान जुड़ गया है, वह है **'विश्वशांति महावीर विधान'** जो 26 मण्डल विधानों के राष्ट्रीय आयोजन के रूप में है यानि हर मण्डल सौ वर्ष का प्रतीक है, इस प्रकार 2600 वर्ष का यह भगवान महावीर का विधान एक उत्कृष्ट, उत्कर्ष का क्षण हम सबके लिए लाया है।

भगवान महावीर के इस 2600वें जन्मकल्याणक के मंच पर एक छवि कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर की है तथा दूसरी छवि है तीर्थंकर भगवान महावीर की। आज हम इन छवियों में अहिंसा, अनेकांत की जीवनयात्रा एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त की उज्ज्वल छवि देखते हैं। हमको यह क्षण 2600 वर्ष बाद मिला, यह हमारे ऊपर पूज्य माताजी का ऋण है। यह एक तरह की गंगोत्री

प्रेषितमकरोत्। ज्ञानमती माता चरैवेति–चरैवेति मंत्रमेतं चरितार्थमकरोत् अतएवाभियानमिदं प्रारम्भमभवत्। जैनमहासभायाः दिल्ली नगर्याः महासचिवः श्री रतनचन्द्रो जैनोऽकथयत् यत् ''अद्य यदि साध्वी श्रेष्ठायाः दीर्घतपस्विन्याः मातुः ज्ञानमत्याः मूल्यांकनं क्रियते, तु तस्याः घटनाया सन्दर्भे कर्तव्यं दद्मः यत् अद्य भारतस्य कोऽपि विद्वान् इदं कथयितुं दुस्साहसं न कर्तुं शक्नोति यत् जैनधर्मस्य स्थापना भगवता महावीरेण कृतस्ति। अद्य यदि इतिहासे विशंतिः एकविशंतिशताब्द्या अन्तरे यदि एकस्य जनस्योद्घोषोऽस्ति, योगदानमस्ति यत् सा जैनधर्मं ऋषभदेव योजितमकरोत्, तु तत्कार्यं केवलं ज्ञानमत्या मात्रा कृतम्, कार्यक्रमाणां अस्यां व्यस्ततायां शतकोटिरूप्यकाण अस्मिन् झंझावाते, प्रधानमंत्रिणः निरन्तरं अन्वेषणस्य काले, अद्य जैनसमाजाय किमपि चिन्तनपूर्णं कार्यक्रमं प्रददाति, तु सा ज्ञानमती मातास्ति अयं च मम दृढो विश्वासोऽस्ति यदि सांस्कृतिकमंत्री मातुः ज्ञानमत्याः शरणं प्राप्नोतु तु भगवतो महावीरस्य जन्मकल्याणकं स्व आभां प्रसारयितुं शक्नोति, तत् सम्पूर्णे विश्वे शान्तिः स्थापयिष्यति। वयं भगवन्तं महावीरं नापश्याम्, परन्तु तस्य शासने ज्ञानमतीं मातरं पश्यामः। इयमस्मभ्यं चिरस्मृतिरस्ति, भगवतो महावीरस्य 2500 तमात् निर्वाणकल्याणकात् पाठं गृहीत्वा वयं भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य भारं ज्ञानमत्यै मात्रे समर्पितं कुर्याम। अस्तु, ''यदा जागरणं तदैव प्रातः''। **अद्य समाजस्य दशया दिशया च वयं सम्यक् प्रकारेण परिचिताः सन्ति।** ''संघे शक्तिः कलियुगे''**, यः समाजः अद्य एकस्मिन् सूत्रे**

और यमुनोत्री हैं, जिनने मंत्रों के माध्यम से इस उपदेश को हम तक पहुँचाया है। ज्ञानमती माताजी ने चरैवेति-चरैवेति के मंत्र को चरितार्थ किया है इसलिए यह अभियान शुरू हुआ है। जैन महासभा दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कहा कि "आज यदि साध्वी श्रेष्ठ, दीर्घतपस्विनी, ज्ञानमती माताजी का मूल्यांकन करना है, तो उस घटना के संदर्भ में करें कि आज हिन्दुस्तान का कोई विद्वान यह कहने का दुस्साहस नहीं कर सकता कि जैनधर्म की स्थापना भगवान महावीर ने की थी। आज अगर इतिहास में बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी के अन्दर जैन संस्कृति में किसी एक व्यक्ति का इतना बड़ा उद्घोष है, योगदान है कि उन्होंने जैनधर्म को ऋषभदेव से जोड़ा है, तो वह कार्य केवल ज्ञानमती माताजी ने किया है। कार्यक्रमों की इस धूम में, 100 करोड़ रुपये की इस आंधी में, प्रधानमंत्री के बराबर अपनी कुर्सी ढूंढ़ने की लालसा में, आज जैन समाज को कोई चिंतनपूर्ण कार्यक्रम दे पा रहा है, तो वह ज्ञानमती माताजी हैं और यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर सांस्कृतिक मंत्री जी को माताजी की शरण मिल जाए तो भगवान महावीर का जन्मकल्याणक, जो अपनी आभा नहीं बना पा रहा है, वह सारे विश्व में अपनी आभा बना लेगा। हमने भगवान महावीर को नहीं देखा, पर उनके शासन में ज्ञानमती माताजी को देख रहे हैं। यह हमसे भूल हो गई, भगवान महावीर के 2500वें निर्वाणोत्सव से सबक लेकर भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक का भार हमें ज्ञानमती माताजी को सौंपना चाहिए था, खैर! **जब जागो तभी सबेरा।** आज समाज की दशा और दिशा से हम भलीभांति परिचित हैं **'संघे शक्तिः कलियुगे'** जो समाज आज एक होकर चलेंगे, वही अपनी

ग्रथिताः भूत्वा चलिष्यति, सः एव स्वविजयपताकां तरंगयिष्यति, अस्मिन् चान्दोलने यदि कश्चित् स्वाहुति दातुं शक्नोति, तु सा ज्ञानमती माता अस्ति, अहं तस्मै अभियानाय स्वश्रद्धायाः अर्घ्यं समर्पयितुमागच्छम्।

गणिन्यै मात्रे प्रदत्ताः विभिन्नाः उपाधयः–

गुरुभक्त्या भवेदत्र, महारण्ये महत्पुरम्।
तत्राभीष्टं फलं चैव, कल्पवल्ल्येव विन्दते।।

गुरुभक्त्या महारण्येऽपि महत् पुरं भवितुं शक्नोति। तेन च कल्पलतेव अभीष्टफलं प्राप्यते।

स्यादिदमेव कारणमस्ति यत् श्रावकः विविधप्रकारेण गुरोर्भक्तिं विधाय स्व सौभाग्यं मन्यते पुनः सन्तसाधवस्तु वैराग्यस्य मूर्तयो भवन्ति तेभ्यस्तु निन्दकः प्रशंसकश्च द्वौ एव समानौ वर्तते, कोऽपि तान् निन्दतु प्रशंसतु वा, ते तु द्वाभ्यां समभावं धारयन्ति। गुरुभक्तिं कृत्वा पुण्यबन्धस्य दूरमेवोदाहरणं प्रस्तुतं कुर्वन् अस्य महायज्ञस्य समापनावसरे अनेकप्रान्तेभ्यः आगताः प्रतिनिधयः पूज्यां मातरं उपाधिभिर्विभूषितां कृत्वा स्वगौरवममन्यन्त्। यद्यपि माता सदैव कथयति यत् मम गुरुणा प्रदत्ता आर्यिका दीक्षायाः उपाधिरेव मह्यं सर्वमहती विद्यते किन्तु माता समये–समये आचार्यैः समाजैः विश्वविद्यालयैश्चानेकोपाधिभिः सम्मानिताभवत्, तस्यामेव शृंखलाया महाराष्ट्रप्रान्तस्य प्रतिनिधिभिः ''राष्ट्रगौरवं''**, अवधप्रान्तस्यवासिभि तां** ''धर्ममूर्तिः''**, दिल्लीनगर्याः प्रतिनिधिभिः मण्डल** ''विश्वविभूतिरिति'' **उपाधिभिः समलंकृताभूत्। ते सर्वे मातरं उपाधिभिर्विभूष्य स्वप्रान्तस्य गौरवस्य वृद्धिमकुर्वन्।**

विजयपताका फहराएंगे और इस आंदोलन में कोई अपनी आहुति दे रहा है, तो वह ज्ञानमती माताजी जैसी तपस्वी संत हैं, मैं इस अभियान को अपनी श्रद्धा का अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।''

➢**गणिनी माताजी को दी गईं विभिन्न उपाधियाँ–**

गुरुभक्त्या भवेदत्र, महारण्ये महत्पुरम्।
तत्राभीष्टं फलं चैव, कल्पवल्ल्येव विन्दते।।

अर्थात् गुरुभक्ति से महावन में भी बड़ा भारी नगर हो सकता है और उसमें कल्पलता के समान अभीष्ट फल प्राप्त हो सकते हैं।

शायद यही कारण है कि श्रावक अनेक प्रकार से गुरु की सेवा करके अपना अहोभाग्य मानता है, फिर सन्त-साधु तो त्याग और वैराग्य की मूर्ति होते हैं, उनके लिए तो निन्दक या प्रशंसक दोनों समान हैं, कोई उनकी निन्दा करे या प्रशंसा, वे प्रत्येक के प्रति समता भाव रखते हैं। गुरुभक्ति कर पुण्यबंध का ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस महायज्ञ के समापन अवसर पर अनेक प्रान्तों से पधारे प्रतिनिधियों ने पूज्य माताजी को उपाधियों से विभूषित कर अपना गौरव माना। यूँ तो माताजी सदैव कहती हैं कि मेरे गुरु द्वारा दी गई आर्यिका दीक्षा की उपाधि ही मेरे लिए सबसे महान है परन्तु पूज्य माताजी को समय-समय पर आचार्यों, समाजों एवं विश्वविद्यालय द्वारा अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुईं हैं, उसी श्रृंखला में महाराष्ट्र प्रांत के प्रतिनिधियों ने उन्हें **''राष्ट्रगौरव''**, अवधप्रान्त ने **''धर्ममूर्ति''** एवं दिल्ली के प्रतिनिधिमण्डल ने **''विश्वविभूति''** की उपाधि से विभूषित कर अपने प्रांत का गौरव वृद्धिंगत किया।

अनेकजनैरुक्तम्–मातः! अयं तु 25 अप्रैल पर्यन्तं मन्तव्यः–**ये–येऽपि एतं राष्ट्रीययोजनम्–पश्यन्, अकुर्वन् अशृण्वन् च सर्वे एवं मुक्तकण्ठैः अस्य समसामयिकस्यायोजनस्य प्रशंसामकुर्वन्। केचिद् भक्ताः तु भावमुग्धाः भूत्वा अकथयन् यदिदं कार्यक्रमः समाप्स्यति, इदं विचिन्त्यैवाद्भुतमिव प्रतिभाति। केचिच्चाकथयन् मातः! अयं कार्यक्रम तु 25 अप्रैल पर्यन्तमनेनैव प्रकारेण संचालितो भवेत्, परंत्वेतत् संभवं नासीत्, परन्तु समारोहस्य भव्यतायाः आनन्दानुभूतेश्च कारणात् जनाः अनेक प्रकारेण अभाषन्त।**

सर्वे प्राप्नुवन् मातुराशीर्वादम्–**अस्मिन् राष्ट्रीये आयोजने तनुना मनसा धनिना च योगदानं कुर्वद्भ्यस्तु मातुराशीर्वादः प्राप्तः एव, देशस्य राष्ट्रपतये, प्रधानमंत्रिणे शासकगणेभ्यश्च माता स्वमंगलमाशीर्वादं व्यतरत्।**

साधुसाध्वयश्च सर्वदैव धर्मप्रभावनायाः एव प्रेरणाः प्रददति–**आचार्यः श्री कुन्दकुन्दस्वामी पंचमकालस्य साधुभ्यो निम्नप्रकारस्योपदेशं प्रदातुं प्रेरणामदात्–**

दंसणणाणुवदेसो, सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं।
चरिया हि सरागाणं, जिणिंद पूजोवदेसो य।।

अर्थात् अस्य कालस्य साधवः साध्व्यश्च दर्शन–ज्ञान–चारित्राणामुपदेशं दद्युः, शिष्याणां संग्रहं–निग्रहं आगमानुसारेण पोषणमपि कुर्युः, जिनेन्द्रस्य भगवतः महापूजायाः, (पंचकल्याणक

➢अनेक लोगों ने कहा-माताजी! इसे तो 25 अप्रैल तक मनाना चाहिए–

जिन-जिन ने इस राष्ट्रीय आयोजन को किया, देखा या सुना, सभी ने मुक्तकण्ठ से इस समसामयिक एवं महत्वपूर्ण आयोजन की प्रशंसा की। अनेक लोगों ने तो भावविभोर होकर कहा कि यह कार्यक्रम समाप्त हो जायेगा, यह सोचकर ही अजीब सा लगता है। कुछ ने कहा-माताजी! इसे तो लगातार 25 अप्रैल तक यूँ ही चलाते रहना चाहिए और यद्यपि ऐसा कुछ संभव नहीं था, फिर भी समारोह की भव्यता, आनन्दानुभूति के कारण लोग अनायास ही यह कह उठते थे।

➢सभी को मिला पूज्य माताजी का आशीर्वाद–

इस राष्ट्रीय आयोजन में तन-मन-धन का योगदान प्रदान करने वाले महानुभावों को तो पूज्य माताजी का आशीर्वाद मिला ही, देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व शासकगण के लिए भी पूज्य माताजी ने इस मंच से अपना भरपूर मंगल आशीर्वाद प्रेषित किया।

➢साधु-साध्वी सदा धर्मप्रभावना की प्रेरणा ही प्रदान करते हैं–

आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने पंचमकाल के साधु-साध्वियों के लिए निम्न प्रकार का उपदेश करने की प्रेरणा दी है–

दंसणणाणुवदेसो, सिस्सग्गहणं च पोसणं तेसिं।
चरिया हि सरागाणं, जिणिंद पूजोवदेसो य।।247।।

अर्थात् आजकल के साधु-साध्वी दर्शन, ज्ञान, चारित्र का उपदेश दें, शिष्यों का संग्रह-निग्रह तथा आगम के अनुकूल पोषण भी करें एवं जिनेन्द्र भगवान की महापूजा (पंचकल्याणक पूजा

विधान पूजायाः) आदीनां धर्मप्रभावनानामुपदेशमपि प्रदद्युः। प्रवचनसारे कथितायाः अस्याः गाथायाः अभिप्रायमिदमस्ति यत् वीतरागतायाः प्रतिमूर्तयः जैन साधु–साध्व्यः धर्मस्य प्रभावनायाः कार्येषु सदैव अग्रसराः भवन्तु। पूज्या माता अनेकधा कथयति यत् स्वध्यानाध्ययनेभ्य समयं प्राप्य यथा पूर्वाचार्याः धर्मप्रभावनायाः विविधानि कार्याण्यकुर्वन्, तथैव आधुनिककालस्य साधु–साध्व्योऽपि जैनधर्मस्य प्रभावनायाः कार्येष्वेव स्वानुमतिं दद्यु यतः शेषाणि चिकित्सालय–विद्यालय–गोशालादीनि लौकिककार्याणि शासनस्य, समाजस्य गृहस्थेभ्यश्च योग्यानि भवन्ति।

श्री ऋषभदेवस्य कीर्तिस्तंभे वेदिकायाः शुद्धिपूर्वकं भगवतां स्थापना–**भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीयमहामहोत्सव 2000 वर्षस्य अन्तर्गतं पूज्यमातुः प्रेरणया अनेकेषु स्थानेषु निर्मितेभ्यः ''ऋषभदेवस्य कीर्तिस्तम्भेभ्यः कनाटप्लेस स्थाने दिल्लीनगर्यां नवनिर्मिते प्रथमे कीर्तिस्तम्भे वेदिकाशुद्धिपूर्विका चतुर्णां भगवतां स्थापनाभवत्। अयं कीर्तिस्तम्भो दिगम्बरजैन–त्रिलोकशोधसंस्थानस्य जम्बूद्वीपहस्तिनापुरस्य अध्यक्षस्य ब्रह्मचारिणो रवीन्द्रस्य सक्रिय–सहयोगेन स्वर्गीयस्य महावीरप्रसादजैनस्य ठेकेदार परिवारस्य पक्षतो निर्मितोऽभवत्। अस्मिन् 1 नवम्बर दिने जिनप्रतिमानां स्थापनायाः शुभवेलायां साहूरमेशचन्द्रः अग्रवाल दिगम्बरजैन पंचायतस्य प्रमुखा श्री चक्रेशजैनश्च समागत्य शतसंख्यायां जनैः सह धार्मिक क्रियाकलापेषु भागमगृह्णान् याताम्। अस्मिन्नवसरे श्री चक्रेशजैनेऽकथयत् यत् यथा जैनधर्मस्य कीर्तिं प्रसारयितुं एते कीर्तिस्तम्भाः साधनानि सन्ति, तथैवात्मनः प्रभावनायां रत्नत्रय साधनायाः**

विधान) आदि धर्मप्रभावना का उपदेश देवें। प्रवचनसार में कथित इस गाथा का अभिप्राय यह है कि वीतरागता की प्रतिमूर्ति जैन साधु-साध्वी धर्म की प्रभावना के कार्यों में सदैव अग्रसर रहें। पूज्य माताजी कई बार कहा करती हैं कि अपने ध्यान-अध्ययन में से समय निकालकर जैसे पूर्वाचार्यों ने धर्मप्रभावना के अनेकानेक कार्य किए हैं, उसी प्रकार से आज के साधु-साध्वियों को भी जैनधर्म की प्रभावना के कार्यों में ही अपनी अनुमति देनी चाहिए क्योंकि शेष अस्पताल, विद्यालय, गोशाला आदि लौकिक कार्य सरकार, समाज एवं गृहस्थ के योग्य होते हैं।

➢श्री ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ में वेदी शुद्धिपूर्वक भगवन्तों की स्थापना–

भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष 2000 के अन्तर्गत पूज्य माताजी की प्रेरणा से अनेक स्थानों पर निर्मित हो रहे ''ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ'' में से कनॉट प्लेस-दिल्ली में नवनिर्मित प्रथम कीर्तिस्तंभ में वेदीशुद्धिपूर्वक 4 भगवन्तों की स्थापना की गई। यह कीर्तिस्तंभ दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी के सक्रिय सहयोग से स्व. श्री महावीर प्रसाद जैन, ठेकेदार परिवार की ओर से निर्मित हुआ। इसमें 1 नवम्बर को जिनप्रतिमा स्थापना की पावन बेला में साहू श्री रमेशचंद जैन एवं श्री चक्रेश जैन (प्राचीन अग्रवाल दि. जैन पंचायत के प्रमुख) सहित सैकड़ों की संख्या में लोगों ने पधारकर धार्मिक क्रियाकलापों में भाग लिया। इस अवसर पर श्री चक्रेश जी ने कहा कि जैसे जैनधर्म की कीर्ति को

महत्वं वर्तते। पूज्यामाता अस्य निर्माणस्य प्रेरणां दत्वा दिल्लीनगर्यां जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः कीर्तिमानस्थापयत्।

महिलाभ्यः मातुर्विशेषमुद्बोधनम्–**1 नवम्बर 2001 दिने शरत्पूर्णिमायाः दिने स्वजन्मनो दिनस्य सभायां पूज्या माता महिलाभ्यो विशेष सम्बोधनं प्रदानं कुर्वन्ती अकथयत् यत् येन शरीरेण मह्यं भौतिकशरीरस्य प्राप्तिरभूत्, सा केवलं मम जन्मदात्री मातास्ति अपितु तत् सुखदं क्षणमहं स्मरामि, यदा 1952 वर्षे अद्य दिने बाराबंकीनगर्यां आचार्यश्रीदेशभूषणाय कम्पिताभ्यां हस्ताभ्यां अश्रुपूरितनेत्राभ्यां पैंसिल लेखन्या सरिकत कर्गले लिखित्वा सा प्रादात् यत् मम पुत्री सर्वथा योग्यास्ति, सा यन् व्रत नियममिच्छति, तस्यै भवान् ददातु। अनन्तरं तानि क्षणान्यपि स्मृतौ आगतानि, यदा 1971 वर्षे सा आर्यिका दीक्षामगृहणात्। अद्य भवन्त्योऽपि तादृशीं मातरं भवितुं संकल्पं कुर्वन्तु। या महिलाः गर्भे आगतायाः बालिकाया हत्यां कुर्वन्ति, ताः संकल्पपूर्वकं हत्यायाः भावमपि आनेतुं पूर्णतया त्यागं कुर्वन्तु।**

धार्मिकविविधतायाः संरक्षणे आयोजितायां विश्वसंसदि महावीरवाणी गुंजिता अभवत्–**राजधान्याः दिल्लीनगर्याः होटल–हिल्टनइन्टरनेशनलसंस्थायां 15 नवम्बरतः 17 नवम्बर 2001 पर्यन्तं ''धार्मिकविविधतायाः संरक्षणे आयोजितायां विश्वसंसदि पूज्यमातुः मंगलसंदेशरूपेण भगवतो महावीरस्य समसामयिकानां सिद्धान्तानां अनुगुंजायमाना ध्वनिः**

फैलाने में ये कीर्तिस्तंभ साधन हैं, उसी प्रकार आत्मा की प्रभावना में रत्नत्रय साधना का महत्व है। पूज्य माताजी ने इस निर्माण की प्रेरणा देकर दिल्ली में जैनधर्म की प्राचीनता का कीर्तिमान स्थापित कर दिया है।

➢महिलाओं के लिए माताजी का विशेष उद्बोधन–

1 नवम्बर 2001 को शरदपूर्णिमा के दिन अपने जन्मदिन की सभा में पूज्य माताजी ने महिलाओं के लिए विशेष सम्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि जिस काया से मुझे भौतिक शरीर की प्राप्ति हुई, वह मात्र मेरी जन्मदात्री ही नहीं अपितु वह सुखद क्षण मुझे याद आ रहे हैं, जब सन् 1952 में आज के दिन बाराबंकी में आचार्य श्री देशभूषण जी के लिए कांपते हाथों से अश्रुपूरित नेत्रों से पेन्सिल द्वारा कोरे कागज पर लिखकर इन्होंने दिया था कि मेरी पुत्री सर्वथा योग्य है, वह जो व्रत नियम चाहती है, आप उसे प्रदान करें। अनन्तर वह क्षण भी याद आए, जब सन् 1971 में उन्होंने आर्यिका दीक्षा धारण की। आज आप भी ऐसी माता बनने का संकल्प करें। जो महिलाएं गर्भ में आई बालिका की हत्या कर देती हैं, वह संकल्पपूर्वक हत्या का भाव भी लाने का पूर्णतः त्याग करें।

➢धार्मिक विविधता संरक्षण पर आयोजित विश्वसंसद में गूंजी भगवान महावीर की वाणी–

राजधानी दिल्ली के होटल-हिल्टन इंटरकांटिनेंटल में 15 से 17 नवम्बर 2001 तक ''धार्मिक विविधता संरक्षण पर आयोजित विश्व संसद ''(World Congress for Presentation for Religious Diversity) में पूज्य माताजी के मंगल संदेश के रूप में भगवान महावीर के सर्वोपयोगी सम-

मुखरितोऽभवत्। यदा 17 नवम्बर दिने मातुः शिष्यमण्डलं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्रः ब्रह्मचारिण्यौ सारिका स्वाति जैनाः आयोजनेऽस्मिन् दिगम्बरजैन समाजस्य प्रतिनिधित्वमकुर्वन्। स्वामिनो दयानन्दस्य निर्देशने All India Movement for Seva परेण इयं विश्वसंसद् आयोजिता अभवत्। पूर्वराष्ट्रपति श्री आर.वेंकटरमणः, प्रख्यातो विधिवेत्ता डाक्टर एल.एम. सिंघवी, विहिप अध्यक्षः श्री अशोक सिंहलः अन्ये च विदेशिनः धार्मिकप्रतिनिधित्वे प्रधानमंत्रिणोद्घाटिते कार्यक्रमेऽस्मिन् भागमगृहणन्।

दिल्लीनगर्यां स्थायिनिर्मितायाः पावापुर्याः रचनाया समक्षं 2600 निर्वाणमोदकाः समर्पिताः—**यदा सम्पूर्णो देशो भगवतो महावीरस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवं स्व–स्व स्तरेणायोजितमकरोत् तदा पूज्यमातुः पावनप्रेरणया तस्याः संघसान्निध्ये राजधान्याः दिल्लीनगर्याः कनाटप्लेस–राजाबाजार स्थितस्य श्रीअग्रवालदिगम्बरजैनमन्दिरस्य प्रांगणे पावापुरसरोवरस्य स्थायिनीं रचनां रचयित्वा ''दीपावल्याः'' शुभदिने कार्तिककृष्ण अमावस्यायां 15 नवम्बर 2001 दिने प्रातः 2600 निर्वाणमोदकानां समर्पणस्य भव्यकार्यक्रमं समयोजितं।**

विश्वशांतिमहावीर– विधानस्य राष्ट्रीयआयोजनस्य प्रमुखस्य इन्द्रस्य श्री कमलचन्द्रजैनस्य खारीबावली दिल्लीनगर्याः रजतप्रशस्तिपत्रेण सम्मानोऽभूत् ''दानवीरसमाजरत्नस्य'' संघपतेः लाला महावीरप्रसादस्य, श्री प्रेमचन्द्रस्य दिल्लीनगर्याः राजकुमारस्य वीराबिल्डर्स दिल्लीनगर्याः अपि ''दानवीरसमाजरत्नस्य'' उपाधिं प्रदाय सम्मानाः अभवन्। श्री आनन्दो जैनाय–जैन–मार्बलहोम–मेरठनगराय, श्री श्रीपालजैन मोटरवाले राजपुररोड इत्यस्मै अपि ''समाजरत्न''

सामयिक सिद्धान्तों की अनुगूंज मुखरित हो उठी, जब 17 नवम्बर को माताजी के शिष्य मण्डल कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन, ब्र. सारिका व स्वाति जैन ने इस आयोजन में दिगम्बर जैन समाज का प्रतिनिधित्व किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में All India Movement For SEVA द्वारा यह विश्व संसद आयोजित की गई। पूर्व राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन, प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. एल.एम. सिंघवी, विहिप अध्यक्ष श्री अशोक सिंघल एवं अनेक विदेशी धार्मिक प्रतिनिधियों ने प्रधानमंत्री द्वारा उद्घाटित इस कार्यक्रम में भाग लिया।

➢दिल्ली में स्थाई निर्मित पावापुरी रचना के समक्ष 2600 निर्वाणलाडू चढ़ाए गए–

जब सारा देश भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव अपने-अपने स्तर पर मना रहा था, उस समय पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उनके संघ सानिध्य में राजधानी दिल्ली के कनॉट प्लेस-राजा बाजार स्थित श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन मंदिर के प्रांगण में पावापुरी सरोवर की स्थाई रचना बनाकर ''दीपावली'' के शुभ दिन कार्तिक कृष्णा अमावस्या, 15 नवम्बर को प्रातः 2600 निर्वाणलाडू चढ़ाने का भव्य आयोजन किया गया।

''विश्वशांति महावीर विधान'' के राष्ट्रीय आयोजन के प्रमुख इन्द्र श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली का रजत प्रशस्ति पत्र से सम्मान करते हुए ''दानवीर समाजरत्न'' तथा संघपति लाला महावीर प्रसाद जी, श्री प्रेमचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली व राजकुमार जैन-वीरा बिल्डर्स को

उपाधिना सम्मानः कृतः। सर्वेभ्यः सौधर्मइन्द्रं विशेषदानदातारः कार्यकर्तारश्च च प्रशस्तिपत्रैः सम्मानिता अभवन्।

पाठ परिवर्तनस्य घोषणया हर्षकल्लोलाः–**1993 वर्षेभ्य जैनधर्मस्य शाश्वतप्राचीनसत्तया सह अस्य युगस्य प्रथमतीर्थंकरं भगवतं ऋषभदेवं मानवीय सभ्यतायाः आद्यप्रणेतुः रूपेण पुनः प्रतिष्ठापितं कर्तुं संकल्पे पूर्णतया कटिबद्धाया पूज्यमातु ज्ञानमत्याः अनवरतप्रयासानां सार्थकता भारतशासनेन एन.सी.ई.आर.टी. संस्थया प्रकाशितस्य इतिहासस्य पाठ्यपुस्तकेषु जैनधर्मसम्बन्धिनीनां भ्रान्तीनां निराकरणस्य शासकीयघोषणारूपेण दृष्टिगता अभवत्। अनया घोषणया जैन समाजे प्रसन्नताया कल्लोलाः तरंगिताः अभवन्।**

इण्डियागेट स्थाने सर्वधर्म सम्मेलनम्–**भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मकल्याणक महोत्सवो दिल्लीप्रदेशस्य समितेः तत्त्वावधाने भगवतो महावीरस्य निर्वाणोत्सवस्योपलक्ष्ये अहिंसायाः समर्थने च एका विशाला मौनपदयात्रा विजयचौकं स्थानात् इण्डियागेटपर्यन्तं 18 नवम्बर दिने आयोजिताभवत्, यस्यां सहस्राणि विद्यालयबालकाः सामाजिक गण्यमान्यजनाश्च स्वहस्तेषु गृहीतैः प्रदर्शनपत्रैः अहिंसायाः भ्रातृभावस्य च सन्देशमदुः। पदयात्रायाः पश्चात् इण्डियागेटस्थले आयोजितायां सर्वधर्मसभायां दिगम्बरजैनसमाजस्य पक्षतः पूज्यमातुः प्रेरणया आदेशानुसारेण चाहं स्व सान्निध्यं प्रदानमकरवम्। श्वेतांबर–**

भी "दानवीर समाजरत्न" की उपाधि प्रदान की गई। श्री आनन्द जैन-जैन मार्बल होम, मेरठ, श्री श्रीपाल जैन 'मोटर वाले-राजपुर रोड, को 'समाजरत्न' की उपाधि देते हुए सभी सौधर्म इन्द्र एवं विशेष दानदातारों तथा कार्यकर्ताओं का भी प्रशस्तिपत्र द्वारा सम्मान किया गया।

➢पाठ परिवर्तन की घोषणा से हर्ष की लहर–

सन् 1993 से जैनधर्म की प्राचीन शाश्वत सत्ता के साथ इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को मानवीय सभ्यता के आद्यप्रणेता के रूप में पुनर्प्रतिष्ठापित करने के संकल्प को पूर्ण करने में कटिबद्ध पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अनवरत प्रयासों की सार्थकता भारत सरकार द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के निराकरण की सरकारी घोषणा के रूप में दृष्टिगत हुई। इस घोषणा से समस्त समाज में खुशी की लहर दौड़ गई।

➢इण्डिया गेट पर सर्वधर्म सम्मेलन–

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव दिल्ली प्रदेश समिति के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में तथा अहिंसा के समर्थन में एक विशाल मौन पदयात्रा विजय चौक से इण्डिया गेट तक 18 नवम्बर को आयोजित की गई, जिसमें हजारों स्कूली बच्चों एवं सामाजिक गणमान्य लोगों ने अपने हाथों में लिए बैनरों से अहिंसा एवं भाईचारे का संदेश दिया। पदयात्रा के पश्चात् इण्डिया गेट पर आयोजित सर्वधर्मसभा में दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आदेशानुसार मैंने अपना सानिध्य प्रदान किया। साथ ही श्वेताम्बर स्थानकवासी

जैनादि जनैः च सह श्वेताम्बरस्थानकवासिसम्प्रदायानां पक्षतः मुनिः महेन्द्रकुमारः, मुनिश्री रवीन्द्रकुमार, श्रमणी प्रतिभा, प्रज्ञा च जैनधर्मस्य, श्री ए.के. मर्चेन्टः ईसाईधर्मस्यः, महन्त सेवादासः सिखधर्मस्य, स्वामी अग्निवेशः हिन्दूधर्मस्य, दरगाहहजरत निजामुद्दीनस्य दीवानः सैय्यदअली मूसानिजामी महोदयो मुस्लिम धर्मस्योद्बोधनं प्रदानं कुर्वन्तः विश्वशान्तेः सद्भावनायाश्च सन्देशं प्रददुः।

तदाहं स्व उद्बोधनेऽकथयम् यत् सम्पूर्णविश्वे शान्तेरहिंसाया आध्यात्मिकतायाश्च निर्यातं कुर्वन् भारतदेशोऽस्ति भारतदेशस्य च हृदयमस्ति दिल्ली, दिल्लीनगर्याश्च हृदये इण्डियागेटस्थले भगवतो महावीरस्य अहिंसा–मैत्री–अनेकान्तादीनां सिद्धान्तानां उद्घोषः सम्पूर्ण विश्वेऽस्मिन् स्वरो भविष्यति अनेनैव च शनैः शनैः आतंकवादस्य–हिंसाया–वैमनस्यानां–पारस्परिकद्वेषस्य च भावनाः समाप्ताः भविष्यन्ति। आतंकवादिनश्चैतैः सन्देशैः सद्बुद्धिं प्राप्स्यन्ति अतः एवंभूताः शान्तिसमारोहः अपि अद्य आवश्यकाः सन्ति।

पुनः अहं संस्कृत–हिन्दी–अंग्रेजी भाषासु ''विश्वशान्तिप्रार्थनायाः'' पाठमकारयम्।

जप–तपोरूपेण साकारोऽभवत् भगवतो महावीरस्य दीक्षाकल्याणक महोत्सवः–**10 दिसम्बर 2001 दिने दिल्लीनगर्याः राजधान्याः तालकटोराइन्डोर स्टेडियमस्थले जैनसमाजस्य सर्वेषां सम्प्रदायानां द्विशतादप्यधिकानां साधुसाध्वीनां सान्निध्ये ''जप–तपो महाकुम्भस्य'' रूपेण भगवतो महावीरस्य दीक्षाकल्याणकमहोत्सवो विलक्षणरूपेण सम्पन्नोऽभवत्।**

आदि सम्प्रदाय की ओर से प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार जी, मुनि श्री रवीन्द्र कुमार जी एवं श्रमणी प्रतिभाप्रज्ञ ने जैनधर्म का, श्री ए.के. मर्चेन्ट ने बहाई धर्म का, महंत सेवादास ने सिख धर्म का, स्वामी अग्निवेश ने हिन्दू धर्म एवं दरगाह हजरत निजामुद्दीन के दीवान सैय्यद अली मूसानिजामी ने मुस्लिम धर्म का उद्बोधन प्रदान करते हुए विश्वशांति एवं सद्भावना का संदेश दिया।

उस समय मैंने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्वभर में शांति, अहिंसा और अध्यात्म का निर्यात करने वाला भारत देश है और भारत का दिल है-दिल्ली तथा दिल्ली के दिल इण्डिया गेट पर भगवान महावीर के अहिंसा, मैत्री, अनेकांत इत्यादि सिद्धान्तों का उद्घोष सम्पूर्ण विश्व की आवाज बनेगा और इसी से धीरे-धीरे आतंकवाद, हिंसा, वैमनस्य, आपसी द्वेष इत्यादि भावनाएं समाप्त होंगी। आतंकवादियों को भी ऐसे संदेशों से सद्बुद्धि मिलेगी, अतः इस प्रकार के शांति समारोह भी आज की आवश्यकता हैं।

पुनः मैंने संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में ''विश्वशांति प्रार्थना'' का पाठ भी कराया।

➢जप-तप के रूप में साकार हुआ भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव–

10 दिसम्बर 2001 को राजधानी दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में जैन समाज के सभी सम्प्रदायों के 200 से भी अधिक साधु-साध्वियों के सानिध्य में 'जप-तप महाकुंभ' के रूप में भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक महोत्सव विलक्षण रूप में सम्पन्न हुआ।

भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवसमित्या, दिल्लीनगर्याः आयोजिते अस्मिन् कार्यक्रमे जैनाचार्यस्य डॉ. शिवमुनेः सर्वेषां च सम्प्रदायानां विविधानां साधुसाध्वीनां मध्ये पूज्या गणिनीज्ञानमतीमाता संघ सहिता स्वसान्निध्यं प्रादात्, उपस्थितान् श्रद्धालून् सम्बोधयत्, अकथयच्च यदि समस्तः साधुवर्गः एकत्रितो भूत्वा सम्पूर्णस्य समाजस्य नेतृत्वं करोतु, तु भगवतो महावीरस्यायं 2600 तमो जन्मकल्याणकमहोत्सवो नवीनाः उच्चताः स्पृष्टुं क्षमः स्यात्। भारतशासनाय अस्मै महोत्सवाय माताश्रीः मंगलाशीर्वादं प्रादात् अहिंसा–अनेकान्तस्य च सर्वोदयकारकान् सिद्धान्तान् विश्वव्यापिना स्तरेण प्रचारं कर्तुं प्रेरणां प्रादात्।

सांसदो श्री दिलीपगांधी, सांसदो डाक्टर कर्णसिंहः संस्कृते मंत्रिणो जगमोहनस्य निजसचिवः अशोकभट्टः, आई.ए.एस., दिल्ली भाजपा–अध्यक्षः मांगेरामो गर्गः प्रसिद्धो विधिवेत्ता च डॉ. एल.एम. सिंघवी, एते सर्वे कार्यक्रममुपातिष्ठन्।

पुनः अहं मातुराज्ञया लघुसामायिकस्य ध्यानस्य चाभ्यासमकारयम्। णमोकारमंत्र, मेरीभावना, महावीराष्टक, महावीरचालीसा, शान्तिपाठ, भक्तामरपाठादिभिः भक्तै पठितैः सम्पूर्णं वातावरणं गुंजितमभवत्। अस्य कार्यक्रमस्य झण्डारोहणं संघपतिना लाला महावीर प्रसादेन कृतम्। स्वागताध्यक्षः श्री मोहनलालः सेठिया आगन्तुकानामतिथीनां स्वागतमकरोत्। सभायाः संचालनं महोत्सव समितेः महासचिवः प्रो. श्री रतन जैनोऽकरोत् 26 युवकाः

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव समिति, दिल्ली द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में जैनाचार्य डॉ. शिवमुनि जी महाराज एवं सभी सम्प्रदायों के विविध साधु-साध्वियों के मध्य पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (ससंघ) ने अपना सानिध्य प्रदान किया एवं उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया। पूज्य माताजी ने इस अवसर पर कहा कि यदि समस्त साधुवर्ग एकजुट होकर पूरे समाज का नेतृत्व करें, तो भगवान महावीर का यह 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव नई ऊँचाईयों को छू सकता है। भारत सरकार को इस महोत्सव के लिए माताजी ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए अहिंसा एवं अनेकांत के सर्वोदयी सिद्धान्तों को विश्वव्यापी स्तर पर प्रचार करने की प्रेरणा दी।

सांसद श्री दिलीप गांधी, डॉ. कर्ण सिंह-सांसद एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन जी के निजी सचिव श्री अशोक भट्ट (आई.ए.एस.), दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री मांगेराम गर्ग एवं प्रख्यात विधिवेत्ता डॉ. एल.एम. सिंघवी मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

पुनः मैंने पूज्य माताजी की आज्ञानुसार लघु सामायिक एवं ध्यान का अभ्यास कराया। णमोकार मंत्र, मेरी भावना, महावीराष्टक, महावीर चालीसा, शांति पाठ, भक्तामर इत्यादि के सामूहिक पाठ से सारा स्टेडियम गूंज उठा। इस महोत्सव का झण्डारोहण संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन (बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली) द्वारा किया गया। स्वागताध्यक्ष श्री मोहनलाल सेठिया ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। सभा का कुशल संचालन महोत्सव समिति के महासचिव

(26 प्रकाराणां नियमानां पालनं कृत्वा जैनत्वस्य गरिमाणं स्थापयितुं रक्षणाय जैनधर्मस्य च पताकां तरंगितां कुर्वन्तः) युवारत्नस्य उपाधिना समलंकृता, सम्मानिताश्चाभवन्, येषु प्रथमं स्थानं ग्रीनपार्क–उपनगरस्य श्री अरिहन्त कुमारः प्राप्नोत्। अनेन सहैव सर्वैः पूज्य मातुः संघस्थानां च साधूनामाशीर्वादः प्राप्तः। पूज्या माता अस्य समारोहस्य सदृशं विशालं कार्यक्रमं सम्पादितं कारयित्वा अन्ततः मनसि कस्मात् कालात् चलायमानां भावनां मूर्तरूपां कर्तुं निर्णयमकरोत् सा च भावनाऽसीत्–भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य नालन्दा समीपस्थस्य विकासः। जिनेन्द्रभगवतः शासने अस्मभ्यं जिनधर्मस्य महान पवित्रो मार्गः प्राप्तोऽभवत्। तस्य जन्मभूमेः प्रतिकणं अस्मभ्यं परम पवित्रं मूल्यवत् चास्ति। पूज्यमातुरतीवेच्छासीत् यत् भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य वर्षस्य सार्थकता तदैवास्ति, यदा भगवतो महावीरस्य जन्मभूमि सम्पूर्णविश्वे महिमामण्डिता भवेत् सर्वश्च समाजो जागृतो भूत्वा महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य महत्तामुपयोगितां चावधार्य तस्य विकासहेतवे कटिबद्धो भवेत्। वस्तुतः महतां पुरुषाणां दृष्टिरेव दूरदर्शितायाः युक्ता सबलस्य भविष्यस्य च सम्पोषिका भवति।

मनोकामना सिद्धिः महावीरव्रतं चमत्कारमदर्शयत्–**पूज्या माता स्वरचितस्य ''विश्वशान्ति महावीर विधानस्य'' 2600 मंत्रेभ्यः शताष्ट मंत्रान् गृहीत्वा ''मनोकामनासिद्धेर्महावीरव्रतस्य'' रचनामकरोत्, यदाहं तद्व्रतं पूज्यया मात्रा नवम्बर 2001 मासेऽगृहणाम्। दिसम्बर**

प्रो. रतन जैन ने किया। 26 युवाओं को (26 प्रकार के नियमों का पालन कर जैनत्व की शान कायम रखने वाले एवं जिनधर्म पताका को फहराने वाले) 'युवारत्न' की उपाधि से अलंकृत करते हुए सम्मानित किया गया, जिसमें प्रथम सम्मान प्राप्त किया ग्रीन पार्क निवासी श्री अरिहंत कुमार जैन ने। साथ ही सभी को माताजी एवं संघस्थ साधुओं का आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ। ''पूज्य माताजी ने इस समारोह जैसे विशाल कार्यक्रम को सम्पन्न करवाकर अंततः मन में कब से चली आ रही भावना को मूर्तरूप देने का निर्णय किया और वह भावना थी– भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) का विकास। जिनेन्द्र भगवान के शासन में हम सबको जिनधर्म का महान पवित्र पथ प्राप्त हुआ है, उनकी जन्मभूमि का कण-कण हमारे लिए परम पवित्र एवं मूल्यवान है। पूज्य माताजी की अतीव इच्छा थी कि भगवान के 2600वें जन्मजयंती वर्ष की सार्थकता तभी है, जब भगवान महावीर की जन्मभूमि विश्वभर में महिमामण्डित हो जाए व समस्त समाज जागृत होकर महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की महानता एवं उपयोगिता को समझकर उसके विकास हेतु कटिबद्ध हो जाए। वस्तुतः महान पुरुषों की दृष्टि ही दूरदर्शितापूर्ण एवं सबल भविष्य की सम्पोषक होती है।''

➢मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत ने चमत्कार दिखाया–

पूज्य माताजी ने स्वरचित ''विश्वशांति महावीर विधान के 2600 मंत्रों में से 108 मंत्र लेकर 'मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत' की रचना की, जिसे मैंने पूज्य माताजी से नवम्बर 2001 में ग्रहण किया और दिसम्बर 2001 में उस व्रत को प्रारंभ किया, मेरे साथ-साथ संघ में सभी ने इस व्रत को

2001 मासे च तद्व्रतमारभे। मया सहैव संघे सर्वे इदं व्रतमगृहणन्। 10 फरवरी पर्यन्त मम चत्वार्येव व्रतान्यभवन् यत् एकदा राजाबाजारस्य धर्मशालायां प्रवासस्य मध्ये अहं संघस्य चैत्यालये भगवतोऽभिषेकस्य दर्शनस्य पश्चात् पूज्यां मातरं न्यवेदयम् मातः! यद्यपि सम्पूर्णे भारतवर्षे राष्ट्रीयस्तरेण भगवतो महावीरस्य 2600 तमं जन्मकल्याणकमहोत्सववर्षं शोभायमानविधिना विविधानामायोजनानां माध्यमेन मान्यतां प्राप्यते प्रान्तीय सामाजिक–प्रादेशिक स्तरेणापि जनाः नानाविधानि आयोजनानि कर्तुं व्यस्ताः सन्ति, किन्तु जिनशासनस्ययस्य भगवतो महावीरस्य शासनकाले वयं भवती च तिष्ठामः, तस्य जन्मभूमिं प्रति कदापि दृष्टिर्नास्ति भवती च तां विश्वमानसपटलेऽकिंतां कर्तुमिच्छति, तु भवती भगवतो महावीरस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरं प्रति विहृत्य तस्यै वास्तविकं रूपं प्रददातु।

तदा माताश्रीः मम प्रार्थनामशृणोत् मननं चाकरोत्। यतो हि माताश्रीः अस्मै जन्मोत्सव हेतवे राजधान्यां दिल्लीनगर्यां भवितुं प्रस्तावितानां कार्यक्रमाणां रूपरेखाः रचयितुं व्यस्ता आसीत्, अनेनं सहैव तस्याः शारीरिक स्वास्थ्यमपि दुर्बलमासीत् परन्तु न जानामि तस्मिन् दिने माताश्रीः किमन्वभवत् यत् सा शारीरिकस्वास्थ्यं भक्तानां च अत्याग्रहं उपेक्ष्य कुण्डलपुरं प्रति मंगल विहारस्य घोषणामकरोत्, तदा तु सम्पूर्ण दिल्लीनगर्याः जैन समाजे आन्दोलन–मिवाभवत् यदा कदा पुनः माताश्री अस्मान् विहाय विहारगमनस्य योजनां रचयति किन्तु पूज्यायाः गणिन्याः मातुर्हृदये तीर्थंकराणां भगवतां कल्याणकभूमीनां विकासस्यभावना सर्वदैव विद्यमाना आसीत्, विशेषतो भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेर्विषये कतिभिश्चिद् आधुनिक–

ग्रहण किया। 10 फरवरी तक मेरे मात्र 4 ही व्रत हुए थे कि एक दिन राजा बाजार की धर्मशाला में प्रवास के मध्य मैंने संघ चैत्यालय में श्री जी का अभिषेक देखने के बाद पूज्य माताजी से निवेदन किया कि माताजी! यूँ तो सारे भारत में राष्ट्रीय स्तर पर भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष धूमधाम से विविध आयोजनों के माध्यम से मनाया जा रहा है और प्रांतीय, सामाजिक, प्रादेशिक स्तर पर भी लोग नाना आयोजन कर रहे हैं परन्तु जिन शासनपति भगवान महावीर के शासनकाल में हम और आप सभी लोग रह रहे हैं, उनकी जन्मभूमि की ओर किसी की दृष्टि नहीं है और आप उसे विश्व के मानसपटल पर लाना भी चाहती हैं, तो क्यों न आप भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार कर उसे उसका वास्तविक स्वरूप प्रदान करें!

उस समय पूज्य माताजी ने मेरी प्रार्थना को सुना और मनन भी किया। चूँकि माताजी इस जन्मोत्सव हेतु राजधानी दिल्ली में आयोजित होने वाले कार्यक्रम की वृहद् रूपरेखाएँ बना रही थीं, साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी कमजोर था किन्तु न जाने उस दिन माताजी को क्या हुआ कि उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य एवं भक्तों के अतीव आग्रह को मद्देनजर करते हुए कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार की घोषणा ही कर दी, फिर तो पूरे दिल्ली की जैन समाज में हलचल मच गई कि एक बार पुनः माताजी हमें छोड़कर विहार की योजना बना रही हैं किन्तु पूज्य गणिनी माताजी के हृदय में तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों के विकास की भावना हर क्षण विद्यमान रही है और विशेषरूप से

इतिहासकारैः उत्थापितेन विवादेन माताश्रीः अत्यन्तमेवाश्चर्यचकिताभवत् यत् वर्तमानस्य अर्वाचीनशोधानां माध्यमेन प्राचीनकल्याणकभूमीनां परिवर्तनप्रथा अस्माकं संस्कृतौ मूलाचार-पद्धतौ च बाधां कर्तुं निश्चयमकरोत्।

वस्तुतोऽहं तु इयं व्रतस्यैव चमत्कारः मन्ये, यत् ग्रहणं कर्तुं साक्षात् कर्तुं च अहं प्रबला भावनामभावयम् यत् कदाचित् जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य साक्षात् दर्शनं कर्तुं सौभाग्यं प्राप्तं कुर्याम अस्मिन् च महोत्सववर्षे महावीरस्य भगवतो जन्मभूमिः विश्वस्य मानस पटलेऽंकिता स्यात्। अतएव स्यात् भगवतो महावीरस्य शासनदेवी सिद्धायिनी मातैव पूज्यमात्रे अन्तः प्रेरणां प्रदाय तस्यै मूर्तरूपं प्रदातुं प्रबुद्धामकरोत्। तस्याः अनेन निर्णयेनाहं सर्वाधिका प्रसन्नाभवम्, महावीरव्रतं प्रत्यपि मम श्रद्धा अत्यधिक प्रगाढमभवत्। पश्चात् 5000 नर-नार्यः एतदव्रतमगृह्णन्। अहं चाग्रे गत्वा तैः मंत्रैः ''मनोकामना सिद्धेर्विधानस्य'' रचनामप्यकरवम्।

एन.सी.ई.आर.टी. संस्थया सह विशेषा वार्ता–**11 जनवरी 2002 दिने संघस्थे ब्रह्मचारिण्यौ सारिका स्वातिश्च मातुराज्ञया एन.सी.ई.आर.टी.संस्थां प्रेषिते अभवताम्, तत्र ते इतिहासविभागे गत्वा अतुलरावतादिभिः प्रमुखैः जनैः सह वार्तामकुरुताम्, तदा तेऽस्माभि-र्लिखितं पाठं प्रेषितुं कर्तुमकथयन्, अनेन सहैव इममाश्वासनमपि अदुः यत् माताश्रीः यमपि संशोधनमिच्छति, वयं तद् इतिहासेऽवश्यमेव परिवर्तितं करिष्यामः। पुनः 2-3 दिनानां**

भगवान महावीर की जन्मभूमि के विषय में कुछ आधुनिक इतिहासकारों द्वारा उठाए गए विवाद से पूज्य माताजी बड़ी आश्चर्यचकित हुईं कि वर्तमान की अर्वाचीन शोधों के आधार पर प्राचीन कल्याणक भूमियों को परिवर्तन करने वाली प्रथा हमारी संस्कृति एवं मूल आचार पद्धति पर ही आघात करने लगी है। अतः उन्होंने मन ही मन कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार का दृढ़ निश्चय कर लिया।

वस्तुतः मुझे तो यह उस व्रत का ही चमत्कार दृष्टिगत हुआ, जिसे लेते और करते समय मैंने प्रबल भावना संजोई थी कि कभी जन्मभूमि कुण्डलपुर के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हो और इस महोत्सव वर्ष में भगवान महावीर की जन्मभूमि विश्व के मानस पटल पर अंकित हो जावे। इसीलिए शायद भगवान महावीर की शासन देवी सिद्धायिनी माता ने ही पूज्य माताजी को अन्तर्प्रेरणा प्रदान कर उसे मूर्तरूप दे दिया। उनके इस निर्णय से मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता तो हुई ही, महावीर व्रत के प्रति मेरी श्रद्धा और अधिक प्रगाढ़ हो गई पुनः पाँच हजार से भी अधिक नर-नारियों ने यह व्रत ग्रहण किया। मैंने आगे जाकर उन्हीं मंत्रों से ''मनोकामना सिद्धि विधान'' की रचना भी की है।

➢ N.C.E.R.T. **द्वारा विशेष वार्ता–**

11 जनवरी 2002 को संघस्थ ब्र. कु.सारिका एवं कु. स्वाति को माताजी की आज्ञा से N.C.E.R.T. भेजा गया, वहाँ उनने इतिहास विभाग में जाकर अतुल रावत आदि प्रमुख लोगों से बातचीत की, तब उन्होंने हमारा लिखा हुआ पाठ भिजवाने के लिए कहा, साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि माताजी जो भी सुधार चाहती हैं, हम इतिहास में अवश्य परिवर्तित करेंगे पुनः दो-तीन

पश्चात् 14 जनवरी दिने अतुलरावतः इतिहासस्य महोदयः–यः इतिहासस्य संशोधने प्रतिनिधिरासीत्, सः, मातुः समीपे दर्शनार्थमागच्छत् अनेन च सह पाठ्यक्रमेषु जैन–धर्मविषयिकाः भ्रान्तधारणाः दूरीकरणसम्बन्धे सन्तोषदायिन्याः चर्चाः अभवन्। अहं च तस्मै पंच पृष्ठीयं लेखं ''जैनधर्मः भगवान् महावीरश्च'' अदाम्। अनेन सह पूर्व कृतानां प्रयत्नानामेकं स्मरणपत्रं, केषांचित् पाठ्यपुस्तकानामशुद्धान् पाठान् तेषां च संशोधितानां पाठानां च प्रतीन्, एतानि त्रीणि वस्तूनि तस्मै दत्तानि, यानि यः सरलतया स्वीकृतान्यकरोत् अकथयच्च अहं पूर्णं प्रयत्नं कृत्वा एवं पाठं दास्यामि एषामाधारेणैव नवीनं पाठ लिखिष्यामि।

विद्यालयेषु महावीर वाणी गुंजायमानाऽभवत्–**भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकवर्षस्यान्तर्गते पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः प्रेरणया राजधान्यां दिल्लीनगर्यां एकमद्भुतं कार्यक्रमायोजितं जनाः अकुर्वन्। सः आसीत् स्थानीयेषु शासकीय विद्यालयेषु ''भगवानमहावीर प्रवचनशृंखला प्रश्नमंचश्च।'' यस्य माध्यमेन जैन–जैनेतर छात्रेभ्यः अध्यापकेभ्यश्च भगवान्महावीर जैनधर्मसम्बन्धिन्यश्च सूचना मंगलसन्देशाश्च प्राप्ताः अभवन्। प्रथमतश्च दातृभ्यः महावीर सम्बन्धिनीनां लघु पुस्तिकानां वितरणमभवत्। स्वाध्यायस्य माध्यमेन अनेका जैनविद्यार्थिनः, यो जैनधर्मात् विमुखाः अनभिज्ञाश्चासन्, भगवतो महावीरस्य जीवनस्य सूक्ष्मतत्वैः परिचिताः अभवन्। तत्पश्चात् संघस्थाभिः भगिनीभिः विद्यालयान् गत्वा प्रवचनानां प्रश्नमंचानां आयोजनं कृत्वा विजेतृभ्यः छात्र–छात्राभ्यः भगवतो**

दिनों के अन्तराल में 14 जनवरी को अतुल रावत जी (इतिहास संशोधन में नियुक्त प्रतिनिधि) स्वयं पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे और उनसे पाठ्यक्रमों में जैनधर्म विषयक भ्रान्त धारणाओं को दूर करने के संबंध में सन्तोषप्रद चर्चा हुई। मैंने उनको 5 पृष्ठीय लेख ''जैनधर्म एवं भगवान महावीर'' दिया, साथ ही पूर्व से की गई कोशिशों का एक मेमोरेन्डम और कुछ पाठ्य पुस्तकों के गलत पाठ व उनके नीचे संशोधित किए गए सही पाठ की कापी ये तीनों चीजें दीं, जिसे उन्होंने सरलतापूर्वक स्वीकार किया और कहा कि मैं पूरी कोशिश करके इस पाठ को दूँगा या फिर इसके आधार से दूसरा सही पाठ लिखाऊँगा।

➢स्कूलों में गूंज उठी भगवान महावीर की वाणी–

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली में एक अनूठा कार्यक्रम चला। वह था स्थानीय सरकारी विद्यालयों में 'भगवान महावीर प्रवचन श्रृंखला एवं प्रश्नमंच'। जिनके माध्यम से जैनेतर छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों को भगवान महावीर और जैनधर्म संबंधी जानकारी एवं मंगल संदेश प्राप्त हुए। भगवान महावीर संबंधी लघु साहित्य का प्रथमतः विद्यार्थियों को वितरण कर दिया गया, स्वाध्याय के माध्यम से कितने ही जैनेतर विद्यार्थी, जो साधारणतः जैनधर्म से अपरिचित थे, भगवान महावीर के जीवन के सूक्ष्म तथ्यों से परिचित हुए भी, तत्पश्चात् संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों के द्वारा विद्यालय में जाकर प्रवचन एवं प्रश्नमंच का आयोजन करके विजेता छात्र-छात्राओं को

महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य प्रचार समित्याः सौजन्येन पुरस्काराः प्रदत्ताः। अयं च महतो हर्षस्य विषयः आसीत् यत् विद्यार्थिनोऽध्यापकाश्च सोत्साहं सर्वेषु कार्यक्रमेषु भागमगृहणन्। अस्मिन् कार्यक्रमे श्रीमत्याः शशी जैनायाः या लालबहादुरशास्त्रि विद्यापीठे प्राध्यापिकाऽऽसीत्, तस्याः प्रशंसनीय सहयोगः प्राप्तोऽभवत्! न केवलं दिल्लीनगर्यां अपितु अन्य प्रदेशेषु–मध्यप्रदेशराजस्थानादि प्रदेशेष्वपि तथैव कार्यक्रमं प्रस्तूय साहित्यस्य वितरणमभूत्। एतैः कार्यक्रमैः छात्रेषु मद्य–मांसादीनां त्यागं प्रति विशेषरुचिः अजायत्। अधिकांशाः छात्राः प्रेरिताः भूत्वा यावज्जीवनं तेषां त्यागमकुर्वन्। सर्वोदयकन्या विद्यालयस्य मोतीबागस्थानस्य मुस्लिमछात्रा कुमारी सभेनूर इत्यनया सर्वोत्तमया–तत्परतया सह प्रथमं पुरस्कारः प्राप्तः सा च आजीवनं मद्य–मांस–मधूनां त्यागमकरोत्। अनेनैव प्रकारेण एतैः शैक्षणिक आयोजनैः छात्रेषु चरित्रनिर्माणस्य अनेकोदाहरणानि दृष्टिगोचराणि भवन्त्येव।

॥ इति षष्ठोऽध्यायः॥

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव प्रचार समिति के सौजन्य से पुरस्कृत किया गया, यह बड़े हर्ष का विषय रहा कि विद्यार्थी एवं अध्यापक बड़े उत्साहपूर्वक समस्त कार्यक्रम में भाग लेते थे। प्रो. शशि प्रभा जैन, लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ-दिल्ली का सराहनीय सहयोग इस कार्यक्रम में प्राप्त हुआ। मात्र दिल्ली ही नहीं वरन् अन्य प्रदेशों– मध्यप्रदेश, राजस्थान इत्यादि में भी इसी प्रकार की संगोष्ठियाँ आयोजित करने हेतु साहित्य प्रदान किया गया। इन संगोष्ठियों के माध्यम से विविध धर्मों के विद्यार्थियों में मद्य-मांस आदि त्याग के प्रति विशेष अभिरुचि जागृत होती है। अधिकांशतः विद्यार्थी जीवनभर के लिए इनका त्याग कर देते हैं। सर्वोदय कन्या विद्यालय-मोतीबाग-1 में कक्षा-6 की मुस्लिम छात्रा कु. सभेनूर ने बहुत अच्छी तैयारी के साथ प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया और उसने आजीवन मद्य, मांस, मधु का त्याग कर दिया। इसी प्रकार ऐसे शैक्षणिक आयोजनों से विद्यार्थियों में चारित्र निर्माण के अनेकों उदाहरण दृष्टिगोचर होते रहते हैं।

अध्याय-7

भगवान महावीर जन्मभूमि

कुण्डलपुर

विश्व के क्षितिज पर

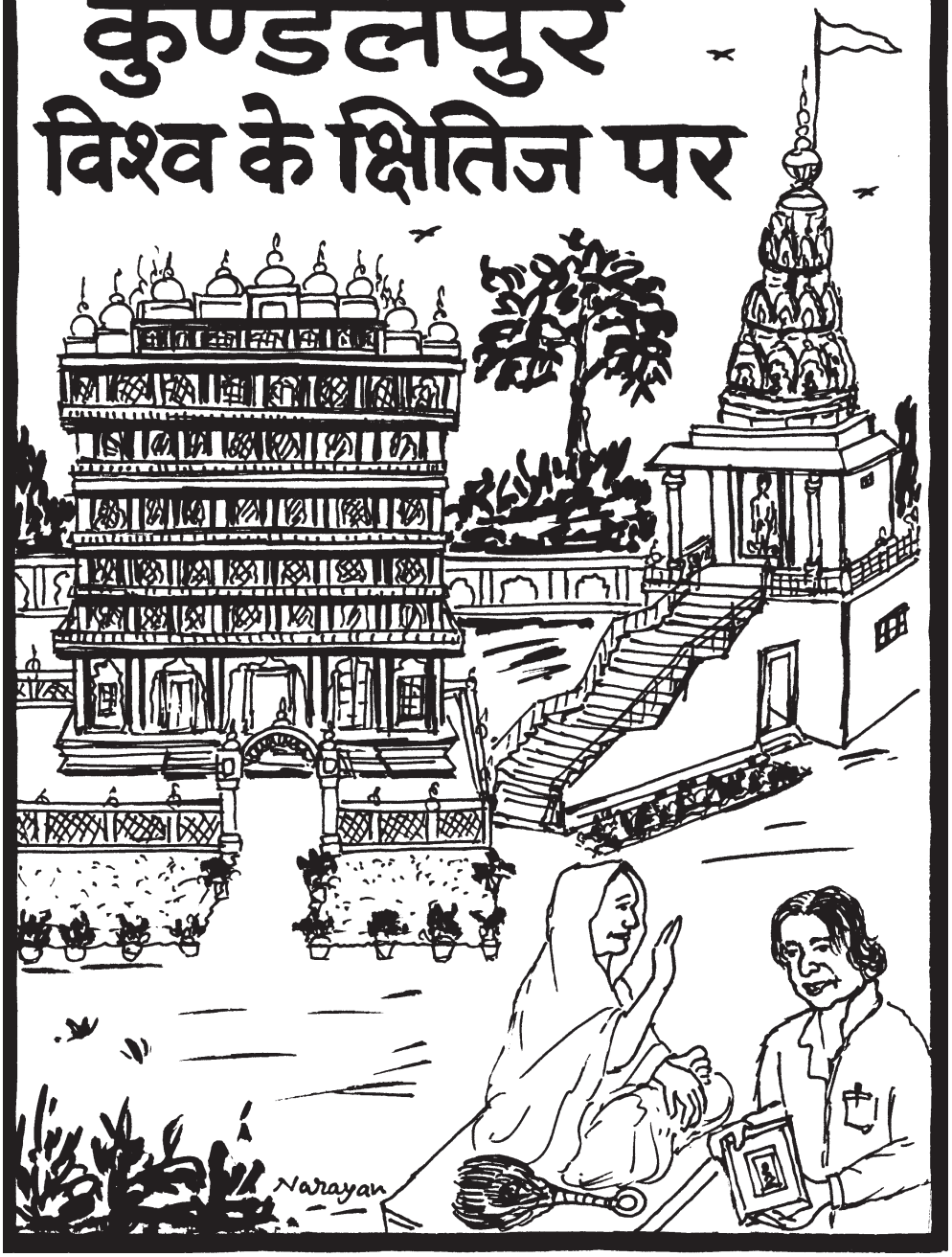

सप्तमोऽध्यायः

भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिः कुण्डलपुरम्–विश्वस्य क्षितिजे

वैदिकग्रन्थस्य मनुस्मृतेरेकेन श्लोकेनाहमस्याः ऐतिहासिकयात्रायाः शुभारम्भं करोमि।

यत्र योगेश्वरो कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्री विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।

अर्थात् धृतराष्ट्रस्य समीपगुपविष्टः एकः सञ्जयनामको दिव्यज्ञानी पुरुषः कुरुक्षेत्रे चलायमानं कौरवपाण्डवयोर्युद्धं स्व दिव्यचक्षुषा समीक्ष्याकथयत् यत्–राजन्! यत्र साक्षात् योगेश्वरो नारायणोः श्रीकृष्णो विद्यमानोऽस्ति, यत्र धनुर्विद्यायां प्रवीणो महारथी अर्जुनः धनुः बाणं चोद्यतमकरोत्, तत्र विजयश्रीः तौ एव प्राप्ता भविष्यति, ईदृशी मम निश्चिता मान्यता विद्यते।

प्रिय पाठकाः! उपर्युक्तोदाहरणेनानुसारेणैव वर्तमाने सम्पूर्णस्य जैन समाजस्येयं निश्चिता धारणास्ति यत् ''यत्कार्यं योगेश्वर्याः रूपेण पूज्या गणिनीप्रमुखा ज्ञानमती माता स्वहस्ते अगृह्णात् मूर्तरूपं च प्रदातुं कर्मठपार्थ सदृशाः कार्यकर्तारः युक्ताः सन्ति, तु भवन्तोऽवगच्छन्तु तत्कार्यं निश्चितरूपेण पूर्णतया सफलतया सह पूर्णं तु भविष्यत्येव।''

इदं कार्यं शिष्यनिर्माणस्य भवतु, साहित्यसर्जनस्य वा भवतु जम्बूद्वीपस्य रचनायाः निर्माणस्य भवतु, अन्येषां वा तीर्थानां निर्माणस्य, विकासस्य, जीर्णोद्धारस्य वा स्यात्, सर्वैः

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-विश्व के क्षितिज पर

वैदिक ग्रंथ मनुस्मृति के एक श्लोक से मैं इस ऐतिहासिक यात्रा का शुभारंभ करती हूँ–

यत्र योगेश्वरो कृष्णः, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।।

अर्थात् धृतराष्ट्र के समीप बैठे एक संजय नामक दिव्यज्ञानी पुरुष ने कुरुक्षेत्र में चल रहे कौरव-पांडव के युद्ध को अपने दिव्यचक्षु से देखकर कहा कि–हे राजन्! जहाँ साक्षात् योगेश्वर नारायण श्री कृष्ण मौजूद हैं, जहाँ धनुर्विद्या में प्रवीण अर्जुन महारथी ने धनुष-बाण संभाल रखा है, वहाँ विजयश्री उन्हीं को प्राप्त होगी, ऐसी मेरी निश्चित मान्यता है।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार ही वर्तमान में पूरे जैन समाज की यह निश्चित धारणा बन गई है कि ''जिस कार्य को योगीश्वरी के रूप में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हाथ में ले लिया है एवं मूर्तरूप देने में कर्मठ पार्थ जैसे कार्यकर्ता जुट गये, तो समझो वह कार्य निश्चितरूप से अपूर्व सफलता के साथ पूर्ण होना ही है।''

वह कार्य चाहे शिष्य निर्माण का रहा, साहित्य सृजन का रहा, जंबूद्वीप रचना निर्माण का रहा या अन्य तीर्थों के निर्माण, विकास एवं जीर्णोद्धार का रहा, सभी के द्वारा ज्ञानमती

ज्ञानमत्याः मातुः अभिज्ञानं एकस्य लौहनिर्मितस्य व्यक्तित्वस्य रूपेणा भवेत्।

एताभिरेव विशेषताभिः समन्विता माता यद्यपि सम्पूर्णे देशे स्व 53 वर्षीये संयम प्रधाने जीवने प्रायः सम्पूर्णं देशं परिभ्रम्यानेकतीर्थयात्राः सम्पन्नाः अकरोत्, तथापि भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्येयं यात्रा विशेषरूपेण ऐतिहासिक यात्रा तेन कारणेन जाता, यदस्यां केवलं तीर्थयात्रायाः भावो न विद्यते, अपितु इतिहासस्य संस्कृतेश्च संरक्षणस्य मूलं लक्ष्यं समाविष्टं विद्यते। यथा–आचार्यः श्री कुन्दकुन्दः स्वामी जिनधर्मस्य रक्षाहेतवे संघसहितो गिरनारसिद्धक्षेत्रस्य वन्दनामकरोत् अकलंकदेवश्च जिनधर्मस्य प्रभावनाहेतवे तारादेव्यासह शास्त्रार्थमकरोत्। अनेनैव प्रकारेण प्राचीन परम्परार्षग्रंथानुसारेण भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः उपेक्षितं स्वरूपं विकासस्य नवमायामं दातुं एव अ श्री ज्ञानमती माता कुण्डलपुरयात्रायाः संकल्पमगृह्णात्। संभवतः दूरगामिनं भविष्यं पश्यन्नेव वर्तमानस्य विद्वच्छिरोमणिः प्राचार्यः फिरोजाबाद निवासी श्री नरेन्द्रप्रकाशः प्रायः सभास्वपि कथयितुं तत्परोऽस्ति यत् ''पूज्यमाता ज्ञानमती स्वजीवने यान्यपि कार्याण्यकरोत्, तानि सर्वाणि तुलायाः एकस्मिन् भागे निहितानि भवन्तु, कुण्डलपुरविकासस्य च प्रेरणायाः कार्यं द्वितीये भागे निहितं भवेत् तु मम दृष्ट्यां तुलायाः द्वितीयो भागः भारवान् भविष्यति, यतोहि तस्या इदं योगदानं युग–युगान्तरेभ्यः न केवलं जैन समाजाय, परन्तु विश्वायाविस्मरणीयैवाभवत् प्राचीनायाश्च वास्तविकतायाः जन्मभूमेः रक्षायामिदं कार्यं वास्तविके ऐतिहासिकं वर्तते।''

नूतनेतिहासस्य निर्माणं प्राचीनस्येतिहासस्य रक्षां कर्तुं विरलेषु महापुरुषेषु ज्ञानमती

माताजी की पहचान एक फौलादी व्यक्तित्व के रूप में बन चुकी है।

इन अनेक विशेषताओं से समन्वित पूज्य माताजी ने यूँ तो अपने 53 वर्ष के संयमी जीवन में लगभग पूरे देश में भ्रमण करके अनेक तीर्थयात्राएँ सम्पन्न की हैं, तथापि भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर की यह यात्रा विशेषरूप से ऐतिहासिक यात्रा इसलिए बन गई कि इसमें मात्र तीर्थयात्रा का भाव नहीं वरन् इतिहास एवं संस्कृति के संरक्षण का मूल लक्ष्य समाविष्ट है। जैसे– आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने जिनधर्म की रक्षा हेतु संघ सहित गिरनार सिद्धक्षेत्र की वंदना की थी और अकलंक देव ने जिनधर्म की प्रभावना हेतु तारादेवी से शास्त्रार्थ किया था। इसी प्रकार प्राचीन परम्परा एवं आर्ष ग्रंथानुसार भगवान महावीर जन्मभूमि के उपेक्षित स्वरूप को विकास का नया आयाम देने हेतु ही ज्ञानमती माताजी ने कुण्डलपुर यात्रा का संकल्प लिया। संभवतः दूरगामी भविष्य को देखते हुए ही वर्तमान के विद्वत् शिरोमणि प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन-फिरोजाबाद (उ.प्र.) प्रायः सभाओं में भी कहा करते हैं कि ''पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अपने जीवन में जितने भी कार्य किये हैं, वे सभी तराजू के एक पलड़े पर रखे जायें और कुण्डलपुर विकास प्रेरणा का कार्य दूसरे पलड़े पर रखा जाये तो मेरी दृष्टि में दूसरा पलड़ा भारी रहेगा क्योंकि युग-युग तक उनकी यह देन जैनसमाज ही नहीं, विश्व के लिए अविस्मरणीय हो गई और प्राचीन वास्तविक जन्मभूमि की रक्षा का यह कार्य वास्तव में ऐतिहासिक है।''

नूतन इतिहास का निर्माण एवं प्राचीन इतिहास की रक्षा करने वाले विरले महापुरुषों में ज्ञानमती

माता सत्यमेव अस्मिन्युगे कीर्तिमानमस्थापयत्, यत् श्रद्धालुभ्यः श्रद्धास्पदमभवत् कतिपयासहिष्णुभ्यश्च जनेभ्यो निन्दास्पद भवितुं कारणेन तीव्र कर्मबन्धनस्य कारणमप्यभवत्।

कुण्डलपुरं प्रति विहारस्य वार्तामाकर्ण्य दिल्लीवासिनोऽधीराः अभवन्–**13 फरवरी 2002 तद् शुभदिनं, यत्र कुण्डलपुरस्य विकासस्य नूतन कथायाः प्रारम्भीकरणमासीत्, तत्रैव दिल्लीवासिभ्यः आश्चर्यमिश्रितस्य दुःखस्य कारणमासीत्। ते विहारस्य वार्तां श्रुत्वैवाधीराः अभवन्। महिलासंघठनस्य अध्यक्षा श्रीमती आशा जैना दुःखिता भूत्वा अचिन्तयत् यत् कुत्र तु वयं मार्च मासे महिला संघटनस्यैकं भव्य कार्यक्रमं मातुः सान्निध्ये आयोजयितुं तत्पराः आस्म कुत्र च माताश्रीः अस्मान् परित्यज्य एताद्दूरं गन्तुं निर्णयमकरोत्। मॉडलटाउनोप–नगरस्य श्रीमती सुलोचना जैना रोदितुमारभत् अन्येषां च भक्तानां नेत्राणि अश्रुपूरितान्यभवन्। अनेक जनाः अकथयन्–मातः! भवती अस्मान् एतस्मिन् जन्मजयन्तीमहोत्सववर्षे यदपि कार्यं कर्तुं वक्ष्यति, वयं करिस्यामः, परन्तु भवती अस्मभ्यं दूरं न गच्छतु। परन्तु दृढनिश्चयेन युक्तायाः मातु मुखोद्भवः प्रत्येकशब्दः पाषाणस्य रेखेव दृढो भवति अतएव सा सर्वान् प्रबोध य शान्तानकरोत्। पश्चात एवं विहारस्य सा पावनवेलापि समागता, पुनः 20 फरवरी 2002 दिने मातुः राजाबाजार स्थानात् मंगलविहारोऽभवत्।**

इण्डियागेट स्थानात् मंगलविहारोऽभवत्–**तदैतिहासिकं दिनं महत् शुभमासीत् यदा प्रातः कालादेवानेक शुभसमाचाराः प्राप्ताः अभवन्। विहारात् पूर्वं विशेष सभायामनेकगणमान्याः**

माताजी ने सचमुच इस युग में कीर्तिमान स्थापित किया है जो श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धास्पद रहा एवं कतिपय असहिष्णु व्यक्तियों के लिए निंदास्पद होने से तीव्र कर्मबंध का कारण भी बना।

➢कुण्डलपुर के लिए विहार की बात सुनकर दिल्लीवासी अधीर हो उठे–

13 फरवरी 2002 का वह शुभ दिन, जहाँ कुण्डलपुर के विकास की नूतन कथा का प्रारंभीकरण था, वहीं दिल्लीवासियों के लिए आश्चर्यमिश्रित दुःख का कारण था। विहार की बात सुनते ही वे अधीर हो उठे। महिला संगठन की अध्यक्षा श्रीमती आशा जैन को सुनकर तो गहरा धक्का लगा कि कहाँ तो हम लोग मार्च में महिला संगठन का इतना भव्य कार्यक्रम माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में आयोजित कर रहे थे और कहाँ माताजी ने हमें छोड़कर इतनी दूर जाने का निर्णय ले लिया। मॉडल टाउन की सुलोचना जी रोने लगीं और भी अनेकों भक्तों की आँखों से अश्रुधारा बह निकली, अनेक लोग कहने लगे– माताजी! आप हमें इस जन्मजयंती महोत्सव वर्ष में जो भी कार्य बताएंगी, हम करेंगे, पर आप हमसे दूर मत जाइए। परन्तु दृढ़निश्चयी माताजी के मुख से निकला प्रत्येक शब्द पत्थर की लकीर के समान अमिट होता है अतः उन्होंने सभी को समझा-बुझाकर शांत कर दिया और देखते ही देखते विहार की वह पावन बेला भी आ गई पुनः 20 फरवरी 2002 को पूज्य माताजी का राजाबाजार से मंगल विहार हो गया।

➢इण्डिया गेट से हुआ मंगल विहार–

वह ऐतिहासिक दिवस बड़ा शुभ था जब प्रातःकाल से ही अनेकों शुभ समाचार मिल रहे थे।

महानुभावाः उपातिष्ठन्, येषु श्रीनिर्मलकुमारः सेठी, श्रीचक्रेश कुमारः, प्राध्यापको रतनो जैनः, फतेहपुर निवासी श्री सरोजकुमारः, श्री कैलाशचन्द्रः लखनऊ निवासी प्रमुखाः आसन् सर्वे च जनाः इण्डियागेटपर्यन्तं पताकां गृहीत्वा अत्यन्तप्रसन्नतापूर्वकं पदयात्रामकुर्वन्, यदधुना भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिः शीघ्रमेव विश्वस्य मानसपटले व्याप्ता भविष्यति। पदविहारी प्रत्येकजनः भगवतो महावीरस्य पूज्यायाः मातुश्च जयकारैः प्रतिस्थानमनुगुंजितम-करोत्। इण्डियागेट स्थलं प्राप्य माताश्रीः देशाय स्वसन्देशं प्रेषितमकरोत् पुनः तु तस्मादैतिहासिक स्थलात् वर्द्धितेः मातुश्चरणे कुण्डलपुरस्य इतिहासस्य प्रथमं पृष्ठमलिखताम्।

संघपतेर्विनम्रा प्रार्थना–**लाला श्रीमहावीर प्रसादो जैनः बंगाली स्वीट सैन्टर दिल्लीनिवासी यदा मातुः विहारस्य वार्तामशृणोत् सः तत्कालमेवावदत्–मातः! तव विहारस्य वार्तां श्रुत्वा अहं हर्षं विषादं च द्वयमेवानुभवामि। विषादस्तु एतदर्थं यत् भवती अस्मान् भक्तान् विहाय एतावद्दूरं गच्छति, हर्षस्तु एतदर्थं यत् अधुना भवत्याः करकमलाभ्यामेकस्यान्यतीर्थस्योद्धारो भविष्यति। सः अग्रेऽकथयत्– यत् मातः! वैदिकमहाभारते एतद् वर्णनं प्राप्यते यत् कौरवाणां पाण्डवानां च युद्धः आरब्धुं निकटमासीत्, तु श्रीकृष्णः पक्षद्वयमेकं वरदानमयाचितुमकथयत्, तु कौरवाः अक्षौहिणीं सेनामयाचन्त, यदा पाण्डवाः श्रीकृष्णमेवायाचन्त, मातः! तेनैव प्रकारेण जनाः शासनेन 100 कोटिरूप्यकाणां प्राप्तौ व्यस्ताः सन्ति, किन्तु अहं तु समाजाय भवत्सदृशीं**

विहार से पूर्व हुई विशेष सभा में अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे, जिनमें श्री निर्मल जी सेठी, श्री चक्रेश जैन, प्रो. रतन जैन, श्री सरोज जैन-तह. फतेहपुर, श्री कैलाशचंद जैन-लखनऊ रहे और सभी लोग इण्डिया गेट तक झण्डा लेकर अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक चले। कनॉट प्लेस से इण्डिया गेट तक पहुँची इस पदयात्रा में सभी के मुख पर प्रसन्नता थी कि भगवान महावीर की जन्मभूमि अब शीघ्र ही विश्व के मानस पटल पर छा जाएगी। पदविहार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति भगवान महावीर एवं पूज्य माताजी के जयकारों से हर गली को अनुगुंजित कर रहा था। इण्डिया गेट पर पहुँचकर पूज्य माताजी ने देश के नाम अपना मंगल संदेश प्रसारित किया और फिर तो उस ऐतिहासिक स्थल से बढ़े माताजी के कदमों ने मानो कुण्डलपुर के इतिहास का प्रथम पृष्ठ ही लिख दिया।

➢संघपति की विनम्र प्रार्थना–

पूज्य माताजी के कुण्डलपुर विहार की बात जब संघपति महावीर प्रसाद जी-बंगाली स्वीट सेंटर, दिल्ली ने सुनी, तो वे तुरंत बोल पड़े– माताजी! आपके विहार की बात सुनकर मुझे हर्ष और विषाद दोनों हो रहे हैं। विषाद तो इसलिए कि आप हम भक्तों को छोड़कर इतनी दूर जा रही हैं और हर्ष इसलिए कि अब आपके करकमलों से एक और तीर्थ का उद्धार होने वाला है। उन्होंने आगे कहा–

माताजी! वैदिक महाभारत में यह वर्णन आता है कि जब कौरवों और पाण्डवों का युद्ध होने वाला था, तो श्रीकृष्ण ने दोनों पक्षों से एक-एक वर मांगने के लिए कहा था तो कौरवों ने अक्षौहिणी सेना मांगी थी जबकि पांडवों ने श्रीकृष्ण को ही मांग लिया था उसी प्रकार पूज्य माताजी! लोग भले ही सरकार द्वारा घोषित 100 करोड़ के अनुदान को पाने में लगे हुए हैं किंतु मैं तो समाज

साध्वीमेव प्राप्तुमिच्छामि, यस्याः माध्यमेन वयं समये–समये मार्गदर्शनं प्राप्नुमः। पुनः सः वैदिकरामायणस्याप्येकमुदाहरणं प्रस्तुतमकरोत्, यत् येन प्रकारेण चतुर्दश वर्षाणां वनवासस्य पश्चात् यदा रामचन्द्रोऽयोध्यायां प्रत्यागतः, तु रामस्य राज्याभिषेकस्य तत्परता आसीत्, राज्याभिषेकात् पूर्वं रामचन्द्रो मातरं कौशल्यामकथयत्, यत् अद्य महत्या प्रसन्नतायाः दिनमस्ति, अस्मिन्नवसरे मयेच्छा वर्तते यत् राज्यतिलकात् पूर्वं चतसृभ्यः वधूभ्योऽपि कश्चिदुपहारः प्रदत्तः भवेत्। माता कौशल्या सर्वाः अपृच्छत् तदा कयाचित् किञ्चिद् कयाचिच्च किंचिद् अयाचत् परन्तु शत्रुघ्नस्य पत्नी श्रुतकीर्तिस्तूष्णीमतिष्ठत्। सा पृष्टा यत् भवत्यपि किंचिद् याचतां, भवती तूष्णीं किमर्थमस्ति, यदा अनेकवारं सा पृष्टा, तु सा अकथयत्–प्रथमं भवान् वचनं ददातु यदहं याचिष्ये, भवती मह्यं अवश्यमेव दास्याति। तदा रामोऽकथयत्–त्वं अधिकाधिकं अयोध्यायाः राज्यं याचिस्यसे, तत्तु मया भरत–शत्रुघ्नाभ्यां दत्तमेवास्ति, पुनरपि अहं वचनं ददामि यत् यदपि भवती याचिष्यते, तदहमवश्यमेव दास्यामि। रामस्य वचनं श्रुत्वा श्रुतकीर्तिरश्वस्ता जाता, साऽवदत्–यदहं तानि वस्त्राणि इच्छामि, यानि भवन्तः वनवासेऽधारयन्, येनाहं अग्रे आगतान् स्व वंशजान् इदं कथयितुं समर्था भवेयम्, यदस्माकं वंशे एतादृशाः महापुरुषाः अजायन्त्, ये स्व सुखानि उपेक्ष्य स्वपितुः वचनानि अपालयन्। तेनैव प्रकारेण मातः! भवत्याः कुण्डलपुरगमनकाले मह्यं भवत्याः मातुश्चन्दनामत्याश्च ताः पवित्राः शाटिकाः सुलभाः भवन्तु, याः धृत्वा भवत्यौ कुण्डलपुरस्य विषये चिन्तनमकुरुताम्

से आप जैसी तपस्वी साध्वी को पाने की इच्छा रखता हूँ, जिनके माध्यम से समय-समय पर हमें मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे। पुनः उन्होंने वैदिक रामायण का भी एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि जिस प्रकार चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् जब रामचन्द्र अयोध्या में वापस आए, तो राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ की जा रही थीं। राज्याभिषेक से पूर्व श्री रामचन्द्र ने माता कौशल्या से कहा– माते! आज बहुत ही प्रसन्नता का दिवस है, इस अवसर पर मेरी इच्छा है कि राजतिलक की खुशी में चारों पुत्रवधुओं को भी कुछ न कुछ भेंट दी जाए। माता कौशल्या द्वारा सभी से पूछने पर किसी ने कुछ और किसी ने कुछ मांगा परन्तु शत्रुघ्न की पत्नी श्रुतिकीर्ति खामोश रहीं। उनसे पूछा गया कि आप भी कुछ मांगे, आप खामोश क्यों हैं? जब कई बार उनसे कहा गया तो वे बोलीं– पहले आप वचन दें कि मैं जो मांगूंगी, वह आप अवश्य देंगे। तब राम ने कहा– तुम अधिक से अधिक अयोध्या का राज्य मांगोगी, वह तो मैंने भरत-शत्रुघ्न को दिया हुआ ही है, अभी तो मैं उस सिंहासन पर बैठा भी नही हूँ। फिर भी मैं वचन देता हूँ कि तुम जो भी मांगोगी, मैं अवश्य दूँगा। इस प्रकार के वचनों को सुनकर श्रुतिकीर्ति आश्वस्त हो गईं और बोलीं– मुझे आप लोगों के वो वस्त्र चाहिए, जो आप लोगों ने वनवास में पहने थे, ताकि मैं भी आने वाली पीढ़ियों को बता सकूँ कि हमारे वंश में ऐसे आज्ञाकारी महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने सुखों की परवाह न करके अपने पिता के वचनों का पालन किया। उसी प्रकार माताजी! मुझे भी आपके कुण्डलपुर जाते समय आपकी एवं चंदनामती माताजी की वह पवित्र साड़ी चाहिए, जिसे पहनकर आप लोगों ने कुण्डलपुर के विषय में चिंतन

यतः तत् सिद्धायिन्योः देव्योः प्रेरणायाः फलं विद्यते। भवत्योः एताभिः शाटिकाभिः मम परिवारस्य वंशजाः भवत्योः भक्तेः प्रेरणां प्राप्स्यन्ति।

तदनन्तरमपि सः एकां पंक्तिमवदत्–

''भवत्या सह निवसन् अहं कुण्डलपुरस्य भगवन्तं प्राप्नवम्।''

2601 रुप्यकाणां राशिः कुण्डलपुराय वरदानं जातम्–**यद्यपि भारत सदृशे धर्मपरायणे देशे अनेकाः एवंभूता श्रेष्ठिनः सन्ति ये धर्मपरायणाः विद्यन्ते, ये यदि इच्छन्ति ते स्वधनबलेन एकैकं तीर्थं विकसितं कर्तुं शक्नुवन्ति, परन्तु मातुः सदैवेदं कथनमासीत् यत् तीर्थविकासे जनजनस्य भावना संयुक्ताः भवितव्याः, येन प्रत्येक श्रावकः इमामनुभूतिं कुर्यात् यदिदं तीर्थं ममास्ति, अहमपि चास्मै अर्थांजलिं समर्पयम्। पुनः सर्वेषां सहयोगं विना तीर्थविकासो संभवो नास्ति। अतः प्रत्येकजनस्य भावनां तेन तीर्थेन सह संयोजनाय भगवतो महावीरस्य 2600 वर्षाणां प्रतीकस्वरूपं 2601 रूप्यकाणां दानराशिः घोषितोऽभवत्। तदा तु पश्यतः पश्यतः एव 2601 दानराशीनां पंक्तिरूपस्थिताभवत्, यस्यां सर्वप्रथमं राशि प्रदानं कर्तृणां सौभाग्यं महेन्द्र जैन–मुकेश जैन–जिनेन्द्र प्रसादो जैन ठेकेदारस्य परिवारः प्राप्नोत्। अनेन प्रकारेण 2601 राशिः विन्दुना–विन्दुना सागरं पूर्णं कर्तुं उक्तिः चरितार्थां कुर्वन् कुण्डलपुर तीर्थाय साकाररूपं प्रादात्।**

एकस्याः श्राविकायाः दानभावना–**यतोह्यधुना सम्पूर्णं वातावरणं कुण्डलपुरमयं चाभवत्, अतः प्रत्येक दर्शनार्थिने भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिविषये वार्तया तस्मै तेन सह युक्तं**

किया है क्योंकि यह सब सिद्धायिनी देवी की प्रेरणा का फल है। आपकी ये पवित्र साड़ी मेरे परिवार की भावी पीढ़ी को भी आप जैसे महान गुरुओं की भक्ति करने की प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

इसके साथ ही उन्होंने एक पंक्ति भी गुनगुनाई–

''रहके साथ तुम्हारे मैंने मांग लिए कुण्डलपुर के भगवान''

➢2601/-की राशि कुण्डलपुर के लिए वरदान बन गई–

यूँ तो भारत जैसे धर्मपरायण देश में अनेक ऐसे धर्मपरायण श्रेष्ठी उपस्थित हैं, जो चाहें तो केवल अपने ही धन से एक-एक तीर्थ को विकसित कर सकते हैं परन्तु माताजी का सदैव यही कहना रहता है कि तीर्थ विकास में जन-जन की भावनाएँ जुड़नी चाहिए, जिससे प्रत्येक श्रावक को यह लगे कि यह तीर्थ मेरा है और मैंने भी इसमें अपनी कुछ अर्थांजलि समर्पित की है। फिर बिना सबके सहयोग के तीर्थविकास संभव नहीं है। अतः जन-जन की भावनाएँ उस तीर्थ के साथ जोड़ने के उद्देश्य से भगवान महावीर के 2600 वर्षों के प्रतीकरूप 2601/- की अनुदान राशि की घोषणा की गई। फिर तो देखते ही देखते 2601/- की राशि देने वालों की लाइन लग गई, जिसमें सर्वप्रथम राशि देने का सौभाग्य श्री महेन्द्र जैन, मुकेश जैन, जिनेन्द्र प्रसाद जैन-ठेकेदार परिवार ने प्राप्त किया। इस प्रकार उस 2601/-की राशि ने बूंद-बूंद से सागर भरने की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए कुण्डलपुर तीर्थ को साकार रूप दे दिया।

➢एक श्राविका की दान भावना–

चूँकि अब पूरा वातावरण कुण्डलपुरमय हो रहा था अतः प्रत्येक दर्शनार्थी को भगवान महावीर

भवितुं प्रेरणा प्रदत्ता। एकस्मिन् दिने कुण्डलपुरस्य योजनायां प्रकाशं पातयन्ती अहमवदम् तस्यैव मध्ये दिल्ली निवासिनी श्रीमती अंजू जैना श्री विकासस्य धर्मपत्नी या रवीन्द्रस्य भगिन्याः पुत्री अस्ति, त्रिचतुर्विंशतिमन्दिरस्य एकस्याः प्रतिमायाः स्वीकृतिं कुर्वन्ती अकथयत् मातः! मम पक्षतोऽपि कुण्डलपुरे एका प्रतिमा स्थापिता भविष्यति। अहं तामकथयम्, अञ्जू! एकबारं स्वपतिं पृच्छ, तदा साकथयत् किं भविष्यति यदि अहं एकं आभूषणं न्यूनं धारयिष्यामि। यदि मम द्रव्येण एतावतो महतस्तीर्थस्य विकासाय किञ्चित् योगदानं संलग्नं भविष्यति तथा च अहं प्रतिमानिर्माणस्य वृहत्पुण्यं प्राप्य सौभाग्यशालिनी भविष्यामि । एतच्छ्रुत्वा मह्यमपि प्रसन्नताभवत् मनसि चागतं यदीदृशी दानभावना प्रत्येक गृहिण्यै प्रेरणास्पदा अस्ति।

मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रे शताष्ट फुट विशालशरीरायाः प्रतिमायाः निर्माणहेतवे शिलापूजनम्–**3 मार्च 2002 दिने नवकोटीनां महामुनीनां निर्वाणभूमौ महाराष्ट्रप्रान्तस्य मांगीतुंगीसिद्धक्षेत्रे पर्वतस्याखण्डशिलायां भगवतः ऋषभदेवस्य शताष्ट फीट विशालशरीरायाः मूर्तेः निर्माणहेतवे शिलापूजने समारोहे भागं गृहीतुं 27 फरवरी दिने ब्र. रवीन्द्रो जैनः पूज्य मातुराशीर्वादेन सह गन्तुं तत्परोऽभवत्। तदाहं पर्याप्तमंगलमन्त्रान् पठन्ती इमामेव भावनां व्यक्तामकरवं, यत् युगस्येतिहासनिर्मात्रीं इमां युवाशक्तिं भगवान् प्रचुरशक्तिं ददातु अयं च स्वस्थश्चिरायुश्च भवतु।**

पुनः 1 मार्च दिने दिल्लीनगर्याः प्रायः 80 महानुभावाः संघस्थाश्च ब्रह्मचारिण्यः वीणा–इन्दु–मंजू एताः भगिन्योऽपि गन्तुं तत्पराः अभवन्। अत्रैका घटनोल्लेखनीया वर्तते

की जन्मभूमि के बारे में बताते हुए उन्हें उससे जुड़ने की प्रेरणा दी जा रही थी। इसी मध्य एक दिन वहाँ की योजना पर प्रकाश डाला जा रहा था, तभी दिल्ली में रहने वाली श्रीमती अंजू जैन ध.प. श्री विकास जैन (ब्र. रवीन्द्र जी की भतीजी) ने तीन चौबीसी मंदिर की एक प्रतिमा की स्वीकृति करते हुए कहा कि माताजी! मेरी ओर से भी कुण्डलपुर में एक प्रतिमा रहेगी। मैंने उससे कहा कि अंजू! अपने पति से एक बार पूछ लो, तब वह कहने लगी कि क्या हुआ अगर मैं एक गहने का सेट कम पहन लूँगी। अगर मेरे द्रव्य से ऐसे महान तीर्थ के विकास में कुछ योगदान लगता है और प्रतिमा विराजमान करने का मुझे पुण्य प्राप्त होता है, तो मुझे खुशी होगी। यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मन में आया कि ऐसी दान भावना प्रत्येक गृहिणी के लिए प्रेरणास्पद है।

➢मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर 108 फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण हेतु शिलापूजन–

3 मार्च 2002 को 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाणभूमि महाराष्ट्र प्रांत के मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के पर्वत की अखण्ड शिला में भगवान ऋषभदेव 108 फीट विशालकाय मूर्ति निर्माण हेतु शिलापूजन समारोह में भाग लेने हेतु 27 फरवरी को ब्र. रवीन्द्र जी पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद के साथ रवाना हुए, उस समय मैंने खूब मांगलिक मंत्र पढ़ते हुए यही भावना व्यक्त की कि युग का इतिहास बनाने वाली इस युवा शक्ति को भगवान बहुत शक्ति दें और ये खूब स्वस्थ व चिरायु रहें।

पुनः 1 मार्च को दिल्ली से लगभग 80 महानुभाव एवं संघस्थ ब्रह्मचारिणी कु. बीना, कु. इन्दु एवं कु. मंजू भी रवाना हुए। यहाँ एक घटना उल्लेखनीय है कि फरवरी में अहमदाबाद के गोधरा

यत् फरवरीमासे अहमदाबादस्य गोधराकाण्डेन सर्वत्र भीतिरासीत् अतो दिल्लीनगर्याः मांगीतुंगी प्रति गन्तुकानां यात्रिणां एकं रेलप्रकोष्ठं पूर्वमेवारक्षितमासीत, तस्य व्यवस्थापकाः अपि उत्तरदायित्वे किञ्चित् त्रस्ताः अभवन्, तु माता सर्वान् निर्भयान् भूत्वा गन्तुं प्रेरणामदात् रेलवेस्टेशने च सर्वेषां हस्तेषु पवित्रं सूत्रं बद्धमकारयत्, फलस्वरूपं सर्वेषां यात्रा विघ्नेन रहिता सम्पन्नाभवत्।

3 मार्च 2002 दिने अस्याः विशालकायामूर्तेः शिलापूजन समारोहः संघपतिना लाला महावीर प्रसादेन–दिल्लीनिवासिना सानन्दं सम्पन्नोऽभवत्। अस्मिन्नवसरे विशालधर्म–सभायां दूरप्रदेशेभ्यः सहस्रशो महानुभावाः मांगीतुंगीं समागच्छन्। समारोहस्याध्यक्षता केन्द्रीय टैक्सटाइल राज्यमंत्री श्री धनञ्जयजैनोऽकरोत्। विशिष्टाः अतिथयः महाराष्ट्रशासनस्य सभापतिः अरुणभाई गुजराती, श्री स्वरूपसिंहो नाइकः–वनमंत्री, श्री चन्द्रकान्त खैरः, श्री प्रकाशकल्लप्पा, श्री राजेन्द्रदर्डा, श्री ए.टी.पवारः, श्री शंकर रावः, श्री राजेन्द्रः पाटनी, सर्वे प्रायः महाराष्ट्रस्य राज्यमंत्रिणो मुख्याः आसन्। आगताः सर्वे अतिथय भव्यप्रतिमायाः निर्माणे केन्द्रशासनस्य राज्यशासनस्य च पक्षतः पूर्णसहयोगं प्रदातुमाश्वासनमदुः ते अनया भव्य प्रतिमया सम्पूर्णविश्वे शान्तेः कामनया सह पूज्यमातुः ज्ञानमत्याः वन्दनं कुर्वन्तः अस्य कार्यस्य प्रशंसामकुर्वन्। अस्मिन्नवसरेऽनेकाविशेषसहयोगिनो यांत्रिणः भूगर्भशास्त्रिणश्चोपस्थिता आसन्। सभायाः मंगलाचरणं संघस्थौ भगिन्यौ वीणा–इन्दुश्च अकुरुताम्। सभायाः संचालनं

काण्ड से सभी जगह भय व्याप्त था अतः दिल्ली से मांगीतुंगी जाने वाले यात्रियों की एक रेलबोगी जो पहले से बुक हो चुकी थी, उसके व्यवस्थापक भी जिम्मेदारी से कुछ घबराने लगे, तो माताजी ने सबको निर्भय होकर जाने की प्रेरणा दी और रेलवे स्टेशन पर मंत्रित कलावा सभी यात्रियों के हाथ में बंधवा दिया, फलस्वरूप सभी की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

3 मार्च 2002 को इस विशालकाय मूर्ति का शिलापूजन समारोह संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन-संघपति, बंगाली स्वीट सेंटर-दिल्ली (सपरिवार) द्वारा सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशाल धर्मसभा में दूर-दूर से हजारों श्रद्धालु भक्त मांगीतुंगी पधारे। समारोह की अध्यक्षता माननीय श्री वी.धनंजय कुमार जैन (केन्द्रीय टेक्सटाइल राज्यमंत्री-भारत सरकार) ने की तथा विशिष्ट अतिथि श्री अरुण भाई गुजराती-सभापति विधान सभा (महा. सरकार), श्री स्वरूप सिंह नाइक-वनमंत्री महाराष्ट्र राज्य, श्री प्रकाश कल्लपप्पा अवाड़े-वस्त्रोद्योग एवं आदिवासी राज्यमंत्री (महा.), श्री राजेन्द्र दर्डा-ऊर्जा राज्यमंत्री (भारत सरकार), श्री ए.टी.पवार-वन राज्य मंत्री (महाराष्ट्र राज्य), श्री चन्द्रकांत खैरे-सांसद, श्री शंकर राव अहिरे-विधायक,श्री राजेन्द्र जी पाटनी वाशिम-विधायक मुख्य रहे। आगत मंत्री महोदय ने एक स्वर से भव्य प्रतिमा के निर्माण में केन्द्र सरकार एवं महाराष्ट्र सरकार द्वारा अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देते हुए इस भव्य प्रतिमा द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शांति की कामना के साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वंदन करते हुए इस कार्य की प्रशंसा की। इस अवसर पर अनेक विशेष सहयोगी इंजीनियर, भूगर्भ-शास्त्री भी उपस्थित थे। सभा का मंगलाचरण संघस्थ बहनों कु. बीना व इन्दू ने किया तथा सभा

डॉ. श्री पन्नालाल जैन पापड़ीवालः–महामंत्री–मूर्तिनिर्माणसमितिरकरोत्। सभायां उपस्थितायाः आर्यिकायाः श्रेयांसमत्याः आशीर्वादोऽपि सर्वेभ्यः प्रदत्तः आसीत् अनेके च भक्ताः अस्याः विशालायाः मूर्तेः निर्माणहेतवे दानराशिमघोषयन्। प्रायः 10 सहस्रं उपस्थितजनसमूहमवलोक्य नेतारोऽपि चकिताः आसन् शिलापूजने चोपस्थितानां सर्वेषां अतिथीनां हार्दिकः स्वागतः कृतः।

किं न स्यात् साधुसंगमात्–**महापुराणग्रन्थे 62 तमे सर्गे लिखितमस्ति यत साधोः संगत्या सर्वं संभवमस्ति, इयमेव वार्ता होडलं प्रति विहारसमये चरितार्थाभवत्। बल्लभगढ़नगरात् प्रतिदिनं 3–4 पुरुषाः एका महिला च सहैव पदविहारं कर्तुं मया सहागच्छन्, वार्तासु ज्ञातमभवत् यत् तेषु 2–3 पुरुषाणां किमपि व्यसनमस्ति, पुनः यदा तेभ्यः प्रेरणां प्रादात्, ते तत्कालमेव मम वार्तामन्यन्त। तेभ्यः एकः तम्बाकुं एकः गुटखां अन्यश्च मदिरां यावज्जीवनमत्यजन्।**

अनेकभव्यात्मानः ''मनोकामनासिद्धयेः महावीरव्रतमगृह्णन्''–**येन मनोकामना सिद्धिमहाव्रतेन मम मनोकामना फलीभूता कृता, तत् महत् व्रतं जनाः सहस्रसंख्यायां गृहीत्वा स्वमनोकामनाः फलीभूतां कुर्वन्तु, ईदृशी मम भावनास्ति अतः मातुः आज्ञयाहं स्थाने–स्थाने श्रावकान् श्राविकाश्चैतस्य व्रतस्य महत्त्वं दर्शयित्वा अनेकान् स्त्रीपुरुषान् तस्य व्रतस्य ग्रहणमकारयम्। आगरानगरे तु एकस्मिन् स्थाने 150 जनाः महावीरव्रतमगृहणन्। अनेनैव प्रकारेण अनेक–स्थानेषु जनाः सहस्रसंख्यायां एतद् व्रतमगृहणन्, येभ्यः केषांचित् भ्रातृणां भगिनीनां च**

का संचालन डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल महामंत्री–मूर्ति निर्माण कमेटी ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित पूज्य आर्यिकारत्न श्री श्रेयांसमती माताजी का आशीर्वाद भी सभी को प्राप्त हुआ व अनेक भक्तों ने इस विशालमूर्ति निर्माण हेतु दानराशि घोषित की। लगभग 10 हजार की जनता को देखकर नेता भी चकित हो उठे तथा शिलापूजन में भाग लेने वाले सभी अतिथियों का भावभीना स्वागत किया गया।

➢किं न स्यात्साधुसंगमात्–

महापुराण ग्रंथ में 62वें सर्ग में लिखा है कि साधु संगति से सब कुछ संभव है, यही बात होडल की ओर विहार करते समय चरितार्थ हुई। बल्लभगढ़ से 3-4 पुरुष और 1 महिला रोज मेरे साथ पद विहार करने हेतु आते थे, एक दिन बातों-बातों में पता लगा कि उनमें से 2-3 पुरुषों को कोई न कोई व्यसन है पुनः जब मैंने उन्हें प्रेरणा प्रदान की, तो उन्होंने तुरंत ही मेरी बात मान ली और उनमें से एक ने तम्बाकू, एक ने गुटखा और एक ने शराब का हमेशा के लिए त्याग कर दिया।

➢अनेक भव्यात्माओं ने लिए ''मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत''–

जिस मनोकामना सिद्धि महावीर व्रत ने मेरे मनोभावों को फलीभूत किया, उस महान व्रत को हजारों लोग ग्रहणकर अपनी मनोकामनाओं को सफलीभूत करें, ऐसी मेरी हार्दिक भावना थी, अतः माताजी की आज्ञा से मैंने स्थान-स्थान पर अनेकों श्रावक-श्राविकाओं को इस व्रत का महत्त्व बताया। फिर तो अनेकों स्त्री-पुरुषों ने इस व्रत को ग्रहण किया, आगरा शहर में तो एक स्थान पर 150 लोगों ने ''महावीर व्रत'' को ग्रहण किया। इसी प्रकार अनेकों स्थानों पर हजारों लोगों ने इस व्रत को ग्रहण किया, जिसमें से कई भाई-बहनों के व्रत पूर्ण भी हो चुके हैं और

व्रतानि पूर्णानि अभवन् केचिज्जनास्तु 2–3 बारं व्रतमेतदमहणन् एतस्य च प्रत्यक्षं चमत्कारस्य वर्णने न श्रान्ताः भवन्ति।

कुण्डलपुरतीर्थस्य मंत्री अजयजैनस्तीर्थविकासस्य विस्तृत चर्चामकरोत्–**10 मार्च दिने वयं छटीकरा नाम्नः लघुग्रामस्य पंचायतभवनेऽतिष्ठाम, तत्र पटनानगरात् कुण्डलपुरतीर्थस्य मानदो मंत्री अजयकुमारो जैनः राजगृहीक्षेत्रस्य प्रबन्धको मातुः दर्शनार्थं समागच्छताम्। तदा मंत्री अजयो जैनः मातरमकथयत् यत् केन प्रकारेण वैशालीस्थापनायाः पश्चात् कुण्डलपुरमुपेक्षितमभवत् परन्तु तथापि वैशाल्याः न जानामि कीदृशो योगः आसीत् यत् अनेकैः प्रयत्नैरपि तस्याः विकासो नाभवत्।**

पुनः यदा तस्य मात्रा सह कुण्डलपुरविकासस्य विषये चर्चाभवत्, तु सर्वासां वार्तानां पश्चात् अजयो जैनो मामवदत् यत् मातः! अद्य ज्येष्ठां मातरं वार्तां कृत्वा मम मस्तिष्कः बलात् स्वच्छऽभवत् मम मस्तिष्कस्य च स्वच्छताभवत्।

सिद्धक्षेत्रे चौरासीमथुरायां मंगलपादार्पणम्–**11 मार्च दिने प्रातः 9.30 वादनसमये अन्तिमस्यानुबद्धकेवलिनो जम्बूस्वामिनः निर्वाणभूमौ चौरासीमथुरातीर्थे समागत्य मन्दिरस्य दर्शनं कृत्वा मनः आल्हादितमभवत्। अत्रागत्य ज्ञातमभवत् यत् अद्य दिनात् 200 वर्षाणि पूर्व अत्रोत्खननात् यस्मिन् स्थाने जम्बूस्वामिन पाषाणचरण चिन्हं प्राप्नुताम् तस्मात् समयात् तस्मिन्नेव स्थले तीर्थं निर्मापितमस्ति, तस्मात् पूर्वमिदं तीर्थं नासीत्। ग्रामेऽवश्यमेव**

कुछ लोग तो 2-3 बार इस व्रत को कर चुके हैं और इसके प्रत्यक्ष चमत्कार का वर्णन करते नहीं थकते हैं।

➢कुण्डलपुर जैन तीर्थ के मंत्री अजय जी के द्वारा तीर्थ विकास की विस्तृत चर्चा–

10 मार्च को हम लोग छटीकरा नामक छोटे से ग्राम के पंचायत भवन में ठहरे हुए थे, वहाँ पटना से कुण्डलपुर तीर्थ के मानद मंत्री अजय कुमार जैन एवं राजगृही के मैनेजर माताजी के दर्शनार्थ पधारे। उस समय अजय जी ने माताजी को बताया कि किस प्रकार वैशाली स्थापना के बाद कुण्डलपुर को उपेक्षित किया गया किन्तु फिर भी वैशाली का न जाने कैसा योग रहा कि अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उसका विकास नहीं हो पाया।

पुनः जब पूज्य माताजी से उनकी कुण्डलपुर विकास के संदर्भ में विस्तृत चर्चा हुई, तो सारी बात होने के बाद अजय जी मुझसे बोले कि माताजी! आज बड़ी माताजी से बात करके मेरा दिमाग एकदम ठीक हो गया और मेरा Brain Wash हो गया है।

➢सिद्धक्षेत्र चौरासी मथुरा में मंगल पदार्पण–

11 मार्च को प्रातः 9.30 बजे अंतिम अनुबद्ध केवली श्री जम्बूस्वामी की निर्वाणभूमि चौरासी मथुरा तीर्थ पर पहुँचकर मंदिर दर्शन कर मन आल्हादित हो उठा। यहाँ आकर पता लगा कि आज से 200 वर्ष पूर्व यहाँ खुदाई में जिस स्थान पर जम्बूस्वामी के पाषाण चरण मिले हैं, तब से उसी स्थान पर तीर्थ बनाया गया है, उससे पूर्व यह तीर्थ नहीं था, हाँ! गाँव में अवश्य मंदिर रहे होंगे।

मन्दिराणामस्तित्वं स्यात्। अत्र तीर्थे संलग्ने शिलालेखे लिखितं विद्यते यत् जम्बूस्वामी 84 वर्षाणां आयुषि 84 लक्ष योनिभ्यो मुक्तो भूत्वा अत्रैव मोक्षं प्राप्नोत् अतएव अस्य क्षेत्रस्य नाम ''मथुरा चौरासी'' अभवत्।

सायं 4 वादने वयं मात्रा सह क्षेत्रस्य परिसरस्य भ्रमणमकुर्म। 12 मार्चदिने पूज्या माता जम्बूस्वामिनः श्रीचरणयोः केशलुञ्चनमकरोत्। अस्मिन्नवसरे बल्लभगढ़–फरीदाबाद–पलवल–कामा–भरतपुर–कोसीकलां प्रभृतिस्थानेभ्यः बसवाहनैः अनेकजनाः एतं केशलुंचनं समारोहं वीक्षितुं समागताः। दिल्लीनगरात् संघपतिः लाला महावीरप्रसादः सपत्नीकः, प्रेमचन्द्रः, कमलकुमारः, अनिलश्च, सत्येन्द्रजैनः जिनेन्द्र जैनः महोदयादयः केचिज्जनाः समागच्छन्। समारोहस्य पश्चाद् यदा कुण्डलपुरस्य शिलान्याससम्बन्धे सभाभवत्, तु कमलचन्द्रो जैनः खारीबावली दिल्ली निवासी प्रसन्नो भूत्वा दिल्लीनगरात् पूर्णमेकं रेलप्रकोष्ठं निःशुल्कं नेतुं भोजनादिकस्य च व्यवस्थां स्व पक्षतः कर्तुं स्वीकृतिं प्रादात्।

मथुरायां 6 दिवसीये प्रवासे वयं जिनमन्दिराणां दर्शनमकुर्म यत्रैव च कृष्णजन्मभूमिं, मथुरासंग्रहालयं, कंकालीटीला नामकं स्थानं अपश्याम, तत्रैवाचार्य श्री सुबलसागरस्य शिष्याभ्यां: आर्यिका श्री अजितमती–सुमतिमतीभ्यां सह मिलित्वा प्रसन्नतामन्वभवाम। सरलहृदययुक्तं मातृद्वयं ज्ञानमती मातरं मिलित्वा हृदये प्रसन्नमभवत् भावमुग्धे चाभवताम्। मातुश्च प्रस्थानकाले एतयोः द्वयोः नेत्राणि अश्रुपूरितान्यभवन्। वास्तवे साधु–साध्वीनां मिलनमपि रोमांचकारि वात्सल्यपूर्णं च भवति।

यहाँ तीर्थ पर लगे शिलालेख में लिखा है कि जम्बूस्वामी ने 84 वर्ष की आयु में 84 लाख योनियों से छूटकर यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया था, इसलिए इस क्षेत्र का ''चौरासी मथुरा'' नाम पड़ा।

शाम 4 बजे पूज्य माताजी एवं हम सभी ने क्षेत्र परिसर का भ्रमण किया। 12 मार्च को मथुरा के जिनमंदिर में पूज्य माताजी ने जम्बूस्वामी के श्रीचरणों में केशलोंच किया। इस अवसर पर बल्लभगढ़, फरीदाबाद, पलवल, कामा, भरतपुर, कोसीकलां आदि स्थानों से बसों द्वारा काफी लोग इस केशलोंच समारोह को देखने हेतु पधारे। दिल्ली से संघपति लाला महावीर प्रसाद जी (सपत्नीक), प्रेमचंद जी, कमलचंद जी, अनिल जी, सत्येन्द्र जी, जिन्नो जी आदि कई लोग पधारे तथा समारोह के बाद जब कुण्डलपुर के शिलान्यास संबंधी मीटिंग हुई, तो कमलचंद जी-खारीबावली ने प्रसन्नमना होकर दिल्ली से पूरी एक रेलबोगी निःशुल्क ले जाने एवं भोजन आदि संबंधी व्यवस्था अपनी ओर से करने की स्वीकृति प्रदान की।

मथुरा के 6 दिवसीय प्रवास में जहाँ हमने जिनमंदिरों के दर्शन के साथ-साथ कृष्ण जन्मभूमि, मथुरा संग्रहालय, कंकाली टीला आदि का अवलोकन किया, वहीं आचार्य श्री सुबलसागर महाराज की शिष्याओं–आर्यिका श्री अजितमती माताजी एवं सुमतिमती माताजी से मिलकर मन में बड़ी खुशी हुई। सरल स्वभावी माताद्वय पूज्य ज्ञानमती माताजी के दर्शन कर भावविभोर हो गईं और माताजी से दूर होते समय इनकी आँखों में अश्रु आ गए। वास्तव में साधु-साध्वियों का पारस्परिक मिलन भी बड़ा रोमांचक और वात्सल्यमयी रहता है।

ताजनगर्यां आगरा नगरे संघस्य पदार्पणं महती धर्मप्रभावना च–**मुगलसम्राजः शाहजहां महोदयस्य तस्य च राज्ञ्याः बेगममुमताजस्य स्मृतिं कारयन्ती ताजनगरी आगरा, यत्र पर्यटकेभ्यः आकर्षणकेन्द्रमस्ति, तत्रैवेयं धर्मपरायणनगर्याः रूपेणापि विख्यातास्ति। यत्रानेकानि जिनमन्दिराणि जैनत्वस्य पताकां समारोपयंति। 20 मार्च दिने संघस्य मंगलपादार्पणं प्रभावनापूर्वकं आगरानगरे अभवत्। हरिपर्वतोपनगरस्य शान्तिनाथदिगम्बरजैनमन्दिरस्य दर्शनस्य पश्चात् परिसरे निर्मिते विशालसभागारे प्रवचनसभाऽभवत्। आगरानगरस्य दिगम्बरजैनपरिषद् अस्यनगरस्य प्रमुखा संस्था विद्यते।**

प्रवचनसभायां क्षुल्लकमोतीसागरः स्वओजस्विप्रवचने आगरा निवासिनः कुण्डलपुरस्य विकास अभियानेन सह योजयितुमाह्वानमकरोत् सः चास्यां वार्तायां बलमदात् यत् कुण्डलपुरमिदं प्रत्येकजनस्य 2601 रूप्यकाणां सहयोगेन निर्मितं विकसितं च भविष्यति। सम्पूर्णेन देशेन सह आगरानिवासिनां नामान्यपि कुण्डलपुरस्यैतस्यां विकासयोजनायां सम्मिलितानि भवितव्यानि। तस्य प्रवचनस्य पश्चात् परिषदो मंत्री सभायाश्च कुशलसंचालकः श्रीजितेन्द्रः सम्पूर्णं आगरासमाजं सम्बोधितं कुर्वन् अकथयत् यत् पूज्यया मात्रा कुण्डलपुरस्य विकासस्याभियानमिदं अस्मभ्यं सर्वेभ्यः गौरवस्य विषयो वर्तते। पुनः सः अस्मिन् अभियाने आगरानिवासिनां 500 नामानि लेखनस्य घोषणामकरोत्। तस्य भावनानुसारेण आगरा नगरस्य त्रिंशतनामानि अभवन्, यानि कुण्डलपुरस्य शिलालेखेंऽकितानि।

➢**ताज नगरी आगरा में संघ का मंगल पदार्पण एवं महती धर्मप्रभावना–**

मुगल सम्राट् शाहजहाँ और उनकी बेगम मुमताज के युग की याद दिलाती ताज नगरी आगरा जहाँ पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है, वहीं यह धर्मपरायण नगरी के रूप में भी जानी जाती है, जहाँ अनेकों जिनमंदिर जैनत्व की पताका को फहरा रहे हैं। 20 मार्च को संघ का मंगल पदार्पण प्रभावनापूर्वक आगरा शहर में हुआ। हरिपर्वत कालोनी के शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दर्शन के पश्चात् परिसर में निर्मित विशाल हॉल में प्रवचन सभा हुई। आगरा की दिगम्बर जैन परिषद यहाँ की सबसे प्रमुख संस्था मानी जाती है।

प्रवचन सभा में क्षुल्लक मोतीसागर जी ने अपने ओजस्वी प्रवचन में आगरावासियों को कुण्डलपुर के विकास अभियान के साथ जोड़ने हेतु आह्वान किया तथा उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह कुण्डलपुर जन-जन के 2601 रु. के सहयोग से निर्मित किया जा रहा है और पूरे देश की जनता के साथ-साथ आगरावासियों के भी अधिक से अधिक नाम कुण्डलपुर की इस विकास योजना में आना चाहिए। उनके उद्बोधन के पश्चात् परिषद के महामंत्री तथा सभा के कुशल संचालक श्री जितेन्द्र जी ने पूरी आगरा समाज को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूज्य माताजी द्वारा कुण्डलपुर विकास का यह अभियान हम सभी के लिए गौरव का विषय है। पुनः इसमें आगरा के 500 लोगों के नाम लिखवाने की उन्होंने घोषणा की। उनकी भावना के अनुसार आगरा से 300 से भी अधिक नाम हुए, जो कुण्डलपुर के शिलालेख पर अंकित हो चुके हैं।

गांधिनः दाण्डीयात्रायाः प्रतीकरूपेयं कुण्डलपुरयात्रा–**आवश्यकतैवाविष्काराणां जननी भवति। यथा परतंत्रभारतं स्वतन्त्रं कर्तुं महात्मागांधी मार्च 1930 मासे दाण्डी यात्रां प्रारम्भमकरोत् तस्याश्च यात्रायाः महत्त्वं 15 अगस्त 1947 दिने दिल्लीनगर्यां लालकिला नाम्नि स्थाने त्रिवर्णयुक्तां पताकां समारोप्य देशवासिनः आयोजयन्, तथैवाद्य अस्माकं राष्ट्रस्य गौरवकारिण्यः मातुः ज्ञानमत्याः इण्डियागेट दिल्लीनगर्याः प्रारब्धा महावीरजन्मभूमेः कुण्डलपुर–पर्यन्तमियं यात्रा जैनसमाजाय दाण्डी यात्रायाः अधिका महत्त्वपूर्णा विद्यते। कुण्डलपुरस्य विकासो भूत्वा यस्मिन् दिने महावीर जन्मभूमेः वास्तविकं रूपं संस्कृतं भूत्वा आगमिष्यति, तस्मिन् दिने मातुरियं यात्रा सम्पूर्ण जैन समाजाय एकस्य वास्तविकस्य इतिहासस्य दिग्दर्शनं कारयिष्यति।**

उक्तविचारान् कमलानगर–आगरानगरे पूज्यमातुः पदार्पणस्यावसरे प्रवचनसभायाः कुशलो युवासंचालकः श्री मनोजकुमारो जैनः प्रकटयन् अकथयत् यत् वयं चिन्तयितुमपि समर्थाः नास्मः यत् पूज्यमातृसदृश्यः महासाध्व्यः चरणे कदापि अस्माकं आगरानगरे निक्षिप्ते भविष्यतः। वास्तवे भक्तिगंगायां निमग्ना आगरा महानगरस्य जनता फरवरी 2003 मासे कुण्डलपुरे प्रस्तावितेपंचकल्याणके महाकुम्भे महामस्तकाभिषेके च गन्तुं संकल्पिता आसीत्, तत्रैव तस्य विकासायापि पूर्णं समर्पणभावं दर्शयितुं तत्परास्ति।

अन्यस्थानेष्वपि विशेषोत्साहः आसीत्–**धूलियागंज आगरानगरे प्रवचनसभायाः पश्चात्**

➢गांधी के दाण्डी मार्च का प्रतीक है यह कुण्डलपुर यात्रा–

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। जैसे परतन्त्र भारत को आजाद कराने के लिए महात्मा गांधी ने मार्च 1930 में दांडी मार्च प्रारंभ किया था और उस यात्रा का महत्त्व 15 अगस्त 1947 को दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा झण्डा फहराने के बाद देशवासियों को ज्ञात हुआ था, वैसे ही आज हमारी राष्ट्रगौरव पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की इण्डिया गेट दिल्ली से प्रारंभ हुई महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-नालंदा (बिहार) तक की यह यात्रा जैन समाज के लिए दांडी मार्च से अधिक महत्त्वपूर्ण है। कुण्डलपुर का विकास होकर जिस दिन महावीर जन्मभूमि का वास्तविक रूप निखरकर आएगा, उस दिन माताजी की यात्रा सारे जैन समाज के लिए एक असली इतिहास का दिग्दर्शन कराएगी।

उक्त विचार कमलानगर-आगरा में पूज्य माताजी के पदार्पण अवसर पर प्रवचन सभा के कुशल युवा संचालक श्री मनोज कुमार जैन ने प्रकट करते हुए कहा कि हम सोच भी नहीं सकते थे कि पूज्य माताजी जैसी महान साध्वी के चरण कभी हमारे आगरा शहर में भी पड़ेंगे।" वास्तव में भक्तिगंगा में सराबोर आगरा की जनता फरवरी 2003 में कुण्डलपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव में जाने हेतु जहाँ अभी से संकल्पित हो रही थी, वहीं उसके विकास के लिए पूर्ण समर्पण भाव को भी दर्शा रही थी।

➢अन्य स्थानों पर भी लोगों का उत्साह विशेष था–

धूलियागंज-आगरा में प्रवचन सभा के बाद सन्तभवन का शिलान्यास होना था, जब मैंने

सन्तभवनस्य शिलान्यासः भवितुं प्रस्तावितः आसीत्, यदाहं तस्य नाम ''महावीरजयंती भवनं'' कर्तुं प्रेरणामदाम्, तु सामाजिकनिर्णयानुसारं स्वरूपचन्द्रो मार्शन्सोऽवस्थितो भूत्वा अस्याः वार्तायाः घोषणामकरोत्। अत्र मन्दिरेऽतिसुन्दरवेदिकायां पीतलधातोः कमलासनानि दृष्ट्वा मनः प्रसन्नमभवत्। धूलियागंजे नशिया मन्दिरमवलोक्य प्रातः तस्मात् स्थानात् प्रस्थानमभवत्, पुनः तत्रतः सप्तमन्दिराणां दर्शनं कृत्वा मोतीकटरा स्थलं प्राप्ताः, अत्र मन्दिरे पर्याप्त प्राचीनाः 700 जिनप्रतिमाः सन्ति भित्तिषु च कांचस्यानेकचित्राणि सन्ति। अनेन सहैव भक्तामरस्तोत्रस्य 48, चारित्रचक्रवर्तिनः शान्तिसागरादीनामाचार्याणां ज्ञानमत्या मातुश्च 10–15 चित्राणि सन्ति कासंचित् अन्यार्यिकाणामपि चित्राणि सन्ति। अस्मात् स्थानात् विहृत्य वेलनगंजेऽपि त्रिदिवसीयः प्रवासोऽभवत्।

पूज्यमातुः 50 तमं क्षुल्लिकादीक्षादिनम्–**चैत्र कृष्ण प्रतिपदायाः सा पवित्रा तिथिः आगरा नगरे आगच्छत्, यदा श्री महावीरजी अतिशयक्षेत्रे भारतगौरवमाचार्यः श्रीदेशभूषणः अस्य युगस्य प्रथमायै कुमार्यै कन्यायै क्षुल्लिका दीक्षां प्रदाय वीरमतीतिनाम्ना सुशोभितामकरोत्। अद्य वीरमत्याः ज्ञानमतीपर्यन्त तेषु 50 वर्षेषु सा महातपस्विनी माता जैनजगति अनेक चेतनान् अचेतनान् च निधीन् प्रादात्, येषामुपकारान् इदं जगत् युग–युगान्तरेभ्यः विस्मर्तुं न शक्यति। आगरा निवासिनामिदं महत सौभाग्यमेवासीत् यत् तेभ्यः इमां तिथिं प्राप्तुं स्वर्णिमावसरः प्राप्तोऽभूत्, अतएव प्रातः 8.30 वादन समयात् 11.30 वादनपर्यन्तं धर्मशाला प्रांगणे सभायाः आयोजनमभवत्, यस्यामनेकजनाः पूज्यां मातरं प्रति स्व विनयाञ्जलीः समर्पयन्।**

इसका नाम **''महावीर जयंती भवन''** रखने की प्रेरणा प्रदान की, तो सामाजिक निर्णयानुसार स्वरूपचंद जी मार्शन्स ने खड़े होकर इस बात की घोषणा कर दी। यहाँ के मंदिर में बहुत ही सुन्दर वेदी में पीतल के कमलासन देखकर मन खुश हुआ। धूलियागंज में नशिया मंदिर होकर प्रातः वहाँ से प्रस्थान हुआ, पुनः वहाँ से 7 मंदिरों के दर्शन करके मोतीकटरा पहुँचे, यहाँ के जिनमंदिर में काफी प्राचीन-प्राचीन 700 जिनप्रतिमाएं हैं तथा दीवालों पर काँच के कई एक चित्र हैं। इसके साथ ही भक्तामर के 48, चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आदि 10-15 आचार्यों एवं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी आदि कुछ आर्यिकाओं के भी सुन्दर चित्र बने हैं। यहाँ से विहार कर बेलनगंज में 3 दिवसीय प्रवास रहा।

➢पूज्य माताजी का 50वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस–

चैत्र वदी एकम् की वह पवित्र तिथि आगरा में आ गई, जब श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने इस युग की प्रथम कुंवारी कन्या को क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर **''वीरमती''** नाम से सुशोभित किया था, आज वीरमती से ज्ञानमती तक के उन 50 वर्षों में उन महातपस्विनी माताजी ने जैन जगत को अनगिनत चेतन-अचेतन निधियाँ प्रदान कीं, जिनका उपकार यह जगती युगों-युगों तक नहीं चुका सकती, आगरा वालों का यह महान सौभाग्य ही था कि उन्हें इस तिथि को आत्मसात करने का सुनहरा मौका मिल गया था अतः प्रातः 8.30 बजे से 11.30 बजे तक धर्मशाला प्रांगण में सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक लोगों ने पूज्य

आर्यिका श्रीसुभूषणमत्यपि स्व विनयांजलिं समर्पयत्–**आगरानगर्यां पूज्यमातुः संघस्य पूज्यस्व.मुने दयासागरस्य शिष्या आर्यिकासुभूषणमत्या सह सौहार्दपूर्ण मिलनमभवत्। पूज्यमातुः प्रथमं दर्शनं कृत्वा प्रसन्नमनसः भूत्वा तस्याः 50 तमे क्षुल्लिकादिवसे स्व विनयाञ्जलिं समर्पयन्ती सा अकथयत् यत् अद्यास्माकं यावत् शारीरिकमायुर्नास्ति, तस्मात् अधिकप्राचीनं मातुः ज्ञानमत्याः दीक्षितजीवनमस्ति। सा चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यशान्तिसागरा–दारभ्य सप्त आचार्याणां दर्शनमकरोत्, एतेभ्यः कतिचित् आचार्यान् जैन शास्त्राणामध्यापनम–करोत्। अस्याः अपूर्वज्ञानस्य धनवत्याः पूज्यमातुः तेजस्विनि मुखे एतावति आयुषि अपि अतीवसरलता, वात्सल्यं निर्द्वन्दिता च प्रकटिता अस्ति। जीवने प्रथमबारं अस्याः दर्शनं कृत्वा अहं स्वगुरु परम्पराया महत्तां पवित्रतां च अनुभूय यद् अनुभवमहं प्राप्तमकरवं, तमेव वृद्धिंगतं कर्तुमपि शक्तिर्भवतु, अस्यैवाशीर्वादस्य इच्छया मातुश्चरणयोः कोटिशः वंदनां करोमि।**

पुनः भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः प्रकरणे साकथयत् यत् यदा बालो जन्म गृह्णति तु अभिज्ञानशक्तौ आगते मातुः दिशमंगुलिं कृत्वा दर्शयति यत् ''तव पितास्ति'', तमेव पितरं मत्वा बालः स्व भविष्यस्य निर्माणस्य स्वप्नं दर्शयति, सः स्व प्रतिवासिनः न प्रष्टुं गच्छति यत् मम पिता कोऽस्ति, तथैवास्माकं तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां निर्णयं केवलमस्माकं जिनवाणी

माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की।

➢आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी ने भी समर्पित की विनयांजलि–

आगरा नगरी में पूज्य माताजी संघ एवं पूज्य मुनि स्व. श्री दयासागर महाराज की शिष्या पू. आर्यिका श्री सुभूषणमती माताजी संघ का पारस्परिक सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। पूज्य माताजी के प्रथम बार दर्शन कर गद्गदमना होकर उनके 50वें क्षुल्लिका दीक्षा दिवस पर अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए उन्होंने कहा कि आज हम लोगों की जितनी शारीरिक उम्र नहीं है, उससे भी बहुत अधिक वर्ष पुराना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का दीक्षित जीवन हो चुका है। इन्होंने चारित्र चक्रवर्ती प्रथम दिगम्बराचार्य श्री शांतिसागर महाराज से लेकर आज तक उस परम्परा के सात आचार्यों को देखा है, इनमें से अनेक आचार्यों को जैन शास्त्रों का गहन अध्ययन कराया है। इस अपूर्व ज्ञान की धनी पूज्य माताजी के तेजस्वी मुख पर इस उम्र में भी अतीव सरलता, वात्सल्य और निर्द्वन्दता झलक रही है। जीवन में पहली बार इनके दर्शन करके मैंने अपनी गुरु परम्परा की पवित्रता और महानता को स्वयं इनके मुख से सुनकर जो अनुभव प्राप्त किया है, उसे ही वृद्धिंगत करने की शक्ति मुझे प्राप्त हो, इसी आशीर्वाद की इच्छा से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में मेरा त्रय प्रदक्षिणा पूर्वक कोटि-कोटि नमन।

पुनः महावीर जन्मभूमि के प्रकरण पर अपनी ओजस्वी वाणी में उन्होंने कहा कि जब बच्चा जन्म लेता है तो पहचान शक्ति आते ही उसे माँ जिस ओर उंगली दिखाकर कह देती है कि यह तुम्हारे पिता हैं'' उसी को पिता मानकर बालक अपने भविष्य निर्माण का स्वप्न संजोता है न कि वह पड़ोसियों से पूछने जाता है कि मेरा पिता कौन है? ठीक उसी प्रकार से हमारे तीर्थंकरों की

माता एव करोति। शासनमितिहासकाराः आधुनिकशोधकर्तारश्च तेषां निर्णयं कर्तुं अधिकारिणो न सन्ति।

अर्धां रोटिकां खादिष्यामः किन्तु कुण्डलपुरस्य रचनां करिष्यामः–**समाजसेविना श्रावकेण श्री शिखरचन्द्रेण आगरा निवासिना स्व विनयांजलिं अर्पितां कर्त्रा कथितेनानेन वाक्येन आगरा समाजस्य भक्तिभावनाः आन्दोलिताः कृताः तस्य चानेन वाक्येन भक्ता ''महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुरं'' स्व शिरः सु मस्तकेषु च निधाय तस्य विकासाय महत् योगदानमकुर्वन्।**

परिषदः यशस्वी अध्यक्षः श्री मनोहरलालो जैनः सीमारहितेनोत्साहनेन सह कुण्डलपुरे भगवतो महावीरस्य महाकुम्भमहामस्तकाभिषेके महता जनसमूहेन सहभागं गृहीतुमुद्घोषणामकरोत्।

बेलनगंजस्थानात् छीपीटोला स्थानं, छीपीटोलास्थानाच्च ताजगंजे पादार्पणमभवत्। अस्य स्थानस्य मन्दिरं चतुर्भ्य शतभ्यो वर्षभ्योऽपि प्राचीनं विद्यते, अत्र च भगवतः पार्श्वनाथस्य अत्यन्तमनोज्ञा विक्रम संवतः 1497 वर्षाणां प्रतिमा व्यराजत्। ताजगंजात् ज्योतिनगरं पुनः जयपुरभवनं गच्छन्त्यः हरिपर्वतं समागताः। अनेन प्रकारेण आगरा नगरस्य त्रिंश्त्मंदिराणां दर्शनं कृत्वा पूज्यमातुः अस्माकं च सर्वेषां मनः प्रसन्नमभवत्। वस्तुतः एतानि जिनमन्दिराणि अस्माकं संस्कृतेर्गौरवाणि सन्ति।

अनेन प्रकारेण आगरा नगरस्य 26 उपनगराणां पक्षतः जनाः मातुश्चरणयोः श्रीफलं समर्प्य तत्र पादार्पणं कर्तुमनुरोधमकुर्वन्। प्रायः 19 दिवसीयस्य आगरा प्रवासस्य मध्ये

जन्मभूमियों का निर्णय केवल हमारी जिनवाणी माता के अनुसार होगा। सरकार, इतिहासकार या आधुनिक शोधकर्ताओं को उनका निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं है।

➢**''आधी रोटी खाएंगे, पर कुण्डलपुर को बनाएंगे''–**

समाजसेवी श्रावक श्री शिखरचंद जैन-आगरा के द्वारा अपनी विनयांजलि समर्पित करते हुए कहे गए उक्त वाक्य ने आगरा समाज की भक्ति भावनाओं को आंदोलित कर दिया और उनके इस नारे के साथ अनेकानेक भक्तों ने ''महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर'' को सिर आँखों पर रखकर उसके विकास में भारी योगदान दिया।

परिषद के यशस्वी अध्यक्ष श्री मनोहरलाल जैन ने असीम उत्साह के साथ कुण्डलपुर में भगवान महावीर स्वामी के महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव में भारी जनसमूह के साथ भाग लेने का उद्घोष किया।

बेलनगंज से छीपीटोला और छीपीटोला से ताजगंज में पदार्पण हुआ, यहाँ का मंदिर 400 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है और यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की अत्यन्त सुन्दर वि.सं. 1497 की प्रतिमा विराजमान हैं। ताजगंज से ज्योतिनगर पुनः जयपुर हाउस होते हुए हरिपर्वत पहुँचे। इस प्रकार आगरा के 30 मंदिरों के दर्शन कर पूज्य माताजी एवं हम सभी का मन प्रसन्न हो उठा, वस्तुतः ये जिनमंदिर हमारी जिनसंस्कृति के गौरव हैं, उनकी शान हैं।

इस प्रकार आगरा की 26 कालोनियों की ओर से लोगों ने माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल समर्पित कर वहाँ पधारने का अनुरोध किया। लगभग 19 दिवसीय आगरा प्रवास के मध्य संघ का

संघस्य आगरानगरस्य विभिन्नेषु उपनगरेषु भ्रमणमभवत्।

हरिपर्वते–आगरानगरे भगवतः ऋषभदेवस्य जयन्ती–**चैत्रकृष्णनवम्यां, 6 अप्रैल दिने भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मकल्याणकस्य शुभावसरे हरिपर्वते मातुः प्रेरणया ऋषभजयन्ती उत्साहेना–योजिता, यस्यां प्रातः पाण्डुकशिलायां भगवतः ऋषभदेवस्य शताष्ट कलशैरभिषेकोऽभवत् तत्पश्चात् सभागारे अत्यन्त सुन्दरेण संगीतध्वनिना सह ऋषभदेवविधानं सम्पन्नमभवत्।**

विधानस्य मध्ये सम्पूर्ण आगरा जैनसमाजस्य दि. जैनपरिषदश्चाध्यक्षः श्री मनोहरलालो जैनः, महामंत्री जितेन्द्रकुमारजैनादयः सर्वेऽपि मातरं श्रीफलं समर्प्य पूज्यमातरमत्यधिक–माग्रहम– कुर्वन् यत् भवती महावीरजयन्ती पर्यन्तं आगरानगरे एव तिष्ठतु, वयं कुण्डलपुरस्य निर्माणकार्यस्य सर्वव्यवस्थां करिष्यामः।

रात्रौ ''सती चन्दनाया'' नाटकस्य मंचनमभवत्। 7 अप्रैल 2002 दिने सभागारे ऋषभदेव–संगोष्ठ्याः महिलासम्मेलनस्य चायोजनं कृतम्। अत्र च फिरोजाबाद निवासिनः प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाशस्यौजस्विवक्तव्यमभवत्, तत्रैव दिल्लीनगर्याः समागतो लाला महावीर प्रसादो जैनः प्रायः 40 मिनट पर्यन्तं भाषणं कुर्वन् जनसमूहाय गुरुभक्तेः मातुश्च कार्यकलापानां वर्णनं श्रावयित्वा भक्तौ निमग्नमकरोत् तदाहं स्व प्रवचने सर्वाणि धार्मिकाणि शासकीयानि च प्रमाणानि प्रस्तूय कुण्डलपुरस्य वार्तामकथयम्।

आगरा की विभिन्न कालोनियों में भ्रमण हुआ।

➢हरिपर्वत-आगरा में ऋषभदेव जयंती–

चैत्र वदी नवमी, 6 अप्रैल को भगवान ऋषभदेव के जन्म-तपकल्याणक के शुभ अवसर पर हरिपर्वत में माताजी की प्रेरणा से ऋषभदेव जयंती धूमधाम से मनाई गई, जिसमें प्रातः पाण्डुकशिला पर भगवान ऋषभदेव का 108 कलशों से अभिषेक हुआ तत्पश्चात् सभागार के अन्दर अति सुन्दर संगीत ध्वनि के साथ ऋषभदेव विधान सम्पन्न हुआ।

विधान के मध्य पूरी आगरा की जैन समाज एवं दिगम्बर जैन परिषद-आगरा के अध्यक्ष मनोहर लाल जैन, महामंत्री-श्री जितेन्द्र कुमार जैन आदि सभी ने पूज्य माताजी को श्रीफल चढ़ाकर पूज्य माताजी से अत्यधिक आग्रह किया कि आप महावीर जयंती तक आगरा में अवश्य रुकें, हम सभी आपको आश्वासन देते हैं कि कुण्डलपुर की पूरी जिम्मेदारी हम लोग संभालेंगे।

रात्रि में ''सती चंदना'' नामक नाटक का मंचन हुआ। 7 अप्रैल 2002 को सभागार में ऋषभदेव संगोष्ठी एवं महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें जहाँ प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद का विद्वत्तापूर्ण ओजस्वी वक्तव्य हुआ, वहीं दिल्ली से पधारे संघपति लाला महावीर प्रसाद जी ने लगभग 40 मिनट भाषण करते हुए जनसमूह को गुरुभक्ति एवं माताजी के कार्यकलापों का वर्णन सुनाकर भक्ति में सराबोर कर दिया पुनः मैंने अपने प्रवचन में सभी धार्मिक एवं सरकारी प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कुण्डलपुर की बात बताई।

आगरा निवासिनो भावसिक्तं प्रस्थानसमारोहमकुर्वन्–**9 अप्रैल 2002 दिने प्रातः सरलाबागस्थानात् 7 वादनसमये प्रस्थाय कमलानगरे जिनमंदिरस्य दर्शनमकुर्म। संक्षिप्ता–प्रवचनसभाभवत् पुनः अनेकानां गृहाणां पुरतः आरतिकां कुर्वन्तः बैण्डवादनैः सह महतः उत्साहस्य वातावरणे आगरा निवासिनः संघ भावसिक्तां गतिमदात् मातरं च पुनः पुनः आगरा नगरे पदार्पणाय न्यवेदयन्।**

महिला संगठनस्य दिल्लीप्रदेशस्य पंचमः वार्षिकोत्सवः–**अज्ञात कविः नारीणां विषयेऽकथयत्–**

''नारी संस्कृतेः संवाहिका विद्यते।''

कविः जयशंकर प्रसादः स्व कामायिनी काव्ये नारीणां विषये अकथयत्–

''नारि! त्वं केवलं श्रद्धा असि, विश्वासस्य रजत नभसि पदतले च। जीवनस्य सुन्दरतम पदे त्वं, अमृत सदृशी भूत्वा प्रवाहमाना भव।।''

पुनः यत्र नारीणां रक्षिकायाः कुमारीणां पथप्रदर्शिकायाः पूज्यायाः गणिनीप्रमुखाया मातुः ज्ञानमत्या वरदो हस्तोऽस्ति, तस्याः मंगलप्रेरणा स्यात्, तु नार्यः देशस्य उज्ज्वलभविष्याः भूत्वा देशस्योन्नतौ सहकारिण्यो भवन्तु, इयं न काप्यतिशयोक्तेर्वार्ता। अस्यैव ज्वलन्तमुदाहरणमस्ति–''अखिलभारतीय दिगम्बरजैनमहिलासंघटनम्'', यत् मातुः वरदहस्तं प्राप्य पुष्पितं, पल्लवितं सुरभितं च विद्यते।

➢आगरावासियों ने दी भावभीनी विदाई–

9 अप्रैल को प्रातः सरलाबाग से 7 बजे प्रस्थान करके कमलानगर में जिनमंदिर के दर्शन किए, संक्षिप्त प्रवचन सभा हुई पुनः अनेकों घरों के सामने आरती करते हुए बैण्ड बाजे के साथ भारी उत्साहमय वातावरण में आगरावासियों ने संघ को भावभीनी विदाई दी और पूज्य माताजी से पुनः-पुनः आगरा पधारने का नम्र निवेदन किया।

➢महिला संगठन, दिल्ली प्रदेश द्वारा 5वाँ वार्षिकोत्सव–

कवि अज्ञात ने नारियों के बारे में कहा है कि–

नारी संस्कृति की संवाहिका है।

इसी प्रकार महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपनी कामायिनी नामक कृति में यहाँ तक कह दिया कि–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दरतम पल में।।

फिर जहाँ नारियों की मसीहा, कुमारिकाओं की पथप्रदर्शिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वरदहस्त हो, उनकी मंगल प्रेरणा हो, तो नारियाँ देश का उज्ज्वल भविष्य बनकर देश की उन्नति में सहकारी बन जाएं, यह कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है। इसी का ज्वलंत उदाहरण है अखिल भारतीय दि. जैन महिला संगठन, जो पूज्य माताजी का वरदहस्त पाकर पुष्पित, पल्लवित व सुरभित हो चुका है।

भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक महोत्सवस्य वर्षस्य अन्तर्गतं पूज्यमातुः पावनप्रेरणयाऽऽशीर्वादेन च अखिल भारतीय दि. जैन महिला संघटनेन–दिल्लीप्रदेशेन राष्ट्रीयमहिलासम्मेलनं, त्रिशलामाता सम्मानसमारोह पंचमश्च वार्षिकोत्सवः 31 मार्च 2002 दिने फिक्की आडीटोरियम नई दिल्लीनगर्यां सफलतापूर्वकमायोजितः कृतः।

अस्मिन्नवसरे दिल्ली प्रदेश शाखया धर्मे, समाजे परिवारे च जागृति चेतनां च आनीय सात्विकस्य धर्मपरायणस्य जीवनस्य निर्वाहं कर्त्रीभ्यः 26 महिलाभ्यः ''माता त्रिशलापुरस्कारं'' प्रदाय तासां सम्मानो अभवत्। दिल्ली प्रदेशस्य 50 शाखाः कार्यक्रमे स्व गरिमापूर्णा उपस्थितिं प्रदर्शितामकुर्वन् त्रिभ्यो मासेभ्यश्च सम्पूर्णसक्रियतया कार्यक्रममायोजितं कर्तुं तत्परायाः श्रीमत्याः आशा जैनायाः अध्यक्षतायां दिल्ली प्रदेशस्य समस्तसमाजो मुक्तकण्ठेन प्रशंसामकरोत्। समारोहे ''त्रिशला ज्योतिर्नामिकायाः'' स्मारिकायाः विमोचनमप्यभवत्। यतो–हि माताश्रीः अस्मिन् काले आगरा नगरे विराजिता आसीत् अतः तस्याः आज्ञया संघस्थौ ब्रह्मचारिण्यौ कु. सारिकया स्वात्या च भागमह्णीताम् ब्र. कर्मयोगी रवीन्द्रश्च मातुः सन्देशस्य वाचनमकरोत्, तेन मातुराशीर्वादश्च वाचितः।

केन्द्रीय कार्यकारिण्या इन्दौर नगरे राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजिता–**अखिलभारतीय दि. जैन महिलासंघटनेन देवीअहिल्या विश्वविद्यालयस्य इन्दौरनगरस्य, दिगम्बर जैन महिला संघटन–इन्दौर नगरस्य, दिगम्बर जैन समाजस्य इन्दौरनगरस्य, गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोध पीठस्य हस्तिनापुरस्य, तीर्थंकरऋषभदेव जैन विद्वत्महासंघश्च सहयोगेन ''भगवतो**

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन-दिल्ली प्रदेश के द्वारा राष्ट्रीय महिला सम्मेलन, त्रिशला माता सम्मान समारोह एवं 5वाँ वार्षिकोत्सव 31 मार्च 2002 को फिक्की ऑडिटोरियम, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश इकाई द्वारा धर्म, समाज एवं परिवार में जागृति व चेतना लाकर सात्त्विक व धर्मपरायण जीवन का निर्वहन करने वाली 26 महिलारत्न को ''माता त्रिशला पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। दिल्ली प्रदेश की 50 इकाइयों ने कार्यक्रम में अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई और तीन माह से पूरी कर्मठतापूर्वक कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु तत्पर श्रीमती आशा जैन (अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश) की समस्त समाज ने मुक्त कण्ठ से सराहना की। समारोह में **''त्रिशला ज्योति''** नामक स्मारिका का विमोचन भी हुआ। चूँकि पूज्य माताजी उस समय आगरा में विराजमान थीं अतः उनकी आज्ञा से संघस्थ ब्र. कु. सारिका एवं स्वाति ने इस समारोह में भाग लिया एवं पूज्य माताजी के मंगल संदेश एवं आशीर्वाद का वाचन कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी ने किया।

➢केन्द्रीय कार्यकारिणी द्वारा इंदौर में आयोजित की गई राष्ट्रीय संगोष्ठी–

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन द्वारा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय-इंदौर, दि.जैन महिला संगठन-इंदौर, दिगम्बर जैन समाज-इंदौर, गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ-हस्तिनापुर एवं तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के सहयोग से ''भगवान महावीर-जीवन एवं

महावीरस्य जीवनस्य दर्शनस्य च'' शीर्षके द्विदिवसीया राष्ट्रीय संगोष्ठी 24–25 फरवरी 2002 दिने इन्दौर प्रीमियर को–ऑपरेटिव बैकं लिमिटेड महारानीमार्गस्य–इंदौर नगरस्य भव्य सभागृहे आयोजिता कृता। संगोष्ठ्या उद्घाटनस्थ समापनस्य च सत्रेषु ''भ्रूणहत्या तस्याश्च दुष्प्रभावः'' भगवान महावीरस्तस्य जन्मभूमिश्च कुण्डलपुरम् ''जैनेतिहासस्योपेक्षिताः विषयाः, ''जैनधर्मस्य वैज्ञानिकता'' च विषयान् आश्रित्य चतृषु सत्रेषु 40 वक्तारः स्व लेखान् अवाचयन्, यस्यां 80 विद्वांसः नेतारश्च सम्मिलिताः अभवन्। श्रीमत्याः सुमन जैनायाः अध्यक्षतायां सूरजमलबोबरा महोदयस्य महामंत्रित्वे च गठिता आयोजन समितिः सम्पूर्णस्य कार्यक्रमस्य प्रभाविनीः संयोजनामकरोत्। संगोष्ठ्या संयोजक प्रमुखपरामर्शदाता च गणिनी ज्ञानमतीशोधविद्यापीठस्य–इंदौर नगरस्य निदेशकः डा. अनुपमो जैनः इंदौरः आसीत्।

केन्द्रीय महिलानां बालविकासस्य च राज्यमंत्रिण्याः श्रीमत्याः सुमित्रा महाजनस्याः मुख्यातिथित्वे न्यायमूर्तेः श्री एन. के. जैनस्य म.प्र. उच्चन्यायालयस्य चाध्यक्षतायां सम्पन्ने उद्घाटनसत्रे विशेषातिथिरूपेण पूर्व राजदूतः डॉ. एन.पी. जैनः उपातिष्ठत्।

परमपूज्यायाः गणिनीप्रमुखायाः श्री ज्ञानमत्याः मातुराशीर्वादेन सहितयोः तत्रोपस्थियोः संघस्थब्रह्मचारिण्यौ भगिन्यौ कुमार्यौ आस्था चन्द्रिके महावीर जन्मभूमौ कुण्डलपुरे 24 मार्च दिने संपन्नाय प्रस्तावितस्य कीर्तिस्तम्भ शिलान्यासस्य समारोहस्यामन्त्रणपत्रिकायाः विमोचनं मुख्यातिथेर्हस्ताभ्यामकारयताम्। अनेन सहैवातिथिभ्यः कुण्डलपुरस्य राजकुमारस्य भगवान् महावीरस्य चित्रमपि उपाहरताम्।

दर्शन'' शीर्षक पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 24-25 फरवरी 2002 को इंदौर प्रीमियर को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड महारानी रोड, इंदौर के भव्य सभागृह में आयोजित की गई। संगोष्ठी के उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त सम्पन्न ''भ्रूणहत्या एवं उसके दुष्प्रभाव'' ''भगवान महावीर एवं उनकी जन्मभूमि कुण्डलपुर'' ''जैन इतिहास के उपेक्षित पहलू'' तथा ''जैनधर्म की वैज्ञानिकता'' शीर्षक पर चार सत्रों में 40 वक्ताओं ने अपने आलेखों का वाचन किया, जिसमें 88 विद्वान, नेतागण सम्मिलित हुए। श्रीमती सुमन जैन की अध्यक्षता एवं सूरजमल बोबरा के महामंत्रित्व में गठित आयोजन समिति ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की प्रभावी संयोजना की। संगोष्ठी के संयोजक एवं प्रमुख परामर्शदाता गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ-इंदौर के निदेशक डॉ. अनुपम जैन-इंदौर थे।

केन्द्रीय महिला एवं बालविकास राज्यमंत्री श्रीमती सुमित्रामहाजन के मुख्य आतिथ्य तथा न्यायमूर्ति श्री एन.के. जैन, म.प्र. उच्च न्यायालय की अध्यक्षता में सम्पन्न उद्घाटन सत्र में विशेष अतिथि के रूप में पूर्व राजदूत डॉ. एन.पी.जैन उपस्थित थे।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद सहित वहाँ पहुँची संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों कु. आस्था एवं कु. चन्द्रिका ने महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में 24 मार्च को सम्पन्न होने वाले कीर्तिस्तंभ शिलान्यास समारोह की आमंत्रण पत्रिका का विमोचन मुख्य अतिथि के हाथों कराया। साथ ही अतिथियों को कुण्डलपुर के राजकुमार भगवान महावीर का चित्र भी समर्पित किया।

मंचासीनः संगोष्ठ्याः संरक्षकः श्री दिग्विविजयसिंह जैनः गणिनीज्ञानमतीप्राकृत शोध–पीठ–इन्दौरस्य केन्द्रस्य विकास हेतवे सुदामानगरे एकस्य भूखण्डस्य दानस्य घोषणामकरोत्।

भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य सन्दर्भे विभिन्न संस्थाभिः पारितः प्रस्तावः–

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बरजैनशास्त्रिपरिषदोऽध्यक्षस्य
प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाशस्य फिरोजाबाद निवासिनोऽध्यक्षतायां कम्पिलतीर्थे
महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरस्य सन्दर्भे पारितः प्रस्तावाः

अखिलभारतवर्षीयदिगम्बरजैन शास्त्रिपरिषदः कार्यकारिण्याः इयं सभा वैशालीं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिं न स्वीकरोति, यतोऽस्माकं कस्मिन्नप्यागमग्रन्थे जन्मभूमेः रूपेण वैशाल्याः उल्लेखोनास्ति। आगमग्रन्थेषु जन्मभूमेः रूपेण कुण्डपुरस्य, कुण्डपुरस्य (विदेहस्य) उल्लेखो विद्यते। किन्तु विदेहस्य सीम्नामुल्लेखो दिगम्बर जैनागम ग्रन्थेषु नोपलभ्यते। शताब्दीभ्यः कुण्डलपुरं (नालन्दां) जन्मभूमि रूपेण मान्यताः श्रद्धा जन–जनेस्वस्ति। अतएव भूगोलस्य अथवा जैनेतर ग्रन्थानां मान्यतानुसारेण जन्मभूमेः सन्दर्भे कमपि निर्णयं गृहीतुं नोचितं विद्यते।

परम्परागतरूपेण मान्यानि कल्याणक क्षेत्राणि विवादास्पदानि न भवेयुः। समाजे जन्मभूमेः प्रकरणं गृहीत्वा चलायमानं विसंवादं विरामं दातुं इदमेवोचितं वर्तते यत् शताब्दीभ्यो जन्मभूमेः

मंचासीन संगोष्ठी के संरक्षक श्री दिग्विजयसिंह जैन ने गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ के इंदौर केन्द्र के विकास हेतु सुदामानगर में एक भूखण्ड के दान की घोषणा की।

➢भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के संदर्भ में विभिन्न संस्थाओं द्वारा पारित प्रस्ताव–

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद के अध्यक्ष
प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद की अध्यक्षता में
महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के संदर्भ में कंपिल जी में पारित प्रस्ताव

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद की कार्यकारिणी की यह बैठक वैशाली को भगवान महावीर की जन्मभूमि स्वीकार नहीं करती क्योंकि हमारे किसी भी आगम ग्रंथ में जन्मभूमि के रूप में वैशाली का उल्लेख नहीं है। आगम ग्रंथों में जन्मभूमि के रूप में कुण्डलपुर, कुण्डपुर (विदेह) का उल्लेख है, किन्तु विदेह की सीमाओं का वर्णन दिगम्बर जैन आगम ग्रंथों में नहीं मिलता। सदियों से कुण्डलपुर (नालंदा) को जन्मभूमि के रूप में मानने की श्रद्धा जन-जन में है। इसलिए भूगोल या जैनेतर ग्रंथों की मान्यता के अनुसार जन्मभूमि के संदर्भ में कोई निर्णय लेना उचित नहीं है।

परम्परागतरूप से मान्य कल्याणक क्षेत्रों को विवादास्पद नहीं बनाना चाहिए। समाज में जन्मभूमि प्रकरण को लेकर चल रहे विसंवाद को विराम देने के लिए यही उचित है कि सदियों से

रूपेण जनाः यत् क्षेत्रं मन्यन्ते, तस्मै वयमपि आदरं दद्यः।

(दिनांकः 9 दिसम्बर 2002)

अखिलभारतवर्षीयदिगम्बर जैनयुवापरिषदः रजतजयन्ती समारोहे पारितः प्रस्तावः

भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिः कुण्डलपुरं बिहारे वर्तमाने नालन्दा जनपदे स्थितमस्ति, यत्र पूर्वं 2600 वर्षेभ्यः समस्ताः दिगम्बरजैन धर्मानुयायिन श्रद्धया यात्रां कृत्वा पुण्यार्जितं कुर्वन्तः स्थिताः सन्ति। दिगम्बर जैन सर्वागमग्रन्थेषु पूजनादिषु च कुण्डलपुरमेव महावीरस्य जन्मभूमिर्मतम्, कुत्रचिदपि वैशाली जन्मभूमिरूपेण न मतास्ति। वैशाली तु राज्ञश्चेटकस्य राजधानी मातुस्त्रिशलायाश्च जन्मभूमिर्विद्यते। कोपि तीर्थंकरः मातामहस्य नगरे जन्म न गृह्णाति, मातुरांगणे एव पंचदशमासपर्यन्तं रत्नवृष्टिर्भवति।

अधुनैव पूर्वं प्रायः 45 वर्षेभ्यः पूर्वं केषांचिदाधुनिकेतिहासकाराणां चिन्तनस्य आधारेण केचिज्जनाः वैशालीं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिं मन्तुमिच्छन्ति, अस्मिन् सन्दर्भे ''अखिल–भारतवर्षीयदिगम्बरजैनयुवापरिषद्'' **इमं प्रस्तावं पारितं करोति, यदस्मिन् वर्षे शासनेन जैनसमाजेन च भगवतो महावीरस्य 2600 तमं जन्मकल्याणकवर्षमहोत्सवं राष्ट्रीय स्तरेण मान्यतां प्राप्नोति, अतः कुण्डलपुरं, यत् पूर्वेभ्यः 2600 वर्षेभ्यः आधुनिक कालपर्यन्तं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरूपेण आस्थायाः केन्द्रमस्ति, तत्केवलमाधुनिक चिन्तनानुसारेण विवादे पातितं न स्यात्। समस्तस्य दिगम्बर जैनसमाजस्य मान्यतानुसारेण कुण्डलपुरमेव**

जन्मभूमि के रूप में लोग जिसे मानते रहे हैं, उसे हम आदर देते रहें।

दिनाँक-9 दिसम्बर 2002

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के रजतजयंती समारोह में पारित प्रस्ताव

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर-बिहार वर्तमान में नालंदा जिले में स्थित है, जहाँ पर पिछले 2600 वर्ष से समस्त दिगम्बर जैन अनुयायी श्रद्धा से यात्रा करके पुण्य अर्जित करते आ रहे हैं तथा सम्पूर्ण दिगम्बर जैन आगम ग्रंथों एवं पूजन आदि में कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि बताई है, कहीं पर भी वैशाली को जन्मभूमि के रूप में नहीं माना गया है। वैशाली तो राजा चेटक की राजधानी एवं माता त्रिशला की जन्मभूमि है। कोई भी तीर्थंकर ननिहाल में जन्म नहीं लेते हैं, माता के आंगन में ही पन्द्रह महिनों तक रत्नों की वर्षा होती है।

अभी पिछले लगभग 45 वर्ष पूर्व से कुछ आधुनिक इतिहासकारों की सोच के आधार पर कुछ लोग वैशाली को भगवान महावीर की जन्मभूमि बनाना चाहते हैं, इस संदर्भ में **''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद''** यह प्रस्ताव पारित करती है कि इस वर्ष सरकार एवं समाज द्वारा भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा है अतः कुण्डलपुर, जो पिछले 2600 साल से अब तक भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में आस्था का केन्द्र बना हुआ है, उसे केवल आधुनिक सोच के आधार पर विवाद में नहीं डाला जावे। समस्त दिगम्बर जैन समाज की मान्यता के अनुसार कुण्डलपुर को ही जन्मभूमि के रूप में सरकार

समाजेन शासनेन च महावीरस्य जन्मभूमिं मत्वा विकसितं भवेत्। वैशाल्यादिषु अन्येषु स्थानेषु भगवतो महावीरस्य स्मृतौ स्मारकाणां निर्माणं भवेत् किन्तु 2600 वर्षाणां जन्मभूमेः न्यासो न लुप्तः स्यात्। (6 जनवरी 2002)

प्रस्तावकः–**अनिलकुमारो जैनः प्रीतविहारो दिल्ली–दिल्लीप्रदेशस्याध्यक्षः।**

अनुमोदकः– **उदयभानो जैनः भरतपुर निवासी– अध्यक्षो राजस्थान प्रदेशः।**

अखिलभारतीयदिगम्बरजैन महिलासंघटनस्य केन्द्रीय कार्यकारिण्यां दिनांक 24 फरवरी 2002 दिने इन्दौरनगरे सम्पन्नायां सभायां पारितः प्रस्तावः

''प्राचीनानां जैनपुराणानां तिलोयपण्णत्ती धवलादीनां प्राचीनग्रन्थानामनुसारेण भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य वन्दनां कृत्वा वयं स्वात्मनः धन्यान् कर्तुं निरन्तरं समर्थाः अनुभवामः। कोऽपि तीर्थयात्री जन्मभूमेर्वन्दना हेतवे वैशालीं गन्तुं प्रयत्नान् नाकरोत् किन्तु विगतेभ्यः 3–4 दशकेभ्यः केचित् शोधकर्तारो भ्रान्तिवशात् महावीरस्य मातामहनगरी वैशालीं जन्मभूमिं कथयितुं प्रारभन्त्, अयं समाजाय अत्यन्तमेव घातककारी षड्यन्त्रकारी च विचारोऽस्ति।

अखिल भारतवर्षीयस्य महिलासंघटनायाः इयं सभा समाजं शासनं च प्रार्थयति यत् भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरूपेण नालन्दा जनपदे स्थितं कुण्डलपुरमेव मान्यतां प्रदातुं कष्टं करोतु।''

एवं समाज के द्वारा विकसित किया जावे। वैशाली आदि अन्य स्थानों पर भगवान महावीर की स्मृति में स्मारक बनाए जावें, लेकिन 2600 साल की जन्मभूमि की धरोहर को न खो दिया जावे।

6 जनवरी 2002

प्रस्तावक–अनिल कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली (अध्यक्ष-दिल्ली प्रदेश)

अनुमोदक–उदयभान जैन, भरतपुर (राज.) (अध्यक्ष-राजस्थान)

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की केन्द्रीय कार्यकारिणी की दिनाँक 24 फरवरी 2002 को इंदौर में सम्पन्न बैठक में पारित प्रस्ताव

''प्राचीन जैन पुराणों, तिलोयपण्णत्ति, धवला आदि प्राचीन ग्रंथों के अनुसार भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर की वंदना कर हम स्वयं को धन्य करते रहे हैं। कोई भी तीर्थयात्री जन्मभूमि की वंदना हेतु वैशाली नहीं जाता रहा किन्तु विगत 3-4 दशकों से कतिपय शोधकर्ताओं ने भ्रान्तिवश महावीर की ननिहाल वैशाली को जन्मभूमि बताना शुरू कर दिया, यह समाज के लिए अत्यन्त घातक एवं षड्यंत्रकारी विचार है।

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन की यह सभा समाज एवं सरकार से अनुरोध करती है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में नालंदा जिले में स्थित कुण्डलपुर को ही मान्यता प्रदान करने का कष्ट करें।''

प्रस्ताविका–**श्रीमती उषा पाटनी–मंत्रिणी–दि. जैन महिला संघटनं–इन्दौरः**
समर्थिकाः– **श्रीमती निर्मल जैन– दिल्ली–राष्ट्रीय अध्यक्षा**
श्रीमती सुमन जैना– इन्दौरः महामंत्रिणी
श्रीमती आशा जैना, दिल्ली
श्रीमती दर्शन जैना, दिल्ली
श्रीमती कान्ति जैना, ग्वालियरम्
श्रीमती रमा जैना, छतरपुरम्
श्रीमती वन्दना जैना, शाहजहांपुरम्
श्रीमती मीना विनायका, इन्दौरम्
श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौरम्
श्रीमती प्रेमलता वेदा, इन्दौरम्
श्रीमती लीला जैना, इन्दौरम्
श्रीमती तारा जैना, इन्दौरम्
श्रीमती माला बुखारिया, इन्दौरम्

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघस्य कार्यकारिण्याः इन्दौरे
दिनांके 24.2.2002 सम्पन्नायां सभायां पारितः प्रस्तावः

समस्तेषु दिगम्बरजैनप्राचीन ग्रन्थेषु वर्णिता भगवतो महावीरस्य जन्मनो भूमिः कुण्डलपुरमेवास्ति। या विहार प्रान्ते नालन्दा जनपदे स्थितं कुण्डलपुरमेव शताब्दीभ्यः जनजनमानसास्थाकेन्द्रमासीत् सर्वे च जैन धर्मावलम्बिनोः परम्परागतरूपेण अस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरस्य वन्दनां कुर्वन्ति।

प्रस्तावक– श्रीमती उषा पाटनी (मंत्री-दि. जैन महिला संगठन, इंदौर)
समर्थक– 1. श्रीमती निर्मल जैन, दिल्ली (राष्ट्रीय अध्यक्षा), 2. श्रीमती सुमन जैन इंदौर (महामंत्री), 3. श्रीमती आशा जैन, दिल्ली, 4. श्रीमती दर्शन जैन, दिल्ली, 5. श्रीमती कांति जैन, ग्वालियर, 6. श्रीमती रमा जैन, छतरपुर, 7. श्रीमती वंदना जैन, शाहजहांपुर, 8. श्रीमती मीना विनायका, इंदौर, 9. श्रीमती उषा पाटनी, इंदौर, 10. श्रीमती प्रेमलता वेद, इंदौर, 11. श्रीमती लीला जैन, इंदौर, 12. श्रीमती तारा जैन, इंदौर, 13. श्रीमती माला बुखारिया, इंदौर।

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की कार्यकारिणी की इंदौर में दिनाँक 24-2-2002 को सम्पन्न बैठक में पारित प्रस्ताव

समस्त दिगम्बर जैन प्राचीन ग्रंथों में वर्णित भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है। बिहार प्रांत के अन्तर्गत नालंदा जिले में स्थित कुण्डलपुर ही सदियों से जन-जन की आथा का केन्द्र रहा है एवं सभी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी परम्परागतरूप से इसी जन्मभूमि कुण्डलपुर की वंदना करते रहे हैं।

महासंघस्य राष्ट्रीयकार्यकारिणी शासनायानुरोध करोति यत् भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरूपेण जैन परम्परागतं कुण्डलपुरमेव मान्यतां प्रदाय अस्य विकासे सहयोगं प्रददातु।

प्रस्तावकः–**डॉ. अभयप्रकाशो जैनः ग्वालियरवासी, प्रचार मंत्री**

समर्थकाः–**सर्वे।**

कुण्डलपुरे बिहारे कीर्तिस्तम्भस्य शिलान्यासः–**कुण्डलपुरक्षेत्रस्य विकास शृंखलायां प्रथमायाः कृत्याः रूपेण प्राचीन मन्दिरे भगवतो महावीरस्य कीर्तिस्तम्भस्य शिलान्यासस्य सुयोगः 24 मार्च 2002, रविवारे, फाल्गुण शुक्ल दशम्याः दिने समागतः, यदा दिल्ली नगरात् लाला कमलचन्द्रः कीतिस्तम्भस्य निर्माणकर्ता वाष्पयानस्य एकेन प्रकोष्ठेन अनेकैः श्रद्धालुभिः सह कुण्डलपुरस्य पावनधरायां समागच्छत्। ब्रह्मचारी रवीन्द्रोभ्राता ब्रह्मचारिण्यौ भगिन्यौ कुमार्यौ आस्था सारिकापि पूज्यमातुराज्ञानुसारेण तत्र गत्वा तं सानन्दं संपन्नं कारयितुं स्व महत्वपूर्णं योगदानमकुर्वन्।**

समाजरत्नं श्री कमलचन्द्रो जैनः खारीबावली दिल्ली स्व पंचभिः भ्रातृभिः समस्तेन च परिवारेण सह कीर्तिस्तम्भस्य शिलान्यासमकरोत्।

अस्मिन्नवसरे अनेकस्थानेभ्यो जनाः समागच्छन्। बिहारप्रान्तस्य पूर्वशिक्षामंत्रीयपि समागत्य पूज्यं मातरं परोक्षरूपेण नमनं कुर्वन् अपारां प्रसन्नतां व्यक्तामकरोत्।

महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सरकार से अनुरोध करती है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि के रूप में जैन परम्परामान्य कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) को ही मान्यता प्रदान करते हुए इसके विकास में सहयोग प्रदान करें।

प्रस्ताव– डॉ. अभयप्रकाश जैन, ग्वालियर (प्रचार मंत्री)

समर्थक– सर्वानुमति

➢**कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में कीर्तिस्तंभ शिलान्यास समारोह–**

कुण्डलपुर तीर्थ विकास की शृंखला में प्रथम कृति के रूप में प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ के शिलान्यास का सुयोग 24 मार्च 2002, रविवार, फाल्गुन शु. 10 को आया, जब दिल्ली से लाला कमलचंद जी (कीर्तिस्तंभ निर्माणकर्ता) ट्रेन की एक बोगी द्वारा अनेक श्रद्धालुभक्तों के साथ कुण्डलपुर की पावन धरा पर पहुँचे। संघ से ब्र.रवीन्द्र जी एवं ब्र. बहनों– कु. आस्था एवं कु. सारिका जैन ने भी पूज्य माताजी की आज्ञानुसार वहाँ जाकर उसे सानन्द सम्पन्न करवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समाजरत्न श्री कमलचंद जैन-खारीबावली, दिल्ली ने अपने पांचों भाइयों एवं समस्त परिवार सहित कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास किया।

इस अवसर पर अनेक स्थानों से लोग पधारे तथा बिहार प्रान्त के पूर्व शिक्षामंत्री ने भी पधारकर पूज्य माताजी को परोक्षरूप में नमन करते हुए अपार प्रसन्नता व्यक्त की।

श्री कमलचन्द्रस्य मनोभावना–**भगवतो महावीरस्य 2600 तमे जन्मकल्याणक महोत्सववर्षे भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे ''भगवतो महावीरस्य कीर्तिस्तम्भस्य'' शिलान्यासं कर्तुमहं सौभाग्यं प्राप्नवम्। एतत्सर्वं पूज्यायाः मातुः ज्ञानमत्याः कृपाया प्रसादस्य फलमस्ति। पूज्यायाः मातुरस्मासु भक्तेष्वनेकाः उपकाराः सन्तिः यान् कतिचित् जन्मसु प्रत्यर्पण न संभवमस्ति।**

अहं तु कतिचित् वर्षेभ्यः पूज्यमातुः कार्यकलापान् पश्यामि। यत्राहं स्व बुद्धया तस्याः अन्तर्भावनाः अजानाम्, त्वहमन्वभवं यदस्याः एकमात्रं लक्ष्यमस्ति, यत् केन प्रकारेण अहम् चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमीनामुद्धारं कर्तुं शक्नुयाम् इदं च तस्याः सत्यमनसा भावितायाः भावनायाः एव प्रतिफलमस्ति, यत् यदपि सा स्वमनसि निश्चितं करोति, तत्कार्यं पूर्णरूपेण निर्विघ्नतया सह सफलं संपद्यते। माता यदापि कस्यचित् तीर्थस्य विकासमिच्छति, तु अस्मतसदृशेभ्यः जनेभ्यः माता यमपि आदेशं ददाति, तत् वयं यथाशक्ति पूर्ण विधातुं प्रयासं कुर्मः तीर्थंकराणां च चरणकमलेषु स्वकांचित् अर्थांजलिं समर्प्य स्वगौरवानुभूतिं कुर्मः।

सुहागनगर्यां फिरोजाबादे धर्मामृतस्य वर्षाभवत्–**आगरानगरे महत्याः धर्मप्रभावनायाः पश्चात् ऐत्मादपुर टूण्डलादि नगराणि विहरन्त्याः 15 अप्रैल 2002 दिने पूज्यायाः मातुः समस्तस्य संघस्य मंगलप्रवेशः सुहागनगर्याः रूपेण विख्यातायां फिरोजाबाद पुर्यां छदामीलालस्य न्यासस्य दिगम्बरजैनमन्दिरे अभवत्।**

पूज्यायाः मातुः प्रेरणयात्र विराजमानायाः भगवतो महावीरस्य प्रतिमायाः शताष्ट कलशैः

➢श्री कमलचंद जैन की मनोभावना–

भगवान महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में ''भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ'' का शिलान्यास करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, यह सब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की ही कृपाप्रसाद का फल है। पूज्य माताजी के हम भक्तों पर अनन्त उपकार हैं जिन्हें कई जन्मों तक भी चुका पाना असंभव है।

मैं तो कई वर्षों से पूज्य माताजी के कार्यकलापों को देख रहा हूँ। जहाँ तक मैंने अपनी बुद्धि से इनकी अन्तर्भावनाओं को जाना, तो मैंने महसूस किया कि इनका केवल एक ही लक्ष्य है कि किस प्रकार मैं चौबीसों तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का उद्धार कर सकूँ और इनकी सच्चे मन से भाई गई भावना का ही प्रतिफल है कि जो कुछ भी ये अपने मन में ठान लेती हैं, वह कार्य पूर्ण निर्विघ्नता के साथ सफल होता है। पूज्य माताजी जब भी किसी तीर्थ का विकास करने की बात सोचती हैं, तो हम जैसे लोगों से पूज्य माताजी जो भी आदेश देती हैं, हम उसे यथाशक्ति पूरा करने का प्रयास करते हैं और तीर्थंकरों के चरणकमल में अपनी कुछ अर्थांजलि समर्पित करके गौरव का अनुभव करते हैं।

➢सुहाग नगरी फिरोजाबाद में हुई ज्ञानामृत वर्षा–

आगरा शहर में भारी धर्मप्रभावना करने के पश्चात् एत्मादपुर, टूण्डला आदि होते हुए 15 अप्रैल 2002 को पूज्य माताजी एवं समस्त संघ का मंगल प्रवेश सुहाग नगरी के रूप में विख्यात फिरोजाबाद के छदामी लाल जैन ट्रस्ट के दिगम्बर जैन मंदिर में हुआ।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से यहाँ विराजमान भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा का 108 कलशों

मस्तकाभिषेकोऽभवत्। फिरोजाबादनगरे 15 दिनानां प्रवासस्य मध्ये अनेकजिनमन्दिराणां दर्शनस्य सौभाग्यं प्राप्तमभवत्, यस्मिन्नत्र अतिशयकारिणे चन्द्रप्रभस्य जिनमन्दिरे एकः 84 वर्षीयः श्री प्रेमचन्द्रो जैनोऽस्मान् अकथयत् यत् मातः! चारित्रचक्रवर्ती आचार्यः श्री शान्तिसागरोऽकथयत् यत् अयं चन्द्रप्रभुर्भगवान् वाराणस्याः शिवलिंगात् निर्गतोऽस्ति अतः इयं प्रतिमा 1000 वर्षाणां प्राचीना विद्यते, तस्याः प्रतिमायाः दर्शनं कृत्वा मनोऽतिप्रसन्नमभवत्।

सर्वोदयशासने वर्गोदयः पुष्यते–**यासु महावीरजयन्त्याः पावनासु घटिकासु विभिन्ननगराणां जनाः पूज्यमातुः संघसान्निध्यं प्राप्तुमुत्सुकाः आसन्, तं अवसरं प्राप्नोत् फिरोजाबाद नगरम्। अत्र महावीरजयन्त्याः समारोहेण सहैवग्रिमदिने ''रइधू पुरस्कारेण'' दक्षिणभारतात् आगत्य जीवनदादापाटिलमहोदयः सन्मतिसेवादलस्य अध्यक्ष सम्मानितोऽभूत। तस्मिन् कार्यक्रमे पूज्यमातुः सान्निध्यमासीत्। तस्मिन् मंचे एकेन वर्गविशेषेण संयुक्तस्य श्रावकस्य कंचित् आगमविरुद्धमनुचितं व्यवहारं वीक्ष्य मंचस्थानां जनानां चेतसि महती पीडा संजाता।**

तस्मिन् समये पूज्यमाता श्रीः स्वप्रवचनेन वर्तमानपरिप्रेक्ष्ये साधुवर्गे किंचिद् विघटनं दर्शयन्तः अत्यन्तमार्मिकान् शब्दानकथयत्, येषामुद्धरणमहमावश्यकं मन्ये–भव्यात्मन्! अद्य भगवतो महावीरस्य सर्वोदय शासनं वर्गोदये परिवर्तितं भूयमानं दृश्यते। विभिन्नानां साधूनां विभिन्नाः वर्गाः विभक्ता सन्ति, या घटना समाजाय भयप्रदास्ति अतः सर्वोदयशासने वर्गोदयो न पुष्टः स्यात्।

से मस्तकाभिषेक हुआ। फिरोजाबाद में 15 दिवसीय प्रवास के मध्य अनेकों जिनमंदिरों के दर्शन का सुयोग प्राप्त हुआ, जिसमें यहाँ के अतिशयकारी चन्द्रप्रभु जिनमंदिर में एक 84 वर्षीय प्रेमचंद जैन ने हमें बताया कि माताजी! चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने कहा था कि यह चन्द्रप्रभु भगवान बनारस की शिवपिंडी से निकले हुए हैं अतः यह 1000 वर्ष प्राचीन प्रतिमा है, उनके दर्शन करके मन अति प्रसन्न हुआ।

➢सर्वोदय शासन में वर्गोदय पनप रहा है–

जिस महावीर जयंती की पावन घड़ियों में अनेक शहरों के लोग पूज्य माताजी का संघ सानिध्य पाने को लालायित थे, वह अवसर मिला फिरोजाबाद को। वहाँ महावीर जयंती समारोह के साथ ही अगले दिन ''रइधू पुरस्कार'' के द्वारा दक्षिण भारत से पधारे जीवनदादा पाटिल (सन्मति सेवा दल के अध्यक्ष) को सम्मानित किया गया। उस कार्यक्रम में भी पूज्य माताजी का सानिध्य रहा। उस मंच पर एक वर्ग विशेष से जुड़े श्रावक का कुछ आगमविरुद्ध अनुचित व्यवहार देखकर मंचासीन प्रबुद्ध लोगों के मन में बड़ी पीड़ा हुई।

उस समय पूज्य माताजी ने अपने प्रवचन में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साधुवर्ग में हो रहे बिखराव को देखते हुए अत्यन्त मार्मिक शब्द कहे, जिसे उद्धृत करना मैं आवश्यक समझती हूँ– भव्यात्माओं! आज महावीर स्वामी का सर्वोदय शासन वर्गोदय में परिवर्तित हो रहा है, विभिन्न साधुओं के विभिन्न वर्ग बन गए हैं, जो समाज के लिए खतरनाक हैं अतः सर्वोदय शासन में वर्गोदय को नहीं पनपने देना चाहिए।

पूज्यमातुः 47 तमं आर्यिकादीक्षादिनम्–**महापुराणे आचार्यो जिनसेनः स्वामी कथयति–**

पुण्ये प्रसेदुषि नृणां किमिवास्त्यलंघ्यम्?

अर्थात् पुण्यस्य प्रसादेन मनुष्याः सर्वमेव प्राप्तुं शक्नुवन्ति। स्यादिदमेव कारणमासीत् यत् फिरोजाबादनगरं एकस्य पश्चात् अन्य सुअवसरं प्राप्नोत्, अस्मिन्नेव क्रमे ते पूज्यमातुः 47 तमं आर्यिकादीक्षामहोत्सवमायोजयितुं लाभान्विताः अभवन्।

वैशाखकृष्णद्वितीयायां अस्यां दीक्षातिथौ आयोजितेऽस्मिन् 47 तमे आर्यिकादीक्षादिवस–समारोहे मात्रे फिरोजाबाददिगम्बरजैनसमाजेन ''युगनायिका'' इत्युपाधिः प्रदत्ता।

आयोजितायां विनयांजलिसभायां डॉ. विमला– डॉ. रश्मि– अनूपचन्द जैन एडवोकेटः–श्री भागचन्द्र जैन–श्रीकांतिचंद फिरोजाबाद, पंडित सुधर्मचन्द्र जैनः जबलपुरः–श्री अनिल जैन, कमलमंदिरः–लाला महावीरप्रसाद जैनः दिल्ली आदयो महानुभावाः स्व विनम्रां विनयांजलिं पूज्य मातुश्चरणयोरर्पिताम–कुर्वन्। प्राचार्यो नरेन्द्र प्रकाशः स्पष्टशब्देष्वकथयत् यत् केवलं भारतशासनेन कोटिरूप्यकाणि लब्धुं लोभे भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिं कुण्डलपुरमुपेक्षितं कृत्वा कतिपयनेतृभिः पाश्चात्यानां विदेशिनां च विदुषां जैकोबी–योगेन्द्रमिश्रादीनां समर्थनेन वैशालीं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरूपेण साधयितुं प्रयत्नाः क्रियन्ते, एतस्मिन् समये पूज्यमाता समस्तं समाजं जागृतं कृत्वा महान्तमुपकारमकरोत्। ''पूज्य मातुः कुण्डलपुरं प्रति

➢**पूज्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस–**

महापुराण में आचार्य जिनसेन स्वामी कहते हैं–

पुण्ये प्रसेदुषि नृणां किमिवास्त्यलङ्घ्यम्?

अर्थात् पुण्य के प्रसाद से मनुष्यों को सब कुछ प्राप्त हो सकता है। शायद यही कारण था कि फिरोजाबाद की जनता को एक के बाद एक सुअवसर प्राप्त हो रहे थे, इसी क्रम में उन्हें पूज्य माताजी का 47वाँ आर्यिका दीक्षा जयंती महोत्सव मनाने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

वैशाख कृष्णा दूज की इस दीक्षा तिथि पर आयोजित 47वें आर्यिका दीक्षा दिवस समारोह में पूज्य माताजी को फिरोजाबाद दिगम्बर जैन समाज द्वारा ''युगनायिका'' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

आयोजित विनयांजलि सभा में डॉ. विमला जैन, डॉ. रश्मि जैन, एडवोकेट अनूप चंद जैन, श्री भागचंद जैन, श्री कांतिचंद-फिरोजाबाद, पण्डित सुधर्मचंद शास्त्री-जबलपुर, श्री अनिल जैन (कमल मंदिर), लाला महावीर प्रसाद जैन संघपति-दिल्ली आदि महानुभावों ने अपनी विनम्र विनयांजलि पूज्य माताजी के चरणों में अर्पित की। प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मात्र सरकार से करोड़ों रुपया पाने के लालच में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर को उपेक्षित कर कतिपय नेताओं द्वारा पाश्चात्य एवं स्वदेशी विद्वानों–जैकोबी, योगेन्द्र मिश्र आदि के समर्थन से वैशाली को भगवान महावीर की जन्मभूमि सिद्ध किया जा रहा है, ऐसे समय में पूज्य माताजी ने समस्त समाज को जागृत करके महान उपकार किया है। **''पूज्य माताजी का कुण्डलपुर**

विहार एव सर्वाधिकं प्रमाणमस्ति यत् कुण्डलपुरमेव भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिर्विद्यते, येऽपि एतमैतिहासिकं तथ्यं परिवर्तितुमिच्छन्ति, तान् इतिहासः कदापि न क्षमिष्यते।''

ओजस्विविद्वत्तापूर्णानि च वक्तव्यानि कुण्डलपुरस्य सत्यतां प्रकाशयन्–**महापुराणे ग्रन्थे आचार्यो जिनसेनस्वामी अष्टमे सर्गेऽकथयत् यत्–**

''तदेव ननु पाण्डित्यं यत्संसारात् समुद्धरेत्।''

अर्थात् पाण्डित्यं तु तदेवास्ति यत् संसारात् उद्धारं करोति। विदुषां तस्यां शृंखलायां अनेक–ईदृशाः विद्वांसः सन्ति, ये निष्पक्षरूपेण सर्वदा धर्मस्य निनादं कुर्वन्तः जिनधर्मपताकां समुन्नतामकुर्वन् ये च जिनवाण्याः मातुर्भक्तिं गुरुभक्तिं चोदाहरणैः प्रस्तुतामकुर्वन्। अस्मिन् संसारे च यशःकीर्तिं प्राप्य स्वात्मनः कल्याणमप्यकुर्वन्, तस्यामेव शृंखलायां विदुषां शिरोमुकुटः प्राचार्यः श्रीनरेन्द्रप्रकाशो विद्यते, यस्यौजस्विनी विद्वत्तापूर्णा च वाणी दिग्भ्रमितान् मानवान् सन्मार्ग प्रदर्शने मनसश्च शुद्धौ सफला माध्यमा भवति। न्यूनतमशब्देषु यथार्थवाण्याः प्रतिपादकः प्राचार्यः समये–समये समागत्य पूज्यया मात्रा सह विस्तृतां गम्भीरां च चर्चां कृत्वा मया चैकत्रितानि आगम प्रमाणानि समीक्ष्य यदा भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेर्कुण्डलपुरस्ययथार्थताम्–जानात् तां च स्वान्तर्हृदये निहितामकरोत् तु तेन समये–समये उच्चारितानि वक्तव्यानि जन–जनानां हृदयं कुण्डलपुरमयं कुर्वन्ति तेषां प्रतिरोमं झंकृतमकुर्वन् सः चास्यां समसामयिकायां आगमोक्तायां च भगवतो महावीरस्य जन्मभूम्यां सहभागी भूत्वा स्वात्मनि च महतः पुण्यस्य संचयमकरोत्।

की ओर विहार ही सबसे बड़ा प्रमाण है कि कुण्डलपुर ही भगवान महावीर की जन्मभूमि है, जो भी इस ऐतिहासिक तथ्य को बदलना चाहते हैं, उन्हें इतिहास कभी माफ नहीं करेगा।''

➢ओजस्वी एवं विद्वत्तापूर्ण वक्तव्यों ने कुण्डलपुर की सत्यता को उजागर किया–

महापुराण ग्रंथ में आचार्य जिनसेन स्वामी ने आठवें सर्ग में कहा है कि–

''तदेव ननु पाण्डित्यं यत्संसारात् समुद्धरेत्''

अर्थात् पाण्डित्य वही है, जो संसार से उद्धार कर दे। विद्वानों की उस श्रृंखला में अनेक ऐसे विद्वान हुए हैं, जिन्होंने निष्पक्ष रूप से सदैव धर्म का डंका बजाते हुए जिनधर्म की पताका को समुन्नत किया है और जिनवाणी माता की भक्ति तथा गुरुभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए इस संसार में यश-कीर्ति प्राप्त करने के साथ अपनी आत्मा का भी कल्याण किया है, उसी श्रृंखला में वर्तमान समय में विद्वानों के शिरमौर पण्डितप्रवर प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी हैं, जिनकी ओजस्वी एवं विद्वत्तापूर्ण वाणी दिग्भ्रमित मानव को सद्राह दिखाने में और मन शुद्ध करने में सफल माध्यम बनती है। कम शब्दों में यथार्थ वाणी का प्रतिपादन करने वाले प्राचार्य जी ने समय-समय पर आकर पूज्य माताजी से विस्तृत एवं गहराई से चर्चा कर और मेरे द्वारा एकत्रित आगम प्रमाण देखकर जब भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर की यथार्थता को जाना और उसे अपने अन्तर्हृदय में उतारा, तो उनके द्वारा समय-समय पर दिये गये वक्तव्यों ने जन-जन के अन्तस् को कुण्डलपुरमय करते हुए उनके रोम-रोम को झंकृत कर दिया और उन्होंने इस समसामयिक एवं आगमोक्त भगवान महावीर जन्मभूमि में सहभागी बनकर स्वयं भी महान पुण्य का संचय कर लिया।

सोऽकथयत् यत् माताश्रीः केवलं तीर्थविकासाय विहारं न करोति, अपितु एकस्यैतिहासस्य निर्माणं कर्तुं प्रयाति। सा कस्याप्यावलंम्बनं नापेक्षते।

तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां विकासो जैनास्तित्वानां रक्षां करोति–**आचार्यः श्री पूज्यपादः स्वामी अकथयत्–**

इक्षोर्विकाररसपृक्त गुणेनलोके, पिष्टोऽधिकं मधुरता–मुपयाति यद्वत्।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि।।

अर्थात् यथा इक्षुः–शर्करा मिश्रणेन पिष्टः मधुरः सुस्वादुश्च जायते, तथैव पुण्यात्मनां महापुरुषाणां चरणरजोभिः इयं भूमिरपिपवित्रतीर्थस्य रूपं प्राप्नोति। त्रयाणां लोकानामग्रभागे सिद्धशिलायाः उपरि अनन्तानन्ताः सिद्धपरमात्मानो विराजन्ते, तेभ्यः सर्वेभ्यः सिद्धेभ्यः सिद्धपदस्य च प्राप्तिस्थानेभ्यः समस्तेभ्यस्तीर्थेभ्यो मम नमस्कारो विद्यते।

एते सर्वे तीर्थाः आचार्यैस्त्रिषु नामसु विभक्ताः कृताः सन्ति–

1. तीर्थक्षेत्राणि 2 सिद्धक्षेत्राणि 3 अतिशयक्षेत्राणि।

तीर्थंकरभगवतां, सामान्यकेवलिनां, विशिष्टाचार्याणां मुनीनां च गर्भ–जन्म–तपो–ज्ञान कल्याणकैः तेषां च मंगलविहारैः पावनानि स्थलानि तीर्थक्षेत्राणि नामानि सन्ति, येभ्यश्च स्थानेभ्यः भगवन्तः मोक्षं प्राप्नुवन्, तानि सिद्धक्षेत्राणि–निर्वाणक्षेत्राणि चोच्यन्ते विशेषैरितिहा सैश्चमत्कारैश्च सम्बन्धिन्यो भूमयः अतिशयक्षेत्ररूपेण मान्यतां प्राप्नुवन्ति।

एतासां पवित्राणां भूमीनां शृंखलायां भारतस्य धरायां अहिंसायाः अवताररूपस्य जैनधर्मस्य

उन्होंने कहा कि माताजी केवल तीर्थ विकास करने नहीं जा रही हैं, अपितु एक इतिहास का निर्माण करने जा रही हैं। उन्हें किसी के अवलम्बन की आवश्यकता नहीं है।

➢**तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास जैन अस्मिता की रक्षा है–**

आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी ने कहा है–

इक्षोर्विकाररसपृक्तगुणेन लोके, पिष्टोधिकं मधुरता-मुपयाति यद्वत्।।
तद्वच्च पुण्यपुरुषैरुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगता-मिह पावनानि।।

अर्थात् जिस प्रकार शक्कर–चीनी के मिश्रण से आटा मीठा-सुस्वादु हो जाता है, उसी प्रकार पुण्यात्मा महापुरुष की चरण रज से यह धरती भी पवित्र तीर्थ का स्वरूप प्राप्त करती है। तीन लोक के अग्रभाग पर सिद्धशिला के ऊपर अनन्तानन्त सिद्ध परमात्मा विराजमान हैं, उन सभी सिद्धों को तथा सिद्धपद के प्राप्तिस्थल समस्त तीर्थों को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

ऐसे तीर्थों को जैनाचार्यों ने तीन भेदों में विभक्त किया है–

1. तीर्थक्षेत्र 2. सिद्धक्षेत्र 3. अतिशय क्षेत्र।

तीर्थंकर भगवन्त, सामान्य केवली तथा विशिष्ट आचार्य एवं मुनियों के गर्भ-जन्म-तप-ज्ञानकल्याणक अथवा उनके मंगल विहारों से पावन स्थल तीर्थक्षेत्र कहलाते हैं, जहाँ से भगवन्तों ने मोक्ष प्राप्त किया, उन्हें सिद्धक्षेत्र या निर्वाणक्षेत्र कहते हैं और विशेष इतिहास या चमत्कारों से संबंधित भूमियाँ अतिशय क्षेत्र के रूप में मानी जाती हैं।

इन पवित्र भूमियों की श्रृंखला में भारत की धरती पर अहिंसा के अवतार माने जाने वाले

चतुर्विंशतितमस्य तीर्थंकरस्य भगवतो महावीरस्य सा जन्मभूमिः, यत्र 2600 वर्षाणि पूर्वं देवोपनीतमसंख्यंवैभवमासीत्, रत्नानां भाण्डारणि पूरितान्यासन् इन्द्रैरपि पूज्ययोः महाराज्ञः सिद्धार्थस्य महाराज्ञ्याः त्रिशलायाश्च सुखानां तुलनां संसारस्य कोऽपि जनः कर्तुं क्षमो नासीत्, तत् कुण्डलपुरं गतशताब्दीनां परतन्त्रताकालीने युगे अत्यन्ताल्पावधौ संकीर्ण भूत्वा अतिष्ठत् पुनः जैनसमाजः कान्चित् अतिशयान् चमत्कारान् च प्रति अत्यधिक आकर्षितो भूत्वा स्वशाश्वतानि महत्त्वपूर्णानि च तीर्थक्षेत्राणि उपेक्षितान्यकरोत्। एतैरेव कारणैः यत् अयोध्या–सम्मेदशिखर सदृशानि तीर्थक्षेत्राणि यानि अनादिकालीनानि सन्ति, तानि अन्यानि च वर्तमान कालीनानि तीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थक्षेत्राणि कुण्डलपुर–सिंहपुरी– चन्द्रपुरी–काकंदी–मिथिला–भद्दिलपुरतीर्थक्षेत्राण्यपि उपेक्षाक्रमे सम्मिलितानि सन्ति। अद्य च काकन्दी–मिथिला–भद्दिलपुर आदीनि स्व सौभाग्यस्य प्रतीक्षायां सन्ति वस्तुतः यदि चिन्त्यतां, तु तीर्थंकर जन्मभूमीनां विकासो जैनास्मितायाः रक्षैवास्ति। यदि वयं भवन्तश्च सर्वे मिलित्वा प्राथमिकरूपेणैतासां तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां जीर्णोद्धारे विकासे च संलग्नाः भवन्तु तदा न तद्दिनं दूरं, यदा वयं स्व नेत्रैः तासां वास्तविकं विकसितं रूपं दृष्टुं शक्ष्यामः।

यादवोऽलभताशीर्वादम्–**आगरा–फिरोजाबादस्य सुखदस्य प्रवासस्य पश्चात् वयं शिकोहाबाद नगरमागच्छाम, यत्र चतुर्णां जिनमन्दिराणां दर्शनं कृत्वा मनः प्रसन्नमभवत्। प्रातःकालीनासभायां नगर–विधायकः श्री हरिओमः समागच्छत्, स्व भाषणे च मातरं प्रति**

जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की वह जन्मभूमि, जहाँ 2600 वर्ष पूर्व देवोपुनीत असंख्य वैभव था, रत्नों के भण्डार भरे थे एवं इन्द्रों से भी पूज्य महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला के सुख की तुलना संसार का कोई प्राणी नहीं कर सकता था, वह कुण्डलपुर पिछली शताब्दियों के परतन्त्रकालीन युग में अत्यन्त अल्प सीमा में सिमट कर रह गया पुनः जैन समाज ने कुछ अतिशय-चमत्कारों की ओर अधिक आकर्षित हो जाने के कारण अपने शाश्वत एवं महत्वपूर्ण तीर्थों को उपेक्षित कर दिया। यही कारण रहा कि अयोध्या एवं सम्मेदशिखर जैसे अनादिकालीन तीर्थ तथा वर्तमानकालीन अन्य तीर्थंकरों की जन्मभूमियाँ कुण्डलपुर, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, काकन्दी, मिथिला, भद्दिलपुर आदि तीर्थ भी उपेक्षा के क्रम में आ गए और आज वे अपने सौभाग्य को पुनः प्राप्त करने के इंतजार में हैं किन्तु वास्तव में देखा जाए, तो तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास जैन अस्मिता की रक्षा है। यदि हम और आप सभी मिलकर प्राथमिक तौर पर इन तीर्थंकर जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार एवं विकास में संलग्न हो जावें, तो वह दिन दूर नहीं, जब हम स्वयं अपनी आँखों से उनका वास्तविक विकसित रूप देख सकेंगे।

➢यादव जी को मिला आशीर्वाद–

आगरा, फिरोजाबाद के सुखद प्रवास के पश्चात् हम लोग शिकोहाबाद पहुँचे, जहाँ 4-4 जिनमंदिरों के दर्शन कर मन प्रसन्न हो उठा। प्रातःकालीन सभा में नगर के विधायक श्री हरिओम् यादव पधारे और अपने भाषण में पूज्य माताजी के प्रति सुन्दर उद्गार प्रस्तुत करते हुए

सुन्दरोद्गारान् प्रकटयामास अकथयच्च मातः! अहमत्र सर्वाः एव पशुबधशालाः समाप्ताः अकरवम् अहं च पूर्णरूपेणं शाकाहारी अस्मि। तदा माता नितान्तमेव प्रसन्ना जाता तस्मै च प्रचुरोन्नतये आशीर्वादं प्रायच्छत्।

शौरीपुरस्य चरणरजोऽस्पृशत्–**जिनशासनस्य वर्तमानकालीनेषु चतुर्विंशतितीर्थंकरेषु द्वाविंशति तमस्य तीर्थंकरस्य नेमिनाथस्य वैराग्यस्य गाथा तस्य च त्रिकल्याणकै पवित्रं गिरनार सिद्धक्षेत्रमद्य प्रत्येक जनमानसस्य चचार्याः विषयोऽस्ति। तेन नेमिनाथ जिनेन सह सा राजुलसती अपि धन्या वर्तते, या नेमिनाथस्य विवाहस्य समये वैराग्यमग्नतया स्वयमपि तस्य पादमूले आर्यिकादीक्षां गृहीत्वा स्वनाम अमरमकरोत् सिद्धपदस्य अनुगामिन्यभवत्। सः नेमिर्जिनेश्वरो यस्यां भूमौ जन्मागृह्णात्, यत्र च स्व शैशवावस्थां कुमारावस्थां च व्यतीतामकरोत्, तस्य विषये केचिज्जनाः एवं जानन्ति, यज्जैनसमाजाय चिन्तनविषयोवर्तते।**

3 मई 2002 दिने तस्याः पवित्रायाः धरायाः रजो मस्तके निधाय तं प्रभुवरं नमनं कर्तुं सौभाग्यं पूज्यायाः मातुः कुण्डलपुरविहारसमये वयं सर्वे प्राप्नुम। अत्र पार्श्वे बटेश्वरे विश्रामस्य सुव्यवस्था वर्तते, जिनमन्दिरे भगवतो नेमिनाथस्य मनोज्ञा प्राचीना प्रतिमा विराजमाना विद्यते, किन्तु तस्मात् 2 किलोमीटर दूरे शौरीपुरं, यत् वास्तविकरूपेण जन्मभूमिरस्ति, साम्प्रन्तमेवोपेक्षिता वर्तते, तत्र जनाः गन्तुमतिभयं मन्यन्ते। यदा पूज्या माता तत्र गन्तुं वार्तामकथयत्, तु तीर्थस्य पदाधिकारिणः शिरसागंजात् समीपस्य ग्रामेभ्यश्च

कहने लगे कि माताजी! मैंने यहाँ के सभी कत्लखाने अपने कार्यकाल में बंद करवाए हैं और मैं पूर्णरूपेण शाकाहारी हूँ। तब माताजी बड़ी खुश हुईं और उन्हें खूब उन्नति का आशीर्वाद दिया।

➢शौरीपुर की चरण रज को छुआ–

जिनशासन के वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों में 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के वैराग्य की गाथा एवं उनके तीन कल्याणक से पवित्र गिरनार सिद्धक्षेत्र आज प्रत्येक जनमानस की चर्चा के विषय हैं। उन नेमि तीर्थंकर के साथ वह राजुल सती भी धन्य हो गईं, जिन्होंने नेमिप्रभु के विवाह के वक्त वैरागी हो जाने पर स्वयं भी उनके पादमूल में आर्यिका दीक्षा लेकर अपना नाम अमर कर लिया और सिद्धपद की अनुगामिनी हो गई थीं। उन नेमि जिनेश्वर ने जिस पवित्र भू पर जन्म लिया, जहाँ अपनी शैशवावस्था, कुमारावस्था बिताई, उसके बारे में कतिपय लोग ही जानते हैं, जो जैन समाज के लिए चिन्तन का विषय है।

3 मई 2002 को उस पवित्र धरा की धूलि को मस्तक पर चढ़ाकर उन प्रभुवर को नमन करने का सौभाग्य पूज्य माताजी के कुण्डलपुर विहार के मध्य हम सभी को प्राप्त हुआ। यहाँ पास में बटेश्वर में रुकने की अच्छी व्यवस्था है, जिनमंदिर में नेमिनाथ भगवान की मनोज्ञ, प्राचीन प्रतिमा विराजमान है परन्तु उससे 2 किमी. दूर शौरीपुर, जो वास्तविक जन्मभूमि है, अत्यन्त उपेक्षित है और वहाँ लोग जाने से भी डरते हैं। जब पूज्य माताजी ने वहाँ जाने की बात कही, तो तीर्थ के पदाधिकारियों एवं शिरसागंज व आसपास से पधारे दर्शनार्थियों ने कहा कि–माताजी! आप कल

समागतान् दर्शनार्थिनोऽकथयन् यत्–मातः! भवती अग्रिम दिने एव शौरीपुरं गच्छेत् दर्शनं च कृत्वा प्रत्यागत्यात्रैव तिष्ठतु किन्तु माताश्री अकथयत् यत् अहमेकस्मै दिनाय स्व वास्तविकं तीर्थमवश्यमेव स्थास्यामि अतः सायंकाले विहारं कृत्वा रात्रौ विश्रामं तत्रैवाकुर्म। यतो हि पञ्चाशत् वर्षेषु कोऽपि साधुरस्मिन् शौरीपुरतीर्थे नातिष्ठत्, माताश्रीश्च संघस्य लघुवयस्काः सुकुमार्यः बालिकाः नीत्वा निर्भयमनसाऽस्मिन् तीर्थेऽतिष्ठत् अतः अज्ञातभयात् अत्र समितिजनाः पुलिससंस्थानात् द्वौ भुसुण्डीधारको सैनिकौ आहूय प्रहरीरूपेणातिष्ठापयन् किन्तु मातुरिदमेव कथनमासीत् भ्रातः! वयं साधवः स्मः, साधुश्च कस्यापि उपसर्गस्य भयस्य मृत्योश्च चिन्ता न करोति।

यद्यपि क्षेत्रं सुन्दरतया सह स्वच्छं सुखदं चास्ति किन्तु बटेश्वरात् शौरीपुर आगमनस्य मार्गाऽति जनशून्योः वर्तते। 4 मई दिने प्रातः 5 वादन समये माताश्रीः मन्दिरं गत्वा सामायिकं ध्यानं चाकरोत्। वयं द्वयोर्मन्दिरयोर्दर्शनं कृत्वाभिषेकं चापश्याम। वरुआमठस्य च महतो मन्दिस्य खड्गासनस्थस्य नेमिनाथ पितामहस्य शताष्ट कलशैरभिषेकमारभत्। अत्र प्रतिमायाः प्रशस्तौ पंचाशत् वर्षाणां पूर्वस्य गणतंत्र शासनस्य राष्ट्रपतेः श्री राजेन्द्रप्रसादस्य प्रधानमंत्रिणश्च जवाहरलालनेहरोश्च नामनी अपि स्तः। प्रतिमायाः उभयपार्श्वतः यक्ष–यक्षी अपि स्तः। आगरानगरात् आगताः क्षेत्रस्य पदाधिकारिणः श्री स्वरूपचन्द्रो जैनः मार्शंसः (अध्यक्षः), श्री मनोहरलालो जैनः, श्री निर्मलजैनादयः क्षेत्रस्य प्रगतये पूज्यया मात्रा सह विस्तृता चर्चामकुर्वन्।

ही शौरीपुर जाना और दर्शन करके वापस आकर यहीं ठहरना किन्तु माताजी ने कहा कि मैं एक दिन अपने असली तीर्थ पर अवश्य रुकूँगी। सो शाम को विहार कर रात्रि विश्राम वहीं किया। चूँकि 50 वर्षों में कोई साधु इस शौरीपुर तीर्थ पर नहीं रुका था और पूज्य माताजी संघ की छोटी-छोटी सुकुमार बालिकाओं को लेकर निर्भयमना इस तीर्थ पर रुकी थीं अतः अज्ञात भय के कारण यहाँ कमेटी के लोगों ने पुलिस चौकी से दो बंदूकधारी सिपाही बुलाकर पहरे पर तैनात कर दिए लेकिन पूज्य माताजी का यही कहना रहा कि भइया! अपन साधु हैं और साधु को किसी उपसर्ग, भय अथवा मृत्यु का डर व चिंता नहीं रहती।

वैसे क्षेत्र सुंदर होने के साथ साफ-सुथरा है किन्तु बटेश्वर से शौरीपुर आने का रास्ता बड़ा सुनसान व निर्जन है। 4 मई को पूज्य माताजी ने प्रातः 5 बजे तीर्थ के मंदिर जी में जाकर सामायिक व ध्यान किया, दोनों मंदिर के दर्शन कर अभिषेक देखा तथा वरुआमठ के बड़े मंदिर वाले खड्गासन नेमिनाथ बाबा का 108 कलशों से अभिषेक कराया। यहाँ की प्रतिमा की प्रशस्ति में 50 वर्ष पूर्व के गणतंत्र शासन एवं राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का नाम भी अंकित है। प्रतिमा के आजू-बाजू में सुन्दर यक्ष-यक्षी हैं। आगरा से आए क्षेत्र के पदाधिकारी श्री स्वरूपचंद जैन मार्शन्स (अध्यक्ष), श्री मनोहरलाल जी, श्री निर्मल जैन आदि ने क्षेत्र की प्रगति के लिए पूज्य माताजी से काफी विस्तृत चर्चा की।

भयंकरस्य ग्रीष्मवायोः चपेटानपि असहामहि–**जसवन्तनगरात् इटावां प्रति यदा संघस्य प्रस्थानमभवत्, तु भयंकरस्य ग्रीष्मस्य ऋतुरासीत्। तत्र तस्मिन् काले 48 डिग्री तापमान–मासीत्। अग्रे–पृष्ठे, उपरि–नीचैश्च सर्वतः भयंकराणां तीव्रतप्तवायूनां प्रहारै गमनं पदविहारश्च अत्यन्तमेव कठिनं प्रतीतमभवत्। अनेन सहैव सहचारिणो जना पुनः पुनः अकथयन् यत् मातः! भवती कथं एतावति भयंकरे ग्रीष्मे नग्नपादाभ्यां चलति? वयं तु पादेषु चप्पलान्–उपानहाः धारयामः, तदापि अस्मभ्यं चलनं कठिनं वर्तते। सत्यमेव जैन–दीक्षा असिधारचलनमिवास्ति। मातः! एतावति ग्रीष्मे तु भवन्त्यः एकस्मिन् स्थाने विश्रामं कुर्वन्तु।**

परन्तु साधुभ्यः को ग्रीष्मः किं च शीतम्? ते सर्वे तु एतानेव परीषहान् सोढुं दीक्षामगृह्णन्। अतएव मनःसु भगवन्तं महावीरस्य भक्तिं धारयन्त्यो वयं स्वमार्गे अचलाम तदा। तस्मिन् समये, संघस्थानामपि भगिनीनां स्वास्थ्यानि अनिष्टान्यासन्। इटावा नगरे प्रवेशकालेऽपि वायुतीव्रतायाःकारणैः पादविहारे बहुकाठिन्यमवर्तत, तस्मिन्नपि प्रायः 2 किलोमीटर दीर्घा शोभायात्रासीत्। 15 मई दिने इटावा नगरे एव अक्षयतृतीयाः पर्वणः कार्यक्रमो निर्धारितः आसीत् सर्वे नगरवासिनश्च भगवते इक्षुरसस्याहारमदुः सर्वेभ्यश्च प्रसादो वितरितोऽभवत्। 17 मई दिने इटावा नगरस्य छिपैटीस्थ मन्दिरे वेदिका प्रतिष्ठायाः कार्यक्रमः संपन्नोऽभवत्।

पूज्यमातुः नागरिक अभिनन्दनम्–**18 मई दिने इटावा नगरे हर्षस्य वातावरणमासीत् यतोऽद्य तत्र नागरिकाः मातुरभिनन्दनं कर्तुमैच्छन्। प्रातः काले सभायाः संयोजनं मन्दिरस्य**

➢भयंकर लू के थपेड़े भी सहन किये–

जसवन्तनगर से इटावा की ओर जब संघ का प्रस्थान हुआ, तो भयंकर गर्मी पड़ रही थी। वहाँ उस समय 48 डिग्री तापमान चल रहा था। आगे-पीछे, ऊपर-नीचे चारों ओर से चल रहे भयंकर लू के थपेड़ों के कारण पदविहार करना अत्यन्त कठिन प्रतीत हो रहा था और साथ चलने वाले लोग बार-बार यही कह रहे थे कि माताजी! इतनी भयंकर गर्मी में आप किस प्रकार नंगे पैर चल रही हैं, हम तो पैरों में चप्पल-जूते पहने हैं, फिर भी हमारे लिए चलना मुश्किल है। सचमुच जैनी दीक्षा तलवार की धार पर चलने के समान है। माताजी! इतनी गर्मी में तो आप कहीं एक जगह विश्राम करें।

परन्तु साधु के लिए क्या गर्मी, क्या सर्दी? उन्होंने तो इन सभी परीषहों को सहन करने के लिए ही दीक्षा ली है अतः मन में भगवान महावीर की भक्ति को संजोए हम अपने पथ पर बढ़ते रहे। उस समय संघ की ब्रह्मचारिणी बहनों के भी स्वास्थ्य काफी गड़बड़ हुए। इटावा में भी प्रवेश के समय हवा बंद होने के कारण चलने में बहुत कठिनाई हुई और उसमें भी लगभग 2 किमी. का जुलूस था। 15 मई को इटावा में ही अक्षय तृतीया पर्व का विशेष कार्यक्रम रखा गया और पूरे नगरवासियों ने भगवान को इक्षुरस का आहार दिया पुनः सभी को प्रसाद वितरित किया गया। 17 मई को इटावा के छिपैटी मंदिर में वेदी प्रतिष्ठा का कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

➢पूज्य माताजी का नागरिक अभिनंदन–

इटावा नगरी में 18 मई को खुशियों का माहौल था क्योंकि आज वहाँ के नागरिक माताजी का अभिनंदन करना चाहते थे। प्रातःकालीन भव्य सभा का आयोजन उन्होंने मंदिर परिसर के ही

परिसरे एव भव्यप्रागंणेऽभवत्। तस्यां सभायां अनेक गण्यमान्याः महानुभावाः पूज्यां मातरं प्रति स्वसुन्दर विचारान् प्रस्तुतानकुर्वन्। जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य विकासस्य च मुक्तकण्ठैः प्रशंसामकुर्वन् परन्तु माता भीषणस्य ग्रीष्मस्य कारणेरेतावती अस्वस्थता जाता यत् प्रकोष्ठात् बहि पाण्डालेऽपि आगन्तुं नाशक्नोत् पुनः सम्पूर्णासभा मम क्षुल्लकमोतीसागरस्य च सान्निध्ये संचालिताभवत् सम्पूर्णश्च जैन समाजो इटावा पक्षतः पूज्यमातुरभिनन्दनं विधाय तस्यै प्रशस्तिपत्रमुपाहरत्, तदापि माता तस्यैववाक्यस्य पुनरावृत्तिमकरोत् यत् अहं यं चरणं अवधार्य, अथवा अहं यं तीर्थंकरस्य जन्मभूमेः विकासं कारयामि, तत् स्वप्रभावनायै स्वाभिनन्दनाय नास्ति, अपितु तीर्थस्य तीर्थंकराणां भगवतां प्रभावनायै निरगच्छम्। मह्यं तु मम सर्वं कार्यं मम आर्यिका पदव्येवास्ति। मातुः सर्वथा शिथिलामस्वस्थतां वीक्ष्य इटावा निवासनिस्तस्यै 2–4 दिनानि तत्रैव स्थातुं न्यवेदयन्, परन्तु माताश्रीः अग्रिमदिने प्रातः विहारं कृत्वा यदा अग्रे अनाच्छादिते विद्यालयमागत्यातिष्ठत् तदा तस्याः स्वास्थ्यं किञ्चित् स्वस्थमभवत्। नगरस्य प्रदूषणे ग्रीष्मे च प्रायः सा कष्टमन्वभवत्। अतएव दृश्यते यत् ग्रीष्मस्य विहारः एतस्यै हानिकरो भवति।

परिवर्तिते ऋतौ विहारस्य गतिरवर्धत्–**गत दिनानां वर्तमानं भयंकरं ग्रीष्ममवलोक्य तु इदमेव प्रतीतमभवत् यत् स्यात् विहारस्य गतिर्मन्दा भविष्यति वयं च नियते समये प्रयागतीर्थं प्राप्तुं सक्षमाः न भविष्यामः परन्तु वयं निश्चितरूपेण ऋतवे धन्यवादं दास्यामः यत् 28 मई**

भव्य प्रांगण में किया था। उसमें अनेक गणमान्य महानुभावों ने पूज्य माताजी के प्रति अपने सुन्दर विचार प्रस्तुत किए और जन्मभूमि कुण्डलपुर विकास की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। लेकिन भीषण गर्मी के कारण माताजी वहाँ इतनी अस्वस्थ हो गईं कि वे कमरे से बाहर पाण्डाल में भी न आ सकीं। पुनः पूरी सभा मेरे एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी के सानिध्य में चली और सम्पूर्ण जैन समाज इटावा की ओर से पूज्य माताजी का अभिनंदन करके प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया, उस समय भी माताजी ने यही वाक्य दोहराए कि भाई! मैंने जो कदम बढ़ाए हैं अथवा जो मैं तीर्थंकर जन्मभूमि का विकास करवा रही हूँ, वह अपनी प्रभावना अथवा अपने अभिनंदन के लिए नहीं, अपितु तीर्थ एवं तीर्थंकर भगवन्तों की प्रभावना हेतु निकली हूँ, मेरे लिए तो मेरा सब कुछ मेरी आर्यिका पदवी ही है। माताजी की एकदम निढाल अवस्था देखकर इटावा वाले माताजी को 2-4 दिन वहीं रोकने के लिए अत्यर्थ निवेदन कर रहे थे किन्तु माताजी अगले दिन प्रातः विहार करके जब आगे खुले स्कूल में आकर ठहरीं, तो उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक हो गया। शहर के प्रदूषण एवं गर्मी से उन्हें प्रायः तकलीफ हो जाया करती है। इसीलिए देखा है कि गर्मी का विहार इनके लिए अति हानिकारक रहता है।

➢बदलते मौसम से बढ़ गई विहार की गति–

पिछले दिनों की पड़ी भयंकर गर्मी को देखकर एक बार तो यही लगा कि शायद विहार की गति मंद पड़ जाएगी और हम लोग नियत समय पर प्रयाग तीर्थ पर नहीं पहुँच सकते हैं परन्तु हमें निश्चित रूप से मौसम को धन्यवाद देना पड़ेगा कि 28 मई की रात्रि में

दिने रात्रौ द्विवादनसमये अत्यधिकेन तीव्रवायुना वर्षायाश्च कारणेन प्रातः ऋतुः अत्यधिक सुखदोऽभवत् वयं च यस्मिन् स्थाने घाटमपुरे विश्रामार्थं स्थातुमास्म, तत् त्यक्त्वाग्रे गत्वातिष्ठाम, यतो हि तत्र द्वौ–त्रीणि जैनानां गृहाणि सन्ति, अतः घाटमपुरस्य स्त्री–पुरुषाः तत्रैव परासग्रामस्य विद्यालयमागत्य प्रवचनस्य लाभं प्राप्नुवन्।

ऋतुः सुखदः आसीत् अतोऽग्रे विहारस्य कार्यक्रमः कथाचित् द्रुतगत्या अभवत् वयं चैतत् अन्वभवाम यत् वयं शीघ्रमेव प्रयागे पादार्पणं करिष्यामः।

सैनी ग्रामे द्वयोः संघयोः मिलनमभवत्–**पदविहारं कुर्वतां साधूनां परस्परं मिलनं महत्यैव दुर्लभतया संभवमस्ति, यतो हि दिगम्बर जैन साधूनामागमचर्या महत्येव दुरूहा विद्यते यदा च तेषां परस्परं मिलनं भवति, तु विशेषेणाल्हादेन सहैव काश्चित् विशेषोपलब्धयोऽपि अविस्मरणीयाः भवन्ति, एषैव वार्ता सैनी ग्रामेऽभवत्, यदा परमपूज्यस्य वात्सल्यरत्नाकरस्य स्वर्गीयस्याचार्यश्रीविमलसागरस्य शिष्यस्य आचार्यश्रीभरतसागरस्य पूज्याया गणिन्याः ज्ञानमत्याश्च संघस्य परस्पर मिलनं, 7 जून 2002 दिने सैनीग्रामस्य गुरुकुलेऽभवत्। यतो हि वयं पूर्वमेव सूचिताः आस्मः अतस्तत्र 4 दिवसीयः प्रवासोऽभवत्। आचार्य श्रियः मिलनस्य निमित्तं माताश्रीः अत्रैव विश्रामस्य निश्चयमकरोत्। अत्र गुरुकुलस्य व्यवस्थापकस्य व्यवहारो नितान्तमेव शोभनीयः आसीत्। सः संघस्थानां भगिनीनां एकबारं कथनेनैव अनेकप्रकोष्ठान् रिक्तान् कृत्वा वसतिका दानस्य महत पुण्यं संचितमकरोत्।**

---

2 बजे अत्यधिक आंधी और बारिश के कारण सुबह मौसम बेहद सुहावना रहा और हम लोगों को जिस स्थान घाटमपुर में रुकना था, उसे छोड़कर आगे जाकर रुके और चूँकि वहाँ 2-3 जैन घर हैं अतः घाटमपुर के स्त्री-पुरुषों ने वहीं परासगांव के विद्यालय में आकर प्रवचन का लाभ लिया।

मौसम अच्छा हो जाने के कारण आगे विहार का कार्यक्रम कुछ द्रुतगति से बनने लगा और हमें ऐसा लगा कि हम जल्दी ही प्रयाग-इलाहाबाद पहुँच जायेंगे।

➢सैनी ग्राम में हुआ दो संघों का मिलन–

पदविहार करने वाले साधु का परस्पर मिलन बड़ी ही दुर्लभता से संभव हो पाता है, क्योंकि दिगम्बर जैन साधु की आगमचर्या बड़ी ही दुरूह है और जब भी उनका परस्पर मिलन होता है, विशेष आल्हाद के साथ-साथ कुछ न कुछ अविस्मरणीय विशेष उपलब्धियाँ हो ही जाती हैं, यही बात सैनी ग्राम में हुई, जब परमपूज्य वात्सल्य रत्नाकर स्व. आचार्य श्री विमलसागर महाराज के शिष्य आचार्य श्री भरतसागर महाराज एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ का परस्पर मिलन 7 जून 2002 को सैनी के गुरुकुल में हुआ। चूँकि हमें पूर्व में सूचना प्राप्त हो गई थी अतः वहाँ 4 दिवसीय प्रवास रहा। आचार्य श्री से मिलने के लिए माताजी ने यहीं रुकने का निर्णय लिया। यहाँ गुरुकुल के व्यवस्थापक का व्यवहार बहुत ही अच्छा था, उन्होंने संघस्थ बहनों के एक बार कहने पर ही कई कमरे खाली करके अनजाने में ही वसतिका दान देकर महान पुण्य का संचय कर लिया।

तस्य संघे आचार्य श्री सहितः 4 मुनयः, 3 आर्यिका, द्वे च क्षुल्लिके, अनेन प्रकारेण 8 साधवः आसन्। यतो हि आचार्य श्री भरतसागरस्य 7 मासेभ्यः वाणी निरुद्धाऽऽसीत् अतएव संघे अत्यन्तमेव दुःखस्य वातावरणमासीत्। पूज्या माता प्रातः एव संघेन सह एक होरापर्यन्तं वार्तालापमकरोत् आर्यिकाया च स्याद्वादमत्याः आग्रहेण आचार्य श्रियः स्वास्थ्याय मंत्रमाप्यदात्, यं सर्वे विधातुं संकल्पमकुर्वन् अधुना च वर्तमाने एतत् ज्ञात्वा महती प्रसन्नता भवति, यदाचार्यश्रियो वाणी निर्गताभवत्। 8 जून दिने प्रातः पञ्चवादने द्वयोः संघयोः मंगलविहारः पृथक्–पृथक् दिक्षु अभवत्, इदं च संघस्य परस्परं मिलनमत्यन्तमेव सुखदमभवत्।

44 तमस्य वर्षस्य पूर्णताया वात्सल्यपूर्णः आशीर्वादः प्राप्तोऽभवत्–**1958 वर्षस्य ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्यायां अहमपि मातु मोहिन्याः देव्याः पवित्रकुक्षेः द्वादशतमस्य सन्तानस्यरूपेण जन्म गृहीत्वा विंशति शताब्द्याः महत्याः साध्व्याः पूज्यायाः गणिनी प्रमुखायाः श्री ज्ञानमत्याः लघुभगिनीरूपेण सौभाग्यं प्राप्नवम् एकादशवर्षलघुवयसि सन् 1969 तमे वर्षे जयपुरमहानगरे मातुः प्रथमदर्शनं कृत्वा पंचवर्षाणाम् ब्रह्मचर्यव्रतं गृहीत्वा निजजन्मधन्यमकुर्वम्, तदनंतरं च त्रयोदशवर्षाणां वयसि अजमेर नगर्यां मात्रा आजन्मब्रह्मचर्यव्रतं ग्रहणस्य पश्चात् मह्यं सदैव गुरोः छत्रछाया सुलभाऽभवत्, या मम अन्धकारपूर्णं जीवनं (अमावस्याया जन्म) शरत्पूर्णिमायाः ज्योत्स्नया परिपूर्णं कृत्वा तत् आलोकितमकरोत्। 13 अगस्त 1989 दिने च मह्यं नारीजीवनस्य सर्वोत्कृष्टपदस्य आर्यिका दीक्षायाः प्राप्तिरभवत्, येन मह्यं मुक्तिमार्गः**

उनके संघ में आचार्यश्री सहित 4 मुनि, 3 आर्यिकाएँ और दो क्षुल्लिका माताएँ, इस प्रकार 8 साधु थे। चूँकि आचार्य श्री भरतसागर महाराज की 7 माह से आवाज बंद हो गई थी अतः संघ में बड़ा मायूस वातावरण था, पूज्य माताजी ने प्रातः ही संघ के साथ 1 घंटा तक वार्ता की और आर्यिका श्री स्याद्वादमती माताजी के आग्रह पर आचार्यश्री के स्वास्थ्य के लिए मंत्र भी दिया, जिसे सभी ने करने का संकल्प किया, और अब वर्तमान में यह जानकर बड़ी ही प्रसन्नता होती है कि आचार्यश्री की आवाज वापस आ गई है। 8 जून को प्रातः 5 बजे दोनों संघों का मंगल विहार अलग-अलग दिशा में हो गया, यह संघ का पारस्परिक मिलन बड़ा ही सुखद रहा।

➢44वें वर्ष की पूर्णता पर वात्सल्यपूर्ण आशीष मिला–

सन् 1958 की ज्येष्ठ वदी अमावस्या की तिथि में मुझे भी माता मोहिनी की पवित्र कुक्षि से 12वीं संतान के रूप में जन्म लेकर बीसवीं शताब्दी की महान साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की छोटी बहन होने का गौरव प्राप्त हुआ था 11 वर्ष की लघु उम्र में मैंने सन् 1969 में प्रथमबार जयपुर महानगर में पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रथम दर्शन करके 5 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर अपना जीवन धन्य किया, उसके पश्चात् पुनः 13 वर्ष की लघुवय में अजमेर नगरी में माताजी से ही आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेने के पश्चात् मुझे सदैव गुरू की छत्रछाया मिली, जिसने मेरे अंधियारे जीवन (अमावस्या के जन्म) को शरदपूर्णिमा की चांदनी से परिपूर्ण कर उसे आलोकित कर दिया और 13 अगस्त 1989 को मुझे नारी जीवन का सर्वोत्कृष्ट पद आर्यिका दीक्षा की प्राप्ति

सहजतया प्राप्तोऽभूत् मम च प्रत्येकजन्मदिवसे दीक्षादिवसे च मह्यं माता सदृशायाः वात्सल्यपूर्णायाः देवीस्वरूपायाः मातुः वात्सल्यपूर्णः आशीर्वादः सुलभोऽभवत्, तस्मिन्नेव क्रमे 10 जून 2002 दिने ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्यायां यदा वयं इलाहाबादात् 17 किलोमीटर दूरे सुलेमसराय नामके स्थाने आस्म, तदा मह्यं मम कायिकस्य जन्मदिवसस्य 45 तमे वर्षे मातुः वात्सल्यपूर्णः चारित्रवृद्धेश्च स्नेहिलः आशीर्वादः प्राप्तोऽभवत् यश्च संसारस्य सर्वनिधिषु अतिशयकारी आसीत्। वास्तवे गुरोः कृपादृष्टिः मानवस्य संसारसमुद्रात् पारकरणे सहकारि कारणं भवति।

यस्य विषये आचार्यदेवोऽकथयत्–

गुरुभक्ति संजमेण य, तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मं मरणं ण पावेंति।।

इलाहाबाद नगरे संघस्य मंगलं पादार्पणम्–**11 जून 2002 दिने पूज्या माता संघसहिता एकबारं पुनः इलाहाबाद नगर्यां मंगलप्रवेशमकरोत्। सूक्तिरियं लोकव्यवहारे प्रसिद्धास्ति–** ''याचनां विना मौक्तिकं प्राप्यते, याचनयां तु भिक्षापि सुलभा नास्ति'' **अथवा एतत् कथ्यते यत् जनः कदापि तत् वस्तु प्राप्नोति यस्य सः कल्पनामपि न करोति, स्यादिदं इलाहाबादस्य निवासिभिः सहाभवत्। यत् पुनः एकबारं ते मातुर्दर्शनानां लाभं प्राप्नुवन्। अत्र बैण्डवादनैः सह सर्वे नागरिकाः भव्यस्वागतहेतवे आगन्तुं तत्पराः अभवन्। एकदिवसीयः प्रवासः नवायां**

हुई, जिससे मुझे मुक्ति पथ का रास्ता सहज ही मिल गया तथा मेरे प्रत्येक जन्मदिवस व दीक्षादिवस पर माताजी जैसी वात्सल्यमयी देवीस्वरूपा माता का वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद मिला, उसी क्रम में 10 जून 2002 ज्येष्ठ वदी अमावस्या को जब हम इलाहाबाद से 17 किमी. दूर सुलेमसराय नामक स्थान पर थे, तब मुझे मेरे कायिक जन्मदिवस की 45वीं वर्षगांठ पर माताजी का वात्सल्यपूर्ण एवं चारित्रवृद्धि का स्नेहिल आशीर्वाद प्राप्त हुआ जो कि संसार की सभी निधियों से बढ़कर था। वास्तव में गुरु की कृपादृष्टि मानव को संसार समुद्र से पार कराने में सहकारी कारण बनती है, जिसके बारे में आचार्यदेव ने कहा है–

गुरुभक्ति संजमेण य तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मं मरणं ण पावेंति।।

➢इलाहाबाद शहर में संघ का मंगल पदार्पण–

11 जून 2002 को पूज्य माताजी ने संघ सहित एक बार पुनः इलाहाबाद नगरी में मंगल प्रवेश किया था। यह सूक्ति लोक व्यवहार में बड़ी प्रसिद्ध है–**बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।''** अथवा यो कहें कि कभी-कभी अनायास ही व्यक्ति को ऐसी अनमोल वस्तु मिल जाती है जिसकी उसने कल्पना भी न की हो और शायद यही इलाहाबादवासियों के साथ हो रहा था। क्योंकि एक बार पुनः पूज्य माताजी के दर्शनों का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हो रहा था। यहाँ बैण्ड-बाजे के साथ सारे समाज के लोग भव्य स्वागत हेतु उमड़ पड़े थे। एकदिवसीय प्रवास नई धर्मशाला में

धर्मशालायामभवत्। गत वर्षेऽस्या नवाया धर्मशालायाः उद्घाटनं मातुः सान्निध्ये ''विश्वशान्ति महावीर विधान'' पूर्वकमभवत्, तदा चाहं तत्र कार्यकर्तृभ्यः प्रेरणामदां, यत् भवन्तोऽस्य भवनस्य नाम ''महावीरजयन्तिभवनं'' **कुर्युः, अतस्तत्रापश्याम् यत् भवनस्याग्रभागे** ''महावीर जयन्तीभवनस्योद्घाटनं'' **पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः सान्निध्ये 6 अप्रैल 2001 दिनेऽभवत्'' इति विषयस्य शिलालेख संलग्नः आसीत्। यमवलोक्य चेतासि प्रसन्नताभवत्, यतो मातुः अस्य भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक महोत्सवस्यान्तर्गतं प्रत्येक जैन श्रावकाय इयमेव प्रेरणा भवति यत् भवन्तः स्वनगरे नूतनस्य जैनमन्दिरस्य वा धर्मशालायाः निर्माणकाले ''भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकमहोत्सवस्य वर्षस्यान्तर्गत– मित्यवश्यमेव लेखयन्तु धर्मशालादीनां च नामकरणं भगवतो महावीरस्य नाम्नि कुर्वन्तु।**

कुण्डलपुर व्याजात् ऋषभदेव दीक्षास्थल्याः दर्शनमकुर्म–**पदविहारिणे साधवे एकदा कस्यापि तीर्थात् निर्गमनस्य पश्चात् पुनस्तत्रागमनं निश्चितं न भवति, अयमेकः सुखदोऽभूतपूर्वः संयोग एवासीत् यत् कुण्डलपुरं प्रति विहारस्य कारणात् एकबारं पुनः अस्मभ्यं दीक्षा स्थल्याः तीर्थस्य दर्शनस्य सौभाग्यं प्राप्तमभवत् तस्य च क्षणस्य स्मृतिरभवत् यदा अस्य तीर्थस्य वियोगकाले मम नेत्रयोर्जलधारा प्रावहत्, तदाहं भगवतो ऋषभदेवस्य चरणवन्दना काले इमामेव भावना न्यवेदयम्–**

''भगवन् ऋषभदेव! त्वां मम इयमेव प्रार्थना विद्यते। एकबारं पुनः मां तपःस्थल्यां आहूय।''

रहा। पिछले वर्ष इस नई धर्मशाला का उद्घाटन पूज्य माताजी के सानिध्य में विश्वशांति महावीर विधानपूर्वक हुआ था और उस समय मैंने वहाँ के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी थी कि आप लोग इस भवन का नाम **''महावीर जयंती भवन''** रखें, सो वहाँ देखा कि भवन के आगे **''महावीर जयंती भवन''** का उद्घाटन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में 6 अप्रैल 2001 को हुआ'' इस मैटर का शिलालेख लगा था। जिसे देखकर मन में खुशी हुई क्योंकि माताजी की इस भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महामहोत्सव के अन्तर्गत प्रत्येक जैन श्रावक के लिए यही प्रेरणा रही है कि आप सब अपने शहर में नूतन जिनमंदिर, धर्मशाला आदि के निर्माण कराते समय ''भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत'' अवश्य लिखें तथा धर्मशाला आदि का नामकरण भगवान महावीर के नाम पर करें।

➢कुण्डलपुर की यात्रा ने ऋषभदेव दीक्षास्थली के दर्शन कराये–

पदविहार करने वाले साधु के लिए एक बार किसी तीर्थ से निकलने के बाद वापस पुनः आना कोई निश्चित नहीं होता है, यह एक सुखद और अनहोना संयोग ही था कि कुण्डलपुर की ओर हो रहे विहार के कारण एक बार पुनः हमें दीक्षास्थली तीर्थ के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया और उस क्षण की स्मृति हो आई, जब इस तीर्थ को छोड़ते समय अत्यन्त विह्वलता के कारण मेरी आँखों में अश्रु आ गए थे, उस समय मैंने भगवान ऋषभदेव की चरण वंदना करते हुए यही भावना निवेदित की थी–

''यह प्रार्थना है मेरी, श्री ऋषभ प्रभु जी तुमसे।
इक बार फिर बुलाना अपनी तपस्थली पे।''

स्यान्मम तस्यै प्रार्थनायै, तस्याः प्रार्थनायाः पूर्णे मात्रमेकवर्षस्य समयो व्यतीतः। एकस्य वर्षस्य पश्चाच्च न केवलं दिल्लीनगर्याः मंगल विहारस्य पश्चात् 113 दिनेषु तीर्थस्य दर्शनस्य सौभाग्यं प्राप्तमभवत् अपितु 2002 वर्षस्य चतुर्मासस्य योगोऽप्यत्रैवागतः। मनसस्तमाह्लादमहं शब्दैर्वर्णयितुमसमर्थतामनुभवामि।

मात्रा प्रदत्तेषु मंत्रेषु अद्भुता शक्तिर्विद्यते–**14 जून मासस्य वार्तास्ति, प्रातः सप्तवादने काले माताश्रीः दर्शनं वन्दनं कृत्वाभिषेकं चावलोक्य त्यागिभवने उपविष्टा आसीत्, तदैव प्रातः 8 वादने ब्र. रवीन्द्रः आगत्याकथयत् यत् ब्र. प्रभायाः पाटन्याः मालवातः दूरभाषोऽमिलत् यत् अद्य प्रातःकालात् 3 वादनसमयात् आचार्यो भरतसागरो न जानामि कुत्र गतोऽस्ति? अतः संघे सर्वे जनाः अति दुःखिताः सन्ति। भवान् कृपया मातरं पृष्ट्वा वदतु यत् वयं किं करवाम? महाराजः कुत्र प्राप्तो भविष्यति? प्रातःकालादेव वयं सर्वतोऽन्विष्यन्तः दुःखिताः स्म। रवीन्द्रस्य कथनेन माता मंत्रं वदन्ती अकथयत् यत् ते जनाः चिन्तां न कुर्वन्तु, महाराजः सुरक्षितो विद्यते, अल्पेन कालेन निवर्तिष्यते। तत्पश्चादपि कतीनां दूरभाषाणां निरन्तरमागमनेन वयमपि चिन्तिताः अभवाम। पुनः अल्पेन कालेन दूरभाषः आगच्छत् यत् अत्र स्याद्वादमती माता, संघस्य च साधवो जाप्यं प्रारभन्त, तत्र अर्ध किलोमीटर दूरे सेतोः अधः ग्रामे एव महाराजो उपाविशत्, सः स्वयमेवोत्थाय बहिरागच्छत् वयं तं संघे आनयाम, वयमधुनाऽऽहारस्य व्यवस्थां कर्तुं तत्पराः स्म। एतच्छ्रुत्वा सर्वे सन्तुष्टाः अभवन्। तेषु दिनेषु आचार्यऽस्वस्थतायाः कारणेन मानसिकरूपेण किञ्चित् अस्वस्थः आसीत्।**

शायद मेरी उस सच्ची भावना को, उस प्रार्थना को पूर्ण होने में मात्र 1 वर्ष का ही समय लगा और एक वर्ष के बाद ही पुनः न सिर्फ दिल्ली से मंगल विहार के पश्चात् 113 दिनों में तीर्थ पर आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अपितु सन् 2002 के चातुर्मास का योग भी यहीं आ गया। मन के उस आल्हाद को शब्दों के माध्यम से प्रकट करने में मैं असमर्थता महसूस कर रही हूँ।

➢माताजी के द्वारा प्रदत्त मंत्रों में अद्भुत शक्ति है–

14 जून की बात है, प्रातः 7 बजे माताजी दर्शन-वंदन करके अभिषेक देखकर त्यागी भवन में बैठी थीं, तभी लगभग 8 बजे ब्र. रवीन्द्र जी ने आकर बताया कि ब्र. प्रभा पाटनी का (मालवा से) फोन आया है कि आज प्रातः 3 बजे से आचार्यश्री भरतसागर महाराज पता नहीं कहाँ चले गए हैं अतः संघ में सभी लोग बहुत परेशान हैं, आप कृपया पूज्य माताजी से पूछकर बताएँ कि हम लोग क्या करें? महाराज जी कहाँ मिलेंगे? सुबह से हम सभी चारों ओर ढूंढते-ढूंढते परेशान हैं। रवीन्द्र जी के कहने पर माताजी ने मंत्र बताते हुए कहलाया कि आप लोग चिन्ता न करें, महाराज जी सुरक्षित हैं, थोड़ी देर में आ जाएंगे। उसके बाद भी लगातार कई फोन आ जाने से हम लोगों को भी थोड़ी चिंता हुई पुनः थोड़ी देर बाद फोन आया कि इधर स्याद्वादमती माताजी एवं संघ के साधुओं ने जाप्य शुरू की थी, उधर आधा किमी.दूर गांव में ही एक पुलिया के नीचे महाराज जी बैठे थे, वह अपने आप उठकर बाहर आ गए और हम लोग उन्हें संघ में ले आए हैं, अब हम आहार की व्यवस्था कर रहे हैं, यह सुनकर सभी को संतोष हुआ। उन दिनों आचार्यश्री अस्वस्थता के कारण मानसिक रूप से कुछ परेशान थे।

वस्तुतो दीर्घतपस्विन्याः मातु मंत्राणामीदृशाश्चमत्काराः वयं नैकबारं किन्तु बहुशोऽपश्याम।

ग्रन्थानां जन्मदा अस्ति श्रुतपंचमी–**अद्य समयात् प्रायः 200 वर्षाणि पूर्वं यदा धरित्र्यामंगज्ञानं लुप्त प्राय अभवत्, तदा गिरिनारपर्वते विराजमानः धरसेनाचार्यः श्रुतरक्षायाः चिन्तायाः कारणात् महिमानामनगर्यां भवितुं प्रस्तावितात् विशालात् साधु सम्मेलनात् पत्रेण द्वौ महायोग्यौ मुनी स्व समीपमाहूय तान् परीक्ष्य ताभ्यां अंगज्ञानं प्रादात् परीक्षायां विजयस्य च कारणात् तयोः पुष्पदन्तो भूतबलिश्च नामनी अभवताम्। तावेव पुष्पदन्त भूतिबलिनौ आचार्यौ गुरुणा प्रदत्तेन तेन ज्ञानेन षट्खण्डागमनामकं महान्तं सिद्धान्तग्रन्थं अरचयताम् यदा च सः ग्रन्थोऽंकलेश्वरे–गुजराते परिसमाप्तोऽभवत् सा तिथिः ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी आसीत्, या श्रुतज्ञानस्य रचनायां पूर्णेसति श्रुतपंचमीति विख्याता भवत्। एतत् महत् दिनं प्रतिवर्षं मातुः सान्निध्ये विशेषरूपेणायोजितं भवति। प्रतिवर्षमिव वर्षेऽस्मिन्नपि 15 जून 2002 दिने प्रयागतीर्थे तत् प्रभावनया सहायोजितमभवत्।**

श्रुतपंचमी पर्वणः संघे एक विशेषं महत्वमन्यदप्यस्ति यत् जने–जने भ्रातेतिनाम्ना प्रसिद्धः कर्मयोगिना उपाधिनाऽलंकृतः, युवामादर्शः, स्वशान्तेन मधुरस्मितेन च सर्वेषां मनसां विजेता अनेकासां च संस्थानां सुचारुरीत्या संचालकः संघस्थः ब्रह्मचारी रवीन्द्रोऽस्यामेव श्रुत पंचम्याः दिने 1950 वर्षे मात्रा मोहिन्या जन्म गृहीत्वा स्वस्मिन् तत् श्रुतज्ञानं समाहितमकरोत् मातुश्च सुयोग्य शिष्यरूपेण स्व प्रतिभायाः चतुर्मुखं विकासं विधाय जिनधर्म

वस्तुतः दीर्घतपस्विनी माताजी के मंत्रों के ऐसे चमत्कार हमने एक नहीं अनेकों बार देखे हैं।

➢ग्रंथों का जन्मदाता है श्रुतपंचमी पर्व–

आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व जब धरती पर अंगज्ञान लुप्तप्राय हो रहा था, उस समय गिरनार पर्वत पर विराजमान धरसेनाचार्य ने श्रुत रक्षा की चिंता होने पर महिमा नामक नगरी में होने वाले विशाल साधु सम्मेलन से पत्र द्वारा दो योग्य महामुनियों को अपने पास बुलाकर उनकी परीक्षा लेकर अंगज्ञान प्रदान किया और परीक्षा में विजय प्राप्त करने के कारण उनका पुष्पदंत-भूतबलि नाम पड़ा। इन्हीं पुष्पदंत-भूतबलि आचार्य ने गुरु द्वारा प्रदत्त उस ज्ञान से षट्खण्डागम नामक महान सिद्धान्त ग्रंथ की रचना की और जिस दिन वह ग्रंथ अंकलेश्वर-गुजरात में पूर्ण हुआ, वह तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी थी, जो श्रुतज्ञान की रचना के पूर्ण होने पर श्रुतपंचमी कहलाई। ऐसे महान दिवस को प्रतिवर्ष माताजी के संघ सानिध्य में विशेष रूप से मनाया जाता है, हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 15 जून 2002 को प्रयाग तीर्थ पर उसे प्रभावनापूर्वक मनाया गया।

श्रुतपंचमी पर्व का संघ में एक विशेष महत्त्व और भी है कि जन-जन में भाई जी के नाम से मशहूर एवं कर्मयोगी की उपाधि से अलंकृत, युवाओं के आदर्श, अपनी शांत एवं मधुर मुस्कान से सभी को जीतने वाले और अनेक संस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करने वाले संघस्थ ब्र.रवीन्द्र जी ने इसी श्रुतपंचमी पर्व के दिन सन् 1950 में माता मोहिनी से जन्म लेकर अपने अंदर उस श्रुतज्ञान को समाहित कर लिया और माताजी के सुयोग्य शिष्य के रूप में अपनी प्रतिभा का चहुँमुखी विकास

प्रभावनायाः महत्कार्यमकरोत्। अद्य दिने तस्मै मातुः संघस्थानां च सर्वसाधूनां साध्वीनां च शुभाशीर्वादः प्राप्तोऽभूत् अनेकजनाश्च तस्य स्वागतं चक्रुः।

भव्य कैलाशपर्वते द्वासप्तति प्रतिमाः व्यराजन्त–**पूज्यायाः मातुः प्रेरणया ''तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्याः'' प्रयाग जैनतीर्थस्य नाम्ना एकस्मिन्नेव वर्षे प्रसिद्धिं प्राप्ते तीर्थेऽस्मिन् दीक्षाकल्याणक तपोवने धातोर्वटवृक्षस्याधः महामुनेः ऋषभदेवस्य पिच्छिका– कमण्डलुभ्यां सह खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञानकल्याणकं समवसरणं, निर्वाण कल्याणकस्य कैलासपर्वतः, भगवतः ऋषभदेवस्य कीर्तिस्तम्भः आदयः रचनाः अस्मिन् प्राचीनतमे तीर्थे ''प्रयागे'' भगवतः ऋषभदेवस्य स्वर्णिमेतिहासस्य गाथां प्रत्यक्षमुच्चारितां कुर्वन्ति।**

24 जून 2002, ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमायां पूज्य मातुः संघसान्निध्ये भारतवर्षे प्रथमबारं निर्मितस्य सुन्दरस्य कैलासपर्वतस्योद्घाटनस्य लोकार्पणस्य च समाारोहः आयोजितोऽभवत्। ऋषभदेव दीक्षास्थल्यां तीर्थे शताष्ट फुट लम्बमानस्य, द्वासप्तति फुट चतुष्कोणस्य, एकपंचाशत् फुट उन्नतस्य कैलासपर्वतस्य सुन्दराकर्षकरचनायाः निर्माणमेकवर्षस्याल्पावधौ कृतमभूत्। जलस्य प्रवाहयन्त्रैः निर्झरैः, जल प्रसारयन्त्रैः प्राकृतिकसौन्दर्येण समन्वितस्यास्य कैलासपर्वत–स्योपरि द्वासप्तति जिनमन्दिराणि स्थापितान्यभवन् यानि च सम्राजा भरतचक्रवर्तिना वास्तविके कैलासपर्वते द्वासप्तति जिनचैल्यालयानां स्मृतिं कारयन्ति। भूतस्य वर्तमानस्य भविष्यस्य च त्रिचतुर्विंशतेः द्वासप्तति प्रतिमानां कैलासपर्वते निर्माणस्य सौजन्यं प्राप्तायाः श्रीमत्या स्वर्गीयायाः

कर जिनधर्म प्रभावना का महान कार्य किया है। आज के दिन उनके जन्मदिवस पर उन्हें पूज्य माताजी एवं संघस्थ सभी साधुओं का शुभाशीर्वाद प्राप्त हुआ और अनेक लोगों ने उनका स्वागत किया।

➢भव्य कैलाशपर्वत पर 72 प्रतिमाएँ विराजमान हुईं–

पूज्य माताजी की प्रेरणा से ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली'' प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थ के नाम से एक ही वर्ष में प्रसिद्ध हो जाने वाले इस तीर्थ पर दीक्षाकल्याणक तपोवन में धातु के वटवृक्ष के नीचे महामुनि ऋषभदेव की पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक समवसरण, निर्वाणकल्याणक कैलाशपर्वत एवं भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ इत्यादि रचनाएँ इस प्राचीनतम तीर्थ ''प्रयाग'' में भगवान ऋषभदेव के स्वर्णिम इतिहास की गाथा प्रत्यक्ष उच्चारित कर रहे हैं।

24 जून 2002, ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा को पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में भारतवर्ष में प्रथम बार निर्मित सुन्दर कैलाशपर्वत का उद्घाटन एवं लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। ऋषभदेव दीक्षास्थली तीर्थ पर 108 फुट लम्बे, 72 फुट चौड़े एवं 51 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत की अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक रचना का निर्माण मात्र एक वर्ष की अल्प अवधि में किया गया। पानी के झरनों, फव्वारों एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से समन्वित इस कैलाशपर्वत पर 72 जिनमंदिर स्थापित किए गए, जो सम्राट भरत चक्रवर्ती द्वारा वास्तविक कैलाशपर्वत पर विराजमान 72 जिनचैत्यालयों की याद दिलाते हैं। भूत, भविष्यत् एवं वर्तमानकाल की तीन चौबीसी की 72 जिनप्रतिमाओं को कैलाशपर्वत पर निर्माण का सौजन्य प्रदान करने वाली स्व. श्रीमती सुलोचना

सुलोचनाजैनायाः धर्मपत्नी श्री चेतनलालस्य सुपुत्रः श्री सत्येन्द्रकुमारः प्रीतविहार–दिल्ली स्वविशालेन परिवारेण सह प्रातः 9.30 वादनसमये पर्वते स्थापितेषु जिनचैत्यालयेषु तीर्थंकराणां भगवतां प्रतिमाः विराजिताः अकरोत्, सहैव राजधान्याः, दिल्लीनगर्याः, महाराष्ट्रस्य, मध्यप्रदेशस्य, उत्तरप्रदेशस्य, अवधप्रान्तस्य आदिप्रान्तानां सर्वेषां च स्थानानां श्रावकाः अपि प्रतिमानां विराजमानाः कर्तुं सौभाग्यं प्राप्नुवन्। अनेन सहैव श्री अनिलकुमार–जैनस्य कमलमंदिरस्यप्रीतविहार–दिल्लीनगर्या सौजन्येन निर्मिते एकत्रिंशत् फुट उन्नते ''भगवतो ऋषभदेवस्य कीर्तिस्तम्भेऽपि'' प्रतिमाः व्यराजन्त्। अस्मिन्नवसरे सत्येन्द्रकुमारं ''दानवीरस्योपाधिना'' अलंकृतं कृत्वा तस्मै रजत प्रशस्तिपत्रमुपहृतमभवत्।

श्री वीरेन्द्रहेगड़े तीर्थं नेत्वा जीवनं धन्यमकरोत्–**यस्मात् कालात् मातुः प्रयागतीर्थे आगमनम–भवत्, तस्मात् कालात् अनेकधर्मावलम्बिनां तीर्थे आगमनमभवत् अनेकेभ्यश्च स्थानेभ्यः जना अत्रागत्य लघूनां वृहतां च विधानानां सम्पादनस्य क्रमः चलितः आसीत्। अस्मिन्नेव क्रमे कर्नाटकात् धर्मस्थलात् श्री वीरेन्द्रजैनहेगड़े स्वधर्मपत्न्या मात्रा च सह समागच्छत्। तीर्थस्य मातुश्च दर्शनं कृत्वा अति प्रसन्नोऽभवत् अनेन सहैव सः मात्रा सह विस्तृतां चर्चामप्यकरोत्। हेगड़े महोदयस्य माताप्यत्रागत्य नितान्तं प्रसन्ना आसीत्। सा पूज्यमात्रा कन्नड़भाषायां लिखिताः द्वादशभावनाः कण्ठस्थाः अकरोत्, ताः अपि महत्याः भक्त्याः पूर्वकमश्रावयत् तीर्थे चास्मिन् पूज्यया मात्रा कृतानां समसामयिककार्याणां बहु प्रशंसामकरोत्।**

जैन ध.प. श्री चेतनलाल जैन के सुपुत्र श्री सत्येन्द्र कुमार जैन, प्रीतविहार-दिल्ली ने अपने विशाल परिकर के साथ प्रातः 9.30 बजे पर्वत पर स्थापित जिनचैत्यालयों में तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं को विराजमान किया, साथ ही राजधानी दिल्ली, महाराष्ट्र, म.प्र., उ.प्र., अवध प्रान्त इत्यादि सभी अंचलों के श्रावकों ने भी प्रतिमाएं विराजमान करने का पुण्य प्राप्त किया। इसके साथ ही अनिल कुमार जैन, कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली के सौजन्य से निर्मित 31 फुट ऊँचे ''भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ'' में भी 8 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। इस अवसर पर सतेन्द्र कुमार जी को 'दानवीर' की उपाधि से अलंकृत करते हुए रजत प्रशस्ति भेंट की गई।

➢श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने तीर्थ को नमन कर जीवन धन्य किया–

जब से पूज्य माताजी का प्रयाग तीर्थ पर आगमन हुआ, तब से किसी न किसी स्थान से अनेक धर्मावलम्बियों के तीर्थ पर पधारने तथा अनेक स्थानों से लोगों का वहाँ आकर लघु एवं वृहत् विधानों को करने का क्रम जारी था। इसी क्रम में कर्नाटक के धर्मस्थल से श्री वीरेन्द्र जैन-हेगड़े अपनी धर्मपत्नी एवं माँ के साथ पधारे तथा तीर्थ और पूज्य माताजी के दर्शन करके अतीव प्रसन्न हुए। साथ ही उन्होंने पूज्य माताजी से विस्तृत चर्चा भी की। हेगड़े जी की माता भी यहाँ आकर बहुत प्रसन्न थीं। उन्होंने पूज्य माताजी द्वारा लिखित कन्नड़ की बारह भावना कण्ठस्थ कर रखी थी, उसे भी उन्होंने बड़ी भक्तिपूर्वक सुनाया और इस तीर्थ पर पूज्य माताजी कृत समसामयिक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वर्षायोग स्थापनायां कलशस्थापनायाः परम्परा कस्मात्कालात् आरब्धा–**इलाहाबाद–वाराणसी मार्गे स्थितेऽस्मिन् प्रथमदिगम्बरजैनतीर्थे पूज्यमात्रेऽस्मभ्यं च मंगल चतुर्मासं स्थापयितुं सुयोगः आषाढ़शुक्ला चतुर्दशीदिवसे 23 जुलाई 2002 दिने प्राप्तोऽभवत्।**

पूज्य मातुः वर्षायोगस्य स्थापना विषये सदैव इदं कथनमासीत् यत् मह्यं ''वर्षायोग स्थापनायाः'' **दिने मंगलकलशानां स्थापना इष्टा नास्ति अहं च ज्ञातुमिच्छामि यत् इयं परम्परा कदा, केन कथं च प्रारभत्? अनेकसाधूनां संघाः तां किमर्थमनुकुर्वन्ति?**

तस्याः कथनमस्ति यत् अहं विंशति शताब्द्याः प्रथमाचार्यस्य चारित्रचक्रवर्तिनः श्री शान्तिसागरस्य तस्य प्रथमस्य शिष्यस्य प्रथम पट्टाचार्यस्य गुरुवर्यस्य श्रीवीरसागरस्य, आचार्यस्य शिवसागरस्याचार्यधर्मसागरस्य संघसान्निध्ये वर्षायोग–चतुर्मासस्य स्थापनामपश्यं तैः सह च स्थापनामहमकरवम् एतेषु केनाप्याचार्येण श्री देशभूषणादि आचार्यैश्च चतुर्मासस्य स्थापनाया समये मंगल कलशानां स्थापनां नाकारयन्। चिन्तनीयमेवेदमस्ति यदियं परम्परा 15–20 वर्षेषु कदा कथं च प्रचलिताभवत्। माताश्रीस्तु इदं श्रुत्वैव चकिता भवति यत् कोऽपि साधुरेक मंगलकलशं स्थापयति तु कश्चित् त्रयान्, सप्त, नव, एकविंशति, कश्चिच्च साधुः शताष्ट मंगल कलशानां स्थापनाः कारयति। तेषां च उन्नतदान घोषणाभिः साधूनां महत्ता अंकिता भवितुं प्रारभत्। सर्वाधिकं तु आश्चर्यमेकस्मिन् स्थाने दृष्टिगतमभवत् यत् यदैकस्य ग्रामस्य मन्दिरे एकस्यां कांचनिर्मितायां मंजूषायां कलशस्थापितः आसीत्। चतुर्मासस्य

➢वर्षायोग स्थापना में कलश स्थापना की परम्परा कब से चली?–

इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर स्थित इस प्रथम दिगम्बर जैन तीर्थ पर परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं हम सभी को मंगल चातुर्मास स्थापित करने का सुयोग आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी के दिन 23 जुलाई 2002 को प्राप्त हुआ।

पूज्य माताजी का वर्षायोग स्थापना के बारे में सदैव यही कहना रहा है कि मुझे **''वर्षायोग स्थापना''** के दिन मंगल कलश स्थापना करना इष्ट नहीं है और मैं जानना चाहती हूँ कि यह परम्परा कब, कैसे एवं किसके द्वारा प्रारंभ की गई तथा अनेक साधुसंघ उसका अनुकरण क्यों करने लग गये?

उनका कहना है कि मैंने बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज, उनके प्रथम शिष्य एवं प्रथम पट्टाचार्य गुरुवर्य श्री वीरसागर जी महाराज, आचार्य श्री शिवसागर महाराज एवं आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज के संघ सानिध्य में वर्षायोग-चातुर्मास स्थापना देखी है एवं उनके साथ स्थापना की है। इनमें से किन्हीं भी आचार्यों ने एवं आचार्य देशभूषण जी आदि आचार्यों ने चातुर्मास स्थापना के समय मंगल कलश स्थापित नहीं कराया था। यह चिन्तनीय है कि यह परम्परा 15-20 वर्षों में कब और कैसे चली? माताजी तो यह सुनकर ही आश्चर्यचकित हो उठती हैं कि कोई साधु एक मंगल कलश स्थापना करते हैं तो कोई-कोई तीन, सात, नौ, इक्कीस तथा कोई साधु एक सौ आठ मंगल कलश भी स्थापित करने लगे हैं और उनकी ऊंची-ऊंची बोलियों से ही साधुओं की महानता को आंका जाने लगा है। सबसे अधिक आश्चर्य एक स्थान पर दिखा, जब एक गांव के मंदिर में एक कांचकेस में मंगल कलश रखा था। चातुर्मास के

पश्चात् साधुस्तस्मात् स्थानात् विहारमकरोत्, तथापि तत्पश्चात् जनाः प्रतिदिनं भगवतो दर्शनस्य पश्चात् अस्य कलशस्याग्रेऽक्षतानि समर्प्य पंचांगनमस्कारमकुर्वन्। तदा तं श्रावकं माता अपृच्छत्–किमर्थमेतत् करोषि? तदा सोऽब्रवीत्–मह्यं गुरुदेवस्याज्ञावर्तते–इत्यादिः। वर्तमाने प्रकाशितपत्रे कुंकुमपत्रिकायामपि ''चतुर्मास स्थापना समारोहो'' ''वर्षायोग स्थापना समारोहं'' वा न मुद्रितं कृत्वा ''मंगलकलश समारोहस्य'' मुद्रणं क्रियते। इयं ''मंगलकलश स्थापना'' न तु आचारसारे, मूलाचारे, भगवतीआराधनादौ मुनीनामाचारग्रन्थेष्वस्ति न च कुत्रापि उमास्वामिनःश्रावकाचारे, रत्नकरण्डश्रावकाचारे, वसुनन्दिश्रावकाचारे, सागार–धर्मामृतादिषु श्रावकाचारग्रन्थेषु उपलभ्यते।

मोक्षसप्तमी दिने कुण्डलपुरे नवीनभूमेः पञ्जीकरणमभवत्–**4 अगस्त 2002 दिने ब्र. रवीन्द्रः पूज्यमातुः मंगल आशीर्वादं गृहीत्वा कुण्डलपुरे–बिहारे भूमेः क्रयाय कतिभिश्चिद् पदाधिकारिभिः सह अगच्छत्, 6 अगस्त दिने तत्रतः ब्रह्मचारिणो रवीन्द्रस्य दूरभाषः आगच्छत् यत्तत्र भूमेः पंजीकरणहेतवे कार्यमारभत्। एतत् श्रुत्वा पूज्यमातुः अस्माकं च मनस्सु परमाल्हादोऽभवत् यदद्य श्रावणकृष्णा त्रयोदशी–मंगलवारदिने भूमेः कार्यस्यारम्भोऽभवत्, तदा मातुः मुखात् सहसैव निर्गतमभूत् यत् अत्र सर्वेजनाः बहुमंत्रजाप्यानि कुर्वन्तु, निश्चयेन मंगलत्रयोदश्याः दिने प्रारब्ध कुण्डलपुरस्य निर्माणकार्यं बहुविश्वव्यापि भविष्यति पुनः द्वितीयबारं आगते सति 14 अगस्त, श्रावण शुक्ल सप्तमी दिने भूमेः पूर्णं पञ्जीकरणमभवत्, एतच्छ्रुत्वा**

बाद साधु वहाँ से विहार कर चुके थे, फिर भी प्रतिदिन लोग भगवान के दर्शन के बाद उस कलश के आगे चावल चढ़ाकर घुटने टेककर पंचांग नमस्कार कर रहे थे। तब उन श्रावक से माताजी ने पूछा–ऐसा क्यों कर रहे हो? तब उसने कहा–मुझे गुरुदेव की आज्ञा है इत्यादि.....वर्तमान में पोस्टर एवं कुंकुम पत्रिका में भी ''चातुर्मास स्थापना समारोह'' या ''वर्षायोग स्थापना समारोह'' न छपाकर ''मंगल कलश स्थापना समारोह'' छपने लगा है। यह ''मंगल कलश स्थापना'' न तो कहीं आचारसार, मूलाचार, भगवती आराधना आदि मुनियों के आचार ग्रंथों में है और न कहीं उमास्वामी श्रावकाचार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, वसुनंदि श्रावकाचार, सागार धर्मामृत आदि श्रावकाचार ग्रंथों में ही है।

➢मोक्ष सप्तमी के दिन कुण्डलपुर में नई जमीन की रजिस्ट्री हुई–

4 अगस्त 2002 को ब्र. रवीन्द्र जी पूज्य माताजी का मंगलमय आशीर्वाद लेकर कुण्डलपुर-नालंदा (बिहार) में भूमि क्रय हेतु कई पदाधिकारियों के साथ गए थे, 6 अगस्त को वहाँ से ब्र. रवीन्द्र जी का फोन आया कि वहाँ जमीन की रजिस्ट्री हेतु लिखा-पढ़ी शुरू हो गई है। यह सुनकर पूज्य माताजी एवं हम सभी को बड़ा आल्हाद हुआ कि आज श्रावण कृष्णा त्रयोदशी-मंगलवार के दिन जमीन के कार्य का आरंभ हुआ है, उस समय माताजी के मुख से सहसा निकल पड़ा कि यहाँ सभी लोग खूब मंत्र जाप्य करो, निश्चित ही मंगलत्रयोदशी के दिन आरंभ हुआ कुण्डलपुर का निर्माण खूब विश्वव्यापी होगा। पुनः दुबारा जाने पर 14 अगस्त (श्रावण शु. सप्तमी) को जमीन की पूरी रजिस्ट्री

प्रयागे वयं सर्वे प्रसन्नतया पूर्णाः अभवाम पुनः माताश्रीस्तत्र कार्यकर्तृन् अकथयत् यदग्रिमदिने भगवतः समक्षं शताष्ट दीपकान् प्रज्वलितान् कृत्वा भगवतः आरतिकां कुरुत, सर्वेभ्यश्च प्रसन्नतया मोदकान् वितीर्णानि कुरुत।

वस्तुतो यस्याः प्रतिरोमं तीर्थंकरस्य भक्तिः समाविष्टा वर्ततो, तस्यै मात्रे तीर्थंकरस्य जन्मभूमेः उद्धारस्य प्रारम्भीकरणस्य मंगलसूचना कति आल्हादं प्रदास्यति, तस्य वर्णनं स्यात् लेखन्या संभवं नास्ति।

इलाहाबाद विश्वविद्यालये धर्मःसंस्कृतिश्च विषये संगोष्ठी–**3 सितम्बर 2002 दिने इलाहाबाद विश्वविद्यालये मध्याह्ने 3 वादनात् 5 वादन पर्यन्तं पूज्यमातु मुख्योद्बोधनेन सह ''धर्मः संस्कृतिश्च'' विषये संगोष्ठ्याः भव्यायोजनं सम्पन्नमभवत्।**

अस्मिन्नवसरे गणिनी माता स्वोद्बोधनेऽकथयत् धर्मस्तु शाश्वतोऽस्ति यदा च सम्प्रदायास्तु समये–समये स्थापिता विनष्टाः जायन्ते। वस्तुतोऽहिंसा–संयम–तपसश्च पालनमेव धर्मोऽस्ति, यमवधार्य वयमपि तीर्थंकरत्वं प्राप्तुमर्हामः। अहिंसयैव विश्वशान्तिः संभाव्यते, हिंसकवृत्तिनाऽऽतंकवादेन विश्वे कदापि शान्तिर्भवितुं न शक्यते। संस्कृतेः परिभाषां कुर्वन्ती साकथयत् यत् संस्कृतिः संस्कारेभ्यः निःसृतास्ति, संस्कारः एव जनमाशावन्तं सर्जनशीलं च विद्याति। संस्कृतिर्विकृता भवितुं शक्नोति, धर्मोनैव। धर्मस्य मूलं दयास्ति, दयाधर्मस्य निमित्तादेव पारस्परिकं प्रेमसौहार्दं च वृद्धिंगतं भवति। जीवने यत्नपूर्वकेणाचरणेन

हो गई, यह सुनकर प्रयाग में हम सभी खुशी से झूम उठे, पुनः माताजी ने वहाँ के कार्यकर्ताओं से कहा कि कल प्रातः भगवान के सामने 108 दीपक जलाकर भगवान की आरती करो और सबको खुशी से लड्डू बांटो।

वस्तुतः जिनके रग-रग में मात्र तीर्थंकर प्रभु की भक्ति ही समाई हो, उन मातुश्री को तीर्थंकर जन्मभूमि उद्धार के प्रारंभीकरण की मंगल सूचना कितना आल्हाद प्रदान करेगी, उसका वर्णन शायद लेखनी द्वारा शक्य नहीं है।

➢इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ''धर्म एवं संस्कृति'' विषय पर संगोष्ठी–

3 सितम्बर 2002 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मध्यान्ह 3 से 5 बजे तक पूज्य माताजी के मुख्य उद्बोधन के साथ 'धर्म एवं संस्कृति संगोष्ठी' का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पूज्य गणिनी माताजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि धर्म शाश्वत है जबकि सम्प्रदाय समय-समय पर बनते-बिगड़ते रहते हैं। वस्तुतः अहिंसा, संयम और तप ही धर्म हैं, जिन्हें धारण कर हम भी तीर्थंकर बन सकते हैं। अहिंसा से ही विश्वशांति संभव हो सकती है। हिंसक वृत्ति से, आतंकवाद से विश्व में कभी भी शांति नहीं हो सकती। संस्कृति की परिभाषा करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृति संस्कार से निःसृत है, संस्कार ही व्यक्ति को आशावान व सृजनशील बनाता है। संस्कृति विकृत हो सकती है, पर धर्म नहीं। धर्म का मूल दया है, दया धर्म के निमित्त से ही आपसी प्रेम-सौहार्द वृद्धिंगत होता है। जीवन में यत्नपूर्वक आचरण करने से पापबंध नहीं होता

पापबंधो नाभवत्, पूज्या माताकथयत् यत् विश्वविद्यालयाः सर्जनाय सन्ति, संघर्षाय नैव। विश्वविद्यालयैर्विश्वं शान्ति सन्देशं प्राप्नोति, आध्यात्मिकतायाः संस्कृतेश्च सन्देशः प्राप्तः स्यात्, सैवास्य युगस्यावश्यकता वर्तते। सर्वेषां धर्माणामितिहासं पर्याप्तं विचिन्त्य लेखका लिपिबद्धं कुर्युः अतोः धर्मस्य सम्बन्धेऽनीतिप्रलापैः धर्मावलम्बिनोऽद्धताः भवन्ति। तैः सह च अन्यायो भवति। यथा भगवान् महावीरो जैनधर्मस्य चतुर्विंशस्तीर्थंकर आसीत् न च संस्थापकः, किन्तु केचित् इतिहासकारास्तं संस्थापकमलिखन्।

पुनोऽहं स्व सम्बोधनेऽकथयम् यः उत्तमे सुखे धरति, स एव धर्मोऽस्ति संस्कारेण च या संस्करोति सा संस्कृतिरस्ति। धर्मस्तु सूचिकारवदस्ति यो जनान् वस्त्राणीव संयोजयति, यदा कर्तरी विघटनस्य कार्यं करोति। सत्यधर्मः कदापि वैरभावस्य शिक्षां न ददाति, ''धर्मः परस्परं वैरभावस्य शिक्षां न ददाति।'' **धर्मस्य मूलं सर्वदा हरितमेवास्ति, संस्कृतिश्च तस्याधारः।**

प्राध्यापकः ओमप्रकाशो यादवो यः प्राचीन इतिहास विभागस्य पूर्व विभागाध्यक्षः आसीत्, अकथयत्–यत् संस्थानां भाग्यानि जाग्रति तदैव सता चरणानि तत्र पतन्ति, पूज्यमातुः विद्यालये आगमनेनास्य मंगलमेव भविष्यति। धर्मो जनं प्रेरयति, जीवनस्य गतिं निर्धारयति। ब्रह्माण्डीयव्यवस्थाया नियमोऽपि धर्मेणैव निर्धारितो भवति। संस्कृतिः प्रकृतेः संशोधितं स्वरूपं विद्यते। यदि जनस्यान्तः संस्कृतिर्नास्ति, तदा सः पशुवदस्ति।

श्री श्रीरामयादव, प्राध्यापक ए. आर.एन. श्रीवास्तव, डॉ. बी. डी. मिश्रादयः वक्तारः

है। पूज्य माताजी ने कहा कि विश्वविद्यालय सृजन के लिए हैं, संघर्ष के लिए नहीं। विश्वविद्यालय से विश्व को शांति का संदेश प्राप्त हो, आध्यात्मिकता एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त हो, वही आज के युग की आवश्यकता है। सभी धर्मों का इतिहास काफी सोच-समझकर लेखकों को लिपिबद्ध करना चाहिए क्योंकि धर्म के संबंध में अनर्गल प्रलाप से धर्मावलम्बियों को ठेस पहुँचती है तथा उनके साथ अन्याय होता है। जैसे कि भगवान महावीर स्वामी जैनधर्म के 24वें तीर्थंकर थे न कि संस्थापक, लेकिन कुछ इतिहासकारों ने उन्हें संस्थापक लिख दिया है।

पुनः मैंने अपने सम्बोधन में कहा कि जो उत्तम सुख में धरे, वह धर्म है तथा जो संस्कारों से संस्कारित करे, वह संस्कृति है। धर्म एक सुई की भांति है जो कपड़े की तरह लोगों को जोड़ती है, जबकि कैंची विघटन का कार्य करती है। सच्चा धर्म कभी आपस में वैरभाव की शिक्षा दे ही नहीं सकता- **'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।'** धर्म की जड़ सदैव हरी है, संस्कृति उसका आधार है।

प्रो. ओमप्रकाश यादव (प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष) ने कहा कि संस्थाओं के भाग्य जगते हैं तो संतों के चरण वहाँ पड़ते हैं, पूज्य माताजी के विश्वविद्यालय आगमन से इसका मंगल ही होगा। धर्म व्यक्ति को प्रेरणा प्रदान करता है, जीवन की गति निर्धारित करता है। ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का नियम भी धर्म से अनुप्राणित है। संस्कृति प्रकृति का संशोधित स्वरूप है। यदि व्यक्ति के अंदर संस्कृति नहीं है, तो वह जानवर के समान है।

श्री श्रीराम यादव, प्रो. ए.आर.एन. श्रीवास्तव, डा. बी.डी.मिश्र इत्यादि वक्ताओं ने भी पूज्य

पूज्यमातुः सारगर्भितस्य शिक्षाप्रदस्य प्रेरणास्पदस्य च वक्तव्यस्य हार्दिकीं प्रशंसां कुर्वन्तः स्वविचारान् अभिव्यक्तानकुर्वन्। अस्मिन्नवसरे प्रयागतीर्थस्याध्यक्षकर्मयोगिनः श्री रवीन्द्रस्य पक्षतः विश्वविद्यालये पुस्तकानि संगृहीतुं एकस्य लौह आलयः मात्रा च लिखितं साहित्यं उपहारे दत्तम्। माताश्री विश्वविद्यालयाय, प्राध्यापकेभ्यः विद्यार्थिभ्यः अन्येभ्यश्च श्रोतृभ्यः आशीर्वादं प्रायच्छत्।

अस्याः प्रभावपूर्णायाः संगोष्ठ्याः विश्वविद्यालये महती प्रशंसाभूत्। सुधीनां श्रोतृणां कथनमासीत् यत् संतविनोवाभावे महोदयस्य पश्चात् अद्य कस्यचित् महात्मनश्चरणानि विश्वविद्यालये पतितानि सन्ति, यदि एवंविधान्युद्बोधनानि समये–समये छात्रेभ्यः सुलभानि भवन्तु, तु ते शाश्वतिकानि नैतिकमूल्यानि प्राप्तुं समर्थाः भवन्तु, येषामद्य सर्वाधिका आवश्यकता वर्तते।

विद्यामन्दिरेषु धर्मामृतस्य वर्षाभवत्–**2 सितम्बर 2002 दिने जीरोरोड, इलाहाबाद स्थितेषु विद्यामन्दिरेषु धर्मामृतस्य वर्षा साकाररूप प्रदायिनी सिद्धाभवत् यदा पूज्यया मात्रा मया च प्रातः कालादेवारभ्य अपराह्णसमयपर्यन्तं क्रमशः इलाहाबाद इन्टर कालेज–इलाहाबाद डिग्री कालेज, जैन विद्यालयस्य–प्रयागस्य च विद्यार्थिनः शिक्षकान् अन्यान् च विद्यालय–कर्मचारिणः च तेषां विद्यालयपरिसरे त्रि धर्मसभाभिः नैतिक मूल्यानां पाठाः पाठिताः।**

श्री अशोकसिंहलः प्रयागतीर्थे–**विश्वहिन्दू परिषदः कार्याध्यक्षः श्री अशोक सिंहलः 14 सितम्बर दिने पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः मंगलमाशीर्वादं प्राप्तुं प्रयागतीर्थमागच्छत्।**

माताजी के सारगर्भित, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक उद्बोधन की भावभीनी प्रशंसा करते हुये अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर प्रयाग तीर्थ के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी की ओर से विश्वविद्यालय के लिए साहित्य रखने हेतु एक अलमारी तथा पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य भेंट किया गया। पूज्य माताजी ने विश्वविद्यालय, प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं उपस्थित श्रोताओं को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया।

इस प्रभावक संगोष्ठी की विश्वविद्यालय में काफी प्रशंसा की गई। सुधी श्रोताओं का कहना था कि संत विनोबा भावे के पश्चात् आज किसी महान संत के चरण विश्वविद्यालय परिसर में पड़े हैं, यदि इस प्रकार के मंगल उद्बोधन छात्रों को समय-समय पर प्राप्त होते रहें, तो उन्हें शाश्वत नैतिक मूल्य प्राप्त हो सकते हैं, जिनकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

➢विद्या मंदिरों में हुई धर्मामृत की वर्षा–

2 सितम्बर 2002 का दिवस जीरोरोड, इलाहाबाद स्थित विद्यामंदिरों में धर्मामृत की वर्षा को साकार रूप प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ जबकि पूज्य माताजी एवं मेरे द्वारा प्रातःकाल से लेकर अपरान्ह तक क्रमशः इलाहाबाद इंटर कालेज, इलाहाबाद डिग्री कालेज एवं जैन विद्यालय-प्रयाग के हजारों विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य विद्यालय-परिवार को उनके विद्यालय परिसर में तीन धर्म सभाओं द्वारा नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाया गया।

➢श्री अशोक सिंघल प्रयाग तीर्थ पर–

विहिप कार्याध्यक्ष श्री अशोक सिंघल 14 सितम्बर को पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का

कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रः श्री सिंघलस्य हार्दिकं स्वागतमकरोत्। श्री सिंहलः स्व संक्षिप्ते उद्बोधने अकथयत् यत् एतावति अल्पसमयेऽस्य भव्यतीर्थस्य निर्माणं स्वस्मिन्नेकं कीर्तिमानमस्ति। स च सैनिकक्षेत्रे–इलाहाबादे स्थितस्य प्राचीनं ''अक्षयवटवृक्षस्य'' जनसाधारणस्य दर्शन हेतवे उपलब्धं कारयितुं प्रयासं कर्तुमाश्वासनमदात्।

ज्ञातव्यमस्ति यत् 11 सितम्बर दिनात् 22 सितम्बर पर्यन्तं प्रयागतीर्थे महाराष्ट्रप्रान्तीय गणिनीज्ञानमतीभक्तमण्डलस्य 70 भक्तैः आयोजितस्य इन्द्रध्वजविधानस्य मध्ये श्री सिंघल समागच्छत्।

दीक्षास्थलीतीर्थे इतिहासकाराणां सम्मेलनम्–**15 सितम्बर दिने तीर्थे इलाहाबादे पूज्यमातुर्मंगलसान्निध्ये विश्वविद्यालयस्येतिहासकाराणामेकं लघुसम्मेलनं सम्पन्नमभवत्। डा. राधाकान्त वर्मा, प्राध्यापकः ओमप्रकाशो यादव, डॉ. ओ.पी. श्रीवास्तवः, डॉ. धननारायण दुबे, डॉ. हर्ष कुमारः, डॉ. सुषमा श्रीवास्तवः, डॉ. नीरा वर्मा आदयः इतिहासकाराः अस्मिन् भागमगृह्णन्। इतिहासस्य पुस्तकेषु जैनधर्मसम्बन्धिनीनां भ्रान्तीनां निराकरणाय पूज्या माता अहं च सर्वान् महत्वपूर्णतथ्यैः परिचितान् अकुर्म विशेषाणां लेखादीनां सामग्रीणामपि वितरणमभवत्। तस्मिन् समये सर्वे एतां वार्तामेकस्वरेण स्वीकृतामकुर्वन् यत् इतिहासलेखने दिगम्बरश्वेताम्बरयोः द्वयोः परम्परयोः मान्यताः सम्मिलिताः कृत्वा भ्रान्तयो–भवितुं रक्षितव्याः।**

मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने प्रयाग तीर्थ पधारे। कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने श्री सिंघल का हार्दिक स्वागत किया। श्री सिंघल जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि इतने अल्पसमय में इस भव्यतीर्थ का निर्माण अपने आप में एक रिकार्ड है। उन्होंने मिलिट्री एरिया-इलाहाबाद में स्थित प्राचीन 'अक्षयवटवृक्ष' को जनसाधारण के दर्शनों हेतु उपलब्ध कराने के प्रयास करने का आश्वासन भी प्रदान किया।

ज्ञातव्य है कि 11 से 22 सितंबर तक प्रयाग में महाराष्ट्र प्रांतीय गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल के (70 श्रद्धालु भक्त) द्वारा आयोजित इन्द्रध्वज विधान के मध्य सिंघल जी पधारे थे।

➢दीक्षास्थली तीर्थ पर इतिहासकारों का सम्मेलन–

पूज्य माताजी के मंगल सान्निध्य में 15 सितम्बर को तीर्थ पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहासकारों का एक लघु सम्मेलन सम्पन्न हुआ। डा. राधाकांत वर्मा, प्रो. ओम प्रकाश यादव, डा. ओ.पी. श्रीवास्तव, डा. धननारायण दुबे, डा. हर्ष कुमार, डा. सुषमा श्रीवास्तव, डा. नीरा वर्मा आदि इतिहासलेखकों ने इसमें भाग लिया। इतिहास की पुस्तकों में जैनधर्म से संबंधित भ्रांतियों के निराकरण हेतु पूज्य गणिनी माताजी एवं मेरे द्वारा सभी को महत्वपूर्ण तथ्यों से परिचित कराया गया तथा विशेष लेख इत्यादि सामग्री भी प्रदान की गयी। उस समय सभी ने इस बात का एक स्वर से समर्थन किया कि इतिहास लेखन में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं की मान्यताओं को सम्मिलित करके उसे एकांगी होने से बचाना चाहिए।

ईदृशः पर्वतः संसारे कुत्रापि न भवितव्यः–**दिल्लीनगर्याः सम्मेदशिखरस्य यात्रां कुर्वन्तः कैलासपर्वतस्य भव्यायाः प्रतिकृतेर्निर्माता श्री चेतनलाल स्व चतुर्भिः सहचारिभिः सह एकस्मिन् दिने दीक्षास्थलीमागच्छत्। आगत्यैव सहर्षमब्रवीत् यत् मातः! भवतीनां सर्वासां कृपैवासीत्, ययास्माकं परिवार पक्षतोऽत्र ईदृशः सुन्दरकैलासपर्वतः निर्मितोऽभवत्। सत्यमेव ईदृशः सुन्दर पर्वतः विश्वेऽस्मिन् कुत्रापि न भविष्यति। अहं त्वद्यास्य पर्वतस्य दर्शनं कृत्वा धन्योऽभवम्।**

स्वर्णिमा शरत्पूर्णिमा कुण्डलपुरराष्ट्रीय महासम्मेलनं च–**प्रयागतीर्थस्य पावनायां वसुन्धरायां पूज्यायाः मातुः 69 तमं जन्मदिनं 51 तमं च त्याग दिनं स्वर्णिमा शरत्पूर्णिमा 19 अक्तूबर दिनात् 21 अक्तूबर 2002 दिन पर्यन्तं विविधैरायोजनैः सह अत्यन्तमेव सफलतया स्वर्णिमाभया च सह संपन्नान्यभवताम्।**

अस्मिन् ध्वजारोहणस्य पश्चात् प्रातः 10.30 वादन समये ''कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलनस्योद्घाटनमभूत्।'' माननीयेन मुख्यातिथिना न्यायमूर्तिना श्री सुधीरनारायण अग्रवालेन न्यायाधीशेन इलाहाबाद उच्चन्यायालयेन दीपः प्रज्ज्वालितः कृतः, तत्पश्चाच्च अस्य त्रिदिवसीयस्य कार्यक्रमस्योद्घाटनमभवत्, यस्यान्तर्गतं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थानेन, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघेन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संघठनेन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषदा आयोजितेषु विभिन्नसत्रेषु ''भगवतो महावीरस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरमेवास्ति'', अस्यां वार्तायां विशेषरूपेण सर्वेषां ध्यानं केन्द्रितं कारितम्।

➢ऐसा पर्वत दुनिया में कहीं नहीं होगा –

दिल्ली से सम्मेदशिखर की यात्रा करते हुए कैलाशपर्वत की भव्य प्रतिकृति के निर्माता श्री चेतनलाल जी अपने चार साथियों के साथ एक दिन दीक्षास्थली पर पधारे। आते ही प्रसन्नतापूर्वक बोले कि माताजी! आप सबकी महान कृपा थी, जो हमारे परिवार की ओर से यहाँ पर ऐसा सुन्दर कैलाशपर्वत बन गया है, सचमुच ऐसा पर्वत दुनिया में कहीं नहीं होगा। मैं तो आज इस पर्वत के दर्शन करके धन्य हो गया।

➢स्वर्णिम शरदपूर्णिमा एवं कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन–

प्रयाग तीर्थ की पावन वसुन्धरा पर पूज्य माताजी का 69वाँ जन्मदिवस एवं 51वाँ त्यागदिवस-स्वर्णिम शरदपूर्णिमा 19 से 21 अक्टूबर 2002 तक विविध आयोजनों के साथ अत्यंत सफलता एवं स्वर्णिम आभा सहित सम्पन्न हुआ।

उसमें झण्डारोहण के पश्चात् प्रातः 10.30 बजे ''कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन'' का उद्घाटन हुआ। माननीय मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी अग्रवाल (न्यायाधीश-इलाहाबाद उच्च न्यायालय) द्वारा द्वीप प्रज्वलन कर इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ, जिसके अन्तर्गत दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न सत्रों में 'भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है' इस बात पर विशेषरूप से सभी का ध्यान केन्द्रित कराया गया।

कुण्डलपुरस्य पाटः सदैव भारवान् स्थास्यति–**अस्मिन् महासम्मेलने प्राचार्यः श्री नरेन्द्र–प्रकाशः प्रभावशालिरीत्या स्व विचारान् व्यक्तान् कुर्वन् अकथयत् यत् प्रत्येक क्षेत्रस्य विकासो भवितव्यः, वैशाल्याः अपि कुण्डलपुरस्यापि, परन्तु वैशाल्याः विकासो भगवतो महावीरस्य स्मारकरूपेण स्यात्, कुण्डलपुरस्य च विकासो जन्मभूमेः रूपेण भवेत्। अधुना पर्यन्तं वैशाल्याः विकासो नाभवत् यस्य कारणमिदमेवासीत् यत् तस्य समीपे किमपि भगवतो महावीरस्य सम्बन्धिक्षेत्रमेव नास्ति। यदा च कुण्डलपुरस्य नालन्दाया समीपं गुणावां–नवादा–सम्मेदशिखरः इत्यादीनि सर्वाणि तीर्थक्षेत्राणि विद्यमानान्यासन् अतएव शताधिक वर्षेभ्यस्तदेव जन्मभूमिरूपेण मान्यता प्राप्तमस्ति। 50 वर्षेभ्यः स्मारकरूपेण वैशाल्याः विकासस्य वार्तायां विश्वासं कृत्वा तस्याः विरोधो नाभवत्, किन्तु इयं तु समाजेन सह विश्वासघातकारिणी वार्ताभवत्, यत् तां जन्मभूमिरूपेण प्रचलितां कर्तुं प्रक्रिया प्रारब्धाभवत्, किन्तु सत्यता तु इयमेवास्ति यत् न्यूनानिन्यूनं वैशालीं जन्मभूमेः रूपप्रदानात् पूर्वं साधूनां समूहः आमंत्रितो भवतु तैश्चास्मिन् विषये शास्त्रसम्मतं निर्णयं गृहीतं कुर्वन्तु। जनतायाः श्रद्धा तु कुण्डलपुरं प्रत्येवातिष्ठत् स्थास्यति च, तां कोऽपि परिवर्तितां कर्तुं न शक्नोति। चिन्ता भूभागस्य नास्ति, परन्तु महावीरस्य सिद्धान्तान् सुरक्षितान् कर्तुमस्ति। वयं सर्वास्वस्थासु आगमाज्ञां मन्यामहे। यत्र शताब्दीतो भगवतो महावीरस्य जन्मकल्याणकं मान्यता प्राप्तमस्ति, यन्तु पूजाभिः प्रतिष्ठाभिः जन्मभूमिर्मतमेव, शताब्दयः व्यतीताः भविष्यन्ति किन्तु श्रद्धा परिवर्तिता न भविष्यति। कुण्डलपुरं प्रश्नः अदम्यसाहसयुक्तया मात्रा ज्ञानमत्या सम्पूर्ण शक्त्या सह स्थापितः,**

➢**कुण्डलपुर का पलड़ा हमेशा भारी रहेगा–**

इस महासम्मेलन में प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी ने प्रभावशाली ढंग से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हर क्षेत्र का विकास होना चाहिए, वैशाली का भी और कुण्डलपुर का भी, पर वैशाली का विकास भगवान महावीर के स्मारक के रूप में हो और कुण्डलपुर का विकास जन्मभूमि के रूप में हो। अब तक वैशाली का विकास नहीं हो पाया उसका कारण यही था कि उसके आस-पास भगवान महावीर से संबंधित कोई क्षेत्र ही नहीं है जबकि कुण्डलपुर (नालंदा) के पास गुणावां, नवादा, सम्मेदशिखर इत्यादि सभी तीर्थक्षेत्र विद्यमान रहे हैं अतः सैकड़ों वर्षों से उसे ही जन्मभूमि के रूप में मान्यता प्राप्त है। 56 वर्ष से स्मारक के रूप में वैशाली के विकास की बात पर विश्वास करके इसका विरोध नहीं किया गया किन्तु यह तो समाज के साथ धोखे जैसी बात रही कि उसे जन्मभूमि के रूप में प्रचारित करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई जबकि सत्यता तो ये है कि कम से कम वैशाली को जन्मभूमि का रूप देने से पूर्व साधु संगीति बुलाई जाती और उनसे इस विषय में शास्त्र सम्मत निर्णय लिया जाता। जनता की श्रद्धा तो कुण्डलपुर के प्रति ही रही है और रहेगी, उसको कोई बदल नहीं सकता। चिंता जमीन के टुकड़े की नहीं है वरन् महावीर के सिद्धान्तों को सुरक्षित रखने की है। हमें हर हाल में आगम की बात माननी है। जहाँ सदियों से भगवान महावीर का जन्मकल्याणक मनाया जा रहा है, वह तो पूजा प्रतिष्ठा के द्वारा जन्मभूमि बन ही गया है, सदियाँ बीत जाएंगी परन्तु श्रद्धा नहीं बदलेगी। कुण्डलपुर का सवाल अदम्य

अधुना तं रोद्धुं न कोऽपि क्षमोऽस्ति। वास्तवे मात्रा विकसितानि सर्वाणि तीर्थ क्षेत्राणि तुलायाः एकस्मिन् पाटे निक्षिप्तानि भवेयुः कुण्डलपुरस्य च कार्यं द्वितीये पाटे, तु कुण्डलपुरस्य पाटः भारवान् स्थास्यति यतोहि इदं कार्यं इतिहासस्य सुरक्षायाः विद्यते न तु केवलं मन्दिर निर्माणस्य।

पंचामृताभिषेकः आगमोक्तः एवास्ति–**वर्तमानेऽनेक स्थानेसु श्रीजिनेन्द्र भगवतः पंचामृताभिषेको न संपद्यते यदा तु प्राचीनागमग्रन्थेषु पूर्वाचार्यैः कथिताः वाण्याः अनुसारेण पंचामृतअभिषेकः कर्तव्यमेव।**

वर्तमाने आचार्यवर्य पूज्यपादेन रचितोऽभिषेक पाठः सर्वमान्योऽस्ति। यस्मिन् पूज्यपाद–स्वामी एकैकस्मिन् श्लोके पंचामृताभिषेकस्य अति मनोहारि– वर्णनमकरोत् तस्य च हिन्दी पद्यानुवादो गणिन्या ज्ञानमत्या विहितोऽस्ति, यश्च कतिपयसंघैः कतिपयश्रावकैश्च भक्तिपूर्वकं क्रियते।

आचार्य जटासिंहनन्दि कृते वरांग चरित्रे 23 तमस्य सर्गस्य 77 पद्ये लिखितम्–

संस्थाप्य यत्नात् प्रतिमा जिनानां, नरामराणां सुखमभ्युपैति।
क्षीराभिषेक प्रमुखक्रियाभिः, राज्याभिषेकस्य भवेत्स भागी।।1 7।।

यो जनः दुग्धेक्षुरसदधि आदिभिः जिनेन्द्रदेवमभिसिंचति, ते स्वयमेव राज्याभिषेकादीनामधि–कारिणो भवन्ति।

उमास्वामिश्रावकाचारे द्वितीयशताब्द्याः आचार्यः उमास्वामी अकथयत्–

रूप से साहसी पूज्य ज्ञानमती माताजी के द्वारा पूरी शक्ति के साथ उठाया गया है, अब उसे कोई नहीं रोक सकता। वास्तव में अगर माताजी के द्वारा विकसित सारे तीर्थों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए और कुण्डलपुर का कार्य एक पलड़े पर, तो कुण्डलपुर का पलड़ा भारी रहेगा क्योंकि यह कार्य इतिहास की सुरक्षा का है न कि केवल मंदिर निर्माण का है।

➢पंचामृत अभिषेक आगम कथित है–

वर्तमान में अनेक स्थानों पर श्री जिनेन्द्र भगवान का पंचामृत अभिषेक नहीं होता है जबकि प्राचीन आगम ग्रंथों में पूर्वाचार्यों द्वारा कथित वाणी के अनुसार पंचामृत अभिषेक करना चाहिए।

वर्तमान में आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित अभिषेक पाठ सर्वमान्य है जिसमें पूज्यपाद स्वामी ने पंचामृत के एक-एक श्लोक में बड़ा सुन्दर विवेचन किया है और उसका हिन्दी पद्यानुवाद पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने किया है, जो कि कई एक संघों में तथा कई एक श्रावकों द्वारा भक्तिपूर्वक किया जाता है।

आचार्य जटासिंहनन्दि कृत वरांग चरित्र में 23वें सर्ग के 77वें पद्य में लिखा है–

संस्थाप्य यत्नात्प्रतिमा जिनानां, नरामराणां सुखमभ्युपैति।
क्षीराभिषेक प्रमुखक्रियाभिः, राज्याभिषेकस्य भवेत्स भागी।।77।।

अर्थात् जो पुरुष दूध, दही, इक्षुरस आदि के द्वारा जिनेन्द्र देव का पंचामृत अभिषेक करते हैं, वे स्वयं राज्य अभिषेक आदि के अधिकारी होते हैं।

उमास्वामी श्रावकाचार में आचार्य उमास्वामी (द्वितीय शताब्दी) ने कहा है–

शुद्धतोयेक्षुसर्पिभिर्दुग्ध दध्याम्रजैः रसैः।
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात्संस्नापये जिनान्।।

अर्थात् शुद्धजलेन, इक्षुरसेन, घृतेन, दुग्धेन, दधिना, आम्ररसेन, सर्वौषधि इत्यादिकैः अहं जिनाभिषेकं करोमि। अनेनैव प्रकारेण यशस्तिलकचम्पू महाकाव्ये, सकलकीर्तिआचार्येण विरचिते श्रीपालचरित्रे, वसुनन्दिकृते वसुनन्दिश्रावकाचारे, देवसेनाचार्य रचिते भावसंग्रहादिषु महाग्रन्थेषु पंचामृताभिषेकस्य पाठस्य वर्णनमस्ति, यानि विस्तारेण पठित्वा श्रावकास्तेभ्यः शिक्षां गृहीत्वा आगम परम्परानुसारेण पंचामृताभिषेकं कुर्युः।

यदि स्वप्रान्तीय परम्परानुसारेण केचित् केवलं जलाभिषेकं कुर्वन्ति, तथापि ते पंचामृताभिषेके संलग्नान् त्रुटियुक्तान् न मन्यन्ताम्। अद्यापि सर्वे उत्तरभारतीयाः तेरहपंथ–श्रद्धालवो दक्षिणभारतं गत्वा भगवतो बाहुबलिनः प्रचुरतया पंचामृताभिषेकं कुर्वन्ति स्त्रियोऽपि चाभिषेकं विधाय स्व स्त्रीपर्यायं सार्थकं कुर्वन्ति।

पं. श्री सुमेरचन्द दिवाकरस्य मरणोपरान्तं सम्मानः–**जैनशासनस्य महता मनीषिणा पण्डितेन सुमेरुचन्द्रदिवाकरेण 1968 वर्षे लिखितस्य** ''महाश्रमणमहावीरस्य'' **पूज्यया गणिन्या ज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणया कारितस्य पुनः प्रकाशनस्य विमोचनं प्राचार्यनरेन्द्रप्रकाशेन सम्पन्नमभवत्। अनेन सहैव पण्डितप्रवरः दिगम्बरजैनत्रिलोकशोध संस्थानेन मरणोपरान्तं** ''जिनशासनरत्नम्'' **इत्युपाधिना समलंकृतोऽभूत्। यं तस्य परिवारस्य श्री अभिनन्दन–**

शुद्धतोयेक्षुसर्पिभिर्दुग्धदध्याम्रजैः रसैः।
सर्वौषधिभिरुच्चूर्णैर्भावात्संस्नापये जिनान्।।

अर्थात् शुद्धजल, इक्षुरस, घी, दूध, दही, आम्ररस और सर्वौषधि इत्यादिकों से जिन भगवान का अभिषेक करता हूँ। इसी प्रकार यशस्तिलक महाकाव्य, सकलकीर्ति आचार्य विरचित श्रीपाल चरित्र, आचार्य वसुनंदिकृत वसुनन्दि श्रावकाचार, देवसेनाचार्य रचित भावसंग्रह आदि महान ग्रंथों में पंचामृत अभिषेक पाठ का वर्णन है। जिसे विस्तारपूर्वक पढ़कर श्रावकों को उससे शिक्षा ग्रहण कर आगमपरम्परानुसार पंचामृत अभिषेक करना चाहिए।

यदि अपनी प्रांतीय परम्परानुसार कोई केवल जलाभिषेक ही करते हैं, तो भी पंचामृत अभिषेक करने वालों को गलत कभी नहीं मानना चाहिए। आज भी तमाम उत्तर भारत के तेरहपंथी लोग दक्षिण भारत में जाकर भगवान बाहुबली का खूब पंचामृत अभिषेक करते हैं और स्त्रियाँ भी अभिषेक करके अपनी स्त्रीपर्याय को सार्थक करती हैं।

➢पं. श्री सुमेरचंद्र जैन दिवाकर का मरणोपरांत सम्मान–

जैन शासन के महान मनीषी विद्वान् पं. सुमेर चंद जी दिवाकर द्वारा सन् 1968 में लिखित ''महाश्रमण महावीर'' के पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा से किये गये पुनर्प्रकाशन का विमोचन प्रा. नरेन्द्र प्रकाश जी द्वारा संपन्न किया गया। साथ ही पं. जी को दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा मरणोपरांत ''जिनशासन रत्न'' की उपाधि प्रदान की गयी। जिसे उनके परिवार के

दिवाकरः–सिवनी निवासी, श्री ऋषभ दिवाकरः, श्री पवनदिवाकरः सुपुत्राः श्री श्रेयांसदिवाकरः अगृह्णान्। अस्मिन्नवसरे श्री अभिनन्दनोऽकथयत् यत् अस्य ग्रन्थस्य प्रथम प्रकाशनं आचार्यदेशभूषणमुनीन्द्रस्य कृपाप्रसादेनाभवत्। इदानीं च तस्यैव शिष्यायाः पूज्यायाः ज्ञानमत्याः प्रेरणया अस्य पुनः प्रकाशनमभवत्। मम पितामहः पं. सुमेरचन्द्रो अकथयत् यत् कुण्डलपुरात् अतिरिक्तं अन्यत्र भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिर्नास्ति। पूर्णतया आगमस्य वाण्यां लिखितमिदं महत्पुस्तकं पं. सुमेरचन्द्रस्य विद्वत्तायाः अनुपममुदाहरणं विद्यते।

कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलनस्य समापनम्–**कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलनस्य विविधसत्रैः प्राप्ततथ्यैर्विचारधाराभिः समन्वितं कुर्वन् तीर्थक्षेत्राणां समितेरध्यक्षं साहू रमेशचन्द्रं दिल्लीं प्रेषितुं प्रस्तावितस्य पत्रस्य वाचनमभवत्, यस्मिन् उपस्थिताः सर्वे महानुभावाः स्वहस्ताक्षराणां माध्यमेन स्वसम्मतिं प्राददुः।**

भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरणस्य स्थापना–**भगवतः ऋषभदेवस्य यः समवसरणरथः सम्पूर्णे देशे परिभ्रम्य अहिंसाधर्मस्य प्रचारमकरोत्, तं 21 अक्तूबर 2002 शरत्पूर्णिमायाः दिने प्रयागतीर्थस्य परिसरे नवनिर्मिते समवसरणमन्दिरे प्रतिष्ठापितमकरोत्। इलाहाबाद उच्चन्यायालयस्य मुख्यो न्यायाधीशः श्री श्यामलकुमारो भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरण–स्थापनाया शिलापट्टस्य अनावरणमकरोत्। समवसरणस्य दर्शनं कृत्वा स्वात्मानं धन्यममन्यत्।**

श्री अभिनंदन दिवाकर-सिवनी, श्री ऋषभ दिवाकर, श्री पवन दिवाकर (सुपुत्र-श्री श्रेयांस दिवाकर) आदि ने ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री अभिनंदन जी ने कहा कि इस ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन आचार्य देशभूषण महाराज जी की कृपा प्रसाद से हुआ था और अब उन्हीं की शिष्या पूज्य गणिनीश्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से इसका द्वितीय बार प्रकाशन हुआ है। मेरे दादा पं. सुमेर चंद जी कहा करते थे कि कुण्डलपुर (नालंदा) के अतिरिक्त भगवान महावीर की कोई अन्य जन्मभूमि हो ही नहीं सकती। पूर्णतः आगम की वाणी पर लिखित यह महान पुस्तक पं. सुमेरचंद जी की विद्वत्ता का अनुपम उदाहरण है।

➢कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन का समापन–

कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन के विविध सत्रों से प्राप्त तथ्यों एवं विचार धाराओं को समन्वित करते हुए तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू रमेश चंद जैन-दिल्ली को भेजे जाने वाले एक पत्र का वाचन किया गया, जिस पर उपस्थित जनसमूह ने अपने हस्ताक्षरों के माध्यम से अपनी सम्मति प्रदान की।

➢भगवान ऋषभदेव समवसरण स्थापना–

भगवान ऋषभदेव के जिस समवसरण रथ ने पूरे देश में घूमकर अहिंसा धर्म का प्रचार किया, उसे 21 अक्टूबर 2002, शरदपूर्णिमा के दिन प्रयाग तीर्थ परिसर में नवनिर्मित समवसरण मंदिर में विराजमान किया गया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश महोदय श्री श्यामल कुमार ने भगवान ऋषभदेव समवसरण स्थापना के शिलापट्ट का अनावरण किया और समवसरण के दर्शन कर अपने को सौभाग्यशाली माना।

अस्मिन्नवसरे पूज्यायाः मातुः 69 तमे जन्मदिवसे 51 तमे च त्यागदिवसे ''स्वर्णिम–शरत्पूर्णिमा'' रूपेण मानयितुं समागत्य श्रद्धालवो भक्ताश्च तीर्थस्य गुरुदर्शनस्य चापूर्वं पुण्यमलभन्त्।

29 मार्च 1911 दिने श्री हर्मन जैकोबी महोदयेन श्वेताम्बर जैनमुनिंश्री विजयधर्मं महाराजं महावीरजन्मभूमि कुण्डलपुर–नालंदा विषयकमिदं पत्रं सम्पूर्णाय जैनसमाजाय वास्तवे एकमैतिहसिकं पुरातत्वसामग्री विद्यते–

Dear Sir,

I had much pleasure in the receiving your letter dated Feb. 27 Which Wishes for me. I also beg to acknoledge receipt of material, which contaions useful **information of Nalanda and Kundalpur being birthplace of lord Mahavira.** It becomes very useful to me, in many ways. You have urged me to rewrite my article on "Jainism" in the Encyclopedia of religion & ethics. **Regarding Kundalpur near Nalanada**, there are some references in Tiloipanntti, **I agree with them.**

I hope, however to induce Prof. W. Sohribring who is without doubt best Jain Scholan, Historian, well groomed in Siddhanta to undertake a similar work. I am sure that he will do important work. for Jain world.

Mr. K.P. Modi sent me some photographs of Kundalpur.

Hoping yor well.

I remain yours sincerely
(HERMANN JACOBI)

इस अवसर पर पूज्य माताजी के 69वें जन्मदिवस एवं 51वें त्यागदिवस को 'स्वर्णिम शरदपूर्णिमा' के रूप में मनाने हेतु पूरे देश से हजारों श्रद्धालु भक्तों ने पधारकर तीर्थ एवं गुरु दर्शन का अपूर्व पुण्य प्राप्त किया।

➢29 मार्च 1911 को श्री हर्मन जैकोबी द्वारा श्वेताम्बर जैनमुनि श्री विजयधर्म जी महाराज को महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर-नालंदा विषयक यह पत्र सम्पूर्ण जैन समाज के लिए वास्तव में एक ऐतिहासिक दस्तावेज है–

Dear Sir,

I had much pleasure in the receiving your letter dated Feb. 27 Which Wishes for me. I also beg to acknoledge receipt of material, which contaions useful **information of Nalanda and Kundalpur being birthplace of lord Mahavira.** It becomes very useful to me, in many ways. You have urged me to rewrite my article on "Jainism" in the Encyclopedia of religion & ethics. **Regarding Kundalpur near Nalanada**, there are some references in Tiloipanntti, **I agree with them.**

I hope, however to induce Prof. W. Sohribring who is without doubt best Jain Scholan, Historian, well groomed in Siddhanta to undertake a similar work. I am sure that he will do important work. for Jain world.

Mr. K.P. Modi sent me some photographs of Kundalpur.

Hoping yor well.

I remain yours sincerely
(HERMANN JACOBI)

प्रयाग जैन समाजस्य पक्षतः विनम्रविनयाञ्जलिरूपेण अभिनंदनपत्रम्–**प्रयागे तीर्थे 21 अक्तूबर 2002 दिने सम्पूर्णदिगम्बरजैनसमाजप्रयागस्य पक्षतः विशिष्टैर्महानुभावैः पूज्यायाः मातुः करकमलयोः भक्तिपूर्वकं विनयांजलिस्वरूपेण निम्नलिखितमभिनन्दनपत्रं समर्पितमभवत्–**

अस्माकं जीवने महतः पुण्यस्य उदयोऽभवत् यदा वयं सर्वे एकं प्राचीनं तीर्थं तीर्थस्वरूपे पुनः स्थापितं भवन्तम् स्व चक्षुभिरपश्याम। पूज्या गणिनी प्रमुखा ज्ञानमती माता एकः कुशलः शिल्पीव भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षायाः केवलज्ञानकल्याणकस्य भूमिं–प्रयागं स्वप्रज्ञाबलस्य अस्त्रेण संस्कृतं कृत्वा ''तीर्थंकरऋषभदेवदीक्षास्थलीप्रयागतीर्थसदृशीमनुपममुपहारं'' सम्पूर्ण विश्वाय प्रादात् वयं च सर्वेऽस्य स्वर्णिमेतिहासस्य साक्षिणोऽभवाम।

प्रयागस्य भूमिरियं कोटीनां वर्षाणां पश्चात् एकबारं पुन वैराग्य–संयमेन सिक्ता भवन्ती सर्वदैवाय जैनतीर्थरूपेण स्थापिताभवत्। धन्यास्ति तस्या गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुर्दूरदर्शिता, उत्कृष्टा प्रतिभा, महती प्रज्ञा यत् या अस्माभिः सर्वैः प्रयागवासिभिः सह समस्ताय संसारायैकं विस्मृतमितिहासं एतावतोत्कृष्टरूपेण स्मरयितुं माध्यमं प्रादात्। केवलं सार्धस्यैक वर्षस्य अल्पसमये निर्मितमाकर्षकं जैनतीर्थं सम्पूर्णे देशे स्व सुरभिं विकीर्य भक्तान् तीर्थं प्रति चरणं वर्धयितुं विवशमकरोत्। अस्माकं सम्पूर्णमेव इलाहाबादनगरं धन्यमभवत्।

पूर्वमपि जैनसमाजस्य महत्याः साध्व्याः रूपेण पूज्यायाः मातुः ज्ञानमत्याः नाम सर्वदैव

➢प्रयाग जैन समाज की ओर से विनम्र विनयांजलि रूप अभिनंदन पत्र–

प्रयाग तीर्थ पर 21 अक्टूबर 2002 को सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज-प्रयाग की ओर से विशिष्ट महानुभावों के द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों में भक्तिपूर्वक विनयांजलि स्वरूप निम्न अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया–

हमारे जीवन में महान पुण्य का उदय हुआ जबकि हम सब लोगों ने एक प्राचीनतम तीर्थ को तीर्थ स्वरूप में पुनः स्थापित होते हुए अपनी आँखों से देखा। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने एक कुशल शिल्पी की भाँति भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग को अपने प्रज्ञाबल की छेनी से तराश कर 'तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ' जैसी अनुपम भेंट पूरे विश्व को प्रदान कर दी और हम सब इस स्वर्णिम इतिहास के साक्षी बन गये।

प्रयाग की यह भूमि करोड़ों वर्ष उपरांत एक बार पुनः वैराग्य, संयम से सिंचित होते हुए सदैव के लिए जैन तीर्थ के रूप में स्थापित हो गई, धन्य है उन गणिनी माताजी की अपूर्व दूरदर्शिता, उत्कृष्ट प्रतिभा एवं महान प्रज्ञा कि जिसने हम सब प्रयागवासियों सहित समस्त विश्व को एक विस्मृत इतिहास को इतने उत्कृष्ट रूप में स्मरण करने हेतु माध्यम प्रदान कर दिया। मात्र डेढ़ वर्ष के अल्प समय में निर्मित इस आकर्षक जैन तीर्थ ने देशभर में अपनी सुगंधि वितरित करके भक्तों को अपनी ओर कदम बढ़ाने के लिए विवश कर दिया है, हमारा पूरा इलाहाबाद नगर धन्य हो उठा है।

पूर्व में भी हम सब जैन समाज की महान साध्वी के रूप में पूज्य ज्ञानमती माताजी का नाम

वयमश्रणुम, तया विरचितं साहित्यं च अपठाम, तया विलिखितानि सरसानि भक्तिविधानानि सर्वदैव भक्तिभावैः कुर्मः, परंत्वद्य तस्याः साक्षात् सान्निध्यं प्राप्तमभवत्तु यथा सहजेन सरलेन वात्सल्येन युक्ता मोक्षमार्गं प्रदर्शयन्ती यथार्था मातैव अस्मभ्यं प्राप्ताभवत्। ईदृश्याः सरस्वत्याः मातुर्यशः युग–युगान्तरेभ्यः चिरं जीवतु।

भवत्याः प्रभावीनायकत्वं अनुशासनं च वयं भवत्याः संघेऽप्यपश्याम। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामत्या, क्षुल्लकरत्नश्रीमोतीसागरस्य, कर्मयोगिनः ब्रह्मचारिण रवीन्द्रस्य भवत्याः दिशा निर्देशं प्रति यत् समर्पणं, पारस्परिकं सामञ्जस्यं कर्मठ परिश्रमश्च दृष्टिगतो भवन्ति तदन्यत्र दुर्लभमेवास्ति। क्षुल्लिका श्रद्धामती माता, संघस्थ ब्रह्मचारिण्यो भगिन्योऽप्यहर्निशं धर्मसाधनायां गुरुसेवायां च तत्पराः सदैव दृश्यन्ते। एतत्सर्वं भवत्याः यशस्विनो व्यक्तित्वस्यैव प्रतिबिम्बं वर्तते। भवत्याः 69 तमे जन्मदिने 51 तमे च त्यागदिवसे च स्वर्णिमा शरत्पूर्णिमा 21 अक्तूबर 2002 दिने विद्यते, अस्मिन्नवसरे वयं सर्वेऽत्यन्त विनम्रभावैः भवत्याश्चरणकमलयोः स्वकोटिशः विनयांजलिं समर्पयन्तः भवत्याः सुदीर्घस्य स्वस्थजीवनस्य कामनां कुर्मः।

न्यायाधीशसम्मेलनस्यैकोपलब्धिः–**प्रयागतीर्थे चतुर्मासानां मध्ये यद्यपि अनेक प्रभावनात्मकाः कार्यक्रमा सम्पन्नाः अभवन्, पुनरपि पूज्यायाः मातुः प्रेरणयोत्तरप्रदेशस्य न्यायाधीशान् आमन्त्र्य 3 नवम्बर 2002 दिने अहिंसायाः न्यायस्य च विषये एक** ''न्यायाधीशसम्मेलनमायोजितम–भवत्'', **यस्मिन् न्यायमूर्तेः श्री सुधीर नारायणाग्रवालस्य, न्यायमूर्तेश्च श्री एम.सी. जैनस्य**

सदा से सुनते आये थे, उनके द्वारा लिखित साहित्य पढ़ते थे, उनके द्वारा लिखे सरस भक्ति विधानों को भक्तिभाव से किया करते थे, पर जब उनका साक्षात् सानिध्य मिला तो जैसे सहज, सरल वात्सल्य से युक्त मोक्ष का मार्ग दिखलाने वाली सच्ची माता ही हमें प्राप्त हो गयीं। ऐसी सरस्वती माता का यश युगों-युगों तक निश्चित ही चिरंजीव रहने वाला है।

आपके प्रभावी नायकत्व एवं अनुशासन की छाप हमने आपके संघ में देखी है। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी, क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का आपके दिशा-निर्देश के प्रति जो समर्पण, आपसी सामंजस्य एवं कर्मठ परिश्रम दृष्टिगत होता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। क्षुल्लिका श्रद्धामती माताजी एवं संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनें भी अहर्निश धर्मसाधना एवं गुरुसेवा में ही तत्पर दिखायी पड़ती हैं, यह सब आपके यशस्वी व्यक्तित्व का ही प्रतिबिम्ब है। आपके 69वें जन्मदिवस एवं 51वें संयम दिवस-स्वर्णिम शरद पूर्णिमा 21 अक्टूबर 2002 को इस मंगल अवसर पर हम अत्यंत विनीत भाव से आपके श्रीचरणों में अपनी कोटिशः विनयांजलि प्रस्तुत करते हुए आपके सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

➢न्यायाधीश सम्मेलन एक उपलब्धि–

प्रयाग तीर्थ पर चातुर्मास के मध्य यूँ तो अनेक प्रभावनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न हुए, फिर भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से उत्तरप्रदेश हाईकोर्ट के न्यायाधीशों को आमंत्रित करके 3 नवम्बर 2002 को अहिंसा एवं न्याय विषय पर एक **''न्यायाधीश सम्मेलन''** आयोजित हुआ, जिसमें न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण अग्रवाल एवं न्यायमूर्ति श्री एम.सी. जैन की भूमिका विशेष सराहनीय रही।

भूमिका विशेषरूपेण प्रशंसनीया आसीत्। इलाहाबाद उच्चन्यायालयस्य माननीयैः न्यायाधीशैः सह प्रशासनिक विभागस्य, शासकीय स्वास्थ्यविभागस्य, शैक्षणिकक्षेत्रादीनां च विशिष्टाः महानुभावाः सम्मेलनेऽस्मिन् भागमगृह्णन्।

सम्मेलने न्यायमूर्तिः श्री आर.के. शुक्ला, न्यायमूर्तिः श्री सुधीरनारायण अग्रवालः, न्यायमूर्तिः श्री सखाराम सिंहः, न्यायमूर्तिः श्री एम.सी. जैनः, न्यायमूर्तिः श्री एस.के. अग्रवालः, न्यायमूर्तिः श्री एस.पी. मेहरोत्रा आदयः ''अहिंसायाः न्यायस्य च विषये'' स्वसारगर्भितान् विचारान् प्रस्तुतानकुर्वन्। इलाहाबाद विश्वविद्यालयस्य प्राचीनेतिहास विभागस्य प्राध्यापिका गीता देवी, डॉ. उर्मिला जैना (इला.), अधिवक्ता श्री राजीवो गुप्ता आदयः सर्वान् स्वविचारैः परिचितान् अकुर्वन्। ब्र. रवीन्द्रः स्व स्वागतभाषणे जैन साधूनां साध्वीनां च चर्यासु प्रकाशं पातयन् सर्वेभ्यः समागते अतिथिभ्यः प्रति आभारं प्रकटयत् पुनश्च पूज्या माताजी निज–सद्बोधने प्रयागस्य भूमिः प्रारम्भादेव न्यायस्य भूमिरूपेण प्रदर्शयन्ती भारतीयसंस्कृतौ, जैनधर्मे अहिंसादीनां शाश्वतमूल्यानामुपादेयतां, अल्पसंख्यकान् विषयानवलम्ब्य प्रभाविनो विचारान् अभिव्यक्तानकरोत्। उच्चशिक्षा आयोगस्य (इला.) सचिवः श्री विक्रमजीततिवारी, अपरनगरायुक्त श्री मुन्नीलालः पाण्डेयः, हरीशचन्द्रः अनुसंधान संस्थानस्य झूसी इत्यस्य निदेशकः प्राध्यापको रविः एस. कुलकर्णी वैज्ञानिकश्च डा. भाई वी.एस. पासी, उपमुख्य चिकित्साधिकारी (इला.) डॉ. वी.डी. पाण्डेयः इलाहाबाद उच्चन्यायालयस्य अधिवक्तारः अन्ये च विशिष्टमहानुभावाः सम्मेलने भागमगृह्णन्। सर्वेभ्यः आगन्तुकातिथिभ्यः तीर्थस्य

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों सहित प्रशासनिक विभाग, सरकारी स्वास्थ्य विभाग, शैक्षणिक क्षेत्र इत्यादि के विशिष्ट महानुभावों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन में न्यायमूर्ति श्री आर.के. शुक्ला,न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण, न्यायमूर्ति श्री सखाराम सिंह, न्यायमूर्ति श्री एम.सी. जैन, न्यायमूर्ति श्री एस.के. अग्रवाल, न्यायमूर्ति श्री एस.पी. मेहरोत्रा ने 'अहिंसा एवं न्याय' विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग की प्रो. गीता देवी, डॉ. उर्मिला जैन (इला.), अधिवक्ता श्री राजीव गुप्ता आदि ने सभी को अपने विचारों से परिचित कराया। ब्र. रवीन्द्र जी ने अपने स्वागत भाषण में जैन साधु-साध्वी चर्या पर प्रकाश डालते हुए सभी पधारे अतिथियों के लिए आभार व्यक्त किया। पूज्य माताजी ने अपने विस्तृत उद्बोधन में प्रयाग की भूमि को प्रारंभ से ही न्याय की भूमि के रूप में बताते हुए भारतीय संस्कृति, जैनधर्म, अहिंसा आदि शाश्वत मूल्यों की उपादेयता, अल्पसंख्यक इत्यादि विषयों पर प्रभावी विचार व्यक्त किए। उच्च शिक्षा आयोग (इला.) के सचिव श्री विक्रमाजीत तिवारी, अपर नगर मजिस्ट्रेट श्री मुन्नीलाल पाण्डेय, हरीशचंद अनुसंधान संस्थान-झूसी के निदेशक प्रो. रवि एस. कुलकर्णी एवं वैज्ञानिक डॉ. भाई वी.एस. पासी, उपमुख्य चिकित्सा अधिकारी (इला.), डॉ. वी.डी.पाण्डेय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधिवक्ताओं एवं अन्य विशिष्टगणों ने भी सम्मेलन में भाग लिया। सभी आगंतुक अतिथियों को तीर्थ का प्रतीक चिन्ह एवं

प्रतीकचिह्नः साहित्यं च प्रदाय तान् सम्मानितान् अकरोत्। अवसरेऽस्मिन् दीक्षास्थली तीर्थस्य पक्षतः इलाहाबाद उच्च न्यायालयस्य पुस्तकालयाय एकया लौह महामंजूषिकया सह साहित्यं प्रदत्तम्।

201 वन्दनां कृत्वा मनः प्रफुल्लितमभवत्–**तीर्थे मंगलपदार्पणादारभ्य चतुर्मासे तत्र प्रवासे च पूज्यां मातरं अस्मान् सर्वान् च तीर्थे स्थितानां जिनमन्दिराणां पुनः–पुनः दर्शनस्य सौभाग्यं तु प्राप्तमेव, कैलासपर्वतस्य वन्दनायाः अपि महान् सुयोगः प्राप्तोऽभवत्। पूज्यामाता कैलासपर्वतस्य 148 वन्दनाः पूर्णाः अकरोत्, अहं च 201 वन्दनाः पूर्णाः कृत्वा परमतृप्तेरनु– भवमकरवम्।**

दीपावल्यां तीर्थ प्रकाशमानमभवत्–**4 नवम्बर 2002, कार्तिक कृष्णअमावस्यायां, भगवतो महावीरस्य निर्वाणवेलायां दीक्षास्थलीतीर्थे कैलासपर्वतस्य पुरत निर्मितायां पावापुर्यां अत्यन्ताकर्षकरचनायाः समक्षं शताधिकजनैः सामूहिकरूपेण भगवतो महावीरस्य निर्वाणमोदकाः समर्पिताः अभवन्। कैलासपर्वते विराजमानेभ्यः द्वासप्तति जिनप्रतिमाभ्यः भगवतो महावीरस्य प्रतिमायाः समक्षमपि निर्वाण मोदकाः समर्पिताः अभवन्। विशालकायस्य भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकोऽपि सम्पन्नोऽभवत्। ब्राह्म मुहूर्ते पूज्यमातुः संघस्थसाधूनां च वर्षायोग– निष्ठापनाक्रियाभिः चतुर्मासस्य समापनमभवत्। रात्रौ असंख्यानां दीपानां प्रकाशिते नूतनं तीर्थं ज्वाज्वल्यमानमभवत्।**

कुण्डलपुरं प्रति मंगल विहारः–**सफलतापूर्वकं विशेषे चोल्लासपूर्णे वातावरणे सम्पन्नस्य तीर्थस्यास्य चतुर्मासस्य पश्चात् 10 नवम्बर 2002 दिने पुनः कुण्डलपुरतीर्थं प्रति मंगल–**

साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दीक्षास्थली तीर्थ की ओर से इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पुस्तकालय हेतु एक अलमारी सहित साहित्य प्रदान किया गया।

➢201 वन्दना कर हृदय प्रफुल्लित हो उठा–

तीर्थ पर मंगल पदार्पण से लेकर चातुर्मास एवं वहाँ प्रवास तक पूज्य माताजी एवं हम सभी को तीर्थ पर स्थित जिनमंदिरों के बार-बार दर्शन का सौभाग्य तो मिला ही, कैलाशपर्वत की वंदना का भी महान सुयोग प्राप्त हुआ। पूज्य माताजी ने कैलाशपर्वत की 148 वंदना पूर्ण कीं एवं मैंने 201 वंदना पूर्ण करके परम तृप्ति का अनुभव किया।

➢दीपावली पर जगमगा उठा तीर्थ–

4 नवम्बर 2002, कार्तिक कृष्णा अमावस्या, भगवान महावीर की निर्वाण बेला में दीक्षास्थली तीर्थ पर कैलाशपर्वत के सामने निर्मित पावापुरी की अत्यन्त आकर्षक रचना के समक्ष सैकड़ों लोगों द्वारा सामूहिक रूप से भगवान महावीर का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। कैलाशपर्वत पर विराजमान 72 प्रतिमाओं में से भगवान महावीर की प्रतिमा के समक्ष भी निर्वाणलाडू चढ़ाया गया एवं विशालकाय भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक भी सम्पन्न किया गया। ब्रह्म मुहूर्त में पूज्य माताजी एवं संघस्थ साधुओं द्वारा वर्षायोग निष्ठापना क्रिया के साथ चातुर्मास का समापन हुआ। रात्रि में असंख्य दीप जलने पर नूतन तीर्थ सचमुच जगमगा उठा।

➢कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार–

सफलतापूर्वक एवं विशेष उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए तीर्थ के इस चातुर्मास के

विहारोऽभवत्। यद्यपि तीर्थात् मंगलविहारसमये मनसि किंचित् कष्टं त्वभूत्, पुनरप्यत्र पंचमासानां प्रवासकारणात् हृदये तृप्तिः मानसिक शान्तिरप्यासीत्।

प्रातः 9 वादनसमयात् दीक्षाकल्याणकमन्दिरस्य, समवसरण मन्दिरस्य च कलशारोहणस्य ध्वजारोहणस्य च विधिः सम्पन्नोऽभवत्। वटवृक्षमन्दिरस्य च महामुनेः ऋषभदेवस्य पंचामृताभिषेकोऽभवत्। मध्याह्ने 2 वादन समयात् मंगल विहारस्य प्रवचनसभाभवत्। इलाहाबादस्य चानेकमहानुभावानां सम्मानोऽभवत्। इलाहाबाद उच्चन्यायालयस्य न्यायाधीशः श्री एम. सी. जैन सभाध्यक्षतामकरोत्, विहारस्य च सम्पूर्णे मार्गे पदाभ्यामचलत्। अस्यां विहारस्य सभायां इलाहाबादस्य ए.डी.एम. श्री मुन्नीलालपाण्डे आगच्छत् पर्याप्तदूरे च पदाभ्यामचलत्। पुनः 2 किलोमीटरदूरे यदा वयं सरायइनायत स्थाने आगच्छाम तु तत्र पुलिसस्थानके पुलिसअधिकारिणः कथनेन माताश्रीः अन्तः प्राविशत्। ते मातरं तत्रानयत्, यत्र ते 4–5 वाहनेषु महिषः महिषीश्च पशुवधशालायां गमनात् न्यवारयन्। अस्मै अहिंसक–मार्गाय माताश्रीः तेभ्यः प्रचुरमाशीर्वादं प्रादात्।

एकस्य श्रावकस्य गुरुभक्तिः–**आचार्याः गुरोः भक्तेः महत्वं प्रदर्शयन्तोऽकथयन्–**

नामापि यः स्मरति मोक्षपथस्य साधो–राशु क्षयं व्रजति तद्दुरितं समस्तम्।
यो भक्त–भेषज–मठादि कृतोपकारः, संसारमुत्तरति सोऽत्र नरो न चित्रम्।।

अर्थात् यो मोक्षमार्गे स्थितस्य साधोः केवलं नाममात्रमपि स्मरति तस्य सर्वाणि पापानि

अनन्तर 10 नवम्बर 2002 को पुनः कुण्डलपुर तीर्थ की ओर मंगल विहार हुआ। यद्यपि तीर्थ से मंगल विहार होने के कारण मन में थोड़ा कष्ट तो हुआ, फिर भी यहाँ 5 माह का प्रवास मिल जाने से हृदय में तृप्ति और मानसिक शांति भी थी।

प्रातः 9 बजे से दीक्षाकल्याणक मंदिर एवं समवसरण मंदिर के कलशारोहण-ध्वजस्थापना की विधि सम्पन्न हुई तथा वटवृक्ष मंदिर के महामुनि ऋषभदेव का पंचामृत अभिषेक हुआ। मध्यान्ह में 2 बजे से मंगल विहार की प्रवचन सभा हुई तथा इलाहाबाद के अनेक महानुभावों का सम्मान हुआ। हाईकोर्ट के जस्टिस श्री एम.सी. जैन ने सभाध्यक्षता की तथा विहार में पूरे रास्ते पैदल चले। इस विहार की सभा में इलाहाबाद के ए.डी.एम.-श्री मुन्नीलाल पांडे आए और काफी दूर पैदल चले पुनः 2 किमी. दूर जब हम सरायइनायत पहुँचे तो वहाँ के थाने में वहाँ के आफीसर के कहने से माताजी अंदर तक गईं, वे माताजी को वहाँ ले गए, जहाँ उन्होंने 4-5 ट्रक गाय-भैंसों को कत्लखाने जाने से रोका था। इस अहिंसक कार्य के लिए माताजी ने उन्हें खूब-खूब आशीर्वाद दिया।

➢**एक श्रावक की गुरुभक्ति–**

आचार्यों ने गुरुभक्ति के महत्त्व को बताते हुए कहा है–

नामापि यः स्मरति मोक्षपथस्य साधोराशु क्षयं व्रजति तद्दुरितं समस्तम्।
यो भक्त-भेषज-मठादिकृतोपकारः संसारमुत्तरति सोऽत्र नरो न चित्रम्।।

अर्थात् जो मोक्षमार्ग में स्थित साधु के केवल नाममात्र का भी स्मरण करता है, उसके समस्त

शीघ्रमेव नश्यन्ति, पुनः यो मनुष्यः दिगम्बरजैन साधोः आहारौषधमठ–वसतिकादिभिः उपकारं करोति, सः यदि संसारात् पारं गच्छतु, त्वस्मिन् आश्चर्यस्य का वार्ता?

कुण्डलपुरस्य यात्रायाः मध्ये वाराणसी तीर्थस्य यशस्विनः अध्यक्षस्य श्री रिसबदासस्य एकमात्रं सुपुत्रः श्री दीपको जैनः पूज्यमातुर्दर्शनार्थमागच्छत् मातुश्च सौम्यछविना वात्सल्य–पूर्णयाः वाण्या प्रभावेन मातुरनन्यो भक्तोऽभवत्। पुनस्तु सः लघुषु महत्सु च स्थानेषु समये–समये मातुर्दर्शनार्थमागन्तुं प्रारभत्, विहारस्य च वास्तविकमानन्दं प्राप्य रुचिना संघव्यवस्थामप्यपश्यत्। भगवत् पार्श्वनाथस्य जन्मभूमौ भेलूपुरे–वाराणस्यां मंगलप्रवेशस्य सुन्दररूपरेखा रचयित्वा पूर्णेन मनोयोगेन तां सम्यक् प्रकारेण सम्पादितामकरोत्। वाराणस्यां प्रवेशात्पूर्वं 17 नवम्बर 2002 दिने वीरभानपुरे श्रेष्ठिनो रिसबदासस्य वाटिकायां संघस्यैकदिवसीयः प्रवासोऽभवत्।

वास्तवे गुरवे कृता निःस्वार्था अचला च भक्तिः एकस्मिन् दिनं जीवं संसारसमुद्रात् पारं नयति। दीपककुमारेण सहैव तस्य धर्मपत्नी श्रीमती सुभाषिणी जैनापि अत्यन्त सेवाभाविनी धर्मपरायणा च महिला वर्तते।

पार्श्वनाथ जन्मभूमौ वाराणस्यामपूर्वोत्साहः–**वाराणस्यां नगर्यां 19 नवम्बर 2002 दिने सर्वथोत्सवसदृशं वातावरणमासीत्, स्यात्ते कदाप्यचिन्तयन्, यत् ईदृशीमहान् साध्व्याः मातुरस्माकं बनारसनगरे मंगल प्रवेशो भविष्यति अथवा चिन्त्यतां यदद्य तु कूप एव पिपासोः**

पाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं, फिर जो मनुष्य दिगम्बर साधु का भोजन, औषधि, मठ-वसतिका आदि के द्वारा उपकार करते हैं, वे यदि संसार से पार हो जावें, तो भला इसमें आश्चर्य ही क्या है?

कुण्डलपुर की यात्रा के मध्य वाराणसी तीर्थ के यशस्वी अध्यक्ष श्री रिसबदास जी के एक मात्र सुपुत्र श्री दीपक जैन पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे और माताजी की सौम्य छवि एवं वात्सल्यपूर्ण वाणी के प्रभाव से माताजी के अनन्य भक्त बन गए, फिर तो वे अनेक छोटे-बड़े स्थानों पर समय-समय पर माताजी के दर्शनार्थ आने लगे और विहार का वास्तविक आनन्द प्राप्त करते हुए संघ व्यवस्था में भी रुचि ली। भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि भेलूपुर-वाराणसी में मंगल प्रवेश की सुन्दर रूपरेखा बनाकर पूरे मनोयोगपूर्वक उसे अच्छे ढंग से सम्पादित किया। वाराणसी प्रवेश के पूर्व 17 नवम्बर 2002 को वीरभानपुर में सेठ रिसबदास जी की बगीची पर संघ का एक दिवसीय प्रवास रहा।

वास्तव में गुरु के प्रति की गई निःस्वार्थ एवं अटूट भक्ति एक दिन जीव को संसार समुद्र से पार लगा देती है। दीपक कुमार जी के साथ उनकी धर्मपत्नी सौ. सुभाषिनी जैन भी अत्यन्त सेवाभावी एवं धर्मपरायण महिला हैं।

➢पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी में अपूर्व उत्साह–

वाराणसी नगरी में 19 नवम्बर 2002 को बिल्कुल उत्सव जैसा माहौल था और हो भी क्यों नहीं, शायद ही उन्होंने कभी सोचा होगा कि इतनी महान साध्वी माता का हमारे बनारस में भी मंगल पदार्पण होगा अथवा यूँ समझिये कि आज तो कुंआ स्वयं प्यासे के पास चलकर आ गया था। कई

समीपमागतः। कतिचिद्भ्यो दिनेभ्यः वाराणस्याः स्थानीयाः समाजस्य जनाः उत्साहपूर्वकं मातुः स्वागतस्य तत्परतायां संलग्नाः आसन्। प्रातःकालीनायां अस्यां स्वागतशोभायात्रायां गजैः अश्वैः शाहीबैण्डवादनैः सह अपारो जनसमूहः उपस्थितः आसीत्। 4–5 किलोमीटर दीर्घायामस्यां शोभायात्रायां 3–4 शासकीय नेतारो मातुर्दर्शनार्थमागच्छन्, केवलं समाचारपत्राणि दूरदर्शनप्रसारणस्य कानिचित् दलानि सम्पूर्णायाः जुलूस सभा–शोभायात्राश्च समाचारमगृह्णन्। सम्पूर्णे मार्गे कतिचित्सु स्थानेषु मंगल आरतिका पुष्पवृष्टिश्चाभवत्।

मध्याह्ने 2.30 वादने मन्दिरस्य बाह्यभागे निर्मिते पाण्डाले विशाला प्रवचनसभाभवत्, यस्यां वाराणस्याः नगर्याः सर्वे गण्यमान्याः महानुभावाः उपातिष्ठन्, सम्पूर्णमेव प्रांगणं जनैः पूर्णमासीत्। अस्मिन्नवसरे इलाहाबादस्यापि अनेकजनाः मातुर्दर्शनार्थमागच्छन्। येषां स्वागतं वाराणस्याः जैनसमाजेन कृतम्। रात्रिपर्यन्तं संचालितमिमं कार्यक्रमं वीक्ष्य जनानां विनयेन कथनमासीत् यत् मातः! ईदृशः उत्साहो वाराणस्यां प्रथमबारं दृष्टिगतमभवत्।

भगवतः सुपार्श्वनाथस्य चरणरजो मस्तकेऽधारयत्–**20 नवम्बर दिने वयं वाराणस्यामेव स्थितभदैनी मन्दिरस्य दर्शनार्थमगच्छाम, यत् भगवतः सुपार्श्वनाथस्य जन्मभूमिर्विद्यते। भागीरथी तटे स्थिताय अस्मै रमणीक स्थलायापि जीर्णोद्धारस्यावश्यकता वर्तते। पुनः स्याद्वादमहाविद्यालयेऽपि मन्दिरस्य दर्शनं कृत्वा माताश्रीः संक्षिप्तमुद्बोधनमदात्, यत्र डॉ.फूलचन्द्रः प्रेमी, डा. कमलेश कुमारः, पं. बाबूलाल फागुल्ल आदि विद्वांसः उपातिष्ठन्। तत्र प्राचार्य महोदयः संस्कृतभाषायां मातुराभारं सम्मानं चाभिव्यक्तमकरोत्।**

दिनों से वहाँ की स्थानीय समाज के लोग उत्साहपूर्वक माताजी के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए थे, प्रातःकालीन इस स्वागत जुलूस में हाथी, घोड़े एवं शहनाई, बैण्ड के साथ अपार जनसमूह उपस्थित था। 4-5 किमी. लम्बे इस जुलूस में 3-4 सरकारी नेता माताजी के दर्शनार्थ पधारे, कई न्यूज पेपर एवं टी.वी. चैनल की कई टीमें पूरे जुलूस-सभा आदि का कवरेज कर रही थीं, पूरे रास्ते में कई स्थानों पर मंगल आरती, पुष्पवृष्टि आदि हुई।

मध्यान्ह में 2.30 बजे से मंदिर के बाहर बने भव्य पाण्डाल में विशाल प्रवचन सभा हुई, जिसमें वाराणसी नगरी के सभी गणमान्य महानुभाव उपस्थित हुए, पूरा प्रांगण भरा रहा। इस अवसर पर इलाहाबाद से भी अनेक महानुभाव पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे, जिसका स्वागत वाराणसी जैन समाज द्वारा किया गया। रात तक चले इस कार्यक्रम को देखकर लोगों का यही कहना रहा कि माताजी! बनारस में पहली बार ऐसा उत्साह देखा जा रहा है।

➢भगवान सुपार्श्वनाथ जन्मभूमि की चरणरज मस्तक पर चढ़ाई–

20 नवम्बर को हम लोग वाराणसी में ही स्थित भदैनी मंदिर के दर्शनार्थ गए जो कि भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि है, गंगा के तट पर बसे इस रमणीक स्थल को भी जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। पुनः स्याद्वाद महाविद्यालय में भी मंदिर के दर्शन करके माताजी ने संक्षिप्त उद्बोधन दिया, जिसमें डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी, डॉ. कमलेश जैन, पं. बाबूलाल जी फागुल्ल आदि विद्वान उपस्थित थे। वहाँ के प्राचार्य जी ने संस्कृत भाषा में पूज्य माताजी के प्रति आभार एवं सम्मान व्यक्त किया।

काशी हिन्दूविश्वविद्यालये धर्मस्य शंखनादो गुंजायमानोऽभवत्–**21 नवम्बर 2002 दिने मध्याह्ने 1.30 वादन समये वाराणस्याः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य मालवीय भवने गुंजितेन धर्मस्य शंखनादेन तत्र स्थितः विद्वद्वर्गः पूज्यायाः मातुश्चरणयो नतमस्तकोऽभवत्। प्रवचनसभायां कार्यक्रमस्य शुभारम्भः संघस्थयोः भगिन्योः इन्दु–चन्द्रिकयो, भजनेन अभवत् पुनश्च वैदिक मंगलाचरणं डा. नरेन्द्र तिवारी प्रस्तुतमकरोत्। संस्कृत विभागस्य छात्राभिः कुलगीतस्य प्रस्तुतिर्जाता। माननीयः कुलपतिर्मुख्यातिथिः प्रो. रेवाप्रसाद द्विवेदिना च मालवीयस्य प्रतिमायां माल्यार्पणस्य पश्चात् प्रवचन शृंखलायाः शुभारम्भोऽभवत्।**

सर्वप्रथमं प्राध्यापकः सुदर्शनलालोजैनो मातुः परिचयं कथयन् मात्रे फैजाबाद–विश्वविद्यालयेन प्रदत्तायाः डी.लिट् मानदोपाधेर्विस्तृत वर्णनमकरोत्। पुनोऽहं संघस्थश्च क्षुल्लकमोतीसागरो ''धर्मो संस्कृतिश्च'' विषये सर्वेभ्यः उद्बोधनं अदत्ताम्। मुख्योऽतिथिः प्राध्यापक रेवाप्रसादो द्विवेदी धर्मेसंस्कृतौ च विशेषं व्याख्यानं प्रस्तुतं कुर्वन् पूज्याः मातुरस्माकं च संस्कृतोच्चारणस्य शुद्धतायाः मुक्तकण्ठेन प्रशंसामकरोत्। सारस्वतोऽतिथिः सम्पूर्णानन्द–संस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः प्राध्यापको राजेन्द्रो मिश्र धर्मस्य संस्कृतेश्च राष्ट्रीय महत्वं प्रदर्शयन् वर्तमान समये सन्तानां उपयोगितां प्रकाशयत्। पूज्यागणिनीप्रमुख–श्री ज्ञानमतीमाताऽणुव्रतस्य महत्व प्रकाशयन्ती अकथयत् ''यदस्माकं उत्तम भारतीय संस्कृतौ कस्यापि मृत्योः, मृतमिति नोक्त्वा देवलोकगमनमभूदिति कथ्यते। वस्तुतः संस्कारैः संस्कृतमेव

➢काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गूंज उठा धर्म का शंखनाद–

21 नवम्बर को मध्यान्ह 1.30 बजे वाराणसी के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में गूंजे धर्म के शंखनाद से वहाँ के विद्वत्वर्ग पूज्य माताजी के चरणों में नतमस्तक हो गये। प्रवचन सभा में कार्यक्रम का शुभारंभ संघस्थ बहनों कु. चन्द्रिका एवं इन्दु के भजन से हुआ, पुनः वैदिक मंगलाचरण डॉ. नरेन्द्र तिवारी ने प्रस्तुत किया। संस्कृत विभाग की छात्राओं द्वारा कुलगीत की प्रस्तुति एवं माननीय कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी जी के द्वारा महामना की प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात् प्रवचन श्रृँखला का शुभारंभ हुआ।

सर्वप्रथम प्रो. सुदर्शनलाल जैन ने पूज्य माताजी का परिचय देते हुए माताजी को फैजाबाद यूनिवर्सिटी से प्राप्त डी.लिट्. की मानद् उपाधि का विस्तृत वर्णन किया पुनः मैंने और संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी ने ''धर्म और संस्कृति'' विषय पर सभी को उद्बोधन दिया। मुख्य अतिथि प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी ने धर्म और संस्कृति पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए पूज्य माताजी एवं हम लोगों के संस्कृत उच्चारण की शुद्धता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। सारस्वत अतिथि सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने धर्म और संस्कृति को राष्ट्रीय महत्त्व प्रदान करते हुए वर्तमान समय में सन्तों की उपादेयता पर प्रकाश डाला। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि **''हमारी उत्तम भारतीय संस्कृति में किसी की मृत्यु को मरा हुआ न कहकर देवलोक हो गया कहा जाता**

जीवनं संस्कृति वर्तते। कर्तरिकावत् च त्रोटनमस्माकं संस्कृतिर्नास्ति। यदा वयं संस्कारेण पाषाणं भगवत रूपं प्रदातुं शक्नुमः त्वात्मानं संस्कारितं विधाय किं तं भगवन्तं विधातुं न शक्नुमः? आत्मनः सत्ता शाश्वती विद्यते, तस्य शाश्वता दृष्टिरेव संस्कृतिर्विद्यते। जैनधर्मस्य सर्वे आगमाः संस्कृत प्राकृते च सन्ति।''

पूज्या माता कुलपति महोदयाय विश्वविद्यालये प्राकृतविभागस्य महत्तां प्रतिपादयन्ती प्रतिवर्षं विश्वविद्यालये भगवति ऋषभदेवे पार्श्वनाथे च संगोष्ठीमायोजयितुं प्रेरणां प्रादात्, यां स सहर्षं स्वीचकार।

बनारसहिन्दूविश्वविद्यालयस्य कुलपतिः प्राध्यापको रामचन्द्रो रावः स्व उद्बोधने अकथयत् यत् धर्मं सामान्यजनाः अवगन्तुं न शक्नुवन्ति, अतएव सन्त–महात्मनं अपेक्षा वर्तते। दिगम्बर जैन समाजस्य काश्याः पक्षतः श्री मुन्नीबाबूमहोदयः संकल्पसंस्थायाः वाराणस्याः पदाधिकारिणः श्रीदीपकजैनेन च अन्यैश्च गण्यमान्यैर्महानुभावैः द्वाभ्यां कुलपतिभ्यां प्राध्यापक रेवाप्रसादद्विवेदिने च विशेषस्मृतिचिह्नान्युपाहरन्। कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारोजैन जम्बूद्वीपहस्तिनापुरस्याध्यक्ष संस्थानस्य पक्षतः एकां लौहस्य अलमारीं पूज्यया मात्रा लिखितं साहित्यं चोपाहरत्।

भगवतः श्रेयांसनाथस्य जन्मभूमिः कथिता ''श्रेयांसनाथ धर्मस्थलम्''–**वर्तमानकालीनानां चतुर्विंशति–तीर्थंकराणां मध्ये एकादशतमस्य तीर्थंकरस्य श्रेयांसनाथस्य जन्मना पवित्रा भूमिः शास्त्रपुराणेषु**

है। वास्तव में संस्कारों से संस्कारित जीवन ही संस्कृति है। काटना, तोड़ना हमारी संस्कृति नहीं है। जब हम संस्कार से पाषाण को भगवान बना सकते हैं तो आत्मा को संस्कारित कर भगवान नहीं बना सकते क्या? आत्मा की सत्ता शाश्वत है, उसकी शाश्वत दृष्टि हमारी संस्कृति है। जैनधर्म के सारे ग्रंथ संस्कृत और प्राकृत में हैं।''

पूज्य माताजी ने कुलपति महोदय को विश्वविद्यालय में प्राकृत विभाग की महत्ता बताते हुए प्रतिवर्ष विश्वविद्यालय में भगवान ऋषभदेव एवं भगवान पार्श्वनाथ पर संगोष्ठी हेतु प्रेरणा प्रदान की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रामचन्द्र राव ने अपने उद्बोधन में कहा कि धर्म सामान्यजनों के लिए समझना आसान नहीं है अतः सन्त-महात्माओं की आवश्यकता होती है। दिगम्बर जैन समाज काशी की ओर से श्री मुन्नीबाबू एवं संकल्प संस्था (वाराणसी) के पदाधिकारी श्री दीपक जैन एवं अन्य गणमान्य बंधुओं द्वारा दोनों कुलपति एवं प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी को विशेष स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जी (अध्यक्ष-जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर) ने संस्थान की ओर से एक अलमारी एवं पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय हेतु प्रदान किया गया।

➢भगवान श्रेयांसनाथ जन्मभूमि कहलाई ''श्रेयांसनाथ धर्मस्थल''–

वर्तमानकालीन चौबीसी के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ के जन्म से पावन भूमि शास्त्र

सिंहपुरीति नाम्ना वर्णिता विद्यते, या वर्तमाने सारनाथ नाम्ना विज्ञायते मुख्यरूपेण चेयं बौद्धतीर्थस्य रूपेण प्रसिद्धास्ति। तस्यां पवित्र भूम्यां मातुश्चरणेऽपतताम् 24 नवम्बर 2002 दिने, तत्र जिनमन्दिरस्य दर्शनस्य पश्चात् यदा वयं दिगम्बर जैन धर्मशालायामागताः, तु तत्र कार्यकर्तारो अकथयन् यत् भगवतः श्रेयांसनाथस्य दीर्घामूर्तिरागत्य निहितास्ति, अस्याश्च पंचकल्याणकस्य कोऽपि योगो नोपस्थितोऽभवत्। यदि भवतीच्छति, तु शीघ्रमेवास्याः पंचकल्याणकं संभविष्यति। तदा माता तां विचारणीयविषयाणां मध्ये अरक्षत्, यतोह्यधुना तु मातुर्लक्ष्यं कुण्डलपुरतीर्थस्य विकासं प्रत्यासीत्। तदा माता तं तीर्थं ''श्रेयांसनाथधर्मस्थलमिति'' **नाम्ना घोषितमकरोत्।**

चन्द्रप्रभोर्जन्मभूमेश्चन्द्रपुर्याः दर्शनम्–**यस्यातिशयकारिणश्चन्द्रप्रभोस्तीर्थंकरस्यातिशयक्षेत्रे तिजारास्थले चमत्काराणां कारणैः अतिसम्मर्दो धावति निरन्तरं च यात्रिणामागमनं गमनं च जायते, सः तीर्थंकरो भगवान् कस्मिन् स्थले जन्मालभत् तस्य च तीर्थस्य वर्तमाने कीदृशी स्थितिर्वर्तते, स्यात् कोऽपि ज्ञातुं प्रयत्नं नाकरोत्। शास्त्रपुराणेषु वर्णितस्य तस्याष्टमतीर्थंकरस्य भगवतश्चन्द्रप्रभोर्जन्मभूमौ यदा 27 अक्तूबर दिने पूज्यामाता पदार्पणमकरोत् तु तस्य जनशून्यतां वीक्ष्य तस्याः मनसि महत्कष्टमभवत्। चन्द्रावती नाम्ना विख्याते तस्मिन् स्थाने–तीर्थे 2 दिवसीयस्य प्रवासस्य मध्ये धर्मोपदेशादतिरिक्तं द्विदिवसीय** ''पंचकल्याणक–विधानादीनि'' **अन्ये च धार्मिककार्यक्रमाः सम्पन्नाः अभवन्। तत्र कार्यकर्तृभ्यः तीर्थविकासस्य प्रेरणां दत्वा पश्चात् माताश्री 28 नवम्बर दिने भगवतो विधिवत् पंचामृताभिषेकमपश्यत्**

पुराणों में सिंहपुरी के नाम से वर्णित है, जिसे वर्तमान में सारनाथ के नाम से जाना जाता है और मुख्यरूप से यह बौद्धतीर्थ के रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त है। उस पवित्र भूमि पर पूज्य माताजी के चरण पड़े 24 नवम्बर 2002 को, वहाँ के जिनमंदिर के दर्शन के पश्चात् जब हम दिगम्बर जैन धर्मशाला में पहुँचे, तो वहाँ के कार्यकर्ताओं ने भगवान श्रेयांसनाथ की बड़ी मूर्ति दिखाते हुए माताजी को बताया कि काफी दिनों से यह मूर्ति आई हुई रखी है और इसकी पंचकल्याणक का कोई योग नहीं आ रहा है। अगर आप चाहें, तो शीघ्र ही इसका पंचकल्याणक संभव हो सकेगा, उस समय माताजी ने उसे विचारणीय विषय के अन्तर्गत रख दिया, चूँकि अभी माताजी का लक्ष्य कुण्डलपुर तीर्थ का विकास था। उस समय माताजी ने उस तीर्थ को **''श्रेयांसनाथ धर्मस्थल''** के नाम से घोषित किया।

➢चन्द्रप्रभू की जन्मभूमि चन्द्रपुरी के दर्शन–

जिन अतिशयकारी चन्द्रप्रभु तीर्थंकर के अतिशय क्षेत्र तिजारा में चमत्कारों के कारण अतिशायी भीड़ रहती है और निरन्तर यात्रियों का तांता लगा रहता है, उन तीर्थंकर भगवान ने किस स्थल पर जन्म लिया तथा उस तीर्थ की वर्तमान में क्या स्थिति है, शायद किसी ने जानने की भी कोशिश नहीं की। शास्त्र-पुराणों में वर्णित उन अष्टम तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु की जन्मभूमि पर जब 27 अक्टूबर को पूज्य माताजी ने पदार्पण किया, तो उसकी वीरानियत देखकर उनके मन को अत्यधिक कष्ट हुआ। चन्द्रावती के नाम से मशहूर उस तीर्थ पर दो दिवसीय प्रवास के मध्य धर्मोपदेश के साथ-साथ दो दिवसीय **''पंचकल्याणक विधान''** आदि विविध धार्मिक कार्यक्रम हुए। वहाँ के कार्यकर्ताओं को तीर्थ विकास की प्रेरणा देने के पश्चात् माताजी ने 28 नवम्बर को भगवान

भगवन्तं चन्द्रप्रभं तस्य च जन्मना पावनं चन्द्रपुरीतीर्थं पुनः पुनः नत्वा अग्रस्थानं प्रति विहारमकरोत्।

सेठरिसबदासस्य प्रसन्नता दृष्टुं योग्यासीत्–**1 दिसम्बर 2002 दिने वयं महाराजगंज नामकस्य लघुग्रामस्य विद्यालये अतिष्ठाम, प्रातः 6.30 वादने समये बनारसनगरात् श्री दीपकः स्वमातरं–पितरं पुत्रीं च नीत्वा महाराजगंजमागच्छत् स्वपितरं चेदमुक्त्वा श्रीफलं समर्पितमकारयत् यदहं कुण्डलपुरे सौधर्मेन्द्रो भविष्यामि। श्रेष्ठी रिषबदासोऽत्यन्तमेव प्रसन्नतयाकथयत् मातः! भवती तु मम पुत्रं वधूं च सर्वथैव परिवर्तितौ अकरोत्। यतोह्यद्य रिषबदासस्य जन्मदिनमासीत् अतः सः श्रीफलं समर्प्य तस्याः आशीर्वादमगृह्णात्। माताश्रीः एतेभ्यः स्वहस्तेन जपितां मालामाशीर्वादस्यरूपेण प्रादात्।**

यदा माता तस्मात् स्थानात् प्रस्थानमकरोत् तु दीपकः प्रतिदिनमिव मात्रा सह धावित्वाचलत्। यद् दृष्ट्वा तस्य पितात्यन्तमेव प्रसन्नतामन्वभवत्। दीपकस्य सुपुत्री कुमारी स्तुतिः एतस्मिन् दिने मम सह 13 किलोमीटर पर्यन्तं पूर्णतया पदाभ्यामचलत्।

अध्यापकानामनुनयविनयैः महाविद्यालयेऽपि एकदिवसीयः प्रवासोऽभवत्–**यस्मात् कालात् माता प्रयागात् विहारमकरोत्, तस्मात् समयात् सा प्रायः एकस्मिन् स्थाने 1–2 दिनतोऽधिकं नातिष्ठत्। यदि कुत्रचित् विशेषः कार्यक्रमः आसीत तु दीर्घोऽपि प्रवासोऽभवत्। लघुषु ग्रामेषु तु प्रातः–सायं द्विसमये विहारोऽभवत्। तेनैव प्रकारेण भांवरकोलस्थानात् विहरन्ती**

का विधिवत् पंचामृत अभिषेक देखा और भगवान चन्द्रप्रभु एवं उनके जन्म से पावन चन्द्रपुरी तीर्थ को बारम्बार नमन कर आगे की ओर विहार किया।

➢सेठ रिसबदास जी की प्रसन्नता देखते ही बनती थी–

1 दिसम्बर को हम लोग महाराजगंज नाम के छोटे से गाँव के स्कूल में रुके हुए थे, प्रातः 6.30 बजे बनारस से दीपक जी अपने माता-पिता और पुत्री को लेकर महाराजगंज आ गए और अपने पिताजी से यह कहकर नारियल चढ़वाया कि मुझे कुण्डलपुर में सौधर्म इन्द्र बनना है। सेठ रिसबदास जी बहुत ही प्रसन्नतापूर्वक बोले कि माताजी! आपने तो मेरे बेटे-बहू को बिल्कुल ही बदल दिया है। चूँकि आज रिसबदास जी का जन्मदिवस था अतः उन्होंने माताजी को श्रीफल समर्पित कर उनका आशीर्वाद भी प्राप्त किया। माताजी ने इन्हें आशीर्वादस्वरूप अपने हाथ से फेरी हुई जपमाला प्रदान की।

जब माताजी ने वहाँ से प्रस्थान किया तो दीपक जी हर दिन की भाँति माताजी के साथ दौड़-दौड़कर चलते रहे, जिसे देखकर उनके पिता जी ने अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव किया। दीपक जी की पुत्री कु.स्तुति जैन मेरे साथ उस दिन 13 कि.मी.पूरा पैदल चली।

➢अध्यापकों के अनुनय विनय पर कॉलेज में भी एकदिवसीय प्रवास हुआ–

जब से माताजी ने प्रयाग से विहार किया था, तब से प्रत्येक स्थान पर वह एक-दो दिन से ज्यादा नहीं रुक रही थीं, हाँ! कभी विशेष कार्यक्रम हो तो भले ही लम्बा प्रवास हुआ और छोटे-छोटे गांवों में तो सुबह-शाम दोनों टाइम विहार होता आ रहा था। इसी प्रकार भांवरकोल से होती

यदा माताश्रीः कोटवां बाजारस्य श्री सिद्धेश्वर इण्टर महाविद्यालये सायंकाले आगच्छत्, त्वत्राध्यापकाः मातरं विनयेनाग्रहमकुर्वन् यत् मातः! प्राक् भवती अत्र 4 दिसम्बर दिने आगन्तुमासीत् अतो वयं 2–3 दिनेभ्यः पूर्वमेव स्व महाविद्यालयस्य 600 छात्रेभ्यः भवत्या प्रवचनस्य सूचना अदाम किन्तु भवत्याः आगमनं एकदिन पूर्वमेवाभवत् भवती च श्वः प्रातः विहारं कर्तुमिच्छति, त्वस्माकं भवत्यै इदमेव निवेदनमस्ति यत् श्वः भवती बालान् स्व मार्गदर्शनं प्रवचनं विधायैव गच्छतु। यदा ते बहु–आग्रहमकुर्वन् तु माताश्रीः निर्णयमकरोत् यत् अहं प्रातः प्रवचनं विधायैवाग्रे गमिष्यामि। यूयं च प्रातः शीघ्रमेवागच्छथ। मातुराज्ञानुसारेण वयमग्रे विहारमकुर्म अग्रे च गत्वा तत्र विद्यालये प्रवचनं प्रश्नमंचं चाकुर्म। वस्तुतस्तु विहारस्य मध्ये प्रायः सर्वेस्वेव विद्यालयेषु प्रवचनं कृत्वा प्रश्नमंचे बालाः पुरस्कृताः अभवन्।

मंत्रैर्जाप्यैश्च प्रतिमायाः पुनः प्राप्तिरभूत्–**आरानगरात् 20 किलोमीटर दूरे मसाढ़नामके ग्रामे एकस्मिन् विद्यालये अस्माकं प्रवासः आसीत्। यत्र आरानगरात् प्रायः 150 महानुभावाः मातुर्दर्शनार्थमागच्छन्। मध्याह्ने शान्तिं विधानं मातुश्च मंगलप्रवचनमभवत्। तेऽकथयन् यत् मसाढ़े व्यक्तिगत न्यासाधिकारिणां भगवतः पार्श्वनाथस्य जिनमन्दिरमस्ति। यस्य प्रमुखा शान्तिदेवी जैना विद्यते, या तत्रोपातिष्ठत् आगन्तुकेभ्यः सर्वेभ्यो भोजन व्यवस्थामपि अकरोत्। तस्मात् मन्दिरात् 8–9 वर्ष पूर्वं संवत् 1876 वर्षे प्रतिष्ठिता कृष्णपाषाणस्य 2 फुट पद्मासना पार्श्वनाथस्य प्रतिमा चौरैरपहृतासीत्। तदा तत्र केचिज्जनाः अयोध्यां गत्वा मातुः**

हुई जब माताजी कोटवां बाजार के श्री सिद्धेश्वर इंटर कालेज में सायंकाल पहुँचीं, तो यहाँ के कई अध्यापकों ने पूज्य माताजी से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक आग्रह किया कि माताजी! आपको पहले यहाँ 4 दिसम्बर को आना था अतः हमने 2-3 दिन पूर्व से ही अपने कॉलेज के 600 विद्यार्थियों को आपके प्रवचन की सूचना कर दी थी किन्तु आपका आगमन एक दिन पूर्व ही हो गया और आप कल प्रातः ही विहार करना चाहती हैं, तो हमारा आपसे यही निवेदन है कि आप कल बच्चों को अपना मार्गदर्शन एवं प्रवचन करके ही जावें। जब उन्होंने ज्यादा आग्रह किया तो पूज्य माताजी ने निर्णय किया कि मैं यहाँ प्रातः प्रवचन करके आगे आ जाऊँगी और तुम लोग प्रातः जल्दी चले जाना। पूज्य माताजी की आज्ञानुसार हम आगे की ओर विहार कर गए और आगे पहुँचकर वहाँ के विद्यालय में प्रवचन व प्रश्नमंच किया। वैसे विहार के मध्य प्रायः सभी विद्यालयों में रोज प्रवचन करके प्रश्नमंच में बच्चों को पुरस्कृत किया गया है।

➢मंत्र जाप्य से प्रतिमा जी वापस मिल गईं–

आरा शहर से 20 किमी. दूर मसाढ़ नाम के गांव के स्कूल में हमारा प्रवास था, जहाँ आरा से लगभग 150 लोग माताजी के दर्शनार्थ पधारे थे, मध्यान्ह में शांतिविधान एवं माताजी का मंगल प्रवचन हुआ, उन्होंने बताया कि मसाढ़ में व्यक्तिगत ट्रस्ट वालों का भगवान पार्श्वनाथ जिनमंदिर है, जिसकी मुखिया शांतिदेवी जैन हैं, जो वहाँ उपस्थित थीं और आगन्तुक सभी के भोजन की व्यवस्था भी कर रही थीं। उस मंदिर से 8-9 वर्ष पूर्व संवत् 1876 में प्रतिष्ठित काले पाषाण की 2 फुट पद्मासन भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमा चोरी चली गई थीं, तो उस समय कई लोग अयोध्या

समीपात् मंत्रान् नीत्वा, तेषां जाप्यमकुर्वन्, प्रतिमा पुनः प्राप्ताभवत् अतएव मातुस्तस्मिन्नेव मन्दिरे आगमने सति जनाः विशेषरूपेण प्रसन्ना आसन्।

धर्मनगरी आराऽभवत् कुण्डलपुरमयी–**कुण्डलपुर नालन्दां प्रति विहारसमये संघस्य 10 दिसम्बर दिनात् 16 दिसम्बरदिनपर्यन्तं आरानगरे मंगलः प्रवासः विशेषधर्मप्रभावनया सह आसीत्। प्रतिजनं कुण्डलपुरं प्रति एकाग्रं कुर्वन् पूर्णोऽभवत्। हरप्रसाद जैन विद्यालये, आरानगरस्य प्रांगणे षड्दिवसीया धर्मामृतस्य वर्षा आरा निवासिभिः दीर्घसमयपर्यन्तं स्मृता भविष्यति। 10 दिसम्बर दिने प्रातःकाले महतो जनसमूहस्य मध्ये प्रति प्रतोली गुंजायमानां कुर्वन्ती भव्या स्वागतयात्रा निर्गताभवत्, सम्पूर्णे समाजेऽत्यन्तमेवोत्साहः आसीत्, सम्पूर्णे नगरे स्थाने–स्थाने अनेकानि तोरणद्वाराणि, वस्त्रनिर्मितपट्टानि संलग्नान्यासन्। मध्याह्ने 2 वादन समये ''धर्मस्य महासभा'' नाम्नः विशालायाः प्रवचनसभायाः आयोजनमभवत्। प्रतिदिनं प्रवचनानां माध्यमेन जिनेन्द्रभक्तिः, ध्यानं, तीर्थदर्शनं, तीर्थोद्धारः इत्यादीनां विविधानां विषयाणां ज्ञानं जनसमूहं नवीनया चेतनया समन्वितमकरोत्।**

सरस्वतीसमायै ज्ञानमत्यै प्रदत्ता ''वाग्देवीति'' उपाधिः–**15 दिसम्बर 2002 दिने दिल्ली नगरात् अनेकेभ्यश्च स्थानेभ्यः समागतानां जनानां मध्ये कुण्डलपुरविकाससम्बद्धैका महत्वपूर्णा सभा कर्मयोगिन श्री रवीन्द्र कुमारस्याध्यक्षतायां सम्पन्नाभवत्। यस्यां मध्ये कुण्डलपुर–पंचकल्याणकप्रतिष्ठायां भवितुं प्रस्तावितयो सौधर्मेन्द्रेण्योः श्रीदीपक जैनस्य तस्य धर्मपत्न्याः**

जाकर पूज्य माताजी से मंत्र लेकर आए थे और उस मंत्र जाप्य के प्रभाव से प्रतिमा जी वापस मिल गईं। इसीलिए माताजी के उसी मंदिर में आगमन पर सभी लोग विशेष प्रसन्न हुए।

➢धर्मनगरी आरा हो उठी कुण्डलपुरमय–

कुण्डलपुर (नालंदा) की ओर मंगल विहार करते हुए संघ का 10 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2002 तक आरा शहर में मंगल प्रवास विशेष धर्मप्रभावना सहित जन-जन को कुण्डलपुर के साथ एकाकार करते हुए पूर्ण हुआ। हरप्रसाद दास जैन विद्यालय, आरा के प्रांगण में षड्दिवसीय धर्मामृत की वर्षा आरावासियों को लम्बे समय तक स्मरण रहेगी। 10 दिसम्बर को प्रातःकाल भारी जनसमूह के मध्य गली-गली को गुंजायमान कर देने वाली भव्य स्वागत यात्रा निकली, सारी समाज में अत्यन्त उत्साह था, पूरे शहर में स्थान-स्थान पर अनेक तोरणद्वार, बैनर आदि लगाए गए थे। मध्यान्ह 2 बजे 'धर्म की महासभा' नाम से विशाल प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। प्रतिदिन प्रवचनों के माध्यम से जिनेन्द्रभक्ति, ध्यान, तीर्थदर्शन, तीर्थोद्धार इत्यादि विविध विषयों के ज्ञान ने जनसमूह को नवीन चेतना से समन्वित किया।

➢सरस्वती सम माता ज्ञानमती जी को दी ''वाग्देवी'' की उपाधि–

15 दिसम्बर 2002 को दिल्ली एवं अनेक स्थानों से पधारे प्रतिनिधियों के मध्य कुण्डलपुर विकास संबंधी एक महत्त्वपूर्ण बैठक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसके मध्य कुण्डलपुर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में बनने वाले सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री दीपक जैन एवं

मातुः–पितुः पुत्रस्य–पुत्र्याश्च कुण्डलपुर दि. जैन समितेः पक्षतः विशेषः सम्मानः कृतः। अस्याः एव सभायाः मध्ये सम्पूर्णः आरा जैन समाजः पूज्यायै गणिन्यै ज्ञानमत्यै मात्रे ''वाग्देवीति'' उपाधिं प्रदाय स्वात्मानं सौभाग्यशालिनममन्यत्।

नाम्ना अद्भुता साम्यता दृष्टाभवत्–**13 दिसम्बर 2002 दिने 11 वादने आरा नगरस्य प्रमुखस्य श्रेष्ठिनः श्री हरखेनकुमारस्य सुपुत्रः कृष्णकुमारः आगच्छत् सः च मातरं स्वन्यासेन संचालितानामनेकधार्मिक संस्थानां विषयेऽकथयत्। यत् अहं स्वमातुर्मोहिन्याः देव्याः नामनि विद्यालयस्य निर्माणकार्यमारंभे तस्मै च भवत्याः आशीर्वादमिच्छामि। पूज्या माता दिने 4 वादन समये मां क्षुल्लकमोतीसागरं च तत्रगन्तुमाज्ञापयत्, वयमपश्याम यत् महान् दीर्घो विद्यालयः प्रायः निर्मितमासीत् कृष्णकुमारस्य चेच्छा वर्तते ज्येष्ठमातुरपि चरणान्यत्र पतन्तु, अहं तस्याः नाम्नः शिलालेखं संलग्नं करिष्यामि, तस्याः गोत्रमपि गोयलः अस्ति मातुश्च जन्म गोत्रमपि गोयलः अस्ति, मातुर्नामापि मोहिनी देव्यासीत्। पूर्वस्मात् सः ज्ञानस्थली नाम्नामेकां शिक्षणसंस्थां संचलितां करोति। अधुना नाम्नः जातेश्च समानताकारणेन सः बहुआत्मीयतामन्वभवत्। तस्य च निवेदने माताश्रीः 15 दिसम्बर दिने तत्र गन्तुं स्वीकृतिं प्रादात्। प्रातःकाले माताश्रीः ''मातामोहिनी कन्याविद्यालयमगच्छत्'' तत्र यंत्रस्य स्थापनामकरोत् शिलालेखस्थानादनावरणं चापहरत्। स्व निवेदनस्य स्वीकृतिं वीक्ष्य श्रावकरत्नं श्री कृष्णकुमारः प्रफुल्लवत् प्रसन्नोऽभवत्। अग्रेऽपि तस्य सुपुत्रः श्री कमलकुमारः सौभाग्यवती अनुपमा च**

उनकी धर्मपत्नी सहित उनके माता-पिता तथा पुत्र-पुत्री का कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति की ओर से विशेष सम्मान किया गया। इसी बैठक के मध्य सम्पूर्ण आरा जैन समाज ने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी को ''वाग्देवी'' की उपाधि प्रदान करते हुए अपने को सौभाग्यशाली माना।

➢नाम की अद्भुत साम्यता देखी–

13 दिसम्बर को 11 बजे आरा शहर के प्रमुख श्रेष्ठी श्री हरखेन कुमार जैन के सुपुत्र कृष्ण कुमार जैन आए और उन्होंने पूज्य माताजी से अपने ट्रस्ट द्वारा संचालित अनेक धार्मिक संस्थाओं के बारे में बताते हुए कहा कि मैंने अपनी माँ मोहिनी के नाम पर विद्यालय का निर्माण कार्य प्रारंभ किया है और उसमें आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। माताजी ने दिन में 4 बजे मुझे और मोतीसागर जी को वहाँ भेजा, तो हमने देखा कि बहुत बड़ा विद्यालय लगभग बन चुका है और कृष्णकुमार जी की इच्छा है कि बड़ी माताजी के चरण भी यहाँ पड़ें, मैं उनके नाम का शिलालेख यहाँ लगाऊँ, उनका गोत्र भी गोयल है और माताजी का जन्म गोत्र भी गोयल है, माताजी की माँ का नाम भी मोहिनी देवी था और कृष्ण कुमार की माँ का नाम भी मोहिनी देवी था। पहले से ये ज्ञानस्थली नाम से एक शिक्षण संस्था चला रहे हैं अब नाम, गोत्र आदि सब एक जैसा होने से उन्हें बहुत आत्मीयता जुड़ गई है अतः उनके निवेदन पर माताजी ने 15 दिसम्बर को वहाँ पधारने की स्वीकृति प्रदान की, प्रातःकाल माताजी ''माता मोहिनी कन्या विद्यालय'' गईं, वहाँ यंत्र स्थापित किया और शिलालेख का अनावरण भी हुआ। अपने निवेदन को स्वीकृत हुआ देखकर श्रावकरत्न श्री कृष्ण कुमार जी फूले

पूज्यमातुरनन्यभक्तरूपेण कुण्डलपुरेण सह स्वात्मीयतया युक्तोऽभवत्, सा वास्तवे प्रशंसनीयः एवासीत्।

बाहुबलिनो महामस्तकाभिषेकमवलोक्य मनः प्रफुल्लवत् प्रफुल्लितमभवत्–**आरा नगरात् विहृत्य सर्वप्रथमं वयं मात्रा सह जैनसिद्धान्तभवनमपश्याम, यत्र डा. राजारामेण सह साक्षात्कारोऽभवत्। काश्चिच्च सामयिक चर्चाः अप्यभवन्। पुनः जैन बाला विश्रामं (चन्दाबाई आश्रमम्) आगच्छन्, यत्र विद्यालयस्य बालिकाः स्वागतार्थं अवस्थिताः आसन्। तत्र बाहुबलिनो दर्शनमकुर्म, तस्य भव्य पंचामृताभिषेकमवलोक्य मनः प्रसन्नमभवत्। बाला विश्रामस्य सम्मुखे राजमार्गं पतिक्रम्या द्वे जिनमन्दिरे स्तः, तयोर्दर्शनमकुर्म। सहस्रकूटपार्श्वनाथस्य च अतिसुन्दरप्रतिमानां दर्शनमकुर्म, अभिषेकं चापश्याम।**

मध्याह्ने शताधिक छात्राभ्यः मंगलोद्बोधनं प्रदानं कुर्वतः संघस्य पटना नगरं प्रति मंगल प्रस्थानमभवत्।

पटना नगरे ज्ञानामृतस्य वर्षा–**13 दिसम्बर 2002 दिने आरानगरे पटनानगरस्य वरिष्ठः कार्यकर्तारः श्री रामगोपालः श्री अजयादयोऽनेक गण्यमान्याः महानुभावाः पटना नगरे पदार्पणाय पूज्यमात्रे श्रीफलं समर्पयन्, तेषां चाग्रहेण माता संघ सहिता 19 दिसम्बर दिने पटनानगरे मंगलप्रवेशमकरोत्। 4 दिवसीयेऽस्मिन् प्रवासे संघसान्निध्यस्य लाभः पटना वासिभ्यो महतः सौभाग्यस्य सूचको भूत्वा अवतरितोऽभवत्, यदा पूज्यमातुर्मुखारविन्देन**

नहीं समाये। आगे भी उनके सुपुत्र कमल कुमार एवं सौ. अनुपमा पूज्य माताजी के अनन्य भक्त के रूप में कुण्डलपुर के साथ जिस आत्मीयता से जुड़े, वह वास्तव में सराहनीय है।

➢बाहुबली मस्तकाभिषेक देखकर मन फूला नहीं समाया–

आरा शहर से विहार करके सर्वप्रथम हमने पूज्य माताजी के साथ जैन सिद्धान्त भवन देखा, जहाँ डॉ. राजाराम जी से भेंट हुई एवं कुछ सामयिक चर्चाएं भी हुईं। पुनः जैन बाला विश्राम (चंदाबाई आश्रम) पहुँचे, जहाँ स्कूल की बालिकाएँ स्वागत के लिए खड़ी थीं। वहाँ भगवान बाहुबली का दर्शन एवं भव्य पंचामृत अभिषेक देखकर मन फूला नहीं समाया। बाला विश्राम के सामने सड़क पार करके दो जिनमंदिर हैं, उनके दर्शन किए तथा सहस्रकूट, पार्श्वनाथ आदि की बड़ी-बड़ी सुन्दर प्रतिमाओं के दर्शन किए और अभिषेक भी देखा।

मध्यान्ह में सैकड़ों छात्राओं के लिए मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए संघ ने पटना की ओर मंगल प्रस्थान किया।

➢पटना शहर में ज्ञानामृत की वर्षा–

13 दिसम्बर 2002 को आरा शहर में पटना के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामगोपाल जी, अजय जी आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने पटना पदार्पण के लिए पूज्य माताजी को श्रीफल चढ़ाया, उनके आग्रह पर माताजी ने संघ सहित 19 दिसम्बर को पटना में मंगल प्रवेश किया। 4 दिवसीय इस प्रवास में संघ सानिध्य का लाभ पटनावासियों के लिए महान सौभाग्य का सूचक बनकर

ज्ञानामृतस्य वर्षा समस्तजैनसमाजं सिक्तमकरोत्। 19, 20 दिसम्बर दिने दिगम्बर जैन मन्दिर–मीठापुरस्य प्रवासे प्रवचन सभाभिः सह ध्यानसाधनायाः आयोजनमभवत् मध्याह्ने च एकवादन समयात् मन्दिरे सहस्राष्ट अर्घ्यैः समन्वितं वीरगुणसंपद् विधानमभवत्। तस्यैव मध्ये प्रवर्तमानेन वक्तव्येन जनसमूहः मातुर्मुखारविन्देन कुण्डलपुरस्य महत्वमजानात्। 21, 22 दिसम्बर 2002 दिने जैनभवने, कांग्रेस–प्रांगण–कदमकुंआ स्थाने संघस्य प्रवासोऽभवत्, यत्र 22 दिसम्बर दिने मातुः पावने सान्निध्ये दश दिवसीयस्य शिक्षण शिविरस्य विधिवदुद्घाटनमप्यभवत्।

माताश्रीः यस्मात् दिनात् पटना नगरे मंगल पादार्पणमकरोत्, तस्मात् दिनादेव बिहार दिगम्बर जैन तीर्थन्यास संस्थायाः अध्यक्षः श्री रामगोपाल जैनः सम्पूर्णे दिने संघस्य सेवायां संलग्नः आसीत्, यदा तत्र जना अकथयन् यत् सः कदापि केनापि साधुना सह न संलग्नोऽभूत्। यद्यपि पटनानगरस्य जनेषु वैशाल्या संस्कारा अधिकाः आसन् किन्तु त्रयाणां दिनानामन्तर्गतं पूज्या माता वयं च प्रवचनैः सर्वे वास्तविकतामजानन् तेषां च हृदयेषु कुण्डलपुरं प्रति सहयोगस्य भावनापि वृद्धिंगता अभवत्।

सिद्धक्षेत्रस्य गुलजारबागस्य दर्शनमकुर्म–**पटना नगरात् विहारं विधाय 7 किलोमीटर दूरे सिद्धक्षेत्रे गुलजारबागे मंगल पादार्पणमभवत्। श्रेष्ठिनः सुदर्शनस्य निर्वाणभूमेर्नाम्ना विख्यातमिदं स्थलं कदाचित् दिगम्बर जैन धर्मावलम्बिनां पूज्यं पवित्रं तीर्थमासीत्,**

अवतरित हुआ, जब पूज्य माताजी के मुखारविंद से हुई ज्ञानामृत की वर्षा ने समस्त जैन समाज को सराबोर कर दिया। 19 व 20 दिसम्बर को दिगम्बर जैन मंदिर मीठापुर के प्रवास में प्रवचन सभाओं के अतिरिक्त ध्यान साधना का आयोजन हुआ तथा दिन में 1 बजे से मंदिर जी में 1008 अर्घ्य से समन्वित वीरगुणसंपद् विधान हुआ। उसी के मध्य हुए वक्तव्य से जनसमूह ने माताजी के मुखारविंद से कुण्डलपुर के महत्व को जाना। 21 व 22 दिसम्बर 2002 को जैनभवन, कांग्रेस मैदान-कदमकुंआ में संघ का प्रवास रहा, जहाँ 22 दिसम्बर को माताजी के पावन सानिध्य में दश दिवसीय शिक्षण शिविर का विधिवत् उद्घाटन भी सम्पन्न हुआ।

पूज्य माताजी ने जिस दिन से पटना में मंगल पदार्पण किया, तब से बिहार दिगम्बर जैन तीर्थ न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी पूरा दिन संघ की सेवा में लगे रहते थे जबकि यहाँ के लोगों ने बताया कि ये इस प्रकार कभी किसी साधु के साथ नहीं लगे हैं। वैसे पटना के लोगों में वैशाली के संस्कार कुछ ज्यादा थे किन्तु तीन दिनों के अन्तर्गत पूज्य माताजी एवं हम लोगों के प्रवचन से सभी को वास्तविकता समझ में आई और उनके हृदय में कुण्डलपुर के प्रति सहयोग की भावनाएँ भी वृद्धिंगत हुईं।

➢सिद्धक्षेत्र गुलजारबाग के दर्शन किए–

पटना से विहार कर 7 किमी. दूर सिद्धक्षेत्र गुलजारबाग में मंगल पदार्पण हुआ। सेठ सुदर्शन की निर्वाणभूमि के नाम से विख्यात यह स्थल कभी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों का पूज्य पवित्र

परन्तु वर्तमाने कालदोषवशात् समाजस्योपेक्षया सः अधुना केवलं दर्शनायैवोपलब्धमस्ति। दिगम्बर जैन धर्मशालायां स्थितस्य भगवतो नेमिनाथजिनमंदिरस्य दर्शनं कृत्वा उपस्थिताय जैनसमूहायाय मातुश्री स्वमंगल–आशीर्वादं प्रादात्। मध्याह्ने 3 वादन समये वयं प्राचीन पटनानगरमागच्छाम, तत्र चत्वारि दिगम्बर जैन मन्दिराणि विद्यन्ते परन्तु 5–7 जैनगृहाणां स्थित्या तेषां मन्दिराणां दशा चिन्तनीया विद्यते। तत्र जनाः अकथयन् यत् प्राचीनसमये कदाचित्तत्र 500 जैनानां गृहाण्यासन् किन्तु शनैः–शनैः जनानां बहिर्गमनात् अधुना पटना नगरे धर्मरुचिर्हीनावर्तते।

एतच्छ्रुत्वा मनसि महत् दुःखमभवत् यत् जिनसंस्कृतेरमीषां धरोहराणां दिगम्बरजैन–समाजो यदि रक्षां न करिष्यति, तु पुनः अराजकतत्त्वानि स्वाधिकारं करिष्यन्ति, वस्तुतोऽधुना दिगम्बर जैन समाजस्य जागृतो भवितुं महत्यावश्यकता वर्तते।

नन्द्यावर्तं महानभवत् मातः! तव कृपया (स्वप्नो दृष्टमभवत् तीर्थस्य साकाररूपम्)–''**शास्त्र–पुराणेषु वर्णनं लभ्यते यत् ''स्वस्थावस्थायां दृष्टः स्वप्नः उचितं फलं प्रददाति'' पुनरधुनात्वस्माकं मनःसु सदा स्थितोत्थितायामवस्थायां कुण्डलपुर तीर्थविकासस्यैवेच्छासीत्। 26 दिसम्बर दिनांकस्य रात्रौ, यदा वयं स्वगन्तव्यात् किञ्चिद् दूरमास्म, रात्रौ 3 वादनेऽहं स्वप्नेऽपश्यम यदेकस्मिन् वृहति पाण्डाले प्रचुरा पूजा भक्तिश्च संपद्यते तस्यैव मध्ये वाद्यानां वादनस्य प्रतियोगिता आयोज्यमाना विद्यते, ते सर्वे जनाः वेणुं, मृदंगं, मंजीरकं,**

तीर्थ था परन्तु वर्तमान में कालदोषवश अथवा समाज की सुप्ततावश वह अपने लिए केवल दर्शन हेतु उपलब्ध रहता है। दिगम्बर जैन धर्मशाला में स्थित भगवान नेमिनाथ जिनमंदिर के दर्शन कर उपस्थित जनसमुदाय को पूज्य माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मध्यान्ह 3 बजे हम लोग पुरानी पटना सिटी में गए, वहाँ 4 दिगम्बर जैन मंदिर हैं किन्तु जैन घर केवल 5-7 होने से उन मंदिरों की स्थिति नाजुक है। वहाँ के लोगों ने बताया कि पहले कभी यहाँ 500 जैन घर थे किन्तु धीरे-धीरे लोगों के बाहर चले जाने से अब पटना सिटी में धर्मरुचि बहुत कम हो गई है।

यह सुनकर मन में बड़ा दुख हुआ कि जिनसंस्कृति की इन अमिट धरोहरों की दिगम्बर जैन समाज अगर देखरेख नहीं करेगा, तो एक न एक दिन फिर कोई अराजक तत्त्व इन पर अपना कब्जा जमा लेंगे, वस्तुतः अभी दिगम्बर जैन समाज के जागृत होने की अत्यधिक आवश्यकता है।

➢बना नंद्यावर्त महान हे माता तेरी कृपा से (स्वप्न में दिखा तीर्थ का साकाररूप)–

शास्त्र पुराणों में वर्णन आता है कि स्वस्थ अवस्था में देखा गया स्वप्न उचित फल को प्रदान करता है।'' फिर इस समय तो हम सभी के मन में उठते-बैठते कुण्डलपुर तीर्थ विकास की ही धुन रहती थी। 26 दिसम्बर की रात्रि, जब हम अपनी मंजिल से कुछ ही दूर पर थे, रात्रि में 3 बजे मैंने स्वप्न में देखा कि एक बहुत बड़े पाण्डाल में खूब पूजा-भक्ति हो रही है और उसी के मध्य वाद्य यंत्र बजाने की प्रतियोगिता चल रही है, तो सब लोग बांसुरी, ढपली, मंजीरा, बैण्ड आदि बजा रहे हैं,

बैण्डं आदीनि वादने तत्पराः सन्ति, तस्मिन्नेव वाराणस्याः श्री रिसबदासस्य पुत्रवधूः सुभाषिणी धर्मपत्नी दीपको जैनः स्व पुत्र्यै स्तुतये एकं भजनं विलिख्य प्रेषितमकरोत् तु सा वादयन्ती, गायन्ती, चलन्ती च सहसा पृष्ठभागात् अग्रभागपर्यन्तमागच्छत् मातुश्चोत्संगे शिरो निधाय भावविह्वला भूत्वावदत्।

कुमारी स्तुति यद्गीतमगायत्, तस्य पूर्णाः शब्दास्तु अहं न स्मरामि किन्तु भावाः आसन् यत् मातः! वयं तु भवत्यैव धर्ममार्गं ज्ञानं च प्राप्नुम, भवती अस्मान्न परित्यजत्। तस्य भजनस्यैकां कर्णप्रियां पंक्तिमहमवश्यमेव स्मरामि–''निर्मितं नन्द्यावर्तं महत्, मातः ! तव कृपया।'' **अहं तत्कालमिमं स्वप्नं मातरं रात्रावेव 3 वादन समयेऽकथयम्, तं श्रुत्वा मातापि प्रसन्नाभवत्।**

यथार्थ अनेनैवं प्रकारेण तीर्थस्य साकारत्वं प्रकाशयन् स्वप्नोऽहं 28 दिसम्बर दिने रात्रौ अपश्यम् यत् कुण्डलपुरे चलन्तीं मां चरणाहतिरभवत् पाषाणखण्डं च उत्थाप्यैव पृथिव्याः एका रजतप्रतिमा निर्गता, पुनश्च पीतल–धातोः 5–6 प्रतिमाः निरगच्छन् ताश्च प्रतिमाः अहं तत्कालमेवोत्थापिताः अकरवम्। प्रातः उत्थायैव मनसि महती प्रसन्नताभवत् अहं च पूज्यां मातरमकथयं तु साकथयत् यत् एते स्वप्नाः तीर्थस्य विकसितं स्वरूपं 2600 वर्षाणां च पुनर्जीविन्तमितिहासं सूचयन्ति।

अतिशयकारिण्यस्ति प्रयागस्य भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमा–**प्रयागतीर्थे मंगलचतुर्मासस्यानन्तरं 10 नवम्बर 2002 दिने यदा माताश्रीः कुण्डलपुरं प्रति विहारमकरोत् तदा विहारकाले**

उसी में वाराणसी निवासी सेठ रिसबदास जी की पुत्रवधू (दीपक जी की धर्मपत्नी) श्रीमती सुभाषिनी ने अपनी बेटी स्तुति को एक भजन लिखकर भेजा, तो वह बजाती, गाती और नाचती हुई एकदम पीछे से आगे तक आ गई और माताजी की गोद में सिर रखकर भावविह्वल हो बोलने लगी।

कु. स्तुति ने जो गीत गाया, उसके पूरे शब्द तो मुझे याद नहीं हैं किन्तु भाव थे कि माता! हम लोगों ने तो आपके द्वारा ही धर्ममार्ग और ज्ञान प्राप्त किया है और आप अब हमें मत छोड़ना। उस भजन की एक कर्णप्रिय पंक्ति मुझे अवश्य याद रही– **''बना नंद्यावर्त महान, हे माता! तेरी कृपा से।''** मैंने तुरंत यह सपना माताजी से 3 बजे रात्रि में ही बताया, तो उसे सुनकर माताजी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

ठीक इसी प्रकार का तीर्थ के साकाररूप को प्रदर्शित करता स्वप्न मैंने 28 दिसम्बर को रात्रि में देखा कि कुण्डलपुर में चलते-चलते मुझे ठोकर लगी और कंकर उठाते ही धरती से एक चांदी की प्रतिमा निकल पड़ी, पुनः 5-6 पीतल धातु की प्रतिमाएँ निकल पड़ीं और उन प्रतिमाओं को मैंने जल्दी से उठा लिया है। सुबह उठते ही मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और मैंने पूज्य माताजी को बताया तो उन्होंने कहा कि ये स्वप्न तीर्थ के विकसित स्वरूप और 2600 वर्षों के पुनः जीवन्त होते इतिहास को सूचित कर रहे हैं।

➢अतिशयकारी है प्रयाग के भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा–

प्रयाग तीर्थ में मंगल चातुर्मास के अनन्तर 10 नवम्बर 2002 को जब माताजी ने कुण्डलपुर

अकस्मात् कैलासपर्वते विराजमान भगवतो ऋषभदेवस्य चरणयोर्नमनसमये पूज्यमातुर्मुखात् शब्दोत्पन्नोऽभवत् यत् भगवन्! अहं न किंचित् इच्छामि किन्तु भवत् पौत्रस्यैवोत्सवं विधातु–मिच्छामि, इदानीं मम पतवारः भवतः एव हस्तेऽस्ति। वास्तवे वार्ता इयमासीत्, यत् तेषु दिनेषु रवीन्द्रो भ्राता चिन्तितः आसीत् यत् माताश्रीः फरवरी 2003 मासे कुण्डलपुरे पंचकल्याणक प्रतिष्ठां महामस्तकाभिषेकस्य महोत्सवमघोषयत्, किन्तु तत्राहमधुनापर्यन्तं किमपि निर्माणं कर्तुं समर्थो नाभवम्, तु 2–3 मासेषु फरवरी मासे पञ्चकल्याणकं केन प्रकारेण संभविष्यति? सः पुनः पुनः मातरं तिथिं वर्धयितुमाग्रहमकरोत् किन्तु माताऽकथयत् यस्तिथिर्घोषितोऽभवत् तां न वारय। पुनः मातापि किंचिद् आकुलताभवत् यत् सर्वं एतावच्छीघ्रं कथं भविष्यति?

किन्तु अयं प्रयागस्य भगवतोऽतिशय एवासीत् यत् प्रयागान्निर्गत्य वाराणस्यां पदार्पणकाले एवं एकमात्रं प्रेरणया कुण्डलपुरस्य महोत्सवे सौधर्मेन्द्रो भवितुं दीपककुमारो जैनो वाराणसी तत्परोऽभवत्, यथा–यथा च संघोऽग्रेऽगच्छत् तथा–तथा वाराणस्याः, आरानगरस्य पटना नगरस्य सर्वे जनाः कुण्डलपुरेण सह युक्ताः अभवन्। अनेन प्रकारेण भक्तानां विशालेन समूहेन सह 29 दिसम्बर 2002 दिने पूज्यायाः मातुरस्माकं सर्वेषां च संघेन सह मंगल पादार्पणं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरेऽभवत् प्रभोश्च दर्शनं कृत्वा वयं सर्वे स्वात्मनो धन्याः अमन्यामहे।

की ओर मंगल विहार किया, उस समय विहार करते समय अचानक कैलाशपर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव के चरणों में नमन करते हुए पूज्य माताजी के मुँह से निकल गया कि हे भगवन्! मैं और कुछ नहीं अपितु आपके पोते का ही उत्सव करने जा रही हूँ, अब मेरी पतवार आपके हाथ में है।'' दरअसल बात यह थी, उन दिनों रवीन्द्र जी चिंतित रहते थे कि माताजी ने फरवरी 2003 में कुण्डलपुर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और मस्तकाभिषेक महोत्सव घोषित कर दिया है किन्तु वहाँ अभी मैं कोई निर्माण ही प्रारंभ नहीं कर पाया हूँ, तो दो-तीन माह के अन्दर फरवरी में महोत्सव कैसे संभव हो पाएगा? उन्होंने पूज्य माताजी से बार-बार तारीख बढ़ाने का आग्रह किया किन्तु माताजी ने कहा कि जो तारीख घोषित हो गई है, उसे मत टालो। पुनः माताजी को भी किंचित् आकुलता हुई कि सब कुछ इतनी जल्दी कैसे हो पाएगा?

लेकिन शायद प्रयाग के भगवान ऋषभदेव का अतिशय ही था कि प्रयाग से निकलकर बनारस पहुँचते ही एकमात्र प्रेरणा पर कुण्डलपुर के महोत्सव में सौधर्म इन्द्र बनने हेतु श्री दीपक कुमार जैन (वाराणसी) तैयार हो गये और ज्यों-ज्यों संघ आगे बढ़ा,त्यों-त्यों बनारस, आरा-पटना सभी स्थान के लोग कुण्डलपुर के साथ जुड़ते चले गए। इस प्रकार भक्तों के विशाल समूह के साथ 29 दिसम्बर 2002 को पूज्य माताजी एवं हम सभी का संघ सहित मंगल पदार्पण भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में हो गया और प्रभु के दर्शन कर हम सभी ने अपने को धन्य माना।

एकस्याः यात्रायाः सुखदा पूर्णता–**जिनशासनपतेर्भगवतो महावीरस्य छत्रछायायां वयं भवन्तश्च स्थित्वा धर्मस्य निराबाधं पालनं कुर्वन्तः संसार भ्रमणस्य समाप्तये अग्रेसराः भवामः, तस्य जन्मभूमेश्चरणरजो मस्तके धारणं, साक्षात्रूपेण तत्रागमनं, एकः स्वप्नःइवासीत् किन्तु मातुः सदृश्यै दिव्यशक्तये किमपि कार्यमसंभवं न विद्यते। तदैव तु एतावती कठिना यात्रा सुखदपूर्णतया सह सम्पन्नाभवत्। पदे–पदे धर्मस्य शंखनादं कुर्वन्त्यः 1300 किलोमीटर मार्गं पूर्णां विधाय हृदयेऽपूर्वोल्लासेनानन्देन च सह पूज्यया मात्रा समस्तेन संघेन च सह यदा वयं 29 दिसम्बर 2002 दिने भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे नालन्दा समीपस्थे प्रवेशमकुर्म, तु पंचाशत् वर्षाणां पश्चात् अस्यां भूमौ आयोजिता शोभायात्रा चतस्रः दिशः भगवतो महावीरस्य जयकारैः गुंजिताः कुर्वन्त्यः 2600 वर्षाणां पूर्वस्येतिहासं साकारं विधातुमैतिहासिकं प्रयासमकुर्म।**

राजधान्याः दिल्लीनगर्याः, वाराणस्याः, आरा–पटना–कोडरमा–इलाहाबाद, महाराष्ट्रादितः समागताः अतिथयः स्थानीयस्यग्रामवासिनः अपूर्वेणोत्साहेन शोभायात्रायां धर्मसभायां च भागमगृह्णन्। नालन्दा स्थितात् श्वेताम्बर मन्दिरात् प्रारब्धा भूत्वा शोभायात्रा मध्याह्ने प्रायः 1.30 वादने कुण्डलपुरावस्थिते प्राचीनमहावीरजैनमन्दिरमागच्छत्, तत्रत्याः पदाधिकारिणः श्री अजय जैन आरानगरस्य संघस्य स्वागतमकरोत्। मन्दिरं प्रविश्य भगवतो महावीरस्य दर्शनं कृत्वा पूज्यामाता 20 फरवरी दिने राजधान्या दिल्लीनगर्याः प्रारब्धायाः

➢**एक ऐतिहासिक यात्रा की सुखद पूर्णता–**

जिन शासनपति भगवान महावीर की छत्रछाया में हम और आप रहकर धर्म का निराबाध पालन करते हुए संसार भ्रमण को समाप्त करने हेतु अग्रसर हैं, उनकी जन्मभूमि की चरण रज मस्तक पर लगाना, साक्षात् रूप में वहाँ पहुँचना, एक स्वप्न की भाँति ही था किन्तु पूज्य माताजी जैसी दैवी शक्ति के लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है। तभी तो इतनी कठिन यात्रा सुखद पूर्णता के साथ सम्पन्न हो गई। पग-पग करके धर्म का अलख जगाते हुए, 1300 किमी. की दूरी तय करके हृदय में अपूर्व उल्लास एवं आनन्द के साथ पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के साथ जब हमने 29 दिसम्बर 2002 को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में प्रवेश किया, तो 50 वर्षों के पश्चात् इस भूमि पर आयोजित जुलूस ने चारों दिशाओं को भगवान महावीर की जयकारों से गुंजायमान करते हुए 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास को साकार करने का ऐतिहासिक प्रयास किया।

राजधानी दिल्ली, वाराणसी, आरा, पटना, कोडरमा, इलाहाबाद, महाराष्ट्र आदि विविध अंचलों से पधारे भक्तों के अतिरिक्त सैकड़ों स्थानीय ग्रामवासियों ने अपूर्व उत्साह के साथ शोभायात्रा एवं धर्मसभा में भाग लिया। नालंदा स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर से प्रारंभ होकर जुलूस मध्यान्ह लगभग 1.30 बजे कुण्डलपुर अवस्थित प्राचीन भगवान महावीर मंदिर में पहुँचा, वहाँ के पदाधिकारियों श्री अजय जी-आरा आदि ने संघ का स्वागत किया, मंदिर जी में प्रवेश कर भगवान महावीर का दर्शन करके पूज्य माताजी ने 20 फरवरी को राजधानी दिल्ली से प्रारंभ यात्रा

यात्रायाः सकुशल–सुखदायाः यात्रायाः पूर्णतायां विशेषमान्तरिकमानन्दं प्रसन्नतां चान्वभवत्।

तत्पश्चात् पुरातन मन्दिरस्य समक्षं नवनिर्माणाय क्रीतायां भूमौ आयोजितायां धर्मसभायां स्थानीय प्राध्यापकः श्री विजयकुमारः शर्मा सर्वेषामेव कुण्डलपुरवासिना पक्षतो जैन समाजामेवं विश्वासमदात् यत् पूज्यया मात्रोत्थापितं प्रत्येक पदं वयं शिरोमस्तकेषु गृहीस्यामः। पूर्व शिक्षामंत्री विहार शासनं श्री तरुण जैनः अकथयत् यत् पूज्यमातुरागमनेन सम्पूर्णः विवादः एव समाप्तोऽभवत् यतो मातैव सन्तानं वास्तविकतायाः बोधं कारयति। बिहारतीर्थक्षेत्रस्य समितेर्मन्त्री श्री अजय कुमारो जैनः पूज्यया मात्रा कुण्डलपुरस्य बिकासस्य संकल्पस्य पुनः पुनः प्रशंसामकरोत्। सोऽकथयत् यत् पंचाशत् वर्षाणि पूर्वं वैशालीं जन्मभूमिरूपेण प्रचारितं कर्तुमारम्भमभवत्, परन्तु 95 प्रतिशतं जनतायाः श्रद्धा कुण्डलपुरेणैव युक्ता विद्यते अद्याप्यस्ति। मातुः कुण्डलपुरे मंगलप्रवेशस्य पावनवेलायां श्रद्धालुजनैः पर्याप्ता रत्नवृष्टिः कृता रात्रौ च शताष्ट दीपकैः मंगल आरतिका निवृताः।

वस्तुतोऽत्यन्त शुभे उल्लासपूर्णे च वातावरणे भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः एको नूतनः पृष्ठः आरम्भोऽभवत्, यस्य च भविष्यमत्यन्तमुज्ज्वलमस्ति।

कुण्डलपुर विकासस्य प्रारम्भिकचरणानि–**कुण्डलपुरे संघस्य पदार्पणकाले एव उत्तर मुखे क्रीतायां भूमौ भगवतो महावीरस्य मन्दिरस्य शिलान्यासः पूज्यायाः मातुः संघ सान्निध्ये संपन्नोऽभवत् श्री दीपको जैनो वाराणसी निवासी (सपत्नीकः) 29 दिसम्बर दिनेऽकरोत्। शिलान्यासं विधाय यथैव माताश्री अग्रे अवर्धत्, तु समक्षमेव सुसज्जितो गजो दृष्टोऽभवत्।**

की सकुशल सुखद पूर्णता पर विशेष आंतरिक आल्हाद एवं प्रसन्नता का अनुभव किया।

तत्पश्चात् पुराने मंदिर के समक्ष नवीन निर्माण के लिए क्रय की गई भूमि पर आयोजित धर्मसभा में स्थानीय प्रो. विजय कुमार शर्मा ने सभी कुण्डलपुरवासियों की ओर से जैन समाज को यह विश्वास दिलाया कि पूज्य माताजी द्वारा उठाये गए हर कदम को हम सिर-माथे पर लेंगे। पूर्व शिक्षा मंत्री (बिहार सरकार) श्री तरुण जी ने कहा कि पूज्य माताजी के आने से तो सारा विवाद ही समाप्त हो गया है क्योंकि माता ही संतान को वास्तविकता का बोध कराती है। बिहार तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय कुमार जैन ने जन्मभूमि के रूप में पूज्य माताजी द्वारा कुण्डलपुर के विकास के संकल्प की पुरजोर प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 50 वर्ष पूर्व वैशाली को जन्मभूमि के रूप में प्रचारित करना प्रारंभ किया गया, पर 95 प्रतिशत जनता की श्रद्धा कुण्डलपुर (नालंदा) के साथ ही जुड़ी रही और आज भी जुड़ी है। पूज्य माताजी के कुण्डलपुर मंगल प्रवेश की पावन बेला में भक्तों द्वारा खूब रत्नवृष्टि की गई एवं रात्रि में 108 दीपकों से भगवान महावीर की मंगल आरती सम्पन्न की गई।

वस्तुतः अत्यन्त शुभ एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में भगवान महावीर जन्मभूमि का एक नूतन पृष्ठ प्रारंभ हुआ, जिसका भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल रहा।

➢कुण्डलपुर विकास के प्रारंभिक चरण–

कुण्डलपुर में संघ का मंगल पदार्पण होते ही उत्तरमुखी नूतन क्रीत भूमि पर भगवान महावीर मंदिर का शिलान्यास पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में श्री दीपक जैन-वाराणसी (सपत्नीक) ने 29 दिसम्बर 2002 को किया। शिलान्यास करके ज्यों ही माताजी आगे बढ़ीं, तो सामने सुसज्जित

तस्मै सर्वे मोदकान् गुडं च दत्वा सर्वे जनाः भगवतो महावीरस्य जयकारैः कुण्डलपुरं गुंजायमानमकुर्वन्। पूज्यां मातरं अस्य दृश्यस्य शुभ शकुनेव मत्वा कार्यस्य मंगलमय पूर्णताहेतवे आश्वस्तामकरोत् पुनः वयं सर्वे प्राचीन दिगम्बरजैनमन्दिरस्य परिसरे प्रकोष्ठेषु अतिष्ठाम। भक्तानां च समूह स्व गृहाणि प्रति प्रस्थानमकरोत् पुनश्च संघस्य दिनचर्या 30 दिसम्बर दिनात् प्रारब्धाऽभवत्। माता प्रतिदिनं नवनिर्मितायां तीर्थस्य भूमौ गत्वा बहिः प्रांगणे एव संघस्थाभिः भगिनीभिः विधानस्य जाप्यादीनां च अनुष्ठानमकारयत्। नव विकसिते तीर्थे निर्माणकार्यं द्रुतगत्या संचालितमासीत् भीषणा च शरद् तस्मिन् किमपि व्यवधानस्योत्पत्तिं नाकरोत्।

वास्तविकजन्मभूमेश्चमत्कारः–**भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे तीर्थे पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः आशीर्वादपूर्वकं ईसवी सन् नववर्ष 2003 वर्षस्य सुप्रभातमभवत्, प्रातःकाले भगवतः पंचामृताभिषेकोऽभवत्, प्रतिदिनस्य च क्रमानुसारेण प्रातः 6.30 वादनसमये संघस्थाभ्यः शिष्याभ्योऽध्ययनं कारितम् पुनः गुरुवन्दनस्य पश्चात् यदा मातुः ब्र. रवीन्द्रेण सह नूतनतीर्थस्य नन्द्यावर्तप्रासादस्य मास्टर योजनायां चर्चाऽभवत् तु मात्रं 1.30–2 घंटासमये एव सम्पूर्णा मास्टर योजना प्रस्तुताऽभवत् यत्र परिसरे त्रीणिमन्दिराणि उत्तरमुखानि–महावीर मन्दिर, ऋषभदेव मन्दिर, नवग्रहशान्ति मन्दिरं च भविष्यन्ति। पूर्वमुख त्रिमाला युक्तानि त्रिचतुर्विंशति मन्दिरं तस्य च पुरतः नन्द्यावर्त प्रासादो निर्मितो भविष्यति, त्यागिभवनं धर्मशाला च दक्षिणे मन्दिरस्य पृष्ठभागे, पार्श्वे च भविष्यन्ति।**

हाथी दिखाई दिया, उसे सभी ने लड्डू एवं गुड़ खिलाकर भगवान महावीर की जयकारों से कुण्डलपुर को गुंजायमान कर दिया। पूज्य माताजी को इस दृश्य के शुभ शकुन ने कार्य की मंगलमयी पूर्णता हेतु आश्वस्त किया पुनः हम सभी लोग प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर परिसर के कमरों में आकर ठहरे और भक्तों की भीड़ ने अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान कर दिया पुनः संघ की दिनचर्या 30 दिसम्बर से प्रारंभ हो गई। माताजी प्रतिदिन नवविकसित तीर्थ भूमि पर जाकर बाहर मैदान में ही संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से पूजा, विधान और जाप्य आदि का अनुष्ठान कराने लगीं। नवविकसित तीर्थ पर निर्माणकार्य द्रुतगति से चल रहा था तथा भीषण सर्दी ने भी उसमें कोई व्यवधान नहीं पैदा होने दिया।

➢असली जन्मभूमि का चमत्कार–

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वादपूर्वक ईसवी सन् के नववर्ष 2003 का सुप्रभात हुआ, प्रातःकाल भगवान का पंचामृत अभिषेक हुआ और प्रतिदिन के क्रमानुसार प्रातः 6.30 से 7 बजे संघस्थ शिष्याओं को अध्ययन कराया, पुनः गुरुवंदना के पश्चात् जब माताजी की ब्र.रवीन्द्र जी के साथ नूतन तीर्थ नंद्यावर्त महल के मास्टर प्लान पर चर्चा हुई तो मात्र डेढ़-दो घंटे के अंदर ही पूरा मास्टर प्लान निर्णीत हो गया कि परिसर में तीन मंदिर उत्तरमुखी (महावीर मंदिर, ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रहशांति मंदिर) रहेंगे, पूर्वमुखी तीन मंजिला तीन चौबीसी मंदिर और उसके सामने नंद्यावर्त महल बनेगा। त्यागी भवन, धर्मशाला दक्षिण में मंदिर के पीछे एवं बाजू में रहेंगे।

अनेक शंकानां समाधानकर्त्री यथार्था वीरजन्मभूमिः कुण्डलपुरमस्ति–**ख्रिष्टाब्दस्य शुभारम्भे सम्पूर्णदेशवासिभ्य, देशस्य शासकेभ्यः प्रशासकेभ्य भारतस्य च सीम्नि स्थितेभ्यः वीर सुरक्षासैनिकेभ्यः नववर्षस्य मंगलमयमाशीर्वादं प्रदाय, भारतदेशस्य गौरवं सदैववृद्धिं गन्तुं शुभाशीर्वादं प्रदाय पूज्यमाता स्वोद्बोधनेऽकथयत् यत् यस्मात् समयात् कुण्डलपुरे पदं निक्षिप्तमकरवम्, तस्मात् समयात् अहमनेकप्रकारां सुखानुभूतिः प्राप्तामकरवम्। 2–3 दिनानां प्रवासे एव ममानेकसमस्यानां समाधानमभूत्। एताभिश्च सर्वाभिः उपलब्धिभिः मम हृदयेऽयं पुष्टो विश्वासोऽभवत् यत् यत्र 2600 वर्षाणि पूर्वं भगवान महावीरोऽजायत्, यत्र च तं वीरप्रभुं पालक्यामान्दोलितवन्तं वीक्ष्यैव संजय–विजयोश्चारणऋद्धिधारकयोर्मुन्योः शंकायाः निवारणमभवत्, इयमेव सा भगवतो महावीरस्य यथार्था जन्मभूमि कुण्डलपुरी अस्ति। तस्या पवित्राणि चरणरजांसि प्राप्य वर्तमानयुगस्य साधूनां शंकानां निवारणं भक्तानां च मनोकामनानां सिद्धिर्भवेत्, तु न काप्यतिशयोक्तेर्वार्ता। यदि भवन्तोऽपि यथार्थया भक्त्या सह कुण्डलपुरस्य** ''पितामहस्य महावीरस्य'' **दर्शनं करिष्यन्ति, तु निश्चितरूपेण मनोकामनानां सिद्धिर्भविष्यति समस्यानां च समाधानमपि प्राप्तं भविष्यति।**

गृहे–गृहे चर्चा कुण्डलपुरस्य–**पूज्यायाः गणिन्याः मातुर्मुखे वास्तवे साक्षात् सरस्वती मातैव वसति तया चोच्चारितः प्रत्येकशब्द आगमस्य चालोके अकाट्यं च सत्यं वर्तते, तस्याः सारभूतायाः वाण्याः ज्ञानं यदा जैनदूरदर्शन माध्यमेन प्रवर्तते 10 जनवरी 2003 दिनात् गृहे–गृहे उपविष्टान् जनान् प्रातः 7 वादन समये श्रवणस्य सौभाग्यं प्राप्तमभवत्, तु भगवतो**

➢अनेक शंकाओं का समाधान करने वाली सच्ची वीर जन्मभूमि है कुण्डलपुरी–

ईसवी सन् के नये वर्ष के शुभारंभ में सम्पूर्ण देशवासियों, देश के शासक-प्रशासक तथा भारत की सीमा पर तैनात वीर सुरक्षा सैनिकों के लिए नववर्ष का मंगलमयी आशीर्वाद प्रदान कर, भारत देश के गौरव को सदा वृद्धिंगत होने का शुभाशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने उद्बोधन में पूज्य माताजी ने कहा कि जब से मैंने कुण्डलपुर में कदम रखा है, तब से मुझे अनेक प्रकार की सुखद अनुभूतियाँ हुई हैं तथा 2-3 दिन के प्रवास में ही मेरी अनेक समस्याओं का समाधान हुआ है और इन सब उपलब्धियों से मुझे यह पक्का विश्वास हो गया है कि जहाँ 2600 वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने जन्म लिया था, जहाँ उन वीर प्रभु को पालने में झूलते हुए देखने मात्र से संजय-विजय नामक चारण ऋद्धिधारी मुनियों की शंका का निवारण हो गया था, वह यही भगवान महावीर की सच्ची जन्मभूमि कुण्डलपुरी है। उस पवित्र स्थल की चरणरज प्राप्त कर वर्तमान युग के साधुओं की शंका का समाधान एवं भक्तों की मनोकामना की सिद्धि हो जाए, तो कोई अतिशयोक्ति वाली बात नहीं है।'' यदि आप लोग भी सच्ची भक्ति के साथ कुण्डलपुर के **'महावीर बाबा'** का दर्शन करेंगे, तो निश्चित रूप से मनोकामनाओं की सिद्धि होगी तथा समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा।

➢घर-घर चर्चा कुण्डलपुर की–

पूज्य गणिनी माताजी के मुख में वास्तव में साक्षात् सरस्वती माता वास करती हैं और उनका उच्चरित प्रत्येक शब्द आगम का अटल वाक्य और अकाट्य सत्य है, उनकी उस सारभूत वाणी का ज्ञान जब जैन टी.वी. चैनल के माध्यम से 10 जनवरी 2003 से घर बैठे लोगों को प्रातः 7 बजे

महावीरस्य 2600 जन्मकल्याणक महोत्सवस्य सन्दर्भे जनता जैनागमैश्च सम्बद्धानां समस्तानां तथ्यानां विवेचनं पूज्यायाः मातुर्मुखारविन्देन श्रुत्वा भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य वास्तविकानां तथ्यानां ज्ञानं प्राप्तमकुर्वन्, येन स्वतः एव गृहे–गृहे–कुण्डलपुरस्य चर्चा प्रसारिताभवत्। वास्तवे वर्तमाने भौतिकवादियुगे समाचार प्राप्तकर्तारो दूरदर्शनं च प्रचार–प्रसारस्य सशक्ताः माध्यमाः सन्ति।

नंद्यावर्तप्रासादतीर्थे भगवतः ऋषभदेवस्य वेदिकायाः शिलान्यास–**तीर्थस्य परिसरे द्रुतगत्या निर्माणकार्यं प्रगतिशीलमासीत्, तस्मिन्नेव क्रमे नन्द्यावर्त परिसरे भगवतो महावीरस्य मन्दिरस्य दक्षिणे हस्ते निर्माणाय प्रस्तावितस्य भगवतो ऋषभदेवस्य मन्दिरस्य वेदिकायाः शिलान्यासः 5 जनवरी 2003 दिने प्रातः 9.30 वादन समये कृतोऽभूत्। यस्यां भगवतः ऋषभदेवस्य सवा ग्यारह फुट उत्तुंगा पद्मासना प्रतिमा विराजितुं प्रस्तावितासीत् 31×48 फुट आयताकारं 21 फुट उन्नतं च मन्दिरं निर्मापयितुं निर्णयोऽभवत्। इमां प्रतिमा वाराणसी निवासिनः श्री रिसबदास, दीपक कुमारपक्षतो विराजमानां कर्तुं स्वीकृतिः प्राप्ताभवत्।**

विषाक्ताः जीवाः कस्यापि किमप्यहितं कर्तुं नाशक्नुवन्–**नंद्यावर्तस्य प्रासादस्य यस्याः भूमेः क्रयोऽभवत्, तत्र विषमभूमेरतिरिक्त कण्टकाकीर्णायां भूमौ गुल्मानि जीव–जन्तवश्च परिपूर्णान्यासन्। शनैः शनैः तत्स्थलं समतलं स्वच्छं च कृत्वा निर्माणाय योग्यं विधातुं प्रयत्नः आसीत् किन्तु तस्य स्थानस्य कार्यकर्तारः कर्मचारिणश्चागत्य मातरं न्यवेदयन्,**

से सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तो भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के संदर्भ में जनता ने जैन आगम से संबंधित समस्त तथ्यों का विवेचन पूज्य माताजी के मुखारविंद से सुनकर भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के वास्तविक तथ्यों की जानकारी प्राप्त की, जिससे स्वतः ही घर-घर कुण्डलपुर की चर्चा फैल गई। वास्तव में आज के भौतिकवादी युग में मीडिया एवं टी.वी. चैनल प्रचार-प्रसार के सशक्त माध्यम हैं।

➢नंद्यावर्त महल तीर्थ पर भगवान ऋषभदेव की वेदी का शिलान्यास–

तीर्थ परिसर में द्रुतगति से निर्माणकार्य चल रहा था, उसी क्रम में नंद्यावर्त परिसर में भगवान महावीर मंदिर के दाहिने हाथ निर्मित होने वाले भगवान ऋषभदेव मंदिर की वेदी का शिलान्यास 5 जनवरी 2003 को प्रातः 9.30 बजे किया गया , जिसमें भगवान ऋषभदेव की सवा ग्यारह फुट पद्मासन प्रतिमा विराजमान होनी थीं और 31×48 फुट लम्बा-चौड़ा एवं 21 फुट ऊँचा मंदिर बनाने का निर्णय हुआ। यह प्रतिमा वाराणसी निवासी श्री रिसबदास दीपक कुमार जैन की ओर से विराजमान होने की स्वीकृति प्राप्त हुई।

➢जहरीले जीव किसी का कुछ न बिगाड़ सके–

नंद्यावर्त महल परिसर की जिस भूमि का क्रय किया गया था, वहाँ ऊबड़-खाबड़ जमीन के अतिरिक्त कंटीली झाड़ियाँ और जीव-जन्तु भरे पड़े थे। धीरे-धीरे उस स्थल को सपाट एवं स्वच्छ कर निर्माण के योग्य बनाया जा रहा था किन्तु वहाँ के कर्मचारी और स्टॉफ के कार्यकर्ता आकर

मातः! अत्र तु किञ्चिदपि मृदं फावड़ा–आयुधेन दूरीकरणेन सहैव कतिचिद् वृश्चिकाः उद्भवन्ति, प्रतिदिनं सर्पाश्च निर्गच्छन्ति, किन्तु भवत्याः आशीर्वादेन वयं निराबाध स्वकार्यं सम्पादयामः किन्तु किंचिद् भयं तु जायते एव। एकस्मिन् दिने तु द्वौ वृहज्जीवौ–गोधे बहिनिर्गतौ अभवताम्, यौ कर्मचारी सतवीरसिंह एव बद्ध्वा अस्मभ्यं अदर्शयत्। अहं तु प्रथम बारमेवैक जीवमपश्यम्, तं दृष्ट्वा तु सहसा रोमांचानि दृष्टान्यभवन्। तदा सतवीरोऽकथयत् यत् मातः! गृहीतुं च तीक्ष्णो जीवो भवति, चौराः पूर्वमेतं कस्यचिद् गृहस्य पटले पातयित्वा तेन सह रज्जूः बद्ध्वा उपरि आरोहन्ति, तथाप्ययं पतनशीलो जीवो नास्ति अर्थात् स्वपञ्जैरयं सहसा बलेन तत् स्थानं गृह्णाति।

एतत्सर्वमवलोक्य माताश्रीः सर्षपान् मंत्रितान् कृत्वा सर्वासु दिक्षु क्षेपणं अकरोत्, तस्मात् समयात् तेषां जीवानां बाहुल्यं समाप्तप्राय अभवत् किन्तु यदा–कदा कोऽपि जीवो निर्गतोऽप्यभवत्, त्वस्मिन् दीर्घे प्रवासे कस्यापि किमप्यहितं नाभवत्।

तीव्रगत्या निर्माणकार्यं प्रगतिशीलमभवत्–**7 फरवरी 2003 दिनात् 12 फरवरी, माघ शुक्ल षष्ठीतः दशमी पर्यन्तं सम्पद्यमानं महोत्सवं सम्पन्नं कर्तुं कतिचित् विचारसभाः सम्पन्नाः अभवन्। आज्ञया पटनानगरस्य, आरानगरस्य, कोडरमानगरस्य, गया, हजारीबागस्य दिल्ली–मेरठ आदीनां श्रावकाः स्व–स्व विभागीयमुत्तरदायित्वमगृह्णन् रवीन्द्रेण सहैव सर्वे स्कन्धात् स्कन्धं योजयित्वा कार्ये सहयोगं प्रादुः।**

माताजी को बताते कि माताजी! यहाँ तो जरा सी मिट्टी फावड़े से हटाने में ही एक साथ कई-कई बिच्छू निकल आते हैं, हर दिन साँप भी निकलते हैं लेकिन आपके आशीर्वाद से हम निराबाध अपना कार्य कर रहे हैं परन्तु थोड़ा भय तो लगता ही है। एक दिन तो दो बड़े जीव-गोह निकल पड़े, जिसे स्टॉफ के ही सतवीर सिंह ने बांधकर हम लोगों को दिखाया। मैंने तो पहली बार ही इस जानवर को देखा था अतः उसे देखकर तो एकदम रोंगटे खड़े हो गए। उस समय सतवीर ने बताया कि माताजी! यह बड़ा जहरीला और तेज पकड़ वाला जानवर होता है, चोर लोग पूर्व में इसे किसी की मकान की छत पर डालकर उसमें रस्से बांधकर ऊपर चढ़ जाते थे, तो भी यह गिरने वाला जीव नहीं है अर्थात् अपने पंजों से यह उस स्थान को एकदम जकड़ लेता है।

इन सबको देखकर माताजी ने सरसों मंत्रित कर सभी दिशाओं में क्षेपण करवाईं, तब से इन जीवों की बहुलता समाप्तप्राय सी हो गई। हाँ! यदा-कदा कभी कोई जीव निकले भी, तो इतने दिन के प्रवास में कभी किसी का कोई अहित नहीं हुआ।

➢जोर-शोर से तैयारियाँ प्रारंभ हो गईं–

7 फरवरी से 12 फरवरी 2003, माघ शु. 6 से 10 तक होने वाले महोत्सव को सम्पन्न करने हेतु कई बैठकें सम्पन्न हुईं, जिनमें पटना, आरा, कोडरमा, गया, हजारीबाग तथा दिल्ली-मेरठ आदि के श्रावकों ने अपनी-अपनी विभागीय जिम्मेदारियाँ संभालीं और रवीन्द्र जी के साथ सभी ने कंधे से कंधा मिलाकर कार्य में सहयोग प्रदान किया।

कुण्डलपुरे नवविकासं प्राप्तस्य परिसरस्य नाम भगवतो महावीरस्य जन्मना पवित्रं प्रासादस्य नाम्नि नंद्यावर्त प्रासादोऽभवत्। भगवतो महावीरस्य जन्म प्रासादस्य नाम्ना संकेतितेऽस्य तीर्थपरिसरस्य अनेकाः पट्टाः, बैनराः, प्रकाशितपत्राणि च देशस्य प्रतिकोणं संलग्ना अभवन्। पंचकल्याणकस्य व्यापकरूपेण तत्परताः अभवन्। 14 जनवरी 2003 दिने तस्मिन्नन्द्यावर्त प्रासादपरिसरे सर्वप्रथमं जम्बूद्वीप–हस्तिनापुरात् भगवत् वृषभदेवस्य तीर्थंकरस्य सवा ग्यारह फुट रक्तवर्णस्य पद्मासनायाः प्रतिमायाः मंगलं पादार्पणमभवत्। तां यथास्थानं वेदिकायां विराजमानां कर्तुं भगवतोः महावीरस्य मन्दिरस्य वामपक्षे वेदिकायाः निर्माणं पूर्वस्मादेव प्रारम्भोऽभवत्। अनेनैव प्रकारेण मूलमन्दिरस्य दक्षिणभागे नवग्रहशान्तिजिनमन्दिरस्य शिलान्यासः 9 फरवरी 2003 दिने श्री ज्ञानचन्द्रो जैनः आरा निवासी अकरोत्। अस्मिन् परिसरे एतेषां त्रयाणां मन्दिराणामतिरिक्तं त्रिकालचतुर्विंशति मन्दिरस्य त्रिमालायुक्तो, नंद्यावर्त प्रासादस्य विशेषरूपेण निर्माणस्य निर्णयोऽभवत् परन्तु सर्वप्रथमं फरवरी मासे भवितुं प्रस्तावित पंचकल्याणके यासां–यासां प्रतिमानां प्राणप्रतिष्ठा भवितुं प्रस्तावितासीत्, ताः विराजमानाः कर्तुं वेदिकादीनां निर्माणं प्राथमिक स्तरेण तीव्रगत्या अभवत् पुनः कान्चित् अपरिपुष्ट प्रकोष्ठान् निर्माप्य रवीन्द्रोभ्राता मातरं अस्मान् च सर्वान् नन्द्यावर्त परिसरे 30 जनवरी 2003 दिने प्रवेशमकारयत्, अस्मात् पूर्वं 25 जनवरी दिनेऽहं नंद्यावर्त स्थले–कुण्डलपुरे प्रथमबारं स्व दीक्षित जीवनस्य 43 तमं केशलुंचनम्–करवम्। प्रायः एकमासात् माताश्रीः वयं च प्राचीन मन्दिरस्य प्रकोष्ठेषु आस्म यतोहि

कुण्डलपुर में नवविकसित हो रहे परिसर का नाम भगवान महावीर के जन्म से पावन महल के नाम पर ''नंद्यावर्त महल'' रखा गया। भगवान महावीर के जन्म महल के नाम से इंगित किए गए इस तीर्थ परिसर के अनेकों बोर्ड, बैनर, पोस्टर आदि देश के कोने-कोने में लगाए गए और पंचकल्याणक की व्यापक तैयारियाँ होने लगीं। 14 जनवरी 2003 को उस नंद्यावर्त महल परिसर में सर्वप्रथम जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से भगवान ऋषभदेव तीर्थंकर की सवा ग्यारह फुट लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा का मंगल पदार्पण हुआ। उन्हें यथास्थान वेदी पर विराजमान करने हेतु भगवान महावीर मंदिर के दाईं ओर वेदी का निर्माण पहले शुरू कर दिया गया। इसी प्रकार मूल मंदिर के बाईं ओर नवग्रहशांति जिनमंदिर का शिलान्यास 9 फरवरी 2003 को श्री ज्ञानचंद जैन-आरा ने किया। इस परिसर में इन तीन मंदिरों के अतिरिक्त त्रिकाल चौबीसी मंदिर (तीन मंजिला), नंद्यावर्त महल विशेष रूप से बनाने का निर्णय हुआ, किन्तु सर्वप्रथम फरवरी में होने वाले पंचकल्याणक में जिन-जिन प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा होनी थी, उनको विराजमान करने हेतु वेदी आदि के निर्माण प्राथमिक स्तर पर द्रुतगति से हुए पुनः कुछ अस्थाई कच्चे कमरे बनाकर भाई जी ने पूज्य माताजी एवं हम सभी को नंद्यावर्त परिसर में 30 जनवरी 2003 को प्रवेश कराया, इससे पूर्व 25 जनवरी को मैंने नंद्यावर्त स्थल-कुण्डलपुर में प्रथम बार अपने दीक्षित जीवन का 43वाँ केशलोंच किया। लगभग 1 माह से पूज्य माताजी एवं हम सभी प्राचीन मंदिर के कमरों में थे चूँकि

पंचकल्याणकस्य दिनेषु पुनः पुनः नन्द्यावर्तपरिसरे आगन्तुं योग्यं मातुः स्वास्थ्यं नासीत् अतएव माता लौहचादर निर्मितेषु प्रकोष्ठेषु स्थितिं रुचितामवागच्छत्। अस्य मध्ये कुण्डलपुरे दूरप्रान्तेभ्यः भक्तानां समूहाः आगच्छन् सर्वे च तीव्रगत्या कुण्डलपुरस्य विकासं दर्शयन्तः बहु प्रसन्नाः अभवन्, प्रशंसा कुर्वतां सर्वेषां नेत्रेभ्यः हर्षाश्रूणि निर्गतान्यभवन्, वस्तुतः एतत्सर्वं कलियुगे जिनेन्द्रभगवतः प्रभावो मन्तव्यः यत् उत्तमानि कार्याणि वीक्ष्य वास्तविकभक्ताः गद्गदाः भवन्त्येव।

कुण्डलपुर यात्रा सार्थकं रूपमगृह्णात्–**महोत्सवस्य तत्परतायां कुण्डलपुरस्यान्तः आयोजकसमित्या आगन्तुकेभ्या श्रद्धालुभ्यः निर्मापितां नगरीमवमोक्य जनाः तां देवोपनीतामति–शयरूपामेव अमन्यन्त् यतः शतवर्षेभ्यस्तत्रेदृशं किमप्यायोजनमभवदेव नैव। श्रद्धालूनां निरन्तरमागमनेन सह मातुर्हृदये पुनः–पुनः मूलनायकस्य भगवतो महावीरस्य आगमनस्य पश्चात् तं च यथास्थानं वेदिकायां विराजमानं कर्तुं चिन्ताऽऽसीत्। यस्याः निवारणं 7 फरवरी दिने गर्भकल्याणकस्य दिने एवाभवत्। प्रतिमा तु 5 फरवरी, माघ शुक्ल चतुर्दश्याः दिने रात्रौ जयपुरात् कुण्डपुरमागच्छत्, अग्रिम दिने 6 फरवरी दिने क्रेन यंत्रेण प्रतिमायाः पेटिकां 25 फुट उन्नते महावीरमन्दिरस्य मंचे निक्षिप्तामकरोत् परन्तु वेदिकायां विराजमानां कर्तुं क्रेन यंत्रामपि संभवं नासीत् अतः शृंखलाकर्षणेन 7 फरवरी दिनांके मध्यान्हकाले 1 वादन समयात् प्रतिमायाः विराजमानस्योपक्रमः प्रारब्धोऽभवत्। पूज्यामाता तस्मिन् समये तत्रैवोपविश्य मंत्रजाप्यमकरोत् पुनोऽहं, संघस्थेन क्षुल्लकमोतीसागरेण, श्री रवीन्द्र**

पंचकल्याणक के दिनों में बार-बार वहाँ से नंद्यावर्त परिसर में आने लायक पूज्य माताजी का स्वास्थ्य नहीं था, इसलिए माताजी ने टीन के कमरों में रहना उचित समझा। इस मध्य कुण्डलपुर में दूर-दूर से भक्तों के समूह आए और सब तेज गति से कुण्डलपुर का विकास कार्य होते देखकर खूब प्रसन्न होते एवं प्रशंसा करते-करते सबके नेत्रों से हर्षाश्रु निकल पड़ते, वस्तुतः यह सब कलियुग में जिनेन्द्र भगवान का प्रभाव मानना चाहिए कि अच्छे कार्यों को देखकर असली भक्त गद्गद हुए बिना नहीं रहते।

➢कुण्डलपुर यात्रा ने लिया सार्थक रूप–

महोत्सव की तैयारी में कुण्डलपुर के अन्दर आयोजन समिति द्वारा आगन्तुक श्रद्धालुओं के लिए बसाई गई नगरी को देखकर लोग इसे देवोपुनीत अतिशय ही मान रहे थे क्योंकि लगभग 100 वर्षों में वहाँ ऐसा कोई अद्वितीय आयोजन हुआ ही नहीं था। श्रद्धालुओं के निरन्तर आगमन के साथ माताजी को बार-बार मूलनायक भगवान महावीर के आने और उन्हें यथास्थान वेदी पर विराजमान करने की चिंता थी, जिसका निवारण 7 फरवरी को गर्भकल्याणक के दिन ही हुआ। प्रतिमा तो 5 फरवरी, माघ शु. चतुर्दशी की रात्रि में जयपुर से कुण्डलपुर पहुँच गई, अगले दिन 6 फरवरी को क्रेन ने प्रतिमा की पेटी 25 फुट ऊँचे महावीर मंदिर के प्लेटफार्म पर पहुँचा दी किन्तु वेदी पर विराजमान करना क्रेन के लिए भी असंभव था अतः चैनपुली के द्वारा 7 फरवरी की मध्यान्ह 1 बजे से प्रतिमा विराजमान का उपक्रम प्रारंभ हुआ। पूज्य माताजी उस समय वहीं बैठकर मंत्र जाप्य करती रहीं पुनः मैंने, संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी, रवीन्द्र जी आदि के साथ सेठ रिसबदास जी-

कुमारादिभिः सह श्रेष्ठी रिसबदासः वाराणसी आदि श्रावकाश्च सायंकाल पर्यन्तं तत्रैवोपविश्य मंत्रजाप्यमकुर्म, यदा च सायं काले 7.50 वादन समये भगवान् महावीरो यथास्थानं विराजमानोऽभवत्, तदा भक्ताः रत्नवृष्टिं कृत्वा जय–जयकार स्वरैः सम्पूर्णं परिसरं गुंजायमानमकुर्वन्।

जम्बूद्वीपस्य सर्वेकार्यकर्तारः आशीर्वादस्य पात्राणि सन्ति–**भगवतो महावीरस्य श्वेतवर्णयुक्तां मनोज्ञ प्रतिमामुन्नते स्थाने विराजमानां विधानस्यैतद् संकटपूर्णं कार्ये सम्पादने यत्र केचिद् आगन्तुकाः यांत्रिकाः भयभीताः आसन्, तत्रैव जम्बूद्वीप हस्तिनापुरस्य कुशलो निरीक्षकः श्री शरीफ अहमदः, जयपुरस्य च कलाकारः आत्मारामः सम्पूर्णेन साहसेन सह कार्यमेतद् सम्पन्नं कृत्वा स्व कर्तव्य पालनमकुरुताम्। पूज्या माता ताभ्यां पुण्यात्माभ्यां प्रचुरमाशीर्वादं प्रादात् भक्ताश्च तेभ्यः पुरस्कारमुपाहरन्।**

वास्तवे ये पुण्यशालिनो जीवाः भवन्ति, ते स्तोकमालम्बनं प्राप्यापि स्वाग्रगामिनः पुण्यस्य संचयं कर्तुं कदापि पृष्ठे न तिष्ठन्ति, अतएव आचार्याः पुण्यात्मनां जीवानां विषयेऽकथयन्–

''जीवानां कृतपुण्यानां मांगल्यं च दिने दिने।''

अर्थात् पुण्यशालिनां जीवानां सदैव कल्याणं भवति।

स्यात्, पुण्यस्य फलस्वरूपमेव मातुः प्रेरणया सम्पन्नेषु सर्वेष्वेव निर्माणकार्येषु शरीफस्य हस्तोऽवश्यमेव संलग्नो भवति अथवा कथ्यतामिदं यत् तस्य हस्तावलम्बनं विना मात्रे

वाराणसी आदि श्रावकों ने शाम तक वहीं बैठकर मंत्र जाप्य किया और जब शाम 7 बजकर 50 मिनट पर भगवान महावीर यथास्थान विराजमान हो गए, तब भक्तगणों ने रत्नवृष्टि, जय-जयकारों के स्वरों से सम्पूर्ण परिसर को गुंजायमान कर दिया।

➢जम्बूद्वीप के सभी कार्यकर्ता आशीर्वाद के पात्र हैं–

भगवान महावीर की श्वेतवर्णी मनोज्ञ प्रतिमा को ऊँचाई पर विराजमान करने के इस जोखिम भरे कार्य को सम्पन्न करने में जहाँ कुछ आगन्तुक इंजीनियर भयभीत हो रहे थे, वहीं जंबूद्वीप-हस्तिनापुर के कुशल सुपरवाइजर शरीफ अहमद एवं जयपुर के मिस्त्री आत्माराम ने पूरी हिम्मत के साथ इस कार्य को सम्पन्न करके अपना कर्तव्य निभाया। पूज्य माताजी ने उन दोनों पुण्यात्माओं के लिए खूब मंगल आशीर्वाद प्रदान किया और भक्तों ने उन्हें पुरस्कार प्रदान किया।

वास्तव में जो पुण्यशाली जीव होते हैं, वे मात्र थोड़ा सा अवलम्बन पाकर भी अपने आगामी पुण्य का संचय करने में कभी पीछे नहीं रहते हैं, इसीलिए आचार्यों ने पुण्यात्मा जीव के बारे में बताते हुए कहा है कि–

जीवानां कृतपुण्यानां, माङ्गल्यं च दिने दिने।

अर्थात् पुण्यशाली जीवों का हमेशा कल्याण होता है।

शायद पुण्य के फलस्वरूप ही माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न होने वाले सभी निर्माणकार्यों में शरीफ का हाथ अवश्य लगता है बल्कि यूँ कहें कि उसका हाथ लगे बिना माताजी को कोई कार्य

किमपि कार्यं न रोचते। पूज्यमातरमेतस्याः वार्तायाः गौरवमस्ति यत् जम्बूद्वीपे 25–30 वर्षैः कार्यरतः शरीफअहमदो जात्या मुस्लिमे सत्यपि पूर्णरूपेण शाकाहारी विद्यते तस्य सम्पूर्णोऽपि परिवारः पूर्णरूपेण शाकाहारी विद्यते। अद्यापि तस्य पूज्यां मातरं प्रति प्रगाढा भक्तिरस्ति, तदैव सः परिवारस्य मोहं परित्यज्य यत्रापि माताश्री निर्माणं कार्यं कारयति, तत्र मासान् स्थित्वा निर्माणकार्यं विधातुं पुण्यस्य संचयं करोति। तत्समाना एव हस्तिनापुर–जम्बूद्वीपस्य सर्वे कर्मचारिणः जैनाः–अजैनाः वा पूर्णेन मनोयोगेन आत्मीयताभावेन च कार्यं कृत्वा पुण्यार्जनं कुर्वन्ति। पूज्या माता एतां वार्तां गौरवेण सह कथयति यत् ''मम चर्यायां बाधां विना जीर्णोद्धारस्य विकासस्य च यानि कार्याणि सम्पन्नानि भवन्ति, तेषु कर्णधाराः भक्तमण्डलैः सह संघस्थानां शिष्य–शिष्याणां जम्बूद्वीपस्य सशक्तस्य दलस्य बहु निष्ठायाश्च योगदानं भवति, तदैवाहं महतां कार्याणां प्रेरणां दत्वा पूर्णतया निश्चिन्ता तिष्ठामि स्वलेखने च व्यस्ता भवामि। अस्मिन् दिने मह्यं अयं संयोगो न प्राप्तो भविष्यति तदाहं प्रभावनायाः कार्यैः विमुखा भूत्वा मात्रं आत्मसाधनां करिष्यामि यतः आर्यिकाचर्याया स्व संयमस्य साधनैव मम प्रमुखं लक्ष्यं वर्तते।

आन्तरिकवेदनयाऽभवत् अद्भुतश्चमत्कारः–**28 जनवरी 2003 दिने कुण्डलपुरस्य प्राचीनमन्दिरे राजधान्याः दिल्लीनगर्याः भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक–महोत्सवस्य केन्द्रीय समिते महामंत्री श्री डी.के. जैन नोएडा निवासी सम्मेदशिखरात् पूज्यायाः मातुर्दर्शनार्थमागच्छत् अत्र च तीर्थस्य प्रस्तावितं स्वरूपं वीक्ष्य महान् प्रसन्नोऽभवत्।**

पसंद ही नहीं आता है। पूज्य माताजी को इस बात का गौरव है कि जम्बूद्वीप में 25-30 वर्षों से कार्यरत शरीफ अहमद जाति से मुस्लिम होने पर भी पूर्णरूपेण शाकाहारी है और उसका पूरा परिवार भी पूर्ण शाकाहारी है। आज भी उसकी पूज्य माताजी के प्रति अगाढ़ भक्ति है, तभी वह परिवार का मोह छोड़कर जहाँ भी माताजी निर्माण कार्य करवाती हैं, महीनों रहकर निर्माण कराने का पुण्य अर्जित कर लेता है। उसके समान ही हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप के सभी कर्मचारी जैन-अजैन आदि पूरे मनोयोग एवं अपनत्व भाव से कार्य करके पुण्य सम्पादन कर लेते हैं। पूज्य माताजी यह बात गौरव के साथ कहती हैं कि ''मेरी चर्या में बाधा आए बिना तीर्थोद्धार एवं विकास के जो महान कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, उसमें कर्णधार भक्तमंडली के साथ-साथ मेरे संघस्थ शिष्य-शिष्याओं का एवं जम्बूद्वीप की सशक्त टीम का बहुत बड़ा योगदान रहता है, तभी मैं बड़े कार्यों की प्रेरणा देकर एकदम निश्चिंत रहती हूँ और अपने लेखन में व्यस्त रहती हूँ। जिस दिन मुझे ये संयोग नहीं प्राप्त होगें संभवतः मैं प्रभावना के कार्यों से विमुख होकर मात्र आत्मसाधना करूँगी क्योंकि आर्यिका चर्या में अपने संयम की साधना ही मेरा प्रमुख लक्ष्य है।

➢आन्तरिक वेदना से हुआ अद्भुत चमत्कार–

28 जनवरी 2003 को कुण्डलपुर के प्राचीन मंदिर में राजधानी दिल्ली से भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव की केन्द्रीय समिति के महामंत्री श्री डी.के. जैन (नोएडा) शिखर जी से पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे और यहाँ तीर्थ का प्रस्तावित स्वरूप देखकर बड़े खुश हुए।

तस्मिन् समये तेन सह कुण्डलपुरतीर्थस्य विकासस्य विस्तृता चर्चाऽभवत्, तु तं माताश्रीरकथयत् यत् यदि भवन्तः शासकीय सभायां कुण्डलपुरस्य नाम न बहिरकुर्वन्, तु विकासस्यायमवसरः उपस्थितो नाभवत्। तदा सः तथाकथितस्य विशिष्टस्य श्रावकस्य याः कूटनीतिपूर्णाः वार्ताः अकथयत्, तस्याः वास्तविकतां ज्ञात्वा मातुर्मनसि महान् क्षोभोऽभवत् यत् पश्य! सः जनः तीर्थंकरस्य प्रभोः जन्मभूमिं परिवर्तनस्य कुटिलभावनाभिः कियन्त पापबन्धमकरोत्? पुनः माता 2 होरापर्यन्तं अयोध्यायाः भगवतः ऋषभदेवस्य बहुध्यानमकरोत् यत् भगवन्! संसारे अल्पायै पदलिप्सायै स्वार्थसिद्धये च जनाः महान्तं पापबन्धं कर्तुमपि भयं न मन्यन्ते। प्रभो! सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः सद्बुद्धिः प्राप्ता स्यात्...इत्यादि।

तत्र सायंकाले सप्तवादनसमये अयोध्यायाः मंत्रिण श्री सरोजस्य दूरभाषः ब्रह्मचारिणे रवीन्द्रायागच्छत्, श्री रवीन्द्रोऽकथयत् यत् मातः! अयोध्याया भगवतः ऋषभदेवस्य अद्य मध्यान्ह समयादेव स्वतः एव प्रचुराभिषेक संचालितोऽस्ति। तत्र न तु पटलक्लिन्नमस्ति न च पटले जलम्, न च वर्षाभवत्, न च समीपे किञ्चिदस्ति, एवंभूतश्चमत्कारोऽद्य पर्यन्तं कदापि नाभवत्। तदा श्रुत्वा मनसि एतद् एव प्रतीतमभवत् यत् पूज्य मातुर्ध्यानपरमाणवः एव तत्र गत्वा इन्द्रैरभिषेकः कारितः। अभिषेकस्य वार्तां श्रुत्वा मातुर्मनसि महती प्रसन्नताभवत् सा अकथयत् यत् तस्य दृश्यस्य छायाचित्रं कर्तुं कथय। रात्रौ 9 वादनपर्यन्तं निरन्तरमयमेव समाचारः प्राप्तोऽभवत् यत् इदानीमपि अभिषेकः प्रवर्तते ऊर्ध्वप्रदेशात् च नीचैः पर्यन्तं जलधारा प्रवाहमाना वर्तते।

उस समय जब उनसे कुण्डलुपर तीर्थ विकास की विस्तृत चर्चा चलने लगी, तो उनसे पूज्य माताजी ने कहा कि यदि आप लोग सरकारी मीटिंग में से कुण्डलपुर का नाम न निकालते, तो यह विकास का अवसर न आता, उस समय उन्होंने जो एक तथाकथित विशिष्ट श्रावक की कूटनीति पूर्ण बातें बताईं, उनकी असलियत जानकर माताजी को बड़ा क्षोभ हुआ कि देखो! उस व्यक्ति ने तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमि को बदलने की कुटिल भावनाओं से कितना पापबंध कर लिया। पुनः माताजी ने 2 घंटे तक अयोध्या के भगवान ऋषभदेव का खूब ध्यान किया कि भगवन्! संसार में थोड़ी सी पदलिप्सा एवं स्वार्थसिद्धि के लिए लोग बड़ा से बड़ा पापबंध करने में भी नहीं डरते हैं। प्रभो! सभी प्राणियों को सद्बुद्धि प्राप्त हो.....इत्यादि।

उधर सायंकाल 7 बजे अयोध्या के मंत्री सरोज जैन का फोन ब्र.रवीन्द्र जी के पास आया और रवीन्द्र जी आकर हम लोगों को बताने लगे कि माताजी! अयोध्या के भगवान ऋषभदेव का आज दोपहर से स्वतः ही (अपने आप) खूब अभिषेक हो रहा है, वहाँ न तो छत गीली है और न छत पर पानी है, न ही बारिश हुई है और न आस-पास ही कुछ है, ऐसा चमत्कार आज तक कभी नहीं हुआ है। तब सुनकर मन में यही लगा कि पूज्य माताजी के ध्यान परमाणुओं ने वहाँ पहुँचकर इन्द्रों से अभिषेक करवाया है। अभिषेक की बात सुनकर माताजी को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने कहलाया कि उस दृश्य का वीडियो-फोटो करवा लो। रात्रि 9 बजे तक लगातार यही समाचार मिलता रहा कि अभी अभिषेक चल रहा है और ऊपर से नीचे तक जलधारा बह रही है।

तपस्यायाः प्रभावात् महतां कार्याणां सिद्धिर्भवति–**नन्द्यावर्त परिसरे यद्यपि कार्यं द्रुतगत्या सञ्चालितमासीत् परन्तु कदाचित् वर्षायाः कारणेन कार्ये व्यवधानस्य भवितुं संभावना अभवत्। 1 फरवरी दिने प्रातः 5 वादनात् वर्षा प्रारम्भाभवत् अतः कलाकाराणां–श्रमिकाणां च कार्येषु काचित् बाधाऽजायत् किन्तु पूर्वनिर्धारितेन कार्यक्रमानुसारेण 11 वादन समयात् भगवतो महावीरस्य मन्दिरस्य पटल–लिन्टर–प्रारम्भमभवत्, यत् रात्रौ 11 वादन पर्यन्तं संचालितोऽभवत्। सम्पूर्णे दिने एतत् ज्ञातमभवत् यत् वाराणस्यां, लखनऊनगरे, इलाहाबादे, दिल्लीनगर्यादि स्थानेषु सर्वत्रैव वर्षा सञ्जायते। किन्त्वत्र किञ्चित् वायुः प्रवाहिताभवत् किंचित् आतपोऽपि निर्गतः अतः पटलस्य पतने कापि बाधा नाभवत्। वस्तुतः एतत्सर्वं मातुः तपसः एव प्रभावोऽस्ति यत् केनापि प्रकारेण महान्त्यपि कार्याणि सिद्धान्येव भवन्ति।**

सत्यमेव जयते–**इदमचलं सत्यमस्ति यत् अन्ततः** ''सत्यस्यैव विजयो भवति''**, भ्रान्तानां व्युत्पत्तीनां मेघाः कति घनाः किं न भवन्तु, सत्यस्य सूर्यः प्रकाशितो भूत्वा सम्पूर्णमेवान्धकारं नाशयति। भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे–नालन्दायां मात्रं सार्धैकमासस्याल्पकाले सम्पन्नस्य नवनिर्माणस्य तत्पश्चाच्च आयोजितायाः राष्ट्रीयस्तरीया पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठायाः महाकुम्भमस्तकाभिषेकस्य महोत्सवस्य अत्यन्त प्रतिष्ठापूर्णा, पूर्णनिर्विघ्ना उत्कृष्टभावना च एतत् सार्वकालिकं सिद्धान्तमधिकरूपेण दृढतया सुस्थापितमकरोत्।**

प्रतिष्ठा महोत्सवस्य 7 फरवरी तः 12 फरवरी 2003 दिनानां मध्ये कुण्डलपुरस्य

➢तपस्या के प्रभाव से होती है बड़े-बड़े कार्यों की पूर्णता–

नंद्यावर्त परिसर में यूं तो कार्य तेजी से चल रहा था लेकिन कभी-कभी बारिश हो जाने से कार्य में व्यवधान आने की संभावना प्रतीत होती थी। 1 फरवरी को प्रातः 5 बजे से बरसात प्रारंभ हो गई अतः मिस्त्री-मजदूरों के काम में थोड़ी बाधा आई किन्तु पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार 11 बजे से भगवान महावीर मंदिर का लिन्टर पड़ना शुरू हुआ, जो रात को 11 बजे तक चला। दिन भर पता लगता रहा कि बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली आदि सब जगह मूसलाधार बारिश हो रही है किन्तु यहाँ दिन भर थोड़ी हवा चलती रही और कुछ-कुछ धूप भी निकली अतः छत पड़ने में कोई बाधा नहीं आई। वस्तुतः यह सब पूज्य माताजी की तपस्या का प्रभाव ही है कि किसी न किसी तरह समय पर बड़े-बड़े कार्य पूर्ण हो ही जाते हैं।

➢सत्यमेव जयते–

यह अटल सत्य है कि अंततः **''सत्य की ही विजय होती है''** भ्रांत व्युत्पत्तियों के बादल भले ही कितने सघन क्यों न हों, सत्य का सूर्य चमचमाते हुए सारे अंधकार को नष्ट करता ही है। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र डेढ़ माह के अल्प समय में हुए नवनिर्माण एवं उसके पश्चात् आयोजित राष्ट्रीय स्तर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव की अत्यन्त शालीन, पूर्ण निर्विघ्न एवं उत्कृष्ट भावना ने इस सर्वकालिक सिद्धान्त को और भी दृढ़ता से सुस्थापित कर दिया है।

प्रतिष्ठा महोत्सव के छह दिनों (7 से 12 फरवरी 2003) के मध्य मानों कुण्डलपुर की धरती

पृथ्वी स्वर्ग समानाभवत्। सर्वतः प्रसारितानां वनानां मध्ये महामंगलमिव घटितमभवत्। एतत् प्रतीतमभवत् यत् देवाः समागत्य कुण्डलपुरी नगरीं निर्मितामकुर्वन्, यत्र महोत्सवस्य, महाहर्षस्य च वातावरणमासीत्। देशस्य विविधप्रान्तेभ्यः समागतानां जैनश्रद्धालूनां अजैन समाजस्य प्रतिदिनमेतावान् सम्मर्दः आसीत् यत् ''नन्द्यावर्तमण्डपे'' पद निक्षेपणस्य मात्रमपि स्थानं नासीत्। सर्वाणि धार्मिकविधानानि रात्रिकालीनश्च सांस्कृतिककार्यक्रमाः सर्वाणि निर्विघ्नानि सुव्यवस्थितानि संपन्नान्यभवन् यत् पुनः–पुनः एतत्प्रतीतमभवत् यत् अत्र स्वयं देवाः एव सर्वाः व्यवस्थाः संचालिताः अकुर्वन्। प्रतिष्ठायाः मध्ये ऋतुरपि पूर्णं सहयोगमदात्। शीतस्य कठोरतायां समुचितया न्यूनतया यात्रिणोऽपि कस्यापि कष्टस्यानुभवं नाकुर्वन्। सर्वत्र प्रसन्नतानां ईदृशं वातावरणमासीत् यत् वर्णयितुमसमर्थतैवानुभूयते मम शब्दाश्च न्यूनाः सन्ति।

एतत्सर्वं दृष्ट्वा बिहारप्रान्तस्य निवासिनां कथनमासीत् यत् मात्रं कुण्डलपुरेनैव अपितु सम्पूर्णे बिहारप्रान्ते एतावान् विशालः, भव्यः, सफलः सुव्यवस्थितश्च कार्यक्रमः कदापि अस्माभिर्न दृष्टः। अस्तु, कठोरस्य परिश्रमस्य पश्चात् ईदृशी अभिव्यक्ति हृदयं तु चन्दनायते एव। जनसाधारेणेभ्योऽतिरिक्तं आगन्तुकाः प्रशासनिकाधिकारिणो मंत्रिणां गणश्चापि यत्र कुण्डलपुरस्यैतेन वैभवेनाभिभूताः दृष्टाः आगताः, तत्रैव दिग्गजराजनेतारोऽपि कार्यक्रमे समागत्य यदा भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः रूपेण कुण्डलपुरं प्रति स्वास्थां प्राकटयन्, तु हृदये अपारा प्रसन्नताभवत्।

पर स्वर्ग ही उतर आया था। चारों ओर फैले जंगल के बीच मानों महामंगल ही घटित हो रहा था, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि देवताओं ने आकर कुण्डलपुर महानगरी बसा दी है, जहाँ महान उत्सव, महान हर्ष का माहौल था। देश के विविध प्रान्तों से पधारे जैन श्रद्धालुओं एवं अजैन समाज की प्रतिदिन इतनी भीड़ रही कि 'नंद्यावर्त मंडप' में पैर रखने मात्र की जगह नहीं बची थी। सारे धार्मिक विधिविधान, रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि सभी इतने सुव्यवस्थित एवं निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुए कि बार-बार ऐसा लगता था कि मानों स्वयं देवगण ही स्वर्ग से सारी व्यवस्था संचालित कर रहे हैं। प्रतिष्ठा के मध्य मौसम ने भी पूरा साथ दिया, ठंड की कठोरता में समुचित कमी आ जाने से यात्रियों को भी किसी कष्ट का आभास नहीं हो रहा था। चारों ओर खुशियों का ऐसा सैलाब उमड़ रहा था जिसको कहने में असमर्थता सी अनुभव हो रही है और मेरे शब्द भी कम पड़ रहे हैं।

यह सब देखकर बिहार प्रांत के लोगों का कहना था कि मात्र कुण्डलपुर में ही नहीं अपितु पूरे बिहार प्रांत में इतना विशाल, इतना भव्य एवं इतना सफल-सुव्यवस्थित कार्यक्रम हमारी कभी देखने में नहीं आया है। खैर! कठोर परिश्रम के पश्चात् ऐसी अभिव्यक्ति हृदय को शीतल तो लगती ही है। जनसाधारण के अतिरिक्त आगन्तुक प्रशासनिक अधिकारी एवं मंत्रीगण भी जहाँ कुण्डलपुर के इस वैभव से अभिभूत दिखाई पड़े, वहीं दिग्गज राजनेताओं ने भी कार्यक्रम में पधारकर जब भगवान महावीर जन्मभूमि के रूप में कुण्डलपुर के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की, तो हृदय को अपार प्रसन्नता हुई।

यादृशी भावना यस्य, तस्मै प्रभुमूर्तिः तादृश्यमेव दृश्यते–**प्रसंगोपात्तस्य तस्याः वार्तायाः उल्लेखं कर्तुमावश्यकं मन्ये यतः यथार्थ कार्यकर्तृणां पृष्ठे सदैव छिद्रान्वेषिणः केचित् वास्तविककार्यमपि तथ्यहीनं कथनं कुर्वन्तो दृश्यन्ते।**

प्राचीनकालात् मान्यायाः भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेर्विकासस्य संकल्पो मातुर्हृदये अस्मिन् जन्मनो उत्सवस्य वर्षे विशेषरूपेण प्रभावितोऽभवत्, अस्य कारणमिदमेवासीत् यत् भगवतो जन्ममहोत्सवस्य सम्पूर्णंवर्षं सुव्यवस्थितं स्यात् स च तीर्थंकरस्य जन्मनो भूमिरुपेक्षितैव स्यात्, इदं मात्रे कथमपि स्वीकृतिं न प्राप्नोत्। शासनेन जन्मभूमेर्नामनि वैशालीं लिछवाड़ं च तस्य कार्य सूच्यां नामांकितां कारिताभवत्, कुण्डलपुरस्य च नामापि न गृहीतम्। तदा माताश्रीः स्वयमेव समाजस्याधारेण संपूर्णेन समाजेन मान्यां जन्मभूमिं कुण्डलपुरं–नालन्दा तस्याः लुप्तं वैभवं पुनः आनेतुं पुष्टं मनोऽकरोत्। तस्याः कथनमासीत् यत् अन्ततो जैनसमाज एव स्व समस्तानि तीर्थानि शताब्दीसु निश्चितानि निर्मितानि चाकरोत्, शासनस्य धनेन तीर्थानि नैव भवन्ति। एतामेव वार्तां लक्ष्ये निधाय मातुः कुण्डलपुरमैतिहासिकी मंगलमयी पदयात्रा प्रारब्धाभवत् तया च सह प्रारब्धोऽभवत् मिथ्या–हीनारोपाणां क्रमोऽपि। पत्रपत्रिकासु प्रकाशितमभवत् यत् धनमेकत्रितं कर्तुं नवः प्रपञ्चोऽस्ति। समाजे भ्रमोत्पादवस्येदं सूत्रमस्ति। अस्तु! प्राचीनानां मान्यतानां पुनः स्थापनायाः प्रयासेषु, जनसाधारणस्य त्यागपूर्णायै श्रद्धायै दृढ़माधारं दातुं प्रयासेसु, आगमस्य वाण्याः रक्षाणां प्रयासेसु यदि केषांचित् गण्यानां

➢**जाकी रहे भावना जैसी, प्रभु मूरत दीखे तिन तैसी–**

प्रसंगोपात्त यहाँ मैं इस बात का उल्लेख करना भी आवश्यक समझती हूँ क्योंकि अच्छे कार्य करने वालों के पीछे सदैव से ही कुछ छिद्रान्वेषी तथ्यहीन कथन करते देखे जाते हैं।

प्राचीनकाल से मान्य भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास का संकल्प माताजी के हृदय में इस जन्मोत्सव वर्ष में विशेषरूप से प्रभावी हो उठा, इसका कारण यही था कि भगवान के जन्ममहोत्सव का पूरा वर्ष मना लिया जाये और उस तीर्थंकर जन्म से परम पावन भूमि को उपेक्षित ही छोड़ दिया जाए! तो यह पूज्य माताजी को कथमपि स्वीकार नहीं था। सरकार से जन्मभूमि के नाम पर वैशाली और लिछवाड़ को उनकी कार्यसूची में नामांकित कराया गया तथा कुण्डलपुर का नाम नहीं लिया गया, तब माताजी ने स्वयं समाज के आधार से ही सम्पूर्ण समाज द्वारा मान्य जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) को उसका खोया वैभव लौटाने का पक्का मन बना लिया। उनका कहना रहा कि आखिर जैन समाज ने ही अपने समस्त तीर्थों को सदियों से बनाया है, सरकार के पैसों से तीर्थ नहीं बनते हैं। इसी बात को लक्ष्य करके माताजी की कुण्डलपुर के लिए यह ऐतिहासिक मंगल पदयात्रा प्रारंभ हुई और उसी के साथ प्रारंभ हो गया घटिया आरोपों का दौर भी। पत्र-पत्रिकाओं में छपाया गया कि धन इकट्ठा करने का एक नया प्रपंच है। समाज में भ्रम उत्पन्न करने का यह सूत्र है। खैर! प्राचीन मान्यताओं की पुनर्स्थापना के प्रयास में, जनसाधारण की सदा से चली आई श्रद्धा को दृढ़ आधार देने के प्रयास में, आगम की वाणी की रक्षा के प्रयास में यदि कुछ गिने-

जनानामुदरेषु पीडा भवति, तु इदमेव कथनं कर्तुं विवशता भविष्यति यत् ''यस्य यादृशी भावनास्ति तेन तथैव प्रभोर्मूर्तिर्दृष्टा।'' मातुर्विषये तु पूर्वस्मिन् कथिता निम्नलिखिता नीतिर्वास्तवे सार्थका सिद्धा भवति–

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहिताः विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

अर्थात् अधमप्रकृतेर्जनाः विघ्नानां भयेन निश्चितमेव किमपि कार्यं न प्रारभन्ते। मध्यमकोटेर्जनाः विघ्नानां सद्भावैः प्रारब्धं कार्यं मध्ये एव त्यजन्ति किन्तु उत्तम प्रकृतेर्जनास्तु पुनः पुनः विघ्नानामुदयेऽपि प्रारब्धं कार्यं मध्ये न त्यजन्ति अर्थात् तत्पूर्णमेव कुर्वन्ति।

धर्मस्य सिद्धान्तस्य रक्षासु कतिचित् बाधाः उत्पादिताः भवेयुः, तर्हि अपि यदि माताश्रीरागम परिप्रेक्ष्ये यदि कमपि निर्णयमकरोत्, तु सा स्वपदं किञ्चिदपि कम्पायमानं कर्तुं विवशा न भवति। संप्राप्तान् क्षुद्रविरोधान् गौणान् विधाय जिनधर्मस्य, जिनशासनस्य जिनस्य वाण्याश्च सेवायै प्रतिक्षणं स्वकार्ये तन्मयाः भवितुं महामन्त्रं सा अस्मभ्यमपि अपाठयत्।

गांधिनः दाण्डीयात्रा इव सहस्राणि पदानि अग्रे वर्धितान्यभवन्–**अत्र मातुः कुण्डलपुरं प्रति वर्धितैः पदै सह समाजस्य यदा अन्येऽपि महात्मनो गांधिनो दाण्डी यात्रेव तद् स्थानं प्रति युक्तान्यभवन् तत्र च ब्रह्मचारी रवीन्द्रः तस्य च सक्रियं दलं मातुः स्वप्नं साकाररूपं दातुं**

चुने लोगों का पेट दुःखता है, तो यही कहना पड़ेगा कि ''जाकी रहे भावना जैसी, प्रभु मूरत दीखे तिन तैसी।'' पूज्य माताजी के बारे में तो पूर्व में कही गई निम्न नीति वास्तव में सार्थक बैठती है–

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

अर्थात् अधम प्रकृति के लोग विघ्नों के भय से निश्चित ही किसी कार्य को प्रारंभ ही नहीं करते। मध्यम कोटि के मनुष्य विघ्नों के आने पर प्रारंभ किए गए कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम प्रकृति के मनुष्य बार-बार विघ्न आने पर भी प्रारंभ किए हुए कार्य को नहीं छोड़ते हैं अर्थात् उसे पूरा ही करते हैं।

धर्म और सिद्धान्त की रक्षा में चाहे कितनी विघ्न बाधाएँ उत्पन्न की जाएं, तो भी यदि माताजी ने आगम के परिप्रेक्ष्य में कोई निर्णय कर लिया है, तो वे अपना कदम किंचित् भी कंपायमान नहीं होने देती हैं, समस्त क्षुद्र विरोधों को गौण करके जिनधर्म, जिनायतन एवं जिनवाणी की सेवार्थ प्रतिक्षण अपने कार्य में लगे रहने का महामंत्र ही उन्होंने हम लोगों की रग-रग में फूंका है।

➢गांधी के दांडी मार्च की तरह हजारों कदम बढ़ चले–

इधर पूज्य माताजी के कुण्डलपुर की ओर बढ़ते कदमों के साथ समाज के कदम भी महात्मा गांधी के दांडी मार्च की भांति उस ओर जुड़ने लगे और उधर ब्र. रवीन्द्र जी एवं उनकी सक्रिय टीम

स्वप्रयत्नान् आरम्भानकुर्वन्, परन्तु वर्षायाः कारणेन कुण्डलपुरस्य भूमौ निर्माणकार्ये बाधोत्पन्नाभवत्, समय संचाल्यमानानि नासीत्, पुनरपि प्रारब्धो जन्मभूमेः पावनस्य मृदः चमत्कारः, 16 दिसम्बर 2002 दिने मकराना राजस्थान नगरे 40 वर्षाणां पश्चात् निष्कलंकस्य श्वेतपाषाणस्यैका बृहच्छिला प्राप्ताभवत्। भगवतो महावीरस्यावगाह प्रमाणं अर्थात् सप्तहस्तोन्नतां (11 फुट) खड्गासन प्रतिमां निर्मापयितुं इयं शिला पर्याप्तासीत्। एतेन समाचारेण वयं सर्वे आन्तरिकरूपेण संतुष्टाः, हर्षिताश्चाभवाम। यद्यपि फरवरी मासस्य प्रतिष्ठा समय समीपमासीत्, पुनरपि जयपुरस्य प्रसिद्धो मूर्त्तिकारः श्री सूरजनारायण नाहटा, तस्य पुत्रः राजेशः नाहटा सहयोगिभिश्च मूर्तिनिर्माणस्य कार्यं रात्रिदिनं लग्नतया भूत्वा प्रारब्धं कृतम्। अत्र च माताश्री वयं च संघसहिताः कुण्डलपुरमागच्छाम्। मात्रं सार्धमेकमासस्य अल्प समयः आसीत् पुनरपि जन्मभूमेर्धरित्र्याः अतिशयो, यत् एकस्य पश्चात् द्वितीयं कार्यं पूर्णं भवितुमग्रेसरमभवत्। तीव्रशैत्यस्य पश्चादपि कार्यं पूर्णरूपेण बलेन प्रारम्भमभवत्। प्रतिष्ठाहेतवे आवास पाण्डालादिकार्याणि सर्वाण्येव तीव्रगत्या सञ्चालितान्यभवन्, शनैः शनैश्च प्रतिष्ठामहोत्सवस्य घटिकाः समीपमागच्छन्। क्रमशो मूर्तीनामानायनं, एकां–एकां कृत्वा विराजमानां भवितुं, सर्वमेव चमत्कार इव सञ्चालितमासीत्। श्वेतवर्णस्य पाषाणस्य निष्कलंकाऽऽकर्षका प्रतिमा तु एतावती मनोरमा प्रतीताऽभवत् यत् सर्वाः दृष्टयः तन्मयतया तामेवापश्यन्, तदैव तु संघपतिः शीघ्रतया तस्यां कृष्ण सूत्रमबध्नात्, तस्य समयस्य वातावरणं दिव्यमिव प्रतीतमभवत्।

ने माताजी के स्वप्न को साकार रूप देना प्रारंभ कर दिया परन्तु बरसात के कारण कुण्डलपुर की भूमि पर निर्माण कार्य में बाधा आने लगी, समय की अल्पता थी, फिर भी शुरू हुआ जन्मभूमि की पावन मिट्टी का चमत्कार। 16 दिसम्बर 2002 को मकराना (राज.) में 40 वर्षों बाद बेदाग श्वेत पाषाण की एक बड़ी शिला मिली। भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण अर्थात् 7 हाथ ऊँची (11 फुट) खड्गासन प्रतिमा बनाने के लिए यह शिला पर्याप्त थी, इस खबर से हम सभी को आंतरिक संतुष्टि एवं हर्ष हुआ। यद्यपि फरवरी की प्रतिष्ठा का समय निकट था, फिर भी जयपुर के प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री सूरज नारायण नाठा, उनके पुत्र राजेश नाठा एवं सहयोगियों द्वारा मूर्ति निर्माण का कार्य रात-दिन लगकर प्रारंभ किया गया। इधर पूज्य माताजी एवं हम सभी संघ सहित कुण्डलपुर पहुँच गए और मात्र डेढ़ माह का अल्प समय था फिर भी जन्मभूमि की धरती का अतिशय, कि एक के बाद एक कार्य बनते चले गए। कड़ाके की ठण्ड के बावजूद कार्य पूरे जोर-शोर से प्रारंभ हो गया, प्रतिष्ठा हेतु आवास-पाण्डाल आदि सभी कार्य तीव्र गति से चलने लगे और धीरे-धीरे प्रतिष्ठा महोत्सव की घड़ियाँ समीप आ गईं। क्रमशः मूर्तियों का आना, एक-एक कर विराजमान होना, सब चमत्कार जैसा हो रहा था, श्वेत पाषाण की बेदाग आकर्षक प्रतिमा तो इतनी मनोरम लग रही थी कि सभी नजरें एकटक उनको निहार रही थीं, तभी तो संघपति जी ने जल्दी से उसमें काला धागा बांध दिया था और उस समय का माहौल एकदम दिव्य प्रतीत हो रहा था।

निर्मलाः भावनाः अप्रत्यक्षरूपेण कार्य सिद्धौ सहायिकाः सन्ति–**वास्तवे इदं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः पुण्यानां परमाणूनां, भगवतः अवगाहना प्रमाणस्य दिव्यप्रतिमायाः मातुश्च निर्दोष साधनाया, तपस्याश्चैव सुफलमासीत्। यदि काचित् मात्रमपि आगमस्यावज्ञा स्यात्, तु कार्यक्रमस्य नैसर्गिकं सौन्दर्यं, निर्विघ्नसफलता निर्दोषा गरिमा च कर्तुं शंका नासीत्। चिन्तनस्य विषयस्तु तेभ्योजनेभ्योऽस्ति ये मिथ्यारोपैः कार्ये विघ्नानि कर्तुमैच्छन्। पूज्या माता तु एकस्य वर्षस्य पूर्णतायाः पूर्वादेव स्वाखण्डस्य पुरुषार्थस्य बलेनोपेक्षायाः गर्ते विलीनां भवितुं गच्छन्तीं प्राचीनकालात् मान्यतां प्राप्तां तीर्थंकरस्य जन्मभूमिं पुनः नवयौवनं प्रदानमकरोत्, वस्तुतो यदा भावनाः निर्मलाः भवन्ति, तु शासनदेवाः देव्योऽपि अप्रत्यक्षरूपेण कार्यं साधयन्ति, इदमस्मिन् पंचमकालेऽपि सिद्धमभवत्।**

शासनदेवाः देव्यः पूज्याः सन्ति–**वर्तमान परिप्रेक्ष्ये इयं वार्तात्यन्तमेव चिन्तनीया वर्तते, यत् चतुर्विंशति तीर्थंकराणां भगवतां यक्षयक्षिणी, शासनदेवं देवीं मिथ्यादृष्टीन् उक्त्वा कतिपय जनैः तान् जिनमन्दिरेभ्योऽपहर्तुं कार्यं क्रियते। यक्ष–यक्षिण्यो यद्यपि चतुर्थ–गुणस्थानवर्तिनो विद्यन्ते, पंचमगुणस्थानवर्तिनः श्रावकाः तेषां पूजां केन प्रकारेण कुर्वन्तु कथं च तेभ्यो मंत्रेभ्योऽर्घ्यं समर्पयन्तु इत्यादयः प्रश्नाः उत्थिताः भवन्ति, किन्तु पूज्यायाः मातुः सदैवेदं कथनं भवति यत् शास्त्रेषु यद् वर्णनमस्ति, तेषु विभिन्न प्रकाराणां तर्काः नोत्थापनीयाः यतः पूज्यपादः एको महान् आचार्यः आसीत्, सहस्राणि वर्षाणि पूर्वं तेन**

➢निर्मल भावनाएँ अप्रत्यक्ष रूप से कार्यसिद्धि में सहायक हैं–

वास्तव में यह भगवान महावीर जन्मभूमि के पुण्य परमाणुओं, भगवान की अवगाहना प्रमाण दिव्य प्रतिमा एवं पूज्य माताजी की निर्दोष साधना तथा तपस्या का ही सुफल था। यदि किंचित् मात्र भी आगम की अवहेलना की गई होती, तो कार्यक्रम का नैसर्गिक सौन्दर्य, निर्विघ्न सफलता एवं निर्दोष गरिमा अवतरित ही नहीं हो सकती थी। सोचने का विषय उन लोगों के लिए है जो मिथ्या आरोपों के द्वारा कार्य में विघ्न डालना चाहते थे। पूज्य माताजी ने एक वर्ष पूर्ण होने के पूर्व ही अपने अखण्ड पुरुषार्थ के बल पर उपेक्षा के गर्त में विलीन होने जा रही प्राचीनकाल से मान्य एक तीर्थंकर जन्मभूमि को पुनः नवयौवन प्रदान कर दिया, वस्तुतः जब भावनाएं निर्मल होती हैं, तो शासन देव-देवी भी अप्रत्यक्ष रूप से कार्यसिद्धि में सहायक हुआ करते हैं, यह इस पंचमकाल में भी सत्य सिद्ध हुआ है।

➢शासन देवी-देवता पूज्य हैं–

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह बात अत्यन्त चिन्तनीय है कि चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों के यक्ष-यक्षिणी, शासन देव-देवी को मिथ्यादृष्टि कहकर कुछ लोगों के द्वारा उन्हें जिनमंदिरों से हटवाया जा रहा है। यक्ष-यक्षिणी यद्यपि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती हैं, पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक उनकी पूजा कैसे करें, कैसे उनको मंत्रों से अर्घ्य चढ़ाएँ इत्यादि प्रश्न उठते हैं लेकिन पूज्य माताजी का सदैव यही कहना रहता है कि शास्त्रों में जो वर्णन है, उस पर अनेक प्रकार के तर्क नहीं उठाना चाहिए क्योंकि पूज्यपाद स्वामी एक महान आचार्य हुए हैं, हजारों वर्ष पूर्व उनके द्वारा रचित सर्वार्थसिद्धि,

रचिताः सर्वार्थसिद्धिः, समाधिशतकं, जैनेन्द्रव्याकरणं इत्यादयोऽनेक ग्रन्थाः सन्तिः, एतदतिरिक्त तेन दिगम्बरपरम्पराया: महता आचार्येण पूज्यपादेन रचितः पंचामृताभिषेक–पाठोऽप्युपलभ्यते दक्षिणस्य च शिलालेखेष्वपि तस्य पर्याप्तं वर्णनं विद्यते। सः पंचामृताभिषेक पाठे भगवतः पूजनविधे वर्णनं कुर्वन् एकस्मिन् स्थानेऽकथयत् यत्–

तत्र स्थाप्यास्तिथीशा गृहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्वियन्ते।

अर्थात् भगवतः पूजां कुर्वन् तस्मिन्नेव तत्रैव पञ्चदशतिथिदेवाः, नवग्रहाः, सुरपति आदयः यक्षयक्षिणी च (यस्मिन् 24 यक्षाः 24 शासनदेव्यो मन्यन्ते) पंच क्षेत्रपालाः, द्वारपालाः, लोकपालाः आदीनां क्रमेण मंत्रैः स्थापना क्रियमाणा स्यात्। तत्र सः दश दिक्पालान् मन्त्रमप्यदात्–ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिह्नसपरिवारा इन्द्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपालाः! आगच्छत–आगच्छत संवौषट्, स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् इदं अर्घ्यं पाद्यं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुः स्वः स्वाहा स्वधा।

अयं पूज्यपाद स्वामिनः दिक्पालानाह्वानस्य मंत्रोऽस्ति। अतो विचारणीयविषयोऽस्ति यत् यदा पूज्यपादस्वामिसदृशैर्महद्भिराचार्यैः दिक्पाल–यक्ष–यक्षिण्याः आदयः आह्वानस्यार्घ्यस्य च मंत्राः ग्रन्थे सुवर्णिताः विद्यन्ते तु एतद् मिथ्यात्वकथनमेतेषां देवी–देवानां मूर्तीः च

समाधिशतक, जैनेन्द्र व्याकरण आदि प्रसिद्ध ग्रंथ हैं, उसके अतिरिक्त उन दिगम्बर परम्परा के महान आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी का बनाया हुआ पंचामृत अभिषेक पाठ भी उपलब्ध होता है और दक्षिण के शिलालेखों में भी उनका खूब वर्णन आया है, उन्होंने पंचामृत अभिषेक पाठ में भगवान की पूजा विधि का वर्णन करते हुए एक जगह बताया है–

तत्र स्थाप्यास्तिथीशा गृहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्वियन्ते।।

अर्थात् भगवान की पूजा करते हुए उसी में वहीं पर पन्द्रह तिथि देवता, नवग्रह, सुरपति आदि और यक्ष-यक्षिणी (जिसमें 24 यक्ष व 24 शासन देवी मानी हैं), पाँच क्षेत्रपाल, द्वारपाल, लोकपाल आदि की क्रम से मंत्रों से स्थापना की जानी चाहिए। उन्होंने उसमें दश दिक्पालों का मंत्र भी दिया है–ॐ ह्रीं क्रों प्रशस्तवर्णसर्वलक्षण सम्पूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इन्द्राग्नियम-नैर्ऋतवरुणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपालाः! आगच्छत आगच्छत संवौषट्, स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः, अत्र मम सन्निहिता भवत-भवत वषट् इदं अर्घ्यं पाद्यं गृह्णीध्वं गृह्णीध्वं ॐ भूर्भुः स्वः स्वाहा स्वधा।

यह पूज्यपाद स्वामी का दिक्पाल के आह्वान का मंत्र है। अतः विचार करने का विषय है कि जब पूज्यपाद स्वामी जैसे महान आचार्य के द्वारा दिक्पाल, यक्ष-यक्षिणी आदि के आह्वान व अर्घ्य के मंत्र ग्रंथों में वर्णित हैं, तो इसे मिथ्यात्व कहना और इन देवी-देवताओं की मूर्तियों को मंदिर से

मन्दिरेभ्योनिष्कासनस्य प्रयत्न आगमात् विपरीतोऽस्ति। अद्य वयं यान्यपि प्राचीनानि मन्दिराणि मूर्तयः च पश्यामः तेषु सर्वेषु भगवतः पार्श्वभागयोः यक्ष–यक्षिण्योः मूर्तयः उत्कीर्णाः सन्ति। यतो हि एताः शासनदेवदेव्यः सर्वदा धर्मस्य रक्षितारः मताः विद्यन्ते। कोऽप्येतान् अर्हत् सिद्धभगवन्तं मत्वा न पूजयति, एतान् शासनस्य देवी–देवान् मत्वा एतेषामाराधनां कुर्वन्ति एतासां चोपासना पद्धतौ स्तोकमन्तरमस्ति, तत् सर्वं ग्रन्थेभ्यः अवगच्छेयुः।

वस्तुतः आगमस्य आज्ञायाः उल्लंघनात्, पूज्यपादसदृशानां महतामाचार्याणां अवज्ञाकरणेऽवश्यं मिथ्यात्वस्य प्रादुर्भावो भवति। अतएव शासनदेव–देवीनामुपासना भक्तिर्वा न मिथ्यात्वम् किन्तु केनापिरूपेण वर्तमाने काले गृहे–गृहे मिथ्यात्वस्य स्थितिर्वर्तते, न जानीमो यत् ते कियत् देवी–देवानां पूजां कुर्मः, त्वस्यां स्थित्यां यदि स्व गार्हस्थ्यजीवने विविधप्रकाराणामिच्छानां पूर्तये ते जनाः यदि शासनदेव–देवीनां भक्तिं कुर्वन्ति तु तन्न मिथ्यात्वम्, एतन्निश्चितम्। जैनग्रन्थानां–तिलोयपण्णत्ती–उमास्वामिश्रावकाचार, वसुनन्दि–श्रावकाचारादीनामाधारेण अन्येषां च श्रावकाचारग्रन्थेभ्यः, प्रतिष्ठातिलकस्य ग्रन्थस्य, पूज्यपादादीनामाचार्याणां चाभिषेक पाठादीनां व्यवस्थानुसारेण एतद् मिथ्यात्वं नोक्त्वा धर्मस्य मर्मैवावगन्तव्यम्।

यथार्थजन्मभूमौ तरंगितोध्वजो विश्वाय सुखशांतिं दास्यति–**अत्रायोजिताया ऐतिहासिक–भव्यायाः पंचकल्याणकप्रतिष्ठायाः शुभारम्भोः ध्वजारोहणपूर्वकमभवत्। पूज्या माता समाग–**

हटाने का प्रयत्न करना आगम के विपरीत है। आज हम जितने भी प्राचीन मंदिर एवं मूर्तियाँ देखें, उन सबमें भगवान के आजू-बाजू में यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं चूँकि यह शासन देव-देवी हमेशा धर्म की रक्षा करने वाले माने गए हैं। कोई इन्हें अरहंत या सिद्ध भगवान मानकर नहीं पूजते हैं, इन्हें शासन देव-देवी मानकर ही इनकी आराधना करते हैं और इनकी उपासना पद्धति में थोड़ा अन्तर है, वह सभी को ग्रंथों से समझना चाहिए।

वस्तुतः आगम की आज्ञा का उल्लंघन करने से, पूज्यपाद जैसे महान आचार्यों की अवहेलना करने से अवश्य मिथ्यात्व आ जाता है। अतः शासन देव-देवी की उपासना या भक्ति मिथ्यात्व नहीं है बल्कि किसी न किसी रूप में वर्तमान में प्रायः घर-घर में मिथ्यात्व डेरा डाले हुए है, वे पता नहीं किन-किन देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, तो ऐसी स्थिति में यदि अपने गार्हस्थ्य जीवन में अनेक प्रकार के इच्छाओं की पूर्ति के लिए वे लोग शासन देव-देवी की भक्ति करते हैं तो वह मिथ्यात्व नहीं है, यह निश्चित है। जैन ग्रंथों–तिलोयपण्णत्ति, उमास्वामी श्रावकाचार, वसुनंदि श्रावकाचार आदि के आधार से या और भी अनेक श्रावकाचार ग्रंथों से, प्रतिष्ठातिलक ग्रंथ एवं पूज्यपाद आदि आचार्यों के अभिषेकपाठादि की व्यवस्थानुसार इसे मिथ्यात्व नहीं कहकर धर्म के मर्म को समझना चाहिए।

➢सच्ची जन्मभूमि में लहराया ध्वज विश्व को देगा सुख-शांति–

यहाँ आयोजित ऐतिहासिक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का शुभारंभ झण्डारोहण पूर्वक हुआ।

तेभ्योऽतिथिभ्यः उपस्थितजनसमूहाय च स्व मंगलमाशीर्वादं वितरन्ती अस्मिन् सुअवसरे अकथयत् यत् अद्य भगवतो महावीरस्य यथार्थजन्मभूमौ तरंगायमानो धर्मध्वजः सम्पूर्णे विश्वे आन्दोलितो भविष्यति अस्य च धर्मध्वजस्य शीतलछायायां अगणिताः भव्यात्मानः सुखशान्तिमनुभविष्यन्ति। इदं च सत्यमस्ति इदानीं प्रतिमासमनेकस्थानेषु अनेकपंचकल्याणकानि प्रतिष्ठानि सम्पद्यन्ते, किन्तु कुण्डलपुरस्येयं पंचकल्याणकप्रतिष्ठा महाकुम्भो महामस्तकाभिषेक महोत्सवश्चैतेन कारणेन महत्वपूर्णाः विद्यन्ते, अतएव चैतिहासिकाः सन्ति यतः इयं संस्कृतेः सुरक्षास्ति, जन्मभूमेः धर्मस्य आर्ष परम्परायाश्च सुरक्षास्ति। वार्तेयमस्ति यत् एतद्दृढ संकल्पिनां साधूनां, आगम परम्पराणां च सुरक्षां कर्तृणां साधूनां, संस्कृतेः सुरक्षाकारिणां, साधूनां तीर्थानां जन्मभूमेः रक्षाकारिणां साधूनां केनापि कार्येण कदाचित् तेषां भक्तास्तेभ्यो विमुखाः भवितुमर्हन्ति, परन्तु तस्य साधोरन्तरंगे दृढनिश्चयोभवति यत् शास्त्रं यत् कथयति, जिनवाणी च यत् प्रकटयति, तदनुरूपमेव ममाचरणं विद्यते। ''आगमचक्खू साहू'' **अर्थात् साधूनां पुरतः आगमनेत्रं भवति। वयं स्वविचारधारां स्वमनसोऽनुकूलं न कुर्मः, वायोरनुकूलं न कुर्मः। सः साधुः साधुर्नास्ति यः स्वमनसः देशस्य पाश्चात्य संस्कृतेः समाजस्य वा अनुकूलमाचरति। साधवस्तु आगमस्य अनुकूलं चरन्ति। तान् न कोऽपि देशः, राष्ट्र, शासनं, समाजः, भक्तश्च पातयितुं न शक्नोति। साधवस्तु केवलमागमानुकूलमाचरन्ति। इयं जैनश्वरी दीक्षा, इयं मयूरपक्षपिच्छिका एतामेव वार्तां दृढतया अनुमोदन्ते।**

पूज्य माताजी ने आगत अतिथियों एवं उपस्थित जनसमुदाय को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए इस सुअवसर पर कहा कि आज भगवान महावीर की सच्ची जन्मभूमि में लहराया धर्मध्वज सारे विश्व में लहराएगा और इस ध्वज की शीतल छाया में अगणित भव्यात्मा सुख और शांति का अनुभव करेंगे। यह सत्य है कि अब हर माह अनेकों स्थानों पर अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ होती हैं परन्तु कुण्डलपुर की यह पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव इसलिए महत्वपूर्ण है, इसलिए ऐतिहासिक है क्योंकि यह संस्कृति की सुरक्षा है, जन्मभूमि, धर्म और आर्ष परम्परा की सुरक्षा है। बात यह है कि दृढ़ संकल्पी साधुओं, आगम परम्परा की रक्षा करने वाले साधुओं, संस्कृति की सुरक्षा करने वाले साधुओं, तीर्थों की जन्मभूमि की रक्षा का संकल्प करने वाले साधुओं के किसी कदम से कदाचित् उनके भक्त उनसे विमुख हो सकते हैं, पर उस साधु के अंतरंग में दृढ़ विश्वास होता है कि शास्त्र जो कह रहा है, जिनवाणी जो कह रही है, उसी के अनुरूप मेरा आचरण है। **''आगम चक्खू साहू''** अर्थात् साधु के पास आगम चक्षु होता है। हम अपनी विचारधारा को अपने मन के अनुकूल नहीं करते हैं, हवा के अनुकूल नहीं करते हैं। वह साधु-साधु नहीं है, जो अपने मन, देश या पाश्चात्य संस्कृति अथवा समाज के अनुकूल चले। साधु तो आगम के अनुकूल चलते हैं, उन्हें न कोई देश, न कोई राष्ट्र, न कोई सरकार, न कोई समाज और न कोई भक्त चला सकता है, साधु तो मात्र आगम की आज्ञानुसार चला करते हैं। यह जैनेश्वरी दीक्षा, यह मयूर पंख की पिच्छी इसी बात को दृढ़ता से अनुमोदित करती है।

ऐतिहासिकपंचकल्याणकप्रतिष्ठा–**भगवतो महावीरस्य खड्गासनायाः मनोज्ञायाः प्रतिमायाः विराजमानां कृत्वैव 7 फरवरी दिनात् पंचकल्याणकप्रतिष्ठा महोत्सवः आरम्भोऽभवत्। इमां प्रतिमां विराजमानां कर्तुं सौभाग्यं मातुः संघपतिः लालाश्रीमहावीरप्रसादो दिल्ली तस्य परिवारश्च प्राप्नुवन्। प्रतिष्ठायामपि सः तस्य धर्मपत्नी च सौ. कुसुमलता जैना, भगवतो पिता– माता च भवितुं पुण्यं प्राप्तवन्तौ। सौधर्मेन्द्रः इन्द्राणी च बनारसनगरस्य श्रीदीपककुमारो जैन तस्य धर्मपत्नी च सौभाग्यवती सुभाषिणी अभवताम्। धनकुबेरस्य प्रमुखं पदं आरानिवासिनौ श्री कमल कुमारस्तत्पत्नी च अनुपमा जैना प्राप्नुताम्। इन्द्रपरिवारेण कृतेन गर्भकल्याणकमहोत्सवस्य सुन्दरमंचनेन सर्वान् 2600 वर्षाणां इतिहासस्य पुनः स्मरणं कर्तुं बाध्यान् कृतम्। सौधर्मेन्द्र इन्द्राणी–कुबेर–इन्द्र– इन्द्राणीभ्यः मध्ये–मध्ये उक्ताः अंग्रेजी संवादाः अपि विशेषाणि आकर्षणान्यासन्। 8 फरवरी दिने जन्मकल्याणकमभवत्, यस्मिन् अन्तरंगाभिः बाह्याभिः क्रियाभिः सह जिन बालकं जन्माभिषेकाय सुमेरुपर्वते नेतुं ''जन्मकल्याणक शोभायात्रा'' विशेषस्य आकर्षणस्य केन्द्रोऽभवत् या नंद्यावर्त स्थलात् कुण्डलपुरात् नालन्दायाः खण्डहरपर्यन्तं गता। शत वर्षाणामितिहासे कुण्डलपुरस्य प्रतोलीसु गमनशीलेयं शोभायात्रासीत्। धनकबुेराः सर्वेभ्यो स्थानीय निवासिभ्यो रत्नानि व्यतरन्। देशस्य प्रतिकोणं आगतानामतिथीनां स्थानीयसमाजस्य चोत्साहो दर्शनीयः आसीत्। सम्पूर्णस्य नालन्दा–बड़गांवस्य निवासिभ्यः मोदकप्रसादो वितरितोऽभवत्।**

➢**ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा–**

भगवान महावीर की खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा के विराजमान होते ही 7 फरवरी से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ हो गया। यह प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य पूज्य माताजी के संघपति लाला श्री महावीर प्रसाद जैन-साउथ एक्स. दिल्ली एवं उनके परिवार को प्राप्त हुआ। प्रतिष्ठा में भी उन्होंने एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. कुसुमलता जैन ने भगवान के माता-पिता बनने का पुण्य प्राप्त किया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी बनारस के श्री दीपक जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. सुभाषिनी जैन बने। धनकुबेर का प्रमुख पद आरा निवासी श्री कमल कुमार जैन एवं सौ. अनुपमा जैन को प्राप्त हुआ। इन इन्द्र परिवार के द्वारा किये गये गर्भकल्याणक महोत्सव के सुन्दर मंचन ने सभी को 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास को पुनर्स्मरण करने हेतु बाध्य कर दिया। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी एवं कुबेर आदि इन्द्र-इन्द्राणी द्वारा बीच-बीच में बोले गए अंग्रेजी संवाद भी विशेष आकर्षक रहे। 8 फरवरी को जन्मकल्याणक हुआ, जिसमें अंतरंग एवं बाह्य क्रियाओं के साथ-साथ जिनबालक को जन्माभिषेक के लिए सुमेरु पर्वत पर ले जाने का 'जन्मकल्याणक जुलूस' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा, जो कि नंद्यावर्त स्थल कुण्डलपुर से नालंदा खण्डहर तक गया। सैकड़ों वर्षों के इतिहास में कुण्डलपुर की गलियों में निकलने वाला यह ऐतिहासिक जुलूस था। धनकुबेर सभी स्थानीय निवासियों को रत्न वितरित करते जा रहे थे। देश के कोने-कोने से पधारे श्रद्धालुओं एवं स्थानीय समाज का उत्साह देखते ही बनता था। पूरे नालंदा व बड़गाँव निवासियों को लड्डू का प्रसाद दिया गया।

रात्रौ शास्त्र प्रवचनस्य सभायां मूर्धन्यो विद्वान पण्डितः शिवचरणलालो जैनः–मैनपुरी निवासी भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य, तस्य सर्वोदयी सिद्धान्तानां ब्राह्मी मातुः रूपेण प्रतिष्ठायाः ज्ञानमती मातुर्विषये स्व सारगर्भितान् विचारान् प्राकटयत्। 12 फरवरी 2003 दिने भगवतो निर्वाणकल्याणकस्य क्रियाभिः सह निर्वाणमोदकस्य समर्पणस्य पश्चात् पूर्णाहुते हवनं सम्पन्नमभवत्। एतेन सहैव प्रायः शत प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाः (त्रिकालचतुर्विंशति तीर्थंकराणां द्वासप्तति प्रतिमासमन्विता) वेदिकायां व्यराजन्त् । तस्मिन् समये भक्तगणः अतिहर्षोल्लासवातावरणे नृत्यं कुर्वन्त भगवन्तं विराजमानं कर्तुं सौभाग्य प्राप्नुवन्। अनेन सहैव मातुः प्रेरणया निर्मितस्य ''कुण्डलपुरस्य प्राचीने मन्दिरे–प्रांगणे ''भगवतो महावीरस्य कीर्तिस्तम्भे'' श्री कमलचन्द्रेण तस्य परिवारेण च भगवतो महावीरस्य अष्टजिनप्रतिमाः अपि व्यराजन।''

कुण्डलपुरस्य विकासः संस्कृतिसुरक्षायै मूलस्य प्रस्तरः अभवत्–**9 फरवरी दिने नवग्रहशान्ति मन्दिरस्य रत्नत्रयनिलयस्य च शिलान्यासस्य पश्चात्** ''नंद्यावर्त मण्डपे'' **आयोजितमभवत्** ''कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलनम्।'' **यस्य संचालनं कृतं अखिलभारतीय दिगम्बर जैन शास्त्रिपरिषदोऽध्यक्षः प्राचार्यो श्री नरेन्द्र प्रकाशः फिरोजाबाद निवासी। डाक्टर पन्नालाल–स्याध्यक्षतायां, अ.भा. दिगम्बर जैन महासमितेः राष्ट्रीय महामंत्रिणो श्री माणिकचंद्रस्य मुख्यातिथ्ये, पं. शिवचरणलाल जैन–मैनपुरी, डॉक्टर अनुपमो जैनः–इन्दौर, श्री रमेश**

रात्रि में शास्त्र प्रवचन की सभा में मूर्धन्य विद्वान पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर, उनके सर्वोदयी सिद्धान्तों एवं ब्राह्मी माता के रूप में प्रतिष्ठित पूज्य माताजी के प्रति अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। 12 फरवरी 2003 को भगवान के निर्वाणकल्याणक की क्रियापूर्वक निर्वाण लाडू समर्पण के पश्चात् पूर्णाहुति हवन सम्पन्न किया गया, साथ ही लगभग 100 प्रतिष्ठित जिनप्रतिमाओं (त्रिकाल चौबीसी की 72 सहित) को नवनिर्मित वेदी में विराजमान कर दिया गया। उस समय भक्तगणों ने अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ नृत्य करते हुए भगवान विराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसके साथ ही पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित **कुण्डलपुर के प्राचीन मंदिर प्रांगण में ''भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ''** में **श्री कमलचंद जैन-खारीबावली-दिल्ली** एवं परिवार द्वारा भगवान महावीर की **8 जिनप्रतिमाएँ** भी विराजमान की गईं।

➢कुण्डलपुर का विकास संस्कृति सुरक्षा के लिए बना नींव का पत्थर–

9 फरवरी को नवग्रह शांति मंदिर एवं रत्नत्रय निलय के शिलान्यास के बाद **''नंद्यावर्त मण्डप''** में आयोजित हुआ **''कुण्डलपुर राष्ट्रीय महासम्मेलन''**। जिसका संचालन किया अखिल भारतीय दि. जैन शास्त्री परिषद के अध्यक्ष-प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन-फिरोजाबाद ने। डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल (महा.) की अध्यक्षता, अ.भा.दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री-श्री माणिकचंद पाटनी के मुख्य आतिथ्य तथा पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी, डॉ. अनुपम जैन-

कासलीवालः–इन्दौरः, पण्डित लालचन्द्रो जैन 'राकेशः', श्री उमेश चन्द्रः– फिरोजाबादः, पं. जयसेन जैनः–इन्दौरादिभि विद्वद्भिः सहिताः बिहार दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र समितेः मंत्री श्री अजय कुमारो जैनः, दि. जैन तीर्थक्षेत्र न्यासस्य मण्डलस्य अध्यक्षः रामगोपालो जैन पटना अन्ये च गण्यमान्याः महानुभावाः उपस्थिताः आसन्। ''प्राचार्यः श्री नरेन्द्र प्रकाशः'' **स्व प्रभावपूर्णे उद्बोधनेऽकथयत् यत् अयमस्याः जन्मभूमेः मृद एव चमत्कारो विद्यते यत् मात्रं सवा एकमासे एव यदस्मभ्यं एतावद् विशालं निर्माणकार्यं वृहत् पंचकल्याणकं च दृष्टुमवसरः प्राप्तोऽभूत्। वस्तुतः कुण्डलपुरादतिरिक्तं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिः नान्यत्रासीत्, नैवास्ति न कदापि अन्या भवितुं शक्नोति।** ''डा. अनुपमो जैनः इन्दौरः'' **अपि स्व वक्तव्ये जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य विकासस्य प्रारम्भात् आदितः अधुना कालपर्यन्तं सम्पूर्णानां गतिविधीनां प्रभावकं विवरणं प्रस्तुतमकरोत्। स्थानीयः** ''डा. रामदेवसिंहः'' **स्वोद्बोधनेऽकथयत् यत् पूज्यमात्रा कृतेन अस्य क्षेत्रस्य विकासेन वयं सर्वे क्षेत्रवासिनः यां प्रसन्नतामनुभवामः, तां वयं वर्णयितुं समर्थाः न भवामः।** ''श्री अजयकुमारो जैन–आरा'' **निवासी अकथयत् यत् अद्य पूज्यायाः मातुः प्रयासानां कारणेनैव अस्मान् इदं साहसमजायत यत् वयमेतत् वैभवपूर्णं कुण्डलपुरं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमि कथयितुं समर्थाः अभवाम। केचिदपि विद्वांसः स्वचिन्तनस्य शोधस्याधारेण किमपि ईदृशं वक्तव्यं लेखनं वा समाजस्य मध्ये न प्रस्तुतं कुर्युः, यस्य माध्यमेन समाजे भ्रमोत्पत्तिः संभवेत् जन्मभूमेः विवादस्य च स्थितयः संभवाः**

इंदौर, श्री रमेश कासलीवाल-इंदौर, पं. लालचंद जैन 'राकेश', श्री उमेश जैन-फिरोजाबाद, पं. जयसेन जैन-इंदौर आदि विद्वानों सहित बिहार दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री अजय जैन (आरा) एवं बिहार दि. जैन तीर्थक्षेत्र न्यास बोर्ड के अध्यक्ष-श्री रामगोपाल जैन (पटना) एवं अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में **प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी** ने अपने प्रभावपूर्ण उद्बोधन में कहा कि यह इस जन्मभूमि की मिट्टी का चमत्कार है जो मात्र एक महीने में ही हमें इतना विशाल निर्माणकार्य एवं वृहद् पंचकल्याणक देखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। वस्तुतः कुण्डलपुर के अतिरिक्त भगवान महावीर की जन्मभूमि न कहीं और थी, न है और न कभी आगे हो सकती है। **डॉ. अनुपम जैन-इंदौर** ने भी अपने वक्तव्य में जन्मभूमि कुण्डलपुर के विकास की प्रारंभ से लेकर अब तक की सम्पूर्ण गतिविधियों का प्रभावक विवरण प्रस्तुत किया। स्थानीय **डॉ. रामदेव सिंह** ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूज्य माताजी द्वारा इस क्षेत्र के विकास से हम क्षेत्रवासियों को जो खुशी हुई है, वह वर्णनातीत है। **श्री अजय कुमार जी-आरा** तो कहने लगे कि आज पूज्य माताजी के प्रयासों के कारण ही हम सबमें यह साहस आ गया है कि हम इस वैभवशाली कुण्डलपुर को पुनः भगवान महावीर की जन्मभूमि घोषित कर सके हैं। किन्हीं भी विद्वानों को अपनी सोच अथवा शोध के आधार पर कोई भी ऐसा वक्तव्य अथवा लेखन समाज के बीच में नहीं प्रस्तुत करना चाहिए, जिसके माध्यम से समाज में भ्रम उत्पन्न हो अथवा विवाद की स्थितियाँ आ जावें। मुख्य अतिथि

भवन्तु। मुख्यातिथि–''श्री माणिकचन्द्रोऽकथयत्'' **यत् कुण्डलपुरस्य विकासः पूज्यायाः मातुः समाजे महानुपकारो वर्तते। साररूपेणानेन महासम्मेलनेन इदमेव तथ्यं प्रकटरूपेण समायात विद्वद्भिश्च सारगर्भितेषु उद्बोधनेषु एकस्वरेण इदं घोषितमभवत् यत् जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य विकासः संस्कृतेः सुरक्षायै मूलस्य प्रस्तरः इव सिद्धो भविष्यति।**

राजनेतृणामागमनमभवत्–**पंचकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सवस्यान्तर्गतं समायोजिते कार्यक्रमेषु यत्रानेक विधायकाः, सांसदाः, प्रशासनिकाधिकारिणः, विद्वांसः, श्रेष्ठिनः, समागत्य अस्य पावनस्य तीर्थस्य रजसा स्वमस्तकान् पावनान् अकुर्वन्, तत्रैव समये–समयेऽनेकराज–नेतृणामपि कुण्डलपुरस्य धरित्र्यामागमनमभवत्, येषु 9 फरवरी दिने भगवतो राजसभायाः मध्ये भारतशासनस्य** ''रक्षामंत्री माननीय श्री जार्जफर्नाण्डीस'' **मुख्यातिथिरूपेण समागच्छत्। तस्मिन् समये यदा ब्रह्मचारी रवीन्द्रः प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाशश्च भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे प्रकाशं पातयन्तौ ग्रामवासिनां जनकल्याणाय शासनेन कुण्डलपुरपर्यन्तं मार्गं पुष्टं कर्तुं, विद्यालयचिकित्सालयस्थापना हेतवे क्षेत्रे च शाकाहारस्य वृद्धये इच्छां व्यक्तामकुरुताम्, तदा माननीयो रक्षामंत्री भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य नवविकासस्यास्य चायोजनस्य विशालकार्यक्रमस्य सम्पूर्णं श्रेयः पूज्यायै मात्रे ददन् तां प्रार्थयत् यत् सा स्व शक्तिं विहारस्य सम्पूर्णा जनतां मानवताया पथि आरूढां कर्तुमुद्यमं करोतु। सोऽकथयत् यत् अद्य देशस्य सीम्नां सुरक्षानीतिः, स्वपक्षेण आक्रमणं न विधातुं नीतिः**

श्री माणिकचंद जी ने कहा कि जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास पूज्य माताजी का समाज पर बहुत बड़ा उपकार है। साररूप में इस महासम्मेलन से यही तथ्य प्रकट में आया और विद्वानों द्वारा सारगर्भित उद्बोधनों में एक स्वर से यह घोषित किया गया कि जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास संस्कृति सुरक्षा के लिए नींव के पत्थर के रूप में सिद्ध होगा।

➢राजनेताओं का आगमन हुआ–

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों में जहाँ अनेक विधायक, सांसद, प्रशासनिक अधिकारी, विद्वानों, श्रेष्ठियों ने आकर इस पावन धरती की धूलि से मस्तक को पावन किया, वहीं समय-समय पर अनेक राजनेताओं का भी कुण्डलपुर की धरा पर आगमन हुआ, जिसमें 9 फरवरी को भगवान की राजसभा के मध्य भारत सरकार के **रक्षामंत्री माननीय श्री जार्ज फर्नांडीस** मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उस समय जब ब्र. रवीन्द्र जी एवं प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर पर प्रकाश डालते हुए ग्रामवासियों के जनकल्याण हेतु सरकार द्वारा कुण्डलपुर तक सड़क को पक्का करने, स्कूल, अस्पताल इत्यादि बनवाने हेतु एवं क्षेत्र में शाकाहार को बढ़ावा देने की इच्छा व्यक्त की, तब माननीय रक्षामंत्री जी ने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के नवविकास एवं इस विशाल कार्यक्रम के आयोजन का सारा श्रेय पूज्य माताजी को देते हुए उनसे प्रार्थना की कि वह अपनी शक्ति को सम्पूर्ण बिहार प्रान्त की जनता को इंसानियत के पथ पर आरूढ़ करने हेतु भी अवश्य प्रदान करें। उन्होंने कहा कि आज देश की सीमाओं की सुरक्षा नीति, अपनी ओर से आक्रमण न करने की

इत्यादयः सर्वाः भगवतो महावीरस्य सिद्धान्तानेव प्रतिपादयन्ति। एतस्य महापुरुषस्य जन्मभूमिः ममैतस्य संसदीय क्षेत्रस्य महत्वं गौरवमस्ति। इयं च महत्याः प्रसन्नतायाः वार्तास्ति यदेतस्याः पावन भूमेर्विकासं कर्तुं संकल्पः अस्माकं देशस्य विभूतिस्वरूपया महत्या साध्व्या ज्ञानमत्या मात्रा कृतः। भारतस्य समाजे यदि कस्याश्चिदपि गम्भीरः प्रभावोऽस्ति, तु न कोऽप्यन्या, किन्तु आध्यात्मिक सन्ताः एव सन्ति, येषां वाणी जन–जनाय प्रमाणिता भवति। भगवतो महावीरस्य पश्चात् 2600 वर्षाणां इतिहासे प्रथमबारमेव महतां ग्रन्थानां रचयित्र्याः मातुर्दर्शनस्य सौभाग्यं स्वकीये संसदीये क्षेत्रे अहं प्राप्नुवम्, इयं मह्यमति महत्वपूर्णा वार्तास्ति। मातुराह्वाने भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः विकासस्य यन्महत्त्वपूर्णं कार्यं सम्पद्यते, तन्न केवलं जैन समाजाय अपितु नालन्दायाः क्षेत्रस्य बिहारप्रान्तस्य च कीर्तिं संसारे प्रसारयितुं महत्वपूर्णं कार्यमस्ति।

10 फरवरी दिने भारतशासनस्य ''रेलमंत्री श्री नितीश कुमारस्य'' **कुण्डलपुरे आगते सति सः अपारां प्रसन्नतां व्यक्तीकुर्वन्नकथयत् यत् मह्यमस्मादधिकं किं गौरवं भवितुं शक्नोति यत् वयं सर्वे ये अनया नालन्दा मृदासह सम्बन्धं धारयामः। भवन्तोऽत्रैतानं महत्वपूर्णमायोजनमकुर्वन्, एतावतो भव्यस्य तीर्थस्य निर्माणमकुर्वन् यत् देशस्य–विदेशस्य जनाः अत्र मस्तकं नम्रीभूतं कर्तुमागमिष्यन्ति पुनः शासनमपि तस्मिन् किमपि कुर्यात् अस्माकं च किमपि लग्नं न स्यात् जैन समाजश्च प्रसन्नो भूयात्। वस्तुतो माता यत् वस्तु प्रतिष्ठापयितुं**

नीति इत्यादि सभी भगवान महावीर के सिद्धान्तों को ही प्रतिपादित कर रही हैं। ऐसे युगपुरुष की जन्मभूमि मेरे इस संसदीय क्षेत्र का महान गौरव है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि ऐसी पावन भूमि का विकास करने का संकल्प हमारे देश की विभूतिस्वरूप महान जैन साध्वी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिया गया है। भारत की समाज पर यदि किसी का गहरा असर होता है, तो वे और कोई नहीं, ये आध्यात्मिक संत ही हैं, जिनकी वाणी जन-जन के लिए प्रामाणिक हो जाती है। भगवान महावीर के बाद ढाई हजार वर्षों के इतिहास में पहली बार विशाल ग्रंथ लेखन करने वाली महान विद्वान माताजी के दर्शन का सौभाग्य मुझे मेरे ही संसदीय क्षेत्र में प्राप्त हुआ है, जो मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण बात है। माताजी के आह्वान पर भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास का जो महानतम कार्य सम्पन्न हो रहा है, वह मात्र जैन समाज के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण नालंदा क्षेत्र एवं बिहार प्रान्त की कीर्ति को संसार में प्रसारित करने वाला है।

10 फरवरी को पधारे भारत सरकार के **रेलमंत्री श्री नितीश कुमार जी** ने कुण्डलपुर पदार्पण पर अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे लिए इससे अधिक गौरव क्या हो सकता है कि हम सब लोग जो इस नालंदा की मिट्टी से वास्ता रखते हैं। आपने यहाँ इतना बड़ा आयोजन, इतने भव्य तीर्थ का निर्माण किया है कि देश-विदेश के लोग पुण्य कमाने हेतु यहाँ माथा टेकने आएंगे फिर उसमें सरकार भी ऐसा कर दे कि हमारा कुछ लगे भी न और जैन समाज भी प्रसन्न हो जाये। वास्तव में माताजी ने जिस चीज को प्रतिष्ठित करने की कोशिश की है, ऐसी प्रतिष्ठा कोई चाहे जितना

प्रयत्नमकरोत्, तादृशी प्रतिष्ठां स्यात् केनापि परिश्रमेण, केनापि व्ययेन, प्राप्तुं न शक्नोति।

यदाहमत्रागच्छम् तु ''रिक्तपत्रमिव'' मम मानसिकताऽऽसीत्, तस्मादेव कारणात् मार्गे अस्य क्षेत्रस्य विधायकेन श्रवण कुमारेण मम वार्ता भवत्। तदा आवां परस्परं विचारं कृत्वाऽचिन्तयाव, यत् 2–3 वर्षाणि पूर्वं दीपनगरं ''हाल्टस्टेशनस्य'' मान्यतामयच्छाम, तेन सह कुण्डलपुर एतेन प्रकारेण संयुक्तं स्यात् तं च पूर्णस्यागारस्य श्रेणी प्रदत्ता स्यात् यतो भवन्तो आगन्तुं कामप्यसुविधां न प्राप्नुयुः, पावापुरीमिवेतदस्य आगारस्य विकासं कर्तुमस्माकं पूर्णः प्रयत्नो भविष्यति।

भगवतो महावीरस्य ज्योतिः रथस्य मंगलमयमुद्घाटनम्–**आचार्यः समन्तभद्रो रत्नकरण्ड–श्रावकाचारग्रन्थे सम्यग्दर्शनस्याष्टांगानां वर्णनं कुर्वन् प्रभावनाअंग विषयेऽकथयत् यत्–**

अज्ञान तिमिरव्याप्ति–मपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्य–प्रकाशः स्यात्प्रभावना।।

अर्थात् अज्ञानस्य अन्धकारस्य विस्तारं दूरीकृत्य स्वशक्ति अनुसारेण जिनशासनस्य माहात्म्यस्य प्रकाशनं कार्येण सम्यग्दर्शनस्य प्रभावना भवति।

मोक्षमार्गस्य शकटस्य द्वे चक्रे चास्ते, साधुः श्रावकश्च। एतयोर्द्वयोः परस्परं पूरक भावादेव संसारस्य मोक्षमार्गस्य च परम्परा निरन्तरमेव प्रवाहमाना भवति। आचार्यैः कथितानां समस्तानामागमोक्ततथ्यानां परिपालनं यत्र पूर्णरूपेण साधवः कुर्वन्ति, तत्रैव श्रावकोऽप्येकदेश–

भी खर्च कर ले, चाहे कितना भी परिश्रम कर ले, यह प्रतिष्ठा किसी को प्राप्त नहीं हो सकती।

जब मैं यहाँ आ रहा था तो ''क्लीन स्लेट'' वाली मेरी मानसिकता थी, इसलिए रास्ते में मैं क्षेत्र विधायक श्री श्रवण कुमार जी से इस विषय में पूछ रहा था। फिर हमने आपस में विचार करके सोचा कि 2-3 साल पहले जो हमने दीपनगर को 'हाल्ट स्टेशन' की मान्यता दिलाई है, उसके साथ कुण्डलपुर को इस प्रकार जोड़ दिया जाये और उसको पूर्ण स्टेशन का दर्जा दिया जाये ताकि आप को आने में कोई असुविधा न हो, पावापुरी की भांति ही इस स्टेशन का विकास करने की हमारी पूरी कोशिश होगी।

➢भगवान महावीर ज्योति रथ का मंगल उद्घाटन–

आचार्य समन्तभद्राचार्य ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार नामक ग्रंथ में सम्यग्दर्शन के आठ अंगों का वर्णन करते हुए प्रभावना अंग का लक्षण बताया है-

अज्ञानतिमिरव्याप्ति-मपाकृत्य यथायथम्।
जिनशासनमाहात्म्य-प्रकाशः स्यात्प्रभावना।।

अर्थात् अज्ञानरूपी अंधकार के विस्तार को दूर कर अपनी शक्ति के अनुसार जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करना सम्यग्दर्शन का प्रभावना अंग है।

मोक्षमार्ग की गाड़ी के दो पहिये माने गए हैं–साधु और श्रावक। इन दोनों के परस्पर पूरक होने से ही संसार व मोक्षमार्ग की परम्परा निरन्तर प्रवाहमान है। आचार्यों द्वारा कहे गये समस्त आगमोक्त तथ्यों का परिपालन जहाँ पूर्णरूपेण साधुगण करते हैं, वहीं श्रावक भी एकदेश रूप,

रूपेण तस्य परिपालनं करोति। यतोऽत्र चर्चा प्रभावनांगस्यास्ति, तस्मिन् क्रमे साधवो वर्तमाने जिनशासनस्य माहात्म्यं प्रकाशनाय महतीं धर्मप्रभावनां कुर्वन्तः आत्मनः परस्य च कल्याणेन सदैव निरताः भवन्ति, श्रावकश्च स्व शक्त्यनुसारेण स्वार्थांजलिं, भावाञ्जलिं पुष्पांजलिं च समर्प्य जिनशासनस्य माहात्म्यं प्रकटं कृत्वा महतः पुण्यस्य संचयं करोति स्व च भवभ्रमणस्य परम्परां क्षीणां करोति।

तस्यैव प्रभावनांगस्य परिपालनं कृत्वा पूर्वाचार्यैर्निर्दिष्टमागमवाक्यं प्रमाणरूपेण मत्वा पूज्यया गणिन्या ज्ञानमत्या विहितानामद्वितीयकार्याणां सीमितशब्दैर्वर्णनं सूर्याय दीपक दर्शनमिव वर्तते। तया कृतं धर्म प्रभावनायाः प्रत्येकं कार्यं प्रशंसनीयं, वन्दनीयं, अनुकरणीयं च विद्यते। वर्तमान युगे यदा भारतस्य अन्तरेऽपि पाश्चात्य संस्कृतेः मोहवशात् आधुनिकानां शैलीनां यथा–पत्र–पत्रिकाः, मोबाईल–दूरभाषः, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, फैक्सादीनां माध्यमेन प्रचार–प्रसारस्य युगं प्रावर्तत्, एतस्मिन् समये पूज्यया मात्रा जिनधर्मस्य प्रभावनया, जिनधर्मस्य प्राचीनतया तीर्थंकराणां भगवतां च सर्वोदयैः सिद्धान्तैः जन–जनं परिचितं कारयितुं रथभ्रमणस्येदृशो माध्यमो भूत्वा पुरतः दृश्यते, येन भारतस्य जनता न केवलमेतान्युद्देश्यानि अजानन्, अवागच्छन् हृदयंगमान्यकरोत् अपितु याः सूचनाः तीर्थ विकासं च नीत्वैवेतेषां रथानां भ्रमणमभवत् तेन सम्पूर्णस्य देशस्य भावनाः संयुक्ताः अभवन् ते च स्वार्थांजलीनां भावाञ्जलीनां च कातिचित् पत्र–पुष्पाणि समर्प्य पूर्णरूपेण तान् अंगीकृत्य तस्य सुरक्षायाः

उसका परिपालन करते हैं। चूँकि यहाँ चर्चा प्रभावना अंग की हो रही है, उस क्रम में वर्तमान में साधु जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट करने हेतु महती धर्मप्रभावना करते हुए आत्म व परकल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं और श्रावक भी अपनी शक्ति के अनुसार अपनी अर्थांजलि, भावांजलि व पुष्पांजलि समर्पित कर जिनशासन के माहात्म्य को प्रकट कर महान पुण्य का संचय करते हैं और अपनी भवभ्रमण परम्परा को अल्प कर लेते हैं।

उसी प्रभावना अंग का परिपालन कर पूर्वाचार्यों द्वारा निर्दिष्ट आगम वाक्य को प्रमाण मानने वाली पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा किए गए अद्वितीय कार्यों का सीमित शब्दों में वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। उनके द्वारा किए गए धर्मप्रभावना के प्रत्येक कार्य प्रशंसनीय, वंदनीय एवं अनुकरणीय हैं। वर्तमान युग में जब भारत के अंदर भी पाश्चात्य संस्कृति की होड़वश आधुनिक शैली जैसे–पत्र-पत्रिकाएँ, मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट, फैक्स आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार का युग आ गया है, ऐसे समय में माताजी द्वारा जिनधर्म की प्रभावना, जिनधर्म की प्राचीनता एवं तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धान्तों से जन-जन को परिचित करवाने में रथ भ्रमण का ऐसा माध्यम बनकर आया, जिसके द्वारा भारत की जनता ने न सिर्फ इन उद्देश्यों को जाना, समझा व हृदयंगम किया अपितु जिन जानकारियों व तीर्थ विकास को लेकर इन रथों का भ्रमण हुआ, उससे पूरे देश की भावनाएँ जुड़ीं और उन्होंने अपनी अर्थांजलि, भावांजलि के कुछ पत्र-पुष्प समर्पित कर प्राणप्रण से उसे

उत्तरोत्तर वृद्धेश्च संकल्पमगृह्णन् येषु प्रथमस्य रथस्य ''जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिःरथस्य'' **भ्रमणं (माननीया प्रधानमंत्रिण्या श्रीमतीइन्दिरागांधी महोदयया प्रवर्तितः) सम्पूर्णस्य भारतस्य प्रतिकोणमनयत्, येन भारतस्य जनता जैन भूगोलस्य विस्तृत ज्ञानं प्राप्य जम्बूद्वीपस्य विस्तृतं ज्ञानं प्राप्तवान् तस्य च प्राप्तराशेः प्रतिफल ''पृथिव्याः स्वर्गरूपेण'' मता जम्बूद्वीपरचना विद्यते, अस्यामेव शृंखलायां द्वितीयोरथः** ''भगवान ऋषभदेवसमवसरण श्रीविहाररथस्य'' **भारतभ्रमणं (तत्कालीनेन प्रधानमंत्रिणा श्री अटलबिहारी वाजपेयी महोदयेन प्रवर्तितः) जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः अहिंसा–शाकाहारस्य भगवतः ऋषभदेवस्य च अहिंसामय–सर्वोदय सिद्धान्तानां गुंजायमानान् कर्तुं निर्गतः तस्य च प्रतिफलं** ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली–प्रयागतीर्थं'' **विद्यते, पुनः तृतीयं** ''भगवान् महावीर ज्योतिः रथस्य'' **प्रवर्तनं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरात् पूज्यायाः मातुः प्रेरणयाऽभवत्, यस्य भारत भ्रमणस्योद्देश्यं, भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य प्रचार–प्रसारश्च वर्तते।**

11 फरवरी 2003 दिने बिहारस्य राज्यपालः डॉ. श्री विनोदचन्द्रः पाण्डेयेन भगवतो महावीरस्य ज्योतिः रथे स्वास्तिकं रचयित्वा दीप प्रज्ज्वलनं कृत्वा च रथस्योद्घाटनं सम्पन्नं कृतम्, तस्मिन् समये प्रसन्नचित्तः राज्यपालः रथस्योद्घाटनं विधाय स्वात्मानं धन्यममन्यत्। पुनः महावीर जयन्त्याः शुभ दिवसे 15 अप्रैल 2003 दिने मातुः शुभाशीर्वादं प्राप्य रथः भारतभ्रमणाय प्रवर्तितोऽभवत्। देशस्य विभिन्न अंचलेषु प्रायः सार्द्धैकवर्षपर्यन्तं भ्रमणं

अपना मानकर उसकी सुरक्षा व उत्तरोत्तर वृद्धि का संकल्प भी लिया जिसमें प्रथम रथ **''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ''** का भ्रमण (माननीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित) सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में हुआ, जिसके द्वारा भारत की जनता ने जैन भूगोल का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर जम्बूद्वीप के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की और उससे एकत्रित राशि का प्रतिफल **'धरती का स्वर्ग'** कही जाने वाली जम्बूद्वीप रचना है, इसी श्रृंखला में द्वितीय रथ **''भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार''** रथ का भारत भ्रमण (तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रवर्तित) जैनधर्म की प्राचीनता, अहिंसा-शाकाहार एवं भगवान ऋषभदेव के अहिंसामयी-सर्वोदयी सिद्धान्तों की अनुगूंज के उद्देश्य को लेकर निकला और उसका प्रतिफल **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-प्रयाग तीर्थ''** है पुनः तृतीय 'भगवान महावीर ज्योति रथ का प्रवर्तन' भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर से पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ, जिसके भारत भ्रमण का उद्देश्य। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर का प्रचार-प्रसार।

11 फरवरी 2003 को बिहार के महामहिम राज्यपाल डॉ. विनोद चंद पाण्डेय जी के द्वारा भगवान महावीर ज्योतिरथ पर स्वस्तिक बनाकर एवं दीप प्रज्वलन करके रथ का उद्घाटन सम्पन्न हुआ, उस समय प्रसन्नमना राज्यपाल जी ने रथ का उद्घाटन कर स्वयं को अत्यन्त गौरवान्वित अनुभव किया पुनः महावीर जयंती के शुभ दिवस 15 अप्रैल 2003 को माताजी के शुभाशीर्वाद को प्राप्त कर उस रथ को भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तित किया गया। देश के विभिन्न अंचलों में लगभग डेढ़

कृत्वा जन–जनं भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य यथार्थतां प्रकटीकृत्य अयं रथस्तीर्थ विकासे किञ्चित् आर्थिकं योगदानमपि समर्पितमकरोत्।

अस्मात् पूर्वं आयोजितं रथस्योद्घाटनस्य धर्मसभायां राज्यपालेन मात्रा लिखितस्य ''महावीरदेशना ग्रन्थस्य'' **विमोचनं कृतम्। प्रस्तुते ग्रन्थे दिगम्बरजैन मान्यतानुसारेण भगवतो महावीरस्य सम्पूर्णस्य जीवनचरित्रस्य व्याख्यया सह तस्य देशनया प्राप्तानां सिद्धान्तानां विशदवर्णनमस्ति।**

तीर्थंकरजन्मभूमेर्विकासस्य महाधिवेशनम्–**10 फरवरी दिने पंचकल्याणक प्रतिष्ठामहोत्सवस्य मध्ये विशेष महाधिवेशनमभवत्, यस्य विषयः आसीत्–तीर्थंकरजन्मभूमेः विकासस्य महाधिवेशनम्। चन्द्रप्रभोर्भगवतो जन्मभूम्या चन्द्रपुरीतः, भगवतोः पार्श्वनाथस्य सुपार्श्वनाथस्य च जन्मभूमेर्वाराणसीतः भगवतः सम्भवनाथस्य जन्मभूमेः श्रावस्त्याः, भगवतो नेमिनाथस्य जन्मभूमेः शौरीपुरात्, भगवतो धर्मनाथस्य जन्मभूमेः रौनाहीतः, पंचानां तीर्थंकराणां जन्मभूमेः अयोध्यायाः, भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूमेः राजगृहीतः समागताः पदाधिकारिणः स्व–स्व क्षेत्रस्य विषये विशेषं ज्ञानं प्रदानं कुर्वन्तः भविष्ये आवश्यक विकासयोजनाभ्यः सभामवगतामकुर्वन्। अहं तान् सम्बोधितान् कुर्वन्ती इयमेव प्रेरणां प्रादात् यदद्य जनाः अतिशयक्षेत्राणि प्रति तु धावन्ति परन्तु तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमीनां विकासस्य विषये चिन्तका अल्पाः एव जना सन्ति। पूज्यायाः मातुरयं जैन समाजे महानुपकारो वर्तते यत् सा अस्मान् अस्मिन् विषये पदमुत्थातुं प्रेरितान् अकरोत्, पुनोऽहं पूज्यमातुः प्रेरणानुसारेण**

वर्ष तक भ्रमण कर जन-जन को भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर की यथार्थता का परिज्ञान कराते हुए इस रथ ने तीर्थ विकास में कुछ आर्थिक योगदान भी समर्पित किया।

इससे पूर्व आयोजित रथ उद्घाटन की धर्मसभा में महामहिम जी ने माताजी द्वारा लिखित **'महावीर देशना ग्रंथ'** का विमोचन किया। प्रस्तुत ग्रंथ में दिगम्बर जैन मान्यतानुसार भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन चरित्र की व्याख्या के साथ-साथ उनकी देशना से प्राप्त सिद्धान्तों का विशद वर्णन है।

➢तीर्थंकर जन्मभूमि विकास महाधिवेशन–

10 फरवरी को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य विशेष महाधिवेशन हुआ, जिसका विषय था–तीर्थंकर जन्मभूमि विकास महाधिवेशन। चन्द्रप्रभु भगवान की जन्मभूमि चन्द्रपुरी, भगवान पार्श्वनाथ-सुपार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी, भगवान संभवनाथ की जन्मभूमि श्रावस्ती, भगवान नेमिनाथ की जन्मभूमि शौरीपुर, भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रौनाही, 5 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही से पधारे पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र के विषय में विशेष जानकारी प्रदान करते हुए भविष्य में आवश्यक विकास योजनाओं से सभा को अवगत कराया। मैंने उन लोगों को सम्बोधित करते हुए यही प्रेरणा प्रदान की कि आज लोग अतिशय क्षेत्रों के पीछे तो भागते हैं परन्तु तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास के विषय में सोचने वाले बहुत ही कम व्यक्ति हैं। पूज्य माताजी का यह जैन समाज पर महान उपकार है कि उन्होंने हमें इस विषय में कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है पुनः मैंने माताजी की प्रेरणानुसार

जन्मभूमीनां विकासस्य निम्नलिखिताः विन्दवोऽकथयम्–

1. प्रत्येकतीर्थंकरस्य जन्मभूमौ सम्बन्धितस्य तीर्थंकरस्य भगवतो विशाला प्रतिमा विराजमाना भवतु।

2. प्रत्येकं जन्मभूमौ सम्बन्धितस्य भगवतो नाम्ना कीर्तिस्तम्भाः स्थापनीयाः, येषु दिगम्बर जैन मतानुसारेण तस्य जीवनचरित्रं सिद्धान्ताः चोत्कीर्णाः भवेयुः।

3. जन्मकल्याणक दिवसे तस्य भगवतो जन्माभिषेको भवतु।

4. निर्वाण तिथौ निर्वाणमोदकानां समर्पणस्य सामूहिकायोजनं भवतु।

महावीरजैन शब्दकोशः एक विशेषोपहारोऽभवत्–**भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मोत्सवस्य वर्षस्यान्तर्गतं वर्तमान पीठिकायाः आवश्यकतामनुभूयाहं मातरं एकस्य जैनधर्मस्य हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोशस्य विषये अकथयम् तु माताश्रीरकथयत् यत् चन्दनामति! यदि त्वमेतावत् दुरूहकार्यं कर्तुमिच्छसि, तु त्वं भगवतो महावीरस्य नामनि शब्दकोशमेतं रचय। तस्यैव फलस्वरूपमहं डाक्टर अनुपमो जैनस्य इन्दौरस्य (विद्वत्महासंघस्य महामंत्रिणः) जीवनप्रकाशजैनस्य इंदौरस्य संघस्थायाश्च ब्रह्मचारिण्याः स्वाति जैनस्य सहयोगेन परिश्रमं कृत्वा त्रिवर्षेषु प्रायः 15000 शब्दानां शब्दकोशं प्रस्तुतमकरवम्, तमहं मातुर्निर्देशेन शास्त्रीय प्रामाणिकरूपेण प्रस्तुतमकरवम्। शब्दकोशोऽयं वर्तमानस्य भाविन्याश्च पीठिकायै जैनधर्मस्य ज्ञानहेतवे महानुपयोगी वर्तते। 6 जनवरी 2002 दिने वाराणस्यां बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयस्य कुलपतिः तस्य शब्दकोशस्य विमोचनमकरोत्।**

जन्मभूमि विकास के निम्न बिंदु बताए–

1. प्रत्येक तीर्थंकर जन्मभूमि पर संबंधित तीर्थंकर भगवान की बड़ी प्रतिमा विराजमान की जाये।

2. प्रत्येक जन्मभूमि पर संबंधित तीर्थंकर भगवान के नाम के कीर्तिस्तंभ बनाए जाएं, जिसमें दिगम्बर जैनागम के अनुसार उनका जीवन चरित्र, सिद्धान्त आदि उत्कीर्ण हों।

3. जन्मकल्याणक के दिवस पर उन भगवान का मस्तकाभिषेक किया जाए।

4. निर्वाण तिथि में निर्वाणलाडू चढ़ाने का सामूहिक आयोजन सम्पन्न किया जाये।

➢महावीर जैन शब्दकोश एक विशेष उपहार बना–

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मोत्सव वर्ष के अन्तर्गत वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकता को देखते हुए मैं माताजी से एक जैनधर्म के हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश के बारे में कहने लगी तो माताजी ने कहा कि चंदनामती! अगर तुम्हें इतने दुरुह कार्य को करना ही है, तो तुम भगवान महावीर के नाम पर इस शब्दकोश को बनाओ। उसी के फलस्वरूप मैंने डॉ. अनुपम जैन (महामंत्री-विद्वत् महासंघ), जीवन प्रकाश जैन-इंदौर एवं संघस्थ ब्र. कु. स्वाति जैन के साथ परिश्रम करके तीन वर्षों में लगभग 15 हजार शब्दों का शब्दकोश तैयार किया, जिसे मैंने माताजी के निर्देशन से शास्त्रीय प्रामाणिकरूप में प्रस्तुत किया है। यह शब्दकोश वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए जैनधर्म के ज्ञान हेतु अत्यन्त उपयोगी है। 6 जनवरी 2005 को वाराणसी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति ने उस शब्दकोश का विमोचन किया।

भगवतो महावीरस्य महाकुम्भमस्तकाभिषेकः–**पंचकल्याणक प्रतिष्ठायाः समापनस्यावसरे अभवत् तस्य श्वेतवर्णाया मनोहारिण्याः अवगाहना प्रमाणाया शासनपतेः भगवतो महावीरस्य प्रतिमायाः सहस्राष्ट कलशैर्महामस्तकाभिषेकः। यस्य मनोहरस्य दृश्यस्य प्रतीक्षा प्रत्येक नेत्राणि आकुलितान्यकरोत्, अन्ततस्ताः स्वर्णिमाः घटिकाः समीपमागच्छन्, तासु प्रथमकलशस्य सौभाग्यं मूर्तिसौजन्यकर्ता श्री महावीर प्रसादः प्राप्नोत्। सौभाग्यमासीत्तेषां नर–नारीणां, ये प्रभोः शरीरे प्रवहन्तीः पंचामृतस्य धाराः अकुर्वन्, अपश्यन् जीवनं च धन्यमकुर्वन्। जल–नारिकेल रसेन, इक्षुरसेन, दाडिमरसेन, मुसम्बीरसेन, नारंगरसेन, द्राक्षाफलरसेन, घृताभिषेक, दुग्धाभिषेक, दधि–अभिषेक, सर्वौषधीनां रसैरभिषेकः चतुष्कोणकलश, केसर, पुष्पवृष्टि, मंगल आरतिका, सुगन्धित जल, शान्तिधारायाश्च क्रमानुसारेणाभिषेक विधातृन् कारकान् च मन्त्रमुग्धानकरोत्। तस्मिन् समये यत्र दाडिमरसस्य धारया श्वेतवर्णा प्रतिमा जम्बूरसवर्णा भूत्वा चमत्कृताभवत्, तत्रैव नारंग रसाभिषेकेन प्रभुं पीतवर्णमकरोत्। सर्वौषधिना प्रभुः रक्तवर्णोऽभवत्, केसररसेन केसरीवर्णो प्रभुः मनो लोभितमकरोत्। पुष्पवृष्टिकाले तु नभोमण्डलं जयकारैर्गुञ्जितमभवत्। भगवतो महावीरस्य मस्तकाभिषेकस्य पश्चात् भगवतो महावीरस्य मन्दिरस्य दक्षिणभागे विराजमानायां भगवतः ऋषभदेवस्य चतुर्दश फुट उत्तुंगायां रक्तवर्णस्य पद्मासनायां प्रतिमायां प्रथमकलशस्य सौभाग्यं मूर्तिसौजन्यकर्ता श्री रिषबदास दीपककुमारो जैन–वाराणसी प्राप्नोत्, तदैव तस्य रक्तवर्णस्य प्रभुवरस्य दुग्धाभिषेकोऽप्यभवत्।**

➢भगवान महावीर का महाकुम्भ मस्तकाभिषेक–

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समापन अवसर पर हुआ उन श्वेतवर्णी, मनोहारी, अवगाहना प्रमाण शासनपति भगवान महावीर का 1008 महाकुंभों से मस्तकाभिषेक। जिस मनोहारी दृश्य की प्रतीक्षा प्रत्येक नेत्रों को आकुलित किए हुए थी, आखिरकार वह स्वर्णिम घड़ियाँ नजदीक आ ही गईं, जिसमें प्रथम कलश करने का सौभाग्य मूर्ति सौजन्यकर्ता श्री महावीर प्रसाद जी ने प्राप्त किया। अहोभाग्य था उन नर-नारियों का, जिन्होंने प्रभु के तन पर बहती पंचामृत की धाराओं को किया, देखा और जीवन को धन्य किया, जल, नारियल रस, इक्षुरस, अनार रस, मौसमी रस, सन्तरा रस, अंगूर रस, घृताभिषेक, दुग्धाभिषेक, दधि अभिषेक, सर्वौषधि, चतुष्कोण कलश, केशर, पुष्पवृष्टि, मंगल आरती सुगंधित जल एवं शांतिधारा के क्रमानुसार अभिषेक ने करने-कराने वालों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उस समय जहाँ अनार रस की धारा से श्वेत प्रतिमा जामुनी होकर चमकने लगी, वहीं संतरा रस के अभिषेक ने प्रभु को पीतवर्णी कर दिया। सर्वौषधि से प्रभु लालवर्णी हो उठे तो केशर से केशरिया हुए प्रभु मन को लुभाने लगे और पुष्पवृष्टि होते ही तो नभमण्डल जयकारों से गुंजित हो उठा। भगवान महावीर के मस्तकाभिषेक के पश्चात् भगवान महावीर मंदिर के दाहिनी ओर विराजमान भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा पर प्रथम कलश करने का सौभाग्य मूर्ति सौजन्यकर्ता श्री रिसभदास दीपक कुमार जैन-वाराणसी ने प्राप्त किया, साथ ही उन लालवर्णी प्रभुवर का दुग्धाभिषेक भी हुआ, जिससे कुछ क्षण को प्रतिमा श्वेतवर्णी हो उठी, पुनः शांतिधारा

येन किञ्चित् क्षणं प्रतिमा श्वेतवर्णाभवत्, पुनः शान्तिधारायाः पश्चात् हर्षोल्लासस्य वातावरणे भगवतो मस्तकाभिषेकस्य महोत्सवः पूर्णोऽभवत्।

देशस्य सुदूरवर्तिभ्यः प्रान्तेभ्यः समागतैः सहस्रैः श्रद्धालुभिः पीतवस्त्रेषु सहस्राष्ट चमत्कृतैः स्वर्ण रजतादीनां कलशैर्भगवतो महाकुम्भमस्तकाभिषेकस्य छटा दर्शनीयासीत्। अस्मिन् महाकुम्भे सर्वेभ्यः कलशैरभिषेक विधायकेभ्याः महानुभावेभ्यस्ते कलशाः उपहारे प्रदत्ताः। अनेन प्रकारेण जन्मभूमिं कुण्डलपुरं चतुश्चन्द्रैः शोभायमानकारकं 21 तम शताब्दयाः इदमैतिहासिकं पञ्चकल्याणकं इतिहासरूपेण सदैव स्थापितमभवत्।

नालन्दा पुस्तकालयः भग्नावशेषाः अपि कथयन्ति इतिहासम्–**कुण्डलपुरेऽवस्थिताः नालन्दा भग्नावशेषाः यत्र पुरातत्त्वदृष्ट्या महत्वपूर्णा सन्ति, तत्रैव तेषां सूक्ष्मतयावलोकनं तत्र चोपलब्धाः प्राचीन भग्नावशेषाः, उत्कीर्णाः जैनमूर्तयः, प्रदर्शकैः कथिताः गौरवपूर्णाः गाथाः इमं संकेतं ददति यत् कदाचिदयं भग्नावशेषः एव नन्द्यावर्त प्रासादः आसीत्, यः सप्तमाला युक्तोऽभवत् अत्रैव च महावीर प्रभुरजायत्। कालदोषात्तस्येदंरूपमस्ति। पुनरप्येतेन जैनत्वमेव दृष्टिगतं भवति। 16 फरवरी 2003 दिने पूज्या माता वयं च नालन्दा–भग्नावशेषं दृष्टुमगच्छाम, सहैवानेकाः श्रेष्ठिमहानुभावाश्चासन्, तत्र पुरातत्त्वालये उपस्थितः पाण्डेयोऽस्मभ्यं पूर्णं पुरातत्वालयं रुचिपूर्वकमदर्शयत्। तत्र द्वे जैनमूर्ती अपि नक्षिप्ते स्तः, ये भगवतः ऋषभदेवस्य पार्श्वनाथस्य च स्तः। तत्पश्चात् वयं नालन्दायाः भग्नावशेषानपि अपश्याम तस्य विशालस्य प्रासादस्य भग्नावशेषानवलोक्य तेषां क्षणानां स्मरणमकुर्म, यदा वीर प्रभुः 2600 वर्षाणि**

के पश्चात् अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में भगवान का मस्तकाभिषेक महोत्सव पूर्ण हुआ।

देश के सुदूरवर्ती प्रांतों से पधारे हजारों श्रद्धालुओं द्वारा पीले वस्त्रों में 1008 चमचमाते स्वर्ण, रजत आदि कलशों से भगवान के महाकुंभ मस्तकाभिषेक की छटा देखते ही बनी थी। इस महाकुंभ में सभी कलश करने वाले महानुभावों को वे कलश भेंट स्वरूप प्रदान किये गये। इस प्रकार जन्मभूमि-कुण्डलपुर को चार चांद लगा देने वाला 21वीं सदी का यह ऐतिहासिक पंचकल्याणक इतिहास के रूप में सदैव के लिए स्थापित हो गया।

➢नालंदा म्यूजियम एवं खण्डहर भी बताते हैं जैन इतिहास–

कुण्डलपुर में अवस्थित नालंदा खण्डहर जहाँ पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, वहीं उसका सूक्ष्मता से अवलोकन एवं वहाँ उपलब्ध प्राचीन खण्डहर, उत्कीर्ण जैनमूर्तियाँ, गाइड्स द्वारा बताई गई गौरवमयी कथाएँ इस बात की ओर इंगित करती हैं कि कभी यह खण्डहर ही नंद्यावर्त महल था, जो सात मंजिल का था और यहीं महावीर प्रभु जन्मे थे, कालदोष के कारण आज उसका यह रूप है, फिर भी इसमें जैनत्व ही दृष्टिगत होता है। 16 फरवरी 2003 को पूज्य माताजी एवं हम लोग नालंदा का खण्डहर देखने गये, साथ में और भी अनेक श्रेष्ठी महानुभाव थे, वहाँ म्यूजियम में उपस्थित पाण्डेय जी ने खूब रुचिपूर्वक हमें पूरा म्यूजियम दिखाया। वहाँ दो जैन मूर्तियाँ भी रखी हैं, जो भगवान ऋषभदेव एवं भगवान पार्श्वनाथ की हैं, उसके पश्चात् हमने नालंदा का खण्डहर भी देखा और उस विशाल महल के खण्डहरों को देखकर उन क्षणों का स्मरण किया, जब वीर प्रभु ने

पूर्वं अत्राजायत्। इयं चैका समृद्धिशालिनी नगरी स्वर्णमयश्च प्रासादः आसीत्।

शाश्वततीर्थस्य सम्मेदशिखरस्य यात्रा–**जैनधर्मे द्वे एवानादिनिधने तीर्थे मते–प्रथममयोध्या द्वितीयं च सम्मेदशिखरम्। एतयोः शाश्वतजन्मभूमेर्गौरवं यत्रायोध्यायै प्राप्तमस्ति, तत्रैवानन्तानां तीर्थंकराणां निर्वाणभूमिः सम्मेदशिखरं परमं पावनं वन्दनीयं चास्ति, यस्य च प्रतिकणं पवित्रं विद्यते, तस्य पावन तीर्थस्य वन्दनाकर्ता नियमेन भव्योऽस्ति सः च 49 भवेषु मोक्षं प्राप्स्यति। एतादृशं वर्णनमस्ति। कथितमप्यास्ति–** ''यः एकवारमपि वन्दते सः नरकं पशुगतिं च नाप्नोति।''

तस्य पवित्रस्य तीर्थस्य वन्दना माता आर्यिका दीक्षायाः ग्रहणस्य पश्चात् 1962–63 वर्षेऽकरोत्, अहमपि च दीक्षायाः पूर्वमेवाकरवम्, दीक्षायाः पश्चात् मां सम्मेदशिखर वन्दनायाः सौभाग्यं न प्राप्तं पुनश्च सम्प्रति तस्या यात्रायाः संयोगो भगवतो महावीरस्य कृपयैव सुलभोऽभवत्। अतएव तां यात्रामवलम्ब्य मनसि महान् आह्लादोऽभवत्। पंचकल्याणकस्य पश्चात् 19 फरवरी 2003 दिने पूज्यामाता संघसहिता सम्मेदशिखराय कुण्डलपुरात् मंगलविहारमकरोत्। तस्मिन् मार्गे भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूमिः भगवतो महावीरस्य च प्रथमा देशनास्थली राजगृहीतीर्थं, भगवतो महावीरस्य निर्वाणभूमिः पावापुरी, गौतमगणधरस्य च निर्वाणभूमिः गुणावां सिद्धक्षेत्रस्य दर्शनं कृत्वा तेषां महापुरुषाणां चरण रजसां पावनां धरां नत्वा महती प्रसन्नताभवत्।

2600 वर्ष पूर्व यहाँ जन्म लिया होगा और यह एक समृद्धिशाली नगरी एवं स्वर्णमयी महल रहा होगा।

➢शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर यात्रा–

जैनधर्म में दो ही अनादिनिधन तीर्थ माने गये हैं–1. अयोध्या और 2. सम्मेदशिखर। इनमें शाश्वत जन्मभूमि का गौरव जहाँ अयोध्या नगरी को प्राप्त है, वहीं अनन्तानन्त तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर परम पावन, पूज्यनीय एवं वंदनीय है और जिसका कण-कण पवित्र है, उस पवित्र तीर्थ की वंदना करने वाला नियम से भव्य है और 49 भवों में मोक्ष को प्राप्त कर लेगा, ऐसा वर्णन है। कहा भी है–**''एक बार वंदे जो कोई, तांहि नरक पशुगति नहिं होई''।**

उस पवित्र तीर्थराज की वंदना पूज्य माताजी ने आर्यिका दीक्षा लेने के बाद सन् 1962-63 में की थी तथा स्वयं मैंने भी दीक्षा के पूर्व ही की थी, दीक्षा के पश्चात् मुझे उस तीर्थराज की वंदना का सौभाग्य अभी तक नहीं प्राप्त हो सका था, पुनः अब उस यात्रा का संयोग भगवान महावीर की कृपा से ही प्राप्त हो रहा था इसलिए इस यात्रा को लेकर मन में बड़ा आल्हाद था। पंचकल्याणक के पश्चात् 19 फरवरी 2003 को पूज्य माताजी ने संघ सहित सम्मेदशिखर के लिए कुण्डलपुर से मंगल विहार किया। उस मार्ग में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि एवं भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली राजगृही तीर्थ, भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी एवं गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां जी सिद्धक्षेत्र का दर्शन कर उन महापुरुषों की चरण रज से पावन धरा को नमन कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

अस्यैव विहारस्य मध्ये पूज्या माता राजगृहीनगर्याः जवाहरनवोदय विद्यालये भगवतो महावीरस्य पद्मासनां प्रतिमां, पावापुरीसिद्धक्षेत्रे भगवतो महावीरस्य विशालां प्रतिमां, गुणावांसिद्धक्षेत्रे गौतमगणधर स्वामिनः प्रतिमां विराजमाना कर्तुं प्रेरणामदात्। झूमरीतलैया–कोडरमा, सरियादि जैनसमाजस्य नगरेषु विहरन्ती 12 मार्च 2003, फाल्गुन शुक्ल नवम्याः दिने शाश्वततीर्थे सम्मेदशिखरे पादार्पणमकरोत्। माता 40 वर्षाणां पश्चात् क्षेत्रे अनेकाभिः संस्थाभिः अनेकं निर्माण कार्यमवलोक्य मनसि महती प्रसन्नाभवत्। अनादितीर्थस्य च पुनः दर्शने सति वयं सर्वे स्वभाग्यानि प्राशंसन्।

जीवनस्याचलसौभाग्यमभवत् पर्वतवन्दना–**13 मार्च 2003 दिने फाल्गुन शक्ल दशम्यां पूज्या माता बीसपन्थीभवने प्रातः काले केशलुंचनं चकार। पर्वतस्य वन्दनायां च तीव्रोत्कण्ठायां तस्याः उपवासस्य दिने मध्याह्ने 2 वादनसमये संघसहिता पर्वतमारूढा। तत्र चोपड़ा कुण्डे निर्मिते जिनमन्दिरे धर्मशालायां च स्थित्वा पर्वतस्य तिस्रो वन्दनाः सम्पन्नाः अकरोत्। 15 मार्च दिने हस्तिनापुरात् श्री रवीन्द्रः, वाराणसीतः श्री दीपककुमारो जैनः, आरानगराच्च श्री कमलकुमारः आगच्छन्। ते सर्वे जनाः अन्ये च भक्ताः 16 मार्च दिने मात्रा सह सम्मेदशिखरस्य वन्दनां कृत्वा जीवनं धन्यममन्यन्त। वन्दनायाः मध्ये प्रत्येक चरणपादुकायां जलदुग्धचन्दनैः भगवतां चरणानां सर्वे श्रावकाः अभिषेकं चक्रुः, अर्घ्यं समर्पयन् रत्नवृष्टिं चाकुर्वन्, रजतस्य लवंग फलानि रजतस्य च कमल पुष्पाण्यर्पयन् निर्वाणमोदकान् च समर्प्य आरतीं कृत्वा**

इसी विहार के मध्य माताजी ने राजगृही के जवाहर नवोदय विद्यालय में भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा तथा जैन तीर्थ परिसर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की बड़ी प्रतिमा, पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर भगवान महावीर की बड़ी प्रतिमा, गुणावां सिद्धक्षेत्र पर गौतम गणधर स्वामी की प्रतिमा आदि विराजमान करने की प्रेरणा देते हुए झुमरीतलैया (कोडरमा), सरिया आदि जैन समाज के नगरों में होते हुए 12 मार्च 2003 (फाल्गुन शु. नवमी) को शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर में पदार्पण किया। पूज्य माताजी को 40 वर्षों बाद क्षेत्र पर अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक निर्माण देखकर मन में असीम आल्हाद हुआ और इस अनादि तीर्थ के पुनः दर्शन होने पर हम सभी ने अपने भाग्य की सराहना की।

➢जीवन की अमिट देन बनी पर्वत वंदना–

13 मार्च 2003, फाल्गुन शु. 10 को पूज्य माताजी ने बीसपंथी कोठी में प्रातःकाल केशलोंच किया और पर्वत वंदना की तीव्र उत्कण्ठा में उसी उपवास के दिन मध्यान्ह में 2 बजे संघ सहित पहाड़ पर चली गईं। वहाँ चोपड़ा कुंड पर निर्मित जिनमंदिर एवं धर्मशाला में ठहरकर पर्वत की तीन वंदनाएं सम्पन्न कीं। 15 मार्च को हस्तिनापुर से रवीन्द्र जी, वाराणसी से दीपक जी एवं आरा से कमल कुमार जी आ गए पुनः वे लोग एवं अनेकों भक्तों ने 16 मार्च को माताजी के साथ सम्मेदशिखर की वंदना करके जीवन को धन्य माना। वंदना के मध्य प्रत्येक टोंक पर जल, दूध, चंदन से भगवान के चरणों का सभी श्रावकों ने अभिषेक किया, अर्घ्य चढ़ाया, रत्नवृष्टि की, चांदी की लौंग एवं चांदी के कमलपुष्प चढ़ाए तथा निर्वाणलाडू चढ़ाकर आरती करके अपनी भक्ति को प्रदर्शित किया। भगवान

स्वभक्तिं प्रादर्शयन्। भगवतः पार्श्वनाथस्य चरणपादुकां प्राप्य पूज्या माता पिण्डस्थध्याने लीना भूत्वा भगवतो मुक्तिगमनस्य क्षणानि स्मृत्वा पावनामनुभूतिं चकार। पश्चात् भगवतः पार्श्वनाथस्य चरणयोरभिषेकः पूजनञ्चाभवत् निर्वाण मोदकानां च समर्पणस्य पश्चात् वयं सर्वे पर्वतात् नीचैः बीसपंथीधर्मशालायां न्यवर्तामहि। तत्पश्चात् 21 मार्च दिने वयं द्वितीयबारं पर्वतमगच्छाम, तत्र चोपड़ा कुण्डस्य धर्मशालायां स्थित्वा चतस्रो वन्दनाः अकुर्म, अनेन प्रकारेण सप्तवन्दनाः कृत्वास्माकं सम्मेदशिखरस्य यात्रा अस्य जीवनस्य स्थायि सौभाग्यमभवत्। चोपड़ाकुण्डे निर्मितं जिनमन्दिरं वीक्ष्य अस्माकं हृदयं पुष्पमिव प्रफुल्लित-मभवत्। पूज्या माता च सर्वेभ्यः कार्यकर्तृभ्यः तीर्थभक्ताः भवितुं प्रेरणामदात्।

पर्वतात् सायंकाले निवर्त्य वयं पूर्णेन संघेन सह मातुः सप्तप्रदक्षिणाः अकुर्म, पाद प्रक्षालनं अर्घ्य समर्पणं च विधाय तस्याः आरतिकामकारयाम पुनोऽहमकथयं, यत् अस्याः महानुपकारोऽस्मास्वस्ति यस्याः निमित्तेन सम्मेदशिखरस्य सप्तवन्दनाः सम्पन्नाः अभवन् अतोऽस्याः प्रभूतो विनयोऽपि न्यूनः एवास्ति।

धर्मस्य महिम्ना दुर्घटना वारिताभवत्–**धर्मस्य महिम्नोवर्णनं कुर्वन् आचार्यः कथयति–**

''जैनधर्म प्रसादेन, किं शुभं यन्न जायते।''

अर्थात् जैनधर्मस्य प्रसादेन ईदृशं किं कार्य यन्न सिध्यति। इदमत्र तात्पर्यं यत्

पार्श्वनाथ की टोंक पर पहुँचकर पूज्य माताजी ने पिण्डस्थ ध्यान में लीन होकर भगवान के मुक्तिगमन के क्षणों की पावन अनुभूति की, पश्चात् पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों का अभिषेक, पूजन हुआ और निर्वाणलाडू चढ़वाने के बाद हम सभी लोग पहाड़ से नीचे धर्मशाला (बीसपंथी कोठी) में वापस आ गए। उसके बाद 21 मार्च को हम लोग दोबारा पहाड़ पर गए, वहाँ चोपड़ा कुण्ड की धर्मशाला में रहकर चार वंदना कीं, इस प्रकार कुल 7 वंदना करके हमारी सम्मेदशिखर यात्रा इस जीवन की अमिट देन बन गई। चोपड़ा कुंड पर बने दिगम्बर जैन मंदिर को देखकर हम सभी का हृदय फूला नहीं समाया और पूज्य माताजी ने सभी कार्यकर्ताओं को लाखों-लाख आशीर्वाद प्रदान कर जिनधर्म की प्रभावना में सदैव लगे रहने की प्रेरणा दी।

पर्वत से शाम को वापस आकर हमने पूरे संघ के साथ पूज्य माताजी की सात प्रदक्षिणाएँ लगाईं, पाद प्रक्षाल, अर्घ्य समर्पण कर उनकी आरती उतरवाई पुनः मैंने कहा कि इनका महान उपकार हम लोगों पर है, जिनके निमित्त से सम्मेदशिखर की 7 वंदना हुईं अतः इनकी जितनी विनय आदि की जाए, उतनी ही कम है।

➢धर्म की महिमा से दुर्घटना टली–

धर्म की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्य कहते हैं–

जैनधर्म प्रसादेन, किं शुभं यन्न जायते।

अर्थात् जैनधर्म के प्रसाद से ऐसा कौन सा शुभफल है, जो प्राप्त नहीं होता। अर्थात् सभी प्रकार

जिनधमस्य प्रसादेन सर्वाणि शुभ फलानि प्राप्नुवंति नराः।

प्रसंगोऽअत्र लिखनस्य तात्पर्यं सा घटनास्ति याऽस्माकं संघेन सह यात्रिणा विजयकुमारेण सह घटिताभवत्। यदा वयं सम्मेदशिखरस्य यात्रायां आस्म, तु विजयकुमारः 27 फरवरी दिने सम्मेदशिखरपर्यन्त मार्गनिरीक्षणायागच्छत् यदा च सः तत्रतः प्रत्यागच्छत् सोऽब्रवीत् यत् मातः! अद्याहं भवत्याः आशीर्वादेन धर्मस्य महिम्ना च जीवितोऽस्मि। अहं निरीक्षणे आसन्, मम वाहनादग्रे यात्रिणां सप्त वाहनान्यासन् यानि मधुवन कोणे लुंठितान्यभवन्, अहं च स्ववाहने तिष्ठन् जाप्यमकरवम्, तु चालको मार्गं विस्मृत्य सम्मेदशिखरात् 20–25 किलोमीटर अग्रेऽगच्छत्। यदा वयं रात्रौ 9.30 वादनसमये प्रत्यागच्छाम, तु ज्ञातमभवत् यत् सायंकाले 8.40 वादने लुण्ठकाः वाहनानां लुण्ठनान्यकुर्वन्। मम वाहनं त्वग्रे गमनकारणेनाहं सुरक्षितोऽभवम्, एतत्सर्वं धर्मस्यैव महिमा विद्यते।

श्रावकसम्मेलनं 51 तमः क्षुल्लिका दीक्षासमारोहः–**होलिकायाः अवसरे सम्मेदशिखरस्य जैनमेलापकः प्राचीनकालादेव प्रसिद्धो विद्यते। देशस्य विभिन्नभागेभ्यो जनास्तत्र फाल्गुनमासस्याष्टाह्निकायां सिद्धचक्रेन्द्रध्वजादीनि विधानानि विधातुं अथवा होलिकायाः वर्णानां क्षेपणेभ्यः स्वरक्षां कर्तुं जनाः बहुसंख्यायां सम्मेदशिखरमागच्छन्ति तत्र च पार्श्वनाथस्य भगवतो भक्तिवर्णैः परस्परं केसरिवर्णां होलिकां क्रीडन्ति। एवं भूताया होलिकाया दिने एव चैत्र कृष्ण प्रतिपदा दिने 50 वर्षाणि पूर्वं महावीर जी अतिशयक्षेत्रे आचार्यवर्यस्य**

के शुभफल प्राप्त होते हैं।

यह प्रसंग यहाँ पर लेखनीबद्ध करने का तात्पर्य वह घटना है जो हमारे संघ के साथ चल रहे एक नवयुवक विजय कुमार जैन-कानपुर के साथ घटी, जब हम सम्मेदशिखर यात्रा हेतु विहार कर रहे थे, तो विजय कुमार 27 फरवरी को सम्मेदशिखर तक रूट सर्वे करने गये और जब वह वहाँ से वापस आये, तो उन्होंने बताया कि माताजी! आज मैं आप लोगों के आशीर्वाद एवं धर्म की महिमा से ही बचा हूँ। मैं सर्वे कर रहा था, मेरी गाड़ी के आगे यात्रियों की 7 गाड़ियाँ थीं जो मधुबन मोड़ पर लुट गईं और मैं अपनी गाड़ी में बैठा जाप्य कर रहा था, तो ड्राइवर रास्ता भूलकर सम्मेदशिखर से 20-25 किमी. आगे चला गया और जब हम रात्रि 9.30 बजे लौटे, तो पता चला कि शाम को 8.40 बजे से 9.30 तक उन गाड़ियों को बदमाशों ने लूट लिया, मेरी गाड़ी आगे चली जाने के कारण मैं बच गया, यह सब धर्म की ही महिमा है।

➢श्रावक सम्मेलन एवं 51वाँ क्षुल्लिका दीक्षा समारोह–

होली के अवसर पर सम्मेदशिखर का जैनमेला प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रहा है। देश के विभिन्न प्रान्तों के लोग वहाँ फाल्गुन मास की आष्टान्हिका में सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज आदि विधान करने अथवा होली के रंगों से बचने के लिए बड़ी संख्या में लोग सम्मेदशिखर यात्रा हेतु जाते हैं और वहाँ भगवान पार्श्वनाथ के भक्तिरूपी रंग से परस्पर में केशरिया होली खेलते हैं। ऐसी होली के दिन चैत्र कृ. एकम् को ही 50 वर्ष पूर्व महावीर जी अतिशयक्षेत्र पर आचार्य श्री देशभूषण महाराज के करकमलों से बाल

श्री देशभूषणस्य करकमलाभ्यां बालब्रह्मचारिणी कुमारी मैना क्षुल्लिकां दीक्षां गृहीत्वा ''वीरमती'' नामानं प्राप्नोत्। सम्मेदशिखरे चैत्रकृष्णप्रतिपदायाः दिने माताश्रीः स्व दीक्षितजीवनस्य 50 वर्षाणि पूर्णान्यकरोत्। तस्मिन् पावनेऽवसरे तत्रोपस्थिताः सर्वे भक्ताः पूज्यां मातरं प्रति स्वभक्तिभावनाः प्रदर्शितवन्तः।

अस्यैव मेलापकस्यावसरे पूज्यायाः मातुः प्रेरणया तत्र 19 मार्च दिने श्रावकमहा–सम्मेलनस्य कार्यक्रमः आयोजितोऽभूत्, तस्मिन् माता श्रावकस्य कर्त्तव्यानि प्रकाशयन्ती सम्मेदशिखरतीर्थरक्षाहेतवे सर्वेभ्यो विशेषां प्रेरणां प्रादात् तीर्थरक्षाहेतवे च श्री आर्यनन्दिनो मुनेः उपकारान् स्मरन्ती तत्तीर्थ क्षेत्र समितिमकथयत् यत् सम्मेदशिखरे तस्यैकः स्मारकोऽवश्यमेव विधातव्यः पुनः अनेक वक्तारः वर्तमाने संचालितानां तीर्थ विकासस्य कार्याणि प्रति स्व श्रद्धाभावान् व्यक्तीकुर्वन्तः सर्वेभ्यः अष्टमूलगुणान् पञ्चाणुव्रतानि आदीनि धृत्वा गुरुभक्तये तीर्थभक्तये च प्रेरितानकुर्वन्।

ऋषभजयन्त्याः दिने ऋषभदेवमन्दिरस्य शिलान्यासोऽभवत्—**पूज्या माता वयं च सर्वे सम्मेदशिखरस्य सर्वेषां मन्दिराणां दर्शनमकुर्म। तदा मनसि उत्पन्नस्य चिन्तनस्याधारेण ते परस्परं विचार–विमर्शमकुर्वन् यत् भगवतः पार्श्वनाथस्यास्यां धरायां प्रथमस्य तीर्थंकरस्य भगवतः ऋषभदेवस्यास्तित्वं भवितुमप्यावयश्यकं वर्तते, येन प्रत्येको यात्री जैनधर्मस्य प्राचीनतां ज्ञातुं समर्थो भवेत्। पुनः मातुः प्रेरणया तत्र बीसपन्थीभवनस्य पदाधिकारिणः अस्मिन् विषये रुचिमगृह्णन् चतुर्विंशतिचरणपादुका युक्ते च बाहुबलिनो मन्दिरे प्रवेशे सति यत्**

ब्र. मैना ने क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहणकर ''वीरमती'' नाम प्राप्त किया था। सम्मेदशिखर में चैत्र कृ. एकम् को माताजी ने अपने दीक्षित जीवन के 50 वर्ष पूर्ण किए थे। उस पावन अवसर पर वहाँ पधारे सभी भक्तों ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी भक्ति भावनाएँ प्रस्तुत कीं।

इसी मेले के अवसर पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से वहाँ 19 मार्च को श्रावक महासम्मेलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसमें माताजी ने श्रावक के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालते हुए सम्मेदशिखर तीर्थरक्षा हेतु सभी को विशेष प्रेरणा प्रदान की तथा तीर्थरक्षा हेतु मुनि श्री आर्यनंदी महाराज के उपकारों का स्मरण करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी को कहा कि सम्मेदशिखर में उनका एक स्मारक अवश्य बनाना चाहिए। पुनः अनेक वक्ताओं ने वर्तमान में चल रहे तीर्थ विकास के प्रति अपने श्रद्धाभाव व्यक्त करते हुए सभी को अष्टमूलगुण, पँच अणुव्रत आदि धारण करके गुरुभक्ति, तीर्थभक्ति के लिए प्रेरित किया।

➢ऋषभजयंती के दिन हुआ ऋषभदेव मंदिर का शिलान्यास–

पूज्य माताजी एवं हम सभी ने शिखरजी में नीचे सभी मंदिरों का दर्शन किया, तब मन में आए चिंतन के अनुसार उन्होंने आपस में विचार-विमर्श किया कि भगवान पार्श्वनाथ की इस धरती पर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का अस्तित्व होना भी अति आवश्यक है, जिससे प्रत्येक यात्री जैनधर्म की प्राचीनता से परिचित हो सके पुनः पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार वहाँ की बीसपंथी कोठी के पदाधिकारियों ने इस विषय में रुचि ली और चौबीस टोंक बाहुबली मंदिर में प्रवेश करते

प्रांगणमिदानीं रिक्तमासीत्, तत्र 27 मार्च 2003, ऋषभजयन्त्याः दिने मन्दिरस्य शिलान्यासः डाक्टर पन्नालालो जैन पापड़ीवाल–पैठण (महा.) निवासी (अध्यक्षः महाराष्ट्र प्रान्तीय तीर्थक्षेत्र समितेः, महामंत्री च शताष्ट फुट मूर्तिनिर्माणस्य न्यासस्य मांगीतुंगी) सपरिवारोऽकरोत्। पापड़ीवाल इत्यस्य परिवारस्य अर्थसौजन्येनैव तत्र मन्दिरस्य निर्माणं 9 फुट उच्चायाः मूर्तेश्च स्थापनाऽभवत्, यस्याः पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिसम्बर 2005 मासे मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा दिनात् सप्तमी पर्यन्तं संघस्थस्य पीठाधीशस्य क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य सान्निध्ये संपन्ना अभवत्।

डॉक्टर पापड़ीवाल शाश्वततीर्थे एतत्पुण्यं प्राप्नोत्, तस्य हेतवे सः पूज्यां मातरं समस्तं संघं च प्रति कृतज्ञता ज्ञापयति। वास्तवे तु एतत् तस्य जन्म–जन्मान्तरस्यैव पुण्यमस्ति, यत् सः शाश्वततीर्थे जिनमन्दिरस्य निर्माणं कारयित्वा मूर्ते विराजमानां कर्तुं पुण्यं प्राप्नोत्। ऋषभजयन्त्याः दिने सम्मेदशिखरे प्रथमबारमेव मातुः प्रेरणया भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्ती महोत्साहेन–शोभया चायोजिताभवत्, रथयात्रया च सह सहस्राष्ट कलशैर्भगवतोऽभिषेकोऽपि सम्पन्नोऽभवत्।

कुण्डलपुरे संघस्य पुनरागमनम्—**सम्मेदशिखरस्य सिद्धक्षेत्रस्याविस्मरणीयायाः तीर्थयात्रायाः पश्चात् पूज्या माता वयं च सर्वे 29 मार्च दिने पुनः कुण्डलपुरं प्रति विहारमकुर्म। 10 अप्रैल दिने 8.15 वादनसमये नन्द्यावर्तपरिसरे संघस्य मंगलं पादार्पणमभवत्।**

ही जो प्रांगण अभी खाली था, वहाँ 27 मार्च 2003 ऋषभदेव जन्मजयंती के दिन मंदिर का शिलान्यास डॉ. पन्नालाल जैन पापड़ीवाल-पैठण (महा.) (अध्यक्ष-महाराष्ट्र प्रांतीय तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महामंत्री-108 फुट मूर्ति निर्माण ट्रस्ट मांगीतुंगी) सपरिवार ने किया। डॉ. पापड़ीवाल परिवार के ही अर्थ सौजन्य से वहाँ मंदिर निर्माण एवं 9 फुट उत्तुंग पद्मासन मूर्ति स्थापित हुई, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिसम्बर 2005 मगशिर शु. 1 से सप्तमी तक में संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी के सानिध्य में सानन्द सम्पन्न हुई।

डॉ. पापड़ीवाल जी को शाश्वत तीर्थ पर जो यह पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है, इस हेतु वे पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। वास्तव में यह उनका जन्म-जन्मातर का पुण्य ही है, जो उन्हें शाश्वत तीर्थ पर जिनमंदिर बनाकर मूर्ति विराजमान करने का पुण्य प्राप्त हुआ। ऋषभजयंती के दिन सम्मेदशिखर में प्रथम बार माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती धूमधाम से मनाई गई तथा रथयात्रा के साथ-साथ 1008 कलशों से भगवान का अभिषेक भी हुआ।

➢कुण्डलपुर में संघ का पुनरागमन–

सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की अविस्मरणीय यात्रा के उपरांत पूज्य माताजी एवं हम सभी ने 29 मार्च को पुनः कुण्डलपुर की ओर मंगल विहार किया। 10 अप्रैल को 8.15 बजे नंद्यावर्त महल परिसर में संघ का मंगल पदार्पण हुआ।

दीपनगरस्य रेलवेमार्गेण आगच्छन्त्यः अपश्याम यत् तत्र ''दीपनगर कुण्डलपुर हाल्ट'' इत्यस्य सूचना पट्टः संलग्नोऽस्ति, दृष्ट्वा प्रसन्नताभवत् यत् पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठायाः अवसरे समागतस्य रेलमंत्रिणः श्रीनितीशकुमारस्यादेशानुसारेण एतत् कार्यं विहितं विद्यते। अस्य हाल्ट स्टेशनस्य किञ्चित् विस्तारिकरणमप्यभूत्।

कुण्डलपुरे पुनः प्रारब्धमभवत् महावीरजयन्त्याः आयोजनस्य कार्यम्–**अस्माकं सर्वेषां तीव्रभावनासीत् यत् महावीरप्रभोर्जन्मभूमौ तस्य जन्मजयन्ती प्रचुरधर्मोत्साहेनायोजिता भूयात्, अतो वयं मातरं पुनः–पुनः आग्रहमकुर्म यद् भवती शीघ्रमेव कुण्डलपुरं प्रति विहारं करोतु, फलस्वरूपं माताश्रीः सम्मेदशिखरात् विहारं कृत्वा कुण्डलपुरं समागत्य महावीरजयन्तीं व्यापकं रूपं प्रादात्। निर्णीतविचारानुसारेण तस्याः वृहत् पत्राण्यपि समितिः प्रकाशितानि कृत्वा सम्पूर्णे देशे प्रेषितान्यकरोत् पुनः 15 अप्रैल, चैत्र शुक्लत्रयोदश्यां कुण्डलपुरे महत्या प्रभावनयापूर्वकं महावीरजयन्त्याः कार्यक्रमः संपन्नोऽभवत्। यस्मिन् झुमरी– तलैया–नवादा–इस्लामपुर–हरिद्वार–कलकत्ता–औरंगाबाद लखनऊ आदिभ्यः स्थानेभ्यः अनेकमहानुभावाः समागच्छन् महान् च प्रभावनापूर्णः कार्यक्रमः सम्पन्नोऽभवत्। धर्मसभायाः पश्चात् रथयात्रा नालन्दापर्यन्तं गता, तु सम्पूर्णे एव मार्गे नागरिकेभ्यो रत्नानि मोदकाश्च वितीर्णाः अभवन्। सायं 4 वादन समये प्राचीन मन्दिरे भगवतो महावीरस्य 108 कलशैरभिषेकोऽभवत्। यस्मिन् मातुः समस्तस्य च संघस्य सान्निध्यमासीत्, पुनः नंद्यावर्तपरिसरे महावीर शिशुरान्दोलने आन्दोलितोऽभूत्।**

दीपनगर रेलवे लाइन के पास से आते हुए देखा कि वहाँ ''दीपनगर कुण्डलपुर हाल्ट'' का बोर्ड लगा है, देखकर प्रसन्नता हुई कि पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारे रेलमंत्री नितीश कुमार जी के आदेशानुसार यह कार्य किया गया है। इस हाल्ट स्टेशन का कुछ विस्तारीकरण भी हुआ है।

➢कुण्डलपुर में पुनः प्रारंभ हुआ महावीर जयंती मनाने का क्रम–

हम सभी की तीव्र भावना थी कि भगवान महावीर की जन्मभूमि पर उनकी जन्मजयंती खूब धूमधाम से मनाई जाए, अतः हम लोगों ने माताजी से बार-बार आग्रह किया कि आप शीघ्र ही कुण्डलपुर की ओर विहार करें, फलस्वरूप माताजी ने सम्मेदशिखर से विहार कर कुण्डलपुर पहुँचकर महावीर जयंती को व्यापक रूप प्रदान किया, निर्णीत विचारानुसार उसके पोस्टर भी समिति ने छपवाकर देश भर में भेज दिए थे, पुनः 15 अप्रैल, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को कुण्डलपुर में भारी प्रभावनापूर्वक महावीर जयंती का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें झुमरीतलैया, नवादा, इस्लामपुर, हरिद्वार, कलकत्ता, औरंगाबाद, लखनऊ आदि स्थानों से अनेकों महानुभाव पधारे और बहुत ही प्रभावनापूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। धर्मसभा के पश्चात् रथयात्रा नालंदा तक गई, तो पूरे रास्ते नागरिकों को रत्न एवं लड्डू वितरित किए गए। सायं 4 बजे प्राचीन मंदिर में भगवान महावीर का 108 कलशों से अभिषेक हुआ, जिसमें पूज्य माताजी एवं समस्त संघ का सानिध्य रहा, पुनः नंद्यावर्त परिसर में पालना झुलाया गया।

तीर्थक्षेत्रस्य परिवर्तनस्याधिकारो न कस्यापि–**पूज्यायाः मातुः तीर्थरक्षां प्रति समर्पिताः भावनाः परिलक्ष्य वास्तवे एताः पंक्तयो मह्यं बहु रोचन्ते–**

''दुर्गममार्गं सुगमं कर्तुमेव यथार्थकर्मठता विद्यते। वने मंगलं कृत्वा प्रासाद निर्माणं सत्या गुरुतास्ति।। तीर्थं नवतीर्थ निर्माणमेव सत्या सक्रियतास्ति, तीर्थस्योद्धारं न विधातुं मानवस्य निष्क्रियता विद्यते।''

माता सदैवैतदेव भाषते यत् तीर्थंकराणां भगवतां कल्याणकभूमयस्तु इन्द्रैरपि पूज्या वर्तन्ते, यस्य क्षेत्रस्य रजांसि देवाः अपि स्वमस्तके धारयन्ति, एवंभूतानां तीर्थक्षेत्राणां भूमीनां विकासस्य संरक्षणस्य च दायित्वं यदि वर्तमाने तीर्थक्षेत्र समित्यै समर्पितमस्ति, तु सावगच्छेत् यत् तीर्थक्षेत्राणि कस्यापि पैतृकसंपत्तयो न सन्ति, परन्तु समस्तस्यैव जैनसमाजस्य सुरक्षितन्यासोऽस्ति। अतएव कस्यापि हस्ते तीर्थपरिवर्तनस्याधिकारो नास्ति। कामपि संस्थाविशेषा जनविशेष वा जनतायाः श्रद्धाभावस्योचितं समादरं विधाय प्राचीनकालात् समागतानां तीर्थक्षेत्राणां विकासस्य संरक्षणस्य दायित्वं स्वीकुर्यात्।

मुनिसुव्रतजन्मभूमौ जन्मकल्याणकम्–**जिनशासनस्य विंशतितमस्तीर्थंकर भगवान् मुनिसुव्रतनाथो विहार प्रान्तस्य राजगृहीतीर्थे जन्म गृहीत्वा तं सनाथमकरोत् परन्तु वर्तमाने**

➢तीर्थक्षेत्रों को बदलने का अधिकार किसी को नहीं है–

पूज्य माताजी की तीर्थरक्षा के प्रति समर्पित भावनाओं को देखकर वास्तव में ये पंक्तियाँ मुझे बड़ी ही सुन्दर लगती हैं–

दुर्गम पथ को सुगम बनाना ही सच्ची कर्मठता है।
जंगल में मंगल कर महल बनाना सच्ची गुरुता है।।
तीरथ को नवतीर्थ बनाना ही सच्ची सक्रियता है।
तीरथ का उद्धार न करना मानव की निष्क्रियता है।।

माताजी सदा यही कहती हैं कि तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियाँ, जो कि इन्द्रों द्वारा भी पूज्य हैं, तथा जहाँ की पवित्र रज देवता भी अपने मस्तक पर धारण करते हैं, ऐसी महान भूमियों के विकास एवं संरक्षण का दायित्व यदि वर्तमान में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सौंपा गया है, तो उसे समझना चाहिए कि तीर्थक्षेत्र किसी की बपौती नहीं हैं वरन् सम्पूर्ण जैनसमाज की धरोहर हैं, इसलिए किसी को भी तीर्थ बदलने का अधिकार नहीं है। किसी भी संस्था अथवा व्यक्ति विशेष को जनता के श्रद्धाभाव का उचित समादर करते हुए प्राचीनकाल से चले आ रहे तीर्थों के संरक्षण एवं विकास का ही दायित्व संभालना चाहिए।

➢मुनिसुव्रतनाथ जन्मभूमि में जन्मकल्याणक–

जिनशासन के 20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ ने बिहार प्रांत के राजगृही तीर्थ पर जन्म लेकर उसे सनाथ किया था लेकिन वर्तमान में वह भगवान महावीर की प्रथम देशना स्थली के नाम

तत् भगवतो महावीरस्य प्रथमदेशना स्थल्याः नाम्ना विख्यातमस्ति। स्यात् कोऽपि जानाति यत् तत्तीर्थं भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूर्विद्यते।

पूज्यायाः मातुः पावनां प्रेरणां प्राप्य यदा तस्य स्थानस्य कार्यकर्तारः शतानां वर्षाणामितिहासे प्रथमबारं भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मकल्याणक महोत्सवः 28 अप्रैल 2003 दिने, वैशाख कृष्ण द्वादश्यामैतिहासिकरूपेणायोजयन्, तु दूर–दूरात् समागताः महानुभावाः, स्थानीयाः समीपस्थाश्च श्रद्धालवोऽपि तस्य विषयेऽजानन्, अस्मिन्नवसरे राजगृह्यां स्थिते प्राचीने लालमन्दिरे भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य 108 कलशैर्महाभिषेकः सम्पादितोऽभूत्। पूज्या माता, अहं, क्षुल्लकमोतीसागरश्च तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमिषु विस्तृतां विचाराभिव्यक्तिमकुर्म। तत्पश्चाच्च कुण्डलपुरात् उद्घाटितस्य ''भगवान् महावीर ज्योतिः'' **रथस्य राजगृही तीर्थे प्रवर्तनमभवत्। यस्मिन् स्थानीयसमाज सहिताः आगन्तुकाः यात्रिणो महानुभावाः सोत्साहं भागमगृह्णन्।**

भगवतो महावीरस्य वेदिकायाः खननविधिः–**पावापुर्याः तन्मनोहर पवित्रं च स्थानं, यस्मात् तीर्थात् शासनपतिः भगवान महावीरो अद्यतः 2531 वर्षाणि पूर्वं निर्वाणधाम प्राप्नोत् यत्र च भगवतो मोक्षगमनस्य पश्चात् इन्द्रो भगवतश्चरणे स्थापितेऽकरोत् यश्च जैनत्वस्य गरिमा विद्यते।**

माताश्रीः सदैव भाषते वयं सदैव स्वतीर्थंकराणां जन्मभूमीनां निर्वाणभूमीनां च सुरक्षाकर्तुं निजप्राणैरपि संकल्पिताः भवेम। अद्यास्माकं सुप्तावस्थावशादेव अनेकतीर्थक्षेत्राणि अस्माकं हस्तेभ्योऽहृतानि अभवन्। पंचमकालस्यान्तपर्यन्तं विद्यमानं तं सत्यं दिगम्बर जैनधर्मं प्रति

से विख्यात है। शायद ही कोई जानता हो कि वह भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि भी है।

पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा प्राप्त कर जब वहाँ के कार्यकर्ताओं ने सैकड़ों वर्षों के इतिहास में प्रथम बार भगवान मुनिसुव्रतनाथ का जन्मकल्याणक महोत्सव 28 अप्रैल 2003, वैशाख बदी द्वादशी को ऐतिहासिक रूप में मनाया, तो दूर-दूर से पधारे महानुभावों, स्थानीय एवं आसपास के श्रद्धालुओं ने भी उसके बारे में जाना। इस अवसर पर राजगृही स्थित प्राचीन लाल मंदिर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ का 108 कलशों से महाभिषेक सम्पन्न किया गया तथा पूज्य माताजी, मैंने एवं संघस्थ क्षुल्लक मोतीसागर जी ने तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों पर विस्तृत प्रकाश डाला। उसके पश्चात् कुण्डलपुर से उद्घाटित **''भगवान महावीर ज्योति''** का राजगृही में प्रवर्तन किया गया, जिसमें स्थानीय समाज सहित आगन्तुक यात्री महानुभावों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

➢भगवान महावीर वेदी की खनन विधि–

पावापुरी का वह मनोरम एवं पवित्र स्थल, जहाँ से शासनपति भगवान महावीर ने आज से 2531 वर्ष पूर्व निर्वाणधाम को प्राप्त किया, जहाँ प्रभु के मोक्षगमन के पश्चात् इन्द्र ने प्रभु के चरण स्थापित किए, जो जैनत्व की शान है।

माताजी सदैव कहती हैं कि हमें अपने भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं निर्वाणभूमियों की सुरक्षा हेतु प्राणप्रण से संकल्पित रहना चाहिए। आज हमारी सुप्ततावश ही अनेक तीर्थ हमारे हाथों से निकल गए हैं, पंचमकाल के अन्त तक विद्यमान रहने वाले उस सच्चे दिगम्बर जैनधर्म के प्रति अपना

स्वसर्वस्वस्य बलिदानं कृत्वा वयं समर्पिताः भवेम। तस्मै च वयं समये–समये जिनमन्दिराणां जिनप्रतिमानां च निर्माणाय, जीणोद्धाराय विकासाय च सततं संलग्नाः भवेम। मातुश्चैताः प्रेरणाः प्राप्य विहारतीर्थन्यासमण्डलस्य पदाधिकारिणः पावापुर्यां भगवतो महावीरस्यैकस्य कमलाकारस्य सुन्दरस्य मन्दिरस्य निर्माणमकारयन्। यस्य च निर्मापनकारो महानुभावः श्री विजयकुमारो जैनः दरियागंज–दिल्ली महतः पुण्यस्य भागी वर्तते। कोटीनां चाशीर्वादानां पात्रमस्ति। तस्य महावीरस्य मन्दिरस्य वेदिकायाश्च खननविधिः भूमिशोधनं च पूज्यायाः मातुः संघसान्निध्ये 6 मई 2003, वैशाख शुक्ल पंचम्यामभवत्। पुनः 7 मई दिने च तस्मिन् पाण्डुकशिला परिसरे भगवतो महावीरस्य वेदिकायाः शिलान्यासो कारितः। श्री रामगोपाल, अजय जैनौ वेदिकायाः शिलान्यासं कृत्वा पूज्यायाः मातुराशीर्वादं प्राप्तवन्तौ। महतीं च प्रसन्नतामन्वभवताम्। पुनः माताश्रीः वयं च कुण्डलपुरं प्रति विहारमकुर्म।

कलकत्तानगरस्य प्रतिनिधिमण्डलं कुण्डलपुरे–**18 मई 2003, ज्येष्ठ कृष्ण तृतीयायां वयं कुण्डलपुरे एव विराजमानाः आस्म। मध्याह्ने 3 वादनसमये कलकत्तादिगम्बर–जैनसमाजस्य प्रतिनिधिमण्डलरूपेण 4–5 महानुभावाः डा. चिरंजीलाल बगड़ा, श्री भागचन्द्रः, श्री पवन कुमारः, श्री कैलाशचन्द्र जैनश्च इत्यादयः समागच्छन्। पूज्यां मातरं च श्रीफलं समर्प्य बहु आग्रहपूर्णं निवेदनं कलकत्ता नगरं पादार्पणस्याकुर्वन्। पूज्यां विराट्व्यक्तित्वसंपन्नां च मातरं प्रति स्वभक्तिभावं प्रदर्शयन्तस्तेऽकथयन् यत् मातः! यदि चतुर्मास संभावना**

सर्वस्व न्योछावर कर हमें समर्पित रहना है और उसके लिए हमें समय-समय पर जिनमंदिर-जिनप्रतिमा के निर्माण, जीर्णोद्धार व विकास में सतत संलग्न रहना चाहिए। माताजी की इन्हीं प्रेरणाओं को प्राप्तकर बिहार तीर्थ न्यास बोर्ड के पदाधिकारियों ने पावापुरी में भगवान महावीर का एक कमलाकार सुन्दर मंदिर का निर्माण करवाया, जिसे निर्मापित करने वाले महानुभाव श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज, दिल्ली महान पुण्य के भागी और कोटि-कोटि आशीर्वाद के पात्र हैं। उस महावीर मंदिर एवं वेदी की खनन विधि एवं भूमि शोधन पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में 6 मई 2003, वैशाख शु. 5 को किया गया, पुनः 7 मई को उस पाण्डुक शिला परिसर में भगवान महावीर की वेदी का शिलान्यास कराया गया। श्री रामगोपाल जी एवं अजय जी ने वेदी का शिलान्यास कर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया और खूब प्रसन्नता का अनुभव किया पुनः माताजी व हम सभी ने कुण्डलपुर की ओर प्रस्थान किया।

➢कलकत्ता का प्रतिनिधिमण्डल कुण्डलपुर में–

18 मई 2003, ज्येष्ठ कृ. 3 को हम लोग कुण्डलपुर में ही विराजमान थे, मध्यान्ह 3 बजे कलकत्ता दिगम्बर जैन समाज के प्रतिनिधिमण्डल के रूप में 4-5 महानुभाव डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा, श्री भागचंद जैन, श्री पवन कुमार जैन, श्री कैलाशचंद जैन इत्यादि आए और पूज्य माताजी को श्रीफल चढ़ाकर कलकत्ता पधारने का खूब आग्रहपूर्ण निवेदन कर माताजी के विराट व्यक्तित्व के प्रति अपना भक्तिभाव प्रदर्शित करते हुए कहा कि माताजी! यदि चातुर्मास संभव न हो तो बाद

नास्ति तु पश्चादेव कलकत्ता नगरेऽवश्यमेवागन्तव्यम्। कुण्डलपुरस्य कार्याण्यवलोक्यैय ते विशेषप्रभाविताः अभवन्। अवदन् च अद्य समाजे सर्वतो भवत्याः एव सक्रियतायाः यशोगानं भवति। यस्मात् समयात् वयं कलकत्ता नगरात् प्रस्थिताः तस्मात् कालात् सम्पूर्णेषु स्थानेषु मातु प्रशंसां श्रृण्वन्तः आगच्छाम। तस्मिन् समये माताश्रीः भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य विकासाय स्वसंकल्पं स्पष्टं कुर्वन्ती सर्वानुपस्थितान् कार्ये समर्पणं कर्तुं प्रेरणामदात्। कलकत्तावासिनां हृदये मस्तिस्के च 1963 वर्षस्य ताःस्मृतयोऽंकिताः विद्यन्ते, यदा माता स्वार्यिका संघ सहिता तत्र चतुर्मासमकरोत्। ताश्चस्मृतीः पुनः जीविताः कर्तुं प्रतिनिधिमण्डलस्य सर्वे सदस्याः मातरं पुनः कलकत्ता नगरे समागत्य तत्र युवाशक्तिं, नारीशक्तिं समाजस्य समग्रां शक्तिं च संघटितां कर्तुं पुनः पुनः प्रार्थयन्।

राष्ट्रपतिः अब्दुलकलामोऽप्यागत्य सुखमन्वभवत्–**भारतस्य प्रथमो नागरिको राष्ट्रपतेः डा. ए.पी.जे. अब्दुलकलामस्य त्रिदिवसीयायाः विहार यात्रायाः मध्ये भगवतो महावीरस्य निर्वाणभूमौ पावापुर्यां तीर्थे 30 मई 2003, ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्यायामागमनमभवत्। यतो हि कतिचित् दिनेभ्यः श्वेताम्बरजैनसमाजस्य पदाधिकारिणः श्री सुनील कुमारस्य जैनस्य सुचन्त्याः आग्रहो आसीत् यत् मातः! भवती तस्मिन् कार्यक्रमे स्वसान्निध्यं अवश्यमेव प्रदायास्मान् गौरवान्वितान् करोतु। अतस्तस्य विशेषेणाग्रहेण माता तस्मिन् कार्यक्रमे पदार्पणस्य स्वीकृतिमदात्। मध्याह्ने एकवादनसमये दिगम्बरैः श्वेताम्बरैश्च प्रतिनिधिभिः सह पावापुर्याः प्रसिद्धजलमन्दिरे अर्थात्**

में सही, किन्तु कलकत्ता आना अवश्य पड़ेगा। कुण्डलपुर का कार्य देखकर ये लोग अत्यन्त प्रभावित हुए और बोले कि आज समाज में चारों ओर आपकी ही कर्मठता का यशगान हो रहा है, हम जबसे कलकत्ता से चले हैं, तब से लेकर यहाँ तक सबके मुंह से माताजी की खूब प्रशंसा सुनते आए हैं। उस समय पूज्य माताजी ने भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के विकास हेतु अपना संकल्प स्पष्ट करते हुए सभी को इस कार्य में समर्पण हेतु प्रेरित किया। कलकत्तावासियों के मस्तिष्क में सन् 1963 की वह स्मृतियाँ अंकित हैं, जब पूज्य माताजी ने अपने आर्यिका संघ सहित वहाँ चातुर्मास किया था। उन्हीं स्मृतियों को पुनर्जीवित करने हेतु प्रतिनिधिमण्डल के सभी सदस्यों ने पूज्य माताजी से पुनः कोलकाता में आकर वहाँ की युवा शक्ति, नारी शक्ति एवं समाज की समग्र शक्ति को संगठित करके उन्हें पुनर्चेतना प्रदान करने हेतु हार्दिक प्रार्थना की थी।

➢राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को भी आकर अच्छा लगा–

भारतवर्ष के प्रथम नागरिक-राष्ट्रपति डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम का तीन दिवसीय बिहार यात्रा के मध्य भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी तीर्थ पर 30 मई 2003, ज्येष्ठ कृ. अमावस को आगमन हुआ। चूँकि कई दिनों से श्वेताम्बर जैन समाज के पदाधिकारी श्री सुनील कुमार जैन सुचंती का आग्रह था कि माताजी! आप उस कार्यक्रम में अपना सानिध्य अवश्य प्रदान कर हमें गौरवान्वित करें अतः उनके विशेष आग्रह पर माताजी ने उस कार्यक्रम में पधारने की स्वीकृति दे दी। मध्यान्ह 1 बजे दिगम्बर व श्वेताम्बर प्रतिनिधियों के साथ पावापुरी के प्रसिद्ध जलमंदिर अर्थात्

भगवतो महावीरस्य निर्वाणस्थल्याः दर्शनं कृत्वा राष्ट्रपतिः ग्रामस्य मन्दिरस्य दर्शनार्थमागच्छत्। तत्र च प्रवचनसभागारे आयोजितायां सभायां सर्वप्रथमं महता विनयभावेन राष्ट्रपति महोदयः पूज्यायाः मातुश्चरणयोः श्रीफलं समर्प्याशीर्वादं प्राप्नोत्। बहुप्रसन्नश्चाभवत्। तस्मिन् समये पूज्या माता राष्ट्रपतेः शाकाहार रूपेणाहिंसा प्रवृत्तिं बहु प्राशंसत्। आशीर्वादप्रवचने सभामकथयत् यत्–अयं महतो गौरवस्य आत्मतुष्टेश्च विषयोऽस्ति यत् अहिंसायाः अवतारस्य भगवतो महावीरस्य अहिंसा सिद्धान्तमंगीकुर्वन् भारतवर्षस्य प्रथमस्य नागरिकस्य राष्ट्रपतेः रूपेण भवान् पूर्णतया। शाकाहारीजीवनस्य परिपालकोऽसि, जीवदयायाः अस्या भावनाहेतुः अहम् तुभ्यं आशीर्वादं ददामि तथा च इयमेव मंगलकामनां करोमि यत् भगवतः महावीरस्य सर्वोदयशासनस्य छत्रछाया सदैव तव मस्तकोपरि भूयात् एवं मातृभूमेः निश्छल सेवां कुर्वतः तव यशः दिग्दिगंत व्यापि प्रसरतु।

महामहिमो राष्ट्रपतिर्मातुराशीर्वादेन बहुप्रभावितोऽभवत्। अवस्थितश्च भूत्वा पूज्यायाः मातुः पक्षतः विशेषरूपेणावलोकनं कुर्वन् स्व अंग्रेजी भाषायाः उद्बोधने अकथयत् यदद्य यदाहं जलमन्दिरस्य दर्शनमकरवं तु एतद्विचिन्त्य यत् कदापि अस्यामेव भूमौ भगवतो महावीरस्य चरण न्यासोऽभवत् अत्यन्तमेव रोमांचितोऽभवम्। येन प्रकारेण सरोवरे जलं वर्धते तथैव अस्मिन् कमलानि अपि अधिकमुपरि उत्तिष्ठति, तेनैव प्रकारेण वयमपि स्वविचारान् ऊर्ध्वगामिनः कुर्मः। स्व श्वासेनसह वयमपि अन्तर्मुखीं कुर्याम समस्तान् च अन्तःस्थितान् दुर्गुणान् वहिरागतेन श्वासेन सह वहिः कुर्याम। सन्ताः स्वसाधनया इयमेव समस्तान् जनान्

भगवान महावीर की निर्वाणस्थली का दर्शन करके डॉ. कलाम 'गांव मंदिर के दर्शनार्थ पधारे और वहाँ के प्रवचन हाल में आयोजित सभा में सर्वप्रथम अत्यन्त विनम्र भाव से राष्ट्रपति जी ने पूज्य माताजी के चरणों में नारियल चढ़ाकर आशीर्वाद ग्रहण किया और बहुत प्रसन्न हुए। उस समय पूज्य माताजी ने राष्ट्रपति जी की शाकाहार रूप अहिंसात्मक प्रवृत्ति की हार्दिक प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद प्रवचन में कहा कि–यह महान गौरव एवं आत्मसंतुष्टि का विषय है कि अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के सिद्धान्तों को आत्मसात करते हुए भारतवर्ष के प्रथम नागरिक अर्थात् राष्ट्रपति के रूप में आप पूर्णतया शाकाहारी जीवन का परिपालन करने वाले हैं, जीवदया की इस भावना हेतु आपके लिए मेरा बहुत-बहुत हार्दिक आशीर्वाद है तथा यही मंगलकामना है कि भगवान महावीर के सर्वोदयी शासन की छत्रछाया सदैव आप पर बनी रहे एवं मातृभूमि की निश्छल भाव से सेवा करते हुए आपका यश दिग्दिगन्त व्यापी बने।

महामहिम राष्ट्रपति पूज्य माताजी के आशीर्वचन से अत्यन्त प्रभावित हुए एवं खड़े होकर पूज्य माताजी की ओर से विशेष रूप से अवलोकन करते हुए अपने अंग्रेजी उद्बोधन में कहा कि आज जब मैंने जलमंदिर के दर्शन किए, तो यह सोचकर कि कभी इसी भूमि पर स्वयं भगवान महावीर चले होंगे, मैं अत्यन्त रोमांचित हो गया। जिस प्रकार जैसे-जैसे सरोवर में पानी बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे उसमें खिले कमल और ऊपर उठते जाते हैं, उसी प्रकार हमें भी अपने विचारों को ऊर्ध्वगामी बनाना है, हम शांति को अपनी सांस के साथ अंदर ले जाएं और समस्त हिंसा, अन्याय एवं बुराइयों के विचारों को बाहर आने वाली सांस के साथ बाहर निकाल दें। आप जैसे संत अपनी साधना से

प्रसन्नतां प्रददातु। मम मंगलकामना वर्तते। पुनः अहं राष्ट्रपतये भगवतो महावीरस्य चित्रस्य प्रतीकमुपाहरम्। संघस्थो ब्र. रवीन्द्रः राष्ट्रपतये मातुः चित्रं तल्लिखितं च साहित्यमुपाहरत्।

राजगृह्यां भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य मन्दिरस्य शिलान्यासः–**1 जून 2003, ज्येष्ठ कृष्णप्रतिपदादिने पूज्यायाः मातुः संघ सान्निध्ये राजगृह्याः लालमन्दिरस्य परिसरे भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जिनमन्दिरस्य शिलान्यासः समस्तविधिविधानपूर्वकमभवत्। यस्मिन् उपस्थिताः महानुभावाः एवं मातुः तीर्थं प्रति अविच्छिन्नां भक्तिं मन्यमानाः अस्य कार्यस्य बहुशः प्रशंसामकुर्वन्।**

वस्तुतो मात्रा विहितं प्रत्येककार्यमैतिहासिकं विद्यते। यतः सा सर्वदैव तीर्थंकराणां सर्वोदयि सिद्धान्तानां प्रसारको भवति। पुनस्ते तीर्थंकराः भगवन्तः सम्यग्दर्शनस्य सम्यग्ज्ञानस्य सम्यक्चारित्रस्य च महती शिक्षामुपादिशन्। ते उपादिशन् यत् भेद–विज्ञानप्रकाशेन आत्मनि संलग्ना समस्तकर्मकालुष्यं विनष्टं कृत्वा शुक्लध्यानेन आत्मानं पूर्णं विजयिनं कर्तुं शक्यते। एवं भूतानां तीर्थंकराणां भगवतां वाण्याः ज्ञानं प्राप्तुं दिगम्बर जैन सम्प्रदायस्य प्राचीनग्रन्थानां तथ्यानि प्रकाशितव्यानि येन समस्ताः भ्रान्तधारणाः विनष्टाः स्युः।

माता तीर्थं निर्मितं नाकरोत्, सुरक्षितमकरोत्–**पूज्यया मात्रा कृतस्यास्य कार्यस्याद्य सर्वत्र प्रशंसायाः कारणं अस्याः वार्तायाः द्योतकमस्ति यत् सा कुण्डलपुरनामकं किमपि नवं तीर्थं**

समस्त जनता को खुशी प्रदान करें, यही मेरी मंगल भावना है। पुनः मैंने राष्ट्रपति जी को भगवान महावीर के चित्र का प्रतीक चिन्ह प्रदान किया एवं संघस्थ ब्र. रवीन्द्र जी ने डॉ. कलाम को माताजी द्वारा लिखित साहित्य व चित्र भेंट किया।

➢राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास–

1 जून 2003, ज्येष्ठ शु. एकम को पूज्य माताजी एवं संघ सानिध्य में राजगृही के लाल मंदिर परिसर में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास समस्त धार्मिक विधि-विधानपूर्वक किया गया, जिसमें अनेक महानुभावों ने इसे माताजी की तीर्थ के प्रति अटूट भक्ति मानते हुए इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वस्तुतः पूज्य माताजी द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य ऐतिहासिक है क्योंकि वह सदैव तीर्थंकरों के सर्वोदयी सिद्धान्तों को प्रसारित करने में ही संलग्न हैं। उन तीर्थंकर भगवन्तों ने सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप महान विज्ञान का उपदेश दिया है, उन्होंने बताया है कि भेद-विज्ञानरूपी मिसाइल से आत्मा पर लगी हुई समस्त कर्मकालिमा का विनाश करके शुक्लध्यान द्वारा आत्मा को पूर्ण विजयी बनाया जा सकता है, ऐसे तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी का ज्ञान प्राप्त करने हेतु दिगम्बर आम्नाय के प्राचीन ग्रंथों के तथ्यों को प्रकाश में लाना चाहिए, जिससे समस्त भ्रांत धारणाएँ मिट सकें।

➢माताजी ने तीर्थ को बनाया नहीं, बचाया है–

पूज्य माताजी द्वारा किए गए इस कार्य की आज सर्वत्र प्रशंसा का होना इस बात का द्योतक

स्थापयितुं सकंल्प नाकरोत् किन्तु या शताब्दीभ्यः निर्मिताया भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिरासीत् तां विस्मर्तुं यदा प्रयासोऽभवत् तदा सा तस्मै पुनर्जीवनं दातुं प्रेरणां प्रदाय प्राचीनं तीर्थं नवं रूपं दत्वा तं सुरक्षितमकरोत्। अद्य तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमयस्तु उपेक्षिताः सन्ति, तेषां च नामभिरतिशयक्षेत्राणि सहस्रैः लक्षैश्च दीपकैः शोभायमानानि वर्तन्ते, अयं कस्य प्रकारस्य न्यायोऽस्ति? इदं तु सत्यं, यत् अतिशयक्षेत्राण्यपि पूज्यानि सन्ति, परन्तु पूज्यायाः मातुः कथनमस्ति जन्मभूमीनामेतामुपेक्षां प्रति समाजः इदानीं जागृतो भवेत्। प्राथमिकतया सह सर्वे श्रावकाः तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां विकासस्योद्यमं कुर्युः। यतोहि जन्म ग्रहणं विना न तु अतिशयक्षेत्राणि भवितुं शक्नुवन्ति न च निर्वाणभूमयो भवितुमर्हन्ति। तीर्थंकराणां जन्मभूमयोऽस्माकं संस्कृतेः उद्गमभूमयः सन्ति। तासां सुरक्षा स्व संस्कृतेः सुरक्षा विद्यते।

जम्बूद्वीपे ऋषभदेवपञ्चकल्याणकं विंशतीनां च विद्यमानां तीर्थंकराणां स्थापना–**पूज्यायाः मातुः पावनप्रेरणया दिल्लीनगर्याः श्रावकायाः भक्ताया श्रीमत्या शकुन्तलाया धर्मपत्नी श्री रघुनाथ– प्रसादस्य गुजरावालाटाऊन दिल्ली निवासिन्याः, यतो तत् भगवतः ऋषभदेवस्य जिनमन्दिरस्य टिकैतनगरस्य च श्रेष्ठिनः श्री प्रद्युम्नकुमारस्य सौजन्येन** ''विद्यमानविंशतितीर्थंकरस्य जिनमन्दिरस्य'' **निर्माणमभवत्। यस्य पंचकल्याणकप्रतिष्ठा वैशाखशुक्लैकादशी दिनात् वैशाखशुक्लपूर्णिमा पर्यन्तं पूज्यायाः मातुः शुभाशीर्वादेन संघस्थस्य पीठाधीशस्य क्षुल्लक–**

है कि उन्होंने कुण्डलपुर नाम के किसी नए तीर्थ को बनाने का संकल्प नहीं लिया वरन् सदियों से बसी हुई जो भगवान महावीर जन्मभूमि थी, उसे भुलाने का जब प्रयास किया गया तब उन्होंने इसको पुनर्जीवन प्रदान करने की प्रेरणा मात्र देकर प्राचीन तीर्थ को नया रूप देकर उसे बचाया है। आज तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियाँ तो उपेक्षित पड़ी हैं और उनके नाम के अतिशयक्षेत्र हजारों-लाखों दीपकों से शोभायमान हो रहे हैं, यह किस प्रकार का न्याय है? यह सही है कि अतिशय क्षेत्र भी पूज्य हैं पर माताजी का कहना है कि जन्मभूमियों की इस उपेक्षा के प्रति समाज को अब जागृत होना चाहिए। प्राथमिकता के साथ सभी श्रावकों को तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास का उद्यम करना चाहिए क्योंकि जन्म लिए बिना न अतिशय क्षेत्र बन सकते हैं और न निर्वाणभूमियाँ बन सकती हैं। तीर्थंकर जन्मभूमियाँ हमारी संस्कृति की उद्गम स्थलियाँ हैं, उनकी सुरक्षा अपनी संस्कृति की सुरक्षा है।

➢जम्बूद्वीप में ऋषभदेव पंचकल्याणक एवं बीस विद्यमान तीर्थंकर स्थापना–

पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से दिल्ली के श्रावकभक्त श्रीमती शकुन्तला जैन ध.प. श्री रघुनाथप्रसाद जैन-गुजरावाला टाउन, दिल्ली के सौजन्य से भगवान ऋषभदेव जिनमंदिर एवं टिकैतनगर (बाराबंकी) के श्रेष्ठी श्री प्रद्युम्न कुमार जी के द्वारा **''विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनमंदिर''** का निर्माण किया गया, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा वैशाख शु. 11 से वैशाख शु. 15, 12 मई से 17 मई 2003 तक पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद से संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

मोतीसागरस्य सान्निध्ये अभवत्। सहैव नूतन मन्दिराणां शिखरेषु कलशारोहणं ध्वजारोहणं चाभवत्।

नवग्रह शान्तिमन्दिरस्य प्रतिमानां पंचकल्याणकम्–**दिनांकात् 5 जुलाई दिनात् 9 जुलाई 2003 पर्यन्तं आषाढ़ शुक्ला षष्ठी तिथेः दशमी पर्यन्तं आरा निवासी श्री ज्ञानचन्द्रो जैनः तत्पत्नी च सौभाग्यवती शशिलता जैना सम्पूर्णेन समाजेन सह मिलित्वा कुण्डलपुरे नवग्रहस्य नवानां तीर्थंकर प्रतिमानां लघुपंचकल्याणकं प्रभावनया सह संपन्नमकुरुताम्। नवैस्तीर्थंकर–भगवद्भिः समन्विते सुन्दरे कमले विराजमानाः मनोज्ञाः मूर्तीः दृष्ट्वा एकवार तु चरणनि स्तब्धान्येव भवन्ति, तत्र चोपविश्य स्वग्रहाणां शान्तिहेतवे तेषां प्रभूणां भजनस्येच्छा प्रकटयति। सर्वग्रहारिष्टनिवारकं मन्दिरमिदं भारतस्य प्रथममद्भुतं च मन्दिरं विद्यते।**

अष्टमीचतुर्दश्यां हरितवनस्पतीनां त्यागे नैनागमाज्ञा–**21 जुलाई 2003 दिने श्रावण कृष्णाष्टम्यासीत्। पूज्यामाता आहार चर्यायाः पश्चात् यदा समागत्योपविष्टा त्वहमकस्मात् मातरं प्रश्नमपृच्छम्, मातः! किं भवती पञ्चाशत्वर्षेभ्यः एवाष्टम्यां चतुर्दश्यां चान्नस्य त्यागमकरोत्? तदा साऽव्रवीत् यत् वाढम, एकदाऽहं क्षुल्लिकावस्थायां अष्टमीदिने आहारे हरितशाकं फलानि च गृहीत्वाऽऽगच्छम्। तु कश्चित् शोधक श्रावकः हरितभक्षणे विरोधात्मकं पक्षमदर्शयत्। तदाहमाचार्यं देशभूषणमकथयम्। तु सोऽव्रवीत् अन्यासु सप्तमी–नवम्यादि–तिथिषु हरित भक्षणेन किं अभक्ष्यभक्षणस्य दोषोऽस्ति? यदि नास्ति तु पर्वणि एतत्कथं**

जी के सानिध्य में हुई, साथ ही नूतन जिनमंदिरों पर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण भी किया गया।

➢नवग्रहशांति मंदिर की प्रतिमाओं का पंचकल्याणक–

दिनाँक 5 जुलाई से 9 जुलाई 2003, (आषाढ़ शु. षष्ठी से दशमी) तक आरा निवासी श्री ज्ञानचंद जैन एवं उनकी धर्मपत्नी सौ. शशिलता जैन ने सम्पूर्ण समाज के साथ मिलकर कुण्डलपुर में नवग्रह की 9 तीर्थंकर प्रतिमाओं का लघु पंचकल्याणक प्रभावना के साथ सम्पन्न किया। 9 तीर्थंकर भगवन्तों से समन्वित सुन्दर कमल पर विराजमान मनोज्ञ मूर्तियाँ देखकर एक बार तो कदम ठिठक ही पड़ते हैं और वहाँ बैठकर स्वतः अपने ग्रहों की शांति हेतु उन प्रभुवर को भजने की इच्छा प्रकट हो उठती है। सर्वग्रह अरिष्ट निवारक यह नवग्रहशांति जिनमंदिर भारत का प्रथम एवं अनूठा जिनमंदिर है।

➢अष्टमी-चतुर्दशी को हरी का त्याग आगम आज्ञा नहीं–

21 जुलाई 2003 को श्रावण वदी अष्टमी थी, पूज्य माताजी आहारचर्या के पश्चात् जब आकर बैठीं, तो मैंने अचानक माताजी से प्रश्न किया कि माताजी! क्या आपने पचास वर्षों से ही अष्टमी-चतुर्दशी को अन्न का त्याग कर रखा है? तब उन्होंने बताया कि हाँ, एक बार मैं क्षुल्लिकावस्था में अष्टमी को आहार में हरी सब्जी और फल लेकर आई, तो किसी सुधारक श्रावक ने हरी खाने पर विरोधात्मक रूख दिखाया, तब मैंने आचार्य श्री देशभूषण महाराज से कहा, तो वे कहने लगे कि अन्य (सप्तमी, नवमी आदि तिथि) दिनों में हरी खाने से क्या अभक्ष्य का दोष है? यदि नहीं, तो पर्व

कुर्वन्ति? इयं सर्वा शोधकानां विचारधारा वर्तते। नैवागमाज्ञा। अतः प्राचीन गुरुपरम्पराया शास्त्रानुसारेण च अष्टमी–चतुर्दश्यामभक्ष्यपदार्थानां त्यागं कृत्वा शीतशाकानां भक्षणे न कोऽपि दोषो विद्यते। पश्य! आचार्य शान्तिसागरस्य परम्परायाः सर्वे साधवः अष्टम्यां चतुर्दश्यां च हरितफलानि गृहणन्ति तथैव अहमपि तु गृह्णामि। यदि तस्मिन् दोषोऽस्ति तु सप्तमी–नवम्यादितिथिषु हरितशाकानि फलानि च न गृह्णीयानि सन्ति।

तीर्थंकरजन्मभूमिविधानं मह्यं तीर्थंकरभक्तेरनुपमध्येयोऽभवत्–**पूज्या माता ज्ञानमती यत्र सततं तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां विकासेऽग्रसरा विद्यते, तत्रैव तस्यास्तीव्रोच्छाऽऽसीत् यत् एकस्य** ''तीर्थंकरजन्मभूमि विधान'' **स्यापि रचना भवितव्या। यस्य कार्यक्रमेण भक्तिगंगाया–मवगाहन कर्तारः जनाः सरलभाषायां तीर्थंकराणां जन्मभूमिविषये तेषां चैतिहासस्य ज्ञानं प्राप्नुयुः। अतो माता मह्यं एतद्विधानं रचयितुं प्रेरणां प्रादात्। मातुराज्ञयाहं प्रभुं महावीरं मातरं च नत्वा तस्य विधानस्य रचनां प्रारभे। तदा तु पश्यन् एवं प्रभुकृपया मातुश्चाशीर्वादेन सा रचना पूर्णतागृह्णात्। तच्च जन्मभूमि विधानं धर्मवत्सलेभ्यः श्रावकेभ्यस्तु आराधनायाः अनुपमौ माध्यमोऽभूदेव मह्यं तु तीर्थंकर प्रभुभक्तेरनुपमोमाध्यमोऽजायत्। मानसिक एकाग्रतया सहैव अहमपूर्वां प्रसन्नतामन्वभवम्।**

कुण्डलपुरे शतानां वर्षाणामितिहासे प्रथमश्चतुर्मासोऽभवत्–**तीर्थस्य वृद्धिंगतं स्वरूपं दृष्टुमिच्छया भगवतो महावीरस्य पंचकल्याणकैः पवित्रां तीर्थत्रिवेण्या कुण्डलपुरे राजगृही**

में ऐसा क्यों करते हैं? यह सब सुधारकों की विचारधारा है, आगम आज्ञा नहीं है। अतः प्राचीन गुरु परम्परा एवं शास्त्रीय विधि अनुसार अष्टमी-चतुर्दशी को अभक्ष्य पदार्थों का त्याग करके हरी सब्जियाँ खाने में कोई दोष नहीं है। देखो! आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के सभी साधु अष्टमी-चतुर्दशी आदि पर्वों में हरी सब्जी-फल लेते हैं और मैं भी तो लेता हूँ। यदि उसमें दोष मानें तो सप्तमी- नवमी आदि तिथियों में हरे फल-सब्जी नहीं लेना चाहिए।

➢तीर्थंकर जन्मभूमि विधान मेरे लिए तीर्थंकर भक्ति का अनुपम ध्येय बना–

पूज्य माताजी जहाँ सतत तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास में अग्रसर हैं, वहीं उनकी तीव्र इच्छा थी कि एक **''तीर्थंकर जन्मभूमि विधान''** की रचना भी होनी चाहिए, जिसके कार्यक्रम से भक्ति गंगा में अवगाहन करने वाले लोग सरल भाषा में तीर्थंकरों की प्रत्येक जन्मभूमियों एवं उनके इतिहास को समझ जावें, अतः माताजी ने मुझे इस विधान की रचना हेतु प्रेरणा प्रदान की। पूज्य माताजी की आज्ञानुसार मैंने प्रभु महावीर एवं पूज्य माताजी को नमन कर उस विधान रचना को प्रारंभ किया, फिर तो देखते ही देखते प्रभु एवं गुरुकृपा से वह विधान रचना मूर्त रूप ले उठी और वह जन्मभूमि विधान धर्मवत्सल श्रावकों के लिए तो आराधना का अनुपम माध्यम बना ही, मेरे लिए तीर्थंकर प्रभु की भक्ति का अनुपम ध्येय बन गया और मानसिक एकाग्रता के साथ-साथ मैंने अपूर्व प्रसन्नता का अनुभव भी किया।

➢कुण्डलपुर में सैकड़ों वर्षों के इतिहास में प्रथम चातुर्मास हुआ–

तीर्थ के उभरते स्वरूप को देखने की अभिलाषा एवं भगवान महावीर के कल्याणकों से पवित्र

क्षेत्रे पावपुर्यां च भक्तिस्नानं कर्तुं भावनया पूज्या माताऽयं निर्णयमकरोत् यत् वर्षस्य 2003 तमस्य वर्षायोगमहमत्रैव कुण्डलपुरे भगवतो महावीरस्य छत्रछायायां सम्पन्नं विधास्यामि। पुनः यदा 12 जुलाई, आषाढ़शुक्लचतुर्दश्यां चतुर्मासस्य स्थापनायाः सभाभवत्, तु विहारप्रान्तस्य भक्ताः अकथयन् शतेषु वर्षेसु इतिहासे कुण्डलपुरस्याभ्यन्तरे कस्यापि साधो चतुर्मासः अद्यावधौ न श्रुतम्। इदानीं पूज्यायाः मातुश्चतुर्मासेन क्षेत्रमिदं देशविदेशानां यात्रिणां पर्यटनकेन्द्रं भविष्यति। तेषामिदं मूल्यांकनं वास्तवे यथार्थोऽभवत् दूरस्थानेभ्यश्च यात्रिणः कुण्डलपुरमागत्य संचालितं निर्माणकार्यमवलोक्य अत्यन्तमेव प्रसन्नाः भूत्वा स्वापूर्वसहयोगस्य भावनां व्यक्तां कर्तुं तत्पराः आसन्। तेनैव कारणेन तीर्थस्य स्वरूपमति-शीघ्रतया साकारमभवत्।

महाराष्ट्रस्य भक्तमण्डलस्य समर्पणभावः–**औरंगाबादमहाराष्ट्रस्य प्रमुखः श्रेष्ठी स्वर्गीयः श्री झम्मनलालः कासलीवालः तत्र मातु नाम्ना** ''गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल'' **स्थापितम-करोत्, तस्य समर्पिताः भक्ताः कुण्डलपुरस्य पंचकल्याणके समस्तेभ्यः आगन्तुकेभ्यः ग्रामवासिभ्यश्च स्वपक्षतः प्रीतिभोजभाण्डारस्यायोजनमप्यकुर्वन्। पुनः वर्षायोग स्थापनायां तद्भक्तमण्डलं समागत्य प्रतिनिधित्वमकरोत्। चतुर्मासस्य च मध्ये दशलक्षणपर्वणि कुण्डलपुरमागत्य ते जनाः 1 सितम्बर दिनात् 10 सितम्बर 2003 पर्यन्तं कल्पद्रुम-विधानस्य भक्तिआयोजनं सम्पन्नमकुर्वन्। एतस्य पश्चात् अक्तूबर मासे गणिन्याः जन्म**

तीर्थ त्रिवेणी (कुण्डलपुर, राजगृही, पावापुरी) में भक्ति स्नान करने की भावना से पूज्य माताजी ने यह निर्णय लिया कि सन् 2003 का वर्षायोग मुझे यहीं कुण्डलपुर में भगवान महावीर की छत्रछाया में सम्पन्न करना है पुनः जब 12 जुलाई आषाढ़ शु. चतुर्दशी को चातुर्मास स्थापना की सभा हुई, तो बिहार प्रान्त के भक्तों ने बताया कि सौ वर्षों के इतिहास में कुण्डलपुर के अंदर किसी साधु का चातुर्मास होना अब तक नहीं सुना गया। अब पूज्य माताजी के चातुर्मास से यह तीर्थ देश-विदेश के यात्रियों का पर्यटन केन्द्र बन जायेगा। उनका यह मूल्यांकन वास्तव में खरा उतरा और दूर-दूर से यात्री कुण्डलपुर आकर चलते निर्माण कार्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने अपूर्व सहयोग की भावना व्यक्त करते थे। उसी के फलस्वरूप तीर्थ का स्वरूप अति शीघ्र साकार हुआ।

➢महाराष्ट्र के भक्तमण्डल का समर्पण भाव–

औरंगाबाद (महा.) के प्रमुख श्रेष्ठी स्व. श्री जम्मनलाल जैन कासलीवाल ने वहाँ पूज्य माताजी के नाम से **''गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल''** बना लिया, उसके समर्पित भक्तों ने कुण्डलपुर के पंचकल्याणक (फरवरी 2003) में समस्त आगन्तुकों एवं निकटवर्ती ग्रामवासियों के लिए अपनी ओर से प्रीतिभोज-भण्डारा का आयोजन तो किया ही था पुनः वर्षायोग स्थापना में भी उस भक्तमण्डल ने पधारकर प्रतिनिधित्व किया और चातुर्मास के मध्य दशलक्षण पर्व में कुण्डलपुर आकर उन लोगों ने 1 सितम्बर से 10 सितम्बर 2003 तक कल्पद्रुम मण्डल विधान का भक्ति आयोजन सम्पन्न किया। इसके पश्चात् अक्टूबर में पूज्य माताजी के जन्मदिवस एवं कुण्डलपुर

दिवसे कुण्डलपुरमहोत्सवेऽपि पञ्चदिवसीयः भाण्डारः तेनैव भक्तमण्डलेन आयोजितः कृतः। आर्थिक भारवहनेन सह तेषां सर्वेषां गुरुभक्तिः वास्तवेऽनुकरणीयासीत्।

कुण्डलपुर महोत्सवे पर्यटनविभागस्य विहारशासनस्य तत्वावधानम्–**भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः प्रगतेः वृद्धिंगतानि चरणनि राज्य शासनस्य दृष्टेरपि केन्द्राण्यभवन्, पर्यटनविभागस्य चाधिकारिणः कुण्डलपुरमागत्य तस्य वास्तविकतया परिचिताः अभवन्। तदा वयं पूज्या माता च अक्तूबर मासे** ''कुण्डलपुर महोत्सव'' **मायोजित कर्तुं रूपरेखा विरार। तीर्थ समितेरपि प्रयासैरेव पर्यटनविभागस्य संयुक्तंतत्त्वावधान तेन महोत्सवेन सह संयुक्तमभवत्। ४ अक्तूबर दिनात् १० अक्तूबर २००३, आश्विन शुक्ल त्रयोदश्याः शरत्पूर्णिमा पर्यंतं प्रचुरउत्साहप्रमोदैः महोत्सवः आयोजितोऽभवत्। अस्मिन् सम्पूर्णदेशात् विशेषरूपेण दिल्ली–विहार प्रान्तात् सहस्रशो संख्यायां समागताः नर–नार्यः कुण्डलपुरस्य स्वच्छं स्वरूपमवलोक्य मात्रे कोटिशो धन्यवादमदुः। माता चाकथयन् यदेतन् सर्वं स्वरूपं भवतां श्रावकाणामेव श्रमस्य प्रतीकमस्ति। मम त्वस्मिन्न किञ्चिदपि। मह्यं तु एतन्निमित्तेन भगवतो महावीरस्य चरण रजसो प्राप्तिरभवत्। इदमेव समय धन्यंभाग्यमस्ति।**

भगवतः ऋषभदेवस्य राष्ट्रीय पुरस्कारेण श्री धनञ्जय जैनः सम्मानितः–**फरवरी २००३ वर्षे संस्थानस्य अनिलो जैनस्य प्रीतिविहार दिल्ल्याः संयुक्तंतत्त्वावधानेन सौजन्येन च घोषितेन राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मानेन, भगवतः वृषभदेव नाम्ना प्रचलितेन श्री धनञ्जय**

महोत्सव में भी पंचदिवसीय भण्डारा उसी भक्तमण्डल द्वारा आयोजित किया गया। आर्थिक भारवहन के साथ इन सभी की गुरुभक्ति वास्तव में अनुकरणीय रही।

➢कुण्डलपुर महोत्सव में पर्यटन विभाग बिहार सरकार का संयुक्त तत्वावधान–

भगवान महावीर जन्मभूमि की प्रगति के बढ़ते चरण राज्य सरकार की दृष्टि का भी केन्द्र बने और पर्यटन विभाग के अधिकारी आए दिन कुण्डलपुर में आकर उसकी वास्तविकता से परिचित होने लगे। तब एक दिन पूज्य माताजी एवं हम लोगों ने अक्टूबर में **''कुण्डलपुर महोत्सव''** आयोजित करने की रूपरेखा बनाई। समिति के अल्प प्रयासों से पर्यटन विभाग का संयुक्त तत्वावधान उस महोत्सव में जुड़ा और 8 से 10 अक्टूबर 2003 (आसोज शु. तेरस से शरदपूर्णिमा) तक खूब धूमधाम से महोत्सव आयोजित हुआ। उसमें पूरे देश से एवं विशेषरूप से दिल्ली तथा बिहार प्रान्त से हजारों की संख्या में पधारे नर-नारियों ने कुण्डलपुर के निखरे स्वरूप को देखकर माताजी को कोटि-कोटि धन्यवाद दिया तो माताजी कहने लगीं कि यह सारा स्वरूप आप श्रावकों के श्रम का ही प्रतीक है, मेरा इसमें कुछ नहीं है। मुझे तो इस माध्यम से महावीर स्वामी की चरण रज प्राप्त हो गई है, यही मेरा धन्य भाग्य है।

➢भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड से श्री धनंजय जैन सम्मानित–

फरवरी 2003 में संस्थान और अनिल जैन-प्रीतविहार, दिल्ली (कमल मंदिर) के संयुक्त सौजन्य से घोषित किए गए भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड से श्री वी. धनंजय कुमार जैन को

कुमारो जैनः सम्मानितोऽभवत्। 10 अक्तुबर 2003, आश्विन शुक्ल पूर्णिमा दिने महता जनोत्साहेन विहारस्य राज्यपालः श्री एस.रामा जोइस महोदयः महोत्सवे समागत्य विशालस्य जनसमूहस्य उपस्थित्यां भगवतः वृषभदेवस्य प्रचार–प्रसारे स्वामूल्य सहयोगस्य प्रदाताः मातुश्चानन्यभक्तः सांसदः श्री धनञ्जय कुमाराः पूर्वकेन्द्रीय मंत्री संस्थानस्य जैन समाजस्य सर्वोच्चं पुरस्कारेण सम्मानितोऽभवत्। सभा च करतल निनादैः गुंजिता भवत्। सर्वे पुरस्कारेण सम्मानित श्री धनञ्जय जैने प्राशंसन्। अस्मिन् पुरस्कारे पञ्चाशत्सहस्राधिकद्विलक्ष राशिना प्रशस्ति पत्रेण पुष्पमालया च सम्मानोऽभवत्।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समितेर्घोषणा–**कुण्डलपुर महोत्सवे एव 10 अक्तूबर शरत्पूर्णिमायाः दिने माताश्रीः श्री धनञ्जय जैनायत्र उपस्थितश्रद्धालुभ्यः देशस्य शासकप्रशासकेभ्यः स्वमंगल–माशीर्वादमदात्। अकथयच्च, सम्पूर्ण जैन समाजश्चतुर्विंशतितीर्थंकराणां षोडश जन्मभूमीनां जीर्णोद्धारं विकासं च कृत्वा तासां सुरक्षायै प्रयासं कुर्यात्। सा चैकस्याः विकाससमितेर्घोषणाम–करोत्। या प्राथमिकरूपेण कुण्डलपुरस्य वीक्षणं रक्षणं च करिस्यति तत्पश्चाच्च, सर्वासां जन्मभूमीनां निरीक्षणयोजनामवधार्य कुण्डलपुरस्य विकासे संलग्ना विद्यते। तीर्थानां विकासस्य तस्यां शृंखलायां भगवतः पुष्पदन्तस्य जन्मभूमे काकन्दी क्षेत्रस्य नामागतम्, यस्याः शिलान्यासः मार्गशीर्ष कृष्ण पंचम्यां, 20 नवम्बर दिने श्री राजकुमारो जैनः वीरा बिल्डर्स दिल्ल्या कृतः।**

सम्मानित करने का अवसर इसी पावन धरा पर आया। 10 अक्टूबर 2003, आश्विन शुक्ला शरदपूर्णिमा को बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री एम.रामा. जोइस ने महोत्सव में पधारकर विशाल जनसमूह की गरिमामयी उपस्थिति में भगवान ऋषभदेव के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने वाले पूज्य माताजी के अनन्य भक्त श्री धनंजय जैन (सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री) को इस संस्थान एवं जैन समाज के सर्वोच्च पुरस्कार से पुरस्कृत कर भावभीना सम्मान किया, तो सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी, सभी ने पुरस्कार एवं धनंजय जी के व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस पुरस्कार में ढाई लाख रुपये की नगद राशि, प्रशस्तिपत्र, शॉल, फूलमाला से सम्मान किया गया।

➢तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति की घोषणा–

कुण्डलपुर महोत्सव में ही 10 अक्टूबर शरदपूर्णिमा को पूज्य माताजी ने धनंजय जी एवं उपस्थित श्रद्धालुभक्तों, देश के शासक-प्रशासकगण को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए भारत की सम्पूर्ण जैन समाज को चौबीसों तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के जीर्णोद्धार एवं विकास करने को संस्कृति सुरक्षा बताते हुए प्रेरणा प्रदान की और एक विकास समिति की घोषणा कर दी, जो प्राथमिक स्तर पर कुण्डलपुर की देखरेख पुनः अन्य तीर्थों का सर्वे प्लान बनाते हुए तीर्थ विकास कार्य में संलग्न है। तीर्थ विकास की उस श्रृंखला में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी की बारी आई, जिसका शिलान्यास मगशिर कृ. पंचमी, 20 नवम्बर 2005 में श्री राजकुमार जैन-वीरा

तस्य निर्माणकार्यं प्रारभत। शीघ्रमेव तत्तीर्थमपि संसारस्य दृष्ट्यां समागमिष्यति।

निर्वाणस्थल्यां निर्वाणकल्याणकम्–**भगवतो महावीरस्य निर्वाण कल्याणकेन पावनं जलमन्दिरं पावापुरी कुण्डलपुरात् 15 किलोमीटर अपुष्टमार्गेण दूरं विद्यते। दीपावल्याः पावनवेलायां पूज्यामाता वयं सर्वे एकदिनपूवमेव पावापुरीस्थिते दिगम्बर जैनमंदिरमागच्छाम। मातुश्च संघसान्निध्ये प्रथमबारं 23 तिथेः 25 अक्तूबर 2003 पर्यन्तं त्रिदिवसीयो भगवतो महावीरस्य निर्वाणमहोत्सवः महत्याः प्रभावनायाः पूर्वकं समायोजितोऽभवत्। कार्तिक कृष्ण अमावस्यायां, 25 अक्तूबर दिने निर्वाण स्थले जलमन्दिरे प्रातः 4 वादन समये महतो जनसमूहस्य मध्ये भगवतो महावीरस्य चरणयोः सिद्धिः, रत्नानि, स्वर्ण निर्वाणमोदकान् समर्प्य सर्वे कृतार्थतामन्वभवन्। स्व दीक्षित जीवने प्रथमबारं भगवतो निर्वाणबेलायां जलमन्दिरे निर्वाणमोदक समर्पणस्य कार्यक्रमे सान्निध्यं प्रदाय माता यां हार्दिक आनन्दस्य प्राप्तिमकरोत् तत् वचनातीतं वर्तते। वर्षायाः मन्दानां फत्कारणां मध्ये जनाः रजत निर्वाणमोदकान् मुक्तानिर्वाणमोदकान् भक्तिनिर्वाणमोदकान् च समर्प्य स्व जीवनानि धन्यान्यकुर्वन्।**

भव्यै पंचकल्याणकैः जगमग युक्ताः अभवन् पंचकल्याणकभूमयः–**भारतवर्षे उत्तर प्रदेशस्य विहार प्रान्तस्य निवासिभ्यश्च तीर्थंकराणां भगवतां पंचकल्याणकभूमीनां गौरवां प्राप्तमस्ति। पूज्यायाः मातुः प्रेरणया यदप्यनेकतानि पंचकल्याणकान्यभवन् भवन्ति च परन्तु यत्र स्वयमेव**

बिल्डर्स, दिल्ली द्वारा किया गया और उसका निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है, शीघ्र ही वह तीर्थ भी दुनिया की दृष्टि में छा जाने वाला है।

➢निर्वाणस्थली में निर्वाणकल्याणक–

भगवान महावीर के निर्वाणकल्याणक से पावन जल मंदिर पावापुरी कुण्डलपुर से मात्र 15 किमी. (कच्चे रास्ते से) की दूरी पर है। दीपावली की पावन बेला में पूज्य माताजी एवं हम सभी लोग एक दिन पूर्व ही पावापुरी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पहुँच गए और माताजी के संघ सानिध्य में प्रथम बार 23 से 25 अक्टूबर 2003 तक त्रिदिवसीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव भारी प्रभावनापूर्वक मनाया गया। कार्तिक वदी अमावस्या, 25 अक्टूबर को निर्वाणस्थल जलमंदिर में प्रातःकाल 4 बजे भारी भीड़ के मध्य भगवान महावीर के चरणों में सिद्धि, रत्न एवं स्वर्ण निर्वाणलाडू चढ़ाए गए। अपने दीक्षित जीवन में प्रथम बार भगवान की निर्वाणबेला में जलमंदिर में निर्वाणलाडू कार्यक्रम में सानिध्य प्रदान करके पूज्य माताजी को जिस हार्दिक आनन्द की अनुभूति हुई, वह वचनातीत है। रिमझिम फुहारों के बीच सैकड़ों श्रद्धालुओं ने रजत निर्वाणलाडू, मुक्ता निर्वाणलाडू एवं भक्ति निर्वाणलाडू चढ़ाकर अपने जीवन को धन्य माना।

➢भव्य पंचकल्याणकों से जगमगा उठीं पंचकल्याणक भूमियाँ–

भारतवर्ष में उत्तरप्रदेश एवं बिहार प्रान्त को ही तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक भूमियों का गौरव प्राप्त है, पूज्य माताजी की प्रेरणा से यूँ तो अनेक पंचकल्याणक हुए हैं और हो रहे हैं परन्तु

पंचकल्याणकानि मतान्यभवन् तस्मिन् स्थले पंचकल्याणकानां विधानमभूतपूर्वमैतिहासिकं चास्ति। मातुः पावनप्रेरणया विकासोन्मुखेन कुण्डलपुरेण सह भगवतो महावीरस्य निर्वाण–स्थल्यां पावापुर्यां भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूमौ भगवतो महावीरस्य प्रथमदेशना–स्थल्या राजगृहीक्षेत्रे आयोजिते पंचकल्याणकाभ्यां द्वावपि कल्याणकभूमौ प्रकाशितौ। भगवतो महावीरस्य निर्वाणभूमेः पावापुरी क्षेत्रस्य पाण्डुकशिलापरिसरे श्री विजयकुमारो जैनः दरियागंज दिल्ली सुभाषचन्द्रस्य च ऋषभविहारस्य दिल्लीनगर्याः सौजन्येन भगवतो महावीरस्य 11 फुट उन्नता खड्गासनस्था प्रतिमा कमलाकारे नूतने जिन मन्दिरे मार्गशीर्षशुक्ल–पंचम्यां 28 नवम्बर दिनात् मार्गशीर्षशुक्ल पर्यन्तं, 3 दिसम्बर पर्यन्तं महत्या धर्मप्रभावनया प्रतिष्ठिताभवत्। राजगृही तीर्थे च श्री अनिलकुमारो जैनस्य कमलमन्दिर, प्रीतविहार, दिल्लीनगर्याः सौजन्येन 3 दिसम्बर 2003 दिनात् 8 दिसम्बर पर्यन्तं मार्गशीर्षशुक्लदशमीतः पूर्णिमापर्यन्तं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य जिनबिम्बपंचकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सवः लालमन्दिरस्य प्रांगणे विशेषया धर्मप्रभावनया सह संपन्नोऽभवत्।

नवग्रहशांति जिनबिम्बस्थापना शिखरेषु च कलशस्थापनम्–**कुण्डलपुरे त्रयाणामेव मन्दिराणां (भगवतो महावीरस्य मन्दिरे, भगवतः ऋषभदेवस्य मन्दिरे नवग्रहशान्ति जिनमन्दिरे च उपरि दक्षिणभारतीय कलात्मकानां शिखराणां निर्माणं विहारप्रान्तेऽत्यन्तमाकर्षकं सिद्धमभवत्। 11 फरवरी दिनात् 23 फरवरी 2004, फाल्गुण कृष्णत्रयोदश्या, फाल्गुण शुक्ल तृतीया**

जहाँ स्वयं ही पंचकल्याणक मनाए गए हों, उस स्थल पर पंचकल्याणक का होना अभूतपूर्व होने के साथ-साथ ऐतिहासिक भी है। माताजी की पावन प्रेरणा से विकासोन्मुखी कुण्डलपुर के साथ-साथ भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी एवं भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि तथा भगवान महावीर प्रथम देशना भूमि राजगृही तीर्थ पर आयोजित हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से वह दोनों कल्याणक भूमियाँ जगमगा उठीं। सर्वप्रथम भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र के पाण्डुकशिला परिसर में श्री विजय कुमार जैन-दरियागंज एवं श्री सुभाषचंद जैन-ऋषभविहार, दिल्ली के सौजन्य से भगवान महावीर की सवा ग्यारह फुट खड्गासन प्रतिमा कमलाकार नूतन जिनमदिर में मगसिर सुदी पंचमी 28 नवम्बर से मगसिर सुदी दशमी, 3 दिसम्बर तक महती प्रभावनापूर्वक प्रतिष्ठित हुईं तथा राजगृही तीर्थ पर श्री अनिल कुमार जैन (कमल मंदिर)-प्रीतविहार, दिल्ली के सौजन्य से 3 दिसम्बर 2003 से 8 दिसम्बर 2003 (मगसिर सुदी दशमी से पूर्णिमा तक) श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव (लाल मंदिर के प्रांगण में) विशेष धर्मप्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ।

➢नवग्रहशांति जिनबिंब स्थापना एवं कलात्मक शिखरों पर कलशारोहण–

कुण्डलपुर में तीनों मंदिरों (भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर) के ऊपर दक्षिण भारतीय डिजाइन वाले कलात्मक शिखरों का निर्माण बिहार प्रान्त के लिए अत्यन्त आकर्षक सिद्ध हुआ। 11 फरवरी से 23 फरवरी 2004 फाल्गुन कृ. तेरस से फाल्गुन

पर्यन्तं लघु पंचकल्याणकं, वेदिका प्रतिष्ठा कलशारोहण समारोहाश्च आयोजिताः अभवत्। यस्मिन् महावीर मन्दिरस्य शिखरे विराजमानाः भवितुं प्रस्तावितः 4 प्रतिमाः 'भगवतो महावीरस्य सवा 1 फुट उन्नता पद्मासना, दीक्षा मुद्रायाश्च पिच्छिका कमण्डलुसहिता भगवतो महावीर स्वामिनः सवा 5 फुट खड्गासना प्रतिमाः प्रतिष्ठिताः अभवन्।

नवग्रहशान्तिजिनमन्दिरे सर्वथा नवीनया रीत्या निर्मितेषु नव कमलेषु नवग्रहशांति निवारकाणां नवजिनभगवतां एतेषां प्रतिष्ठा 2003 ख्रिष्टाब्दे जुलाई मासेऽभवत् प्रतिमाः श्री ज्ञानचन्द्र जैनः आरा निवासी विराजिताः अभवत् पुनः शिखरे चतुर्षु दिक्षु चतस्र प्रतिमाः श्रीरिखबदास दीपक कुमारो जैनस्य वाराणस्याः परिवारेण विराजमानाः अभवन्। अस्य पश्चात् प्रवचनसभायाः आयोजनमभवत्। यस्यां नालन्दा नगरस्य डी.एम. श्री आनन्द किशोरः विधायकश्च श्री श्रवणकुमारश्च सभां सम्बोधयताम्। कलशारोहणं च विधानं वाराणस्याः आरानगरस्य परिवारयोः कुण्डलपुर स्वागतसमितेः पक्षतः सम्मानोऽभवत्। पुनः शुभ मुहूर्ते प्रातः 11 वादन समये भगवतो महावीरस्य मूलमन्दिरस्य ऋषभदेव– मन्दिरस्य च शिखरयोः श्री रिषबदास दीपक कुमार जैनौ, वाराणस्या निवासिनो सपरिवारं कलशारोहणं ध्वजारोहणं चाकुरुताम्। अनेनैव प्रकारेण नवग्रहशान्तिमन्दिरस्य शिखरेऽपि आरानिवासि श्री ज्ञानचन्द्र जैनः सपरिवारः सम्पादितमकरोत्। त्रिषु मन्दिरेषु सहैव कलशारोहणस्य सुखदः संयोगोऽस्मभ्यं बहुमहत्वपूर्णमासीत्।

शु. तीज तक लघु पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें महावीर मंदिर के शिखर पर विराजमान होने वाली 4 प्रतिमाएं (भगवान महावीर की सवा फुट पद्मासन) तथा दीक्षा मुद्रा वाली (पिच्छी-कमण्डलु सहित) भगवान महावीर स्वामी की सवा पाँच फुट खड्गासन श्वेत प्रतिमा प्रतिष्ठित हुईं।

नवग्रहशांति जिनमंदिर में बिल्कुल नए ढंग से बनाए गए नौ कमलों पर नवग्रहशांति निवारक 9 तीर्थंकर भगवान (जिनकी प्रतिष्ठा जुलाई 2003 में हो चुकी थी) श्री ज्ञानचंद जैन-आरा ने विराजमान किए पुनः शिखर में चारों दिशा में चार प्रतिमा श्री रिसबदास दीपक कुमार जैन-बनारस परिवार ने विराजमान कीं। इसके पश्चात् प्रवचन सभा का आयोजन हुआ, जिसमें नालंदा के डी.एम. श्री आनन्द किशोर जी एवं विधायक श्री श्रवण कुमार जी ने सभा को सम्बोधित किया और कलशारोहण करने वाले बनारस एवं आरा के परिवारों को कुण्डलपुर समिति की ओर से सम्मानित किया गया। पुनः शुभ मुहूर्त में प्रातः11 बजे भगवान महावीर के मूलमंदिर एवं ऋषभदेव मंदिर के शिखर पर श्री ऋषभदास दीपक कुमार जैन, बनारस वालों ने सपरिवार कलशारोहण एवं ध्वज स्थापना किया, इसी प्रकार नवग्रहशांति मंदिर के शिखर पर श्री ज्ञानचंद जैन-आरा परिवार ने कलशारोहण तथा ध्वज स्थापना करके सातिशय पुण्य सम्पादित किया। तीन मंदिरों पर एक साथ कलशारोहण होने का यह सुखद संयोग हम सभी के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहा।

भगवतः पार्श्वनाथस्य तृतीयसहस्राब्द्याः महोत्सवस्य प्रथमा घोषणा—**उत्सवानां महोत्सवानां चायोजनस्य परम्परा भारतदेशे प्राचीनकालादेव संचालिता विद्यते। तामेव परम्परानुसारेण 1974 वर्षे भगवतो महावीरस्य 2500 तमो निर्वाण महोत्सवं सन् 2000 वर्षे च भगवतः ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाणमहोत्सवः शासनं समाजश्च मिलित्वा आयोजितम–कुरुताम्। 2001 वर्षे च भगवतो महावीरस्य 2600 तमो जन्मकल्याणक महोत्सवं शासनं समाजश्च मिलित्वा राष्ट्रीये अन्तर्राष्ट्रीये च स्तरेण आयोजितमकुरुताम्। तथैवाधुना त्रयोविंशस्य तीर्थंकरस्य भगवतः पार्श्वनाथस्य माध्यमेन जैनधर्मस्येतिहासं विश्वस्य प्रतिकोणं प्रसारयितुं माताश्रीः 5 दिसम्बर 2003 दिने मार्गशीर्षशुक्लद्वादश्यां राजगृही तीर्थे भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जिनबिम्बपञ्चकल्याणकप्रतिष्ठायाः मध्ये** ''भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकस्य तृतीय सहस्राब्द्याः महोत्सवं'' **सम्पादयितुं घोषणामकरोत् तं च भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मभूमेः वाराणसीतः उद्घाटितं कर्तुं विचार–विमर्श प्रारभत्।**

षट्खण्डागमस्य ग्रन्थस्य पूर्णतायां महापूजाऽभवत्—**भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकस्य पावनावसरे पौषकृष्णैकादश्यां, 19 दिसम्बर 2003 दिने वर्तमाने जैन समाजे सर्वाधिकानां ग्रन्थानां लेखिका पूज्या माताश्रीः जैनधर्मस्य प्रथम सिद्धान्तग्रन्थस्य षट्खण्डागमस्य द्वादशतमस्य पुस्तकस्य टीकां पूर्णां कृत्वा चतुर्थखण्डस्य कार्यं पूर्णमकरोत् त्रयोदशतमस्य च पुस्तकस्य लेखनं प्रारम्भमकरोत्।**

अतो येन प्रकारेण षट्खण्डागमग्रन्थस्य पूर्णतायां ग्रन्थस्य कर्त्रोः पुष्पदन्त–भूतबलि

➢भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव की प्रथम घोषणा–

उत्सव और महोत्सवों को मनाने की परम्परा भारत देश में प्राचीनकाल से रही है, उसी परम्परानुसार सन् 1974 में भगवान महावीर का 2500वाँ निर्वाण महोत्सव, सन् 2000 में भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव एवं सन् 2001 में भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव सरकार और समाज ने मिलकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया है, इसी प्रकार अब तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के माध्यम से जैनधर्म का प्राचीन इतिहास दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने हेतु पूज्य माताजी ने 5 दिसम्बर 2003 मगशिर शु. 12 को राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य **''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव''** मनाने हेतु घोषणा की और उसे वाराणसी तीर्थ (भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि) से उद्घाटित करने हेतु विचार-विमर्श प्रारंभ हो गया।

➢षट्खण्डागम ग्रंथ की टीका की पूर्णता पर हुई महापूजा–

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर पौष कृ. 11, 19 दिसम्बर 2003 को वर्तमान जैन समाज में सर्वाधिक ग्रंथों की लेखिका पूज्य माताजी ने जैनधर्म के प्रथम सिद्धान्त ग्रंथ षट्खण्डागम की 12वीं पुस्तक की टीका पूरी करके चतुर्थ खण्ड का कार्य पूर्ण किया और 13वीं पुस्तक का लेखन प्रारंभ किया।

अतः जिस प्रकार षट्खण्डागम ग्रंथ की पूर्णता पर ग्रंथ के कर्ता श्री पुष्पदंत एवं भूतबलि

आचार्ययोश्चतुर्विधसंघेन भक्तिभावपूर्वकं पूजनं सम्पन्नमभवत्, तेनैव प्रकारेण प्रथमतः पूज्यया मात्रा लिखितस्य संस्कृत टीकायाः प्रथमपृष्टस्य महाभिषेक विधानेनैव सह सरस्वती विधानपूर्वकं ग्रन्थराज षट्खण्डागमस्य महापूजा सम्पन्ना कृताभवत्। पुनः अहं संघस्थाभिः ब्रह्मचारिणीभिर्भगिनीभिः पूज्यायाः मातुः महापूजां सम्पादितमकरवम्। भक्ताश्च पूज्यायाः मातुरुपरि रजत पुष्पाणां वृष्टिं कृत्वा स्वात्मनो धन्यान् कृतवन्तः। यतो मम मनसि भूयो–भूयः इदमेव चिन्तनआसीत् यत् आचार्यो पुष्पदन्त–भूतबलिनौ च यदा षट्खण्डागम ग्रन्थं विलिख्य पूर्णमकुरुवां तु देवाश्चतुर्विधसंघश्च तयोः पूजनमकरोत्। अतो वयमपि मात्रा विहितेऽस्मिन् महाकार्ये मातुर्यावती पूजामर्चनां कुर्म तावत्येव न्यूनैवास्ति।

मैराथनः धावकाः अहिंसा–शाकाहारस्य च सन्देशं प्राप्नुवन्–**ऋषभदेवपुरे स्थिते तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थली प्रयागतीर्थे भारतस्य पूर्व प्रधानमंत्रिण्याः स्वः श्रीमत्याः इन्दिरागांधी महोदयायाः 19 नवम्बर 2003 दिवसे जन्मदिवसे आयोजितस्य ''इन्दिरा मैराथन धावनस्य'' प्रतियोगितायाः 15–20 वर्षाणामायुषः वर्गस्य युवकानां पावन समायोजनावसरे तीर्थ सम्प्रेरिकायाः गणिन्या ज्ञानमत्याः मातुः मंगलाशीर्वादस्यरूपेण संघस्थया ब्रह्मचारिण्या कुमार्या स्वात्या शाकाहार–अहिंसा–सदाचार सदृशैः सिद्धान्तैः समन्वितस्य जीवन निर्माणस्य शिक्षां प्राप्य प्रायः 1500 प्रतिभागिनः विशेषं लाभं प्राप्नुवन्। आनन्द भवन–इलाहाबादात् प्रारब्धाया 10 किलोमीटर भारतीयधावन प्रतियोगितायां 15–20 आयुषः वर्गस्य धावनस्य समापन केन्द्रं ''तीर्थंकर ऋषभदेवदीक्षास्थली ऋषभदेवपुरं'' निर्धारितमासीत्।**

आचार्यों की चतुर्विध संघ द्वारा भक्तिभावपूर्वक पूजन सम्पन्न की गई थी, उसी प्रकार प्रथमतः पूज्य माताजी द्वारा लिखित संस्कृत टीका के पृष्ठ का महाभिषेक करने के साथ-साथ सरस्वती विधान पूर्वक ग्रंथराज षट्खण्डागम की महापूजा सम्पन्न की गई पुनः मैंने संघस्थ ब्र. बहनों से पूज्य माताजी की महापूजा सम्पन्न कराई और भक्तों ने पूज्य माताजी के ऊपर चांदी के पुष्पों की वृष्टि कर अपने को धन्य माना। क्योंकि मेरे मन में बार-बार यही चिन्तन चल रहा था कि आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबलि ने जब षट्खण्डागम ग्रंथ लिखकर पूर्ण किया था तो देवों ने तथा चतुर्विध संघ ने उनकी पूजा की थी अतः हम लोग भी माताजी द्वारा किये गए इतने महान कार्य पर माताजी की जितनी पूजा अर्चना कर लें, उतना कम है।

➢मैराथन धावकों ने प्राप्त किया अहिंसा एवं शाकाहार का संदेश–

ऋषभदेवपुरम् स्थित तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्मदिवस, 19 नवम्बर 2003 को आयोजित ''इन्दिरा मैराथन दौड़'' के 15-20 वर्ष आयु वर्ग के रेस समापन पर तीर्थ सम्प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के मंगल आशीर्वाद स्वरूप संघस्थ ब्र.कु. स्वाति द्वारा शाकाहार, सदाचार, अहिंसा जैसे सिद्धान्तों से समन्वित जीवन निर्माण की शिक्षा प्राप्त कर लगभग 1500 प्रतिभागियों ने विशेष लाभ प्राप्त किया। आनन्द भवन (इला.) से प्रारंभ 10 किमी. क्रास कन्ट्री रेस में 15-20 वर्ष आयु वर्ग रेस का समापन प्वाइन्ट ''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली-ऋषभदेवपुरम्'' को रखा गया था।

अस्यां प्रतियोगितायां प्रथमषट्भ्यः प्रतियोगिभ्यः विशेषान् पुरस्कारान् धनराशिं च प्रदाय सहैव लकी ड्रा द्वारेण पञ्चविंशतिश्चान्ये प्रतियोगिनः सम्मानिताः अभवन्।

पूर्वविदेशराज्यमंत्री मांसाहारस्य त्यागमकरोत्–**13 फरवरी 2004 दिनस्य वार्तास्ति, आहारस्य पश्चादहं स्व प्रकोष्ठे उपविशन्ती शब्दकोशस्य वाचनया तस्मिन्नुचित–संशोधनादि विषये चिन्तने रता आसम् यत् पूज्यायाः मातु र्दर्शनार्थमागतः श्री हरि किशोरसिंहः पूर्व विदेशराज्य मंत्री, मातुः दर्शनं कृत्वा ममसमीपमागत्य उपाविशत्। सज्जनोऽयं विहारे एवं सीतामढी–स्थानस्य निवासी अस्ति, अतो वर्तमानस्य निर्वाचनेषु प्रत्याशिरूपेण अवस्थातुं पूज्यायाः मातुराशीर्वादस्य प्राप्त्यर्थमागच्छत्। वार्तासु यदा तेन सह शाकाहारविषये चर्चा संजाता, सः स्वचेतसि एकवर्ष पर्यन्तं मांसाहारस्य त्यागमकरोत् पुनश्च मातुर्दर्शनार्थ आगमनस्येच्छां व्यक्तामकरोत्।**

आचार्याः अतएव संत्सगतेर्महत्तां प्रदर्शयन्तोऽकथयन्–

महतां संश्रयान्नूनं लभन्तेऽन्ये सुमान्यताम्।

अर्थात् महतां पुरुषाणामाश्रय ग्रहणेन सामान्याः पुरुषाः अपि मान्यतां प्राप्नुवन्ति।

स्वप्नोऽग्रिममाशीर्वादं प्रादात्—

आचार्यो जिनसेनः स्वामी महापुराणे स्वप्नविषयेऽलिखत्–

ते च स्वप्नाद्विधाऽऽम्नाताः स्वस्थास्वस्थात्मगोचराः।
समैस्तु धातुभिः स्वस्था विषमैरितरे गताः।।156–पर्व 41।।

इसमें प्रथम छह प्रतियोगियों को विशेष पुरस्कार एवं नगद राशि प्रदान करने के साथ-साथ लकी ड्रा द्वारा 25 और प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

➢पूर्व विदेश राज्यमंत्री ने किया मांसाहार का त्याग–

13 फरवरी 2004 की बात है, आहार के बाद मैं अपने कमरे में बैठी शब्दकोश की वाचना से उसमें उचित संशोधन आदि के बारे में चिंतन कर रही थी कि पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारे श्री हरिकिशोर सिंह (पूर्व विदेश राज्यमंत्री) माताजी के दर्शन कर मेरे पास आकर बैठ गए, ये सज्जन बिहार में ही सीतामढ़ी के निवासी हैं अतः वर्तमान के चुनावों में खड़े होने हेतु पूज्य माताजी का आशीर्वाद लेने आए थे। अतः बातों-बातों में जब उनसे शाकाहार संबंधी चर्चा की, तो उन्होंने अपने मन से एक वर्ष तक मांसाहार का त्याग कर दिया और पुनः माताजी के दर्शनार्थ आने की इच्छा व्यक्त की।

शायद इसीलिए आचार्यों ने सत्संगति की महत्ता बताते हुए कहा है कि–

महतां संश्रयान्नूनं, लभन्तेऽन्ये सुमान्यताम्।।

अर्थात् महान् पुरुषों का आश्रय लेने पर सामान्य पुरुष भी मान्यता प्राप्त कर लेते हैं।

➢स्वप्न ने दिलाया अग्रिम आशीर्वाद–

आचार्य जिनसेनस्वामी ने महापुराण में स्वप्न के संबंध में लिखा है कि–

ते च स्वप्नाद्विधाऽऽम्नाताः स्वस्थास्वस्थात्मगोचराः।
समैस्तु धातुभिः स्वस्था विषमैरितरे मताः।।56-पर्व 41।।

तथ्याः स्युः स्वस्थसन्दृष्टा मिथ्या स्वप्ना विपर्ययात्।
जगत्प्रतीतमेतद्धि विद्धि स्वप्नविमर्शनम् ।।60 ।।

अर्थात् स्वप्नाः द्विप्रकारकाः मताः। एकस्तु स्वस्वस्थायामवस्थायां दृष्टः, द्वितीयं यस्तु अस्वस्थामवस्थायां दृष्टः। ये धातूनां समानतायां दृश्यन्ते ते स्वप्नाः स्वस्थावस्थायाः कथ्यन्ते ये च धातूनां विषमतायां न्यूनाधिकतायां दृश्यन्ते ते अस्वस्थाः कथ्यन्ते।

फरवरी 2004 मासे कुण्डलपुरप्रवासस्य मध्येऽहं मात्रा लिखितस्य महतो ग्रन्थस्य षट्खण्डागमस्य सिद्धान्तचिन्तामणि नाम्न्या संस्कृतटीकायाः द्वितीयपुस्तकस्य हिन्दी अनुवादमलिखम् 16 फरवरी, फाल्गुण शुक्लैकादश्यां अहं प्रातः 7.35 वादनसमये भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमायाः सान्निध्ये पूज्यायाः मातुश्च छत्रछायायामुपविश्य षट्खण्डागमस्य द्वितीयस्य पुस्तकस्य हिन्दी टीकां पूर्णामकरवम्। यद्यपि 31 दिसम्बर 2003 दिनांके अहम् औपचारिकरूपेणान्तिम पृष्ठमलिखम् किन्तु मध्ये कतिपय पृष्ठानां कार्यं शेषमासीत्, यत् अद्य पूर्णमभवत्। पूज्यायाः मातुश्च करकमलयोः पूर्णं हस्तलिखितं ग्रन्थं समर्प्य असीम सन्तुष्टिमन्वभवम्। अद्याप्यस्मिन् समये प्रतिक्षणं शुभोपयोगः एवासीत् पुनः प्रातः एव 4 वादनेऽहं स्वप्नमपश्यम् यत् पुष्पमालां धारयन् एको गजः आगत्य मामनमत्, अस्मात् पूर्वमप्यहं 4 फरवरी दिनस्य रात्रौ एतमेव स्वप्नमपश्यं यत् पुष्पैः सज्जितः एको गजः जानुभ्यां मां नमाति। प्रातःकाले यदाहं मातरं तं स्वप्नमकथयं तु माताश्रीः बहु प्रसन्नाभवत्।

तथ्याः स्युः स्वस्थ सन्दृष्टा मिथ्यास्वप्ना विपर्ययात्।
जगत्प्रतीतमेतद्धि विद्धि स्वप्नविमर्शनम्।।60।।

अर्थात् स्वप्न दो प्रकार के माने गये हैं। एक अपनी स्वस्थ अवस्था में दिखने वाले और दूसरे अस्वस्थ अवस्था में दिखने वाले। जो धातुओं की समानता रखते हुए दिखते हैं, वे स्वस्थ अवस्था के कहलाते हैं और जो धातुओं की विषमता-न्यूनाधिकता रहते हुए दिखते हैं, वे अस्वस्थ कहलाते हैं।

फरवरी 2004 में कुण्डलपुर प्रवास के मध्य मैं पूज्य माताजी द्वारा लिखे जा रहे महान षट्खण्डागम ग्रंथ की सिद्धान्तचिंतामणि संस्कृत टीका की द्वितीय पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर रही थी। 16 फरवरी फाल्गुन शु. 11 को मैंने प्रातः 7.35 बजे भगवान ऋषभदेव प्रतिमा के सानिध्य एवं पूज्य माताजी की छत्रछाया में बैठकर षट्खण्डागम द्वितीय पुस्तक की हिन्दी टीका पूर्ण की। यूँ तो 31 दिसम्बर 2003 को औपचारिक रूप से मैंने अंतिम पृष्ठ लिख दिया था किन्तु मध्य में कुछ पृष्ठों का कार्य शेष था, जो आज पूर्ण किया और पूज्य माताजी के करकमलों में पूरे हस्तलिखित पृष्ठ समर्पित करके असीम संतुष्टि का अनुभव किया। चूँकि इस समय हर समय शुभोपयोग ही चल रहा था पुनः सुबह ही मुझे 4 बजे स्वप्न हुआ कि एक हाथी (फूलमाला पहने हुए) ने आकर मुझे नमस्कार किया, इससे पूर्व भी मैंने 4 फरवरी की रात्रि में यही स्वप्न देखा था कि फूलों से सजा हुआ एक हाथी घुटने टेकर मुझे नमस्कार कर रहा है। प्रातःकाल जब मैंने माताजी को वह स्वप्न बताया तो माताजी बहुत ही प्रसन्न हुईं और अग्रिम उन्नति का खूब आशीर्वाद देते हुए उन्होंने

अग्रिमोन्नतेश्च बहु आशीर्वादं ददती साऽकथयत् यत् चन्दनामते! त्वं शीघ्रमेव मम सर्वेषां पुस्तकानां हिन्दी टीकां कुरु, अहं तवानुवादेन महतीं सन्तुष्टिमनुभवामि। तस्मिन् समयेऽहं प्रतीतमकरवं यत् अनेनैव प्रकारेण गुरुकृपया प्राप्तया शक्त्या अहमग्रे भविष्येऽपि पर्याप्तं कार्यं कर्तुं सक्षमा भविष्यामि।

अनुपमां शोभा विकीर्णयन् नन्द्यावर्त प्रासादो दर्शनीयो वन्दनीयश्चाभवत्–**2004 वर्षस्य द्वितीय चतुर्मासस्य मध्ये भगवतो महावीरस्य जन्मनास्य नन्द्यावर्तप्रासादस्य भव्या प्रतिकृतिर्यदा स्व साकारं स्वरूपं प्राप्नोत् तस्मिन् 2600 वर्षाणामितिहासः चित्रमयाभिः प्राचीनकलाकृतिभिः सह दर्शितोऽभूत् तु तस्य शोभा दर्शनयोग्यैवाभवत्। यत्र पूर्वं पर्यटकानामाकर्षणानि नालन्दा–नगरस्य भग्नावशेषाण्यासन्, अद्य सा मान्या प्रतिकृतिरभवत् न केवलं सम्पूर्णविहारेऽपितु सम्पूर्णे देशेऽस्य चर्चा प्रसारिताभवत्। दूरदेशात् आगतो यात्री एतमवलोक्याह्लादितो भवति मातुश्च संयोजितस्य कार्यस्य प्रशंसां कुर्वन् न श्रान्तोऽभवत् अस्य अभ्यन्तरतः त्रिमालानां किन्तु बाह्यतः सप्तमालायाः रूपं दर्शयन्तमेवं प्रासादो दर्शनीयेन सह वन्दनीयं भवितु सौभाग्यं तदा प्राप्तमभवत् यदास्मिन् उपरिमालायां भगवतः शान्तिनाथजिनालयस्य स्थापना अभवत्। तस्य पंचकल्याणकं चापि प्रवासस्य मध्ये पूज्यायाः मातुः संघ सान्निध्ये 28 जून दिनात् 2 जुलाई 2004, आषाढ शुक्ल दशमीतः पूर्णिमा पर्यन्तं विशेषभक्ति–भावना पूर्वकं सम्पन्नमभवत्। भगवतां शान्तिनाथ–चन्द्रप्रभ–पार्श्वनाथानां प्रतिमानां इयं**

कहा कि चंदनामती! तुम जल्दी-जल्दी मेरी सब पुस्तकों की हिन्दी कर दो, मुझे तुम्हारे अनुवाद से बहुत संतोष मिलता है। उस समय मुझे यही लगा कि इसी प्रकार गुरु कृपा से मिलने वाली शक्ति से मैं आगे भविष्य में भी बहुत कुछ कार्य कर सकूँगी।

➢अनुपम छटा बिखेरता नंद्यावर्त महल दर्शनीय एवं वंदनीय हो गया–

सन् 2004 के द्वितीय चातुर्मास के मध्य भगवान महावीर के जन्म से पावन नंद्यावर्त महल की भव्य प्रतिकृति ने जब अपना साकार स्वरूप प्राप्त किया और उसके अन्दर 2600 वर्ष पूर्व का इतिहास चित्रमय प्राचीन कलाकृतियों के साथ दर्शाया गया, तो उसकी छटा देखते ही बनती थी, जहाँ पर्यटकों का आकर्षण पूर्व में नालंदा के खण्डहर थे, आज यह भव्य प्रतिकृति हो गई और सम्पूर्ण बिहार क्या पूरे देश में इसकी चर्चा फैल गई, दूर-दूर से आने वाला यात्री इसे देखकर आल्हादित हो उठता और माताजी के समयोचित कार्य की प्रशंसा करते नहीं थकता था। भीतर में तीन मंजिल परन्तु बाहर से सात मंजिल का रूप दर्शाते इस महल को दर्शनीय होने के साथ-साथ वंदनीय होने का सौभाग्य तब प्राप्त हुआ, जब इसमें ऊपर की मंजिल पर भगवान शांतिनाथ जिनालय की स्थापना की गई और उसका पंचकल्याणक इसी प्रवास के मध्य पूज्य माताजी के संघ सानिध्य में 28 जून से 2 जुलाई 2004, आषाढ़ शु. 10 से पूर्णिमा तक विशेष भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। भगवान शांतिनाथ, चन्द्रप्रभु एवं भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओं की यह लघु पंचकल्याणक

लघु पंचकल्याणकप्रतिष्ठा युवारत्नस्य प्रतिष्ठाचार्यस्य पं. अकलंकस्य प्रतिष्ठाचार्यत्वे संपन्ना जाता। अस्यां पंचकल्याणक प्रतिष्ठायां आरानिवासी श्रीकमलकुमारो जैनः सौधर्मेन्द्रो भवितुं वाराणस्याश्च श्री रिषबदास जैनः सपत्नीकौ भगवतः माता पिता च भवितुं सौभाग्यं प्राप्नुवन्। अस्यामेव प्रतिष्ठायां लालामहावीरप्रसादो जैनस्य दिल्लीनगर्याः सौजन्येन राजगृह्यां निर्माणाय प्रस्तावितस्य मानस्तम्भस्य चतसृणां प्रतिमानां गुणावांजी क्षेत्रे विराजमानाय प्रस्तावितायाः गौतमगणधरस्य खड्गासनप्रतिमायाः राजस्थानस्य च लावा मन्दिरे गोम्मटगिरौ इन्दौरे च विराजमानाः भवितुं प्रस्तावितां ह्रीँ मन्त्रस्य 24–24 प्रतिमानां पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठापि संपन्नाऽभवत्।

2 जुलाई 2004 दिने तीर्थपरिसरे नवनिर्मितस्य त्रिकालचतुर्विंशतिमन्दिरस्य द्वयोः मालयोः क्रमशः भूतकालस्य वर्तमानकालस्य च चतुर्विंशतिप्रतिमाः वेदिकायां विराजमानाः अभवन्। नंद्यावर्ततीर्थस्य मुख्यद्वारे–सर्वार्थसिद्धिद्वारे कल्पवृक्षकार्यालयस्य च शिलान्यासोऽप्यभवत्।

क्षुल्लिकायाः श्रद्धामत्याः समाधिमरणम्–**आचार्यः समन्तभद्रस्वामिनः रत्नकरण्डश्रावकाचारग्रन्थे संल्लेखनायाः विधिं प्रदर्शयन् कथयति–**

जीवनपर्यन्तं यत् तपो व्रतचारित्रस्य पालनं क्रियते, यदि आगामिभवे तानि सहैव नयनस्येच्छा वर्तते तु मरणकालेऽवश्यमेव संल्लेखना विधातव्या। यथा कस्मिंचिद् देशे उपार्जितं धनं प्रस्थानकाले कोऽपि न स्मरति, तस्य तद्धनं तु व्यर्थमेवास्ति। तद्वदेव

प्रतिष्ठा युवारत्न प्रतिष्ठाचार्य पं. अकलंक जैन के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुई। इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में श्री कमल कुमार जैन-आरा ने सौधर्म इन्द्र बनने एवं सेठ श्री रिसबदास जी-वाराणसी ने सपत्नीक भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। इसी प्रतिष्ठा में संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली के सौजन्य से राजगृही में निर्मित होने वाले मानस्तंभ की 4 प्रतिमाओं एवं गुणावां जी में विराजमान होने वाली गौतम गणधर की खड्गासन प्रतिमा तथा राजस्थान के लावा मंदिर व गोम्मटगिरि-इंदौर में विराजमान होने वाली ह्रीँ मंत्र की 24-24 प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी सम्पन्न हुई।

2 जुलाई 2004 को तीर्थ परिसर में नवनिर्मित त्रिकाल चौबीसी मंदिर की दो मंजिलों में क्रमशः भूतकाल एवं वर्तमानकाल की चौबीसी प्रतिमाओं को वेदी में विराजमान किया गया तथा नंद्यावर्त तीर्थ के मेनगेट सर्वार्थसिद्धि द्वार एवं कल्पवृक्ष कार्यालय का शिलान्यास भी हुआ।

➢क्षुल्लिका श्रद्धामती जी का समाधिमरण–

आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्डश्रावकाचार ग्रंथ में सल्लेखना की विधि बताते हुए कहा है–

जीवन भर जो तप, व्रत और चारित्र आदि का पालन किया जाता है, उनको यदि अगले भव में अपने साथ ले जाना है, तो मरण के काल में अवश्य ही सल्लेखना करनी चाहिए। जैसे किसी देश में कमाए धन की यदि कोई मनुष्य वहाँ से प्रस्थान करते समय याद न करे तो उसका वह धन

परलोकयात्रासमये–मरणान्ते यदि संल्लेखना न विधीयते परिणामाश्च भ्रश्यन्ति तदा दुर्गतिरेव भवति। अतएव मरणकाले संल्लेखनामाचार्याः शिक्षाव्रतं कथयन्ति। वास्तवे संल्लेखनायाः महत्वमचिन्त्यमस्ति।

एवं भूतैवैका संल्लेखनाऽस्माकं संघस्य वयोवृद्धायाः क्षुल्लिकायाः श्रद्धामत्याः अभवत्। भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे नन्द्यावर्तप्रासादपरिसरे 22 सितम्बर 2004 दिने दशलक्षण महापर्वणो मध्ये भाद्रशुक्लनवम्यां सा मातुः सम्बोधनस्य प्राप्तिकाले णमोकार मंत्रं च श्रवणकाले नश्वरशरीरस्य त्यागं कृत्वा देवपदं प्राप्नोत्। सा 85 वर्षीयाऽऽसीत्। सा 1985 वर्षात् अस्माकं संघेन सहासीत्। 1989 वर्षे च मात्रा क्षुल्लिकाव्रतं गृहीत्वा 15 वर्षाणां समयात् क्षुल्लिकाव्रतानां पालनमकरोत्। वास्तवेऽन्तसमये समाधिपूर्वकं मरणं महतः पुण्यस्योदयेनैव संभवति।

तीर्थत्रिवेण्याः अपूर्वः संगमः—**पूज्यया मात्रा सह वयमपि सहैव त्रयाणां तीर्थानां दर्शनस्य सुयोगं प्राप्नुम। अतएव सर्वेषां हृदये महान् उल्लासोऽभवत्। कुण्डलपुरप्रवासकाले प्रतिमासं एकदा पावापुरीमेकदा च राजगृहीं गत्वा पर्वतस्य वन्दना जलमन्दिरे च ध्यानावस्थायां अवस्थानं वास्तवे जन्म–जन्मनि संचितानां पुण्यानामेव फलं प्रतीयते।**

कुण्डलपुरअभिनन्दनग्रन्थस्य प्रकाशनम्—**भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य**

प्रायः व्यर्थ ही जाता है, इसी प्रकार परलोक यात्रा के समय अर्थात् मरण के अंत में यदि सल्लेखना न की जावे और परिणाम भ्रष्ट हो जावें तो दुर्गति हो जाती है। इसलिए मरण के समय में सल्लेखना करना एक शिक्षाव्रत माना गया है। वास्तव में सल्लेखना का महत्व अचिन्त्य है।

ऐसी ही एक सल्लेखना हमारे संघ की वयोवृद्ध क्षुल्लिका श्रद्धामती जी की हुई। भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल परिसर में 22 सितम्बर 2004 को दशलक्षण महापर्व के मध्य भाद्रपद शु. नवमी को उन्होंने पूज्य माताजी का सम्बोधन प्राप्त करते-करते एवं णमोकार मंत्र सुनते-सुनते इस नश्वर शरीर का त्यागकर देवपद प्राप्त कर लिया, वह 85 वर्ष की थीं। वे सन् 1985 से हमारे संघ में थीं और सन् 1989 में पूज्य माताजी से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण कर 15 वर्षों से क्षुल्लिका के व्रतों का दृढ़तापूर्वक पालन कर रही थीं। वस्तुतः जीवन के अंत समय में समाधिपूर्वक मरण करना महान पुण्य के उदय से ही संभव होता है।

➢तीर्थ त्रिवेणी का अपूर्व संगम–

पूज्य माताजी के साथ-साथ हम सबको भी एक साथ तीन-तीन तीर्थों के दर्शन का सुयोग प्राप्त हुआ अतः सबके हृदय में बड़ा आल्हाद रहा। कुण्डलपुर प्रवास करते हुए प्रतिमाह एक बार राजगृही और एक बार पावापुरी जाकर पर्वत वंदना, जल मंदिर में ध्यान आदि करना वास्तव में जन्म-जन्म में संचित पुण्य का फल प्रतीत होता था।

➢कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन–

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का एवं वहाँ की प्राचीन सांस्कृतिक नगरी की

तत्र च प्राचीन सांस्कृतिक नगर्याः प्राचीनैरैतिहासिकतायाः भगवतो राजवंशस्य महत्त्वं तीर्थंकर पदस्य च सार्थकत्वमादीनां जनं–जनं ज्ञानं प्रदानाय कुण्डलपुरसमितिः पूज्यायाः मातुः प्रेरणयैकस्याभिनन्दनग्रन्थस्य प्रकाशनस्य योजनामरचयत्।

तस्य प्रधान सम्पादकौः कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्रः प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाशः चास्तां। सम्पादकमण्डलस्य च सर्वेषां सम्पादकानां कुशलसम्पादने संघस्थानां ब्रह्मचारिणीनां भगिनीनां कार्यकुशलतया मम क्षुल्लकस्य मोतीसागरस्य च निरन्तरं परिश्रमेण पूज्यमातुश्च शुभाशीर्वादेन महावीरस्य जन्मभूमेः गरिमानुरूपं सुन्दरस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनमभवत्। दानवीरस्य समाजरत्नस्य श्री कमलचन्द्रस्य खारी बाबली–दिल्ल्याः परिवारस्यार्थसौजन्येन प्रकाशितस्य ग्रन्थस्य विमोचनं जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य पावनधरायां कुण्डलपुर महोत्सवस्य 2004 वर्षस्य मध्येऽभवत्।

सिद्धायिनीमाता उदचारयत् इयमेवास्ति यथार्था जन्मभूमिः–**17 अक्तूबर दिने एकः सुखदः स्वप्नः गिरनारतीर्थे आचार्य कुन्दकुन्देन घटितायाः तस्याः घटनायाः स्मृतिमकारयत्। यदा पाषाणस्याम्बिकादेवी अभाषत्,** ''सत्यपंथो निर्ग्रन्थो दिगम्बरः''**। ईदृशे एव एकस्मिन् स्वप्नेऽहमपश्यम् यदेकस्मिन् मन्दिरे सिद्धायिनी माता विराजते, अहं च तस्याः समीपे उपाविशम्, पृष्ठे पूज्या माता अवतिष्ठति महान च जनसमूहो वर्तते। अहं कथयामि यत् केन प्रकारेणेयं यथार्था जन्मभूमिर्विश्वसनीयरूपं प्राप्नोतु तदैव पाषाणस्य सिद्धायिनी माता त्रिवारमुदचारयत् यत्** ''यथार्था जन्मभूमिरियमेवास्ति''**। पुनः माताऽकथयत्**–''जयतु सिद्धायिनी

ऐतिहासिकता, भगवान के राजवंश की महत्ता, तीर्थंकर पद की सार्थकता आदि से जन-जन को परिचित कराने हेतु कुण्डलपुर समिति ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशन की योजना बनाई।

उसके प्रधान सम्पादक कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन-फिरोजाबाद तथा सम्पादक मण्डल के सभी सम्पादकों के कुशल सम्पादन में तथा संघस्थ ब्र. बहनों की कार्यकुशलता, मेरे व संघस्थ क्षु. मोतीसागर जी के अथक परिश्रम तथा पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद से भगवान महावीर जन्मभूमि की गरिमा के अनुरूप सुन्दर ग्रंथ का प्रकाशन हुआ। दानवीर समाजरत्न श्री कमलचंद जी-खारीबावली-दिल्ली परिवार के अर्थ सौजन्य से प्रकाशित हुए इस ग्रंथ का विमोचन 'जन्मभूमि कुण्डलपुर' की पावन धरा पर 'कुण्डलपुर महोत्सव-2004' के मध्य हुआ।

➢सिद्धायिनी माता बोल उठीं यह ही है सच्ची जन्मभूमि–

17 अक्टूबर को एक सुखद स्वप्न ने गिरनार तीर्थ पर आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा घटित उस घटना की याद दिला दी, जब पाषाण की अम्बिका देवी बोल पड़ी थीं, कि **सत्य पंथ निर्ग्रंथ दिगम्बर**..... ऐसा ही एक स्वप्न में मैंने देखा कि एक मंदिर में सिद्धायिनी माता विराजमान हैं, मैं उनके समीप में बैठी हूँ, पीछे पूज्य माताजी खड़ी हैं और बहुत सारी भीड़ है। मैं कह रही हूँ कि किस प्रकार इस सच्ची जन्मभूमि को विश्वव्यापी स्वरूप प्राप्त हो, तभी पाषाण की सिद्धायिनी माता 3 बार बोल पड़ीं कि **सच्ची जन्मभूमि यह ही है**, पुनः माताजी ने कहा–**जयतु सिद्धायिनी माता**, तब पुनः सिद्धायिनी माता ने वही शब्द 3 बार बोला और उनके ऐसा बोलते ही

माता'' **तदा पुनः सिद्धायिनी माता तमेव शब्दं त्रिबारं उदचारयत्। तस्याश्चैवं भाषमाणेऽपार जनसमूहस्य जय–जयकारैरा– काशमण्डलं गुंजायमानमभवत्। एतं स्वप्नमवलोक्य यदा मम नेत्रे उन्मीलितेऽभवतां तु सत्यमेव नेत्राभ्यां हर्षाश्रूणि प्रवाहमानान्यासन्। तदा 3.15 वादनसमयः आसीत्। पुनः 5 वादने यदाहं मातरं तं स्वप्नमकथयं तु साव्रवीत् चन्दनामते! वीर प्रभोर्जन्मभूरियमेवास्ति, इयं च स्थास्यति। पश्य मात्रं कस्मिन्चिदेव काले इयं जन्मभूमिर्विश्वस्य मानस पटले व्याप्ता भविष्यति, वास्तवे पूज्यायाः मातु र्वचनानि सत्यान्यभवन्।**

मम ज्ञानार्जनस्यापूर्वकेन्द्रमभवत् कुण्डलपुरस्य तीर्थयात्रा–**अस्याः कुण्डलपुरयात्रायाः मह्यं यत् सर्वाधिकं विशिष्टं तथ्यमासीत् तदस्ति ज्ञानार्जनस्यामूल्योपहारः यत् अस्यै वास्तविक–जन्मभूमये जन्मभूमि–सिद्धयेऽहं विशेषरूपेण प्राप्नवम्। वर्षाणां पूर्वं पूज्यायाः मातु र्मुखेन तेषां तीर्थानां विषयेऽहमशृण्वम्। अहं च स्वयमपि दीक्षाया ग्रहणस्य पूर्वमस्य तीर्थस्य वन्दनामकरवम्। पुनः यदा वैशालीं भगवतो जन्मभूमिं साधयितुं प्रचलताविचारधारा विशेषरूपेण मम समक्षमुपस्थिताभूत्, तदा तु चिन्तनस्य माध्यमेन वास्तविकं शोधं सर्वेषां समक्षमानेतुं मनोऽधिकं दृढमभूत्। विहारस्य मध्येऽपि यत्र कुत्रचित् पुस्कालयस्य उपलब्धिरभवत् तत्रैव विविधग्रन्थैः साक्ष्यानि संकलितानि कर्तुं भावना प्रवर्तमाना अभवत्। मनसि पुनः पुनः विचारोऽयं प्रादुर्भवति यत् शोधस्तु तदैव सार्थकोऽस्ति, यस्य माध्यमेन प्राचीनदिगम्बर जैनागमेभ्यः जैनाचार्य कथनेभ्यश्च परिपुष्टता संजायते। सैव बुद्धिः सार्थिका**

अपार जनसमूह के जय-जयकारों से आकाशमण्डल गुंजायमान हो रहा है। यह स्वप्न देखकर जब मेरी आंख खुली, तो सचमुच में नेत्रों से हर्ष के अश्रु बह रहे थे। उस समय 3.15 बजा था, पुनः 5 बजे जब मैंने माताजी को इस स्वप्न के बारे में बताया तो वे बोलीं कि चंदनामती! वीर प्रभु की जन्मभूमि यही थी, यही है और यही रहेगी। देखना, मात्र कुछ ही समय में यह जन्मभूमि विश्व के मानस पटल पर छा जायेगी और वास्तव में पूज्य माताजी के वचन सत्य निकले।

➢मेरे ज्ञानार्जन का अपूर्व केन्द्र बनी कुण्डलपुर तीर्थ यात्रा–

इस कुण्डलपुर यात्रा का मेरे लिए जो सर्वाधिक विशिष्ट पहलू रहा, वह रहा ज्ञानार्जन का अमूल्य उपहार, जो इस वास्तविक जन्मभूमि को जन्मभूमि सिद्ध करने हेतु मुझे विशेषरूप से प्राप्त हुआ। वर्षों पहले से पूज्य माताजी के मुख से इन तीर्थों के बारे में सुनती थी और मैंने स्वयं भी दीक्षा लेने से पूर्व इस स्थान की वंदना की थी। पुनः जब वैशाली को भगवान महावीर जन्मभूमि मानने वाली विचारधारा विशेषरूप से समक्ष आई, तब तो चिंतन के माध्यम से वास्तविक शोध को उजागर करने का मानस और भी दृढ़ होता गया । विहार के मध्य भी जहाँ कहीं भी पुस्तकालय उपलब्ध होता, वहाँ ही विविध ग्रंथों से साक्ष्य एकत्रित करने की भावना बनी रहती। मन में बार-बार यही विचार आता कि शोध तो वही सार्थक है, जिसके माध्यम से प्राचीन दिगम्बर जैनागम एवं जैनाचार्यों के कथन को ही परिपुष्टता प्राप्त हो, वही बुद्धि सार्थक है, जो अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति

विद्यते, या स्व प्राचीन संस्कृतिं प्रति कटिबद्धा भवेत्। एताभिर्भावनाभिः युक्ता भूत्वा जन्मभूमि कुण्डलपुरेण सम्बद्धेन ज्ञानार्जनेनेवआगामिशोधेन च अहं यस्यानन्दस्यानुभूतिमकरवं, सा वचनातीता एवास्ति। कुण्डलपुरस्य धरित्र्यामुपविश्य अध्ययनस्य स्वाध्यायस्य विशेषावसरः उपलब्धोऽभूत् यतोऽत्रैवाहं ''भगवान महावीर हिन्दी–अंग्रेजी जैनशब्दकोशं'' **पूज्यायाः मातुः छत्रछायायामुपविश्य गहनपठनचिन्तनस्य च पश्चात् निर्णयात्मकं स्वरूपमदाम। अनेनैव प्रकारेणैव कुण्डलपुर अभिनन्दनग्रन्थहेतवे गुरोराज्ञापूर्वकमेतद् सर्वांगीणं विधातुं प्रयासोऽपि ज्ञानार्जनस्य दिशि सार्थकमेवासिध्यत्।**

वास्तविकता त्वियमेवास्ति यत् ज्ञानस्य प्राप्तये आनन्दः आत्मानुभूतो भवति, सोऽनुपमोऽ–तुलनीयश्च वर्तते। या सन्तुष्टिः सम्यग्ज्ञानस्य माध्यमेन जायते सा संसारस्य केनाप्यन्यवस्तुना न प्राप्यते। अयं कुण्डलपुर विकासे मह्यं स्वाध्यायस्याभीक्ष्णज्ञानोपयोगस्य चावसरः प्राप्तोऽभवत्, सोऽपि मह्यमनुपमो निधिर्वर्तते।

मा गच्छ मातः अस्याः नगरीतः, त्वां विनेयं धरा शून्या—**भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः मात्रं 22 मासानां अल्पसमये नन्द्यावर्तस्य महतस्तीर्थस्य स्वरूपे ऐतिहासिकं नव विकासं सम्पन्नं कारयित्वा यदा 14 नवम्बर 2004, कार्तिक शुक्ल द्वितीयायामपराह्णे 3 वादन समये पूज्या माता वयं च कुण्डलपुरात् हस्तिनापुरं प्रति मंगलं विहारमकुर्म, तु विहारवासिनः सहसाऽधीराः अभवन्, पुनः पुनः मातरमनुनय–विनयं कृत्वा ते सर्वेऽकथयन्, यत् मातः!**

कटिबद्ध रहे। इन्हीं भावनाओं से ओत-प्रोत होकर जन्मभूमि कुण्डलपुर से संबंधित ज्ञानार्जन एवं आगमिक शोध में मुझे जो हार्दिक आनन्द प्राप्त हुआ वह वचनातीत है। कुण्डलपुर की धरती पर बैठकर भी अध्ययन-स्वाध्याय का विशेष ही अवसर रहा क्योंकि यहीं पर ही मैंने **''भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश''** को पूज्य माताजी की छत्रछाया में बैठकर गहन मनन-चिंतन के बाद निर्णयात्मक स्वरूप प्रदान किया, इसी प्रकार कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ हेतु गुरु आज्ञापूर्वक इसे सर्वांगीण बनाने का प्रयास भी ज्ञानार्जन की दिशा में सार्थक कदम ही सिद्ध हुआ।

वास्तविकता तो यही है कि ज्ञान की प्राप्ति में जो आनन्द आत्मा से उद्भूत होता है, वह अनुपम एवं अतुलनीय है, जितनी संतुष्टि सम्यग्ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होती है, वह संसार की किसी भी अन्य सामग्री से नहीं प्राप्त हो सकती। इस कुण्डलपुर विकास ने मुझे स्वाध्याय एवं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग का जो अवसर प्रदान किया है, वह ही मेरे लिए अनुपम निधि है।

➢मत जाओ माँ इस नगरी से, यह धरा तुम्हारे बिन सूनी–

भगवान महावीर जन्मभूमि के मात्र 22 माह के अल्प समय में नंद्यावर्त महल तीर्थ के रूप में ऐतिहासिक नवविकास सम्पन्न करवाकर जब 14 नवम्बर 2004, कार्तिक शु. दूज को अपरान्ह 3 बजे पूज्य माताजी एवं हम लोगों ने कुण्डलपुर से हस्तिनापुर की ओर मंगल विहार किया, तो बिहारवासी एकदम अधीर हो उठे, बार-बार पूज्य माताजी से अनुनय-विनय करके वे सब कहने

इदानीं तु तीर्थक्षेत्रमिदं स्वविकसितं रूपं प्राप्तमकरोदेव, इदानीं तु इदं 22 मासानां बालकोऽस्ति यस्मै भवत्या परिपक्वं विधातुमधिकं कार्य कर्तुमपेक्षितं विद्यते, एतस्मिन् समये भवती विहार कर्तुमद्यतास्ति, अधुना भवत्याः अस्य क्षेत्रस्यानन्दं न प्राप्नोत्। मृत्तिकैव भवत्या प्राप्ता कृता, मातः! एतं तीर्थमस्मान् च विहार निवासिनः परित्यज्य भवती न गच्छतु। एतदुक्त्वा परम दुःखिताः भूत्वा पुनः पुनः आगमनं कर्तुं निवेदनं कृतवन्तः। तस्मिन् समये माताश्रीः तेभ्यः सर्वेभ्यः इदमेव सम्बोधनं प्रादात, पश्यत! साधवे किं वनं कश्च प्रासादः? वयं आत्मने तीर्थं न निर्मितमकुर्म, प्रत्युत भारतस्य सर्वेभ्यो जैन जनेभ्यो निर्मितमकुर्म। जिन संस्कृतेश्च सुरक्षामात्रमकुर्म। अतो यूयं सदैव प्राणैः तीर्थस्यास्य रक्षां कुरुत। अयमेव भवतां मां प्रति वास्तविकः समादरो भविष्यति। यद्यपि तीर्थ–वियोगकाले अस्माकं पूज्यमातुश्च नेत्रेषु अश्रूणि समागतानि, यतः इदानीं न जानीमः यदेतां मृत्तिकां स्पर्शनस्य वीरप्रभोश्च दर्शनस्यावसरः प्राप्नोतु, किन्तु साधवस्तु नदीनां धारेव भवन्ति, ये एकस्थानात् द्वितीयं प्रति भ्रमणं कृत्वा सदैव निजस्य परकल्याणे च तत्पराः भवन्ति।

॥ इति सप्तमोऽध्यायः॥

लगे कि माताजी! अभी तो इस तीर्थ ने अपने विकसित स्वरूप को प्राप्त ही किया है, अभी तो यह 22 माह का बालक है, जिसे आपको और परिपक्व करना है, आपने अभी यहाँ का आनंद ही क्या लिया, मात्र यहाँ की धूल-मिट्टी ही मिली है आपको, अब जब इस विकसित तीर्थ पर कुछ क्षण रहने का समय है, तब आप विहार कर रही हैं, माताजी! कृपया इस तीर्थ और हम बिहारवासियों को छोड़कर मत जाइए, इतना कहते-कहते बेचारे दुखी होकर रोने लगे और जब भी माताजी की मौनपूर्वक मुस्कान देखी तो बेचारे पुनः-पुनः पधारने का निवेदन करने लगे। उस समय माताजी ने उन सबको यही सम्बोधन प्रदान किया कि देखो! साधु के लिए क्या जंगल, क्या महल! हमने कोई अपने लिए तीर्थ नहीं बनाया प्रत्युत् भारत की समस्त जैन जनता के लिए बनाया है और जिनसंस्कृति की सुरक्षा मात्र की है, बस आप सब प्राणप्रण से सदा इस तीर्थ की सुरक्षा करते रहें, यही मेरे प्रति आपका सच्चा समादर होगा। हालांकि तीर्थ को छोड़ते हुए एक बार पूज्य माताजी एवं हम सभी की आँखों में अश्रु आ गए कि अब ना जाने कब इस पवित्र माटी को छूने और वीरप्रभु को नमन करने का सौभाग्य प्राप्त हो, किन्तु सन्त तो नदियों की बहती धारा के समान होते हैं, जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण कर सदैव निज-परकल्याण में ही तत्पर रहते हैं।

अध्याय-8

भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव

अष्टमोऽध्यायः

भगवतः पार्श्वनाथस्य तृतीयसहस्राब्दिमहोत्सवः

पर्याप्तसमयात् पूज्यायाः मातुर्मनसि त्रयोविंशस्य तीर्थंकरस्य भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकतृतीयसहस्राब्दिमहोत्सवं राष्ट्रीयस्तरेण आयोजनार्थं भावना गतिशीलासीत्। सा अस्य महोत्सवस्योद्घाटनहेतवे पार्श्वनार्थस्य जन्मभूमौ वाराणस्यां भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणक पौषकृष्णएकादशींदिनमपि पूर्वस्मादेव निश्चितमकरोत्। अतोऽधुना कुण्डलपुरात् विहारकाले यदपि प्रमुखं लक्ष्यं वाराणसीआगमनस्यैवासीत्। पुनरपि कुण्डलपुरस्य निकटवर्तिषु राजगृहीपावापुरीगुणावाँतीर्थेषु प्रारब्धानां निर्माणकार्याणां पूर्णतायां तत्रापि भगवन्तं विराजमानं कर्तुं आदिकानि कार्याणि सम्पादयितुं संयोगोऽपि प्राप्तोऽभूत्।

14 नवम्बर 2004 दिने कुण्डलपुरात् मंगलविहारस्य पश्चात् 15 नवम्बर दिने पूज्या माता राजगृह्यां भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य नूतने मन्दिरे कलशारोहणं संपन्नमकारयत्। संघस्थाश्च भगिन्यः 1008 मन्त्रैः भगवतः श्रीचरणयोः गुलाबस्य पुष्पाणि समर्पितान्यकुर्वन्। पुनः विपुलाचलस्य नीचैः भगवतो महावीरस्य तस्य शिष्यस्य च गौतमगणधरस्य प्राचीनां घटनां स्मारयन्त्यः पूज्यायाः मातुः प्रेरणया संघपतिना लालामहावीर प्रसादेन नवनिर्मितस्य मानस्तम्भस्य वेदिकाशुद्धिमकारयत्। 17 नवम्बरे कार्तिक शुक्ल षष्ठ्यां च प्रातःकाले

भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव

काफी दिनों से पूज्य माताजी के मन में 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने हेतु भावना चल रही थी, उन्होंने इस महोत्सव के उद्घाटन हेतु पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी में भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस (पौष कृ. 11) की तिथि भी पहले से ही निश्चित कर दी थी अतः अब कुण्डलपुर से मंगल विहार करते समय यद्यपि प्रमुख लक्ष्य वाराणसी पहुँचने का था, फिर भी कुण्डलपुर के निकटवर्ती तीर्थ–राजगृही, पावापुरी, गुणावां में भी प्रारंभ किए गए निर्माण की पूर्णता पर वहाँ भी भगवान विराजमान आदि कार्यों को सम्पन्न कराने का संयोग भी प्राप्त हो गया।

14 नवम्बर 2004 को कुण्डलपुर से मंगल विहार के पश्चात् 15 नवम्बर को पूज्य माताजी ने राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ के नवीन मंदिर पर कलशारोहण सम्पन्न करवाया तथा संघस्थ बहनों ने 1008 मंत्रों से भगवान के श्रीचरणों में गुलाब के पुष्प समर्पित किए पुनः विपुलाचल पर्वत की तलहटी में भगवान महावीर एवं उनके शिष्य गौतम गणधर की प्राचीन घटनाओं की स्मृति दिलाते हुए पूज्य माताजी की प्रेरणा से संघपति लाला महावीर प्रसाद जी द्वारा नवनिर्मित मानस्तंभ की वेदी शुद्धि की गई तथा 17 नवम्बर, कार्तिक शु. षष्ठी को प्रातःकाल

मानस्तम्भे भगवतो महावीरस्य चतस्रः प्रतिष्ठिताः प्रतिमाः विराजमानाः कृताः। अस्मात्पूर्वं 16 नवम्बर दिने मध्याह्ने राजगृह्यां संचालिते जवाहरनवोदये विद्यालये पूज्यायाः मातुरेव प्रेरणया श्रीमनोजकुमारजैनस्य मेरठनगरस्य सौजन्येन विराजितस्य भगवतो महावीरस्य अत्यन्तमेव मनोहारिण्या अहिंसासत्यअस्तेयअपरिग्रहादीनां सन्देशं प्रदायिनीन्याः पद्मासनायाः रक्त प्रतिमायाः अनावरणं ब्र. रवीन्द्रेण संघ सान्निध्ये कृतम्।

पुनः तीर्थं चमनं कर्तुमस्यां श्रृंखलायां नवम्बर 2004, कार्तिक शुक्लाष्टम्यां गौतमगणधरस्य निर्वाणभूमौ गुणावां सिद्धक्षेत्रे नवनिर्मिते मन्दिरे संघपतेः महावीरप्रसादस्य सौजन्येन श्वेतपाषाणस्य सार्धपंच फुट उत्तुंगा खड्गासनप्रतिमा विराजमाना कृता। मन्दिरे च कलशारोहणमप्यभवत्। कलशारोहणस्य पश्चात् गुणावां तीर्थस्य मन्दिरे मुख्यवेदिकायाः बहिः सभाभवनस्य नवीनासु वेदिकासु मातुः पद्मावत्याः धरणेन्द्रदेवस्य मूर्ती विराजमाने अभवताम्। मध्याह्ने गौतमस्वामिनः 1008 पुष्पैः आराधना संम्पन्नाभवत्। पुनः विहारतीर्थन्यासमण्डलस्याध्यक्षः श्री रामगोपालः अजय जैनश्च संघस्य स्वागतं सम्मानं चाकुरुताम्। पीठाधीशस्य क्षुल्लकमोतीसागरस्याकस्मात् उत्पन्नायाः अस्वस्थतायाः कारणेन गुणावां सिद्धक्षेत्रे भूयमानस्य पंचदशदिवसीय प्रवासस्य मध्ये अनेक विधानानुष्ठान्यपि सम्पन्नान्यभवन्। अस्मात्पूर्वं राजगृही क्षेत्रे 2 दिवसीयप्रवासस्य मध्ये राज्ञः श्रेणिकस्य कोशः पर्वतस्य गुहायामुत्कीर्णः अनेक जैनमूर्तयश्च सर्वेदैव स्मरणीयाः भविष्यन्ति। ये जैनत्वस्य

मानस्तंभ में भगवान महावीर की चार प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ विराजमान की गईं। इससे पूर्व 16 नवम्बर को मध्यान्ह में राजगृही में संचालित जवाहर नवोदय विद्यालय में पूज्य माताजी की ही प्रेरणा से श्री मनोज कुमार जैन-मेरठ के सौजन्य से विराजित भगवान महावीर की अत्यन्त मनोहारी, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह आदि का संदेश देने वाली पद्मासन लाल प्रतिमा का अनावरण ब्र.रवीन्द्र जी द्वारा संघ सानिध्य में किया गया।

पुनः तीर्थ को चमन करने की इस श्रृंखला में 19 नवम्बर 2004, कार्तिक शु. अष्टमी को गौतम गणधर की निर्वाणभूमि गुणावां जी सिद्धक्षेत्र पर नवनिर्मित मंदिर में संघपति लाला श्रीमहावीर प्रसाद जी के सौजन्य से श्वेत पाषाण की साढ़े 5 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गई और मंदिर पर कलशारोहण भी हुआ। कलशारोहण के पश्चात् गुणावां जी मंदिर में मूलवेदी के बाहर हॉल की नवीन वेदियों में माता पद्मावती देवी एवं धरणेन्द्र देव की मूर्ति विराजमान की गई। मध्यान्ह में गौतम स्वामी की 1008 पुष्पों से आराधना की गई पुनः बिहार तीर्थ न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी एवं मंत्री-श्री अजय जी ने संघ का स्वागत सम्मान किया। संघस्थ पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर जी की अचानक आई अस्वस्थता के कारण गुणावां जी सिद्धक्षेत्र पर हुए 15 दिवसीय प्रवास के मध्य अनेकों विधान-अनुष्ठान भी सम्पन्न हुए। इससे पूर्व देखे गये राजगृही तीर्थ पर दो दिवसीय प्रवास के मध्य राजा श्रेणिक का

गौरवगाथायाः सुन्दरंवर्णनं कुर्वन्ति। यत्र कदापि जैनधर्म एव विद्यमानः आसीत्। तथैव गुणावां क्षेत्रस्य प्रवासमध्ये श्री गौतमगणधर स्वामिनः श्रीचरणयोः निर्वाणस्थल्याः जैनमन्दिरे च कृतं ध्यानमपि सदैव चिरस्मरणीयं भविष्यति।

मुनिना प्रमाणसागरेण सह साक्षात्कारः—**22 दिसम्बर 2004, मार्गशीर्ष शुक्लैकादश्याः दिने, मुगलसराय नगरे प्रवासस्य मध्ये सम्मेदशिखरात् विहारस्य पश्चादेव आचार्य श्री विद्यासागरस्य शिष्येण मुनिना श्रीप्रमाणसागरेण सह मिलनमभूत। तेन सहैव मन्दिरे प्रवचनमभवत्। तदा सः मात्रा सह विविधेषु विषयेषु चर्चामकरोत्। भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य विकासे प्रसन्नतां व्यवक्तामकरोत्।**

मुगलसराय निवासिनामत्यन्तमेवाग्रहः आसीत् यत् मातः! अत्र मन्दिरस्य निर्माणं भूत्वा पूर्णरूपेण प्रस्तुतमस्ति, अतस्तस्मिन् वेदिकाशुद्धि कारयित्वा तत्र भवती भगवतः पार्श्वनाथस्य प्रतिमां स्वकरकमलाभ्यां विराजमानां कारयतु। यतो हि मातुः निर्धारितकार्यक्रमानुसारेण वाराणस्यामुपस्थितिरावश्यकी आसीत्। अतो माता तेभ्यः शीघ्रमेव प्रतिष्ठाचार्येण वेदिकायाः शुद्धेराश्वासनमदात् पुनः मातुराशीर्वादेन ते पौषशुक्लदशम्यां 15 जनवरी 2004 दिने नवनिर्मिते मन्दिरे 108 फणैर्युक्तां भगवतः पार्श्वनाथस्य मनोहारिणीं कृष्णवर्णां पद्मासनां प्रतिमां विराजमानामकुर्वन्।

खजाना, पहाड़ की गुफा में उत्कीर्ण अनेक जैन मूर्तियाँ, सदैव चिरस्मरणीय रहेंगे जो जैनत्व की गौरवगाथा का सुन्दर वर्णन करते हैं कि कभी यहाँ जैनधर्म ही विद्यमान रहा होगा। इसी प्रकार गुणावां जी के प्रवास के मध्य श्री गौतम गणधर स्वामी के श्रीचरणों में एवं निर्वाणस्थली जलमंदिर में किया गया ध्यान भी सदैव चिरस्मरणीय रहेगा।

➢मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज से भेंट–

22 दिसम्बर 2004, मगशिर शु. 11 को मुगलसराय में प्रवास के मध्य सम्मेदशिखर की ओर विहार कर रहे आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के शिष्य मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज से मिलन हुआ और उनके साथ ही मंदिर में मंगल प्रवचन हुए। उस समय उन्होंने माताजी से अनेक प्रकार की चर्चाएँ की और महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के विकास पर अतीव प्रसन्नता व्यक्त की।

मुगलसराय वालों का अतीव आग्रह था कि माताजी! यहाँ मंदिर बनकर पूर्णरूपेण तैयार हो गया है अतः उसमें वेदी शुद्धि करवाकर आप वहाँ भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा अपने करकमलों से विराजमान करवा दीजिए चूँकि उस समय माताजी को निर्धारित कार्यक्रमानुसार बनारस पहुँचना आवश्यक था अतः माताजी ने उन्हें शीघ्र ही पण्डित जी द्वारा वेदी शुद्धि का आश्वासन प्रदान किया पुनः पूज्य माताजी के आशीर्वाद से पौष शु. दशमी, 15 जनवरी 2005 पौष शु. षष्ठी को नवनिर्मित वेदी में 108 फणों से युक्त भगवान पार्श्वनाथ की अत्यन्त मनोहारी कृष्णवर्णी पद्मासन प्रतिमा विराजमान की गईं।

तृतीयसहस्राब्दिमहोत्सवस्योद्घाटनं वाराणस्याम्—**भगवतः पार्श्वनाथस्य भगवतः सुपार्श्वनाथस्य च जन्मना पवित्रा विद्यते वाराणसी–नगरी। यत्र 22 दिसम्बर 2004 दिने मुगलसरायात् विहृत्य मध्याह्ने 4 वादनसमये पूज्यायाः मातुः संघसहितायाः मैदागिनधर्मशालायां मंगलं पदार्पणमभवत् किन्त्वद्यास्यां नगर्यां पदार्पणस्योद्देश्यमासीत्** ''भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकस्य तृतीयसहस्राब्दिमहोत्सवस्योद्घाटनम्''**। 6 जनवरी 2005 दिने भव्यतया सह विशालस्य जनसमूहस्य मध्ये सानन्दं सम्पाद्यमानस्यास्य महोत्सवस्य पूर्ववेलायां 23 दिसम्बर दिने मातुः संघस्य भेलुपुरमन्दिरे मंगलपदार्पणस्यावसरे मूलवेदिकायां विराजमानस्य भगवतः पार्श्वनाथस्य महतो जनसमूहस्य मध्ये पंचामृताभिषेकः सम्पन्नोऽभवत्। तत्पश्चात् प्रारब्धाभवत् कार्यक्रमाणां शृंखला, यस्यां सर्वप्रथमं कुबेरेण पञ्चदशमासपर्यन्तं संभूताया रत्नवृष्ट्याः प्रतीकरूपेण 15 दिनानि यावत् प्रतिदिनं रत्नवृष्टिं विधाय सर्वेभ्य रत्नानि वितीर्णान्यभवन्।**

6 जनवरी 2005, पौष कृष्णैकादश्याः दिने भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकस्य दिवसस्यावसरे धूलियान–पश्चिमबंगालनिवासि श्री धन्नालालमोहनलालअजितकुमारअजमेरा परिवारेण मातुः संघसान्निध्ये कृतेन झण्डारोहणेन सह कार्यक्रमस्य शुभारम्भोऽभवत्। जन्मभूम्यां वाराणस्यां निर्गता अत्रैतिहासिकशोभायात्रा वास्तवेऽभूतपूर्वाआसीत्।

भगवतः पार्श्वनाथस्य 9 मंजिलयुक्तस्य धातोः प्रासादस्यानावरणम्–**भव्यायाः शोभायात्रायाः पश्चात् आयोजितायां धर्मसभायां मुख्यातिथि रूपेण** ''उत्तरप्रदेशस्य शासनस्य लोकनिर्माणमंत्री

➢तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का भव्य उद्घाटन वाराणसी में–

भगवान पार्श्वनाथ एवं सुपार्श्वनाथ के जन्म से पावन है वाराणसी नगरी। जहाँ 22 दिसम्बर 2004 को मुगलसराय से चलकर दिन में 4 बजे पूज्य माताजी का संघ सहित मैदागिन धर्मशाला में मंगल पदार्पण हुआ लेकिन आज इस नगरी में पदार्पण का उद्देश्य था **''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का भव्य उद्घाटन''**, 6 जनवरी 2005 को भव्यता के साथ विशाल जनसमूह के बीच सानंद सम्पन्न होने वाले इस महोत्सव की पूर्व बेला में 23 दिसम्बर को माताजी संघ के भेलूपुर मंदिर में मंगल पदार्पण अवसर पर मूलवेदी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ का भारी भीड़ के मध्य पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् प्रारंभ हुई कार्यक्रमों की श्रृंखला, जिसमें सर्वप्रथम कुबेर द्वारा पन्द्रह माह तक हुई रत्नवृष्टि के प्रतीक में 15 दिनों तक प्रतिदिन रत्नवृष्टि कर सभी में रत्न वितरित किए गए।

6 जनवरी 2005, पौष कृ. एकादशी को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक दिवस के अवसर पर श्री धन्नालाल मोहनलाल अजित कुमार जैन अजमेरा परिवार-धूलियान (प. बंगाल) द्वारा माताजी के संघ सानिध्य में किए गए झण्डारोहण पूर्वक कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जन्मभूमि वाराणसी में निकाली गई भव्य ऐतिहासिक शोभायात्रा वास्तव में अभूतपूर्व थी।

➢भगवान पार्श्वनाथ के 9 मंजिले धातु के महल का अनावरण–

भव्य शोभायात्रा के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में मुख्य अतिथि के रूप में **उ.प्र. सरकार के**

श्री शिवपाल सिंहयादवः'', **समारोहस्याध्यक्षरूपेण** उत्तरप्रदेश विधानसभायाः अध्यक्षः श्रीमाताप्रसाद पाण्डेयः **अन्ये च मंत्रिणो विशिष्टमहानुभावाश्च समागच्छन्। दीपप्रज्ज्वलनस्य मंगलाचरणस्य च पश्चात् मंगलकलशस्य स्थापनाभवत्। पुनः** ''भगवान् महावीरहिन्दीअंग्रेजीजैनशब्दकोशस्य विमोचनं'' **सारस्वातेनातिथिना** श्री पी.रामचन्द्रावेण, कुलपतिना बनारसहिन्दूविश्वविद्यालयेन कृतम्। पुनः मुख्यातिथिना भगवतः पार्श्वनाथस्य 9 मंजिलयुक्तस्य धातुनिर्मितस्य प्रासादस्यानावरणमभवत्।'' **सहैव मया लिखितानां भजनानां आडियो कैसेटस्य विमोचनं विधानसभायाः अध्यक्षमहोदयेन कृतम्।**

पूज्या माता स्व मंगलप्रवचने सर्वेभ्यः शुभाशितं प्रादात्। एतामेव प्रेरणामदात् यत् वर्षेऽस्मिन् सम्मेदशिखरे राष्ट्रीयस्तरेण भवगतः पार्श्वनाथस्य निर्वाणमहोत्सवः आयोजितो भवेत्। भारतवर्षीयदिगम्बरजैनतीर्थक्षेत्र समितेर्नवनिर्वाचितोऽध्यक्षः श्री नरेशकुमारः सेठी दिगम्बर जैनतीर्थक्षेत्राणि जैनसंस्कृतेः प्रतीकानि प्रतिपादयन् अकथयत् यत् गणिनीप्रमुखायाः ज्ञानमत्याः मातुः प्रत्येकसमारोहः पूर्णया भव्यतया सह सम्पद्यते। अद्याहमस्मिन् भगवतः पार्श्वनाथस्य तृतीयसहस्राब्दिसमारोहे उपस्थितो न अभवम्, मम हानिरासीत्। सायंकाले बम्बई निवासिनः प्रसिद्धसंगीतकारस्य श्री रवीन्द्र जैनस्य भव्य सांस्कृतिक सन्ध्याकार्यक्रमेण सम्पूर्णं पाण्डालं पार्श्वनाथमयमभवत्। महोत्सवस्य द्वितीयदिवसे 7 जनवरीदिने भेलूपुर

लोकनिर्माण मंत्री–श्री शिवपाल सिंह यादव, समारोह अध्यक्ष के रूप में **उत्तरप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष-श्री माताप्रसाद पाण्डेय** तथा अनेक अन्य मंत्री व विशिष्ट गणमान्य महानुभाव पधारे। दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के पश्चात् मंगलकलश की स्थापना हुई पुनः **''भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी जैन शब्दकोश'' का विमोचन सारस्वत अतिथि श्री पी.रामचन्द्र राव (कुलपति-बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) द्वारा हुआ पुनः मुख्य अतिथि द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के 9 मंजिले धातु के महल का अनावरण हुआ।''** साथ ही मेरे द्वारा लिखित भजनों की ऑडियो कैसेट का विमोचन विधानसभा अध्यक्ष जी द्वारा कराया गया।

पूज्य माताजी ने अपने मंगल प्रवचन में सभी को शुभाशीष देते हुए यही प्रेरणा दी कि इस वर्ष सम्मेदशिखर में राष्ट्रीय स्तर पर भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव मनाया जाये। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष-श्री नरेश कुमार सेठी ने दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों को जैन संस्कृति का प्रतीक बताते हुए उनके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जैन समाज के हित में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे पर अपने विचार प्रकट किए। साथ ही यह भी कहा कि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का प्रत्येक समारोह पूर्ण भव्यता के साथ ही मनाया जाता है और यदि मैं आज के इस भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव में नहीं आता, तो मेरी हानि होती। सायंकाल प्रसिद्ध संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन-मुम्बई द्वारा भव्य सांस्कृतिक संध्या के आयोजन से पूरा पाण्डाल पार्श्वनाथमय हो गया। महोत्सव के द्वितीय दिवस 7 जनवरी को भेलूपुर

दिगम्बरजैनमन्दिरे भगवतः पार्श्वनाथस्य मनोज्ञप्रतिमायाः 1008 कलशैर्मस्तकाभिषेकोऽभवत्। सहैव मानस्तम्भे विराजितानां भगवतामपि भक्तैरभिषेकः कृतः। मध्याह्ने तीर्थंकर ऋषभदेवविद्वत्महासंघस्य अधिवेशना सम्पन्नोऽभवत्, अस्मिन्नवसरे बनारसहिन्दूविश्व विद्यालयस्य सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालयस्य च अन्येभ्यश्च अनेकस्थानेभ्यः समागतानां 25 विदुषां विद्वत् महासंघस्य च 25 विदुषां भावसिक्तं स्वागतमभवत्।

समारोहस्य तृतीयदिवसे 8 जनवरी दिने इन्द्र–इन्द्राणीभिः सह भगवतः पार्श्वनाथस्य मण्डलविधानेन सह कार्यक्रमस्य समापनमभवत्। सायंकाले च त्रिषुदिवसेसु भगवतः पार्श्वनाथस्य 1008 दीपकैः मंगल–आरतिका संजाता।

बनारसहिन्दूविश्वविद्यालये आध्यात्मिकं प्रवचनम्–**पूज्या गणिनी श्रीज्ञानमती माता 9 जनवरी 2005 दिने एशिया द्वीपस्य प्रथमपंक्त्याः विश्वविद्यालयेषु मुख्यस्य प्रसिद्धस्य च बनारस नगरस्य हिन्दूविश्वविद्यालयस्य मालवीयभवने विश्वविद्यालयपरिवारं जैनसमाजस्य च शताधिक प्रबुद्धजनानां आचार्यश्रीकुन्दकुन्द विरचित समयसारस्य जैनधर्मस्य च मूलभूतसिद्धान्तानां यदध्यात्मपीयूषमपाययत् तस्यसर्वेषां मनसि मस्तिष्के च न मृष्टुं योग्यां मुद्रामत्यजत्। पूज्यायाः मातुर्मुखारविन्देन प्रवाहमाना धर्मामृतस्याविरलधारा स्वात्मनि अत्यन्तमनुपमासीत्। सर्वेषामेवोपरि तस्याः विलक्षण प्रभावः दृष्टव्यः आसीत्। मालवीयभवने रविवासरीये गीताप्रवचनस्यान्तर्गतं पूज्यामाता समयसारस्य दृष्ट्यात्यन्तमेव मार्मिकमाध्यात्मिकं प्रवचनं प्रस्तुतमकरोत्।**

दि. जैन मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा का 1008 कलशों से मस्तकाभिषेक किया गया, साथ ही मानस्तंभ में विराजमान भगवन्तों की प्रतिमाओं का भी भक्तों द्वारा अभिषेक किया गया। मध्यान्ह में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ का अधिवेशन हुआ, जिसमें बनारस हिन्दी विश्वविद्यालय एवं सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय आदि कई जगह से पधारे 25 विद्वानों एवं विद्वत् महासंघ के 25 विद्वानों का भावभीना स्वागत किया गया।

समारोह के तृतीय दिवस 8 जनवरी को 108 इन्द्र-इन्द्राणियों के साथ भगवान पार्श्वनाथ मण्डल विधान के आयोजनपूर्वक कार्यक्रम का समापन हुआ और सायंकाल तीनों दिन भगवान पार्श्वनाथ की 1008 दीपकों से मंगल आरती की गई।

➢बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक प्रवचन–

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने 9 जनवरी 2005 को एशिया के प्रथम पंक्ति के विश्वविद्यालयों में से मुख्य विश्वप्रसिद्ध बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में विश्वविद्यालय परिवार एवं जैन समाज के सैकड़ों प्रबुद्धजनों को आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी रचित समयसार एवं जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का जो अध्यात्म-पीयूष पिलाया, वह सभी के मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ गया। पूज्य माताजी के मुखारविंद से प्रवाहित होती हुई धर्मामृत की अविरल धारा अपने आप में अत्यन्त अनुपम थी एवं सभी के ऊपर उसका विलक्षण प्रभाव दृष्टव्य हुआ। मालवीय भवन में रविवासरीय गीता प्रवचन के अंतर्गत पूज्य माताजी ने समयसार की दृष्टि से अत्यन्त मार्मिक आध्यात्मिक प्रवचन प्रस्तुत किया।

गणिनी माता स्व प्रभावपूर्णे उद्बोधनेऽकथयत् अस्माकं भवता च आत्मा सर्वज्ञः समदर्शी चास्ति। परन्तु कर्मणां रजसाआच्छादनकारणेनायं सर्वं ज्ञातुं समर्थो न भवितुं शक्नोति। येन प्रकारेण मेघैः आच्छादितो भूत्वा सूर्यस्यास्तित्वं धूमिलं भवति, तेनैव कर्ममेधाः आत्मनः सर्वज्ञसर्वदर्शी स्वरूपम् आच्छादयंति। सर्वस्याः उपासनायाः एकमात्रं सारोऽयमेवास्ति वयं स्वस्यात्मनः सर्वज्ञस्वरूपं सर्वदर्शिस्वरूपं चोपलब्धं कुर्याम। ये महात्मानः स्व समस्त कर्ममलमनाशयन् ते एव चैतन्यमयेन सिद्धात्मरूपेण सर्वदा कालाय सिद्धशिलां गत्वा व्यराजन्त। अस्मत्सदृशानां सर्वेषां संसारिप्राणिनामपि एकमात्रं तदेव लक्ष्यं भवितव्यम्।

सर्वे महाचार्याः यं सारेस्वपिसारमकथयन् तदस्ति ध्यानंयोगोऽअर्थात् समाधिः। यतो हि ध्यानस्य बले एव वयं स्वज्ञानं परिपूर्णं केवलज्ञानविधातुं शक्नुमः। समयसारे स्वामी कुन्द–कुन्दोऽकथयत् यत् आत्मैकोऽस्ति, शाश्वतोऽस्ति ज्ञानदर्शनलक्षणश्चास्ति। ज्ञानंदर्शनं च यस्मिन् घटते सः एव जीवोस्ति। यस्मिन च न घटते सोऽजीवोऽस्ति। समयस्यार्थोऽस्ति आत्मा। आत्मनश्च सारोऽस्ति, पूर्णाज्ञानस्यावस्था।

देहं अर्थात् शरीरं स्वमननं, अथवा 'शरीरमेवाहमस्मि' एषा मान्यता, शरीरस्य जन्म–मरणेन च सह स्वजन्म–मरणस्य ज्ञानं एतदेव संसारस्य मूलकारणमस्ति अर्थात् ''शरीरमात्मरूप ज्ञानमेव सांसारिक परिभ्रमणस्याधारभूतं कारणमस्ति।'' **यस्मै बहिरात्मेति संज्ञा**

पूज्य गणिनी माताजी ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में कहा कि हमारी और आपकी आत्मा सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी है परन्तु कर्मरूपी रज से आच्छादित होने के कारण यह सब कुछ जानने में समर्थ नहीं हो पा रही है। जिस प्रकार बादलों से ढककर सूर्य का अस्तित्व धूमिल हो जाता है, उसी प्रकार कर्मरूपी बादल आत्मा के सर्वज्ञ स्वरूप को धूमिल कर देते हैं। सारी उपासना का एकमात्र सार यही है कि हम अपने उस सर्वज्ञ-सर्वदर्शी स्वरूप को उपलब्ध कर लें। जिन महान आत्माओं ने अपने समस्त कर्ममल को विनष्ट कर दिया, वे ही चिच्चैतन्यमयी सिद्ध-आत्मा के रूप में सदैव के लिए सिद्धशिला पर जाकर विराजमान हो गये। हम जैसे समस्त संसारी प्राणियों का भी एकमात्र वही शाश्वत लक्ष्य होना चाहिए।

सभी महान आचार्यों ने जो 'सारों में भी सार' बताया है, वह है ध्यान अर्थात् योग अर्थात् समाधि क्योंकि ध्यान के बल पर ही हम अपने ज्ञान को परिपूर्ण केवलज्ञान बना सकते हैं। समयसार में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है कि आत्मा एक है, शाश्वत है एवं ज्ञान-दर्शन लक्षण वाला है। ज्ञान-दर्शन जिसमें घटित होता है वही जीव कहलाता है और जिसमें घटित नहीं होता है, उसे अजीव कहते हैं। समय का अर्थ है आत्मा और आत्मा का सार है-पूर्ण ज्ञान की अवस्था।

देह अर्थात् शरीर को अपना मानना अथवा 'शरीर ही मैं हूँ' ऐसा मानना अथवा शरीर के जन्म और मरण के साथ अपना जन्म और मरण मानना, यही संसार के मूल कारण हैं। अर्थात् **शरीर को आत्मा मान लेना ही सांसारिक परिभ्रमण का आधारभूत कारण है,** जिसे बहिरात्मपने की संज्ञा भी दी

प्रदीयते। यदि वयं स्वात्मशक्तेरनुभवं कुर्मः तु बाह्यस्य संसारस्य कापि शक्तिरस्मान् प्रभावितान् कर्तुं न शक्नोति। साधवः शरीरान्मोहं त्यक्तुं कठोरां साधनां कुर्वन्ति। येन ते चैतन्य धतुना निर्मिताः अशरीरिणो भवन्तु। जीवेऽर्थादात्मनि वर्ण–गन्ध–रस–रूप– संस्थानसंहननादयः किञ्चिदपि न सन्ति। वस्तुतः एते पुद्गलशरीरस्यैव गुणविशेषाः सन्ति। आत्मा तु शक्तिरूपेण सदैव शिवोऽस्ति। कर्ममलैश्चास्पृष्टो भूत्वा तस्येदं स्वरूपं प्रकटितं जायते।

संसारे मोहोऽज्ञानं च सर्वाधिकं तमोऽस्ति। याभ्यां वशीभूय जीवो वस्तुस्वरूपं न जानन् चतुर्गतिषु भ्रमणं करोति।

धर्मः सम्पदायः वर्गः जात्यादयः सर्वाणि भिन्नानि अवयवानि सन्ति। धर्मस्य स्थानं सर्वोपरि विद्यते। धर्मः सम्प्रदायश्च कदापि एकीभवितुं नार्हन्ति। धर्मः सदैव सम्प्रदायातीतो वर्तते। वस्तुतो यः उत्तमे सुखे धरति, सः एव धर्मोऽस्ति। **धर्मो शाश्वतः किन्तु सम्प्रदायः क्षणिको वर्तते। धमोऽभेदमुत्पाद्य सर्वान् योजयति। यदा च सम्प्रदायः परस्परं विभाजनस्य कार्यं करोति। अतो जीवनस्य शाश्वतसिद्धान्तान् परिजानन् सम्प्रदायात् भिन्नं धर्मं गृह्णीयात्।**

जैन शासनं शम–दम शासनमुक्तम्। अतः क्रोध–मान–माया–लोभेभ्यः स्वात्मानं पृथक् विधातुं इन्द्रियाणां च निरोधाय (दमनस्य) सर्वदैव तीर्थंकराः उपादिशन्।

क्रोधकषाय क्षमा जलेन शान्तं कर्तुं संसारे भगवतः पार्श्वनाथस्य सर्वोत्कृष्टमुदाहरण–मस्ति। यः क्षमायाः सहिष्णुतायाश्चाश्रयं गृहीत्वा स्वात्वमानं तीर्थंकरं कृतवान्। अथवा कमठश्च

जाती है। यदि हम अपनी आत्म शक्ति को अनुभव कर लें तो बाह्य संसार की कोई भी शक्ति हमें प्रभावित नहीं कर सकती। साधुगण शरीर से मोह छोड़ने के लिए कठोर साधना करते हैं ताकि वे चैतन्य धातु से निर्मित अशरीरी बन जावें। जीव अर्थात् आत्मा में वर्ण, गंध, रस, रूप, संस्थान, संहनन इत्यादि कुछ भी नहीं है, वास्तव में ये सभी पुद्गल शरीर के ही गुण विशेष हैं। आत्मा शक्तिरूप में सदाशिव है एवं कर्ममल से अस्पृष्ट होने पर इसका यह स्वरूप प्रकट हो जाता है।

संसार में मोह एवं अज्ञान ही सबसे बड़ा अंधकार है, जिसके वशीभूत होकर जीव वस्तु-स्वरूप को न समझते हुए चतुर्गति परिभ्रमण किया करता है।

धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, जाति इत्यादि सब भिन्न-भिन्न अवयव हैं। इनमें से धर्म का स्थान सबसे ऊँचा हैं। धर्म और सम्प्रदाय कभी एक नहीं हो सकते हैं। धर्म सदैव सम्प्रदायातीत है। **वास्तव में जो उत्तम सुख में धरे, वही धर्म है।** धर्म शाश्वत है जबकि सम्प्रदाय क्षणिक हैं। धर्म अभेद को उत्पन्न करके सबको जोड़ता है जबकि सम्प्रदाय आपस में बांटने का कार्य करता है अतः जीवन के शाश्वत सिद्धान्तों को समझते हुए सम्प्रदाय से ऊपर उठकर धर्म को ग्रहण करना चाहिए।

जैन शासन को 'शम-दम' शासन कहा गया है क्योंकि क्रोध, मान, माया, लोभरूपी कषायों से स्वयं को क्रमशः पृथक् कर देने (शम) एवं इन्द्रियों के निरोध (दम) का उपदेश तीर्थंकर भगवन्तों ने विशेषरूप से दिया है।

क्रोधरूपी कषाय को क्षमारूपी जल से शांत करने हेतु संसार में सबसे बड़ा उदाहरण है भगवान

प्रत्येकभवे वैरस्य प्रतिशोधस्य च भावनामाश्रित्य हिंसायाश्चाश्रयं गृहीत्वा स्वात्मानं नरकेभ्यः पशुगतिभ्यश्चापार दुःखेषु अपायत्। अस्माकमेकस्मिन् हस्ते चिन्तामणि रत्नमस्ति द्वितीये खलस्य शकलम्, इदानीमेतदस्मासु निर्भरमस्ति यत् वयं किमंगी कुर्मः। मनुस्यस्य पर्यायः शाश्वत धर्मस्य धारा च चिन्तामणि रत्नमस्ति। यदा च विषयासक्तिः क्रोध–मान– माया–लोभादयः खलस्य शकलानि विद्यन्ते। यद्यस्मिन् कलिकालेऽपि अस्मभ्यं धर्मरत्नस्य प्राप्तिरभवत् तु अस्मभ्यमयं कालोऽप्युत्तमोऽस्ति। ''वयमेतस्यामुत्तमतायां गौरवं कुर्याम। यदस्मभ्यं मनुष्यभवस्य धर्मस्य रूपेण च सर्वस्योपलब्धिरभवत्।''

यः आत्मा जन्मनो मरणस्य च चक्रे विभ्रान्तोऽस्ति सोऽहिंसारूपं परमं धर्ममंगीकृत्य भगवान् भवितुमर्हति। यदा पाषाणेषु संस्कारान् आरोप्य तं भगवतः प्रतिमारूपेण पूज्या क्रियते तदा तु चैतन्यात्मनि संस्काराणामुत्पादनेन सः आत्मा भगवान् कथं न भवितुमर्हति।

विश्व विद्यालयस्य छात्राणामाह्वानं कुर्वन्ती पूज्या माताऽकथयत् यत् अस्मिन् विश्वप्रसिद्धे काशीहिन्दू विश्वविद्यालये शिक्षां प्राप्ताः छात्राः अस्याः संस्थायाः एवंविधान् संस्कारान् गृहीत्वा समाजेऽग्रमागच्छन्तु येन भारतीय संस्कृतेः गौरवं सम्पूर्ण विश्वंचकितं कुर्यात्, इयमेव मम मंगल–भावना विद्यते।

उपस्थितो जन समूहो मंत्रमुग्धो भूत्वा पूज्यायाः मातुरेता वाणीमृश्रणोत्। एष कार्यक्रमो

पार्श्वनाथ का। जिन्होंने क्षमा एवं सहनशीलता का आश्रय लेकर स्वयं को तीर्थंकर बना लिया अथवा कमठ जिसने हर भव में वैर, बदला लेने की भावना, हिंसा आदि के आश्रय से स्वयं को नरक एवं पशुगति के अपार दुःखों में डाला। हमारे एक हाथ में चिंतामणि रत्न हैं और दूसरे हाथ में खली का टुकड़ा है, अब हमारे ऊपर निर्भर है कि हम किसे अपनाते हैं। मनुष्य पर्याय और शाश्वत धर्म की धारा चिंतामणि रत्न है जबकि विषयासक्ति, क्रोध-मान-माया-लोभ इत्यादि कषाय खली के टुकड़े हैं। यदि इस कलिकाल में भी हमको धर्मरूपी रत्न की प्राप्ति हो गई है तो हमारे लिए यह काल भी अत्यन्त उत्तम है। **''हमें इस उत्तमता पर महान गौरव होना चाहिए कि हमको मनुष्य भव एवं धर्म के रूप में महान निधि अथवा सबकुछ मिल गया है।''**

जो आत्मा जन्म और मरण के चक्र में उलझा हुआ है, वह अहिंसारूपी परम धर्म को अपनाकर भगवान-आत्मा बन सकता है। जब पाषाण में संस्कारों को आरोपित करके उसे भगवान की प्रतिमा के रूप में पूज्य बना दिया जाता है, तब तो चैतन्य आत्मा पर संस्कार डालते रहने से वह भगवान-आत्मा क्यों नहीं बन जायेगा।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए पूज्य माताजी ने कहा कि इस विश्वप्रसिद्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थीगण यहाँ से इस प्रकार के संस्कार लेकर समाज में आगे आएं कि जिससे भारतीय संस्कृति का गौरव सम्पूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित कर सके, यही मेरी मंगल भावना है।

उपस्थित जनसमूह ने मंत्रमुग्ध होकर पूज्य माताजी की अमृतमयी वाणी का पान किया। यह

विश्वविद्यालयस्य गीता समितेः तत्वावधाने आयोजितोऽभूत्। यस्य संचालनं मालवीय भवनस्य निदेशकः प्रो. श्री कृष्णकान्त शर्माऽकरोत्। पूज्यायाः मातुः प्रवचनस्य पश्चात् प्रो. शर्मा प्रवचनस्य सारं प्रभावशालिना रूपेण प्रस्तुतमकरोत्, यं सर्वे प्रशंसामकुर्वन्। सः पूज्यां मातरं न्यवेदयत् यत् यदा कदापि पूज्या माता वाराणसीमागच्छेत् तु अस्मिन् विश्वविद्यालये स्वचरणरजोनिताय मंगलमाशीर्वादं च प्रदाय सदैवास्मान् कृतार्थान् करोतु। कार्यक्रमस्यान्ते कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारो गीता–समितिहेतवे भगवतः पार्श्वनाथस्य प्रतीकचिह्नं साहित्यं चोपाहरत्। कार्यक्रमे विशेषसहयोगहेतवे वाराणसी निवासिनं डा. कमलेश कुमार जैनम् विशेषो धन्यवादः समर्पितोऽभवत्। अस्मिन्नवसरे इन्जीनियरिंग रेलवे मण्डलस्य सदस्यः पदेन सचिवश्च भारतशासनस्य श्री सूर्यपाल सिंहो जैनः अपि समागत्य पूज्यायाः मातुर्मंगलमाशीर्वादं प्राप्नोत्।

सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालये वाराणस्यां युवावर्गाय विशेषमाह्वानम्–**वाराणस्याः प्रसिद्धे सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये आयोजितस्य राष्ट्रीययुवावर्गमहोत्सवस्य 2004–2005 अन्तर्गतं 15 जनवरी 2005 दिने राष्ट्रीयसेवायोजनासभागारे पूज्यायाः मातुः गणिन्याः ज्ञानमत्याः प्रेरणास्पदयाः मंगलमयवाण्याः शताधिकाः युवानः लाभं प्राप्नुवन्। विश्वविद्यालयस्य परिवारस्य डॉ. श्री फूलचन्द्रप्रेमिणः संयोजने आयोजितास्यां धर्मसभायां प्रो. राधेश्यामो द्विवेदी डॉ. रमेशो द्विवेदी डॉ. राघवेन्द्रोदुबे, डा. रमेशप्रसादादिभिः पूज्यायाः मातुः संघस्य**

कार्यक्रम विश्वविद्यालय की गीता समिति के द्वारा आयोजित किया गया था, जिसका संचालन मालवीय भवन के निदेशक प्रो. कृष्णकांत शर्मा ने किया। पूज्य माताजी के प्रवचन के पश्चात् प्रो. शर्मा ने प्रवचन के सार को अत्यन्त प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया, जिसकी सभी ने सराहना की। उन्होंने पूज्य माताजी से निवेदन किया कि माताजी जब भी काशी पधारें तो इस विश्वविद्यालय में अपने पवित्र चरण रखकर एवं मंगल आशीर्वाद प्रदान करके सदैव हमें कृतार्थ करें। कार्यक्रम के अंत में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन ने गीता समिति हेतु भगवान पार्श्वनाथ प्रतीक चिन्ह एवं साहित्य प्रदान किया। कार्यक्रम संयोजन में सहयोग हेतु डॉ. कमलेश कुमार जैन-वाराणसी को विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर इंजीनियरिंग रेलवे बोर्ड सदस्य एवं पदेन सचिव-भारत सरकार श्री सूर्यपाल सिंह जैन ने भी पधारकर पूज्य माताजी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

➢सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय (वाराणसी) में युवावर्ग के लिए विशेष आह्वान–

वाराणसी के प्रसिद्ध सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव 2004-2005 के अंतर्गत 15 जनवरी 2005 को राष्ट्रीय सेवा योजना सभागार में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणास्पद मंगलमयी वाणी का सैकड़ों युवाओं ने लाभ प्राप्त किया। विश्वविद्यालय परिवार के डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी के संयोजन में आयोजित इस धर्मसभा में प्रो. राधेश्यामधर द्विवेदी, डॉ. रमेश द्विवेदी, डॉ. राघवेन्द्र दुबे, डॉ. रमेश प्रसाद इत्यादि द्वारा पूज्य

च भावसिक्तं स्वागतं कृतम्। डॉ. फूलचन्द्र:प्रेमी स्ववक्तव्येऽकथयत् यत् अद्य जैनसमाजस्य वरिष्ठा साध्वी माता ज्ञानमती अस्माकं विश्व विद्यालयमागता, इयं समस्त विश्वविद्यालय–परिवारायात्यन्तमेव गौरवस्य हर्षस्य च वार्तास्ति। यतः ईदृशानां सतां समागमः बहुना कारिन्येन प्राप्यते।

पूज्यायाः मातुः मंगलमय प्रवचनात् पूर्वं अहम् स्व वक्तव्येन सभां सम्बोधितां कुर्वन् अकथयत् यत् संसारे यथा द्वयोः रात्र्योः मध्ये एकं दिनं दृश्यते, इयं स्वस्वदृष्टेर्वार्तास्ति यत् वयं आशायाः निराशायाश्च कस्याश्चयनं कुर्मः। भारतस्य भूमिः सर्वदाकालात् ऋषीणां मुनीनां च भूमिरस्ति, यत्र विशंतिशताब्द्यां पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता प्रथमायाः बालब्रह्मचारिण्याः पदं धृत्वा शताधिक्कन्याभ्यः त्यागस्य मार्गं प्रशस्तमकरोत्। 2600 वर्षाणामितिहासे प्रथमबारं काचित् नारीशक्तिः द्विशतादप्यधिकानां ग्रन्थानां सर्जनमकरोत् जनं–जनं च तीर्थंकराणां भगवतां सर्वोदयसिद्धान्तैः परिचितं कारयितुं आत्मनः प्रत्येकक्षणस्योपयोगमकरोत्। एवं भूतायाः महत्याः साध्व्याः चरण सान्निध्ये प्रत्येकयुवा सदाचारस्य, शाकाहारस्य संयमस्य च नियमान् गृहीत्वा विश्वविद्यालयस्य नामानं प्रकाशितं कुर्यात्। कथितमप्यस्ति ''यादृशमन्नं खादति तादृशं मनो भवति। यादृशं च जलं पिवति तादृशी वाणी भवति।'' अतएव अण्डमांसमत्स्यादीनां भक्षणस्य त्यागं कृत्वा सर्वे युवानः शाकाहारस्य व्रतानि पालयेयुः। यतस्तैनेव सदाचाररूपस्याः नैतिकतायाः प्राप्तिः संभवा विद्यते।

माताजी एवं संघ का भावभीना स्वागत किया गया। डॉ.फूलचंद जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज जैन समाज की सबसे बड़ी साध्वी पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी हमारे विश्वविद्यालय में पधारी हैं, यह समस्त विश्वविद्यालय परिवार के लिए अत्यन्त गौरव एवं हर्ष की बात है क्योंकि ऐसे ज्ञानवान संतों का समागम बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।

पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन से पूर्व मैंने अपने वक्तव्य में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि संसार में किन्हीं को दो रात्रियों के मध्य एक दिन दिखाई पड़ता है तो किन्हीं को दो दिनों के मध्य एक रात्रि दिखाई पड़ती है। यह अपनी-अपनी दृष्टि की बात है कि हम आशा अथवा निराशा किसका चयन करते हैं। भारत की धरती सदैव से ऋषि-मुनियों की धरती रही है जहाँ 20वीं सदी में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी का पद धारण करके सैकड़ों कुमारी कन्याओं के लिए त्याग का मार्ग प्रशस्त किया, 2600 वर्षों के इतिहास में प्रथम बार किसी नारी शक्ति ने 200 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया एवं जन-जन को तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धान्तों से परिचित कराने हेतु अपने एक-एक क्षण का उपयोग किया। ऐसी महान साध्वी के चरण सानिध्य में हर युवा को सदाचार, शाकाहार एवं संयम के नियमों को ग्रहण करके विश्वविद्यालय के नाम को रोशन करना चाहिए। कहा भी गया है 'जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन; जैसा पिये पानी वैसी होवे वाणी', इसलिए अण्डा, माँस, मछली इत्यादि मांसाहार का त्याग करके सभी युवाओं को शाकाहार का व्रत पालन करना चाहिए क्योंकि उससे ही सदाचार रूप नैतिकता

यदि युवा वाञ्छति तु स्व शक्तिं संहारस्य स्थाने सर्जने योजयित्वा परिवारस्य देशस्य राष्ट्रस्य च परिस्थितीः परिवर्तिताः कर्तुं शक्नोति।

पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता स्वप्रभावके प्रवचनेऽभाषत् अद्य वयं यां सर्वश्रेष्ठा मनुष्यगतिं प्राप्नुम, तस्याः माध्यमेन वयं सर्वे स्वात्मानं भगवन्तं कारयितुं पुरुषार्थं विधातुं शक्नुमः। ये इन्द्रियाणि कर्मशत्रून् च जयन्ति ते जिनाः कथ्यन्ते तेषां च मार्गानुसारिणः जैनाः कथ्यन्ते। अयं जैनधर्म न कोऽपि सम्प्रदायोऽस्ति न कोऽपि वर्गोऽस्ति। न च कस्याप्यन्यस्य धर्मस्य शाखा विद्यते। किन्तु अयं तु एतेभ्यः सर्वेभ्यः उपरि उत्थाय अद्वैतः सार्वभौमः धमोऽस्ति। यः प्राणिनः उत्तमसुखे धरति। धर्मस्य विरोधी अधर्मो विद्यते संस्काराणां च बलेनैव जनोधर्मेऽधर्मेवा प्रविशति। संस्कारैः सत्संगत्या भवितव्यतया, एतेषां त्रयाणां बलेनैव जनस्य मानसस्य निर्माणं जायते, प्राचीनकालादेव तीर्थंकरा भगवन्तः सदृशाः महापुरुषाः अहिंसा– सत्याचौर्य– ब्रह्मचर्यापरिग्रहपरिमाणादीनां पंचसूत्राणामुपदेशमदुः। ''अहिंसायाः'' **अर्थोऽस्ति सर्वजीवान् आत्मतुल्यान् मत्वा कस्यापि जीवस्य संकल्पपूर्वक हिंसा न विधातव्या।** ''सत्यवचनस्य'' **भाषणेन यत्र जनो विश्वासपात्रं आदर्शश्च भवति तत्र तस्य वाण्या समस्तस्य विश्वस्यापि कल्याणं भवति। विश्वासघातं कृत्वा कस्यापि धनादीनां हरणं तस्य प्राणानामेव हरणमस्ति। अतोऽस्माच्चोर्यस्य दुर्गुणात् आत्मनो रक्षां कुर्वन्** ''अचौर्यव्रतं'' **पालयेयुः। त्रिषु लोकेषु पूज्यं** ''ब्रह्मचर्यव्रतं शीलव्रतं'' **चास्ति यस्य माहात्म्येन श्रेष्ठिने सुदर्शनाय रचितं शूलदण्डं सिंहासनं**

की प्राप्ति संभव है। युवा चाहें तो अपनी शक्ति को संहार के स्थान पर सृजन में लगाकर परिवार, देश एवं राष्ट्र की परिस्थितियों को परिवर्तित कर सकते हैं।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने प्रभावक वक्तव्य में कहा कि आज हमको जो सर्वश्रेष्ठ मनुष्य पर्याय मिली है उसके माध्यम से हम स्वयं को भगवान बनाने का पुरुषार्थ कर सकते हैं। जो इन्द्रियों एवं कर्म- शत्रुओं को जीत लेते हैं, वे 'जिन' कहलाते हैं और उनके मार्ग का अनुसरण करने वाले 'जैन' कहलाते हैं। यह जैनधर्म न कोई सम्प्रदाय है, न कोई वर्ग है और न किसी अन्य धर्म की शाखा है वरन् यह तो इन सबसे ऊपर उठकर अद्वैत सार्वभौम धर्म है जो प्राणियों को उत्तम सुख में पहुँचाता है। धर्म का विरोधी अधर्म है और संस्कारों के बल पर ही व्यक्ति धर्म अथवा अधर्म में प्रवेश करता है। संस्कार, संगति, भवितव्य (होनहार) इन तीनों के द्वारा ही व्यक्ति के मानस का निर्माण होता है। प्राचीन काल से ही तीर्थंकर भगवन्तों जैसे महापुरुषों ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं परिग्रह प्रमाण ऐसे 5 सूत्रों का उपदेश दिया है। **अहिंसा** का अर्थ है सब जीवों को अपने समान जानकर किसी जीव की संकल्पपूर्वक हिंसा न करना। **सत्य** वचन बोलने से जहाँ व्यक्ति विश्वासपात्र एवं आदर्श बनता है वहीं उसकी वाणी से पूरे विश्व का भी कल्याण संभव हो सकता है। विश्वासघात करके किसी के धन इत्यादि का हरण कर लेना मानों उसके प्राणों का ही हरण करना है अतः इस चोरी के दुर्गुण से बचते हुए **अचौर्य** व्रत का पालन करना चाहिए। तीनों लोकों में पूज्य **ब्रह्मचर्य अथवा शील व्रत** है जिसके माध्यम से सेठ सुदर्शन के लिए बनाई गई शूली सिंहासन में

परिवर्तितामभवत्। सीतायाः अग्निपरीक्षायां अग्निः जले परिवर्तितोऽभवत्। द्रौपद्याश्च शाटिका वृद्धिंगताभवत्। भावानां पतनकारणैः अद्यावधि रावणस्य प्रतिकृतिर्यदयतौ कोऽपि माता पिता वा स्व पुत्रं पुत्रीं वा रावणं शूर्पणखां वा नाम न प्रदत्ते। वस्तुतः शक्तिरोजस्तेजश्च ब्रह्मचर्ये एव समाविष्टाः सन्ति। अतो विद्यार्थिजीवने पूर्णं ब्रह्मचर्यं पालयित्वा विवाहस्य पश्चात् स्वदारसन्तोषरूपं शीलव्रतं पालयितव्यम्।

सम्पूर्णस्य संसारस्य विजेतारं कामशत्रुं विजेतुं जिनेन्द्र प्रभुरेव सक्षमो भवति। यतः सः साक्षात् मोहमेव विजितमकरोत्। यश्च मोहं जयति तेन मोहस्य किंकराः कामक्रोधादयस्तु स्वयमेव विजिताः भवन्ति। स्पर्शन–रसन–घ्राण–चक्षुः कर्णानि एतानि पंचेन्द्रियाणि पञ्च–रत्नानि सन्ति, परन्तु यद्येतेषां सदुपयोगो न क्रियते तु एतानि अनियन्त्रिताः अश्वाः इव कुत्रापि निपातयन्ति अतः एतेषां सदुपयोगं कृत्वैतानि रत्नानीव कर्तव्यानि।

कुसंस्कारैः प्रभावितः आत्मा दुर्गतिं प्राप्नोति। यदा च महापुरुषाणां चरित्रं पठित्वा श्रुत्वा च आत्मा उच्चैर्भवति। यथाग्नेः एकया कर्णिकाया शुष्कतृणानां महान् राशिः भस्मसात् जायते, तथैवात्मनि कृतः एकस्यापि क्षणस्यानुरागः असंख्यानि पापकर्माणि खण्डं खण्डं कृत्वा निपातयति। अतः सत्संगतेर्महिम्ना स्वात्मानं संस्कारितं कृत्वा स्वकल्याणस्य मार्गं प्रशस्तं कर्तव्यम्।

पूज्या माता अग्रेऽकथयत् यत् पञ्चमं सूत्रमस्ति ''परिग्रहपरिमाणम्''**। एतस्यानुसारेण**

परिवर्तित हो गई, सीता की अग्नि परीक्षा में अग्नि जल में परिवर्तित हो गई और द्रौपदी का चीर बढ़ गया इत्यादि। भावों के पतित होने के कारण आज तक रावण का पुतला जलाया जाता है और कोई भी माता-पिता अपने बालक-बालिका का नाम रावण अथवा सूर्पणखा नहीं रखते हैं। वास्तव में शक्ति, ओज एवं तेज ब्रह्मचर्य के ही अंदर है अतः विद्यार्थी जीवन में परिपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विवाह के बाद स्वदार संतोषरूपी शीलव्रत का पालन करना चाहिए।

सारे संसार को विजित करने वाले कामरूपी शत्रु को जीतने में जिनेन्द्र प्रभु ही सक्षम होते हैं क्योंकि उन्होंने साक्षात् मोह को ही जीत लिया है। जो मोह को जीत लेता है उसके द्वारा मोह के किंकर काम, क्रोध इत्यादि तो स्वयं ही विजित हो जाते हैं। स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु एवं कर्ण ये 5 इन्द्रियाँ 5 रत्न हैं परन्तु यदि इनका सदुपयोग न किया जाये तो ये ऐसे बेलगाम घोड़े हैं जो कहीं पर भी ले जाकर पटक सकते हैं, इसलिए इनका सदुपयोग करके इन्हें रत्न-सदृश बनाना चाहिए।

कुसंस्कारों से प्रभावित होकर आत्मा दुर्गति में चली जाती है जबकि महापुरुषों के चारित्र को पढ़कर और सुनकर आत्मा उच्च बन जाती है। जिस प्रकार अग्नि की एक चिंगारी मात्र से फूस का बहुत बड़ा ढेर भी जलकर राख हो जाता है, उसी प्रकार आत्मा में किया गया एक क्षण का अनुराग भी असंख्य पापकर्मों को खण्ड-खण्ड कर डालता है अतः सत्संगति के माध्यम से अपनी आत्मा को संस्कारित कर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर लेना चाहिए।

पूज्य माताजी ने आगे कहा कि पाँचवां सूत्र है **परिग्रह प्रमाण** है, जिसके अनुसार अपनी

स्वावश्यकतानुरूपं धनादिकं संचित्य सामाजिक–सन्तुलनस्य स्थापना भवितुं शक्यते।

पूज्यामाता युवावर्गस्याह्वानं कृत्वा अकथयत् यत् भवन्तः स्वौजसः शक्त्याश्च सदुपयोगं कुर्वन्तु। मुखस्य ताम्बूलादिभिः लघुभिः वस्तुभिः आकृष्टाः भूत्वा भवन्तो न मात्रं स्वधनस्या व्ययं कुर्वन्ति परन्तु स्वास्थ्येन सहापि क्रीडां कुर्वन्ति। यतो ह्येतानि वस्तूनि राजयक्ष्मादीनां रोगाणां उत्पादकानि सन्ति। भवद्भिः तेषां वस्तूनामुपभोगः कर्तव्यः येषु स्वादुना सहैव स्वास्थ्यमपि निहितमस्ति। पूज्या माताग्रेऽकथयत् यत् भवन्तः स्वेन्द्रियेषु संयमं कर्तुं प्रयासं कुर्वन्तु स्वशक्त्याः समयस्य धनस्य च सदुपयोगं कुर्वन्तु। देशस्य युवावर्गः भविष्योत्तरदायित्वस्य संवाहकोऽस्ति। भविष्यस्य वा निर्माता विद्यते। संस्कृतेः राष्ट्रस्य च संरक्षकोऽस्ति। तस्य स्कन्धेषु महान्ति उत्तरदायित्वानि सन्ति। सर्वे युवावर्गं एव आशापूर्णाभिः दृष्टिभिः वीक्षन्ते। यतो हि यदा यूनां जीवनं समुन्नतं भविष्यति तु तदैव राष्ट्रमपि समुन्नतं भविष्यति। इदं च तदैव संभवितुं शक्यते यदा भवन्तः संस्कारयुक्ताः भवेयुः। तदर्थं च भवन्तः सत्संगत्या सह सत्साहित्यस्या अध्ययनं कुर्वन्तु। भवन्तः सर्वे यस्मिन् विश्वविद्यालये पठन्ति तस्मिन् स्व शाश्वतां संस्कृतिं रक्षन्तः विश्वविद्यालयस्य पदं गौरवान्वितं कुर्वन्तु। अयमेव मम सर्वेभ्यः मंगलाशीर्वादः विद्यते।

पूज्या माता पुनः अभाषत् यत् यथा एकस्याग्रे यावन्ति शून्यानि निक्षिप्यन्ते तथैव संख्या परिवर्धते। परन्तु यदि शून्यस्य पृष्ठे एकस्यां कोऽपि हियते तदा कामं यावन्त्यपि शून्यानि निक्षिप्तानि भवेयुः न तेषां किमपि महत्वम्। अनेनैव प्रकारेण यद्येकस्य ब्रह्मचर्यव्रतस्य

आवश्यकता के अनुरूप धन इत्यादि का संग्रह करने से सामाजिक संतुलन की स्थापना हो सकती है।

पूज्य माताजी ने युवावर्ग को आह्वान करते हुए कहा कि आप अपने ओज एवं शक्ति का सदुपयोग करो। गुटखा, पान मसाला जैसी छोटी-छोटी चीजों के प्रति आप न मात्र अपने धन का अपव्यय करते हैं परन्तु अपने स्वास्थ्य से भी खिलवाड़ करते हैं क्योंकि ये चीजें कैंसर जैसे रोग तक को भी उत्पन्न करने वाली हैं। आपको ऐसी चीजों का प्रयोग करना है जिसमें स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य भी निहित हो।पूज्य माताजी ने आगे कहा कि आप अपनी इन्द्रियों पर संयम रखने का प्रयास करें एवं अपने समय, शक्ति तथा धन तीनों का सदुपयोग करें। देश का युवा वर्ग भविष्य की बागडोर को संभालने वाला अथवा भविष्य का निर्माता है, संस्कृति एवं राष्ट्र का संरक्षक है और उसके कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं। युवा वर्ग को ही आशा भरी दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि जब युवाओं का जीवन समुन्नत होगा तो ही राष्ट्र समुन्नत होगा और यह तभी हो सकता है जब आप सब लोग संस्कारवान बनें और उसके लिए आपको सत्संगति के साथ-साथ सत्साहित्य का अध्ययन करना होगा। आप सभी लोग इस विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए अपनी शाश्वत संस्कृति को स्वयं में जीवन्त रखकर विश्वविद्यालय का नाम गौरवान्वित करें, यही आप सबके लिए मंगल आशीर्वाद है।

पूज्य माताजी ने पुनः कहा कि जिस प्रकार 1 अंक के आगे जितने-जितने शून्य रखें जाते हैं, उतनी ही संख्या बढ़ती जाती है परन्तु यदि शून्यों के पहले से 1 का अंक हटा दिया जाये तो चाहे कितने भी शून्य रख लें, उनका कोई भी महत्व नहीं है। इसी प्रकार यदि एक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन

पालनं क्रियते तदा सर्वेऽन्ये गुणाः अपि शोभन्ते। ब्रह्मचर्यस्याभावेन सर्वे गुणाः अपि अवगुणश्रेण्यामेव गण्यन्ते।

सारनाथे जिनधर्मस्य ध्वजः आन्दोलितोऽभवत्–**जैनधर्मस्य एकादशतमस्य तीर्थंकरस्य भगवतः श्रेयांसनाथस्य जन्मभूमौ सिंहपुर्यां– सारनाथे पूज्यायाः मातुः समस्तस्य च संघस्य सान्निध्ये 16 जनवरी दिनात् 20 जनवरी 2005, पौषशुक्ला सप्तमीतः पौषकृष्णैकदश्याः पर्यन्तं श्रीदिगम्बरजैनसमाजकाशी द्वारेण श्री 1008 भगवतः श्रेयांसनाथस्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवः भव्यायोजनरूपेण निर्विघ्नं सम्पन्नोऽभवत्।**

चिरप्रतीक्षितेऽस्मिन् प्रतिष्ठायाः महोत्सवस्य आयोजने वाराणस्याः समाजस्योत्साहो विशेषरूपेण दृष्टव्यमासीत्। बौद्धतीर्थरूपेण समस्ते विश्वे प्रसिद्धे सारनाथतीर्थे जैनधर्मस्य पताकां तरंगितां कर्तुमयं दुर्लभोऽवसरः आसीत्। पूज्यायाः मातुः शुभाशीर्वादस्य कुशलदिशा–निर्देशनस्य च मध्ये सम्पन्नायामस्यां प्रतिष्ठायां सर्वे जनाः अत्यधिकस्योत्साहस्याह्लादस्यानुभवं तु अकार्षुरेव, सहैव कोटिवर्षाणां पूर्वं तीर्थंकरस्य भगवतः श्रेयांसनाथस्य गर्भ जन्म तपः ज्ञानकल्याणकानां माध्यमेन यां भूमिं परमपवित्रामकरोत्, तां तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां विकासस्य शृंखलायां तस्य एको नवीनः आयामः प्राप्तोऽभवत्।

महोत्सवस्य समापने 11 फुट उन्नतायाः श्यामवर्णायाः भगवतः श्रेयांसनाथस्य प्रतिमायाः पंचामृताभिषेको महाकुम्भश्च सानन्दं संपन्नोऽभवत्।

होता है तो सभी अन्य गुण भी शोभायमान होते हैं और ब्रह्मचर्य के अभाव में अन्य सारे गुण भी अवगुण की ही श्रेणी में आ जाते हैं।

➢सारनाथ में फहराया जिनधर्म का ध्वज–

जैनधर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य माताजी एवं समस्त संघ के सानिध्य में 16 जनवरी से 20 जनवरी 2005 पौष शुक्ला 7 से पौष शु. 11 तक श्री दिगम्बर जैन समाज काशी द्वारा श्री 1008 भगवान श्रेयांसनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्य आयोजन के रूप में निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

चिरप्रतीक्षित इस प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन में वाराणसी जैन समाज का उत्साह विशेषरूप से दृष्टव्य रहा। बौद्ध तीर्थ के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध सारनाथ में जैनधर्म की कीर्तिपताका फहराने का यह अद्भुत अवसर था। पूज्य माताजी के शुभाशीर्वाद एवं कुशल दिशा-निर्देशन के मध्य सम्पन्न इस प्रतिष्ठा में सभी लोगों ने विशेष हार्दिक आल्हाद का अनुभव तो किया ही, साथ ही करोड़ों वर्ष पूर्व तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ ने गर्भ,जन्म, तप एवं ज्ञानकल्याणक के माध्यम से जिस भूमि को परम पवित्र किया था, उसे तीर्थंकर जन्मभूमि के विकास की शृंखला में एक नवीन आयाम प्राप्त हुआ।

महोत्सव के समापन में 11 फुट उत्तुंग श्यामवर्णी भगवान श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का पंचामृत एवं महाकुंभ मस्तकाभिषेक सानन्द सम्पन्न हुआ।

मातुः पादार्पणेन पुनः सुरभितमभूत् प्रयागतीर्थम्—**यतो हि वाराणस्यां पूज्यायाः मातुर्जन्मभुवः टिकैतनगरस्या समारोहे गण्यमान्याः महानुभावाः समागत्य पूज्यायाः मातुः श्रीचरणयोः तत्र पंचकल्याणकप्रतिष्ठां कारयितुं श्रीफलं समर्प्य निवेदनं कर्तुं समागच्छन्। अस्मात् पूर्वमपि ते मातुः समीपमागत्यास्मै विधानाय निवेदनमकुर्वन्। अतो माताश्रीः तेभ्यः पूर्णां स्वीकृतिं प्रादात्। तदा तु सर्वेषां मुखानि प्रफुल्लितान्यभवन्। सर्वे च महतोत्साहेन प्रतिष्ठायै तत्परतामदर्शयन्। वाराणस्याः टिकैतनगरं प्रति मंगलविहारस्य मध्ये संघस्य पदार्पणं 24 जनवरी 2005, पौष शुक्लचतुर्दश्याः दिने तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्यां प्रयागतीर्थेऽभवत्। स्वोद्भवस्य प्रेरणास्रोतसीं प्राप्य दीक्षास्थल्याः प्रतिकणमाह्लादितमभवत्। 26 जनवरी 2005 दिने इलाहाबादस्य जैन समाजस्य महत्याः उपस्थित्याः मध्ये कैलासपर्वते विराजमानस्य भगवतः ऋषभेदवस्य मस्तकाभिषेकः सम्पन्नोऽभूत। सामूहिकं पूजनं च विधाय निर्वाण मोदकाः समर्पिताः अभवन्। न्यायमूर्तिः श्री सुधीरनारायणः न्यायमूर्तिः एम.सी. जैनश्च कार्यक्रमे भागं गृहीत्वा निर्वाणमोदकान् समर्पयताम्।**

टिकैतनगरे संघस्य मंगलप्रवेशः—**4 फरवरी 2005, माघ कृष्ण दशम्यां पूज्यामाता यदा स्व जन्मभूमौ एकादशवर्षाणामनन्तरं पुनः संघ सहिता मंगल प्रवेशमकरोत् तु स्व ग्रामस्य विश्वप्रसिद्धस्य निधेः पुनः दर्शनं प्राप्य टिकैतनगरस्य बालकाः बालिकाः अत्यन्तमेवानन्दिताः उत्साहिता चाभवन्। बैण्डवादनैः सह विशालया शोभायात्रया सह संघो**

➢माताजी के पदार्पण से पुनः महक उठा प्रयाग तीर्थ–

चूंकि वाराणसी में पूज्य माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर के अनेक गणमान्य महानुभाव आकर पूज्य माताजी के श्रीचरणों में वहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करवाने हेतु श्रीफल चढ़ाकर निवेदन करने आए थे, इससे पूर्व भी वे कई बार माताजी के पास आकर इस हेतु आग्रह कर चुके थे अतः माताजी ने उन्हें पूर्ण स्वीकृति प्रदान कर दी। फिर तो सभी के चेहरे खिल उठे और सभी ने जोर-शोर से तैयारियाँ करनी प्रारंभ कर दीं। वाराणसी से टिकैतनगर की ओर मंगल विहार के मध्य संघ का मंगल पदार्पण 24 जनवरी 2005, पौष शु. चतुर्दशी को तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग तीर्थ पर हुआ। अपने उद्भव की प्रेरणास्रोत को पाकर दीक्षास्थली तीर्थ का हर कण पुनः आल्हादित हो उठा। 26 जनवरी 2005 को इलाहाबाद जैन समाज की भारी उपस्थिति के बीच कैलाशपर्वत पर विराजमान भगवान ऋषभदेव का मस्तकाभिषेक सम्पन्न किया गया तथा सामूहिक पूजन करके निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी एवं न्यायमूर्ति श्री एम.सी.जैन ने कार्यक्रम में भाग लेकर निर्वाणलाडू चढाया।

➢टिकैतनगर में संघ का मंगल प्रवेश–

4 फरवरी 2005, माघ कृ. दशमी को पूज्य माताजी ने जब अपनी जन्मभूमि में 11 वर्षों के पश्चात् पुनः संघ सहित मंगल प्रवेश किया, तो अपने ग्राम की विश्वप्रसिद्ध निधि का पुनः दर्शन प्राप्त करके टिकैतनगर का बच्चा-बच्चा अत्यन्त उत्साहित एवं आनन्दित हो उठा। बैण्ड-बाजे सहित

नगरे प्रवेशमकरोत्। भरतसेनायाः टिकैतनगरस्य युवका तत्र हस्तेषु तरंगायमानाः केसरि वर्णाः ध्वजाः नगरवासिभ्यः मातुरागमनस्य सन्देशमददुः। स्थानेषु–स्थानेषु जैन जैनेतराः बन्धवः पूज्याः मातुश्चरणयोः प्रक्षालनमकुर्वन्। आरतिकां चाकुर्वन्। पुष्पवृष्टिं चाकुर्वन् संघं नगरस्य चतुर्षु द्वारेषु भ्रमणमकारयन्। तस्मिन् काले सर्वेषामुत्साहो हर्षश्च दर्शनीयः आसीत्। सर्वे जैनबन्धवः स्व प्रतिष्ठानानि बद्धानि कृत्वा शोभायात्रायां सम्पूर्णे समारोहे च भागमगृहणन्। यच्च सम्पूर्ण जैन समाजाय अनुकरणीयं विद्यते। प्राचीन जिनमन्दिरे विजामानस्यातिशयकारिणः भगवतः पार्श्वनाथस्य दर्शनमकरोत्। समस्तानां जिनविम्बानां चैत्यालयानां च एकादश वर्षाणि पश्चात् दर्शनमकरोत्।

वस्तुतः विंशतिशताब्द्यां त्याग–तपस्यायाः शाश्वतां संस्कृतिं जीवनदायिनीं स्वगर्भेण प्रसूतां निधिं प्राप्य अद्य टिकैतनगरस्य प्रतिकणं हार्दिकनाल्हादेन सिक्तः आसीत्।

टिकैतनगरेऽद्भुतश्चमत्कारोऽभवत्–**पूज्यायाः मातुर्ज्ञानमत्याः जन्मभूमौ टिकैतनगरे एकमत्यन्तं प्राचीनं जैनमन्दिरमस्ति, तत्र सम्पूर्णो जैनसमाजो दर्शनार्थं पूजनार्थं चैकत्रितो भवति। तत्र समाजस्य भावनानुसारेण द्वितीयं मन्दिरं निर्मापयितुं निर्णयोऽभवत्। अतः प्राचीनमन्दिरस्य पार्श्वे एव प्राचीनस्य विद्यालयस्य भवनं त्रोटयित्वा विशालस्य जिनमन्दिरस्य निर्माणं 2003–2004 वर्षेऽभवत्। अस्य मन्दिरस्य अभ्यन्तरे मध्ये तिसृषु वेदिकासु**

विशाल जुलूस के साथ संघ को नगर में मंगल प्रवेश कराया गया। भरतसेना टिकैतनगर के नवयुवकों ने **''जैनं जयतु शासनं-वंदे ज्ञानमती मातरम्''** इत्यादि गगनभेदी नारों से समस्त नगर को गुंजायमान कर दिया। क्रमबद्ध कतार में चलते नेमी पब्लिक स्कूल के बालकों द्वारा हाथों में ली गई संदेश युक्त तख्तियाँ एवं नवयुवकों के हाथ में फहराते केशरिया ध्वज समस्त नगरवासियों को चहुँओर जिनधर्म की विजयपताका फहराते हुए माताजी के मंगल आगमन का संदेश प्रदान कर रही थीं। स्थान-स्थान पर जैन-जैनेतर बंधुओं ने पूज्य माताजी के चरणों का प्रक्षालन करके आरती उतारी तथा बारम्बार पुष्पवृष्टि करते हुए संघ को शहर के चारों फाटक तक घुमाया। उस समय सभी का उत्साह एवं हर्ष देखते ही बनता था। सभी जैन बंधुओं ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर जुलूस तथा सम्पूर्ण प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया जो कि प्रत्येक जैन समाज के लिए अनुकरणीय है। प्राचीन जिनमंदिर में विराजमान अतिशयकारी मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ एवं अन्य जिनबिंबों तथा समस्त चैत्यालयों के 11 वर्षों के पश्चात् दर्शन किये।

वस्तुतः 20वीं सदी में त्याग तपस्या की शाश्वत संस्कृति को जीवन्त रखने वाली अपने गर्भ से प्रसूत निधि को पाकर आज टिकैतनगर का चप्पा-चप्पा हार्दिक आल्हाद में सराबोर हो उठा।

➢टिकैतनगर में हुआ अद्भुत चमत्कार–

पूज्य ज्ञानमती माताजी की जन्मभूमि टिकैतनगर में एक अतिप्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है, जहाँ पूरी जैन समाज दर्शन-पूजन के लिए एकत्रित होती है। वहाँ समाज की भावनानुसार दूसरा मंदिर बनाने का निर्णय हुआ अतः पुराने मंदिर के बगल में ही पुराने स्कूल का भवन तोड़कर विशाल जिनमंदिर का निर्माण सन् 2003-2004 में हो गया। इस मंदिर के अंदर बीचों बीच की तीन वेदियों

मूलनायकस्य भगवतो महावीरस्य तस्यावगाहनां प्रमाणा खड्गासना प्रतिमा, सहस्रकूट चैत्यालयं, ह्रीँ प्रतिमाया च सह चतुर्षु दिक्षु 4–4 फुट प्रमाणाः खड्गासनाः चतुर्विंशति–तीर्थंकराणां भगवतां प्रतिमाः विराजमानाः कर्तुं तत्रानेक श्रद्धालवो भक्ताः स्वद्रव्यस्य सदुपयोगमकुर्वन्।

टिकैतनगरस्य दिगम्बर जैन समाजः एकस्वरेणायं निर्णयमकरोत् यदस्य मंदिरस्य पंचकल्याणकं– महोत्सवं वयं पूज्याया गणिन्या ज्ञानमत्या मात्रैव तस्याः संघसान्निध्ये एव करणीयोऽस्ति। पंचकल्याणकस्य प्रतिष्ठामहोत्सवस्य च सम्पूर्णं कार्यं कर्मयोगिनः ब्रह्मचारिणः रवीन्द्रकुमारस्य कुशलनेतृत्वे एव भविष्यति। अस्य विषयस्य स्वीकृतिं गृहीतुं समाजस्याध्यक्षः श्री प्रद्युम्नकुमारः सर्राफः (छोटीशाहः) महोदयः महामंत्री ऋषभकुमारेण सहानेक कार्यकर्तारः 2002–2003– 2004 वर्षेषु प्रयागे, कुण्डलपुरे वाराणस्यां चागत्य पूज्यायाः मातुः समीपं श्रीफलं समर्प्य निवेदनमकुर्वन्। माताश्रीरपि कुण्डलपुरतः दिल्ली–हस्तिनापुर विहारमार्गे अयोध्यायाः, टिकैतनगरस्य कार्यक्रमं विचिन्त्य तेभ्यो जनेभ्यः 99 प्रतिशतं स्वीकृतिं प्रादात्।

मध्ये चागतमेकं विघ्नम्–**जैन परिवाराणां मध्ये निर्मातुं प्रस्तावितस्यास्य मन्दिरस्य प्राथमिकं निर्माणकार्यं प्रायः पूर्णमेवाभवत्। अकस्मादेव मुनिरेको वास्तुशास्त्री च तत्र कान्चित् जनान् इदमुक्त्वा दिग्भ्रमितानकुरुतां यदिदं मन्दिरं अशुद्धदिशि निर्मितमस्ति। युष्मभ्यं च हानिकरमस्ति। पुनः किमभवत्? ते जनाः आकुलिताः अभवन्। अकथयन् च वयमस्मिन् मन्दिरे भगवन्तं विराजमानं कर्तुं प्रतिष्ठायाः एवं च कार्यं न करिष्यामः। 2004 वर्षे**

में मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण खड्गासन प्रतिमा, सहस्रकूट चैत्यालय एवं ह्रीँ प्रतिमा के साथ चारों ओर 4-4 फिट खड्गासन चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमाएँ विराजमान करने हेतु वहाँ के अनेक श्रद्धालु भक्तों ने अपने द्रव्य का सदुपयोग किया।

टिकैतनगर समाज ने एक स्वर से यह निर्णय लिया कि इस मंदिर का पंचकल्याणक महोत्सव हम लोगों को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में ही करना है और प्रतिष्ठा महोत्सव का सम्पूर्ण कार्य कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी के कुशल नेतृत्व में होगा। इस बात की स्वीकृति लेने हेतु समाज के अध्यक्ष प्रद्युम्न कुमार जैन सर्राफ (छोटी सा.) एवं महामंत्री ऋषभ कुमार सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने सन् 2002-03-04 में (प्रयाग, कुण्डलपुर, बनारस आदि स्थानों पर) आकर पूज्य माताजी के पास श्रीफल चढ़ाकर निवेदन किया। माताजी ने भी कुण्डलपुर (बिहार) से दिल्ली-हस्तिनापुर वापसी के मार्ग में अयोध्या और टिकैतनगर का भी कार्यक्रम सोचकर उन लोगों को 99 प्रतिशत स्वीकृति दे दी।

➢मध्य में आ गया एक विघ्न–

जैन मोहल्ले के ठीक मध्य में निर्मित हो रहे इस मंदिर का प्राथमिक निर्माण लगभग पूर्ण हो गया था। अकस्मात् एक मुनि जी एवं एक वास्तुशास्त्री ने वहाँ के कुछ लोगों को यह कहकर गुमराह कर दिया कि यह मंदिर गलत बना है और तुम लोगों के लिए हानिकारक है। फिर क्या था? वे लोग आकुलित हो उठे और कहने लगे कि हम इस मंदिर में भगवान विराजमान नहीं होने देंगे। सन् 2004

आकस्मिकस्यास्य विघ्ने उपस्थिते सति प्रायः निर्मितस्यैव मन्दिरस्यान्तिमसज्जाया कार्यं रुद्धमभवत्। अनेके जनाश्च कुण्डलपुरे चतुर्मासस्य मध्ये मातरमकथयन् यत् मात्:! भवती केन प्रकारेण सर्वेषां समाधानं विधायास्माकं प्रतिष्ठा कारयतु। अस्माकं सर्वाः चतुर्विंशतिप्रतिमाः सहस्रकूटाद्यः (मूलनायकं भगवन्तं महावीरस्वामिनं त्यक्त्वा) सर्वाः वर्षाणि पूर्वमेवागताः सन्ति। भवत्येव कंचित् उपायं करोतु।

पूज्या माता तेषां जनानामात्मीयतामधिकार पूर्णं च निवेदनं समीक्ष्य टिकैतनगरस्य जैन समाजस्य नाम्ना तत्रेदं पत्रं लिखितमकारयत् फरवरी 2005 वर्षे (8 फरवरी तः 14 फरवरी पर्यन्तं, माघ कृष्ण चतुर्दश्याः माघ शुक्ल पंचमी) पर्यन्तं प्रतिमानां पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा भविष्यति। पुनस्ते भगवन्तः स्वयमेव विराजमानाः भवितुं स्वस्थानस्य निर्णयं करिष्यन्ति। भवन्तस्तस्य चिन्ता परित्यजन्तु। तत्पश्चात्–माताश्रीः वाराणस्या टिकैतनगरं प्रति एतद्विचिन्त्य विहारमकरोत् यत् यदा प्रतिमानां पंचकल्याण–प्रतिष्ठा भविष्यति, तु तास्तत्रैव विराजामानाः भविष्यन्ति, स्वतः एव स्थानं निश्चितं भविष्यति।

वयं मार्गे एव आस्म, टिकैतनगरस्य श्रावक श्राविकाः सहैव चारिणः आसन् तदैव एकस्य सज्जनस्य 'मोबाईल' दूरभाषः आगच्छत् यत् टिकैतनगरे नवीनस्य मन्दिरस्य चतुर्विंशतिवेदिकाः तीव्रगत्या त्रोटिताः भवन्ति। एवं समाचारं ज्ञात्वा मातुर्मनसि सहसाघात इवाभवत्। किन्तु सा तत्कालमेवाकथयत् यत् पश्यत, कर्मणां विचित्रता! केचित् वेदिकानां निर्माणं कृत्वा पुण्यार्जनमकुर्वन् केचिच्चेदानीं ताः त्रोटितां कृत्वा तीव्रपापस्य बन्धं कुर्वन्ति। वस्तुतः इदं

में आकस्मिक इस विघ्न के उपस्थित हो जाने पर बने-बनाये मंदिर की फिनिशिंग का कार्य रुक गया और अनेक लोग कुण्डलपुर चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी से अत्यंत आग्रहपूर्वक कहने लगे कि माताजी! आप किसी तरह से सबका समाधान करके हमारी प्रतिष्ठा करवा दीजिए। हमारी सभी चौबीसों प्रतिमाएँ, सहस्रकूट आदि (मूलनायक महावीर स्वामी को छोड़कर) सब वर्षों पूर्व आ गये हैं, अब आप ही कोई उपाय कीजिए।

पूज्य माताजी ने उन लोगों का अपनत्व एवं अधिकारपूर्ण निवेदन देखकर टिकैतनगर जैन समाज के नाम से वहाँ यह पत्र लिखवा दिया कि फरवरी 2005 में (8 से 14 फरवरी, माघ कृ. चतुर्दशी से माघ शु. षष्ठी तक) प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी पुनः वे भगवान स्वयं विराजमान होने के लिए अपने स्थान का निर्णय कर लेंगे, आप लोग उसकी चिंता छोड़ दें। इसके बाद माताजी ने बनारस से टिकैतनगर के लिए यह सोचकर विहार कर दिया कि जब प्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हो जाएंगी, तो उन्हें जहाँ विराजमान होना होगा, अपने आप स्थान निश्चित हो जाएगा।

हम लोग रास्ते में ही थे, टिकैतनगर के श्रावक-श्राविका साथ में चल रहे थे, तभी एक सज्जन के मोबाइल पर फोन आया कि टिकैतनगर के नये मंदिर की चौबीसों वेदियाँ तेजी से तोड़ी जा रही हैं। यह समाचार जानकर माताजी को एकदम से बड़ा सदमा सा लगा किन्तु वे तुरंत कहने लगीं कि "देखो! कर्म की विचित्रता! किसी ने वेदियाँ बनाकर पुण्य का अर्जन किया और कोई अब उन्हें

मन्दिरं वास्तुशास्त्रिणां निर्देशानुसारेण सम्यगेव निर्मितमभवत्। तेन कस्यापि हानिर्न भवितुं शक्यते। स्यात्तत्र जनाः केनापि दिग्भ्रान्ताः अभवन् अतएव ते भ्रान्तौ अपतन्। अस्तु। ज्ञातमभवत् यत् द्वि–त्रिदिनेषु सर्वाः वेदिकाः भग्नाः अभवन्। केचिज्जनाश्च इदं कथयन्ति, यत् वयम् पश्यामः इदानीमस्मिन् मन्दिरे भगवन्तः केन प्रकारेण विराजमानाः भविष्यन्ति।

समाजस्य वरिष्ठानां कार्यकर्तृणां भावना आग्रहानुसारेण च भ्राता रवीन्द्रः जनवरी 2005 मासे तत्रागच्छत्। स्वस्य च कार्यकुशलतायाः संघटनस्य क्षमतायाः आधारेण सः समाजस्य प्रत्येकजनं इदमुक्त्वा स्व सहयोगिनमकरोत् यत् समाजो यत्रापि इच्छां करिष्यति भगवन्तस्तत्रैव विराजमानाः भविष्यन्ति। माताश्रीस्तु केवलं मूर्तीनां प्रतिष्ठां कारयितुमागच्छति। ताः प्रतिमाः तावत्कालपर्यन्तं स्व प्राचीनमन्दिरस्य सभाभवने एव विराजमानाः स्थास्यन्ति, पश्चात् सर्वे जनाः मिलित्वोपविश्य च मन्दिरस्य निर्णयं विचारयिष्यन्ति। टिकैतनगरस्य जनाः एकमतैः सहसैव सहमताः भूत्वा मार्गे पूज्यायाः मातु र्दर्शनार्थमागच्छन्। तदैकस्य सज्जनस्य मुखात् निर्गतं यत् मातः! यथा विशल्या लक्ष्मणस्य समीपमागन्तुं प्रारभत् तथैव लक्ष्मणस्य शरीरे प्रविष्टस्यामोघशक्तेः प्रभावो मन्दोऽभवत्। सर्वथा च समीपमागत्य लक्ष्मणस्य शरीरस्य स्पर्शकाले एव सा देवी शक्तिः अकस्मात् बहिर्भूत्वाऽधावत्। लक्ष्मणश्च पूर्णः स्वस्थो भूत्वा उत्थायोपविशत् तथैव भवत्या टिकैतनगरस्य समीपमागते सति शनैः शनैः सर्वाणि विघ्नानि समाप्तानि भूत्वा समाजैक्यस्य रूपं निर्मितं जायते। प्रतीयते च तत्र भवत्याः

तुड़वाकर तीव्र पाप का बंध कर रहे हैं। वैसे वह मंदिर वास्तुशास्त्रियों के निर्देशानुसार बिल्कुल सही बना है उससे किसी की भी हानि नहीं हो सकती है। शायद वहाँ के लोग किसी के द्वारा गुमराह किये गये हैं, इसीलिए उन्हें वहम हो रहा है। खैर! ज्ञात हुआ कि दो-तीन दिन में सब वेदियाँ टूट गई हैं और कुछ लोग यह कह रहे हैं कि देखते हैं अब इस मंदिर में भगवान कैसे विराजमान कर लेंगे.....इत्यादि।

समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की भावना एवं आग्रहानुसार भाई रवीन्द्र जी जनवरी 2005 को वहाँ पहुँच गए और अपनी कार्यकुशलता एवं संगठन क्षमता के आधार पर उन्होंने सम्पूर्ण समाज के बच्चे-बच्चे को अपने साथ यह कहकर जोड़ लिया कि समाज जहाँ चाहेगा, भगवान वहीं विराजमान किए जायेंगे, माताजी तो केवल मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवाने आ रही हैं। वे मूर्तियाँ तब तक अपने पुराने मंदिर के हॉल में विराजमान हो जाएंगी, पुनः आगे मिल-बैठकर सब समाज के लोग मंदिर का निर्णय कर लेंगे। टिकैतनगर के लोग एकमत से राजी होकर मार्ग में पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आये, तब एक सज्जन के मुँह से निकला कि "माताजी! जैसे विशल्या ज्यों-ज्यों लक्ष्मण के पास-पास पहुँचने लगी थी, त्यों-त्यों लक्ष्मण के शरीर में प्रविष्ट अमोघ शक्ति का असर घटने लगा था और बिल्कुल पास में जाकर लक्ष्मण का स्पर्श करते ही तो वह दैवी शक्ति एकदम निकलकर भाग गई और लक्ष्मण पूर्ण स्वस्थ होकर उठ बैठे थे। उसी प्रकार आपके टिकैतनगर के पास आते ही धीरे-धीरे सारे विघ्न समाप्त होकर समाज में एकता का रूपक बन रहा है और लगता

साक्षात् उपस्थितिकाले सर्वाः समस्याः स्वत एवं समाधानं प्राप्स्यन्ति। अलम्, भवत्याः तत्र प्राप्तेरेव विलम्बोऽस्ति। वयं विश्वासं कुर्मो यदस्माकं टिकैतनगरे कश्चित् चमत्कारोऽवश्यमेव प्रकटीभविष्यति। अन्यश्चाकथयत् वस्तुतस्तु टिकैतनगरं भवत्याः जन्मभूमि र्विद्यते। सा धरित्री स्व कुलदेवीस्वरूपां भवतीं विना किञ्चिदपि निर्णेतुं न शक्नोति।

कर्मयोगी ब्रह्मचारि रवीन्द्रकुमारस्य कुशलनेतृत्वे कार्यालयः चलितुं प्रारभत। सर्वे वृद्धाः युवकाः महिलाः बालकाः बालिकाश्चोत्साह पूर्वकं कार्ये संलग्नाः अभवन्। पोस्टर–निमंत्रणपत्राणि प्रकाशितानि भूत्वा न केवलं प्रान्ते, सम्पूर्णे देशे प्रेषिता न्ययवत्। तत्र च यदा माता संघ सहिता 4 फरवरी 2005 दिने टिकैतनगरे पादार्पणमकरोत् तु तत्र ग्राम–पञ्चायतेन जैन समाजेन च तस्याः महत्स्वागतमभवत्। निवासस्य व्यवस्था यद्यपि श्री कैलाशचन्द्रजैनस्य रिक्ते आवासे कृता आसीत् किन्तु माता तत्र संघस्थान् सर्वान् स्थापयित्वा स्वयं च तत्र नवीने मन्दिरस्यैकमात्रमपूर्णे प्रकोष्टेऽतिष्ठत्। अहं तु मात्रा सहैवासम्। शरदः शौचादेस्तु अव्यवस्था आसीदेव किन्तु माता तत्रैव स्थित्वा अग्रिम दिने 5 फरवरी दिन प्रातः कालादेवाभिषेकः शान्तिधारा–पूजा–पाठादीन् कारयितुं प्रारभत्। वयं तस्मिन् दिने श्री कैलासस्यावासे आस्म।

नियतमुहूर्तानुसारेण 6 फरवरी माघ कृष्ण द्वादश्यां दिने झण्डारोहणमंकुरारोपणमभवताम्। 7 फरवरी दिन जयपुरात् मूलनायकस्य भगवतो महावीरस्य प्रतिमाप्यागता, पुनः नवीनस्य मन्दिरस्य सभागारेऽग्रिम दिने 8 फरवरी दिने प्रतिष्ठाचार्यो नरेशः शास्त्री यागमण्डल–

है कि वहाँ आपके साक्षात् पहुँचते ही सम्पूर्ण समस्याएं अपने आप सुलझ जाएंगी। बस आपके पहुँचने भर की देर है, हम लोगों को विश्वास है कि हमारे टिकैतनगर में कुछ न कुछ चमत्कार अवश्य प्रगट होगा। दूसरे ने कहा कि–आखिर तो टिकैतनगर आपकी भी तो जन्मभूमि है, वह धरती अपनी कुलदेवी स्वरूपा आपके बिना कुछ निर्णय भी कैसे कर सकती है?

कुल मिलाकर उधर रवीन्द्र जी के नेतृत्व में पंचकल्याणक का कार्यालय चलने लगा। सभी युवक, वृद्ध, महिलाएं, बालक-बालिकाएं आदि खूब उत्साहपूर्वक कार्य में लग गये। पोस्टर, निमंत्रण कार्ड आदि छपकर पूरे प्रांत में ही नहीं, देशभर में पहुँच गये और इधर जब माताजी संघ सहित 4 फरवरी 2005 को टिकैतनगर पहुँचीं, तो वहाँ ग्राम पंचायत एवं जैन समाज के द्वारा बड़ा भारी स्वागत हुआ। संघ के ठहरने की व्यवस्था यद्यपि कैलाशचंद सर्राफ के खाली मकान में की गई थी किन्तु माताजी ने वहाँ संघस्थ सभी को ठहराकर स्वयं उस दिन नये मंदिर के एक मात्र अपूर्ण कमरे में ठहर गईं। मैं तो उनके साथ थी ही, सर्दी और शौच आदि की अव्यवस्था तो थी किन्तु माताजी ने वहीं रहकर अगले दिन 5 फरवरी को सबेरे से अभिषेक, शांतिधारा, पूजा-पाठ आदि कराना शुरू कर दिया। हम लोग उस दिन कैलाश जी के मकान में थे।

अपने नियत मुहूर्त के अनुसार 6 फरवरी, माघ कृ. 12 को झण्डरोहण-अंकुरारोपण हो गया। 7 फरवरी को जयपुर से मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा भी आ गईं। पुनः नये मंदिर के हॉल में अगले दिन 8 फरवरी को प्रतिष्ठाचार्य नरेश शास्त्री ने यागमण्डल विधान

विधानमकारयन्। नवग्रहहोमपूजनेन सह विधानस्य समापनं विधाय केचिज्जनाः पाण्डाले भेरीवादन विधौ व्यस्ताः आसन्, केचिच्च समाजस्य जनाः भगवतोः माता–पिता, प्रतिष्ठाया–श्चेन्द्रेन्द्राणीनां शोभायात्रायां व्यस्ताः अभवन्।

दिनस्य प्रायः एकवादनस्य समय आसीत् यतः केचित् बालकाः धावित्वा अस्माकं समीपमागच्छन् अकथयन् च मातः नवीने मन्दिरे मूर्तयो नीयन्ते। मातः! इदानीमेताः प्रतिमाः नवीने मन्दिरे विराजमानाः भूत्वैव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भविष्यति। वयमधिकं विषयमवगन्तुं नाशक्नुवम्। पुनः विश्वस्तसूत्रैर्ता ज्ञातमभवत् यत् चौकहट्टे केचित् जनाः तत्रावदन् च कश्चित् विवादोऽभवत् तदा केषुचित् जनाः यत् को निवारयति प्रतिमाः विराजमानाः कर्तुम्। तदा तु जनाः सहसा परस्परं मिलित्वा एकहोरासमयस्य मध्ये एव सर्वाः प्रतिमाः नूतनं मन्दिरमानयन्।

वयं यदा सायं 5 वादनसमये स्व वसतिकायाः मन्दिरं गतास्तु तस्य दृश्यस्य प्रसन्नतायाः दृश्यं दृष्टुं योग्यमासीत्। सर्वे परस्पर एको द्वितीयस्य कण्ठे संलग्नः आसीत्। अन्येच उच्छलिलाताः प्रचुर जयनादमकुर्वन्। अन्यत्तु किम्। तत्र संघे आगते एव महावीर नामकः एको युवकः पूज्यां मस्तके धृत्वा उच्चै त्वरेण तस्याः जयकारमकरोत्। सर्वे चमत्कारं चमत्कारं वक्ता प्रफुल्लिताः अभवन्। हर्षाश्रुभिः सर्वेषां नेत्राणि क्लिन्नान्यभवन्। मह्यं तु इदानीं लेखन कालेऽपि तानि रोमांचक क्षणानि स्मृतिमार्गमागच्छन्ति। सर्वातं च रोमांचितं जायते। यतो हि टिकैतनगरे ईदृशानि अतिशयकारीणि क्षणानि अस्मात् पूर्वं न प्रस्तुतान्यभवन्।

कराया। नवग्रह होम, पूजन के साथ विधान का समापन करके कुछ लोग पाण्डाल में भेरीताड़न विधि कर रहे थे और कुछ समाज के लोग भगवान के माता-पिता, प्रतिष्ठा के इन्द्र-इन्द्राणियों के जुलूस में व्यस्त थे।

दिन के लगभग 4 बजे थे कि कुछ बच्चे दौड़े-दौड़े हमारे पास आए और कहने लगे कि नये मंदिर में मूर्तियाँ ले जाई जा रही हैं। माताजी! अब ये सब मूर्तियाँ नये मंदिर में विराजमान होकर ही पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी। हम लोग ज्यादा कुछ मामला समझ नहीं पाए, फिर विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ कि चौक बाजार में कुछ लोगों की आपस में कहा-सुनी हो गई और तब कुछ लोगों में भी जोश आ गया कि देखते हैं कौन रोकता है मूर्तियों को विराजमान होने से! फिर तो आनन-फानन में लोग स्वयं मिलकर 1 घंटे के अंदर सारी मूर्तियाँ नये मंदिर में ले आए।

हम लोग जब सायं 5 बजे अपनी वसतिका से मंदिर में पहुँचे, तो वहाँ की खुशियों का जलवा देखने लायक था। सभी आपस में एक-दूसरे के गले से लिपटे जा रहे थे, नाच रहे थे, उछल-उछल कर खूब जय-जयकार कर रहे थे। और तो और! वहाँ संघ के पहुँचते ही महावीर नामक एक युवक ने पूज्य माताजी को ही गोद में उठाकर (मस्तक पर धारण कर) जोर-जोर से उनकी जय बोलने लगे। सभी चमत्कार-चमत्कार कहकर फूले नहीं समा रहे थे, हर्ष के आंसुओं से सबके तन-मन भीगे पड़े थे। अरे! मुझे तो इस समय लिखते हुए भी वे रोमांचक क्षण याद आ रहे हैं और सारा शरीर रोमांचित हो रहा है, क्योंकि टिकैतनगर में ऐसे अतिशयकारी क्षण इससे पहले कभी नहीं प्रस्तुत

तस्मिन् दिने होलिकायाः दीपवल्याः रक्षाबन्धनस्य च सर्वेषामुत्सवानां दृश्यानि उपस्थितान्यासन्। आबालवृद्धाः यत्र इदं दृश्यं ज्ञानमत्या मातुस्तपस्यायाः चमत्कारमुक्त्वा क्रन्दनमकुर्वन् तत्रैव माता ज्ञानमती सर्वान् स्वोद्बोधने भगवतो महावीरस्यावगाहना प्रमाणाया प्रतिमायाश्चमत्कार रूपेणैताः घटिकाः प्रस्तुताः अकरोत्। यदपि भवतुः यथार्थ देवशास्त्रगुरुणां भक्तेश्चमत्कारस्तु अवर्णनीयः एवास्ति।

सर्वस्मात् महान्चमत्कारस्तु अयमेव दृष्टिमागतो यत् 3–4 वर्षाणां आयुषां बालकाः अपि सम्पूर्णायां नगर्यां राजमार्गात् नीत्वा मन्दिर पर्यन्तं इष्टिकाः गृहीत्वा दातुं तत्पराः अभवन्। कलाकारेण सहैव समस्ताः जनाः सीमेंट मसाला रचयित्वा स्वयमपि वेदिकानां स्थापनां कर्तुं प्रवृत्ताः अभवन्। सम्पूर्णायां रात्रौ च सर्वे पुरुषार्थं कृत्वा क्रेन यंत्रेण प्रातः 4.30 वादन समये सवा 11 फुट उन्नतां भगवतो महावीरस्य पीतवर्णां प्रतिमां मूलवेदिकाया निर्माणं कृत्वा तस्यां विराजमानमकुर्वन्। अनेन प्रकारेण प्रभातपर्यन्तं सर्वाः 25 प्रतिमाः यथास्थानं वेदिकायां विराजमाना अभवन्। प्रातः कालादेव टिकैतनगरसमाजस्य सर्वे जनाः मन्दिरस्यैतत् चामत्कारिकं दृश्यमवलोक्य, कृतार्था इवाभवन्। यतो हि सर्वेषां गृहादस्मिन् काचिदप्यर्थांजलि समर्पिताभवत्। यतः 30 वर्षाणां पश्चात् नगरे संपाद्यमानता प्रस्ताविता पंच कल्याणकस्य प्रतीक्षां जनाः वर्षेभ्यः अकुर्वन्। तस्य समयस्येदानीं साक्षादाणते सति बालकेषु वृद्धेषु युवकेषु महिलासु च न जानामि, कस्मात् स्थानात् शक्तिः प्रकटिताभवत्।

हुए थे। उस दिन वहाँ, होली, दीवाली, रक्षाबंधन आदि सारे उत्सवों के दृश्य मानों एक साथ उपस्थित हो गये थे। आबाल-वृद्ध सभी जहाँ इसे ज्ञानमती माताजी की तपस्या का चमत्कार कह-कहकर चिल्ला रहे थे, वहीं माताजी ने सबको अपने उद्बोधन में भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा के चमत्काररूप में इन घड़ियों को प्रस्तुत किया। जो भी हो, सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति का चमत्कार अवर्णनीय तो है ही।

सबसे बड़ा चमत्कार तो यह देखने में आया कि 3-4 वर्ष के बच्चे भी पूरी रात सड़क से लेकर मंदिर तक ईंटें ला-लाकर देते रहे, मिस्त्री के साथ तमाम लोग सीमेंट, मसाला बनाकर खुद भी वेदियों की चिनाई करने लगे और रात भर सभी ने पुरुषार्थ करके चेन पुली से प्रातः ठीक 4.30 बजे सवा ग्यारह फुट उत्तुंग भगवान महावीर स्वामी की पीतवर्णी प्रतिमा मूलवेदी बनाकर उस पर विराजमान कर दी। इस प्रकार सबेरे तक सभी 25 प्रतिमाएँ यथास्थान वेदी बनाकर विराजमान हो गईं और उनके साथ ही महावीर स्वामी के एक ओर सहस्रकूट चैत्यालय जुड़ने लगा तथा दूसरी ओर वेदी में चौबीस तीर्थंकर से समन्वित "ह्रीँ" मंत्र की प्रतिमा (पूर्व में प्रतिष्ठित की हुई) विराजमान हो गईं। प्रातः से टिकैतनगर समाज की पूरी जनता मंदिर का यह चमत्कारिक दृश्य देखकर मानो निहाल हुई जा रही थी, क्योंकि सभी के घर से इसमें कुछ न कुछ अर्थांजलि समर्पित की गई थी और 30 वर्षों के बाद नगर में हो रही इस पंचकल्याणक का इंतजार लोग वर्षों से कर रहे थे। वह समय अब साक्षात् आ जाने पर हर बच्चे, बूढ़े, युवक, महिला के अन्दर न जाने कहाँ से अपूर्व शक्ति प्रगट

यत् ते वेदिकां निर्माणं इष्टिकानां वहनं, वस्तूनामानयनं, प्रतिमायाः आरोहणं, पाण्डाल निर्माणं, स्वच्छतायाः करणं आदीनि सर्वाणि कार्याणि कस्यापि श्रमिकस्य सहायतां विनैव स्वयमेव कर्तुं तत्पराः आसन्।

अस्योत्साहस्य पूर्णे वातावरणे 7 फरवरी 2005 तः 14 फरवरी पर्यन्तं चामत्कारिका पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा तु सम्पन्नाभवत् पुनः शीघ्रमेव मन्दिरस्योपरि दक्षिणभारतवत् शिखरस्य निर्माणमपिअभवत् अयोध्यायां च भगवतः ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेक–महोत्सवस्य सम्पन्नतायाः पश्चात् हस्तिनापुरं प्रति विहार काले पूज्या माता पुनः जन्मभूमेर्भक्तानामाग्रहं मत्वा टिकैतनगरमागच्छत् 13 अप्रैल दिने च मन्दिरस्य शिखरे कलशारोहणं ध्वजारोहणं चाकारयत्।

प्रसन्नतायाः त्वियं वार्तास्ति यत् ''तस्य मन्दिरस्य पंचकल्याणकस्य पश्चात् तत्र सर्वेषु परिवारेषु प्रचुरशान्तिरस्ति, सर्वे च श्रद्धया भक्त्या च सह जिनेन्द्र भक्तौ संलग्नाः सन्ति।'' **जिनेन्द्रभगवतः कृपया टिकैतनगरस्य सर्वे परिवाराः समृद्धाः सन्ति निरन्तरं च धर्मे धने च वृद्धिं कुर्वन्तः पूज्यां मातरं प्रति सर्वान् च गुरुन् प्रति समर्पितास्तिष्ठन्ति। इदमेव तेषामुज्ज्वलस्य भविष्यस्य च प्रतीकं विद्यते। तत्र जैनसमाजस्य परिवारेभ्योऽतिरिक्तमेव भरतसेनानामिकाया संघटनस्य कार्यकर्तारोऽपि स्वकार्यकलापैः टिकैतनगरस्य नामानं गौरवान्वितं कुर्वन्ति। स्वयात्राया मध्ये अस्य प्रसंगस्य लेखनकालेऽहं ज्ञातवत्यस्मि तस्मिन् चामत्कारिके नूतने जिनमन्दिरे सम्पूर्णः संगमर्मरप्रस्तरो युक्तो भूत्वा सम्पूर्णं कार्यं सम्पन्नमभवत्। भक्तानां च तत्र प्रचुरभक्त्याः वातावरणं विद्यमानं भवति।**

हो गई थी कि वे वेदी बनाना, ईंट ढोना, सामान लाना, प्रतिमा चढ़ाना, पांडाल बनाना, सफाई करना आदि सभी कार्यों को किसी मजदूर की सहायता न लेकर स्वयं ही कर लेना चाहते थे।

इस उत्साह से भरे वातावरण में 7 फरवरी से 14 फरवरी 2005 तक चमत्कारिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तो सम्पन्न हुई ही, पुनः शीघ्र ही मंदिर के ऊपर दक्षिण भारत की कला वाले शिखर का निर्माण भी हो गया और अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न होने के पश्चात् हस्तिनापुर की ओर विहार करते समय पूज्य माताजी पुनः जन्मभूमि के भक्तों का आग्रह मानकर टिकैतनगर पधारीं और 13 अप्रैल को मंदिर के शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वजस्थापन करवा दिया।

प्रसन्नता की बात यह है कि **उस मंदिर के पंचकल्याणक के बाद वहाँ सभी परिवार में खूब शांति है और सभी श्रद्धा-भक्ति के साथ जिनेन्द्र भक्ति में संलग्न हैं।** जिनेन्द्र भगवान की कृपा से टिकैतनगर के सभी जैन परिवार समृद्ध हैं एवं निरंतर धर्म और धन में वृद्धि करते हुए पूज्य माताजी एवं समस्त गुरुओं के प्रति समर्पित रहते हैं, यही उनके उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है। वहाँ जैन समाज के साथ-साथ ''भरतसेना'' नामक एक संगठन के युवा कार्यकर्ता अपने कार्यकलापों से टिकैतनगर का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। अपनी यात्रा के मध्य इस प्रसंग को लिखने तक मुझे ज्ञात हुआ कि उस नूतन ''चमत्कारिक भगवान महावीर जिनमंदिर'' में पूरा संगमरमर पत्थर लगकर कार्य सम्पन्न हो चुका है और भक्तों द्वारा वहाँ प्रतिदिन खूब पूजा-भक्ति का वातावरण बना रहता है।

रामायणस्य प्रमुखपात्रं (रामः) अरुणगोविलः गृहीतताम् मातुराशीर्वादम्–**अस्या पञ्चकल्याणक–प्रतिष्ठायाः महोत्सवे प्रतिदिनं विविधदृश्यानां सांस्कृतिक कार्यक्रमाः सम्पन्नाः अभवन्। येषु 14 फरवरी दिने विशेषः आकर्षकः कार्यक्रमः राजेन्द्र जैनेन बम्बई निवासिना सुन्दरभजन–सन्ध्या प्रस्तुता कृता। यस्याः मध्ये दूरदर्शनकलाकारः रामायणधारावाहिकस्य प्रमुख पात्रं भगवतो रामस्य भूमिकायां संलग्नेन अरुण गोविलेन रामायणस्य कतिपय संवादाः भजनानि च प्रस्तुताः अभवन्। सर्वे करतलध्वनिना अस्याः सांस्कृतिक सन्ध्यायाः पूर्णमानन्दमगृहणन्। श्री अरुण गोविलो मातुराशीर्वादं प्राप्य तस्याश्च जन्मभूमे र्दर्शनं कृत्वा स्वात्मानं धन्यं कृतवान्।**

मुख्यमंत्री भगवतः पार्श्वनाथस्य वर्षस्य दीपप्रज्ज्वलनं चकार–**12 फरवरी 2005, माघ शुक्ल चतुर्थी दिने मध्यकालीनायां सभायां उत्तरप्रदेशस्य मुख्यो मंत्री श्री मुलायमसिंहो यादवः अनेके च गण्यमान्याः समागच्छन्। येषु माननीयो मुख्यमंत्री महोदयो मात्रा संचालित भगवतः पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सवं सम्पूर्णे देशे एक वर्ष पर्यन्त–मायोजनार्थं प्रस्तावितस्य** 'पार्श्वनाथवर्षस्योद्घाटनं' **पार्श्वनाथस्य प्रतिमायाः समक्षमकरोत् दीपं प्रज्ज्वलितं कृत्वा।**

राजधान्यां लखनऊनगरे विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य विशालमायोजनम्–**टिकैतनगरे भव्यस्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवस्य पश्चात् पूज्या माता भिटरिया बाराबंकी आदि स्थानेषु विहरन्ती उत्तरप्रदेशस्य राजधन्यां नवाबानां नगर्यां लखनऊनगरं समागच्छत्। यत्र तस्याः**

➢रामायण के प्रमुख पात्र (राम) अरुणगोविल ने लिया माताजी का आशीर्वाद–

इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में प्रतिदिन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिसमें 14 फरवरी को विशेष आकर्षक कार्यक्रम राजेन्द्र जैन-मुम्बई द्वारा सुन्दर भजन संध्या प्रस्तुत की गई, जिसके मध्य टी.वी. कलाकार रामायण सीरियल के प्रमुख पात्र भगवान राम बने श्री अरुण गोविल द्वारा रामायण के कतिपय संवाद एवं भजन प्रस्तुत किए गए, सभी ने करतल ध्वनि के साथ इस संध्या का भरपूर आनन्द लिया। श्री अरुण गोविल जी ने पूज्य माताजी से आशीर्वाद प्राप्त कर एवं उनकी जन्मभूमि के दर्शन कर अपने को धन्य माना।

➢मुख्यमंत्री ने ''भगवान पार्श्वनाथ वर्ष'' का दीप प्रज्वलित किया–

12 फरवरी 2005, माघ शु. चतुर्थी को मध्यान्हकालीन सभा में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव एवं अनेक नेतागण पधारे, जिसमें माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने पूज्य माताजी द्वारा ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव'' को पूरे देश में एक वर्ष तक मनाने हेतु घोषित किये गये **''पार्श्वनाथ वर्ष''** का उद्घाटन पार्श्वनाथ प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया।

➢राजधानी लखनऊ में विश्वशांति महावीर विधान का विशाल आयोजन–

टिकैतनगर में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन के पश्चात् माताजी भिटरिया, बाराबंकी आदि स्थानों पर होते हुए उत्तरप्रदेश की राजधानी नवाबों की नगरी लखनऊ में पधारीं, जहाँ

ससंघसान्निध्ये चौक (लखनऊनगरे) स्थिते श्री 1008 भगवान् नेमिनाथदिगम्बरजैनमन्दिरे 24 फरवरी तः 3 मार्च 2005, माघ शुक्ल पूर्णिमायाः फाल्गुण कृष्ण सप्तमी पर्यन्तं महत्याः धर्मप्रभावनया श्री कैलाशचन्द्र जैनस्य लखनऊ नगरस्य परिवारेण विश्वशन्तिमहावीर विधानं सम्पन्नमभवत्। विधानस्य मध्ये 27 फरवरी दिने ''अयोध्या महाकुम्भमस्तकाभिषेकस्याधिवेशनं'' **ब्र. रवीन्द्र– स्याध्यक्षतायां संपन्नमभवत्। पुनः 1 मार्च दिने माताश्री संघसहिता ऐशबाग स्थिते श्री दिगम्बर जैन धर्मसंरक्षिणी सभायाः केन्द्रीय कार्यालयं समागच्छत्। यत्र महासभायाः अध्यक्षः श्री निर्मल कुमार सेठी पूज्यायाः मातुर्भावासिक्तं स्वागतमकरोत्। तत्पश्चात् श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिरे चारबाग स्थाने महान सम्मर्दो पूज्यायाः मातुः मंगल–प्रवचनानां लाभं प्राप्नोत्। 2 मार्च दिने संघः श्री 1008 भगवान् आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिरस्य अहियागंज स्थानस्य दर्शनमकरोत्। अत्रापि च विशाला धर्मसभाऽऽयोजिताभवत्।**

3 मार्च दिने चौक मन्दिरे पूर्णाहुति हवनस्य पश्चात् विशाला रथयात्रा निर्गताभवत्। यस्यां श्री विजेन्द्र सिंहः (आई.जी. लखनऊ) वरिष्ठ पत्रकारश्च श्री के.सी. जैनः मुख्यातिथिरूपेण समागच्छत्। 4 मार्च दिने माताश्रीः श्री 1008 भगवान् पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिरे सहादतगंज स्थाने दर्शनार्थमागच्छत्। तत्र श्रद्धालुभक्ताः तस्याः सान्निध्ये ''भगवान् ऋषभदेव विधानं'' **सम्पाद्य जिनभक्तेर्विशेषं लाभं प्राप्नुवन्। सायंकाले डालीगंज दिगम्बर जैन मन्दिरे विशालया शोभायात्रया सह संघस्य मंगल प्रवेशोऽभवत्। सम्पूर्णायां शोभायात्रायां भक्तैः**

उनके ससंघ सानिध्य में चौक (लखनऊ) स्थित श्री 1008 भगवान नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 24 फरवरी से 3 मार्च 2005, माघ शु. पूर्णिमा से फाल्गुन कृ. सप्तमी तक भारी धर्मप्रभावनापूर्वक श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ सपरिवार द्वारा विश्वशांति महावीर विधान सम्पन्न हुआ। विधान के मध्य 27 फरवरी को ''अयोध्या महाकुंभ मस्तकाभिषेक अधिवेशन'' ब्र. रवीन्द्र जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, पुनः 1 मार्च को माताजी संघसहित ऐशबाग स्थित श्री दिगम्बर जैन धर्मसंरक्षिणी महासभा के केन्द्रीय कार्यालय में पधारीं, जहाँ महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने पूज्य माताजी का भावभीना स्वागत किया, तत्पश्चात् श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर-चारबाग में भारी भीड़ ने पूज्य माताजी के मंगल प्रवचनों का लाभ प्राप्त किया। 2 मार्च को संघ ने श्री 1008 भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर-अहियागंज का दर्शन किया तथा यहाँ भी विशाल धर्मसभा आयोजित की गई।

3 मार्च को चौक मंदिर में पूर्णाहुति हवन के पश्चात् विशाल रथयात्रा निकाली गई, जिसमें श्री विजेन्द्र सिंह (आई.जी लखनऊ) एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री के.सी. जैन-मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। 4 मार्च को माताजी श्री 1008 भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सहादतगंज-लखनऊ में दर्शनार्थ पधारीं जहाँ श्रद्धालु भक्तों ने उनके सानिध्य में **''भगवान ऋषभदेव विधान''** सम्पन्न करके जिनभक्ति का विशेष लाभ प्राप्त किया। सायंकाल डालीगंज स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में विशाल जुलूस के साथ संघ का मंगल प्रवेश हुआ। सम्पूर्ण जुलूस में भक्तों द्वारा की

कृतायाः पुष्पवृष्ट्याः माध्यमेन जनानामुत्साहो दर्शनीय एव आसीत्। 15 मार्च दिने श्री प्रद्युम्नकुमारो जैनः टिकैतनगरः तस्य पुत्रेणअमरचन्द्रेण समस्त परिवारेण च डालीगंज मन्दिरे रजतस्य 108 कमलानि समर्प्य ''भगवतः पार्श्वनाथस्य विधानं'' **सम्पन्नं कृतम्। 6 मार्च दिनात् 10 मार्च पर्यन्तं इन्दिरानगर–दिगम्बर जैन मन्दिरे संघस्य सान्निध्ये विश्वशान्तिमहावीरविधान अत्यन्त प्रसन्नतायाः उत्साहस्य च वातावरणेऽभवत्। पं. नरेश कुमारः शास्त्री सर्वाण्येव विधि–विधानानि सम्पन्नान्यकरोत्। 10 मार्च सायंकाले गोमतीनगर दिगम्बरजैनमन्दिरे संघस्य मंगल प्रवेशोऽभवत्। यत्र महान् जनसमूहो मातु दर्शनस्य प्रवचनानां च लाभं प्राप्तं कुर्वन्तः आत्मनः धन्यान् कृतवन्तः। पुनः 11 मार्च दिनाँके मातुः प्रथमस्य तीर्थंकरस्य जन्मभूमये अयोध्यायै विहारोऽभवत्।**

अयोध्यायामभवत् मातुरभूतपूर्वं स्वागतम्–**11 वर्षाणां पश्चात् अयोध्यामागते सति पूज्यायाः गणिन्या ज्ञानमत्याः संघस्य चायोध्यावासिभिः तत्र च सन्तसन्यासिभिः हार्दिकं स्वागतं सम्मानं कृतम्।**

17 मार्च 2005 फाल्गुन शुक्ल सप्तमी दिने अयोध्यायां प्रवेशकाले अयोध्यायाः सीम्निआगते सति गुरुकुल महाविद्यालयः रानोपालीअयोध्याया प्राचार्यः श्री योगेन्द्रनाथः त्रिपाठी शताधिकाश्च वेदपाठिनो विद्यार्थिनः वैदिकमंत्रोच्चारमध्ये पूज्यायां मातरि पुष्पवृष्टिं कुर्वन्तः स्वागतमकुर्वन्।

गई भारी पुष्पवृष्टि के माध्यम से लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। 15 मार्च को श्री प्रद्युम्न कुमार जैन ''छोटी सा.''-टिकैतनगर, उनके पुत्र अमरचंद जैन एवं समस्त परिवार द्वारा डालीगंज मंदिर में चांदी के 108 कमल चढ़ाकर **''भगवान पार्श्वनाथ विधान''** सम्पन्न किया गया। 6 मार्च से 10 मार्च तक इन्दिरानगर दिगम्बर जैन मंदिर में संघ सानिध्य में विश्वशांति महावीर विधान अत्यन्त प्रसन्नता एवं उत्साह के माहौल में हुआ। पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री ने सभी विधि-विधान सम्पन्न कराए। 10 मार्च को सायंकाल गोमतीनगर दिगम्बर जैन मंदिर में संघ का मंगल प्रवेश हुआ, जहाँ भारी भीड़ ने पूज्य माताजी के दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त करते हुए स्वयं को धन्य माना। पुनः 11 मार्च को पूज्य माताजी का प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या हेतु मंगल विहार हो गया।

➢अयोध्या में हुआ पूज्य माताजी का अभूतपूर्व स्वागत–

11 वर्ष बाद अयोध्या पधारने पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ का अयोध्यावासियों एवं वहाँ के संत-महंतों द्वारा हार्दिक स्वागत एवं सम्मान किया गया।

17 मार्च 2005, फाल्गुन शु. सप्तमी को अयोध्या प्रवेश के समय अयोध्या की सीमा में पहुँचते ही गुरुकुल महाविद्यालय, रानोपाली-अयोध्या में प्राचार्य श्री योगेन्द्र नाथ त्रिपाठी एवं सैकड़ों बटुक (ब्रह्मचारी बालक) वेदपाठी विद्यार्थियों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूज्य माताजी पर पुष्पवृष्टि करते हुए स्वागत किया।

तत्पश्चात् नगरपालिकाध्यक्षः सरदारमहेन्द्रसिंहोऽयोध्याया व्यापारमण्डलस्य चाध्यक्षः श्री सुफल चन्द्रो मौर्यः प्रायः 100 व्यापारिभिः सह टेढी बाजारे संघस्य स्वागतमकरोत्। पुनः विरलामन्दिरअयोध्यायाः समक्षं हनुमानगढ़ीसरपंचः श्री अवधेशदास महाराजः पुष्पवृष्टिं विधाय पूज्यायाः मातुः सम्मानमकरोत्।

दन्तधावने कुण्डे समाजवादिसन्तसभायाः राष्ट्रीयोऽध्यक्षः महन्तः श्रीभवनाथदासो महाराजः द्वादशभिः साधुभिः सह पुष्पवृष्टिं विधाय स्वागतस्य शृंखलामग्रसरितामकरोत्।

तत्पश्चात् रायगंजस्थिते श्रीदिगम्बरजैनमन्दिरे समागते सति संघस्य समितेः पदाधिकारिभिः भावसिक्तं स्वागतं विहितम्। पुष्पवृष्टिभिर्जयकारैः समस्तः एव परिसरो गुंजायमानोऽभवत्। मन्दिरे भगवतः ऋषभदेवस्य विशालायाः प्रतिमायाः चरणाभिषेकस्य पश्चात् भगवतश्चन्द्रप्रभस्य निर्वाणमोदकाः समर्पिताः अभवन्। रत्नवृष्टिश्च कृता। अस्मिन्नवसरे शताधिकाः श्रद्धालवः उपातिष्ठन्।

22 मार्च, **फाल्गुण शुक्ल–द्वादशी दिने श्री रामजन्मभूमि निर्माणकार्यशालायाः प्रभारी श्रीअन्नूभाई सोमपुरा, कारसेवकपुरस्य प्रभारी श्री प्रकाशोऽवस्थी मणीरामदासस्य छावनी–बाल्मीकिभवनस्य वासुदेव घाटस्य श्री कृपालुरामदासः, पंजाबी बाबा, श्री हनुमानबागस्य श्री विदुरकुमारः शास्त्री–इत्यादिस्थानेषु पूज्यायाः मातुः स्वागतमभवत्।**

24 मार्च दिने, **महर्षिवेदविज्ञानपीठेऽयोध्यायां छात्रेभ्यो मंगल प्रवचनं कर्तुं समागच्छत्।**

तत्पश्चात् नगरपालिका अध्यक्ष-सरदार महेन्द्र सिंह एवं अयोध्या व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री सुफलचंद मौर्य ने लगभग 100 व्यापारियों के साथ टेढ़ी बाजार में संघ का स्वागत किया। पुनः बिड़ला मंदिर-अयोध्या के समक्ष हनुमानगढ़ी (अयोध्या) के सरपंच श्री अवधेश दास जी महाराज ने पुष्पवृष्टि करके पूज्य माताजी का सम्मान किया।

दंतधावन कुण्ड पर समाजवादी संत सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष-महंत श्री भवनाथदास जी महाराज ने दर्जनों साधुओं के साथ पुष्पवृष्टि करके स्वागत की शृंखला को आगे बढ़ाया।

तत्पश्चात् रायगंज स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर (बड़ी मूर्ति) पहुँचने पर संघ का समिति के पदाधिकारियों द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। पुष्पवृष्टि, चरण प्रक्षालन, मंगल आरती के साथ भगवान ऋषभदेव एवं पूज्य माताजी की जयकारों से सारा परिसर गुंजायमान हो गया। मंदिर में पहुँचकर भगवान ऋषभदेव की बड़ी मूर्ति के चरणाभिषेक के पश्चात् भगवान चन्द्रप्रभ का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया एवं रत्नवृष्टि की गई। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे।

22 मार्च, फाल्गुन शु. 12 को श्री रामजन्मभूमि निर्माण कार्यशाला (प्रभारी-श्री अन्नु भाई सोमपुरा), कारसेवकपुरम् (प्रभारी-श्री प्रकाश अवस्थी), मणीरामदास जी की छावनी (वाल्मीकि भवन)-वासुदेव घाट (श्री कृपालु रामदास जी महाराज 'पंजाबी बाबा'), श्री हनुमान बाग (श्री विदुर कुमार शास्त्री) इत्यादि स्थानों पर पूज्य माताजी का स्वागत किया गया।

24 मार्च को महर्षि वेदविज्ञान विद्यापीठ (अयोध्या) में विद्यार्थियों हेतु मंगल प्रवचन करने

पूज्यायाः ज्ञानमत्याः मातुः संघस्थानां च साधूनां तत्र आचार्यवर्गः वेदपाठि विद्यार्थिवर्गश्च वैदिक मंत्रोच्चारपूर्वकं पुष्पवृष्टिं कुर्वन्तः स्वागतमकुर्वन्।

25 मार्च **दिने तुलसीस्मारकभवनस्य प्रमुखोऽधिकारी दिगम्बर अखाड़ा स्थानस्य (पूर्व महंतः श्री परमहंसरामचन्द्रदासो महाराजस्य) वर्तमानो महन्तः श्री सुरेशदासो महाराजः जगतगुरुः रामानन्दाचार्यः स्वामी श्री हर्याचार्यः पीठाधीश्वरो महन्तः कौशल किशोरदासो महाराजो भक्तमालः स्व–स्व स्थानेषु संघस्थायाः पूज्यायाः मातुः स्वागतमकुर्वन्। सर्वे च मात्रे स्वसाहित्यमुपाहरन्।**

27 मार्च **दिने सुग्रीवकिला स्थाने जगद्गुरु रामानुजाचार्यस्वामिनः श्री पुरुषोत्तमाचार्यस्य नेतृत्वे तत्र विद्यार्थिनः वैदिकऋचाणांपाठं कुर्वन्तः पुष्पवृष्टिं कृत्वा संघस्थानां भावसिक्तं स्वागतमकुर्वन्।**

28 मार्च **दिने प्रातः काले रामजन्मभूमेः परिदर्शनस्य पश्चात् सी.आर.पी.एफ. महिला श्रेण्याः कटरास्थाने काकभुशुण्डिमन्दिरे रत्नसिंहासन (महन्तो अरुणदासः देवकीनन्दन–दासस्य) कनक भवनस्य वृहत्स्थाने दशरथ राजगद्दी स्थानेषु संघस्य स्वागतं कृतम्।**

अस्मिन्नेव दिने सायं काले हनुमानगढी–मन्दिरे पदाधिकारिणः श्री रमेशदासो महाराजस्य अखाड़ा परिषदः अध्यक्षस्य श्री ज्ञानदासस्योपस्थित्यां पूज्यायाः मातुः स्वागतमभूत्। अस्मिन्नवसरे श्री ज्ञानदास महाराजोऽकथयत् यत् विश्वाय भगवतः ऋषभदेवस्य यत् महत् योगदानमस्ति, तत् अन्यस्य कस्यापि नास्ति।

पधारीं। पूज्य ज्ञानमती माताजी एवं संघस्थ साधुओं का वहाँ के आचार्यवर्ग एवं वेदपाठी विद्यार्थियों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारपूर्वक पुष्पवृष्टि करते हुए भावभीना सम्मान किया गया।

25 मार्च को तुलसी स्मारक भवन (अयोध्या) के प्रमुख अधिकारी, दिगम्बर अखाड़ा-अयोध्या (पूर्व महंत-स्व. श्री परमहंस रामचन्द्र दास जी महाराज) के वर्तमान महंत श्री सुरेशदास जी महाराज, जगद्गुरु रामानंदाचार्य, स्वामी श्री हर्याचार्य जी महाराज एवं पीठाधीश्वर महंत श्री कौशलकिशोर दास जी महाराज (बड़ा भक्तमाल) ने अपने-अपने यहाँ पूज्य माताजी (ससंघ) का स्वागत किया। सभी ने पूज्य माताजी को अपना साहित्य भी प्रदान किया।

27 मार्च को सुग्रीव किला में जगत्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज के नेतृत्व में वहाँ के विद्यार्थियों ने वैदिक ऋचाएँ पढ़ते हुए पुष्पवृष्टि करके संघ का भावभीना स्वागत किया।

28 मार्च को प्रातःकाल रामजन्मभूमि के परिदर्शन के पश्चात् सी.आर.पी.एफ. (महिला विंग)-कटरा, काकभुशुण्ड मंदिर, रत्नसिंहासन (महंत अरुणदास एवं देवकीनंदन दास), कनकभवन, बड़ा स्थान (दशरथ राजगद्दी) इत्यादि स्थानों पर संघ का सम्मान किया गया।

इसी दिन सायंकाल हनुमानगढ़ी में गद्दीनशीन श्री रमेशदास जी महाराज एवं अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत श्री ज्ञानदास जी महाराज की उपस्थिति में पूज्य माताजी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री ज्ञानदास जी महाराज ने कहा कि विश्व के लिए भगवान ऋषभदेव का जितना बड़ा योगदान है, उतना किसी अन्य का नहीं है।

31 मार्च **दिनांके सांयकाले अयोध्या नरेशः श्री विमलेन्द्रमोहनः प्रतापमिश्रः (पप्पू भैया) स्व विशाले राजभवने स्व परिवारेण सह पूज्यायाः मातुः संघस्य भावसिक्तं स्वागतमकरोत्। चरण प्रक्षालनस्य आरतिकायाश्च पश्चात् संघस्थानां साधूनां प्रवचनानां लाभमपि अगृह्णात्।**

अयोध्यायाः महामस्तकाभिषेकः एकादशवर्षाणां पूर्वस्य स्मृतिं जाग्रतामकरोत्–**1993 वर्षे यदा पूज्यायाः मातुः अयोध्यायां पञ्चाशत् वर्षेषु प्रथमश्चतुर्मासोऽभवत्, तस्मिन् समये फरवरी 1994 मासे सम्पन्नेः उत्तर भारतस्य प्रथमो महामस्तकाभिषेक सम्पूर्णस्य भारतस्य जनान् भक्तिरागेण रंजितामकरोत्। तस्मिन् समये पूज्या माता अभिषेकं विधातुं प्रेरणामदात्। तत्र पदाधिकारिभ्यः प्रतिपंचवर्षं महामस्तकाभिषेकं विधातुं प्रेरणामदात् परन्तु न जानामि, नैकबारं किन्तु अनेकबारं महामस्तकाभिषेकस्य चर्चा श्रवणगोचराभवत् किन्तु महामस्तकाभिषेकस्य योगः कार्यरूपेण परिणतो नाभूत्। स्यात् सः आदिप्रभुः स्वब्राह्मीसदृश्याः पुत्र्याः एव प्रतीक्षायामासीत्। तदैव तु पूज्या माता पुनः अयोध्यायां आदिप्रभोरभिषेकं कारयितुं अवधप्रान्तमागच्छत्। पश्यन् पश्यन्नेव न केवलमवधप्रान्ते अपितु सम्पूर्णे भारते एकबारं पुनः शंखनादोऽभवत् यतः ज्ञानमती मात्रा अध्योध्यायां प्रभोः महामस्तकाभिषेक विधातुम् प्रेरणामदत्ता। देशस्य श्रद्धालुवर्गः पुनः भक्तेः रागेरंजितोऽभवत्। सर्वा व केसरीवर्ण होलिका क्रीडिता भवत्। उत्पतिताभवत् प्रवाहिता चाभवत् सर्वत्र प्रभुनाम्नः सुरभिः। वस्तुतोऽयोध्यायाः महामस्तकाभिषेकः 11 वर्षाणां पूर्वस्य स्मृतिमकारयत्।**

---

31 मार्च को सायंकाल अयोध्या नरेश श्री विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र (पप्पू भैय्या) ने अपने विशाल राजमहल में अपने परिवार के साथ पूज्य माताजी एवं संघ का भावभीना स्वागत किया। चरण प्रक्षालन एवं आरती के पश्चात् संघस्थ साधुओं के प्रवचनों का लाभ सभी को प्राप्त हुआ।

➢अयोध्या के महामस्तकाभिषेक ने 11 वर्ष पूर्व की याद दिला दी–

सन् 1993 में जब पूज्य माताजी का अयोध्या में 50 वर्षों में प्रथम चातुर्मास हुआ था, उस समय फरवरी 1994 में हुए अद्वितीय उत्तरभारत के प्रथम महामस्तकाभिषेक ने पूरे देशवासियों को भक्ति के रंग में रंग दिया था, उस समय पूज्य माताजी ने वहाँ के पदाधिकारियों को प्रति पाँच वर्षों में महामस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा प्रदान की थी परन्तु पता नहीं क्या योग रहा कि एक नहीं कई-कई बार मस्तकाभिषेक के आयोजन की चर्चा होने के बाद वह मूर्त रूप में परिणत नहीं हो सका, शायद उन आदिप्रभू को अपनी ब्राह्मी सदृश पुत्री का ही इंतजार था, तभी तो पूज्य माताजी पुनः अयोध्या में महामस्तकाभिषेक कराने के लक्ष्य से ही अवध प्रांत में पधारीं और देखते ही देखते एक बार फिर पूरे अवध क्या पूरे देश में एक शंखनाद हो उठा क्योंकि पूज्य ज्ञानमती माताजी ने प्रभु ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा प्रदान की और पुनः देश का श्रद्धालु वर्ग रंग गया भक्ति के रंग में, खेलने लगा केशरिया होली, उड़ चली सर्वत्र प्रभु नाम व जन्मभूमि की सुगंधि। सचमुच अयोध्या के द्वितीय मस्तकाभिषेक ने 11 वर्ष पूर्व की याद दिला दी।

कोटिभक्ताः आस्था दूरदर्शने महामस्तकाभिषेकमपश्यन्–**अस्य द्वितीय महाकुम्भमस्तकाभिषेकस्य महोत्सवस्य त्रिदिवसीये आयोजने यत्र देशस्य विविधभागानां भक्ताः अयोध्यायामागच्छन् भागं च गृहीत्वा महान्तं पुण्योपार्जनमकुर्वन् तत्रैव चैत्र कृष्ण नवम्यां ऋषभजयन्ती, 3 अप्रैल 2005 दिने भगवतः वृषभदेवस्य महाकुम्भ मस्तकाभिषेकस्य सम्पूर्णे देशे विदेशेषु च आस्था दूरदर्शने साक्षात् प्रसारणमवलोक्य भगवतोऽभिषेक धारासु सिक्तो जनसमूहोऽत्यन्तमेव प्रफुल्लितोऽभवत्। महामस्तकाभिषेकस्य मध्ये दूरभाषेसु देश–विदेशेभ्यः प्राप्तैः सहस्राधिकैः सन्देशैः जनानां अपारस्या प्रसन्नतायाः पूज्यायाः मातुश्चरणयो ज्ञापितायाः विनम्र कृज्ञतायाः वातावरणमेव किञ्चित् प्रथगेवासीत्। देशस्य सुदूरवर्तिनः प्रान्तादतिरिक्तं अमेरिका–कनाडा–नेपाल–सिंगापुर–केन्या–मॉरिशस इत्यादिकैः स्थानैरपि वर्धापना–सन्देशाः प्राप्ताः अभवन्।**

1 अप्रैलतः 3 अप्रैल 2005 पर्यन्तं आयोजितस्यास्य त्रिदिवसीयस्य ''श्री वृषभदेव–महाकुम्भमहामस्तकाभिषेकस्य'' **शुभारंभः 1 अप्रैल दिने श्री धन्नालाल मोहनलालोऽजित कुमारो जैनः अजमेरा (धूलियान प. बंगालस्य) आदिभिः कृतेन झण्डारोहणेनाभूत्। पुनः मन्दिर परिसरे निर्मिते विशाल पाण्डाले समये समये भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणस्य तृतीय सहस्राब्दि सम्मेलनानां शृखलायां तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघस्य राष्ट्रीय–मधिवेशनं, अखिलभारतीयदिगम्बरजैनमहिलासंगठनस्य राष्ट्रीयमधिवेशनं, अखिलभारतीय–दिगम्बरजैनयुवापरिषदो राष्ट्रीयमधिवेशनं, भारतवर्षीय दिगम्बरजैनतीर्थक्षेत्रसमितेः साधारण**

➢आस्था चैनल पर देखा करोड़ों भक्तों ने मस्तकाभिषेक–

इस द्वितीय महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव के त्रिदिवसीय आयोजन में जहाँ देश के विविध अंचलों से अयोध्या पधारे हजारों श्रद्धालुओं ने भक्तिभावपूर्वक भाग लेकर महान पुण्योपार्जन किया, वहीं चैत्र कृ. नवमी भगवान ऋषभदेव जयन्ती, 3 अप्रैल 2005 को हुए भगवान ऋषभदेव के महाकुंभ मस्तकाभिषेक का सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में आस्था चैनल के माध्मय से सीधा प्रसारण देखकर भगवान की अभिषेक धाराओं में भीगा जनसमूह अत्यन्त प्रफुल्लित हो उठा। मस्तकाभिषेक के मध्य फोन पर देश-विदेश से प्राप्त हजारों संदेशों के माध्यम से लोगों की अपार खुशी एवं पूज्य माताजी के चरणों में ज्ञापित विनम्र कृतज्ञता का माहौल ही कुछ अलग था। देश के सुदूरवर्ती प्रान्तों के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, नेपाल, सिंगापुर, केन्या, मॉरिशस इत्यादि अनेक स्थानों से भी बधाई के संदेश प्राप्त होते रहे।

1 से 3 अप्रैल 2005 तक आयोजित इस त्रिदिवसीय **'भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव'** का शुभारंभ 1 अप्रैल को श्री धन्नालाल मोहनलाल अजित कुमार जैन अजमेरा (धूलियान-पं. बंगाल) के द्वारा झण्डारोहणपूर्वक हुआ पुनः मंदिर परिसर में निर्मित विशाल पाण्डाल में समय-समय पर भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि सम्मेलनों की श्रृंखला में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ का राष्ट्रीय अधिवेशन, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन,

सभा, दक्षिण भारत जैन सभायाः राष्ट्रीय सम्मेलनमादयः प्रमुखाः आसन्। येषु समागताः विद्वांसोऽनेक गण्या मान्या विशिष्टाः महानुभावाः स्व वक्तव्यानां माध्यमेन मुख्यरूपेण तीर्थंकराणां भगवतां गर्भ–जन्म–तपः केवलज्ञान निर्वाणैः पवित्रभूमीनां–गिरनार–सम्मेदशिखर–कुण्डलपुरदीनां–सुरक्षायाः भावनां व्यक्तामकुर्वन्। प्राणपणेन च तानि सुरक्षा प्रति समर्पिताः भवितुं वार्तामकथयन्। अस्य महोत्सवस्य मध्ये एव आचार्य श्री कुन्दकुन्देन रचिते नियमसार ग्रन्थे पूज्यया मात्रा ज्ञानमत्या लिखिते स्याद्वादचन्द्रिका टीका ग्रन्थे पं. शिवचरणलालो मैनपुरी निवासिना लिखिते शोधग्रन्थे अस्य ''नियमसार स्याद्वाद–चन्द्रिका अनुशीलनस्यापि'' विमोचनमभवत्।

अस्य महोत्सवस्य मध्ये विराजितानां शताधिक विदुषां अनेकगण्यमान्य महानुभावानां विभिन्नानां तीर्थक्षेत्रसमितीनां पदाधिकारिणा अतिरिक्तं समये–समये समागतेषु अतिथिगणेषु श्री शीतलसिंह (सम्पादकः जनमोर्चापत्रस्य) फैजाबादः माननीयः श्री राजेन्द्र प्रताप सिंहः जिलाध्यक्षः, महासचिवः श्री बीरूसिंहस्तिवारी, केन्द्रीयो गृहराज्यमंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवालः उत्तर प्रदेश समाज कल्याणमंत्री अवधेश प्रसादः, मध्यप्रदेशस्य पूर्व विधायकः श्री नेमिचन्द्रः पूर्व सांसदः श्री कल्लप्पा अवाडे, अध्यक्षः दक्षिण भारत जैन सभायाः, श्री कपूरचन्द्र घुवारा– पूर्वविधायकः–द्रोणगिरि–सिद्धक्षेत्राध्यक्षः, श्री मुन्नासिंहः चौहानः उत्तर प्रदेशस्य सिंचाई मंत्री, श्री अशोक सिंघलः अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष विश्वहिन्दूपरिषद्, नरेश कुमार

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की आमसभा, दक्षिण भारत जैन सभा का राष्ट्रीय सम्मेलन आदि प्रमुख रहे। जिसमें मुख्य रूप से पधारे विविध विद्वानों एवं अनेक गणमान्य विशिष्ट महानुभावों (तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष आदि) ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से मुख्यरूप से तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान एवं निर्वाण से पावन तीर्थभूमियों– गिरनार, सम्मेदशिखर, कुण्डलपुर आदि की सुरक्षा की भावना व्यक्त करते हुए प्राणप्रण से उसके प्रति समर्पित होने की बात की गई। इस महोत्सव के मध्य ही आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव द्वारा रचित नियमसार ग्रंथ पर पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित स्याद्वाद चन्द्रिका टीका ग्रंथ पर पं. शिवचरनलाल जैन-मैनपुरी द्वारा लिखित शोध ग्रंथ ''नियमसार स्याद्वादचन्द्रिका एक अनुशीलन'' का विमोचन भी हुआ।

इस महामहोत्सव के मध्य विराजित सैकड़ों विद्वानों, अनेक गणमान्य महानुभावों, विभिन्न तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों के अतिरिक्त समय-समय पर पधारे अतिथिगणों में श्री शीतल सिंह (संपादक-जनमोर्चा अखबार) फैजाबाद, माननीय श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह (जिलाध्यक्ष-कांग्रेस प्रदेश) महासचिव श्री वीरु सिंह तिवारी, केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री-श्री श्रीप्रकाश जायसवाल, उत्तरप्रदेश समाजकल्याण मंत्री श्री अवधेश प्रसाद जी, श्री नेमिचंद जैन (पूर्व विधायक-म.प्र.), पूर्व सांसद श्री कल्लप्पा अवाड़े (अध्यक्ष-दक्षिण भारत जैन सभा), पूर्व विधायक श्री कपूरचंद घुवारा (द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र अध्यक्ष), श्री मुन्ना सिंह चौहान (सिंचाई मंत्री-उ.प्र.),श्री अशोक सिंघल (अंतर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-विश्व हिन्दू परिषद), श्री नरेश कुमार

सेठी अध्यक्षः भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र समितिः अपि कार्यक्रमस्य गरिम्णि चत्वारश्चन्द्रः संयोजितान कुर्वन्। पूज्यायाः मातुश्चाशीर्वादं प्राप्य नूतनदिशा प्राप्तिमकुर्वन्।

जैन रामायणस्य विमोचनमभवत्–**श्रीमती त्रिशला जैना (ज्ञानमत्याः मातुः कनिष्ठा भगिनी) धर्मपत्नी श्री चन्द्रप्रकाशो जैन लखनऊ निवासी द्वारेण सरसपद्येषु लिखितस्य सुन्दरस्य पुस्तकस्य ''जैन रामायणस्य'' विमोचनं अयोध्यायां 12 फरवरी 2005 दिने गृहराज्यमंत्रिणः श्रीप्रकाश जायसवालस्य करकमलाभ्यां समाजकल्याण मंत्रिणः उत्तर प्रदेशस्य श्री अवधेश–प्रसादस्य सहयोगेन सानन्दं सम्पन्नमभवत्।**

ज्ञातव्यमस्ति यत् त्रिशला जैना 9–10 वर्षाणां लघुवयसि पूज्यायाः मातुः समीपं अष्टसहस्री, राजवार्तिकादीनां ग्रन्थानामध्ययनं कृत्वा शास्त्रिपरीक्षामुत्तीर्णामकरोत्। स्वतीक्ष्ण बुद्धेश्च कारणेन गृहस्थावस्थाया स्थित्वापि अनेकानि साहित्यिक लेखनानि करोति। तस्यामेव लेखन श्रृंखलायां जैनरामायणं एकं लोकप्रियं काव्यं सर्वैरेव पठनीयं वर्तते।

विभिन्नज्ञानकेन्द्रेषु ज्ञानामृतवर्षाभवत्–**पूज्याः मातुः अस्यायोध्याया प्रवासस्य मध्ये यत्र भक्तेर्विविधान्यायोजनानि सम्पन्नान्यभवन् तीर्थंकरचरणानामनेकवन्दनाः अभवन्। पूज्यायाः मातुः 53 तमं क्षुल्लिका दीक्षा दिनमायोजितं तत्रैव कामताप्रसाद सुन्दरलाल साकेत–स्नातकोत्तरमहाविद्यालये, महाराजा पब्लिक विद्यालये, महर्षि वेद विद्यापीठे डा. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालये, फैजाबादनगरे संम्भूतैः मातुः मंगलप्रवचनैः अयोध्यायाः प्रबुद्धवर्गो**

सेठी (अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी) ने कार्यक्रम की गरिमा में चार चांद लगाए तथा पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त कर नूतन दिशा की प्राप्ति की।

➢जैन रामायण का विमोचन हुआ–

श्रीमती त्रिशला जैन (ज्ञानमती माताजी की सबसे छोटी बहन) ध.प. श्री चन्द्रप्रकाश जैन-लखनऊ द्वारा सरस काव्यों में लिखित ''जैन रामायण'' नामक सुन्दर पुस्तक का विमोचन अयोध्या में 12 फरवरी 2005 को केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री माननीय श्री श्रीप्रकाश जायसवाल के करकमलों से एवं समाज कल्याण मंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार माननीय श्री अवधेश प्रसाद के सहयोग से सानंद सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि त्रिशला ने 9-10 वर्ष की छोटी सी उम्र में पूज्य माताजी के पास अष्टसहस्री, राजवार्तिक आदि विषयों का अध्ययन करके शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की एवं अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के कारण गृहस्थावस्था में रहकर भी अनेक साहित्यिक लेखन किया करती हैं। उसी लेखन श्रृँखला में ''जैन रामायण'' एक लोकप्रिय काव्यकथा सभी के लिए पठनीय पुस्तक है।

➢विभिन्न ज्ञान के केन्द्रों में हुई ज्ञानामृत वर्षा–

पूज्य माताजी के इस अयोध्या प्रवास के मध्य जहाँ समय-समय पर भक्ति के विविध आयोजन सम्पन्न हुए, टोंकों की अनेक वंदनाएं हुईं, पूज्य माताजी का 53वाँ क्षुल्लिका दीक्षा दिवस मनाया गया, वहीं कामताप्रसाद सुन्दरलाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महाराजा पब्लिक स्कूल, महर्षि वेद विद्यापीठ एवं डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद में हुए पूज्य

महान्तं लाभं प्राप्नुवन्। ब्रह्मचारिणा रवीन्द्रेण विश्वविद्यालयस्य केन्द्रीय पुस्तकालयाय ऋषभदेव विद्यापीठाय च मात्रा लिखितं साहित्यमुपहृतम्।

अनेन सहैव अयोध्या नरेशस्य श्री विमलेन्द्र मोहनप्रतापसिंहेन तत्परिवारेण च स्थापिते महाराजापब्लिकविद्यालये मातुः पावनया प्रेरणया वृषभदेव पुस्तकालयस्योद्घाटनं मातुरेव संघसान्निध्येऽभवत्। मात्रा सह मिलित्वा राजात्यधिकः प्रसन्नोऽभवत्। कतिचिच्च दिशानिर्देशान् प्राप्नोत्। पुस्कालयस्योद्घाटनावसरे माता तं ''अयोध्या गौरव'' **इति उपाधिना अलंकृतमकरोत्।**

भारतभूषणस्योपाधिना समलंकृता–**विंशति शताब्द्याः बालब्रह्मचारिणीं ज्ञानमतीं टिकैतनगरस्य या भूमिः स्व गर्भेण प्रसूतामकरोत् विशल्या सदृशी तां मातरं प्रति बाल–बालेभ्य इयं गौरवस्य वार्तास्ति सः निधिश्चाद्य तेषां टिकैतनगरवासिनां मानं उच्चतम सीमायां प्रतिष्ठितां कुर्वन्ती राष्ट्रस्य किं सम्पूर्ण विश्वस्य गरिमाऽस्ति, एतस्यामेव प्रसन्नतायां टिकैतनगरस्य प्रतिकणं प्रफुल्लितं भूत्वा स्वात्मनि न तिष्ठति, नागरिकाभिनन्दनस्य चावसरे तां** ''भारतभूषणमित्युपाधिना'' **समलंकृतां कृत्वा स्वात्मानं गौरवान्वितमनुभवति वस्तुतः एवंविधेः निधेर्जन्मदात्री टिकैतनगरस्य भूमिः सदैव कालाय कृतकृत्याभवत्।**

एकोमुस्लिमभ्राताऽकथयत्–**मातुः टिकैतनगरात् विहारात् पश्चात् तत्र युवाकर्तारः समागत्य**

माताजी के मंगल प्रवचनों से अयोध्या के प्रबुद्ध वर्ग को अपूर्व लाभ मिला। संघस्थ ब्र.रवीन्द्र जी द्वारा विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय एवं ''ऋषभदेव जैन पीठ'' हेतु पूज्य माताजी द्वारा लिखित साहित्य प्रदान किया गया।

इसके साथ ही अयोध्या नरेश श्री विमलेन्द्र मोहन प्रताप मिश्र एवं परिवार द्वारा स्थापित महाराजा पब्लिक स्कूल में माताजी की पावन प्रेरणा से ऋषभदेव पुस्तकालय का उद्घाटन माताजी के ही संघ सानिध्य में हुआ। पूज्य माताजी से मिलकर राजा साहब अत्यधिक प्रसन्न हुए और कई दिशा-निर्देश प्राप्त किए। पुस्तकालय के उद्घाटन अवसर पर माताजी ने उन्हें **''अयोध्या गौरव''** की उपाधि से विभूषित किया ।

➢''भारत भूषण'' की उपाधि से अलंकृत–

बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी माता ज्ञानमती जी को टिकैतनगर की जिस भूमि ने अपने गर्भ से प्रसूत किया है, विशल्या सदृश उन माता के प्रति बच्चे-बच्चे के लिए यह महानतम गौरव की बात है। वह निधि आज उन टिकैतनगर वासियों के मान को उच्चतम सीमा तक वृद्धिंगत करते हुए राष्ट्र क्या पूरे विश्व की गौरव हैं, इस खुशी में टिकैतनगर का चप्पा-चप्पा फूला नहीं समाया और नागरिक अभिनंदन के अवसर पर उन्हें **''भारतभूषण''** की उपाधि से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभूत किया। वास्तव में ऐसी महान निधि की जन्मदात्री टिकैतनगर की धरती सदैव-सदैव के लिए कृतकृत्य हो गई है।

➢एक मुस्लिम भाई ने बताया–

माताजी के टिकैतनगर से विहार के पश्चात् वहाँ के युवा कार्यकर्ता आकर संघ के साथ

संघेन सह पदैरेवाचलन्। अस्यैव मध्ये एकस्मिन् दिने एको बालोऽकथयत् यत् मातः। अहं ज्ञानमत्याः मातुः महाप्रभावमपश्यम्। अहं मुरादाबाद नगरे लक्षैकरूप्यकाणि गृहीत्वा रजतपात्राणि क्रेतुमगच्छम्। एकस्मात् जैनस्य विपणेरहं लक्षाधिक रुप्यकाणां पात्राणि अक्रीणम्। अहं तमकथयं यत् पञ्चविंशति सहस्राणि रूप्यकाणि मम समीपे न सन्ति। अतः त्वं सर्वाणि पात्राणि प्रतिग्रहाण। तदा सः जैनः एतत् ज्ञात्वा यदहं टिकैतनगरात् समायातोऽस्मि सः अकथयत् यत् भ्रातः! त्वं सर्वाण्येव पात्राणि गृहीत्वा गच्छ, त्वं ज्ञानमत्याः ग्रामात् आगतोऽसि तस्य स्थानस्य कोऽपि जनोऽसत्यं भाषितुं न शक्नोति। तदाहमन्वभम् यत् एतस्याः ज्ञानमत्याः मातुः सहैव तत्र नगरवासिनः प्रति अपि कीदृशो विश्वास श्रद्धा चास्ति।

महमूदाबादे आयोजितं 50 तमं आर्यिका दीक्षादिनम्–**अवधप्रान्तस्य गौरवपूर्णमैतिहासिकं नगरं महमूदाबादः तस्य भवनस्य मूलमिव वृक्षः इव चास्ति, यत्र जाता मोहिनी कन्या टिकैतनगरस्य श्रेष्ठिनः श्री छोटे लालस्य धर्मपत्नी भूत्वा संस्काराणां यदुपवनं संचितमकरोत् तस्मिन् सुरभितेनानेन पुष्पेण सम्पूर्णः संसारः सुरभितोऽभवत्। पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः गृहस्थावस्थायाः माता मोहिनी देवी, या अन्तकाले आर्यिका माता रत्नमती अभवत्, तस्याः जन्मभूमेः कारणात् इदं नगरं मातुः मातामह–नगरमस्ति। मातामहनगरस्य वासिनां च स्व नप्तारं नात्रीं च भागिनेयान् प्रति विशेषं वात्सल्यं भवत्येव। पुनः तन्नगरं एवंभूतायाः जगन्मातु**

पैदल चलते थे। इसी मध्य एक दिन एक बच्चे ने बताया कि माताजी! 8 दिन पूर्व मेरी दुकान पर एक मुसलमान ग्राहक आया और पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का पोस्टर देखकर कहने लगा कि भैय्या! मैंने इन ज्ञानमती माताजी का बड़ा प्रभाव देखा है। मैं मुरादाबाद 1 लाख रुपये लेकर चांदी के बर्तन खरीदने गया था। एक जैन की दुकान पर मैंने सवा लाख रुपये के बर्तन खरीद लिए, फिर मैंने उनसे कहा कि 25 हजार रुपये मेरे पास नहीं हैं अतः तुम बर्तन वापस ले लो, तब उस जैन ने यह जानकर कि मैं टिकैतनगर से आया हूँ, बोले–अरे भैय्या! तुम सभी बर्तन ले जाओ, तुम ज्ञानमती माताजी के गाँव से आए हो, वहाँ का कोई व्यक्ति झूठ नहीं बोल सकता है। तब मुझे लगा कि इनकी ज्ञानमती माताजी के साथ-साथ उनके नगरवासियों के प्रति भी कितनी श्रद्धा और विश्वास है।

➢महमूदाबाद में मना 50वाँ आर्यिका दीक्षा दिवस-

अवध प्रांत का गौरवपूर्ण ऐतिहासिक नगर महमूदाबाद उस मकान की नींव अथवा वृक्ष के मूल की भांति है, जहाँ जन्मी मोहिनी कन्या ने टिकैतनगर के श्रेष्ठी छोटेलाल जी की धर्मपत्नी बनकर संस्कारों का जो उपवन सजाया, उसमें सुरभित एक पुष्प से ही सारा संसार महक उठा। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की गृहस्थावस्था की माता मोहिनी देवी, जो बाद में आर्यिका रत्नमती माताजी बनीं, उनकी जन्मभूमि होने से यह माताजी की ननिहाल है और ननिहाल वालों का यूँ ही अपने नाती-नातिन, भानजे-भानजी के प्रति विशेष वात्सल्य रहता है, फिर ऐसी जगन्माता

र्मातामह–नगरं भवतु, या विश्वे धर्म–निनादं कर्तुं रता विद्यते, यस्याश्च गौरवं स्व चरममर्यादायामस्ति, तस्या विशंतिशताब्द्याः प्रथमबालब्रह्मचारिण्याः समाजस्य च सर्वोच्चसाध्व्याः गणिनीप्रमुखायाः श्री ज्ञानमत्याः मातुः 50 तमः आर्यिका दीक्षासमारोहं आयोजयितुं सौभाग्य महमूदाबादनगरी प्राप्नोत्। सा तत्र निवासिभ्यः महतः गौरवस्य वार्तात्वस्त्येव। समीपस्थे एव नगरे तहसील–फतेहपुरे महावीरजयन्त्याः आयोजनस्य पश्चात् माताश्रीः महमूदाबाद नगरं समागच्छत् वैशाखकृष्ण द्वितीयायां च 26 अप्रैल 2005 दिने सर्वप्रथमं प्रातःकाले भगवतः पार्श्वनाथस्य गर्भकल्याणकस्यावसरे भगवतः पार्श्वनाथस्य रथयात्रा निर्गताभवत्। मध्याह्ने च 2 वादनसमयात् विशला धर्मसभायाः आयोजनमभवत्। यस्यां उत्तरप्रदेशस्य परिवहनमंत्री श्री नरेश अग्रवालो मुख्यातिथिः जिलापंचायत अध्यक्षश्च श्री महेन्द्रसिंहो वर्मा, विधायकः श्री नरेन्द्र सिंहो वर्मा विशिष्टातिथिरूपेणोपस्थिताः अभवन्। समारोहे ते च विशिष्टाः महानुभावाः मातरं प्रति स्वविनयांजलिं समर्पयन्। मात्रे च पिच्छिका कमण्डलु शास्त्रं च समर्प्य स्वात्मानं धन्यान् अमन्यन्त्।

अहिच्छत्रे भगवतः पार्श्वनाथस्य महामस्तकाभिषेकः–**पूज्या माता वयं च सर्वे महमूदावादात् सीतापुर–शाहजहांपुर बरेली चादि स्थानेषु विहरन्त्यः 10 मई 2005, वैशाख शुक्ला द्वितीयाः दिने भगवतः पार्श्वनाथस्य केवलज्ञानस्योपसर्गविजयभूमौ च अहिच्छत्रं तीर्थमागच्छाम।**

अस्मिन्नेवाहिच्छत्रे तीर्थे 1993 वर्षेऽयोध्यां प्रति मंगलविहारसमये यदा मातुः

की वह ननिहाल हो, जो विश्व में धर्म का डंका बजा रही हैं तथा जिनका गौरव अपनी चरम सीमा पर हो! उन बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 50वाँ आर्यिका दीक्षा समारोह मनाने का सौभाग्य महमूदाबाद नगरी को प्राप्त होना ही उनके लिए भारी गौरव की बात थी। पास के ही नगर तहसील फतेहपुर में महावीर जयंती महोत्सव करने के पश्चात् माताजी महमूदाबाद पधारीं और वैशाख कृष्णा द्वितीया, 26 अप्रैल 2005 को सर्वप्रथम प्रातःकाल भगवान पार्श्वनाथ गर्भकल्याणक के उपलक्ष्य में पार्श्वनाथ की रथयात्रा निकाली गई एवं मध्यान्ह 2 बजे से विशाल धर्मसभा आयोजित की गई, जिसमें उ.प्र. सरकार के परिवहन मंत्री श्री नरेश अग्रवाल मुख्य अतिथि एवं जिला पंचायत अध्यक्ष-श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, विधायक श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। समारोह में अनेक गणमान्य महानुभावों ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित की एवं पूज्य माताजी को पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र आदि समर्पित कर अपना अहोभाग्य माना।

➢अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ मस्तकाभिषेक महोत्सव–

पूज्य माताजी एवं हम सभी लोग महमूदाबाद से सीतापुर, शाहजहांपुर, बरेली आदि स्थानों पर होते हुए 10 मई 2005, वैशाख शु. 2 को भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान एवं उपसर्ग विजय भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर पहुँचे।

इसी अहिच्छत्र तीर्थ पर सन् 1993 में अयोध्या की ओर मंगल विहार करते समय जब

पदार्पणमभवत् सा तत्र पदाधिकारिभ्य त्रिंशत्चतुर्विंशति मन्दिरस्य निर्माणस्य प्रेरणामदात्। अद्य च 15 वर्षाणां पश्चात् अहिच्छत्रतीर्थे पदार्पणमभवत्, तु सर्वेषां जिनमन्दिराणां दर्शनेन सह नवनिर्मितस्य 11 शिखरयुक्तस्य त्रिंशत्चतुर्विंशति मन्दिरस्य दर्शनं विधाय मनः प्रफुल्लितमभवत्। यतो हि मातुः प्रेरणया सम्पूर्णे भारतवर्षे ''भगवतः पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकतृतीयसहस्राब्दिमहोत्सवः'' **विविधानामायोजनानां माध्यमेनायोजितो भवति, अतस्तत्रापि तिखालवाले बाबा इति ख्यातस्य मूलनायकस्य भगवतः पार्श्वनाथस्य महामस्तकाभिषेकमहोत्सवः भगवतः पार्श्वनाथस्य रथयात्रायाः विशेषमायोजनं 15 मई 2005 दिने सहस्राधिक श्रद्धालूनां समूहे हर्षोल्लासस्य भक्तिपूर्णस्य च वातावरणे सम्पन्नमभवत्। अत्र तिखाल वाले बाबा इत्यस्य मूर्तिरति प्राचीना विद्यते। कथ्यते यत् भगवतः पार्श्वनाथस्योपरि उपसर्गस्य पश्चात् देवैर्विराजमाना कृतेयं प्रतिमास्ति। अस्यां वेदिकायाः अधः एक विलं निर्मितमस्ति। प्रतिदिनं च एकस्मिन् कटोरापात्रे च दुग्धं निधीयते। तत्र प्रबन्धकः आनन्द–जैनोऽकथयत् यत् विलेऽस्मिन्नेकः सर्पस्तिष्ठति यः प्रायः आगत्यान्येषां हानिं विनैव दुग्धं पीत्वा गमनं करोति।**

त्रिंशत्चतुर्विंशति मन्दिरे विराजमानस्य भगवतः पार्श्वनाथस्यावगाहना प्रमाणस्याः प्रतिमायाः महामस्तकाभिषेककाले माता सर्वानेव पदाधिकारिणः अहिच्छत्रे प्रतिवर्षं ईदृशमेव महामस्तकाभिषेकं कर्तुं प्रेरणामदात्। सायंकाले मन्दिरे विराजमानायाः भगवतः पार्श्वनाथस्य

माताजी का मंगल पदार्पण हुआ था, उस समय उन्होंने वहाँ के कार्यकर्ताओं को तीस चौबीसी मंदिर निर्माण की प्रेरणा प्रदान की थी और आज जब 15 वर्षों बाद अहिच्छत्र तीर्थ पर आना हुआ, तो सभी जिनमंदिरों के दर्शन के साथ-साथ नवनिर्मित 11 शिखर वाले तीस चौबीसी मंदिर के दर्शन कर मन आल्हादित हो उठा। चूंकि माताजी की प्रेरणा से सम्पूर्ण भारतवर्ष में **''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव''** विविध आयोजनों के माध्यम से मनाया जा रहा था अतः वहाँ भी तिखाल वाले बाबा मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं भगवान पार्श्वनाथ रथयात्रा का विशाल आयोजन 15 मई 2005 को हजारों श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के मध्य हर्षोल्लासपूर्ण और भक्तिमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यहाँ तिखाल वाले बाबा की मूर्ति अति प्राचीन है। कहा जाता है कि भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर उपसर्ग के पश्चात् देवों द्वारा विराजमान की गई यह प्रतिमा है। इसमें वेदी के नीचे एक बिल बना हुआ है तथा एक कटोरे में प्रतिदिन दूध रखा जाता है, वहाँ के मैनेजर आनंद जैन ने बताया कि इस बिल में एक सर्प रहता है, जो अक्सर आकर बिना किसी को नुकसान पहुँचाए वहाँ दूध पीकर चला जाता है।

तीस चौबीसी मंदिर में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की अवगाहना प्रमाण प्रतिमा के महामस्तकाभिषेक के समय माताजी ने सभी पदाधिकारियों को अहिच्छत्र में प्रतिवर्ष ऐसा ही विशाल मस्तकाभिषेक करने की प्रेरणा प्रदान की। सायंकाल मंदिर जी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की

प्राचीनप्रतिमायाः 1008 दीपकै महारतिका संपन्नाभवत्।

अहिच्छत्रस्य प्रवासस्य मध्ये पूज्यायाः मातुः प्रेरणया सान्निध्ये च क्रमशः ''भगवतः पार्श्वनाथस्य समवसरण विधानं'' ''अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधानं'' ''जम्बूद्वीपविधानं'' ''त्रिंशत चतुर्विंशति विधानं'' ''कलिकुण्डपार्श्वनाथ विधानं'' **च इत्यादीनि विधानानि संपन्नान्यभवन्। मातुः पद्मावत्याश्च 1008 मंत्रैर्महाराधना च संपन्ना अभवत्।**

जम्बूद्वीपहस्तिनापुरेऽभवत् मंगलं पदार्पणम्–**अहिच्छत्रात् तीर्थात् मंगलं विहारं कृत्वा पूज्यायाः मातुः संघेन सह शाहबाद–धरमपुरकलां–जलालपुर–अमरोहा–मुरादाबाद–धनौरामण्डी आदिषु स्थानेषु विहारो भूत्वा 25 मई 2005 ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीयायां 5 वर्षाणि पश्चात् जम्बूद्वीपहस्तिनापुरे मंगलपदार्पणमभवत्।**

एकदा पुनः उपस्थिता अस्वस्थतायाः विषमा परिस्थितिः–**मार्गेऽत्यधिकस्य ग्रीष्मकारणेन मुरादाबादस्य पश्चात् 20 मई 2005, दिने वैशाख शुक्लैकादश्याः रात्रौ पूज्या माता ज्वरेण पीडिता अभवत्। 21 तिथौ वयं धनौरामण्डी स्थाने समागच्छाम। अत्र वयं त्रिदिनपर्यन्तमस्मात् कारणादतिष्ठाम यत् स्यान्मातुः ज्वरः शान्तो भविष्यति। सा च कस्मिन्चित् सुखे स्थास्यति। परन्तु ज्वरस्तु गमनस्य स्थाने वृद्धिमेव प्राप्नोत्। मेरठ नगरात् हकीमः सैफुद्दीनः महावीप्रसादो जैनश्चागतौ। तौ मातरं दृष्ट्वा निर्णयोऽयं गृहीतवन्तौ यत् अत्यधिकस्य ग्रीस्मस्य कारणेन शरीरे जलस्याभावोऽभवत्। अस्मादेव संक्रमणात् ज्वरः**

प्राचीन प्रतिमा की 1008 दीपकों से महाआरती हुई।

अहिच्छत्र प्रवास के मध्य पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं सानिध्य में 10 मई से क्रमशः **''भगवान पार्श्वनाथ समवसरण विधान'' ,''अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान'', ''जम्बूद्वीप विधान'', ''तीस चौबीसी विधान'', ''कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान''** इत्यादि सम्पन्न किए गए तथा माता पद्मावती की 1008 मंत्रों से महाआराधना सम्पन्न की गई।

➢जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में हुआ मंगल पदार्पण–

अहिच्छत्र तीर्थ से मंगल विहार कर पूज्य माताजी का संघ सहित शाहबाद, धरमपुरकलाँ, जलालपुर, अमरोहा, मुरादाबाद, धनौरामण्डी आदि स्थानों पर होते हुए 25 मई 2005, ज्येष्ठ कृ. दूज को 5 वर्षों के बाद जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ।

➢एक बार फिर से आई अस्वस्थता की विषम परिस्थिति–

मार्ग में अत्यधिक गर्मी के कारण मुरादाबाद के बाद 20 मई 2005, वैशाख शु. 11 की रात्रि से पूज्य माताजी को ज्वर आना प्रारंभ हो गया था। 21 तारीख को हम लोग धनौरामण्डी पहुँचे, यहाँ इसीलिए तीन दिन रुके कि हो सकता है, माताजी का बुखार उतर जाये और उनको कुछ आराम मिल जाये लेकिन बुखार था कि उतरने की बजाय बढ़ता ही चला जा रहा था। मेरठ से हकीम सैफुद्दीन एवं वैद्य महावीर प्रसाद जैन को बुलाया गया। उन लोगों ने माताजी को देखकर यह निर्णय दिया कि अत्यधिक गर्मी होने के कारण शरीर में पानी की कमी हो गई है, उसी इन्फेक्शन

आगच्छत्। यावत् पर्यन्तं संक्रमणं दूरी न भविष्यति तावत्पर्यन्तं ज्वरो न नक्ष्यति। परन्तु दृढ़संकल्पयुक्ता माता कामप्योषधिं गृहीतुं तत्परा नाभवत्। तस्मिन् समये दिल्ली नगरात् लाला महावीर प्रसादः संघपतिः कमलचन्द्रः खारी बावली–दिल्लीतः आगत्यातिष्ठताम्। माता च सर्वेषां कथनस्य पश्चादपि गन्तुं तत्परासीत्।

24 मई ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदायाः रात्रौ 12 वादन पर्यन्तं तीव्रो ज्वरः आसीत्। परन्तु 25 मई दिने प्रातः 4.30 वादनसमये माताकथयत् यत् अद्याहं अस्मात् स्थानात् विहारं करिष्यामि। ततश्च संयोगात् तत्कालपर्यन्तं ज्वरोऽपि मन्दोऽभवत्। माता च घनौरामण्डी स्थानात् हस्तिनापुरं प्रति विहारमकरोत्। अग्रिम दिने माता श्रीः पुनः ज्वरेण पीडिताभवत्। अस्यां च विषमायां परिस्थित्यां कोऽपि मातु विहारं नैच्छत्।

तत्कालमेव भ्राता रवीन्द्रः केषुचित् स्थानेषु मातुः ज्वरस्य सूचनामदात्। जनानां चागमनस्य क्रमः प्रारब्धोऽभवत्। जनाः अत्यधिकमाग्रहं कृत्वा मातरं गमनात् निवारयितुमैच्छन् परन्तु दृढ़ेच्छाशक्तियुक्ता माताकथयत् यत् अहं हस्तिनापुरं प्रति विहारमवश्यमेव करिष्यामि। संयोगवशात् माताश्रीः जम्बूद्वीपस्य पदाधिकारिभिः 25 मई दिनस्य प्रवेशस्य मुद्रितं पत्रमपश्यत्। अतोऽत्यन्तमेवाशक्तापि लघुभ्य मार्गेश्च दबईपुरात् गंगा सेतुमुत्तीर्य सा निश्चिततिथौ भगवतां शान्तिनाथकुन्थनाथ अरनाथानां जन्मभूमौ मंगल प्रवेशमकरोत्। अत्रागमनस्य पश्चादपि माताश्रीः ज्वराक्रान्त एवासीत्। परन्तु अस्यां पवित्रायां धरायामागत्य

से बुखार आ गया है, जब तक इन्फेक्शन दूर नहीं होगा, तब तक बुखार नहीं जायेगा लेकिन दृढ़संकल्पी माताजी ने कोई भी दवा लेने से इंकार कर दिया। उस समय दिल्ली से लाला महावीर प्रसाद जी संघपति और कमलचंद जी खारीबावली वाले आए हुए थे और वहीं ठहरे हुए थे। माताजी सबके समझाने के बाद भी विहार करना चाहती थीं।

24 मई, ज्येष्ठ कृ. एकम् की रात 12 बजे तक तेज बुखार रहा किन्तु 25 मई को प्रातः 4.30 बजे माताजी ने कहा कि मुझे आज यहाँ से विहार करना है और संयोग से तब तक बुखार उतर भी गया और माताजी ने धनौरामण्डी से हस्तिनापुर की ओर मंगल विहार कर दिया। अगले दिन माताजी को पुनः बुखार चढ़ गया, ऐसी विषम परिस्थिति में पूज्य माताजी को विहार कराना किसी को भी इष्ट नहीं था।

तुरंत ही भाई जी ने कई स्थानों पर पूज्य माताजी के बुखार की सूचना दे दी और लोगों के आने का क्रम प्रारंभ हो गया, लोगों ने बहुत ही आग्रह कर माताजी को रोकना चाहा, पर दृढ़ इच्छाशक्ति की धनी माताजी ने कहा कि मैं हस्तिनापुर की ओर विहार अवश्य करूँगी, संयोगवश माताजी ने जम्बूद्वीप के पदाधिकारियों द्वारा 25 मई के मंगल प्रवेश का पोस्टर भी देख लिया था अतः अत्यन्त अशक्तता होते हुए भी छोटे रास्ते दर्वड़पुर (गंगा पुल पार करके) से निश्चित तारीख में भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में मंगल प्रवेश किया, यहाँ आने के बाद भी माताजी को बुखार आता रहा किन्तु इस पवित्र धरा पर पहुँचकर उन्होंने महान

सा महतीमात्मिकशन्तिमन्वभवत्। यदा केनापि प्रकारेण ज्वरो मन्दो नाभवत् तु एकबारं पुनः जम्बूद्वीप हस्तिनापुरे हकीमः सैफुद्दीनः वैद्यादयश्च निर्णयमकुर्वन् यत् माता ज्वरेण पीडिता विद्यते। तदा सर्वे गम्भीरतया चिन्तिताः अभवन्। जना येन प्रकारेणापि सूचनां प्राप्नुवन् सर्वे दूरा, दूरा हकीम वैद्यान् आनीय तत्रागच्छन्। एतस्य मध्ये डा. पन्नालालः पापड़ीवालः पैठनः इन्दौरात् वायुयानेनैकं वैद्यं नीत्वा आगच्छत् परन्तु माताश्रीः दृढ़तया कस्यापि चिकित्सकस्य ओषधि गृहीतुं न्यषेधीत्। पुरातनस्य च वैद्यस्य सैफुद्दीनस्य मंत्रणानुसारेण चिरायतां नामकमोषधिं जले सिक्तां कृत्वा तस्य जलं प्रतिदिन मात्रे आहारे सर्वप्रथमं दत्तम्। अनेनैव 2–4 दिनेषु ज्वरस्तु शान्तोऽभवत् परन्तु शारीरिक अस्वस्थतया व्याकुलता विशेषाभवत्। आहारे केवलं जलं दुग्धं कौशातकी शाकस्य जल कासनी इत्यस्य बीजस्य शीतपान मेवागृहणात्। यदा च जनानामियमेव मान्यतासीत् यत् कश्चित् कठोरपदार्थाः मुंगस्य टालस्य खिचड़ी आदि पदार्थाः गन्तव्याः भवेयुः। किन्तु दिगम्बर जैनानां साधूनां चर्या तु आत्मबलेनैव संचलिता भवति।

4 जून दिनस्य चिन्तनीयरात्रिः–**4 जून 2005, ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदश्याः सायंकाले पूज्यामाता सम्यक् प्रकारेण सावधानतया वार्तालापमकरोत्। पुनः प्रतिक्रमणस्य पश्चात् अस्माभिः वन्दामि इत्युक्ते माता न किञ्चिदभाषत न च पिच्छिकायाः उत्थानमकरोत्, केवलमेकेन आसनेन अचेतना इव पतिता आसीत् येन रात्रौ सर्वे एव महाचिन्तिताः अभवन्। यं यं येन**

आत्मिक शांति का अनुभव किया, जब किसी भी प्रकार बुखार नहीं उतरा, तो एक बार पुनः जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में हकीम सैफुद्दीन एवं वैद्य आदि ने निर्णय दिया कि माताजी को टाइफाइड (मियादी) बुखार है, तब सबको गहन चिन्ता हो उठी और लोगों को जिस प्रकार से भी खबर मिली, दूर-दूर से लोग वैद्य, हकीमों को लेकर आने लगे, इसी बीच डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण इंदौर से प्लेन द्वारा एक वैद्य जी को लेकर आ गए लेकिन माताजी ने पुनः दृढ़तापूर्वक किसी भी वैद्य, हकीम की दवाई लेने से मना कर दिया और पुराने हकीम सैफुद्दीन की सलाह के अनुसार चिरायता भिगोकर उसका पानी प्रतिदिन पूज्य माताजी को आहार में सबसे पहले दिया जाने लगा, इससे 2-4 दिनों में बुखार तो उतर गया परन्तु शारीरिक अस्वस्थता से अशक्तता अत्यधिक रही। आहार में मात्र पानी, दूध, लौकी की सब्जी का पानी, कासनी के बीज की ठण्डाई ही जरा-जरा सी जा पाती थी जबकि लोगों का यही कहना था कि माताजी के पेट में कुछ ठोस पदार्थ (मूंग की दाल, खिचड़ी आदि) जाना चाहिए किन्तु दिगम्बर जैन साधुचर्या तो आत्मबल के आधार पर ही चलती है।

➢4 जून की चिंताजनक रात्रि–

4 जून 2005, ज्येष्ठ कृ. त्रयोदशी की शाम को प्रतिक्रमण तक पूज्य माताजी पूरी तरह से सावधानीपूर्वक बातचीत कर रही थीं पुनः प्रतिक्रमण के पश्चात् हम लोगों द्वारा वंदामि करने पर न माताजी कुछ बोलीं और न ही पिच्छी उठाई, केवल एक करवट से अचेत सदृश लेटी रहीं, जिससे रात्रि में सभी को बड़ी घबराहट रही, जिन-जिन को जिस-जिस प्रकार यह समाचार

प्रकारेण अयं समाचारः प्राप्तोऽभवत् ते सर्वे भक्ताः यस्यामवस्थायां स्थिताः आसन् तस्यामेवावस्थायां हस्तिनापुरमागच्छन्। यदपि साधनमुपलब्धमभवत् यादृशी अपि आपदः उपस्थिताः अभवन् सर्वाः सोढ्वा आगतानां यात्रिणां पंक्तिरिवाभवत्। तस्मिन् समये मातुः प्रकोष्ठे ब्र. रवीन्द्र, संघपतिः महावीरप्रसादः तस्य धर्मपत्नी श्रीमती कुसुमलता अनिलः राकेशः मनोजः सुनीलः मेरठ निवासी आदि भक्तिमन्तः श्रावकाः सम्पूर्णरात्रौ मात्रे पाठमश्रावयन्। अत्राहं त्यागिभवनस्य बहिः एकत्रितं जनसमूहं अनुशासितं कृत्वा तं समबोधयं यत् पश्यन्तु, अस्या 53 वर्षाणां तपस्यायां आकुलता न सर्जनीया अस्ति। तस्या बाधकाः न भूत्वा सर्वे जनाः मौनपूर्वकं दूरादेव दर्शनं कुर्वन्तु। टिकैतनगरादितः समागताः सर्वान् पारिवारिक जनानपि मातुः प्रकोष्ठे गन्तुं दृढतया एतेन् करणेन निषेधमकरवम् यदेतेषां मोहपूर्णव्यवहारेण मात्रे किमपि व्यवधानं न भवतु। यं सर्वे सहर्षं स्वीकृतवन्तः।

यतोऽहं काचिद्भ्यः रात्रिभ्यः शयनं नाकरवम् तस्यां रात्रौ तु शयनस्य प्रश्नः एव नासीत् अतोऽहमपि मातुः समीपं स्थित्वा पाठमपठम्। तस्मिन् समये सर्वे विशेषाग्रहेण मां रात्रौ 1.30 वादन समये अपि कस्मैचित् कालाय विश्रामं कर्तुं स्वयं च तत्रोपस्थातुं आश्वासनं अदुः। तदाहं संघस्य चैत्यालयस्य प्रकोष्ठमागत्य कस्मैचित् समयाय शयनाय तत्पराभवम्। प्रातः 3.30 वादनस्य वार्ता अस्ति, अहं द्विबारं उच्चध्वनिमश्रण्यवम्। चन्दनामति! चन्दनामति! उत्तिष्ठ! न जानामि कस्मात् स्थानात् ध्वनिरयमामितोऽभूत्। अहं तत्कालमेवोत्थाय मातुः समीपमगच्छम्।

मिला, वे सभी भक्त जिस अवस्था में बैठे थे, उस अवस्था में हस्तिनापुर के लिए रवाना हो गए, जो साधन मिला उसमें चाहे जैसी परेशानियाँ आईं, सबको झेलते हुए आने वाले यात्रियों का तांता सा लग गया। उस समय माताजी के कमरे में ब्र. रवीन्द्र जी, संघपति महावीर प्रसाद जी, उनकी धर्मपत्नी कुसुमलता जी, अनिल जी, राकेश जी, मनोज, सुनील सर्राफ-मेरठ आदि भक्तिमान श्रावक रातभर माताजी को पाठ सुनाते रहे, इधर मैंने त्यागी भवन के बाहर एकत्रित जनसमुदाय को अनुशासित कर उसे सम्बोधित किया कि देखो! इनकी 53 वर्ष की तपस्या में आकुलता पैदा नहीं करना है, उसमें बाधक न बनकर सब लोग दूर से मौनपूर्वक दर्शन करो.....इत्यादि। साथ ही टिकैतनगर आदि स्थानों से आए हुए सभी पारिवारिकजनों को भी माताजी के कमरे में जाने से सख्तीपूर्वक इसलिए मना किया कि इनके मोहपूर्ण व्यवहार से माताजी को कोई व्यवधान न हो, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

चूँकि कई रात्रि से मैं सोई नहीं थी और उस रात्रि तो नींद आने का प्रश्न ही नहीं था, अतः मैं भी माताजी के पास बैठी पाठ पढ़ रही थी, उस समय सभी ने विशेष आग्रह कर मुझे रात्रि 1.30 बजे थोड़ी देर विश्राम करने और स्वयं वहाँ उपस्थित रहने का आश्वासन दिया, उस समय मैं संघ के चैत्यालय वाले कमरे में आकर कुछ देर के लिए लेट गई, प्रातः 3.30 बजे की बात है, मुझे दो बार तेज-तेज आवाज सुनाई दी–चन्दनामती, चन्दनामती! उठो! न जाने कहाँ से यह

तां गणधरवलयं मंत्रं सुप्रभातस्तोत्रं च श्रावयित्वा उत्थातुमैच्छम् तथापि सा पाषाणवत् अभवत्। पुनः अहम् किञ्चित् उच्चस्वरेणाकथयं मातः! उत्थानं करोतु। प्रतिक्रमणं श्रावयतु। प्रतिक्रमणस्य समयोऽस्ति। तदा सा किञ्चित् चक्षू उन्मीलयित्वा उत्थाय मया सार्धं लघुशंकामगच्छत् अहम् शीघ्रतः तां लघुप्रकोषात् वृहत् सभाभवनमानयम्। तदैव सः समाचारः प्रसारयितुं विलम्बो न अभवत् सर्वेषां च मुखानां प्रसन्नतां वर्णयितुं वस्तुतः कठिनमस्ति। अस्यामवधौ भारतस्य प्रतिकोणं श्रद्धालवः मातुः स्वस्थतायाः कामनाः अकुर्वन्। मंत्रान् विधानानुष्ठानं मन्यानि च अकुर्वन्। स्यात् तेषां सर्वेषां यथार्थ कामनाः मातुश्च स्वास्थ्य तत् एकबारं पुनः अस्माकं निधिं अस्मभ्यमदुः।

वस्तुतस्त्वस्ति चमत्कारी कल्पवृक्षो महावीर स्वामी–**4 जून दिनस्यैव रात्रौ यदा मातुः स्वास्थ्यमधिकं विकृतमभवत् तदाहं कैश्चित् भक्तश्रावकैः सह कल्पवृक्षस्य भगवतो महावीरस्य कमलमन्दिरमगच्छम् भगवन्तं च पश्यन्त्याः स्वतो मम मुखाद् शब्दो निर्गतो ऽभवत्–महावीर स्वामिन्। पूज्यायाः मातुः किञ्चिदपि अनिष्टो न भवेत्। माताश्रीः महत्योत्कंठया हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्रमागतास्ति। कुण्डलपुरस्य इयम् यात्रा अस्मभ्यं सर्वेभ्यो वराय भवतु। भगवन्! माताश्रीः भवतो जन्मभूमेः प्रचुरचमत्कारं विस्तार्यागच्छत्। अतोऽस्याः स्वस्थतायाश्चमत्कारोऽपि भवत्कृपयैव भवितव्यः एव.....इत्यादि।**

तस्मिन् समये मम वामनेत्रं स्फुरायमानमभवत् मह्यं प्रतीतमभवत् यत् भक्तिपूर्वकं

आवाज आई थी। मैं तुरंत उठकर माताजी के पास गई, उन्हें गणधरवलय मंत्र, सुप्रभात स्तोत्र सुनाकर उठाना चाहा, तो भी वे पाषाणवत् रहीं, पुनः मैंने थोड़ा जोर से कहा माताजी! उठिये! प्रतिक्रमण सुनाऊँ, प्रतिक्रमण का समय हो गया है, 4उठिये! तब उन्होंने थोड़ी आंख खोली और मेरे सहारे से उठीं, लघुशंका गईं। मैं जल्दी से चौकी पर बैठाकर उन्हें छोटे कमरे से हॉल में ले आई, तभी यह खबर फैलते देर नहीं लगी और सबके चेहरे पर छाई खुशियों का वर्णन करना वास्तव में संभव नहीं है। इस दौरान भारत के कोने-कोने में श्रद्धालुभक्तों ने माताजी के स्वास्थ्य लाभ के लिए मंत्र, विधान-अनुष्ठान एवं मनौतियाँ तक मांग रखी थी, शायद उन सबकी सच्ची भावना और माताजी के आयुकर्म ने एक बार पुनः हमारी निधि हमें लौटा दी।

➢सचमुच में चमत्कारी हैं कल्पवृक्ष महावीर स्वामी–

4 जून की ही रात्रि में जब माताजी की तबियत ज्यादा गड़बड़ हुई, तो मैं कुछ भक्त श्रावकों के साथ कल्पवृक्ष भगवान महावीर के कमलमंदिर में गई और भगवान के दर्शन करते हुए स्वतः मेरे मुख से निकल पड़ा–हे महावीर स्वामी! पूज्य माताजी का कुछ बाल बांका नहीं होना चाहिए, माताजी बड़ी उत्कण्ठा से हस्तिनापुर तीर्थ के दर्शन करने आई हैं। कुण्डलपुर की यह ऐतिहासिक यात्रा हम सबके लिए वरदान बने। भगवन्! माताजी आपकी जन्मभूमि का खूब चमत्कार फैलाकर आई हैं, सो अब इनकी स्वस्थता का चमत्कार भी आपकी कृपाप्रसाद से होना ही चाहिए..... इत्यादि।

उस समय मेरी बाईं आँख फड़क उठी और मुझे लगा कि जब भक्तिपूर्वक निकले पौद्गलिक

निर्गताः पौद्गलिकाः शब्दाः गत्वा सिद्धशिलायाः स्पर्शं कृत्वाऽऽगत्य मनोकामनां साधयन्ति तदा ममात्मीयां भावना निश्चितरूपेण सिद्धा भविष्यति, वस्तुतश्च चमत्कार एवाभवत्। ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दश्याः 5 जून दिने माताश्रीः त्यागिभवनादेव न केवलं भगवतः शान्तिनाथस्य जन्म कल्याणकस्य सुमेरुपर्वतेऽभिषेकमपश्यत्, तस्याः सान्निध्ये भगवतः शान्तिनाथस्य निर्वाणमोदकाः अपि समर्पिताः अभवन्। किन्तु आगन्तुक भक्तेभ्यो मन्दहास्यं कृत्वाऽऽशीर्वादमपि प्रादात्। तदा माताकथयत् यत् अहं रात्रौ अन्तरंगेण पूर्णरूपेण सचेतावस्थायामासम्। किन्तु मात्रं दुर्बलतायाः कारेणन शरीरं चलितुमान्दोलितं च भवितुं समर्थं नासीत्। अहं रात्रौ भक्तामरअध्यात्मपीयूषापि सर्वान् पाठान् यो योऽश्रावयत् तानश्रृण्वम्। किन्तु यतो हि दुर्बलताऽधिकैवासीत् अतो मनसि एव नियमसंल्लेखनामगृहणं यदद्य आहारं गृहीतुं स्थितिरभवत् सुष्ठु भवेत्, अन्यथा समाधिं गृहीष्यामि। या शनैः मामब्रवीत् यत् पश्य चन्दनामते! अद्य भगवतः शान्तिनाथस्य जन्मदिने मह्यमपि नवीनं जीवनं प्राप्तमभवत् मम द्वे घटिके पारंगते, प्रथमा तु धनौरामण्डी नगरस्य, तत्रापि चक्राणामाक्रमणेन स्थिति गंभीराभवत्, द्वितीया चाद्य रात्रोः। इदानीमहं पूर्णतया स्वस्थास्मि। एतत्सर्वं श्रुत्वा सर्वेषु जनेषु हर्षस्य तरंगाः उद्भवाः अभवन्। साकथयत् यत् तदात्वहं चिन्तने रताऽऽसम् यत्–

अहमिक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि अण्णं परमाणुमित्तं पि।।

शब्द जाकर सिद्धशिला तक का स्पर्श करके आ कर मनोकामना सिद्ध कर देते हैं, तब मेरी भी यह भावना निश्चित सफल होगी और वास्तव में चमत्कार ही हो गया। ज्येष्ठ कृ. 14, 5 जून को माताजी ने त्यागी भवन से ही न सिर्फ भगवान शांतिनाथ के जन्मकल्याणक का सुमेरु पर अभिषेक देखा, उनके सानिध्य में शांतिनाथ का निर्वाणलाडू चढ़ाया गया, बल्कि आगन्तुक भक्तों को मुस्कुराकर आशीर्वाद भी दिया। उस समय माताजी ने बताया कि मैं रात में अन्तरंग से पूर्णरूपेण सचेत अवस्था में थी, मात्र अत्यधिक कमजोरी के कारण हिला-डुला भी नहीं जा रहा था, मैंने रात्रि में भक्तामर, अध्यात्मपीयूष आदि सारे पाठ जिस-जिसने सुनाए हैं, सब सुने हैं और चूँकि कमजोरी अधिक थी, इसलिए मन ही मन नियम सल्लेखना ले ली थी कि उठकर आहार करने लायक स्थिति रही तो ठीक है अन्यथा समाधि ले लूँगी। वे बहुत धीरे से मुझसे बोलीं कि देखो चंदनामती! आज भगवान शांतिनाथ के जन्मदिन मुझे भी नया जीवन मिला है और मेरी दो घाटी पार हुई हैं। पहली धनौरा मण्डी की (वहाँ भी चक्कर आने से स्थिति गंभीर हो गई थी) और दूसरी आज रात्रि की, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, यह सब सुनकर सभी लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गई।

उन्होंने बताया कि मैं तो उस समय चिंतन कर रही थी कि–

अहमिक्को खलु सुद्धो, दंसणणाणमइओ सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणुमित्तं पि।।

अर्थात् अहं एकाकी अस्मि, निश्चयनयेन शुद्धोऽस्मि, दर्शन–ज्ञान मयोऽस्मि। सदैव चामूर्तिकोऽस्मि। अन्यं परमाणु मात्रमपि मम नास्ति। अनेनैव प्रकारेण पूज्यपादस्वामिनः श्लोकः अपि स्मृति पथि आगच्छत् यत्–

न मे मृत्युः कुतो भीतिः, न मे व्याधिः कुतो व्यथा।
नाहं बालो न वृद्धोऽहं, न युवैतानि पुद्गले।।

माता सदैवेदमेव कथयति यत् ''परमानन्दसंयुक्तं निर्विकारं निरामयं''**–इत्यादयः पंक्तयोऽपि असातां सोढुं शक्तिं प्रददति। तदा एव जनानां मुखात् इदं निर्गतं यत् माता एतानि महान्ति कार्याणि कारयित्वा आगतास्ति, अतः महता भीषण दृष्ट्या बाधिता अस्ति। अस्तु! साधवे का दृष्टि संलग्ना? इदं सर्वं साताऽसाता कर्मणामेव प्रतिफलं अनुभवति।**

अवर्णनीया विद्यते मातुरैतिहासिकी यात्रा–**पुरातन कविभिः वर्णिता गुरुणां महिमा अद्यापि प्रत्यक्षं दृश्यते यत् वनेऽपि गुरूणां विराजनेन स्वर्गः इव वातावरणं निर्मितं भवति। अज्ञाते मार्गेऽपि स्वयमेव चिरपरिचित पदमार्गो जायते।**

अस्याः विषये जनानां साधारणा धारणा निर्मितास्ति, यत् ज्ञानमती माता यस्मिन्नपि कार्ये स्वहस्तं निक्षिपति तदवश्यमेवपरिपूर्णं भवति। तस्याश्च स्पर्शने मृदपि स्वर्णं जायते। इदं सर्वं तस्याः दीर्घकालीनायास्तपस्यायाः, आगमनिष्ठायाः दृढायाश्च संकल्पशक्त्याः प्रतिफलं विद्यते।

यदि पूज्यायाः मातुरेतिहासिकानां यात्राणां तस्याश्च कार्यकलापानां वर्णनं विस्तृतरूपेण

अर्थात् मैं अकेला हूँ, निश्चयनय से शुद्ध हूँ, दर्शन ज्ञानमयी हूँ और सदा अमूर्तिक हूँ, अन्य परमाणुमात्र भी मेरा नहीं है, इसी प्रकार पूज्यपाद स्वामी के श्लोक भी स्मृतिपथ पर आते रहे कि–

न मे मृत्युः कुतो भीतिः, न मे व्याधिः कुतो व्यथा।
नाहं बालो न वृद्धोऽहं, न युवैतानि पुद्गले।।

माताजी सदा यही कहती हैं कि **''परमानन्द संयुक्तं निर्विकारं निरामयं''** आदि पंक्तियाँ भी असाता को झेलने में शक्ति प्रदान करती हैं। उस समय अनेक लोगों के मुख से यह निकला कि माताजी इतने महान कार्यों को करवाकर आई हैं, इसलिए माताजी को भीषण नजर लग गई है। खैर! साधु को क्या नजर लगना! यह सब तो साता-असाता कर्मों का ही प्रतिफल होता है।

➢अवर्णनीय है माताजी की ऐतिहासिक यात्रा–

पुरातन कवियों के द्वारा वर्णित गुरुओं की महिमा आज भी प्रत्यक्ष देखी जाती है कि जंगल में भी गुरुजनों के विराजने से स्वर्ग जैसा वातावरण निर्मित हो जाता है और अनजान रास्ते में भी स्वयमेव चिरपरिचित पगडंडी बन जाती है।

इनके विषय में लोगों की आम धारणा बन चुकी है कि ज्ञानमती माताजी जिस कार्य में हाथ लगा देती हैं, वह अवश्यमेव परिपूर्ण हो जाता है तथा उनके छूने से मिट्टी भी सोना बन जाती है। यह सब उनकी दीर्घकालीन तपस्या, आगमनिष्ठा एवं दृढ़ संकल्पशक्ति का ही प्रतिफल है।

अगर पूज्य माताजी की ऐतिहासिक यात्राओं और उनके कार्यकलापों को विस्तार पूर्वक लिखा

क्रियते, त्वनेक ग्रन्थाः विलिख्य निर्मिताः भवन्तु, परन्तु तथाभूतायाः देवीस्वरूपायाः प्राचीनायाः साध्व्याः महागुणानां निधेः मातुर्विषये कतिभिः शब्दैः लिखनं, बालकेनैकेनाथाहसमुद्रस्य मापकरणमिव विद्यते। एतावत्तुअवश्यमेव कथयिष्यामि यन्मातुः प्रतिचरणं किमपि लक्ष्यं गृहीत्वा अग्रे वर्धते। तस्याः एतानि चरणानि अनेन प्रकारेणैव अग्रे वर्धन्ता इयमेव वीरप्रभाय मंगल कामना वर्तते।

हस्तिनापुरे षण्णां वर्षाणां पश्चात् संभूते चतुर्मासे महती धर्म प्रभावना–**आषाढ शुक्ल चतुर्दश्यां 20 जुलाई 2005 दिने षण्णां वर्षाणामनन्तरं पूज्यां मातरं संघ सहितां प्राप्य हस्तिनापुरस्य धरा मुखरिताभवत्। तस्मिन् च तीर्थे संचालितस्य चतुर्मासस्य मध्ये अनेके कार्यक्रमाः समायोजिताः अभवन्। येषु मोक्षसप्तमीपर्व, अनेकानि लघुविधानानि, सिद्धचक्रादीनि वृहत् विधानानि, श्री सम्मेदशिखरस्य विकाससमितेः साधारणा सभा, फूलबागस्य मेरठनगरस्य जैनमिलनस्याधिवेशनं, दशलक्षणधर्म पर्वणि महाराष्ट्रभक्तमण्डलेनायोजितं त्रैलोक्यमहामण्डल–विधानं, रेवाड़ी नगरात् आगतेभ्यः शिविरार्थिभ्यः शिक्षण शिविरः, पन्नालाल सेठी परिवारेण इन्द्रध्वज विधानं इत्यादिभिरायोजनै र्विशेषा धर्मप्रभावनाभवत्। विशेषं च महत्वपूर्णमायोजनं जम्बूद्वीपमहामहोत्सवः 2005 तमः सम्पन्नोऽभवत्।**

सम्पूर्णे देशे समर्पिताः भगवतः पार्श्वनाथस्य निर्वाणमोदकाः–**त्रयोविंशतितमस्य तीर्थंकरस्य भगवतः पार्श्वनाथस्य निर्वाणकल्याणकदिवसे श्रावणशुक्लसप्तम्यां, 12 अगस्त 2005 दिने सम्पूर्णे देशे महतोत्साहेन निर्वाणमोदकाः समर्पिताः अभवन्। गणिन्याः मातुर्ज्ञानमत्याः**

जाये, तो कई एक ग्रंथ बनकर तैयार हो जायें परन्तु ऐसी देवीस्वरूपा, प्राचीन साध्वी, महानतम गुणों की खान माताजी के बारे में कुछ शब्दों में लिखना एक बालक के द्वारा अथाह समुद्र का माप बताने जैसा बाल प्रयास ही समझना चाहिए। हाँ! इतना अवश्य कहूँगी कि पूज्य माताजी का हर कदम किसी न किसी नए लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ता है, उनके ये कदम हमेशा-हमेशा इसी तरह आगे बढ़ते रहें, यही वीर प्रभू से मंगल कामना है।

➢हस्तिनापुर में 6 वर्षों बाद हुए चातुर्मास में महती धर्मप्रभावना–

आषाढ़ शु. चतुर्दशी, 20 जुलाई 2005 को 6 वर्षों के अनन्तर पूज्य माताजी को संघ सहित पाकर हस्तिनापुर की धरा मुखरित हो उठी और उस तीर्थ पर हुए मंगल चातुर्मास के मध्य अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें मोक्षसप्तमी पर्व, अनेकानेक लघु विधान, सिद्धचक्र आदि वृहत् विधान, श्री सम्मेदशिखर जी विकास समिति की साधारण बैठक, फूलबाग मेरठ के जैन मिलन का अधिवेशन, दशलक्षण पर्व में महाराष्ट्र भक्तमण्डल द्वारा त्रैलोक्य महामण्डल विधान, रेवाड़ी से पधारे शिविरार्थियों के लिए शिक्षण शिविर, पन्नालाल सेठी परिवार द्वारा इन्द्रध्वज विधान आदि आयोजनों से विशेष धर्मप्रभावना हुई और विशेष प्रभावनापूर्ण आयोजन जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005 हुआ।

➢सम्पूर्ण देश में चढ़ाया गया भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाणलाडू–

23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणकल्याणक दिवस, श्रावण शुक्ला सप्तमी, 12 अगस्त 2005 को देशभर में भारी उत्साह के साथ निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। पूज्य गणिनीप्रमुख

प्रेरणया ''भगवान् पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि समित्या'' सम्पूर्णे देशे मोक्षसप्तम्याः पर्वणि सम्मेदशिखरं गत्वा निर्वाण मोदकान् समर्पयितुं स्थानीये स्व मन्दिरे, धर्मशालायां, पाण्डाले वा सम्मेदशिखरस्य कृत्रिम रचनायाः निर्माणं कृत्वा तत्समक्षं सामूहिकान् निर्वाणमोदकानं समर्पणसम्बन्धितानि मुद्रित पत्राणि प्रेषितान्यभवन्।

अयमत्यन्तमेव हर्षस्य विषयोऽस्ति गतवर्षाणामपेक्षयास्मिन् वर्षे प्रायः द्विगुणिताः दर्शनार्थिनः सम्मेदशिखरं गत्वा निर्वाणमोदकान् समर्पयन्। सूत्रानुसारेण 12 अगस्त दिने प्रायः 20000 पार्श्वभक्ताः सम्मेदशिखरे उपस्थिताः आसन्। राजधान्याः दिल्लीनगर्याः अजमल खाँ पार्के करोलबागे पूज्यः आचार्यः शान्तिसागरस्य मंगलसान्निध्ये पूज्यस्य सम्मेदशिखरस्य रचनां निर्माप्य तस्यां भगवतः पार्श्वनाथस्य 23 प्रतिमाः विराजमानाः कृताः, 23–23 किलोमानस्य 23 निर्वाणमोदकाः समर्पिताः अभवन्। लालमन्दिरे, बाहुबली एन्क्लेवोनगरे, धर्मपुरा–पंचायतीमन्दिरे दिल्लीनगर्याश्च विभिन्नैरूपनगरैः जैनसमाजैः महिला संघठनस्य विभिन्नानां शाखानां सदस्याभिः निर्वाणमोदकानां समर्पणस्य समाचाराः प्राप्ताः अभवन्।

यद्यपि भगवतः पार्श्वनाथस्य निर्वाण–दिवसे निर्वाण मोदकानां समर्पणस्य परम्परा पूर्वकालादपि वर्तमानासीत्, तथाप्यस्मिन् वर्षे व्यापकस्य प्रचार–प्रसारस्य प्रेरणायाश्चाधारेण परम्परायामस्यां वृद्धिः हार्दिक प्रसन्नतायाः कारणमासीत्।

श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा से 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव समिति' द्वारा देशभर में मोक्षसप्तमी पर्व पर सम्मेदशिखर जाकर निर्वाणलाडू चढ़ाने अथवा अपने स्थानीय मंदिर/धर्मशाला/पाण्डाल इत्यादि में सम्मेदशिखर की कृत्रिम रचना का निर्माण कराकर उसके समक्ष सामूहिक निर्वाणलाडू चढ़ाने संबंधी पोस्टर भेजा गया था।

यह अत्यंत हर्ष का विषय रहा कि पिछले वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष लगभग दुगुने श्रद्धालुभक्तों ने सम्मेदशिखर पहुँचकर निर्वाणलाडू चढ़ाया। जानकार सूत्रों के अनुसार 12 अगस्त को लगभग 20000 (बीस हजार) पार्श्वभक्त सम्मेदशिखर में उपस्थित थे। राजधानी दिल्ली के अजमल खाँ पार्क (करोलबाग) में पूज्य आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज (णमोकार मंत्र वाले) के मंगल सानिध्य में भव्य सम्मेदशिखर रचना का निर्माण करके उसमें भगवान पार्श्वनाथ की 23 प्रतिमाएँ विराजमान की गईं और 23-23 किलो के 23 निर्वाणलाडू चढ़ाये गये। लाल मंदिर, बाहुबली एन्क्लेव, धर्मपुरा पंचायती मंदिर एवं दिल्ली भर की कॉलोनियों से जैनसमाजों एवं अ.भा.दि. जैन महिला संगठन की विभिन्न इकाइयों की ओर से निर्वाणलाडू चढ़ाये जाने के समाचार प्राप्त हुए।

यद्यपि भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणदिवस पर निर्वाणलाडू चढ़ाने की परम्परा पूर्व से भी रही है, तथापि इस वर्ष व्यापक प्रचार-प्रसार एवं प्रेरणा के आधार पर इस परम्परा में विशेष वृद्धि हार्दिक प्रसन्नता का कारण रही।

अनेकाभिरूपलब्धिभिः समन्वितः आसीत् जम्बूद्वीप महामहोत्सवः 2005–**प्रतिपंचवर्षाणाम–नन्तरमायोजनार्थं प्रस्तावितस्य जम्बूद्वीप महामहोत्सवस्य इव 2005 वर्षे अपि आश्विन शुक्ल एकादश्याः पूर्णिमा पर्यन्तं राष्ट्रीयस्तरेण अनेकाभिरुपलब्धिभिराशातीताभिः सफलताभिश्च सह आयोजितोऽभूत्। दीर्घकालात् प्रतीक्षारतेऽस्मिन् महोत्सवे विविधानामायोजनानां माध्यमेन प्रत्यक्षपरोक्षरूपेण च कोटिभिः भक्तजनैराध्यात्मिकगंगायां स्नानं विधाय स्वात्मानं सौभाग्यशालिनः मत्वा असीम आनन्दं पुण्यं च प्राप्नुवन्।**

अस्मिन् महोत्सवे निरन्तरं पञ्चदिनानि पर्यन्तं महत्वपूर्णानां शोधात्मकानामालेखानां वाचनेन सहैव ''गणिन्याः ज्ञानमत्याः संस्कृतस्याध्यात्मस्य च साहित्यसंगोष्ठ्याः'' **भव्यमायोजनमभवत्। यस्यां जैनसमाजस्यानेकमूर्धन्याः विद्वांसः भागं गृहीत्वा पूज्यया मात्रा रचितेषु विभिन्नग्रन्थेषु स्व शोधात्मकानालेखान् प्रस्तुतानकुर्वन्। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषदः, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषदः, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघस्य चैवंभूतानां विदुषां संस्थानां प्रतिनिधित्वस्य प्राप्तिकारणेन संगोष्ठ्याः उपादेयताधिका वृद्धिंगताभवत्। विद्वद्भिश्चानेका प्रश्नानां कृते सति आगमसम्मतानि अनेकमहत्वपूर्णानि समाधानानि मार्गदर्शनं च मात्रा सर्वेभ्यः प्राप्तानि अभवन्।**

आश्विन्शुक्लचतुर्दश्यां, 16 अक्तूबर दिने जम्बूद्वीपस्य महामहोत्सवस्य मुख्यानां कार्यक्रमाणां रूपेणात्र निर्मितस्य 101 फुट समुन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकशिलायां भगवतः शान्तिनाथस्य महामस्तकाभिषेकस्य कार्यक्रमः प्रातः 8 वादनसमयात् प्रारभत्।

➢अनेक उपलब्धियों से समन्वित रहा जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2005–

प्रति पाँच वर्षों में आयोजित होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव की भांति ही सन् 2005 में आयोजित होने वाला जम्बूद्वीप महामहोत्सव 13 से 17 अक्टूबर 2005, आसोज शु. 11 से पूर्णिमा तक राष्ट्रीय स्तर पर अनेक उपलब्धियों एवं आशातीत सफलता के साथ मनाया गया। लम्बे समय से प्रतीक्षारत इस महोत्सव में विविध आयोजनों के माध्यम से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से करोड़ों भक्तों ने आध्यात्मिक गंगा में स्नान कर अपने को सौभाग्यशाली माना तथा असीम आनन्द और पुण्य की प्राप्ति की।

इस महोत्सव में लगातार पाँच दिनों तक महत्वपूर्ण शोधात्मक आलेखों के वाचन के साथ **''गणिनी ज्ञानमती संस्कृत एवं अध्यात्म साहित्य संगोष्ठी''** का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें जैन समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने भाग लेकर पूज्य माताजी द्वारा रचित विभिन्न ग्रंथों पर अपने शोधात्मक आलेख प्रस्तुत किए। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, अ.भा. दि. जैन विद्वत् परिषद, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ जैसी सर्वोच्च विद्वत् संस्थाओं का प्रतिनिधित्व प्राप्त होने से संगोष्ठी की उपादेयता कहीं अधिक वृद्धिंगत हो गई तथा विद्वानों द्वारा अनेक प्रश्नों के किए जाने पर आगमसम्मत अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ व मार्गदर्शन पूज्य माताजी द्वारा सभी को प्राप्त हुआ।

आसोज शु. 14, 16 अक्टूबर (रविवार) को जम्बूद्वीप महामहोत्सव के मुख्य कार्यक्रम के रूप में यहाँ निर्मित 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर भगवान शांतिनाथ के मस्तकाभिषेक

17 अक्तूबर दिने च शरत्पूर्णिमायाः पावनेऽवसरे गणिनी प्रमुखायाः ज्ञानमत्याः मातुः 72 तमं जन्मजयंती दिनं भव्यस्तरेणायोजितमभवत्। कार्यक्रमद्वयं आस्था दूरदर्शनस्य माध्यमेन समस्तस्य संसारस्य कोट्यधिकजनाः अपश्यन् तस्य च सुरभिरेतावती प्रसारिताभवत् यत् अद्य पर्यन्तं तस्य महती प्रंशसा जायते। तस्मिन्नवसरे जनाः मोबाइल एस.एम.एस. माध्यमेन वर्धापनानां शुभकामनानां च सन्देशं प्रदार्तृणां पंक्तिबद्धाभवत्। दिनांके 16 अक्तूबर दिने महामस्तकाभिषेकस्य महोत्सवस्य साक्षात् प्रसारणं यदा विश्वस्य कोट्यधिकजनाः अपश्यन्। शताधिकभक्ताः दूरभाष माध्यमेन स्वकलशानामारक्षणमकारयन् भगवतश्चात्र महामस्तकाभिषेके अप्रत्यक्षरूपेण प्रतिभागिनो भूत्वा हर्षमन्वभवन्।

वस्तुतस्तीर्थदर्शनं गुरुदर्शनं च महता सौभाग्येनैवोपलभ्यते। अतः आस्था दूरदर्शनस्य माध्यमेन यदा जनाः जम्बूद्वीप सदृशस्य महतस्तीर्थस्य गणिन्याश्च ज्ञानमत्याः मातुदर्शनमकुर्वन् तु ते एतस्याः धरित्र्याः स्वर्गे आगन्तुं मातुश्च चरणवन्दनां कर्तुमुत्सुकाः अभवन्। अद्यापि एवंभूताः कतिचित् जनाः आगच्छन्ति ये कथयन्ति यत् मातः। वयमास्था दूरदर्शने भवतीनां कार्यक्रमं वीक्ष्य प्रथमं बारं भवत्याः साक्षात् दर्शनं कर्तुमागच्छाम।

तेरहद्वीपरचनायाः शिलान्यासः—**महोत्सवस्य अन्यासूपलब्धिसु अग्रिमशृंखलायाः रूपेणासीत् तेरहद्वीपमन्दिरो मध्यलोकस्य त्रयोदशद्वीपानामकृत्रिमरचनायाः शिलान्यासः। 1965 वर्षे**

का कार्यक्रम प्रातः 8 बजे से प्रारंभ हुआ तथा 17 अक्टूबर को शरदपूर्णिमा के पावन अवसर पर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का 72वाँ जन्मजयंती समारोह भव्य स्तर पर मनाया गया और इन दोनों कार्यक्रमों को आस्था चैनल के माध्यम से दुनिया भर में करोड़ों लोगों ने देखा और उसकी सुरभि इतनी फैली कि आज तक उसकी खूब सराहना हो रही है। उस दिवस पर लोगों द्वारा मोबाइल, एस.एम.एस. के माध्यम से बधाईयाँ एवं शुभकामना संदेश देने वालों का तांता लग गया। दिनाँक 16 अक्टूबर को महामस्तकाभिषेक महोत्सव का सीधा प्रसारण जब दुनिया के करोड़ों लोगों ने देखा। सैकड़ों भक्तों ने फोन के माध्यम से अपने कलश बुक करवाए और भगवान के महामस्तकाभिषेक में अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिभागी बनकर अपार हर्ष का अनुभव किया।

वस्तुतः तीर्थदर्शन एवं गुरुदर्शन बड़े ही सौभाग्य से प्राप्त होते हैं अतः आस्था चैनल के माध्यम से जब जन-जन ने जम्बूद्वीप जैसे महान तीर्थ एवं महान साध्वी पूज्य माताजी के दर्शन किए, तो वे एक बार इस धरती के स्वर्ग पर आने एवं माताजी की चरणवन्दना करने हेतु लालायित हो उठे, आज भी ऐसे कितने लोग आते हैं जो बताते हैं कि माताजी! हम आस्था चैनल पर आपका कार्यक्रम देखकर प्रथम बार साक्षात् आपके दर्शन करने आए हैं।

➢तेरहद्वीप रचना का शिलान्यास–

महोत्सव की अन्य उपलब्धियों में अगली कड़ी के रूप में रहा तेरहद्वीप मंदिर में मध्यलोक के तेरह द्वीपों की अकृत्रिम रचना का शिलान्यास। सन् 1965 में पूज्य माताजी के ध्यान में प्रकट हुई

पूज्यायाः मातुः ध्याने प्रकटिता त्रयादेश द्वीपस्याकृत्रिम रचनाधुना जम्बूद्वीपस्थले निर्मिताऽभवत्। अस्याः रचनायाः शिलान्यासः शरत्पूर्णिमाया एव दिने 17 अक्तूबर 2005 दिने श्री दीपककुमारेण वाराणस्या प्रमोदकुमारेण चागरा निवासिभ्यामभवत्। इयमपि रचना विश्वस्यानुपमा रचना अस्ति।

महोत्सवेऽभवन् आगामि कार्यक्रमाणां घोषणाः–**गणिनी ज्ञानमती माता स्व प्रकृत्यनुसारेण कस्याप्येकस्य महोत्सवस्यायोजनस्य योजनायाश्च समापनात्पूर्वमेवागतिकार्यं सुनिश्चित्य समाजे घोषणां करोति। एतामेव वार्तां दर्शयन्ती सा महोत्सवस्य समापने आगामि वर्षं 2006 वर्षं भगवतः पार्श्वनाथस्य निर्वाणभूमि–**''सम्मेदशिखरवर्ष'' **रूपेणा योजयितुं प्रेरणां समाजाय प्रादात्।**

तीर्थविकास कार्यक्रमः संचालिताऽस्ति, अधुना काकन्दीवारम् अस्ति–**पुनः एकमैतिहासिकं कार्यं मातुः प्रेरणयाभवत्। तदस्ति, तीर्थानां विकासक्रमे नवमस्य तीर्थंकरस्य भगवतः पुष्पदन्तस्य उपेक्षितायाः विस्मृतायाश्च जन्मभूमेः काकन्दीक्षेत्रस्य यत् गोरखपुरस्य निकटे अवस्थितमस्ति तस्य विकासकार्यम्। 27 नवम्बर 2005 दिनेऽस्मिन् तीर्थे पूज्यायाः मातुरनन्यभक्तेन श्री राजकुमार जैनेन ''वीरा बिल्डर्स''–दिल्लीनगर्या तत्रैकस्य नवीनस्य मन्दिरस्य शिलान्यासः सम्पन्नोऽभवत्। यच्च विकसितो भूत्वा विश्वपटले आच्छादितमभवत्। जनान् भगवतः पुष्पदन्तस्य गौरवगाथया परिचितं कारयति।**

।। इति अष्टमोऽध्यायः।।

तेरहद्वीप की अकृत्रिम रचना अब जम्बूद्वीप स्थल पर निर्मित हो चुकी है। इस रचना का शिलान्यास शरदपूर्णिमा के ही दिन 17 अक्टूबर 2005 को श्री दीपक जैन-वाराणसी एवं डॉ. प्रमोद कुमार जैन-आगरा के द्वारा हुआ। यह रचना भी अपने आप में विश्व की अनोखी रचना बन गई है।

➢महोत्सव में हुईं आगामी कार्यक्रमों की घोषणाएँ–

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी अपनी प्रकृति के अनुसार किसी एक महोत्सव, आयोजन या प्रोजेक्ट के समापन से पूर्व ही आगामी कार्य को सुनिश्चित करके समाज में घोषणा कर देती हैं, इसी बात को दरशाते हुए उन्होंने महोत्सव के समापन पर आगामी वर्ष 2006 को भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि **''सम्मेदशिखर वर्ष''** के रूप में मनाने की प्रेरणा समाज को प्रदान की।

➢तीरथ विकास क्रम जारी है, अब काकन्दी की बारी है–

पुनः एक ऐतिहासिक कार्य पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ। वह है, तीर्थ विकास के क्रम में नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत की उपेक्षित एवं विस्मृत जन्मभूमि काकन्दी (गोरखपुर-उ.प्र. के निकट अवस्थित) का विकास कार्य। 27 नवम्बर 2005 को इस तीर्थ पर पूज्य माताजी के अनन्य भक्त श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स'-दिल्ली द्वारा वहाँ एक नये मंदिर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ, जो विकसित होकर विश्वपटल पर छा गया है और जन-जन को भगवान पुष्पदंतनाथ की गौरव गाथा से परिचित करा रहा है।

अध्याय-१
दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है
पुण्य
ज्ञानमती माताजी ने
Narayan

नवमोऽध्यायः

दीर्घकालीनया तपस्ययाऽर्जितमकरोत् पुण्यं ज्ञानमती माता

यदा कस्याः अपि जिनप्रतिमायाः दर्शनं क्रियते तु तस्याः प्राचीनतायाः ज्ञाते सति दर्शनं कर्तुः श्रद्धालोर्भक्तस्य भक्तिः कांचित् विशेषैव जायते तस्य च भक्तिभावेन दर्शनवन्दनकरणेन तावदेवाधिकं फलं प्राप्यते। यतो हि जिनप्रतिमा यावती प्राचीना भवति तावत्येव तस्या भक्तिर्वर्धते। वर्तमानकाले इदमेव सत्यमस्माकं पुरतः साकाररूपं गृह्णाति गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुः रूपेण। अष्टादशवर्षीयेऽल्पायुषि गृहं परित्यज्य युगस्य प्रथमबालब्रह्मचारिणी त्यागमार्गे पदं धारिणी या लौहबाला त्यागपूर्णजीवनस्य 58 वर्षाणि पूर्णान्यकरोत् तैः सा विशेषप्रकारस्य एकोऽतिशयोऽस्यां समुत्पन्नोऽभवत्। पूज्यायाः मातुरनेककार्यकलापान् वीक्ष्य जनाः प्रायः कथयितुमुत्सुकाः भवन्ति यत् माताश्रीस्तु महती पुण्यशालिनी विद्यते तस्य च पुण्यस्य बलेनैव तया एतानि महान्ति कार्याणि संपन्नानि जायन्ते। वस्तुतस्तु एतत्पुण्यं न तु कस्माच्चित् हट्टात् प्राप्यते नापि कस्माच्चित् विपणेः क्रेतुं शक्यते, माताश्रीरपि एतत् अपारं पुण्यं कस्माच्चित् ऋणरूपेण नागृह्णात् परन्तु एतेषु 58 वर्षेषु प्रतिक्षणं कृत्वा घटे बिन्दु–बिन्दुवत् तदर्जितमकरोत्।

अखण्डस्यासिधाराव्रतस्य स्वर्णिमधारा (58 वर्षाणि) महाव्रतानां पालनस्य सूक्ष्मचर्या, मोक्षमार्गस्य प्रणेतारं भगवन्तं जिनेन्द्रं प्रति तस्याः प्रतिकणं व्याप्तापारा भक्तिः प्रतिक्षणं

दीर्घकालीन तपस्या से अर्जित किया है पुण्य ज्ञानमती माताजी ने

जब किसी जिनप्रतिमा का दर्शन किया जाता है, तो उसकी प्राचीनता ज्ञात होने पर दर्शन करने वाले श्रद्धालु भक्त की भक्ति कुछ विशेष ही हो जाती है, यह सर्वमान्य तथ्य है। वास्तविकता यह है कि जिनप्रतिमा जितनी प्राचीन होती है, उसकी भक्तिभावपूर्वक दर्शन-वंदना करने से उतना ही अधिक फल प्राप्त होता है। वर्तमान काल में यही सत्य हमारे सामने साकाररूप ले रहा है पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के रूप में। 18 वर्ष की अल्प आयु में घर का त्याग कर युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में त्यागमार्ग में कदम बढ़ाने वाली इस लौह-बाला ने त्यागमयी जीवन के जो 58 वर्ष पूर्ण किए हैं, उनसे एक विशेष प्रकार का अतिशय उनमें उत्पन्न हो गया है। पूज्य माताजी के अनेक कार्यकलापों को देखकर लोग अक्सर कहा करते हैं कि माताजी तो महान पुण्यशालिनी हैं और उस पुण्य के बल पर ही उनके द्वारा इतने बड़े-बड़े कार्य सम्पन्न हो रहे हैं, परन्तु वास्तव में पुण्य कहीं बाजार में नहीं मिलता है और न ही किसी दुकान से खरीदा जा सकता है। पूज्य माताजी ने भी यह अपार पुण्य किसी से उधार नहीं लिया है वरन् इन 58 वर्षों में एक-एक क्षण करके घट में बूँद-बूँद की भाँति उसे अर्जित किया है।

अखण्ड असिधारा व्रत की स्वर्णिम धारा (58 वर्ष), महाव्रतों को पालन करने की सूक्ष्म चर्या, मोक्षमार्ग के प्रणेता भगवान जिनेन्द्र के प्रति उनके कण-कण में व्याप्त अनुपमेय अपार भक्ति,

स्वपर कल्याणाय निष्कामपरिश्रमस्य महायज्ञे समर्पणं तस्याः अस्य महतः पुण्यप्रासादस्य सुदृढाः स्तम्भाः निर्मिताः सन्ति।

कस्यापि नीतिकारस्येदं कथनं सत्यमेवास्ति–

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

अर्थात् जनाः पुण्येन प्रसूतं सुखरूपं फलमिच्छन्ति, परन्तु पुण्यं कर्तुं नेच्छन्ति। ते पापस्य फलं नेच्छन्ति परन्तु पापस्य संचये सदैव प्रयत्नशीलाः तिष्ठन्ति।

दर्शनात् तु संसारे इयमेव स्थितिरनाभूयते, जनाः समस्तसुखानां संपदां वैभवानां च आधारभूताभिः पुण्यक्रियाभिस्तु विमुखास्तिष्ठन्ति, स्वजीवने च सर्वदा उच्चतमानाभिः अभिलाषाभि त्रस्ताः भवन्ति। एवं भूतेभ्यो जनेभ्यो मातुर्जीवनं विशेषरूपेण प्रेरणास्पदं वर्तते।

पूज्या माता यं तीर्थं स्पृशति, तदाकाशस्योच्चतां स्पृशति, यां मृत्तिकां स्पृशति सा सुवर्णं जायते। यत् वनं प्रविशति तत् स्वर्गायते, यस्य ग्रामस्य धरित्र्यां चरणन्यासं करोति, सा मन्दिरं जायते, यस्मिन् जने तस्याः दृष्टिः पतति, सः स्वजीवने मानवात् भगवतः मार्गं प्रति अग्रसरो भवति। यं च विन्दुं सा स्पृशति सः सिन्धुर्भवितुं चयनितो भवति।

इदमेव कारणमस्ति यद् भगवतो महावीरस्य जन्मभूमौ कुण्डलपुरे नालन्दायां केवलं 22 मासेषु

प्रतिक्षण स्व एवं पर के कल्याण हेतु अटूट परिश्रम के महायज्ञ में समर्पण उनके इस महान पुण्यरूपी प्रासाद के सुदृढ़ स्तम्भ बने हैं।

किन्हीं नीतिकार का कथन पूर्ण सत्य है–

पुण्यस्य फलमिच्छंति, पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छंति, पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

अर्थात् लोग पुण्य से प्रसूत सुखरूप फल की इच्छा करते हैं, परन्तु पुण्य करना नहीं चाहते हैं। वे पापरूप फल को नहीं चाहते हैं परन्तु पाप के संचय में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

देखा जाये तो संसार में यही स्थिति बनी हुई है, लोग समस्त सुख-सम्पत्ति-वैभव की आधारभूत पुण्य क्रियाओं से तो अछूते बने रहते हैं और अपने जीवन में सदैव ऊँचाईयों की अभिलाषा से त्रस्त रहा करते हैं। ऐसे लोगों के लिए पूज्य माताजी का जीवन विशेषरूप से प्रेरणास्पद है।

पूज्य माताजी जिस तीर्थ को छूती हैं, वह आकाश की ऊँचाईयों को छूने लगता है, जिस मिट्टी को छूती हैं, वह सोना बन जाती है, जिस जंगल में पहुँच जाती हैं, वहाँ स्वर्ग बन जाता है, जिस ग्राम की धरती पर चरण रखती हैं, वह मंदिर बन जाता है, जिस व्यक्ति पर उनकी दृष्टि पड़ जाती है, वह अपने जीवन में इंसान से भगवान बनने की ओर अग्रसर हो जाता है और जिस बिन्दु का वह स्पर्श करती हैं, वह सिंधु बनने के लिए चयनित हो जाता है।

यही कारण है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में मात्र 22 माह में हुए

सम्पन्नं विशालं निर्माणकार्यं वीक्ष्य जनानां मुखेभ्यः सहसा निर्गच्छति यत् विंशतिवर्षाणां कार्यं स्वयं देवाः आगत्य एतावति अल्पसमये साकारमकुर्वन्। वस्तुतो देवोपनीतमिदं कार्यं दृष्ट्वा जनाः आश्चर्येण दन्तानां मध्ये स्वांगुलिं दमितां कुर्वन्ति। पूज्यया मात्रा सह युक्तानां भक्तानां समर्पणमप्यस्मात्कारणादेव भवति यत् सा मात्रं मन्दिरं तीर्थं वा न रचयति परन्तु जैनशासनस्य प्राचीनायाः संस्कृतेरितिहासस्य च सुरक्षायामाचार्य–कुन्दकुन्दाकलंकदेव इवोदाहरणानि प्रस्तौति। साररूपेण यदि कथ्यते तु तया विशालं साहित्यसर्जनं, हस्तिनापुरअयोध्यामांगीतुंगीअहिच्छत्रप्रयागकुण्डलपुरसदृशानामनेकानां तीर्थानां जीर्णोद्धारो विकासश्च जैनधर्मस्य च प्राचीनतां जन जनं प्रति नेतुं कृतानि महान्ति प्रभावनात्मकानि कार्याणि, जिनेन्द्रभगवन्तं, जिनशासनं जिनवाणीं प्रति च तस्याः अचिलता भक्तिः समर्पणस्यैव प्रतीकाः सन्ति। प्रारम्भादेव जिनशासनं स्वसर्वस्वं मन्यमाना पूज्या माता स्वंप्रतिचरण–मागमानुकूलं स्वमोक्षमार्गं च प्रशस्तं कर्तुमवर्धयत्! प्रतिदिनं तस्याः मुखेन इदमेव निर्गच्छति यत् भगवन्! यदि मया कदाचित् अपि भवन्तं प्रति भक्तिः गुणानुरागरूपाः क्रियाः सम्पद्यन्ते, तु तासां पृष्ठे ममैकमात्रमयमेव स्वार्थो निहितो वर्तते, यदागमिषु केषुचित् भवेषु एवं भूतायामुच्चसाधनायाः ध्यानाग्नेश्च प्रश्रयं गृहीतुं शक्नुयाम् यत् मम सर्वेषां कर्ममलानां शृंखलां चूर्णीभूत्वा मम शुद्धा स्वरूपः आत्मा मोक्षं प्राप्तुं समर्थो भवेत्।

तीर्थंकराणां भगवतामागमे वर्णितस्य मोक्षमार्गस्य वर्तमानकालीनां साधनां प्रति तस्याः

विशाल निर्माणकार्य को देखकर लोगों के मुख से सहसा निकलता है कि बीसों वर्ष का कार्य मानो स्वयं देवों ने आकर इतने अल्प समय में साकार कर दिया है। वस्तुतः देवोपुनीत इस कार्य को देखकर लोग आश्चर्य से दाँतों तले अँगुली दबा लेते हैं। पूज्य माताजी के साथ जुड़ने वाले भक्तों का समर्पण भी इसीलिए रहता है क्योंकि वह मात्र मंदिर या तीर्थ नहीं बनाती हैं वरन् जैन शासन की प्राचीन संस्कृति एवं अतिप्राचीन इतिहास की सुरक्षा में आचार्य कुन्दकुन्द एवं अकलंक देव जैसे उदाहरण प्रस्तुत कर देती हैं। साररूप में यदि कहा जाये तो उनके द्वारा विशाल साहित्य सृजन, हस्तिनापुर-अयोध्या-मांगीतुंगी-अहिच्छत्र-प्रयाग-कुण्डलपुर जैसे अनेकानेक तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास, जैनधर्म की प्राचीनता को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किए गए महान प्रभावनात्मक कार्य, जिनेन्द्र भगवान, जिनशासन एवं जिनवाणी के प्रति उनकी अटूट भक्ति एवं समर्पण के ही प्रतीक हैं। प्रारंभ से ही जिनशासन को अपना सर्वस्व मानने वाली पूज्य माताजी ने अपना हर कदम आगमानुकूल एवं अपने मोक्षमार्ग को प्रशस्त करने के लिए बढ़ाया है। प्रतिदिन उनके मुख से यही निकला करता है कि हे भगवन्! यदि मेरे द्वारा किंचित् भी आपके प्रति भक्ति एवं गुणानुरागरूप क्रियाएँ सम्पन्न हो रही हैं, तो उनके पीछे मेरा एकमात्र यही स्वार्थ निहित है कि आने वाले कुछ ही भवों में मैं इस प्रकार की उच्चतम साधना एवं ध्यानाग्नि का प्रश्रय ले सकूँ कि मेरे समस्त कर्म मलों की श्रृँखला चूर-चूर होकर मेरी शुद्ध चेतनस्वरूप आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति हो सके।

तीर्थंकर भगवन्तों एवं आगम में वर्णित मोक्षपथ की वर्तमानकालीन साधना के प्रति उनकी

अतिशयभक्तेश्चायं परिणामोऽस्ति यत् तीर्थंकराणां भगवतां यत्र पंचकल्याणकानां भूमीनां, विशेषरूपेण संस्कृतेरुद्गमस्थलीनां जन्मभूमीनां संरक्षणं विकासं प्रति च तस्याः हृदये विशेषः संकल्पो निर्मितोऽस्ति। पंचतीर्थंकराणां जन्मभूमौ शाश्वततीर्थेऽयोध्यायां, त्रयाणां तीर्थंकराणां जन्मभूमौ हस्तिनापुरे, भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूमौ राजगृह्यां भगवतो महावीरस्य च जन्मभूमौ कुण्डलपुरे यो विकासः पूज्यायाः मातुः प्रेरणया सम्पन्नोऽभवत् सः कस्यापि नेत्राणां दूरे न वर्तते। तस्याः कर्मण्यतायाः संकल्पशक्तेश्च विषये समाजः पूर्णरूपेण विश्वासयुक्तोऽस्ति यत् यदपि कार्यं माताश्रीः हस्ते गृहीष्यति तत् कार्यं निश्चितरूपेण महत् सुन्दरंव्यवस्थितरूपेणाल्पसमये एवं संपत्स्यते। अतएव पूज्यायाः मातु आह्वाने समाजोऽपि हृदयेन तदुद्देश्यात्कं कार्यं प्रति समर्पितो जायते। यथार्थमस्ति, ये वास्तवे कार्यं कृत्वा दर्शयन्ति, तान् प्रति श्रद्धाभावः सहजतयोद्भवति।

तपस्विन्या पिच्छिकया शरीरक्षतिः स्वस्थाभवत्—**जून 1992 वर्षे सरधना नगरादेका महिला हस्तिनापुरमागच्छत्। सा अत्रागत्य दर्शनं कृत्वैव गद्गद स्वरेण वक्तुं प्रारभत्–यत् मातुः पिच्छिकां येन अतिशयेन पूरितास्ति यया असाध्याः रोगाः अपि अस्याः पिच्छिकायाः स्पर्शेन दूरीभवन्ति।**

अनेकस्थानेभ्यः आगतास्तीर्थयात्रिणः भक्तगणश्च औत्सुक्यात् जिज्ञासापूर्णया दृष्ट्रया तां प्रति दृष्टुं प्रारभन्त यत् मातुः पिच्छिकायाः कमतिशयं वक्तुमियं तत्परा वर्तते। सा महिलाऽग्रेऽकथयत्–

अतिशय भक्ति का ही यह परिणाम है कि तीर्थंकर भगवन्तों के पंचकल्याणकों की भूमियों विशेषरूप से संस्कृति की उद्गमस्थली–जन्मभूमियों के संरक्षण एवं विकास के प्रति उनके हृदय में विशेष संकल्प बना हुआ है। पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्या, तीन तीर्थंकरों की जन्मभूमि हस्तिनापुर, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही एवं भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में जो विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ है, वह भला किसकी नजरों से छिपा है? अर्थात् उनकी कर्मठता एवं संकल्पशक्ति के विषय में समाज को पूर्ण विश्वास है कि जिस कार्य को माताजी हाथ में लेंगी, वह निश्चित रूप से बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित रूप में अल्प समय में ही पूर्ण हो जायेगा, इसीलिए पूज्य माताजी के आह्वान पर समाज भी हृदय से उस उद्देश्यात्मक कार्य के प्रति समर्पित हो जाता है। ठीक ही है कि जो वास्तव में कार्य करके दिखाते हैं, उनके प्रति श्रद्धा का भाव सहज ही उमड़ता है।

➢तपस्विनी की पिच्छिका से घाव ठीक हुआ–

जून सन् 1992 में सरधना से एक महिला हस्तिनापुर पधारीं, उन्होंने यहाँ आकर दर्शन करते ही गद्गद स्वर में कहना शुरू किया कि माताजी की पिच्छी में तो जादू भरा है, असाध्यरोग भी इनकी पिच्छिका स्पर्श से ठीक हो जाते हैं।

अनेक स्थानों से पधारे तीर्थयात्री एवं भक्तगण उत्सुकतावश जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखने लगे कि ये माताजी की पिच्छिका का कौन सा अतिशय बताने जा रही हैं। वे महिला आगे कहने लगीं–

मम श्वसुरः बाबूराम मधुमेहस्य रोगी अस्ति। तस्य पादे त्रिवर्षेभ्यः एको महान् व्रणं आसीत् न जानामि कतिभिश्चोपचारैः तद् व्रणं दूरं नाभवत्। येन सोऽत्यन्तमेव व्याकुलः आसीत्। गृहे एव चतुर्विंशतिहोरासमयेषु शयानः दुःखितः आसीत्। एकदा तस्य कश्चित् पुण्योदयोऽभवत्। पूज्या माता आहारचर्यायाः पश्चात् निर्वर्तिताभवत्। तदैव माता पतोल्यां स्थितस्यास्माकं गृहात् पुरतः निर्गताभवत्। पिता तत्क्षणे नमोऽस्तु इत्यकथयत्। वयं च तां श्वसुरस्य कष्टमकथयाम। तदा पूज्या माता मंत्रं पठित्वा तस्य मस्तके पिच्छिकया स्पर्शमकरोत्। तं च णमोकारमंत्रस्य मालां भाजितुमकथयत्।

आश्चर्यं किम्? तदा महान् अतिशय एव दृष्टिगोचरोऽभवत्। यदा 2–3 मासानामभ्यन्तरे एव कमप्युपचारं विनैव व्रणं शुष्कमभवत्। अधुना पिता स्वस्थो वर्तते। प्रतिदिनं मातरं स्मृत्वा परोक्षरूपेणैव तस्या वन्दनां करोति।

'गुर्दा', इत्यस्य रोगी स्वस्थोऽभवत्—**एतेनैव प्रकारेण एकस्मिन् दिने मेरठसदरनिवासी जीवनबीमा निगमस्य अधिकारी विजयकुमारः सपत्नीको हस्तिनापुरमागच्छत्। सहैव तस्याः पुत्री प्रियांगनाप्यासीत सा महत्या श्रद्धया दर्शनं कृत्वा मातरमभाषत्। किं भवती मां नाम्नाजानात्? पूज्या मात्रा तां अभिज्ञातुं मस्तिष्कं बलप्रदाने सः महानुभावः स्वयं स्व परिचयमदात्।**

अहं 1987 वर्षे स्वपुत्रीं भवत्याः आशीर्वादकामनया आनयम्। द्वादशवर्षेभ्यः सा गुर्दारोगेण पीडितासीत्। चिकित्सकः 15 अगस्त 1975 दिने पूर्णरूपेण निरीक्षणं कृत्वा

"मेरे ससुर बाबूराम जी शुगर के मरीज हैं। उनके पैर में तीन वर्ष से एक बड़ा घाव था। न जाने कितनी दवाईयाँ करने पर भी यह घाव भर नहीं रहा था जिससे वे बड़े परेशान रहते थे। घर में ही चौबिस घंटे लेटे-लेटे दुखी थे। एक दिन उनका कुछ पुण्योदय हुआ। पूज्य माताजी आहारचर्या के बाद वापस आ रही थीं, तभी मालियान मोहल्ले में स्थित हमारे घर के सामने से निकलीं। पिताजी ने उन्हें नमोऽस्तु किया और हमने माताजी से उनकी तकलीफ बताई, तब पूज्य माताजी ने मंत्र पढ़कर उनके मस्तक पर पिच्छी लगाई तथा उनसे णमोकार मंत्र की माला फेरने को कहा।

आश्चर्य क्या, महान अतिशय ही नजर तब आया, जब 2-3 माह के अंदर ही बिना किसी दवाई के घाव बिल्कुल सूख गया और अब पिता जी स्वस्थ हैं, प्रतिदिन माताजी को याद कर परोक्ष में ही उनकी भक्तिपूर्वक वंदना करते हैं।

➢गुरदे के रोगी ठीक हुये–

इसी प्रकार एक दिन मेरठ-सदर निवासी जीवन बीमा निगम के एजेंट श्री विजय कुमार जैन सपत्नीक हस्तिनापुर पधारे, साथ में उनकी सुपुत्री कु. प्रियांगना थी। वे बड़ी श्रद्धापूर्वक दर्शन करके माताजी से कहने लगे कि क्या आपने मुझे पहचाना नहीं? पूज्य माताजी द्वारा उन्हें पहचानने के लिए मस्तिष्क पर जोर डालने पर वे महानुभाव स्वयं अपना परिचय बताने लगे।

मैं सन् 1987 में अपनी बेटी को आपसे आशीर्वाद दिलवाने लाया था। 12 वर्ष से इसे गुर्दे की बीमारी थी। डाक्टर ने 15 अगस्त सन् 1975 को पूरा चेकअप करके घोषित किया कि

घोषितमकरोत् यत् सा गुर्दारोगेण पीडितास्ति। तत्पश्चात् वयं कस्यापि चिकित्सकस्य किमप्युपचारं शेषं नात्यजाम। किन्तु 1987 वर्षेऽस्याः गुर्दाद्वयं सर्वथा वृथैवाभवताम्। अहमत्यन्तमेव चिन्तितः आसम्, तदैवैकस्मिन् दिने श्रीअमरचन्द्रस्य होमब्रेडस्वामिनः प्रेरणया अहं कन्यां गृहीत्वा तेनैव सह भवत्याः समीपमागच्छम्।

भवत्येकं लघुं मंत्रं पठित्वा तस्यै प्रतिदिनं जलं दातुमकथयत्। स्व पिच्छिकया आशीर्वादमप्यदात्। तस्मात्कालात् मम पुत्री सर्वथा स्वस्था वर्तते। पुनः निरीक्षणं कारयित्वा वयमजानीम यदमुना सा केनापि रोगेण पीडिता नास्ति। सोऽकथयत् यत् मम परिवारस्य च भवतीं प्रति पूर्णा श्रद्धा विद्यते। वयं तु प्रायः भवत्याः दर्शनार्थमागच्छामः एव।

माता मन्दहास्यमकरोत्। तेभ्योजनेभ्यः कुमार्यै प्रियांगतयै च बहुमाशीर्वादं मदात्। स्व चाभिज्ञाने स्मरणशक्तिं दुर्बलामुक्त्वा खेदव्यक्तमकरोत्। यद्यपि शास्त्रीयवार्तास्तु तस्याः पंचाशत् वर्षाणामपि स्मृता सन्ति, याः कदाचित् कस्मिन्नपि ग्रन्थे अपठयम् दीर्घकालस्य पश्चादपि ताः यथावत् श्रावयति। पूज्या माता कदाचित् मितभाषायां कथयति यत् ''येन सह ममात्महितं भवति, तमेवाहं स्मरामि। शेषं सर्वं तु मह्यमनावश्यकं प्रतीयते। अतएव मम मस्तिष्कस्तान् न स्मरति।''

आशीर्वादवशात् कालात् किञ्चिन्मात्रमेव रक्षितोऽभवत्—**6 जुलाई 1992 दिने मेरठ नगरात् श्री प्रेमचन्द्रः तैलव्यापारी सपत्नीको हस्तिनापुरमागच्छत्। तेन सह तस्य भ्रातृपुत्रः सुभाष जैनो अन्याः अपि काश्चित् महिलाः आसन्। एते जनाः पूज्यायाः मातुः सान्निध्ये**

इसे गुर्दे की बीमारी है, उसके बाद हमने किसी डाक्टर का कोई इलाज बाकी नहीं छोड़ा किन्तु सन् 1987 में इसके दोनों गुर्दे बिल्कुल खराब हो गए। मैं बहुत परेशान था तभी एक दिन अमरचन्द जी होमब्रेड वालों की प्रेरणा से मैं लड़की को लेकर उन्हीं के साथ आपके पास आया।

आपने छोटा सा मंत्र पढ़कर इसे प्रतिदिन पानी देने को कहा और अपनी पिच्छी से आशीर्वाद दिया, तब से मेरी लड़की बिल्कुल स्वस्थ है पुनः चेकअप कराने पर अब इसके कोई बीमारी नहीं निकली।

उन्होंने कहा– मेरी और मेरे परिवार की आपके प्रति अगाध श्रद्धा है, हम लोग तो प्रायः आपके दर्शनार्थ आते ही रहते हैं।

माताजी मुस्कराईं और उन लोगों को एवं कु. प्रियांगना को खूब-खूब आशीर्वाद दिया तथा अपनी पहचानने में स्मरण शक्ति कमजोर कहकर खेद व्यक्त किया। वैसे उन्हें शास्त्रीय बातें तो 50 वर्ष की भी याद हैं। जो कभी किसी ग्रंथ में पढ़ी थीं, दीर्घकाल के बाद भी ज्यों की त्यों बता देती हैं। पूज्य माताजी कभी-कभी मित भाषा में कहा करती हैं कि **''जिससे मेरा आत्महित होता है मैं उसी को याद रखती हूँ, शेष सब कुछ मुझे अनावश्यक प्रतीत होता है इसीलिए मेरा मस्तिष्क उन्हें याद नहीं रखता है।''**

➢आशीर्वादवश काल से बाल-बाल बचे–

6 जुलाई 1992 को मेरठ से प्रेमचंद जैन तेल वाले सपत्नीक हस्तिनापुर पधारे, उनके साथ उनके भतीजे सुभाष जैन भी सपत्नीक तथा और भी कुछ महिलाएँ थीं। ये लोग पूज्य माताजी के

शान्तिविधानं कर्तुमुपस्थिताः आसन्। अल्पसमये वार्तालापस्य मध्ये तेऽकथयन् यत् मातः। भवत्याः आशीर्वादेन सुभाषः तस्य वधूश्च मृत्योः रक्षितौ अभवताम्।

कथं किमभवत्? तस्य प्रश्नस्योत्तरे सोऽभाषत–अधुना गतसप्ताहे एव द्विसमयस्य गम्भीराणामाघातानां पश्चात् कश्चित् स्वस्थो भूत्वा अयं भवत्याः दर्शनार्थमागच्छत्। भवत्यस्मै कण्ठे धारणायैकं यंत्रमदात्। स्व समक्षमेव रजत मंजूषायां तत् यंत्रं निर्मापयित्वा धारणमकारयत्। पुनः भवत्याः आशीर्वादं गृहीत्वैते मेरठ नगरं प्रत्यगच्छन्। तु मार्गे एकेन बसवाहनेन तस्य वाहनस्य बलात् संघातोऽभवत्। न जानीमः यंत्रं पुण्यं च समक्षमागच्छत्। एते च जनाः सुरक्षिताः अतिष्ठन्। यदा च तस्यां गम्भीरायां दुर्घटनायां तेषां रक्षणस्याशा नासीत्। केनापि प्रकारेण गृहं प्राप्यैएते अस्मानाश्रित्य यावत् बहु–अरुदन्। स्व कण्ठस्य च यंत्रं दर्शयित्वा पुनः पुनः अकथयन अद्य तु वयं मात्रा प्रदत्तेनानेनैव यंत्रेण आशीर्वादेन च रक्षिताः। अन्यथा वयं गृहं प्रति आगन्तुं सक्षमाः न भवेय। अस्याः तीव्रदुर्घटनायाः पश्चादपि कोऽपि केनाप्याघातेन पीडितो नाभवत्। मात्रं वाहनं किञ्चित् विकृतं भूत्वातिष्ठत्।

पूज्या माता अकथयत् यत् अस्यां मम किञ्चिदपि नास्ति। जिनधर्मे तस्मिन् वर्णितेषु मंत्रेषु चाद्यापि महती शक्तिर्वर्तते। यो हृदयेन एवं धारयति तस्य अकालमृत्यु सदृशाः अपि माहान्तः संकटाः दूरीभवन्ति। तवायुः कर्मशेषमासीत् अतः सुरक्षितोऽभवत। अधुना धर्मेऽचलां श्रद्धां धारयतु।

सानिध्य में शांतिविधान करने आये थे। थोड़ी देर बातचीत के दौरान बताने लगे कि माताजी! आपके आशीर्वाद से सुभाष एवं उसकी बहू मृत्यु के मुँह से बच गए।

कैसे क्या हुआ? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि अभी पिछले सप्ताह ही दो बार की गंभीर चोटों के बाद कुछ स्वस्थ होकर यह आपके दर्शनार्थ आया था। आपने इसे गले में पहनने के लिए यंत्र दिया और अपने सामने ही चांदी की डिब्बी में वह यंत्र बनवाकर पहनवाया था पुनः ये लोग आपका आशीर्वाद लेकर मेरठ के लिए वापस चले, तो रास्ते में एक बस से इनकी गाड़ी में तेज टक्कर लगी। बस, पता नहीं यंत्र और पुण्य सामने आ गया और ये लोग बच गए जबकि उस गंभीर एक्सीडेंट में इन लोगों को अपने बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। किसी तरह घर तक पहुँचकर ये हम लोगों से चिपककर खूब रोए और अपने गले का यंत्र दिखाकर बार-बार यही कहने लगे कि आज तो हमें माताजी के इसी आशीर्वाद ने बचाया है वर्ना हम घर तक वापस नहीं आ सकते थे। इस तेज टक्कर के बाद भी किसी को खरोंच तक न आई, मात्र गाड़ी कुछ खराब होकर रह गई।

पूज्य माताजी कहने लगीं–इसमें हमारा कुछ भी नहीं है, जिनधर्म और उसमें वर्णित मंत्रों में आज भी महान शक्ति है। जो हृदय से इसे धारण करता है, उसके अकाल मृत्यु जैसे महासंकट भी टल जाते हैं। तुम्हारा आयुकर्म शेष था अतः बच गए, अब धर्म में अडिग श्रद्धा रखना.....इत्यादि।

'लकवा' रोगात् स्वस्थोऽभवत्—**18 जनवरी 2006 दिने श्रद्धालुभक्तानां शृंखलायामेकः श्रावकः श्रीश्रेयांसकुमारो जैनः मातुज्ञार्नमत्याः दर्शनार्थमागच्छत्। सः स्वाभिज्ञानार्थमकथयत् यत् 10–11 वर्षाणि पूर्वमहं भयकर 'लकवा' रोगेण पीडितोऽभवम्। तदा माता मह्यमेकं वृहत् मंत्रं दत्वाकथयत् यत् एतस्य जाप्यं कृत्वा मंत्रितं जलं पिब। तेन मम रोगः सर्वथा शान्तोऽभवत्। अद्याहं सर्वथा स्वस्थोऽस्मि। अनेक बारं च मातुर्दशन–मप्यकरवम्। किन्त्वधुना कतिचिद् वर्षाणि पश्चात् दर्शनं कृत्वा स्वात्मानं सौभाग्यशालिनं मन्ये। पूज्या माताग्रेऽपि तस्मै बहु–धर्मवृद्ध्यै आशीर्वादमदात्।**

अनेक प्रकारेणास्याः जीवनस्य शताधिकाः घटनाः विद्यन्ते। याः जैनदीक्षायाः कठोरतपस्यायाः अखण्डस्य च ब्रह्मचर्यस्य प्रभावं व्यक्तीकुर्वन्ति। काश्चित् महिलास्तु पूज्यायाः मातुः शारीरिकं स्पर्शं मर्दनं कृत्वा स्व शरीस्यानेकरोगान् दूरीकृत्य अस्यै अतिशयकारिण्याः ''विशल्याया'' **उपाधिं प्राददुः।**

कुलपरम्परायाः गुरुपरम्परायाश्च सप्तपीठिकाः अपश्यत् सा—**यद्यपि साधोः पदग्रहणात् पश्चात् गृहस्थजीवनस्य सम्पूर्णाः सम्बन्धाः समाप्यन्ते, पुनरपि यथा भगवतो महावीरस्य मोक्षगमनानन्तरमपि तस्य परिचयेन सह नाथवंशः काश्यपगोत्रं, क्षत्रिय वर्णः, मातुः–पितुः पितामहस्य पितामह्याश्च नामानि जन्मभूमेर्निर्वाणभूमेश्च नामानि योज्यन्ते तेषां च वर्णनं विधीयते, तथैव साधु–साध्वीनामपि जातेर्कुलस्य च सम्बन्धोऽवश्यमेव ज्ञातव्योऽस्ति।**

➢लकवा ठीक हुआ–

18 जनवरी 2006 को श्रद्धालुभक्तों की शृँखला में एक श्रावक श्री श्रेयांसकुमार जैन जम्मूतवी से माताजी के दर्शनार्थ पधारे और वे अपनी पहचान के लिए बताने लगे कि 10-11 वर्ष पूर्व मुझे भयंकर लकवा आ गया था। उस समय माताजी ने मुझे एक बड़ा मंत्र देकर कहा था कि इसकी जाप करके मंत्रित जल पिओ। उससे मेरा लकवा बिल्कुल ठीक हो गया। आज मैं एकदम स्वस्थ हूँ और कई बार माताजी के दर्शन भी कर चुका हूँ किन्तु इस बार कई वर्ष बाद दर्शन करके आज अपने को बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ। पूज्य माताजी ने उन्हें आगे भी धर्मवृद्धि का खूब आशीर्वाद प्रदान किया।

इस प्रकार इनके जीवन की ऐसी सैकड़ों घटनाएँ हैं जो जैन दीक्षा की कठोर तपस्या एवं अखण्ड ब्रह्मचर्य का प्रभाव बतलाती हैं। कई महिलाओं ने तो पूज्य माताजी के शारीरिक स्पर्श मालिश करके अपने अनेक शारीरिक रोगों को नष्ट कर इन्हें अतिशयकारी **''विशल्या''** की संज्ञा प्रदान की है।

➢कुल परम्परा एवं गुरु परम्परा की सात पीढ़ियाँ देखी हैं इन्होंने–

यद्यपि साधु बनने के बाद गृहस्थ जीवन के सारे सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं, फिर भी जैसे भगवान महावीर के मोक्ष जाने के बाद भी उनके परिचय के साथ नाथवंश, काश्यपगोत्र, क्षत्रिय वर्ण, माता-पिता, दादी-बाबा आदि के नाम, जन्मभूमि-निर्वाणभूमि के नाम आदि का भी प्रसंगोपात्त वर्णन किया जाता है, उसी प्रकार साधु-साध्वियों के भी जाति और कुल का संबंध अवश्य ज्ञातव्य होता है।

पूज्या माता ज्ञानमती कथयति यत् यदाचार्यो वीरसागरो मह्यं अर्यिकायाः दीक्षा–प्रदानात् पूर्वं मामपृच्छत् यत् तव गोत्रं किमस्ति? तत्कालपर्यन्तमहं स्व गोत्रविषये किञ्चिन्नाजानां अतः पूज्यः आचार्य श्रीः ब्रह्मचारिणा सूरजमलेन टिकैतनगराय पत्रं लेखयित्वा पृच्छनामकरोत्। तदनन्तरमेव मया ज्ञातं यत् मम गोत्रं गोयलोऽस्ति। देशस्य कालस्य जातेश्च पूर्णां शुद्धिं ज्ञात्वैवाचार्य श्री शान्तिसागरस्य परम्परायां दीक्षा प्रदीयते। इदमेव कारणमस्त्यद्यापि सम्पूर्णायाः साधुसंस्थायाः मध्ये अस्याः परम्परायाः एकं साधु–साध्वीनां विशिष्टं गौरवपूर्णं च स्थानं विद्यते।

कुलपरम्परायाः विषये प्रश्ने सति एकदा माता स्मितेन अभाषत्– यत्, पश्य, चन्दनामते! अहं त्वामस्य कुलस्य सप्तपीठिकानां विषये ब्रवीमि–नौबतरायो जैनः प्रपितामहः, धन्यकुमारो जैनः पितामहः, छोटेलालो जैनः पिता, कैलाशचन्द्रो जैनो भ्राता, जम्बूकुमारो जैना भ्रातुः पुत्रः, अध्यात्मो जैनः पौत्रः, सम्यक् जैनः प्रपौत्रः। साऽवदत्–एततेष्वहं बाल्ये पितामहस्य धन्यकुमारस्य तु सेवामकरवम् अद्य च कैलाशचन्द्रस्य पौत्रस्य अध्यात्मस्य प्रपौत्रस्य च सम्यक् इत्यस्य धार्मिकसंस्कारान् वीक्ष्याहं प्रसन्नतामनुभवामि यत् अस्या कुलपरम्पराया सदैव साधुजीवन धारणस्य सद्गृहस्थस्य च कर्तव्यानां निर्वाहस्य परम्परा चलायमाना वर्तते अयमेव मानवजीवनस्य सारो विद्यते।

अनेनैव प्रकारेण स्वगुरुपरम्परां प्रत्यपि तस्यै महत् गौरवं विद्यते। यदहं त्रिबारं स्वजीवने चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यस्य श्री शान्तिसागरस्य दक्षिणस्य विंशतिशताब्द्याः प्रथमाचार्यस्य

पूज्य ज्ञानमती माताजी बताती हैं कि जब आचार्यश्री वीरसागर महाराज ने मुझे आर्यिका दीक्षा देने के पूर्व मुझसे पूछा कि तुम्हारा गोत्र क्या है? उस समय तक मुझे अपने गोत्र के बारे में कुछ पता नहीं था अतः गुरुदेव ने ब्रह्मचारी सूरजमल जी से टिकैतनगर पत्र लिखवाकर पुछवाया था। उसके बाद ही मुझे ज्ञात हुआ कि मेरा गोत्र गोयल है। देश-कुल-जाति की पूर्ण शुद्धि ज्ञात करके ही आचार्यश्री शांतिसागर महाराज की परम्परा में दीक्षा प्रदान की जाती है, यही कारण है कि आज भी सम्पूर्ण साधु संस्था के मध्य इस परम्परा के साधु-साध्वियों का अपना एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान है।

कुल परम्परा के बारे में पूछने पर एक दिन माताजी मुस्कराकर कहने लगीं कि देखो चन्दनामती! मैं तुम्हें इस कुल की सात पीढ़ियों के बारे में बताती हूँ– 1. नौबतराय जैन (पड़बाबा) 2. धन्य कुमार जैन (बाबा) 3. छोटेलाल जैन (पिता) 4. कैलाशचंद जैन (भाई) 5. जम्बू कुमार जैन (भतीजा) 6. अध्यात्म जैन (पौत्र) 7. सम्यक् जैन (प्रपौत्र)। वे बोलीं– इनमें से मैंने बाबा श्री धन्यकुमार जी की तो बचपन में सेवा भी की है और आज कैलाश के पौत्र अध्यात्म एवं प्रपौत्र सम्यक् के धार्मिक संस्कार देखकर भी मुझे खुशी होती है कि इस कुल परम्परा में सदैव साधु बनने की एवं सद्गृहस्थ के कर्तव्य निर्वाह की परम्परा चलती रहे, यही मानवजीवन का सार है।

इसी प्रकार अपनी गुरु परम्परा के प्रति भी उन्हें महान् गौरव है कि मैंने अपने जीवन में 3 बार चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज-दक्षिण (बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य) के दर्शन किए

दर्शनमकरवम्। तेन च मंगल उद्बोधनं, चारित्रवृद्धेश्चामूल्य प्रेरणाः प्राप्नवम्। तस्य चान्तिमां संल्लेखनां दृष्टुमहं सौभाग्यं प्राप्नवम्। तस्यैव च प्रेरणयाज्ञानुसारेणैव तस्य प्रथम पट्टशिष्येण आचार्येण श्री वीरसागरमहाराजेनाहमार्यिका दीक्षामगृह्णाम्। तस्मात् कालात् प्रारम्भादद्य पर्यन्तं शताधिकसाधुसाध्वीनां चर्यायाः दर्शनेन सहैव सा गुरुपरम्परायाः सप्तमी पीठिकाम–पश्यत्। निर्माणस्य गौरवमपि प्राप्नोत्। तेषां नामानि निम्नप्रकारेण सन्ति–1 आचार्यः श्री शान्तिसागरो महाराजः 2 आचार्यः श्री वीरसागरो महाराजः प्रथम पट्टाचार्यः 3 आचार्यः श्री शिवसागरो महाराज द्वितीयः पट्टाचार्यः 4. आचार्यः श्रीधर्मसागरो महाराजः तृतीयपट्टाचार्यः 5. आचार्यः श्रीअजितसागरो महाराजः चतुर्थः पट्टाचार्यः 6. आचार्यः श्रीश्रेयांससागरो महाराजः, पंचमः पट्टाचार्यः, आचार्यः श्रीवर्धमानसागरः पंचमःपट्टाचार्यः द्वितीयः 7 आचार्यः श्री अभिनन्दनसागरः महाराजः षष्ठः पट्टाचार्यः रूपेण वर्तमान पट्टाचार्यस्य दायित्वं निर्वहति।

एतेषु आचार्येषु स्व. श्री अजितसागरं महाराज, स्व. श्रीश्रेयांससागरं महाराज, आचार्य श्रीअभिनन्दनसागरं, आचार्य श्री वर्धमानसागरं माताश्रीः अनेकोच्चस्तरीयाणां ग्रन्थानामध्ययनमपि अकारयत्। एतासां संघस्य व्यवस्थानां ज्ञानस्य पश्चात् पूज्यायाः मातुः कथनमस्ति यत् अस्याः परम्परायाः सर्वेषां आचार्याणां मुनीनां आर्यिकाणां च संघेषु अद्य पर्यन्तमपि प्राचीनार्ष परम्परानुसारेण आहारस्य शुद्धेः, वस्त्रशुद्धेः, वर्णशुद्धयादीनां व्यवस्था पूर्णतया सुव्यवस्थितरूपेण संचालिता अस्ति। इदं सर्वं चारित्रचक्रवर्तिनो गुरुवर्यस्य दीर्घदर्शिनः शुभाशीर्वादस्य प्रतिफलमस्ति। पट्टाचार्याणां–संघनायकानां गणिनीनां मातृणां च कठोरतायाः प्रतिफलमेव ज्ञातमभवत्।

हैं, उनसे मंगल उद्बोधन और चारित्रवृद्धि की अमूल्य प्रेरणाएँ प्राप्त की हैं, उनकी अंतिम सल्लेखना देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं उनकी आज्ञानुसार ही उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण की है। तब से लेकर आज तक सैकड़ों नये साधु-साध्वियों की चर्या देखने के साथ ही उन्होंने गुरु परम्परा की सात पीढ़ियों को देखा और बनाने का गौरव भी प्राप्त किया है। उनके नाम इस प्रकार हैं–1. आचार्यश्री शांतिसागर महाराज 2. आचार्य श्री वीरसागर महाराज (प्रथम पट्टाचार्य) 3. आचार्य श्री शिवसागर महाराज (द्वितीय पट्टाचार्य) 4. आचार्य श्री धर्मसागर महाराज (तृतीय पट्टाचार्य) 5. आचार्य श्री अजितसागर महाराज (चतुर्थ पट्टाचार्य) 6. आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज (पंचम पट्टाचार्य प्रथम) तथा आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज (पंचम पट्टाचार्य द्वितीय) 7. आचार्यश्री अभिनंदन सागर महाराज (षष्ठम पट्टाचार्य के रूप में वर्तमान पट्टाचार्य का दायित्व निर्वाह कर रहे हैं)।

इन आचार्यों में से स्व. श्री अजितसागर महाराज, स्व. श्री श्रेयांससागर महाराज, आचार्यश्री अभिनंदनसागर महाराज एवं आचार्यश्री वर्धमानसागर महाराज को अनेक उच्चकोटि के ग्रंथों का अध्ययन भी कराया है। इन सभी संघ व्यवस्थाओं की जानकारी के बाद पूज्य मातुश्री का कहना है कि इस परम्परा के सभी आचार्य, मुनि एवं आर्यिका संघों में आज तक भी प्राचीन आर्ष परम्परानुसार आहार शुद्धि, वस्त्र शुद्धि, वर्ण शुद्धि आदि की व्यवस्था एकदम सुव्यवस्थित रूप से चल रही है, यह सब चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर्य के दीर्घदर्शी शुभाशीर्वाद का प्रतिफल तथा पट्टाचार्यों-संघनायकों एवं गणिनी माताओं की कट्टरता का प्रतिफल ही समझना चाहिए।

समयानुसारेण प्रायश्चित्तविषये सर्वदा सावधाना तिष्ठति—**अहं यस्मात् समयात् 1971 वर्षात् संघे प्रवेशमकरवम् तस्मात् सदैव मातुः मुखेनेदमेवाशृण्वम् यत् दीक्षायाः ग्रहणस्य पश्चात् साधोः प्रथमा दृष्टिरात्महितं प्रति भवितव्या। अतएव आचार्याः स्वाध्याय प्रतिक्रमणसामायिकादि क्रियाभिस्तेभ्यः सदैवात्मकल्याणे एव रमयितुं प्रेरणामदुः। सा यत्र एतासु क्रियासु पूर्णा जाग्रताः तिष्ठन्ति तत्रैव साऽस्मान् प्रमादिनो नो भवितुं समये–समये समस्ताः क्रियाः कर्तुं सम्बोधनं प्रददाति। अल्पायाः अपि प्रमादावस्थायां यथायोग्यं प्रायश्चित्तं ददाति। प्रतिक्रमणैः सम्बद्धानां दैवसिकं रात्रिकं पाक्षिकं चातुर्मासिवार्षिकाणां प्रायश्चित्तानां परम्परा तु प्रायः समस्तेषु साधुसंघेषु पुरातन–परम्परायाः प्रचलिताः विद्यन्ते, किन्त्वहं दीक्षायाः पश्चात् सर्वदा अपश्यम् यत् संघस्य यावतः किलोमीटरस्य विहारो भवति अर्थात् वयं यावतः किलोमीटरान् प्रतिदिनं चलामः, पूर्णतायां किलोमीटराणां गणनां कृत्वा पूज्या माता स्वयं तस्य रसपरित्यागं मंत्रजाप्यमुपवासादीनां प्रायश्चित्तं गृह्णाति। अस्मभ्यं च प्रायश्चित्तं प्रददाति। एतन्मार्गशुद्धेः प्रायश्चितं कथ्यते। यदि कदाचित् अस्मासु उपवासशक्तिर्न भवति, त्वेकस्योपवासस्य स्थाने श्वासोच्छ्वासपूर्वकं णमोकार महामंत्रस्य माला जप्तुमुपदिशति। एकां मालां 300 श्वासोच्छ्वासपूर्वकजपनेन एकस्योपवासस्य फलं प्राप्यते। अतएव प्रायश्चित्ते एकस्योपवासस्य स्थाने एकस्याः मालायाः भ्रमणस्य विधानमपि भवति।**

➢समयानुसार प्रायश्चित्त में सदैव सावधान रहती हैं–

मैंने जब से (सन् 1971 से) संघ में प्रवेश किया है, तब से सदैव पूज्य माताजी के मुँह से यही सुनती आई हूँ कि दीक्षा धारण करने के बाद साधु की प्रथम दृष्टि 'आत्महित' की ओर ही होनी चाहिए। इसीलिए आचार्यों ने स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, सामायिक आदि क्रियाओं के द्वारा उन्हें सदैव आत्मकल्याण में ही लगे रहने की प्रेरणा प्रदान की है। वे जहाँ अपनी इन क्रियाओं में पूर्ण सजग रहती हैं, वहीं हम लोगों को भी प्रमादी न बनने देने के लिए समय पर समस्त क्रिया करने हेतु सम्बोधन प्रदान किया करती हैं एवं थोड़ी सी भी असावधानी होने पर यथायोग्य प्रायश्चित्त देती हैं। प्रतिक्रमणों से संबंधित (दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं सांवत्सरिक) प्रायश्चित्तों की परम्परा तो प्रायः समस्त साधु संघों में पुरातन परम्परा से चली आ रही है किन्तु मैंने दीक्षा लेने के बाद हमेशा देखा है कि संघ का जितने किलोमीटर का विहार होता है अर्थात् हम लोग जितने किलोमीटर रोज चलते हैं, विहार पूरा होने पर सम्पूर्ण किलोमीटर की गिनती करके पूज्य माताजी स्वयं उसका रस परित्याग, मंत्रजाप्य, उपवास आदिरूप प्रायश्चित्त ग्रहण करती हैं और हम लोगों को भी प्रायश्चित्त प्रदान करती हैं, इसे ''मार्गशुद्धि'' प्रायश्चित्त कहा गया है। यदि कभी हम लोगों में उपवास की शक्ति नहीं होती है, तो एक उपवास के स्थान पर स्वासोच्छ्वासपूर्वक णमोकार महामंत्र की मालाएं जपने को बताती हैं। कहते हैं कि एक माला को 300 श्वासोच्छ्वासपूर्वक जपने से एक उपवास का फल प्राप्त होता है इसीलिए प्रायश्चित्त में एक उपवास के स्थान पर एक माला फेरने का विधान भी रहता है।

अनेनैव प्रकारेण कदाचित् ग्रीष्मे ऋतौ व्यजनस्याधः स्थितेः प्रसंगाः उपस्थिताः भवन्ति, तु समये–समये तेषामपि प्रायश्चित्तं प्रदाय कल्याणालोचनायाः सर्वदोषप्रायश्चित्तस्य विधेः पाठं कर्तुं कथयति। न केवलमेतत्, तया सहैवाहमपि अनेकशः अयोध्यादीनां मार्गे चारित्रशुद्धेः व्रतस्य मंत्राणां जाप्य कर्तुं सौभाग्यं प्राप्नवम्। तस्याः स्वचर्यां प्रति ईदृशीमवधानतां शोधविधिं च वीक्ष्य अस्मभ्यमपि निर्दोषचर्या पालनस्य प्रबला प्रेरणा प्राप्यते।

तीर्थोद्धारिकायाः रूपेण प्रसिद्धाः भूत्वा प्रकटितमभवत् व्यक्तित्वमस्याः—**यासु भूमिसु तीर्थंकराणां भगवतां गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानमोक्षकल्याणकानि च संपन्नान्यभवन् ता. संस्कृतेः धरोहररूपेण महत्यः पवित्राः भूमयः सन्ति। यतोऽद्यापि तत्र मृत्तिकासु ते पुण्यपरमाणवः उपस्थिताः विद्यन्ते ये अस्माभिः अर्चनावन्दनाभ्यां अस्मभ्यं महतः पुण्योपार्जनस्य कारणानि भवन्ति। एतेषु स्थलेषु कृतानि धार्मिकानुष्ठानानि अनन्तगुणानि फलानि प्रददति। नैतस्मिन् कोऽपि संशयः।**

विशेषरूपेण तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमयस्तु अस्माकं शाश्वत संस्कृतेरुद्गमस्थानानि विद्यन्ते यतस्तत्र जन्मगृहीत्वैव ते भगवन्तोऽसंख्यजीवानां कल्याणार्थं धर्मपंथः प्रवर्तितमकुर्वन्। जन्मग्रहणात् पश्चादेव मोक्षगतिः संभवास्ति। अतो जन्मभूमेर्महत्ता विशेषैवास्ति। सौधर्मेन्द्राः अपि स्व परिकरेण सह आगच्छन्ति भगवतो निर्वाणकल्याणकं सम्पादनहेतवेनागच्छन्ति परन्तु भगवतो गर्भस्य जन्मनश्च समये एव ते महान्तमुत्सवमायोजयन्ति। भगवतो गर्भागमनात्

इसी प्रकार यदि गर्मी में कभी पंखा आदि के नीचे बैठने वगैरह के प्रसंग आ जाते हैं, तो समय-समय पर उनका भी प्रायश्चित्त देकर कल्याणालोचना, सर्वदोषप्रायश्चित्त विधि आदि का पाठ करने को कहती हैं। इतना ही नहीं, उनके साथ-साथ मुझे भी कई बार (अयोध्या आदि के रास्ते में) चारित्रशुद्धि व्रत के मंत्रों की जाप्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनकी अपनी चर्या के प्रति ऐसी सावधानी एवं शोधनविधि देखकर हम लोगों को भी निर्दोष चर्या पालन करने की प्रबल प्रेरणा मिलती है।

➢तीर्थोद्धारिका के रूप में निखरकर आया है व्यक्तित्व जिनका–

जिन भूमियों पर तीर्थंकर भगवन्तों के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्षकल्याणक सम्पन्न हुए हैं, वे जिनसंस्कृति की धरोहरस्वरूप महान पवित्र भूमियाँ हैं, क्योंकि आज भी वहाँ की मिट्टी में वे पुण्य परमाणु उपस्थित हैं जो हम सबके द्वारा अर्चना-वंदना करने से हमारे लिए महान पुण्योपार्जन का कारण बन जाते हैं। ऐसे स्थलों पर किये गये धार्मिक अनुष्ठान अनन्तगुणा फल देने वाले होते हैं, इसमें कुछ भी संशय नहीं समझना चाहिए।

विशेष रूप से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियाँ तो हमारी शाश्वत संस्कृति की उद्गमस्थली हैं क्योंकि वहाँ जन्म लेकर ही उन भगवन्तों ने असंख्य जीवों के कल्याणार्थ धर्मपथ का प्रवर्तन किया है। जन्म लेने के पश्चात् ही मोक्ष जाना संभव है, अतः जन्मभूमियों की महत्ता विशेष ही है। सौधर्म इन्द्र भी अपने परिकर के साथ मात्र भगवान का निर्वाणकल्याणक मनाने ही नहीं आते वरन् भगवान

षट्मासेभ्यः पूर्वमेव मातुः प्रांगणे रत्नवृष्टिं कुर्वन्ति। भगवतो जन्मनः समये एव पञ्चदश वर्षाणि पर्यन्तं निरन्तरं रत्नानि वर्षयन्ति। भगवतो जन्मनगरी जन्मनः प्रासादं च स्वयमेवेन्द्राः अतिशयरूपेण सुसज्जितां कारयन्ति। अतएव जिनधर्मावलम्बिभ्यः एताः जन्मभूमयो महत्यः पूज्याः विशेषायाश्च श्रद्धायाः केन्द्राः वर्तन्ते। एवं प्रकाराः मंगलभावनाः प्रतिक्षणं स्वहृदये भावयन्ती अन्येभ्यः सर्वेभ्योऽपि अस्यैव प्रकारस्योपदेशं प्रदानं कुर्वन्ती जैनसमाजस्य वरिष्ठा साध्वी ''राष्ट्रगौरवस्वरूपिणी पूज्या गणिनी प्रमुखा आर्यिका शिरोमणिः श्री ज्ञानमती माता'' **प्राणपणेन तीर्थंकराणां भगवतां जन्मभूमीनां भव्य कल्याणकभूमीनां च विकासाय स्वयमपि कटिबद्धा वर्तते सम्पूर्णसमाजाय च अस्यैव प्रकारस्य प्रेरणां प्रददाति।**

पूज्यायाः मातुः कथनं भवति यत् यदास्माकं वासस्य गृहं पुरातनं भवति, सर्वे जनाः अत्यन्त प्रयासपूर्वकं तास्मि नवनिर्माणं विधाय नवीनतामापादयन्ति तच्च चिरस्थायि विधातुं प्रयतन्ते, पुनः तीर्थंकराणां भगवतां जिनशासने वयं रतनत्रयनिधिं प्राप्नुम। तेषां जन्मभूमीनां जीर्णोद्धाराय विकासाय चास्माकं विशेषं दायित्वमस्ति।

एतदतिरिक्तं, यदा गृहे कोऽपि वरिष्ठजनो रोगपीड़ितो भवति, तस्य वा किमप्यंगं निष्क्रियं जायते तु केनापि प्रकारेण साधनं प्राप्य तस्योपचारः क्रियते, तस्य वा निष्क्रियांगमेव प्रत्यारोपितं कारयित्वा तस्मै नवजीवनं प्रदातुं प्रयासः क्रियते न तु तस्योपेक्षा विधीयते।

के गर्भ एवं जन्म के समय से ही वे महान उत्सव मनाया करते हैं। भगवान के गर्भ में आने के 6 माह पूर्व ही माता के आँगन में रत्नों की वृष्टि प्रारंभ हो जाती है और भगवान के जन्म लेने तक 15 माह यह रत्नों की वर्षा निरन्तर होती ही रहती है। भगवान की जन्मनगरी एवं जन्ममहल को स्वयं इन्द्र अतिशयरूप से सुसज्जित कराते हैं अतः जिनधर्मियों के लिए ये जन्मभूमियाँ महान् पूज्य एवं विशेष श्रद्धा का केन्द्र सिद्ध होती हैं। इस प्रकार की मंगल भावनाओं को हर क्षण अपने हृदय में भाते हुए अन्य सभी को भी इसी प्रकार का उपदेश देने वाली जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी **राष्ट्रगौरव पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी** प्राण-प्रण से तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों एवं अन्य कल्याणकभूमियों के विकास हेतु स्वयं भी कटिबद्ध हैं एवं सम्पूर्ण समाज को भी इसी प्रकार प्रेरणा प्रदान करती हैं।

पूज्य माताजी का कहना रहता है कि जब अपने रहने का मकान पुराना हो जाता है, तब लोग अत्यन्त प्रयासपूर्वक उसमें नवनिर्माण करके नवीनता लाते हैं एवं उसको चिरस्थाई करने का प्रयत्न करते हैं, पुनः जिन तीर्थंकर भगवान के शासन में हमें रत्नत्रय निधि की प्राप्ति हुई है, उनकी जन्मभूमि के जीर्णोद्धार एवं विकास के प्रति तो हमारा विशेष ही दायित्व है।

इसके अतिरिक्त जब घर में किसी बुजुर्ग सदस्य को कोई बीमारी हो जाती है अथवा उनका कोई अंग निष्क्रिय हो जाता है तो किसी भी प्रकार से साधन बनाकर उनका इलाज किया जाता है अथवा उनका निष्क्रिय अंग भी प्रत्यारोपित करवाकर उन्हें नवजीवन देने का प्रयास किया जाता है, न कि उनकी उपेक्षा की जाती है।

एतेनैव प्रकारेण तीर्थंकराणां भगवतां कल्याणकसम्बद्धानां भूमीनां संरक्षणं, संवर्धनं, जीणोद्धारं, नवविकासं प्रति अपि अस्माकं दायित्वं वर्तते। यदि वयमेतान् तीर्थानुपेक्षामहे तदेवागतायां श्रृँखलायां दर्शयामस्तु इयमस्माकमकर्मण्यतैव भविष्यति। यस्यै वयं कदापि क्षन्तव्याः न भविष्यामः। अस्माकं पूर्वजाः अस्मभ्यं तीर्थरूपेण न्यासं समर्पयन् तु अस्यामि स्वागामिपीठिकाभ्यः तीर्थाः समर्पणीयाः विद्यन्ते।

एताः सर्वाः भावनाः स्व हृदये संयुक्ताः कृत्वा पूज्या माता भगवतां शान्तिनाथ कुन्थुनाथ अरनाथानां च जन्मभूमौ हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपस्य निर्माण द्वारेण सुन्दरं रूपं प्रादात्। भगवता वृषभदेवेन सह पंचतीर्थंकराणां जन्मभूमिमयोध्यां नवीनं स्वरूपं प्रदाय सज्जितामकरोत्। भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मभूमौ राजगृहीक्षेत्रे भगवतो विशालां खड्गासनां प्रतिमां विराजमानां कारयित्वा जनान् एतेषां तीर्थंकरजन्म भुवः उद्धारं कृत्वा एतां वार्तामकथयत्। यतो हि अत्र दर्शनार्थं समागताः अधिकांशयात्रिणः इमां भूमिं भगवतो महावीरस्य प्रथम देशनास्थलीं मत्वैव तृप्ताः भवन्ति।

यत्र तीर्थंकराणां भगवतामन्यकल्याणकभूमीनां वार्तास्ति, भगवतः पार्श्वनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकभूमौ अहिच्छत्रे एकादशशिखरैर्मण्डितस्य विशालस्य त्रिंशतचतुर्विंशति–मन्दिरस्य निर्माणं, भगवतः वृषभदेवस्य दीक्षा केवलज्ञानकल्याणकभूमौ प्रयागे इलाहाबादे तीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्य दीक्षास्थल्याः भव्यं निर्माणं, भगवतः पद्मप्रभस्य जन्मभूमेः कौशाम्ब्याः

इसी प्रकार तीर्थंकर भगवन्तों के कल्याणकों से संबंधित भूमियों के संरक्षण, संवर्धन, जीर्णोद्धार एवं नवविकास के प्रति भी हमारा पूर्ण दायित्व है, यदि हम इन तीर्थों की उपेक्षा करते हैं तो आने वाली पीढ़ियों के प्रति यह हमारी अकर्मण्यता होगी, जिसके लिए हमें कभी भी क्षमा नहीं किया जायेगा। हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए तीर्थों की धरोहर प्रदान की है, तो हमें भी अपने आगे तक की पीढ़ी को ये तीर्थ सौंपना है।

इन्हीं सब भावनाओं को अपने हृदय में संजोकर पूज्य माताजी ने भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की जन्मभूमि-हस्तिनापुर को जम्बूद्वीप के निर्माण द्वारा सुन्दर रूप प्रदान किया है। भगवान ऋषभदेव सहित पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या को नया स्वरूप देकर सजाया है, भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि-राजगृही में भगवान की विशाल खड्गासन प्रतिमा विराजमान कराकर लोगों को इस स्थान को तीर्थंकर जन्मभूमि होने की बात पुनः बताई है क्योंकि यहाँ आने वाले अधिकांशतः जैन यात्री भगवान महावीर की प्रथम देशनास्थली के रूप में ही यहाँ के दर्शन करके तृप्त हो जाते थे।

जहाँ तक तीर्थंकर भगवन्तों की अन्य कल्याणक भूमियों की बात है, भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान कल्याणक भूमि-अहिच्छत्र में 11 शिखरों से युक्त विशाल तीस चौबीसी मंदिर का निर्माण, भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षास्थली का भव्य निर्माण, भगवान पद्मप्रभ की जन्मभूमि कौशाम्बी के

प्रभासगिरितीर्थे दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणकभूमौ भगवतो विशालकायायाः प्रतिमायाः स्थापना, अन्येषां च बहूनां कार्याणां निर्माणविकास प्रेरणाःपूज्यायाः मातुः तीर्थोद्धारिकायाः स्वरूपस्य दिग्दर्शनं कारयितुं पूर्णसमर्थाः सन्ति।

एवं विधायाः तीर्थोद्धारिकायाः मातुः व्यक्तित्वं सकलरूपेण विज्ञातुं जिज्ञासा स्वाभाविकैवास्ति। परन्तु कतिभिः प्रयासैरपि शब्दानां माध्यमेन तस्याः व्यक्तित्वस्य गुणानां च पूर्णं व्याख्यानं कस्मैचिदपि सभवं नास्ति।

आचार्यः कुन्दकुन्दः इव भक्तीः प्रत्यनुरागः—**दिगम्बर जैन मुनिभिः आर्यिकाभिश्च नित्यनैमित्तिक–क्रियासु पठ्यमानासु आचार्यस्य श्रीकुन्दकुन्दस्वामिनः प्राकृतभाषायां आचार्यस्य च पूज्यपाद स्वामिनः संस्कृतभाषायां सिद्धश्रुतचारित्रादिभक्तयः बहुप्रचलिताः सन्ति। ताः सम्यक्प्रकारेण बोधयितुं च माता हिन्दीयामपि एतासां भक्तीनां पद्यानुवादं कृत्वा साधुसमाजे महान्तमुपकारमकरोत्।**

एतदतिरिक्तं साऽचिन्तयत् यत् यथा अनादिनिधने नन्दीश्वरपर्वणि आष्टान्हिकायां ''नन्दीश्वरपर्वक्रिया'' साधुभिः सम्पाद्यन्ते तस्यां च नन्दीश्वर भक्त्याः माध्यमेन सम्पूर्णस्य मध्यलोकस्य चैत्यालयानां वन्दनायाः पुण्यं प्राप्यते, तेनैव प्रकारेण सोलहकारण–दशलक्षणादि अनादिनिधनेषु पर्वसु भक्तिपाठस्य परम्परा भवितव्याः किन्तु ताः भक्तयः कुत्रापि पृथक्रूपेण न दत्ताः विद्यन्ते। अतो माता स्वयं संस्कृतभाषायां प्रायः 25 वर्षाणि पूर्वं सोलहकारणभक्तिं, दशलक्षणभक्तिं, पंचमेरुभक्तिं, सुदर्शनमेरुभक्तिं जम्बूद्वीपभक्तिं च रचयित्वा प्राकृते

प्रभासगिरि तीर्थ (दीक्षा एवं ज्ञानकल्याणक भूमि) पर भगवान की विशालकाय प्रतिमा की स्थापना एवं अन्य कितनी ही निर्माण एवं विकास प्रेरणाएं पूज्य माताजी के तीर्थोद्धारिका स्वरूप का दिग्दर्शन कराने में पूर्ण समर्थ हैं।

ऐसी तीर्थोद्धारिका माताजी के व्यक्तित्व को सकल रूप में जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है, परन्तु कितना भी प्रयास करके शब्दों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं गुणों का परिपूर्ण व्याख्यान करना किसी के लिए भी संभव नहीं है।

➢आचार्य कुन्दकुन्द के समान भक्तियों के प्रति अनुराग–

दिगम्बर मुनि-आर्यिकाओं द्वारा नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं में पढ़ी जाने वाली आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी की (प्राकृत में) और आचार्यश्री पूज्यपादस्वामी की (संस्कृत में) सिद्ध, श्रुत, चारित्र आदि दश भक्तियाँ काफी प्रचलित हैं। उन्हें ठीक से समझने-समझाने की दृष्टि से पूज्य माताजी ने हिन्दी में भी इन भक्तियों का पद्यानुवाद करके साधु समाज पर बड़ा उपकार किया है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने चिन्तन किया कि जैसे अनादिनिधन नंदीश्वर पर्व (आष्टान्हिक) में ''नंदीश्वर पर्व क्रिया'' साधुओं द्वारा की जाती है और उसमें नंदीश्वर भक्ति के माध्यम से पूरे मध्यलोक के चैत्यालयों की वंदना का पुण्य प्राप्त होता है, उसी प्रकार सोलहकारण, दशलक्षण आदि अनादि पर्वों में भक्तिपाठ की परम्परा होनी चाहिए किन्तु वे भक्तियाँ कहीं पृथक्रूप में थीं नहीं अतः माताजी ने स्वयं संस्कृत में लगभग 25 वर्ष पूर्व सोलहकारण भक्ति, दशलक्षण भक्ति, पंचमेरु भक्ति,

तासामंचलिकाः अलिखत्। याः ''मुनिचर्यायां'' ''जिनस्तोत्रसंग्रहे'' च ग्रन्थे प्रकाशिताः सन्ति। एतासां भक्तीनां पाठान् सा सोलहकारणे दशलक्षणपर्वणि सामूहिकरूपेण करोति। अतः ताः अस्माकं कण्ठस्थाः वर्तन्ते। ईदृशः भक्त्यनुरागः संभवतः सर्वसंघेषु दृष्टिं न प्राप्यते। यथा सा पर्वभिः सह प्रत्येकभगवतः सर्वेषां कल्याणकानां क्रियां, तीर्थक्षेत्र सिद्धक्षेत्राणां वन्दनाक्रियां अभिषेकवन्दनाक्रियां गुरूणां वन्दनाक्रियादि कर्तुं सदैव तत्परा भवती अस्मभ्यमपि प्रेरणां ददती कथयति यत् पंचमकाले तु अस्मभ्यं शुभक्रियाः एव कर्म–निर्जरां कारयितुं सक्षमाः विद्यन्ते। एतासु कदापि प्रमादो न विधेयः।

जिनप्रतिमानामभिषेकं दृष्टुं सा अत्यधिकमाह्लादमुत्साहंश्चानुभवति। 72 वर्षाणामायुस्यपि एका युवाशक्तिरिव प्रतिदिनं जम्बूद्वीपस्य चैत्यालयानां अन्येषां च मन्दिराणां प्रतिमानां महद्भिः कलशैः जलाभिषेकं, दुग्धाभिषेकं दृष्टुं तस्यास्तीव्रा रुचिमवलोक्य एतत्प्रतीयते यत् आचार्यस्य श्री शान्तिसागरस्य संस्काराः एवास्यामवतरिता सन्ति।

अनेनैव प्रकारेण 1008 सहस्राणां मंत्रैः सा अनेकशो अनेकभक्तैः कमलपुष्पाणि गुलाबपुष्पाणि च समर्प्य पूजामकारयत्। अद्यापि भक्तानां समयस्य पुष्पाणां च उपलब्धौ सति तस्याः भावना बलवती भूत्वा प्रभुचरणयोः समर्पिता जायते। इदमेव कारणमस्ति यत् एवंभूताः पूजाः एतस्याः सान्निध्ये विधातुं भक्ताः–श्रद्धालुभक्ताः अपि भावविह्वलाः भूत्वा पुनः पुनः तस्याः भक्त्यायोजनस्य उपयुक्तं क्षणं प्रतीक्षन्ते।

सुदर्शनमेरु भक्ति और जम्बूद्वीप भक्ति बनाकर प्राकृत में उनकी अंचलिका लिखी हैं, जो ''मुनिचर्या'' एवं ''जिनस्तोत्र संग्रह'' ग्रंथ में प्रकाशित हैं। इन भक्तियों का पाठ वे प्रत्येक सोलहकारण एवं दशलक्षण पर्व में सामूहिक रूप में करती हैं। इसलिए हम लोगों को कण्ठस्थ भी हो गई हैं। ऐसा भक्तियों के प्रति अनुराग संभवतः सब संघों में देखने को नहीं मिल सकता है, जैसा कि वे पर्वों के साथ प्रत्येक भगवान के सभी कल्याणकों की क्रिया, तीर्थक्षेत्र-सिद्धक्षेत्रों की वंदना क्रिया, अभिषेक वंदना क्रिया तथा गुरुओं की वंदना क्रिया आदि करने में स्वयं की सजगता के साथ हम लोगों को भी सदैव इन्हें करने की प्रेरणा देते हुए कहा करती हैं कि पंचमकाल में हम लोगों के लिए ये शुभ क्रियाएँ ही कर्म निर्जरा कराने में सक्षम हैं अतः इनमें कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

जिन प्रतिमाओं का अभिषेक देखने में इन्हें अत्यधिक आल्हाद और उत्साह रहता है। 72 वर्ष की उम्र में भी एक युवाशक्ति के समान रोज जम्बूद्वीप के चैत्यालयों का, अन्य मंदिरों की प्रतिमाओं का बड़े-बड़े घड़ों से जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक देखने में इनकी तीव्र रुचि देखकर ऐसा प्रतीत होने लगता है कि आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज के संस्कार ही इनमें अवतरित हो गये हैं।

इसी प्रकार से 1008 सहस्रनाम मंत्रों के द्वारा इन्होंने पचासों बार अनेक भक्तों से कमल पुष्पों और गुलाब पुष्पों को चढ़ाकर पूजा कराई है और आज भी भक्त, समय तथा पुष्पों के उपलब्ध होते ही इनकी भावना बलवती होकर प्रभुचरणों में समर्पित हो जाती है। यही कारण है कि ऐसी पूजा इनके सानिध्य में करने वाले श्रद्धालुभक्त भी भाव-विभोर होकर बार-बार उस भक्ति आयोजन के लिए उपयुक्त क्षणों का इंतजार किया करते हैं।

पूज्यायाः मातुरियं भक्तिर्निश्चितरूपेण दर्शनविशुद्धिभावनायाः द्योतिका वर्तते। यात्मानं शीघ्रमेव परमपूज्यं विधातुं माध्यमो जायते।

पावापुरी सिद्धक्षेत्रं प्रति प्रगाढा भक्तिः–**भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः कुण्डलपुरस्य जीर्णोद्धार, विकासलक्ष्येण यत्र पूज्या माता 2003–2004 वर्षे तत्र प्रवासस्यावसरं प्राप्नोत्, तत्रैव निकटवर्तिन्या निर्वाणभूमेः पावापुर्याः दर्शनं कृत्वा सा असीम आह्लादमन्वभवत्। सा 22 मासानां कुण्डलपुरस्य प्रवासस्य मध्ये 22 बारं पावापुरीमगच्छत् प्रतिमासं च तत्र जलमन्दिरं गत्वा होरासमयेषु पिण्डस्थं ध्यानं कृत्वा भगवतो महावीरस्य मोक्षगमनस्य क्षणानां स्मरणमकरोत्। अनेकशो भगवतश्चरणयोः केसरदुग्धाभ्यामभिषेकं कारयित्वा 1008 कमलानि पुष्पाणि, 1008 रत्नानि, बादाम–लवंगादीनां समर्पणं कारयित्वा संघस्थाभि ब्रह्मचारिणीभिर्भगिनीभि वृहत्पूजां आराधनामकारयत् प्रतिबारं च निर्वाणमोद– कमवश्यं समर्पितं कारयित्वा दीपावली सदृशं सुखमन्वभवत्।**

नवम्बर 2004 वर्षे तत्र स्थानात् अन्तिमबारं विहारकाले माता सहसा भावविह्वला भूत्वा भगवतो महावीरस्य चरणे गृहीत्वा अकथयत् यत् भगवन्! अहं जीवने प्रथमबारं भवतः सिद्धभूमेरतिनिकटं द्वौ चतुर्मासौ कर्तुं सौभाग्यं प्राप्नवम् अतएव अनेकबारं पावापुर्याः दर्शनं कर्तुं समर्थाभवम्। अधुना अहं एते चरणे जीवने स्यात् कदापि न प्राप्स्यामि। पुनः बारं–बारं तस्य वीरस्य चरणयोः रजः मस्तके आरोप्य स्व प्रगाढां भक्तिमदर्शयत्। अद्यापि सा पावापुरस्य

पूज्यश्री की यह भक्ति निश्चितरूप से दर्शनविशुद्धि भावना का द्योतक है, जो आत्मा को शीघ्र परमपूज्य बनाने में माध्यम बन रही है।

➢पावापुरी सिद्धक्षेत्र के प्रति अगाढ़ भक्ति–

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर के जीर्णोद्धार–विकास लक्ष्य से जहाँ पूज्य माताजी को सन् 2003-2004 में वहाँ प्रवास का अवसर प्राप्त हुआ, वहीं निकटवर्ती निर्वाणभूमि पावापुरी के दर्शन करके उन्हें असीम आल्हाद होता था। वे 22 माह के कुण्डलपुर प्रवास के मध्य 22 बार पावापुर गईं और प्रतिमाह वहाँ जलमंदिर में जाकर घंटों पिण्डस्थ ध्यान करके भगवान महावीर के मोक्षगमन के क्षणों का अनुभव करतीं। कई बार भगवान के चरणों में केशर, दूध से अभिषेक कराकर 1008 कमल पुष्प, 1008 रत्न, बादाम, लौंग आदि चढ़वाकर संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों से वृहत् पूजा-आराधना करवातीं और हर बार निर्वाणलाडू अवश्य चढ़वाकर दीपावली पर्व जैसे सुख का स्मरण करतीं।

नवम्बर 2004 में वहाँ से अंतिम बार विहार करते हुए माताजी एकदम भावविह्वल होकर भगवान महावीर के चरण पकड़कर कहने लगीं कि प्रभो! मुझे जीवन में पहली बार आपकी सिद्धभूमि के अति निकट दो चातुर्मास करने का अवसर मिला, इसीलिए अनेकों बार पावापुरी के दर्शन हो सके हैं। अब मुझे ये चरण जीवन में शायद कभी नहीं प्राप्त होंगे.....। पुनः बार-बार उन प्रभु वीर के चरणों की रज मस्तक पर लगाकर अपनी प्रगाढ़ भक्ति का परिचय प्रदान किया। आज भी

नाम ग्रहणेनैव जलमन्दिरे स्थितयोश्चरणयोः ध्याने लीना जायते। प्रायः पावापुर्याः सिद्धक्षेत्रस्य वन्दनाक्रियायामनेक भक्त्यादीनां पाठं करोति।

जिनेन्द्रभक्तेरयिप्रायः पञ्चमकाले न कोऽपि–**पूज्यायाः मातुः व्यक्तित्वस्य सौन्दर्यं तस्याः गम्भीर जिनभक्तेर्भावनायां निहितमस्ति। तस्याः कथनमस्ति यत् वर्तमाने पंचमकाले अस्मभ्यं यदि किमपि चिन्तामणिरत्नं प्राप्तं तद्स्ति जिनेन्द्रभगवतो भक्तिः। यतः तस्याः माध्यमेनैव इहलोकसम्बन्धिनीनां सर्व सुविधानां प्राप्तिभिः सहैव स्वर्गस्य मोक्षस्यापि सिद्धिर्भवति। वस्तुतो दृष्टिपाते तु पूज्यया मात्रा कृतानां कार्याणां गौरवमियं सफलता तस्याः जिनेन्द्रभक्तेरेव सुन्दरं रूपं वर्तते। आत्मकल्याणाय जिनधर्मस्य च प्रभावना हेतवे जीवनस्य प्रतिक्षणं प्रयोक्तुं सा अद्भुतक्षमतां धारयति। अनुशासनं तस्मै अतिशयं प्रियमस्ति। कर्मण्यता, एकाग्रता, विचारशीलता, दूरदर्शिता सदृशाः गुणाः सहैव आगत्य तस्यामेकत्रिताः सन्ति अतएव च जीवनपर्यन्तं प्रतिपदं च संघर्षाणां साम्मुख्यं कुर्वन्त्यपि आगमस्य पक्षं गृहीत्वा सा सदैव सुन्दरसफलतां प्राप्नोत्। अग्रिमभवेषु कठोरं तपः कृत्वा समस्तकर्मणां क्षयमैच्छत्। इयमेव भावना तस्याः हृदये प्रतिक्षणं विद्यते।**

मंत्रेषु हानिर्वृद्धिश्च घातकमस्ति। एकासत्या घटना–**एकदा राजस्थानस्यैकस्मिन्नगरे 1988 वर्षे श्रीकल्पद्रुम महामण्डलविधानस्य विशालमायोजनमभवत्। विधानस्य कर्ता एकोऽग्रप्रमुखो यजमानः लक्षाधिकरूप्यकाणि व्ययीकृत्योत्साहपूर्वकमिदमनुष्ठानमेकस्य मुनिसंघस्य सान्निध्ये**

वे पावापुर का नाम लेते ही जलमंदिर में स्थित चरणों के ध्यान में लीन हो जाती हैं और प्रायः पावापुरी सिद्धक्षेत्र की वंदना क्रिया में अनेक भक्तियों का पाठ आदि करती हैं।

➢जिनेन्द्र भक्ति से बढ़कर पंचमकाल में कुछ नहीं है–

पूज्य माताजी के व्यक्तित्व का सौन्दर्य उनकी अगाध जिनभक्ति की भावना में निहित है। उनका कहना है कि वर्तमान पंचमकाल में हमारे लिए यदि कोई चिन्तामणि रत्न है तो वह है जिनेन्द्र भगवान की भक्ति क्योंकि उसके माध्यम से ही इहलोक संबंधी समस्त अनुकूलताओं की प्राप्ति होने के साथ-साथ क्रम से स्वर्ग एवं मोक्ष की भी सिद्धि हो जाती है। वास्तव में देखा जाये तो पूज्य माताजी के द्वारा किए गए कार्यों की गौरवशाली सफलता उनकी जिनेन्द्रभक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। आत्मकल्याण एवं जिनधर्म प्रभावना हेतु जीवन के हर क्षण को प्रयोग करने की वह अद्भुत क्षमता रखती हैं। अनुशासन उन्हें अतिशय प्रिय है। कर्मठता, एकाग्रता, विचारशीलता, दूरदर्शिता जैसे गुण एक साथ आकर उनमें एकत्रित हो गये हैं और इसीलिए जीवन भर कदम-कदम पर संघर्षों का सामना करते हुए भी आगम का पक्ष लेकर उन्होंने सदैव सुन्दर सफलता प्राप्त की है। अग्रिम भवों में कठोर तप कर अपने समस्त कर्मों को क्षय कर देने की एकमात्र अभिलाषा उनके हृदय में हर क्षण विद्यमान रहती है।

➢मंत्रों में हानि-वृद्धि करना घातक है! (एक सच्ची घटना)–

एक बार राजस्थान के एक नगर में (सन् 1988 में) श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का विशाल आयोजन हुआ। विधान करने वाले प्रमुख यजमान ने लाखों रुपये खर्च करके उत्साहपूर्वक यह

कर्तुं संकल्पमगृह्णात्। संघस्य नायकस्याचार्यश्रियः आज्ञया सः 4–5 प्रतिष्ठाचार्यान् आमन्त्रितानकरोत्। पुनः शुभे मुहूर्ते ध्वजारोहणपूर्वकं तस्य महायज्ञस्य शुभारम्भोऽभवत्।

किन्तु इदं किम्? प्रथमदिनादेव विघ्नानां वर्षा प्रारभत्। न जानामि किमभवत्, यत् संघस्य साधु–साध्व्यः ध्वजारोहणे सान्निध्यं प्रदानादेव निषेधमकुर्वन्। केनापि प्रकारेणानुनय–विनयस्य पश्चात् केचित् साधवोऽगच्छन् अन्यमनस्काः इवातिष्ठन्। एवमेव विधानाचार्यगणोऽपि पृथक्–पृथक् स्व लघुसभाः आयोजयित्वा परस्परं विपक्षे वार्ताः अकुर्वन्।

केनापि प्रकारेण विधानं प्रारभत्। परदेशात् विधानार्थं समागतो मुख्याय यजमानश्रेष्ठिने महती विपत्तिरासीत्। सः बराको यावत् सामञ्जस्यं विधातुं प्रायतत्, तस्योपरि तावदेव विपत्तिः तस्य पुरतः समागच्छत्। धनं तु जलवत् प्रवाहितमभवदेव, यतो हि परग्रामे प्रतिष्ठायाः प्रश्नः आसीत्। नगरस्य कोऽपि जनो धनं विना किमपि कार्यं कर्तुं तत्परो नासीत्। नित्यं सम्पूर्णस्य ग्रामस्य प्रीतिभोजोऽभवत् सायंकालीनाल्पाहारंभोजनादपि व्ययलाध्योऽभवत्। परन्तु वराकस्य श्रेष्ठिनः कण्ठोऽधुना उखले पतितः आसीत् तु मूसलानामाघातात् स्व रक्षां कथं कर्तुं समर्थः आसीत्। तस्य पत्नी अपि तत्र सर्वैः कार्यकलापैः पीडितासीत्। किन्तु तस्यास्तत्र किमपि भाषणं नक्कार गृहे तूतीवदासीत्।

प्रतिष्ठाचार्याणामन्तर्युद्धमनेन प्रकारेण वृद्धिंगतमभूत् यत् एकं पण्डितं रात्रावेव केचित्

अनुष्ठान एक मुनिसंघ के सानिध्य में करने का संकल्प लिया था। संघ के नायक आचार्यश्री की आज्ञा से उन्होंने 4-5 प्रतिष्ठाचार्यों को आमंत्रित किया पुनः शुभ लग्न में झण्डारोहणपूर्वक उस महायज्ञ का शुभारंभ हुआ।

किन्तु यह क्या? पहले दिन से ही विघ्नों की बौछार शुरू हो गई। जाने क्या हुआ कि संघ के साधु-साध्वियों ने झण्डारोहण में सानिध्य देने को ही मना कर दिया। किसी तरह मनुहार करने पर कुछ साधु गए और उन्मनस्क से बैठे रहे। इसी प्रकार विधानाचार्यगण भी अलग-अलग अपनी नुक्कड़ सभाएँ लगाए एक-दूसरे के विपक्ष में बातें करते रहें।

किसी तरह से विधान शुरू हुआ। परदेश से विधान के निमित्त पधारे मुख्य यजमान सेठ की अच्छी आफत थी। वे बेचारे जितना सामंजस्य बैठाने की कोशिश करते उनके ऊपर उतना ही अधिक संकट आता जाता था। पैसा तो पानी की तरह से बह ही रहा था क्योंकि पराए गाँव में इज्जत का प्रश्न था। नगर का कोई व्यक्ति बिना नगद नारायण लिए एक काम करने को भी तैयार नहीं था। रोज गाँव भर का प्रीतिभोज होता और सायंकालीन अल्पाहार भोजन से कई गुना महँगा पड़ता था। किन्तु सेठ बेचारे की गर्दन चूँकि अब ऊखल में पड़ ही गई थी, तो मूसल की चोट से डर कर कहाँ जाते? उनकी सेठानी वहाँ के सारे नजारों से परेशान थीं। किन्तु उनका कुछ भी बोलना वहाँ उसी प्रकार था जैसे नक्कारखाने में तूती की आवाज।

प्रतिष्ठाचार्यों का अन्तर्युद्ध इस कदर बढ़ गया कि एक पंडित जी को रातोंरात कुछ समझदार

बुद्धिमन्तो जनाः स्वगृहणमानीया कथयन्। अन्यथा स्यात्तत्र कबड्डी क्रीडायाः प्रांगणमुपस्थितं स्यात्। तत्पश्चादेव कस्याः अपि शान्ते र्लक्षणानि दृष्टिगोचराण्यभवन्। मुख्यो यजमानः समस्ताः इन्द्राः इन्द्राण्यश्च विधानस्य जाप्यसंख्यानां वृद्धये प्रोक्ताः। किन्त्वधुना तु श्रेष्ठिनो जीवनमेव संकटापन्नमभवत्। नगरस्य केचिज्जनाः तस्य विरोधेऽभवन्। सर्वतश्च श्रेष्ठिनः निन्दामकुर्वन्।

यदप्यासीत्, शान्तेरशान्तेश्च मिश्रिते वातावरणे विधानपूर्णमभवत्। एतस्य मध्ये एव बहिर्ग्रामादागतैका विज्ञा भगिनी विधानस्य जाप्यस्य पत्रमपश्यत्। तु तस्मिन् मूलमन्त्रः एव परिवर्तितः आसीत्। सा एतस्मिन् विषये श्रेष्ठिने संकेतमकरोत्, तु सोऽवदत् यत् अत्र ज्ञानिनां साधूनां पण्डितानां च मध्येऽह किं कर्तुं शक्नोमि।

येन केन प्रकारेण सः केनचित् सह वार्तामप्यकरोत् तु उत्तरमासीत् यत् त्वं न जानासि यत् 'नमः' इत्यस्य योगे तु चतुर्थ्याः विभक्त्याः प्रयोगः एव भवति। अस्मिन् मन्त्रे च 'ह्रीं', शब्दो नास्ति, अतएव 'ह्रीं' शब्दो वर्धितो विद्यते।

मूल मंत्रः तु अयमासीत्–''ॐ अर्हत्सिद्धसयोगकेवली स्वाहा''।

तु तस्मिन् परिवर्तनं परिवर्द्धनं विधाय सः तत्र अनेकप्रकारेण प्रकाशितोऽभवत् ''ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धसयोगकेवलिभ्यो स्वाहा''।

मूलमंत्रे एवं पाठं वर्द्धनाय संशोधनाय च दुःसाहसं को विज्ञोऽकरोत् इदं तु भगवानेव जानाति।

केषांचिद्दिनानां पश्चात् श्रेष्ठिनः पत्नी पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः दर्शनार्थं हस्तिनापुरमागच्छत्

लोगों ने भगाया अन्यथा शायद वहाँ कबड्डी का मैदान बन जाता। उसके बाद कुछ शांति के लक्षण दिखे। मुख्य यजमान तथा समस्त इन्द्र-इन्द्राणियों से विधान की जाप्य संख्या बढ़ाने को कहा गया किन्तु अब सेठ जी की जान पर ही आ पड़ी। नगर के कुछ लोग उनके विरोध में हो गए और चारों ओर सेठ की बुराइयाँ करने लगे।

जो भी हो, शांति-अशांति के मिले-जुले माहौल में विधान पूर्ण हुआ। इसी मध्य बाहर से पहुँची एक विज्ञ बहन ने विधान की जाप्य का कार्ड देखा, तो उसमें मूल मंत्र ही बदल दिया गया था। उन्होंने यजमान सेठ को इस बारे में संकेत दिया, तो वे बोले कि यहाँ इतने ज्ञानी साधु और पंडितों के समक्ष मैं क्या कर सकता हूँ?

जैसे-तैसे डरते-डरते उन्होंने किसी से बात भी की तो उत्तर मिला कि तुम नहीं जानते हो, 'नमः' के योग में तो चतुर्थी विभक्ति का ही प्रयोग होता है तथा इस मंत्र में 'ह्रीं' नहीं है अतः ह्रीं शब्द बढ़ाया गया है।

मूल मंत्र तो यह था–**''ॐ अर्हत्सिद्धसयोगकेवली स्वाहा।''**

उसमें परिवर्तन परिवर्द्धन करके उसे वहाँ यूँ छपाया गया था–

''ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धसयोगकेवलिभ्यो स्वाहा।''

मूल मंत्र में यह पाठ बढ़ाने और सुधारने का दुःसाहस किस विज्ञ ने किया था यह तो भगवान जाने?

कुछ दिनों बाद सेठानी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शनार्थ हस्तिनापुर पहुँचती हैं

अश्रुपूरितनयनाभ्यां मातरं पृच्छति–मातः! मम विधाने एतानि उपद्रवाणि विघ्नानि च कथमुपस्थितानि? यदा वयं हृदयमुद्घाट्य धनं व्ययमकुर्म। पूर्णेन मनोयोगेन च अनुष्ठानमकुर्म।

पूज्या माता एकदा करुणामयनेत्राभ्यां तां प्रत्यपश्यत् आशीर्वादं च अदात्। अकथयच्च– पुत्रि! एतस्मिन्न कोऽपि युष्माकं दोषः। अशुद्धमंत्रस्य जाप्य विधानेनैव अनर्थोऽयमुपस्थितोऽभूत्। कल्पद्रुमविधानस्य अयं त्रयोदशतमः मंत्रः महता आचार्येण रचितोऽस्ति। एतस्मिन् हानिर्वृद्धिर्वा कदापि न करणीया विद्यते। सा अकथयत् यत् कानिचित् दिनानि पूर्वमेव मम समीपमपि कल्पद्रुमविधानमभवत्, तस्य विधातारः सर्वे यजमानाः बहु–चारुसफलतां प्राप्य प्रसन्नाः सन्ति।

तीर्थक्षेत्रसमितये मातुर्विशेषप्रेरणा–**यद्यपि समाजे शताधिकाः सहस्राधिकाः संस्थाः स्व–स्व स्तरेण धर्मप्रभावनायाः साहित्यप्रकाशनस्य शोधकार्यस्य तीर्थनिर्माणादीनां कार्याणि कर्तुं व्यस्ताः सन्ति, किन्तु पूज्यायाः मातुः कथनमस्ति यत् ''भारतवर्षीय दिगम्बरजैनतीर्थसमिति'' एका महत्वपूर्णा संस्था वर्तते। भारतवर्षस्य समस्तानां तीर्थक्षेत्राणां संरक्षणमस्याः समितेर्विशेषं दायित्वमस्ति। अस्य दायित्वस्य निर्वाहे यदि कुत्रापि कापि शिथिलतागच्छति तु तस्या हानेः परिणामं सर्वः समाजः भोक्तुं विवशो भवति। अतएव अस्याः समितेः पदाधिकारिणः अत्यन्तमेवोदाराः व्यापकदृष्टिकोणवन्तश्च भवितव्याः।**

यदि कदाचित् कस्यापि तीर्थस्य विषये सन्देहस्य विवादस्य वा स्थितिः समाजे उत्पन्ना जायते, तु एतस्यां परिस्थित्यां तीर्थक्षेत्रसमितेः पदाधिकारिणः समीपे सम्पूर्णानां साधुसमूहानां

और अश्रुपूरित आँखों से माताजी से पूछने लगती हैं-हे माता! मेरे विधान में इतने उपद्रव, संकट क्यों आए, जबकि हमने दिल खोलकर खर्च किया तथा पूर्ण मनोयोग से अनुष्ठान किया था?

पूज्य माताजी ने एक बार करुणाभरी दृष्टि से उनकी ओर देखा, आशीर्वाद दिया पुनः कहने लगीं–पुत्री! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। गलत मंत्र का जाप करने के कारण यह सब अनर्थ हुआ है। कल्पद्रुम विधान का यह 13 अक्षरी मंत्र महान आचार्य द्वारा बनाया हुआ मंत्र है, इसमें हानि, वृद्धि कथमपि नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्व ही मेरे पास भी कल्पद्रुम विधान हो चुका है, उसे करने वाले सभी यजमान खूब अच्छी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

➢तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए माताजी की विशेष प्रेरणा–

यूँ तो समाज में सैकड़ों-हजारों संस्थाएँ अपने-अपने स्तर से धर्मप्रभावना, साहित्यप्रकाशन, शोधकार्य, तीर्थ निर्माण आदि के कार्य कर रही हैं किन्तु पूज्य माताजी का कहना है कि ''भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है। भारतवर्ष के समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों का संरक्षण करना इस कमेटी का प्रमुख दायित्व है, इस दायित्व के निर्वाह में यदि कहीं कोई शिथिलता आती है तो उनकी हानि का दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है। इसलिए इस कमेटी के प्रमुख पदाधिकारी अत्यन्त उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण वाले होना चाहिए।

यदि कदाचित् किसी तीर्थ के बारे में सन्देह या विवाद की स्थिति समाज में उत्पन्न हो जाती है, तो ऐसी परिस्थिति में तीर्थक्षेत्र कमेटी को सम्पूर्ण साधु समूह और समाज की मीटिंग किये बिना

समाजस्य च सभायाः आयोजनं विना कदाप्येकांकिनं निर्णयं गृहीत्वा कदापि कमपि तीर्थमपनेतुं नवस्य च तीर्थस्य स्थापनायाः कोऽप्यपि अधिकारो नास्ति। प्रत्युत विवादस्य स्थित्यां द्वयोस्तीर्थयोः स्वीकृतिस्तु भवेत्। अनेनैव समाजस्य शान्तिं संघटनं च भवितुं शक्यते।

समये–समये अस्य प्रकारस्य सर्जनात्मिकां प्रेरणां माता ज्ञानमती स्वर्गीयसाहूशान्ति–प्रसादस्य, स्वर्गीयस्य साहूश्रेयांसप्रसादस्य, स्वर्गीयस्य साहूअशोककुमारस्य स्वर्गीयस्य च साहूरमेशचन्द्रस्य ये तत्कालीनाः तीर्थक्षेत्रसमितेरध्यक्षाः आसन्, समीपे प्रैषयत्। अध्यक्षाय श्री नरेन्द्रकुमारसेठी महोदयाय अपि इमामेव प्रेरणां प्रदाय सदैवोत्साहितमकरोत्। अस्मिन् विषये मातुः व्यापकं दृष्टिकोणं अस्मात् कारणात् वर्तते यत् यदि अन्याः संस्थाः कदापि निष्क्रियाः भवन्ति कांश्चित् त्रुटिं च कुर्वन्ति, एकांगिभि कार्यकलापैः स्व पृथक्स्थानं निर्धारयन्ति, तु समाजिकरूपेण तावती हानिर्नभवति किंतु, ''तीर्थक्षेत्र समिते'' निष्क्रियता, एकांगिता वा कस्यांचित् मात्रायां त्रुटिरपि भाविपीठिकायै अभिशापो भवितुं शक्यते। येषां च फलानि पूर्वस्मिन्नपि दृष्टान्यभवन्, यतः भारतवर्षे यान्यपि तीर्थक्षेत्राणि सन्ति, तानि न केवलं जैनसमाजाय, परन्तु सम्पूर्ण विश्वस्य अमूल्य निधयः सन्ति सर्वस्वानि च सन्ति। जैन धर्मस्य तु आधाराणि प्राणाश्च सन्ति।

विद्वद्भ्यः आगमनिष्ठा प्रेरणा—**पूज्या माता ज्ञानमती स्व 54 वर्षीये संयमितजीवने अनेकमहतां विदुषां शास्त्रीयज्ञानेन तेषां च विविधमान्यताभि सम्यक्तया परिचिता विद्यते। अतो वर्तमानस्य प्राध्यापकविदुषां भिन्नभिन्नं तर्कपूर्णं दृष्टिकोणमवलोक्य सा प्रायः**

कभी एकांगी निर्णय लेकर किसी तीर्थ को हटाने या नये तीर्थ की स्थापना करने का अधिकार कदापि नहीं है। प्रत्युत् विवाद की स्थिति में दोनों तीर्थों को भले ही स्वीकार किया जा सकता है, इसी से सामाजिक शांति एवं संगठन बना रह सकता है।

समय-समय पर इस प्रकार की सृजनात्मक प्रेरणा पूज्य माताजी ने स्व. साहू शांतिप्रसाद जैन, स्व. साहू श्री श्रेयांस कुमार जैन, स्व. साहू श्री अशोक कुमार जैन एवं स्व. साहू श्री रमेशचंद जैन (तत्कालीन अध्यक्ष) को भिजवाई हैं तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जैन सेठी को भी यही प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्होंने सदैव उत्साहित किया है। इस विषय में माताजी का व्यापक दृष्टिकोण इसलिए रहता है कि अन्य संस्थाएँ यदि कभी निष्क्रिय हो जाती हैं या कुछ गलती भी कर बैठती हैं अथवा एकांगी कार्यकलापों से अपना स्थान बना लेती हैं, तो भी सामाजिकरूप से उतना नुकसान नहीं होता है, किन्तु ''तीर्थक्षेत्र कमेटी'' की निष्क्रियता, एकांगीपना या किंचित् मात्र गलती भी भावी पीढ़ी के लिए अभिशाप बन सकती है, जिसके नतीजे पूर्व में देखे भी जा चुके हैं। क्योंकि भारत में जितने भी दिगम्बर जैन तीर्थ हैं, वे केवल जैन समाज के लिए ही नहीं, सारे विश्व के लिए अमूल्य धरोहर हैं, निधि हैं और सर्वस्व हैं तथा जैनधर्म के तो आधार और प्राण हैं।

➢विद्वानों के लिए आगमनिष्ठ प्रेरणा–

पूज्य माताजी अपने 54 वर्षीय संयमी जीवन में अनेक बड़े-बड़े विद्वानों के शास्त्रीय ज्ञान एवं उनकी विविध मान्यताओं से भली भांति परिचित हैं इसीलिए वर्तमान के प्रोफेसर विद्वानों के भिन्न-

कथयितुमारभते यत् प्राचीनविद्वांसो यथा पण्डित इन्द्रलालः शास्त्री, पण्डितसुमेरचन्द्रो–दिवाकरः, पण्डितखूबचन्द्रः शास्त्री, पंडितो मक्खनलालः शास्त्री, पण्डितो लालारामः शास्त्री, पण्डितः पन्नालालः सोनी आदयः अस्माभिः सहोपविश्यैवग्रन्थानां प्रमाणानुरूपेणैव कस्यापि विषयस्य निर्णयमकुर्वन् किन्तु अधुना तु केचिद् विद्वांसः प्रान्तीयपरम्परायाः निजमान्यतानुसारेण समाजेन सहैव साधूनपि चालयितुमिच्छन्ति। वस्तुतो दृष्ट्व्यं यत् विद्वांसः सरस्वती पुत्राः कथ्यन्ते अतस्तेषां कर्तव्यमिदमस्ति यत् प्राचीनार्षग्रन्थान् सर्वतोमुखीं दृष्टिं प्राचीनगुरुपरम्परां च ध्याने कृत्वैव सर्व विषयाणां निर्णयं कुर्वन्तु।

स्वसान्निध्ये संपद्यमानेषु शिविरेषु संगोष्ठीसु च समागतेभ्यः विद्वद्भ्यः मातेयमेव प्रेरणां प्रददाति। तस्याः फलमस्ति यत् विद्वांसः समाजस्य दिशा निर्देशकाः भवन्ति। अतस्ते सर्वप्रथमं आत्मनि सदाचारिणोव्रतिनः निष्पक्षवक्तुश्च रूपेण जिनवाण्याः चतुर्नियोगानुसारेण वस्तुतत्वस्य व्याख्यानं कुर्युः। विवादास्थित्यां उत्पन्ने सत्यपि आगमस्य वर्तमानप्रान्तीय–परम्परायाश्च द्वयोरेव कथनं तेभ्यः शोभास्पदं विद्यते।

अनेनैव प्रकारेण ज्ञानमती माता कथयति यत् वर्तमानस्य तेरह–बीसपंथ परम्परायां विभक्तान् साधुसाध्व्यश्च समाजे सामंजस्यस्थितिं रचनायै कस्मिन्नपि एकविषये आकर्षणं विकर्षणं वा न कुर्युः। स्व मान्यतां च आगमानुकूलां स्थापयेयुः।

भिन्न तर्कपरक दृष्टिकोण देखकर वे प्रायः कहने लगती हैं कि प्राचीन विद्वान् जैसे पं. इन्द्रलाल जी शास्त्री, पं. सुमेरचंद्र दिवाकर, पं. खूबचंद शास्त्री, पं. मक्खनलाल शास्त्री, पं. लालाराम जी शास्त्री, पं. पन्नालाल जी सोनी आदि तो हम लोगों के साथ बैठकर आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणानुरूप ही किसी विषय का निर्णय किया करते थे किन्तु अब तो कुछ नये विद्वान प्रान्तीय परम्परा और निजी मान्यता के अनुसार समाज के साथ-साथ साधुओं को भी चलाना चाहते हैं। वास्तव में देखा जाये तो विद्वान् चूँकि सरस्वती पुत्र कहे जाते हैं, इसलिए उनका कर्तव्य यही है कि प्राचीन आर्षग्रंथ, सर्वतोमुखीदृष्टि एवं प्राचीन गुरुपरम्परा को ध्यान में रखकर ही सभी विषयों का निर्णय करें।

अपने सानिध्य में होने वाले शिविर, सेमिनारों में पधारने वाले विद्वानों को पूज्य माताजी यही प्रेरणा प्रदान करती हैं। उनका कहना है कि विद्वान् लोग समाज के दिशा निर्देशक होते हैं, इसलिए उन्हें सर्वप्रथम स्वयं में सदाचारी, अणुव्रती और निष्पक्ष वक्ता के रूप में जिनवाणी के चारों अनुयोगों के अनुसार वस्तुतत्व का व्याख्यान करना चाहिए। विवाद की स्थिति उत्पन्न होने पर भी आगम और वर्तमान प्रान्तीय परम्परा दोनों का कथन करना ही उनके लिए शोभास्पद है।

इसी प्रकार ज्ञानमती माताजी कहती हैं कि वर्तमान की तेरह और बीसपंथ दोनों परम्परा में विभक्त साधु-साध्वियों को भी समाज में सामंजस्य की स्थिति बनाये रखने हेतु किसी एक विषय में खींचतान नहीं करना चाहिए तथा अपनी मान्यता को आगम के अनुकूल ही बनाना चाहिए।

एकस्याः अन्तर्वेदनायाः स्पष्टीकरणम्—**अत्र 15–20 वर्षेभ्यः समाजे एको विवाद उत्पन्नोऽस्ति यत् अंकलीकर परम्परायाः कतिचित् साधवः साध्व्यश्च चारित्रचक्रवर्तिनमाचार्य शान्तिसागरं आदिसागरमुनिराजस्य शिष्यं कथयित्वा आचार्यमादिसागरमेव विशंतिशताब्द्याः प्रथमाचार्य प्रचारितं कुर्वन्ति। यं दृष्ट्वा श्रुत्वा च मातुर्हदयेऽत्यन्तं खेदो जायते। यतः ता संघे आचार्य श्रीमहावीरकीर्तिमहाराजादीनां मुखेन ईदृश्यः वार्ताः नाशृणोत्। यतोऽयं निर्विवादितं सत्यमस्ति यत् श्रीशान्तिसागरो महाराजः मुनेः श्री देवेन्द्रकीर्ते पादमूले क्षुल्लकस्य मुनेश्च दीक्षा गृहीत्वा विशंतिशताब्द्याः प्राचीनाचार्यरूपेण प्रसिद्धिं प्राप्नोत्। अस्मिन् विषये समये–समये अनेकै मुनिभि आर्यिकाभिः विद्वद्भिश्च विभिन्नानि पुस्तकानि लेखाश्च प्रकाशिताः विद्यन्ते। एवं भूते वातावरणे साधुसाध्वीनां पारस्परिकं मनोमालिन्यमवलोक्य पूज्यायाः मातुरिदमेवकथनमस्ति यत् अंकलीकर परम्परायाः सर्वे साधवः साध्व्यश्च स्वतन्त्ररूपेण आचार्य आदिसागरस्य आचार्यमहावीरकीर्तेश्च प्रचारं–प्रसारं कुर्वन्तु, तस्याः परम्परायाः संरक्षणं संवर्धनं च कुर्वन्तु नास्मभ्यं काप्यापत्तिरस्ति। किन्तु आचार्यशान्तिसागरं आदिसागरस्य शिष्यः गुरुरादिकं न विलिख्य तस्यास्तित्वं स्वतन्त्रं एव रक्षन्तु। अंकलीकरपरम्परायां तस्य चित्रं नाम वा न प्रकाशयेयुः।**

तस्याः कथनमस्ति यथा वयं भवतः पितरं स्व पितुः पुत्रं कथयामस्तु भवान् कीदृशं अनुभवं करिष्यति। असत्यमेव प्रतीतं भविष्यति। यतोऽस्माकं पितुः भवतश्च पितुरस्तित्वं

➢एक अन्तर्वेदना का स्पष्टीकरण–

इधर 10-15 वर्षों से समाज में एक विवाद उत्पन्न हुआ है कि अंकलीकर परम्परा के कतिपय साधु-साध्वी चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज को आचार्य आदिसागर मुनिराज का शिष्य कहकर आदिसागर जी को बीसवीं सदी का प्रथम आचार्य प्रचारित करते हैं, जिसे देख-सुनकर माताजी को अत्यन्त खेद होता है क्योंकि उन्होंने संघ में आचार्यश्री महावीरकीर्ति महाराज आदि के मुख से ऐसी बातें कभी सुनी नहीं। चूँकि यह निर्विवादित सत्य है कि शांतिसागर महाराज ने मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी से क्षुल्लक एवं मुनिदीक्षा लेकर बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है। इस विषय में अनेक मुनि, आर्यिका, विद्वानों द्वारा समय-समय पर विभिन्न पुस्तकें एवं लेख आदि प्रकाशित हुए हैं। ऐसे वातावरण में साधु संघों के पारस्परिक मनोमालिन्य को देखकर पूज्य ज्ञानमती माताजी का यही कहना रहता है कि अंकलीकर परम्परा के सभी साधु-साध्वी स्वतंत्ररूप से आचार्य आदिसागर जी, आचार्य महावीर कीर्ति जी आदि का प्रचार-प्रसार करें, उस परम्परा का संरक्षण-संवर्धन करें, हमें कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु आचार्य शांतिसागर महाराज को आदिसागर जी का शिष्य या गुरु आदि कुछ न लिखकर उनके अस्तित्व को स्वतंत्र रहने दें और अंकलीकर परम्परा में उनका फोटो या नाम न जोड़ें।

उनका मानना है कि जैसे हम यदि आप के पिता को अपने पिता का पुत्र कहें तो आपको कैसा लगेगा? असत्य लगेगा न, क्योंकि हमारे पिता और आप के पिता दोनों का अस्तित्व अलग-अलग

पृथक्–पृथक् अस्ति। द्वावेव स्वकुलपरम्पराया: यथायोग्यामभिवृद्धिं कुरुतः। तेनैव प्रकारेण चारित्रचक्रवर्तिनः आचार्यस्य शान्तिसागरस्य आचार्यश्रीआदिसागरस्य सत्ता–परम्परा पृथक्–पृथगेव मन्तव्य। न तु आचार्यः आदिसागरः आचार्यस्य शान्तिसागरस्य गुरुरासीत् न आचार्यशान्तिसागरः आचार्यादिसागरस्य गुरुरासीत्। कमपि कस्यापि गुरोः शिष्यो वा उक्त्वा मात्रं अविनयस्य अवर्णवादस्य वा दोषो जायते। न च पुण्य संपादनं भवति।

अनेनैव प्रकारेण सर्वेभ्यः साधुसंघेभ्यो माता सदैवेदमेव कथयति यत् हुण्डावसर्पिणी कालस्य दोषवशादेव वर्तमानयुगे अनादिचतुर्विध संघपरम्परायां कतिचित् मतभेदाः पंथभेदाश्चाजायन्त। पुनरपि यदि संघनायकाः उदारतापूर्वकं स्वं–स्वं संघं सञ्चालयन्तः स्व गुरुपरम्पराया: प्रसिद्ध्या शिष्य परम्परायाश्च अभिवृद्ध्या सह जिनधर्मस्य प्रभावनां कुर्वन्तु, किन्तु अन्यस्य गुरुपरम्परादिषु कुठाराघातं न कुर्वन्तु, अनेन संघ समन्वयेन सह सामाजिक–वातावरणमत्यन्तमेव सुखदं, सुन्दरं प्रेरणाप्रदं च भविष्यति। अर्थात् सत्यं सत्यरुपेणैव प्रकाशितं कृत्वा सर्वे मात्रं जिनशासनस्य प्रभावनायाः एवं लक्ष्यं रक्षेयुः। तदैव मतभेदो मनोभेदाश्च स्थानं न ददाति। 'संघे शक्तिः कलौ युगे' इत्यस्य संदेशोऽपि समाजे प्रसरति।

पुण्यात् ईर्ष्यां न कृत्वा आदर्शः गृहीतव्यः—**ये स्वजीवने एतैर्महद्भिः पुरुषार्थैः तैरुपार्जितैश्च पुण्यै हीनाः भवन्ति ते केचिद् दिग्भ्रमिताः जनाः कदाचित् ताः उच्चताः नावगन्तुं समर्थाः**

है, दोनों अपनी-अपनी कुल परम्परा की यथायोग्य अभिवृद्धि कर रहे हैं। उसी प्रकार चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज और आचार्यश्री आदिसागर महाराज (अंकलीकर) दोनों की सत्ता-परम्परा अलग-अलग ही मानना चाहिए। न तो आदिसागर जी शांतिसागर जी के गुरु थे और न शांतिसागर जी महाराज आदिसागर जी के गुरु थे, किसी को किसी का गुरु या शिष्य कहकर मात्र अविनय और अवर्णवाद का दोष ही लगता है न कि पुण्य का संपादन होता है।

इसी प्रकार सभी साधु-संघों के लिए माताजी सदैव यही कहा करती हैं कि हुण्डावसर्पिणी काल के दोषवश ही वर्तमान युग में अनादि चतुर्विध संघ परम्परा में कुछ मतभेद, पंथभेद आदि उत्पन्न हो गये हैं। फिर भी यदि संघ के नायक उदारतापूर्वक अपने-अपने संघों का संचालन करते हुए अपनी गुरु परम्परा की प्रसिद्धि एवं शिष्य परम्परा की अभिवृद्धि के साथ जिनधर्म की प्रभावना करें किन्तु दूसरे की गुरु परम्परा आदि पर कोई कुठाराघात न करें, इससे संघ समन्वय के साथ सामाजिक वातावरण बहुत ही सुखद, सुन्दर एवं प्रेरणादायी बनेगा अर्थात् सत्य को सत्यरूप में ही उजागर करके सभी को मात्र जिनशासन की प्रभावना का ही लक्ष्य रखना चाहिए तभी मतभेदों में मनभेद को स्थान नहीं मिल पाता है और "कलौ संघे शक्तिः" का संदेश भी समाज में प्रसारित होता है।

➢पुण्य से ईर्ष्या न करके आदर्श को ग्रहण करें–

जो अपने जीवन में ऐसे महान पुरुषार्थ एवं उससे उपार्जित पुण्य से अस्पर्शित रहते हैं, ऐसे कुछ दिग्भ्रमित लोग कभी-कभी इन ऊँचाइयों को नहीं समझ पाते हैं और दीर्घकालीन तपस्या से

भवन्ति, दीर्घकालीनया च तपस्यया प्राप्तैः पुण्यानां प्रतापैः पूज्यया मात्रा सम्पाद्यमानानां चामत्कारिणां निर्माणकार्याणां प्रभावनात्मकानां च कार्यक्रमाणां सफलतां वीक्ष्य श्रुत्वा च यत्र यदा कदा प्रलापं कुर्वन्ति, तत्रैवासंख्यजनाः प्रशंसां साधुवादं च कुर्वन्तः भावविह्वलाः भवन्तो दृष्टिमायान्ति। एतत्सर्वं तेषां स्व–स्व पापकर्मणां पुण्यकर्मणां चोदयः मन्तव्यः। यतो हि महत्कार्येषु संलग्नाः सन्ताः अस्माकं ईर्ष्यायाः द्वेषस्य वा ना किन्तु साधुवादस्य पात्राणि भवन्ति। यत्र तेषामनुमोदना किञ्चित् कार्यं विनैव अस्माकं पुण्यं सहस्रगुणं वर्धयति तत्रैव वृथैव प्रलापः ईर्ष्या च प्राणिनां अवनतिमपि आश्वस्तं कर्तुं शक्नोति। दुराग्रहान् परित्यज्य स्वमानसमनेन प्रकारेण व्यवस्थित करणीयं यत् यदि वयं अधिकं विधातुं समर्थाः न स्मः तु समाजाय स्वकर्मण्यतया माध्यमेन महान्त न्यासं प्रदातृभ्यः महद्भ्यः जनेभ्यः अनुमोदनां कुर्याम यदि अयमपि संभवो नास्ति तु न्यूनातिन्यूनं वृथैव निन्दा कण्टकान् विकीर्णान् कर्तुं दुष्प्रयासं न कुर्याम। प्रारम्भादेव गुणिजनानां गुणग्रहणस्य यो भावोऽस्माकं शाश्वत संस्कृत्या अस्मासु आरोप्यते, तमंगीकृत्य पुण्यात् ईर्ष्यां न किन्तु आदर्शं गृहीतुं प्रयासः कर्तव्यः। विश्वास्मिन् प्राचीनतम, सन्नपि जैनधर्मस्य प्रकाशः केवलं खद्योतवत् दृष्टिमायाति अतः एतस्य महतो धर्मस्य छत्रछायायां मोक्षमार्गस्य साधकानामस्माकं सर्वेषां कृतज्ञता रूपेणेदमेव कर्तव्यमस्ति यत् वयं स्वशक्त्यनुसारेण अस्माभिः यापि संभवा भवेत् सा यथार्था रचनात्मिका धर्मप्रभावना कर्तव्या। कार्ये च संलग्नान् महापुरुषान् प्रति सदैवादरभावो दर्शनीयः। पूज्या

प्राप्त पुण्य के प्रताप से पूज्य माताजी द्वारा सम्पन्न कराये जा रहे चमत्कारिक निर्माण एवं प्रभावनात्मक कार्यकलापों को देख-सुनकर जहाँ यद्वा-तद्वा प्रलाप करने लगते हैं, वहीं असंख्य लोग प्रशंसा और साधुवाद देते हुए भावविह्वल होते देखे जाते हैं, यह सब उनके अपने-अपने पाप-पुण्य कर्म का ही उदय मानना पड़ेगा क्योंकि महान कार्यों में लगे हुए संत हमारे ईर्ष्या-द्वेष के नहीं वरन् साधुवाद के ही पात्र होते हैं। जहाँ उनकी अनुमोदना बिना कुछ किए भी हमारे पुण्य को सहस्रगुणा वर्धित कर देती है, वहीं व्यर्थ प्रलाप एवं ईर्ष्या प्राणी की अवनति को भी आश्वस्त कर सकती है। दुराग्रहों को छोड़कर अपने मानस को इस प्रकार सुव्यवस्थित करना चाहिए कि यदि हम स्वयं बहुत अधिक करने में समर्थ नहीं हैं, तो समाज को अपनी कर्मठता के माध्यम से महान धरोहर प्रदान करने वाले महान व्यक्तित्वों की अनुमोदना करें और यदि इतना भी न हो सके, तो कम से कम व्यर्थ निंदा के कंटकों को विकीर्ण करने का दुष्प्रयास तो न करें। प्रारंभ से ही गुणीजनों के गुणों को ग्रहण करने का जो भाव हमारी शाश्वत संस्कृति द्वारा हममें आरोपित किया जाता है, उसको अपनाते हुए पुण्य से ईर्ष्या नहीं वरन् आदर्श को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। विश्व में प्राचीनतम होते हुए भी जैनधर्म का प्रकाश मात्र जुगनू की भाँति ही देखने में आता है अतः इस महान धर्म की छत्रछाया में मोक्षमार्ग को प्राप्त करने वाले हम सभी का कृतज्ञता रूप में यही कर्तव्य है कि हमें अपनी शक्ति के अनुसार जितनी हो सके, उतनी सच्ची रचनात्मक धर्मप्रभावना करनी चाहिए और कार्य में संलग्न महापुरुषों के प्रति सदैव आदरभाव रखना चाहिए।

गणिनी ज्ञानमती माता स्व दीर्घे तपस्विजीवने एतस्मै एव सूत्रस्य परिपालनं कुर्वन्ती सदैव सर्जने स्वशक्त्याः सदुपयोगमकरोत्। परनिन्दायां च कदापि स्व क्षणं विनष्टं नाकरोत्। अस्माकमिदं महत्तमं सौभाग्यमस्ति यत् एवं विधस्य महतः आत्मनः साक्षात् सान्निध्य–मस्मभ्यमस्मिन् कलिकालेऽपि सुलभमस्ति। पूज्यायाः मातुश्चरणकमलयोः बारं–बारं अभिवन्दनं कुर्वन्तीमेवमेव हार्दिकीं प्रार्थना करोमि यदि यं पुण्यधारा निरन्तरमनेनैव विधिना अस्मान् सिक्तान् करोतु।

जन्मदात्र्याः आर्यिकायाः रत्नमत्याः विनम्रता—**सांसारिक दृष्ट्या यद्यपि काऽपि सन्ततिः मातुः पितुश्च ऋणं कदापि प्रदातुं न शक्नोति, किन्तु ज्ञानमत्याः मातुः तस्याश्च जन्मदात्र्याः आर्यिकायाः श्री रत्नमत्याः मातुः जीवनं पारस्परिकोपकाराणां जीवन्नुदाहरणमस्ति।**

अहं तस्याः विषये एकस्मिन् स्थाने अलिखम्–''सन्तानं मातु सत्संगे पालितं भूत्वा शैशवमुत्तरति, विधे र्विधानं पश्यतु इयं मातापि स्वयं तं प्रणमति। एतासामद्भुतानां वार्तानां साक्षात् यदि दर्शनं क्रियते, तु रत्नमत्याः विनम्रतां पश्यतु ज्ञानमतीं प्रति।।''

अर्थात् 1952 वर्षे पुत्र्यै मैनायै दीक्षा प्रदानस्य अनुमतेः प्रदानान्तरं माता मोहिनी 18 वर्षाणां पश्चात् गृहस्थोचितानां कर्तव्यानां निर्वाहस्य पश्चात् तस्याः पुत्र्या जगन्मातुं रूपेण प्रतिष्ठायाः ज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणां प्राप्य 1971 ख्रिष्टाब्दे पूज्याचार्य श्री धर्मसागरस्य करकमलाभ्यां आर्यिका दीक्षां गृहीत्वा आर्यिका रत्नमती नाम प्राप्नोत्। पुनः 1972 वर्षात्

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने सुदीर्घतपस्वी जीवन में इसी सूत्र का परिपालन करते हुए सदैव सृजन में अपनी शक्ति लगाई है एवं परनिन्दा इत्यादि में अपने क्षण कभी भी विनष्ट नहीं किये हैं। हमारा महानतम सौभाग्य है कि ऐसी महान आत्मा का साक्षात् सानिध्य हमें इस कलिकाल में भी प्राप्त हो रहा है। पूज्य माताजी के चरण- कमलों में बारम्बार अभिवंदन करते हुए जिनेन्द्र प्रभु से यही हार्दिक प्रार्थना है कि यह पुण्यधारा निरन्तर यूँ ही हम सबको सराबोर करती रहे।

➢जन्मदात्री आर्यिका रत्नमती जी की विनम्रता–

सांसारिक दृष्टि से यद्यपि कोई भी संतान माता-पिता के ऋण को कभी चुका नहीं सकती है किन्तु ज्ञानमती माताजी और उनकी जन्मदात्री आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का जीवन पारस्परिक उपकारों का जीता-जागता उदाहरण रहा है। मैंने उनके लिए एक जगह लिखा है–

संतान मात की गोदी में, पलकर शैशव को प्राप्त करे।
विधि का विधान देखो यह भी, माता खुद उन्हें प्रणाम करे।।
इन अजब निराली बातों का, साक्षात् दर्श करना है यदि।
तो रत्नमती जी की विनम्रता, देखो ज्ञानमती के प्रति।।

अर्थात् सन् 1952 में अपनी पुत्री मैना को दीक्षा की अनुमति देने के बाद माँ मोहिनी जी ने 18 वर्ष तक अपने गृहस्थोचित कर्तव्यों का निर्वाह करने के पश्चात् उन्हीं पुत्री से जगन्माता बन चुकीं ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा प्राप्त कर सन् 1971 में पूज्य आचार्यश्री धर्मसागर महाराज से दीक्षा लेकर ''आर्यिका रत्नमती'' नाम प्राप्त किया था पुनः सन् 1972 से वे

सा पूज्यमातुरेव छत्रछायायां स्थित्वा पूर्णतया निर्दोषामार्यिका चर्यां पर्यपालयत्। सा सर्वदैव मातरं ज्ञानमतीं स्वगुरुरूपेणैवापश्यत्। कदापि च तस्याः नाम न गृहीत्वा सर्वदा केवलं ''माताश्री'' उक्त्वैव सम्बोधितामकरोत् तथैव विनयपूर्वकं प्रायश्चित्तमगृह्णात्। अन्तसमयेऽपि च स्वयं क्षपकां भूत्वा मात्रैव निर्यापकाचार्य दिशा–निर्देशं प्राप्य 15 जनवरी 1985 दिने नारीजीवनस्य चरमं लक्ष्यं समाधिमसाधयत्।

आर्यिकायाः रत्नमत्याः इयं विनम्रता, तस्याः उदारतायाः गुणग्राहकतायाश्च ज्वलन्त–मुदाहरणं विद्यते। अहं स्व जन्मना गृहीत्वा तस्या समाधिपर्यन्तं 27 वर्षाणामवधौ तत्समीपं स्थित्वा तया मातुर्ममत्वं गुरोश्च समतां द्वयोरेव रसास्वादनं प्राप्नवम्। अतः आत्मनः जीवनं सदैव सौभाग्यशालिनं मन्ये। भगवन्तं जिनेन्द्रं प्रार्थयामि यत् पूज्या रत्नमती मातेव अहमपि विनम्रतायाः समर्पणस्य निस्पृहतायाः गुणाः प्राप्ताः स्युः। येन दीक्षितजीवनस्य प्रतिपलं सफलतायाः श्रेणीं प्राप्तुं शक्नुयात्।

आर्यिका श्रीअभयमत्याः चारित्रिक–दृढता——**पूज्यायाः मातुः गृहत्यागस्य 1952 वर्षेभ्यः पश्चात् तस्याः गृहे त्यागस्य वैराग्यस्य च वातावरण व्याप्तं वर्द्धितं चाभवत्। यस्याः प्रभावस्तस्याः लघुभगिन्यां मनोवत्यामप्यभवत्। सा च 1962 वर्षे केनापि प्रकारेण गृहं परित्यज्य ब्रह्मचर्यव्रतमगृह्णात्। सा मातुः संघं सम्मेदशिखरस्य यात्रामकारयत् तत्र सप्तमप्रतिमायाः व्रतानि गृहीत्वा त्यागमार्गं प्रारभत्। 1964 वर्षे हैदराबाद आन्ध्रप्रदेशस्य चतुर्मासे**

पूज्य माताजी की छत्रछाया में ही रहकर पूर्ण निर्दोष आर्यिका चर्या का पालन करती थीं। उन्होंने हमेशा ज्ञानमती माताजी को अपने गुरुरूप में ही देखा और कभी उनका नाम न लेकर केवल ''माताजी'' कहकर ही सम्बोधित करती थीं, उनसे विनयपूर्वक प्रायश्चित्त ग्रहण करती थीं और अन्त समय में भी स्वयं क्षपक बनकर माताजी से निर्यापकाचार्य के रूप में दिशा-निर्देश प्राप्त कर 15 जनवरी 1985 को नारी जीवन के चरमलक्ष्य (समाधि) की सिद्धि कर ली।

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की यह विनम्रता, उनकी उदारता एवं गुणग्राहकता का ज्वलन्त उदाहरण है। मैंने अपने जन्म से लेकर उनके समाधिपर्यन्त 27 वर्षों तक उनके पास रहकर उनसे माँ की ममता और गुरु की समता दोनों का रसास्वादन प्राप्त किया है अतः अपने जीवन को सौभाग्यशाली मानती हूँ। भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है कि पूज्य रत्नमती माताजी के समान ही मुझे भी विनम्रता, समर्पण एवं निस्पृहता का गुण प्राप्त होवे, ताकि दीक्षित जीवन के एक-एक पल को सफलता की सीढ़ियाँ प्राप्त हो सकें।

➢आर्यिका श्री अभयमती जी की चारित्रिक दृढ़ता–

पूज्य ज्ञानमती माताजी के गृहत्याग (सन् 1952 में) के पश्चात् उस घर में त्याग और वैराग्य का माहौल पनपने लगा था, जिसका प्रभाव उनकी छोटी बहन कु. मनोवती पर भी पड़ा और उन्होंने सन् 1962 में किसी प्रकार घर छोड़कर ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया पुनः माताजी के संघ को सम्मेदशिखर की यात्रा कराई, वहीं पर सप्तम प्रतिमा के व्रत लेकर त्यागमार्ग प्रारंभ किया। सन्

श्रावणशुक्लसप्तम्याः दिने माता तस्यै क्षुल्लिका दीक्षां प्रदाय तत्र ''अभयमतीं'' नामानमकरोत्। 1969 वर्षे फाल्गुण शुक्ल अष्टम्यां श्री महावीरजी शांतिवीरनगरे तीर्थक्षेत्रे सा आचार्य–श्रीधर्मसागरेण आर्यिकायाः दीक्षामगृह्णात्।

आर्यिका दीक्षायाः पश्चात् 1971 वर्षे संघात् बहिर्भूत्वा बुन्देलखण्डस्य तीर्थानां यात्रां कुर्वन्ती 15 वर्ष पर्यन्तं प्रचुरां धर्मप्रभावनामकरोत्। स्थाने–स्थाने महिलामण्डलानि उद्घाटितान्यकरोत्। रात्रिपाठशालां प्रारब्धां अकरोत्। साहित्यसर्जनेन सहैव स्वास्थ्यस्य प्रतिकूलतायां सत्यामपि स्वार्यिकायाः चर्यायाः परिपालने यस्या दृढ़तायाः परिचयमदात्, तदस्याः आत्मबलस्यैव द्योतकमस्ति। 1986 वर्षे सा पुनः हस्तिनापुरे मातुर्दर्शनार्थमागच्छत्, तस्मात् कालात् पश्चिमोत्तरप्रदेशे भ्रमणं कृत्वैव धर्मप्रभावनामकरोत्। मातुश्च सान्निध्ये अनेकचतुर्मासान् विधाय गुरो वैय्यावृत्तेश्च लाभं प्राप्नोत्। तस्याः समीपे शिष्या क्षुल्लिका शान्तिमतिः 30 वर्षेभ्यो निरन्तरं स्थित्वा धर्मध्यानं गुरुभक्तिं च करोति।

पापाय वर्धापनं न देहि––**यद्यपि इयं लोकोक्तिरस्ति यत् अन्यायस्य विधानं यावत् पापमस्ति तावदधिकं अन्यायस्य सहनमपि पापं विद्यते। अर्थात् पापस्य क्रियाणां करणे अनुमोदनदाने तासां च वर्धापने च पापिनां पापानुबन्धि पापस्यैव संचयो भवति। वर्तमानेऽस्माकं भारतीय–संस्कृतौ पाश्चात्य संस्कृतिः तीव्रगत्या प्रभाविनी वर्तते। दूरदर्शनस्य शताधिक–सञ्चाराः, छात्राचित्र जगतः वृद्धिगताः प्रचार–प्रसाराः, पत्र पत्रिकासु दैनिकसमाचारपत्रेषु च प्रकाशितान्यश्लीलचित्राणि भाविपीठिकाबुद्धिं कुत्सितां कुर्वन्ति।**

1964 में हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के चातुर्मास में श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन माताजी ने इन्हें क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान कर ''अभयमती'' नाम दिया पुनः सन् 1969 में फाल्गुन शुक्ला अष्टमी के दिन श्रीमहावीर जी शांतिवीरनगर तीर्थ पर आचार्य श्री धर्मसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा ग्रहण की।

आर्यिका दीक्षा के बाद सन् 1971 में संघ से निकलकर बुन्देलखण्ड के तीर्थों की यात्रा करते हुए 15 वर्षों तक खूब धर्मप्रभावना की, जगह-जगह अनेक महिला मण्डल खोले, रात्रि पाठशालाएँ खुलवाईं एवं साहित्य सृजन के साथ-साथ स्वास्थ्य अत्यन्त कमजोर होते हुए भी अपनी आर्यिकाचर्या को निभाने में जिस दृढ़ता का परिचय प्रदान किया है, वह इनके आत्मबल का ही द्योतक है। सन् 1986 में ये पुनः हस्तिनापुर में पूज्य माताजी के दर्शनार्थ पधारीं, तब से पश्चिमी उत्तरप्रदेश में भ्रमण कर-करके धर्मप्रभावना भी करती हैं और माताजी के पास भी अनेक चातुर्मास करके गुरु वैयावृत्ति का लाभ प्राप्त करती हैं। इनके पास क्षुल्लिका शांतिमती शिष्या 30 वर्षों से लगातार रहकर धर्मध्यान एवं गुरुभक्ति कर रही हैं।

➢पाप को बढ़ावा न दें–

लोक में कहावत है कि अन्याय को करना जितना पाप है, अन्याय को सहन करना भी उससे ज्यादा पाप है। अर्थात् पाप क्रियाओं को करने, अनुमोदना देने एवं उन्हें बढ़ावा देने वालों को पापानुबंधी पाप का ही संचय होता है। वर्तमान में हमारी भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति तेजी से हावी हो रही है। टेलीविजन के सैकड़ों चैनल, फिल्म जगत के बढ़ते प्रचार, पत्र-पत्रिकाओं एवं दैनिक अखबारों में छप रहे अश्लील चित्र भावी पीढ़ी की बुद्धि कुत्सित कर रहे हैं।

अस्यामेव शृंखलायां एकोऽन्योऽपि विषयः उत्पन्नो भूत्वा समाजस्य पुरतः आगच्छत्। निःसन्तानपुत्रहीनैश्च दम्पत्तिभिः सन्तानमंकग्रहणस्य परम्परा। यद्यपि प्राचीनकालादेव आवयकतानुसारेण परिवारेषु पुत्रं पुत्रीं वा सन्तानमुत्संगे गृहीत्वा स्व कुलस्य रक्षां–वृद्धिं च कर्तुं परम्परा वर्तते। यतो हि एतानि सन्तानानि प्रायः स्वकुलेन जात्या वा सम्बद्धानि आसन् अतः पारिवारिकशुद्ध्या अधिकारैश्च सहैव मोक्षमार्गस्याधिकारोऽपि तेभ्यः सहजतया सुलभः आसीत्। किन्त्वधुना जनाः कस्माद् अनाथालयात् पालन गृहात् वा अज्ञातमातुः पितुः च वत्सं उत्संगे गृहीत्वा महता ममत्वेन वात्सल्येन च पालयन्ति, न तु बालस्य जातिविषये परिचयं कुर्वन्ति नापि तेभ्यः स्व कुलस्य पवित्रतायाः ध्यानं भवति। 7–8 वर्षाणि पूर्वं एका घटना श्रवणे आगता यत् राजमार्गस्य तटे वस्त्रेण आच्छादितः एक शिशुः पतितः आसीत्। तमेको दम्पतिरुत्संगे गृहीत्वा तस्य पालनं–पोषणमकरोत्। पुनः घोषणाभवत् यदीदृशानां शिशूनां पालनकर्त्र्यः यशोदाः समक्षमागच्छन्तु।

प्रतिदिन एवं विधाः घटनाः श्रुत्वा पालनगृहात् चिकित्सालयात् वा गुप्त–मातृ–नाम्नां बालानां उत्संगे ग्रहणस्य वार्ताः श्रुत्वा पूज्या माता हार्दिकं कष्टमनुभवति। सा सदैव इदमेव कथयति यत् ''स्वजातेः परिवारस्य शिशून् उत्संगे ग्रहणेन जातेः कुलस्य च परम्परायाः शुद्धिर्भवति। शुद्धेषु परिवारेष्वेव तीर्थंकरादीनां महापुरुषाणां जन्म भवति। द्वितीया च वार्ता इयमप्यस्ति यत् सामान्यरूपेण जन्मप्राप्तान् शिशून् का माता पालनगृहे अनाथालये वा

इसी शृँखला में एक अन्य विषय भी तेजी से उभरकर समाज के बीच में आया है–निःसंतान और पुत्रविहीन दम्पत्तियों द्वारा सन्तान को गोद लेने की परम्परा। यूँ तो प्राचीनकाल से भी आवश्यकतानुसार परिवारों में पुत्र या पुत्री सन्तान को गोद लेकर अपनी कुल की रक्षा एवं वृद्धि करने की परम्परा रही है चूँकि वे सन्तानें प्रायः अपने कुल और जाति से संबंधित ही हुआ करती थीं अतः पारिवारिक शुद्धि एवं अधिकारों के साथ-साथ मोक्षमार्ग का अधिकार भी उन्हें सहज में प्राप्त हो जाता था किन्तु आजकल लोग किसी भी अनाथालय से या पालना में से अज्ञात माँ-बाप के बच्चों को गोद लेकर उसे बड़े प्यार से पालते हैं, ऐसे लोग न तो बच्चे की जाति के बारे में पता करते हैं और न ही उन्हें अपने कुल की पवित्रता का लक्ष्य रहता है। 7-8 वर्ष पूर्व एक घटना सुनने में आई कि सड़क के किनारे कपड़े में लिपटा हुआ एक शिशु पड़ा था, उसे एक दम्पत्ति ने उठाकर पालन-पोषण किया पुनः सार्वजनिक घोषणा हुई कि ऐसे बच्चों को पालने वाली यशोदा माताएँ सामने आएँ.....आदि।

आए दिन इस प्रकार की घटनाएँ सुनकर और पालने या अस्पताल से गुमनाम माँ के बच्चों को गोद लेने की बात जानकर पूज्य माताजी हार्दिक कष्ट का अनुभव करती हैं। वे सदैव यही कहती हैं कि ''अपने परिवार और जाति के बच्चों को ही गोद लेने से जाति एवं कुल परम्परा की शुद्धि रहती है तथा शुद्ध परिवारों में ही तीर्थंकर आदि महापुरुषों के जन्म होते हैं।'' दूसरी बात यह है कि सामान्यरूप से जन्मे बच्चों को भला कौन सी माँ अनाथालय या पालने में डाल सकती है?

पालयितुं शक्नोति, ईदृशाः शिशवस्तु कयापि कुमार्या युवत्योत्पाद्यमानाः भवन्ति वा अवैध सम्बन्धैर्जाताः शिशवः राजमार्गात् पालनगृहपर्यन्तं आगताः भवन्ति। एतस्या परिस्थित्या भवद्भ्यः सर्वेभ्यः चिन्तनस्य विषयोऽयं वर्तते, यत्रैतान् अनाथान् शिशून् उत्संगे गृहीत्वा कुलस्य परम्परायाः पवित्रतां प्रति प्रश्न चिह्नः आरोप्यते तत्रैव पापाचारपूर्वकं व्यभिचारपूर्वकं सन्तानस्योत्पादनकर्त्रीं युवापीठिकां पापस्य वर्धनेऽपि महत्वं प्राप्तं भवति। अतः शिशूनां पालनं पोषणं च कर्त्रीभ्यः मातृभ्यो यशोदायाः उपमा कदापि दातुं न शक्यते। भवद्भिः विचार्यतां यत् नारायणः श्रीकृष्णः कस्याः परिस्थित्याः वशात् यशोदायाः उत्संगे परित्यक्तोऽभवत्। किं सः अवैध सम्बन्धानां प्रति कुलेनाजायत। किं देवकी तं उत्पन्नं कृत्वा राजमार्गस्य तटे अनाथालये वा न्यक्षिपत्। इत्यादयः अनेकाः प्रश्नाः यशोदायाः उत्संग पुत्रं श्रीकृष्णं प्रति उत्पन्नाः भवन्ति। यदा चान्यायिनः कंसस्य वधं विधातुं श्रीकृष्णस्य जन्म सप्तमासे एव जायमानात् कारणात् कदाचिदयं पापिना कंसे हतो न स्यात्, अस्मात् भयात् तं अलकाश्रेष्ठि पत्न्याः (लोकव्यवहारे यशोदायाः) समीपमानीय सुरक्षित मात्रं भवितुमत्यजत्। अग्रे च गत्वा सः सर्वः इतिहासो जगत्प्रसिद्धोऽभवत्। यदा चाधुनिककाले अनाथालयेभ्यः उत्संगे गृहीतानां शिशूनां मातु पितुश्च नामादिना कोऽपि परिचिता न भवति। अतः परम्परैषा सर्वथा निन्द्या वर्तते। अतः सदाचारिणः परिवाराः नवविचारधारायुक्ताः दम्पतय स्व कुलस्य शुद्धेः ध्यानमवश्यमेव कुर्युः।

ऐसे बच्चे या तो किसी कुंआरी लड़की द्वारा पैदा किए होते हैं अथवा अवैध संबंधों से जन्मे बच्चे सड़क से पालने तक पहुँचा दिये जाते हैं। इस स्थिति में आप सभी के लिए चिन्तन का विषय यह है कि जहाँ ऐसे अनाथ बच्चों को गोद लेकर कुल परम्परा की पवित्रता पर प्रश्नचिन्ह लगता है,वहीं पापाचार (व्यभिचार) पूर्वक सन्तान को उत्पन्न करने वाली युवा पीढ़ी को पाप का बढ़ावा भी मिलता है। उन बच्चों का पालन करने वाली माताओं को यशोदा की उपमा कभी नहीं दी जा सकती है। आप जरा सोचें तो सही कि नारायण श्री कृष्ण को किन परिस्थितियों में यशोदा की गोद में छोड़ा गया था? क्या वे अवैध संबंधों के प्रतिफल में जन्मे थे? क्या देवकी ने उन्हें पैदा करके सड़क किनारे या अनाथालय में पहुँचाया था?..... इत्यादि अनेक प्रश्न यशोदा के गोदीपुत्र श्रीकृष्ण के प्रति उपस्थित हो जाते हैं। जबकि अन्यायी कंस का वध करने वाले कृष्ण का जन्म 7 माह में ही हो जाने पर, कहीं यह पापी कंस द्वारा मार न दिया जाए, इस भय से उन्हें अलका सेठानी (लोक व्यवहार में यशोदा नाम से प्रसिद्ध) के पास पहुँचाकर सुरक्षित मात्र रखा गया था। आगे चलकर वह सारा इतिहास जगजाहिर हो गया था, जबकि वर्तमान में अनाथालयों से गोद लिए गए बच्चों के माता-पिता के नाम आदि का कोई अता-पता भी नहीं रहता है। यह परम्परा सर्वथा निंद्य है अतः सदाचारी परिवारों को, नई विचारधारा वाले दम्पत्तियों को अपनी खानदान शुद्धि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

सुधी लेखकेभ्यः एको विचारणीयो विषयः—**यतः सर्वो जैनसमाजो जानाति यत् माता ज्ञानमती यस्मात् समयात् 1976 वर्षात् इन्द्रध्वजकल्पद्रुमसर्वतोभद्रादीनां महत्वपूर्णानां विधानानां रचनां कृत्वा जिनेन्द्रभक्तेर्मार्गं प्रशस्तमकरोत्, तस्मात् कालादेव सम्पूर्ण देशे महान्तः भक्तेर्महाकुम्भाः आयोजिताः भवन्ति। दिगम्बर जैनसमाजस्य चरणानुयोगसम्बन्धिषु ग्रन्थेषु पंचप्रकाराणामेव पूजानां वर्णनं प्राप्यते–नित्यमह, अष्टान्हिका, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्रं च। एतासां नित्यपूजामह प्रतिदिनं कृतानि अष्टान्हिक च पूजायां सिद्धचक्रविधानं रूपेण पूजाया परम्परा समाजे प्राचीनकालादेव संपाद्यमाना भवति, इन्द्रध्वज संस्कृतस्य हस्तलिखित विधानमपि कुत्रचित् ग्रन्थालयेषु उपलब्धिकारणात् यदा कदा विशेषप्रसंगेषु विधानस्यास्य परम्परा श्रुता विद्यते। अस्मिन् मध्यलोकस्य त्रयोदशद्वीप सम्बन्धिनां 458 अकृत्रिमचैत्यालयानां पूजायाः वर्णनमस्ति। एतमेवाधारं कृत्वा पूज्या माता 50 पूजासु रचयित्वा इन्द्रध्वज विधानमिति मौलिककृतिरूपेण प्रथमबारं 1976 वर्षे प्रस्तुतमकरोत्। तस्य कतिचित् वर्षाणां पश्चात् अन्यलेखकाः अपि तस्यैव विधानस्य विषयं परिवर्त्य किञ्चित् त्रोटितं परिवर्धितं च कृत्वा स्व नामभिः प्रकाशितमकुर्वन्। यान् दृष्ट्वा किञ्चित् आश्चर्य अभवत् यत् जनाः केन–केन प्रकारेण अन्यस्य कृतेरूपयोगं स्वनाम्ना कर्तुं संकुचिता न भवन्ति।**

किन्तु अत्यन्तमेव दुःखदं आश्चर्यं तुं 4–5 वर्षेभ्यः कल्पद्रुमस्य सर्वतोभद्रस्य च विधानयोः

➢सुधी लेखकों के लिए एक विचारणीय विषय–

जैसा कि सम्पूर्ण जैन समाज को विदित है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी ने जब से (सन् 1976 से) इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र आदि महापूजा विधानों की रचना करके जिनेन्द्र भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है, तब से पूरे देश में बहुत बड़े-बड़े भक्ति के महाकुंभ आयोजित होते रहते हैं। दिगम्बर जैन आगम के चरणानुयोग से संबंधित ग्रंथों में पाँच प्रकार की पूजाओं का वर्णन आया है–नित्यमह, आष्टान्हिक, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम और सर्वतोभद्र। इनमें से नित्यमह (रोज करने वाली) और आष्टान्हिक पूजा (सिद्धचक्र विधान के रूप में) की परम्परा तो समाज में प्राचीनकाल से होती रही है एवं इन्द्रध्वज नामक संस्कृत का हस्तलिखित विधान भी कहीं-कहीं ग्रंथालयों में उपलब्ध होने से यदा-कदा विशेष प्रसंगों पर करने की परम्परा सुनी है। इसमें मध्यलोक के तेरहद्वीप संबंधी 458 अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा का वर्णन है। इसी को आधार बनाकर पूज्य माताजी ने 50 पूजाओं में रचकर इन्द्रध्वज विधान एक मौलिक कृति के रूप में प्रथम बार सन् 1976 में प्रस्तुत किया, उसके कुछ वर्षों पश्चात् ही अन्य लेखकों ने भी उसी विधान का कुछ मैटर तोड़-मरोड़ कर अपने-अपने नामों से प्रकाशित कर लिया, जिन्हें देखकर किंचित् आश्चर्य हुआ था कि लोग किस प्रकार दूसरे की कृति का उपयोग अपने नाम से करने में संकोच नहीं करते हैं।

किन्तु अत्यंत दुखद आश्चर्य तो 4-5 वर्षों से कल्पद्रुम और सर्वतोभद्र विधान की डुप्लीकेट

द्वितीयानुकरणरचनाः वीक्ष्याभवत्। ययोः विषये लेखकाः लेखिकाश्चेदमपि नाजानन् यत् एतेषां विधानानां विषयवस्तु किं भवितव्यम्। एतयोर्वास्तविक्ता तु इयमस्ति यत् ग्रन्थेषु कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र पूजनस्य नामानि पठित्वा यदा 1985–86 वर्षयोः यदा पूज्यायाः मातुर्मनसि एते विधाने लिखितुमिच्छा प्रकटिताभवत् तु प्रायः अष्टमासपर्यन्तं सा अनयोः प्रस्तुतीकरणयोग्यस्य विषयवस्तुनः प्रचुरमनोयोगपूर्वकं चिन्तनमकरोत्। 2–3 प्रकारेण संकेतान् विलिख्य–विलिख्य अन्ततोगत्वा निर्णयमकरोत् यत् कल्पद्रुमविधाने चतुर्विंशतीनां तीर्थंकराणां भगवतां समवसरणानां प्रमुखतया 24 पूजासु 2424 अर्घ्याणि दत्तानि भविष्यन्ति सर्वतोभद्र विधाने च 101 पूजासु 2000 अर्घ्याणां माध्यमेन त्रयाणां लोकानां समस्तानां चैत्य–चैत्यालयानां वर्णनं समाविष्टमकरोत्। एते द्वे विधाने पूज्यायाः मातुः बहुप्रभाविकयोः मौलिकयोः रचनयोः रूपेण क्रमशः 1986–1987 वर्षयोः अस्माकं समक्षमागते स्म। सम्पूर्णे च समाजे पश्यन्तः–पश्यन्तः पर्याप्त चमत्कारः प्रसारितोऽभवत्। पंचकल्याणकेष्वपि महतास्तरेण सम्पूर्णे देशे एतयोरायोजनानि संपन्नान्यभवन्। 1997 वर्षे च राजधान्यां दिल्ल्यां रिंगमार्गे सम्पन्नः अभवन्। सहैव चतुर्विंशतिसमवसरणानां रचनां विधाय 24 कल्पद्रुम विधानानि तु अविमृष्ट इतिहासरूपेण प्रसिद्धा अभवन्।

एतानि सर्वांगीणैर्विषयैः समन्वितानि विधानानि वीक्ष्य ये लेखकाः लेखिकाश्च तेषु किञ्चित् मात्रं परिवर्तनं विधाय कल्पद्रुमं सर्वतोभद्रं च विधाने अलिखत्, तेऽवश्यमेवास्मिन् विषये गाम्भीर्येण सह चिन्तनं कुर्युः। यत् कस्या अपि कृतौ परिवर्तनं कृत्वा स्व नाम्ना

रचनाओं को देखकर हुआ है। जिनके बारे में लेखक-लेखिकाओं को यह भी पता नहीं था कि इन पूजा-विधानों की विषयवस्तु क्या होनी चाहिए। इनकी वास्तविकता यह है कि ग्रंथों में कल्पद्रुम और सर्वतोभद्र पूजन के नाम पढ़कर जब सन् 1985-86 में पूज्य माताजी के मन में इन पूजा-विधानों को लिखने की इच्छा प्रगट हुई, तो लगभग 6 माह तक उन्होंने इनमें प्रस्तुत करने योग्य विषय-वस्तु का खूब मनोयोगपूर्वक चिन्तन किया, डायरी में दो-तीन प्रकार से संकेत लिख-लिखकर अन्ततोगत्वा निर्णय लिया कि कल्पद्रुम विधान में चौबीसों तीर्थंकर भगवन्तों के समवसरण की प्रमुखता से 24 पूजाओं में 2424 अर्घ्य देना है एवं सर्वतोभद्र विधान में 101 पूजाओं में 2000 अर्घ्यों के माध्यम से तीन लोक के समस्त चैत्य-चैत्यालयों का वर्णन समाविष्ट किया। ये दोनों विधान पूज्य माताजी की बहुत प्रभावक मौलिक काव्य कृति के रूप में क्रमशः सन् 1986-1987 में हम लोगों के समक्ष आये हैं और सम्पूर्ण समाज में देखते ही देखते इनका खूब चमत्कार फैला, पंचकल्याणकों से भी अधिक बड़े-बड़े स्तर पर पूरे देश में इनके आयोजन सम्पन्न हुए हैं तथा सन् 1997 में राजधानी दिल्ली के रिंग रोड पर सम्पन्न हुए एक साथ चौबीस समवसरणों की रचना करके चौबीस कल्पद्रुम विधान तो अमिट इतिहास के रूप में ही प्रसिद्ध हुआ है।

इन सर्वांगीण विषय समन्वित विधानों को देखकर जिन लेखक-लेखिकाओं ने उनमें किंचित् मात्र परिवर्तन करके नये कल्पद्रुम और सर्वतोभद्र विधान गढ़ लिए हैं, उनको अवश्य ही इस विषय पर गहराई से चिन्तन करना चाहिए कि किसी की कृति में परिवर्तन करके अपने नाम से छापने पर

प्रकाशिते करणे निन्हववदोषेण सहैव नैतिकोऽपराधोऽप्यस्ति। एतेन प्रकारणैव अनुकरण प्रधानासु कृतिसु न वास्तविकः अतिशयः प्रकटितो भवति न च ताः रचनाः श्रद्धालूनां यथार्थायाः श्रद्धाया केन्द्राः भवन्ति। यदि प्रतिभासंपन्नानां लेखकानां मनसि ईदृश्याः कस्याश्चित् रचनायाः वार्ता उद्भवति, तु न्यूनातिन्यूनं यदि आधारी कृतरचनायाः रचनाकारो यदि जीवितोऽस्ति्। तु तं पृष्ट्वा मंत्रादि गृहीतुं अनुमतिं अवश्यमेव प्राप्तव्या। यथा आर्यिका गणिनी ज्ञानमती इन्द्रध्वज विधानस्य काव्यप्रशस्त्या अत्यन्तमेवोदारता पूर्वकं पद्यं दत्वा स्पष्टमकरोत्–

''श्री विश्वभूषण योगिना विरचितं, संस्कृत विधानं मान्यमकरवम्। तदाधारीकृत्याहं, मौलिकां काव्यकृतिमकरवम्।''

अर्थात् अनेनैव प्रकारेण स्वाधारस्रोतस्याः कृत्याः नामोल्लेखे संकोचो न भवितव्यः। लेखकस्य शुचितया सहैव तस्य नैतिक कर्तव्यमप्यस्ति।

अस्माकं पुरतो यदा केचिज्जनाः एवंभूताः कृतीः गृहीत्वा आलोचनया सह प्रस्तुवन्ति तु केनचिद् खेदेन सहैवयेव मुखात् निर्गच्छति भ्रातरः! इदं कलियुगमस्ति। किमपि श्रेष्ठं वस्तु हट्टेऽधिकं बिक्रीतं प्राप्य यथा केचिज्जनास्तथैव द्वितीयप्रतिलिपि इव तद् वस्तु निर्माप्य विक्रेतुं प्रारभन्ते, तथैवाधुना साहित्यस्यापि द्वितीय प्रतिलिपिर्भवति। अहं चिन्तयामि यत् एते लेखकाः लेखिकाः वा यदि मात्रा सह किंचिदपि विचार–विमर्शमकुर्वन् तु सा तेभ्यः सुन्दराणि विधानानि ग्रन्थान् वा रचयितुं प्रेरणा प्रदाय योग्य दिशा–निर्देशानपि प्रदातु प्रवृत्ता अभवत्।

निन्हव दोष के साथ-साथ नैतिक अपराध भी है। इस प्रकार की नकल की गई कृतियों में न तो वास्तविक अतिशय आता है और न ही वे कृतियाँ श्रद्धालुओं की सच्ची श्रद्धा का केन्द्र बन पाती हैं। यदि प्रतिभासम्पन्न लेखकों के मन में ऐसी कुछ नई रचना करने की बात आती है, तो कम से कम आधार ली गई कृति के रचनाकार यदि जीवित हैं, तो उनसे पूछकर मंत्रादि ग्रहण करने की आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए तथा जिस प्रकार पूज्य ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज विधान की काव्य प्रशस्ति में अत्यन्त उदारतापूर्वक पद्य देकर स्पष्ट कर दिया है कि–

''श्री विश्वभूषण योगी विरचित, संस्कृत विधान को मान्य किया।
उसको आधार बना करके, मैंने मौलिक कृति काव्य किया।।''

अर्थात् इसी प्रकार से अपनी प्रेरणास्रोत कृति का नाम लिखने में संकोच नहीं होना चाहिए, लेखक की ईमानदारी के साथ-साथ यह उनका नैतिक कर्तव्य भी है।

हम लोगों के समक्ष जब ऐसी कृतियाँ कुछ लोग आलोचना के साथ लाकर प्रस्तुत करते हैं, तो किंचित् खेद के साथ यही मुँह से निकलता है कि भैय्या! आज कलियुग है। किसी अच्छे माल को बाजार में ज्यादा बिकते देखकर जैसे कुछ लोग वैसा ही डुप्लीकेट माल बनाकर बेचने लगते हैं, वैसे ही अब साहित्य की डुप्लीकेसी हो रही है। मैं सोचती हूँ कि इन लेखक-लेखिकाओं ने पूज्य माताजी से जरा भी विमर्श किया होता, तो वे उन्हें अन्य और अच्छे-अच्छे विधान या ग्रंथ लिखने की प्रेरणा देकर योग्य दिशा-निर्देश भी प्रदान करतीं। जैसे–उन्होंने अपनी

यतः सा स्वशिष्यामार्यिकां जिनमती प्रमेयकमलमार्तण्डं पाठयित्वा तस्यैव हिन्दी अनुवादं कर्तुं प्रेरणामदात् आर्यिका चादिमत्यै गोम्मटसार–कर्मकाण्डस्य हिन्दी अनुवादं कर्तुं प्रेरणामदात्। आर्यिकायै विशुद्धमत्यै च त्रिलोकसारस्य हिन्दी भाषायामनुवादस्य प्रेरणामदात्। आर्यिका अभयमत्या धर्मचक्रविधानस्य रचनामकारयत्। मह्यं च तीर्थंकर जन्मभूमिविधानस्य षट्खण्डागमस्य चानुवादस्य प्रेरणामदात्। तस्यै तु एतत् मह्यं रोचते यत् वर्तमाने केषाचित्सु युवासु साध्वी–साधुषु किंचित् कर्तुं तु क्षमता प्रारभत्। तु तस्याः सदुपयोगं कृत्वा कदापि स्वगुरुणां कार्यकलापेषु पंथवादादिनो हठाग्रहं कृत्वा प्रतियोगिभावो न करणीय।

इदं त्वहं केवलं द्वयोः पूजाविधानयोर्विषयेऽकथयं यत् मातुः वास्तविकाः मौलिकाः कृतीः त्रोटयित्वा परिवर्त्य च नवीनेन रूपेण केचिज्जनाः स्वनाम्नाः प्रस्तुताः अकुर्वन्, एतेनैव प्रकारेण कानिचित् लघूनि विधानानि पूजाश्च विद्वांसोऽपि परिवर्त्य प्रकाशिताअकुर्वन्। यान् समये–समयेऽपश्याम्। एतदतिरिक्तं, एकस्य पुस्तकस्य सम्पादकः ज्ञानमत्या मात्रा 1965 वर्षे रचितायाः कन्नड भाषायाः द्वादशभावनायां सर्वान्ते तस्याः नामवतीं पंक्तिं निष्कास्य तां मुद्रितामकरोत्। यदा च सम्पूर्णे दक्षिणप्रान्ते आबालवृद्धाः तां द्वादशभावनां नित्यं पठित्वा ज्ञानमतीं मातरं महत्या श्रद्धया सह नमन्ति।

अनेनैव प्रकारेण मम 1976 वर्षे (ब्रह्मचारिण्याः माधुर्यायाः अवस्थायाम्) रचितां ज्ञानमत्याः मातुः पूजनं एका ब्रह्मचारिणी भगिनी पूर्णां यथावत् केवलं मातुः पितुश्च नामनी परिवर्त्य मम च नाम्ना स्थानेस्वनामानं दत्वा एकास्याः स्वर्गीयायाः आर्यिकायाः सुज्ञानमत्याः

शिष्या आर्यिका जिनमती जी को प्रमेयकमल मार्तण्ड पढ़ाकर उन्हीं को उसका हिन्दी अनुवाद करने की प्रेरणा दी, आर्यिका आदिमती जी को गोम्मटसार कर्मकाण्ड के हिन्दी अनुवाद की प्रेरणा दी, आर्यिका विशुद्धमती जी को त्रिलोकसार के अनुवाद की प्रेरणा दी, आर्यिका अभयमती जी से धर्मचक्र विधान बनवाया और मुझे भी तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, षट्खण्डागम के अनुवाद की प्रेरणा भी उन्होंने ही प्रदान की है। उन्हें तो बड़ा अच्छा लगता है कि कम से कम वर्तमान के कुछ युवा साधु-साध्वियों में कुछ करने की क्षमता तो प्रगट हुई है। तो उसका सदुपयोग करते हुए कभी अपने से बड़ों के कार्यकलापों में पंथवाद आदि का हठाग्रह करके प्रतियोगी भाव नहीं पनपने देना चाहिए।

यह तो मैंने मात्र दो पूजा-विधानों के बारे में बताया कि माताजी की पूर्ण मौलिक वास्तविक कृतियों को तोड़-मरोड़ कर नये रूप में कुछ लोगों ने अपने नाम से प्रस्तुत किया है, इसी प्रकार कुछ छोटे विधान, पूजा आदि को अन्य लेखकों ने भी बदल-बदल कर छपाये हैं, जो समय-समय पर देखा गया है। इसके अतिरिक्त एक पुस्तक के सम्पादक ने ज्ञानमती माताजी द्वारा सन् 1965 में रचित कन्नड़ भाषा की बारह भावना में सबसे अन्त की उनके नाम वाली पंक्ति को निकालकर उसे छपा दिया है, जबकि पूरे दक्षिण भारत में आबाल-वृद्ध उस बारहभावना को रोज पढ़कर ज्ञानमती अम्मा को बड़ी श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

ऐसे ही मेरे द्वारा सन् 1976 में (ब्र. माधुरी की अवस्था में) रचित ज्ञानमती माताजी की पूजन को एक ब्रह्मचारिणी बहन ने पूरी ज्यों की त्यों (केवल माता-पिता के नाम बदलकर एवं मेरे नाम की जगह अपना नाम देकर) एक स्व. आर्यिका सुज्ञानमती की पूजा के नाम से छाप लिया है। मेरे

पूजाया नाम्ना मुद्रितामकरोत्। यदा शक्तिपूर्वकं तां कथ्यमाने सा स्वयं त्रुटिं स्वीकृतामकरोत्। मम भक्तामरविधानपुस्तकस्य जयमालायां एकः पण्डितनामधारी बालकः मम नामानमपनीय तत्र स्व नामानं दत्वा पूर्णां यथावत् भक्तामरपूजनं प्रकाशितमकरोत्। एताः सर्वाः अशोभनीयाः क्रियाः एकस्मै उत्तमाय लेखकाय कदापि उचिताः न सन्ति। अतोऽस्मिन् विषये सः गम्भीरतया चिन्तनं कृत्वा स्वप्रौढतायाः परिचयो दद्यात्।

गणिनी ज्ञानमती माता, धरित्र्याः इतिहासरूपाभवत्। दीक्षा स्वर्ण महोत्सवोऽधुनाऽकरोत् धरित्री माता—**इदानीमहं पाठकानां दृष्टिं मातु दीक्षायाः स्वर्णजयन्तीमहोत्सवे आकृष्टां कर्तुमिच्छामि। बन्धवः! यदा संपूर्णः संसारः स्व सांसारिकस्य जीवनस्य पंचाशत् वर्षाणां पूर्णतायां महतोत्साहेन स्वर्णजयन्त्याः रूपेणोत्सवमायोजयति, यत्र रागिणां रागस्य प्रधानतास्यात् आगामिभवेभ्यश्च रागस्यैव बन्धो जायते, तत्र त्याग संयमस्य एतावतः दीर्घकालीनस्य जीवनस्य कल्पनामपि कः कर्तुं शक्नोति? परन्तु इदमेव परमसत्यमाधुनिक कालेऽपि विद्यमानमस्ति। तच्च प्राप्यते भगवतो महावीरस्य शासनानुवर्तिनां दिगम्बरजैनसाधूनां साध वीनां च कठोरतपस्यायाम्।**

अस्यामेव शृंखलायां पूज्या गणिनी प्रमुखा माता ज्ञानमती विशंति शताब्द्या प्रथमबालब्रह्मचारिणी आर्यिका भूत्वा स्वदीक्षाकालस्य पंचाशत् वर्षाणि पूर्णान्यकरोत्। अयं एकविंशति शताब्द्याः जैनसमाजाय अत्यधिकं गौरवपूर्णो विषयोऽस्ति। यत्र वयं स्वनेत्रैः

द्वारा शक्तिपूर्वक उन्हें कहे जाने पर उन्होंने अपनी गलती भी स्वीकार की। मेरी भक्तामर विधान पूजन की जयमाला में एक पण्डित नामधारी नेमीचंद नामक लड़के ने मेरा नाम हटाकर वहाँ अपना नाम देकर पूरी ज्यों की त्यों भक्तामर पूजन प्रकाशित कर लिया। ये सब अशोभनीय क्रियाएँ एक अच्छे विद्वान, लेखक के लिए कदापि उचित नहीं हैं, अतः इस विषय पर उन्हें गहराई से चिन्तन करके अपनी प्रौढ़ता का परिचय प्रदान करना चाहिए।

➢**गणिनी माता ज्ञानमती, इतिहास बनीं धरती का,**
दीक्षा स्वर्ण महोत्सव उनका किया है धरती माँ ने–

अब मैं पाठकों की दृष्टि आकृष्ट करना चाहती हूँ माताजी की दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव पर। बंधुओं! जब सारी दुनिया अपने सांसारिक जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर बड़ी धूमधाम से गोल्डन जुबली के रूप में उत्सव मनाती है, जहाँ राग की ही प्रधानता होती है तथा आगामी भवों के लिए राग का ही बंध होता है, वहाँ भला त्याग-संयम के इतने दीर्घकालीन जीवन की कल्पना भी कौन कर सकता है? किन्तु यही परम सत्य आज के कलियुग में भी विद्यमान है और वह पाया जाता है भगवान महावीर के शासनानुवर्ती दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों की कठोर तपस्या में।

इसी शृंखला में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका बनकर अपने दीक्षाकाल के 50 वर्ष पूर्ण किए हैं, यह इक्कीसवीं सदी की जैनसमाज के लिए अत्यधिक गौरवपूर्ण विषय है। जहाँ हमने अपने नेत्रों से अब तक इतने वरिष्ठ

वरिष्ठान् सन्तसाधून् नापश्याम, तत्रैव भाविन्यै पीठिकायै अस्या साध्व्याः आर्यिकादीक्षा स्वर्णजयन्त्याः (14 अप्रैल 2006 दिनात् 16 अप्रैल दिन पर्यन्तं) आयोजनस्य अभूतपूर्वोऽवसरो निश्चितरूपेणैकस्य ऐतिहासिकस्तम्भस्य कार्यं विद्यते। वस्तुतः एवंभूतस्यैतिहासिक–व्यक्तित्वाय किञ्चिदपि कथनं गंगायाः जलं गंगायामेव समर्पणस्य तुल्यं वर्तते। अतस्तस्याः तीर्थोद्धारिकायाः संस्कृति संरक्षिकायाः मातुः श्री चरणयोः बारम्बारं नमनं कुर्वन्ती तस्याः स्वस्थस्य दीर्घजीवनस्य च मंगलकामनां करोमि–

''त्यागतपस्यायाः मूर्तिस्त्वं ज्ञानध्यानस्य प्रतिमाऽसि। कलियुगस्य सुकुमारा तपस्विनी नार्यः गुण–गरिमाऽसि। ब्राह्मी–मातुः पद चिन्हेषु चलित्वा चन्दनं प्रचुररूपेण ददासि। गणिनि मातः! ज्ञानमतिः! स्वीकरोतु मम वन्दनम्।''

किं भवन्तो जानन्ति?–

1. सुमेरु पर्वतस्त्रिषु लोकेषु सर्वोच्चः पवित्रः पर्वतोऽस्ति।

2. चत्वारिंशत् कोटि मील उच्चस्यास्य सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकशिलायां तीर्थंकराणां जन्माभिषेको भवति।

3. हस्तिनापुर तीर्थे जम्बूद्वीप रचनायाः मध्ये सुमेरुपर्वतोऽयं 101 फुट उत्तुंगं निर्मितोऽस्ति। यस्मिन् 136 सोपानानि आरुह्य 16 चैत्यालयानां दर्शनं भवति।

4. जम्बूद्वीपो जैनभूगोलस्य दर्शिका ब्रह्माण्डस्य सा रचनास्ति, यस्याः एकस्मिन् लघु–भागे

दीक्षित संतों को नहीं देखा है, वहीं भावी पीढ़ी के लिए एक साध्वी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती (14 अप्रैल से 16 अप्रैल 2006 तक) मनाने का अभूतपूर्व अवसर निश्चितरूप से ऐतिहासिक स्थाई स्तंभ का कार्य हुआ है। वास्तव में ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व के लिए कुछ भी कहना गंगा का जल गंगा को ही अर्पित करने के सदृश है अतः उन संस्कृतिसंरक्षिका, तीर्थोद्धारिका माताजी के श्रीचरणों में बारम्बार नमन करते हुए उनके स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करती हूँ–

त्याग तपस्या की मूरत तुम, ज्ञान-ध्यान की प्रतिमा हो।
कलियुग की सुकुमार तपस्वी, नारी की गुण गरिमा हो।।
ब्राह्मी माँ के पद चिन्हों पर, चलकर लुटा रहीं चन्दन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी, स्वीकारो मेरा वंदन।।

➢क्या आप जानते हैं?–

1. सुमेरु पर्वत तीनों लोकों में सबसे ऊँचा और पवित्र पर्वत है।

2. 40 करोड़ मील ऊँचे इसी सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

3. हस्तिनापुर तीर्थ पर जम्बूद्वीप रचना के मध्य यह सुमेरुपर्वत 101 फुट ऊँचा बना है, जिसमें 136 सीढ़ियाँ चढ़कर 16 चैत्यालयों के दर्शन होते हैं।

4. जम्बूद्वीप जैन भूगोल को दर्शाने वाली ब्रह्माण्ड की वह रचना है जिसके एक छोटे से भाग

आर्यखण्डे सम्पूर्णं विश्वं व्याप्तमस्ति।

5. सम्पूर्णे भारते विश्वे च मन्दिरैः सह समवसरणस्य नन्दीश्वरद्वीपस्य, कैलाशपर्वतादीनां रचनास्तु अनेकाः सन्ति, किन्तु ''जम्बूद्वीपस्य रचना'' तु केवलं हस्तिनापुरे एव विद्यते। अतएव तस्य दर्शनार्थं देशस्य विदेशस्य च पर्यटकाः हस्तिनापुरमागच्छन्ति।

6. हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्रं यद्यपि भगवतां शान्तिकुन्थअरनाथानां जन्मना पवित्रं महाभारतस्य कथानकेन प्रसिद्धमैतिहासिकं तीर्थं तु प्राचीन कालादेवास्ति पुनरपि गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणया दर्शनीयस्थलस्य जम्बूद्वीपस्य निर्माणस्य पश्चात् यात्रिभिः सहोत्तरप्रदेशस्य पर्यटनविभागेन ''धरित्र्याः स्वर्गः'' इव मान्यतां प्राप्तोऽस्ति।

7. जम्बूद्वीपस्य स्थले श्वेतकमलमन्दिरेऽवगाहना प्रमाणा भगवतो महावीरस्य प्रतिमा विराजमाना विद्यते। या महती चामत्कारिणी वर्तते। तस्य कल्पवृक्षस्य भगवतो महावीरस्य समक्षं कस्या अपि भावनायाः भावे मनोवाञ्छितस्य फलस्य प्राप्तिर्भवति।

8. जम्बूद्वीपस्य स्थले सर्वथा नवीनशैल्याः ध्यान मन्दिरमस्ति। यत्र भक्तगणाः ह्रीँ मंत्रस्य प्रतिमायाः समक्षं मौन पूर्वकं उपविश्यात्म शांतिमनुभवन्ति।

9. पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता विंशतिशताब्द्याः प्रथमा बालब्रह्मचारिणी आर्यिका विद्यते। या अष्टादशवर्षीये वयसि 1952 वर्षे गृहं परित्यज्य साध्वी परम्परायां ब्राह्मीचन्दनबालावत् दीक्षां गृहीत्वा कुमारीणां कन्यानां त्यागमार्गं प्रशस्तमकरोत्।

आर्यखण्ड में आज का पूरा विश्व विद्यमान है।

5. सम्पूर्ण भारत एवं विश्व में मंदिर के साथ समवसरण, नन्दीश्वर द्वीप, कैलाशपर्वत आदि रचनाएं तो अनेकों हैं किन्तु ''जम्बूद्वीप रचना'' मात्र एक हस्तिनापुर में ही है, इसीलिए उसका दर्शन करने देश-विदेश के पर्यटक हस्तिनापुर जाते हैं।

6. हस्तिनापुर तीर्थ यद्यपि भगवान शांति, कुंथु, अरहनाथ के जन्म से पावन, महाभारत के कथानक से प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ तो प्राचीन काल से है, फिर भी गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दर्शनीय स्थल जम्बूद्वीप के निर्माण के पश्चात् यात्रियों के साथ-साथ उत्तरप्रदेश पर्यटन विभाग के द्वारा ''धरती का स्वर्ग'' माना गया है।

7. जम्बूद्वीप स्थल पर श्वेत कमल मंदिर में अवगाहना प्रमाण भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान है जो बड़ी चमत्कारिक है। उन कल्पवृक्ष भगवान महावीर के समक्ष कुछ भी भावना भाने से मनवाञ्छित फल की प्राप्ति होती है।

8. जम्बूद्वीप स्थल पर बिल्कुल नये ढंग का एक ध्यान मंदिर है जहाँ भक्तगण ''ह्रीँ'' मंत्र की प्रतिमा के समक्ष मौनपूर्वक कुछ देर बैठकर आत्मशांति का अनुभव करते हैं।

9. पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका हैं, जिन्होंने 18 वर्ष की उम्र में सन् 1952 में गृहत्याग कर साध्वी परम्परा में ब्राह्मी एवं चन्दनबाला के समान दीक्षाधारण कर कुमारी कन्याओं के त्यागमार्ग का शुभारंभ किया।

10. श्री ज्ञानमती माता जैन न्यायस्य सर्वोच्चस्य क्लिष्टतमस्य ग्रन्थस्य ''अष्टसहस्रयाः'' हिन्द्यामनुवादं कृत्वा न्यायदर्शनस्योद्भटविद्वां सोऽपि आश्चर्यचकितम् अकरोत्।

11. श्री ज्ञानमती माता ''कातन्त्ररूपमाला'' इति संस्कृस्य व्याकरण ग्रन्थस्य हिन्द्यामनुवादं कृत्वा दिगम्बरजैनचतुर्विधसंघपरम्परायै संस्कृतभाषायाः अध्ययनस्य अपूर्वमवसरं प्रादात्।

12. पूज्या श्री ज्ञानमती माता नियमसारग्रन्थस्य संस्कृते हिन्द्यां च सरलटीकां विलिख्य यत्र आचार्याकलंकदेवस्य वीरसेनस्वामिनः जयसेनाचार्यस्य च स्मरणमकारयत् तत्रैवावाध्यात्मप्रेमिभ्यो रत्नत्रयस्य धारणं कर्तुं यथार्थज्ञानस्यमार्गमपि प्रशस्तमकरोत्।

13. पूज्या माता ज्ञानमती इन्द्रध्वज–कल्पद्रुम–सर्वतोभद्र त्रिलोकमण्डलादीनां पूजा विधानानां रचनां कृत्वा पंचमकाले भक्तेभ्यः कर्म निर्जरायाः प्रबलं मार्गप्रशस्तमकरोत्।

14. श्री ज्ञानमती माता जैनधर्मस्य प्राचीनतमग्रन्थस्य ''षट्खण्डागमस्य'' सूत्रेषु ''सिद्धान्तचिन्तामणिं'' सरलं संस्कृतटीकां विलिख्य साधुजगति कीर्तिमानमस्थापयत्।

15. पूज्या माता द्विशताधिकान् ग्रन्थान् विलिख्य प्रथमलेखिका साध्वी रूपेण लिखित्वा नारी जातेरितिहासं परिवर्तितमकरोत्।

---

10. श्री ज्ञानमती माताजी ने जैन न्याय के सर्वोच्च एवं क्लिष्टतम ग्रंथ ''अष्टसहस्री'' का हिन्दी अनुवाद करके न्याय दर्शन के उद्भट विद्वानों को भी आश्चर्यचकित कर दिया है।

11. श्री ज्ञानमती माताजी ने ''कातंत्ररूपमाला'' नामक संस्कृत व्याकरण ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करके दिगम्बर जैन चतुर्विध संघ परम्परा को संस्कृत भाषा के अध्ययन का अपूर्व अवसर प्रदान किया है।

12. पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने नियमसार ग्रंथ की संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में सरल टीका लिखकर जहाँ आचार्य अकलंकदेव, वीरसेन स्वामी एवं जयसेनाचार्य आदि का स्मरण कराया है, वहीं अध्यात्म प्रेमियों के लिए रत्नत्रय धारण करने हेतु सच्चे ज्ञान का मार्ग भी प्रशस्त किया है।

13. पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक मण्डल विधान आदि अनेक पूजा-विधानों की रचना करके पंचमकाल में भक्तों के लिए कर्म निर्जरा का प्रबल माध्यम प्रस्तुत कर दिया है।

14. श्री ज्ञानमती माताजी ने जैनधर्म के प्राचीनतम सिद्धान्त ग्रंथ ''षट्खण्डागम'' के सूत्रों पर ''सिद्धान्तचिंतामणि'' नामक सरल संस्कृत टीका लिखकर साधु जगत में कीर्तिमान् स्थापित किया है।

15. पूज्य माताजी ने 200 से अधिक ग्रंथ लिखकर प्रथम लेखिका साध्वी के रूप में नारी जाति का इतिहास परिवर्तित कर दिया है।

16. श्रीज्ञानमतिमातुः प्रचुरसाहित्यिकावदानेन प्रभावितो भूत्वा अवधविश्वविद्यालयस्य फैजाबादस्य कुलपतिः मातरं डी.लिट्. नाम्ना मानद उपाधिना समलंकृतमकरोत्।

17. तीर्थंकर भगवतां जन्मभूमिविकासपरम्परायां हस्तिनापुरानंतरं अनंततीर्थंकर–जन्मभूमि शाश्वत तीर्थ अयोध्यातीर्थं वर्तमानकालिकप्रथमतीर्थंकर श्रीऋषभदेवजिनेन्द्रस्य जन्मभूमेः स्वरूपेण विश्वस्मिन् स्थापयितुं मातुरेव योगदानं अविस्मरणीयमस्ति।

18. महावीरभगवतः जन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थे मात्र द्वाविंशतिमासानामल्पकाले भव्य–नंद्यावर्तप्रासादस्य मंदिराणां च निर्माणकार्यस्य पूर्णतायां मातुरेव प्रेरणा अस्ति।

19. चतुर्विंशतितीर्थंकराणां षोडशजन्मभूमितीर्थानां विकासयितुं पूज्यामात्रा ''अखिल भारतवर्षीय तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी'' नामा एका संस्था स्थापिता।

20. तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा–केवलज्ञानकल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थे ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' तीर्थ निर्माणं कारयित्वा पूज्या माता तं जैनतीर्थं विश्वप्रसिद्धमकरोत्।

21. जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः भगवान् ऋषभदेवसमवसरणश्रीविहाररथः महावीरज्योतिश्च त्रयाणां रथानां प्रवर्तनं कारयित्वा पूज्यामात्रा सम्पूर्णभारतदेशे जिनधर्मस्य कीर्तिपताका प्रसारिता।

---

16. श्री ज्ञानमती माताजी के प्रचुर साहित्यिक अवदान से प्रभावित होकर अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद ने डी.लिट् की मानद उपाधि से उन्हें अलंकृत किया है।

17. तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों को विकसित करने के क्रम में हस्तिनापुर के पश्चात् प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव एवं अन्य 4 तीर्थंकरों की जन्मभूमि अयोध्या को विकसित कर उसे 'ऋषभ जन्मभूमि' के रूप में विश्व के मानस पटल पर पूज्य माताजी ने ही अंकित किया है।

18. भगवान महावीर की जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में मात्र 22 माह के अल्प समय में अत्यन्त भव्य 'नंद्यावर्त महल तीर्थ' का निर्माण कराने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी ही हैं।

19. 'अखिल भारतवर्षीय तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी' का गठन कराकर चौबीसों तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों के विकास की प्रेरणा पूज्य ज्ञानमती माताजी ने ही प्रदान की है।

20. भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली' का भव्य निर्माण कराकर पूज्य ज्ञानमती माताजी ने ही प्रयाग तीर्थ को विश्व के समक्ष जैन तीर्थ के रूप में स्थापित किया है।

21. सम्पूर्ण देश में जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार एवं भगवान महावीर ज्योति रथों के प्रवर्तन द्वारा 3-3 बार जैनधर्म का डंका बजाने वाली पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ही हैं।

22. अस्याः एव प्रेरणया भगवतः पार्श्वनाथस्य तृतीय सहस्राब्दिमहोत्सवः वाराणसी नगरात् उद्घाटितो भूत्वा भारतदेशे प्रचारितोऽभूत्।

23. पूज्या मातुः अपूर्वप्रतिभां विलोक्य अनेकैः समाजैः काले–काले तं न्यायप्रभाकर, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी, तीर्थोद्धारिका इत्यादिभिः पदवीभिः सन्मानं कृत्वा निजसमाजं नगरं च गौरवान्वितमकुर्वन्।

---

22. 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि-वाराणसी से उद्घाटित 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष' पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से ही सारे देश में सफलतापूर्वक मनाया गया है।

23. पूज्य माताजी की अपार प्रतिभा शक्ति की स्तुति करते हुए समाज ने समय-समय पर उन्हें न्याय प्रभाकर, चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी, तीर्थोद्धारिका इत्यादि कितनी ही उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है।

अध्याय-10

ज्ञानमती माताजी की कतिपय उपलब्धियाँ

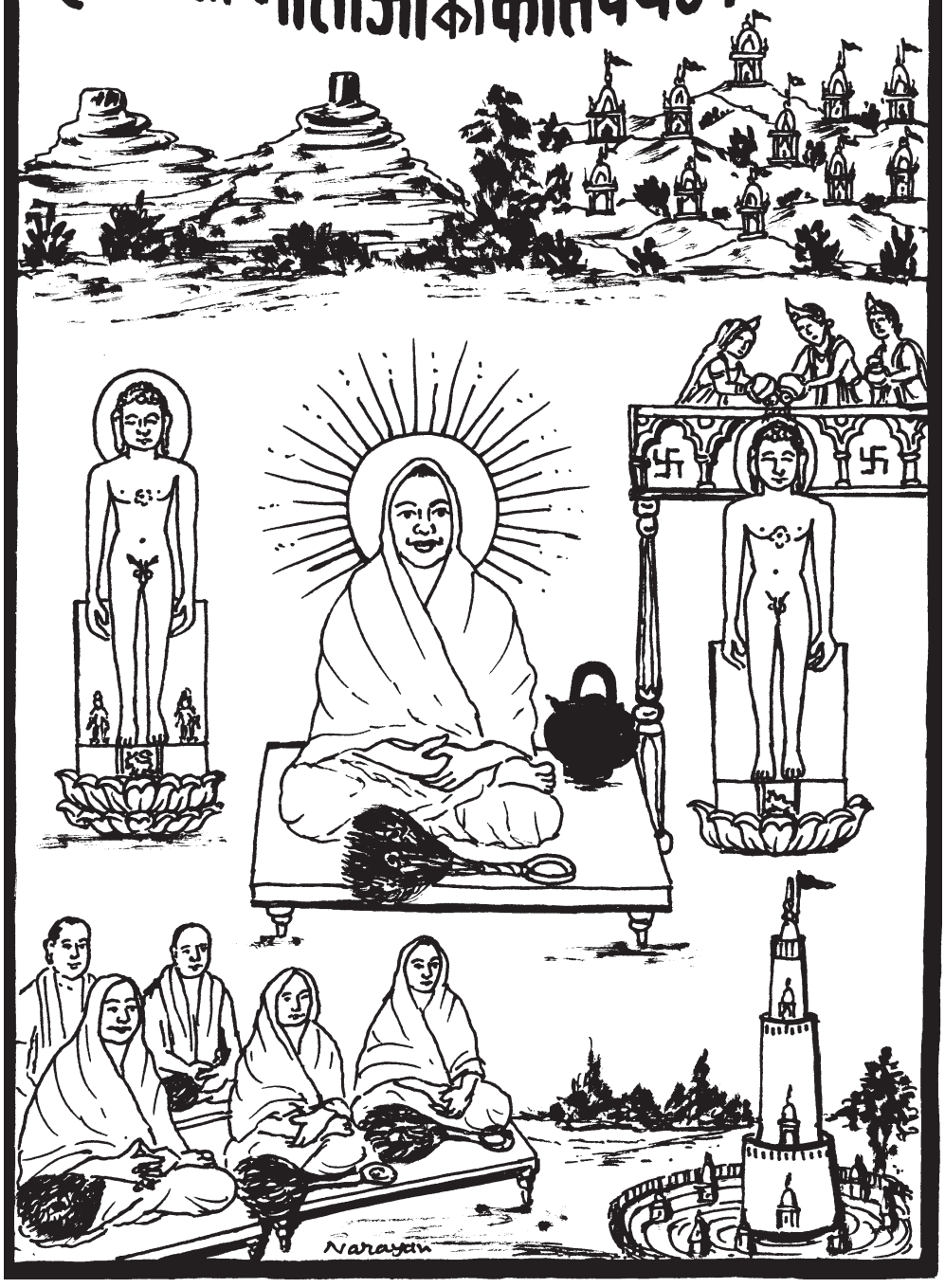

दशमोऽध्यायः

ज्ञानमत्याः मातुः कतिपयोपलब्धयः

गोम्मटेश्वरस्य चरणयोर्ध्यानेन प्रकटिताभवत् जम्बूद्वीपरचना—**1965 वर्षस्य घटना वर्तते, पूज्या गणिनी ज्ञानमती माता आर्यिका संघेन सह श्रवणबेलगोलातीर्थे चतुर्मासमकरोत्। तस्मिन् समये 15 दिनानि पर्यन्तं पर्वते एव स्थित्वा सा भगवतो बाहुबलिनः श्रीचरणयोः पिण्डस्थं ध्यानमकरोत्।**

एकाग्रतया कृतस्य ध्यानस्य प्रतिफलमेतत्प्राप्तं यदेकस्मिन् दिने ध्याने पूज्या माता मध्यलोकस्य त्रयोदशद्वीपरचनायाः अकृत्रिमचैत्यालयानां दर्शनमकरोत् एकश्च दिव्यप्रकाशस्तस्याः दृष्टिगतोऽभवत्। हर्षातिरेकात् तानि चैत्यालयानि पुनः-पुनः स्मरन्ती पर्वतात् नीचैरागत्य सा तिलोयपण्णत्तीं त्रिलोकसारं च ग्रन्थौ निष्कास्य मध्यलोकस्याकृत्रिमचैत्यालयानां गणनामपश्यत् तयोश्च तादृशमेव वर्णनं वीक्ष्य बहुप्रसन्नाभवत्। पुनः माता स्वशिष्याः सम्पूर्णं वृत्तान्तमुक्त्वा ताः स्वोपदेशेन मध्यलोकस्य चैत्यालयानां दर्शनमकारयत्।

पुनः यदा जनसाधारणस्य समक्षं माताश्रीः अस्य वर्णनमकरोत् तदा जनास्तां पृथिव्यां साकारां कर्तुं प्रार्थयन्। सोलापुरे, सिद्धवरकूटे, श्रीमहावीरजीक्षेत्रे, दिल्लीनगर्यां च कतिषुचित् स्थानेषु एतस्यै रचनायै साकाररूपं प्रदातुं जनाः बहुःप्रयत्नमकुर्वन् परन्तु ध्यानस्य साकाररूपा

ज्ञानमती माताजी की कतिपय उपलब्धियाँ

➢गोम्मटेश्वर के चरणों में ध्यान से प्रगट हुई जम्बूद्वीप रचना–

सन् 1965 की घटना है पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने आर्यिका संघ सहित श्रवणबेलगोला में चातुर्मास किया। उस समय 15 दिनों तक पर्वत पर ही रहकर उन्होंने भगवान बाहुबली के श्रीचरणों में पिण्डस्थ ध्यान किया।

एकाग्रतापूर्वक किये गये ध्यान का प्रतिफल यह निकला कि एक दिन ध्यान में माताजी को मध्यलोक की तेरह द्वीप रचना के अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन हुए और एक दिव्य प्रकाश उन्हें दृष्टिगत हुआ। हर्षातिरेक से उन चैत्यालयों का बार-बार स्मरण करते हुए पर्वत से नीचे आकर उन्होंने तिलोयपण्णत्ति, त्रिलोकसार ग्रंथ निकालकर मध्यलोक के अकृत्रिम चैत्यालयों की गणना देखी और उसमें वैसा ही वर्णन देखकर बहुत खुश हुईं, पुनः माताजी ने अपनी शिष्याओं को सारा वृत्तान्त बताकर उन्हें अपने उपदेश द्वारा मध्यलोक के चैत्यालयों के दर्शन करवाए।

पुनः जब जनसाधारण के समक्ष माताजी ने इसका वर्णन किया तब लोगों ने इसे पृथ्वी पर साकार करने की प्रार्थना की और सोलापुर, सिद्धवरकूट, महावीरजी, दिल्ली आदि कई स्थानों पर इस रचना को साकार रूप देने की लोगों ने बहुत कोशिश की परन्तु ध्यान का साकार रूप जम्बूद्वीप

जम्बूद्वीपरचना तस्मिन्नेव हस्तिनापुरतीर्थे 1974 वर्षे साकाररूपं गृहीतुमुद्यताभवत्, यत्र कोटीनां वर्षाणां पूर्वं राजा श्रेयांसः स्वप्ने सुमेरुपर्वतमपश्यत्, तस्य च प्रतिफलेन प्रथमतीर्थंकराय ऋषभदेवाय प्रथमाहारप्रदानस्य (इक्षुरसस्य) पुण्यं प्राप्नोत्। अद्य देशात्–विदेशाच्च लक्षाधिकपर्यटकाः समागत्यास्य वन्दनीयस्य दर्शनीयस्य च स्थलस्य जम्बूद्वीपस्य आनन्दमनुभवन्ति।

सुदर्शनमेरोः शिलान्यासात् प्रारब्धोऽभवत् हस्तिनापुरस्योद्धारः—**1972 वर्षे पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुर्विहारो राजस्थानात् राजधानीं दिल्लीं प्रत्यभवत्। पहाड़ीधीरज स्थानस्य तस्य प्रथमस्य चतुर्मासस्य मध्ये ''दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य'' स्थापनाभवत्। पुनः 1974 वर्षे चतुर्मासात् पूर्वं माता स्व संघसहिता दिल्ल्याः हस्तिनापुरु–मागच्छत्, तदा तीर्थमिदं तस्यै अरोचत्। अत्रैव संघस्य ब्रह्मचारिणो मोतीचन्द्रस्यान्येषां च सहयोगिमहानुभावानां सहयोगेन एकस्याः लघुभूमेश्चयनमभवत्। माताश्रीश्च तत्र सुमेरुपर्वतस्य शिलान्यासमकारयत्। पुनः दिल्लीनगर्या मागत्य मंगलचतुर्मासस्यानन्तरमेव दिसम्बर 1974 मासे माताश्रीः स्वार्यिकासंघसहिता पुनः हस्तिनापुरे पदार्पणमकरोत्। पूज्यः आचार्यः धर्मसागरोऽपि स्व चतुर्विधसंघेन सहितो हस्तिनापुरं प्राप्नोत्। तत्र तस्य संघस्थोःमुनिः श्रीवृषभसागरः विधिपूर्वकं सल्लेखनया समाधिमरणस्य सौभाग्यं प्राप्नोत्।**

एतेन प्रकारेण 1974 वर्षात् पश्यतः एव हस्तिनापुर तीर्थस्य कायाकल्पः प्रारभत्।

रचना उसी हस्तिनापुर तीर्थ पर सन् 1974 में साकार रूप लेने को उद्यत हो उठी, जहाँ करोड़ों वर्ष पूर्व राजा श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरु पर्वत को देखा था और उसके प्रतिफल में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को प्रथम आहार देने का (इक्षुरस का) पुण्य प्राप्त किया था। आज देश-विदेश से हजारों-लाखों पर्यटक आकर इस वंदनीय एवं दर्शनीय स्थल जम्बूद्वीप का आनन्द लेते हैं।

➢सुदर्शन मेरु के शिलान्यास से प्रारंभ हुआ हस्तिनापुर का उद्धार–

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का विहार राजस्थान से राजधानी दिल्ली की ओर हुआ और पहाड़ी धीरज के उस प्रथम चातुर्मास के मध्य ''दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान'' की स्थापना की गई। पुनः सन् 1974 में चातुर्मास से पूर्व माताजी अपने संघ सहित दिल्ली से हस्तिनापुर पधारीं, तब यह तीर्थ उन्हें पसंद आया। यहीं पर संघस्थ ब्र. मोतीचंद जी एवं सहयोगी महानुभावों के सहयोग से एक छोटी सी भूमि का चयन किया गया और माताजी ने वहाँ सुमेरु पर्वत का शिलान्यास कराया। पुनः दिल्ली पहुँचकर मंगल चातुर्मास के अनन्तर दिसम्बर सन् 1974 में माताजी ने अपने आर्यिका संघ सहित हस्तिनापुर में पुनः पदार्पण किया। पूज्य आचार्यश्री धर्मसागर महाराज भी अपने चतुर्विध संघ सहित हस्तिनापुर पधारे, जहाँ उनके संघस्थ मुनिराज श्री वृषभसागर महाराज ने विधिवत् सल्लेखनापूर्वक समाधिमरण का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस प्रकार सन् 1974 से देखते-देखते ही हस्तिनापुर तीर्थ की काया पलट होने लगी। क्षेत्र

क्षेत्रे यत्र एकस्य 250 वर्षपुरातनस्य मन्दिरस्यातिरिक्तं किंचिदपि नासीत्, तत्रैव मातुः शुभागमनात् पश्चात् अनेकजिनमन्दिराणां मनोहारिदृश्यमुपस्थितमभवत्, नशियामार्गे च क्रीता भूमिः यत्र जम्बूद्वीपरचना प्रस्ताविातासीत्, तस्मिन् वनस्य स्थाने लघु अपवर्के भगवतः महावीरस्य अवगाहनाप्रमाणा सप्तहस्तोत्तुंगा प्रतिमा विराजमाना अभवत्। यस्या पंचकल्याणक–प्रतिष्ठा फरवरी 1975 मासे पूज्यस्य आचार्यस्य धर्मसागरस्य पूज्यायाश्च मातुः ज्ञानमत्याः संघसान्निध्ये सम्पन्नाभवत्।

पूज्यायाः मातुः ज्ञानमत्याः शब्देषु– अत्र कल्पवृक्षो महावीरस्वामी अस्ति, अस्यैव प्रभोः कृपाप्रसादेनैव वने मंगलं भूत्वा द्रुतगत्या सम्पूर्णा रचना मूर्तरूपां गृहीतुमशक्नोत्। लघुप्रकोष्ठात् महतो मन्दिरस्य रूपेण परिवर्तितं श्वेतकमलमन्दिरमद्य प्रत्येकपर्यटकस्य ध्यानं स्वं प्रत्याकृष्टं करोति।

कोटीनां वर्षाणां पूर्वं स्वप्ने दृष्टः सुमेरुपर्वतः साकारोऽभवत् हस्तिनापुरे—कोऽजानात् यत् यस्यां हस्तिनापुरनगर्यां कोटिवर्षाणि पूर्वं राजा श्रेयांसः स्वप्ने सुमेरुपर्वतं दृष्ट्वा तस्या फलस्वरूपेण भगवते वृषभदेवाय प्रथमाहाररूपेण इक्षुरसस्य आहारं प्रादात् तस्मिन्नेव हस्तिनापुरे कोटि वर्षाणि पश्चात् साक्षात् सुमेरुपर्वतस्य निर्माणं भविष्यति–किन्तु तं स्वप्नं साकारमकरोत् गणिनी प्रमुखा श्री ज्ञानमती माता 1974 वर्षे संघेन सह पदार्पणं कृत्वा–

जम्बूद्वीपरचनायाः प्रथमचरणरूपेण मध्ये सुदर्शनमेरोः पर्वतस्य निर्माणं पूर्णं भूत्वा

पर जहाँ एक 250 वर्ष पुराने मंदिर के अतिरिक्त कुछ नहीं था, वहीं माताजी के पधारने के बाद अनेक जिनमंदिरों के मनोहारी दृश्य उपस्थित हो गये तथा नशिया मार्ग पर क्रय की गई भूमि जहाँ जम्बूद्वीप रचना बननी थी, उस घने जंगल जैसे स्थान पर छोटा सा 12×12 फुट का कमरा बनाकर भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण 7 हाथ खड्गासन प्रतिमा विराजमान की गई, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी सन् 1975 में पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज एवं श्री ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में सम्पन्न हुई।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के शब्दों में – ये कल्पवृक्ष महावीर स्वामी हैं, इन्हीं प्रभु की कृपा प्रसाद से ही जंगल में मंगल होकर द्रुतगति से सम्पूर्ण रचना मूर्तरूप ले सकी है। छोटे कमरे से बड़े मंदिर रूप में परिवर्तित श्वेत "कमल मंदिर" आज प्रत्येक पर्यटक का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है।

➢करोड़ों वर्ष पूर्व स्वप्न में देखा हुआ सुमेरुपर्वत साकार हुआ हस्तिनापुर में–

कौन जानता था कि जिस हस्तिनापुर नगरी में करोड़ों वर्ष पूर्व राजा श्रेयांस ने स्वप्न में सुमेरु पर्वत देखकर उसके फलस्वरूप भगवान ऋषभदेव को प्रथम पारणा के रूप में इक्षुरस का आहार दिया था, उसी हस्तिनापुरी में करोड़ों वर्ष पश्चात् साक्षात् सुमेरु पर्वत का निर्माण होगा? किन्तु उस स्वप्न को साकार किया पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सन् 1974 में संघ सहित पधारकर–

जम्बूद्वीप रचना के प्रथम चरण के रूप में बीचों-बीच में सुदर्शन मेरु पर्वत का निर्माण पूर्ण

गुलाबवर्णस्य संगमरमरप्रस्तस्य संलग्नपर्यन्तं अस्मिन् प्रायः चत्वारि वर्षाणि व्यतीतान्यभवन्।

अन्ततः 29 अप्रैल दिनात् 3 अप्रैल 1979 वर्षस्य सा शुभ घटिका उपस्थितैवाभूत् यदा 101 फुट उन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्य निर्माणस्य पूर्णतायां ''श्री सुदर्शनमेरुजिनबिम्ब पञ्चकल्याणकगजरथमहोत्सवस्य च'' भव्यायोजनं संस्थानेन कृतमभवत्। ईदृशमपूर्वमायोजनं गजरथ महोत्सवश्च उत्तरप्रान्ते प्रथमबारमेवाभवत्। अस्मिन् सुअवसरे पूज्या माता संघसहिता दिल्ल्याः विहारं कृत्वा जम्बूद्वीपस्थलमागच्छत्, तस्मिन्नेव यत्र वनसदृशे स्थाने एव महावीरमन्दिरस्य समीपे निर्मिते तृणानां कुटीरेऽतिष्ठत्। अस्मिन् प्रथमप्रतिष्ठामहोत्सवे आचार्यकल्पः श्रीश्रेयांससागरोऽपि महाराजः संघसहितः पदार्पणमकरोत्। उत्तरप्रदेशस्य शासनस्य विद्युतमंत्री श्री रेवतीरमणः अस्य सुमेरुपर्वतस्य उद्घाटनं कृत्वा आत्मानं गौरवान्वितमकरोत्। पूज्या आर्यिकाः श्री रत्नमतीमाता (ज्ञानमत्याः मातुः जन्मदात्री) अतीव प्रसन्नतया सहास्य सुमेरुपर्वतस्य दर्शनं कृत्वा अकृत्रिमचैत्यालयानां वन्दनासदृशीमनुभूतिमकरोत्। अस्यैव प्रतिष्ठामहोत्सवस्य मंगलऽवसरे जैनजैनेतराणां सर्वेषामाकर्षणाय सुन्दर-सुन्दर झंकृतयो निर्मापिताः अभवन्, याः अद्यापि आगन्तुकयात्रिणो हस्तिनापुरस्येतिहासं वर्णयन्त्याः ज्ञानमतीकलामन्दिरे सुरक्षिताः विद्यन्ते। तस्मिन्नेव काले ''आचार्यश्रीवीरसागर-संस्कृतविद्यापीठस्य'' स्थापनाप्यभवत्, तस्मिन् विद्यापीठे शिक्षां प्राप्यानेक विद्यार्थिनः मुनयः, भट्टारकाः, ब्रह्मचारिणः, प्रतिष्ठाचार्याः आदिरूपेण समस्ते देशे व्यापिकां धर्मप्रभावनां कुर्वन्ति। अनेन प्रकारेण जम्बूद्वीपस्थले इदं प्रथमं पञ्चकल्याणकं स्वस्मिन् अभूतपूर्वमासीत्, यस्मिन्

होकर गुलाबी संगमरमर पत्थर लगने तक इसमें लगभग 4 वर्ष लग गये।

आखिरकार 29 अप्रैल से 3 अप्रैल 1979 की वह शुभ घड़ी आ ही गई जब 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत निर्माण की पूर्णता पर ''श्री सुदर्शन मेरु जिनबिंब पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव'' का भव्य आयोजन संस्थान के द्वारा किया गया। ऐसा अपूर्व आयोजन एवं गजरथ महोत्सव उत्तर प्रांत में प्रथम बार हुआ था। इस सुअवसर पर पूज्य माताजी ससंघ दिल्ली से विहार कर जम्बूद्वीप स्थल पर पधारीं और उसी जंगल जैसे स्थान पर ही महावीर मंदिर के पास बनीं फूस की झोपड़ी में ठहरीं। इस प्रथम प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्यकल्प श्री श्रेयांससागर जी महाराज संघ सहित पधारे। उत्तरप्रदेश शासन के विद्युत मंत्री श्री रेवती रमण जी ने इस सुमेरु पर्वत का उद्घाटन कर स्वयं को गौरवान्वित किया था। पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी (ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री माँ) अतीव प्रसन्नता के साथ इस सुमेरु पर्वत का दर्शन करके अकृत्रिम चैत्यालयों की वंदना जैसी अनुभूति किया करती थीं। इसी प्रतिष्ठा महोत्सव के मंगल अवसर पर जैन-जैनेतर सभी के आकर्षण के लिए सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ बनवाई गई थीं, जो आज भी ''ज्ञानमती कला मंदिरम्'' के नाम से आगन्तुक यात्रियों को हस्तिनापुर का इतिहास बताती हैं। उसी समय ''आचार्य श्री वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ'' की स्थापना भी की गई थी। उस विद्यापीठ में शिक्षा प्राप्त कर अनेक विद्यार्थी मुनि, भट्टारक, ब्रह्मचारी, प्रतिष्ठाचार्य आदि रूप में देश भर के अन्दर व्यापक धर्मप्रभावना कर रहे हैं। इस प्रकार जम्बूद्वीप स्थल पर यह प्रथम पंचकल्याणक स्वयं में अभूतपूर्व

सुमेरुपर्वते षोडश जिनप्रतिमाः विराजमानाः अभवन्। अस्य पर्वतस्य दर्शनार्थं जनाः 136 सोपान्मार्गेषु आरोहणे सति अत्यन्तमेव प्रसन्ना भूत्वा सातिशयं पुण्यमर्जयन्ति।

जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः रथस्य प्रवर्तनम्—**1972 वर्षे एव यदा जम्बूद्वीपस्य सामान्या प्रतिकृतिः निर्माणाय प्रस्तुता आसीत्, तस्मात् समयात् मातुर्मनसि इयं भावनाऽऽसीत् यत् इमां प्रतिकृतिं आकर्षण पूर्णां विधाय सम्पूर्णे भारते भ्रमणं कारयित्वा सर्वे जैनभूगोलस्य दिग्दर्शिकया जम्बूद्वीपरचनया परिचिताः भूयुः। अतस्तस्य रूपरेखां निर्मितां कारयित्वा पूज्यायाः मातुरेव संघ सान्निध्ये 4 जून 1982 दिने दिल्ल्याः ऐतिहासिकात् लालकिला प्रांगणात् भारतस्य प्रथमया महिला प्रधानमंत्रिण्या श्रीमत्या इन्दिरागांधीमहोदयया जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः रथस्य प्रवर्तनं कारितम्, तस्मिन् समये इन्दिरागांधी पूज्यायाः मातुः समीपमागत्य तस्याः स्नेहिलमाशीर्वादं प्राप्य अत्यन्तमेव प्रसन्नाभवत्। अनेकविधानां च धार्मिक–राजनैतिक विषयाणां चर्चाः कृत्वा सा यां सन्तुष्टिं प्राप्तामकरोत् सा वास्तवे अवर्णनीयैवास्ति। सा ज्योतिः रथे स्वास्तिकं रचयित्वा प्रवर्तनं प्रारम्भमकरोत् स्ववक्तव्ये रथयात्रायाः उपयोगितां प्रदर्शयन्ती सर्वेभ्यो देशवासिभ्यः अस्मात् व्यसनमुक्तेः प्रेरणामदात्, व्यसनेभ्यश्च दूरं भवितुं प्रेरणामदात्।**

जैनागमे वर्णितस्य भूगोलस्य खगोलस्य च विषये अध्ययनस्य अनुसन्धानस्य च प्रक्रियां गतिशीलां करणस्योद्देश्येन प्रवर्तितोऽयं जम्बूद्वीपस्य रथः दिल्ली–हरियाणा–राजस्थान–मध्यप्रदेश–कर्नाटक–महाराष्ट्र–गुजरात–आसाम–बंगाल– बिहार–उड़ीसा–

था जिसमें सुमेरु पर्वत में 16 जिनप्रतिमाएं विराजमान की गईं। इस पर्वत के दर्शन हेतु लोग 136 सीढ़ियाँ चढ़ते हैं और खूब प्रसन्न होकर सातिशय पुण्य का संचय करते हैं।

➢जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन–

सन् 1972 में ही जब जम्बूद्वीप का सामान्य मॉडल बन रहा था उस समय से पूज्य माताजी के मन में यह भावना थी कि इस मॉडल को आकर्षक बनाकर सारे भारत में घुमाकर सबको जैन भूगोल का दिग्दर्शन कराने वाली जम्बूद्वीप रचना से परिचित कराया जाये। अतः उसकी रूपरेखा बनाकर पूज्य माताजी के ही संघ सानिध्य में 4 जून 1982 को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान से भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का प्रवर्तन कराया गया। उस समय इन्दिरा जी पूज्य माताजी के पास आकर उनका स्नेहिल आशीर्वाद प्राप्त कर अति प्रसन्न हुईं और अनेक प्रकार के धार्मिक-राजनीतिक विषयों की चर्चा करके उन्हें जो सन्तुष्टि प्राप्त हुई वह वास्तव में अनिर्वचनीय थी। उन्होंने ज्योतिरथ पर स्वस्तिक बनाकर प्रवर्तन प्रारंभ करके अपने वक्तव्य में रथभ्रमण की उपयोगिता को बताते हुए सभी देशवासियों को इससे व्यसनमुक्ति की शिक्षा लेने हेतु प्रेरणा प्रदान की।

जैनागम में वर्णित भूगोल एवं खगोल के विषय के अध्ययन, अनुसंधान की प्रक्रिया को गतिशील बनाने के उद्देश्य से प्रवर्तित जम्बूद्वीप के इस रथ ने दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, आसाम, बंगाल, बिहार, उड़ीसा,

उत्तरप्रदेशादीनां सम्पूर्णभारतस्य प्रतिकोणं गत्वा विशेषधर्मप्रभावनापूर्वकं सर्वेषु ज्ञानस्य ज्योतिषः प्रकाशमानमकरोत्। पुनः अस्यैव जम्बूद्वीपप्रतिष्ठापनामहोत्सवस्य मध्ये 28 अप्रैल 1985 दिने स्व 1045 दिनानां भ्रमणस्य पश्चात् ''ज्ञानज्योतिः रथस्य'' हस्तिनापुरे मंगल पदार्पणमभवत्।

जम्बूद्वीप ज्ञानज्योतिः संगोष्ठ्याः उद्घाटनमकरोत् श्री राजीव गांधी—**जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः रथस्य प्रवर्तनस्य पश्चात् पूज्यायाः गणिनी प्रमुखायाः आर्यिकायाः ज्ञानमत्याः मातुः ससंघश्चतुर्मासो यतो हि दिल्लीनगर्या मभवत् अतः शरत्पूर्णिमायाः शुभेऽवसरे दिल्लीनगर्यां ''जम्बूद्वीपज्ञानज्योतिः संगोष्ठ्याः'' शैक्षणिककार्यक्रमः राजधान्यामायोजितोऽभवत्। यस्या उद्घाटनं दिल्ल्याः फिक्की सभागारे विशालेन समारोहेण सह सम्पन्नमभवत्।**

31 अक्तूबर 1982 दिने सांसदः श्री राजीव गांधी समागत्य संगोष्ठ्याः उद्घाटनमकरोत्। पूज्यया मात्रा च राजसत्तायाः उच्चतमपदप्राप्तये आशीर्वादमगृह्णात्। पुनः स्व मातुरिन्दिरा गांधीमहोदयस्याः पश्चात् भारतस्य यशस्विप्रधानमंत्रिणः रूपेण प्रसिद्धोऽभवत्।

जैन भूगोलस्य ज्ञान प्रदानायेयं संगोष्ठी सफलतापूर्वकं सम्पन्ना भवत्, यस्यां मेरठ विश्वविद्यालयस्य कुलपति सहिताः सम्पूर्ण देशस्योच्चकोटेरनेक विद्वांसः (डॉ. पन्नालाल जैन साहित्याचार्यः, डॉ. लालबहादुरशास्त्री आदयः) समागच्छन् अनेकाश्च गम्भीरविषयाणां ज्ञानं पूज्यया मात्रा प्राप्नुवन्।

उत्तरप्रदेश आदि सम्पूर्ण भारत के कोने-कोने में जाकर विशेष प्रभावनापूर्वक सभी में ज्ञान की ज्योति जलाई पुनः इसी जम्बूद्वीप प्रतिष्ठापना महोत्सव के मध्य 28 अप्रैल 1985 को अपने 1045 दिन के भ्रमण के पश्चात् 'ज्ञानज्योति रथ' का हस्तिनापुर में मंगल पदार्पण हुआ।

➢जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार का उद्घाटन किया श्री राजीव गाँधी ने–

जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति रथ प्रवर्तन के पश्चात् पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ चातुर्मास चूँकि दिल्ली में हुआ था इसलिए शरदपूर्णिमा के शुभ अवसर पर दिल्ली में ''जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'' का एक शैक्षणिक कार्यक्रम राजधानी में आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन दिल्ली के फिक्की ऑडिटोरियम में विशाल समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

31 अक्टूबर 1982 को सांसद श्री राजीव गांधी ने पधारकर सेमिनार का उद्घाटन किया तथा पूज्य माताजी से राजसत्ता के उच्चतम पद को प्राप्त करने हेतु आशीर्वाद ग्रहण किया। पुनः अपनी माँ इन्दिरागांधी के पश्चात् भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं।

जैन भूगोल का ज्ञान कराने वाली यह संगोष्ठी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई, जिसमें मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति सहित देशभर के उच्चकोटि के अनेक विद्वान् (डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य, डॉ. लालबहादुर शास्त्री आदि) पधारे और अनेक गहन विषयों का ज्ञान पूज्य माताजी से प्राप्त किया।

आर्यिकायै श्री रत्नमत्यै मात्रेऽभिनन्दनग्रन्थसमर्पणम्—**जैनसमाजस्यानेकमूर्धन्याः विद्वांसः एकमितिहासिकं निर्णयं गृहीत्वा वास्तवे स्वं बुद्धिमत्तायाः परिचयमदुः 1983 वर्षे, यदा जम्बूद्वीपस्य प्रेरणास्रोतस्विन्याः पूज्यायाः गणिनीप्रमुखायाः श्रीज्ञानमत्याः मातुः जन्मदात्र्याः मातुः आर्यिकायाः श्री रत्नमत्याः मातुः करकमलयोः नवम्बर 1983 दिने एकमभिनन्दन–ग्रन्थमुपहृत्य देशं तस्याः त्यागमयेन विराटव्यक्तित्वेन परिचितमकारयत्। यद्यपि महापुरुषस्य जन्मदातृभ्यः मातु–पित्रोः नाम इतिहासस्य पत्रेषु लेखनीयं भवति परन्तु या माता ज्ञानमती मातासदृश्यै विभूत्ये जन्म प्रदानेन सहैव 13 सन्तानेभ्यः जन्म दत्वा गृहस्थधर्मस्य कर्तव्यस्य निर्वाहस्य पश्चात् स्वयमपि नारीजीवनस्य सारभूतां आर्यिका– दीक्षामगृह्णात् सा तु अस्मभ्यं युगयुगान्तरपर्यन्तं परम पूज्याभवत्।**

1914 वर्षे अवधप्रान्तस्य महमूदाबादनगरे जन्म प्राप्ता कन्या मोहिनी 1932 वर्षे दाम्पत्यजीवनं प्रविश्य 38 वर्षाणि पर्यन्तं गृहस्थधर्मस्य पालनं कृत्वा आत्मनः एव पुत्र्याः मैनायाः अर्थात् श्रीज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणया 1971 वर्षेऽजमेर नगरे परमपूज्येन आचार्य श्रीधर्मसागरेण आर्यिकां दीक्षां गृहीत्वा रत्नमती संज्ञां प्राप्नोत्। अत्यन्तनिःस्पृहस्य वैराग्यमय व्यक्तित्वस्य च धनिनी आर्यिका रत्नमती माता 13 वर्ष पर्यन्तं स्व निर्दोषामार्यिका चर्यां परिपालयन्ती जम्बूद्वीपरचनानिर्माणं मूलात् चूलपर्यन्तं निर्माण भूतामपश्यत् साच सुमेरुपर्वतस्य ध्यानं कृत्वा परमा प्रसन्नाऽतिष्ठत्।

➢**आर्यिका श्री रत्नमती माताजी को अभिनंदन ग्रंथ समर्पण–**

जैन समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेकर वास्तव में अपनी सूझबूझ का परिचय दिया सन् 1983 में, जब जम्बूद्वीप की प्रेरणास्रोत पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की जन्मदात्री माँ पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के करकमलों में नवम्बर 1983 में एक अभिनंदन ग्रंथ भेंट कर देश को उनके त्यागमयी विराट व्यक्तित्व से परिचित कराया। वैसे तो प्रत्येक महापुरुष को जन्म देने वाले माता-पिता का नाम इतिहास के पन्नों पर लिखने योग्य रहता है किन्तु जिस माँ ने ज्ञानमती माताजी जैसी दिव्य विभूति के साथ-साथ 13 संतानों को जन्म देकर गृहस्थधर्म के कर्तव्य निर्वाह के पश्चात् स्वयं भी नारी जीवन की सारभूत आर्यिका दीक्षा को धारण किया, वे तो हम सबके लिए युग-युगों तक परम पूज्य ही बन गईं।

सन् 1914 में अवधप्रान्त के महमूदाबाद कस्बे में जन्मी कन्या मोहिनी ने सन् 1932 में दाम्पत्य जीवन में प्रवेश कर 38 वर्षों तक गृहस्थ धर्म का पालन कर अपनी ही पुत्री मैना अर्थात् आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1971 में अजमेर (राज.) में परम पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा धारण कर 'रत्नमती' नाम प्राप्त किया था। अत्यंत निस्पृह एवं वैरागी व्यक्तित्व की धनी आर्यिका रत्नमती माताजी ने 13 वर्ष तक अपनी निर्दोष आर्यिका चर्या का पालन करते हुए जम्बूद्वीप रचना निर्माण को मूल से चूल तक बनते हुए देखा और वे सुमेरु पर्वत का ध्यान करके परम प्रसन्न होती थीं।

हस्तिनापुरस्य कानने भीषणं शरद–ग्रीष्मकालं सोढ्वा सा सदैवेमामेवेच्छामकरोत् यत् भगवतः शान्तिनाथस्यास्यां पावन जन्मधरायां मम समाधे सयोगः प्राप्तो भवेत्। तस्याः भावना सफलाऽभूत् मातुश्च ज्ञानमत्याश्चरण सान्निध्ये तत्वज्ञानस्य–भेदविज्ञानस्य सम्बोधनं प्राप्तं कुर्वन्ती सा महानात्मा 15 जनवरी 1985 दिने स्व जीवनमन्दिरे स्वर्णकलशस्य रूपेणोत्तमं समाधिमरणं प्राप्य परमलक्ष्यमसाधयत्। ये तस्याः रत्नमत्याः मातुर्दर्शनं प्रत्यक्षमकुर्वन् तेऽवश्यमेव तस्याः महत्वं जानन्ति। तस्याः मन्दहास्य युक्तायाः आकर्षकमुद्रा–युक्तायाः वैराग्यमयमूर्तेः ख्याति–लाभ–पूजादीनां भावनाभिः दूरवर्तिन्याः मातु मौन व्यक्तित्वं जम्बूद्वीपस्य प्रतिकणं व्याप्तमस्ति। इममेव च सन्देशं प्रददाति–

''सन्नार्यः बलिदानं सदैवास्मिन् युगे स्मर्यते।''

अकृत्रिम रचनायाः रूपं सदैव दर्शयन्ती जम्बूद्वीप रचना धरित्र्यां साकाराभवत् जम्बूद्वीपजिनबिम्ब प्रतिष्ठापनामहोत्सवः 1985 वर्षम्—**31 जनवरी 1980 दिने जम्बूद्वीपरचनायाः द्वितीयचरणस्य शिलान्यासो विशालसमारोहपूर्वकं कृतोऽभवत्। अस्मिन्नवसरे साहू श्रेयांस–प्रसादः, साहूअशोक कुमारः, श्रीमती इन्दू जैना समागत्य हर्षमन्वभवन्। तस्मिन् समये पूज्या माता राजधान्यां दिल्ल्यां विराजमानाऽऽसीत्। 9 अप्रैल 1981 दिने मातुः ससंघ मंगलंपदार्पणं हस्तिनापुरेऽभवत्। 10 मई 1981 दिने च 101 फुट उन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्य द्वितीय प्रतिष्ठापना दिनं समायोजितम्।**

हस्तिनापुर के जंगल में भीषण सर्दी-गर्मी को सहन करके भी वे सदैव यही इच्छा प्रगट करती थीं कि भगवान शांतिनाथ की इस पावन जन्मभूमि पर ही मेरी समाधि का संयोग प्राप्त हो। उनकी भावना सफल हुई और पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के चरण सानिध्य में तत्त्व ज्ञान-भेद विज्ञान का सम्बोधन प्राप्त करती हुई उस महान आत्मा ने 15 जनवरी 1985 को अपने जीवन मंदिर पर स्वर्ण कलश के रूप में उत्तम समाधिमरण को प्राप्त कर परम लक्ष्य की सिद्धि कर ली। जिसने उन रत्नमती माताजी के दर्शन प्रत्यक्ष में किये हैं उन्हें अवश्य उनकी महानता का ज्ञान है। उनकी मन्द मुस्कानयुक्त आकर्षक मुद्रा, विरागी छवि, ख्याति-लाभ-पूजा की भावनाओं से दूर-दूर तक भी अपरिचित रहने वाली उस माता का मौन व्यक्तित्व जम्बूद्वीप के कण-कण में विद्यमान है तथा यही संदेश प्रदान कर रहा है–''सत् नारी का बलिदान सदा, इस युग में याद किया जाता''।

➢अकृत्रिम रचना का रूप दिखाती जम्बूद्वीप रचना धरती पर साकार हुई (जम्बूद्वीप जिनबिंब प्रतिष्ठापना महोत्सव-सन् 1985)–

31 जनवरी 1980 को जम्बूद्वीप रचना के द्वितीय चरण का शिलान्यास विशाल समारोहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर साहू श्री श्रेयांसप्रसाद जी एवं साहू श्री अशोक जी एवं श्रीमती इन्दू जैन ने पधारकर हर्ष का अनुभव किया। उस समय पूज्य माताजी राजधानी दिल्ली में विराजमान थीं। 9 अप्रैल 1981 को माताजी का संघ सहित मंगल पदार्पण हस्तिनापुर में हुआ और 10 मई 1981 को 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत का द्वितीय प्रतिष्ठापना दिवस मनाया गया।

तदनन्तरं पूज्यायाः मातुः सततप्रेरणया जैनभूगोलस्य दिग्दर्शनं कारयन्तीयं रचना शनैः शनैः साकाररूपं गृहीतुं प्रारभत्, अन्ततः तत् शुभदिनमप्यागच्छत् यदा 28 अप्रैल दिनात् 2 मई 1985, वैशाख शुक्लाष्टमी दिनात् द्वादशी पर्यन्तं ''जम्बूद्वीपजिनबिम्ब–प्रतिष्ठापना महोत्सवस्य'' राष्ट्रीय स्तरेणायोजनं कृतम्। तस्मिन् समये सम्पूर्णे भारतवर्षे अस्य व्यापकः प्रचारः प्रसारोऽभवत्। अतएव सम्पूर्णात् देशात् प्रायः लक्षाधिकाः नर–नार्यः प्रतिष्ठा महोत्सवे समागच्छन्। अस्यैव प्रतिष्ठामहोत्सवस्य मध्ये त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीयस्याः संगोष्ठ्याः समायोजनमपि निर्धारितमभवत्। तदास्य 101 फुट उन्नतस्य, सुमेरुपर्वतस्य परितोः वायुयानेन पुष्पवृष्टिरप्यभवत्। अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे यत्राचार्यो श्री धर्मसागरस्य संघस्थाः साधवोऽनेका भट्टारकाश्च स्व सान्निध्यं प्रादुः, तत्रैव जम्बूद्वीपस्योद्घाटनं कर्तुं उत्तरप्रदेशस्य मुख्यमंत्री श्रीनारायणदत्तस्तिवारी समये समये च उत्तरप्रदेशस्य जलमंत्री श्री वासुदेवसिंहः, राज्यसभायाः सांसदः श्री जे.के. जैनः, केन्द्रीयो रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहारावः आदयो नेतारः, अनेककुलाधिपतयः, प्राध्यापकाः केचन च प्रशासनाधिकारिणः महोत्सवं सक्रियतापूर्वकं सम्पन्नं कृत्वा स्वात्मानं गौरवान्वितमकुर्वन्।

ज्ञानज्योतिषः अखण्डस्थापनामकरोत् पी.वी. नरसिंहारावो हस्तिनापुरे—**राजधान्याः दिल्लीनगर्याः प्रवर्तितस्य जम्बूद्वीपज्ञानज्योति रथस्य 1045 दिन पर्यन्तं भारतभ्रमणस्य पश्चात् यदा 28 अप्रैल 1985 दिने हस्तिनापुरे आगमनेन सह प्रवर्तनस्य समापनमभवत्, तु पूज्यायाः मातुः संघसान्निध्ये विशाला शोभायात्रा निर्गताभवत्।**

इसके पश्चात् पूज्य माताजी की सतत प्रेरणा से जैन भूगोल का दिग्दर्शन कराने वाली यह रचना धीरे-धीरे साकार रूप लेने लगी अन्ततः वह शुभ दिवस भी आ गया जब 28 अप्रैल से 2 मई 1985, वैशाख शुक्ला 8 से 12 तक ''जम्बूद्वीप जिनबिंब प्रतिष्ठापना महोत्सव'' का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन किया गया, उस समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया था अतः पूरे देश से लगभग एक लाख नर-नारी इस प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे थे। इसी प्रतिष्ठा महोत्सव के मध्य त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का भी आयोजन रखा गया। उस समय इस 101 फुट उत्तुंग, सुमेरु पर्वत के चारों ओर हेलिकॉप्टर द्वारा पुष्पवृष्टि भी हुई। इस प्रतिष्ठा महोत्सव में जहाँ आचार्य श्री धर्मसागर महाराज के संघस्थ साधुओं व अनेक भट्टारकों ने अपना सानिध्य प्रदान किया, वहीं जम्बूद्वीप का उद्घाटन करने उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी एवं समय-समय पर उ.प्र. के आबकारी मंत्री श्री वासुदेव सिंह, राज्यसभा सांसद श्री जे.के. जैन, केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव आदि नेतागण, अनेक कुलाधिपति, प्रोफेसर एवं कई प्रशासनिक अधिकारियों ने महोत्सव को सक्रियतापूर्वक सम्पन्न करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभूत किया था।

➢ज्ञानज्योति की अखण्ड स्थापना पी.वी. नरसिम्हाराव ने की हस्तिनापुर में–

राजधानी दिल्ली से प्रवर्तित जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति रथ का 1045 दिन तक भारत भ्रमण के पश्चात् जब 28 अप्रैल 1985 को हस्तिनापुर में आगमन के साथ प्रवर्तन का समापन हुआ तो पूज्य ज्ञानमती माताजी के संघ सानिध्य में विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

जम्बूद्वीपजिनबिम्बप्रतिष्ठापनामहोत्सवेन सहैव ज्योतिः यात्रायाः समापनस्य अस्मिन्नवसरे केन्द्रीयो रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिंहरावो हस्तिनापुरं समागत्य जम्बूद्वीप रचनायाः यथार्थसमक्षं निर्मिते एकस्मिन् कमलाकारे भवने ज्ञानज्योतिष अखण्डंस्थापनां कृत्वा पूज्यायाः मातुः मंगलमाशीर्वादं प्राप्नोत्। अस्य ज्ञानज्योतिषः माध्यमेन हस्तिनापुरे समागताः सर्वे यात्रिणः स्वनगरे कृतस्य ज्योतिः रथस्य स्वागतस्य स्मृतयो नूतनाः अकुर्वना, ते च ज्योतिर्भवने विराजमानायाः सरस्वत्याः मातुः दर्शनं कृत्वा सम्यग्ज्ञानस्य लाभं प्राप्नुवन्ति।

संस्थानस्य मंत्री मोतीचन्द्रोः मोतीसागरोऽभवत् १९८७ वर्षम्—**१९६७ वर्षे मातुश्चतुर्मासः ससंघः सनावद नगरे मध्यप्रदेशेऽभवत्। तस्मिन् समये तत्र एकस्य श्रावकस्य मोतीचन्द्रस्य सर्राफस्य विषये ज्ञातमभवत् यत् अयं बालब्रह्मचारी अस्ति। माताश्रीः तस्य धार्मिकसामाजिक-कार्यक्षमतामवलोक्य तं संघे स्थातुं प्रेरणामदात्। तदनुसारेण तस्याः प्रबल प्रेरणायाः आधारेण ब्रह्मचारी मोतीचन्द्रः संघे स्थित्वा प्रमुखरूपेण जम्बूद्वीपस्य निर्माणयोजनां मूर्तरूपां प्रदातुं प्रारभत्, पुनः हस्तिनापुरे जम्बूद्वीप रचनायाः निर्माणस्य पूर्णे सति सः मातुः समक्षं स्व दीक्षायाः भावं प्रकटयामास।**

मोतीचन्द्रस्येच्छानुसारेण पूज्या माता संघस्थं ब्रह्मचारिणं रवीन्द्रं परमपूज्यमाचार्य श्री विमलसागरं हस्तिनापुरे पादार्पणं कर्तुं निवेदनाय प्रैषयत्, पुण्ययोगेन चाचार्यो विमलसागरः ससंघो हस्तिनापुरं समागत्य 8 मार्च 1987, फाल्गुण शुक्ल नवम्याः दिने भगवतो नेमिनाथपार्श्वनाथयो पंचकल्याणक-

---

जम्बूद्वीप जिनबिंब प्रतिष्ठापना महोत्सव के साथ-साथ ज्योति यात्रा समापन के इस अवसर पर केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव ने हस्तिनापुर पधारकर जम्बूद्वीप रचना के ठीक सामने निर्मित किये गये एक कमलाकार भवन में ज्ञानज्योति की अखण्ड स्थापना करके पूज्य माताजी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इस ज्ञान ज्योति के माध्यम से हस्तिनापुर में आने वाले सभी तीर्थयात्रियों को अपने शहर में किये गये ज्योतिरथ के स्वागत की स्मृतियाँ ताजी हो जाती हैं और वे ज्योति भवन में विराजमान सरस्वती माता के दर्शन कर सम्यग्ज्ञान का लाभ प्राप्त करते हैं।

➢संस्थान के मंत्री मोतीचंद जी बने मोतीसागर (सन् 1987)–

सन् 1967 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ चातुर्मास सनावद (मध्यप्रदेश) में हुआ। उस समय वहाँ एक श्रावक मोतीचंद जैन सर्राफ के बारे में ज्ञात हुआ कि ये बालब्रह्मचारी हैं। माताजी ने उनकी धार्मिक और सामाजिक कार्यक्षमता देखकर उन्हें संघ में रहने की प्रेरणा प्रदान की। तदनुसार उनकी प्रबल प्रेरणा के आधार पर ब्रह्मचारी मोतीचंद जी संघ में रहकर प्रमुखरूप से जम्बूद्वीप की निर्माण योजना को मूर्तरूप प्रदान करने लगे पुनः हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना निर्माण पूर्ण हो जाने के बाद उन्होंने पूज्य माताजी के समक्ष अपनी दीक्षा का भाव प्रकट किया।

मोतीचंद जी की इच्छानुसार पूज्य माताजी ने संघस्थ ब्र. रवीन्द्र जी को परम पूज्य आचार्यश्री विमलसागर महाराज को हस्तिनापुर पधारने का निवेदन करने भेजा और पुण्ययोग से आचार्यश्री ने ससंघ हस्तिनापुर पधारकर 8 मार्च 1987, फाल्गुन शु. नवमी को भगवान नेमिनाथ-पार्श्वनाथ

प्रतिष्ठायाः मध्ये व्यापकेन समारोहेण पूर्वकं क्षुल्लकदीक्षां प्रदाय मोतीचन्द्रं क्षुल्लकमोती–सागरमकरोत्। दीक्षायाः मध्ये केन्द्रीयःरेलमंत्री श्री माधवरावसिन्धिया समागत्य तस्मै अभिनन्दनपत्रमुपाहरत्, पूज्यया मात्राशीर्वादं च गृहीत्वा सः स्वजीवनं धन्यममन्यत्।

ज्ञातव्यमस्ति यत् मोतीसागरस्य महाराजस्य जन्म 1940 वर्षे सनावदनगरस्य श्रेष्ठिनोऽमोलकचन्द्रस्य धर्मपत्न्याः श्रीमत्याः रूपाबाई इत्यस्याः कुक्षिना आश्विन कृष्णा चतुर्दशी दिने अभूत्। 1958 वर्षे ब्रह्मचर्यव्रतस्य ग्रहणस्य पश्चात् 1967 वर्षात् मातुः संघं प्रविश्य गुरोराज्ञां स्वजीवने प्राथमिकतां ददत् भाविपीठिकायै भवान् समर्पणस्यापूर्वमादर्शं प्रस्तुतमकरोत्। 2 अगस्त 1987 दिने श्रावण शुक्ल सप्तम्यां पूज्या माताश्रीः भवन्तं जम्बूद्वीपधर्मपीठस्य पीठाधीशपदेऽभ्यसिंचत्। तस्मात् दिनात् आरभ्य अद्यावधिपर्यन्तं श्रीमोतीसागरो महाराजः स्व पदस्य योग्यं संयमं पालयन् संस्थानस्य सर्वेषु कार्येषु दिशा–निर्देशं प्रददाति।

इदमेव तीर्थं माधुरीं चन्दनामतीमकरोत् 1989 वर्षे—**18 मई 1958, ज्येष्ठकृष्ण–अमावस्यायां जन्म गृहीत्वा पूर्व जन्मनां पुण्यात्, मात्रा जन्मघुट्टिकारूपेण प्राप्तैर्धार्मिकसंस्कारैः 1969 वर्षे च पूज्यया मात्रा ज्ञानमत्या प्राप्तेन अल्पसमयस्य सान्निध्येन अहमपि अस्मिन् कठोरमार्गे चलितुं प्रेरिताभवम्। यस्य फलस्वरूपेण खिष्टाब्दे 1969 तमे 25 अक्टूबर दिनाँके (शरदपूर्णिमा तिथौ) मया एकादशवर्षीयेअल्पायुषि जयपुरनगरे एव द्विवर्षस्य ब्रह्मचर्य व्रतं ग्रहीतं पुनः 1971 वर्षे अजमेरनगरे राजस्थाने भाद्रपदशुक्लदशम्यां–सुगन्धदशम्यामहं**

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के मध्य व्यापक समारोहपूर्वक क्षुल्लक दीक्षा प्रदान कर मोतीचंद जी को "क्षुल्लक मोतीसागर" बनाया। दीक्षा के समय केन्द्रीय रेलमंत्री श्री माधवराव सिंधिया ने पधारकर आपको अभिनंदन पत्र भेंट किया तथा पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेकर उन्होंने अपने जीवन को धन्य माना।

ज्ञातव्य है कि मोतीसागर महाराज का जन्म सन् 1940 में सनावद के श्रेष्ठी श्री अमोलकचंद जैन की धर्मपत्नी श्रीमती रूपाबाई की कुक्षि से आश्विन कृ. चतुर्दशी को हुआ। सन् 1958 में ब्रह्मचर्यव्रत लेने के बाद सन् 1967 से माताजी के संघ में प्रवेश कर गुरु आज्ञा को अपने जीवन में प्राथमिकता देते हुए भावी पीढ़ी के लिए आपने समर्पण का अपूर्व आदर्श प्रस्तुत किया है। 2 अगस्त 1987 को श्रावण शु. सप्तमी के दिन पूज्य माताजी ने आपको जम्बूद्वीप धर्मपीठ के "पीठाधीश" पद पर अभिषिक्त किया। तब से लेकर आज तक मोतीसागर महाराज अपने पद के योग्य संयम का पालन करते हुए संस्थान के समस्त क्रियाकलापों में दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।

➢इसी तीर्थ ने माधुरी को बनाया चन्दनामती (सन् 1989)–

18 मई 1958, ज्येष्ठ कृ. अमावस को जन्म लेकर पूर्व जन्मों के पुण्य, माँ से जन्मघूंटी के रूप में प्राप्त धार्मिक संस्कार एवं सन् 1969 में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के मिले अल्प समय वाले सानिध्य ने मुझे भी इस कठोर त्याग पथ पर चलने हेतु प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप सन् 1969 में 25 अक्टूबर (शरदपूर्णिमा) को मैंने 11 वर्ष की उम्र में जयपुर में ही 2 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण किया पुनः सन् 1971 में अजमेर (राज.) में भादों शु. दशमी (सुगंध दशमी) के दिन मैंने पूज्य

पूज्यया मात्रा यावज्जीवनं ब्रह्मचर्यव्रतं गृहीत्वा गुरुमुखात् धार्मिकाध्ययनं प्रारभे। 13 वर्षीये लघुवयसि अहमधिकं तु किमपि नाजानाम्, किन्तु विवाहबन्धने न बद्ध्वा गुरुचरणसेवायां जीवनस्य समर्पणमकरवं शनैः शनैः ब्रह्मचर्य व्रतस्याभिप्रायमजानाम्। तस्यैव फलस्वरूपेण शनैः शनैः द्वयो प्रतिमयोः सप्तम प्रतिमायाश्च व्रतानि गृहीत्वा मम 18 वर्षाणि पूज्यायाः ज्ञानमत्याः मातुः स्व जन्मदात्र्याः मातुः आर्यिकायाः रत्नमत्याः छत्रछायायां ज्ञानार्जनं, वैय्यावृत्तौ, संघव्यवस्थायां, धर्मप्रभावनायां त्रिलोकशोध– संस्थानकार्यकलापेषु च व्यतीतान्यभवन्।

पुनः 13 अगस्त 1989, श्रावणशुक्लएकादश्याः हस्तिनापुरे जम्बूद्वीपस्य स्थले पूज्या गणिनी प्रमुखा माता ज्ञानमती माता मह्यं आर्यिका दीक्षां प्रदाय चन्दनामतीमकरोत्। नारीजीवनस्योत्कृष्टस्य त्यागधारणस्य पश्चात् नवजीवनमेव प्राप्तम्, अतः प्रायः 16 सहस्राणां किलोमीटराणां यात्रां कृत्वाऽनेक तीर्थानां दर्शनमनेकजीर्णोद्धारविकासकार्ये स्व समयस्य सदुपयोगं कृत्वा परम प्रसन्नतामनुभवामि।

1974 वर्षेभ्यः प्रारब्धस्य जम्बूद्वीपस्य निर्माणादीनां कार्यमहं स्वयमेव स्वचर्म–चक्षुर्भ्यामपश्यम्। संस्थानेन सम्पादितेषु सर्वेषु कार्येषु स्वपदयोग्यं यथाशक्ति योगदानं विधाय स्वजीवनं धन्यमकरवम्। भविष्येऽपि अनेनैव प्रकारेण रत्नत्रयस्य साधनां कुर्वन्त्याः दीक्षितजीवनस्य चरमलक्ष्यरूपेण बोधिसमाधेः प्राप्तिर्भवतु, इयमेव भगवतः शान्तिनाथस्य श्रीचरणयोः प्रार्थना वर्तते।

माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर गुरुमुख से धार्मिक अध्ययन प्रारंभ कर दिया। 13 वर्ष की लघु उम्र में मुझे अधिक तो कुछ ज्ञात नहीं था, किन्तु विवाह बंधन में न बंध कर गुरुचरणों में जीवन समर्पित कर देना ही मैंने ब्रह्मचर्य व्रत का अभिप्राय समझा था, उसी के फलस्वरूप धीरे-धीरे दो प्रतिमा, सात प्रतिमा आदि व्रतों को लेकर मेरे 18 वर्ष पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं अपनी जन्मदात्री माँ पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छत्रछाया में ज्ञानार्जन, वैयावृत्ति, संघ व्यवस्था, धर्मप्रभावना एवं त्रिलोक शोध संस्थान के कार्यकलापों में व्यतीत हुए।

पुनः 13 अगस्त 1989, श्रावण शु. एकादशी के दिन हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने मुझे आर्यिका दीक्षा प्रदान कर ''चंदनामती'' बनाया। नारी जीवन के उत्कृष्ट त्याग को धारण करने के पश्चात् मानो नया जीवन ही प्राप्त हुआ हो, इसीलिए लगभग 16 हजार किमी. की पदयात्रा करके अनेक तीर्थों के दर्शन एवं उनके जीर्णोद्धार विकास में अपने समय का सदुपयोग करके परम प्रसन्नता का अनुभव होता है।

सन् 1974 से प्रारंभ हुए जम्बूद्वीप रचना निर्माण आदि को मैंने स्वयं अपने चर्मचक्षुओं से प्रतिपल देखा है और संस्थान के द्वारा संपादित होने वाले सभी कार्यों में अपने पद के योग्य यथाशक्ति योगदान करके अपने जीवन को धन्य माना है। भविष्य में भी इसी प्रकार रत्नत्रय की साधना करते हुए दीक्षित जीवन के चरमलक्ष्य रूप बोधि समाधि की प्राप्ति हो, यही भगवान शांतिनाथ के श्रीचरणों में प्रार्थना है।

जम्बूद्वीपमहामहोत्सवः 1990 (प्रथम महोत्सवः)—**प्रत्येकस्य कार्यस्य पृष्ठे कारणं तु गुप्तमस्त्येव, स्व वप्तंबीजमुद्यान रूपेण फलितं वीक्ष्य मालाकारस्य प्रसन्नतायाः किमपि पारं न भवति, तेनैव प्रकारेण जम्बूद्वीपरचनासदृशस्य धर्मोद्यानस्य बीजारोपणं गणिन्याः ज्ञानमत्याः मातुः प्रेरणया 1974 वर्षेऽभवत्। यत् 1985 वर्षे फलितं भूत्वा समक्षमागतम्। इदानीं तं निरन्तरं वृद्धिंगतं कर्तुं पूज्या माता प्रति पञ्चवर्षं जम्बूद्वीपमहामहोत्सवमायोजयितुं प्रेरणां प्रादात्।**

गतपञ्चदशवर्षाणामस्यां कालावधौ इदं शून्यं वनं नागरिकसुविधाभिः परिपूर्णं जीवित भवत्। उत्तरप्रदेश शासनस्य पक्षतः यत्र तीर्थक्षेत्रे वने च निर्मितनशिया पर्यन्त पुष्ट राजमार्गो निर्मितोऽभवत्, तत्रैव यातायातसाधनानां सुविधायां दिल्लीमेरठआदिभ्यः स्थानेभ्यः रोडवेज वाहनानि जम्बूद्वीप पर्यन्तमागन्तुं प्रारभन्त। अस्य प्राकृतिकंसौन्दर्यस्याद्वितीय जम्बूद्वीप रचनायाः विषये उत्तरप्रदेशस्य पर्यटनविभागः ''पृथिव्याः स्वर्गः'' इति वदन् एकस्याः अनुपमकृतेः संज्ञान अस्मै प्रादात्। वर्तमाने हस्तिनापुरस्याभिज्ञान जम्बूद्वीपेन भवति। 3 मई दिनात् 7 मई 1990 दिन पर्यन्तमायोजितेऽस्मिन् पंचवर्षीये जम्बूद्वीपमहामहोत्सवे भारतस्य प्रतिकोणेभ्यः प्रत्येकप्रान्तस्य प्रतिनिधिय समागत्य यत्र कार्यक्रमस्य शोभामवर्धयन्त तत्रैव राजकीयनेतृसु उत्तरप्रदेशस्य महामहिमो राज्यपालः वी.सत्यनारायणो रेड्डी भारतशासनस्य च केन्द्रीयः उद्योगमंत्री श्री अजीतसिंहश्चाष्टमूलगुणप्रदर्शिन्याः उद्घाटनं कृत्वा शाकाहारजीवनस्य अहिंसायाश्च जीवने जनतायां ध्यानाकृष्टमकरोत्।

➢जम्बूद्वीप महामहोत्सव-1990 (प्रथम महोत्सव)–

प्रत्येक कार्य के पीछे कारण तो छिपा ही होता है। अपने बोए गए बीज को उद्यान के रूप में फलित देखकर माली की प्रसन्नता का कुछ पार नहीं होता। उसी प्रकार से जम्बूद्वीप रचना जैसे धर्म उद्यान का बीजारोपण गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की सम्प्रेरणा से सन् 1974 में हुआ जो सन् 1985 में फलित होकर सामने आया। अब उसे निरन्तर वृद्धिंगत करने हेतु पूज्य माताजी ने प्रति पाँच वर्ष में ''जम्बूद्वीप महामहोत्सव'' मनाने की प्रेरणा प्रदान की।

पिछले 15 वर्ष की इस कालावधि में यह शून्य अटवी नागरिक सुविधाओं से परिपूर्ण एवं जीवन्त हो उठी। उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से जहाँ तीर्थक्षेत्र एवं जंगल में बनी नशिया तक पक्की सड़क बनाई गई, वहीं यातायात साधनों की सुविधा में दिल्ली, मेरठ आदि स्थानों से रोडवेज बसें जम्बूद्वीप तक आने लगीं। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अद्वितीय जम्बूद्वीप रचना के बारे में उत्तरप्रदेश के पर्यटन विभाग ने ''धरती का स्वर्ग'' कहते हुए इसे एक अनुपम कृति की संज्ञा प्रदान की है। वर्तमान में हस्तिनापुर की पहचान जम्बूद्वीप से हो रही है। 3 मई से 7 मई 1990 तक आयोजित इस प्रथम पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव में भारतवर्ष के कोने-कोने से प्रत्येक प्रांत के प्रतिनिधियों ने पधारकर जहाँ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई वहीं राजकीय नेताओं में उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री वी. सत्यनारायण रेड्डी व भारत सरकार के केन्द्रीय उद्योग मंत्री श्री अजीत सिंह ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। उस समय श्री अजीत सिंह जी ने अष्टमूलगुण प्रदर्शनी का उद्घाटन करके शाकाहार एवं अहिंसा का अपने जीवन में तथा जनता में उद्घोष भी किया था।

7 मई 1990 दिनं इतिहासस्य स्वर्णिम दिवसरूपेणांकितमभवत् यदा प्रातः 8 वादन समयात् सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकशिलायां 1008 कलशै, प्रथमो महामस्तकाभिषेकः सम्पन्नोऽभवत्।

युगप्रवर्तिकायाः अभिवन्दनम् 1992 वर्षे—**1992 वर्षे हस्तिनापुरे चतुर्मासस्य मध्ये शरत्पूर्णिमायाः दिने भारतवर्षस्य सम्पूर्णो जैनसमाजो मनीषिणो विद्वांसश्च मिलित्वा विशाल–मायोजनं कृत्वा माननीयेन श्री उत्तमभाईपटेलेन (केन्द्रीयेण भारतशासनस्य मंत्रिणा) पूज्यायाः गणिनीप्रमुखायाः श्रीज्ञानमत्याः मातुः करकमलयोः वृहत्कायमभिनन्दनग्रन्थं समर्प्य तस्याः उपकारान् प्रति स्व कृतज्ञतां ज्ञापितामकरोत् तस्मिन्नेव च समये तां ''युगप्रवर्तिकायाः'' उपाधिना अलंकृता कृत्वा संसारमस्याः दीक्षायाः प्रारम्भात् साहित्यसर्जनपर्यन्तं प्रथमया कृत्या परिचितमकारयत्। अस्मिन्नेव शुभावसरे अन्तःराज्यीय चरित्रनिर्माणः संगोष्ठयाः आयोजनमभवत्।**

यद्यपि एतस्य प्रकारस्य पर्वतादपि उन्नतस्य, सागरात् गम्भीरस्य नदीनां च दीर्घस्य आदर्शयुक्तस्य महतो व्यक्तित्वस्य शब्दानां ग्रन्थानां च सीम्नि बन्धनमेकेन बालकेन समुद्रस्य विशालतायाः मापसदृशो हास्यास्पदः प्रयास एव कलितो भविष्यति। किन्तु समये–समये एवंभूतमेव कर्तव्यनिर्वाहं युगस्योपलब्धिरूपेण स्वीकृतं क्रियते। अतः एवमभिनन्दन ग्रन्थस्य समर्पणमपि दिगम्बरजैनसमाजेन गुरुं प्रति उपचारविनयमेवावगन्तव्यम्।

सरस्वत्याः मातुः सेवायाः रूपेण समाजाय विपुलसाहित्यस्य निधिं प्रदानकर्त्रीं

---

7 मई 1990 का दिन इतिहास के स्वर्ण दिवस के रूप में अंकित हो गया जब प्रातः 8 बजे से सुमेरु पर्वत की पांडुकशिला पर 1008 कलशों से प्रथम महामस्तकाभिषेक हुआ।

➢युगप्रवर्तिका का अभिवंदन (सन् 1992)–

सन् 1992 में हस्तिनापुर में चातुर्मास के मध्य शरदपूर्णिमा के दिन भारत की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज एवं मनीषी विद्वानों ने मिलकर एक विशेष आयोजन करके माननीय श्री उत्तम भाई हरजी पटेल (केन्द्रीय मंत्री-भारत सरकार) द्वारा पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों में वृहत्काय अभिवंदन ग्रंथ समर्पित कर उनके अनन्य उपकारों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की तथा उसी समय इन्हें ''युगप्रवर्तिका'' की उपाधि से अलंकृत कर संसार को इनके दीक्षा से लेकर साहित्य सृजन तक के प्रथम कृतित्व से परिचित कराया। इसी शुभ अवसर पर अन्तर्राज्यीय चारित्र निर्माण संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

यद्यपि इस प्रकार के पर्वत से भी ऊँचे, सागर से भी गहरे और नदियों से लम्बे आदर्शों वाले महान व्यक्तियों का व्यक्तित्व शब्दों और ग्रंथों की सीमा में बांधना एक बालक द्वारा समुद्र की विशालता को मापने जैसा हास्यास्पद प्रयास ही कहा जायेगा, किन्तु समय-समय पर इसी प्रकार के कर्तव्यनिर्वाह को युग की उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है अतः इस अभिवंदन ग्रंथ समर्पण को भी दिगम्बर जैन समाज के द्वारा गुरु के प्रति प्रदर्शित उपचार विनय ही मानना चाहिए।

सरस्वती माता की सेवा के रूप में समाज को विपुल साहित्य का भण्डार प्रदान करने वाली

विलुप्तभूताश्च संस्कृतेः न्यासान् विश्वस्य समक्षं तीर्थोद्धारस्य रूपेण प्रस्तुतं कुर्वन्त्यै ज्ञानमत्यै मात्रे अवधविश्वविद्यालयः फैजाबादः 5 फरवरी 1995 दिने डी.लिट् इति मानदेयमुपाधिं प्रदाय स्व विश्वविद्यालयं गौरवान्वितमकरोत्। अस्याः साक्षात् दर्शनं कृत्वा यत्र मानवाः अस्याः महत्तया परिचिताः भवन्ति, तत्रैवास्याः साहित्यस्य स्वाध्यायशीलाः अनया विरचितानि पूजाविधानानि विधातारः, अस्याः प्रेरणयाः विकसितानां तीर्थानां दर्शनार्थिनो वास्तवे स्वात्मानं कृतकृत्यान् धन्यान् च मन्यन्ते। एवंभूतायाः महत्याः विभूतेश्चरणयोः कोटिशो नमनम्।

जम्बूद्वीपस्य ध्यानस्य प्रतिफलं शाश्वततीर्थस्य अयोध्यायाः विकासः—**23 अक्तूबर 1992 धनत्रयोदश्याः प्रातःकालीन पावनवेलायां हस्तिनापुरस्य जम्बूद्वीपस्थले 'रत्नत्रयनिलये' सामायिक– स्यान्तर्गतं ध्यानं कुर्वन्तीं मातरं अयोध्यायाः भगवतः ऋषभदेवस्य दर्शनस्य महामस्तकाभिषेकस्य अन्तः प्रेरणा जागृताभवत्। प्रातःकाले यदा सा एतां वार्तामस्मभ्यमकथयत् तु सर्वे मातुर्दुर्बलं स्वास्थ्यं प्रति तस्याः ध्यानमाकृष्टमकुर्वन्। तत्पश्चादपि 6 दिसम्बर 1992 दिनस्य घटनायाः कारणेन अयोध्यायाः विवादेऽप्यनेक जनाः चिन्तां व्यक्तामकुर्वन्। किन्तु दृढ़निश्चयस्य धनिनी माता भगवतो भक्तौ अचिन्त्यां शक्तिं मत्वा 11 फरवरी 1993, फाल्गुण कृष्ण पंचमी दिने अयोध्यां प्रति विहारस्य तिथिं निश्चितमकरोत्।**

एवं समाचारं श्रुत्वा अवधप्रान्ते हर्षस्य तरंगा उदभवन्। मातुः पूर्णां स्वीकृतिं प्राप्यैव प्रद्युम्नकुमारो जैन (छोटीशाह) टिकैतनगरनिवासी संघपतिरभवत्। अन्ततोगत्वा पश्चिमोत्तर–

तथा विलुप्त हो रही सांस्कृतिक धरोहरों को विश्व के समक्ष तीर्थोद्धार के रूप में प्रस्तुत करने वाली ज्ञानमती माताजी को अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद ने 5 फरवरी 1995 को डी.लिट्. की मानद् उपाधि देकर अपने विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। इनके साक्षात् दर्शन करके जहाँ मानव इनकी महानता से परिचित होते हैं, वहीं इनके साहित्य का स्वाध्याय करने वाले इनके द्वारा रचित पूजा-विधानों को करने वाले, इनकी प्रेरणा से विकसित तीर्थों का दर्शन करने वाले वास्तव में अपने को कृतकृत्य और धन्य मानते हैं। ऐसी महान विभूति के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

➢जम्बूद्वीप के ध्यान का प्रतिफल शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास–

23 अक्टूबर 1992 धनतेरस की प्रातःकालीन मंगल बेला में हस्तिनापुर तीर्थ के जम्बूद्वीप स्थल पर 'रत्नत्रय निलय' में सामायिक के अन्तर्गत ध्यान करती हुईं पूज्य माताजी को अयोध्या के भगवान ऋषभदेव का दर्शन एवं महामस्तकाभिषेक की अन्तर्प्रेरणा जागृत हुई। प्रातःकाल जब उन्होंने यह बात हम लोगों को बताई तब सभी ने माताजी के नाजुक स्वास्थ्य की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया उसके बाद 6 दिसम्बर 1992 की घटना के कारण अयोध्या विवाद पर भी अनेक लोगों ने चिन्ता व्यक्त की किन्तु दृढ़संकल्प की धनी माताजी ने भगवान की भक्ति में अचिन्त्य शक्ति मान कर 11 फरवरी 1993 (फाल्गुन कृ. 5) को अयोध्या के लिए विहार करने की तिथि निश्चित कर दी।

यह खबर सुन अवध प्रान्त में खुशियों की लहर दौड़ गई, माताजी की पूर्ण स्वीकृति मिलते ही प्रद्युम्न कुमार जी (छोटी शाह जैन) टिकैतनगर, संघपति बन गए। अन्ततोगत्वा पश्चिमी उत्तरप्रदेश

प्रदेशस्य भक्तैर्विहारस्य निषेधेऽपि दृढ़सकल्पी माताश्रीः मंगल विहारं कृत्वानेकनगरेषु अहिंसायाः विश्वशान्तेश्च उपदेशं ददती 16 जून 1993 दिने भगवतः आदिनाथस्य श्री चरणयोः पदार्पणमकरोत् तत्र च जीर्णां–शीर्णां स्थितिमवलोक्य अयोध्यातीर्थ समितेः अवधस्य च जनतायाः अतीवाग्रहेण 1993 वर्षस्य चतुर्मासरतत्रैवाभवत्। पुनस्तु विंशतिशताब्द्याः अनेन चातुर्मासेन परमपितुश्चरणयोः प्रथम दर्शनस्योपहाररूपेण माताश्रीः त्रिंशच्चतुर्विंशतिं–समवसरणमन्दिरं च प्रादात्। तयोश्च विराजितुं प्रस्तावितानां जिनप्रतिमानां 19 फरवरी दिनात् 23 फरवरी 1994 पर्यन्तं आयोजितायाः पंचकल्याणकप्रतिष्ठायाः अनन्तरं 24 फरवरी 1994 दिने प्रथमबारं ऋषभदेवस्य महामस्तकाभिषेकस्यायोजनमभवत्। पुनस्तु रामजन्मभूमिः बाबरी मस्जिदस्य विवादेन विख्यातं तीर्थमिदं ऋषभदेवस्य जन्मभूमेनाम्नापि विश्वस्य मानसपटलमागच्छत्। तीर्थक्षेत्रस्य जीर्णोद्धारेण सह मार्गे अनेकतीर्थक्षेत्राण्यापि तस्याः सान्निध्यं प्राप्य पुनः चमचमायमानान्यभवन्। पुनः 1994 वर्षे मातुः 41 वर्षाणां पश्चात् ऐतिहासिकश्चतुर्मासस्तस्याः जन्मभूमौ टिकैतनगरे अभवत्। 27 मासानां विहारस्य मध्ये उत्तरप्रदेशस्य मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंहो यादवः आदिअनेकराजनेतारः प्रशासनिकाधिकारिणश्च अपि अयोध्यामागत्य मातुराशीर्वादं प्राप्नुवन्। शासनस्य पक्षतश्च अनेकाः सुविधाः अयोध्यावासिभ्यः प्रदत्तानकुर्वन्।

जम्बूद्वीप महामहोत्सवः 1995 द्वितीयो महामहोत्सवः—**कस्याः अपि कृतेः निर्माणं यावन्महत्वपूर्णं भवति, तस्मादप्यधिकं महत्वं तस्याः कृतेः समुचितरूपेण तस्याः संवर्द्धने संरक्षणे च भवति। जम्बूद्वीपस्य शास्त्रोक्ता रचना यत्र बालसूर्यः इव हस्तिनापुरस्य क्षितिजे**

के भक्तों द्वारा विहार के लिए मना करने के बाद भी दृढ़संकल्पी माताजी मंगल विहार कर अनेक नगरों में अहिंसा व विश्वशांति का उपदेश देते हुए 16 जून 1993 को भगवान आदिनाथ के श्रीचरणों में पहुँच गईं और वहाँ की जीर्ण-शीर्ण स्थिति देखकर अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी व अवध की जनता के अतीव आग्रह से 1993 का चातुर्मास वहीं हुआ फिर तो बीसवीं सदी के इस प्रथम चातुर्मास से परम पिता के चरणों में प्रथम दर्शन की भेंट स्वरूप माताजी ने तीन चौबीसी एवं समवसरण मंदिर प्रदान किया और उसमें विराजमान होने वाली जिनप्रतिमाओं की 19 फरवरी से 23 फरवरी 1994 तक आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के अनंतर 24 फरवरी 1994 को प्रथम बार ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक का आयोजन हुआ फिर तो मात्र रामजन्मभूमि और बाबरी मस्जिद के विवाद से विख्यात यह तीर्थ 'ऋषभ जन्मभूमि' के नाम से भी विश्व के मानसपटल पर आ गया। तीर्थक्षेत्र के जीर्णोद्धार के साथ मार्ग में अनेक तीर्थ भी उनका सानिध्य पाकर पुनः चमक उठे। पुनः सन् 1994 में माताजी का 41 वर्षों के पश्चात् ऐतिहासिक चातुर्मास उनकी जन्मभूमि टिकैतनगर में हुआ। 27 माह के विहार के मध्य उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री मुलायम यिंह यादव आदि अनेक राजनेताओं व प्रशासनिक अधिकारियों ने भी अयोध्या में आकर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया एवं शासन की ओर से अनेक भेंट अयोध्यावासियों को प्रदान की।

➢ **जम्बूद्वीप महामहोत्सव-1995 (द्वितीय महोत्सव)–**

किसी भी कृति का निर्माण करना जितना महत्त्वपूर्ण होता है उससे कहीं अधिक महत्त्व उस कृति का समुचित रूप से संरक्षण एवं संवर्धन करता होता है। जम्बूद्वीप की शास्त्रोक्त रचना जहाँ

उदिता अभवत् तत्रैव दशवर्षेषु युवादिनकरः इव सम्पूर्णे विश्वे स्वालोकं विस्तीर्य साऽपूर्वां ख्यातिं प्राप्नोत्। 1990 वर्षस्य पश्चात् अक्तूबर 1995 वर्षे आयोजितो द्वितीयो जम्बूद्वीपमहामहोत्सवो मणिकांचन संयोगः इव अस्मात् कारणात् अधिकं महिमामण्डितमभवत् यतः रचनायाः महोत्सवस्य सम्प्रेरिकायाः गणिनीप्रमुखायाः मातुः ज्ञानमत्याः जन्मवैराग्य–जयन्त्याश्चआयोजनस्यावसरः हस्तिनापुरमेव प्राप्तोऽभवत्।

4 अक्तूबर दिनात् 8 अक्तूबर 1995 दिनपर्यन्तं आयोजितेऽस्मिन् अद्वितीये–द्वितीये महामहोत्सवे यत्र 101 फुट उन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकशिलायां 1008 कलशैर्म–हाभिषेकोऽभवत् तत्रैव दिगम्बरजैन त्रिलोकशोध संस्थानस्य चौधरीचरणसिंह– विश्वविद्यालयस्य च संयुक्ते तत्त्वावधाने आयोजितायां ''गणिनी आर्यिका ज्ञानमती संगोष्ठ्यां'' भारतस्य प्रतिकोणतः प्रायः शताधिकाः विद्वांसः समागत्य मात्रा रचितासु कतिपय साहित्यरचनासु स्वशोध पूर्णान् आलेखान् प्रस्तुतानकुर्वन्। मात्रा शास्त्रीय सैद्धान्तिकेषु तथ्यात्मकविषयेषु दिशा निर्देशं च प्राप्नुवन्। अस्मिन्नेवावसरे अनेकसंस्थानामधिवेशनैश्च सह पूज्यायाः मातुः प्रेरणया जम्बूद्वीपस्थले णमोकार महामंत्रस्य संपत्ति पूर्णस्य ''णमोकारमहामंत्रस्याधिकोशस्य'' स्थापना अपि 8 अक्तूबर 1995, शरत्पूर्णिमायाः दिनेऽभवत्। यस्याः उद्घाटनं केन्द्रीयः खाद्यमंत्री श्रीअजितसिंहोऽकरोत्। तस्मात् समयादेव जैनसमाजस्य आबालवृद्धाः स्वशक्त्यनुसारेण 1 $\frac{1}{4}$ वर्षाणां मध्ये एक लक्ष पञ्चाशतसहस्राणि, पञ्चविंशतिसहस्राणि मंत्रान्

बालसूर्य की तरह से हस्तिनापुर के क्षितिज पर उदित हुई वहीं दश वर्षों में युवा दिनकर की भाँति सारे विश्व में अपना आलोक फैलाकर उसने अपूर्व ख्याति प्राप्त कर ली। सन् 1990 के पश्चात् अक्टूबर 1995 में आयोजित द्वितीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव मणिकांचन संयोग की भाँति इसलिए और अधिक महिमामंडित हो गया क्योंकि रचना एवं महोत्सव की सम्प्रेरिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म व वैराग्यजयंती मनाने का सुअवसर भी हस्तिनापुर को प्राप्त हुआ था।

4 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 1995 तक आयोजित इस द्वितीय और अद्वितीय महामहोत्सव में जहाँ 101 फुट उत्तुंग सुमेरु पर्वत की पांडुकशिला पर 1008 कलशों से महाभिषेक हुआ वहीं दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान एवं चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित ''गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी'' में भारत के कोने-कोने से लगभग सौ विद्वानों ने पधारकर माताजी द्वारा रचित कतिपय साहित्य रचनाओं पर अपने शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किए तथा माताजी से अनेक शास्त्रीय-सैद्धान्तिक-तथ्यात्मक विषयों पर दिशानिर्देश प्राप्त किया। इसी अवसर पर अनेक संस्थाओं के अधिवेशन आदि के साथ-साथ पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर णमोकार मंत्र की जमापूंजी बनाने वाले 'णमोकार महामंत्र बैंक' की स्थापना 8 अक्टूबर 1995, शरदपूर्णिमा के दिन हुई जिसका उद्घाटन केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्री अजीत सिंह ने किया। उसी समय से देशभर की जैन समाज के आबाल-वृद्ध अपनी शक्ति अनुसार सवा लाख,

विलिख्य अस्मिन् अधिकोशे सुरक्षितान् कुर्वन्ति यस्य फलस्वरूपेण प्रतिवर्षं शरत्पूर्णिमायाः दिने यत्र लेखकेभ्यः हीरक पदकानि, स्वर्णपदकानि रजतपदकादीनि दत्वा ते सम्मानिताः क्रियन्ते। अद्य कोट्यधिकाः मंत्राः अस्मिन् अधिकोशे एकत्रिताः विद्यन्ते।

संस्थानेन प्रवर्तितो गणिनीज्ञानमतीपुरस्कारः—**8 अक्तूबर 1995 दिने शरत्पूर्णिमावसरे पूज्यायाः मातुः ज्ञानमत्याः जन्मजयन्त्याः शुभावसरे मम लघु प्रेरणायाः आधारेण श्रीअनिल-कुमार जैनस्य कमलमन्दिरप्रीतिविहार दिल्ल्याः अर्थसौजन्येन दिगम्बरजैन त्रिलोकशोधसंस्थानं गणिनी ज्ञानमतीपुरस्कारमारब्धमकरोत्। संस्थानस्य शिक्षात्मकगतिविधिषु अनन्यसहयोगिनः रूपेण कार्यकर्त्रे डॉ. अनुपम जैनाय इन्दौरायानेन प्रथमपुरस्कारेण 8 अक्तूबर दिने एव सः सम्मानित कृतः।**

ज्ञातव्यमस्ति यदस्मिन् पुरस्कारे एकलक्षरूप्यकाणि, रजतप्रशस्ति पत्रं, श्रीफलं प्रदाय संस्थानस्यानेन सर्वोच्चपुरस्कारेण कोऽपि मनीषी कार्यकर्ता सम्मान्यते।

संस्थानेन अनेनैव प्रकारेण प्रतिवर्षं जम्बूद्वीपपुरस्कारः, नंद्यावर्तपुरस्कारः, आर्यिका-रत्नमतीपुरस्कारः छोटेलालजैनस्मृतिपुरस्कारादयोऽन्येऽपि पुरस्काराः प्रदीयन्ते।

राजधान्यां दिल्लीनगर्यां 24 कल्पद्रुमविधानानां आयोजनम्—**दिगम्बरजैनत्रिलोक शोधसंस्थानेन पूज्यायाः गणिन्याः मातुः प्रेरणया भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्त्याः महोत्सवस्य**

इक्यावन हजार या पचीस हजार मंत्र लिखकर इस बैंक में जमा करते हैं जिसके फलस्वरूप प्रतिवर्ष शरदपूर्णिमा के दिन मंत्र लेखकों को हीरक पदक, स्वर्ण पदक, रजत पदक आदि से सम्मानित किया जाता है। आज करोड़ों मंत्र इस बैंक में जमा हैं।

➢संस्थान द्वारा प्रवर्तित गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार–

8 अक्टूबर सन् 1995 को शरदपूर्णिमा के दिन पूज्य ज्ञानमती माताजी की जन्मजयंती के शुभ अवसर पर मेरी लघु प्रेरणा के आधार पर श्री अनिल कुमार जैन-कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली के अर्थ सौजन्य से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार प्रारंभ किया। संस्थान की अकादमिक गतिविधियों में अनन्य सहयोगी के रूप में कार्य करने वाले डॉ. अनुपम जैन-इंदौर को इस प्रथम पुरस्कार से 8 अक्टूबर को ही सम्मानित किया गया।

ज्ञातव्य है कि इस पुरस्कार में एक लाख रुपये की नगद राशि, रजत प्रशस्ति पत्र, श्रीफल प्रदान कर संस्थान के इस सर्वोच्च पुरस्कार द्वारा किसी विशिष्ट मनीषी अथवा सामाजिक कार्यकर्ता को सम्मानित किया जाता है।

संस्थान के द्वारा इसी प्रकार से प्रतिवर्ष जम्बूद्वीप पुरस्कार, नंद्यावर्त महल पुरस्कार, आर्यिका रत्नमती पुरस्कार, छोटेलाल जैन स्मृति पुरस्कार आदि अन्य पुरस्कार भी प्रदान किये जाते हैं।

➢राजधानी दिल्ली के अन्दर 24 कल्पद्रुम विधान का विहंगम आयोजन–

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव

वर्षस्यान्तर्गतं प्रथमबारं राजधान्यां दिल्लीनगर्यां विश्वशान्तये पर्यावरणशुद्धये च चतुर्विंशति–तीर्थंकराणां समवसरणस्य प्रतीकानां 24 कल्पद्रुम महामण्डल विधानानां विशालमायोजनं 4 अक्तूबर दिनात् 13 अक्तूबर 1997 पर्यन्तं आशातीतया सफलतया सह सम्पन्नमभवत्।

'न भूतो न भविष्यति' सूक्तिमेतां चरितार्थां कर्तरि अस्मिन् महायज्ञे यत्र त्रिसहस्राणि जनाः विधाने भागं गृहीत्वा भक्तिसरितायां स्नानेन सह सातिशयं पुण्यमवध्नन् तत्रैव प्रतिदिनं समवसरणस्य दर्शनार्थं लक्षाधिकानां यात्रिणां पंक्तिबद्धवाआगमनमभवत्। वास्तविकं समवसरणमिवातिशयकारिणि विधानेऽस्मिन् प्रत्येकागन्तुकः कस्यापि प्रकारस्य किमपि कष्टं नासहत। चक्रवर्तिभिः क्रियमाणे विधानेऽस्मिन् किमिच्छकदानस्य प्रतीकरूपाणामौषध ज्ञानआहारअभयानामेतेषां चतुर्विधदानानां प्रतिदिनमेव वितरणमभूत्। यत्रास्य भव्यसमारोह–स्योद्घाटनं पूर्वराष्ट्रपतिना डॉ. शंकरदयालेन शर्मणा कृतं तत्रैवान्यराजनेतृषु दिल्लीप्रदेशस्य मुख्योमंत्री श्री साहिबसिंहवर्मा, मध्यप्रदेशस्य मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंहादयः समागत्य भक्तेः अपूर्वं दृश्यमवलोक्य स्वात्मानं सौभाग्यशालिनममन्यन्त। भक्तेरिदं विहंगमं दृश्यं वीक्ष्य जैनसमाजस्य शीर्षनेता साहूअशोककुमारः स्वात्मानं धन्यं मन्यमानः स्वभाषणे पूज्यां मातरं सम्मेदशिखरे ईदृशमेव कार्यक्रमस्य सम्पादनहेतवे न्यवेदयत्। 12 अक्तूबर दिने समस्तस्य दिगम्बरजैनसमाजस्य पक्षतः पूर्वो न्यायाधीशः श्रीमिलापचन्द्रो जैनः पूज्यां मातरं ''गणिनीप्रमुखेति'' उपाधिना समलंकृतां कृत्वा स्वात्मानं गौरवान्वितमकरोत्। समये–समये

जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत विश्व में प्रथम बार राजधानी दिल्ली में विश्व शांति एवं पर्यावरण की शुद्धि हेतु 24 तीर्थंकरों के समवसरण के प्रतीक में 24 कल्पद्रुम महामण्डल विधान का विराट आयोजन 4 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 1997 तक आशातीत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

'न भूतो न भविष्यति' की सूक्ति को चरितार्थ करने वाले इस महायज्ञ में जहाँ तीन हजार लोगों ने विधान में भाग लेकर भक्ति सरिता में स्नान के साथ सातिशय पुण्य का बंध किया वहीं प्रतिदिन समवसरण के दर्शन करने हेतु लाखों यात्रियों का तांता लगा रहा और वास्तविक समवसरण की भांति अतिशयकारी इस विधान में प्रत्येक आगन्तुक भक्त को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं हुआ। चक्रवर्तियों के द्वारा किये जाने वाले इस विधान में किमिच्छक दान के प्रतीक रूप आहार, औषधि, ज्ञान और अभय इन चारों दानों का प्रतिदिन वितरण किया गया। जहाँ इस भव्य समारोह का उद्घाटन भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने किया वहीं अन्य राजनेताओं में दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा, म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह आदि ने पधारकर भक्ति के अपूर्व दृश्य को देखकर अपने को सौभाग्यशाली माना। भक्ति के इस विहंगम दृश्य को देखकर जैन समाज के शीर्ष नेता साहू अशोक कुमार जैन ने अपने को धन्य मानते हुए अपने भाषण में पूज्य माताजी से सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर ऐसा महान कार्यक्रम आयोजित कराने हेतु निवेदन किया। 12 अक्टूबर को समस्त दि. जैन समाज की ओर से पूर्व न्यायाधीश श्री मिलापचंद जैन ने पूज्य माताजी को 'गणिनीप्रमुख' की उपाधि से अलंकृत कर स्वयं को गौरवान्वित किया। समय-

समायोजितैरनेकाभिः प्रतियोगिताभिः सांस्कृतिककार्यक्रमैश्च सह विशेषाकर्षणरूपेण 3 अक्तूबर– दिने समापनावसरे आयोजिता विशेषा रथयात्रासीत् यस्यां 24 रथाः, 24 पालक्यः, 24 बैण्डवादनानि, अश्वाः, गजाः, 'शहनाई', भजनमण्डल्यश्चासन्। ये ऐतिहासिकदृष्ट्या स्वाविचलां मुद्रामत्यजन्। सर्वं मिलित्वा तत्र पंचकल्याणकस्य अभूतपूर्वं दृश्यमासीत्।

भगवान् ऋषभदेवसमवसरणंश्रीविहारः 1998 वर्षम्—**कृतयुगस्य प्रथमतीर्थंकरस्य ऋषभदेवस्यास्तित्वेन जनजनं परिचितं कारयितुं मातुर्मनसि कतिचिद्भ्यो वर्षेभ्यः किञ्चिदपि प्रभावनात्मककार्यं कर्तुमिच्छासीत् फलस्वरूपेण माताश्रीः दि.जैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य कार्यकर्तुभ्यः ''भगवत् ऋषभदेवस्य समवसरण श्रीविहारस्य'' नाम्ना सम्पूर्णे भारते एकस्य रथस्य प्रवर्तनस्य प्रेरणामदात्। तेन रथेन सहैव जन्मकल्याणकस्य प्रतीकस्यैकस्य विशालस्यैरावतगजस्य द्वितीयो रथोऽपि निर्मितोऽभवत्। एतयोर्द्वयो, रथयोरुद्घाटनं 22 मार्च 1998 दिने ऋषभदेवस्य जयन्त्याः दिने जन्मजयन्त्याः वर्षस्य समापनावसरे लालकिला प्रांगणात् दिल्ल्याः केन्द्रीयवित्तराज्यमंत्रिणो धनञ्जय जैनस्याध्यक्षतायां विशाल– समारोहपूर्वकमभवत्। 9 अप्रैल 1998 दिने भगवतो महावीरस्य जयन्त्याः पावने दिवसे तत्कालीनः प्रधानमंत्री श्री अटलविहारीबाजपेयी भारतभ्रमणार्थं स्वास्तिक चिन्हं रचयित्वा अनयोः रथयोः प्रवर्तनमकरोत्।**

निरन्तरं चतुर्वर्षपर्यन्तं दिल्लीहरियाणामध्यप्रदेशराजस्थान महाराष्ट्रगुजरातआसामबंगाल

समय पर आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ विशेष आकर्षण के रूप में 13 अक्टूबर को समापन अवसर पर आयोजित विशाल रथयात्रा थी जिसमें 24 रथ, 24 बग्घियाँ, 24 बैण्ड-बाजे, घोड़े, हाथी, शहनाई, भजन मंडली आदि प्रमुख रहे, जो ऐतिहासिक दृष्टि से अपनी अविस्मरणीय छाप छोड़ गए।

➢भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार (सन् 1998)–

कृतयुग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का अस्तित्व जन-जन तक पहुँचाने हेतु पूज्य माताजी के मन में कई वर्षों से लगन लगी थी और कुछ न कुछ प्रभावनात्मक कार्य करने की इच्छा होती थी उसी के फलस्वरूप माताजी ने दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं को ''भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार'' के नाम से पूरे भारत में एक रथ घुमाने की प्रेरणा दी। उस रथ के साथ-साथ जन्मकल्याणक के प्रतीक में एक विशाल ऐरावत हाथी का दूसरा रथ भी बनाया गया। इन दोनों रथों का उद्घाटन 22 मार्च 1998 ऋषभदेव जन्मजयंती के दिन (जन्मजयंती वर्ष के समापन अवसर पर) लाल किला मैदान दिल्ली से केन्द्रीय वित्तराज्यमंत्री श्री वी. धनंजय कुमार जैन की अध्यक्षता में विशाल समारोहपूर्वक हुआ पुनः 9 अप्रैल 1998 को भगवान महावीर जयंती के पावन दिवस तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत भ्रमण हेतु स्वस्तिक बनाकर इन रथों का प्रवर्तन किया।

निरन्तर चार वर्षों तक दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, म.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात, आसाम, बंगाल-

विहारादि भारतस्य सर्वेषु प्रदेशेषु नगरेषु चानेन समवसरणश्रीविहार रथेन जैनधर्मस्य प्राचीनतायाः भगवतः ऋषभदेवस्य सिद्धान्तानां व्यसनमुक्तेः सदाचारस्याहिंसाया, शाकाहारस्य च यो व्यापकः प्रचारोऽभवत् सः अविस्मरणीयो विद्यते। 21 अक्तूबर 2002 दिने तत् समवसरणं प्रयाग–इलाहाबादे नवनिर्मितायां भगवतः ऋषभदेवस्य दीक्षातीर्थस्थल्या प्रयागतीर्थे समवसरणमन्दिरे स्थायिरूपेण स्थापितोऽभूत्।

अस्याः प्रभावनायुक्तायाः प्रेरणायाः आधारेण अद्य स्थाने–स्थाने भगवतः ऋषभदेवस्य जन्मजयन्ती, निर्वाणोत्सवः, अक्षयतृतीयादिपर्वणामायोजनस्य परम्परा प्रारभत् या च भाविपीठिकायै प्रेरणास्पदा वर्तते।

भगवतः ऋषभदेवस्य राष्ट्रीयं कुलपतिसम्मेलनम्–1998 वर्षीयम्—**संस्थानं स्वनाम्नोऽनुसारेण समये–समये शोधकार्याणि सम्पादयति। समये–समये च अनेकसंगोष्ठ्य सम्पद्यन्ते। अस्यैव संस्थानस्यान्तर्गतं संचालितेन आचार्यवीरसागर संस्कृत विद्यापीठेन पठित्वा अनेके विद्यार्थिनः मुनयः ब्रह्मचारिणो भट्टारका, प्रतिष्ठाचार्यादयोऽभवन्। ये नाम्ना सहैव स्वकार्यकलापैः सर्वत्र यशःसुरभिं प्रसारयन्ति। सम्मेलनसंगोष्ठ्यादीनां शृंखलायां पूज्यायाः मातुः प्रेरणया तस्याः एव संघसान्निध्ये दिगम्बरजैन त्रिलोकशोधसंस्थानस्य चौधरीचरणसिंह विश्वविद्यालयमेरठ नगरस्य च संयुक्तत्वावधाने 4 अक्तूबर दिनात् 6 अक्तूबर 1998 दिनानां मध्ये त्रिदिवसीयं ''भगवान् ऋषभदेवराष्ट्रीयकुलपतिसम्मेलनं'' सम्पन्नमभवत्।**

बिहार आदि भारत के सभी प्रदेशों एवं नगरों में इस समवसरण श्रीविहार के द्वारा जैनधर्म की प्राचीनता, भगवान ऋषभदेव के सिद्धान्तों का एवं व्यसनमुक्ति, सदाचार, अहिंसा-शाकाहार का जो व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है वह अविस्मरणीय है। 21 अक्टूबर सन् 2002 में वह समवसरण प्रयाग-इलाहाबाद में नवनिर्मित ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' तीर्थ पर समवसरण मंदिर में स्थाईरूप से स्थापित किया गया है।

इस प्रभावनामयी प्रेरणा के आधार पर आज जगह-जगह भगवान ऋषभदेव की जन्मजयंती, निर्वाण महोत्सव, अक्षयतृतीया आदि पर्व मनाने की परम्परा प्रारंभ हो गई है जो कि भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्पद है।

➢भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन (सन् 1998)–

संस्थान अपने नाम के अनुसार समय-समय पर शोध कार्यों को सम्पन्न कराता है और समय-समय पर अनेक संगोष्ठियाँ होती रहती हैं। इसी संस्थान के अन्तर्गत संचालित आचार्य वीरसागर संस्कृत विद्यापीठ से पढ़कर अनेक विद्यार्थी मुनि, ब्रह्मचारी, भट्टारक व प्रतिष्ठाचार्य आदि हुए हैं जो नाम के साथ-साथ अपने कार्यकलापों से सर्वत्र यशसुरभि को फैला रहे हैं। सम्मेलन, संगोष्ठी की श्रृंखला में पूज्य माताजी की प्रेरणा से उनके ही संघ सानिध्य में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान एवं चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के संयुक्त तत्त्वावधान में 4 से 6 अक्टूबर 1998 के मध्य त्रिदिवसीय 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'

अस्य सम्मेलनस्य षट्षुसत्रेषु 20 कुलपतयः, कतिचित् पूर्वकुलपतयः 111 च प्राध्यापकविद्वांसः सम्मिलिताः अभवन्। सम्मेलनस्य मध्ये विभिन्न विश्वविद्यालयानां माननीयाः कुलपतयः जैनविद्यायाश्च सर्वोच्चमनीषिणः सहैवोपविश्य भगवतः ऋषभदेवस्य शिक्षाणां सन्दर्भे विचार–विमर्शस्यावसरं प्राप्नुवन्। सम्मेलनस्योद्घाटनसत्रे मुख्यातिथिरूपेण सांसदः श्री राजेश पायलटः (पूर्व केन्द्रीयो मंत्री–भारत शासनम्) अध्यक्षस्य च रूपेण सांसदः श्री धनञ्जयो जैन पूर्वः केन्द्रीयो मंत्री समागत्य कार्यक्रमे चत्वारश्चन्द्राः आयोजितानकुरुताम्। सम्मेलनस्य मुख्योद्देश्यः जैन धर्मस्य शाश्वतसत्तायाः प्रकटीकरणं, इतिहासस्य वस्तुनिष्ठानां तथ्यानां पुनः स्थापना तेषां च पुनर्लेखनं, भगवान् ऋषभदेवस्तस्य परम्परायां अन्यैः 23 तीर्थंकरैः मानवीयकल्याणार्थं तेनैवोक्तानां सिद्धान्तानां–अहिंसा, जीवदया, साम्प्रदायिक–सद्भावः, विश्वशान्तिः, पर्यावरणं प्राकृतिकं च संरक्षणं शुद्धकरणं चासीत्।

सम्मेलनेऽनेके महत्वपूर्णाः निर्णयाः गृहीताः। कुलपतिभिश्च समवेतस्वरेण संचालितं कृतं ''जम्बूद्वीपघोषणा पत्रं 1998'' स्वीकृतमभवत्। ते चाकथयन् यत् तेन श्रमणपरम्परायाः वस्तुनिष्ठ तथ्यानामुदभासनेऽमूल्यं योगदानं भविष्यति। जम्बूद्वीपस्य सुरम्यवातावरण सर्वानेवागन्तुकातिथीन् मंत्रमुग्धानकरोत्।

भगवान् ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महासम्मेलनम् 2006 वर्षम्—**जैनधर्मस्य सार्वभौमिकतायां प्रासंगिकतायां च वर्तमाने इतिहासे लग्नस्य प्रश्नचिह्नस्य समुचितं समाधानं**

सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन के 6 सत्रों में 20 कुलपति, कई पूर्व कुलपति तथा 111 प्रोफेसर विद्वान् सम्मिलित हुए। सम्मेलन के मध्य विभिन्न विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपतियों को तथा जैन विद्या के सर्वोच्च मनीषियों को एक साथ बैठकर भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं के संदर्भ में विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री राजेश पायलट (पूर्व केन्द्रीय मंत्री-भारत सरकार) एवं अध्यक्ष के रूप में सांसद श्री धनंजय जैन (पूर्व केन्द्रीय मंत्री-भारत सरकार) ने पधारकर कार्यक्रम में चार चाँद लगाए। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य जैनधर्म की शाश्वत सत्ता का प्रकटीकरण, इतिहास के वस्तुनिष्ठ सत्यों की पुनर्स्थापना एवं उनका पुनर्लेखन, भगवान ऋषभदेव एवं उनकी परम्परा में अन्य 23 तीर्थंकरों द्वारा मानवीय कल्याण हेतु दिये गये सर्वोदयी सिद्धान्त, अहिंसा, जीवदया, साम्प्रदायिक सद्भाव, विश्वशांति, पर्यावरण एवं प्राकृतिक संरक्षण सुनिश्चित करना था।

सम्मेलन में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गए और कुलपतियों द्वारा समवेत स्वर में जारी किए गए 'जम्बूद्वीप घोषणा पत्र 1998' के रूप में उनकी अनुशंसाएं यह प्रकट कर रही थीं कि इससे श्रमण परम्परा के वस्तुनिष्ठ सत्यों के उद्भासन में अमूल्य योगदान मिलेगा। जम्बूद्वीप के सुरम्य वातावरण ने सभी आगन्तुकों को बहुत ही मंत्रमुग्ध किया।

➢भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव (सन् 2000)–

जैनधर्म की सार्वभौमिकता एवं प्रासंगिकता पर वर्तमान इतिहास में लगे प्रश्नचिन्ह का समुचित

प्रस्तुतं कुर्वतः ''भगवान् वृषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाणमहामहोत्सवस्योद्घाटनं'' तत्कालीनेन प्रधानमंत्रिणा श्री अटलविहारीवाजपेयी महोदयेन 4 फरवरी दिनात् 10 फरवरी 2000 दिनपर्यन्तं दिल्लीनगर्याः लालकिला ख्याते प्रांगणे सम्पन्नमभवत्। यन्नूतनस्येतिहासस्य निर्माणस्य कथां प्रारब्धमकरोत्।

1974 वर्षे केन्द्रीयशासनेन सम्पूर्णेनजैनसमाजेन गौरवपूर्वकमायोजितेन ''भगवतो महावीरस्य 2500 तमेन निर्वाण महोत्सवेन'' धर्मस्य पर्याप्ताः प्रभावनाः उपलब्धश्चाभवन् किन्तु केचित्लेखकाः जैनधर्मं चतुर्विंशति तमेन तीर्थंकरेण भगवता महावीरेण संस्थापित धर्ममकथयन् यो जनमानसं दिग्भ्रमितमकारयत् जैन समाजश्च न जानामि केन कालेन निष्क्रियोऽतिष्ठत्। 23 अक्तूबर 1992, धनत्रयोदश्याः दिनमितिहासस्य स्वर्णिमः पृष्ठः एवासीत् यदा मातुर्जम्बूद्वीपस्य ध्याने ऋषभदेवस्य जन्मभूमेरयोध्यायाः उद्धारस्य चिन्तनमागतं तदा तस्मादेव दिनात् सा जैनधर्मं प्रति व्याप्तानां भ्रान्तधारणानां निराकरणं कर्तुं निश्चयमकरोत्। सर्व प्रथमं तु ऋषभजयन्त्याः आयोजनस्य प्रेरणा पुनश्च 24 कल्पद्रुम–मण्डलविधानं, भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरण श्रीविहार रथस्य भारते भ्रमणार्थं प्रवर्तनं, राष्ट्रीयकुलपति सम्मेलनमादयः कार्यकलापाः समाजेन सहैव शिक्षाजगति अपि कीर्तिमान–मस्थापयन्। एतदेव लक्ष्यमग्रसारितं कर्तुं सा कुलपति सम्मेलनस्य उदघाटनसभायामस्य कार्यक्रमस्य घोषणां कुर्वन्ती भगवतः वृषभदेवस्योपकारैः उच्चशिक्षाविदः परिचितानकारयत्। फलस्वरूपं महत्या प्रभावनया सह सम्पन्नैरेतैः कार्यक्रमैः जनाः ऋषभदेवजन्मजयन्ती

समाधान करता हुआ ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 4 फरवरी से 10 फरवरी 2000 तक दिल्ली के लाल किला मैदान में सम्पन्न हुआ जो नूतन इतिहास के निर्माण की कहानी को प्रारंभ कर गया।

सन् 1974 में केन्द्र सरकार व सम्पूर्ण जैन समाज द्वारा गौरवपूर्वक मनाए गए 'भगवान महावीर 2500वाँ निर्वाण महोत्सव' से धर्म की व्यापक प्रभावना व उपलब्धियाँ तो हुईं किन्तु कुछ लेखकों ने जैनधर्म को 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा संस्थापित धर्म बता दिया जो जनमानस को दिग्भ्रमित करता रहा और जैन समाज इस दिशा में न जाने क्यों निष्क्रिय रहा। 23 अक्टूबर 1992, धनतेरस का दिन इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ ही था जब माताजी को जम्बूद्वीप के ध्यान में ऋषभ जन्मभूमि अयोध्या के उद्धार का चिन्तन आया, बस उसी दिन से उन्होंने दुनिया में जैनधर्म के प्रति व्याप्त भ्रान्त धारणाओं का निराकरण करने का बीड़ा उठा लिया। सर्वप्रथम ऋषभदेव जन्मजयंती मनाने की प्रेरणा पुनश्च 24 कल्पद्रुम मण्डल विधान, भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन आदि कार्यकलापों ने समाज के साथ ही शिक्षाजगत में भी कीर्तिमान स्थापित किया। इसी लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कुलपति सम्मेलन की उद्घाटन सभा में इस कार्यक्रम की घोषणा करते हुए ऋषभदेव के उपकारों से उच्च शिक्षाविदों को परिचित कराया। फलस्वरूप महती प्रभावना के साथ सम्पन्न

निर्वाणोत्सवादीन् कार्यक्रमान् आयोजितान् कर्तुं प्रारभन्त। अस्य निर्वाणोत्सवस्य प्रचारो भारतादतिरिक्तं विदेशेष्वप्यभवत्। सर्वत्र चैषः आयोजितः। अस्यैव निर्वाणवर्षस्यान्तर्गतं 11 जून 2000 दिने जम्बूद्वीपे हस्तिनापुरे जैन धर्मस्य प्राचीनतायाः विषये आयोजिते इतिहासकार–सम्मेलने एन.सी.ई.आर.टी. संस्थाया निदेशकेन प्रतिनिधिसहिताः इतिहासज्ञाः विद्वांसश्च भागं गृहीत्वा तुं संसदि चोत्थितस्य प्रश्नस्याधारेणाधुना कतिपय पुस्तकेषु संशोधनं त्वभवत्, यः जैन समाजाय गौरवस्य वार्तास्ति परन्त्वेतत् कार्यमिदानीमंश–मात्रेणैवाभवत्। इदानीं तु अस्यां दिशि बहु–करणीयं विद्यते। यस्मै जैनसमाजः प्रयासरतो भवेत्।

न्यूयार्क नगरस्य विश्वशान्तिशिखरसम्मेलने संस्थानं प्रतिनिधित्वमकरोत् 2000 वर्षम्—**अगस्त 2000 वर्षे संयुक्तराष्ट्रसंघः स्वस्थापनायाः आगतायाः शताब्द्याः इतिहासे प्रथमबारं विश्वशान्तेरुपायेषु विचारार्थं विश्वशान्ति शिखरसम्मेलनस्यायोजनमकरोत्।**

अस्मिन् चतुर्दिवसीये सम्मेलने 28 अगस्त मासात् 31 अगस्त 2000 पर्यन्तं अनेकदेशेभ्यः 75 धर्माणां प्रायः 1500 धर्मगुरवो भागमगृहणन्। ते सर्वे विश्वस्य 83 प्रतिशतं जनसंख्यायाः प्रतिनिधित्वं कुर्वन्तः स्वानुभूतविचाराणां प्रकाशनमकुर्वन्। सर्वे च मिलित्वा समवेतस्वरेण विश्वशान्तये विभिन्न देशान् प्रति पारस्परिक सौहार्दस्य प्रेम्णः अहिंसायाश्च ग्रहणस्य नीतौ बलमदुः।

इन कार्यक्रमों से लोगों ने ऋषभदेव जन्मजयंती, निर्वाणोत्सव आदि कार्यक्रम आयोजित करने प्रारंभ कर दिये, इस निर्वाणोत्सव की धूम भारत के अलावा विदेशों में भी मची और सर्वत्र इसे मनाया गया। इसी निर्वाणोत्सव वर्ष के अन्तर्गत 11 जून 2000 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'जैनधर्म की प्राचीनता विषय पर आयोजित इतिहासकार सम्मेलन में NCERT के डायरेक्टर व प्रतिनिधि सहित इतिहासज्ञों व विद्वानों के भाग लेने व संसद में उठे प्रश्न के आधार पर अब कतिपय पुस्तकों में संशोधन तो हुआ है जो जैन समाज के लिए गौरव की बात है परन्तु यह कार्य अभी अंश मात्र ही हुआ है अभी इस दिशा में बहुत कुछ करना बाकी है जिसके लिए जैन समाज को प्रयासरत रहना होगा।

➢न्यूयार्क के विश्वशांति शिखर सम्मेलन में संस्थान ने प्रतिनिधित्व किया (सन् 2000)–

अगस्त सन् 2000 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी स्थापना की आधी सदी के इतिहास में प्रथम बार विश्वशांति के उपायों पर विचार करने के लिए ''विश्वशांति शिखर सम्मेलन'' का आयोजन किया।

इस चार दिवसीय (28 से 31 अगस्त 2000 तक) सम्मेलन में अनेक देशों से 75 धर्मों के लगभग 1500 धर्मगुरुओं ने भाग लिया। उन सभी ने विश्व की 83 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने अनुभूत विचार प्रस्तुत किये तथा सभी ने मिलकर समवेत स्वर में विश्वशांति के लिए विभिन्न देशों के प्रति पारस्परिक सौहाद्र, प्रेम और अहिंसा अपनाने की नीति पर जोर दिया।

श्रीबाबाजैनस्य प्रयासैरायोजितेऽस्मिन् सम्मेलने संयुक्तराष्ट्रेण दत्तस्य निमंत्रणस्याधारेण दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य पक्षतः भारतस्य जैनसमाजस्य प्रतिनिधित्वं विधातुं पूज्या माता कर्मयोगिनं रवीन्द्रं तत्र गन्तुमादिशत्, येन तत्र सर्वोदयिनो जैनधर्मस्य वार्तां सर्वे गुरवोऽशृण्वन्। भगवतश्च ऋषभदेवस्य अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाणोत्सववर्षस्यान्तर्गतं सम्पन्नेयं विदेशयात्रा सर्वदैव स्मरणीया जाता। अनेनैव सह दशलक्षण पर्वण्यपि तत्र श्री रवीन्द्रः श्री महेन्द्र पाण्ड्या अध्यक्षस्याग्रहेण जैनकेन्द्रअमेरिकादेशे दशदिनपर्यन्तं दशधर्माणां प्रभावितं प्रवचनमकरोत्। अन्येषु च कतिषु स्थानेषु अपि गत्वा जैनधर्मस्य सर्वांगीणानां सिद्धान्तानां प्रचार–प्रसारमकरोत्।

अनेनैव प्रकारेण अक्तूबर 2000 वर्षे संस्थानस्य प्रतिनिधीनां सहयोगेन प्रीतिविहार–दिल्लीनगर्याः जैनसमाजे अन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाण महोत्सववर्षस्यान्तर्गतं राजधानीन्यां विशालंकैलास–मानसरोवरं निर्माप्य एकसप्ताहपर्यन्तं ''कैलाश मानसरोवर यात्रां'' आयोजिताभवत्। यस्यां बुल्गारिया देशस्य राजदूतेन सहिताः देश–विदेशस्य लक्षाधिका श्रद्धालवः पर्वतीयां यात्रां कुर्वन्तः पुण्यलाभं प्राप्नुवन्।

जम्बूद्वीप महामहोत्सवः 2000 (तृतीयो महामहोत्सवः)—**यथा भूगर्भात् भूगर्भशास्त्री खनिजपदार्थान् निष्कासयितुं शक्नोति तथैव अलौकिकज्ञानप्रतिभायाः धनिनी ज्ञानमती माता तं जम्बूद्वीपमितिहास पृष्ठेभ्यः निष्कास्य पृथिव्यां साकाररूपं प्रादात्। अस्याः विश्वप्रसिद्धायाः**

श्री बावा जैन के प्रयासों से आयोजित इस सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्राप्त निमंत्रण के आधार पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की ओर से भारत की जैन समाज का प्रतिनिधित्व करने हेतु पूज्य माताजी ने कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को वहाँ भेजा जिससे वहाँ सर्वोदयी जैनधर्म की बात सभी धर्माचार्यों ने सुनी और ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाणमहोत्सव'' वर्ष के अन्तर्गत हुई यह विदेश यात्रा सदैव के लिए अविस्मरणीय हो गई। इसके साथ ही दशलक्षण पर्व में भी वहाँ रवीन्द्र जी ने श्री महेन्द्र पांड्या (अध्यक्ष-जैना....) के आग्रह पर जैन सेन्टर ऑफ अमेरिका में दश दिनों तक दशधर्म का प्रभावी प्रवचन किया एवं अन्य कई स्थानों पर भी जाकर जैनधर्म के सर्वोदयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया।

इसी प्रकार अक्टूबर सन् 2000 में संस्थान के अप्रतिम सहयोग से प्रीतविहार-दिल्ली जैन समाज के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत राजधानी में विशाल कैलाशपर्वत बनाकर एक सप्ताह तक ''कैलाश मानसरोवर यात्रा'' आयोजित की गई, जिसमें बुल्गारिया के राजदूत सहित देश-विदेश के हजारों-लाखों श्रद्धालुओं ने पर्वतीय यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त किया।

➢जम्बूद्वीप महामहोत्सव-2000 (तृतीय महोत्सव)–

जिस प्रकार भूगर्भ से भूगर्भशास्त्री ही खनिज पदार्थों को निकाल सकता है उसी प्रकार अलौकिक ज्ञान प्रतिभा की धनी ज्ञानमती माताजी ने इस जम्बूद्वीप को इतिहास के पन्नों से निकालकर पृथ्वी पर साकार रूप प्रदान किया है। इस विश्वप्रसिद्ध रचना निर्माण के सन् 1985 की

रचनायाः निर्माणस्य 1985 वर्षाणां पूर्णतायाः पश्चात् प्रतिपंचवर्षं राष्ट्रीय स्तरेण आयोजितेषु महामहोत्सवेषु जम्बूद्वीपस्य तृतीय महामहोत्सवः 16 अप्रैल, चैत्र शुक्ल त्रयोदश्याः महावीर जयन्त्याः दिनात् 23 अप्रैल 2000, वैशाखकृष्णप्रतिपदापर्यन्तमायोजितोऽभवत्।

शुभावसरेऽस्मिन् 7 फुट उन्नतायाः भगवतः ऋषभदेवस्य प्रतिमायाः पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा 19 अप्रैल दिनात् 23 अप्रैल पर्यन्तं सम्पन्नाभवत्। 23 अप्रैल रविवारे च 101 फुट उन्नतस्य सुमेरुपर्वतस्य पाण्डुकशिलायां श्री जिनस्य 1008 कलशैर्महाभिषेकः कृतः। अस्मिन् महाभिषेके भगवतः ऋषभदेवस्य समवसरण श्रीविहार रथप्रवर्तने घोषणां कर्तृभ्यः हरियाणा राजस्थान मध्यप्रदेश गुजरातस्य च प्रत्येकनगरस्य 6 महानुभावेभ्यः कलशाभिषेकस्य सौभाग्यं प्राप्तमभवत्। अस्यैव महामहोत्सवस्य अन्तर्गतं जम्बूद्वीपपरिसरे निर्माणाधीनस्य सहस्रकूटजिनमन्दिरस्य शिलान्यास अपि पूज्यायाः मातुः पावन सान्निध्ये कृतोऽभवत् त्रिमूर्तिमन्दिरस्य च शिखरे कलशारोहणमपि सम्पन्नमभवत्। प्रतिष्ठामहोत्सवे 21 अप्रैल दिने भगवतो दीक्षाकल्याणकस्य शुभावसरे केन्द्रीयो वित्तराज्य मंत्री श्री धनञ्जय जैनः मुख्यातिथिरूपेण समागत्य ''ऋषभदेवनिर्वाणमहामहोत्सवे'' घोषितेषु स्थानेषु–स्थानेषु निर्माणाय प्रस्तुतेभ्यः कीर्तिस्तम्भेभ्यः एकस्य कीर्तिस्तम्भस्य शिलान्यासमकरोत्। अस्मात् पूर्वं च 16 अप्रैलदिने महावीरजयन्तीअवसरे बुल्गारिया देशस्य राजदूतः श्री एडविन सुगारेव समागत्य पूज्यायाः मातुराशीर्वादं प्राप्नोत्।

पूर्णता के पश्चात् प्रति पाँच वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित महामहोत्सवों में जम्बूद्वीप का पंचवर्षीय तृतीय महामहोत्सव 16 अप्रैल चैत्र शु. तेरस (महावीर जयंती) से 23 अप्रैल 2000 वैशाख कृ. एकम् तक आयोजित हुआ।

इस शुभ अवसर पर 7 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 19 से 23 अप्रैल तक सम्पन्न हुई तथा 23 अप्रैल रविवार को 101 फुट ऊँचे सुमेरुपर्वत की पांडुकशिला पर श्री जी का 1008 कलशों से महाभिषेक किया गया। इस महाभिषेक में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ प्रवर्तन में बोली लेने वाले हरियाणा, राज., म.प्र. और गुजरात के प्रत्येक नगर के 6 महानुभावों को कलश करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी महामहोत्सव के अन्तर्गत जम्बूद्वीप परिसर में निर्माणाधीन सहस्रकूट मंदिर का शिलान्यास भी पूज्य माताजी के पावन सानिध्य में किया गया तथा तीन मूर्ति मंदिर के शिखर पर कलशारोहण भी सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा महोत्सव में 21 अप्रैल को भगवान के दीक्षाकल्याणक के सुअवसर पर केन्द्रीय वित्तराज्यमंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारकर 'ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव' में घोषित स्थान-स्थान पर बनाये जाने वाले कीर्तिस्तंभों में से एक कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास किया तथा इससे पूर्व 16 अप्रैल को महावीर जयंती के सुअवसर पर बुल्गारिया के राजदूत श्री एडविन सुगारेव ने पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

कोटिवर्षेभ्यः पुरातनंप्रयागतीर्थं साकारं भूत्वा जनतायाः समक्षमागतम् (2001 वर्षे)—— **जैन धर्मस्य प्रथमस्तीर्थकरः श्री ऋषभदेवःयुगस्यादौ यस्यां पावनधरायां जैनेश्वरी दीक्षां गृहीत्वा मुनि परम्परां प्रारभत, यत्र च केवलज्ञानस्य पश्चात् प्रथमबारं भगवतः समवसरणस्य रचनाभवत्, एवंभूतायां पावनवसुन्धरां प्रयागतीर्थं अद्य जनाः इलाहाबादस्य नाम्ना जानन्ति।**

पूज्या ज्ञानमती माता तत् वास्तविकं प्रयागतीर्थं साकारं कर्तुं संकल्पमगृह्णात्। इदमेव कारणमासीत् यत् यदा महाकुम्भनगर्याः रूपेण विख्यातायां तस्यां नगर्यां देशस्य कोटिहिन्दवः 2001 वर्षे एकविशंतिशताब्द्याः प्रथम महाकुम्भं आयोजितवन्तः तस्मिन् समये मातुः पावनप्रेरणयाः दिगम्बर जैनत्रिलोकशोधसंस्थानेन एकस्याः भूमेः क्रयं कृत्वा ''तीर्थकरऋषभदेव तपःस्थल्याः प्रयाग तीर्थस्य'' भव्यं निर्माणं भगवान् ऋषभदेवअन्तर्राष्ट्रीयनिर्वाण महोत्सववर्षस्य समापने अवसरे कृतमभवत्। संस्थानेन संचालितेऽस्मिन् तीर्थे दीक्षायाः केवलज्ञानकल्याणकस्य प्रतीकेनापि भव्यरचनानांनिर्माणेन सह यथार्थं मध्ये 50 फुट उन्नते कैलाशपर्वते विराजमाना 14 फुट विशालकाया भगवतः ऋषभदेवस्य रक्तवर्णा पद्मासना प्रतिमा दूरादेव तीर्थस्य दिग्दर्शनं कारयति। कतिचिद् वर्षेषु विश्वस्य क्षितिजे ऋषभदेवतपस्थलीतीर्थरूपेण विख्यातं इलाहाबाद बनारस हाईवे मार्गे स्थितमिदं तीर्थं वर्तमाने जनमानसस्य श्रद्धायाः केन्द्रं स्थितमभवत्।

विश्वशान्ति महावीर विधानस्य 26 मण्डलानि सहैव संस्थापिता न्यभवन्—**भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकस्य राष्ट्रीयोद्घाटने 6 अप्रैल 2001 दिने पूज्या माता**

➢करोड़ों वर्ष पुराना प्रयाग तीर्थ साकार होकर जनता के समक्ष आया (सन् 2001)–

जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने युग की आदि में जिस पावन भूमि पर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मुनि परम्परा को प्रारंभ किया, जहाँ केवलज्ञान होकर प्रथम बार भगवान का समवसरण रचा, ऐसी पावन वसुंधरा प्रयाग तीर्थ को आज लोग इलाहाबाद के नाम से जानते हैं।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने उस वास्तविक प्रयाग तीर्थ को साकार करने का संकल्प ले लिया, यही कारण था कि जब महाकुंभ नगरी के रूप में विख्यात उस नगरी में देश के करोड़ों हिन्दू सन् 2001 में इक्कीसवीं सदी का प्रथम महाकुंभ मना रहे थे उस समय पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा एक भूमि का क्रय कर ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ'' का भव्य निर्माण भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के समापन अवसर पर किया गया। संस्थान द्वारा संचालित इस तीर्थ में दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीक में भव्य रचनाओं के निर्माण के साथ बीचोंबीच में 50 फुट ऊँचे कैलाशपर्वत पर विराजमान 14 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव की लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा दूर से ही तीर्थ का दिग्दर्शन कराती है। मात्र कुछ ही वर्षों में विश्व के क्षितिज पर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ के रूप में विख्यात इलाहाबाद-बनारस हाइवे रोड पर स्थित यह तीर्थ वर्तमान में जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र बन चुका है।

➢विश्वशांति महावीर विधान के 26 मण्डल एक साथ बने–

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव के राष्ट्रीय उद्घाटन (6 अप्रैल 2001

गणिनी ज्ञानमती दिल्लीनगर्यामुपस्थिता न आसीत्। अतः तस्याः पश्चात् जैनसमाजस्य अतिविशिष्टकार्यकर्तृणां विशेषानुरोधेन माताश्रीः संघसहिता प्रयाग–इलाहाबादात् भीषणे ग्रीष्मे विहारं कृत्वा दिल्लीमागच्छत्। पुनः दिल्लीनगर्यां चतुर्मासस्य मध्ये दिगम्बरजैन त्रिलोकशोधसंस्थानस्याध्यक्षः कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमारः संस्थानस्य कार्यकर्तृणां सम्पूर्णदिगम्बरजैनसमाजस्य दिल्लीनगर्याश्च सहयोगं गृहीत्वा अक्तूबर 2001 मासे जन्मकल्याणकवर्षस्य सर्वोच्चःसमारोहं ''विश्वशान्तिमहावीरविधानस्य'' नाम्ना आयोजितमकरोत्।

दिल्लीनगर्याः फिरोजशाहकोटला प्रांगणे 8 दिनानि पर्यन्तं अस्मिन् भक्ति महोत्सवे सुमेरुपर्वतस्याकारयुक्तानि 26 मण्डलविधानैः सहैव रचितान्यभवन्। सर्वेषां च समक्षं पृथक्–पृथक् प्रदेशानां नगराणाञ्च 108–108 इन्द्राः इन्द्राण्यश्चोपविश्य पूजनं संपादयन्तोः यदा मंडले विविधवर्णानि 2600–2600 रत्नानि समर्पयन् तदा कल्पवृक्षाः इव तेषां प्रकाशशोभा वास्तवे रत्नानि समर्प्य दर्शनस्य नियमनिर्वाहिकायाः कन्यायाः मनोवत्याः इतिहासं स्मरणमकारयत्।

महोत्सवं दृष्टुं तस्मिन् भागं ग्रहणेन सह सम्पूर्ण जैनसमाजस्य भक्ताः विश्वशान्ति–मंत्रस्य (ॐ ह्रीँ विश्वशान्तिकराय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः) कोटि जाप्यानि अकुर्वन्, यस्य फलस्वरूपेण देशस्योपरि असमये व्याप्ताः संकटस्य मेघाः स्वयमेव विच्छिन्नाः अभवन्। संसद्भवने च घटितः आतंकवादिनामाक्रमणं निष्क्रियमेवाभवत्। अस्य चामत्कारिकस्य

को) पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी दिल्ली में उपस्थित नहीं थीं अतः उनके पश्चात् जैन समाज के अतिविशिष्ट कार्यकर्ताओं के विशेष अनुरोध पर माताजी संघ सहित प्रयाग-इलाहाबाद से भीषण गर्मी में विहार करके दिल्ली पहुँची। पुनः दिल्ली में चातुर्मास के मध्य दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने संस्थान के कार्यकर्त्ताओं एवं सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज-दिल्ली का सहयोग लेकर अक्टूबर 2001 में जन्मकल्याणक वर्ष का सबसे बड़ा समारोह ''विश्वशांति महावीर विधान'' के नाम से आयोजित किया।

दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में 8 दिन तक इस भक्ति महोत्सव में सुमेरु पर्वत के आकार वाले 26 मण्डल विधान एक साथ बने और सभी के सामने अलग-अलग प्रदेश एवं नगरों के 108-108 इन्द्र-इन्द्राणियों ने बैठकर पूजन करते हुए जब मण्डल पर रंग-बिरंगे 2600-2600 रत्न चढ़ाए तब कल्पवृक्षों के समान उनकी जगमगाहट वास्तव में रत्न चढ़ाकर दर्शन का नियम निभाने वाली कन्या मनोवती का इतिहास स्मरण करा रही थी।

महोत्सव को देखने एवं उसमें भाग लेने के साथ सम्पूर्ण जैन समाज के भक्तों ने विश्वशांति मंत्र (ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः) की करोड़ों जाप्य की, जिसके फलस्वरूप देश के ऊपर असमय में आये संकट के बादल स्वयमेव छंट गये और संसद भवन पर हुआ आतंकवादियों का हमला नाकामयाब रहा। इस चमत्कारिक भक्ति आयोजन का मनोहारी दृश्य

भक्तिआयोजनस्य मनोहारिदृश्यं भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणक–महोत्सवस्य अविमृष्टा मुद्रा भवत्।

राष्ट्रपतिः जम्बूद्वीपस्य निर्माणस्य आशीर्वादमगृहणात्—**30 मई 2003 तद्दिनं सत्यमेव राष्ट्रपतिः ए.पी.जे. अब्दुल कलामाय महत् पुण्यशालि अभवत् यदा सः विहारप्रान्तस्य स्वयात्रायां भगवतो महावीरस्य कल्याणकतीर्थानां दर्शनं कृत्वा स्वजीवनं धन्यमकरोत्।**

पूज्या गणिनी प्रमुखा माता ज्ञानमती ससंघ तस्मिन् समये पावापुर्यां सिद्धक्षेत्रे व्यराजत्। राष्ट्रपतिः पावापुर्याः जलमन्दिरस्य दर्शनं कृत्वा पूज्यायाः मातुराशीर्वादं प्राप्नोत्। अत्यन्तप्रसन्नतया सह च स्ववक्तव्ये तानि दुर्लभक्षणानि तीर्थं प्रति च श्रद्धां व्यक्तामकरोत्।

पूज्या माता तस्य शाकाहारिजीवनात् विशेषा प्रसन्नाभवत्। सा स्व–आशीर्वादात्मकप्रवचने देशस्य सर्वोच्चनेतां प्रति देशस्य शान्तये सुरक्षार्थंचोद्घाटित हृदयेन आशीर्वादं प्रादात्।

एतेनैव प्रकारेण समये–समये पूज्यया मात्रा केन्द्रीयाः प्रादेशिकाश्च नेतारः राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदयः हस्तिनापुरे, दिल्लीनगर्यां, गुजराते, महाराष्ट्रे, उत्तरप्रदेशे, मध्यप्रदेशादिषु स्थानेषु पदार्पणं कृत्वा आशीर्वादं प्राप्नुवन्। स्वोदारभावनानां कारणैः माताश्रीः समये–समये दिगम्बरजैन–श्वेताम्बर साधु–साध्वीभिः सहैव अन्येषां धर्माणां साधु–साध्वीभिः सह च भारतीयायाः संस्कृतेः संरक्षणाय–सदाचार–शाकाहारस्य प्रचार–प्रसारहेतवे विचाराणामादानं प्रदानं च कर्तुं सदैवाग्रसरा तिष्ठति।

भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव की अमिट छाप बन गई।

➢जम्बूद्वीप की निर्मात्री से आशीर्वाद लिया राष्ट्रपति ने–

30 मई 2003 का वह दिन सचमुच राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के लिए बड़ा पुण्यमयी रहा, जब उन्होंने बिहार प्रांत की अपनी यात्रा में भगवान महावीर के कल्याणक तीर्थों के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य किया।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ उस समय पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान थीं। राष्ट्रपति जी ने पावापुरी जलमंदिर के दर्शन करके पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया और बेहद प्रसन्नता के साथ अपने वक्तव्य में उन दुर्लभ क्षणों एवं तीर्थ के प्रति श्रद्धा व्यक्त की।

पूज्य माताजी ने उनके शाकाहारी होने हेतु विशेष प्रसन्नता प्रगट कर अपने आशीर्वादात्मक प्रवचन में देश के सर्वोच्च नेता को देश की शांति और सुरक्षा हेतु खुले दिल से आशीर्वाद प्रदान किया।

इसी प्रकार समय-समय पर पूज्य माताजी से केन्द्रीय एवं प्रादेशिक राजनेताओं में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री आदि ने हस्तिनापुर, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर पधारकर आशीर्वाद प्राप्त किया है। अपनी उदार भावनाओं के कारण माताजी समय-समय पर दिगम्बर-श्वेताम्बर साधु-साध्वियों के साथ ही अन्य धर्म के साधु-संतों से भी भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं शाकाहार-सदाचार के प्रचार-प्रसार हेतु विचारों का आदान-प्रदान करने में सदैव अग्रसर रहती हैं।

पावापुर्या सिद्धक्षेत्रे पूज्यायाः मातुः सान्निध्ये भगवतो महावीरस्य पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठां नवनिर्मितमानस्तम्भे च वेदिका प्रतिष्ठा पूर्वकं भगवान् विराजमानोऽभवत्। नेत्र चिकित्साजन–कल्याणहेतवे च शिविरस्य चायोजनमपि सानन्दं सम्पन्नमभवत्।

कुण्डलपुरे कलात्मकशिखरयुक्तानि जिनमन्दिराणि—**नन्द्यावर्त प्रासादस्य नाम्ना निर्मितस्य कुण्डलपुरस्य तीर्थस्य परिसरे 108 फुट उन्नतं कलात्मकशिखरयुक्तं भगवतो महावीरस्य मन्दिरमस्ति। तस्य द्वयोर्पार्श्वयोः भगवतः ऋषभदेवस्य मंदिरं नवग्रहशांतिजिनमंदिरं च निर्मिते। नंद्यावर्त प्रासादस्य च पुरतः त्रिमंजिलायुक्तमुन्नतं विशालं च त्रिकालचतुर्विंशति–र्मन्दिरमस्ति। सुन्दरे सर्वार्थसिद्धिद्वारे प्रवेशकाले एतदतिरिक्तं तत्र कल्पवृक्षः कार्यालयो विद्यते। अन्तरे च गत्वा आधुनिकसुविधायुक्ताया** ''गणिनी ज्ञानमती निलयस्य'' **नाम्ना द्विमंजिलायुक्ताया धर्मशालायाः 35 आवास गृहाणि सन्ति। सुन्दरभोजनशाला, जलपेटिका, विद्युदादिसर्वसुविधा सम्पन्ना भगवतो महावीरस्य जन्मभूमिः कुण्डलपुरंतीर्थं सर्वानेव भक्तान् आकर्षणेन स्वाभिमुखान् करोति।**

पूज्यायाः मातुः संघसहितायास्तत्र द्वौ चतुर्मासौ 2003–2004 वर्षयोः सम्पन्नौ अभवताम्। अस्य मध्ये पर्यटनविभागेन जन्मभूमिसमित्या च कुण्डलपुर महोत्सवौ आयोजितौ अभवताम्। ययोः प्रदेशस्य राज्यपालेन सहैव कतिचित् राजनेतारः समागच्छन्। 2004 वर्षस्य महोत्सवे दिगम्बर जैनत्रिलोकशोधसंस्थानेन 2000 वर्षे घोषितेन भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीयपुरस्कारेण श्री धनञ्जय कुमारो जैनः पूर्वः केन्द्रीयोमंत्री सम्मानितोऽभवत्।

पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर पूज्य माताजी के सानिध्य में भगवान महावीर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं नवनिर्मित मानस्तंभ में वेदी प्रतिष्ठापूर्वक भगवान विराजमान हुए तथा जनकल्याण हेतु नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन भी सानंद सम्पन्न हुआ।

➢कुण्डलपुर के कलात्मक शिखर वाले जिनमंदिर–

''नंद्यावर्त महल'' के नाम से निर्मित कुण्डलपुर के तीर्थ परिसर में 108 फुट ऊँचा कलात्मक शिखर का भगवान महावीर मंदिर है तथा उसके आजू-बाजू में भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवगृहशांति मंदिर बने हैं। महल के ठीक सामने तीन मंजिल ऊँजा विशाल त्रिकाल चौबीसी मंदिर है। इनके अतिरिक्त वहाँ के सुंदर सर्वार्थसिद्धि द्वार में प्रवेश करते ही दाईं ओर कल्पवृक्ष कार्यालय है और अन्दर जाकर आधुनिक सुविधायुक्त ''गणिनी ज्ञानमती निलय'' नाम से दो मंजिली धर्मशाला के 35 फ्लैट्स हैं। सुंदर भोजनशाला, पानी की टंकी, बिजली आदि सभी सुविधाओं से सम्पन्न भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

पूज्य माताजी के संघ सहित वहाँ दो चातुर्मास (सन् 2003-2004 में) सम्पन्न हुए। इस मध्य पर्यटन विभाग एवं जन्मभूमि समिति द्वारा 'कुण्डलपुर महोत्सव' आयोजित हुए, जिसमें प्रदेश के राज्यपाल सहित कई राजनेता पधारे। सन् 2004 के महोत्सव में दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा सन् 2000 में घोषित ''भगवान ऋषभदेव नेशनल एवार्ड'' से श्री वी.धनंजय कुमार जैन (पूर्व केन्द्रीय मंत्री) को सम्मानित किया गया।

पूज्यायाः मातुः कुण्डलपुरप्रवासे 22 मासानां प्रवास मध्ये कुण्डलपुरस्य भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः जीणोद्धारेण–विकासेन सहैव राजगृहीक्षेत्रे भगवतो मुनिसुव्रतनाथस्य साढ़े 12 फुट उन्नतां प्रतिमां विराजमानां कृत्वा मन्दिरस्य निर्माणमभवत्, विपुलाचल पर्वते ह्रीं इत्यस्य प्रतिमा प्रदर्शनीये च निर्मिते अभवताम्। पर्वतस्य च नीचैः उत्तुंगस्य मानस्तम्भस्य निर्माणमभूत्। जवाहर नवोदय विद्यालयस्य प्रांगणे भगवतो महावीरस्य पद्मासना प्रतिमा व्यराजत्। पावापुर्यां पाण्डुकशिलायाः परिसरे भगवतो महावीरस्य मन्दिरस्य निर्माणं कारयित्वा साढ़े 12 फुट उन्नता खड्गासन प्रतिमा विराजमानाभवत्। गुणावां तीर्थे च गणधरस्य गौतमस्वामिनः प्रतिमा–मन्दिरं सम्मेदशिखरसिद्ध क्षेत्रे च भगवतः ऋषभदेवस्य साढ़े 9 फुट उन्नता पद्मासना प्रतिमां मन्दिरं च निर्मापयित्वा विहारे झारखण्डे च प्रदेशयोः नवां क्रान्ति उत्पन्नामकरोत्।

2600 वर्षाणां प्राचीनइतिहासस्य स्मृतिं कारयन् नन्द्यावर्तः प्रासाद (2003–2004)—**भगवतो महावीरस्य 2600 तमस्य जन्मकल्याणकमहोत्सव वर्षस्यान्तर्गतं भारतशासनस्य सम्पूर्णजैनसमाजस्य च विशेषाणां कार्य कर्तृणां माध्यमेन भगवतो महावीरस्य 2600 तमं जन्मकल्याणक महोत्सवमायोजितमकरोत् तत्रैव दूरवर्तिनो जैनधर्मस्य शाश्वतसत्तां साधयितुं सततमेव संलग्ना पूज्या गणिनी प्रमुखमाता ज्ञानमती वर्षेभ्योः जनमानसस्य हृदयपटलात् धूमिलामुपेक्षितां च शासनपतेर्भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेर्विकासस्य शंखनादमकरोत् 26 फरवरी 2002 दिने च दिल्ली महानगरात् चलित्वा 1300 किलोमीटर दीर्घस्य मार्गस्य यात्रां कुर्वन्ती 29 दिसम्बर 2002 दिने कुण्डलपुरे तीर्थे मंगलप्रवेशमकरोत्। पुनस्तु**

पूज्य माताजी के कुण्डलपुर में 22 माह के प्रवास के मध्य भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर के जीर्णोद्धार-विकास के साथ-साथ राजगृही में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की साढ़े 12 फुट प्रतिमा विराजमान कर मंदिर का निर्माण हुआ, विपुलाचल पर्वत पर ह्रीं की प्रतिमा एवं प्रदर्शनी बनवाई, पर्वत के नीचे उत्तुंग मानस्तंभ का निर्माण कराया, जवाहर नवोदय विद्यालय प्रांगण में भगवान महावीर की पद्मासन प्रतिमा विराजमान हुई। पावापुरी में पाण्डुकशिला परिसर में भगवान महावीर मंदिर निर्माण कर साढ़े 12 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान कराया, गुणावां में गौतम गणधर स्वामी की प्रतिमा-मंदिर एवं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर भगवान ऋषभदेव की सवा 9 फुट पद्मासन प्रतिमा एवं मंदिर बनवाकर बिहार एवं झारखंड प्रदेश में नई क्रांति उत्पन्न कर दी।

➢2600 वर्ष प्राचीन इतिहास की याद दिलाता नंद्यावर्त महल (सन् 2003-04)–

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत जहाँ भारत सरकार एवं सम्पूर्ण जैन समाज विविध कार्यक्रमों के माध्यम से 'भगवान महावीर का 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव' मना रहा था, वहीं दूरदर्शी एवं जैनधर्म की शाश्वत सत्ता को सिद्ध करने में सतत संलग्न पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्षों से जनमानस के हृदय-पटल से धूमिल और उपेक्षित शासनपति भगवान महावीर की जन्मभूमि के विकास का शंखनाद किया और 26 फरवरी 2002 को दिल्ली से चलकर 1300 किमी. की यात्रा करते हुए 29 दिसम्बर 2002 को कुण्डलपुर तीर्थ पर

पश्यतः पश्यतः एव वृथा भूमिः उपवनवत् शोभायमानाभवत्। अस्य मध्ये एव प्रयाग तीर्थे– 2002 वर्षस्य चतुर्मासोऽभवत्।

मातुः सततं प्रेरणया तत्र प्राचीनमन्दिरे 30 फुट उन्नतस्य कीर्तिस्तम्भस्य निर्माणमभूत्। तत्रैव प्राचीनमन्दिरस्य निकटे एव नवीननिर्माण हेतवे दि. जैनत्रिलोकशोधसंस्थानेन हस्तिनापुरेण प्रायः 2 एकड् विस्तृतस्याः भूमेः क्रयं कृत्वा तस्यां निर्माणकार्यं प्रारभत्। तदा तु वने मंगलमिव भगवतो महावीरस्य जन्मभूमेः नवीनस्य स्वर्णिमस्य पृष्ठस्य प्रारम्भकरणं उत्पन्नमभवत्। 2600 वर्षाणि पूर्वं यस्मिन् नन्द्यावर्ते प्रासादे रत्न जटित पर्यंके महाराज्ञी त्रिशला षोडश स्वप्नानपश्यत्, यत्र च धनकुबेरः निरन्तरं 15 मासपर्यन्तं रत्नानां वृष्टिमकरोत्। यत्र च भगवान् जन्म अगृह्णात् यत्र सः देवैः सहाक्रीडत्, यत्र च संजयविजययोः मुन्योः शंकानां समाधानमभवत्, तस्येन्द्रैः सज्जितस्य सप्तमालायुक्तस्य नन्द्यावर्तप्रासादस्य भव्यायाः प्रतीकानि चित्राणि निर्माणं तस्मिन् तीर्थे 2600 वर्षाणां पूर्वस्य इतिहासस्य दिग्दर्शनं कारयति। यस्यान्तः भगवतो महावीरस्य जीवन सम्बन्धितानां प्राचीन कलाकृतीनां सम्पूर्णः इतिहासः समाविष्टो विद्यते। प्रासादस्य सर्वोपरि मालायां श्री शान्तिनाथस्य जिनालयो विद्यते।

जम्बूद्वीपस्य सांस्कृतिकं शैक्षणिकं च वैभवम्—**दिगम्बरजैनत्रिलोकशोध संस्थानं, हस्तिनापुरस्य स्वस्थापनायाः समयादेव शोधानुसंधानस्य च गतिविधिषु संलग्नमस्ति। जैनागमेषु उपलब्धानां विवेचनानामाधारेण विश्वप्रसिद्धस्य जम्बूद्वीपस्य रचनायाः निर्माणेन**

मंगल प्रवेश किया, फिर तो देखते ही देखते वह वीरान भूमि चमन हो उठी। इसी बीच प्रयाग तीर्थ पर सन् 2002 का चातुर्मास हुआ।

माताजी की सतत प्रेरणा से जहाँ प्राचीन मंदिर में 36 फुट ऊँचे भव्य कीर्तिस्तंभ का निर्माण हुआ। वहीं प्राचीन मंदिर के निकट नवीन निर्माण हेतु दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर द्वारा लगभग 2 एकड़ भूमि का क्रय कर उस पर निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया फिर तो जंगल में मंगल की तरह भगवान महावीर जन्मभूमि के नवीन स्वर्णिम पृष्ठ का प्रारंभीकरण हो उठा। 2600 वर्ष पूर्व जिस नंद्यावर्त महल में रत्नों से जटित पलंग पर रानी त्रिशला ने सोलह स्वप्न देखे थे, जहाँ धनकुबेर ने लगातार 15 माह तक रत्नों की वृष्टि की थी, जहाँ प्रभु ने जन्म लिया था, जहाँ वे देवबालकों के संग खेले थे और जहाँ संजय-विजय मुनि की शंका का समाधान हुआ था, उस इन्द्रों द्वारा सजाए गए सात मंजिले नंद्यावर्त महल की भव्य प्रतिकृति का निर्माण उस तीर्थ पर 2600 वर्ष पूर्व के इतिहास का दिग्दर्शन करा रहा है जिसके अन्दर भगवान महावीर के जीवन से संबंधित प्राचीन कलाकृतियाँ व सम्पूर्ण इतिहास समाविष्ट है। महल के सबसे ऊपरी मंजिल में श्री शांतिनाथ जिनालय है।

➢जम्बूद्वीप का सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक वैभव–

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर अपनी स्थापना के समय से ही शोध और अनुसंधान की गतिविधियों में संलग्न रहा है। जैन आगमों में उपलब्ध विवेचनों के आधार पर

सार्धद्विशताधिकानां सिद्धान्तभूगोलखगोलव्याकरणगणितउपन्यासकथानाटकानां बालोपयोगिनां पुस्तकानां लक्षाधिकसंख्यासु प्रकाशनेन च सहैव संस्थानमिदं विशालानां विदुषां शिक्षणस्य प्रशिक्षणस्य च शिविराणां सेमिनार–संगोष्ठीनां सम्मेलनानां चायोजने रतं विद्यते। मेरठ–विश्वविद्यालयस्य संयुक्त तत्त्वावधाने आयोजितानां एतेषां सम्मेलनानां शैक्षणिक जनाः भूयशः प्रशंसा क्रियमाणा विद्यते। वर्तमानकाले शोधगतिविधीन अधिकं समन्वितं स्वरूपं प्रदानार्थं अक्तूबर 1998 मासे आगतानां शताधिक विदुषामनुरोधेन संस्थाने गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठस्य स्थापनायाः निर्णयोऽप्यभवत्।

शोधपीठस्य शुभारम्भः ''वृषभदेवराष्ट्रीयकुलपति सम्मेलनस्य'' मध्ये 4 अक्तूबर 1998 दिने गणिन्याः मातुः ज्ञानमत्याः 65 तमस्य जन्मदिवस्य पुनीतेऽवसरेऽभवत्। शोधपीठस्य निदेशकरूपेण विक्रमविश्वविद्यालय–उज्जैनस्य पूर्वकुलपतिप्राध्यापका आर.आर.नांदगांवकर महोदयं निदेशकमण्डले च प्रोफेसरः सुरेशचन्द्रोऽग्रवालं कुलपतिंचौधरीचरणसिंहविश्वविद्यालय मेरठं डॉ.अनुपमं जैनं इन्दौरं मनोनीतौ कृतो स्तः। तस्य शोधपीठस्य कार्यालयः इन्दौर नगरे डा. अनुपमजैनेन संचालितः क्रियते। तस्मिन् शोधपीठे शोधार्थिनः जैनधर्मविषयस्य शोधं कृत्वा जैनधर्मस्य प्रचारे–प्रसारे च संलग्नाः सन्ति।

हस्तिनापुरे प्रायः 35 एकड़ विस्तृते जम्बूद्वीप परिसरे जम्बूद्वीपनाम्नो भूगोलस्य रचनाया सहैव यत्रानेकानि जिनमन्दिराणि जैनधर्मस्य कीर्तिपताकामान्दोलितां कुर्वन्ति तत्रैव

विश्वप्रसिद्ध जम्बूद्वीप रचना के निर्माण एवं 250 से अधिक सिद्धान्त, भूगोल, खगोल, व्याकरण, गणित, उपन्यास, कथा, नाटक, बालोपयोगी आदि पुस्तकों के लाखों की संख्या में प्रकाशन के साथ ही यह संस्थान विशाल विद्वत् शिक्षण/प्रशिक्षण शिविरों, सेमिनारों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों का आयोजन करता रहा है। मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित होने वाले इन सम्मेलनों की अकादमिक जगत में भूरि-भूरि प्रशंसा रही है। सम्प्रति शोध गतिविधियों को अधिक समन्वित स्वरूप प्रदान किये जाने हेतु अक्टूबर 1998 में आगत शताधिक विद्वानों के अनुरोध पर संस्थान के अन्तर्गत 'गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ' की स्थापना का निर्णय लिया गया।

शोधपीठ का शुभारंभ 'ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के मध्य 4 अक्टूबर 1998 को गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 65वें जन्मदिवस के पुनीत अवसर पर किया गया। शोधपीठ के निदेशक के रूप में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो. आर.आर. नांदगांवकर को एवं निदेशक मंडल में प्रो. सुरेशचन्द्र अग्रवाल, कुलपति-चौधरी चरण सिंह वि.वि., मेरठ तथा डॉ. अनुपम जैन, इंदौर को मनोनीत किया गया। इस शोधपीठ का निदेशक कार्यालय इंदौर में डॉ. अनुपम जैन द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसमें शोधार्थी जैनधर्म विषयक शोध करके जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

हस्तिनापुर में लगभग 35 एकड़ विस्तृत जम्बूद्वीप परिसर में जम्बूद्वीप नामक जैन भूगोल की रचना के साथ-साथ अनेकों जिनमंदिर जहाँ जैनधर्म की कीर्तिपताका को फहरा रहे हैं, वहीं

आधुनिकसुविधा सम्पन्नानि 200 आवासगृहाणि, विशाला राजाश्रेयांसभोजनशाला, काचित् मनोज्ञा विशाला वासगृहाणि जलागारः अस्य विशालः पुस्तकालयः विद्युतः सुविधा हेतवे जैनरेटर इति सर्वाः सुविधाः क्षेत्रे आगतेभ्यः यात्रिभ्यः तत्र स्थातुं प्रेरणाः प्रददति। एतदतिरिक्त यत्र शैक्षणिक गतिविधीनां संचालनार्थं जम्बूद्वीपपुस्तकालय (प्रायः 15 सहस्रग्रन्थानां संग्रहः) वीरज्ञानोदय ग्रन्थमालासम्यग्ज्ञानमासिकपत्रिका आदयो माध्यमाः वर्तन्ते। जनसामान्याय णमोकारमहामंत्राधिकोषः वर्तते। यत्र लक्षाधिकाः भक्ताः कोट्यधिकान् णमोकारमंत्रान् विलिख्य स्व धार्मिकःसंपदामर्जयन्ति। संस्थानेन च प्रतिवर्षं प्रदत्तं सम्मानं प्राप्नुवन्ति। शिशुभ्यश्चात्र आन्दोलनानि, झंकृतयः, नावः, हास्यस्य मनोरंजनसाधनानि उपलब्धानि सन्ति।

समस्ताभ्यः योजनाभ्यः जीवनप्रदाता कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रो भ्राता—**कस्याः अपि संस्थायाः सक्रियायाः भूमिकायाः पृष्ठे कस्यचिदपि सक्रियस्य कर्मठस्य व्यक्तित्वस्य हस्तोऽवश्यमेव भवति, अस्याः एव वार्तायाः साक्ष्यस्ति दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्याध्यक्षः कर्मयोगी ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारो जैनो भ्राता।**

को जानाति यत् द्वयोर्वर्षयोः बालकं भ्रातरं रवीन्द्रं स्वशाटिकां गृहीत्वा अंगुष्ठचुम्ब्यमानं सुप्तेन त्यक्त्वा 1952 वर्षे गृहान्निर्गता भगिनी मैना ज्ञानमतीं मातरं भवितुं निरगच्छत् सः एव भ्राता अग्रे गत्वा तस्याः ज्ञानामृतं स्वयं पिबन् सम्पूर्णंदेशं तस्यास्वादं पाययिष्यति, किन्तु भवितव्यतां कः निवारयितुं शक्नोति। 1950 वर्षे श्रुतपंचम्याः पवित्रे दिने जन्मप्राप्तो रवीन्द्रकुमारः स्व पितुः छोटेलालस्य मातुश्च मोहिन्याः देव्याः नवमं सन्तानं चतुर्षु पुत्रेषु च

आधुनिक सुविधा सम्पन्न 200 फ्लैट्स, विशाल राजा श्रेयांस भोजनालय, कई सुंदर कोठियां, पानी की बड़ी टंकी, बिजली की सुविधा हेतु जनरेटर आदि सभी कुछ उपलब्धियाँ आने वाले यात्रियों को तीर्थ का आनंद लेने हेतु प्रेरणा प्रदान करती हैं। इसके साथ यहाँ शैक्षणिक गतिविधियाँ संचालित करने हेतु जम्बूद्वीप पुस्तकालय (लगभग 15 हजार ग्रंथों के संग्रह वाला), वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला, सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका आदि माध्यम हैं। जनसामान्य के लिए णमोकार महामंत्र बैंक हैं जिसमें लोग करोड़ों मंत्र लिखकर अपनी धार्मिक जमा पूँजी बनाते हैं और संस्था द्वारा प्रतिवर्ष सम्मान प्राप्त करते हैं। बच्चों के लिए झूला, झांकी, नाव, हंसी के गोलगप्पे आदि अनेक मनोरंजन के साधन हैं।

➢**समस्त योजनाओं को जीवन्त रूप प्रदान करने वाले कर्मयोगी भाई जी–**

प्रत्येक संस्था की सक्रिय भूमिका के पीछे किसी न किसी सक्रिय कर्मठ व्यक्ति का हाथ अवश्य होता है। इसी बात के साक्षी हैं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन।

कौन जानता है कि जिस दो वर्ष के भाई बालक रवीन्द्र को अपनी धोती पकड़कर अंगूठा चूसते सोते हुए छोड़कर सन् 1952 में घर से निकली मैना जीजी ज्ञानमती माताजी बनने हेतु निकल पड़ी थीं, वही भाई आगे चलकर उनके ज्ञानामृत को स्वयं पीते हुए पूरे देश को उसका स्वाद चखाएगा। किन्तु होनहार को कौन टाल सकता है, सन् 1950 में श्रुतपंचमी के पवित्र दिन जन्में रवीन्द्र कुमार अपने पिता छोटेलाल जी एवं माता मोहिनी की नवमीं सन्तान एवं 4 पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र हैं। गांव

कनिष्ठःपुत्रोऽस्ति। ग्रामस्य प्राथमिकीं माध्यमिकीं च शिक्षां प्राप्य लखनऊविश्वविद्यालयात् निर्गतः प्रथमश्रेण्याः स्नातकः यदाष्टादशवर्षीये लघुवयसि सन् 1968 तमे स्व भगिन्याः मातुः ज्ञानमत्याः दर्शनं कृत्वा तया जीवननिर्माणहेतवे त्यागमयीं प्रेरणां प्राप्य पञ्चवर्षपर्यन्ताय ब्रह्मचर्यव्रतं ग्रहीत्वा व्यापारमपि अकरोत् पुनश्च शास्त्रिपरीक्षायाः पाठ्यक्रमं पठन् अन्ततः 1972 वर्षे आजन्मब्रह्मचार्यभवत्। तत्पश्चात् समग्रजीवनं धर्मग्रन्थानां स्वाध्यायेनाध्ययनेन च सह जनकल्याणार्थं धर्म प्रभावनायै च समर्पितोऽअभवत्।

वर्तमाने भाईजी इति नाम्ना प्रसिद्ध स्मितमुखो प्रकृतेश्च कर्मण्य व्यक्तित्वस्य धनी रवीन्द्रकुमारो विद्वत्समाजेन प्रदत्तां स्वकर्मयोगिनः उपाधिं पूर्णरूपेण चरितार्थं करोति। हस्तिनापुरस्य विस्तृतकार्यकलापैः सह अन्याः अनेकाः संस्थाः प्रति सक्रियमनोयोगेन सह पूज्यया मात्रा निर्दिष्टं प्रत्येकंनिर्माणकार्यं धर्मप्रभावनां सम्मेलनादि महतः समारोहान् आयोजयितुं सिद्धहस्तस्य भ्रातुः दत्तं कार्यं वास्तवे प्रेरणाप्रदं भवति। एतेन सह कार्यं विधातारः सर्वे कार्यकर्तारो यत्र अल्पं व्ययं कृत्वा अधिकस्य कार्यस्य कर्तुं शिक्षां प्राप्नुवन्ति, तत्रैव सर्वेभ्यः सन्तोषप्रदानस्यास्मिनपूर्वां कलां वीक्ष्य महन्तः प्रसन्नाः भवन्ति। एतदेव कारणमस्ति महान्ति तीर्थनिर्माणानि राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीयाश्चमहोत्सवाः आशातीत सफलतया सह निर्विघ्नाः सम्पद्यन्ते। अनेनैव प्रकारेण भ्राता सदैव पूज्यायाः मातुर्भावनाः साकाराः कर्तुं स्वसक्रियां भूमिकां निर्वाहयतु, इयमेव जिनेन्द्रदेवाय प्रार्थनास्ति।

की प्राथमिक-माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर लखनऊ विश्वविद्यालय से निकले इस प्रथम श्रेणी के स्नातक ने जब 18 वर्ष की अल्प वय में अपनी बहन पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन कर उनसे जीवन निर्माण हेतु त्यागमयी प्रेरणा प्राप्त की, तब शास्त्री परीक्षा का कोर्स पढ़ते हुए आखिर सन् 1972 में वे आजन्म ब्रह्मचारी बन ही गये। उसके बाद तो सारा जीवन धर्मग्रंथ के, स्वाध्याय, अध्ययन के साथ-साथ जनकल्याण और धर्मप्रभावना के लिए समर्पित हो गया।

वर्तमान में ''भाई जी'' के नाम से प्रसिद्ध हंसमुख प्रकृति एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी रवीन्द्र जी विद्वत्समाज द्वारा प्रदत्त अपनी कर्मयोगी उपाधि को पूर्णरूपेण चरितार्थ कर रहे हैं। हस्तिनापुर के विस्तृत कार्यकलापों के साथ-साथ अन्य अनेक संस्थाओं के प्रति सक्रिय मनोयोग तथा पूज्य माताजी द्वारा निर्देशित प्रत्येक निर्माण, धर्मप्रभावना, सम्मेलन आदि बड़े-बड़े समारोह आयोजित करने में सिद्धहस्त भाई जी का टीमवर्क वास्तव में प्रेरणास्पद होता है। इनके साथ कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ता जहाँ कर्म खर्च में ज्यादा कार्य करने की बात सीखते हैं वहीं सभी को संतुष्ट रखने की भी इनमें अपूर्व कला देखकर बड़े खुश होते हैं, यही कारण है कि बड़े-बड़े तीर्थ निर्माण एवं राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव आशातीत सफलता के साथ निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं। इसी प्रकार भाई जी सदैव पूज्य माताजी की भावनाओं को साकार करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहें, यही जिनेन्द्रदेव से प्रार्थना है।

तीर्थंकरस्य जन्मभूमेर्विकासे त्रिलोकशोधसंस्थानस्य सक्रिया भूमिका—**वर्तमान काले 24 तीर्थंकराणां षोडश जन्मभूमयः सन्ति। 1. अयोध्या 2. श्रावस्ती 3 कौशाम्बी 4 वाराणसी 5 चन्द्रपुरी 6 काकन्दी 7 भद्दिलपुरम् 8 सिंहपुरी 9 चम्पापुरी 10 कम्पिलापुरी 11 रत्नपुरी 12 हस्तिनापुरम् 13 मिथिलापुरी 14 राजगृही 15 शौरीपुरम् 16 कुण्डलपुरं च। एतासु प्रायः 8–10 जन्मभूमितीर्थानां जीर्णोद्धारो विकासश्च तु पूज्यायाः मातुः गणिन्याः ज्ञानमत्याः प्रेरणया दिगम्बरजैनत्रिलोकशोधसंस्थानस्य सक्रियसहयोगेन सम्पन्नाः अभवत्। किन्त्वधुना कौशाम्बी, काकन्दी, भद्दिलपुरादीनितीर्थ–क्षेत्राणि अविलम्बंविकासपथि आनेतुमावश्यकता वर्तते।**

पूज्यायाः मातुः ज्ञानमत्याः समस्ताय जैनसमाजाय आह्वानमस्ति यत् भवन्तः सर्वे मिलित्वा 24 तीर्थंकराणां महतः सर्वोदयिआदर्शान् तेषां च जन्मभूमीनां सुसज्जितं स्वरूपं विश्वसमक्षमानयन्तु, यतस्तानि तीर्थक्षेत्राणि भारतीयसंस्कृतेरुद्गमस्थलानि सन्ति। यद्यप्याधुनिक मानवसमाजः स्वमनोकामनानां पूर्तिहेतवे अतिशयकराणि तीर्थक्षेत्राणि प्रति धावति, किन्तु भवन्तश्चिन्तयन्तु यत्, यदि भगवान महावीर कुण्डलपुरे जन्म नागृह्णात् तस्य नाम्ना ''श्रीमहावीरजी'' अतिशयक्षेत्रं केन प्रकारेण भवितुमशक्नोत्। भगवतो पद्मप्रभोः चन्द्रप्रभोश्चातिशयक्षेत्रयोः पद्मपुरा तिजारयोः शताधिकानां दीपकानां प्रज्ज्वालनसमये किं कदापि चिन्तनमभूत् एतयोर्जन्मभूम्योः कौशाम्बी चन्द्रपुर्योः किमेकोऽपि दीपः प्रज्वलति, न

➢तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास में त्रिलोक शोध संस्थान की सक्रिय भूमिका–

वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हैं-1. अयोध्या 2. श्रावस्ती 3. कौशाम्बी 4. बनारस 5. चन्द्रपुरी 6. काकन्दी 7. भद्दिलपुर 8. सिंहपुरी 9. चम्पापुरी 10. कम्पिला जी 11. रत्नपुरी 12. हस्तिनापुर 13. मिथिलापुरी 14. राजगृही 15. शौरीपुर 16. कुण्डलपुर। इन सभी में से लगभग 8-10 जन्मभूमि तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं विकास तो पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के सक्रिय सहयोग द्वारा सम्पन्न हुआ है किन्तु अभी कौशाम्बी, काकन्दी, भद्दिलपुर आदि तीर्थों को अविलम्ब विकसित करने की आवश्यकता है।

पूज्य माताजी का समस्त दिगम्बर जैन समाज को आह्वान है कि आप सभी लोग मिलकर 24 तीर्थंकरों के महान सर्वोदयी आदर्श एवं उनकी जन्मभूमियों के सुसज्जित स्वरूप को विश्व के समक्ष लावें क्योंकि ये तीर्थ भारतीय संस्कृति की उद्गम स्थली हैं। यद्यपि आज का मानव अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करने हेतु अतिशय-चमत्कारों की ओर भाग रहा है किन्तु आप चिन्तन कीजिए कि भगवान महावीर ने यदि कुण्डलपुर में जन्म न लिया होता तो उनके नाम का ''महावीर जी'' अतिशय क्षेत्र कैसे बन पाता, भगवान पदमप्रभु एवं चन्द्रप्रभु के अतिशय क्षेत्र, पदमपुरा और तिजारा में सैकड़ों दीपक जलाते समय क्या कभी चिन्तन किया गया है कि इनकी जन्मभूमि कौशाम्बी एवं चन्द्रपुरी में एक दीपक भी जलता है या नहीं? आदि। अतः सर्वप्रथम तो आप सभी

वा? अतः सर्वप्रथमं तु भवन्तः सर्वेषां तीर्थंकराणां जन्मभूमीनां नामानि स्मरन्तु, पुनः तेषां यात्रायाः वन्दनायाश्च कार्यक्रममवश्यमेव विनियोजयन्तु। तत्पश्चात् तेषामावश्यकतानां पूर्तये जम्बूद्वीपात् हस्तिनापुरात् संपर्कं योजयन्तु। पूज्यायाः मातुः प्रेरणया हस्तिनापुरस्य संस्थानं ''तीर्थंकरजन्मभूमिविकाससमिते'' र्माध्यमेन तेषां तीर्थक्षेत्राणां विकासं विधातुं तत्परो विद्यते।

जम्बूद्वीपस्य पावनायाः प्रेरिकाया, पूज्यायाः गणिन्याः ज्ञानमत्याः सर्वोदयि व्यक्तित्वं शब्देषु बद्धं कर्तुं न शक्यते—**22 अक्तूबर 1934 दिने शरत्पूर्णिमायां टिकैतनगरे बाराबंक्यां उत्तरप्रदेशे श्रेष्ठिनः श्रीछोटेलालस्य धर्मपत्न्याः श्रीमत्याः मोहिनीदेव्याः कुक्षिना प्रथमसन्तानरूपेण समुत्पन्ना कन्या वास्तवे युगस्येतिहासं परिवर्त्य विशंति एकविंशतिशताब्दयां स्वैतिहासिक–कार्यकलापैः नवकीर्तिमानमस्थापयत्।**

भवती 1952 वर्षे स्वजन्मतिथेः शरत्पूर्णिमायाः एव दिने पूज्येनाचार्य रत्नेन श्रीदेशभूषणेन सप्तमप्रतिमामाजन्मब्रह्मचर्यव्रतमंगीकृत्य गृहमत्यजत्। 1953 वर्षे चैत्रकृष्ण–प्रतिपदादिने तया क्षुल्लिकां दीक्षां गृहीत्वा वीरमतीति नाम प्राप्नोत्। पुनः विंशतिशताब्द्या प्रथमाचार्यस्य चारित्रचक्रवर्तिनः श्रीशान्तिसागरस्य महाराजस्य दर्शनं कृत्वा तस्यैव प्रेरणया तस्यैव प्रथमपट्टशिष्यस्याचार्यवीरसागरस्य महाराजस्य करकमलाभ्यां 1956 वर्षे वैशाख कृष्ण द्वितीयायां माधोराजपुराग्रामे राजस्थाने आर्यिकादीक्षा गृहीत्वा भवती ''ज्ञानमती'' नाम पूर्णरूपेण सार्थकमकरोत्।

भगवन्तों की जन्मभूमियों के नाम याद करें पुनः उनकी यात्रा, वंदना का कार्यक्रम अवश्य सुनियोजित करें, उसके पश्चात् वहाँ की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से संपर्क करें। पूज्य माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर का यह संस्थान ''तीर्थंकर जन्मभूमि विकास समिति'' के माध्यम से इन तीर्थों के विकास का कार्य कर रहा है।

➢जम्बूद्वीप की पावन प्रेरिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सर्वोदयी व्यक्तित्व शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है–

22 अक्टूबर सन् 1934 को शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर (बाराबंकी-उ.प्र.) में श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी की कुक्षि से प्रथम संतान के रूप में जन्मी कन्या ने वास्तव में युग का इतिहास बदलकर 20वीं-21वीं सदी में अपने ऐतिहासिक कार्यकलापों द्वारा नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

आपने सन् 1952 में अपनी जन्मतिथि शरदपूर्णिमा के ही दिन पूज्य आचार्यरत्न श्री देशभूषण महाराज से सप्तम प्रतिमारूप आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर गृहत्याग किया। सन् 1953 में चैत्र कृ. एकम् को उनसे क्षुल्लिका दीक्षा लेकर वीरमती नाम पाया पुनः बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज के दर्शन करके उनकी प्रेरणा से उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों द्वारा सन् 1956 में वैशाख कृ. द्वितीया को माधोराजपुरा (राज.) में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर अपने ''ज्ञानमती'' नाम को पूर्णरूपेण सार्थक किया।

अस्य युगस्य प्रथमायाःबालब्रह्मचारिण्याः आर्यिकायाः रूपेण प्रख्याता ज्ञानमती माता अनेकमुनयः आर्यिकाश्च क्लिष्टग्रन्थानामध्ययनं कारयित्वा त्यागस्य ज्ञानस्य च उच्चताः प्राप्ताः अकारयत्। स्वलेखन्या विपुलस्य साहित्यस्य रचनामकरोत्। कुन्दकुन्दादि आचार्याणां ब्राह्मी–सुन्दरी, सुलोचनासदृशीनां चार्यिकाणां स्मरणमकारयत्। अनेकतीर्थानां जीर्णोद्धारस्य विकासस्य च प्रेरणाः दत्वा स्वामिनः अकलंकदेवस्याचार्यसमन्तभद्रस्य चोदाहारणं प्रस्तुतमकरोत्। संस्थाः प्रति च निःस्पृहभावं प्रदर्श्याचार्यस्य शान्तिसागरस्य वीरसागरस्य च आगमोक्तमादर्शं प्रस्तुतमकरोत्। अस्याः अति निकटतायां स्थित्वा वार्तां च ज्ञात्वा भक्ताः एवास्याः वास्तविक निःस्पृहतायाः अनुमानं कर्तुं शक्नुवन्ति। 58 वर्षाणामखण्डतपस्यायां ज्ञानाराधनायां च लीनायाः पूज्यायाः गणिनीप्रमुखायाः युगप्रवर्तिकायाः चारित्रचन्द्रिकायाः आर्यिकाशिरोमणेः श्रीज्ञानमत्याः मातुः श्रीचरणयोः शत–शतवारं नमनं कृत्वाहं तस्याः दीर्घस्य स्वस्थस्य च जीवनस्य मंगलकामनां करोमि।

इस युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका के रूप में प्रख्यात ज्ञानमती माताजी ने अनेक मुनि-आर्यिकाओं को क्लिष्ट ग्रंथों का अध्ययन कराकर त्याग-ज्ञान की ऊँचाईयों को प्राप्त कराया, अपनी लेखनी से विपुल साहित्य की रचना कर कुन्दकुन्द आदि आचार्य एवं ब्राह्मी-सुंदरी, सुलोचना जैसी आर्यिका का स्मरण कराया, अनेक तीर्थों के उद्धार एवं विकास की प्रेरणा देकर स्वामी अकलंक देव, आचार्य समंतभद्र का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा संस्थाओं के प्रति निस्पृह भाव अपनाकर आचार्य श्री शांतिसागर-वीरसागर महाराज का त्यागमयी आदर्श प्रस्तुत किया है। इनकी अतिनिकटता में रहकर चर्या देखने वाले भक्त ही इनकी वास्तविक निस्पृहता का अनुमान लगा सकते हैं। 58 वर्ष की अखण्ड तपस्या एवं सतत ज्ञानाराधना में लीन पूज्य गणिनीप्रमुख, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में शत-शत नमन करते हुए उनके दीर्घ एवं परम स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करती हूँ।